तादाद : 3100

हदिया (उपहार) ६०-००

आर्टपुल्स प्रिंटिग इकरा प्रिंटर्स 1097, गज मीर खा, नई दिल्ली-2

आफसेट प्रिंटिग राहिल नसीम प्रिंटर्स, दिल्ली-6

प्रकाशक

महमूद एण्ड कम्पनी

मरोल पाइप लाइन, बम्बई-५६

कुछ इस क़ुरआन मजीद के बारे में

एक लम्वे अरसे से खास कमी महसूस की जा रही थी कि सरल और आसान हिंदी भाषा मे क़ुरआन मजीद का एक आम-फ़ह्म तर्जुमा हो जिसे हर खास व आम (तालीमयाफता और कम पढे लिखे लोग)' आसानी से पढ कर समझ सके, साथ ही अरवी मत्न (अरवी अक्षरो मे लिखा हुआ क़ुरआन) भी हिंदी रस्मुल्खत (देवनागरी) मे हो और जिस को बिल्कुल सही और शुद्ध उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़) से पढा जा सके ।

क़ुरआन मजीद के तर्जुमे को हिंदी रूप देना तो फिर भी इतना मुश्किल न था लेकिन अरबी मत्न को हिंदी देवनागरी मे रूपान्तर करना बहुत कठिन और मुश्किल था, चूकि अरबी मे कुछ खास हुरूफ (अक्षर) ऐसे होते है जो हिंदी में नही होते जैसे (ث) से, (ح) बड़ी हे, (ز) ज़े, (ذ) ज़ाल, (ص) साद, (ض) ज़ाद, (ط) तो, (ظ) ज़ो, (ع) अैन, (غ) गैन, (ف) फ़े, (ق) काफ, (ة) गोल ते, (~) छोटी मद और (ـــ) बडी मद वग़ैर " हमने कुछ अलामते (निशानिया) देकर उन हर्फो (अक्षरो) को बनाया है जो अरबी हर्फो की सही आवाज़ को ज़ाहिर करते हैं । हर हर्फ की आवाज़ के लिए अलाहिद: अलाहिद हर्फ मुकर्रर किये है । हिंदी के मत्न में लफ्ज़ो के वस्ल व फसल (सन्धि-विग्रह), साकिन व मुतहर्रिक, (हलन्त और सस्वर), कल्व व इदगाम वगैरह में क़ुरआन मजीद के मामूर व मंकूल रस्मुल्खत के तरीक-ए-तहरीर व तिलावत की पाबन्दी की है और रुमूज़े औकाफ (विरमाविरम चिह्न) की रायज अलामते भी अरबी मे किताबत (लिखाई) की गई है ताकि उस को कोई क़ुरआन का हिस्सा समझ कर न पढने लगे अलावा इसके रुबअ, निस्फ, सुल्स, रुकूअ और सज्द वगैर: के लिए भी अलामते दी गई हैं । हिंदी मे अरबी के मुताबिक़ तिलावत (पाठ) करने के लिए क़ायदे बयान किये गये है । हुरूफ के सही मखारिज (शब्द की सही आवाज़ निकालने) का तरीका भी तफ्सील (detail) से दिया गया है ताकि हिंदी मत्न भी अरबी के सही तलफ़्फ़ुज़ के साथ पढा जा सके और उस के पढने का अंदाज़ अरबी के तर्ज़े अदा (तरीके) के मुताबिक़ हो । मत्न वाले पेज पर हिंदी के मत्न के साथ अरबी मत्न का सफ़ा (पन्ना) भी छोटा (Reduce) करके रखा गया है ताकि कभी कोई हिंदी देवनागरी मत्न को अरबी से मिलाना चाहे तो मिला भी सके । बेहतर होगा कि पाठक (कारी "पढ़ने वाला") किसी अरबीदां (अरबी जानने वाले) के सामने दो चार बार पढ़ कर अपना उच्चारण दुरुस्त कर लें ताकि पढने मे कोई गलती न रह जाये ।

इसमे कोई शक नही कि यह काम बड़ा दुश्वार (कठिन) था जिसके लिए हमने मुख्तलिफ़ उलमा-ए-किराम की ख़िदमात हासिल की शुरू मे मौलाना कौमर यज़दानी साहिब से रब्त रहा लेकिन किसी वजह से वह वक्त न दे सके । इस क़ुरआन मजीद का टाइटल पेज क़ुरआन छपने से पहले छप चुका था इसलिए टाईटल पेज पर मौलाना कौमर साहब का नाम भी है अलावा इस के इस की तस्हीह की तरफ खास तवज्जह (ध्यान) दिया गया है और कई हाफ़िज़े क़ुरआन और उलमा-ए-किराम ने इसकी तस्हीह (Proof Reading) की है । साथ ही शुरू मे २८ पन्नो पर क़ुरआन मजीद से मुताल्लिक़ (संबंधित) जरूरी मालूमात (जानकारी) का एक जामेअ (बडा) मुकद्दमा है जिसमे क़ुरआन को

सही उच्चारण से पढने का तरीका और दीगर ज़रूरी मालूमात दर्ज हैं कि कुरआन मजीद किस तरह उतरा, कितने दिनो में उतरा और उस की हिफाजत (सुरक्षा) का अल्लाह् तआला ने क्या इन्तज़ाम (बंदोबस्त) किया है अलावा इसके पैगम्बरे इस्लाम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिदगी के मुकम्मल हालात भी दे दिए गये है ताकि इस मुबारक किताब को पढने से पहले यह समझा जा सके कि जिस पैगम्बर पर यह किताब उतरी है उसकी ज़िदगी कैसी थी। हमें उम्मीद है कि हिंदी पढ़ने वाले इस से फायदा हासिल करेंगे और उलेमा से गुजारिश है कि वह अपने मश्विरों से नवाज़ें, साथ में पाठकों (पढने वालो) से भी निवेदन है कि तिलावत (पाठ) के वक़्त कोई गलती या कमी देखें, तो मेहरबानी करके हमे लिखें ताकि उसे सही किया जा सके।

इस हिंदी कुरआन मजीद की तरतीब, तस्हीह वगैरह मे जिन हज़रात ने हमारी मदद की उन के नाम यह है—

१ मौलाना अब्दुल मजीद सर्वर साहिब (मालेगाव)
२. मौलाना खालिद हुसैन सिद्दीकी साहिब (ज़िला बस्ती)
३. मौलाना इमरान क़ासमी साहिब (दिल्ली)
४. मौलाना शुऐब इदरीस साहिब (बम्बई)
५. हाफिज़ हसनेन साहिब (दरभंगा)
६. हाफिज़ वारीस साहिब (दिल्ली)
७ नासिर खां (दिल्ली)

उम्मीद है कि हिंदी मे हमारी यह कोशिश अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाएगा और उन तमाम लोगो को इस का अज्र देगा जिन्होने इस काम मे हमारी मदद की है या मश्विरा दिया है।

—प्रकाशक
सैयद महमूद कादरी

नोट: अनुवाद मे जो शब्द ब्रेकेट ( ) में है वह अरबी उर्दू के शब्दो के हिंदी अनुवाद के मतलब को खुलासा करने के लिए दिया गया है।

क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल (लाभ)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, मेरी उम्मत की सबसे अफ़्ज़ल (श्रेष्ठ) इबादत कुरआन मजीद की तिलावत है। अह्ले कुरआन (कुरआन पढने वाले) खास अल्लाह वाले होते हैं। तुम मे से बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और सिखाये।

तिर्मिज़ीशरीफ़ मे इब्ने मसऊद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने कुरआन मजीद का एक हर्फ़ (अक्षर) पढा, तो उसको एक नेकी मिलेगी, जो दूसरे कामो की दस नेकियो के बराबर होगी। अल्लाह तआला कुरआन मजीद पढने वाले की ओर सबसे पहले मुतवज्जह होता (यानी ध्यान देता) है। तुम कुरआन मजीद पढा करो क्योकि कुरआन मजीद क़ियामत के दिन अपने पढने वालो की शफाअत (सिफारिश) करेगा।

तिर्मिजी शरीफ, सुनने दारमी और बैह्की मे अबू सईद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, खुदा फरमाता है कि जिस को कुरआन की तिलावत ने मेरी याद मे और मुझ से अपनी हाजतो के मागने से रोका, तो मैं तमाम मागने वालो मे ज्यादा उस की हाजतो और दिल की मुरादो को खुद ही पूरा करूगा (यानी बे-मागे,) क्योकि अल्लाह के कलाम की फजीलत (बड़ाई) दूसरे कलामो पर ऐसी है, जैसे खुदा की फजीलत मख़्लूक पर।

सुनने दारमी शरीफ मे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अगर कुरआन मजीद किसी खाल मे हो, तो वह खाल आग मे नही जल सकती। खाल से मुराद मोमिन का दिल है। अगर इस मे कुरआन मजीद हो, दोजख़ के अजाब से बचा रहेगा। हदीसो मे कुरआन मजीद के अनगिनत फजाइल (लाभ) है, जो यहा बयान से बाहर है।

कुरआन मजीद की अज़मत (बडाई), बुजुर्गी और उसकी फजीलत के लिए इतना काफी है कि यह दुनिया के पैदा करने वाले खुदा का कलाम है तमाम ऐबो और कमजोरियो से पाक और साफ है। इसकी फसाहत और बलागत तमाम दुनिया ने मान ली है। बडे-बडे फसाहत और बलागत के दावेदार इस जैसे दो-तीन जुमले (वाक्य) भी सदियो (सैकडो साल) की कोशिशों के बावजूद न बना सके। खुले आम एलान भी किया गया, जोश दिलाने वाले खिताब से कहा गया कि, 'अगर तुम इसके खुदाई कलाम (ईश्वरीय वाणी) होने मे शक करते हो और इसको इसानी कलाम समझते हो, तो तुम इस जैसी छोटी से छोटी सूर बना लाओ और तमाम खास व आम (ज्ञानी व अज्ञानी) को जमा करो, हरगिज न बना सकोगे हरगिज न बना सकोगे।' कुरआन मजीद मे सूर बनी इस्राईल मे, पारा १५, रुकूअ १०, आयत न० ८८-८९ में अल्लाह तआला फरमाता है—

अनुवाद—'कह दो कि अगर इंसान और जिन्न इस बात पर जमा हो कि इस कुरआन जैसा बना लाए, तो इस जैसा न ला सकेंगे, अगरचे वे एक दूसरे के मददगार हो और हमने इस कुरआन मे हर तरह की मिसाले (उदाहरण), बयान करके बात ठीक तरीके से बता दी। मगर ज्यादा लोगो का यह हाल है कि बिना इन्कार किए उनसे रहा न गया। जिन्नो की कौम ने जब इस चमत्कारी कलाम को सुना तो बे-झिझक कह उठे कि—'इन्ना समिअना कुरआनन् अजबय् यह्दी इलर्रुश्दि फ-आ मन्ना बिही व लन्नुश्रि-क बिरब्बिना अहदा० अर्थात-बेशक हमने एक अजीब कुरआन सुना जो नेकी की तरफ

हिदायत करता है हम इस पर ईमान लाए और अपने पालनहार का किसी को साझीदार हर्गिज़ न समझेंगे।'

स्वयं अल्लाह तआला इस पवित्र क़ुरआन की तारीफ़ (प्रशंसा) करता है फिर हम लोगो की ज़ुबान व क़लम में क्या ताकत है कि इसकी खूबियो और बरकतों का एक अंश भी बयान कर सकें।

क़ुरआन मजीद के उतरने और संग्रह व संकलन के हालात

कुरआन मजीद एक पवित्र किताब है जो अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर उतारी गयी। यह अर्श कुर्सी के मालिक का कलाम है जो उसने स्वयं एक बरगुज़ीदा पैगम्बर और मुक़र्रब (सबसे ज़्यादा लोकप्रिय) बन्दे पर नाज़िल किया। इस्लाम का आधार इसी आसमानी फरमान (आदेश) पर है जिसने अनुपालन किया वह इस्लाम के दायरे में दाखिल हुआ और जिसने ज़रा भी अवज्ञा की वह इस पाकीज़ा जमाअत (इस्लाम) से अलग हो गया और अल्लाह के बागियो मे शामिल हुआ। जब नबी-ए-करीम सल्ल० की उम्र शरीफ़ ४० साल की हुई उस समय आप को नबुवत प्रदान की गयी और रिसालत का ताज आप के सर पर रखा गया। इसी ज़माने से कुरआन के उतरने की शुरूआत हुई। यदा कदा यथा ज़रूरत के अवसर पर थोड़ा-थोड़ा २३ साल तक नाज़िल होता रहा है। अगली किताबों की तरह पूरा एक ही बार में नही उतरा (हज़रत मूसा अलैहि० पर तौरात,हज़रत ईसा अलैहि० पर इंजील और हज़रत दाऊद अलैहि० पर ज़ूबूर ये सब किताबें तो एक ही बार में उतारी गयी और सौभाग्य से ये सब किताबें रमज़ान ही के महीने में उतरीं)

सही यह है कि आप (सल्ल०) की नुबूवत के बाद रमज़ान की शबे-क़द्र में पूरा कुरआन मजीद लौहे महफ़ूज़ (अल्लाह के पास से) से उस आसमान पर जिसे हम देख रहे हैं अल्लाह के हुक्म से उतारा गया और इसके बाद हज़रत जिब्रील अलैहि० को जिस समय जिस क़दर हुक्म हुआ उन्होने पवित्र कलाम को बिल्कुल वैसा ही बिना किसी परिवर्तन या कमी-बेशी के नबी सल्ल० तक पहुंचाया। कभी दो आयतें, कभी तीन आयतें और कभी एक आयत से भी कम, कभी दस-दस आयतें और कभी पूरी-पूरी सूरतें। इसी को शरीअत में वह्य कहते हैं। उलमा (विद्वानों) ने वह्य के विभिन्न तरीक़े हदीसों से पेश किए हैं।

१—फ़रिश्ता वह्य लेकर आए और एक आवाज घंटी जैसी मालूम हो। यह स्थिति अनेक हदीसों से साबित है और यह क़िस्म वह्य की सभी क़िस्मों में सख्त थी। बहुत कष्ट नबी सल्ल० को होता था यहां तक कि आपने फ़रमाया कि जब कभी ऐसी वह्य आती है तो मैं समझता हूं कि अब जान निकल जाएगी।

२—फ़रिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।

३—फ़रिश्ता आदमी के रूप में आ कर बात करे। यह क़िस्म बहुत आसान थी इसमें कष्ट न होता था।

४—अल्लाह तआला जागते में नबी सल्ल० से कलाम फ़रमाए जैसा कि शबे मेअराज (मेअराज की रात) में।

५—अल्लाह तआला सपने की हालत में कलाम फ़रमाए। यह किस्म भी सही हदीसों से साबित है।

६—फरिश्ता सपने की हालत मे आकर कलाम करे। मगर अन्तिम दो किस्मो से क़ुरआन मजीद खाली है। पूरा कुरआन जागने की स्थिति मे नाज़िल हुआ। अगरचे कुछ उलमा ने सूर: कौसर को आखिरी किस्म से माना है लेकिन तहकीक करने वालो ने इसको रद्द कर दिया है और उन के (शक) संदेह का उचित जवाब दे दिया है। (इतकान)

कुरआन मजीद के बदफआत (कई बार) नाज़िल होने में यह भी हिक्मत थी कि इस में कुछ आयते वे थीं जिन का किसी समय रद्द कर देना अल्लाह को मजूर था। कुरआन मजीद मे तीन प्रकार के मंसूखात हुए हैं। कुछ वे जिनका हुक्म भी मंसूख (रद्द) और तिलावत भी मंसूख़।

पहली मिसाल

لَوْ كَانَ لِابْنِ اٰدَمَ وَادِيًا مِّنْ مَّالٍ لَاَحَبَّ اَنْ يَّكُوْنَ اِلَيْهِ الثَّانِيْ وَلَوْ كَانَ لَهُ الثَّانِيْ لَاَحَبَّ

اَنْ يَّكُوْنَ اِلَيْهِمَا الثَّالِثُ وَلَا يَمْلَاُ جَوْفَ ابْنِ اٰدَمَ اِلَّا التُّرَابُ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ تَابَ

सूर. लम यकुन में—'लव का-न लि इब्ने आ-द-म व दियम मिम्मालिन् ल-अहब्-ब अंय्यकू-न इलय्हिस्सानी व लव का-न लहुस्सानी ल-अहब्-ब अंय्यकू-न इलय्हिमस्सालिसु व ला यमं लऊ जव्फब्नि आ-द-मा इल्लत्ताराबु व यतूबुल्लाहु अला मन ता-ब' भी था।

दूसरी मिसाल

दुआ-ए-कुनूत भी कुरआन की दो सूर थी। कुछ वे हैं जिन की तिलावत मसूख हो गयी मगर हुक्म बाकी है जैसे कि आयते रजम, कि हुक्म इस का बाकी है मगर तिलावत इस की नही होती। ये दोनों किस्में कुरआन से निकाल दी गयी हैं और इनका लिखना भी कुरआन मजीद मे जायज़ नही है। कुछ वे हैं जिन की तिलावत बाकी है मगर हुक्म मंसूख हो गया है। यह किस्म कुरआन मजीद मे दाखिल है और इस की बहुत-सी मिसालें है। कुछ लोगो ने मुस्तक़िल किताबो मे इन को जमा किया है। तफ्सीर (टीका) के फन (कला) मे उन से बहुत बहस होती है मगर यहा उन की तफ्सील (विवरण) का अवसर नहीं। (तफ्सीर इतक़ान)

जब शाफअे कयामत (कयामत के दिन सिफारिश करने वाले) और उम्मत को पनाह देने वाले हुज़ूर सल्ल० ने रफीके आला जल्ल मुजद्दहू की रहमत मे सकूनत अख़्तियार फरमाई और वह्य का उतरना बंद हो गया। कुरआन मजीद किसी किताब मे, जैसाकि आजकल है जमा नही था अलग-अलग चीजो पर सूरते और आयतें लिखी हुई थी और वे अलग-अलग लोगो के पास थी। अधिकांश सहाबा को कुरआन मजीद पूरा ज़बानी याद था। सब से पहले कुरआन मजीद को एक जगह जमा करने का ख्याल हज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक आज़म रज़ि० के दिल मे पैदा हुआ और अल्लाह ने उन के ज़रिए से अपने इस सच्चे वायदे को पूरा किया जो अपने पैगम्बर से किया था अर्थात क़ुरआन मजीद के हम हाफिज़ हैं इस का जमा करना और हिफाज़त करना हमारे ज़िम्मे है। यह ज़माना हज़रत अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़ अक्बर रज़ि० की ख़िलाफते राशिदा का था। हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० ने उन की सेवा में अर्ज़ किया कि कुरआन के हाफिज़ शहीद होते जा रहे हैं और बहुत से यमामा की जंग मे शहीद हो गए। मुझे डर है कि यदि यही हाल रहेगा तो बहुत बड़ा हिस्सा क़ुरआन मजीद का हाथ से जाता रहेगा।

अत: मैं उचित समझता हूं कि आप इस तरफ तवज्जोह दे और कुरआन मजीद के जमा करने का प्रबन्ध करे। हजरत सिद्दीक ने फरमाया कि जो काम नबी सल्ल० ने नहीं किया उस को हम कैसे कर सकते है ? हज़रत उमर फारूक ने अर्ज किया कि ख़ुदा की कसम यह बहुत अच्छा काम है। फिर कभी-कभी हज़रत फारूक रज़ि० इस की याद दिलाते रहे यहा तक कि हज़रत सिद्दीक रज़ि० के दिले मुबारक मे भी यह बात जम गयी। उन्होने ज़ैद बिन साबित रज़ि० को तलब किया और यह सब किस्सा बयान करके फरमाया कि कुरआन मजीद को जमा करने के लिए मैंने आप को चुना है, आप कातिबे वह्य (वह्य को लिखने वाले) थे और जवान व नेक हैं। उन्होने भी वही बात कही कि जो काम नबी सल्ल० ने नही किया, उस को हम लोग कैसे कर सकते है ? अन्त मैं वह भी राज़ी हो गए और उन्होने बडे अह्तमाम (बहुत प्रबन्धित जिम्मेदारी) से कुरआन मजीद को जमा करना शुरू किया।

ज़ैद बिन साबित रज़ि० को चुने जाने की वजह उलमा ने यह लिखी है कि हर साल रमज़ान में हज़रत जिब्रील अलैहिस्लाम से नबी सल्ल० कुरआन मजीद का दौर (पढ कर सुनना) किया करते थे और इंतकाल के साल मे दो बार कुरआन मजीद का दौर हुआ और ज़ैद बिन साबित रज़ि० इस अन्तिम दौरे मे शरीक थे और इस अन्तिम दौरे के बाद फिर कोई आयत मंसूख (रद्द) नही हुई। जितना कुरआन इस दौरे में पढा गया, वह सब बाकी रहा अत: उनकोउन आयतो का ज्ञान था जिनकी तिलावत मंसूख़ हुई थी। (शरह सन्न.)

जब कुरआन मजीद सहाबा रज़ि० के प्रबन्ध से जमा हो चुका, हज़रत फारूक रज़ि० ने अपनी खिलाफत के ज़माने मे उस की नजर सानी (दोबारा देखना) की और जहा कही किताबत (लिखने में) गलती हो गयी थी उस को ठीक किया। सालों इस चिन्ता में रहे और कभी-कभी सहाबा रज़ि० से मुनाज़िरा भी किया। कभी सेहत इसी मक्तूब (लिखा हुआ) की ज़ाहिर होती थी, कभी इस के ख़िलाफ, तो फ़ौरन उस को सही कर देते थे फिर जब ये सब दर्जे तै हो चुके तो हज़रत फारूक रज़ि० ने इस के पढ़ने-पढाने की सख्त व्यवस्था की और हाफिज सहाबा रज़ि० को दूर के देशों मे कुरआन व फ़िक़्ह की शिक्षा के लिए भेजा, जिस का सिलसिला हम तक पहुंचा।

सच यह है कि हज़रत फारूक रज़ि० का एहसान इस बारे मे पूरी उम्मते मुहम्मदिया (मुसलमानो) पर है। उन्हीं की बदौलत आज हमारे पास कुरआन मौजूद है और हम उसकी तिलावत से लाभ उठाते हैं। इस एहसान की मकाफात (बदला) किस से हो सकती है। ऐ अल्लाह ! अपने रिज़वान (ज्ञान) की ख़लअतें (इनाम) उन को प्रदान कर और खलअत व करामात का ताज उन के मुकद्दस सर पर रख। आमीन।

फिर हज़रत उस्मान रज़ि० ने इस एहसान को और भी कामिल (पूरा) कर दिया। अपनी खिलाफत के ज़माने में उन्होंने इस मसहफ शरीफ़ (कुरआन) की सात नकलें (प्रतिरयां) करा कर दूर-दूर के देशो में भेज दी। और तिलावत किरआत (कुरआन पाठ करने के तरीकों) की वजह से जो मतभेद और झगड़े हो रहे थे और एक दूसरे की किरआत को हक के खिलाफ और गलत समझा जाता था, इन सब झगड़ों से इस्लाम को पाक कर दिया। केवल एक किरअत पर सब को सहमत कर दिया। अब अल्लाह के शुक्र से एक मज़बूत किताब मुसलमानों के पास है। कोई मज़हब दुनिया मे इसकी मिसाल नही ला सकता। इन्जील व तौरात की हालत नाजुक है उनमे वह कमी-बेशी हुई कि ख़ुदा की पनाह। कुरआन की निस्बत (बारे में) विरोधियों को भी इकरार है कि यह वही किताब है जिसकी निस्बत मुहम्मद सल्ल० ने ख़ुदा का कलाम होने का दावा किया था इस में किसी किस्म की कमी ज्यादती उनके बाद नहीं हुई। वल्हम्दु लिल्लाह अल। ज़ालिक

कुरआन मजीद में आयतों व सूरतों की तरतीब जो इस ज़माने मे है यह भी सहावा रज़ि० ने दिया है मगर न अपनी राय व अनुमान में से, वल्कि नबी सल्ल० जिस तरतीव (ढंग) से पढते थे और जो तरतीब उस मुवारक दौर में थी उसके थोडा भी खिलाफ नही किया, केवल दोमूरतोकी तरतीव अलबत्ता सहावा रज़ि० अपने कयास (अनुमान) से दी है। सूर. बराअत और अन्फाल, तो यह भी निश्चय भी लोहे महफूज के खिलाफ न होगी। जिसका मुहाफ़िज़ इस क़दर कादिर व कवी (शक्तिशाली) हो उस मे उसकी तरतीब भी इच्छा के खिलाफ नही हो सकती।

कुछ और सहाबा जैसे इब्ने मसऊद रज़ि० और अबी बिन कअब रज़ि० ने भी कुरआन मजीद को जमा किया था। किसी की तरतीब उतरने के मुताबिक थी किसी की और किसी तरह। जगह-जगह वे आयते जिनकी तिलावत मन्सूख थी भी इनमे किसी उद्देश्य से शामिल थी। कही-कही तफ्सीरी शब्द उनमें लिखे हुए थे। इन सब मुसहफो (नुस्खो) को हज़रत उस्मान रज़ि० ने ले लिया वर्ना आगे चल कर इनकी वजह से सख्त मतभेद पैदा होता। इसके अलावा यह सहमति शक्ति जो इस मसहफ के जमा करने मे थी इन मुसहफो मे कहां। वह केवल एक ही व्यक्ति की मेहनत का नतीजा थे इस वजह से और भी खराबिया उनमे होगी।

सहाबा रजि० के जमाने मे कुरआन मजीद में सूरतो के नाम, पारो के निशान आदि कुछ न थे, वल्कि अक्षरो पर बिन्दु (नुक्ते) भी न दिए गए थे बल्कि कुछ सहाबा इसको बुरा समझते थे। वे चाहते थे कि मुसहफ मे सिवाए कुरआन के और कोई चीज़ न लिखी जाए। अब्दुल मलिक के ज़माने मे अबुल असवद या हजरत हसन बसरी रह० ने उस मे नुकते बनाये और सूर और पारो के नाम भी लिख दिए गये। उलमा इन सब चीजो के कारणो (जवाज़) पर सहमत है इस लिए कि ये ऐसी कोई चीज नही है, जिनके कुरआन होने का संदेह हो और मना उन चीज़ो का लिखना है जिनका कुरआन होने का शक (संदेह) पडे।

ख़लूसेनीयत (सही नीयत) व क़ुरआन की तिलावत के आदाब

बुखारी व मुस्लिम मे हजरत उमर बिन खत्ताव रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया, हर अमल का आधार नीयत पर है और हर व्यक्ति को वही मिलेगा जिसकी उसने नीयत की है। तिलावत के समय वुज़ू के बाद पाक जगह मे किब्ले की ओर हो कर यह ख्याल करता हुआ तिलावत करे कि मैं तमाम मख्लूक (जीव) के पैदा करने वाले का कलाम पढ रहा हू जिसके अधिकार में मेरी जान है और रिज्क के अस्बाब हैं। तिलावत को बिस्मिल्लाह से शुरू करे। बशारत (खुशखबरी) वाली आयतों पर खुश हो और अज़ाब वाली आयतो पर रोए, या कम से कम रोना न आए तो रोने की सूरत बनाए। अगर बे वुज़ू हो तो गिलाफ (कुरआन जिस कपडे मे लिपटा होता है) या किसी और कपड़े से कुरआन को हाथ लगाए कि ऐसी सूरत मे विना इसके क़ुरआन को हाथ लगाना जाईज़ नही है। मगर बिना वुज़ू कुरआन का पढना जायज है। तमाम उलमा की सहमति है कि बिना गुस्ल किए अर्थात जनाबत की हालत वाले मर्द या हैज़ व निफास वाली औरत को कुरआन का पढना हराम है।

हज़रत आइशा रज़ि० नबी सल्ल० की कैफियत बयान फरमाती हैं कि आप हर हाल मे तिलावत फ़रमाया करते थे, वुज़ू की हालत मे भी, बिना वुज़ू की हालत मे भी, हां अलबत्ता जनाबत की हालत मे न करते थे।

क़ुरआन मजीद की तिलावत मे एक खास समय तै कर लेना भी सही है। अधिकाश सहावा फ़ज्र की नमाज़ के वाद क़ुरआन मजीद पढा करते थे। समय तै कर लेने में नागा (वकफा) भी नही होता।

सही यह है कि कुरआन मजीद की तिलावत और पढ़ने के लिए किसी उस्ताद से इजाज़त लेना या उसको सुनाना शर्त नही है, हां इतना ज़रूरी है कि कुरआन मजीद सही पढ़ता हो। यदि इतनी योग्यता अपने मे न देखे तो उसको जरूरी है कि किसी उस्ताद को सुना दे, या उस मे पढ़ ले। (इतकान)

यह भी शर्त नही है कि कुरआन मजीद के मायने (अर्थ) समझ लेता हो। और यदि क़ुरआन मजीद में एराब (मात्राएं) न हों तव भी उसके सही एराब पढ लेने पर कादिर (सामर्थ) हो।

सही यह है कि कुरआन मजीद की तिलावत की नेमत केवल इन्सान को दी गयी है, शैतान आदि इसकी तिलावत पर क़ादिर नहीं है, बल्कि फ़रिश्तों को भी यह नेमत नसीव नहीं हुई। वे भी इस आशा में रहते हैं कि कोई इन्सान तिलावत करे और वे सुनें। हा मोमिन जिनको अलवत्ता यह नेमत मिली है और वे तिलावत पर कादिर (सामर्थ) हैं (नफतुल मरजान-इतक़ान)

शायद इससे हज़रत जिव्रील अलैहि० अलग हो, इस लिए कि उनकी निस्वत (वारे में) हदीसो में आया है कि हर रमज़ान मे नवी सल्ल० से कुरआन मजीद का दौर किया करते थे और हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्कलानी रह० ने फ़तहुल वारी में व्याख्या कर दी है कि कभी वे पढ़ते थे और हज़रत (सल्ल०) सुनते थे और कभी आप (सल्ल०) पढते थे और वे (जिव्रील अलैहि०) सुनते थे। (वल्लाहु आलम)

मस्नून है कि पढने वाला शुरू करने से पहले,

'अअूज़ुविल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम-
-विस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' ० — أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

पढ़ ले और यदि पढ़ने के दौरान कोई दुनिया की बात करे तो उसके वाद फिर इसको पढ़ ले।

कुरआन मजीद की तिलावत मुसहफ़ (कुरआन) में देखकर ज्यादा सवाव रखती है वजाए ज़वानी पढ़ने के। इस लिए कि वहा दो इवादतें होती हैं एक तिलावत, दूसरे कुरआन मजीद का दीदार (दर्शन)।

कुरआन मजीद पढने की हालत में कोई वात करना या और किसी ऐसे काम मे लगना जो दिल को दूसरी तरफ फेरे मकरूह है। कुरआन मजीद पढ़ते समय अपने को पूरी तरह उसी की तरफ लगा दे, न यह कि ज़वान से शब्द जारी हो और दिल में इधर-उधर के ख़्याल।

कुरआन मजीद की हर सूर: के शुरू मे विस्मिल्लाह कह लेना मुस्तहव (वेहतर) है। मगर सूर वराअत के शुरू में विस्मिल्लाह न पढ़ना चाहिए। पारा व अलम् मे जो सूर. तौबा 'वरा अतुम्मिनल्लाहि' से शुरू है इस पर विस्मिल्लाह नही लिखी है इस का हुक्म यह है कि यदि कोई ऊपर से पढता चला आता है तो इस पर पहुंच कर विस्मिल्लाह न पढे, वैसे ही शुरू कर दे और यदि किसी ने इसी जगह से शुरू किया है या कुछ सूर: पढ कर पढना वन्द कर दिया था फिर बीच में से पढ़ना शुरू किया तो इन दोनों हालतो में विस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम पढ़ना चाहिए।

वेहतर यह है कि कुरआन मजीद की सूरतों को उसी तरतीव से पढ़े जिस तरतीव से क़ुरआन मजीद में लिखी है, हां वच्चो के लिए आसानी के उद्देश्य से सूरतों का विना तरतीव पढ़ाना, जैसा कि आजकल पारा अम्-म य-त-सा अलून मे कायदा है विना कराहत जायज़ है। (रद्दुल मुहतार)

और आयतो का विना तरतीव पढ़ना आम सहमति से मना है। (इतकान)

कुरआन मजीद की विभिन्न सूरतो की आयतों को एक साथ मिला कर पढ़ने को उलेमा ने मकरूह लिखा है इस वजह से कि हज़रत बिलाल रज़ि० को आप (सल्ल०) ने इस से मना फ़रमाया था ।

(इतकान आदि)

मगर मेरे ख्याल में यह कराहत (मनाही) उस समय होगी जब इन आयतों की तिलावत सवाब की वजह से हो । इस लिए कि झाड-फूंक के वास्ते विभिन्न आयतो का एक साथ पढना नबी सल्ल० और उन के सहाबा से सही तरह से साबित है और हर एक आयत के गुण अलग-अलग हैं अत. जो खास असर हमें दरकार है वह जिन-जिन आयतो मे होगा हम को उन का पढना ज़रूरी है ।

क़ुरआन मजीद अत्यन्त मधुर आवाज़ से पढना चाहिए जिस से जितना हो सके । सही हदीसो मे आया है कि नबी सल्ल० ने फरमाया कि जो व्यक्ति कुरआन मजीद मधुर आवाज़ से न पढे, वह हम मे से नही है । (दारमी) मगर जिस की आवाज़ ही अच्छी न हो वह मजबूर है । और कुरआन किरअत के क़ायदों से पढ़ना चाहिए । राग से पढ़ना और गाना कुरआन मजीद का सहमत रूप से मकरूहे तह-रीमी है । कुरआन मजीद ठहर-ठहर कर पढ़े । जल्दी-जल्दी पढ़ना भी मकरूह है ।

जो व्यक्ति कुरआन मजीद के मायने समझ सकता हो उस को कुरआन मजीद पढते समय उस के मायनों पर गौर करना और हर मज़मून (विषय) के मुताबिक अपने में उस का असर पैदा करना सुन्नत है । जैसे, जब कोई व्यक्ति ऐसी आयत पढे जिसमें अल्लाह पाक की रहमत का ज़िक्र हो तो रहमत मांगे और अज़ाब का ज़िक्र हो तो पनाह मांगे । कोई जवाब मांगने वाला मज़मून हो तो उसका जवाब दे । जैसे हज़रत नबी सल्ल० सूर. वत्तीन के अन्त में जब पहुचते तो 'बला व अना अला ज़ालि-क मिनश्शाहिदीन' पढ लेते (तिर्मिज़ी) या सूर: कियामत के अन्त में जब पहुचते तो फरमाते कि—'बला' (तिर्मिज़ी) सूर: फातिहा को जब खत्म करते तो आमीन कहते । लेकिन यह जवाब देना या दुआ मांगना उस समय मसनून है कि कुरआन मजीद फर्ज़ नमाज़ मे या तरावीह मे न पढा जाता हो । यदि फर्ज या तरावीह मे पढा जाता हो तो फिर जवाब न देना चाहिए । (रद्दुल मुख्तार)

कुरआन मजीद पढ़ने की हालत में रोना मुस्तहब है । यदि रोना न आए तो अपनी संगदिली (पत्थरदिली) पर अफसोस करे ।

सूर: वज़्ज़ुहा के बाद से अन्त तक हर सूर: के खत्म होने के बाद अल्लाहु अक्बर कहना मुस्तहब हैं । कुरआन मजीद खत्म होने के बाद दुआ मागना मुस्तहब है । इस लिए कि नबी सल्ल० से रिवायत है कि हर खत्म के बाद दुआ कुबूल होती है । (इतक़ान)

शबे क़द्र का बयान

हदीस से मालूम होता है कि शबे कद्र रमज़ान शरीफ की अन्तिम ताक़ (दो से न कटने वाले हिन्द से) रातो, इक्कीसवी से सत्ताइसवी तक है (अल-गैबु ज़िन्दल्लाह) लेकिन हम २७ रमज़ान की रात शबे कद्र मानते है । यह बहुत बरकत वाली रात है । हमें चाहिए कि इस मुबारक और बरकत वाली रात में दिल की गहराई व नेकनीयत के साथ कुरआन की तिलावत करे और अल्लाह से दुआ मागे क्योकि इस रात को हर बात का फैसला होता है हर एक जानदार की जान व मौत, रिज़्क़ का अंदाज़ा होता है कि इतना शेष और इतना खत्म हो चुका है । बुखारी व मुस्लिम शरीफ मे इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि काबिले रश्क वह आदमी हैं कि जो रात और दिन के समय में कुरआन की तिलावत करता है । शबे मेअ्राज और शबे बराअत में भी क़ुरआन मजीद की तिलवात और इबादत करना अफ्ज़ल (अच्छा) है इससे दिल की मुरादें (इच्छाएं) पूरी होती हैं और दुआए कुबूल होती है ।

मनाज़िले क़ुरआन शरीफ़

क्रम सं०	सूर:	सूर: सं०	पृष्ठ सं०	पार: सं०	नाम पार:
१	अल-फातिह:	१	१-१६२		
२	अल-माइद:	५	१६४-३२४	६	ला युहिब्बुल्लाह
३	यूनुस	१०	३२६-४४४	११	याअ तजिरुना
४	बनी इसाइल	१७	४४६-५७८	१५	सुब्हानल्लज़ी
५	अश शोअरा	२६	५८०-७०६	१६	वकालल्लज़ी-न
६	वस्साफ़्फ़ात	३७	७०८-८२०	२३	वमालि-य
७	क़ाफ	५०	८२२-६७३	२६	हामीम

सजदाते तिलावत

क्रम सं०	पारा	सूर:	सजदे वाले शब्द	सजदे का स्थान	पृष्ठ सं०	आयत
१	६	अल आराफ	यसजुदून	यसजुदून	२७६	२०६
२	१३	अर-रअद	वलिल्लाहि यस्जुदु	वल आसाल	३६६	१५
३	१४	अन-नह्ल	"	मा युअ् मरू-न	४३०	४६-५०
४	१५	बनी इस्राईल	यख़िर्रून लिलअ-ज़्क़ानि	ख़ुशूआ	४६४	१०७-१०६
५	१६	मरयम	ख़र्रू सुजदा	व बुकया	४८८	५८
६	१७	अल हज	यसजुद लहु	मा-यशा-अ	५२८	१८
७	१७	अल हज' शाफयीयो में	वसजुदू	तुफ़लिहून	५४०	७७
८	१६	अल फुर्कान	असजुदू	नुफ़ूरा	५७८	६०
६	१६	नमल	अल्लाय सजुदू	रब्बिल अरशिल अज़ीम	६००	२५-२६
१०	२१	अस-सजदा	ख़र्रू असजुद	ला यस्तकबिरू-न	६६०	१५
११	२३	साद'	व ख़र्र राकिआ	व अना-ब	७२२	२४
१२	२४	हामीम सजदा	वसजुदू लिल्लाहि	ला यसअमऊना	७६४	३७-३८
१३	२७	अन-नज्म	फस जुदू	वाअ बुदू	८४०	६२
१४	३०	अल-इन्शिकाक़	ला यस्जुदू-न	ला यस जुद्ना	८४६	२१
१५	३०	अल अलक	वसजुद	वक़तरिब	६६२	१६

१. इन दो सज्दों में मतभेद है। सूर. २२ आयत ७७ पर इमाम शाफअी रह० के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम अबू हनीफा रह०के नज़दीक नहीं है और सूर: ३८ आयत २४ पर इमाम अबू हनीफा के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम शाफअी के नज़दीक नही है। वहरहाल दोनो आलिमो के नज़दीक सज्दों की कुल तादाद १४ ही है।

क़ुरआन मजीद को कितने समय में ख़त्म किया जाए

अल्लाह के रसूल नबी सल्ल० ने फरमाया जिसने तीन दिन से कम मे कुरआन मजीद खत्म किया वह कुछ न समझ सका। इमाम अबू हनीफा से नकल है कि जिसने हर साल मे दो बार कुरआन मजीद खत्म किया उसने हक अदा किया। इस लिए हज़रत (सल्ल०) ने वफात (इन्तकाल) के साल में दो ही बार खत्म किया था। हज़रत अली रज़ि० फरमाते हैं कि उस इबादत (उपासना) में कुछ बेहतरी नही है जिसमें समझ न हो और न उस किरअत (पढने मे) मे जिस मे फिक्र (सोच) न हो। इमाम गज़ाली रह० फरमाते है, अपने आप को कुरआन मजीद के खत्म करने की गिनती पर हावी न करो। बल्कि एक आयत का सोच कर पढना सारी रात मे दो कुरआन खत्म करने से वेहतर है।

हज़रत अबूज़र गिफारी रज़ि० कहते हैं कि एक बार नबी सल्ल० हमारे साथ खडे हुए तो आप (सल्ल०) यह आयत बड़ी देर तक पढते रहे--

(इन तुअज्ज़िबहुम फ इन्नहुम अिबादुक)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने मुझे पाच दिन से कम समय मे पूरा कुरआन मजीद खत्म करने की इजाज़त नही दी। (हदीस सही बुखारी)

तिलावत के सज्दों का बयान

सज्दए तिलावत उन्ही लोगो पर अनिवार्य है जिन पर नमाज़ अनिवार्य है। कज़ा (छूट हुई) नमाज़े, हैज़ (मासिक धर्म) वाली औरत पर वाजिब नही। अवैध (नाबालिग) और ऐसे मजनू (दीवाने) पर वाजिब नही जिसका जुनून (दीवानापन) एक दिन रात से ज़्यादा हो गया, चाहे उसके वाद खत्म हो या नही। जिस मजनू का जुनून (दीवानापन) एक दिन रात से कम रहे, उस पर वाजिव है। इसी तरह मस्त और जुनबी (वह व्यक्ति जिस पर गुस्ल वाजिब हो) पर भी।

तिलावत के सज्दे के सही होने की वही सब शर्तें हैं जो नमाज़ के सही होने की हैं अर्थात तहारत (पाकी) और सतर (अर्थात आवश्यक अंगो को ढाकना) और नीयत व किब्ले का सही होना। तहरीमा (तक्बीर) इसमे शर्त नही हैं। इसकी नीयत मे आयत का तअय्युन (निर्धारण) शर्त नही कि यह सज्दा फला आयत के कारण से है और यदि नमाज़ मे सज्दे की आयत पढी जाए और तत्काल सज्दा किया जाए तो नीयत भी शर्त नही। (रद्दुल मुहतार)

जिन चीज़ो से नमाज़ फासिद (खराब) हो जाती है उन चीज़ो से सज्दए सह्व (भूल का सज्दा) मे भी खराबी आ जाती है और फिर इसका इआदा (दोबारा करना) वाजिब (अनिवार्य) हो जाता है हां इस कदर अन्तर है कि नमाज़ मे कहकहा से वुज़ू टूट जाता है और इसमे कहकहे से वुज़ू नही टूटता और औरत की महाज़ात भी यहां मुफसिद (रुकावट) नही।

तिलावत का सज्दा यदि खारिज नमाज (नमाज से बाहर) मे वाजिब हुआ हो तो बेहतर है कि तुरन्त अदा कर ले और यदि उस समय अदा न करे तब भी जायज है मगर मकरूह है और यदि नमाज मे वाजिब हुआ तो उसका अदा करना तुरन्त वाजिब (अनिवार्य) है, देरी की इजाजत नहीं है।
(रद्दुल मुहतार)

खारिजे नमाज (नमाज से बाहर) का सज्दा नमाज में और नमाज का खारिज (बाहर) में, बल्कि दूसरी नमाज मे भी अदा नही किया जा सकता। अत: कोई आदमी नमाज मे सज्दे की आयत पढे और सज्दा करना भूल जाए तो इसका गुनाह उस के जिम्मे (सर) होगा जिस की तदबीर (इलाज) इसके सिवा कोई नही कि तोबा करे, या अरहमुर्राहिमीन (रहम करने वाला) अपने फ़ज्ल व करम (दया दृष्टि) से माफ फरमा देगा। (बहरुर्राइक)

यदि कोई आदमी नमाज की हालत मे किसी दूसरे से सज्दे की आयत सुने, चाहे वह दूसरा भी नमाज मे हो या न हो यह सज्दा खारिजे नमाज(नमाज से बाहर)का समझा जाएगा और नमाज के अन्दर वह अदा नही किया जाएगा, बल्कि खारिजे नमाज मे।

यदि सज्दे की आयत तिलावत एक ही मज्लिस (सभा) में कई बार की जाए तो एक ही सज्दा वाजिब (अनिवार्य) होगा और यदि एक सज्दे की आयत की तिलावत की जाए, फिर वही आयत अलग-अलग लोगों ने सुनी जाए, तब भी एक ही सज्दा वाजिब (अनिवार्य) होगा। यदि सुनने वालो की मज्लिस न बदले तो एक ही सज्दा वाजिब (अनिवार्य) होगा, चाहे पढने वालों की मज्लिस बदल जाए या न बदले और यदि सुनने वालो की मज्लिस बदल जाए तो उस पर कई सज्दे वाजिब होंगे, चाहे पढने वालों की बदले या न बदले। यदि पढने की बदल जाएगी तो उस पर भी कई सज्दे वाजिब होगे। (बहरुर्राइक)

यदि एक सज्दे की आयत कई बार एक ही मज्लिस मे पढी जाए तो अख्तियार (इच्छा) है कि सब के बाद सज्दा किया जाए या पहली ही तिलावत के बाद, क्योंकि एक ही सज्दा अपने पहले और बाद की तिलावत के लिए काफ़ी होता है मगर एहतियात (सावधानी) इसमें है कि सबके बाद किया जाए। (बहरुर्राइक)

यदि सज्दे की आयत नमाज मे पढी जाए और तुरन्त रुकूअ किया जाए या दो तीन आयतों के बाद और इस रुकूअ मे झुकते समय सज्दे की नीयत भी कर ली जाए तो सज्दा अदा हो जाएगा और इसी तरह यदि सज्दे की आयत की तिलावत के बाद नमाज का सज्दा किया जाए, तब भी यह सज्दा अदा हो जाएगा और इसमे नीयत की भी जरूरत न होगी। (दुर्रे मुख्तार, रद्दुल मुहतार आदि)

जुमा और ईदैन (दोनो ईदें) और धीमी आवाज वाली नमाजो मे सज्दे की आयत नही पढना चाहिए, इसलिए कि सज्दा करने मे मुक्तदियो (नमाज पढने वालों) के इश्तिबाह (संदेह) का डर है। (बहरुर राइक)

किसी सूर: का पढना और खास कर (मुख्य रूप से) सज्दे की आयत को छोड देना मकरूह है।
(बहरुर राइक आदि)

यदि हाजिरीन (उपस्थित जन) वुज़ू सहित सज्दे के लिए मुस्तअिद (तैयार) न बैठे हो तो सज्दे की आयत का धीमी आवाज से तिलावत करना बेहतर है इसलिए कि वे लोग इस समय सज्दा न करेंगे और दूसरे समय शायद भूल जाएं तो गुनहगार होंगे। (दुर्रे मुख्तार आदि)

तिलावत के सज्दे का तरीका यह है कि किब्ला रू (किब्ले की ओर होकर) नीयत करके अल्लाहु अकबर कहे और सज्दा करे। फिर उठते समय अल्लाहु अकबर कह कर उठे। और खड़े होकर

सज्दा करना मुस्तहब है। तिलावत का सज्दा कई लोग मिल कर भी कर सकते हैं इस तरह कि एक आदमी को इमाम की तरह आगे खडा करे और स्वय मुक्तदियो (नमाज़ अदा करने वाले) की तरह लाइन बना कर पीछे खडे हो और उसकी पैरवी (अनुसरण) करे। यह सूरत असल मे जमाअत की नही है। इसीलिए यदि इमाम का सज्दा किसी वजह से फासिद (खराव) हो जाए तो मुक्तदियो (पीछे वालो) का फासिद (खराब) न होगा और इसी कारण से औरत का आगे खडा कर देना भी जायज़ है।

सज्दे की आयत यदि फर्ज नमाज़ो मे पढी जाए तो उसके सज्दे मे नमाज़ वाले सज्दे मे नमाज़ वाले सज्दे की तरह 'सुब्हा-न रब्बियल आला' कहना बेहतर है और नफ्ल नमाज़ो मे ख़ारिजे नमाज़ (नमाज़ से बाहर) मे यदि पढी जाए तो उस के सज्दे में अख़्तियार (इच्छा) है कि 'सुब्हाना रब्बियल आला कहे और तस्बीहे जो हदीसो में आयी हैं, वे पढ़ें। इस तस्बीह की तरह—

'सजदा वजही-य लिल्लजी ख-ल-कहू व सव्वरहू व वशक्क समअहू व बसरहू बिहौलिही व कुव्वतिहि फतबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिकीन०'

और दोनो को जमा कर ले तो और भी बेहतर है।

देवनागरी (हिन्दी) में क़ुरआन मजीद को सही पढ़ने का तरीका

अरबी अक्षरों की आवाज़ का देवनागरी वर्णमाला

ث सा स	ت ता त	ب बा ब	ا अलिफ अ
د दाल द	خ खा ख़	ح हा ह़	ج जीम ज
س सीन स	ز जा ज़	ر रा र	ذ ज़ाल ज
ط तो त़	ض जाद ज़	ص स़ाद स़	ش शीन श
ف फा फ़	غ ग़ैन ग़	ع अैन अ़	ظ जो ज
م मीम म	ل लाम ल	ك काफ क	ق काफ क़
ء हम्जा अ	ه हा ह	و वाव व	ن नून न
	ة गोल ते त़	ى या य	

अिल्मे क़िरअ़त यानी मखारिजे हुरूफ का बयान (क़ुरआन के अक्षरों का उच्चारण संस्थान)

ه ، ا	अ, ह	हलक (कण्ठ) के अगले हिस्से से।
ح ، ع	अ, ह	बीच (मध्य) हलक़ से)।
غ ، خ	ख, ग	इतेहा-ए-हलक (हलक के अन्तिम भाग से)
ق	क	जबान की जड और ऊपर के तालू की मदद से।
ك	क	ज़बान के बीच और ऊपर के तालू से थोडा सा 'क़' (काफ) के मख़रज (उच्चारण) से हट कर।
ی، ش، ج	ज, श, य	ज़बान के बीच के हिस्से और तालू के बीच हिस्से के संयोग से।
ض	ज़	ज़बान के किनारे और दांतो की गिर- के पास से यानी सारे किनारे ज़बान के लगाने से बाईं ओर के ऊपर दाढ़ो की जड़ से या दाहनी तरफ़ से, मगर बाईं तरफ से आसान है।
ل	ल	ज़बान की नोक और तालू के संयोग से।
ن	न	ज़बान के सिरे और ऊपर के दांतों के नीचे से।
ر	र	ज़बान के सिरे और ऊपर वाले सामने के दांतो के नीचे मे 'न' के स्थान से कुछ आगे।
ط ، د ، ت	त, द, त	ज़बान की नोक और ऊपर के दांतो की जड से मिला कर।
س، ذ، ح	ज, ज़, स	ज़बान की नोक और अगले दातों के किनारे से।
ف	फ	नीचे के होठ के अन्दर ऊपर के दांतो के सिरे जब छूते हैं।
م، ب	ब, म	दोनो होठो के बीच मे से।
الف	अलिफ	'अ' सिर्फ एक हवा है कि अन्दर से निकलती है।
ج، ص، س	स, स, ज	ज़बान की नोक और अगले दांतो के बीच मे।
و	व	दोनों होठो को करीब लाकर भी 'फ' की तरह छूना नही चाहिए।

क़ुरआन मजीद के रुमूज़े औक़ाफ़

हर एक भाषा के लोग जब बात-चीत करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं और कही नही ठहरते, कहीं कम ठहरते हैं कही ज़ियादा और इस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और सही मतलब समझने-समझाने मे बहुत दखल है। कुरआन मजीद की इबारत (अरबी-लेख) भी बोल-चाल के अन्दाज़ मे है इस लिये अह्ले इल्म (ज्ञानियो) ने इसके ठहरने, न ठहरने की अलामतें (चिह्न) मुकर्रर किए हैं। जिन्हें 'रुमूज़े औकाफ' कहते हैं। खास ध्यान रखने की बात यह है कि आम तौर पर सभी ज़बानों (भाषाओ) मे ठहरने के निशान होते हैं, लेकिन कुरआन मे ठहरने और न ठहरने दोनों तरह के निशान होते हैं। जैसा कि हम बोलते हैं 'उठो मत, बैठो' इस जुमले (वाक्य) मे अगर कौमा लगा कर लिखे जैसे 'उठो, मत बैठो' इस तरह लिखने और बोलने मे उठने का हुक्म है और अगर इस जुमले को इस तरह लिखे जैसे 'उठो मत, बैठो' इस तरह लिखने और पढ़ने मे बैठने का हुक्म है, इस मिसाल से हमको खुद अंदाज़ा करना चाहिये कि अरबी जो कुरआन की भाषा है जिसके पढ़ने मे किस कद्र एहतियात (सावधानी) की ज़रूरत है और तिलावते कुरआन (कुरआन पाठ) मे

रुमूज़े आकाफ का लिहाज़ रखना किस कद्र जरूरी है ताकि किताब की मशा में फ़र्क न आने पाये। कुरआन मजीद के रुमूज़े औकाफ यह है (O) आयत, (م)मीम, (ط)तो, (ج)जीम, (ز)ज़ा, (ص) साद, (صلے) सले, (قف) काफ़, (صل) सिल, (قف) काफफे, (سکتة) सक्तः, (وقفة) वकफ (لا) ला, (ق) काफ, (۵) कूफ़ी आयत का निशान, (∴) मुआनिका का निशान, (~ ' | ') मद, और (~ ' T ') बडी मद। इनको सिर्फ़ निशानिया समझना चाहिये। यह कुरआन के मत्न का हिस्सा नही है अगर हम इसको हिन्दी में लिखते तो ला इल्मी मे या रवानी (तेजी) में कोई आयतो में शामिल पढ लेता इस भूल से सावधान रहने के लिये हम ने इन को अरबी रस्मुलखत मे किताबत (लिखाई) किया है।

रुमूज औक़ाफ़ से मुताल्लिक़ जरूरी मालूमात यह हैं—

O	( )	जहा बात पूरी होती है वहां (अरबी मत्न मे) छोटा गोल दायरा बनाया जाता है यह हकीकत में गोल ते (ة) है। यह वक़्फ़े-ताम की अलामत है यानी इस पर ठहरना चाहिये इस निशानी को आयत कहते हैं। पाठको की सुविधा के लिये इस निशान के बीच आयत का नंबर (संख्या) भी दिया गया है जैसे आयत (२०)।
م	मीम्	यह वक़्फ लाजिम का निशान है। इस पर जरूर ठहरना चाहिये अगर न ठहरा जाये तो अह्तमाल (भय) है कि मतलब उलट हो जाये। मिसाल उदाहरण के तौर पर कोई कहे—आओ, मत जाओ। इस तरह कहने में आने का हुक्म है और जाने की मनाई। लेकिन अगर कोई कहे—आओ मत, जाओ। तो मतलब पहले के बिलकुल उल्ट हो जाता है इस आखिरी जुमले में जाने का हुक्म है।
ط	तो	यह वक़्फे मुतलक का निशान है इस पर ठहरनाचाहिये। फिर भी यह ठहराव वहां होता है जहां ठहरने के बावजूद अभी कहने वाला कुछ और बात कहना चाहता है।
ج	जीम	यह वक़्फ़े जायज़ का निशान है। यहां ठहरना ज्यादा बेहतर है, लेकिन न ठहरने को भी जायज (अनुमत) माना गया है।
ز	ज़े	यह वक़्फ मुजव्वज़ का निशान है। यहां न ठहरना ज्यादा अच्छा है।
ص	साद	यह निशान वक़्फ़ मरख़्ख़स का है। यहा न ठहरना यानी मिला कर पढ़ना चाहिये, लेकिन अगर कोई थककर रुक जाये तो उसकी छूट है। ध्यान रहे कि, ز(ज़ा)की निस्बत(अपेक्षा) ص (साद)पर मिला कर पढना ज़्यादा पसन्द किया गया है।
صلے	सले	यहा मिला कर पढना बेहतर है।
ق	काफ	यह कील-अलैहिल-वकफ़ का खुलासा है। यहां नही ठहरना चाहिये।
صل	सल्	यह क़द-यू-सल का निशान है यहा कभी ठहरा भी जाता है, और कभी नही। लेकिन ठहरना बेहतर है।
قف	किफ्	यह लफ्ज़ (शब्द) किफ् है यानी ठहर जाओ। यह निशान वहा इस्तेमाल किया जाता है जहां पढने वाले को मिला कर पढते चले जाने का अदेशा हो।
س یا سکتة	सीन या सक्तः	यह सक्तः का निशान है यहां मामूली (साधारण) सा ठहरना चाहिये, लेकिन सास न टूटने पाए।
وقفة	वक़्फः	यह लम्बे सक्तः का निशान है। यहां सक्त के मुकाबले जियादा ठहरना चाहिये, लेकिन सास न टूटने पाए सक्तः और वक़्फ मे सिर्फ यह फ़र्क है कि सक्तः मे कम

		ठहरना होता है, वक्फ़ मे ज्यादा ।
لا	ला	ला के मानी 'नही' के हैं । यह निशान कही आयत पर होता है और कही इबारत के अंदर । यह जब किन्ही दो शब्दो के बीच मे हो तो वहां हरगिज़ नही ठहरना चाहिये । आयत के ऊपर हो तो इस में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है, (हमने हिन्दी कम्पोज़ में आयत के निशान से पहले दिया है) एक राय है कि 'ठहर जाये,' दूसरी 'न ठहर जाये' लेकिन ठहरा जाये या न ठहरा जाये इस से मतलब मे फ़र्क नही आता । ठहरना उसी जगह नही चाहिये जहां इबारत के अंदर लिखा हो ।
قف	काफ़	यह कज़ालिक का निशान है यानी यहां यह समझना चाहिए कि इस से पहले जो निशान आ चुका है उसी के मुताबिक (अनुसार) यहां भी रुकना या न रुकना मुनासिब है ।
۵	निशान	यह कूफ़ी आयत का निशान है और मतलब वही है जो ( ) आयत का है ।

नोट—ध्यान रखना चाहिए कि जहां कई निशान एक साथ हों वहां उनमे से किसी भी निशान पर अमल किया जा सकता है लेकिन बाद वाले निशान का हुक्म मानना ज्यादा उचित है

∴	निशान	यह मुआनिक: की अलामत है हमेशा यह दोहरा यानी दो जगह नज़र आयेगा । इसका मतलब यह है कि इनके बीच में लिखे शब्दो को चाहे इनसे पहले ही इबारत के साथ जोड़ कर पढ़ें और चाहे इनसे बाद वाली इबारत के साथ । दोनो मतलब जायज़ (मान्य) है । हासिल यह हुआ कि दोनों निशानो मे से एक जगह ठहरे तो दूसरी जगह मिला कर पढे । न दोनो जगह ठहरा जा सकता है और न दोनो जगह मिलाया जा सकता है । यह मुआनिक: दो तरह का होता है (१) अिन्दल् मुतअख़्ख़िरीन (२) अिन्दल मुतकद्दमीन ।
|	मद (छोटी)	यह छोटी मद का निशान है । मद को सस्कृत मे 'प्लुत' कहते हैं जिस अक्षर पर यह निशान होगा उसको इतना खीच कर पढना चाहिए कि तीन अलिफ के बराबर हो ।
T	मद (बडी)	यह बडी मद का निशान है । जिस अक्षर पर यह निशान होगा उस को इतना खीच कर पढ़ना चाहिए कि चार बार के बराबर हो । जैसे लिखा हो وَجَآءَ (व-जा-अ) तो 'जा' जो कि ज+अ से बना है, के अ को ४ अ के बराबर खीचकर पढ़ना चाहिए । इसी तरह छोटी मद को भी ऊपर लिखे कायदे (नियम) के अनुसार पढना चाहिए । बडी मद को पढने का एक तरीका और भी है । जैसे किसी शब्द के अक्षर पर बड़ी मद हो और उस के आगे (अलिफ) हो और अलिफ के आगे 'ـّ' (तश्दिद) हो तो इस को सात अलिफ के बराबर पढना होगा जैसे وَلَا الضَّآلِّيْنَ (वलज़्-ज़ाल्लीन), सही मख़रज (शुद्ध पाठ) के लिए क़ारी (कुरआन पाठ के विद्वानो) से सहायता लेना चाहिए ।
✶	रुकूअ्	यह रुकूअ (विराम) का निशान है । अगर हाशिये पर ऐसा निशान '✶ रु १/७/आ ६' लगा हो तो इसका मतलब है कि यह सूर: तौबा का पहला रुकूअ् है, पार. १० का सातवा रुकूअ् है और इस रुकूअ् मे ६ आयते हैं ।

●	पार: $\frac{1}{4}$, $\frac{1}{2}$, $\frac{3}{4}$	हर पार: को पढ़ने की आसानी के लिए चार बराबर हिस्सो में बांट दिया गया है। रुबअ़ (चौथाई), निस्फ (आधा) और सुल्स (तीन चौथाई) पर यह निशान दिया गया है। इसी तरह पूरे कुरआन को सात मंज़िलों में बांटा गया है जो हर सफ़ह: (पृष्ठ) पर दर्ज (अंकित) है।
◙	आधा कुर्आन	यह निस्फ़ुल कुरआन (आधा कुरआन) का निशान है। देखिये पृष्ठ ४६८, सूर: कह्फ़ आयत १६।
□	सज्द:	यह सज्द: का निशान है। क़ुरआन मजीद में चौदह मुकाम ऐसे है जहा सज्द: करने की हिदायत है। पढ़ने और सुनने वाले दोनों पर सज्द: करना लाज़िम है। घुटने टेककर हाथों की हथेलियां और दोनों हाथ की पांचो उगलिया ज़मीन पर रख कर और हाथो के बीच में माथा और नाक ज़मीन पर टेककर ज़बान से खुदा की पाकीज़गी (पवित्रता) बयान करने को सज्द: कहते हैं। सज्द: की तस्बीह (सज्द: में पढ़ने वाले शब्द) हमने सज्द: तिलावत के बयान में दी है। (मुकद्दमा कुरआन मजीद पृष्ठ नं० १५)

क़ुरआन मजीद के रस्मुलख़त से सम्बन्धित ज़रूरी याद दहानी

(१) कुरआन मजीद की तह्रीर (लिखाई) से बेखबरी की वजह से अक्सर लोग कुरआन मजीद गलत पढ़ते है। चद (कुछ) जरूरी मिसाले लिखी जा रही है। कुरआन मजीद के चंद अल्फ़ाज़ (शब्द) में (و) वाव लिखा जाता है लेकिन पढा नही जाता जैसे (زكوٰة) ज़क्वात, (حيوٰة) हैवात को जकात या हयात पढ़ा जाता है यानी (و) वाव को न पढना चाहिए और कुछ जगह (ى) य लिखी जाती है लेकिन पढी नही जाती बल्कि उस के बदले में अलिफ् पढा जाता है जैसे (عيسٰى موسٰى) मुसाय ईसाय वग़ैर: को (عيسا موسا) मूसा, ईसा पढना चाहिए इस को अलिफ् मकसूरा कहते है और बाज जगह अलिफ् मकसूरा की अलामत खडे ज़बर (ٰ) के अलावा कुछ नही होती तो इस खडे ज़बर को भी एक अलिफ़ के बराबर पढना चाहिए जैसे (اسحٰق رحمٰن) को (اسحاق ، رحمان) रह्मान, इस्हाक़ पढना जरूरी है।

(२) यह बात याद रहे कि अरबी ज़ुबान में 'याये मजहूल नही होती। मगर कुरआन मजीद मे सिर्फ एक जगह पार. १२ सूर. हूद रुकूअ ४, आयत ४१ मे एक लफ़्ज मज्रीहा लिखा है उस का उच्चारण (तलफ्फ़ुज) मज्रीहा नही हे "मज्रेहा" है।

(३) नीचे लिखे दोनो लफ़्ज़ो मे जो 'स़' है इसमें (हफ्स़) स़ाद (स़) के नज़दीक सीन (स) पढ़ना चाहिये.— युब्सुतु—पार. २ सूर. बकर. आयत २४५ मे। बस़्ततन्—पार ८ सूर. अअ़्राफि आयत ६९ मे।

(४) नीचे लिखे दोनो लफ़्ज़ो में जो (ص साद) 'स' है इनमें (س सीन) 'स' और (ص) साद (स) दोनो पढने का इख़्तियार है.—हुमुल् मुसैतिरून—पार. २७ सूर. तूरि आयत ३७ मे। बिमुसैतिरिन्—पार ३० सूर. ग़ाशिय: आयत २२ मे।

(५) कुत्बुजद्—क, त, ब, ज और द के मुतहर्रिक (हलन्त) अक्षर आने पर भी इनमें मामूली सा सस्वर जैसी हरकत पढना चाहिए। जैसे 'अिब्राहोम'। इसमे ब् को थोडा सा हिला कर उच्चारण करना चाहिए।

(६) यह भी याद रहे कि कुरआने करीम मे अक्सर जगह (ا) अलिफ लिखा जाता है मगर पढा नही जाता जैसे कि (ا) अलिफ जो अलामत जमा के लिए हो जैसे قالوا (कालू'अ) मे आखरी अलिफ पढा नही जाता और أنا (अना) को أنَ (अ-न) पढा जाएगा मगर जब कही कुरआन मजीद में (ءنا) अना (हम्ज़ा, नुन, अलिफ से) लिखा हो वहा आखरी अलिफ ज़रूर पढा जाएगा जैसे جاءنا نذير जाअनान-जीरुन

'अना'—क़ुरआन मजीद मूल (मतन) में जहां पर अलिफ् सहित 'अना' लिखा हुआ है, जो ज़मीर (सर्वनाम) है, वहा नून (न) के साथ का आख़िरी अलिफ् (ा) छोड कर 'अ-न' पढ़ना चाहिए। हिन्दी कुरआन मजीद के सफा ४६४ लाईन २३, सफा ५१२ लाईन २१, सफा ५१८ लाईन १ सफा ५२२ लाईन १६, सफा ५३४ लाईन २४, सफा ५४६ लाईन २७, सफा ५०२ लाईन १६, सफा ५६० लाईन २१, सफा ५६० लाईन २, सफा ६०२ लाईन १७, सफ़ा ६०२ लाईन २०, सफा ६१० लाईन १५, सफा ६३८ लाईन २१, सफा ७२६ लाईन १४, सफा ७२६ लाईन १६, सफा ७०६ लाईन २४, सफा ७२८ लाईन ४, सफा ७४८ लाईन २१, सफा ७५६ लाईन २२, सफा ७८४ लाईन २, सफा ७६८ लाईन २३, सफा ८२६ लाईन ५, सफा ८६६ लाईन २१, सफा ८७४ लाईन १७, सफा ६०० लाईन २२, सफा ६३६ लाईन २५, सफा ६७० लाईन ६, में 'अना' ज़मीर(सर्वनाम)है। पाठक वहां कोई निशान लगा लें ताकि उसे 'अ-न' पढ़ें न कि 'अना'। फिर ध्यान दिलाना ज़रूरी है कि 'अन' को हिन्दी-उर्दू के तर्ज़ पर 'अन्' न पढ़ें बल्कि अरबी-संस्कृत के तर्ज़ पर 'अ-न' सस्वर ही पढ़ें। लेकिन सूरत २५ 'अल्फुर्कान' पारः १६ आयत ४६ पृष्ठ ५७६ पर 'अनासीय' में जो 'अना' है उसको 'अना' यानी अलिफ् के साथ पढना चाहिये, क्योकि यह 'अना' ज़मीर (सर्वनाम) नही है।

क़ुरआन मजीद के वह मुकामात जिनमें (ا) अलिफ् ज़ायद होने पर भी ख़ामोश (मोन) है जिनमें अलिफ् का न पढ़ना ज़रूरी है।

सं०	नाम पारः	पारः	सूर	रुकूअ	आयत	पृष्ठ	अरबी लिपि मे	अरबी और नागरी मे पढिए
१	तिल्कर्रुसुलु	(३)	(शुरू) आलि अिमरान	१	१	७८	अलिफ लाम् मीम् (१) अल्लाहु	अलिफ लाम् मीम् (१) अल्लाहु
२	लन्तनालू	(४)	आलि अिम्रान	१५	१४४	१०४	अफा अिम्मात	अफ अिम्मात
३	"	"	" "	१७	१५८	१०८	ला अिलल्लाहि	ल अिलल्लाहि
४	लायुहिब्बुल्लाहु	(६)	मा'अिद.	५	२६	१७४	अन् तबू'आ	अन् तबूअ
५	अिजा समिअू	(७)	अन्आमि	४	३४	२०४	मिन् नबाअिल्मुर्सलीन	मिन्नबअिल्मुर्सलीन
६	कालल्मलअू	(६)	अअराफि	१३	१०३	२५६	मलाअिही	मलअिही
७	वअ्लमू	(१०)	सूरतुत्तौब	७	४७	३०६	ला औज़अू	ल औज़अू
८	यअतजिरून	(११)	यूनुस	८	७५	३४२	मलाअिही	मलअिही
६	"	"	"	६	८३	३४२	मलाअिहिम	मलअिहिम्
१०	वमा मिन्दाब्बतिन्	(१२)	हूद	६	६८	३६२	अिन्न समूदा	अिन्न समूद
११	"	"	"	६	६७	३६६	मलाअिही	मलअिही
१२	वमाअुबर्रिअु	(१३)	रअदि	४	३०	३६८	अुममुल्-लितत्लुवा	अुमम्न्-लितत्लुव
१३	सुब्हानल्लज़ी	(१५)	कह्फि	२	१४	४६६	लन्नद् अुवा	लन्नद् अुव
१४	"	(१५)	"	४	२३	४६८	लिशाअिन्	लिशअिन्
१५	"	(१५)	"	५	३८	४७२	लाकिन्ना हुवल्लाहु	लाकिन्न हुवल्लाहु

सं०	नाम पारः	पारः	सूरः	रुकूअ	आयत	पृष्ठ	अरबी लिपि में	अरबी और नागरी में पढ़िए
१६	अिक्तरवलिन्नासि	(१७)	अंबिया'अि	३	३४	५१४	अफ़ाअिम्-मित्त	अफअिम्-मित्त
१७	कद् अफ्लहल्-मुअ्मिनून	(१८)	मुअमिनून	३	४६	५४६	मलाअिही	मलअिही
१८	व कालल्लज़ीन	(१९)	अल् फ़ुर्क़ानि	४	३८	५७६	समूदा व अस्हाबर्रसिस	समूद व अस्हाबर्रसिस
१९	,, ,,	(१९)	नम्लि	७	२१	६००	ला अज्वहन्नहू	ल अज्वहन्नहू
२०	अम्मन् खलकस्-समावाति	(२०)	कससि	४	३२	६१८	मलाअिही	मलअिही
२१	,, ,,	,	अन्कबूति	४	३८	६३६	आदंव्व समूदा	आदंव्व समूद
२२	अुत्लमा अूहिय	(२१)	रूमि	४	३९	६४८	लियर्बुवा	लियर्बुव
२३	व मालिय	(२३)	साफ्फाति	२	६९	७१२	ला अिलल् जहीमि	ल अिलल् जहीमि
२४	फ़ िलैहि युरद्दु	(२५)	जुख्रुफि	५	४६	७८२	मलाअिही	मलअिही
२५	हामीम्	(२६)	मुहम्मदिन्	१	४	८०६	व ला किल्लियब् लुवा	व ला किल्लियबलुव
२६	,,	(२६)	,,	४	३१	८१०	व नब्लुवा अख्बारकुम्	व नब्लुव अख्बारकुम
२७	,,	(२६)	हुजुराति	२	११	८२०	बिअ्सलि-अस्मुल्-फ़ुसूक़	बिअ्स-लिस्मुल्-फ़ुसूकु
२८	कालफमा खत्बुकुम	(२७)	नज्मि	३	५१	८३८	व समूदा फ़मा	व समूद फमा
२९	कद् समिअल्लाहु	(२८)	हश्रि	२	१३	८७२	ला अन्तुम् सशद्दु	ल अन्तुम् अशद्दु
३०	तबारकल्लजी	(२९)	दह्रि	१	४	९२८	सलासिला	सलासिल
३१	,,	(२९)	,,	१	१५	९२८	कानत् कवारीरा	कानत् क़वारीर
३२	,,	(२९)	,,	१	१६	९२८	कवारीरामिन्	कवारीर मिन्

तिलावत क़ुरआन मजीद के वक़्त रुमूज़ (विरमाविराम), अलामत (चिह्न) और हरकात सकनात (गीत स्थिरता) पर पूर्ण सावधानी से अमल करना चाहिए। कुरआन मजीद में बीस मुकामात ऐसे हैं कि सही लिखा होने पर भी पढ़ने की ज़रा सी असावधानी से बिना जाने-समझे आज्ञाओं के विरुद्ध आचरण ग्रहण हो जाता है, और जान बूझकर पढ़ने से बड़ा अजाब (महान दोष) बल्कि कुफ़्र तक नौबत पहुंच जाती है। मगर लाअि्ल्मी (अनभिज्ञता) में माफ है, क्योंकि लाअिल्मी में और तालीम की अवस्था में अल्लाह की तरफ से माफ़ी है। नीचे वह तमाम मुकाम दर्ज किये जाते हैं, पाठक ध्यान रखें :—

सं०	सूरः	आयत	पृष्ठ	सही	ग़लत
१	सूरतुल्-फातिहः (१)··· ···	४	१	अिय्याक नअबुदू	अिया नअबुदू (बिलातशदीद)
२	,, ,, (१)··· ···	६	१	अन् अम्त अलैहिम्	अन् अम्तु अलैहिम्
३	सूर. बकरः (२) रुकूअ १५	१२४	२६	अिब्राहीम रब्बुहू	अिब्राहीमु रब्बहू
४	,, ,, ,, ३३	२५१	६०	कतल दावूद जालूत	कतल दावूद जालूतु
५	,, ,, आयतल्कुर्सी ,, ३४	२५५	६२	अल्लाहु ला अिलाह	आल्लाहु लाअिलाह (बिलामद)
६	,, ,, ,, ३६	२६१	६०	वल्लाहु युजाअिफु	वल्लाहु युजाअफ़ु
७	,, निसा'अि (४) ,, २३	१६५	१६०	मुबश्शिरीन व मुन्जिरीन	मुबश्शरीन व मुन्जरीन

सं०	सूर.		आयत	पृष्ठ	सही	गलत
८	सूर' तौब. (९) „	१	३	२९४	मिनल्-मुश्रिकीन व रसूलुहू	मिनल्-मुश्रिकीन व रसूलिही
९	„ बनीअिस्राईल (१७)	२	१५	४४८	व मा कुन्ना मुअज्जिबीन	व मा कुन्ना मुअज्जबीन
१०	„ ताहा (२०) „	७	१२१	५०८	व असा आदमु रब्बहू	व असा आदम रब्बहू
११	„ अम्बियाअि (२१) „	६	८७	५२४	अिन्नी कुन्तु मिनज्ज़ालिमीन	अन्नी कुन्त मिनज्जालिमीन
१२	„ शुअराअि (२६) „	११	१९५	५९६	तिलकून मिनल् मुन्जिरीन	तिलकून मिनन् मुन्जरीन
१३	„ फातिरिन् (३५) „	४	२८	६९६	यख्शल्लाह मिन् अिबादि	यख्शल्लाहु मिन अिबादि
१४	„ साफ्फाति (३७) „	२	७२	७१४	फीहिम मुन्जिरीन	फ़ीहिम् मुन्ज़रीन
१५	„ फत्हि (४८) „	४	२७	८२२	लकद् सदकल्लाहु	लकद् सदअल्लाहु
१६	„ हश्रि (५९) „	३	२४	८८०	मुसव्विरु	मुसव्वरु
१७	„ हाक्कति (६९) „	१	३७	९१९	अिल्लल् खातिअून	लिल्लन् खानअून
१८	„ मुज्ज़म्मिलि (७३) „	१	१६	९२८	फअसा फिर्औनुर्रसून	फअमा फिरऔनुर्रमूनु
१९	„ मुर्सलाति (७७) „	२	४१	९४०	फी जिलालिव	फी अला निव्व
२०	„ नाज़िआति (७९) „	२	४५	९४६	अिन्नमा अन्त मुन्जिरु	अिन्नमा अन्त मुन्जरु

कुरआन मजीद की सूरतो के ख्वास (लाभ)

अगर कोई यह अकीदा रखे कि कुरआन मजीद अमलियात और तावीज़ात (तावीज़ गडे) के लिए नाज़िल (उतरा) हुआ है तो यह जिहालत है और बडा गुनाह है क्योकि कुरआन मजीद हकीकन मे खुदा के हकूक जो लोगो पर हैं और लोगो के हकूक भी जो आपस मे एक दूसरे पर है और उनके अदा करने या न करने के सबब जो नतीजे दुन्या मे और मरने के बाद होने वाले हैं उन सब के बयान (गोष्ठ) के लिए खुदा की तरफ से नाजिल हुआ है। मगर इस के साथ ही बहुत सी आयतो और सूरतो को रसूले करीम (सल्ल०) सहाबा किराम और बुजुरगाने दीन अमलीयात के तौर पर मुसीबतो और बलाओ के दुर करने के लिए पढते थे जिनकी बरकत से वह मुसीबत दूर हो जाती थी। जो आदमी किसी मतलब के लिए अमल पढता हो और जाहिरी कोशिश तकाजा-ए-आलमे अस्बाब (खुदा के हुकमों) के मुताबिक न करता हो तो वह यकीनन नाकाम होगा कि उस की मिसाल एक ऐसे मरीज़ (रोगी) की सी होगी जो दवा खाता हो मगर परहेज़ न करता हो बल्कि अमल पढने का यह मतलब होता है कि अमल की वजह से जाहिरी कोशिश नाकाम न रहे। सब बुजुरगाने दीन का तज्र्बा है कि जिस आयत के मज़्मून (विषय) को जिस काम मे मुनासिबत (उच्चित) पाई जाए तो वह आयत उस काम के लिए अमल के तौर पर पढ़ी जा सकती है जैसे कुरआन मजीद मे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में जिक्र है कि उन्होने दुआ की (अनुवाद) 'मूसा अ०' ने (फर्ओन की हिदायत की तरफ जाते वकत) कहा ऐ खुदा मेरे सीने को खोल दे और मेरे काम को मेरे लिए आसान फरमा और मेरी जुबान की गिरह खोल दे (ताकि बयान मे सफाई हो) और वह लोग मेरी बात को समझें इस आयत को हर शख्स मुश्किल कामो की आसानी के लिए पढ सकता है और अपने जेहन और अकल (बुद्धि) के बढने के लिए पढ सकता है। कुरआन का अमल करने मे तख्सीसे-वक्त और पढने की तादाद की कैद नही है बल्कि हर शख्स को चाहिए कि वह खुद ईशा या सुबह की नमाज़ के बाद या कोई और वक्त मुकर्रर (निर्धारित) करके और पढने की तादाद भी अपनी तरफ से कायम करके पढा करे। अव्वल और आखिर मे दरूद हो और चीज को पाक रखें लेकिन यह बात तज्र्बो ने साबित हुई है कि अगर कोई शख्स कुरआन की आयत किसी नाजायज काम के लिए अमल के तौर पर इस्तेमाल में लावे तो वह कामयाब नही होगा और पागल हो जाता है।

सूरतों की तर्तीब

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी

इस्लाम से पहले अरबो के विभिन्न मज़ाहिब (धर्म) और एतकाद (विश्वासो) थे। कुछ उनमें से बुत परस्त, कुछ ख़ुदा परस्त, कुछ ला मजहब (अधर्मी) और ला साइबी, कुछ यहूदी और ईसाई थे। बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) अरब के कदीम (प्राचीन) बाशिन्दों (निवासियो) में भी पायी जाती थी। आद, समूद, जदीस, जरहम ओला, अमलीक अव्वल आदि बुतों की परिसतिश (पूजा) करते थे लेकिन उनके तफसीली हालात (पूरे हालात) ज़माने के कारण हम को मिल नही सके। बाकी रहे अरब आरिबह और अरब मुस्तआरिबह, उनके बुत दो प्रकार के थे। एक मलाइक और अरवाह जो गैर महसूस (अस्पर्श) ताकतो से ताल्लुक रखते थे और दूसरी किस्म उन बुज़ुर्गों (पूर्वजो) की शक्ल के बुत तैयार किए गए थे जिन्होने अपनी हयात (जीवन) के जमानों मे नेक कामो से शोहरत (ख्याति) हासिल कर ली थी। यह गिरोह बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) के बावजूद उनको माअबूदे मतलक (वास्तविक उपास्य) न मानता था, बल्कि उनका एतकाद (विश्वास) यह था कि सांसारिक अधिकार उन बुज़ुर्गों (पूर्वजो) की रूहानी (आध्यात्मिक) ताकतों को, जिनके ये बुत यादगार के तौर पर हमारे आगे मौजूद हैं, इस तरह से हासिल हैं कि वे हमारी हर हाजत (मुराद) व दरख़ास्त की ख़ुदा के यहां सिफारिश कर सकते है और आख़िरत की निस्वत (बारे मे) उनका यह ख्याल (विचार) था कि उनकी रूहानी ताकते (आध्यात्मिक शक्ति) ख़ुदा से उनके गुनाहो की माफ़ी कराएगी। वे बुत जिनकी तमाम अरब परिसतिश (पूजा) कर रहा था उनकी तफसील (विवरण) यह है।

१—हुबुल, २—वद, ३—सुवाअ, ४—यगूस, ५—यऊक़, ६—नसर, ७—उज्ज़ा, ८—लात, ९—मनात।

ये खास (मुख्य) क़बीलो के बुत थे। इन ९ बुतों की परिसतिश (पूजा) तमाम अरब करता था। १०—दवार, ११—असाफ, यह कोहे सफा (सफा नामक पहाड़) पर था। १२—नाइला, कोहे मरवह (मरवह पहाड़) पर था इन दो बुतों पर क़ुर्बानिया (बलि) की जाती थी। १३—अबाअब, इस पर ऊंटों की कुर्बानी (बलि) की जाती थी। १४—काबे के अन्दर हज़रत इब्राहीम की तस्वीर थी और उनके हाथ में इस्तख़ारह (एक प्रकार का अमल) के तीर थे जो इज़लाम कहलाते थे और एक भेड का बच्चा उनके क़रीब (निकट) खडा था। हज़रत इस्माईल की मूरत (मूर्ति) ख़ाना काबा मे रखी हुई थी।

१५—हज़रत मरयम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भी तस्वीरें और मूरते (मूर्तिया) ख़ाना काबा मे मौजूद थी। वद, यगूस, यऊक और नसर अय्यामे जाहिलियत (अज्ञानता का दौर) अरब से बहुत पहले, बल्कि हज़रत नूह अलैहि० के पैदा होने से भी पूर्व उन बुज़ुर्गों (पूर्वजो) में से थे जो नेक कामो और ख़ुदा परस्ती (ईश्वर वादिता) में कामिल (पूर्ण) थे और जिनकी तस्वीरे पत्थरो पर मुनक्कश (अंकित) करके यादगार के लिए काबे के अन्दर रख दी थीं और इनको रुतब्ए माअबूदियत (पूज्य होने का दर्जा) देकर उनकी पूजा करने लगे। ख़ुदा परस्ती (ईश्वर भक्ति) भी किसी कदर अरब जाहिलियत (अज्ञानता) मे थी और यह दो तरह की थी। एक ग़ैर मालूम (अज्ञान) और पोशीदा (छिपी) कुदरत (ताकत) को, जिसको वे अपने वजूद का ख़ालिक (रचियता) करार देते और मानते थे लेकिन शेष विचार उनके ला मज़हबी (अधर्मी) की ओर अधिक आकृष्ट थे। दूसरा गिरोह ख़ुदा को बरहक (सत्य) जानता था। कियामत, नजात, हश्र

(हिसाब किताब का मैदान) बकाए रूह (रूह का जीवन) और उस के जज़ा व सज़ा (इनाम व अज़ाब) का कायल था। ला मज़हबी (अधर्मियों) का भी एक तरह का शोर व चर्चा अरब मे पाया जाता था जो न बुतो को पूजते थे और न किसी किताब और इलहामी (आसमानी) मज़हब (धर्म) के मानने वाले थे। वे ख़ुदा और प्रलय के इन्कारी थे इसी वजह से इनाम व अजाब को भी न मानते थे। वे दुनिया को सदैव रहने वाली मानते थे। साईबी धर्म वाले यह अकीदा (विश्वास) रखते थे कि हमारा धर्म इलहामी (आसमानी) है और हम हज़रत शीश अलैहि० और इदरीस अलैहि० के पैरो (अनुयायी) हैं उन के यहा सात समय की नमाज़ और एक क़मरी (चांद) महीने का रोज़ा था ये जनाज़ें की नमाज़ पढते थे। इन हालात से पता चलता है कि शायद उनका दावा सही हो। लेकिन यह ऐब (खराबी) उनमे आ गया था कि सबअ सय्यारे (तारे) की पूजा करते थे इसी के साथ खाना कावा की बडी इज्जत (आदर, सम्मान) करते थे। यहूदी धर्म अरब मे ३५वी शताब्दी हबूते आदम अलैहि० (पांचवी शतब्दी पूर्व मसीह के अनुसार) बख़्त नसर का हंगामा (जंग) हुआ। इसके कुछ दिनो बाद यहूदियो को इत्मीनान (सन्तोष) प्राप्त हुआ तो उन्होने अपने धर्म को फैलाना शुरू कर दिया यहां तक कि धीरे धीरे ४०२६ हबूते आदम अलैहि० ३५४ पूर्व मसीह के अनुसार मे जूनिवास हमीरी बादशाहे यमन यहूदी हो गया और इससे यहूदियत को अरब मे बडी तरक्की मिली। हबूते आदम अ० की तारीख न तो किसी पैगम्बर ने बताई है और न ही ख़ुदा ने, अलबत्ता तौरात के आलिमों (विद्वानो) ने अपने अन्दाज़े से तौरात की ज़मीमो (परिशिष्ठो) और तफ़सीरों (टीकाओ) में इस को लिखा है। तीसरी सदी ईसवी मे ईसाई धर्म अरब मे दाखिल हुआ। जबकि पूर्वी कलीसा मे खराबिया और बिदअते (नई बातें) धीरे-धीरे रिवाज पा गयी थी। आम मुअर्रिख़ीन (इतिहासकार) कहते हैं कि यह ज़माना जूनिवास का था : इस धर्म का शेवा अधिक नजरान मे हुआ और अरब मे उस ने कुछ ज्यादा रिवाज नही पाया। इनके अलावा बनू तमीम मजूसी और अधिकांश कुरैश जिन्दका (गुमराह, भटके हुए) थे। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की पैदाइश से पहले अरब में अधिकता से काहिन और नजूमी (ज्ययोतिषि) लोग थे और उन्होने यह मशहूर (प्रसिद्ध) कर दिया था कि अनकरीब (निकट ही) अरब मे एक पैगम्बर पैदा होने वाले हैं जिनके दीन का ग़लबा (प्रभाव) तमाम धर्मो पर होगा।

विलादत (पैदाइश)

आप (सल्ल०) के वालिद का नाम अब्दुल्लाह था। अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब के इन्तकाल (मृत्यु) के बाद बारहवी रबीउल अव्वल को आमुल फील (उस समय का सन) के पहले मान (अर्थात अबरह की चढाई के ५५ दिन बाद) ४० जुलूसे किसराए नोशीरवा और ५७० ईसवी मे नबी सल्ल० पैदा हुए। अब्दुल मुत्तलिब ने आप की परवरिश (लालन पालन) की। कबीला साअद मे आपका ज़मानए रज़ाअत (दूध पीने का ज़माना) पूरा हुआ। हज़रत हलीमा रज़ि० ने दूध पिलाया और जब नबी सल्ल० चार साल के हुए और अपने रज़ाई भाइयो (दूध शरीक भाइयो) के साथ बकरियां चराने को गए थे तो फरिश्तो ने आकर आपका शिकम (सीना-ए-मुबारक) चाक करके कल्ब (दिल) को निकाला और उस से एक सियाह नुक्ता (काला बिन्दु) अलग करके दिल को और आन्तो को धोया। जिस समय इस वाकिए (घटना) की सूचना हलीमा को हुई तो वे इस डर से कि ख़ुदा जाने कोई और घटना पेश न आ जाए, आप को आप की वालिदा (मां) बीबी आमना के पास लायी और इस घटना से आपको सूचित किया। बीबी आमना ने कहा कि तुम इन को ले जाओ।

यहां की आब व हवा (जलवायु) स्वभाव के अनुसार न होगी। मैं इस घटना से हरासां (आतंकित) नही हुई। अल्लाह ने उनको बहुत सी करामतें प्रदान फरमायी हैं। जब आपकी उम्र ६ साल की हुई तो बीबी आमना आपको मदीना अपने संबंधियो से मिलाने ले गयीं। वहां अबवा के स्थान पर बीबी आमना का इन्तकाल हो गया। इस तरह आप वालिद वालिदा दोनों की ओर से छोटी उम्र ही में यतीम हो गए और जब आठ साल के हुए तो आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने वफात पायी। उस समय आपके दादा ने आपको परवरिश (पालने) के उद्देश्य से अपने लड़के अबू तालिब के सुपुर्द किया। अबू तालिब मुहब्बते पिदरी (पिता की मुहब्बत) से आपके साथ पेश आए। दूध पीने के दौर में और बचपन के दौर में आपकी अजीब हालत थी। अज्ञानत के तौर तरीको से आप बिल्कुल बेज़ार (निराश) थे। लडकों मे नही खेलते थे। अल्लाह ने आपको तमाम आदाते ख़बीसा (बुरी आदतों) से अपनी पनाह में रखा। जब आपने तेरहवी साल मे कदम रखा तो अबू तालिब के साथ शाम (सीरिया) की ओर सफर किया। बुसरा के स्थान पर बुहीरा राहिब के झोपडे के पास होकर गुजरे बुहीरा राहिब ने आपके अन्दर आसारे नुबूवत (नुबूवत की निशानियां) को देख कर अपनी कौम को बुलाया और आपकी नुबूवत से उनको सूचित किया। फिर दोबारा आप (सल्ल०) उम्मुल मोमिनीन हजरत खदीजतुल कुब्रा (रज़ि०) की तिजारत का सामान लेकर उनके गुलाम मैसरह के साथ शाम (सीरिया) गए। नसतुरा राहिब के पास से जिस समय आपका गुज़र हुआ, उसने आप सल्ल० मे शाने नुबूवत (नुबूवत की शान) देखकर मैसरह को आपके हालात से सूचित किया। उसने वापसी के बाद हज़रत खदीजा को पूरे हालात से आगाह किया। हज़रत खदीजा ने आपसे विवाह करने का इरादा किया और अबू तालिब ने आपका निकाह खदीजा से कर दिया। नबी सल्ल० की उम्र शरीफ इस समय २५ साल थी। जब आप ३५ वर्ष के हुए तो कुरैश ने काबे को गिराकर दोबारा बनाना शुरू किया। जिस समय हजरे असवद (वह काला पत्थर जो काबे में लगा है) के रखने का अवसर आया तो आपस में सब लड़ने लगे। हर आदमी यह चाहता था कि हजरे असवद (काले पत्थर) को मैं अपने हाथ से रखू। फिर कुछ सोच कर कुरैश एक होकर मश्विरा करने लगे। अबू उमय्या ने कहा कि बेहतर होगा कि पहले जो आदमी मस्जिद (काबे) में दाखिल होगा उसे तुम लोग अपना हाकिम (जज) बनाओ। क़ुरैश इस बात पर राजी हो गए। इसी बीच नबी सल्ल० वहा आ गए। लोगों ने कहा कि यह अमीन (ईमानदार) है यह फैसला करेंगे। आपने एक कपडे में हजरे असवद (काले (पत्थर) को रख कर कुरैश से कहा, कि इस कपड़े के किनारों को पकड लो। किसी को किसी पर कोई फज़ीलत (श्रेष्ठता) न होगी और न कोई झगड़ा बाकी रह जाएगा। अतएव कुरैश ने आपके कहने से कपड़े के किनारे पकड लिए। जिस समय हजरे अस्वद अपने मकाम (स्थान) के निकट पहुचा, आपने अपने हाथ से लेकर उसको उसकी जगह पर रख दिया। इसके बाद नबी सल्ल० तहारत (पाकी) और इबादत अत्यन्त दृढता से कोशिश फरमाने लगे। आपकी ज़ात पाक में एक आला दर्जे (उच्च दर्जे) का अख्लाक (आचरण) और सब्र व फसाहत (धैर्य व शालीनता) थी। जवानी मे ही आपको इबादत का शौक था। हजरत खदीजा रज़ि० से कई कई दिन का खाना तैयार कराके अपने साथ ले जाया करते थे। पहाड़ो में ग़ारे हिरा (एक खोह का नाम) आदि में आप रात दिन कई कई दिनो तक मसरूफे इबादत (इबादत मे लीन) रहते थे और आपको लोग अमीन (अमानतदार) कहा करते थे।

नुबूवत

वह्य के उतरने से पूर्व नबी सल्ल० ने रोया-ए-सालिहात (सच्चे सपने) देखना शुरू किए। काहिनो (नजूमियो) और आसमानी कितावो के विद्वानो ने आपकी शान व नुवूवत के चर्चे व ज़िक्र करना शुरू कर दिए और नवी मल्ल० इबादत के ख्याल से तन्हाई व खिलवत (अकेले) में ज्यादा से ज्यादा रहना पसन्द फरमाने लगे। अक्सर गारे हिरा में तशरीफ ले जाते और वही दो-दो चार-चार राते लगातार इबादते इलाही (अल्लाह की इबादत) में लगे रहते यहां तक कि आपकी पैदाइश के चालीसवें साल आप पर वह्य नाज़िल हुई। पहले फरिश्ता आदमी के रूप मे आता था और आपसे बाते करता था और कभी आप पर इलका (आप से आप वह्य का आना) हुआ करता था और किसी समय चादर या कोई और चीज लपेट कर लेट जाते थे और वह्य घटी की आवाज़ की तरह नाज़िल होती थी। इस पिछली सूरत मे आपको बहुत तक्लीफ होती थी जैसा कि हदीस शरीफ में आया है 'वहु-अ अ-शदू अ़ला' (और वह मुझ पर अधिक सख्त है) सख्त जाडे में आप पसीने पसीने हो जाते, मतलब यह कि जो वह्य आरम्भ में आप पर गारे हिरा में नाज़िल हुई वह यह थी—'इकरा बिस्मि-रब्बिकल लज़ी खलक० खलकल इन्सा-न मिन अलक० इकरा व रब्बिकल अक्रमुल्लज़ी अल्ल-म बिल क़लम, अल्लमल इन्साना मालम याअ़लम०'

बीबी खदीजा रज़ि० ने आप की बातो की तस्दीक (मान लेना) की और आप पर ईमान लायी। इसके बाद नबी सल्ल० पर नमाज़ फर्ज़ (अनिवार्य) की गयी। हज़रत जिब्रील अलैहि० आए और वुज़ू करके पूरे अरकाने नमाज़ व तरकीब आपको नमाज़ पढ कर दिखायी। उसके बाद मेअराज की रात मे आप मक्का से बैतुल मक्दिस और फिर वहा से सातो आसमान और सदरतुल मुनतहा पर तशरीफ ले गए—'फ अवहा इला अवदहू मा अवहा'।

अर्थात—अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य भेजी। जो वह्य भेजी उसका ज़िक्र (मेअराज का) पन्द्रहवे पारे के शुरू में है।

कुरैश में इस्लाम की दावत

नबी सल्ल० ने अबू तालिब को इस्लाम की दावत दी। अबू तालिव ने कहा, मैं अपना और अपने बाप-दादा का दीन (धर्म) नही छोड सकता, अलबत्ता तुम्हारी वजह से यह होगा कि मैं तुम्हारा विरोध न करूंगा, उलमा-ए-सीर (पवित्र जीवनी लिखने वाले विद्वान) लिखते हैं कि सबसे पहले खदीजा रज़ि० ईमान लायी। इसके बाद अबू बक्र व अली (रज़ि०) और जैद बिन हारसा व बिलाल रज़ि०, फिर उमर बिन अम्बसा सलमा रज़ि० व खालिद बिन सईद रज़ि० मुसलमान हुए। इन बुज़ुर्गों के बाद कुरैश के एक गिरोह ने इस्लाम को स्वीकार किया जिन को अल्लाह ने नबी सल्ल० की मुसाह-बत (निकटता) के लिये पूरी कौम मे से बरगुज़ीदा (अहम माना) किया और इनमे से अधिकांश प्रसिद्ध व जन्नती हुए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० चूंकि रकीकुल कल्ब (नर्म दिल) महबूबे खलाइक (लोगो के प्रिय) नर्म स्वभाव और तिजारत करने वाले थे। लोगों की मदद करने का मादा (भावना) उनमें अधिक था। कुरैश आपसे ज्यादा मानूस (मिले जुले) थे इस वजह से आपके हाथ पर बनू उमय्या मे ही उस्मान बिन अफ्फाक, तलहा, साअद बिन अबी व कास और अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि० ईमान लाए। इसके बाद अबू उबैदह रज़ि०, आमिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि०, अबू सलमा अब्दुल असद रज़ि०, सईद बिन जैद रज़ि०, सईद की बीवी फातिमा रज़ि०, (हज़रत उमर रज़ि० की बहन) सईद रज़ि० के बाप जैद बिन अमरू रज़ि० इस्लाम मे दाखिल हुए। यह जैद बिन अमरू वही हैं जिन्हो

ने अज्ञानता में बुतपरस्ती छोड दी थी। फिर उमैर रज़ि० और अब्दुल्लाह् बिन मसऊद रजि० मुसलमान हुए। अब्दुल्लाह् बिन मसऊद उक़बा बिन मुईत की बकरियां चराते थे। एक दिन नबी सल्ल० उनकी बकरियों के गल्ले की ओर से होकर गुजरे और उन की इजाज़त से बकरी का दूध आपने दोहा जिसका दूध बन्द हो गया था। अब्दुल्लाह् बिन मसऊद रज़ि० यह मुअज्जिज़ह (चमत्कार) देख कर हैरान हो गए और उसी समय ईमान ले आए। इन के बाद जाफर बिन अबी तालिब और उन की बीवी और साइब बिन उस्मान रजि० और आमिर बिन फ़हीरह रज़ि०, उम्मार बिन यासिर और सुहैब (रजि०) इस्लाम लाए।

इस्लाम की दावत

इन बुज़ुर्गों के इस्लाम लाने से मुसलमानों की एक छोटी सी जमाअत हो गई जिसमे जवान लड़के, बूढे, औरते सभी शामिल थे। लेकिन मुश्रिकों (अधर्मियो) के भय से जंगलों और पहाड़ों में चले जाते थे और वहीं नमाज़ें पढते थे। कुरैश का कोई ऐसा जलसा न होता था जिसमें इस्लाम का और उनके इस्लाम लाने का उल्लेख न होता। वह्य के आने के तीसरे साल नबी सल्ल० को दावत देने का हुक्म हुआ। चुनांचे आप सफ़ा पहाड़ पर चढ गए और कुरैश को बुला कर उनसे मुख़ातिब (सम्बोधित) हो कर फ़रमाया—

"यदि मैं तुमको खबर दू कि दुश्मन तुम पर सुबह को आएगा या शाम को, तो क्या तुम लोग मुझे सच्चा मानोगे? कुरैश ने कहा, हां। तब नबी सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुम को डराता हूं आगे के सख़्त अज़ाब से। ख़ुदा के इन हुक्मो पर ईमान लाओ जो मेरे पास आए है। कुरैश इस कलाम को सुन कर अलग हो गए।"

फिर आपने आम हिदायत शुरू की। जब कुरैश ने देखा कि उनके बुतों की बुराइया की जाती है और उनके पूजने पर रोक टोक की जाती है तो उनको बुरा लगा, वे सब के सब एक मकान में जमा हो कर नबी सल्ल० की दुश्मनी पर तैयार हो गए। अबू तालिब ने उनकी इस राए का विरोध किया और उनको इस काम से रोकने लगे, वे नबी सल्ल० की हिमायत पर तैयार हो गए। कुरैश अबू तालिब के विरोध से मजबूर हो कर न्याय कराने के लिए अबू तालिब के पास आए और अबू तालिब से नबी सल्ल० की ओर से तकलीफ पहुंचाने के बारे में बहस की और इस बात की इच्छा प्रकट की कि नबी सल्ल० को उनके यहा बुला कर इस नए काम से रोकें। चुनाचे नबी सल्ल० उनके बुलाने पर इस सभा में तशरीफ लाए। कुरैश ने अपने तर्क पेश किए। और यह कहा कि यदि आपको दौलत की ज़रूरत हो तो आप की इच्छा से ज्यादा चन्दा जमा करके दे दें और यदि जवान सुन्दर औरत की ज़रूरत हो तो वह भी इसके साथ, और यदि इसके बावजूद फिर भी आप न मानें तो मुमकिन (सम्भव) है कि ख़ून-रेज़ी (रक्तपात) होगी और आपकी जान जाती रहेगी क्योकि यह सारी कौम और मज़हब (धर्म) का मामला है।

तब जवाब मे नबी सल्ल० ने कुरआन मजीद की कुछ आयत पढ कर इशारा फरमाया—

"ऐ चचा! मैं अपने इस काम को न छोड़ूंगा यहा तक कि अल्लाह उसको ज़ाहिर (स्पष्ट) करे या कि मैं स्वयं इसमें हलाक (खत्म) हो जाऊं।"

अबू तालिब यह सुन कर शान्त रहे, कुरैश की सभा खत्म हो गई। उस समय फिर आपने अबू तालिब से मुख़ातिब (सम्बोधित) होकर इस्लाम की दावत दी। अबू तालिब ने कहा, जो तुम्हारे दिल में है करो, लेकिन ख़ुदा की कसम मैं कभी ईमान न लाऊगा और न अपने बाप दादा के दीन को छोड़ूंगा। यह बात मुझ से न होगी कि नमाज के समय मेरे चूतड मेरे सर से ऊंचा हो जाएं (अर्थात सज्दे मे)

हब्शा की ओर हिजरत

जब कुरैश ने देखा कि नवी सल्ल० इस्लाम की दावत से बाज़ नही आते और मुसलमानो की जमाअत बढती जाती है तो बनी हाशिम और बनू मुत्तलिब और कुल कुरैश ने जमा होकर नबी सल्ल० और सब मुसलमानो को तक्लीफ पहुचाने का अरद (वचन) किया। प्रत्यक्ष मे इस वचन मे बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब पेशवा (अगुवा) थे। लेकिन असल मे अरब का हर क़बीला जो उस समय मक्का और उसके निकट मे था इस अहद व इकरार मे शामिल था। जहां ये लोग गरीब मुसलमानो को पाते, पत्थरो से मारते, तरह-तरह की तक्लीफें देते थे, नमाज की हालत मे ऊंटो, बकरियो की आतें, गन्दगी ला-लाकर नमाज़ियो पर डालते थे। जब यह तक्लीफो का सिलसिला सीमा पार कर गया तो आपने मुसलमानो को हब्शा की ओर हिजरत का हुक्म दिया। हब्शा के बादशाह और कुरैश के बीच तिजारत का सन्धिनामा था। वे प्राय हब्शा के बादशाह की प्रशंसा किया करते थे। बहरहाल सबसे पहले हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ि० और उनकी पत्नी रुकैया बिन्त नबी सल्ल०, अबू हुज़ैफा और उनकी पत्नी, जुबैर बिन अवाम, मुसअब बिन उमैर, अबू सब्रह अब्दुल्लाह बिन मसऊद आमिर और उनकी पत्नी लैला और सुहैल रज़ि० इन बुजुर्गों ने हब्शा की ओर हिजरत फरमायी। इनके बाद फिर यके बाद दीगरे (एक के बाद एक) मुसलमानो ने हब्शा की ओर हिजरत करना शुरू कर दिया। इन्ही लोगो के साथ जाफर बिन अबी तालिब रज़ि० भी हिजरत कर गए, यहा तक कि हब्शा में मुहाजिरीन (हिजरत करने वालो) की तायदाद (संख्या) तीन सौ तक पहुंच गयी मुहाजिरीने अव्वल (प्रथम हिजरत करने वाले) का मुश्रिकीने मक्का (मक्का वालो) ने दूर तक पीछा किया, लेकिन नाकाम वापस आए। कुरैश ने जब यह देखा कि नबी सल्ल० की तक्लीफ व परेशानी मे आपके कुछ रिश्तेदार रुकावट बनते है और विरोध करते हैं तो उन्होने यह शेवा (रास्ता) अख्तियार (अपनाया) किया कि जो मक्का मे आता था उससे नबी सल्ल० की साहिरी, (जादूगरी) मजनूनियत (पागलपन) और कहावत (ज्यौतिष) का जिक्र करते थे और आपके पास उसको आने से रोकते थे। इन लोगो का यह काम था कि ये लोग नबी सल्ल० और उन लोगो से जो ईमान ला चुके थे मसख़रा पन (मज़ाक उड़ाते) करते और तक्लीफ देते थे।

तायफ़ में इस्लाम की दावत

अल गरज़ (फल स्वरूप) हज़रत खदीजा रज़ि० के इन्तकाल (देहान्त) और अबू तालिब के इन्तकाल के बाद मुश्रिकीने मक्का नबी सल्ल० के साथ हर समय इस्तहज़ा (मसखरा) और तक्लीफ देने पर तैयार रहते। एक दिन आप इस्लाम की दावत देने के उद्देश्य से तायफ की ओर तश्रीफ ले गए और वहा के सरदारों अब्द या लैल बिन उमर और मसऊद व हबीब के पास बैठकर उनको इस्लाम लाने और इस्लाम की मदद करने की इस्तदा (प्रार्थना) की। इन तीनो ने अत्यन्त सख़्ती से आपको जवाब दिया। तो जब नबी सल्ल० इनके इस्लाम लाने से ना-उम्मीद (निराश) हो गए तो उनको इस हाल के छुपाने के लिए इर्शाद फरमाया। लेकिन उन लोगो ने आपका कहा न माना। अराज़ल (क्रूर और बुरे) और छोटे-छोटे लड़कों को आपके पीछे लगा दिय।

उन लड़को ने आपके पीछे तालियां बजानी शुरू की और ढेले मारने लगे, यहा तक कि आप एक बाग की दीवार की छाया मे बैठ गए, और लड़के लोग लौट गए। जब आप को उन के शोर व गुल से सुकून हासिल हो गया तो रात को खजूर के एक बाग में ठहर गए। आधी रात को जब आप (सल्ल०)

नमाज पढने के लिए खडे हुए तो कुछ जिन्न इस तरफ से होकर गुज़रे और उन्होने इस मकाम (स्थान) पर ठहर कर कुरआन को सुना। इसके बाद नबी सल्ल० मक्का मे दाखिल हुए।

मक्का वाले बदस्तूर (उसी तरह) आपकी अदावत (दुश्मनी) पर तुले हुए थे। कुरैश के रईसों में से किसी ने आपको अपनी हमसायगी (शरण) मे न लिया। आखिरकार मुतअिम बिन अदी के जुवार (मकान) मे आप ठहरे। तुफैल बिन अमरू आपकी सेवा में हाज़िर हुए और ईमान लाए। अपनी कौम को इस्लाम की तरफ बुलाया, कुछ उनमें से ईमान लाए। नबी सल्ल० ने उनके लिए दुआ फरमायी। इब्ने हज़म का बयान है कि इसके बाद मेअराज की घटना पेश आयी। पहले आप मक्का से बैतुलमुकद्दस तशरीफ ले गए, फिर वहा से आसमानो पर गए और अम्बियाए किराम (नबियों) से मुलाक़ात की। जन्नत और सदरतुल मुन्तहा को सातवे आसमान पर देखा।

हज के मौसम में इस्लाम की दावत

जब नबी सल्ल० मुश्रिकीने मक्का के ईमान लाने से ना-उम्मीद (निराश) हो गए और हज के मौसम मे जो लोग इतराफ) इधर-उधर) से आते थे उनके फरूद गाह (ठिकानों) पर तश्रीफ ले जाते थे और उनको इस्लाम की दावत देते थे, कुरआन पढकर उनको सुनाते। इस्लाम की नुसरत (मदद) के लिए उनसे कहते, तो कुरैश इन मामलो मे भी मुजाहमत (हस्तक्षेप व रुकावट) करते और आपकी मुज़म्मत (निंदा) करते फिरते थे। अबू लहब को इस काम मे एक खास दिलचस्पी थी। वह अपने सारे कामो को छोड़ कर आपके पीछे पड़ गया था। जिन लोगो को आप हज के मौसम मे इस्लाम की दावत देते थे, कुछ उनमें से सुन कर सहूलियत (आसानी) से जवाब देते थे और कुछ एतराज़ (विरोध) करते और कुछ बतरीक़ तमुस्ख़ुर (मजाक उडाते हुए) यह कहते थे कि "हम इस शर्त पर ईमान लाएंगे कि तुम हमको मुल्क व हुकूमत दिलाओ।"

नबी सल्ल० यह सुन कर इर्शाद फरमाते थे कि यह काम अल्लाह का है, मैं इस का वायदा नही कर सकता। इसके बाद नबी सल्ल० सुवेद बिन अस्सामत के पास तशरीफ ले गए और उसको इस्लाम की दावत दी। सुवेद बिन सामत ने न तो इस्लाम स्वीकार किया और न सख्ती से जवाब दिया। जब यह मदीना से वापस आया तो किसी लडाई में मारा गया। यह वाकिआ (घटना) यौमे बआस (एक इतिहासिक घटना) के पहले का है। इसके बाद मक्का मे अबुल हैसर अनस अपनी कौम बनू अब्दुल अशहल के एक गिरोह को लिए हुए कुरैश से ख़जरज वालो से मुकाबले के लिए हलफ (शपथ) लेने आया। नबी सल्ल० इस गिरोह के पास भी इस्लाम की दावत को तशरीफ लाए। इस गिरोह में से एक नवजवान ने जिसका नाम अयास बिन मआज था अपनी कौम से मुखातिब (संबोधित) होकर कहा, 'वल्लाह (कसम खुदा की) हम जिस काम के लिए आए है उससे यह अच्छा है।' अबुल हैसर ने यह सुन कर अयास को एक डाट दिलायी। अयास खामोश हो गया और ये सब बे नील व मराम (बिना सफल हुए) मदीना को वापस आए। थोडे दिनों बाद अयास का इन्तकाल हो गया। उलेमा-ए-सैर (सीरत लिखने वाले विद्वान) कहते है कि अयास बिन मआज़ ने इस्लाम पर इन्तकाल किया।

मदीना को हिजरत

जब मदीने मे इस्लाम का ज्यादा जोर हो गया और मदीने वालो के मुसलमान हो जाने से मुसलमानो को एक शक्ति मिल गयी तो मक्का के मुश्रिक इस घटना से बहुत बरहम (क्रोधित) हुए और

उन्होने मुसलमानो के सताने का अह्द (प्रतिज्ञा) कर लिया। इससे मुसलमानो की तक्लीफ बढ गयी। उस समय जो सबसे पहले जिहाद (अल्लाह् के दीन के लिए लडना) की आयत अल्लाह् ने नाज़िल फरमायी, उसका अनुवाद यह है—

"और लडाई करो तुम उनसे ताकि न रहे शिर्क और हो कुल दीन अल्लाह् का।"

इसके बाद नबी सल्ल० ने अल्लाह् के हुक्म से अपने असहाब (साथियो) को मक्का से मदीना हिजरत कर जाने का इर्शाद फरमाया। सबसे पहले अबू सलमा रज़ि० मक्का से हिजरत कर गए। इनके बाद आमिर रजि० फिर कुल बनू जह्श, उनके बाद अकशह् बिन मुह्सिन रज़ि० और एक गिरोह बनू असअद, जिनमें ज़ैनब बिन्त जह्श रजि० उम्मुल मोमिनीन भी थी और उनकी दोनो बहनें, हमनह् और उम्मे हबीबा रजि० ने हिजरत की, इसके बाद उमर बिन खत्ताब व अयाश बिन अबी रबीनियह रजि० बीस सवारो के साथ मदीना को हिजरत कर गए। उमर बिन खत्ताब रोज़े रोशन (दिन दहाड़े) तमाम कुरैश के सामने मक्का से निकले और पुकार के कहा कि 'जिस किसी को अपनी पत्नी राड (विधवा) करानी और अपने बच्चे यतीम कराने मजूर हो तो वह उस पहाड के पीछे मुझसे मिले। मगर किसी को हिम्मत न हुई। फिर जैद, सईद, खनीस (रज़ि०) और एक गिरोह बनू अदी हिजरत कर गए।

ये सब कबा मे रफाअह बिन अब्दुल मुन्जर रजि० के मकान पर ठह्रे। इनके बाद तलहा रज़ि०, सुहैब रजि०, हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि०, जैद बिन हारसह् रज़ि० सहित और अबू मुरसिद ने हिजरत की और कबा मे ठह्रे। फिर उस्मान एक जमाअत सहित हिजरत कर गए। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने हिजरत की तैयारी की तो नबी सल्ल० ने रोका कि तुम्हारे हिजरत करने का हुक्म मेरे साथ हो गया है, इस लिए मेरा इन्तजार (प्रतिक्षा) करो।

धीरे-धीरे मक्का से सभी सहाबा मदीना मे चले आए थे। नबी सल्ल० के पास मक्का मे सिवाए अबूबक्र सिद्दीक रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० के और कोई बाकी न रहा था। नबी सल्ल० खुदा के हुक्म का इन्तज़ार (प्रतिक्षा) कर रहे थे।

क़ुरैश का मश्विरा (परामर्श)

जब कुरैश ने इन बुजुर्गों के हिजरत कर जाने और मदीना वालों के इस्लाम लाने से यह समझ लिया कि ये लोग धीरे-धीरे सभी मदीना मे चले गये और हस्बे ख्वाहिश (इच्छानुसार) इनके पैगम्बर मुहम्मद सल्ल० भी चले जाएगे। तब कुरैश आपके बारे मे मश्विरा करने के उद्देश्य से दारुल नदवा मे जमा हुए। कुरैश के सब बडे-बडे आदमी भी मश्विरे मे शरीक थे और इनके सिवा दूसरे क़बीलो के आदमी भी शरीक थे। इस जलसे (सभा) मे बहुत कुछ बातें पेश हुईं। कुछ कहते थे कि मुहम्मद (सल्ल०) को कैद कर दो, कुछ कहते थे जला वतन (देश निकाला) कर दो। अबू जहल ने कहा कि कबीलो से एक-एक आदमी इन्तखाब (चुनकर) करके कत्ल कर दो। इस सूरत मे। किसी खास कबीले पर कत्ल का जुर्म न आएगा और न बनू अब्दे मनाफ इन सभो से लड सकेंगे, केवल खून बहा (खून का बदला अदा कर) दिया जाएगा। सभा मे शरीक सभी लोगो ने इस राय को पसन्द किया और रात ही से इस पर अमल करने को तैयार हो गए।

नबी सल्ल० का मकान घेर लिया। अल्लाह् ने वह्य द्वारा नबी सल्ल० को सूचित कर दिया। चुनांचे (अतएव) हज़रत अली रजि० को अपनी ख्वाबगाह (सोने के कमरे) मे सुला कर मकान से बाहर आए। अल्लाह् ने उनकी आखो पर उस समय पर्दे डाल दिए। नबी सल्ल० ने एक मुश्त (मुट्ठी

भर) खाक (मिट्टी) पर सूर: यासीन पहली आयते 'फहुम ला युबसिरून' तक पढ कर उनकी तरफ फेंक दिया और आप अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० सहित मकान से बाहर तशरीफ लाए। अब्दुल्लाह बिन अरीकत को उजरत (मज़दूरी) देकर रहबर (गाइड) मुकर्रर (नियुक्त) किया। उसने यह कह दिया कि आम रास्ते को छोड कर गैर माअरुफ (जो प्रसिद्ध न हो) रास्ते से मदीना ले जाए। अगरचे (यद्यपि) अब्दुल्लाह बिन अरीकत काफिर था लेकिन इन दोनो बुजुर्गों ने उस पर एतमाद (भरोसा) कर लिया था।

ग़ारे सूर

नबी करीम सल्ल० और हजरत अबू बक्र रज़ि० मकान से निकल कर रात ही को एक गार (खोह) मे जो जब्ले सूर (सूर नामक पहाड) मे था छिप गए। अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र प्रतिदिन गार पर आते और मक्का वालो की बातो से सूचित कर जाते थे और आमिर बिन फ़हीरह रज़ि० (अबू बक्र का सेवक) उन बकरियो को अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र के पीछे-पीछे पाव के निशान मिटाने के लिए चराते हुए लाते और रात को वही रह जाते थे इस वजह से कि जरूरत भर दूध आदि आपको दे दिया जाए और असमा बिन्त अबू बक्र रोजाना मक्का से खाना लाकर खिला जाती थी।

तमाम सावधानियो को पकड़े रहने के बावजूद कुरैश भी ढूंढते हुए गार तक पहुंच गए। चूंकि घने गार (गार के मुंह) पर मकड़ियो ने रात को जाला लगा रखा था। कुरैश ने यह सोचा कि यदि कोई अन्दर जाता तो जाला टूट जाता। इस वजह से मुतमईन (सन्तुष्ट) होकर वापस आए और सौ ऊंटो के इनाम का नबी सल्ल० और अबू बक्र रज़ि० की गिरफ्तारी पर एलान (घोषणा) कर दिया।

जब गार में तीन दिन नबी सल्ल० व अबू बक्र रज़ि० को गुजर गए और क़ुरैश का तलाश का अभियान कम हो गया तब अब्दुल्लाह बिन अरीकत इन दोनो बुजुर्गों के लिए सवारी लेकर आया और एक ऊंटनी अपने लिए भी लाया और असमा बिन्त अबी बक्र रास्ते के लिए खाना पका कर लायी, लेकिन उजलत (जल्दी) में रस्सी लाना भूल गयी। जिससे बाधकर खाना लटका दिया जाता। असमा बिन्त अबी बक्र ने अपना निताक (कमरबन्द) फाड कर खाना लटकाया। इसी दिन से असमा बिन्त अबी बक्र जातुन्न ताकीन की उपाधि से मशहूर हो गयी।

मदीने का सफ़र

नबी सल्ल० एक नाका (ऊटनी) पर सवार हुए और दूसरी पर अबू बक्र सिद्दीक और उनके पीछे आमिर बिन फहीरह रज़ि० सवार हुए और अब्दुल्लाह बिन अरीकत एक तीसरे ऊंट पर सवार हुआ। आम रास्ता छोडकर एक गैर मशहूर रास्ते को अपनाया। अबू बक्र सिद्दीक ने रवाना होते समय अपना कुल माल (जो लगभग छः हजार दिरहम था) अपने साथ ले लिया। पहले दिन से दूसरे दिन की जुहर तक बराबर सफर करते रहे। जुहर के समय एक मैदान मे थोड़ी देर के लिए ठहर गए। इस बीच मे सुराका बिन मालिक (जो आप (सल्ल०) के गिरफ़्तार करने का वायदा कर चुका था) आ पहुचा। नबी सल्ल० ने उसके हक मे बददुआ की। उसी समय उसके घोड़े के चारो पाव ज़मीन मे धंस गए। सुराका मजबूर होकर नबी सल्ल० से अमान (माफी) का ख्वास्तगार (इच्छुक) हुआ। नबी सल्ल० ने उसको अमान दे दी और सुराका ने वायदा किया कि मुझे अब जो भी आदमी मिलेगा

उसको वापस करता जाऊगा । अत सुराका तो उस जगह से वापस हुआ । फिर जो नवी सल्ल० का पीछा करते हुए उसको मिलते जाते थे उनको वह वापस करता जाता था ।

अब्दुल्लाह बिन अरीकत नवी सल्ल० व अवू वक्र रजि० को लेकर साथ लिए हुए असफ़ले मक्का से निकल कर समुद्र के किनारे की ओर चला और असफले असफान से गुज़रता हुआ मज मे पहुचा। फिर वहा से उसके असफल को तै करता हुआ कदीर मे आया । कदीर से निकल कर उरूज होता हुआ अवाली मदीने से कुवा में रसूलुल्लाह (सल्ल०) और अवू वक्र (रजि०) के साथ दाखिल हुआ । यह रास्ते का बडा जानने वाला था।

ज़कात व अज़ान

जिस समय नवी सल्ल० को मदीने मे जमाव व इत्मीनान हासिल हो गया और आपके पास मुहाजिर व अन्सार जमा हो गए, उस वक्त ज़कात फर्ज़ की गयी और मुकीम की नमाज़ मे दो रकअते और बढायी गयी जिससे चार रकअतें पूरी हुई । इससे पहले मक्का मे दो ही रकअतें नमाज़ मुसाफिर व मुकीम के लिए थी । फिर अब्दुल्लाह विन सलाम जो यहूद के वहुत वडे आलिम (विद्वान) थे, इस्लाम लाए। वजह यह हुई कि पहले-पहले जब उन्होने नवी सल्ल० को देखा तो कसम खाई कि इस व्यक्ति का चेहरा झूठे आदमी का चेहरा नही हो सकता। यहूदियो ने उसका साथ छोड दिया और ओस व खज़रज के कुछ लोगो को वहका कर मुनाफिक (कपटाचारी) वना लिया जिनका काम यह था कि वे मुसलमानो से लड़ते थे और कुफ्र की वातो पर इसरार (ज़िद) करते थे । इन मुनाफिको (कपटाचारियो) के सरदार अब्दुल्लाह बिन उवई, वजद बिन कैस, हरस विन सुहैल, अवाद विन हनीफ थे और यहूदियो मे से जो बज़ाहिर (प्रायक्ष में) इस्लाम के हमदर्द और छिपे तौर पर कुफ्र में डूबे हुए थे वे ये थे—साअद विन खनीस, जैद, राफेअ, रिफाअह इब्ने जैद, कनायह आदि मुसलमानो के दुश्मन थे ।

मक्का की फ़तह

१० वी रमज़ान ८ हिजरी को दस हज़ार सेना के साथ नवी सल्ल० मदीना से मक्का को फतह करने के उद्देश्य से रवाना हुए। इस सेना मे एक हज़ार मर्द वनू सलीम के और एक हज़ार मुज़ीना के, चार सौ ग़फ़्फ़ार के, ४ सौ अस्लम के और बाकी कुरैश व असद व ततीम और मुहाजिर व अन्सार के ममालीन व कताइब थे। मदीना मे कलसूम बिन हसीन बिन उतबा गफ्फारी ही आपके कायम मुकाम (कार्यवाहक) हुए।

जिस समय आप जुल हुलीफा और कुछ कहते हैं कि हजफह में पहुचे अब्बास विन अब्दुल मुत्तलिब रजि० मक्का से हिजरत करके मदीने को आते हुए मिले । नवी सल्ल० के फ़रमाने से अब्बास रज़ि० आप के साथ जिहाद के उद्देश्य से इस्लामी लश्कर के साथ मक्का को वापस हुए। आखिरकार मक्का बिना जंग के फतह हो गया और पूरे अरव की कौमे इस्लाम मे दाखिल होना शुरू हुई ।

हज्जतुल विदाअ (अन्तिम हज)

इन वाकिआत (घटनाओ) के बाद ज़िल-क-अद का महीना आ गया । जब उसकी पाच रातें रह गयी तो हज के इरादे से मदीना से रवाना हुए । आपके साथ मुहाजिरो, अन्सार और अरब के

रईसो का एक गिरोह था और सौ ऊंट थे। मक्का में यक शम्बा (इतवार) के दिन जबकि चार दिन ज़िल हज के गुजर चुके थे दाखिल हुए। अली बिन अबी तालिब रज़ि० भी जो नजरान में सदका जमा करने को गए हुए थे, मक्का मे आप से आ मिले और आपके साथ हज किया। आपने इस बार लोगों को मनासिके हज (हज के क़ायदे) की तालीम दी, उसके सुनन (तरीके) बतलाए, उनके लिए रहमत की दुआ की और अरफात मे एक लम्बा खुत्बा दिया जिसमे बहुत सी हिदायतो के बाद ये अलफाज (शब्द) भी थे—'मेरे बाद तुम काफिर न बनो कि एक दूसरे की गर्दनें मारते फिरो।'

नबी सल्ल० की अलालत (बीमारी)

सबसे पहले जिससे नबी सल्ल० पर अपने इन्तकाल (देहान्त) का हाल मुन्कशफ (स्पष्ट) हुआ वह अल्लाह का यह कौल (कथन) था—

'इज़ा जा-अ -नसरुल्लाहि वल फत्हु ·· ·' ता आख़िर सूर.

इसके बाद सफर अरबी महीने ११ हिजरी सन ६४२ ईसवी के अनुसार दो रातें बाकी थी कि आपके दर्द पैदा हुआ। आपने इस दर्द की हालत में यह इर्शाद किया कि बेशक (निस्संदेह) एक बंदे को अल्लाह ने अपने बन्दो में से दुनिया और उस चीज़ का जो उसके पास है (अर्थात आखिरत) का इख्तियार (स्वतंत्रता) दिया है। तो बन्दे ने उसको चुना जो उसके पास है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० इस फिकरे (वाक्य) को सुन कर रो पड़े और यह कहा—'ऐ नबी सल्ल० ! हम आपका अपनी जानो और बच्चों से फ़िदया (सदक़ा) देते हैं।' इसके बाद आपने अपने सहाबा को जमा दिया और उनके हक मे भलाई की दुआ की और आंखो से आंसू जारी होते रहे। इसी दौरान आपने फरमाया--

"मैं तुमको डरने की नसीहत करता हूं और खुदा से, तुम्हारे लिए रहम (दया) की दरखास्त (प्रार्थना) करता हू और उस की निगहबानी (देख-रेख) मे तुम को छोड़ता हूं और तुम को उस के सुपुर्द (हवाले) करता हूं। (ऐ लोगो) मैं तुमको खौफ (डर) और खुशखबरी (शुभ सूचना) दोनों सुनाता हूं कि तुम खुदा के आदेशो मे ज्यादती न करो और उसके शहरो मे ज्यादती न करो और उस की मखलूक (लोगो) पर ज्यादती (जुलम) न करो। क्योकि खुदा ने मुझ से भी और तुम से भी यह कहा है कि आख़िरत (परलोक) का घर (जन्नत) एक ऐसा मकाम (जगह) है कि जिसका मालिक केवल उन लोगो को बनाऊगा जो ज़मीन मे सरकशी (विद्रोह) के मुरतकिब (अपराधी) न हों और न ज़मीन मे वे किसी किस्म (प्रकार) का फसाद (दंगा) करते हो क्योकि जन्नत पाक लोगो के लिए (उनके कर्मो का नतीजा) है और उसने कहा है कि क्या जहन्नम मे मुतकब्बिर (घमंडी) लोगो के सिवा और भी होगा ? अर्थात न होगा) फिर आपने मस्जिद की तरफ के जितने दरवाज़े थे सभी को बन्द करने का हुक्म दे दिया केवल अबू बक्र के दरवाजे को छोड कर। फिर यह कहा कि मैं किसी को अबू बक्र से ज्यादा अपनी सोहबत (महफिल) में अफजल (श्रेष्ठ) नही जानता हूं और यदि मैं किसी को अपना खलील (दोस्त) बनाता तो अबू बक्र को अपना खलील (दोस्त) बनाता।"

वफ़ात (देहान्त)

इसके बाद फिर दर्द का इतना ज़ोर हुआ कि आप बेहोश हो गए। उम्मुहातुल मोमिनीन (आप

की पत्निया) और फातिमा (रज़ि०) व अब्बास, अली रज़ि० सबके सब आपके गिर्द (पास) आकर जमा हो गए। इसी अर्से (बीच मे) में नमाज का वक्त आ गया। दर्द मे कुछ कमी मालूम हुई वेहोशी जाती रही, लेकिन जोअफ (कमज़ोरी) से उठ न सकते थे। आपने हाज़िरीन (पास वालो) से मुखातिब (सम्बोधित) होकर फरमाया कि अबू बक्र रज़ि० को नमाज़ पढाने के लिए कहो। उम्मुल-मोमिनीन हजरत आयशा रजि० ने अर्ज़ किया कि वे एक ज़ईफ व रकीकुल कल्ब (कमज़ोर व थोडे दिल वाले) आदमी है आपकी जगह पर खडे होकर नमाज़ न पढा सकेंगे, उमर रज़ि० को इस काम पर मामूर (लगा) फरमा दें आपने इससे इन्कार करके अबू बक्र रज़ि० को इमामत पर मामूर (खडा किया) किया और फरमाया कि खुदा और मुसलमान अबू बक्र रजि० के सिवा और किसी पर राज़ी नही हैं।

फिर अबू बक्र रजि० ने आपकी अलालत (बीमारी) की हालत मे तेरह नमाज़ें पढायी। फिर जबकि दोशम्बे (पीर) का दिन आया और यही दिन आपकी वफात (देहान्त) का है सुबह की नमाज़ के समय आप सर मुबारक पर पट्टी बाधे हुए बाहर तश्रीफ लाए। उस वक्त अबू बक्र लोगों को नमाज़ पढा रहे थे। अबू बक्र ने पीछे हटने का कस्द (इरादा) किया, आपने उनको अपने हाथ से दायी तरफ बैठकर नमाज़ पढाने का इशारा किया और खुद (स्वय) अबू बक्र के पीछे नमाज़ अदा की। इसके बाद लोगो की तरफ मुखातिब (सम्बोधित) होकर फरमाया—ऐ लोगो! आग भड़की, फित्ने आ गए तुमको मालूम रहे कि जिस चीज को कुरआन ने हलाल या हराम करार (ठहराया) दिया है उसके सिवा मैंने किसी चीज़ को हराम या हलाल करार नही दिया। फिर हज़रत आयशा रज़ि० के घर में आए और वही आप (सल्ल०) आप का इन्तिकाल (देहान्त) हो गया।

नबी सल्ल० का इन्तकाल होते ही सहावा मे एक अज़ीम (बड़ी) परेशानी फैल गयी। उमर बिन खत्ताब रज़ि० इस हादसए नागहानी (अचानक टूट पडने वाली घटना) से मुतहय्यर (हैरत) से हो गए। कुछ होश न रहा। तलवार खीच कर खडे हो गए और बुलद (ऊची) आवाज से कहने लगे—'मुनाफिक (कपटाचारी) कहते है कि हुज़ूर का इन्तकाल हो गया मगर वे झूठे हैं, वल्कि वे तो मूसा अलैहि० की तरह खुदा से मिलने गए है थोडी देर मे आ जाएंगे और जो कोई यह कहे कि नबी सल्ल० मर गए है मैं उस की गर्दन इस तलवार से उडा दूगा।' उमर रज़ि० जोश मे यह कहते जाते थे। किसी की मजाल (हिम्मत) न थी कि कोई आदमी उनसे यह कहता कि तुम तलवार म्यान मे कर लो नबी सल्ल० का इन्तकाल हो गया है।

इसी दौरान यह दिल तोडने वाली घटना सुनकर अबू बक्र रजि० आ गए और सीधे हुजरए मुबारक मे जाकर हजरत आयशा रज़ि० की गोद से सर मुबारक लेकर गौर से देखकर कहा, 'मेरे मा बाप आप (सल्ल०) पर कुर्बान, बेशक (निस्सदेह) आप (सल्ल०) ने मौत का ज़ायका (स्वाद) चखा जिस को अल्लाह ने आप के लिए लिखा था और अब हरगिज़ (कदापि) आप को मौत न आएगी—'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' कहते हुए बाहर आए।

उमर रजि० लोगो से वही बाते कह रहे थे कि अबू बक्र रज़ि० ने उमर से कहा—चुप रहो, उमर (रज़ि०) ने कुछ भी ख्याल न किया। अबू बक्र दोबारा कहना मुनासिब (उचित) न समझ कर अलहदा (अलग) खड़े हो कर लोगो से मुखातिब (सम्बोधित) हुए। जितने आदमी उमर रज़ि० के पास जमा थे वे सब उन्हे अकेला छोड़ कर अबू बक्र रजि० के पास चले आए। उस समय उन्हो ने अल्लाह की प्रशसा के बाद यह खुत्बा पढा जिस का अनुवाद यह है—

"ऐ लोगो! जो आदमी मुहम्मद (सल्ल०) की इवादत करता हो तो वे इन्तकाल कर गए और

जो ख़ुदा की इबादत करता हो तो वह जिंदा है।" फिर कुरआन की ये आयतें पढी जिस का अनुवाद यह है—

"मुहम्मद (सल्ल०) इसके सिवा कुछ नही कि बस एक रसूल है उनसे पहले और रसूल भी गुज़र चुके हैं, फिर क्या यदि वह मर जाएं या कत्ल कर दिए जाएं तो तुम लोग उल्टे पाव फिर जाओगे ? याद रखो ! जो उल्टा फिरेगा वह अल्लाह का कुछ नुक़सान न करेगा। अलबत्ता जो अल्लाह का शुक्र अदा करने वाले हैं उन्हे वह उसका इनाम देगा।"

अबू बक्र रज़ि० की जबान से इन आयतो का निकलना था कि लोगो के ख़्यालात (विचार और सोच) बदल गए और दफ़अतेन (अचानक) हैरत का आलम (वातावरण) ऐसे दूर हो गया कि गोया (जैसे) इससे पहले वह नही था। इस परिवर्तन से यह मालूम होता था कि सहावा इस आयत के उतरने का हाल ही न जानते थे। उमर रज़ि० कहते है कि पहले मैंने अबू बक्र रज़ि० के कहने पर मुतलक (विल्कुल) ख़्याल नही किया था लेकिन जिस वक्त उन्होंने ये आयते पढी तो मुझे मालूम हुआ कि ये आयते भी नाज़िल हुई है। मारे डर के मेरे पांव थर्रा गए और ज़मीन पर गिर पड़ा और मैंने यह समझ लिया कि आपका इन्तकाल हो गया। और आप हज़रत आयशा रज़ि० के मकान मे उसी जगह पर जहां इन्तकाल फरमाया था कब्र शरीफ बनाकर रखे गए और आपके बाद तमाम मुसलमानो के इत्तिफ़ाक (राए) से हज़रत अबू बक्र रज़ि० खलीफा मुकर्रर (नियुक्त) हुए जिनमें मुहाजिर व अंसार सब शामिल थे।

दिन व तारीख़ व सन वफ़ात (इन्तिक़ाल)

आपने ६३ साल की उम्र में १२ रबीउल अव्वल ११ हिजरी दोशम्बा (पीर) के दिन इन्तकाल फरयाया।

१ सूरतुल-फ़ातिहति ५

(मक्की) इस सूर. मे अरबी के १२३ अक्षर, २५ शब्द
७ आयते और १ रुकूअ है।

सورة الفاتحة مكية سبع آيات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ اِيَّاكَ نَعْبُدُ
وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन (१) अर्रह्मानिर्रहीम (२) मालिकि यौमिद्दीन (३) इय्या-क नअबुदु व इय्या-क नस्तअीन (४) इह्दिनस्-सिरातल्मुस्तकीम (५) सिरातल्लज़ी-न अनअ़म्-त अलैहिम् (६) गैरिल्-मग्ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़ाल्लीन ✶ (७)

१ सूरः फ़ातिहः ५

सूर फातिहा मक्की है और इस मे सात आयते हैं।

शुरू' खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तरह की तारीफ खुदा ही के लिए है जो तमाम मख्लूकात का परवरदिगार है।' (१) बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला, (२) इन्साफ के दिन का हाकिम,' (३) (ऐ परवरदिगार!) हम तेरी ही इबादत करते है, और तुझी से मदद मागते है, (४) हम को सीधे रास्ते पर चला, (५) उन लोगो का रास्ता जिन पर तू अपना फज्ल व करम करता रहा, (६) न उनका जिन पर गुस्सा होता रहा और न गुमराहो का। ✶ (७)

तर्जुमा

---

१ चूंकि हुक्म है कि कुरआन मजीद खुदा का नाम लेकर शुरू किया जाए, इस लिए हमे 'बिस्मिल्लाह' के तर्जुमे के शुरू मे 'कहो' का लफ्ज़ जो छिपा हुआ है, लिख देना चाहिए था, मगर फिर सब जगह तर्जुमे मे यह लफ्ज़ लिखना पडता और इस मे वह मजा न आता जो 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम' मे है, इस लिए यह लफ्ज़ छिपा ही रहने दिया।

२. इस सूर को खुदा ने बंदो की जुबान मे नाजिल फरमायी है। मक्सूद यह बात का सिखाना है कि वे इस तरह खुदा से दुआ किया करे। हदीस शरीफ मे आया है कि सब से अफ़ज़ल जिक्र 'ला इला-ह इल्लल्लाह' है और सब से अफ्जल दुआ 'अल-हम्दु लिल्लाह'।

३ इन्साफ के दिन से मुराद कियामत का दिन है, क्योंकि दूसरी जगह इर्शाद हुआ है, 'तुम को क्या मालूम है कि इन्साफ का दिन कौन-सा है, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम न आएगा और उस दिन खुदा ही का हुक्म होगा'—अगरचे और दिनो का मालिक भी खुदा ही है, मगर उस दिन को खास इस लिए कहा कि उस दिन खुदा के सिवा किसी का हुक्म न चलेगा।

★रु १ आ ७

पहला पारः

अलिफ़्-लाम्-मीम्

२ सूरतुल-ब-क़-रति ८७

(मदनी) इस सूर. मे अरवी के २०००० अक्षर, ६०२१ शब्द, २८६ आयते और ४० रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् ट (१) जालिकल्कितावु ला रै - व ﷺ फ़ीहि ﷺ हुदल्लिल्मुत्तक़ीन ॥(२) अ्ल्लजी-न युअ्मिनू-न बिलगैवि व युकीमूनस्सला-त व मिम्मा र-जक्ना-हुम् यून्फिकून ॥(३) वल्लजी-न युअ्मिनू-न बिमा उन्जि-ल इलै-क व मा उन्जि-ल मिन् कब्लिक व बिल-आखिरति हुम् यूकिनून ॥(४)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى
لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ
يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ
وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ
اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ

∴ मु अि मु ता ख़· १

पहला पारः

अलिफ़्-लाम्-मीम्

२ सूरः बक़रः ८७

सूर बकर मदनी है और इसमे दो सौ छियासी आयते और चालीस रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ●

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलफि-लाम-मीम०[1] (१) यह किताब (कुरआन मजीद) ∴इसमें कुछ शक नही∴ (कि खुदा का कलाम है, खुदा से) डरने वालो की रहनुमा[2] है, (२) जो गैब[3] पर ईमान लाते और आदात्र के साथ नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उन को दे रखा है, उसमे से खर्च करते है। (३) और जो किताब (ऐ मुहम्मद !) तुम पर नाज़िल हुई और जो किताबे तुम से पहले (पैगम्बरो पर) नाज़िल हुयी, सब पर ईमान लाते और आखिरत का यकीन रखते है।[4] (४)

---

१. और इसी तरह के और हर्फ़, जो कुरआन मजीद की बहुत-सी सूरतो के शुरू मे आये और जिन को 'हुरूफ़े मुकत्तआत' कहते है, अस्रारे इलाही (अल्लाह के रहस्यो) मे से हैं, उन पर विना कुछ कहे-सुने ईमान लाना चाहिए। प्यारे नवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के कुछ मानी नही बयान फरमाये, सिर्फ़ यह फरमाया है कि 'अलिफ़' एक हर्फ़ है और 'लाम' एक हर्फ़ है और 'मीम' एक हर्फ़ है।

२ 'डरने वालो' का लफ़्ज़ इस वात की दलील लाता है कि जिन के दिलो मे खुदा का डर है, वही उन को हिदायत को मानते और वही इस किताव से फायदा हासिल करते है और जो डर नही रखते, वे हिदायत की वातो की तरफ़ तवज्जोह ही नही देते और इसी लिए यह किताव उन के लिए रहनुमा नही हो सकती।

३ 'गैव' उस चीज़ को कहते है, जो आख से छिपी हुई हो और इस जगह वे चीज़ें मुराद हैं, जिन की खबर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है और जो नज़र से ओझल हैं—जैसे पुले सिरात, तराज़ू-ए-आमाल, वहिश्त और दोज़ख वगैरह।

४ आखिरत से मुराद कियामत का दिन है, चूकि वह दिन दुनिया के वाद आयेगा, इस लिए उस को आखिरत कहते हैं और 'यौमुल आख़र' भी।

उलाइ-क अ़ला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (५)
इन्नल्लज़ी-न क-फ़-रू सवाउन अ़लैहिम् अ अन्जर-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्हुम् ला
युअ्मिनून (६) ख़-त-मल्लाहु अ़ला कुलूबिहिम् व अ़ला सम्अिहिम् व अ़ला
अब्सारिहिम् ग़िशावतुंव् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम ★ (७) व मिनन्नासि
मंय्यकूलु आमन्ना बिल्लाहि व बिल्यौमिल्-आख़िरि
व मा हुम् बि मुअ्मिनीन /// (८)
युख़ादिअूनल्ला-ह वल्लज़ी-न आमनू व मा
यख़्दअू-न इल्ला अन्फुसहुम् व मा यशअुरून
(९) फ़ी कुलूबिहिम् म-रज़ुन्
फ़ ज़ा-द हुमुल्लाहु म-र-ज़न् व लहुम् अ़ज़ाबुन्
अलीमुम् बिमा कानू यक्ज़िबून (१०)
व इज़ा क़ी-ल लहुम् ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि
क़ालू इन्नमा नह्नु मुस्लिहून (११) अला
इन्नहुम् हुमुल् - मुफ़्सिदू-न व ला किल्ला
यश्अुरून (१२) व इज़ा क़ी-ल लहुम्
आमिनू कमा आमनन्नासु क़ालू अनुअ्मिनु
कमा आमनस्सुफ़हाउ अला इन्नहुम्
हुमुस्सुफ़हाउ व लाकिल्ला यअ्-लमून (१३) व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आमनू
क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लौ इला शयातीनिहिम् क़ालू इन्ना
म-अ़कुम् इन्नमा नह्नु मुस्तह्ज़िऊन (१४) अल्लाहु यस्तह्ज़िउ बिहिम् व
यमुद्दुहुम् फ़ी तुग़यानिहिम् यअ्-महून (१५) उलाइकल्-लज़ीनश्-त-रवुज़्-ज़ला-ल-तु
बिल्हुदा फ़मा रबिहत् तिजारतुहुम् व मा कानू मुह्तदीन (१६)
म-सलुहुम् क-म-सलिल्-लज़िस्तौक-द नारन् फ-लम्मा अज़ा-अत् मा हौलहू
ज़-ह-बल्लाहु बिनूरिहिम् व त-र-कहुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्ला युब्सिरून (१७)
सुम्मुम् - बुक्मुन् - अुम्युन् फ़हुम् ला यर्जिअून (१८) औ क-सय्यिबिम्-
मिनस्समाइ फ़ीहि ज़ुलुमातुंव-व रअ्दुंव-व बर्क़ुन् यज्अलू-न असाबिअहुम् फ़ी
आज़ानिहिम् मिनस्सवाअ़िक़ि ह-ज़-रल्मौति वल्लाहु मुहीतुम्-बिल्काफ़िरीन (१९)

أُولَٰٓئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ
قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَٰرِهِمْ غِشَٰوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ۝
يُخَٰدِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ وَمَا
يَشْعُرُونَ ۝ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌۢ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِى الْأَرْضِ
قَالُوٓا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝ أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا
يَشْعُرُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ءَامِنُوا كَمَآ ءَامَنَ النَّاسُ قَالُوٓا أَنُؤْمِنُ كَمَآ
ءَامَنَ السُّفَهَآءُ ۗ أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا لَقُوا
الَّذِينَ ءَامَنُوا قَالُوٓا ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَٰطِينِهِمْ قَالُوٓا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِءُونَ ۝ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِى طُغْيَٰنِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝
أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَٰلَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَٰرَتُهُمْ وَمَا كَانُوا
مُهْتَدِينَ ۝ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّآ أَضَآءَتْ مَا حَوْلَهُ
ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِى ظُلُمَٰتٍ لَّا يُبْصِرُونَ ۝ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ
فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيهِ ظُلُمَٰتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ
يَجْعَلُونَ أَصَٰبِعَهُمْ فِىٓ ءَاذَانِهِم مِّنَ الصَّوَٰعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۚ وَاللَّهُ مُحِيطٌ

★रु. १/१ आ ७ /// व. लाजिम

यही लोग अपने परवरदिगार (की तरफ) से हिदायत पर है और यही निजात पाने वाले है। (५) जो लोग काफिर है उन्हे तुम नसीहत करो या न करो, उन के लिए वरावर है,[1] वे ईमान नही लाने के। (६) खुदा ने उन के दिलो और कानों पर मुहर लगा रखी है और उन की आखो पर परदा (पड़ा हुआ) है।[2] और उन के लिए वड़ा अज़ाव तैयार है। (७) ★

और कुछ लोग ऐसे है जो कहते हैं कि हम खुदा पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हैं, हालांकि वे ईमान नही रखते ▨ (८) ये (अपने घमंड मे) खुदा को और मोमिन को चकमा देते हैं मगर (हकीकत मे) अपने सिवा किसी को चकमा नहीं देते और इस से वे-खवर है।[1] (९) इन के दिलो मे (कुफ्र का) रोग था। खुदा ने उन का रोग और ज़्यादा कर दिया और उन के झूठ बोलने की वजह से उन को दुख देने वाला अज़ाव होगा। (१०) और जब उन से कहा जाता है कि ज़मीन मे फसाद न डालो, तो कहते हैं कि हम तो इस्लाह (सुधार) करने वाले है। (११) देखो, ये बिला शुव्हा फसाद पैदा करने वाले है, लेकिन खबर नही रखते।[4] (१२) और जब उन से कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान ले आए, तुम भी ईमान ले आओ, तो कहते है, भला, जिस तरह मूर्ख ईमान ले आए है, उसी तरह हम भी ईमान ले आए? सुन लो कि यही मूर्ख है, लेकिन नही जानते। (१३) और ये लोग जब मोमिनो से मिलते है तो कहते है कि हम ईमान ले आए है और जब अपने शैतानो मे जाते है तो (उन से) कहते है कि हम तुम्हारे साथ है और (मुहम्मद सल्ल० के मानने वालो से) तो हम हसी किया करते है।[1] (१४) इन (मुनाफिकों) से खुदा हसी करता है और उन्हे मोहलत दिए जाता है कि शरारत व सरकशी मे पडे वहक रहे है।[1] (१५) ये वह लोग है जिन्होने हिदायत छोड कर गुमराही खरीदी, तो न तो उन की तिजारत ही ने कुछ नफा दिया और न वे हिदायतयाब (हिदायत पाए हुए) ही हुए। (१६) उन की मिसाल उस शख्स की-सी है, जिस ने (अधेरी रात मे) आग जलायी। जब आग ने उसके चारो तरफ की चीजे रोशन की, तो खुदा ने उन लोगो की रोशनी खत्म कर दी और उन को अधेरो मे छोड दिया कि कुछ नही देखते।[1] (१७) (ये) बहरे है, गूगे है, अधे है कि (किसी तरह सीधे रास्ते की तरफ) लौट ही नही सकते। (१८) या उन की मिसाल मेह (वर्षा) की-सी है कि आसमान मे (वरस रहा हो और) उस मे अंधेरे पर अंधेरा (छा रहा) हो और (बादल) गरज (रहा) हो और विजली (कडक रही) हो तो ये कडक से (डर कर) मौत के डर से कानो मे उंगलिया दे लें और खुदा काफिरो को

---

१ इन्ज़ार के मानी डर की खवर सुनाने, खौफ दिलाने, वाज़ व नसीहत और हिदायत करने, राह वताने और मुतनव्वह व आगाह करने के हैं। पहले मानी तो मशहूर हैं, वाज़ व नसीहत और हिदायत के मानी इन आयत से ज़ाहिर हैं। 'इन्नमा अन्-त मुज़िरु व-व लि कुल्लि कौमिन हाद०' यानी ऐ पैगम्वर! तुम तो सिर्फ हिदायत करने वाले हो और हर कौम मे हिदायत करने वाले हो गुज़रे हैं।' इस का साफ मतलव यह है कि जिस तरह पहले हादी व रहनुमा आते रहे हैं और वे हर कौम मे आते रहे हैं, इसी तरह तुम भी हिदायत करने वाले और रास्ता दिखाने वाले हो। इस जगह 'इन्ज़ार' से वाज़ व नसीहत के मानी ही मुनासिव हैं और वही तर्जुमे मे अख्तियार किया गया है।

२ दुनिया मे इस किस्म के लोग भी मौजूद हैं जिन के दिल नसीहत का असर नही लेते और ईमानी नूर से रोशन नही होते, ऐसे लोग शकी-ए-अज़ली (हमेशा के वद-वख़्त) कहलाते हैं। ऐसो ही के हक मे यह इर्शाद हुआ है कि उन को नसीहत करना या न करना वरावर है। दिलो और कानो पर मुहर लगने और आखो पर परदा डालने के

(शेष पृष्ठ ६३१ पर)

★रु. १/१ आ ७ ▨ व लाज़िम

यकादुलबर्कु यख्तफु अब्सारहुम् कुल्लमा अज़ा-अ लहुम् मशौ फ़ीहि
व इज़ा अज़्-ल-म अलैहिम् क़ामू व लौ शा-अल्लाहु ल ज़-ह-ब बि सम्अिहिम्
व अब्सारिहिम् इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (२०)
या अय्युहन्नासुअ्-बुदू रब्बकुमुल्लज़ी ख-ल-क़कुम् वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम्
तत्तकून (२१) अल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुलअर्-ज़
फ़िराशव्वस्समा-अ बिना-अंव्-व अन्ज़-ल
मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़्-र-ज बिही
मिनस्-स-मराति रिज़-क़ल्लकुम फ़ला तज्-अलू
लिल्लाहि अन्दादव्व अन्तुम् तअ़्-लमून (२२)
व इन कुन्तुम् फ़ी रैबिम्मिम्मा नज़्ज़ल्ना
अला अब्दिना फ़अ्तू बिसू-रतिम्-मिम्-
मिस्लिही वद्अू शु-हदा-अ-कुम्
मिन्दूनिल्लाहि इन कुन्तुम् सादिक़ीन (२३)
फ़इल्लम् तफ्अलू व लन् तफ्अलू
फ़त्तक़ुन्नारल्लती वक़ूदुहन्नासु वल्हिजारतु
उअिद्दत् लिल्काफ़िरीन (२४) व
बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति
अन-न लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-
अन्हारु कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन्
स-म-रतिर्रिज़्क़न् क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना मिन् क़ब्लु व उतू बिही
मुतशाबिहन् व लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् - मुतह्ह-रतुंव्-व हुम् फ़ीहा
ख़ालिदून (२५) इन्नल्ला-ह ला यस्तह़्यी अंय्यज़्रि-ब म-स-लम्मा बअूज़-तन् फ़मा
फ़ौक़हा फ-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़ यअ्-लमू-न अन्नहुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम्
व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ यक़ूलू-न माज़ा अरादल्लाहु बि हाज़ा म-स-लन्
युज़िल्लु बिही कसीरंव्-व यह्दी बिही कसीरन् व मा
युज़िल्लु बिही इल्लल् - फ़ासिक़ीन (२६) अल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न
अह्दल्लाहि मिम्बअ़्दि मीसाक़िही व यक़्तअू-न मा अ-म-रल्लाहु
बिही अंय्यू-स-ल व युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि उलाइ-क हुमुल्ख़ासिरून (२७)

بِالْكٰفِرِيْنَ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ وَ
اِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ
وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا
وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا
لَّكُمْ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا
نَزَّلْنَا عَلٰي عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا
النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ كُلَّمَا
رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا قَالُوْا ھٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَاُتُوْا
بِهٖ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّھُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ
اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا
الْفٰسِقِيْنَ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ
مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ اُولٰۗىِٕكَ ھُمُ الْخٰسِرُوْنَ

★ए २/२ आ १३ ✻ व लाज़िम

(हर तरफ से) घेरे हुए है ।[1] (१९) करीब है कि बिजली (की चमक) उन की आखो (की रोशनी) को उचक ले जाए । जब बिजली (चमकती और) उन पर रोशनी डालती है तो उस मे चल पडते है और जब अधेरा हो जाता है तो खडे के खडे रह जाते है और अगर ख़ुदा चाहता तो उनके कानो (के सुनने की ताकत) और आखो (के देखने की ताकत, दोनो) को बर्बाद कर देता। बिला शुब्हा ख़ुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है ।(२०) ★

लोगो ! अपने परवरदिगार की इबादत करो, जिस ने तुमको और तुमसे पहले लोगो को पैदा किया, ताकि तुम (उस के अजाब से) बचो । (२१) जिस ने तुम्हारे लिए जमीन को बिछौना और आसमान को छत बनाया और आसमान से मेह बरसा कर तुम्हारे खाने के लिए किस्म-किस्म के मेवे-पैदा किए । पस किसी को ख़ुदा का हमसर (बराबर का) न बनाओ और तुम जानते तो हो । (२२) और अगर तुमको इस (किताब) मे, जो उस ने अपने बदे (मुहम्मद अरबी सल्ल०) पर नाजिल फरमायी है, कुछ शक हो तो इसी तरह की एक सूर तुम भी बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जो तुम्हारे मददगार हो, उन को भी बुला लो अगर तुम सच्चे हो ।[1] (२३) लेकिन अगर (ऐसा) न कर सको और हरगिज नही कर सकोगे तो उस आग से डरो, जिस का ईधन आदमी और पत्थर होगे (और जो) काफिरो के लिए तैयार की गयी है । (२४) और जो लोग ईमान ले आए और नेक अमल करते रहे, उन को खुशखबरी सुना दो कि उन के लिए (नेमत के) बाग है, जिन के नीचे नहरे बह रही है, जब उन्हे उन मे से किसी किस्म का मेवा खाने को दिया जाएगा तो कहेगे यह तो वही है जो हम को पहले दिया गया था और उन को एक दूसरे से शक्ल मे मिलते-जुलते मेवे दिए जाएगे और वहा उन के लिए पाक बीविया होगी और वे बहिश्तो मे हमेशा रहेगे । (२५) ख़ुदा इस बात से नही शर्माता कि मच्छर या उस से बढ कर किसी चीज (जैसे मक्खी-मकडी वगैरह) की मिसाल बयान फ़रमाए । जो मोमिन हैं, वे यकीन करते है कि वह उन के परवरदिगार की तरफ से सच है और जो काफिर है, वे कहते है कि इस मिसाल से ख़ुदा चाहता क्या है ⁂ इस से (ख़ुदा) बहुतो को गुमराह करता है और बहुतो को हिदायत बख्शता है और गुमराह भी करता है तो नाफरमानो ही को ।[1] (२६) जो ख़ुदा के इकरार को मज़बूत करने के बाद तोड देते है और जिस चीज (यानी रिश्तेदारी) के जोडे रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है, उसको तोडे डालते है और ज़मीन मे खराबी

---

१ यह मुनाफिको के हाल की दूसरी मिसाल है । इस मे दीने इस्लाम को मेह (वर्षा) मे तश्बीह (उपमा) दी गयी है । जिस तरह मेह मे अधेरा और बिजली और गरज होती है, इसी तरह इस्लाम के शुरू मे, भले ही कुछ परेशा-निया और कठिनाइया भी हो, लेकिन बाद मे वह सरासर रहमत होता है । मुनाफिको को इस्लाम से फायदे पहुचते तो उस के कायल हो जाते और जब कोई ऐसा हुक्म नाजिल होता, जिसे वे सख्त समझते तो सोचते कि हम नाज़िल हुई और यो डर जाते जैसे बिजली से डरा करते हैं । कडक से डर कर कानो मे उगलिया दे लेने का मतलब यह है कि हुक्म की सख्ती से घबरा कर उस पर अमल करने से हिचकिचाते और ऐसी तद्बीरें करने लगते कि मुश्किल मे न फस जाए और उस से बच जाए । कुछ लोगो ने कहा है कि कुरआन मजीद मे जो कुफ्र व शिर्क और उस पर डरावे और सजा का बयान और ख़ुदा के एक होने की रोशन दलीले हैं, जिन की मिसाल अंधेरे और गरज और बिजली की है तो मुनाफिको को डर पैदा होता है कि उन को सुन कर लोग कही ईमान लाने पर तैयार न हो जाएं और अपना मजहब न छोड बैठे जो उनके नजदीक मौत जैसा था और इसी वजह से वे अपने कानो मे उंगलिया दे लेते कि कुरआन को सुन ही न सकें ।

(शेष पृष्ठ ६३५ पर)

★रु २/२ आ १३ ⁂ व. लाज़िम

कै-फ़ तक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातन् फ़ अह़्याकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह़्यीकुम् सुम्-म इलैहि तुर्जअ़ून (२८) हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् सुम्मस्तवा इलस्समा-इ फ़-सव्वाहुन-न सब्-अ़ समावातिन् व हु-व बि कुल्लि शै-इन् अ़लीम ★ (२९) व इज़ क़ा-ल रब्बु-क लिलमलाइकति इन्नी जाअ़िलुन् फ़िल्अर्ज़ि ख़ली-फ़-तन् क़ालू अ तज्अ़लु फ़ीहा मय्युफ़्सिदु फ़ीहा व यस्फ़िकुद्दिमा-अ व नह़्नु नुसब्बिहु बि ह़म्दि-क व नुक़द्दिसु ल-क क़ा-ल इन्नी अअ़्-लमु मा ला तअ़्-लमून (३०) व अ़ल-ल-म आदमल्अस्मा-अ कुल्लहा सुम-म अ़-र-ज़हुम् अ़लल्मला-इकति फ़-का-ल अम्बिऊनी बि अस्मा-इ हा-उला-इ इन कुन्तुम् स़ादिक़ीन (३१) कालू सुब्ह़ान-क ला इ़ल्-म लना इल्ला मा अ़ल्लम्तना इन्न-क अन्तल्-अ़लीमुल्-ह़कीम (३२) क़ा-ल या आदमु अम्बिअ्हुम् बिअस्मा-इहिम् फ़ लम्मा अम्ब-अहुम् बिअस्मा-इहिम् क़ा-ल अ-लम् अक़ुल्लकुम् इन्नी अअ़्-लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि व अअ़्-लमु मा तुब्दू-न व मा कुन्तुम् तक्तुमून (३३) व इज़ क़ुल्ना लिल्-मला-इकतिस्जुदू लि आद-म फ़-स-ज-दू इल्ला इब्लीस अबा वस्तक्-ब-र व का-न मिनल्काफ़िरीन (३४) व क़ुल्ना या आदमुस्कुन् अन-त व ज़ौजुकल्जन्न-त व कुला मिन्हा र-ग-दन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़्रबा हाज़िहिश्श-ज-र-त फ़ तकूना मिनज़्ज़ालिमीन (३५) फ़ अज़ल्लहुमश्-शैतानु अ़न्हा फ़-अख़्-र-ज-हुमा मिम्मा काना फ़ीहि व क़ुल्नह्बितू बअ़्-ज़ुकुम् लि बअ़्ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्जि मुस्तक़र्रुंव-व मता-उ़न् इला ह़ीन (३६) फ़-त-लक़्क़ा आदमु मिर्रब्बिही कलिमातिन् फ़ ता-ब अ़लैहि इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रह़ीम् (३७) क़ुल्नह्बितू मिन्हा जमीअ़न् फ़इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़-मन् तबि-अ़ हुदा-य फ ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून (३८) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि आयातिना उला-इक असह़ाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून ★ (३९)

كيف تكفرون بالله وكنتم أمواتا فأحياكم ثم يميتكم ثم يحييكم ثم إليه
ترجعون ۝ هو الذي خلق لكم ما في الأرض جميعا ثم استوى إلى السماء
فسواهن سبع سماوات وهو بكل شيء عليم ۝ وإذ قال ربك للملائكة إني
جاعل في الأرض خليفة قالوا أتجعل فيها من يفسد فيها ويسفك
الدماء ونحن نسبح بحمدك ونقدس لك قال إني أعلم ما لا تعلمون ۝ و
علم آدم الأسماء كلها ثم عرضهم على الملائكة فقال أنبئوني بأسماء
هؤلاء إن كنتم صادقين ۝ قالوا سبحانك لا علم لنا إلا ما علمتنا إنك
أنت العليم الحكيم ۝ قال يا آدم أنبئهم بأسمائهم فلما أنبأهم بأسمائهم
قال ألم أقل لكم إني أعلم غيب السماوات والأرض وأعلم ما تبدون
وما كنتم تكتمون ۝ وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس
أبى واستكبر وكان من الكافرين ۝ وقلنا يا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة
وكلا منها رغدا حيث شئتما ولا تقربا هذه الشجرة فتكونا من الظالمين ۝
فأزلهما الشيطان عنها فأخرجهما مما كانا فيه وقلنا اهبطوا بعضكم لبعض
عدو ولكم في الأرض مستقر ومتاع إلى حين ۝ فتلقى آدم من ربه كلمات
فتاب عليه إنه هو التواب الرحيم ۝ قلنا اهبطوا منها جميعا فإما يأتينكم
مني هدى فمن تبع هداي فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ والذين كفروا
وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ۝ يا بني إسرائيل اذكروا

★ रु. ३/३ आ ९ ★ रु. ४/४ आ १०

करते है, यही लोग नुक्सान उठाने वाले है। (२७) (काफ़िरो !) तुम खुदा के कैसे इन्कारी हो सकते हो, जिस हाल मे कि तुम वे-जान थे, तो तुमको जान बख्शी, फिर वही तुमको मारता है, फिर वही तुमको ज़िंदा करेगा, फिर उसी की तरफ लौट कर जाओगे। (२८) वही तो है, जिसने सब चीजे, जो ज़मीन मे है, तुम्हारे लिए पैदा की, फिर आसमानो की तरफ मुतवज्जह हुआ, तो उनको ठीक सात आसमान बना दिया और वह हर चीज़ से खबरदार है।(२९) ★

और (वह वक्त याद करने के काबिल है) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तो से फरमाया कि मैं जमीन मे (अपना) नायब बनाने वाला हूं। उन्होने कहा, क्या तू उसमे ऐसे शख्स को नायब बनाना चाहता है, जो खराबिया करे और कुश्त व खून करता फिरे और हम तेरी तारीफ के साथ तस्बीह व तक्दीस करते रहते है। (खुदा ने) फरमाया, मैं वह बातें जानता हू जो तुम नही जानते। (३०) और उसने आदम को सब (चीजो के) नाम सिखाये, फिर उनको फरिश्तो के सामने किया और फरमाया कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ। (३१) उन्होंने कहा, तू पाक है, जितना इल्म तूने हमे बख्शा है, उसके सिवा हमे कुछ मालूम नही। बेशक तू दाना (सर्व ज्ञाता) (और) हिक्मत वाला है। (३२) (तब) खुदा ने (आदम को) हुक्म दिया कि आदम ! तुम इन को उन (चीज़ो) के नाम बताओ। जब उन्होने उनको उनके नाम बताये तो (फरिश्तो से) फरमाया, क्यो, मैंने तुमसे नही कहा था कि मैं आसमानो और ज़मीन की (सब) पोशीदा बाते जानता हू और जो तुम जाहिर करते हो और जो पोशीदा करते हो (सब) मुझको मालूम है। (३३) और जब हमने फरिश्तो को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो', तो वे सब सज्दे मे गिर पडे, मगर शैतान ने इकार किया और गुरूर (घमण्ड) मे आकर काफिर बन गया।[१] (३४) और हमने कहा कि ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत मे रहो और जहा से चाहो, वे-रोक-टोक खाओ (पियो), लेकिन उस पेड के पास न जाना, नही तो ज़ालिमो मे (दाखिल) हो जाओगे। (३५) फिर शैतान ने दोनो को वहा से फिसला दिया और जिस (ऐश व निशात) मे थे, उससे उनको निकलवा दिया। तब हमने हुक्म दिया कि (जन्नत से) चले जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए जमीन मे एक वक्त तक ठिकाना और मआश (रोज़ी) मुकर्रर कर दिया गया है। (३६) फिर आदम ने अपने परवरदिगार से कुछ कलिमात (बोल) सीखे (और माफ़ी मागी) तो उसने उनका कुसूर माफ कर दिया। बेशक वह माफ करने वाला (और) रहम वाला है। (३७) हमने फरमाया कि तुम सब यहा से उतर जाओ। जब तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत पहुचे तो (उसकी पैरवी करना कि) जिन्होने मेरी हिदायत की पैरवी की, उनको न कुछ खौफ होगा और न वे गमनाक होगे। (३८) और जिन्होने (उसको) कुबूल न किया और हमारी आयतो को झुठलाया, वे दोज़ख मे जाने वाले है (और) वे हमेशा उसमे रहेगे। (३९) ★

---

१ सज्दा दो तरह का होता है, एक इबादत का, एक ताज़ीम (आदर) का, इबादत निहायत ज़िल्लत को कहते है और अल्लाह तआला नही चाहता कि इन्सान उस के सिवा किसी और के आगे ज़िल्लत अख्तियार करे, इस मे इसान के शान की बुलदी ज़ाहिर होती है कि खुदा ने उस का अपने सिवा किसी और की इबादत करना जायज नहीं रखा। जो सज्दा खुदा ने फरिश्तो से आदम को कराना चाहा था, वह ताज़ीम और इकराम और एहतिराम का सज्दा था, जैसा यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ को किया था। ऐसा सज्दा पहले मज़हबो मे जायज था। दीने इस्लाम मे गैर-मशरूअ करार दिया गया यानी शरीअत ने नाजायज करार दिया। अब ऐसा सज्दा जायज नहीं।

(शेष पृष्ठ ९३६ पर)

★रु. ३/३ आ ९ ★रु ४/४ आ-१०

या बनी इस्रा-ईलज़्कुरू निअ़-मतियल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व औफ़ू बि अ़ह्दी ऊफ़ि बि अ़ह्दिकुम् व इय्या-य फर्हबून (४०) व आमिनू बिमा अन्ज़ल्तु मुसद्दिकल्लिमा म-अकुम् व ला तकूनू अव्व-ल काफ़िरिम् - बिही व ला तश्तरू बि आयाती स-म-नन् क़लीलंव् व इय्या-य फ़त्तकून (४१) व ला तल्बिसुल् हक़्-क़ बिल्बातिलि व तक्तुमुल्हक़्-क़ व अन्तुम् तअ़-लमून (४२) व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वर्कअ़ू मअर्राकिअ़ीन (४३) अ तअ्मुरूनन्ना-स बिल्बिर्रि व तन्सौ-न अन्फ़ुसकुम् व अन्तुम् तत्लूनल्-किताब अ-फला तअ़्-क़िलून (४४) वस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति व इन्नहा ल कबीरतुन् इल्ला अ़लल्ख़ाशिअ़ीन (४५) अ़ल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम् मुलाक़ू रब्बिहिम् व अन्नहुम् इलैहि राजिअ़ून ★●(४६) या बनी इस्रा-ईलज़्कुरू निअ़्-मतियल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ़-लल्आ़लमीन (४७) वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न् नफ़्सिन् शैअंव-व ला युक़्बलु मिन्हा शफाअ़तुंव-व ला युअ्ख़ज़ु मिन्हा अ़द्लुंव-व ला हुम् युन्सरून (४८) व इज़ नज्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ-न यसूमूनकुम् सू-अल्अ़ज़ाबि युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम् व फ़ी ज़ालिकुम् बला-उम्-मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम (४९) व इज़ फ़-रक़्ना बि कुमुल्बह्-र फ़ अन्-जैनाकुम् व अग्रक़्ना आ-ल फ़िर्औ-न व अन्तुम् तन्ज़ुरून (५०) व इज़् वाअ़द्ना मूसा अर्बअ़ी-न लैलतन् सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्-अ़िज्-ल मिम्बअ़्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून (५१) सुम्-म अ़फ़ौना अ़न्कुम् मिम्बअ़्दि ज़ालि-क लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (५२) व इज़ आतैना मूसल्किता-ब वल्फ़ुर्क़ा-न लअ़ल्लकुम् तह्तदून (५३) व इज़ का-ल मूसा लि क़ौमिही या क़ौमि इन्नकुम् ज़-लम्तुम् अन्फ़ुसकुम् बित्तिख़ाज़िकुमुल्-अ़िज्-ल फ़ तूबू इला बारिइकुम् फ़क़्तुलू अन्फ़ुसकुम् ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् अ़िन्-द बारिइकुम् फ़-ता-ब अ़लैकुम् इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम (५४)

نعمتي التي أنعمت عليكم وأوفوا بعهدي أوف بعهدكم وإياي فارهبون ۝
وآمنوا بما أنزلت مصدقا لما معكم ولا تكونوا أول كافر به ولا تشتروا بآياتي
ثمنا قليلا وإياي فاتقون ۝ ولا تلبسوا الحق بالباطل وتكتموا الحق وأنتم
تعلمون ۝ وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واركعوا مع الراكعين ۝ أتأمرون الناس
بالبر وتنسون أنفسكم وأنتم تتلون الكتاب أفلا تعقلون ۝ واستعينوا بالصبر
والصلاة وإنها لكبيرة إلا على الخاشعين ۝ الذين يظنون أنهم ملاقوا ربهم
وأنهم إليه راجعون ۝ يا بني إسرائيل اذكروا نعمتي التي أنعمت عليكم
وأني فضلتكم على العالمين ۝ واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا
ولا يقبل منها شفاعة ولا يؤخذ منها عدل ولا هم ينصرون ۝ وإذ
نجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب يذبحون أبناءكم و
يستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم عظيم ۝ وإذ فرقنا بكم
البحر فأنجيناكم وأغرقنا آل فرعون وأنتم تنظرون ۝ وإذ واعدنا
موسى أربعين ليلة ثم اتخذتم العجل من بعده وأنتم ظالمون ۝ ثم
عفونا عنكم من بعد ذلك لعلكم تشكرون ۝ وإذ آتينا موسى الكتاب
والفرقان لعلكم تهتدون ۝ وإذ قال موسى لقومه يا قوم إنكم ظلمتم
أنفسكم باتخاذكم العجل فتوبوا إلى بارئكم فاقتلوا أنفسكم ذلكم
خير لكم عند بارئكم فتاب عليكم إنه هو التواب الرحيم ۝ وإذ قلتم

★रु ५/५ आ ७ ●रुबुअ़ १/४

ऐ आले याकूब (बनी इस्राईल[1]) मेरे वे एहसान याद करो, जो मैंने तुम पर किये थे और उस इकरार को पूरा करो जो तुम ने मुझ से किया था। मैं उस इकरार को पूरा करूंगा, जो मैंने तुमसे किया था और मुझी से डरते रहो। (४०) और जो किताब मैंने (अपने रसूल मुहम्मद सल्ल० पर) नाजिल की है, जो तुम्हारी किताब (तौरात) को सच्चा कहती है, उस पर ईमान लाओ और उनके पहले-पहले इन्कारी न बनो और मेरी आयतो मे (घटा-बढ़ा कर के) उन के बदले थोडी-सी कीमत (यानी दुनिया का फायदा) न हासिल करो और मुझी से खौफ रखो। (४१) और हक को बातिल के साथ न मिलाओ और सच्ची बात को जान-बूझ कर न छिपाओ। (४२) और नमाज पढा करो और ज़कात दिया करो और (खुदा के आगे) झुकने वालो के साथ झुका करो। (४३) (यह) क्या (अक्ल की बात है कि) तुम लोगो को नेकी करने को कहते हो और अपने आपको भुलाये देते हो, हालाकि तुम (खुदा की) किताब भी पढते हो, क्या तुम समझते नही? (४४) और (रज व तक्लीफ मे) सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो और बेशक नमाज गरा (बोझ) है, मगर उन लोगो पर (गरा नही), जो इज्ज करने वाले (यानी अल्लाह का डर रखने वाले) हैं। (४५) जो यकीन किये हुए है कि वे अपने परवरदिगार से मिलने वाले है और उसकी तरफ लौट कर जाने वाले है। ★ ●

(४६) ऐ याकूब की औलाद! मेरे वे एहसान याद करो, जो मैंने तुम पर किये थे और यह कि मैंने तुमको जहान (दुनिया) के लोगो पर फजीलत दी थी। (४७) और उस दिन से डरो, जब कोई किसी के कुछ भी काम न आये और न किसी की सिफारिश मजूर की जाए और न किसी से किसी तरह का बदला कुबूल किया जाए और न लोग (किसी और तरह) मदद हासिल कर सके। (४८) और (हमारे उन एहसानात को याद करो,) जब हमने तुम को फिऔंन[1] की कौम से मुख्लिसी बख्शी। वे (लोग) तुमको बडा दुख देते थे। तुम्हारे बेटो को तो कत्ल कर डालते थे और बेटियो को जिंदा रहने देते थे, और इसमे तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बडी (सख्त) आजमाइश थी। (४९) और जब हमने तुम्हारे लिए दरिया को फाड दिया, तो तुमको निजात दी और फिऔंन की कौम को डुबा दिया और तुम देख ही तो रहे थे। (५०) और जब हमने मूसा से चालीस रात का वायदा किया, तो तुमने उनके पीछे बछडे को (माबूद) मुकर्रर कर लिया और तुम जुल्म कर रहे थे। (५१) फिर उसके बाद हमने तुमको माफ कर दिया, ताकि तुम शुक्र करो। (५२) और जब हमने मूसा को किताब और मोजजे इनायत किये, ताकि तुम हिदायत हासिल करो। (५३) और जब मूसा ने अपनी कौम के लोगो से कहा कि भाइयो, तुमने बछडे को (माबूद) ठहराने मे (बडा) जुल्म किया है, तो अपने पैदा करने वाले के आगे तौबा करो और अपने आपको हलाक कर डालो। तुम्हारे पैदा करने वाले के नजदीक तुम्हारे हक मे यही बेहतर है। फिर उसने तुम्हारा कुसूर माफ कर दिया। वह बेशक माफ करने वाला (और) रहम वाला है। (५४) और जब तुमने

---

१ फिऔंन किसी खास शख्स का नाम न था, बल्कि उन वक्तो मे मिस्र के हर बादशाह को फिऔंन कहते थे। जो फिऔंन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वक्त मे था, उस का नाम वलीद बिन मुसअब बिन रय्यान था। कुछ ने मुसअब बिन रय्यान कहा है। कहते हैं कि लोगो ने फिऔंन से यह बात कही थी कि बनी [illegible] शख्स के पैदा होने के इन्तिज़ार मे हैं, जिस की वजह से वे फिऔंन के पजे से रिहाई पाएंगे और उन [illegible] तरक्की हासिल होगी। यह सुन कर फिऔंन ने हुक्म दिया कि बनी इस्राईल मे जो लड़का पैदा हो, वह [illegible] दिया जाए। कुछ कहते हैं कि फिऔंन ने एक सपना देखा था कि एक आग बैतुलमक्दिस से निकल कर [illegible]

(शेष पृष्ठ १२ पर)

★रु ५/५ आ ७ ●रुबूअ १/४

व इज़ क़ुल्तुम् या मूसा लन् नुअ्मि-न ल-क ह़त्ता न-रल्ला-ह जह्रतन्
फ़- अ-ख़-ज़त्कुमुस्साअ़िक़तु व अन्तुम् तन्ज़ुरून (५५) सुम्-म ब-अ़स्नाकुम् मिम्बअ़्दि
मौतिकुम् ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (५६) व ज़ल्लल्ना अ़लैकुमुल्-ग़मा-म व
अन्ज़ल्ना अ़लैकुमुलमन्-न वस्सल्वा ط कुलू मिन् तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् ط
व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम्
यज़्लिमून (५७) व इज़् क़ुल्नद्ख़ुलू
हाज़िहिल्-क़र्य-त फ़ कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम्
रग़दव्वद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदंव-व क़ूलू ह़ित्ततुन्
नग़्फ़िर् लकुम् ख़तायाकुम् ط व
स-नज़ीदुल्-मुह्सिनीन (५८) फ़ बद्द-लल्लज़ी-न
ज़-लमू क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़ अन्ज़ल्-ना
अ़लल्लज़ी-न ज़-लमू रिज्ज़म्-मिनस्समा-इ बिमा
कानू यफ़्सुक़ून ★ (५९) व इज़िस्तस्क़ा
मूसा लि क़ौमिही फ क़ुल्नज़्रिब् बि अ़साकल्-
ह़-जर ط फ़न्फ़-ज-रत् मिन्हुस्-नता अ़-श्-र-त अ़ैनन् ط
क़द् अ़लि-म कुल्लु उनासिम्-मश्रबहुम् ط
कुलू वश्रबू मिर्रिज़्क़िल्लाहि व ला तअ़्सौ
फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (६०) व इज़ क़ुल्तुम्
या मूसा लन् नस्बि-र अ़ला तआमिंव्वाहिदिन्

يٰمُوسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ
تَنْظُرُوْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ
الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا
ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا
مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ
وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا
عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذِ اسْتَسْقٰى
مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ
فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا
وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ
اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ
وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ
النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

फ़दअ़् लना रब्ब-क युख़्रिज् लना मिम्मा तुम्बितुल्-अर्-ज़ु मिम्बक़्लिहा व क़िस्सा-इहा
व फ़ूमिहा व अ़-दसिहा व ब-सलिहा ط क़ा-ल अ तस्तब्दिलूनल्लज़ी हु-व अद्ना बिल्लज़ी
हु-व ख़ैरुन् ط इह्बितू मिस्रन् फ इन-न लकुम् मा स-अल्तुम् ط व ज़ुरिबत्
अ़लैहिमुज़्ज़िल्लतु वल्मस्कनतु ۚ व बा-ऊ बि ग़ज़बिम्-मिनल्लाहि ط ज़ालि-क
बिअन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू-न बि आयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबिय्यी-न बिग़ैरिल्-
ह़क़्क़ि ط ज़ालि-क बिमा अ़सव्-व कानू यअ़-तदून ★ (६१) इन्नल्लज़ी-न
आमनू वल्लज़ी-न हादू वन्नसारा वस्साबिईन मन् आम-न बिल्लाहि
वल्-यौमिल्-आख़िरि व अ़मि-ल सालिहन् फ लहुम् अज्रुहुम् अिन्-द
रब्बिहिम् ج व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (६२)

★रु. ६/६ आ १३ ★रु ७/७ आ २

(मूसा से) कहा कि मूसा जब तक हम खुदा को सामने न देख लेंगे, तुम पर ईमान नहीं लायेंगे, तो तुमको बिजली ने आ घेरा और तुम देख रहे थे। (५५) फिर मौत आ जाने के बाद हमने तुमको फिर से जिंदा कर दिया, ताकि एहसान मानो। (५६) और बादल का तुम पर साया किये रखा और (तुम्हारे लिए) मन्न व सलवा उतारते रहे कि जो पाकीज़ा चीज़ें हमने तुमको अता फरमायी है, उनको खाओ (पियो,) मगर तुम्हारे बुज़ुर्गों ने इन नेमतो की कुछ कद्र न जानी (और) वे हमारा कुछ नही बिगाडते थे, बल्कि अपना ही नुक्सान करते थे। (५७) और जब हमने (उन से) कहा कि इस गाव मे दाखिल हो जाओ और इसमें जहा से चाहो, खूब खाओ (पियो) और (देखना) दरवाजे मे दाखिल होना तो सज्दा करना और 'हित्ततुन' कहना, हम तुम्हारे गुनाह माफ कर देंगे और नेकी करने वालो को और ज्यादा देगे। (५८) तो जो जालिम थे, उन्हो ने इस लफ्ज़ को जिसका उनको हुक्म दिया था, बदल कर उसकी जगह और लफ्ज़ कहना शुरू किया, पस हमने (उन) जालिमो पर आसमान से अज़ाब नाज़िल किया, क्योकि ना-फरमानिया किए जाते थे।★ (५९)

और जब मूसा ने अपनी कौम के लिए (खुदा से) पानी मागा तो हमने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो। (उन्होने लाठी मारी) तो फिर उसमे से बारह चश्मे फूट निकले और तमाम लोगो ने अपना-अपना घाट मालूम (करके पानी पी) लिया। (हमने हुक्म दिया कि) खुदा की (अता फरमायी हुई) रोजी खाओ और पियो, मगर जमीन मे फसाद न करते फिरना। (६०) और जब तुमने कहा कि मूसा! हम से एक (ही) खाने पर सब्र नही हो सकता, तो अपने परवरदिगार से दुआ कीजिए कि तरकारी और ककडी और गेहू और मसूर और प्याज़ (वगैरह) जो नबातात जमीन से उगती है, हमारे लिए पैदा कर दे। उन्होने कहा कि भला उम्दा चीज़ें छोडकर उनके बदले नाकिस (खराब) चीज़े क्यो चाहते हो? (अगर यही चीज़े चाहिए) तो किसी शहर मे जा उतरो वहा जो मागते हो, मिल जाएगा और (आखिरकार) ज़िल्लत (व रुसवाई) और मुहताजी (व बे-नवाई) उनसे चिमटा दी गयी और वे खुदा के गजब मे गिरफ्तार हो गये। यह इस लिए कि वे खुदा की आयतो से इकार करते थे और (उसके) नबियो को ना-हक कत्ल कर देते थे। (यानी) यह इस लिए कि ना-फरमानी किये जाते और हद से बढे जाते थे।★ (६१)

जो लोग मुसलमान है या यहूदी या ईसाई या सितारापरस्त (यानी कोई शख्स, किसी कौम व मज़्हब का हो) जो खुदा और कियामत के दिन पर ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, तो ऐसे लोगो को उन के (आमाल) का बदला खुदा के यहा मिलेगा और (कियामत के दिन) उन को न किसी तरह का खौफ होगा और न वे गमनाक होगे। (६२) और जब हमने तुम से अह्द (लिया)

(पृष्ठ ११ का शेष)
के घरो को आ लगी है, लेकिन बनी इस्राईल के घर उस से बच गये है। इसे सुन कर काहिन (भविष्य-फल) बताने वालो ने यह बताया कि बनी इस्राईल मे एक लडका पैदा होगा, जो मिस्री हुकूमत ... की वजह बनेगा। इस डर से फ़िऔन ने वह हुक्म दिया था। इसी बीच मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए ... अजीब तरीके से खुदा ने उन को फ़िऔंनियो के हाथ से बचाया, इस की तफ्सील और जगहो पर है। ... मूसा अलैहिस्सलाम फ़िऔंनियो की तबाही और इस्राईलियो की मुक्ति की वजह बने।

१ बनी इस्राईल जब मूसा अलैहिस्सलाम के साथ मिस्र से निकले थे, तो उन को हुक्म हुआ था कि अर्ज़ मुकद्दस (पाक धरती) मे जाओ। वह तुम्हारे बाप इस्राईल की मीरास है। वहा जो काफ़िर अमालीक रहते ... (शेष पृष्ठ १३ पर)

★रु ६/६ आ १३ ★रु ७/७ आ २

व इज़् अ-ख़ज़्ना मीसाक-कुम् व रफ़अ्-ना फ़ौक़-कुमुत्तू-र ط ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिकुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तकून (६३) सुम्-म तवल्लैतुम् मिम्बअ़्दि ज़ालि-क ج फ लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू लकुन्तुम् मिनल् ख़ासिरीन (६४) व ल-कद् अ़लिम्तुमुल्लज़ीनअ़्-तदौ मिन्कुम् फ़िस्सब्ति फ-क़ुल्ना लहुम् कूनू कि-र-द-तन् ख़ासि-ईन ج (६५) फ-ज-अ़ल्नाहा नकालल्लिमा बैं-न यदैहा व मा ख़ल्फ़हा व मौअ़ि-ज-तल्-लिल्-मुत्तक़ीन (६६) व इज़् का-ल मूसा लि क़ौमिही इन्नल्ला-ह यअ्मुरुकुम् अन् तज़्बहू ब-क-र-तन् ط क़ालू अ तत्तख़िज़ुना हुज़ुवन् ط क़ा-ल अऊज़ु बिल्लाहि अन् अकू-न मिनल्जाहिलीन (६७) कालुद्अ़ु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य ط का-ल इन्नहू यकूलु इन्नहा ब-क-रतुल्ला - फ़ारिज़ुंव - व ला-बिक्रुन् ط अ़वानुम्बैं-न ज़ालि-क ط फ़फ़्अ़लू मा तुअ्मरून (६८) कालुद्अ़ु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मालौनुहा ط क़ा-ल इन्नहू यकूलु इन्नहा ब-क़-रतुन् सफ़्रा-उ ﻻ फाक़िउल्लौनुहा तसुर्रुन्नाज़िरीन (६९) कालुद्अ़ु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य ﻻ इन्नल्-ब-क-र तशाब-ह अ़लैना ط व इन्ना इन्शा-अल्लाहु ल-मुह्तदून (७०) क़ा-ल इन्नहू यकूलु इन्नहा ब-क़-रतुल्ला - ज़लूलुन् तुसीरुल्अर-ज़ व ला तस्क़िल्हर्-स ج मुसल्लमतुल्ला-शि-य-त फ़ीहा ط क़ालुल्आ-न जिअ्-त बिल्हक़्क़ि ط फ़-ज़-बहूहा व मा कादू यफ़्अ़लून ✱ (७१) व इज़् क़-तल्तुम् नफ़्सन् फद्दारअ्तुम् फ़ीहा ط वल्लाहु मुख़्रिजुम्मा कुन्तुम् तक्तुमून ج (७२) फ कुल्नज़्रिबूहु बि बअ़्ज़िहा ط कज़ालि-क युह़्यिल्लाहुलमौता ﻻ व युरीकुम् आयातिही ल-अ़ल्लकुम् तअ़्किलून (७३)

يعلمون ۝ وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور خذوا ما آتيناكم
بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون ۝ ثم توليتم من بعد ذلك فلولا
فضل الله عليكم ورحمته لكنتم من الخاسرين ۝ ولقد علمتم
الذين اعتدوا منكم في السبت فقلنا لهم كونوا قردة خاسئين ۝
فجعلناها نكالا لما بين يديها وما خلفها وموعظة للمتقين ۝
وإذ قال موسى لقومه إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة قالوا أتتخذنا
هزوا قال أعوذ بالله أن أكون من الجاهلين ۝ قالوا ادع لنا ربك
يبين لنا ما هي قال إنه يقول إنها بقرة لا فارض ولا بكر عوان
بين ذلك فافعلوا ما تؤمرون ۝ قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما لونها
قال إنه يقول إنها بقرة صفراء فاقع لونها تسر الناظرين ۝ قالوا
ادع لنا ربك يبين لنا ما هي إن البقر تشابه علينا وإنا إن شاء
الله لمهتدون ۝ قال إنه يقول إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض
ولا تسقي الحرث مسلمة لا شية فيها قالوا الآن جئت بالحق
فذبحوها وما كادوا يفعلون ۝ وإذ قتلتم نفسا فادارأتم فيها
والله مخرج ما كنتم تكتمون ۝ فقلنا اضربوه ببعضها كذلك
يحيي الله الموتى ويريكم آياته لعلكم تعقلون ۝ ثم قست قلوبكم
من بعد ذلك فهي كالحجارة أو أشد قسوة وإن من الحجارة

★रु ८/८ आ १०

लिया और तूर पहाड को तुम पर उठा खडा किया (और हुक्म दिया) कि जो किताब हमने तुम को दी है, उसको ज़ोर से पकड़े रहो और जो उसमे (लिखा) है, उसे याद रखो, ताकि (अज़ाब से) महफूज रहो। (६३) तो तुम इसके बाद (अह्द से) फिर गये और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती, तो तुम घाटे मे पड़ गये होते। (६४) और तुम उन लोगो को ख़ूब जानते हो, जो तुम मे से हफ्ते के दिन (मछली का शिकार करने) मे हद मे आगे बढ़ गये थे, तो हमने उनसे कहा कि जलील व ख्वार बन्दर हो जाओ।' (६५) और इस किस्से को उस वक्त के लोगो के लिए और जो उनके बाद आने वाले थे इबरत (सबक) और परहेज़गारो के लिए नसीहत बना दिया। (६६) और जब मूसा ने अपनी कौम के लोगो से कहा कि खुदा तुमको हुक्म देता है कि एक बैल ज़िब्ह करो। वे बोले, क्या तुम हमसे हसी करते हो ? (मूसा ने) कहा कि मैं ख़ुदा की पनाह मागता हू कि नादान बनू। (६७) उन्होने कहा, अपने परवरदिगार से इल्तिजा (निवेदन) कीजिए कि वह हमे बताये कि वह बैल किस तरह का हो ? (मूसा ने) कहा, परवरदिगार फ़रमाता है कि वह बैल न तो बूढा हो और न बछडा, बल्कि उन के दर्मियान (यानी जवान) हो, सो जैसा तुम को हुक्म दिया गया है, वैसा करो। (६८) उन्होने कहा, अपने परवरदिगार से दर्ख्वास्त कीजिए कि हमको यह भी बता दे कि उसका रग कैसा हो ? मूसा ने कहा, परवरदिगार फरमाता है कि उसका रंग गहरा जर्द (पीला) हो कि देखने वालो (के दिल) को खुश कर देता हो। (६९) उन्होंने कहा (इस बार) परवरदिगार से फिर दर्ख्वास्त कीजिए कि हम को बता दे कि वह और किस-किस तरह का हो, क्योकि बहुत से बैल हमे एक दूसरे से मिलते मालूम होते है। (फिर) ख़ुदा ने चाहा तो हमे ठीक बात मालूम हो जाएगी। (७०) मूसा ने कहा कि खुदा फ़रमाता है कि वह बैल काम मे लगा हुआ न हो, न तो जमीन जोतता हो और न तो खेती को पानी देता हो, उसमे किसी तरह का दाग न हो। कहने लगे, अब तुमने सब बाते ठीक-ठीक बता दी। गरज़ (बडी मुश्किल मे) उन्होंने उस बैल को जिब्ह किया और वे ऐसा करने वाले थे नही। (७१) ★

और जब तुमने एक शख्स को कत्ल किया, तो उस (के बारे) मे आपस मे झगडने लगे, लेकिन जो बात तुम छिपा रहे थे, ख़ुदा उसको जाहिर करने वाला था। (७२) तो हमने कहा कि इस बैल का कोई सा टुकडा मक्तूल (जिसे कत्ल किया गया) को मारो। इस तरह ख़ुदा मुर्दों को ज़िंदा करता है और तुम को अपनी (कुदरत की) निशानिया दिखाता है, ताकि तुम समझो।' (७३)

(पृष्ठ १३ का शेष)

जग कर के उन को निकाल दो। खुदा ने यह भी वायदा फरमाया था कि जग मे उन को फ़त्ह हासिल होगी, मगर उन्होने जग करने से हिम्मत हार दी, तो खुदा ने उन को इस अज़ाब मे मुब्तला किया कि चालीस वर्ष जगल मे परेशान घूमते रहे। चालीस वर्ष के बाद वे उस जगल से निकले। उस वक्त मूसा अलैहिस्सलाम वफ़ात (इन्तिकाल) हो चुके थे। यूशेअ बिन नून अलैहिस्सलाम साथ थे। अब उन्होंने अमालका से जग की तो खुदा ने फत्ह दी और हुक्म हुआ कि शहर के दरवाज़े मे सज्दा कर के और 'हित्तुन' कह कर दाखिल हो। हित्तुन के मानी मग्फिरत व इस्तग्फार के हैं यानी हमारे गुनाह माफ कर। मगर उन्होंने हित्तुन की जगह हिन्तुन कहा और बजाए सज्दे के सुरीन के बल दाखिल हुए। इस ना-फरमानी और बे-अदबी की वजह से खुदा ने फिर उन को अज़ाब मे मुब्तला कर दिया।

१ यहूद को हुक्म था कि हफ्ते के दिन की ताज़ीम (आदर) करें और उस मे मछली का शिकार न करें लेकिन

(शेष पृष्ठ १६ पर)

★रु ८/८ आ १०

सुम्-म क़-सत् क़ुलूबुकुम् मिम्बअ्दि ज़ालि-क फ हि-य कल्हिजारति औ अशद्दु क़स्वतन्‌ॽव इन-न मिनल्हिजारति लमा य-त-फ़ज्जरु मिन्हुल्अन्हारु ॽ व इन्-न मिन्हा लमा यश्शक्क़क़ु फ़ यख़्रुजु मिन्हुलमा-उ ॽ व इन्-न मिन्हा लमा यह्बितु मिन् ख़श्यतिल्लाहिॽव मल्लाहु बि ग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून (७४) अ-फ़-तत्मअू-न अंय्युअ्मिनू लकुम् व कद् का-न फरीक़ुम्-मिन्हुम् यस्मऊ-न कलामल्लाहि सुम्-म युहर्रिफ़ूनहू मिम्बअ्दि मा अ-क़लूहु व हुम् यअ्-लमून (७५) व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आमनू क़ालू आमन्ना ॽव इज़ा ख़ला बअ्-ज़ुहुम् इला बअ्-जिन् क़ालू अतुहद्दिसू-न-हुम् बिमा फ़-त-हल्लाहु अलैकुम् लियुहाज्जूकुम् बिही अिन-द रब्बिकुम्ॽ अ-फला तअ्-क़िलून (७६) अ-व ला यअ्-लमू-न अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्-लिनून (७७) व मिन्हुम् उम्मिय्यू-न ला यअ्-लमूनल्-किता-ब इल्ला अमानिय-य व इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून ● (७८) फवैलुल् - लिल्लज़ी - न यक्तुबूनल्किता-ब बिऐदीहिम् ॽ सुम्-म यक़ूलू-न हाज़ा मिन् अिन्दिल्लाहि लियश्तरू बिही स-म-नन् क़लीलन्‌ॽफ वैलुल्लहुम् मिम्मा क-त-बत् ऐदीहिम् व वैलुल्लहुम् मिम्मा यक्सिबून (७९) व क़ालू लन् तमस्सनन्नारु इल्ला अय्यामम्-मअ्-दूदतन्ॽ क़ुल् अत्तख़ज़्तुम् अिन्दल्लाहि अह्दन् फ़ - लय्युख़्लिफल्लाहु अह्दहू अम् तक़ूलू-न अ-लल्लाहि मा ला तअ्-लमून (८०) बला मन् क-स-ब सय्यिअतव-व अहातत् बिही ख़तीअतुहू फ उला-इ-क अस्हाबुन्नारिॽहुम् फीहा ख़ालिदून (८१) वल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति उला-इक अस्हाबुलजन्नतिॽहुम् फ़ीहा ख़ालिदून ★ (८२) व इज़् अ-ख़ज़्ना मीसा-क बनी इस्रा-ईल ला तअ्-बुदून इल्लल्ला-ह व बिलवालिदैनि इह्सानव-व ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वलमसाकीनि व क़ूलू लिन्नासि हुस्नव-व अक़ीमुस्सला-त व आतुज्ज़का-तॽसुम्-म तवल्लैतुम् इल्ला क़लीलम्-मिन्कुम् व अन्तुम् मुअ्-रिज़ून (८३)

لما يتفجر منه الأنهر وإن منها لما يشقق فيخرج منه الماء و
إن منها لما يهبط من خشية الله وما الله بغافل عما تعملون ۝
أفتطمعون أن يؤمنوا لكم وقد كان فريق منهم يسمعون كلم
الله ثم يحرفونه من بعد ما عقلوه وهم يعلمون ۝ وإذا لقوا الذين
ءامنوا قالوا ءامنا وإذا خلا بعضهم إلى بعض قالوا أتحدثونهم بما
فتح الله عليكم ليحاجوكم به عند ربكم أفلا تعقلون ۝ أولا يعلمون
أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون ۝ ومنهم أميون لا يعلمون
الكتب إلا أماني وإن هم إلا يظنون ۝ فويل للذين يكتبون الكتب
بأيديهم ثم يقولون هذا من عند الله ليشتروا به ثمنا قليلا
فويل لهم مما كتبت أيديهم وويل لهم مما يكسبون ۝ وقالوا
لن تمسنا النار إلا أياما معدودة قل أتخذتم عند الله عهدا فلن
يخلف الله عهده أم تقولون على الله ما لا تعلمون ۝ بلى من كسب
سيئة وأحاطت به خطيئته فأولئك أصحب النار هم فيها
خلدون ۝ والذين ءامنوا وعملوا الصلحت أولئك أصحب الجنة هم
فيها خلدون ۝ وإذ أخذنا ميثق بني إسراءيل لا تعبدون إلا
الله وبالولدين إحسانا وذي القربى واليتمى والمسكين وقولوا للناس
حسنا وأقيموا الصلوة وءاتوا الزكوة ثم توليتم إلا قليلا منكم وأنتم

● नि. १/२ ★रु. ९/९ आ ११

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गये, गोया वे पत्थर है, या उनमे भी ज्यादा सख़्त और पत्थर तो कुछ ऐसे होते हैं कि उनमे से चश्मे फूट निकलते है और कुछ ऐसे होते है कि फट जाते है और उनमे से पानी निकलने लगता है और कुछ ऐसे होते है कि ख़ुदा के ख़ौफ से गिर पड़ते हैं और ख़ुदा तुम्हारे अमलो से वे-ख़वर नही। (७४) (मोमिनो !) क्या तुम उम्मीद रखते हो कि ये लोग तुम्हारे (दीन के) कायल हो जाएगे, (हालांकि) उनमे से कुछ लोग कलामे ख़ुदा (यानी तौरात) को सुनते फिर उसके सुन लेने के वाद उसको जान-बूझ कर वदल देते रहे है।[1] (७५) और ये लोग जब मोमिनो से मिलते है, तो कहते है, हम ईमान ले आये है और जिस वक्त आपस मे एक दूसरे से मिलते है, तो कहते है, जो बात ख़ुदा ने तुम पर ज़ाहिर फरमायी है, वह तुम उनको इस लिए बता देते हो कि (कियामत के दिन) उसी के हवाले से तुम्हारे परवरदिगार के सामने तुमको इल्ज़ाम दें। क्या तुम समझते नही ? (७६) क्या ये लोग यह नही जानते कि जो कुछ ये छिपाते और जो कुछ जाहिर करते है, ख़ुदा को (सव) मालूम है।[2] (७७) और कुछ उन मे अनपढ है कि अपने बातिल ख़्यालो के सिवा (ख़ुदा की) किताब को जानते ही नही और वे सिर्फ़ गुमान से काम लेते है (७८) ● तो उन लोगो पर अफसोस है जो अपने हाथ से तो किताव लिखते है और कहते यह हैं कि यह ख़ुदा के पास से (आयी) है, ताकि उसके वदले थोडी-सी कीमत (यानी दुनिया का फायदा) हासिल करें। उन पर अफसोस है, इस लिए कि (वे-असल बातें) अपने हाथ से लिखते हैं और (फिर) उन पर अफसोस है, इसलिए कि ऐसे काम करते है। (७९) और कहते है कि (दोज़ख़ की आग) हमें कुछ दिनो के सिवा छू ही नही सकेगी। उनसे पूछो, क्या तुमने ख़ुदा से इकरार ले रखा है कि ख़ुदा अपने इकरार के ख़िलाफ नही करेगा। (नही) बल्कि तुम ख़ुदा के वारे मे ऐसी वाते कहते हो, जिन्हे तुम बिल्कुल नही जानते।[1] (८०) हा, जो वुरे काम करे और उसके गुनाह (हर तरफ़ से) उसको घेर ले तो ऐसे लोग दोज़ख़ (मे जाने) वाले है (और) वे हमेशा उसमे (जलते) रहेगे। (८१) और जो ईमान लाए और नेक काम करे वे जन्नत के मालिक होगे और हमेशा उसमे (ऐश करते) रहेगे। (८२) ★

और जब हमने बनी इस्राईल से अह्द लिया कि ख़ुदा के सिवा किसी की इवादत न करना और मा-बाप और रिश्तेदारो और यतीमो और मुहताजो के साथ भलाई करते रहना और लोगो से अच्छी बाते कहना और नमाज पढते और ज़कात देते रहना तो कुछ लोगो के अलावा तुम सब (उस

---

१ ये लोग कुछ वहुत ही निडर थे। ख़ुदा के कलाम के वदल देने मे भी कोई शर्म नही करते थे। तहरीफ़ मे इख़्तिलाफ है कि किस किस्म की थी। वाज़ कहते हैं कि लफ्ज़ी थी, यानी लफ्ज़ वदल देते थे। कुछ लोग कहते हैं कि तह्रीफ मानी मे थी यानी मानी विगाड़ देते थे। इमाम फख़रुद्दीन राज़ी इसी के कायल है। कुछ कहते हैं लफ्ज़ और मानी दोनो मे थी, वहरहाल तमाम मुसलमान यहूदियो और ईसाइयो की किताबो को तहरीफ़ की हुई और तब्दील की हुई मानते है और उन पर एतवार नही करते। मुसलमानो को इस बात पर फ़ख़्र है कि उन की आसमानी किताव मे तह्रीफ नही हुई और हो सकती भी नही, क्योंकि ख़ुदा ने उस की हिफ़ाज़त अपने ज़िम्मे ले ली है।

२ इन आयतो मे मुनाफिको का हाल वयान फरमाया गया है। कुछ मुनाफिक ऐसे भी थे कि हज़रत पैग़म्बर सल्ल० के आने की पेशीनगोई, जो उन की किताबो मे लिखी हुई थी, और जो उन पर उन के गुनाहों की वजह से पहले अज़ाव नाज़िल होते रहे थे, वह मुसलमानो से वयान कर देते थे। तो और मुनाफ़िक उन से कहते कि तुम

(शेष पृष्ठ ६३ पर)

● नि. १/२ ★रु ९/९ आ ११

व इज़ अ-ख़ज़्ना मीसाककुम् ला तस्फिकू-न दिमाअकुम् व ला तुख़्रिजू-न अन्फुसकुम् मिन् दियारिकुम् सुम्-म अक़्रर्तुम् व अन्तुम् तश्हदून (८४) सुम्-म अन्तुम् हाउला इ तक़्तुलू-न अन्फुसकुम् व तुख़्रिजू-न फरीकम्-मिन्कुम् मिन् दियारिहिम् तज़ाहरू-न अ़लैहिम् बिल्-इस्मि वल्-अुद्वानि व इ य्यअ्तूकुम् उसारा तुफादूहुम् व हु-व मुहर्रमुन् अ़लैकुम् इख़राजुहुम् अ-फ-तुअ्मिनू-न बिबअ़्-जिल्-किताबि व तक्फुरू-न बिबअ्ज़िन् फ मा जज़ाउ मय्यफ़्-अ़लु ज़ालि-क मिन्कुम् इल्ला ख़िज्युन् फिल्-हयातिद्दुन्या व यौमल्-कियामति युरद्दून इला अशद्दिल्-अज़ाबि व मल्लाहु बि गाफिलिन् अम्मा तअ्-मलून (८५) उलाइकल्लज़ीनश्-त - र - वुल्हयातद्दुन्या बिल्आख़िरति फला युख़फ़्फ़फु अन्हुमुल्-अज़ाबु व ला हुम् युन्सरून★(८६) व ल-कद् आतैना मूसल्किता-ब व कफ़्फ़ैना मिम्बअदिही बिर्रुसुलि व आतैना ईसब्-न मर्यमल्बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बि रूहिल्कुदुसि अ-फ-कुल्लमा जाअकुम् रसूलुम्बिमा ला तह्वा अन्फुसुकुमुस्-तक्बर्तुम् फ फरीकन् कज़्ज़ब्तुम् व फरीकन् तक़्तुलून (८७) व कालू क़ुलूबुना गुल्फुन् बल् ल-अ-नहुमुल्लाहु बि कुफ़्रिहिम् फ क़लीलम्मा युअ्मिनून (८८) व लम्मा जाअहुम् किताबुम्मिन् अिन्दिल्लाहि मुसद्दिकुल्लिमा म-अहुम् व कानू मिन् कब्लु यस्तफ्तिहू-न अलल्लज़ी-न क-फरू फ लम्मा जाअहुम् मा अ-रफ़ू क-फरू बिही फ़ लअ्-नतुल्लाहि अ-लल्-काफिरीन (८९) बिअ्-स-मश्तरौ बिही अन्फुसहुम् अय्यक्फुरू बिमा अन्ज़लल्लाहु बग्यन् अंय्युनज़्ज़िलल्लाहु मिन् फज़्लिही अला मय्यशाउ मिन् अिबादिही फ बाऊ बि ग-ज़बिन् अ़ला ग-ज़बिन् व लिल्काफिरी-न अज़ाबुम्-मुहीन (९०) व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू बिमा अन्ज़लल्लाहु कालू नुअ्मिनु बिमा उन्ज़ि-ल अलैना व यक्फ़ुरू-न बिमा वरा-अहू व हुवल्हक्कु मुसद्दिकल्लिमा म-अहुम् कुल् फ लि-म तक़्तुलू-न अम्बिया अल्लाहि मिन् कब्लु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (९१)

البقرة آلم

تعرضون ۝ وإذ أخذنا ميثاقكم لا تسفكون دماءكم ولا تخرجون أنفسكم
من دياركم ثم أقررتم وأنتم تشهدون ۝ ثم أنتم هؤلاء تقتلون أنفسكم
وتخرجون فريقا منكم من ديارهم تظاهرون عليهم بالإثم والعدوان
وإن يأتوكم أسارى تفادوهم وهو محرم عليكم إخراجهم أفتؤمنون ببعض
الكتاب وتكفرون ببعض فما جزاء من يفعل ذلك منكم إلا خزي في الحياة
الدنيا ويوم القيامة يردون إلى أشد العذاب وما الله بغافل عما تعملون ۝
أولئك الذين اشتروا الحياة الدنيا بالآخرة فلا يخفف عنهم العذاب ولا
هم ينصرون ۝ ولقد آتينا موسى الكتاب وقفينا من بعده بالرسل وآتينا
عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس أفكلما جاءكم رسول بما
لا تهوى أنفسكم استكبرتم ففريقا كذبتم وفريقا تقتلون ۝ وقالوا قلوبنا
غلف بل لعنهم الله بكفرهم فقليلا ما يؤمنون ۝ ولما جاءهم كتاب من
عند الله مصدق لما معهم وكانوا من قبل يستفتحون على الذين
كفروا فلما جاءهم ما عرفوا كفروا به فلعنة الله على الكافرين ۝ بئسما اشتروا
به أنفسهم أن يكفروا بما أنزل الله بغيا أن ينزل الله من فضله على
من يشاء من عباده فباءوا بغضب على غضب وللكافرين عذاب مهين ۝
وإذا قيل لهم آمنوا بما أنزل الله قالوا نؤمن بما أنزل علينا ويكفرون
بما وراءه وهو الحق مصدقا لما معهم قل فلم تقتلون أنبياء الله من

★रु १०/१० आ ४

अह्द से) मुह फेर कर बैठ गए। (८३) और जब हमने तुमसे अह्द लिया कि आपस मे कुश्त व खून न करना और अपने को उनके वतन से न निकालना, तो तुमने इकरार कर लिया और तुम (इस बात के) गवाह हो। (८४) फिर तुम वही हो कि अपनो को कत्ल भी कर देते हो और अपने मे से कुछ लोगो पर गुनाह और ज़ुल्म से चढाई करके उन्हे वतन से निकाल भी देते हो और अगर वे तुम्हारे पास कैद होकर आए तो बदला देकर उनको छुडा भी लेते हो, हालाकि उन का निकाल देना ही तुमको हराम था। (यह) क्या (बात है कि) तुम (खुदा की) किताब के कुछ हुक्मो को तो मानते हो और कुछ मे इन्कार किये देते हो, तो जो तुममे से ऐसी हरकत करें, उनकी सज़ा इसके सिवा और क्या हो सकती है कि दुनिया की ज़िंदगी मे तो रुसवाई हो और कियामत के दिन सख्त से सख्त अज़ाब मे डाल दिए जाएं। और जो काम तुम करते हो, खुदा उनसे गाफिल नही। (८५) ये वह लोग है, जिन्होने आखिरत के बदले दुनिया की ज़िदगी खरीदी, सो न तो उनसे अज़ाब ही हल्का किया जाएगा और न उनको (और तरह की) मदद मिलेगी। (८६) ★

और हमने मूसा को किताब इनायत की और उन के पीछे एक के बाद दूसरा पैगम्बर भेजते रहे और ईसा बिन मरयम को खुली निशानिया बख्शी और रूहुल कुद्स (यानी जिब्रील) से उनको मदद दी, तो जब कोई पैगम्बर तुम्हारे पास ऐसी बातें लेकर आये जिनको तुम्हारा जी नही चाहता था, तो तुम सरकश हो जाते रहे और (नबियो के) एक गिरोह को तो झुठलाते रहे और एक गिरोह को कत्ल करते रहे। (८७) और कहते हैं, हमारे दिल पर्दे मे है[1]। (नही) बल्कि खुदा ने उनके कुफ़्र की वजह से उन पर लानत कर रखी है, पस ये थोडे ही पर ईमान लाते है। (८८) और जब खुदा के यहा से उनके पास किताब आयी, जो उनकी (आसमानी) किताब की भी तस्दीक करती है और वे पहले (हमेशा) काफिरो पर फत्ह मागा करते थे, तो जिस चीज़ को वे खूब पहचानते थे, जब उनके पास आ पहुची, तो उससे काफिर हो गये, पस काफिरो पर खुदा की लानत। (८९) जिस चीज़ के बदले उन्होने अपने को बेच डाला, वह बहुत बुरी है यानी इस जलन से कि खुदा अपने बन्दो में से, जिस पर चाहता है, अपनी मेहरबानी मे से नाज़िल फ़रमाता है, खुदा की नाज़िल की हुई किताब से कुफ़्र करने लगे, तो वे (उसके) गज़ब पर गजब मे मुब्तला हो गये और काफिरो के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (९०) और जब उन से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने (अब) नाज़िल फरमायी है, उसको मानो तो कहते हैं कि जो किताब हम पर (पहले) नाज़िल हो चुकी है, हम तो उसी को मानते है (यानी) ये उस के सिवा और (किताब) को नही मानते, हालाकि वह (सरासर) सच्ची है और जो उन की (आसमानी) किताब है, उसकी भी तस्दीक करती है। (उन से) कह दो कि अगर तुम ईमान वाले होते तो खुदा के पैगम्बरो को पहले

१ यहूदी कहते थे कि हमारे दिल पर्दे मे हैं यानी हम अपने दीन के सिवा किसी की बात समझ ही नही सकते। खुदा ने फ़रमाया कि दिल पर्दे मे नही हैं, बल्कि खुदा ने कुफ़्र की वजह से उन पर लानत कर रखी है। दूसरी जगह फरमाया है कि 'बल त-ब-अल्लाहु अलैहा बिकुफ़िहिम' या उन के दिलो पर मुहर लगा दी है, कुछ भी हो, बात ऐसी थी कि ईमान उन के दिलो मे दाखिल ही नही होता था और यह खुदा के गज़ब की निशानी है।

★रु १०/१० आ ४

व ल-क़द् जा-अकुम् मूसा बिल्-बय्यिनाति सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्‌अिज्‌-ल मिम्बअ़्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून (९२) व इज़् अ-ख़ज़्ना मीसाक़कुम् व र-फ़अ़्ना फ़ौक़कुमुत्तू-र ط ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वस्मअ़ू ط क़ालू समिअ़्ना व अ़सैना व उश्‌रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-अिज्‌-ल बिकुफ़्रिहिम् ط क़ुल् बिअ्‌-समा यअ्‌मुरुकुम् बिही ईमानुकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्‌मिनीन (९३) क़ुल् इन् कानत् लकुमुद्दारुल्-आख़िरतु अिन्दल्लाहि ख़ालि-स-तम्-मिन्दूनिन्नासि फ़ त-मन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (९४) व लंय्यतमन्नौहु अ-ब-दम् - बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् ط वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (९५) व ल-त-जिदन्नहुम् अह्‌रसन्नासि अ़ला ह़याति़न् ج व मिनल्लज़ी-न अश्‌रकू ج यवद्दु अ-ह़दुहुम् लौ युअ़म्मरु अल्-फ़ स-नति़न् ج व मा हु-व बि मुज़ह्‌ज़िहिही मिनल्-अ़ज़ाबि अय्युअ़म्मर ط वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ़्‌-मलून ★ (९६) क़ुल् मन् का-न अ़दुव्वल्लिजिब्री-ल फ़-इन्नहु नज़्ज़लहू अ़ला क़ल्बि-क बि इज़्निल्लाहि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि व हुदव-व बुश्‌रा लिल्मुअ्‌मिनीन (९७) मन् का-न अ़दुव्वल्लिल्लाहि व मलाइकतिही व रुसुलिही व जिब्री-ल व मीका-ल फ़ इन्नल्ला-ह अ़दुव्वुल्-लिल्काफ़िरीन (९८) व ल-क़द् अन्ज़ल्ना इलै-क आयातिम्-बय्यिनाति़न् ج व मा यक्फ़ुरु बिहा इल्लल्फ़ासिक़ून (९९) अ-व कुल्लमा आहदू अ़ह्‌दन् न-ब-ज़हू फ़रीक़ुम्मिन्हुम् ط बल् अक्सरुहुम् ला युअ्‌मिनून (१००) व लम्मा जा-अहुम् रसूलुम्-मिन् अिन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अ़हुम् न-ब-ज़ फ़रीक़ुम्-मिनल्लज़ी-न ऊतुल्‌किता-ब किताबल्लाहि वरा-अ ज़ुहूरिहिम् क-अन्नहुम् ला यअ़्‌लमून ز (१०१)

البقرة ٢ الم

قبل إن كنتم مؤمنين ۝ ولقد جاءكم موسى بالبينات ثم اتخذتم العجل
من بعده وأنتم ظالمون ۝ وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور خذوا
ما آتيناكم بقوة واسمعوا ۖ قالوا سمعنا وعصينا وأشربوا في قلوبهم العجل
بكفرهم ۚ قل بئسما يأمركم به إيمانكم إن كنتم مؤمنين ۝ قل إن
كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة من دون الناس فتمنوا الموت
إن كنتم صادقين ۝ ولن يتمنوه أبدا بما قدمت أيديهم ۗ والله عليم
بالظالمين ۝ ولتجدنهم أحرص الناس على حياة ومن الذين أشركوا ۚ
يود أحدهم لو يعمر ألف سنة وما هو بمزحزحه من العذاب أن يعمر ۗ
والله بصير بما يعملون ۝ قل من كان عدوا لجبريل فإنه نزله على
قلبك بإذن الله مصدقا لما بين يديه وهدى وبشرى للمؤمنين ۝
من كان عدوا لله وملائكته ورسله وجبريل وميكال فإن الله عدو
للكافرين ۝ ولقد أنزلنا إليك آيات بينات ۖ وما يكفر بها إلا الفاسقون ۝
أوكلما عاهدوا عهدا نبذه فريق منهم ۚ بل أكثرهم لا يؤمنون ۝ و
لما جاءهم رسول من عند الله مصدق لما معهم نبذ فريق من الذين
أوتوا الكتاب كتاب الله وراء ظهورهم كأنهم لا يعلمون ۝ واتبعوا ما تتلو
الشياطين على ملك سليمان ۖ وما كفر سليمان ولكن الشياطين كفروا
يعلمون الناس السحر وما أنزل على الملكين ببابل هاروت وماروت ۚ وما

ही क्यो कत्ल किया करते ? (९१) और मूसा तुम्हारे पास खुले हुए मोजज़े लेकर आये, तो तुम उनके (तूर पहाड पर जाने के) बाद बछड़े को माबूद बना बैठे और तुम (अपने ही हक मे) जुल्म करते थे। (९२) और जब हमने तुम (लोगो) मे पक्का अह्द लिया और तूर पहाड को तुम पर उठा खड़ा किया (और हुक्म दिया कि) जो किताब हमने तुमको दी है, उस को ज़ोर से पकड़ो और (जो तुम्हे हुक्म होता है, उसको) सुनो, तो वे (जो तुम्हारे बडे थे) कहने लगे कि हम ने सुन तो लिया, लेकिन मानते नही और उनके कुफ्र की वजह से बछडा (गोया) उनके दिलो मे रच गया था। (ऐ पैगम्बर ! उन से) कह दो कि अगर तुम मोमिन हो तो तुम्हारा ईमान तुम को बुरी बात बताता है।[1] (९३) कह दो कि अगर आखिरत का घर और लोगो (यानी मुसलमानो) के लिए नहीं और खुदा के नजदीक तुम्हारे ही लिए मख्सूस है, तो अगर सच्चे हो तो मौत की आरज़ू तो करो।[2] (९४) लेकिन इन आमाल की वजह से, जो उनके हाथ आगे भेज चुके है, ये कभी उनकी आरजू नही करेगे और खुदा जालिमो को (खूब) जानता है। (९५) बल्कि उनको तुम और लोगो से ज़िंदगी के कहीं लोभी देखोगे, यहा तक कि मुश्रिको से भी। उनमे से हर एक यही ख्वाहिश करता है कि काश ! वह हजार वर्ष जीता रहे, मगर इतनी लबी उम्र उसको मिल भी जाए तो उसे अजाब से तो नही छुड़ा सकती और जो काम ये करते है, खुदा उनको देख रहा है। (९६) ★

कह दो कि जो शख्स जिब्रील का दुश्मन हो, (उसको गुस्से मे मर जाना चाहिए,) उसने तो (यह किताब) खुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल पर नाज़िल की है, जो पहली किताबो की तस्दीक करती है और ईमान वालो के लिए हिदायत और खुशखबरी है। (९७) जो शख्स खुदा का और उसके पैगम्बरो का और जिब्रील और मीकाईल का दुश्मन हो, तो ऐसे काफिरो का खुदा दुश्मन है। (९८) और हमने तुम्हारे पास सुलझी हुई आयते भेजी है और उनसे इंकार वही करते है जो बद-किरदार है। (९९) उन लोगो ने (जब-जब) खुदा से पक्का अह्द किया तो उनमे से एक फरीक ने उसको (किसी चीज की तरह फेक दिया।) हकीकत यह है कि उनमे अक्सर बे-ईमान है। (१००) और जब उन के पास खुदा की तरफ से पैगम्बर (आखिरी) आये और वह उनकी (आसमानी) किताब की भी तस्दीक करते है, तो जिन लोगो को किताब दी गयी थी, उनमे से एक जमाअत ने खुदा की किताब को पीठ पीछे फेक दिया, गोया वे जानते ही नही। (१०१) और उन

---

१ यानी जाहिर मे कहा कि हमने माना और चुपके से कहा कि न माना।

२. कहते थे कि जन्नत मे हमारे सिवा कोई न जाएगा और हम को अजाब न होगा। और अल्लाह ने फरमाया कि अगर तुम यकीनन बहिश्ती हो तो फिर मरने से क्यो डरते हो ?

वत्तबअू मा तत्लुश्शयातीनु अला मुल्कि सुलैमा-नॽव मा क-फ़-र सुलैमानु व लाकिन्नश्शयाती-न क-फ़रू युअ़ल्लिमूनन्नासस्-सिह्-रॽव मा उन्ज़ि-ल अ़लल्मलकैनि बिबाबि-ल हारू-त व मारू-तط व मा युअ़ल्लिमानि मिन् अ-हदिन् हत्ता यकूला इन्नमा नह्नु फ़ित्नतुन् फ़ला तक्फ़ुर्ط फ़ य-त-अ़ल्लमू-न मिन्हुमा मा युफ़र्रिकू-न बिही बैनल्-मर-इ व ज़ौजिहीط व मा हुम् बिज़ार्री-न बिही मिन् अ-हदिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहिط व य-त-अ़ल्लमू-न मा यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अु-हुम्ط व ल-क़द् अ़लिमू ल-मनिश्तराहु मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन् ख़लाकिन् ط قف व ल-बिअ्-स मा शरौ बिही अन्फ़ुसहुम्ط लौ कानू यअ्-लमून (१०२) व लौ अन्नहुम् आमनू वत्तक़ौ लमसूबतुम्मिन् अ़िन्दिल्लाहि ख़ैरुन्ط लौ कानू यअ्-लमून ★(१०३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़ूलू राअ़िना व क़ूलुन्ज़ुर्ना वस्मअूط व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुन् अलीम (१०४) मा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल् - किताबि व लल्मुश्रिकी-न अय्युनज़्ज़-ल अ़लैकुम् मिन् ख़ैरिम्-मिर्रब्बिकुम्ط वल्लाहु यख़्तस्सु बिरह्मतिही मय्यशाउ ط वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (१०५) मा नन्सख़् मिन् आयतिन् औ नुन्सिहा नअ्ति बिख़ैरिम्मिन्हा औ मिस्लिहाط अ-लम् तअ्-लम् अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् कदीर (१०६) अ-लम् तअ्-लम् अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़िط व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिव्वलिय्यिव-व ला नसीर (१०७) अम् तुरीदू-न अन् तस्अलू रसूलकुम् कमा सुइ-ल मूसा मिन् क़ब्लुط व मय्य-त-बद्दलिल्-कुफ़्-र बिल्ईमानि फ़-क़द् ज़ल्-ल सवा-अस्सबील (१०८) वद्-द कसीरुम्मिन् अह्लिल्किताबि लौ यरुद्दूनकुम् मिम्बअ़्दि ईमानिकुम् कुफ़्फ़ारन्ॽ ह-स-दम्मिन् अ़िन्दि अन्फ़ुसिहिम् मिम्बअ़्दि मा त-बय्य-न लहुमुल्हक्कु फ़अ्-फ़ू वस्फ़हू हत्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिहीط इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शै-इन् कदीर● (१०९) व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-तط व मा तुक़द्दिमू लिअन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहिط इन्नल्ला-ह बिमा तअ्-मलून बसीर (११०)

البقرة ٢ ١٣ الٓمّٓ ١

يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۭ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا
مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۭ وَمَا هُمْ بِضَاۗرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ ۭ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّھُمْ وَلَا يَنْفَعُھُمْ ۭ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ
فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ڜ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَھُمْ ۭ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ○
وَلَوْ اَنَّھُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ۭ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ○
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ
يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ○ مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ
مِثْلِهَا ۭ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ○ اَمْ
تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْــَٔـلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُىِٕلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۭ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ
الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاۗءَ السَّبِيْلِ ○ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ
لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ښ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○

★रु १२/१२ आ ७ ●सु. ३/४

(गंदी बातो) के पीछे लग गये जो सुलेमान की सल्तनत के ज़माने मे शैतान पढा करते थे और सुलेमान ने बिल्कुल कुफ़ की बात नही की, बल्कि शैतान ही कुफ़ करते थे कि लोगो को जादू सिखाते थे और उन बातो के भी (पीछे लग गये) जो बाबिल शहर मे दो फरिश्तो (यानी) हारूत और मारूत पर उतरी थी और वे दोनो किसी को कुछ नही सिखाते थे, जब तक यह न कह देते कि हम तो आज़माइश (का ज़रिया) है, तुम कुफ़ मे न पडो। गरज़ लोग उनसे ऐसा (जादू) सीखते जिससे मिया-बीवी मे जुदाई डाल दें और खुदा के हुक्म के सिवा वे इस (जादू) से किसी का कुछ भी नही बिगाड़ सकते थे। और कुछ ऐसे (मंत्र) सीखते जो उन को नुक्सान ही पहुचाते और फायदा कुछ न देते। और वह जानते थे कि जो शख्स ऐसी चीज़ो (यानी जादू और मंत्र वगैरह) का खरीदार होगा, उस का आखिरत मे कुछ हिस्सा नही और जिस चीज़ के बदले मे उन्होंने अपनी जानो को बेच डाला, वह बुरी थी, काश ! वे (इस बात को) जानते। (१०२) और अगर वे ईमान लाते और परहेजगारी करते तो खुदा के यहा से बहुत अच्छा बदला मिलता। ऐ काश ! वे इसे जानते होते। (१०३)★

ऐ ईमान वालो ! (बात करते वक्त खुदा के पैगम्बर से) 'राअिना' न कहा करो, 'उन्ज़ुर्ना' कहा करो और खूब सुन रखो,[1] और काफिरो के लिए दुख देने वाला अज़ाब है। (१०४) जो लोग काफ़िर है, अह्ले किताब या मुश्रिक, वे इस बात को पसन्द नही करते कि तुम पर तुम्हारे परवर-दिगार की तरफ से खैर (व बरकत) नाज़िल हो और खुदा तो जिसको चाहता है, अपनी रहमत के साथ खास कर लेता है और खुदा बडे फज़्ल का मालिक है। (१०५) हम जिस आयत को मन्सूख कर देते या उसे भुला देते है, तो उससे बेहतर या वैसी ही और आयत भेज देते है। क्या तुम नही जानते कि खुदा हर बात पर कादिर है। (१०६) तुम्हे मालूम नही कि आसमानो और ज़मीन की बादशाहत खुदा ही की है और खुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नही। (१०७) क्या तुम यह चाहते हो कि अपने पैगम्बर से उसी तरह के सवाल करो, जिस तरह के सवाल पहले मूसा से किये गये थे और जिस शख्स ने ईमान (छोड कर उस) के बदले कुफ्र लिया, वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१०८) बहुत से अह्ले किताब अपने दिल की जलन मे यह चाहते है कि ईमान ला चुकने के बाद तुम को फिर काफिर बना दे, हालाकि उन पर हक जाहिर हो चुका है, तो तुम माफ कर दो और दर गुजर करो, यहा तक कि खुदा अपना (दूसरा) हुक्म भेजे, बेशक खुदा हर बात पर कादिर है।[2] (१०९)● और नमाज अदा करते रहो और ज़कात देते रहो और जो भलाई अपने लिए आगे भेज रखोगे, उस को खुदा के यहा पा लोगे। कुछ शक नही कि खुदा तुम्हारे सब कामो को देख

---

१ प्यारे नबी सल्ल० की मज्लिस मे यहूदी बैठते तो नबी सल्ल० के इर्शादो मे से जो बात अच्छी तरह न सुन सकते और चाहते कि फिर सुनें तो 'राअिना' कहते, यानी हमारी तरफ तवज्जोह फरमाइए और फिर इर्शाद कीजिए, मगर एक तो उनकी जुबान मे उस के मानी होते 'मूर्ख और घमडी', दूसरे ज़रा ज़ुबान दबा कर कहने से 'राईना' हो जाता यानी हमारा चरवाहा। मुसलमानो को इन शरीरो की बदनीयती का हाल मालूम न था। कभी उनसे सीखकर किसी वक्त यह लफ्ज़ कह देते। खुदा ने फरमाया कि 'राअिना' का लफ्ज़ जिसके कई मानी हो सकते हैं और कुछ मानी बुरे हैं, उसे मत इस्तेमाल किया करो। इस जगह 'उन्ज़ुर्ना' कहा करो। 'उन्ज़ुर्ना' के मानी भी यही हैं कि हमारी तरफ मुतवज्जह होजिए और फिर फरमाइये, मगर इस मे दूसरे मानो का एहतिमाल नही हो सकता।

२. आखिर हुक्म पहुचा कि यहूदियो को मदीने के नज़दीक से निकाल दो।

★रु १२/१२ आ ७ ●सु· ३/४

व क़ालू लय्यद्खुलल्जन्न-त इल्ला मन् का-न हूदन् औ नसारा ط तिल्-क अमानिय्युहुम् ط क़ुल् हातू बुर्हानकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१११) बला मन् अस्-ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुन् फ-लहू अज्रुहू अिन्-द रब्बिही व ला ख़ौफुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ★ (११२) व कालतिल्यहूदु लैसतिन्नसारा अला शैइ व्- व क़ालतिन्नसारा लैसतिल्यहूदु अला शैइ व्- व हुम् यत्लूनल् - किताब ط कज़ालि-क क़ालल्लज़ी - न ला यअ्-लमू-न मिस्-ल क़ौलिहिम् फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनहुम् यौमल्क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (११३) व मन् अज़्लमु मिम्मम्-म-न-अ मसाजिदल्लाहि अंय्युज़्-क-र फ़ीहस्मुहू व सआ फ़ी ख़राबिहा ط उला-इ-क मा का - न लहुम् अंय्यद्ख़ुलूहा इल्ला ख़ा - इफ़ीन लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युव-व लहुम् फिल्आख़िरति अज़ा-बुन् अज़ीम (११४) व लिल्लहिल्-मश्रिक़ु वल्मग़्रिबु फ़ अैनमा तुवल्लू फ़-सम् - म वज्हुल्लाहि ط इन्नल्ला-ह वासिअुन् अलीम (११५) व क़ालुत्त-ख़-ज़ल्लाहु व-ल-दन् सुब्हानहू ط बल्लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط कुल्लुल्लहू क़ानितून (११६) बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व - इज़ा क़ज़ा अम्रन् फइन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून (११७) व क़ालल्लज़ी-न ला यअ्-लमू-न लौ ला युकल्लिमुनल्लाहु औ तअ्तीना आयतुन् ط कज़ालि-क क़ालल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिस्-ल क़ौलिहिम् ط तशाब-हत् क़ुलू - बुहुम् ط क़द् बय्यन्नल् - आयाति लि क़ौमिय्यूक़िनून (११८) इन्ना अरसल्ना-क बिल्हक़्क़ि बशीरव-व नज़ीरव-व ला तुस्अलु अन् अस्हाबिल्जहीम (११९) व लन् तर्ज़ा अन्कल्यहूदु व लन्नसारा हत्ता तत्तबि - अ मिल्लतहुम् ط क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्हुदा व लइनित्तबअ्-त अह्वा - अहुम् बअ्-दल्लज़ी जा - अ-क मिनल्अिल्मि मा ल - क मिनल्लाहि मिव्वलिय्यिव - व ला नसीर ▨ (१२०)

وَقَالُوا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ قُلْ
هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ
لَيْسَتِ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصَارَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُمْ
يَتْلُونَ الْكِتَابَ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ فَاللَّهُ يَحْكُمُ
بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ
مَسَاجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ
يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝
وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ بَلْ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلٌّ لَهُ
قَانِتُونَ ۝ بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ
فَيَكُونُ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ كَذَٰلِكَ
قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ
الْجَحِيمِ ۝ وَلَنْ تَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ قُلْ
إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ

★रु. १३/१३ आ ९ ▨ व मंजिल

रहा है। (११०) और (यहूदी और ईसाई) कहते है कि यहूदियो और ईसाइयो के सिवा कोई बहिश्त मे नही जाने का। ये उन लोगो के बातिल ख्यालात हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन से) कह दो कि अगर सच्चे हो तो दलील पेश करो। (१११) हा, जो ख़ुदा के आगे गरदन झुका दे (यानी ईमान ले आए) और वह भले काम करने वाला हो, तो उसका बदला उस के परवरदिगार के पास है और ऐसे लोगो को (कियामत के दिन) न किसी तरह का खौफ होगा और न वे गमनाक होगे। (११२) ★

और यहूदी कहते हैं कि ईसाई रास्ते पर नही और ईसाई कहते है कि यहूदी रास्ते पर नही, हालाकि वे किताबे (इलाही) पढते है। इसी तरह बिल्कुल उन्ही की-सी बात वे लोग कहते हैं जो (कुछ) नही जानते (यानी मुश्रिक), तो जिस बात मे ये लोग इख्तिलाफ कर रहे हैं, ख़ुदा कियामत के दिन इसका उन मे फैसला कर देगा। (११३) और उससे बढकर जालिम कौन है जो ख़ुदा की मस्जिदो मे ख़ुदा के नाम का जिक्र किये जाने को मना करे और उनकी वीरानी मे कोशिश करे। उन लोगो को कुछ हक नही कि उनमे दाखिल हो, मगर डरते हुए। उन के लिए दुनिया मे रुसवाई है और आखिरत मे बडा अज़ाब। (११४) और पूरब और पच्छिम सब ख़ुदा ही का है, तो जिधर तुम रुख करो, उधर ख़ुदा की जात है। बेशक ख़ुदा वुसअत वाला और बा-ख़बर है।[1] (११५) और ये लोग इस बात के कायल है कि ख़ुदा औलाद रखता है। (नही,) वह पाक है बल्कि जो कुछ आसमानो और ज़मीन मे है, सब उसी का है और सब उसके फरमाबरदार हैं। (११६) (वही) आसमानो और ज़मीन का पैदा करने वाला है। जब कोई काम करना चाहता है, तो उस को इर्शाद फरमा देता है कि होजा, तो वह हो जाता है। (११७) और जो लोग (कुछ) नही जानते (यानी मुश्रिक), वे कहते है कि ख़ुदा हमसे कलाम क्यो नही करता या हमारे पास कोई निशानी क्यो नही आती। इसी तरह जो लोग उन से पहले थे, वे भी इन्ही की-सी बाते किया करते थे। इन लोगो के दिल आपस मे मिलते-जुलते है। जो लोग यकीन वाले है, उनके (समझाने के) लिए हमने निशानिया बयान कर दी है। (११८) (ऐ मुहम्मद!) हमने तुमको सच्चाई के साथ ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है और दोजखियो के बारे मे तुमसे कुछ पूछताछ न होगी। (११९) और तुमसे न तो यहूदी कभी खुश होगे और न ईसाई, यहा तक कि उनके मज़हब की पैरवी अख्तियार कर लो। (उनसे) कह दो कि ख़ुदा की हिदायत (यानी दीने इस्लाम) ही हिदायत है और (ऐ पैगम्बर!) अगर तुम अपने पास इल्म (यानी ख़ुदा की वह्य) के आ जाने पर भी उनकी ख्वाहिशो पर चलोगे, तो तुम को (ख़ुदा के अज़ाब से बचाने वाला) न कोई दोस्त

---

१ इस आयत के शाने नुज़ूल मे मुख्तलिफ कौल हैं। किसी ने कहा, यह आयत उस आयत से पहले नाज़िल हुई थी, जिस मे काबे की तरफ मुह कर के नमाज़ पढने का हुक्म है यानी पूरब और पच्छिम सब ख़ुदा ही का है। जिस तरफ तुम मुह करोगे, ख़ुदा ही की तरफ होगा। कुछ ने कहा कि उन लोगो के हक मे उतरी थी, जिन को नमाज़ की दिशा मालूम न हुई और उन्होने और तरफ नमाज़ पढ ली थी। ख़ुदा ने उन को बताया था कि ख़ुदा किसी तरफ मख़्सूस नही, इस लिए उन की नमाज़ हो गयी। मुजाहिद रह० कहते है कि जब आयत उद्ऊनी अस्तजिब लकुम नाज़िल हुई, तो लोगो ने पूछा कि हम किधर मुह कर के दुआ मागा करें। ख़ुदा ने फरमाया कि ख़ुदा हर तरफ मौजूद है, जिस तरफ चाहो, मुह कर के दुआ मागा करो।

★रु १३/१३ आ ६

अल्लज़ी-न आतैना-हुमुल्किता-ब यत्लूनहू हक़्-क़ तिलावतिही ط उला-इ-क युअ्मिनू-न बिही ط व मंय्यक्फ़ुर् बिही फ़-उला-इ-क हुमुल्-ख़ासिरून ★ (१२१) या बनी इस्रा-ईलज़्कुरू निअ्-मतियल्लती अन्-अम्तु अलैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ-लल्-आलमीन (१२२) वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अन् नफ़्सिन् शैअंव्-व ला युक़्बलु मिन्हा अद्लुंव्-व ला तन्फ़अुहा शफ़ाअतुंव्-व ला हुम् युन्सरून (१२३) व इज़िब्तला इब्राही-म रब्बुहू बिकलिमातिन् फ़-अ-तम्महुन-न ط क़ा-ल इन्नी जाअिलु-क लिन्नासि इमामन् ط क़ा-ल व मिन् ज़ुर्रिय्यती ط क़ा-ल ला यनालु अह्दिज़्ज़ालिमीन (१२४) व इज़् जअ़ल्नल्बै-त मसाबतल्-लिन्नासि व अम्नन् ط वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इब्राही-म मुसल्लन् ط व अहिद्ना इला इब्राही-म व इस्माअी-ल अन् तह्हिरा बैति-य लित्ता-इफ़ी-न वल्आकिफ़ी-न वर्रुक्कअिस्सुजूद (१२५) व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बिज्अल् हाज़ा ब-ल-दन् आमिनंव्वर्ज़ुक़् अह्लहू मिनस्समराति मन् आ-म-न मिन्हुम् बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि ط क़ा-ल व मन् क-फ-र फ उमत्तिअुहू क़लीलन् सुम्-म अज़्तर्रुहू इला अज़ाबिन्नारि ط व बिअ्सलमसीर (१२६) व इज़् यर्फ़अु इब्राहीमुल्-कवाअि-द मिनल्बैति व इस्माअीलु ط रब्बना त-क़ब्बल् मिन्ना ط इन्न-क अन्तस्समीअुल्-अलीम (१२७) रब्बना वज्अल्ना मुस्लिमैनि ल-क व मिन् ज़ुर्रिय्यतिना उम्मतम्-मुस्लिमतल्लक ص व अरिना मनासि-कना व तुब् अलैना ج इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम (१२८) रब्बना वब्अस् फ़ीहिम् रसूलम्मिन्हुम् यत्लू अलैहिम् आयाति-क व युअल्लिमु-हुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व युज़क्कीहिम् ط इन्न-क अन्तल्-अज़ीज़ुल्-हकीम ★ (१२९) व मंय्यर्ग़बु अम्मिल्लति इब्राही-म इल्ला मन् सफ़ि-ह नफ़्सहू ط व ल-क़दिस्तफ़ैनाहु फ़िद्दुन्या ج व इन्नहू फ़िल्आख़िरति लमिनस्सालिहीन (१३०) इज़् क़ा-ल लहू रब्बुहू अस्लिम् ل क़ा-ल अस्लम्तु लिरब्बिल्आलमीन (१३१)

حق تلاوته اولٰئك يؤمنون به ومن يكفر به فاولٰئك هم الخٰسرون
يٰبني اسرآءيل اذكروا نعمتي التي انعمت عليكم واني فضلتكم على
العٰلمين واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا ولا يقبل منها
عدل ولا تنفعها شفاعة ولا هم ينصرون واذ ابتلى ابرٰهم ربه
بكلمٰت فاتمهن قال اني جاعلك للناس اماما قال ومن ذريتي قال
لا ينال عهدي الظٰلمين واذ جعلنا البيت مثابة للناس وامنا و
اتخذوا من مقام ابرٰهم مصلى وعهدنا الى ابرٰهم واسمٰعيل ان
طهرا بيتي للطآئفين والعٰكفين والركع السجود واذ قال ابرٰهم رب
اجعل هٰذا بلدا اٰمنا وارزق اهله من الثمرٰت من اٰمن منهم بالله
واليوم الاٰخر قال ومن كفر فامتعه قليلا ثم اضطره الى عذاب
النار وبئس المصير واذ يرفع ابرٰهم القواعد من البيت واسمٰعيل
ربنا تقبل منا انك انت السميع العليم ربنا واجعلنا مسلمين لك و
من ذريتنا امة مسلمة لك وارنا مناسكنا وتب علينا انك انت
التواب الرحيم ربنا وابعث فيهم رسولا منهم يتلوا عليهم اٰيٰتك ويعلمهم
الكتٰب والحكمة ويزكيهم انك انت العزيز الحكيم ومن يرغب عن
ملة ابرٰهم الا من سفه نفسه ولقد اصطفينٰه في الدنيا وانه في الاٰخرة
لمن الصٰلحين اذ قال له ربه اسلم قال اسلمت لرب العٰلمين ووصى

★रु १४/१३ आ ९ ★रु १५/१५ आ ८

होगा, न कोई मददगार ▩ (१२०) जिन लोगो को हमने किताव दी है वे, उसको (ऐसा) पढ़ते है, जैसा उसके पढ़ने का हक है। यही लोग उस पर ईमान रखने वाले हैं, और जो लोग इसको नही मानते, वे घाटा पाने वाले हैं। (१२१) ★

ऐ बनी इस्राईल ! मेरे वे एहसान याद करो जो मैंने तुम पर किये और यह कि मैंने तुमको दुनिया वालो पर फज़ीलत बख्शी। (१२२) और उस दिन से डरो जब कोई शख्स किसी शख्स के कुछ काम न आए और न उससे बदला कुबूल किया जाए, और न उसको किसी की सिफ़ारिश कुछ फ़ायदा दे और न लोगो को (किसी और तरह की) मदद मिल सके। (१२३) और जब परवर-दिगार ने कुछ बातो मे इब्राहीम की आज़माइश की तो वह उनमे पूरे उतरे। खुदा ने कहा कि मैं तुमको लोगो का पेशवा बनाऊंगा। उन्होने कहा कि (परवरदिगार !) मेरी औलाद मे से भी (पेशवा बनाइयो)। खुदा ने फरमाया कि हमारा इकरार ज़ालिमो के लिए नही हुआ करता।[1] (१२४) और जब हमने खाना-ए-काबा को लोगो के लिए जमा होने और अम्न पाने की जगह मुकर्रर किया और (हुक्म दिया कि) जिस मकाम पर इब्राहीम खडे हुए थे, उसको नमाज़ की जगह बना लो। और इब्राहीम और इस्माईल को कहा कि तवाफ करने वालो और एतिकाफ करने वालो रुकूअ करने वालो और सज्दा करने वालो के लिए मेरे घर को पाक साफ रखा करो।[2] (१२५) और जब इब्राहीम ने दुआ की कि ऐ परवरदिगार ! इस जगह को अम्न का शहर बना और उसके रहने वालो मे से जो खुदा पर और आखिरत के दिन पर ईमान लाए, उनके खाने को मेवे अता कर, तो खुदा ने फरमाया कि जो काफिर होगा, मैं उस को भी किसी कदर मुतमत्तेअ करूंगा (फ़ायदा पहुंचने दूगा) (मगर) फिर उसको (अज़ाबे) दोजख के (भुगतने के) लिए ना-चार कर दूगा और वह बुरी जगह है। (१२६) और जब इब्राहीम और इस्माईल वैतुल्लाह की बुनियादें ऊंची कर रहे थे (तो दुआ किये जाते थे कि) ऐ हमारे परवरदिगार ! हमसे यह खिदमत कुबूल फरमा। बेशक तू सुनने वाला (और) जानने वाला है। (१२७) ऐ परवरदिगार ! हम को अपना फ़रमाबरदार बनाए रखियो और हमारी औलाद मे से भी एक गिरोह को अपना ताबेअदार बनाते रहियो। और (परवरदिगार !) हमे हमारे तरीके इबादत के बता और हमारे हाल पर (रहम के साथ) तवज्जोह फ़रमा। बेशक तू तवज्जोह फरमाने वाला मेहरबान है। (१२८) ऐ परवरदिगार ! इन (लोगो) मे इन्ही मे से एक पैगम्बर भेजियो, जो उनको तेरी आयत पढ-पढ कर सुनाया करे और किताब और हिकमत सिखाया करे और उन (के दिलो) को पाक-साफ़ किया करे। बेशक तू गालिब और हिक-मत वाला है।[3] (१२९) ★

और इब्राहीम के दीन से कौन मुह फेर सकता है, उसके अलावा, जो निहायत नादान हो। हमने उनको दुनिया मे भी चुना था और आखिरत मे भी वह नेको मे होगे। (१३०) जब उनसे उनके परवरदिगार ने फरमाया कि इस्लाम ले आओ, तो उन्होने अर्ज़ की कि मैं दुनियाओ के रब के आगे

---

१ इसमे इख्तिलाफ है कि यह आज़माइश नुबूवत से पहले थी या बाद मे, और थी तो किन मामले मे थी। [illegible] हो और किसी भी मामले मे भी हो, वह इस मामले मे पूरे निकले और खुदा ने खुश हो कर उनको [illegible] बनाया, मगर यह भी फरमा दिया कि तुम्हारी औलाद मे ज़ालिम भी होंगे और जो ऐसे होंगे उन को [illegible] दर्जा नही मिलेगा। जो नेक होंगे, वही पेशवा बनाये जाएगे।

२ यानी नमाज़ पढने वालो के वास्ते पाक करें काबे के घर को कि उसे अल्लाह तआला ने अपना घर [illegible]।

३ जिन पैगम्बर के लिए हज़रत इब्राहीम ने दुआ की थी, वह मुहम्मद रसूलुल्लाह [illegible] थे। एक हदीस मे आप ने फ़रमाया कि मैं अपने बाप इब्राहीम की दुआ हू, [illegible] का ख्वाब हू।

▩ व मंज़िल ★रु १४/१४ आ ६ ★रु १५/१५ आ ८

व वस्सा बिहा इब्राहीमु बनीहि व यअ़्क़ूबु ط या बनि-य्य इन्नल्लाहस्तफ़ा लकुमुद्दी-न फ़-ला तमूतुन-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून ط (१३२) अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज़् ह़-ज़-र यअ़्क़ूबलमौतु ط इज़् क़ा-ल लिबनीहि मा तअ़्बुदू-न मिम्बअ़्दी ط क़ालू नअ़्बुदु इला-ह-क व इला-ह आबा-इ-क इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हा-क़ इलाहव-वाहिदव-व नह़्नु लहू मुस्लिमून (१३३) तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़-लत् ج लहा मा क-स-बत् व लकुम् मा क-सब्तुम् ج व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ़्-मलून (१३४) व क़ालू कूनू हूदन् औ नसारा तह़्तदू ط क़ुल् बल् मिल्ल-त इब्राही-म ह़नीफ़न् ط व मा का-न मिनल्-मुश्रिकीन् (१३५) क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना व मा उन्ज़ि-ल इला इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल् अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व ई़सा व मा ऊति-यन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ج ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-ह़दिम् मिन्हुम् صلے व नह़्नु लहू मुस्लिमून (१३६) फ़ इन् आमनू बिमिस्लि मा आमन्तुम् बिही फ़-क़दिह्तदौ ج व इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा हुम् फ़ी शिक़ाक़िन् ج फ़-स-यक्फ़ी-क-हुमुल्लाहु ج व हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम ط (१३७) सिब्ग़तल्लाहि ج व मन् अह़्सनु मिनल्लाहि सिब्ग़तव्-व नह़्नु लहू आ़बिदून (१३८) क़ुल् अतुहा-ज्जूनना फ़िल्लाहि व हु-व रब्बुना व रब्बुकुम् ج व लना अअ़्-मालुना व लकुम् अअ़्-मालुकुम् ج व नह़्नु लहू मुख़्लिसून (१३९) अम् तक़ूलू-न इन्-न इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल्अस्बा-त कानू हूदन् औ नसारा ط क़ुल् अ अन्तुम् अअ़्लमु अमिल्लाहु ط व मन् अज़्लमु मिम्मन् क-त-म शहा-द-तन् अ़िन्दहू मिनल्लाहि ط व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्-मलून (१४०) तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़-लत् ج लहा मा क-स-बत् व लकुम् मा क-सब्तुम् ج व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ़्-मलून★ (१४१)

البقرة ٢ ١٦ الٓمٓ

بها ابرهم بنيه ويعقوب يبني ان الله اصطفى لكم الدين فلا تموتن الا
وانتم مسلمون ۝ ام كنتم شهداء اذ حضر يعقوب الموت اذ قال لبنيه
ما تعبدون من بعدي قالوا نعبد الهك واله اباىك ابرهم واسمعيل
واسحق الها واحدا ونحن له مسلمون ۝ تلك امة قد خلت لها ما
كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسلون عما كانوا يعملون ۝ وقالوا كونوا هودا
او نصرى تهتدوا قل بل ملة ابرهم حنيفا وما كان من المشركين ۝
قولوا امنا بالله وما انزل الينا وما انزل الى ابرهم واسمعيل واسحق
ويعقوب والاسباط وما اوتي موسى وعيسى وما اوتي النبيون من
ربهم لا نفرق بين احد منهم ونحن له مسلمون ۝ فان امنوا
بمثل ما امنتم به فقد اهتدوا وان تولوا فانما هم في شقاق
فسيكفيكهم الله وهو السميع العليم ۝ صبغة الله ومن
احسن من الله صبغة ونحن له عبدون ۝ قل اتحاجوننا في الله
وهو ربنا وربكم ولنا اعمالنا ولكم اعمالكم ونحن له مخلصون ۝ ام
تقولون ان ابرهم واسمعيل واسحق ويعقوب والاسباط كانوا
هودا او نصرى قل ءانتم اعلم ام الله ومن اظلم ممن كتم شهادة
عنده من الله وما الله بغافل عما تعملون ۝ تلك امة قد خلت
لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسلون عما كانوا يعملون ۝

منزل

★रु १६/१६ आ१२

इताअत के लिए सर झुकाता हूं। (१३१) और इब्राहीम ने अपने बेटों को इसी बात की वसीयत की और याकूब ने भी (अपने बेटों से यही कहा) कि बेटा! ख़ुदा ने तुम्हारे लिए यही दीन पसन्द फ़रमाया है, तो मरना तो मुसलमान ही मरना। (१३२) भला जिस वक्त याकूब वफ़ात पाने लगे, तो तुम उस वक्त मौजूद थे, जब उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे? तो उन्होंने कहा कि आपके माबूद और आपके बाप-दादा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ के माबूद की इबादत करेंगे, जो अकेला माबूद है। और हम उसी के हुक्मबरदार हैं। (१३३) यह जमाअत गुज़र चुकी, उन को उनके आमाल (का बदला मिलेगा) और तुमको तुम्हारे आमाल (का) और जो अमल वे करते थे, उनकी पूछ-गछ तुमसे नहीं होगी। (१३४) और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदी या ईसाई हो जाओ तो सीधे रास्ते पर लग जाओ। (ऐ पैग़म्बर! उनसे) कह दो, (नहीं), बल्कि (हम) दीने इब्राहीम (अख़्तियार किये हुए हैं), जो एक ख़ुदा के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे। (१३५) (मुसलमानो!) कहो कि हम ख़ुदा पर ईमान लाए और जो (किताब) हम पर उतरी, उस पर और जो (सहीफ़े) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याकूब और उनकी औलाद पर नाज़िल हुए, उन पर और जो (किताबें) मूसा और ईसा को अता हुईं उन पर और जो और पैग़म्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ़ से मिलीं, उन पर (सब पर ईमान लाये)। हम उन पैग़म्बरों में से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी (ख़ुदा-ए-वाहिद) के फ़रमाबरदार हैं। (१३६) तो अगर ये लोग भी उसी तरह ईमान लायें, जिस तरह तुम ईमान ले आये हो, तो वे हिदायत पा जाएं और अगर मुंह फेर लें (और न मानें) तो वे (तुम्हारे) मुख़ालिफ़ हैं और उनके मुक़ाबले में तुम्हें ख़ुदा काफ़ी है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (१३७) (कह दो कि हमने) ख़ुदा का रंग (अख़्तियार कर लिया है) और ख़ुदा से बेहतर रंग किसका हो सकता है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं।[1] (१३८) (उन से कहो, क्या तुम ख़ुदा के बारे में हमसे झगड़ते हो, हालांकि वही हमारा और तुम्हारा परवरदिगार है और हमको हमारे आमाल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे आमाल (का) और हम ख़ालिस उसी की इबादत करने वाले हैं। (१३९) (ऐ यहूद व नसारा!) क्या तुम इस बात के क़ायल हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याकूब और उनकी औलाद यहूदी और ईसाई थे। (ऐ मुहम्मद! उनसे) कहो कि भला तुम ज़्यादा जानते हो या ख़ुदा?[2] और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन, जो ख़ुदा की गवाही को जो उस के पास (किताब में मौजूद) है, छिपाये और जो कुछ तुम लोग कर रहे हो ख़ुदा उससे ग़ाफ़िल नहीं।[3] (१४०) यह जमाअत गुज़र चुकी। उन को (वह) मिलेगा, जो उन्होंने किया और तुमको वह जो तुमने किया और जो अमल वे करते थे, उन की पूछ तुम से नहीं

---

१ ख़ुदा के रंग से मुराद उस का दीन इस्लाम है जो ख़ुदा की तौहीदे ख़ालिस सिखाता है और इसी की इबादत का मुस्तहिक़ बनाता है।

२ यहूद व नसारा हज़रत इब्राहीम और पैग़म्बरों को अपने मज़हब की तरफ़ मंसूब करते थे यानी उन्हें यहूदी या ईसाई कहते थे। ख़ुदा ने उन के इस कौल को रद्द कर दिया और फ़रमाया कि उन के हाल को तुम ज़्यादा जानते हो या ख़ुदा। ख़ुदा के इल्म में तो न वे यहूदी थे, न ईसाई, बल्कि अकेले ख़ुदा के फ़रमाबरदार और उन का मज़हब इस्लाम (यानी ख़ुदा की हुक्मबरदारी) था।

३ गवाही से मुराद इस बात की जानकारी है कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, जिन का हाल उन की किताबों में लिखा हुआ था, लेकिन वे जान-बूझ कर उस को छिपाते थे और अल्लाह ने गवाही छिपाने वालों को ज़ालिम क़रार दिया।

दूसरा पारः स-यक़ूलु

सूरतुल्-बक़रति आयत १४२ से २५२

سيقول ٢ ١٧ البقرة ٢

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي
كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ
صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ
عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ
الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَىٰ
عَقِبَيْهِ ۚ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ قَدْ نَرَىٰ
تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَ
إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا
قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ
وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ
الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَ
إِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ ۖ فَلَا
تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا ۖ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ
أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

منزل

स-यक़ूलुस्सुफ़हा-उ मिनन्नासि मा वल्लाहुम् अन् क़िब्लतिहिमुल्लती कानू अलैहा ط क़ुल् लिल्लाहिल् - मश्रिक़ु वलमग़्रिबु ط यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम् - मुस्तक़ीम (१४२) व कज़ालि-क ज-अ़ल्नाकुम् उम्मतंव-व-स-तल्लितकूनू शुहदा-अ अ़लन्नासि व यकूनर्रसूलु अ़लैकुम् शहीदन् ط व मा जअ़ल्नल्-क़िब्-ल-तुल्लती कुन्-त अ़लैहा इल्ला लिनअ़्-ल-म मंय्यत्तबिअ़ुर्रसू-ल मिम्मंय्यनक़लिबु अ़ला अ़क़िबैहि ط व इन् कानत् ल-कबीरतन् इल्ला अ़लल्लज़ी-न हदल्लाहु ط व मा कानल्लाहु लियुज़ी-अ ईमानकुम् ط इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल रऊफ़ुर्रहीम (१४३) क़द् नरा तक़ल्लु-ब वज्हि-क फ़िस्समा-इ ج फ़-ल-नुवल्लियन्न-क क़िब्लतन् तर्ज़ाहा ص फ़-वल्लि वज्ह-क शत्रल्-मस्जिदिल्-हरामि ط व हैसु मा कुन्तुम् फ़ वल्लू वुजूहकुम् शत्रहू ط व इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब ल-यअ़्-लमू-न अन्नहुल् हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् ط व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ़्-मलून (१४४) व लइन् अतैतल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब बिकुल्लि आयतिम्मा तबिअ़ू क़िब्ल-तक ج व मा अन्-त बि ताबिअ़िन् क़िब्लतहुम् ج व मा बअ़्ज़ुहुम् बि ताबिअ़िन् क़िब्ल-त बअ़्ज़िन् ط व लइनित्तबअ़्-त अह्वा-अ हुम् मिम्बअ़्दि मा जा-अ-क मिनल्अ़िल्मि ۙ इन्न-क इज़ल्-ल मिनज़्-ज़ालिमीन ※ (१४५) अल्लज़ी-न आतैना - हुमुल्किता-ब यअ़्-रिफ़ूनहू कमा यअ़्-रिफ़ू-न अब्ना-अ हुम् ط व इन्-न फ़रीक़म्-मिन्हुम् ल-यक्तुमूनल्-हक़्-क़ व हुम् यअ़्-लमून ※ (१४६) अल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ ला तकूनन्-न मिनलमुम्तरीन ★ (१४७)

※ व. ला. ※ व. मं. ★ रु. १७/१ आ ६

होगी(१४१) ★ मूर्ख लोग कहेंगे कि मुसलमान जिस किब्ले पर (पहले से चले आते) थे (अब) उससे क्यो मुंह फेर बैठे ? तुम कह दो कि पूरब और पच्छिम सब ख़ुदा ही का है। वह जिसको चाहता है, सीधे रास्ते पर चलाता है। (१४२) और इसी तरह हमने तुम को उम्मते मोतदिल बनाया है,[1] ताकि तुम लोगो पर गवाह बनो और (आख़िरी) पैगम्बर तुम पर गवाह बनें और जिस किब्ले पर तुम (पहले) थे, उसको हमने इसलिए मुकर्रर किया था कि मालूम करे कि कौन (हमारे) पैगम्बर का ताबेअ रहता है और कौन उल्टे पाव फिर जाता है और यह बात (यानी किब्ले की तब्दीली, लोगो को) बोझ मालूम हुई, मगर जिन को ख़ुदा ने हिदायत बख्शी है, (वे इसे बोझ नही समझते) और ख़ुदा ऐसा नही कि तुम्हारे ईमान को यो ही खो दे। ख़ुदा तो लोगो पर बड़ा मेहर-बान (और) रहमत वाला है। (१४३) (ऐ मुहम्मद !) हम तुम्हारा आसमान की तरफ मुह फेर-फेर कर देखना देख रहे है।[2] सो हम तुमको उसी किब्ले की तरफ, जिसको तुम पसन्द करते हो, मुह करने का हुक्म देंगे। तो अपना मुह मस्जिदे हराम (यानी ख़ाना-ए-काबा) की तरफ फेर लो। और तुम लोग जहां हुआ करो (नमाज पढने के वक्त) उसी मस्जिद की तरफ मुह कर लिया करो। और जिन लोगो को किताब दी गयी है वे ख़ूब जानते हैं कि (नया किब्ला) उनके परवरदिगार की तरफ से हक है और जो काम ये लोग करते है, ख़ुदा उन से बे-ख़बर नही।[3] (१४४) और अगर तुम इन अह्ले किताब के पास तमाम निशानिया भी लेकर आओ तो भी ये तुम्हारे किब्ले की पैरवी न करे और तुम भी उनके किब्ले की पैरवी करने वाले नही और उनमे से भी कुछ-कुछ के किब्ले के पैरो नही और अगर तुम बावजूद इसके कि तुम्हारे पास दानिश (यानी वह्ये ख़ुदा) आ चुकी है, उनकी ख्वाहिशो के पीछे चलोगे तो जालिमो मे (दाखिल) हो जाओगे ▨ (१४५) जिन लोगो को हमने किताब दी है, वे इन (आखिरी पैगम्बर) को इस तरह पहचानते हैं, जिस तरह अपने बेटो को पहचाना करते है, मगर एक फ़रीक इन मे से सच्ची बात को जान-बूझ कर छिपा रहा है ▨ (१४६) (ऐ पैगम्बर ! यह नया किब्ला) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक है तुम हरगिज शक करने

---

१. उम्मते मोतदिल, जिस मे न इफरात है, न तफरीत। ईसाइयो ने इफरात अपनाया कि हज़रत ईसा को ख़ुदा का बेटा बना दिया और यहूदियो ने तफरीत किया किया कि उन की पैगम्बरी को भी न माना। उम्मते मोतदिल (दर्मियानी राह वाले) ने न उन को हद से ज्यादा बढाया, न घटाया बल्कि उन के दर्जे पर रखा।

२ यानी इस गरज़ से मुह फेर-फेर देखना कि कब काबे की तरफ मुह कर के नमाज़ पढने का हुक्म होता है, क्योकि आप दिल से चाहते थे कि अपने दादा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के किब्ले की तरफ मुह कर के नमाज़ पढा करें।

३ हज़रत पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ुह्र की नमाज़ की दो रक्अते पढी थी कि यह आयत उतरी और हुक्म हुआ कि काबे की तरफ मुह कर के नमाज़ पढो। हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसी वक्त नमाज़ के अन्दर काबे की तरफ फिर गये और दो रक्अतें बाकी काबे की तरफ पढी। इस मस्जिद को ज़ू क़िब्लतैन कहते हैं यानी दो किब्ले वाली।

★रु. १६/१६ आ १२ ▨ व. ला. ▨ व. म

व लि कुल्लिव्विज्हतुन् हु-व मुवल्लीहा फस्तबिकुल्-ख़ैराति अै-न मा तकूनू यअ्ति बिकुमुल्लाहु जमीअन् ط इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् कदीर (१४८) व मिन् हैसु ख-रज्-त फ वल्लि वज्ह-क शत्रल्-मस्जिदिल्-ह़रामि ط व इन्नहु लल्हक़्क़ु मिर्रब्बिक ط व मल्लाहु बि ग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्-मलून (१४९) व मिन् हैसु ख़-रज्-त फ़ वल्लि वज्-ह-क शत्रल्-मस्जिदिल् - ह़रामि ط व हैसु मा कुन्तुम् फ़ वल्लू वुजूहकुम् शत्-रहू لا लि-अल्ला यकू-न लिन्नासि अ़लैकुम् हुज्जतुन् قلى इल्लल्लजी-न ज़-लमू मिन्हुम् ق फ़ ला तख़्शौहुम् वख़्शौनी ق व लि उतिम्-म निअ़-मती अ़लैकुम् व ल-अ़ल्लकुम् तह्तदून لا (१५०) कमा अर्सल्ना फ़ीकुम् रसूलम्-मिन्कुम् यत्लू अ़लैकुम् आयातिना व युज़क्कीकुम् व युअ़ल्लिमु-कुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-तृ व युअ़ल्लिमुकुम् मा लम् तकूनू तअ्-लमून ط (१५१) फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्-कुम् वश्कुरूली व ला तक्फ़ुरून ★(१५२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति ط इन्नल्ला - ह म-अ़स्साबिरीन (१५३) व ला तकूलू लिमंय्युक्तलु फी सबीलिल्लाहि अम्वातुन् ط बल् अह्याउंव-व लाकिल्ला तश्अुरून (१५४) व ल-नब्लुवन्नकुम् बि शैइम्-मिनल्ख़ौफ़ि वल्जूअि व नक़्सिम्मिनल्-अम्वालि वल-अन्फ़ुसि वस्समराति ط व बश्शिरिस्साबिरीन لا(१५५) अल्लज़ी-न इज़ा असाबत्-हुम् मुसीबतुन् لا क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून ط (१५६) उलाइ-क अ़लैहिम् स-लवातुम्-मिर्रब्बिहिम् व रह्मतुन् قف व उला-इ-क हुमुल्मुह्तदून (१५७) इन्नस्सफ़ा वल्मर्व-तृ मिन् शआ-इरिल्लाहि ج फ मन् हज्जल्बै-त अविअ्-त-म-र फ़ ला जुना-ह अ़लैहि अंय्यत्तव-व-फ बिहिमा ط व मन् त-तव्-व-अ़ ख़ैरन् لا फ़-इन्नल्ला-ह शाकिरुन् अ़लीम (१५८)

البقرة ٢   ١٨   سيقول ٢

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ
مِنْ رَبِّكَ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ
وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ
شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ
فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝
كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَ
يُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝
فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَا
تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِنْ لَا
تَشْعُرُونَ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ
الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا
أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝ أُولَٰئِكَ
عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ۝
إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ
اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ
اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ

منزل ١

व. नबी स. ∴ मु अि मु ता ख़. ३ ★रु. १८/२ आ ५

वालो मे न होना(१४७)★ और हर एक (फिर्के) के लिए एक दिशा (मुकर्रर) है, जिधर वह (इबादत के वक्त) मुह किया करते हैं, तो तुम नेकियो मे बाज़ी ले जाओ ▒ तुम जहा होगे, खुदा तुम सब को जमा कर लेगा। बेशक खुदा हर चीज़ पर कादिर है। (१४८) और तुम जहा मे निकलो[1] (नमाज़ मे) अपना मुह मस्जिदे मोहतरम की तरफ कर लिया करो। बे-शुबहा वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक है।[2] और तुम लोग जो कुछ करते हो, खुदा उससे बे-खबर नही। (१४९) और तुम जहा से निकलो मस्जिदे मोहतरम की तरफ मुह (कर के नमाज़ पढा) करो और मुसलमानो! तुम जहां हुआ करो उसी (मस्जिद की तरफ रुख किया करो (यह ताकीद) इस लिए (की गयी है) कि लोग तुमको किसी तरह का इल्ज़ाम न दे सके, मगर इनमे से जो ज़ालिम है (वे इल्ज़ाम दे तो दे)[3] सो उनसे मत डरना और मुझी से डरते रहना और यह भी मक्सूद है कि मैं तुमको अपनी तमाम नेमतें बख्शू और यह भी कि तुम सीधे रास्ते पर चलो।∴(१५०) जिस तरह (और नेमतों के साथ) हमने तुम मे तुम्ही मे से एक रसूल भेजे है जो तुमको हमारी आयते पढ-पढ कर सुनाते और तुम्हे पाक बनाते और किताब (यानी कुरआन) और दानाई सिखाते है और ऐसी बाते बताते है जो तुम पहले नही जानते थे।∴(१५१) सो तुम मुझे याद किया करो, मैं तुम्हे याद किया करूंगा और मेरा एहसान मानते रहना और ना-शुक्री न करना। (१५२) ★

ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो। बेशक खुदा सब्र करने वालो के साथ है।[4] (१५३) और जो लोग खुदा की राह मे मारे जाएं, उनके बारे मे यह न कहना कि वे मरे हुए है (वे मुर्दा नही) बल्कि ज़िदा है, लेकिन तुम नही जानते। (१५४) और हम किसी कदर खौफ और भूख और माल और जानो और मेवो के नुक्सान से तुम्हारी आज़माइश करेगे, तो सब्र करने वालो को (खुदा की खुश्नूदी की) खुशखबरी सुना दो। (१५५) इन लोगों पर जब कोई मुसीबत आती है, तो कहते है कि हम खुदा ही का माल हैं और उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं। (१५६) यही लोग हैं जिन पर उनके परवरदिगार की मेहरबानी और रहमत है और यही सीधे रास्ते पर है। (१५७) बेशक सफा और मर्व. (पहाड) (खुदा की) निशानियो मे से हैं, तो जो शख्स खाना-काबा का हज या उमर[5] करे उस पर कुछ गुनाह नही कि दोनो का तवाफ करे। (बल्कि तवाफ एक किस्म का नेक काम है) और जो कोई नेक काम करे तो खुदा कद्र शनास (कद्र समझने

---

१ मुसाफिरो के वास्ते।

२. यानी कावे की तरफ नमाज़ पढना सही है।

३ यहूद तो मुसलमानो को यह इल्ज़ाम देते थे कि हमारे दीन को तो नही मानते, मगर नमाज़ हमारे किब्ले की तरफ पढते हैं और मुश्रिक यह इल्ज़ाम देते थे कि दावा तो इब्राहीम के दीन पर चलने का है, लेकिन उन के किब्ले की तरफ नमाज़ नही पढते, खाना-ए-कावा के किब्ला मुकर्रर कर देने से ये एतराज़ दूर हो गये।

४ यहा से इशारा इस तरफ है कि जिहाद मे मेहनत उठाओ और मज़बूती अख्तियार करो।

५ उमर भी एक किस्म का हज है और इस मे और हज मे यह फ़र्क़ है कि हज खास ज़िलहिज्जा के महीने मे होता है और उमर और महीनो मे भी हो सकता है। दूसरे हज मे एहराम बाधना, फिर अर्फ के दिन अरफात मे हाज़िर होना, फिर वहा से चल कर मश्अरुल हराम मे रात रहना, फिर सुबह ईद को मिना मे पहुच कर ककर फेंकना और हजामत बनवा कर एहराम उतारना और मक्के मे जा कर कावे का तवाफ करना, फिर सफा व मर्व के दर्मियान (जो मक्के मे दो पहाडिया हैं) दौडना वगैरह होता है और उमर मे सिर्फ एहराम बाधना खाना-कावा का तवाफ करना, सफा और मर्व के दर्मियान दौडना होता है।

इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू-न मा अन्ज़ल्ना मिनल्बय्यिनाति वल्हुदा मिम्बअ़्दि मा बय्यन्नाहु लिन्नासि फ़िल्किताबि ॥ उलाइ-क यल्अ़नुहुमुल्लाहु व यल्अ़नुहुमुल्लाअ़िनून (१५९) इल्लल्लज़ी-न ताबू व अस्लहू व बय्यनू फ़ उला-इ-क अतूबु अ़लैहिम् ८ व अनत्तव्वाबुर्रहीम (१६०) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् उला-इ-क अ़लैहिम् लअ़्-नतुल्लाहि वल्मलाइकति वन्नासि अज्मअ़ीन ॥ (१६१) ख़ालिदी-न फ़ीहा ८ ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल्-अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून (१६२) व इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् ८ ला इला - ह इल्ला हुवर्रह्मानुर्रहीम ★ (१६३) इन - न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि वल्फुल्किल्लती तज्री फ़िल्बह्रि बिमा यन्फ़अ़ुन्ना-स व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिम्मा-इन् फ़-अह्या बिहिल्अर-ज़ बअ़्-द मौतिहा व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिंव ८ - व तस्रीफ़िर्रियाहि वस्सहाबिल्-मुसख़्ख़रि बैनस्समाइ वल्अर्ज़ि ल-आयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ़्क़िलून (१६४) व मिनन्नासि मंय्यत्तख़िज़ु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादंय्युहिब्बूनहुम् क-हुब्बिल्लाहि वल्लज़ी-न आमनू अशद्दु हुब्बलिल्लाहि ७ व लौ य-रल्लज़ी-न ज़-लमू-इज़ यरौनल्-अ़ज़ा-ब ॥ अन्नल्क़ुव्-व-त लिल्लाहि जमीअ़ंव-व अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़ज़ाब (१६५) इज़् तबर्र-अल्लज़ीनत्तुबिअ़ू मिनल्लज़ीनत्त-बअ़ू व र-अवुल्-अ़ज़ा-ब व तक़त्तअ़त् बिहिमुल्अस्बाब (१६६) व क़ालल्लज़ीनत्तबअ़ू लौ अन्-न लना कर्रतन् फ़ न-त-बर्र-अ मिन्हुम् कमा तबर्रअ़ू मिन्ना ७ कज़ालि-क युरीहिमुल्लाहु अअ़्-मालहुम् ह-सरातिन् अ़लैहिम् ७ व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिनन्नार ★ (१६७)

البقرة ٢ ١٩ سيقول ٢

وَالْهُدٰى مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ
اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ
اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا
وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ
اَجْمَعِيْنَ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنْظَرُوْنَ ۝ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝
اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَ
الْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ
دَآبَّةٍ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ وَلَوْ
يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا وَّ
اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ۝ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا كَذٰلِكَ
يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ

منزل

★रु १९/३ आ ११ ★रु २०/४ आ ४

वाला) और जानने वाला है। (१५८) जो लोग हमारे हुक्मो और हिदायतो को, जो हमने नाज़िल की है, (किसी फ़सादी गरज से) छिपाते हैं, बावजूद कि हमने उनको लोगो के (समझाने के लिए) अपनी किताब मे खोल-खोल कर बयान कर दिया है। ऐसो पर खुदा और तमाम लानत करने वाले लानत करते है।[1] (१५९) हां, जो तौबा करते है और अपनी हालत दुरुस्त कर लेते और (इलाही हुक्मो को) साफ-साफ बयान कर देते है, तो मैं उनके कुसूर माफ कर देता हू और मैं बडा माफ करने वाला (और) रहम वाला हूं। (१६०) जो लोग काफिर हुए और काफ़िर ही मरे, ऐसो पर खुदा की और फरिश्तो की और लोगो की, सब की लानत। (१६१) वे हमेशा इसी (लानत) मे (गिरफ़्तार) रहेगे। उन से न तो अजाब ही हल्का किया जाएगा और न उन्हे कुछ मोहलत मिलेगी। (१६२) और (लोगो)! तुम्हारा माबूद खुदा-ए-वाहिद है। उस बडे मेहरबान (और) रहम वाले के सिवा कोई इबादत के लायक नही। (१६३) ★

बेशक आसमानो और ज़मीन के पैदा करने मे और रात और दिन के एक दूसरे के पीछे आने-जाने मे और कश्तियो (और जहाज़ो) मे, जो दरिया मे, लोगो के फायदे की चीज़े लेकर रवा है और मेह मे जिसको खुदा आसमान से बरसाता और उससे ज़मीन को मरने के बाद जिंदा (यानी खुश्क हुए पीछे सर-सब्ज) कर देता है और जमीन पर हर किस्म के जानवर फैलाने मे और हवाओ के चलाने मे और बादलो मे जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान फिरे रहते है अक्लमदो के लिए (खुदा की कुदरत की) निशानिया हैं।[2] (१६४) और कुछ लोग ऐसे है जो गैर खुदा को (खुदा का) शरीक बनाते[3] और उनसे खुदा की-सी मुहब्बत करते है, लेकिन जो ईमान वाले हैं, वे तो खुदा ही के सबसे ज्यादा दोस्तदार है। और ऐ काश! जालिम लोग जो बात अज़ाब के वक्त देखेंगे, अब देख लेते कि सब तरह की ताकत खुदा ही को है और यह कि खुदा सख्त अजाब करने वाला है। (१६५) उस दिन (कुफ़्र के) पेशवा अपने पैरुवो से बे-ज़ारी जाहिर करेंगे और (दोनो) अज़ाबे (इलाही) देख लेगे और उनके आपस के ताल्लुकात खत्म हो जाएगे। (१६६) (यह हाल देख कर) पैरवी करने वाले (हसरत से) कहेगे कि ऐ काश! हमे दुनिया मे जाना नसीब होता कि जिस तरह ये तुमसे बेजार हो रहे है, इसी तरह हम भी इनसे बेज़ार हो। इस तरह खुदा उनके अमल उन्हे हसरत बना कर दिखायेगा और वे दोज़ख से नही निकल सकेंगे। (१६७) ★

---

१. यह उन के हक मे है जिन को इल्म खुदा का पहुचा और दुनिया की गरज़ के वास्ते छिपा रखा।

२. मक्के के काफिर कहते थे कि हम तीन सौ साठ खुदा रखते हैं, उन से एक शहर का बन्दोबस्त खूब नही हो सकता और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कहते हैं कि मेरा एक खुदा है, जो सारी दुनिया का काम बनाता है, सो कोई दलील लाए अपनी बात पर, तब हम सच जानें, सो अल्लाह तआला ने इस आयत मे अपनी कुदरत की निशानिया बयान की।

३ यानी वे कहते हैं कि खुदा-ए-तआला के बराबर ये भी हैं।

या अय्युहन्नासु कुलू मिम्मा फ़िल्अर्ज़ि हलालन् तय्यिबंव्-व ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि इन्नहू लकुम् अदुव्वुम्मुबीन (१६८) इन्नमा यअ्मुरुकुम् बिस्सू-इ वल्फ़ह्शा-इ व अन् तकूलू अलल्लाहि मा ला तअ्-लमून (१६९) व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअू मा अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअु मा अल्फ़ैना अलैहि आबा-अना अ-व-लौ का-न आबा-उहुम् ला यअ्किलू-न शैअंव-व ला यह्तदून (१७०) व म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू क-म-सलिल्लज़ी यन्अिक़ु बिमा ला यस्मअु इल्ला दुआ-अंव-व निदा-अन् सुम्मुम्-बुक्मुन् अुम्युन् फ़हुम् ला यअ्क़िलून (१७१) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुलू मिन् तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् वश्कुरू लिल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्-बुदून (१७२) इन्नमा हर्र-म अलैकुमुल्मै-त-त वद्-द-म व लह्मल्ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल-ल बिही लि ग़ैरिल्लाहि फ़ मनिज़्तुर् - र ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आदिन् फ़-ला इस्-म अलैहि इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१७३) इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू - न मा अन्ज़लल्लाहु मिनल् - किताबि व यश्तरू - न बिही स-म-नन् क़लीलन् उला-इ-क मा यअ्कुलू-न फ़ी बुतूनिहिम् इल्लन्ना-र व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमल् - क़ियामति व ला युज़क्कीहिम् व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (१७४) उला-इकल्लज़ीनश्त-र-वुज़्ज़लाल-त बिल्हुदा वल्अज़ा-ब बिलमग़्फ़िरति फ़ मा अस्ब - र हुम् अलन्नार (१७५) ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह नज़्ज़लल्किता-ब बिल्-हक़्क़ि व इन्नल्लज़ीनख़्तलफ़ू फ़िल्किताबि ल-फ़ी शिक़ाक़िम्-बअ़ीद ★ ● (१७६)

النار ۞ يايها الناس كلوا مما في الارض حللا طيبا ولا تتبعوا
خطوت الشيطن انه لكم عدو مبين ۞ انما يامركم
بالسوء والفحشاء وان تقولوا على الله ما لا تعلمون ۞ واذا قيل
لهم اتبعوا ما انزل الله قالوا بل نتبع ما الفينا عليه اباءنا
اولو كان اباؤهم لا يعقلون شيئا ولا يهتدون ۞ ومثل الذين
كفروا كمثل الذي ينعق بما لا يسمع الا دعاء ونداء صم
بكم عمي فهم لا يعقلون ۞ يايها الذين امنوا كلوا من
طيبت ما رزقنكم واشكروا لله ان كنتم اياه تعبدون
انما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما اهل به
لغير الله فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا اثم عليه ان الله
غفور رحيم ۞ ان الذين يكتمون ما انزل الله من الكتب
ويشترون به ثمنا قليلا اولئك ما ياكلون في بطونهم الا
النار ولا يكلمهم الله يوم القيمة ولا يزكيهم ولهم عذاب
اليم ۞ اولئك الذين اشتروا الضللة بالهدى والعذاب
بالمغفرة فما اصبرهم على النار ۞ ذلك بان الله نزل
الكتب بالحق وان الذين اختلفوا في الكتب لفي شقاق
بعيد ۞ ليس البر ان تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب

★रु २१/५ आ ६ ● रुब्अ़ १/४

लोगो ! जो चीजे जमीन मे हलाल-तैयब है, वे खाओ और शैतान के कदमो पर न चलो। वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१६८) वह तो तुमको बुराई और बेहयाई ही के काम करने को कहता है और यह भी कि खुदा के बारे मे ऐसी बातें कहो, जिनका तुम्हे (कुछ भी) इल्म नही। (१६९) और जब उन लोगो से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने नाज़िल फरमायी है, उसकी पैरवी करो, तो कहते है (नही), बल्कि हम तो उसी चीज की पैरवी करेंगे, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया। भला अगरचे उनके बाप-दादा न कुछ समझते हो और न सीधे रास्ते पर हो (तब भी वे उन्ही की पैरवी किए जाएंगे।) (१७०) जो लोग काफिर है, उनकी मिसाल उस शख्स की-सी है जो किसी ऐसी चीज को आवाज़ दे जो पुकार और आवाज के सिवा कुछ सुन न सके। (ये) बहरे है, गूगे है, अंधे है, कि (कुछ) समझ ही नही सकते। (१७१) ऐ ईमान वालो ! जो पाकीजा चीजे हमने तुमको अता फरमायी हैं, उनको खाओ और अगर खुदा ही के बन्दे हो, तो (उस की नेमतो) का शुक्र भी अदा करो। (१७२) उसने तुम पर मरा हुआ जानवर और लहू[1] और सुअर का गोश्त और जिस चीज़ पर खुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए, हराम कर दिया है।[2] हां, जो ना-चार हो जाए (बशर्ते कि) खुदा की नाफरमानी न करे और (ज़रूरत की) हद से बाहर न निकल जाए, उस पर कुछ गुनाह नही। बेशक खुदा बख्शने वाला (और) रहम करने वाला है। (१७३) जो लोग (खुदा की) किताब से उन (आयतो और हिदायतो) को जो उसने नाज़िल फरमायी है, छिपाते और उनके बदले थोडी-सी कीमत (यानी दुनिया का फायदा) हासिल करते है, वे अपने पेटो मे सिर्फ आग भरते है। ऐसे लोगो से खुदा कियामत के दिन न कलाम करेगा और न उन को (गुनाहो से) पाक करेगा। और उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब है। (१७४) ये वह लोग हैं, जिन्हो ने हिदायत छोडकर गुमराही और बख्शिश छोडकर अज़ाब खरीदा। यह जहन्नम (की आग) को कैसा बर्दाश्त करने वाले हैं। (१७५) यह इसलिए कि खुदा ने किताब सच्चाई के साथ नाजिल फरमायी और जिन लोगो ने इस किताब मे इख्तिलाफ किया, वे ज़िद मे

---

१. मरे हुए जानवरो मे से मछली और टिड्डी, नबी सल्ल० की हदीस के मुताबिक हलाल और लहू मे से जिगर और तिल्ली हलाल हैं।

२ यह तर्जुमा डिक्शनरी के मानी के लिहाज़ से किया गया है। डिक्शनरी में 'इह्लाल' (उहिल-ल) के मानी आवाज़ बुलद करने के हैं। तफ्सीर लिखने वाले, जो इस लफ्ज़ के मानी मे ज़िब्ह का लफ्ज़ शामिल करते हैं, वे शाने-नुज़ूल के लिहाज़ से करते हैं, क्योकि जाहिलियत मे जो जानवर गैर-खुदा के लिए मुकर्रर किया जाता था ज़िब्ह करने के वक्त भी उस पर उसी गैर का नाम लिया जाता था, वरना हकीकत मे जो चीज गैर-खुदा के लिए मुकर्रर की जाए, चाहे वह जानवर हो या और कुछ हराम है, इस लिए कि आयत मे हर्फ 'मा', इस्तेमाल फरमाया गया है, जिस के मानी हैं 'जो चीज़' और वह आम है। ज़िब्ह, हैवान और चीज़ो को, चाहे वे खाने की हो या पहनने की, या और हर तरह इस्तेमाल करने की, सब को शामिल है। चूकि लुगत मुकद्दम है इस लिए हम ने उसी मानी को लिया है। हराम व हलाल चीज़ो मे नीयत को बडा दखल है, मसलन जो जानवर गैर-खुदा के लिए मुकर्रर किया गया हो, उस पर ज़िब्ह के वक्त खुदा का नाम लिया जाए या गैर-खुदा का, हराम होने के लिहाज़ से बराबर है। खुदा का नाम लेने से वह हलाल न होगा। उलमा ने लिखा है कि अगर किसी मुसलमान ने कोई जानवर गैर-खुदा का करीबी बनने के लिए ज़िब्ह किया, तो वह इस्लाम से खारिज हो गया और वह जानवर ऐसा होगा जैसे मुर्तद (इस्लाम से विमुख) का ज़िब्ह किया हुआ। बहरहाल नज्र की नीयत खुदा ही के लिए करनी चाहिए और ज़िब्ह करने के वक्त उस पर 'वह्दहू ला शरी-क लहू' का नाम लेना चाहिए क्योकि वह अपने साथ किसी को शरीक नही करना चाहता।

लैसल्बिर्-र अन् तुवल्लू वुजूहकुम् क़ि-ब-लल्-मश्रिक़ि वलमग़्रिबि व लाकिन्नल्बिर्-र मन् आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्आख़िरि वलमलाइकति वल्किताबि वन्नबिय्यी-न ج व आतल्मा-ल अ़ला हुब्बिही ज़विल्क़ुर्बा वल्यतामा वलमसाकी-न वब्नस्सबीलि ۙ वस्साइली-न व फ़िर्रिक़ाबि ج व अक़ामस्सला-त व आतज़्ज़का-त ج वलमूफ़ू-न बि अ़ह्दिहिम् इज़ा आ़हदू ج वस्साबिरी-न फ़िल् बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ व ही़नलबअ्सि ط उला-इकल्लज़ी-न स़-दकू ط व उला-इक हुमुल्मुत्तक़ून (१७७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़िसासु फ़िल्क़त्ला ط अल्हुर्रु बिल्हुर्रि वल्अ़ब्दु बिल्अ़ब्दि वलउन्सा बिल्उन्सा ط फ़ मन् अुफ़ि-य लहू मिन् अख़ीहि शैउन् फ़त्तिबाअुम्-बिलमअ़्-रूफ़ि व अदा-उन् इलैहि बि इह्सानिन् ط ज़ालि-क तख़्फ़ीफ़ुम् - मिर्रब्बिकुम् व रह्मतुन् ط फ़ मनिअ़्-तदा बअ़्-द ज़ालि-क फ़-लहू अ़ज़ाबुन् अलीम (१७८) व लकुम् फ़िल्क़िसासि हयातुंय्या उलिल्-अल्बाबि ल-अ़ल्लकुम् तत्तकून (१७९) कुति-ब अ़लैकुम् इज़ा ह़-ज़-र अ-ह़-दकुमुल्मौतु इन् त-र-क ख़ै-रनिल्-वसिय्यतु लिल्वालिदैनि वल्अक़्रबी-न बिलमअ़्-रूफ़ि ج हक़्क़न् अ़लल्मुत्तक़ीन ط (१८०) फ़ मम्-बद्दलहू बअ़्-द मा समि-अ़हू फ़ इन्नमा इस्मुहू अ़लल्लज़ी-न युबद्दिलूनहू ط इन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम ط (१८१) फ़-मन् ख़ा-फ़ मिम्मूसिन् ज-न-फ़न् औ इस्मन् फ़ अस्-ल-ह बैनहुम् फ़ ला इस्-म अ़लैहि इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (१८२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति-ब अ़लैकुमुस्सियामु कमा कुति-ब अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् ल-अ़ल्लकुम् तत्तक़ून ۷ (१८३)

سیقول ۲۱ البقرة

وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ
وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَ
الْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ
الصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ
عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَ
الْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ
بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلَكُمْ
فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ كُتِبَ
عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ اۨلْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝
فَمَنْ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا
فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ

منزل

★रु. २२/६ आ ६

(आकर नेकी से) दूर (हो गए) है (१७६)★● नेकी यही नही कि तुम पूरब या पच्छिम (को किब्ला समझकर उन) की तरफ मुंह कर लो, बल्कि नेकी यह है कि लोग खुदा पर और फरिश्तों पर और खुदा की किताब पर और पैगम्बरो पर ईमान लाये और माल बावजूद अज़ीज़ रखने के रिश्तेदारो और यतीमो और मुहताजो और मुसाफिरो और मागने वालो को दें और गरदनो (को छुड़ाने) मे[1] खर्च करे और नमाज़ पढे और ज़कात दे और जब अह्द कर लें तो उसको पूरा करे और सख्ती और तक्लीफ मे और (लडाई के) मैदान मे साबित कदम रहे। यही लोग हैं जो (ईमान मे) सच्चे है और यही है जो (खुदा से) डरने वाले हैं। (१७७) मोमिनो! तुम को मक्तूलो के बारे मे किसास (यानी खून के बदले खून) का हुक्म दिया जाता है (इस तरह पर कि) आज़ाद के बदले आज़ाद (मारा जाए) और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत[2] और अगर कातिल को उसके (मक्तूल) भाई (के किसास मे) से कुछ माफ कर दिया जाए,[3] तो (वारिस मक्तूल को) पसंदीदा तरीके से (करारदाद की) पैरवी (यानी खून बहा का मुतालबा) करना और (कातिल को) भले तरीके से अदा करना चाहिए। यह परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे लिए आसानी और मेहरबानी है, जो इसके बाद ज़्यादती करे, उसके लिए दुख का अज़ाब है। (१७८) और ऐ अक़्ल वालो! कसास (के हुक्म) मे (तुम्हारी) जिंदगानी है कि तुम (कत्ल व खूंरेज़ी से) बचो। (१७९) तुम पर फर्ज़ किया जाता है कि जब तुम मे से किसी को मौत का वक्त आ जाए तो अगर वह कुछ माल छोड़ जाने वाला हो तो मा-बाप और रिश्तेदारो के लिए दस्तूर के मुवाफिक वसीयत कर जाए, (खुदा से) डरने वालो पर यह एक हक है। (१८०) जो शख्स वसीयत को सुनने के बाद बदल डाले, तो उस (के बदलने) का गुनाह उन्ही लोगो पर है, जो उस को बदले और बेशक खुदा सुनता जानता है।[4] (१८१) अगर किसी को वसीयत करने वाले की तरफ से (किसी वारिस की) तरफदारी या हकतलफी का डर हो तो अगर वह (वसीयत को बदलकर) वारिसो मे सुलह करा दे, तो उस पर कुछ गुनाह नही। बेशक खुदा बख्शने वाला (और) रहम वाला है। (१८२) ★

मोमिनो! तुम पर रोज़े फर्ज किए गए हैं, जिस तरह तुमसे पहले लोगो पर फर्ज किए गये थे,

---

१ गरदनो के छुडाने से मुराद गुलामी वगैरह की कैद से आज़ाद कराना है।

२ यानी मक्तूल के बदले कातिल ही कत्ल किया जाए।

३. यानी खून से दरगुज़र किया जाए और खून के बदले खून बहा करार पाए।

४ यानी अगर मुर्दा कह मरा था, पर देने वालो ने न दिया, तो मुर्दे पर गुनाह नही, वही गुनाहगार है।

★रु २१/५ आ ६ ● रुबुअ १/४ ★रु २२/६ आ ६

अय्यामम्-मअ़्दूदातिन् ط फ़ मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़ अिद्‌दतुम्मिन् अय्यामिन् उख़र ط व अ-लल्लज़ी-न युतीक़ूनहू फ़िद्‌यतुन् तआमु मिस्कीनिन् ط फ मन् त-तव्व-अ़ ख़ैरन् फ हु-व ख़ैरुल्लहू ط व अन् तसूमू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्-लमून (१८४) शह्‌रु र-म-ज़ानल्लज़ी उन्ज़ि-ल फ़ीहिल्क़ुरआनु हुदल्लिन्नासि व बय्यिनातिम्-मिनल-हुदा वल्फ़ुर्क़ानि ج फ़-मन् शहि-द मिन्कुमुश्शह्-र फ़ल्यसुम्हु ط व मन् का-न मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़अिद्‌दतुम्मिन् अय्यामिन् उख़र ط युरीदुल्लाहु बिकुमुल् युस्-र व ला युरीदु बिकुमुल्-अुस्र ز व लि तुक्मिलुल्-अिद्‌द-त व लि तुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला मा हदाकुम् व ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (१८५) व इज़ा स-अ-ल-क अिबादी अन्नी फ़ इन्नी क़रीबुन् ط उजीबु दअ-व-तद्‌दाअि इज़ा दआनि لا फ़ल्यस्तजीबूली वल्युअ्‌मिनू बी लअ़ल्लहुम् यर्शुदून (१८६) उहि़ल-ल लकुम् लैल-तुस्सियामिर्र-फ़सु इला निसा - इकुम् ط हुन्-न लिबासुल्लकुम् व अन्तुम् लिबासुल्लहुन-न ط अलिमल्लाहु अन्नकुम् कुन्तुम् तख़्तानू-न अन्फ़ुसकुम् फ़-ता-ब अलैकुम् व अ़फ़ा अ़न्कुम् ج फ़ल्आ-न बाशिरू हुन-न वब्तग़ू मा क-त-बल्लाहु लकुम् ص व कुलू वश्रबू हत्ता य-त-बय्य-न लकुमुल्ख़ैतुल् - अब्यज़ु मिनल्ख़ैतिल् - अस्वदि मिनल्फ़ज्रि ص सुम् - म अतिम्मुस्सिया-म इलल्लैलि ج व ला तुबाशिरू - हुन - न व अन्तुम् आ़किफ़ू-न لا फ़िलमसाजिदि ط तिल् - क हुदूदुल्लाहि फ़ - ला तक़्रबूहा ط कज़ालि - क युबय्यिनुल्लाहु आयातिही लिन्नासि ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून ط (१८७)

البقرة ٢ ٢٢ سيقول ٢

من قبلكم لعلكم تتقون ۝ اياما معدودت فمن كان
منكم مريضا او على سفر فعدة من ايام اخر وعلى الذين
يطيقونه فدية طعام مسكين فمن تطوع خيرا فهو خير
له وان تصوموا خير لكم ان كنتم تعلمون ۝ شهر
رمضان الذي انزل فيه القران هدى للناس وبينت
من الهدى والفرقان فمن شهد منكم الشهر فليصمه
ومن كان مريضا او على سفر فعدة من ايام اخر
يريد الله بكم اليسر ولا يريد بكم العسر ولتكملوا
العدة ولتكبروا الله على ما هدىكم ولعلكم تشكرون ۝
واذا سالك عبادي عني فاني قريب اجيب دعوة الداع
اذا دعان فليستجيبوا لي وليؤمنوا بي لعلهم يرشدون ۝
احل لكم ليلة الصيام الرفث الى نسائكم هن لباس
لكم وانتم لباس لهن علم الله انكم كنتم تختانون
انفسكم فتاب عليكم وعفا عنكم فالئن باشروهن وابتغوا
ما كتب الله لكم وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط
الابيض من الخيط الاسود من الفجر ثم اتموا الصيام
الى اليل ولا تباشروهن وانتم عكفون في المسجد تلك

ताकि तुम परहेजगार बनो ।[१] (१८३) (रोज़ो के दिन) गिनती के कुछ दिन हैं, तो जो आदमी तुम मे से बीमार हो, या सफर मे हो, तो दूसरे दिनो मे रोजो की गिनती पूरी कर ले ।[२] और जो लोग रोज़ा रखने की ताकत रखें (लेकिन रखे नही), वे रोज़े के बदले मुहताज को खाना खिला दें ।[३] और जो कोई शौक से नेकी करे तो उसके हक मे ज्यादा अच्छा है और अगर समझो तो रोज़ा रखना ही तुम्हारे हक मे बेहतर है । (१८४) (रोजो का महीना) रमज़ान का महीना (है) जिसमे क़ुरआन (अव्वल-अव्वल) नाज़िल हुआ, जो लोगो का रहनुमा है और जिस मे हिदायत की खुली निशानिया है और (जो हक व बातिल को) अलग-अलग करने वाला है । तो जो कोई तुममे से इस महीने मे मौजूद हो, चाहिए कि पूरे महीने के रोजे रखे और जो बीमार हो या सफर मे हो तो दूसरे दिनो मे (रखकर) उनकी गिनती पूरी कर ले, खुदा तुम्हारे हक मे आसानी चाहता है और सख्ती नही चाहता और (यह आसानी का हुक्म) इसलिए (दिया गया है) कि तुम रोज़ो का शुमार पूरा कर लो और इस एहसान के बदले कि खुदा ने तुमको हिदायत बख्शी है, तुम उसको बुजुर्गी से याद करो और उसका शुक्र करो । (१८५) और (ऐ पैगम्बर !) जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे मे मालूम करे, तो (कह दो कि) मैं तो (तुम्हारे) पास हूं । जब कोई पुकारने वाला मुझे पुकारता है, तो मैं उसकी दुआ कुबूल करता हू, तो उनको चाहिए कि मेरे हुक्मो को माने और मुझ पर ईमान लाएं, ताकि नेक रास्ता पाएं । (१८६) रोज़ो की रातो मे तुम्हारे लिए अपनी औरतो के पास जाना जायज कर दिया गया है, वह तुम्हारी पोशाक है और तुम उनकी पोशाक हो ।[४] खुदा को मालूम है कि तुम (उनके पास जाने से) अपने हक मे खियानत करते थे, सो उसने तुम पर मेहरबानी की और तुम्हारी हरकतो से दरगुजर फरमाया । अब (तुमको अख्तियार है कि) उनसे मुबाशरत करो और खुदा ने जो चीज़ तुम्हारे लिए लिख रखी है (यानी औलाद) उसको (खुदा से) तलब करो और खाओ और पियो, यहां तक कि सुबह की सफेद धारी (रात की) स्याह धारी से अलग नज़र आने लगे । फिर रोज़ा (रखकर) रात तक पूरा करो और जब तुम मस्जिदो मे एतिकाफ बैठे हो, तो उनसे मुबाशरत न करो । ये खुदा की हदे हैं । उनके पास न जाना । इसी तरह खुदा अपनी आयते लोगो के (समझाने के लिए) खोल-खोलकर के बयान फरमाता है, ताकि वह परहेज़गार

---

१ यानी रोज़े से सलीका आ जाए जी रोकने का, तो हर जगह रोक सको ।

२ यानी जितने रोज़े न रखे हो, बीमारी और सफर के बाद उतने कज़ा रख ले ।

३ इस आयत मे तदुरुस्त और ताकतवर शख्स पर रोज़ा रखना ज़रूरी नही किया गया था, बल्कि रखने न रखने का अख्तियार दिया गया, मगर इस के बाद की आयत से यह अख्तियार खत्म कर दिया और रोज़ा ज़रूरी करार दे दिया गया ।

४. यानी जिस तरह पोशाक का ताल्लुक जिस्म से होता है, उसी तरह मर्द का ताल्लुक औरत से और औरत का मर्द से होता है ।

व ला तअ्कुलू अम्वालकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि व तुद्लू बिहा इलल्हुक्कामि लि तअ्कुलू फ़रीक़म्मिन् अम्वालिन्नासि बिल्-इस्मि व अन्तुम् तअ्-लमून ★ (१८८) यस्अलून-क अनिल्-अहिल्लति ط क़ुल् हि - य मवाकीतु लिन्नासि वल्हज्जि ط व लैसल्बिर्रु बि अन्तअ्तुल्-बुयू-त मिन् ज़ुहूरिहा व ला किन्नल्बिर-र मनित्तक़ा ج वअ्तुल्-बुयू-त मिन् अब्वाबिहा ص वत्तक़ुल्ला-ह ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (१८९) व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी - न युक़ातिलूनकुम् व ला तअ्-तदू ط इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-मुअ्-तदीन (१९०) वक़्तुलू - हुम् हैसु सक़िफ़्तुमू हुम् व अख़्रिजू हुम् मिन् हैसु अख़्रजूकुम् वल्फ़ित्नतु अशद्दु मिनल्क़त्लि ج व ला तुक़ातिलू हुम् अ़िन्दल्-मस्जिदिल्-ह़रामि ह़त्ता युक़ातिलूकुम् फ़ीहि ج फ़ इन् क़ातलूकुम् फ़क़्तुलू - हुम् ط कज़ालि - क जज़ा - उल् - काफ़िरीन (१९१) फ़इनिन्तहौ फ़ इन्नल्ला - ह गफ़ूरुर्रहीम (१९२) व क़ातिलू - हुम् ह़त्ता ला तकू - न फ़ित्नतुंव - व यकूनद्दीनु लिल्लाहि ط फ़ इनिन्तहौ फ़ - ला अुद्वा-न इल्ला अ़लज़्ज़ालिमीन (१९३) अश्शह्रुल् - ह़रामु बिश्शह्रिल् - ह़रामि वल्हुरुमातु क़िसासुन् ط फ़-मनिअ्-तदा अ़लैकुम् फ़अ्-तदू अ़लैहि बिमिस्लि मअ्-तदा अ़लैकुम् ص वत्तक़ुल्ला - ह वअ् - लमू अन्नल्ला - ह म-अ़ल्मुत्तक़ीन (१९४) व अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व ला तुल्क़ू बि ऐदीकुम् इलत्तह्लुकति ج व अह्सिनू ج इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् - मुह्सिनीन (१९५)

سیقول ۲ — ۲۳ — البقرة ۲

حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا
بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ۭ قُلْ هِىَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ
وَالْحَجِّ ۭ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ
الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ۝ وَقَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا
تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ
مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ
فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ۭ كَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝
فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ
فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۭ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى
الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۭ
فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاَنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۚ وَاَحْسِنُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

منزل

★रु २३/७ आ ६ ∴ मु. अि मु त क़. १

बने। (१८७) और एक दूसरे का माल ना-हक न खाओ और न उसको (रिश्वत के तौर पर) हाकिमो के पास पहुचाओ ताकि लोगो के माल का कुछ हिस्सा नाजायज़ तौर पर न खा जाओ और (इसे) तुम जानते भी हो। (१८८) ★

(ऐ मुहम्मद !) लोग तुमसे नये चाद के बारे मे पूछते हैं (कि घटता-बढ़ता क्यो है) ? कह दो कि वह लोगो के (कामो की मीयादें) और हज के वक्त मालूम होने का ज़रिया है।[1] और नेकी इस बात मे नही कि (एहराम की हालत मे) घरो मे उनके पिछवाड़े की तरफ से आओ, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गार हो और घरो मे उनके दरवाज़ो से आया करो[2] और खुदा से डरते रहो ताकि निजात पाओ। (१८९) और जो लोग तुमसे लडते हैं, तुम भी खुदा की राह मे उनसे लड़ो, मगर ज्यादती न करना कि खुदा ज्यादती करने वालो को दोस्त नही रखता। (१९०) और उनको जहा पाओ, कत्ल कर दो और जहा से उन्होने तुमको निकाला है (यानी मक्के से) वहां से तुम भी उनको निकाल दो और (दीन से गुमराह करने का) फसाद कत्ल व खूरेज़ी से कही बढकर है और जब तक वे तुम से मस्जिदे मोहतरम (यानी खाना काबा) के पास न लडें, तुम भी वहां उनसे न लडना। हा, अगर वे तुम से लडे, तो तुम उनको कत्ल कर डालो। काफिरो की यही सज़ा है। (१९१) और अगर वे रुक जायें तो खुदा बख्शने वाला (और) रहम करने वाला है। (१९२) और उनसे उस वक्त तक लडते रहना कि फसाद खत्म हो जाए और (मुल्क मे) खुदा ही का दीन हो जाए और अगर वे (फसाद से) बाज़ आ जाये, तो ज़ालिमो के सिवा किसी पर ज्यादती नही (करनी चाहिए)। (१९३) अदब का महीना अदब के महीने के मुकाबले का है और अदब की चीज़े एक दूसरे का बदला है। पस अगर कोई तुम पर ज्यादती करे, तो जैसी ज्यादती वह तुम पर करे, वैसी ही तुम उस पर करो। और खुदा से डरते रहो और जान रखो कि खुदा डरने वालो के साथ है।[3] (१९४) और खुदा की राह मे (माल) खर्च करो और अपने आप को हलाकत मे न डालो[4] और नेकी करो। बेशक खुदा नेकी करने वालो को दोस्त रखता है।[4] (१९५) और खुदा (की खुश्नूदी)

---

१ 'अहिल्ला' 'हिलाल' की जमा है और हिलाल पहली तीन रातो के चाद को कहते हैं। चाद हकीकत मे एक है, मगर चूकि वह घटता-बढता रहता है, इस लिए गोया कई चाद हुए। इसी लिए उन को 'अहिल्ला' कहा गया है। इस के घटने-बढने का फायदा यह है कि जो लोग अन-पढ हैं उन को इस से महीना और तारीख और हज के वक्त मालूम होते हैं। अगर एक हालत पर रहता तो इन लोगो को बडी मुश्किल पेश आती कि न महीना मालूम होता, न तारीख। हिलाल को देख कर हर शख्स महीना और तारीख और हज के वक्त और कामो की मीयादें आसानी से मालूम कर सकता है।

२ अरब मे दस्तूर था कि जब घर से निकल कर एहराम बाध लेते, और घर मे आने की ज़रूरत वाके होती तो घर मे दरवाज़े से न दाखिल होते, बल्कि पिछवाडे से कूद कर आते। खुदा ने इस फेल को दाखिले नेकी न करार दिया और घर मे दरवाज़े से आने का हुक्म फ़रमाया।

३ इज्ज़त के महीने चार थे —ज़ीकादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब। और उन मे लडाई नही की जाती थी। काफिर इन महीनो मे लडाई करने लगते तो मुसलमान इन महीनो के अदब की वजह से लडाई से रुकते और हैरान होते कि क्या करें। खुदा ने फरमाया कि अगर काफिर इन महीनो के अदब का ख्याल रखें, तो तुम भी रखो और वे अदब को छोड दें और तुम पर जुल्म करने लगें तो तुम भी उन से लडो और बदला लेने मे कोताही न करो।

४ यानी जिहाद छोड कर न बैठो, इस मे तुम्हारी हलाकत है।

★रु २३/७ आ ६,∴ मु. अि मु त क. १

व अतिम्मुल्हज्-ज वल्अुम्-र-त लिल्लाहि ط फ़ इन् उह्सिर्तुम् फ मस्तै-स-र मिनल्हद्यि ج व ला तह्लिक़ू रुऊसकुम् हत्ता यब्लुगल् - हद्यु महिल्लहू ط फ़ मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ बिही अज़म्-मिर्रअ्सिही फ फ़िद्यतुम्-मिन् सियामिन् औ स-द-कतिन् औ नुसुकिन् ج फ़ इज़ा अमिन्तुम्

البقرة ٢ ٤٣ سيقول

الْمُحْسِنِينَ ۝ وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ
مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ
فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ
أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَ
سَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذَٰلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ
حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝ الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَعْلُومَاتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ
وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۗ وَ
تَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۝ لَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ
مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۝ ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ
وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ
يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ

फ मन् तमत्त-अ् बिल्उम्रति इलल्हज्जि फ - मस्तै-स-र मिनल्हद्यि ج फ़ मल्लम् यजिद् फ़ सियामु सलासति अय्यामिन् फ़िल्हज्जि व सब्अतिन् इज़ा र-जअ्-तुम् ط तिल्-क अ्-श-रतुन् कामिलतुन् ط ज़ालि - क लिमल्लम् यकुन् अह्लुहू हाज़िरिल् - मस्जिदिल् - हरामि ط वत्तकुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब ★ (१९६) अल्हज्जु अश्हुरुम् - मअ्-लूमातुन् ج फ़ मन् फ़-र-ज़ फ़ीहिन्नल्-हज्-ज फला र-फ-स व ला फु - सू - क़ ولا व ला जिदा - ल फ़िल्हज्जि ط व मा तफ़्अलू मिन् ख़ैरिय्यअ्-लम्हुल्लाहु ▨ ط व तज़व्वदू फ़ इन-न ख़ैरज़्ज़ादित्तक़्वा ز वत्तकूनि या उलिल्-अल्बाब (१९७) लै-स अलैकुम् जुनाहुन् अन् तब्तग़ू फ़ज़्लम्-मिर्रब्बिकुम् ط फ़ इज़ा अफ़ज़्तुम् मिन् अ-रफ़ातिन् फ़ज़्कुरुल्ला-ह अिन्दल्-मश्अरिल्-हरामि ص वज़्कुरूहु कमा हदाकुम् ج व इन् कुन्तुम् मिन् क़ब्लिही ल - मिनज़्ज़ाल्लीन (१९८) सुम्-म अफ़ीज़ू मिन् हैसु अफ़ाज़न्नासु वस्तग़्फ़िरुल्लाह ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१९९) फ़ इज़ा क़ज़ैतुम् मनासिककुम् फ़ज़्कुरुल्ला-ह क-ज़िक्रिकुम् आबा-अकुम् औ अशद्-द ज़िक्रन् ط फ मिनन्नासि मंय्यकूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या व मा लहू फ़िल्-आख़िरति मिन् ख़लाक़ (२००) व मिन्हुम् मंय्यकूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तंव-व फ़िल्-आख़िरति ह-स-न-तंव्-व क़िना अ़ज़ाबन्नार (२०१) ●

★रु. २४/८ आ ८ ▨ व न वी स ● नि. १/२

के लिए हज और उमरे को पूरा करो और अगर (रास्ते मे) रोक लिए जाओ तो जैसी कुर्बानी मुयस्सर हो (कर दो) और जब तक क़ुर्बानी अपनी जगह पर न पहुच जाए, सर न मुंडाओ और अगर कोई तुम मे बीमार हो या उसके सर मे किसी तरह की तक्लीफ हो तो (अगर वह सर मुंडा ले तो) उसके बदले रोज़े रखे या सदका दे या कुर्बानी करे। फिर जब (तक्लीफ दूर होकर) तुम मुतमइन हो जाओ तो जो (तुममे) हज के वक़्त तक उमरे मे फायदा उठाना चाहे, वह जैसी कुर्बानी मयस्सर हो करे और जिसको (कुर्बानी) न मिले, वह तीन रोजे हज के दिनो मे रखे और सात जब वापस हो। ये पूरे दस दिन हुए। यह हुक्म उस शख़्स के लिए है, जिसके बाल-बच्चे मक्के मे न रहते हो और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है। (१९६) ★

हज के महीने (तै है जो) मालूम हैं।[1] तो जो शख़्स इन महीनो मे हज की नीयत कर ले तो हज (के दिनो) मे न औरतो से मिले, न कोई बुरा काम करे, न किसी से झगडे और जो नेक काम तुम करोगे, वह ख़ुदा को मालूम हो जाएगा और ज़ादेराह (यानी रास्ते का खर्च) साथ ले जाओ क्योकि बेहतर (फ़ायदा) जादेराह (का) परहेज़गारी है और ऐ अक्ल वालो! मुझसे डरते रहो। (१९७) इसका तुम्हे कुछ गुनाह नही कि (हज के दिनो मे तिजारत के ज़रिए से) अपने परवरदिगार से रोज़ी तलब करो। और जब अरफात से वापस होने लगो तो मशअरे हराम (यानी मुज़दलफे) मे ख़ुदा का ज़िक्र करो। और इस तरह ज़िक्र करो जिस तरह उसने तुमको सिखाया और इससे पहले तुम लोग (इन तरीको को) बिल्कुल नही जानते थे। (१९८) फिर जहा से और लोग वापस हो, वही से तुम भी वापस हो और ख़ुदा से बख़्शिश मागो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला और रहमत करने वाला है। (१९९) फिर जब हज के तमाम अर्कान पूरे कर चुको तो (मिना मे) ख़ुदा को याद करो, जिस तरह अपने बाप-दादा को याद किया करते थे, बल्कि उससे भी ज्यादा। और कुछ लोग ऐसे है जो (ख़ुदा से) इल्तिजा करते है कि ऐ परवरदिगार! हम को (जो देना है) दुनिया ही मे इनायत कर। ऐसे लोगो का आख़िरत मे कुछ हिस्सा नही। (२००) और कुछ ऐसे है कि दुआ करते है कि परवरगिदार! हम को दुनिया मे भी नेमत अता फरमा और आख़िरत मे भी नेमत बख़्शना और दोज़ख़ के अज़ाब से बचाए रखना।(२०१)● यही लोग हैं जिनके लिए उन के कामो का

1 यानी शव्वाल, ज़ीकादा और ज़िलहिज्जा के दस दिन।

उलाॅ-इ-क लहुम् नसीबुम्मिम्मा क-सबू ؕ वल्लाहु सरीअ़ुल् - हिसाब (२०२) वज़्कुरुल्ला-ह फ़ी अय्यामिम्-मअ़्दूदातिन् ؕ फ मन् त-अ़ज्ज-ल फ़ी यौमैनि फ़ ला इस्-म अ़लैहि ۚ व मन् त-अख़्ख़-र फ़ ला इस्-म अ़लैहि ۙ लि मनित्तक़ा ؕ वत्तक़ुल्ला-ह वअ़्-लमू अन्नकुम् इलैहि तुह़्शरून (२०३)

व मिनन्नासि मंय्युअ़्-जिबु-क क़ौलुहू फ़िल्-ह़यातिद्दुन्या व युश्हिदुल्ला-ह अ़ला मा फ़ी क़ल्बिही ۙ व हु-व अलद्दुल्-ख़िसाम (२०४) व इज़ा त-वल्ला सआ़ फ़िल्अर्ज़ि लि युफ़्सि-द फ़ीहा व युह्लिकल्ह़र्-स वन्नस्-ल ؕ वल्लाहु ला युहिब्बुल्फ़साद (२०५) व इज़ा क़ी-ल लहुत्तक़िल्ला-ह अ-ख़-ज़त्हुल्-अ़िज़्ज़तु बिल्-इस्मि फ ह़स्बुहू जहन्नमु ؕ व ल बिअ्सल्मिहाद (२०६) व मिनन्नासि मंय्यश्री नफ़्सहुब्तिग़ा - अ मर्ज़ातिल्लाहि ؕ वल्लाहु रऊफ़ुम्-बिल्अ़िबाद (२०७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुद्ख़ुलू फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़तंव् ص व ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैत़ानि ؕ इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम् - मुबीन (२०८) फ़ इन् ज़-लल्तुम् मिम्बअ़्-दि मा जा-अत्कुमुल् - बय्यिनातु फ़अ़्-लमू अन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम (२०९) हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अंय्यअ्ति - य-हुमुल्लाहु फ़ी ज़ुललिम्-मिनल्-ग़मामि वल्मला-इकतु व क़ुज़ियल्-अम्रु ؕ व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल्-उमूर ★ (२१०) सल् बनी इस्रा-ई-ल कम् आतैनाहुम् मिन् आयतिम्-बय्यिनतिन् ؕ व मंय्युबद्दिल् निअ़्-मतल्लाहि मिम्बअ़्-दि मा जा-अत्हु फ़ इन्नल्ला-ह शदीदुल् अ़िक़ाब (२११) ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी-न क-फरुल्-ह़यातुद्दुन्या व यस्ख़रू - न मिनल्लज़ी - न आमनू ؗ वल्लज़ीनत्तक़ौ फ़ौक़हुम् यौमल्-क़ियामति ؕ वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि ह़िसाब (२१२)

سيقول ٢ — ٢٥ — البقرة ٢

النَّارِ○ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ○
وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ
عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ○ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ○ وَاِذَا
تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ○ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ
بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ○ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ
يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ○ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ○ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ
الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ○ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ
يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ
وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ○ سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ
اٰيَةٍ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ
اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ○ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ
يَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

★रु. २५/९ आ १४ ؗ व. लाज़िम

हिस्सा (यानी नेक बदला तैयार) है और ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला (और जल्द बदला देने वाला) है। (२०२) और (मिना के ठहरने के) दिनो मे (जो) गिनती के (दिन) हैं, ख़ुदा को याद करो। अगर कोई जल्दी करे (और) दो ही दिन मे (चल दे) तो उस पर भी कुछ गुनाह नही और जो बाद तक ठहरा रहे, उस पर भी कुछ गुनाह नही।[1] ये बाते उस शख़्स के लिए हैं जो (ख़ुदा मे) डरे और तुम लोग ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि तुम सब उस के पास जमा किये जाओगे। (२०३) और कोई शख़्स तो ऐसा है जिसकी बातचीत दुनिया की ज़िन्दगी मे तुमको भली मालूम होती है और वह अपने माफ़िज़्ज़मीर (जो कुछ ज़मीर यानी अन्तरात्मा में है) पर ख़ुदा को गवाह बनाता है, हालाकि वह सख़्त झगडालू है। (२०४) और जब पीठ फेरकर चला जाता है तो ज़मीन मे दौडता फिरता है, ताकि उसमे फसाद फैलाए और खेती को (बर्बाद) और (इन्सानो और हैवानो की) नस्ल को हलाक करे और ख़ुदा फसाद को पसन्द नही करता। (२०५) और जब उससे कहा जाता है कि ख़ुदा से ख़ौफ करो तो घमण्ड उस को गुनाह मे फंसा देता है, तो ऐसे को जहन्नम सज़ावार है और वह बहुत बुरा ठिकाना है।[2] (२०६) और कोई शख़्स ऐसा है कि ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने के लिए अपनी जान बेच डालता है और ख़ुदा बन्दो पर बहुत मेहरबान है।[3] (२०७) मोमिनो ! इस्लाम मे पूरे-पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के पीछे न चलो।[4] वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (२०८) फिर अगर तुम रोशन हुक्मो के पहुच जाने के बाद लडखडा जाओ तो जान रखो कि ख़ुदा गालिब और हिक्मत वाला है। (२०९) क्या ये लोग इसी बात के इंतिजार मे हैं कि उन पर ख़ुदा (का अजाब) बादल के सायेबानो मे आ नाज़िल हो और फरिश्ते भी (उतर आये) और काम तमाम कर दिया जाए।[5] और सब कामो का रुजूअ ख़ुदा ही की तरफ है। (२१०) ✶

(ऐ मुहम्मद !) बनी इस्राईल से पूछो कि हमने उनको कितनी खुली निशानिया दी और जो शख़्स ख़ुदा की नेमत को अपने पास आने के बाद बदल दे तो ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है। (२११) और जो काफिर हैं, उनके लिए दुनिया की जिंदगी ख़ुशनुमा कर दी गयी है और वे मोमिनो से मज़ाक करते हैं▨ लेकिन जो परहेज़गार हैं, वे कियामत के दिन उन पर गालिब होगे और ख़ुदा जिस को चाहता है, अनगिनत रोज़ी देता है। (२१२) (पहले तो सब) लोगो का एक ही

---

१ गिनती के दिनो से ईद के बाद के तीन दिन मुराद है, जिन को अय्यामे तशरीक कहते हैं। इन तीन दिनो यानी ११-१२ और १३ तारीख मे ख़ुदा को याद करना चाहिए और अगर कोई सिर्फ दो दिन रह कर चला जाए, तो उसे अख़्तियार है।

२ यह हाल है मुनाफिक का कि ज़ाहिर मे ख़ुशामद करे और अल्लाह को गवाह करे कि मेरे दिल मे तुम्हारी मुहब्बत है और झगडे के वक्त कुछ कमी न करे और क़ाबू पाए तो लूट-मार मचा दे और मना करने से और ज़िद चढे और ज्यादा गुनाह करे।

३ यह हाल है ईमान वाले का कि अल्लाह की ख़ुशी पर अपनी जान दे।

४ यानी बहकाने पर न चलो।

५ यानी हर एक को सज़ा मिले, उस के कामो के मुताबिक।

★रु. २५/६ आ १४ ▨ व. लाज़िम

कानन्नासु उम्मतुव्वाहि़द-तुन् قف फ़ ब-अ़-सल्लाहुन्नबिय्यी-न मुबश्शिरी-न व मुन्जिरी-न ص व अन्ज़-ल म-अ़हुमुल्-किता-ब बिल्ह़क़्क़ि लियह़्कु-म बैनन्नासि फ़ी मख़्-त-लफ़ू फ़ीहि ط व मख़्त-ल-फ़ फ़ीहि इल्लल्लज़ी-न ऊतूहु मिम्बअ़्दि मा जा-अत्हुमुल्-बय्यिनातु बग़्यम्-बैनहुम् ج फ़ ह-दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू लिमख़्त-लफ़ू फ़ीहि मिनल्ह़क़्क़ि बि इज़्निही वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (२१३) अम् ह़सिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त़ व लम्मा यअ्तिकुम् म-सलुल्लज़ी-न ख़लौ मिन क़ब्लिकुम् मस्सत्-हुमुल्बअ्सा-उ वज़्ज़र्रा-उ व ज़ुल्ज़िलू ह़त्ता यकूलर्-रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू मता नस़्रुल्लाहि ط अला इन्-न नस़्रल्लाहि क़रीब (२१४) यस्अलून-क माज़ा युन्फ़िक़ून ط क़ुल् मा अन्फ़क़्तुम् मिन् ख़ैरिन् फ़ लिल्-वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न वल्-यतामा वलमसाकीनि वब्निस्सबीलि ط व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़ इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम (२१५) कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़ितालु व हु-व कुर्हुल्लकुम् ج व अ़सा अन् तक्रहू शैअंव-व हु-व ख़ैरुल्लकुम् ج व अ़सा अन् तुह़िब्बू शैअंव-व हु-व शर्रुल्लकुम् ط वल्लाहु यअ़्-लमु व अन्तुम् ला तअ़्-लमून ✱ (२१६)

البقرة ٢ ٣٦ سيقول ٢

وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً
وَّاحِدَةً فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ وَاَنْزَلَ
مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ
بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ
الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ۝ يَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ
فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ وَ
مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ
وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَ
عَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ قُلْ قِتَالٌ
فِيْهِ كَبِيْرٌ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ

✱ रु॰ २६/१० आ ६

मज़हब था। (लेकिन वे आपस मे इख़्तिलाफ करने लगे) तो ख़ुदा ने (उनकी तरफ) बशारत देने वाले और डर सुनाने वाले पैगम्बर भेजे और उन पर सच्चाई के साथ किताबे नाज़िल की, ताकि जिन मामलो मे लोग इख़्तिलाफ करते थे, उनका उनमे फैसला कर दे। और इसमे इख़्तिलाफ भी उन्ही लोगो ने किया जिनको किताब दी गयी थी, बावजूदे कि उन के पास खुले हुए हुक्म आ चुके थे। (और यह इख़्तिलाफ उन्होने सिर्फ) आपस की जिद से (किया) तो जिस हक बात मे इख़्तिलाफ करते थे, ख़ुदा ने अपनी मेहरबानी से मोमिनो को उस की राह दिखा दी और ख़ुदा जिसको चाहता है, सीधा रास्ता दिखा देता है। (२१३) क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि (यो ही) बहिश्त मे दाखिल हो जाओगे और अभी तुमको पहले लोगो की-सी (मुश्किले) तो पेश आयी ही नही। उनको (बडी-बड़ी) सख्तिया और तक्लीफे पहुची और वे (परेशानियो मे) हिला-हिला दिये गये, यहा तक कि पैगम्बर और मोमिन लोग, जो उनके साथ थे, सब पुकार उठे कि कब ख़ुदा की मदद आएगी। देखो, ख़ुदा की मदद (बहुत) जल्द (आया चाहती) है। (२१४) (ऐ मुहम्मद !) लोग तुमसे पूछते है कि (ख़ुदा की राह मे) किस तरह का माल ख़र्च करे। कह दो कि (जो चाहो ख़र्च करो, लेकिन) जो माल ख़र्च करना चाहो, वह (दर्जा-ब-दर्जा हक वालो, यानी) मा-बाप को और करीब के रिश्तेदारो को और यतीमो को और मुहताजो को और मुसाफिरो को (सबको दो) और जो भलाई तुम करोगे, ख़ुदा उसको जानता है। (२१५) (मुसलमानो !) तुम पर (ख़ुदा के रास्ते मे) लडना फर्ज कर दिया गया है, वह तुम्हे ना-गवार तो होगा। मगर अजब नही कि एक चीज़ तुमको बुरी लगे और वह तुम्हारे हक मे भली हो और अजब नही कि एक चीज़ तुमको भली लगे और वह तुम्हारे लिए नुक्सानदेह हो। और (इन बातो को) ख़ुदा ही बेहतर जानता है और तुम नही जानते। (२१६) ✶

★रु २६/१० आ ६

यस्अलून-क अनिश्शह्‌रिल्-ह़रामि क़ितालिन् फ़ीहि ط क़ुल् क़ितालुन् फ़ीहि कबीरुन् ط व सद्दुन् अन् सबीलिल्लाहि व कुफ़्रुम् बिही वल्मस्जिदिल्-ह़रामि ق व इख़्‌राजु अह्‌लिही मिन्हु अक्बरु अिन्दल्लाहि ج वल्फ़ित्नतु अक्बरु मिनल्-क़त्लि ط व ला यज़ालू-न युक़ातिलूनकुम् ह़त्ता यरुद्दूकुम् अन् दीनिकुम् इनिस्तताअ़ू ط व मंय्यर्-तदिद् मिन्कुम् अन् दीनिही फ़ यमुत् व हु-व काफ़िरुन् फ उला-इ-क ह़बितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति ج व उला-इ-क अस्-ह़ाबुन्नारि ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२१७) इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि لا उला-इ-क यर्जू-न रह़्मतल्लाहि ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (२१८) यस्अलून-क अनिल्ख़म्रि वल्मैसिरि ط क़ुल् फ़ीहिमा इस्मुन् कबीरुंव-व मनाफ़िअ़ु लिन्नासि ز व इस्मुहुमा अक्बरु मिन्नफ़्‌अिहिमा ط व यस्अलून-क मा ज़ा युन्फ़िक़ू-न قلے क़ुलिल्‌अ़फ़्-व ط कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति ल-अ़ल्लकुम् त-त-फ़क्करून لا (२१९) फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति ط व यस्अलून-क अनिल्-यतामा ط क़ुल् इस्लाहुल्लहुम् ख़ैरुन् ط व इन् तुख़ालितूहुम् फ़ इख़्वानुकुम् ط वल्लाहु यअ़्लमुल्-मुफ़्सि-द मिनल्मुस्लिहि ط व लौ शा-अल्लाहु ल-अअ़्-न-तकुम् ط इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् ह़कीम (२२०) व ला तन्किहुल् मुश्रिकाति ह़त्ता युअ्मिन-न ط व ल अ-म-तुम्-मुअ्मिन-तुन् ख़ैरुम्मिम्-मुश्रिकतिंव-व लौ अअ़्-ज-बत्कुम् ج व ला तुन्किहुल्-मुश्रिकी-न ह़त्ता युअ्मिनू ط व ल अ़ब्दुम्-मुअ्मिनुन् ख़ैरुम्मिम्-मुश्रिकिंव-व लौ अअ़्-ज-बकुम् ط उला-इ-क यद्अ़ू-न इलन्नारि صلے वल्लाहु यद्अ़ू इलल्जन्नति वल्मग़्फ़िरति बि इज़्निही ج व युबय्यिनु आयातिही लिन्नासि ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़क्करून (२२१) ★

سیقول ۲ البقرة

وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ عَن دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا
وَمَن يَرْتَدِدْ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ
لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ
قُلِ الْعَفْوَ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ۝
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ
خَيْرٌ وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ
الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝
وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ
مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ وَلَا تُنكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ
يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ
أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ
بِإِذْنِهِ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الْمَحِيضِ قُلْ هُوَ أَذًى فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ

★रु. २७/११ आ ५

(ऐ मुहम्मद !) लोग तुम से इज्ज़त वाले महीनो मे लड़ाई करने के बारे मे पूछते हैं। कह दो कि इनमें लडना बडा (गुनाह) है और ख़ुदा की राह से रोकना और उम से कुफ़ करना और मस्जिदे हराम (यानी खाना-ए-काबा) मे जाने से (बन्द करना) और मस्जिद वालो को उसमे से निकाल देना (जो ये काफिर करते है) ख़ुदा के नज़दीक उस से भी ज्यादा (गुनाह) है और फित्ना फैलाना खून बहाने से भी बढ़कर है और ये लोग हमेशा तुम से लडते रहेंगे, यहा तक कि अगर ताकत रखे तो तुमको तुम्हारे दीन से फेर दे और जो कोई तुम मे से अपने दीन से फिर (कर काफिर हो) जाएगा और काफिर ही मरेगा, तो ऐसे लोगो के आमाल दुनिया और आखिरत, दोनो मे बर्बाद हो जायेंगे और यही लोग दोजख (मे जाने) वाले हैं, जिस मे हमेशा रहेगे। (२१७) जो लोग ईमान लाए और ख़ुदा के लिए वतन छोड गये और (काफिरो से) जग करते रहे, वही ख़ुदा की रहमत के उम्मीदवार है और ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहमत करने वाला है। (२१८) (ऐ पैगम्बर !) लोग तुम से शराब और जुए का हुक्म मालूम करते है। कह दो कि इन मे नुक्सान बडे हैं और लोगो के लिए कुछ फायदे भी है, मगर उनके नुक्सान फायदो से कही ज्यादा है।[1] और यह भी तुम से पूछते है कि (ख़ुदा की राह मे) कौन सा माल खर्च करे? कह दो कि जो ज़रूरत से ज्यादा हो। इस तरह ख़ुदा तुम्हारे लिए अपने हुक्मो को खोल-खोलकर बयान फरमाता है, ताकि तुम सोचो। (२१९) (यानी) दुनिया और आखिरत (की बातो) मे (गौर करो) और तुम से यतीमो के बारे मे पूछते हैं, कह दो कि उन के (हालात का) सुधार बहुत अच्छाकाम है और अगर तुम उनसे मिल-जुल कर रहना (यानी खर्च इकट्ठा रखना) चाहो तो वे तुम्हारे भाई है और ख़ुदा खूब जानता है कि खराबी करने वाला कौन है और सुधार करने वाला कौन और अगर ख़ुदा चाहता तो तुमको तक्लीफ मे डाल देता। बेशक ख़ुदा गालिब और हिक्मत वाला है। (२२०) और (मोमिनो !) मुश्रिक औरतो से जब तक कि ईमान न लाए निकाह न करना, क्योकि मुश्रिक औरत, चाहे तुमको कैसी ही भली लगे उससे मोमिन लौडी बेहतर है और (इसी तरह) मुश्रिक मर्द, जब तक ईमान न लाए, मोमिन औरतो को उनकी बीवी न बनाना, क्योकि मुश्रिक (मर्द) से, चाहे वह तुमको कैसा ही भला लगे, मोमिन गुलाम बेहतर है। ये (मुश्रिक, लोगो को) दोज़ख की तरफ बुलाते हैं और ख़ुदा अपनी मेहरबानी से बहिश्त और बख़्शिश की तरफ बुलाता है और अपने हुक्म लोगो से खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि नसीहत हासिल करे (२२१) ✶

---

१ शुरू इस्लाम मे शराब हराम न थी। मुसलमान उसे बिला झिझक पीते थे। जब यह आयत नाज़िल हुई तो जिन लोगो ने ख्याल किया कि इस मे नुक्सान है, उन्होने इस को छोड दिया और जिन लोगो ने समझा कि इस मे फायदे है, वे पीते रहे, फिर यह आयत उतरी कि, 'जब तुम मतवाले हुआ करो तो नमाज़ न पढा करो।' तो जो शराब पिया करते थे, उन्होने नमाज़ के वक्त उस का पीना छोड दिया। इन आयतो से शराब की बुराई तो ज़ाहिर थी, लेकिन खुले तौर पर हराम न थी, फिर यह आयत उतरी कि ऐ ईमान वालो ! शराब और जुआ और बुतो के थान और पासे, ये सब नापाक काम, शैतानो के कामो मे से हैं, सो इन से बचो ताकि निजात पाओ। इस से शराब साफ तौर पर हराम हो गयी। हज़रत उमर रज़ि० जो शराब के बारे मे साफ-साफ हुक्म के आ जाने की ख्वाहिश रखते थे, जब उन्होने यह आयत सुनी कि 'शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए की वजह से तुम्हारे आपस मे दुश्मनी और रंजिश डलवा दे और तुम्हें ख़ुदा की याद और नमाज़ से रोक दे, तो तुम को (उन से) बाज़ रहना चाहिए', तो फौरन बोल उठे कि हम बाज़ रहे हम बाज़ रहे।

व यस्अलून-क अनिल्महीजि ط क़ुल् हु-व अ-ज़न् ۙ फ़अ्-तज़िलुन्निसा-अ फ़िल्महीज़ि ۙ व ला तक़रबू-हुन्-न हत्ता यत्-हुर्-न ج फ़ इज़ा त-तह-हर्-न फ़अ्तू-हुन-न मिन् हैसु अ-म-रकुमुल्लाहु ط इन्नल्ला-ह युहिब्बुत्तव्वाबी-न व युहिब्बुल्-मु-त-तह्हिरीन (२२२) निसा-उकुम् हर्सुल्लकुम् ص फ़अ्तू हर्सकुम् अन्ना शिअ्तुम् ز व क़द्दिमू लि अन्फ़ुसिकुम् ط वत्तक़ुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नकुम्मुलाक़ूहु ط व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन (२२३) व ला तज्अलुल्ला-ह अुर्ज़तल्लि-ऐमानिकुम् अन् तबर्रू व तत्तक़ू व तुस्लिहू बैनन्नासि ط वल्लाहु समीअुन् अलीम (२२४) ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिय्युआख़िज़ुकुम् बिमा क-स-बत् क़ुलूबुकुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम (२२५) लिल्लज़ी-न युअ्लू-न मिन्निसा-इ-हिम् तरब्बुसु अर्ब-अ़ति अश्हुरिन् ج फ़ इन् फ़ा-ऊ फ़ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (२२६) व इन् अ़-ज़-मुत्तला-क़ फ़-इन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम (२२७) वल्मुतल्लक़ातु य-त-रब्बस-न बि अन्फ़ुसिहिन्-न सला-स-त क़ुरू-इन् ط व ला यहिल्लु लहुन्-न अय्यक्तुम-न मा ख़-ल-क़ल्लाहु फ़ी अर्हामिहिन-न इन् कुन्-न युअ्मिन्-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि ط व बुअूलतुहुन्-न अहक़्क़ु बिरद्दिहिन-न फ़ी ज़ालि-क इन् अरादू इस्लाहन् ط व लहुन्-न मिस्लुल्लज़ी अ़लैहिन्-न बिल्मअ्-रूफ़ि व लिर्रिजालि अ़लैहिन्-न द-र-जतुन् ط वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम ★ (२२८)

البقرة ٢ ٢٨ سيقول ٢

وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ
حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۝
نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ ۠ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنّٰى شِئْتُمْ ۖ وَقَدِّمُوا
لِأَنْفُسِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ مُلَاقُوهُ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝
وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا
بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ
فِي أَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ
حَلِيمٌ ۝ لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ ۖ
فَإِنْ فَاءُوا فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ
اللّٰهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۚ
وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ
كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي
ذٰلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا ۚ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ
وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ الطَّلَاقُ مَرَّتَانِ ۖ
فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ۗ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ
تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ
اللّٰهِ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللّٰهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا

ع ١٢

منزل ١

★रु. २८/१२ आ ७

और तुमसे हैज के बारे मे पूछते हैं। कह दो कि वह तो नजासत है, मो हैज़ के दिनो मे औरतो से अलग रहो और जब तक पाक न हो जाये, उनसे करीब न होओ। हा, जब पाक हो जाएं तो जिस तरीके से खुदा ने तुम्हे इर्शाद फरमाया है, उनके पास जाओ। कोई शक नही कि खुदा तौबा करने वालो और पाक-साफ रहने वालो को दोस्त रखता है। (२२२) तुम्हारी औरते तुम्हारी खेती है, तो अपनी खेती मे जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए (नेक अमल) आगे भेजो और खुदा से डरते रहो और जान रखो कि (एक दिन) तुम्हे उसके सामने हाजिर होना है।[1] और (ऐ पैगम्बर !) ईमान वालो को खुशखबरी सुना दो। (२२३) और खुदा (के नाम) को इस बात का हीला न बनाना कि (उसकी) कसमे खा-खाकर सुलूक करने और परहेज़गारी करने और लोगो मे सुलह-सफाई कराने से रुक जाओ और खुदा सब कुछ सुनता और जानता है।[2] (२२४) खुदा तुम्हारी बेकार कस्मो पर तुम्हारी पकड नही करेगा, लेकिन जो कस्मे तुम दिल के इरादे से खाओगे, उन पर पकड करेगा और खुदा बख्शने वाला, बुर्दबार है।[3] (२२५) जो लोग अपनी औरतो के पास जाने से कसम खा ले, उनको चार महीने तक इन्तिजार करना चाहिए। अगर (इस अर्से मे कसम से) रुजूअ कर लें, तो खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (२२६) और अगर तलाक का इरादा कर ले, तो भी खुदा सुनता और जानता है। (२२७) और तलाक वाली औरते तीन हैज़[4] तक अपने आपको रोके रहे। और अगर वे खुदा और कियामत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उन को जायज़ नही कि खुदा ने जो कुछ उन के पेट मे पैदा किया है, उसको छिपाये और उन के खाविंद अगर फिर मुवाफकत चाहे तो इस (मुद्दत) मे वे उन को अपनी जौजियत (बीवी बनाने) मे ले लेने के ज्यादा हकदार हैं। और औरतो का हक (मर्दो पर) वैसा ही है जैसे दस्तूर के मुताबिक (मर्दो का) हक औरतो पर है। हा, मर्दो को औरतो पर फजीलत है और खुदा गालिब (और) हिक्मत वाला है। (२२८) ✶

---

१ लफ्ज़ो का लिहाज़ किया जाता तो तर्जुमा यो होना चाहिए था कि 'तुम्हे खुदा से मिलना है, मगर जो तर्जुमा यहा किया गया है, वह मुहावरे के लिहाज़ मे बहुत लतीफ है।

२ यानी इस बात की कसम न खाओ कि मैं फला शख्स से सुलूक नही करूगा या फला नेक काम नही करूगा। अगर ऐसी कसम खा ली हो तो उस को तोड देना चाहिए और उस का कफ्फारा दे देना चाहिए।

३ 'बेकार कसम' वह है जिस की नीयत न हो और बे-क़स्द व इरादा खायी जाए, जैसे कुछ लोग तकिया-ए-कलाम के तौर पर बात-बात मे 'वल्लाह' 'बिल्लाह' कहा करते हैं। कुछ ने कहा, बेकार कसम वह है जो गुस्से की हालत मे खायी जाए या हलाल को हराम कर लिया जाए। ऐसी कसम मे कफ्फारा नही है। कुछ ने कहा, जो गुनाह की बात पर खायी जाए। कुछ ने कहा, जो मामले के वक्त खायी जाए। बेचने वाला कहे, वल्लाह ! यह चीज मैं इतने को नही बेचूगा, खरीदने वाला कहे, वल्लाह ! मैं इतने को नही खरीदूगा। बहरहाल बेकार कस्मो पर पकड नही है।

४ जिस लफ्ज़ का तर्जुमा हम ने हैज किया है, वह 'कुरू' है, जिस के मानी हैज और तुह्र (पाकी) दोनो हैं। इस बारे मे इख्तिलाफ रहा है कि यहा हैज मुराद है या तुह्र। सहाबा रजि० की एक जमाअत इस बात की कायल है कि कुरू के मानी तुह्र है। इमाम मालिक रह० और शाफई का भी मजहब यही है, मगर चारो खलीफा और ताबईन का यह कौल है कि 'कुरू' मे मुराद हैज है। इमाम अबू हनीफ़ा रह० का भी यही मजहब है। इमाम

(शेष ५५ पर)

✶रु २८/१२ आ ७

तलाक (सिर्फ) दो बार है। (यानी जब दो बार तलाक दे दी जाए तो) फिर (औरतो को) या तो शाइस्ता तरीके से (निकाह मे) रहने देना है या भलाई के साथ छोड देना और यह जायज नही कि जो मह्र तुम उन को दे चुके हो, उस मे से कुछ वापस ले लो। हा, अगर बीवी व शौहर को खौफ हो कि वे खुदा की हदो को कायम नही रख सकेंगे, तो अगर औरत (खाविंद के हाथ से) रिहाई पाने के बदले में कुछ दे डाले तो दोनों पर कुछ गुनाह नही। ये खुदा की (मुकर्रर की हुई) हदें हैं, उन से बाहर न निकलना और जो लोग खुदा की हदो से बाहर निकल जायेंगे, वे गुनाहगार होंगे। (२२९) फिर अगर शौहर (दो तलाको के बाद तीसरी) तलाक औरत को दे दे तो उस के बाद जब तक औरत किसी दूसरे शख्स से निकाह न कर ले, (पहले शौहर) पर हलाल न होगी। हा, अगर दूसरा खाविंद भी तलाक दे दे और औरत और पहला खाविंद फिर एक दूसरे की तरफ रुजूअ कर ले तो उन पर कुछ गुनाह नही, बशर्ते कि दोनो यकीन करें कि खुदा की हदो को कायम रख सकेंगे और ये खुदा की हदें हैं, इन को वह उन लोगो के लिए बयान फरमाता है जो दानिश (सूझ-बूझ) रखते है। (२३०) और जब तुम औरतो को (दो बार) तलाक दे चुको और उन की इद्दत पूरी हो जाए तो उन्हे या तो अच्छे सुलूक से निकाह मे रहने दो या शाइस्ता तरीके से रुख्सत कर दो और इस नीयत से उन को निकाह मे न रहने देना चाहिए कि उन्हे तक्लीफ दो और उन पर ज्यादती करो। और जो ऐसा करेगा वह अपना ही नुक्सान करेगा। और खुदा के हुक्मो को हंसी (और खेल) न बनाओ। और खुदा ने तुमको जो नेमते बख्शी है और तुम पर जो किताब और दानाई की बाते नाजिल की है, जिन से वह तुम्हे नसीहत फरमाता है. उन को याद करो और खुदा से डरते रहो और जान रखो कि खुदा हर चीज जानता है। (२३१)★●

और जब तुम औरतो को तलाक दे चुको और उन की इद्दत पूरी हो जाए तो उन को दूसरे शौहरो के साथ, जब वे आपस मे जायज तौर पर राजी हो जाये, निकाह करने से मत रोको। इस (हुक्म) से उस शख्स को नसीहत की जाती है जो तुम मे खुदा और आखिरत के दिन पर यकीन रखता है, यह तुम्हारे लिए निहायत खूब और बहुत पाकीजगी की बात है और खुदा जानता है और

(५३ का शेष)
अहमद रह० कहते हैं कि बडे सहाबा इस के कायल हैं कि कुरू के मानी हैज हैं। जो लोग इस के कायल हैं कि कुरआन की आयत मे कुरू से मुराद हैज़ है, उन की एक दलील यह भी है कि प्यारे नबी सल्ल० ने फातिमा बिन्त जैश से फरमाया था कि 'दअिस्सला-त अय्या-म अकराइकि' यानी हैज के दिनो मे नमाज छोड दिया करो। हम ने इसी रिवायत की बुनियाद पर कुरू का तर्जुमा हैज किया है।

वल्वालिदातु युर्ज़िअ्-न औलादहुन्-न हौलैनि कामिलैनि लि मन् अरा-द अंय्युतिम्-मर्रज़ाअ-तृ ط व अ-लल्-मौलूदि लहू रिज़्कुहुन्-न व किस्वतुहुन्-न बिलमअ्-रूफि ط ला तुकल्लफु नफ्सुन् इल्ला वुस्अहा ج ला तुज़ार्-र-वालिदतुम्-बि व-लदिहा व ला मौलूदुल्लहू बि व-लदिही ق व अ-लल्-वारिसि मिस्लु ज़ालि-क ج फ़ इन् अरादा फ़िसालन् अन्तराजिम्मिन्हुमा व तशावुरिन् फ ला जुना-ह अलैहिमा ط व इन् अरत्तुम् अन् तस्तर्ज़िअू औलादकुम् फ ला जुना-ह अलैकुम् इज़ा सल्लम्तुम् मा आतैतुम् बिल्मअ्-रूफि ط वत्तकुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नल्ला-ह बिमा तअ्-मलू-न बसीर (२३३) वल्लज़ी-न यु-त-वफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज्वाजंय्य-त-रब्बस्-न बिअन्फुसिहिन्-न अर्ब-अ-तृ अश्हुरिंव-व अश्रन् ج फ इज़ा ब-लग्-न अ-ज-लहुन्-न फ-ला जुना-ह अलैकुम् फीमा फ-अल-न फी अन्फुसिहिन्-न बिलमअ्-रूफि ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर (२३४) वला जुना-ह अलैकुम् फीमा अर्रज़्तुम् बिही मिन् ख़ित्बतिन्निसा-इ औ अक्नन्तुम् फी अन्फुसिकुम् ط अलि-मल्लाहु अन्नकुम् स-तज़्कुरूनहुन्-न व लाकिल्ला तुवाअिदूहुन्-न सिर्रन् इल्ला अन् तकूलू कौलम् मअ्-रूफन् ط व ला तअ्-ज़िमू अुक्दतन्निकाहि हत्ता यब्लुगल्-किताबु अ-ज-लहू ط वअ्-लमू अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् फ़ह्ज़रूहु ج वअ्-लमू अन्नल्ला-ह गफ़ूरुन् हलीम ع ★ (२३५) ला जुना-ह अलैकुम् इन् तल्लक्तुमुन्निसा-अ मालम् तमस्सूहुन्-न औ तफ़्रिज़ू लहुन्-न फ़रीज़-तव्-व मत्तिअू-हुन-न ج अ-लल्मूसिअि क-द-रुहू व अलल्मुक्तिरि क-द-रुहू ج मताअम्-बिलमअ्-रूफि ج हक्कन् अ-लल्-मुह्सिनीन (२३६) व इन् तल्लक्तुमूहुन्-न मिन् कब्लि अन् तमस्सूहुन्-न व कद् फ-रज़्तुम् लहुन्-न फरीज़-तन् फ निस्फ़ु मा फ़-रज़्तुम् इल्ला अंय्यअ्-फ़ू-न औ यअ्-फुवल्लज़ी बियदिही अुक्दतुन्निकाहि ط व अन् तअ्-फू अक्रबु लित्तक्वा ط व ला तन्सवुल्फज्-ल बैनकुम् ط इन्नल्ला-ह बिमा तअ्-मलू-न बसीर (२३७)

جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدْتُّمْ أَنْ تَسْتَرْضِعُوٓا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ ءَاتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوٓا أَنَّ
اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ
أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ
أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِيٓ أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِۦ
مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِيٓ أَنْفُسِكُمْ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ
سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّآ أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا
مَّعْرُوفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَٰبُ أَجَلَهُۥ ۚ
وَاعْلَمُوٓا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِيٓ أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ ۚ وَاعْلَمُوٓا أَنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا
لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ
قَدَرُهُۥ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُۥ مَتَٰعًا بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ۝
وَإِنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ
فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّآ أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَا الَّذِي بِيَدِهِۦ
عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ تَعْفُوٓا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ
بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ حَٰفِظُوا عَلَى الصَّلَوَٰتِ وَ

★रु. ३०/१४ आ ४

तुम नही जानते। (२३२) और माएं अपने बच्चो को पूरे दो साल दूध पिलाएं, यह (हुक्म) उस शख्स के लिए है जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे और दूध पिलाने वाली माओ का खाना और कपडा दस्तूर के मुताबिक बाप के जिम्मे होगा। किसी शख्स को उस की ताक़त से ज्यादा तक्लीफ नही दी जाती, (तो याद रखो कि) न तो मा को उस के बच्चे की वजह से नुक्सान पहुचाया जाए और न बाप को उस की औलाद की वजह से नुक्सान पहुचाया जाए[1] और इसी तरह (नान-नफ्का) बच्चे के वारिस के जिम्मे है और अगर दोनो (यानी मा-बाप) आपस की रजामदी और सलाह से बच्चो का दूध छुडाना चाहे, तो उनपर कुछ गुनाह नही और अगर तुम अपनी औलाद को दूध पिलवाना चाहो, तो तुम पर कुछ गुनाह नही, बशर्तेकि तुम दूध पिलाने वालियो को दस्तूर के मुताबिक उन का हक जो तुम ने देना तै किया था, दे दो और खुदा से डरते रहो और जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को देख रहा है। (२३३) और जो लोग तुम मे से मर जाये और औरते छोड जाये तो औरते चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहे और जब (ये) इद्दत पूरी कर चुके और अपने हक़ मे पसदीदा काम (यानी निकाह) कर ले तो तुम पर कुछ गुनाह नही और खुदा तुम्हारे सब कामो की खबर रखता है।[2] (२३४) अगर तुम इशारे की बातो मे औरतो को निकाह का पैगाम भेजो या (निकाह की ख्वाहिश को) अपने दिलो मे छिपाए रखो तो तुम पर कुछ गुनाह नही। खुदा को मालूम है कि तुम उन से (निकाह का) जिक्र करोगे, मगर (इद्दत के दिनो मे) इस के सिवा कि दस्तूर के मुताबिक कोई बात कह दो छिपे तौर पर, उन से कौल व करार न करना। और जब तक इद्दत पूरी न हो ले, निकाह का पक्का इरादा न करना और जान रखो कि जो कुछ तुम्हारे दिलो मे है, खुदा को सब मालूम है, तो उस से डरते रहो और जान रखो कि खुदा बख्शने वाला और इल्म वाला है। (२३५) ★

और अगर तुम औरतो को उन के पास जाने या उन का मह्र मुकर्रर करने से पहले तलाक दे दो, तो तुम पर कुछ गुनाह नही, हा, उनको दस्तूर के मुताबिक कुछ खर्च जरूर दो (यानी) मक्दूर वाला अपनी ताकत के मुताबिक दे और तगदस्त अपनी हैसियत के मुताबिक। नेक लोगो पर यह एक तरह का हक है। (२३६) और अगर तुम औरतो को उन के पास जाने से पहले तलाक दे दो, लेकिन मह्र मुकर्रर कर चुके हो, तो आधा मह्र देना होगा। हा, अगर औरते मह्र बख्श दे या मर्द, जिन के हाथ मे निकाह का अक्द है (अपना हक) छोड दे (और पूरा मह्र दे दे तो उनको अख्तियार है) और अगर तुम मर्द लोग ही अपना हक छोड दो तो यह परहेजगारी की बात है और आपस मे भलाई करने को भूलना नही, कुछ शक नही कि खुदा तुम्हारे सब कामो को देख रहा है। (२३७)

---

१ यानी मा अगर दूध पिलाने पर राजी न हो, तो उस से जबरदस्ती न की जाए और बाप से उस की ताक़त से ज्यादा नफ्का (खर्चा) न मागा जाए।

२ तलाक की इद्दत तीन हैज और सोग की इद्दत चार महीने दस दिन इस सूरत मे है, जब हमल मालूम न हो और अगर हमल मालूम हो तो बच्चा होने के वक्त तक है।

हाफ़िज़ू अलस्स़-ल-वाति वस्स़लातिल्-वुस्ता ق व कूमू लिल्लाहि क़ानितीन (२३८) फ-इन् ख़िफ़्तुम् फ रिजालन् औ रुक्बानन् ۚ फ इज़ा अमिन्तुम् फज़्कुरुल्ला-ह कमा अल्ल-म-कुम् मालम् तकूनू तअ्-लमून (२३९) वल्लज़ी-न यु-त-वफ्फौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजव्-व सिय्यतल्-लि अज़्वाजिहिम् मताअन् इलल्हौलि ग़ै-र इख़्राजिन् ۚ फ इन् ख-रज्-न फ़ला जुना-ह अलैकुम् फी मा फ-अल्-न फी अन्फुसिहिन्-न मिम्मअ्-रूफ़िन् ط वल्लाहु अजीजुन् हकीम (२४०) व लिल्मुतल्लकाति मताअुम् - बिल्मअ्रूफ़ि ط हक्कन् अलल्मुत्तकीन (२४१) कज़ालि - क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ल-अल्लकुम् तअ्-किलून ★ (२४२) अ - लम् त - र इलल्लज़ी-न ख-रजू मिन् दियारि-हिम् व हुम् उलूफुन् ह-ज-रल्मौति ص फ का-ल लहुमुल्लाहु मूतू قف सुम्-म अह्याहुम् ط इन्नल्ला-ह लज़ू फज़्लिन् अलन्नासि व

سيقول ٢ — ٣١ — البقرة ٢

الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ۝ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا
اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا
اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ
فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ
بِالْمَعْرُوْفِ ۗ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ
حَذَرَ الْمَوْتِ ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۟ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ
عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ۗ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ
وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ
مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ۭ قَالُوْا وَمَا
لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَآىِٕنَا ۭ
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ

लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (२४३) व क़ातिलू फी सबीलिल्लाहि वअ्-लमू अन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम (२४४) मन् ज़ल्लज़ी युक्रिज़ुल्ला-ह कर्ज़न् ह-स-नन् फ-युज़ाअिफ़हू लहू अज़्आफन् कसीर-तन् ط वल्लाहु यक़्बिज़ु व यब्सुतु व इलैहि तुर्जअून (२४५) अ-लम् त-र इलल्मल-इ मिम्बनी इस्राई-ल मिम्बअ्-दि मूसा ▨ इज् कालू लि नबिय्यिल्-लहुमुब्अस् लना मलिकन्नुकातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि ط का-ल हल् असैतुम इन् कुति-ब अलैकुमुल्-कितालु अल्ला तुकातिलू ط कालू व मा लना अल्ला नुकाति-ल फ़ी सबीलिल्लाहि व कद् उख़्रिज्ना मिन् दियारिना व अब्ना - इना ط फ - लम्मा कुति - ब अलैहिमुल् - कितालु तवल्लौ इल्ला कलीलम्मिन्हुम् ط वल्लाहु अ़लीमुम् - बिज़्ज़ालिमीन (२४६)

★ रु ३१/१५ आ ७ ▨ व लाज़िम

(मुसलमानो !) सब नमाज़ें खास तौर से बीच की नमाज़ (यानी अस्र की नमाज़) पूरे एहतिमाम
के साथ अदा करते रहो।[1] और खुदा के आगे अदब से खडे रहा करो। (२३८) अगर तुम खौफ की
हालत मे हो तो प्यादे या सवार (जिस हाल मे हो, नमाज़ पढ लो) फिर जब अम्न (व इत्मीनान)
हो जाए तो जिस तरीके से खुदा ने तुम को सिखाया है, जो तुम पहले नही जानते थे, खुदा को याद
करो। (२३९) और जो लोग तुम मे से मर जाये, और औरते छोड जाये, वे अपनी औरतो के हक
मे वसीयत कर जाये कि उन को एक साल तक खर्च दिया जाए और घर से न निकाली जाए।
हा, अगर वे खुद घर से निकल जाएं और अपने हक में पसन्दीदा काम (यानी निकाह) कर लें
तो तुम पर कुछ गुनाह नही और खुदा ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (२४०) और तलाक़ वाली
औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक नान व नफ्का देना चाहिए। परहेज़गारो पर (यह भी) हक है।
(२४१) इसी तरह खुदा अपने हुक्मो को तुम्हारे लिए बयान फरमाता है ताकि तुम समझो।(२४२)★

भला तुम ने उन लोगो को नही देखा जो (गिनती मे) हज़ारो ही थे और मौत के डर से अपने
घरो से निकल भागे थे, तो खुदा ने उन को हुक्म दिया कि मर जाओ, फिर उन को जिन्दा भी कर
दिया। कुछ शक नही कि खुदा लोगो पर मेहरबानी रखता है, लेकिन ज्यादा लोग शुक्र नही करते।
(२४३) और (मुसलमानो !) खुदा की राह मे जिहाद करो और जान रखो कि खुदा (सब कुछ)
सुनता (और सब कुछ) जानता है। (२४४) कोई है कि खुदा को कर्ज़े हस्ना (भला कर्ज़) दे कि
वह उस के बदले उस को कई हिस्से ज्यादा देगा और खुदा ही रोजी को तंग करता और (वही उसे)
फैलाता है और तुम उसी की तरफ लौट कर जाओगे। (२४५) भला तुम ने बनी इस्राईल की
एक जमाअत को नही देखा, जिस ने मूसा के बाद अपने पैगम्बर से कहा कि आप हमारे लिए एक
बादशाह मुकर्रर कर दें ताकि हम खुदा की राह मे जिहाद करें। पैगम्बर ने कहा कि अगर तुम को
जिहाद का हुक्म दिया जाए तो अजब नही कि लडने से पहलू बचाओ। वे कहने लगे कि हम खुदा
की राह मे क्यो न लड़ेंगे जब कि हम वतन से (निकाले) और बाल-बच्चो से जुदा कर दिए गए,
लेकिन जब उनको जिहाद का हुक्म दिया गया तो कुछ लोगो के अलावा सब फिर गये और खुदा
ज़ालिमो को खूब जानता है। (२४६) और पैगम्बर ने उन से (यह भी) कहा कि खुदा ने तुम पर
तालूत को बादशाह मुकर्रर फरमाया है। वे बोले कि उसे हम पर बादशाही का हक कैसे हो सकता
है, बादशाही के हकदार तो हम है और उस के पास तो बहुत सी दौलत भी नही। पैगम्बर ने कहा
कि खुदा ने उस को तुम पर (फज़ीलत दी है और बादशाही के लिए) चुन रखा है। उसने उसे इल्म
भी बहुत सा बख्शा है और जिस्म भी (बडा अता किया है) और खुदा (को अख्तियार है), जिसे
चाहे बादशाही बख्शे। वह बड़ी वुसअत वाला और जानने वाला है। (२४७) और पैगम्बर ने उन

---

१. पूरे एहतिमाम के साथ अदा करने से मुराद यह है कि नमाज़ को उस के वक्तो मे पढने रहो। बीच की नमाज़
के बारे मे मुख्तलिफ कौल है। किसी ने कहा, जुहर की नमाज़ मुराद है। किसी ने कहा इशा की, किसी ने अस्र
अस्र की, किसी ने कहा फज्र की, मगर ज्यादा सही यह है कि इस से अस्र की नमाज़ मुराद है, जैसा कि सही
हदीसो मे आया है।

★रु ३१/१५ आ ७ ※ व लाज़िम

व का-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्नल्ला-ह क़द् ब-अ़-स लकुम् तालू-त मलिकन्ط क़ालू अन्ना यकूनु लहुलमुल्कु अ़लैना व नह्नु अहक़्क़ु बिलमुल्कि मिन्हु व लम् युअ्-त स-अ-तम्-मिनलमालि ط का-ल इन्नल्लाहस्तफ़ाहु अ़लैकुम् व ज़ादहू बस्त-तन् फ़िल्इल्मि वल्जिस्मि ط वल्लाहु युअ्ती मुल्कहू मय्यशा-उط वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (२४७) व का-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन-न आय-त मुल्किही अंय्यअ्तियकुमुत्ताबूतु फ़ीहि सकीनतुम्-मिर्रब्बिकुम् व बक़िय्यतुम्-मिम्मा त-र-क आलु मूसा व आलु हारू-न तह्मिलुहुल्-मला-इकतु ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ★ (२४८) फ़ लम्मा फ़-स-ल तालूतु बिल्जुनूदि ل का-ल इन्नल्ला-ह मुब्तलीकुम् बि-न-हरिन् ج फ़ मन् शरि-ब मिन्हु फ़ लै-स मिन्नी ج व मल्लम् यत्-अ़म्हु फ़ इन्नहू मिन्नी इल्ला मनिग्त-र-फ़ ग़ुर्फ़तम्-बि यदिही ج फ़ शरिबू मिन्हु इल्ला क़लीलम्-मिन्हुम् ط फ़ लम्मा जा-व-ज़हू हु-व वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू ل क़ालू ला ताक़-त लनल्यौ-म बिजालू-त व जुनूदिही ط कालल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम् मुलाक़ुल्लाहि ل कम्मिन् फ़िअतिन् क़लीलतिन् ग़-ल-बत् फ़ि-अतन् कसीरतम् बि इज़्निल्लाहि ط वल्लाहु म-अ़-स्साबिरीन (२४९) व लम्मा ब-र-ज़ू लि जालू-त व जुनूदिही क़ालू रब्बना अफ़्रिग़् अ़लैना सब्रंव-व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अ़-लल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन ط (२५०) फ़-ह-ज़मूहुम् बि इज़्निल्लाहि व क़-त-ल दावूदु जालू-त व आताहुल्लाहुल्मुल-क वल्हिक्म-त व अ़ल्लमहू मिम्मा यशाउ ط व लौ ला दफ़्अुल्लाहिन्ना-स बअ़्-ज़हुम् बिबअ़्-ज़िल्-ल-फ़-स-दतिल अर्ज़ु व लाकिन्नल्ला-ह ज़ू फ़ज़्लिन् अ़लल्-आ़लमीन (२५१) तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लू हा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि ط व इन्न-क लमिनल्-मुर्सलीन (२५२)

مَلِكًا ۚ قَالُوٓا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ
يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً
فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝
وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَن يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ
مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ
بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي
وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۚ فَشَرِبُوا
مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا
لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۚ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُوا
اللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ
الصَّابِرِينَ ۝ وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ فَهَزَمُوهُم
بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُودُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَ
عَلَّمَهُ مِمَّا يَشَاءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ
لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝
تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

★रु ३२/१६ आ ६

से कहा कि उनकी बादशाही की निशानी यह है कि तुम्हारे पास एक सन्दूक आएगा जिस को फरिश्ते उठाए हुए होगे। उस मे तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तसल्ली (बख्शने वाली चीज़) होगी और कुछ और चीजे भी होगी जो मूसा और हारून छोड गये थे। अगर तुम ईमान रखते हो तो यह तुम्हारे लिए एक बडी निशानी है। (२४८) ★

गरज जब तालूत फौजे ले कर रवाना हुआ तो उस ने (उन से) कहा कि खुदा एक नहर से तुम्हारी आज़माइश करने वाला है। जो शख्स उस मे से पानी पी लेगा (उस के बारे मे समझा जाएगा कि) वह मेरा नही और जो न पिएगा, वह (समझा जाएगा कि) मेरा है। हा, अगर कोई हाथ से चुल्लू भर पानी ले ले (तो खैर, जब वे लोग नहर पर पहुचे) तो कुछ लोगो के सिवा सब ने पानी पी लिया। फिर जब तालूत और मोमिन लोग, जो उस के साथ, नहर के पार हो गये, तो कहने लगे कि आज हम मे जालूत और उस के लश्कर से मुकाबला करने की ताकत नही। जो लोग यकीन रखते थे कि उन को खुदा के सामने हाज़िर होना है, वे कहने लगे कि कभी-कभी थोडी-सी जमाअत ने खुदा के हुक्म से बडी जमाअत पर फत्ह हासिल की है और खुदा सब्र करने वालो (जमाव वालो) के साथ है। (२४९) और जब वे लोग जालूत और उस की फौज के मुकाबले मे आए तो (खुदा से) दुआ की, ऐ परवरदिवार ! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमे (लडाई मे) कदमों से जमाये रख, और काफिरो की (फौज) पर जीत दे। (२५०) तो तालूत की फौज ने खुदा के हुक्म से उन को हरा दिया और दाऊद ने जालूत को कत्ल कर डाला। और खुदा ने उन को बादशाही और दानाई बख्शी और जो कुछ चाहा, सिखाया और खुदा लोगो को एक दूसरे (पर चढाई और हमला करने) से हटाता न रहता, तो मुल्क तबाह हो जाता, लेकिन खुदा दुनिया वालो पर बड़ा मेहरबान है। (२५१) ये खुदा की आयतें है जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते हैं। (और ऐ मुहम्मद !) तुम बिला शुब्हा पैगम्बरो मे से हो। (२५२) ये पैगम्बर (जो

★रु ३२/१६ आ ६

तीसरा पारः तिल्-कर्रुसुलु

सूरतुल्-ब-क़-रति आयत २५३ से २८६

तिल्कर्रुसुलु फ़ज्जलना बअ्-जहुम् अ़ला बअ्ज़िन् ▨ मिन्हुम् मन् कल्लमल्लाहु व र-फ़-अ़ बअ्-जहुम् द-रजातिन् ط व आतैना ईसब्-न मर्यमल्-बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बि रूहिल्कुदुसि ط व लौ शा-अल्लाहु मक़्त-त-लल्लज़ी-न मिम्बअ्-दि-हिम् मिम्बअ्दि मा जा-अत्-हुमुल्बय्यिनातु व लाकिनिख़्तलफ़ू फ मिन्हुम् मन् आम-न व मिन्हुम् मन् क-फ़र ط व लौ शा-अल्लाहु मक़्-त-तलू قف व लाकिन्नल्ला-ह यफ़्अ़लु मा युरीद ★ (२५३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला बैअुन् फ़ीहि व ला ख़ुल्लतुंव्-व ला शफ़ाअ़तुन् ط वल्काफ़िरू-न हुमुज़्ज़ालिमून (२५४) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व ج अल्‌हय्युल्क़य्यूमु ج ला तअ्ख़ुज़ुहू सि-नतुं व-व ला नौमुन् ط लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط मन् ज़ल्लज़ी यशफ़अु अ़िन्दहू इल्ला बि-इज़्निही ط यअ्-लमु मा बैं-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् ج व ला युहीतू-न बिशैइम्मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ ج वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्ज़ ج व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा ج व हुवल् अ़लिय्युल्-अ़ज़ीम (२५५) ला इक्रा-ह फ़िद्दीनि قف कत्तबय्यनर्रुश्दु मिनलग़य्यि ج फ़ मय्यक्फ़ुर् बित्ताग़ूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ़-क़दिस्तम्-स-क बिल्-अुर्वतिल्-वुस्क़ा ق लन्फ़िसा-म लहा ط वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (२५६)

تلك الرسل ٣   ٣٣   البقرة ٢

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ
اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ
الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ
اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
مَا اقْتَتَلُوْا وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا
بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا
نَوْمٌ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِيْ
يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝
لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَّكْفُرْ
بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى
لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ

▨ व. लाज़िम ★रु. ३३/१ आ ५

हम वक़्त-वक़्त पर भेजते रहे) हैं, इन मे से हम ने कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है कुछ ऐसे हैं जिन से ख़ुदा ने बातें की और कुछ के (दूसरे मामलों में) मर्तबे बुलंद किए और ईसा बिन मरयम को हम ने खुली हुई निशानियां अता की और रूहुल कुदुस से उन को मदद दी[1] और अगर ख़ुदा चाहता तो उन से पिछले लोग अपने पास निशानियां आने के बाद आपस मे न लडते, लेकिन उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया, तो उन में से कुछ तो ईमान ले आए और कुछ काफ़िर ही रहे। और अगर ख़ुदा चाहता तो ये लोग आपस मे लडते-झगडते नही, लेकिन ख़ुदा जो चाहता है, करता है।[2] (२५३)

ऐ ईमान वालो! जो (माल) हम ने तुम को दिया है, उस मे से उस दिन के आने मे पहले-पहले खर्च कर लो जिस में न (आमाल का) सौदा हो, न दोस्ती और सिफारिश हो सके और कुफ्र करने वाले लोग जालिम है। (२५४) ख़ुदा, (वह सच्चा माबूद है कि) उस के सिवा कोई इबादत के लायक नही। ज़िन्दा हमेशा रहने वाला, उसे न ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आसमानो मे और जो कुछ ज़मीन मे है, सब उसी का है। कौन है कि उस की इजाज़त के बग़ैर उस से (किसी की) सिफारिश कर सके। जो कुछ लोगो के सामने हो रहा है और जो कुछ उन के पीछे हो चुका है, उसे सब मालूम है और वे उस की मालूमात मे से किसी चीज़ पर दस्तरस (काबू पाना) हासिल नही कर सकते, हां, जिस कदर वह चाहता है (उसी क़दर मालूम करा देता है) उस की बादशाही (और इल्म) आसमान और ज़मीन सब पर हावी है और उसे उन की हिफ़ाज़त कुछ भी मुश्किल नही। वह बडा आली रुत्बा और जलीलुल कद्र है। (२५५) दीने इस्लाम मे ज़बरदस्ती नही है। हिदायत (साफ तौर पर ज़ाहिर और) गुमराही से अलग हो चुकी है, तो जो शख़्स बुतो से एतकाद न रखे और ख़ुदा पर ईमान लाये, उस ने ऐसी मज़बूत रस्सी हाथ मे पकड ली है जो कभी टूटने वाली नही और ख़ुदा (सब कुछ) सुनता और (सब कुछ) जानता है। (२५६) जो लोग

---

१ खुली हुई निशानियो से मुराद मुर्दो का जिंदा करना, बीमारो का अच्छा करना और पैदाइशी अंधों की आंखें रोशन करना है। रूहुल कुदुस से मुराद जिब्रील हैं जो हर जगह ईसा अलैहिस्सलाम के साथ रहा करते थे।

२. लडने और जंग-लडाई करने से मुराद इख़्तिलाफ़ है यानी अगर ख़ुदा चाहता तो उन मे [illegible] मगर उस ने उन का मुख़्तलिफ़ रहना ठीक समझा, इस लिए वे उन से मुत्तफ़िक़ न हुए।

अल्लाहु वलिय्युल्लज़ी-न आमनू ॥ युख़्रिजुहुम मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि ط वल्लज़ी - न क - फ़रू औलिया-उ - हुमुत्तागूतु ॥ युख़्रिजूनहुम् मिनन्नूरि इलज़्ज़ुलुमाति ط उला - इ - क अस्हाबुन्नारि ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून ★(२५७) अ-लम् त-र इलल्लज़ी हाज्-ज इब्राही-म फ़ी रब्बिही अन् आताहुल्लाहुल् - मुल्क ▨ इज् का - ल इब्राहीमु रब्बियल्लज़ी युह्यी व युमीतु ॥ का-ल अ-न उह्यी व उमीतु ط का-ल इब्राहीमु फ-इन्नल्ला-ह यअ्ती बिश्शम्सि मिनलमश्रिकि फअ्ति बिहा मिनल्-मग़्रिबि फ बुहितल्लज़ी क - फर ط वल्लाहु ला यह्दिल् - क़ौमज़्ज़ालिमीन ج (२५८) औ कल्लज़ी मर्-र अला क़र्यतिंव-व हि-य ख़ावियतुन् अला अुरूशिहा ج क़ा - ल अन्ना युह्यी हाज़िहिल्लाहु बअ्-द मौतिहा ج फ-अमातहुल्लाहु मि-अ-त आमिन् सुम्-म ब-अ-सहू ط का-ल कम् लबिस्-त ط का-ल लबिस्तु यौमन् औ बअ्-ज यौमिन् ط का-ल बल्लबिस्-त मि-अ-त आमिन् फन्ज़ुर् इला तआमि-क व शराबि-क लम् य-त-सन्नह ج वन्ज़ुर् इला हिमारि-क व लि-नज-अ-ल-क आयतल्लिन्नासि वन्ज़ुर् इलल्अिज़ामि कै - फ़ नुन्शिज़ुहा सुम - म नक्सूहा लह्मन् ط फ लम्मा तबय्य-न लहू ॥ का-ल अअ्-लमु अन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (२५९) व इज् का - ल इब्राहीमु रब्बि अरिनी कै-फ तुह्यिल्मौता ط का - ल अ - व लम् तुअ्मिन् ط का - ल बला व लाकिल्लियत्मइन्-न क़ल्बी ط का-ल फ़ख़ुज़् अर्-ब-अ-तम्-मिनत्तैरि फ सुर्हुन्-न इलै-क सुम्मज्अल् अला कुल्लि ज-बलिम्-मिन्हुन-न जुज्अन् सुम्मद्अुहुन्-न यअ्तीन-क सअ्-यन् ط वअ्-लम् अन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम (२६०) ★

الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي
رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَ
يُمِيتُ قَالَ أَنَا أُحْيِي وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي
بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي
كَفَرَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾ أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ
قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ بَعْدَ
مَوْتِهَا ۖ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ
لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ
إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانْظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَ
لِنَجْعَلَكَ آيَةً لِلنَّاسِ ۖ وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا
لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾
وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۖ
قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِنَ الطَّيْرِ
فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ
ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ
الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ

★रु ३४/२ आ ४ ▨ व- लाज़िम ★रु ३५/३ आ ३

ईमान लाये है, उन का दोस्त खुदा है कि उन को अंधेरे मे निकाल कर रोशनी मे ले जाता है और जो काफिर है उन के दोस्त शैतान है कि उन को रोशनी मे निकाल कर अंधेरे मे ले जाते है। यही लोग दोजखी है कि उस मे हमेशा रहेगे। (२५७)★

भला तुम ने उस शख्स को नही देखा, जो इस (घमड की) वजह से कि खुदा ने उस को सल्तनत (राज्य) बख्शी थी, इब्राहीम से परवरदिगार के बारे मे झगडने लगा॥ जब इब्राहीम ने ने कहा, मेरा परवरदिगार तो वह है, जो जिलाता और मारता है, वह बोला कि जिला और मार तो मैं भी सकता हू। इब्राहीम ने कहा कि खुदा तो सूरज को पूरब मे निकालता है, आप उसे पच्छिम से निकाल दीजिए। (यह सुन कर) काफिर हैरान रह गया और खुदा बे-इन्साफो को हिदायत नही दिया करता।[1] (२५८) या इसी तरह उस शख्स को (नही देखा) जिस का एक गाव मे जो अपनी छतो पर गिरा पडा था, इत्तिफाकी गुज़र हुआ, तो उस ने कहा कि खुदा इस (के बाशिदो) को मरने के बाद किस तरह ज़िदा करेगा, तो खुदा ने उस की रूह कब्ज़ कर ली (और) सौ बरस तक (उस को मुर्दा रखा), फिर उस को जिला उठाया और पूछा तुम कितनी मुद्दत तक (मरे) रहे हो? उसने जवाब दिया कि एक दिन या इस से भी कम। खुदा ने फरमाया, (नही), बल्कि सौ बरस (मरे) रहे हो और अपने खाने-पीने की चीजो को देखो कि (इतनी मुद्दत मे बिलकुल ही) सडी-गली नही और अपने गधे को भी देखो, (जो मरा पडा है), गरज़ (इन बातो से) यह है कि हम तुम को लोगो के लिए (अपनी कुदरत की) निशानी बनाए और (गधे की) हड्डियो को देखो कि हम उन को कैसे जोड़ देते और उन पर (किस तरह) गोश्त-पोस्त चढा देते हैं। जब ये वाकिए उस ने देखे तो बोल उठा कि मैं यकीन करता हू कि खुदा हर चीज़ पर कादिर है।[2] (२५९) और जब इब्राहीम ने खुदा से कहा कि ऐ परवरदिगार! मुझे दिखा कि तू मुर्दो को किस तरह ज़िन्दा करेगा? खुदा ने फरमाया कि क्या तुम ने (इस बात को) बावर नही किया (यानी माना नही)? उन्हो ने कहा, क्यो नही, लेकिन (मैं देखना) इस लिए (चाहता हू) कि मेरा दिल कामिल इत्मीनान हासिल कर ले। खुदा ने फरमाया कि चार जानवर पकड़ कर अपने पास मगा लो (और टुकडे-टुकडे करा दो) फिर उन का एक-एक टुकड़ा हर एक पहाड पर रखवा दो। फिर उन को बुलाओ तो वे तुम्हारे पास दौडते चले आएगे और जान रखो कि खुदा गालिब और हिक्मत वाला है। (२६०)★

---

१ जिस शख्स ने हजरत इब्राहीम से झगडा किया वह बाबुल का बादशाह नमरूद था, जो लोगो से अपने आप को सज्दा कराता था। हज़रत इब्राहीम अलै० ने सज्दा करने से इन्कार किया तो उस ने वजह पूछी। उन्होंने कहा मैं तो अपने खुदा को सज्दा करता हू। उस ने कहा, खुदा कौन है? उन्होने कहा, खुदा वह है जिस के हाथ मे ज़िदगी और मौत है, यानी जो ज़िदगी-मौत का पैदा करने वाला है। काफिर इस बात को तो समझा नही बोला कि मैं भी ज़िदा कर सकता और मार सकता हू। चुनाचे उस ने दो कैदियो को बुलवाया। एक जिस का कत्ल किया जाना ज़रूरी था, उस को माफ कर दिया यानी जान बख्शी कर दी। दूसरा, जो कातिल न था उस को मरवा डाला। तब हज़रत इब्राहीम ने यह देख कर कि यह बुरी समझ का है, उस से कहा कि अगर आप [illegible] है तो सूरज को, जो पूरब से निकला करता है, हुक्म दीजिए कि पच्छिम से निकले। उस का जवाब काफिर से कुछ न बन पडा और ला-जवाब हो कर रह गया।

२ हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० ने फरमाया कि यह किस्सा हज़रत उज़ैर पैगम्बर का है और [illegible]।

★रु. ३४/२ आ ४ ॥ व लाज़िम ★रु ३५/३ आ ३

म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि क-म-सलि हब्बतिन् ط
अम्ब-तत् सब् - अ सनाबि - ल फ़ी कुल्लि सुम्बुलतिम्मि - अतु हब्बतिन् ط
वल्लाहु युज़ाअिफ़ु लिमय्यशा - उ ط वल्लाहु वासिअुन् अलीम (२६१)
अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म ला युत्बिअू-न
मा अन्फ़क़ू मन्नव्वला अ - ज़ल् - लहुम्
अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् ج व ला
ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून
(२६२) क़ौलुम्मअ्रूफ़ुव् - व मग्फ़ि-रतुन्
ख़ैरुम्मिन् स - द - क़तिय्यत्बअुहा अज़न् ط
वल्लाहु ग़निय्युन् हलीम (२६३) या
अय्युहल्लज़ी - न आमनू ला तुब्तिलू
स-द-क़ातिकुम् बिलमन्नि वल्अज़ा कल्लज़ी
युन्फ़िक़ु मालहू रिआ - अन्नासि व ला
युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि ط
फ़ म-सलुहू क-मसलि सफ़्वानिन् अलैहि
तुराबुन् फ़ असाबहू वाबिलुन् फ़-त-र-कहू सल्दन् ط
ला यक़्दिरू-न अला शैइम्मिम्मा क-सबू ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल्-काफ़िरीन
(२६४) व म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुमुब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि
व तस्बीतम्मिन् अन्फ़ुसिहिम् क-म-सलि जन्नतिम् - बिरब्वतिन् असाबहा
वाबिलुन् फ़-आतत् उकुलहा ज़िअ्फ़ैनि ج फ़ इल्लम् युसिब्हा वाबिलुन्
फ़ - तल्लुन् ط वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर (२६५) अ-य-वद्दु अ-हदुकुम् अन्
तकू-न लहू जन्नतुम्-मिन्नख़ीलिव्-व अअ्-नाबिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु
लहू फ़ीहा मिन् कुल्लिस्समराति व असाबहुल्कि-ब-रु व लहू ज़ुर्रिय्यतुन्
ज़ुअफ़ा उ फ़ असाबहा इअ्-सारुन् फ़ीहि नारुन् फ़ह्त - र - क़त् ط
कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्आयाति ल-अल्लकुम् त-त-फ़क्करून ★ (२६६)

تلك الرسل ٣ ٣٥ البقرة ٢

سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللَّهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَاءُ ۗ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللَّهِ
ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ
خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ۗ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ
رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ
صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ۗ لَا يَقْدِرُوْنَ
عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَمَثَلُ
الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ
اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ ۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ
فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ اَيَوَدُّ
اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ
ضُعَفَآءُ ۚ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللَّهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا
مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۗ وَلَا تَيَمَّمُوا

منزل

★रु ३६/४ आ ६

जो लोग अपना माल खुदा की राह मे खर्च करते है, उन (के माल) की मिसाल उस दाने की-सी है, जिस से सात बाले उगें और हर एक बाल मे सौ-सौ दाने हो और खुदा जिस (के माल) को चाहता है, ज्यादा करता है, वह बड़ी वुसअत वाला और सब कुछ जानने वाला है। (२६१) जो लोग अपना माल खुदा के रास्ते मे खर्च करते है, फिर इस के बाद न इस खर्च का (किसी पर) एहसान रखते है और न (किसी को) तक्लीफ देते है, उन का बदला उन के परवरदिगार के पास (तैयार) है और (कियामत के दिन) न उन को कुछ डर होगा और न वे गमगीन होंगे। (२६२) जिस खैरात देने के बाद (लेने वाले को) तक्लीफ दी जाए, उस से तो नर्म बात कह देनी और (उस की बे-अदबी से) दरगुज़र करना बेहतर है और खुदा बे-परवा और बुर्दबार है। (२६३) मोमिनो! अपने सद्कात (व खैरात) एहसान रखने और तक्लीफ देने से उस शख्स की तरह बर्बाद न कर देना, जो लोगो को दिखाने के लिए माल खर्च करता है और खुदा और आखिरत के दिन पर ईमान नही रखता, तो उस (के माल) की मिसाल उस चट्टान की-सी है, जिस पर थोडी सी मिट्टी पडी हो और उस पर जोर का मेह[1] बरस कर उसे साफ कर डाले (इसी तरह) ये (दिखावा करने वाले) लोग अपने आमाल का कुछ भी बदला हासिल नही कर सकेंगे। और खुदा ऐसे ना-शुक्रों को हिदायत नही दिया करता। (२६४) और जो लोग खुदा की खुश्नूदी हासिल करने के लिए सच्ची नीयत से अपना माल खर्च करते है, उन की मिसाल एक बाग की-सी है, जो ऊंची जगह पर वाके हो, (जब) उस पर मेह पड़े तो सौगुना फल लाये और मेह न भी पडे, तो खैर फुवार ही सही और खुदा तुम्हारे कामो को देख रहा है। (२६५) भला तुम मे कोई यह चाहता है कि खजूरों और अंगूरों का बाग हो, जिस मे नहरे बह रही हो और उस के लिए हर किस्म के मेवे मौजूद हो और उसे बुढ़ापा आ पकड़े और उस के नन्हे-नन्हे बच्चे भी हो तो (यकायक) उस बाग पर आग का भरा हुआ बगोला (बवंडर) चले और वह जल (कर राख का ढेर हो) जाए। इस तरह खुदा तुम से अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम सोचो और समझो। (२६६)✱

---

१ अरबी लफ्ज़ 'वाबिल' है जो बड़ी-बड़ी बूदो की बारिश (मेह) को कहते हैं। 'तल्ल' ओस को भी कहते है और छोटी-छोटी और हल्की-हल्की बूदो के मेह यानी फुवार को भी कहते हैं और यह भी पेड़ो को भी हरा-भरा रखने के लिए काफी होती है। हम ने तर्जुमे मे फुवार अख्तियार किया है।

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फिक़ू मिन् तय्यिबाति मा क-सब्तुम् व मिम्मा अख़्रज्ना लकुम् मिनल्अर्ज़ि ۖ व ला त-यम्ममुल्ख़बी-स मिन्हु तुन्फ़िक़ू-न व लस्तुम् बि आख़िज़ीहि इल्ला अन् तुग़्मिज़ू फ़ीहि ط वअ्-लमू अन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद (२६७) अश्शैतानु यअिदुकुमुल्-फ़क्-र व यअ्मुरुकुम् बिल्फ़हशा-इ ج वल्लाहु यअिदुकुम् मग़्फ़ि-र-तम्मिन्हु व फ़ज़्लन् ط वल्लाहु वासिअुन् अलीम ۖ (२६८) युअ्तिल्-हिक्म-त मंय्यशा-उ ج व मय्युअ्तल्-हिक्म-तु फ़-क़द् ऊति-य ख़ैरन् कसीरन् ط व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्-अल्बाब (२६९) व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् न-फ़-क़तिन् औ न-ज़र्तुम् मिन्नज़्रिन् फ़ इन्नल्ला-ह यअ्-लमुहू ط व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार (२७०) इन् तुब्दुस्स-द-क़ाति फ़ निअिम्मा हि-य ج व इन् तुख़्फ़ूहा व तुअ्तूहल्फ़ुक़रा-अ फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् ط व युकफ़्फ़िरु अन्कुम् मिन् सय्यिआतिकुम् ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलून ख़बीर (२७१) लै-स अलै-क हुदाहुम् व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशा-उ ط व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़ लि अन्फ़ुसिकुम् ط व मा तुन्फ़िक़ू-न इल्लब्तिग़ा-अ वज्हिल्लाहि ط व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिय्युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (२७२) लिल्फ़ुक़रा-इल्लज़ी-न उह्सिरू फ़ी सबीलिल्लाहि ला यस्ततीअू-न ज़र्बन फ़िल्अर्ज़ि ز यह्सबुहुमुल्-जाहिलु अग़्निया-अ मिनत्तअफ़्फ़ुफ़ि ج तअ्-रिफ़ुहुम् बि सीमाहुम् ج ला यस्अलूनन्ना-स इल्हाफ़न् ط व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़ इन्नल्ला-ह बिही अलीम ★ ● (२७३) अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् बिल्लैलि वन्नहारि सिर्रव-व अलानि-य-तन् फ़ लहुम् अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् ج व ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ▨ (२७४)

الخبيث منه تنفقون ولستم بأخذيه الا ان تغمضوا فيه
واعلموا ان الله غني حميد ۝ الشيطن يعدكم الفقر و
يأمركم بالفحشاء والله يعدكم مغفرة منه وفضلا والله
واسع عليم ۝ يؤتي الحكمة من يشاء ومن يؤت الحكمة فقد
اوتي خيرا كثيرا وما يذكر الا اولوا الالباب ۝ وما انفقتم من
نفقة او نذرتم من نذر فان الله يعلمه وما للظلمين من
انصار ۝ ان تبدوا الصدقت فنعما هي وان تخفوها وتؤتوها
الفقراء فهو خير لكم ويكفر عنكم من سياتكم والله بما تعملون
خبير ۝ ليس عليك هدىهم ولكن الله يهدي من يشاء وما
تنفقوا من خير فلانفسكم وما تنفقون الا ابتغاء وجه الله
وما تنفقوا من خير يوف اليكم وانتم لا تظلمون ۝ للفقراء
الذين احصروا في سبيل الله لا يستطيعون ضربا في الارض
يحسبهم الجاهل اغنياء من التعفف تعرفهم بسيمهم لا
يسئلون الناس الحافا وما تنفقوا من خير فان الله به عليم ۝
الذين ينفقون اموالهم باليل والنهار سرا وعلانية فلهم
اجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝
الذين ياكلون الربوا لا يقومون الا كما يقوم الذي يتخبطه

★रु ३७/५ आ ७ ● रुब्अ् १/४ ▨ व. मंजिल

मोमिनो ! जो पाकीजा और उम्दा माल तुम कमाते हो, और जो चीजें हम तुम्हारे लिए जमीन से निकालते है, उन मे से (खुदा की राह मे) खर्च करो और बुरी और ना-पाक चीजें देने का इरादा न करना कि (अगर वे तुम्हे दी जाए तो) इस के अलावा कि (लेते वक्त) आखे बन्द कर लो, उन को कभी न लो और जान रखो कि खुदा बे-परवा (और) तारीफ के काबिल है। (२६७) (और देखना) शैतान (का कहा न मानना, वह) तुम्हें तगदस्ती का खौफ दिलाता और बे-हयाई के काम करने को कहता है और खुदा तुम से अपनी बख्शिश और रहमत का वायदा करता है और खुदा बड़ी वुस्अत वाला (और) सब कुछ जानने वाला है। (२६८) वह जिस को चाहता है दानाई बख्शता है और जिस को दानाई मिली, बेशक उस को बडी नेमत मिली और नसीहत तो वही लोग क़ुबूल करते है, जो अक्लमंद है। (२६९) और तुम (खुदा की राह मे) जिस तरह का खर्च करो, या कोई नज्र मानो[1] खुदा उस को जानता है और जालिमो का कोई मददगार नही। (२७०) अगर तुम खैरात जाहिर मे दो तो वह भी खूब है, और अगर छिपे दो और दो भी जरूरतमंद को, तो वह खूबतर है और (इस तरह का देना) तुम्हारे गुनाहो को भी दूर कर देगा और खुदा को तुम्हारे कामो की खबर है। (२७१) (ऐ मुहम्मद !) तुम उन लोगो की हिदायत के जिम्मेदार नही हो, बल्कि खुदा ही जिस को चाहता है, हिदायत बख्शता है और (मोमिनो !) तुम जो माल खर्च करोगे तो उस का फ़ायदा तुम्ही को है और तुम जो खर्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दे दिया जाएगा और तुम्हारा कुछ नुक़सान नही किया जाएगा। (२७२) (और हा, तुम जो खर्च करोगे तो) उन जरूरतमदो के लिए जो खुदा की राह मे रुके बैठे हैं और मुल्क मे किसी तरफ जाने की ताकत नही रखते और मागने मे शर्म खाते है, यहा तक कि न मागने की वजह से अनजान आदमी उन को मालदार ख्याल करता है और तुम कियाफे (अनुमान) से उन को साफ पहचान लो (कि हाजतमद है और शर्म की वजह से) लोगो से (मुह फोड कर और) लिपट कर नही माग सकते और तुम जो माल खर्च करोगे, कुछ शक नही कि खुदा उस को जानता है। (२७३)✶ ●

जो लोग अपना माल रात और दिन और छिपे और जाहिर (खुदा की राह मे) खर्च करते रहते है, उन का बदला परवरदिगार के पास है और उन को (कियामत के दिन) न किसी तरह का

१ नज्र के लिए यह शर्त है कि ऐसे काम की नज्र मानी जाए, जो कुछ शक्लो मे फर्ज भी हो, जैसे नमाज और रोज़ा और सद्का देने की नज्र। नमाज़ तो हर दिन पाचो वक्त की फर्ज है और रमज़ान के रोजे भी फर्ज है और सद्के की शक्ल मे से जकात फर्ज है। ऐसी चीजो की नज्र सही है और अगर किसी ऐसी चीज की नज्र मानी जाए, जो किसी शक्ल मे फर्ज नही है, वह बातिल (गलत) है।

२ जालिमो से वे लोग मुराद हैं, जो खुदा की राह मे माल नही खर्च करते या नज्र को पूरा नही करते और अगर खर्च करते हैं तो दिखावे के लिए या बुरे कामो मे खर्च करते हैं।

अल्लज़ी-न यअ्कुलूनर्रिबा ला यकूमू-न इल्ला कमा यकूमुल्लज़ी य-त-ख़ब्बतुहुश् शैतानु मिनल्मस्सि ज़ालि-क बि अन्नहुम् कालू इन्नमल्बैअु मिस्लुर्रिबा व अहल्ललल्लाहुल्बै-अ व हर्रमर्रिबा फ मन् जा-अहू मौअि़ज़तुम्-मिर्रब्बिही फन्तहा फ लहू मा स-लफ व अम्रुहू इलल्लाहि व-मन् आ-द फ उला-इ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा ख़ालिदून (२७५) यम्हकुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्स-द-काति वल्लाहु ला युहिब्बु कुल-ल कफ़्फ़ारिन् असीम (२७६) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व अक़ामुस्सला-त व आतवुज्ज़का-त लहुम् अज्रुहुम् अिन-द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (२७७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तकुल्ला-ह व-ज़रू मा बक़ि-य मिनर्रिबा इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (२७८) फ़ इल्लम् तफ़्अ़लू फ़अ्ज़नू बि हर्बिम्-मिनल्लाहि व रसूलिही व इन् तुब्तुम् फ लकुम् रुऊसु अम्वालिकुम् ला तज़्लिमू-न व ला तुज़्लमून (२७९) व इन् का-न ज़ू अुस्रतिन् फ़ नज़िरतुन् इला मैस-रतिन् व अन् तसद्दकू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (२८०) वत्तकू यौमन् तुर्जअू-न फीहि इलल्लाहि सुम-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्-मा क-स-बत् व हुम् ला युज़्लमून ★ (२८१)

تلک الرسل ٣ — ٣٧ — البقرة ٢

الشيطن من المس ذلك بانهم قالوا انما البيع مثل الربوا
واحل الله البيع وحرم الربوا فمن جاءه موعظة من
ربه فانتهى فله ما سلف وامره الى الله ومن عاد فاولئك
اصحب النار هم فيها خلدون ۝ يمحق الله الربوا ويربي
الصدقت والله لا يحب كل كفار اثيم ۝ ان الذين امنوا و
عملوا الصلحت واقاموا الصلوة واتوا الزكوة لهم اجرهم
عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ يايها الذين
امنوا اتقوا الله وذروا ما بقي من الربوا ان كنتم مؤمنين ۝
فان لم تفعلوا فاذنوا بحرب من الله ورسوله وان تبتم
فلكم رءوس اموالكم لا تظلمون ولا تظلمون ۝ وان كان
ذو عسرة فنظرة الى ميسرة وان تصدقوا خير لكم ان كنتم
تعلمون ۝ واتقوا يوما ترجعون فيه الى الله ثم توفى كل
نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ۝ يايها الذين امنوا اذا
تداينتم بدين الى اجل مسمى فاكتبوه وليكتب بينكم
كاتب بالعدل ولا ياب كاتب ان يكتب كما علمه الله
فليكتب وليملل الذي عليه الحق وليتق الله ربه ولا
يبخس منه شيئا فان كان الذي عليه الحق سفيها او

منزل ١

व. लाज़िम ★ रु ३८/६ आ ८

ख़ौफ होगा और न गम ।¹ (२७४) जो लोग सूद खाते हैं, वे (क़ब्रों मे) इस तरह (हवास खोये हुए) उठेंगे जैसे किसी को जिन्न ने लिपट कर दीवाना बना दिया हो, यह इस लिए कि वे कहते हैं कि सौदा बेचना भी तो (नफा के लिहाज़ मे) वैसा ही है जैसे सूद (लेना)² हालाकि सौदे को ख़ुदा ने हलाल किया है और सूद को हराम तो जिस शख़्स के पास ख़ुदा की नसीहत पहुची और वह (सूद लेने से) बाज आ गया, तो जो पहले हो चुका, वह उस का, और (कियामत में) उस का मामला ख़ुदा के सुपुर्द और जो फिर लेने लगा, तो ऐसे लोग दोज़ख़ी हैं कि हमेशा दोज़ख़ मे (जलते) रहेगे । (२७५) ख़ुदा सूद को ना-बूद (यानी बे-बरकत) करता और ख़ैरात (की बरकत) को बढाता है और ख़ुदा किसी ना-शुक्रे गुनाहगार को दोस्त नही रखता । (२७६) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते और नमाज़ पढते और जकात देते रहे, उन को उन के कामो का बदला ख़ुदा के यहा मिलेगा और (कियामत के दिन) उन को न कुछ ख़ौफ होगा और न वे गमनाक होंगे । (२७७) मोमिनो ! ख़ुदा से डरो और अगर ईमान रखते हो तो जितना सूद बाकी रह गया है उस को छोड दो । (२७८) अगर ऐसा न करो, तो ख़बरदार हो जाओ (कि तुम) ख़ुदा और रसूल से जग करने के लिए (तैयार होते हो) और अगर तौबा कर लोगे (और सूद छोड दोगे) तो तुम को अपनी असल रकम लेने का हक है, जिस मे न औरों का नुक्सान, और न तुम्हारा नुक्सान । (२७९) और अगर कर्ज लेने वाला तगदस्त हो तो (उसे) फराख़ी (के हासिल होने) तक मोहलत (दो) और अगर (कर्ज रकम) बख़्श ही दो, तो तुम्हारे लिए ज्यादा अच्छा है, बशर्ते कि समझो । (२८०) और उस दिन से डरो, जबकि तुम ख़ुदा के हुजूर मे लौट कर जाओगे और हर शख़्स अपने आमाल का पूरा-पूरा बदला पायेगा और किसी का कुछ नुक्सान न होगा । (२८१) ★

---

१ ख़ैरात का बयान ख़त्म हुआ, अब आगे सूद को हराम फरमाया, जब ख़ैरात की ताकीद है, तो कर्ज देना ना उस से ताकीदी है, फिर सूद क्यो लीजिए ।

२ अरब मे सूद दो तरह से चलता था । एक कर्ज पर, दूसरे बैअ पर । कर्ज पर इस तरह कि रुपया देने वाला किसी को एक मुद्दत के लिए रुपए देता । जब वह मुद्दत ख़त्म हो जाती, तो कर्जदार से रुपए तलब करता । उस के पास रुपया न होता और वह मोहलत मागता तो कर्ज पर सूद बढा दिया जाता और उस को असल रकम मे शामिल कर के ज्यादा मोहलत दी जाती । इसी तरह सूद पर सूद भी हो जाता और ज्यादा मशहूर यही सूद था । बैअ पर इस तरह कि कोई शख़्स किसी के पास कोई चीज़ बेचता और उसी किस्म की चीज़ ख़रीदने वाले से बदले मे लेता । हजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि गेहू को गेहू के बदले और नमक को नमक के बदले और जौ को जौ के बदले और खजूर को खजूर के बदले और चादी को चादी के बदले और सोने को सोने के बदले बेचो तो बराबर-बराबर बेचो यानी ज्यादा लेना-देना सूद में दाखिल है और ये दोनो किस्म के सूद हराम हैं । सूद खाने वाले कहते थे कि कर्ज पर सूद लेना और सौदागरी करना एक-सी चीजे है । सौदागरी में भी नफे का मक्सद होता है और सूद से भी नफे का मक्सद होता है, पस नफा के लिहाज से दोनो मे कुछ फर्क नहीं मगर अल्लाह तआला ने सूद को हराम किया है, क्योकि यह मुरव्वत, एहसान और सुलूक के ख़िलाफ है । उस मे इस्लाम हमदर्दी और मदद करने की बहुत ताकीद फरमायी है और कर्ज बिला सूद, जिस को कर्जे हसना कहते हैं एहसान मे दाखिल है । सौदागरी मे जितना नफा भी हासिल किया जाए, वह हलाल है, मगर सूद का एक पैसा भी हराम है, क्योकि तंगदस्त मुसलमान एहसान और सुलूक के हकदार और इस काबिल होते है कि उन को कर्ज दे कर उन की मदद की जाए, न यह कि उन से सूद लेकर उन का ख़ून पिया जाए ।

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तदायन्तुम् बि दैनिन् इला अ-जलिम्मुसम्मन् फक्तुबूहु ط वल्यक्तुब् बैनकुम् कातिबुम्-बिल्अद्लि لا व ला यअ्-ब कातिबुन् अंय्यक्तु-ब कमा अल्लमहुल्लाहु फल्यक्तुब् ج वल्युम्लिलिल्लज़ी अलैहिल्हक़्क़ु वल्यत्तकिल्ला-ह रब्बहू व ला यब्खस् मिन्हु शैअन् ط फ़ इन् कानल्लज़ी अलैहिल्हक़्क़ु सफ़ीहन् औ ज़ओफन् औ ला यस्ततीअु अय्युमिल्-ल हु-व फल्युम्लिल् वलिय्युहू बिल्अद्लि ط वस्तश्हिदू शहीदैनि मिर्रिजालिकुम् ج फ इल्लम् यकूना रजुलैनि फ रजुलुंव्वम्रअतानि मिम्मन् तर्ज़ौ - न मिनश्शुहदा-इ अन् तज़िल्-ल इह्दाहुमा फ़ तुज़क्कि-र इह्दाहुमल्-उख़्रा ط व ला यअ्बश्शुहदा-उ इज़ा मा दुअू ط व ला तस्अमू अन् तक्तुबूहु स़गीरन् औ कबीरन् इला अ - जलिही ط ज़ालिकुम् अक्सतु अिन्दल्लाहि व अक़्वमु लिश्शहादति व अद्ना अल्ला तर्ताबू इल्ला अन् तकू-न तिजारतन् हाज़ि-र-तन् तुदीरूनहा बैनकुम् फ़-लै-स अलैकुम् जुनाहुन् अल्ला तक्तुबूहा ط व अश्हिदू इज़ा तबायअ्-तुम् व ला युज़ार-र कातिबुंव-व ला शहीदुन् ط व इन् तफ्-अलू फ़ इन्नहू फुसूकुम्बिकुम् ط वत्तकुल्ला - ह ط व युअल्लिमुकुमुल्लाहु ط वल्लाहु बि कुल्लि शैइन् अलीम (२८२) व इन् कुन्तुम् अला सफरिंव्वलम् तजिदू कातिबन् फरिहानुम्-मक़्बूज़तुन् ط फ इन् अमि-न बअ्-ज़ुकुम् बअ्-ज़न् फल्युअद्दिल्लज़िअ्-तुमि-न अमानतहू वल्यत्तकिल्ला - ह रब्बहू ط व ला तक्तुमुश्शहाद - त ط व मंय्यक्तुम्हा फ़ इन्नहू आसिमुन् कल्बुहू ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न अलीम ★ (२८३) लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फिल्अर्जि ط व इन् तुब्दू मा फ़ी अन्फुसिकुम् औ तुख्फूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु ط फ़-यग्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअज़्ज़िबु मंय्यशा-उ ط वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् क़दीर (२८४)

تلك الرسل ٣ ٣٨ البقرة ٢

ضعيفا او لا يستطيع ان يمل هو فليملل وليه بالعدل و
استشهدوا شهيدين من رجالكم فان لم يكونا رجلين
فرجل وامراتن ممن ترضون من الشهداء ان تضل
احدىهما فتذكر احدىهما الاخرى ولا ياب الشهداء اذا ما
دعوا ولا تسئموا ان تكتبوه صغيرا او كبيرا الى اجله ذلكم
اقسط عند الله واقوم للشهادة وادنى الا ترتابوا الا ان تكون
تجارة حاضرة تديرونها بينكم فليس عليكم جناح الا
تكتبوها واشهدوا اذا تبايعتم ولا يضار كاتب ولا شهيد
وان تفعلوا فانه فسوق بكم واتقوا الله ويعلمكم الله والله
بكل شيء عليم ۝ وان كنتم على سفر ولم تجدوا كاتبا فرهن
مقبوضة فان امن بعضكم بعضا فليؤد الذي اؤتمن امانته
وليتق الله ربه ولا تكتموا الشهادة ومن يكتمها فانه اثم
قلبه والله بما تعملون عليم ۝ لله ما في السموت وما في
الارض وان تبدوا ما في انفسكم او تخفوه يحاسبكم به الله
فيغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء والله على كل شيء
قدير ۝ امن الرسول بما انزل اليه من ربه والمؤمنون
كل امن بالله وملئكته وكتبه ورسله لا نفرق بين

★रु. ३९/७ आ/ २

मोमिनो ! जब तुम आपस मे किसी तै मुद्दत के लिए कर्ज़ का मामला करने लगो, तो उस को लिख लिया करो और लिखने वाला तुम मे (किसी का नुक़्सान न करे, बल्कि) इंसाफ से लिखे और ही लिखने वाला जैसा उसे ख़ुदा ने सिखाया है, लिखने से इन्कार भी न करे और दस्तावेज लिख दे। और जो शख़्स कर्ज ले, वही (दस्तावेज़ का) मज़्मून बोल कर लिखवाए और ख़ुदा से कि उस का मालिक है, ख़ौफ करे और कर्ज रकम मे से कुछ कम न लिखवाए और, अगर कर्ज लेने वाला बे-अक्ल या जईफ (कमजोर, बूढा) हो या मज्मून लिखवाने की काबिलियत न रखता हो, तो जो उस का वली हो, वह इसाफ के साथ मज्मून लिखवाए और अपने मे से दो मर्दो को (ऐसे मामले के) गवाह कर लिया करो और अगर दो मर्द न हो, तो एक मर्द और दो औरतें, जिन को तुम गवाह पसन्द करो, (काफी) है कि अगर उन मे से एक भूल जाएगी, तो दूसरी उसे याद दिलाएगी और जब गवाह (गवाही के लिए) तलब किए जाए तो इकार न करे और कर्ज़ थोडा हो या बहुत उस (की दस्तावेज) के लिखने-लिखाने मे काहिली न करना। यह बात ख़ुदा के नजदीक इंसाफ के करीब है और गवाही के लिए भी यह बहुत सही तरीका है। इस से तुम्हे किसी तरह का शक व शुब्हा न पडेगा। हा, अगर सौदा हाथ के हाथ हो, जो तुम आपस मे लेते-देते हो, तो अगर (ऐसे मामले की) दस्तावेज़ न लिखो तो तुम पर कुछ गुनाह नही और जब ख़रीद व फरोख़्त किया करो तो भी गवाह कर लिया करो और दस्तावेज के लिखने वाले और गवाह (मामला करने वालो का) किसी तरह का नुक्सान न करे। अगर तुम (लोग) ऐसा करो तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात है और ख़ुदा से डरो और (देखो कि) वह तुम को (कैसी मुफीद बाते) सिखाता है और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (२८२) और अगर तुम सफर पर हो और (दस्तावेज़) लिखने वाला मिल न सके तो (कोई चीज) रेहन बा-कब्जा रख कर (कर्ज़ ले लो) और अगर कोई किसी को अमीन समझे (यानी रेहन के बगैर कर्ज़ दे दे) तो अमानतदार को चाहिए कि अमानत वाले की अमानत अदा कर दे और ख़ुदा से जो उस का परवरदिगार है, डरे और (देखना,) गवाही को मत छिपाना, जो उस को छिपाएगा वह दिल का गुनाहगार होगा और ख़ुदा तुम्हारे सब कामो को जानता है। (२८३)☆

जो कुछ आसमानो मे है और जो कुछ ज़मीन मे है, सब ख़ुदा ही का है। तुम अपने दिलो की बात को जाहिर करोगे तो, या छिपाओगे तो, ख़ुदा तुम से उस का हिसाब लेगा फिर वह जिसे चाहे मग्फिरत करे और जिसे चाहे अजाब दे और ख़ुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (२८४) (२८

★रु ३९/७ आ/ २

आम-नर्रसूलु बिमा उनजि-ल इलैहि मिर्रब्बिही वल्मुअ्मिनून ط कुल्लुन् आम-न बिल्लाहि व मला-इकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही قف ला नुफर्रिकु बै-न अ-ह्दिम्-मिर्रुसुलिही قف व क़ालू समिअ्-ना व अ-तअ्-ना ق गुफ्रा-न-क रब्बना व इलैकल्मसीर (२८५) ला युकल्लिफुल्लाहु • नफ्सन् इल्ला वुस्अ़हा लहा मा क-स-बत् व अलैहा मक्त-स-बत् ط रब्बना ला तुआखिज्ना इन्नसीना औ अख़्तअ्ना ج रब्बना व ला तह्मिल् अ़लैना इस्रन् कमा हमल्तहू अ-लल्लज़ी-न मिन् - कब्लिना ج रब्बना व ला तुह़म्मिल्ना मा ला ताक-तृ लना बिही ج वअ्-फु अ़न्ना وقفه वग्फिर - लना وقفه वर्हम्ना وقفه अन् - त मौलाना फन्सुर्ना अ-लल्-क़ौमिल्-काफिरीन ★ (२८६)

أحد من رسله وقالوا سمعنا وأطعنا غفرانك ربنا وإليك
المصير ⊙ لا يكلف الله نفسا إلا وسعها لها ما كسبت وعليها
ما اكتسبت ربنا لا تؤاخذنا إن نسينا أو أخطأنا ربنا ولا
تحمل علينا إصرا كما حملته على الذين من قبلنا ربنا ولا
تحملنا ما لا طاقة لنا به واعف عنا واغفر لنا وارحمنا
أنت مولىنا فانصرنا على القوم الكافرين ⊙

سورة آل عمران مدنية وهي مائتا آية وعشرون ركوعا

بسم الله الرحمن الرحيم

الم ⊙ الله لا إله إلا هو الحي القيوم ⊙ نزل عليك الكتب
بالحق مصدقا لما بين يديه وأنزل التورىة والإنجيل ⊙ من
قبل هدى للناس وأنزل الفرقان إن الذين كفروا بآيت
الله لهم عذاب شديد والله عزيز ذو انتقام ⊙ إن الله لا
يخفى عليه شيء في الأرض ولا في السماء ⊙ هو الذي
يصوركم في الأرحام كيف يشاء لا إله إلا هو العزيز الحكيم ⊙
هو الذي أنزل عليك الكتب منه آيت محكمت هن أم
الكتب وأخر متشبهت فأما الذين في قلوبهم زيغ فيتبعون
ما تشابه منه ابتغاء الفتنة وابتغاء تأويله وما يعلم تأويله

३ सूरतु आलि इम्रान ८९

(मदनी) इस सूर. मे अ़रबी के १५३२६ अक्षर, ३५४२ शब्द, २०० आयते और २० रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ् - लाम् - मीम् ⅼ (१) अल्लाहु ला इला - ह इल्ला हु-व -ल्हय्युल्कय्यूम ط (२) नज़्ज़-ल अ़लैकल्किता-ब बिल्हक्कि मुसद्दिकल्लिमा बै-न यदैहि व अन्जलत्तौरा-तृ वल्-इन्जील ⅼ (३) मिन् कब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज-लल्-फुर्कान ط इन्नल्लज़ी-न क-फरू बि आयातिल्लाहि लहुम् अज़ाबुन् शदीदुन् ط वल्लाहु अज़ीजुन् जुन्तिकाम (४) इन्नल्ला-ह ला यख़्फा अलैहि शैउन् फिल्अर्जि व ला फिस्समा-इ ط (५) हुवल्लज़ी युसव्विरुकुम् फ़िल्अर्हामि कै-फ़ यशा-उ ط ला इला-ह इल्ला हुवल्-अज़ीजुल्-हकीम (६)

★रु ४०/८ आ ३

के) रसूल उस किताब पर जो उन के परवरदिगार की तरफ़ से उन पर नाज़िल हुई, ईमान रखते हैं और मोमिन भी सब खुदा पर और उस के फरिश्तो पर और उस की किताबो पर और उस के पैगम्बरो पर ईमान रखते है (और कहते हैं कि) हम उस के पैगम्बरो मे किसी मे कुछ फर्क नही करते। और वे (खुदा से) अर्ज़ करते है कि हम ने (तेरा हुक्म) सुना और कुबूल किया। ऐ परवरदिगार! हम तेरी बख्शिश मागते है और तेरी ही तरफ लौट कर जाना है। (२८५) खुदा किसी शख्स को उस की ताकत से ज्यादा तक्लीफ नही देता। अच्छे काम करेगा तो उस को उन का फायदा मिलेगा, बुरे करेगा तो उसे उन का नुक्सान पहुंचेगा। ऐ परवरदिगार! अगर हम से भूल या चूक हो गयी हो तो हमारी पकड़ न कीजियो, ऐ परवरदिगार! हम पर ऐसा बोझ न डालियो, जैसा तूने हम से पहले लोगो पर डाला था। ऐ परवरदिगार! जितना बोझ उठाने की हम मे ताकत नही, उतना हमारे सर पर न रखियो और (ऐ परवरदिगार!) हमारे गुनाहो से दरगुज़र कर और हमे बख्श दे और हम पर रहम फरमा, तू ही हमारा मालिक है और हम को काफ़िरो पर गालिब फरमा। (२८६) ★

---

३ सूरः आले इम्रान ८९

सूर. आले इम्रान मदनी है और इस मे दो सौ आयते और बीस रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ्-लाम्-मीम् (१) खुदा, (जो माबूदे बरहक है) उस के सिवा कोई इबादत के लायक नही, ज़िन्दा, हमेशा रहने वाला (२) उसने (ऐ मुहम्मद सल्ल०!) तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की जो पहली (आसमानी) किताबो की तस्दीक करती है और उसी ने तौरात और इन्जील नाज़िल की। (३) (यानी) लोगो की हिदायत के लिए पहले (तौरात और इन्जील उतारी) और (फिर कुरआन जो हक और बातिल को) अलग-अलग कर देने वाला (है,) नाज़िल किया। जो लोग खुदा की आयतो से इन्कार करते हैं, उन को सख्त अज़ाब होगा। और खुदा ज़बरदस्त (और) बदला लेने वाला है। (४) खुदा (ऐसा खबर रखने वाला और देखने वाला है कि) कोई चीज़ उस से छिपी नही, न जमीन मे, न आसमान मे। (५) वही तो है जो (मा के पेट मे) जैसी चाहता है, तुम्हारी शक्ले बनाता है। उस गालिब हिक्मत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक नही। (६) वही तो

★रु ४०/८ आ ३

हुवल्लज़ी अन्ज-ल अलैकल्किता-ब मिन्हु आयातुम्-मुह्कमातुन् हुन-न उम्मुल्-किताबि व उ-ख़रु मु-त-शाबिहातुन् ط फ अम्मल्लज़ी-न फ़ी कुलूबिहिम् ज़ैगुन् फ़यत्तबिअू-न मा तशाब-ह मिन्हुब्तिग़ा-अल्-फ़ित्नति वब्तिग़ा-अ तअ्वीलिही ج व मा यअ्-लमु तअ्वीलहू इल्लल्लाहु वर्रासिख़ू-न फ़िल्अिल्मि यकूलू-न आमन्ना बिही لا कुल्लुम्मिन् अिन्दि रब्बिना ج व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्-अल्बाब (७) रब्बना ला तुज़िग् कुलूबना बअ्-द इज़् हदैतना व हब् लना मिल्लदुन्-क रह्-म-तुन् ج इन्न-क अन्तल्वह्हाब (८) रब्बना इन्न-क जामिअुन्नासि लि यौमिल्ला रै-ब फ़ीहि ط इन्नल्ला-ह ला युख़्लिफ़ुल्-मीआद ★ (९) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लन् तुग्नि-य अन्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् ط व उला-इ-क हुम् वकूदुन्नार لا (१०) क-दअ्बि आलि फ़िर्औन لا वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ط कज़्ज़बू बि आयातिना ج फ अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बि ज़ुनूबिहिम् ط वल्लाहु शदीदुल्-अिक़ाब (११) कुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू सतुग़्लबू-न व तुह्शरू-न इला जहन्नम ط व बिअ्सल्मिहाद (१२) क़द् का-न लकुम् आयतुन् फ़ी फ़िअतैनिल-त-कता ط फ़ि-अतुन् तुक़ातिलु फ़ी सबीलिल्लाहि व उख़्रा काफ़िरतुय्यरौनहुम् मिस्लैहिम् रअ्यल्अैनि ط वल्लाहु युअय्यिदु बिनस्रिही मय्यशा-उ ط इन-न फ़ी ज़ालि-क ल अिब्रतल्लि-उलिल्-अब्सार (१३) ज़ुय्यि-न लिन्नासि हुब्बुश्श-ह-वाति मिनन्निसा-इ वल्बनी-न वल्क़नातीरिल्-मुक़न्त़-रति मिनज़्ज़-हबि वल्फ़िज़्ज़ति वल्-ख़ैलिल्-मुसव्वमति वल्अन्आमि वल्हर्सि ط ज़ालि-क मताअुल्-हयातिद्दुन्या ج वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुलमआब (१४) कुल् अ उनब्बिउकुम् बि ख़ैरिम्मिन् ज़ालिकुम् ط लिल्लज़ीनत्तक़ौ अिन-द रब्बिहिम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व अज़्वाजुम्-मुतह्हरतु व-रिज़्वानुम्-मिनल्लाहि ط वल्लाहु बसीरुम्-बिल्अिबाद ج (१५) अल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना इन्नना आमन्ना फ़ग़्फ़िर्लना ज़ुनूबना व क़िना अज़ाबन्नार ج (१६)

إِلَّا اللَّهُ ۗ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا ۗ
وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا
وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ
النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَ
أُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۝ كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝
قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ
الْمِهَادُ ۝ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُم مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ
بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ زُيِّنَ لِلنَّاسِ
حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۗ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الْمَآبِ ۝ قُلْ أَؤُنَبِّئُكُم بِخَيْرٍ مِّن ذَٰلِكُمْ ۚ
لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝ الَّذِينَ
يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

व न वी स — व मज़िल व लाज़िम — ★रु. १/९ आ ९

है, जिस ने तुम पर किताव उतारी, जिस की कुछ आयते मुह्कम हैं (और) वही अस्ल किताब है और कुछ मुतशाबेह[1] है, तो जिन लोगो के दिल मे टेढ है, वे मुतशाबेह की पैरवी करते हैं ताकि फित्ने फैलाए ▨ और असली मुराद खुदा के सिवा कोई नही जानता ▨ और जो लोग इल्म मे कामिल हैं, वे यह कहते है कि हम उन पर ईमान लाये, ये सब हमारे परवरदिगार की तरफ से है और नसीहत तो अक्लमद ही कुबूल करते हैं। (७) ऐ परवरदिगार! जब तूने हमे हिदायत बख्शी है तो इस के बाद हमारे दिलो मे टेढ न पैदा कर दीजियो और हमे अपने यहा से नेमत अता फरमा तू तो बडा अता फरमाने वाला है। (८) ऐ परवरदिगार! तू उस दिन, जिस (के आने) मे कुछ भी शक नही, सब लोगो को (अपने हुजूर मे) जमा कर लेगा। बेशक खुदा वायदे के खिलाफ नही करता। (९)★

जो लोग काफिर हुए (उस दिन) न तो उन का माल ही खुदा (के अजाब) मे उन को बचा सकेगा और न उन की औलाद ही (कुछ काम आयेगी) और ये लोग जहन्नम की आग का ईंधन होगे। (१०) इन का हाल भी फिरऔनियो और उन से पहले के लोगो का-सा होगा, जिन्होंने हमारी आयतो को झुठलाया था, तो खुदा ने उन को उन के गुनाहो की वजह से (अजाब मे) पकड लिया था और खुदा सख्त अजाब करने वाला है। (११) (ऐ पैगम्बर!) काफिरो से कह दो कि तुम (दुनिया मे भी) बहुत जल्द मग्लूब हो जाओगे और (आखिरत मे) जहन्नम की तरफ हांके जाओगे और वह बुरी जगह है। (१२) तुम्हारे लिए दो गिरोहो मे, जो (बद्र की लडाई के दिन) आपस मे भिड गये (खुदा की कुदरत की शानदार) निशानी थी। एक गिरोह (मुसलमानो का था, वह) खुदा की राह मे लड रहा था और दूसरा गिरोह (काफिरो का था, वह) उन को अपनी आंखो से अपने-से दो गुना देख रहा था और खुदा अपनी मदद से जिस को चाहता है, मदद देता है जो बसारत वाले (खुली आंख वाले) हैं उन के लिए इस (वाकिए) मे बडा सबक है।[1] (१३) लोगो को उन की ख्वाहिशो की चीजे यानी औरते और बेटे और सोने और चादी के बडे-बडे ढेर और निशान लगे हुए घोड़े और मवेशी और खेती-बाडी जीनतदार मालूम होती हैं, (मगर) ये सब दुनिया ही की जिन्दगी के सामान है और खुदा के पास बहुत अच्छा ठिकाना है। (१४) (ऐ पैगम्बर! उन से) कहो कि भला मैं तुम को ऐसी चीज बताऊ, जो इन चीज़ो से कही अच्छी हो, (सुनो), जो लोग परहेजगार है, उन के लिए खुदा के यहा (बहिश्त के) बाग है, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, उन मे वे हमेशा रहेगे और पाकीज़ा औरतें है और (सब से बढ कर) खुदा की खुश्नूदी और खुदा (अपने नेक) बन्दो को देख रहा है। (१५) जो खुदा से इल्तिजा करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम ईमान ले आए, सो हम को हमारे गुनाहो को माफ फरमा और दोजख़ के अजाब से बचा। (१६) ये वह

---

१ मुह्कम वे आयतें है, जिन के एक माने है और साफ और खुले हुए है और मुतशाबेह वे आयते है जिन के [illegible] माने हो सकते हो और मतलब के कई पहलू हो। हकीकत मे मुराद तो एक ही माने होते है, मगर [illegible] की तर्कीब कुछ ऐसी होती है कि दूसरे मानो की तरफ जेहन जाने लगता है। ऐसी आयतो के माने [illegible] नही करने चाहिए, क्योकि आयतो के माने अपनी राय से करने पर कडा डरावा आया है और [illegible] होते है। कुछ लोगो ने कहा, मुतशावेह वे आयतें हैं, जिन के माने मालूम नहीं हो सकते जैसे [illegible] जो सूरतो के शुरू मे आते है जैसे अलिफ़्-लाम्-मीम् और हा-मीम् वगैरह। एक हदीस मे आया है कि [illegible] अमल करो मुतशाबेह पर ईमान रखो।

[illegible]

▨ व. न वी स. ▨ व मजिल व लाज़िम ★रु. १/९ आ ९

अस्साबिरी-न वस्सादिक़ी-न वल्क़ानिती-न वल्मुन्फ़िक़ी-न वल्मुस्तग्फ़िरी-न बिल्अस्हार (१७) शहिदल्लाहु अन्नहू ला इला-ह इल्ला हु-व॥ वल्मला-इकतु व उलुल्अ़िल्मि क़ा-इमम्-बिल्क़िस्ति ط ला इला-ह इल्ला हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम ط ● (१८) इन्नद्दी-न अ़िन्दल्लाहिल्-इस्लामु व मख़्-त-ल-फ़ल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब इल्ला मिम्बअ़्-दि मा जा-अ हुमुल्अ़िल्मु बग्यम्बैनहुम् ط व मय्यक्फ़ुर् बि आयातिल्लाहि फ़ इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल्हिसाब (१९) फ़ इन् हाज्जू-क फ़-क़ुल् अस्लम्तु वज्हि-य लिल्लाहि व मनित्त-बअ़नि ط व क़ुल् लिल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब वल्-उम्मिय्यी-न अ अस्लम्तुम् ط फ़ इन् अस्लमू फ़-क़दिह्तदौ ج व इन् तवल्लौ फ़ इन्नमा अ़लैकल्बलाग़ु ط वल्लाहु बसीरुम्-बिल्अ़िबाद ★ (२०) इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बि आयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबिय्यी-न बिग़ैरि हक़्क़िंव॥- व यक़्तुलूनल्लज़ी-न यअ़्मुरू-न बिल्क़िस्ति मिनन्नासि ॥ फ़ बश्शिर्हुम् बि अ़ज़ाबिन् अलीम (२१) उला-इकल्लज़ी-न हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति ز व मा लहुम् मिनन्नासिरी-न (२२) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम्-मिनल्-किताबि युद्औ-न इला किताबिल्लाहि लि यह्कु-म बैनहुम् सुम्-म य-त-वल्ला फ़रीक़ुम्मिन्हुम् व हुम् मुअ़्-रिज़ून (२३) ज़ालि-क बि अन्नहुम् क़ालू लन् त-मस्स-नन्नारु इल्ला अय्यामम्-मअ़्दूदातिंव् ص व ग़र्रहुम् फ़ी दीनिहिम् मा कानू यफ़्तरून (२४) फ़-कै-फ़ इज़ा ज-मअ़्-नाहुम् लि यौमिल्-लारै-ब फ़ीहि व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम्मा क-स-ब-त व हुम् ला युज़्लमून (२५)

تلك الرسل ٣ — ٣١ — ال عمرن ٣

الصبرين والصدقين والقنتين والمنفقين والمستغفرين
بالاسحار ۝ شهد الله انه لا اله الا هو والملئكة واولوا العلم قائما
بالقسط لا اله الا هو العزيز الحكيم ۝ ان الدين عند الله
الاسلام وما اختلف الذين اوتوا الكتب الا من بعد ما جاءهم
العلم بغيا بينهم ومن يكفر بايت الله فان الله سريع الحساب ۝
فان حاجوك فقل اسلمت وجهي لله ومن اتبعن وقل للذين
اوتوا الكتب والامين ءاسلمتم فان اسلموا فقد اهتدوا وان
تولوا فانما عليك البلغ والله بصير بالعباد ۝ ان الذين يكفرون
بايت الله ويقتلون النبين بغير حق ويقتلون الذين يامرون
بالقسط من الناس فبشرهم بعذاب اليم ۝ اولئك الذين
حبطت اعمالهم في الدنيا والاخرة وما لهم من نصرين ۝
الم تر الى الذين اوتوا نصيبا من الكتب يدعون الى كتب الله
ليحكم بينهم ثم يتولى فريق منهم وهم معرضون ۝ ذلك بانهم
قالوا لن تمسنا النار الا اياما معدودت وغرهم في دينهم
ما كانوا يفترون ۝ فكيف اذا جمعنهم ليوم لا ريب فيه و
وفيت كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ۝ قل اللهم ملك
الملك تؤتي الملك من تشاء وتنزع الملك ممن تشاء وتعز

● नि १/२ ★ रु २/१० आ ११

लोग है जो (कठिनाइयो मे) सब्र करते और सच बोलते और इबादत मे लगे रहते और (खुदा की) राह में खर्च करते और सेहर के वक्तो मे गुनाहो की माफी मांगा करते हैं। (१७) खुदा तो इस बात की गवाही देता है कि उस के सिवा कोई माबूद नही और फरिश्ते और इल्म वाले लोग, जो इन्साफ़ पर कायम हैं, ये भी (गवाही देते है कि) उस गालिब हिक्मत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक नही।(१८)●दीन तो खुदा के नज़दीक इस्लाम है और अह्ले किताब ने जो (इस दीन से) इख्तिलाफ किया, तो इल्म हासिल होने के बाद आपस की ज़िद से किया और जो शख्स खुदा की आयतो को न माने, तो खुदा जल्द हिसाब लेने वाला और सज़ा देने वाला है। (१९) ऐ पैगम्बर! अगर ये लोग तुम से झगडने लगे, तो कहना कि मैं और मेरी पैरवी करने वाले तो खुदा के फरमा-बरदार हो चुके और अह्ले किताब और अन-पढ लोगो से कहो कि क्या तुम भी (खुदा के फरमाबरदार बनते और) इस्लाम लाते हो? अगर ये लोग इस्लाम ले आए तो बेशक हिदायत पा लें और अगर (तुम्हारा कहा) न माने, तो तुम्हारा काम सिर्फ खुदा का पैगाम पहुंचा देना है। और खुदा (अपने) बन्दो को देख रहा है। (२०)★

जो लोग खुदा की आयतो को नही मानते और नबियो को ना-हक कत्ल करते रहे है और जो इंसाफ करने का हुक्म देते है, उन्हे भी मार डालते है उन को दुख देने वाले अजाब की खुशखबरी सुना दो। (२१) ये ऐसे लोग हैं जिन के आमाल दुनिया और आखिरत दोनो मे बर्बाद है और उन का कोई मददगार नही (होगा)। (२२) भला तुम ने उन लोगो को नही देखा जिन को (खुदा की) किताब (यानी तौरात) दी गई और वे (उस) अल्लाह की किताब की तरफ बुलाये जाते है, ताकि वह (उन के झगडो का) उन मे फैसला कर दे तो एक फ़रीक उन मे से मुह बना कर फेर लेता है। (२३) यह इस लिए कि ये इस बात के कायल हैं कि (दोजख की) आग हमें कुछ दिन के सिवा छू ही न सकेगी और जो कुछ ये दीन के बारे मे बुहतान बाधते रहे हैं, उन ने उन को धोखे मे डाल रखा है। (२४) तो उस वक्त क्या हाल होगा, जब हम उन को जमा करेंगे, (यानी) उस दिन, जिस (के आने) में कुछ भी शक नही और हर नफ्स अपने आमाल का पूरा-पूरा बदला पाएगा और उन पर ज़ुल्म नही किया जाएगा। (२५) कहो कि ऐ खुदा! (ऐ) बादशाही के मालिक! तू जिस को चाहे बादशाही बख्शे और जिससे चाहे, बादशाही छीन ले और जिस को चाहे इज्जत दे और जिसे चाहे जलील करे। हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ है। और बेशक तू हर चीज़

(७७ का शेष)

२ इस आयत मे बद्र की लडाई की शक्ल बयान फरमायी है। बद्र एक जगह का नाम है जो मक्के और मदीने के दर्मियान है। इस लडाई मे मुसलमानो की तायदाद तीन सौ तेरह थी और काफिर उन से तिगुने यानी एक हजार के करीब थे। अल्लाह तआला ने काफिरो के दिल मे दहशत डालने के लिए उन की आखो में यह दिखाया कि मुसलमान उन से दोगुने यानी दो हज़ार के करीब है या यह कि काफिरो की तायदाद मुसलमानो [illegible] मुसलमानो से दोगुनी दिखायी दी यानी एक हजार के छ सौ छब्बीस ताकि मुसलमान काफिरो की असली [illegible] तायदाद से ज्यादा देख कर डर न जाए और भाग न खडे हो और दोगुनी तायदाद की [illegible] नही। चुनाचे फरमाया है कि एक सौ कदमो के मजबूत मुसलमान दो सौ काफिरो पर गालिब होंगे। [illegible] यही है कि काफिरो ने मुसलमानो को अपने से दोगुना देखा, न यह कि मुसलमानो ने काफिरो को अपने से दोगुना देखा। बहरहाल इस वाकिए मे खुदा की कुदरत की निशानी है कि मुसलमान जो तीन सौ [illegible] रहे और काफिर जो हज़ार के करीब थे, वे हार गये।

●नि १/२ ★रु २/१० आ ११

क़ुलिल्लाहुम-म मालिकलमुल्कि तुअ्तिलमुल्-क मन् तशा-उ व तन्जिअुलमुल्-क मिम्मन् तशा-उ ج व तुअिज्जु मन् तशा-उ व तुजिल्लु मन् तशा-उ ط बि यदिकलख़ैरु ط इन्न-क अला कुल्लि शैइन् क़दीर (२६) तूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि ج व तुख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्मय्यिति व तुख़्रिजुल् - मय्यि - त मिनल्हय्यि ج व तर्ज़ुक़ु मन् तशा-उ बिग़ैरि हिसाब (२७) ला यत्तख़िज़िल् - मुअ्मिनूनल् - काफ़िरी - न औलिया - अ मिन्दूनिल् - मुअ्मिनीन ج व मय्यफ़्अल् ज़ालि-क फ़-लै-स मिनल्लाहि फ़ी शैइन् इल्ला अन् तत्तक़ू मिन्हुम् तुक़ातन् ط व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू ط व इलल्लाहिल्मसीर (२८) क़ुल् इन् तुख़्फ़ू मा फ़ी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु यअ्-लम्हुल्लाहु ط व यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् क़दीर (२९) यौ-म तजिदु कुल्लु नफ़्सिम्मा अमिलत् मिन् ख़ैरिम् - मुह्ज़रव ج व मा अमिलत् मिन्सू - इन् ج त - वद्दु लौ अन् - न बैनहा व बैनहू अ-म - दम् - बईदन् ط व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू ط वल्लाहु रऊफ़ुम् - बिल्अिबाद ★(३०) क़ुल् इन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्ला - ह फ़त्तबिअूनी युह्बिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर्लकुम् ज़ुनूबकुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (३१) क़ुल् अतीअुल्ला-ह वर्रसूल ج फ़ इन् तवल्लौ फ़ इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्काफ़िरीन (३२) इन्नल्लाहस्तफ़ा आद-म व नूहव्-व आ-ल इब्राही-म व आ-ल अिम्रा-न अ-लल्-आलमीन لا (३३) ज़ुर्रिय्यतम्बअ्-ज़ुहा मिम्बअ्-ज़िन् ط वल्लाहु समीअुन् अलीम ج (३४) इज़ क़ालतिम-र-अतु अिम्रान रब्बि इन्नी नज़र्तु ल-क मा फ़ी बत्नी मुहर्ररन् फ़-त-क़ब्बल् मिन्नी ج इन्न-क अन्तस्-समीअुल्-अलीम (३५)

مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۖ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِی النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّيْلِ ۡ وَتُخْرِجُ
الْحَیَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَیِّ ۡ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ
دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِیْ
شَیْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۖ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۖ
وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝ قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِیْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ
يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ۖ وَيَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۖ وَاللّٰهُ عَلٰى
كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ
مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ
اَمَدًا بَعِيْدًا ۖ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۖ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ۝ قُلْ
اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۖ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۖ
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّیْ نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِیْ بَطْنِیْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّیْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

पर कादिर है। (२६) तू ही रात को दिन मे दाखिल करता और तू ही दिन को रात मे दाखिल करता है। तू ही बे-जान से जानदार पैदा करता और तू ही जानदार से बे-जान पैदा करता है। और तू ही जिस को चाहता है, बे-हिसाब रोज़ी देता है। (२७) मोमिनो को चाहिए कि मोमिनो के सिवा काफिरो को दोस्त न बनाएं और जो ऐसा करेगा, उस से खुदा का कुछ (अह्द) नही। हां अगर इस तरीके से तुम उन (की बुराई) से बचाव की शक्ल निकालो (तो हरज नही) और खुदा तुम को अपने (गज़ब) से डराता है और खुदा ही की तरफ (तुम को) लौट कर जाना है। (२८) (ऐ पैगम्बर! लोगो से) कह दो कि कोई बात तुम अपने दिलो मे छिपाओ या उसे ज़ाहिर करो खुदा उस को जानता है और जो कुछ आसमानो मे और जो कुछ ज़मीन मे है, उस को सब की खबर है और वह हर चीज पर कादिर है। (२९) जिस दिन हर शख्स अपने आमाल की नेकी को मौजूद पा लेगा और उन की बुराई को भी (देख लेगा), तो आरज़ू करेगा कि ऐ काश! उस मे और इस बुराई मे दूर का फासला हो जाता और खुदा तुम को अपने (गजब) से डराता है और खुदा अपने बन्दो पर निहायत मेहरबान है। (३०) ★

(ऐ पैगम्बर! लोगो से) कह दो कि अगर तुम खुदा को दोस्त रखते हो, तो मेरी पैरवी करो, खुदा भी तुम्हे दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (३१) कह दो कि खुदा और उसके रसूल का हुक्म मानो। अगर न माने तो खुदा भी काफिरो को दोस्त नही रखता। (३२) खुदा ने आदम और नूह और इब्राहीम के खानदान और इम्रान के खानदान को तमाम दुनिया के लोगो मे चुन लिया था।[1] (३३) इनमे कुछ-कुछ की औलाद थे।[2] और खुदा सुनने वाला और जानने वाला है। (३४) (वह वक्त याद करने के लायक है) जब इम्रान की बीवी ने कहा कि ऐ परवरदिगार! जो (बच्चा) मेरे पेट मे है, मै उस को तेरी नज्र करती हूं। उसे दुनिया के कामो से आजाद रखूगी। तू उसे मेरी तरफ से कुबूल फरमा। तू तो सुनने वाला (और) जानने वाला है। (३५) जब उनके यहा बच्चा पैदा हुआ, और जो कुछ

१ इम्रान से मुराद मरयम अलैहिस्सलाम के वालिद है, क्योकि इस के बाद उन्ही के किस्से का जिक्र किया गया है। कुछ कहते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वालिद मुराद है कि उन का नाम भी इम्रान था [illegible] कौल तर्जीह के काबिल है इस लिए कि इस के लिए करीना भी है।

२ जैसे इम्रान का खानदान इब्राहीम अलै० की औलाद था और इब्राहीम का खानदान नूह की औलाद था [illegible] नूह अलै० हज़रत आदम अलै० की औलाद थे।

फ-लम्मा व-ज़-अत्हा कालत् रब्बि इन्नी वजअ्-तुहा उन्सा ط वल्लाहु अअ्-लमु बिमा व-ज-अत् ط व लैसज़्-ज-करु कल्उन्सा ج व इन्नी सम्मैतुहा मर्-य-म व इन्नी उओज़ुहा बि-क व ज़ुर्रिय्यतहा मिनश्शैतानिर्रजीम (३६) फ त-कब्ब-ल लहा रब्बुहा वि कबूलिन् ह-सनिव-व अम्ब-तहा नबातन् ह़-स-नव् لا व कफ़्फ़लहा जकरिय्या ط कुल्लमा द-ख-ल अलैहा ज-करिय्यल्-मिह्रा-ब لا व-ज-द अिन्दहा रिज्कन् ج का-ल या मर्-यमु अन्ना लकि हाज़ा ط क़ालत् हु-व मिन् अिन्दिल्लाहि ط इन्नल्ला-ह यर्ज़ुकु मय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब (३७) हुनालि-क दआ ज-करिय्या रब्बहू ج का-ल रब्बि हब्ली मिल्लदुन-क ज़ुर्रिय्यतन् तय्यि-ब-तन् ج इन्न-क समीअुद्दुआ-इ (३८) फ-नादत्हुल्-मला-इकतु व हु-व का-इमुय्युसल्ली फिल्-मिह्राबि لا अन्नल्ला-ह युबश्शिरु-क बियह्या मुसद्दिकम्-बिकलिमतिम्-मिनल्लाहि व सय्यिदव-व हसूरव-व नबिय्यम्-मिनस्सालिहीन (३९) का-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली गुलामु व्-व क़द् ब-ल-गनियल्कि-बरु वम्र-अती आकिरुन् ط क़ा-ल कज़ालिकल्लाहु यफ़्अलु मा यशा-उ (४०) क़ा-ल रब्बिज्अल्ली आ-य-तन् ط क़ा-ल आयतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स-त अय्यामिन् इल्ला रम्ज़न् ط वज़्कुर्रब्ब-क कसीरंव्-व सब्बिह़ बिल्अशिय्यि वल्इब्कार ★ (४१) व इज् कालतिल्-मला-इकतु या मर्-यमु इन्नल्लाहस्तफ़ाकि व तह्ह-रकि वस्तफाकि अला निसा-इल-आलमीन (४२) या मर्यमुक्नुती लि रब्बिकि वस्जुदी वर्कअी मअर्राकिअीन (४३) ज़ालि-क मिन् अम्बा-इल्ग़ैबि नूहीहि इलैक ط व मा कुन्-त लदैहिम् इज युल्क़ू-न अक्लामहुम् अय्युहुम् यक्फुलु मर्यम ص व मा कुन्-त लदैहिम् इज् यख़्तसिमून (४४)

آل عمرٰن ٣ ۴۳ تلك الرسل ٣

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
وَضَعَتْ ۖ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي
أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَٰنِ الرَّجِيمِ ۝ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا
بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا
دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَٰمَرْيَمُ أَنَّىٰ
لَكِ هَٰذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝ فَنَادَتْهُ الْمَلَٰئِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي
الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَ
سَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِنَ الصَّٰلِحِينَ ۝ قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ
لِي غُلَٰمٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكَ اللَّهُ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ۖ قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ
النَّاسَ ثَلَٰثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۗ وَاذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ
وَالْإِبْكَٰرِ ۝ وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَٰئِكَةُ يَٰمَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَٰكِ وَطَهَّرَكِ
وَاصْطَفَٰكِ عَلَىٰ نِسَاءِ الْعَٰلَمِينَ ۝ يَٰمَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَ
اسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّٰكِعِينَ ۝ ذَٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ
إِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلَٰمَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ

★रु ४/१२ आ ११

उनके यहा पैदा हुआ था, खुदा को खूब मालूम था, तो वह कहने लगी कि परवरदिगार ! मेरे तो लडकी हुई है और (नज्र के लिए) लडका (मुनासिब था कि वह) लडकी की तरह (ना-तवा) नही होता।[1] और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसको और उसकी औलाद को मर्दूद शैतान से तेरी पनाह मे देती हू। (३६) तो परवरदिगार ने उसको पसंदीदगी के साथ कुबूल फरमाया और उसे अच्छी तरह परवरिश किया और ज़करीया को उसका मुतकफ्फिल (देख-भाल करने वाला) बनाया। जकरीया जब कभी इबादतगाह मे उसके पास जाते, तो उसके पास खाना पाते। (यह सूरत देख कर एक दिन मरयम से) पूछने लगे कि मरयम ! यह खाना तुम्हारे पास कहा से आता है ? वह बोली कि खुदा के यहा से (आता है)। बेशक खुदा जिसको चाहता है, बे-शुमार रोज़ी देता है। (३७) उस वक्त ज़करीया ने अपने परवरदिगार से दुआ की (और) कहा कि परवरदिगार ! मुझे अपनी जनाब से नेक औलाद अता फरमा। तू बेशक दुआ सुनने (और कुबूल करने) वाला है। (३८) वह अभी इबादतगाह मे खडे नमाज़ ही पढ रहे थे कि फरिश्तो ने आवाज दी कि (जकरीया !) खुदा तुम्हे यह्या की खुशखबरी देता है, जो खुदा के फैज़ (यानी ईसा) की तस्दीक करेंगे, और सरदार होगे और औरतो से चाव न रखने वाले और (खुदा के) पैगम्बर (यानी) नेक लोगो मे होगे। (३९) जकरीया ने कहा, ऐ परवरदिगार ! मेरे यहा लडका कैसे पैदा होगा कि मैं तो बूढा हो चुका हू और मेरी बीवी बाझ है। खुदा ने फरमाया, इसी तरह खुदा जो चाहता है करता है। (४०) जकरीया ने कहा कि परवरदिगार ! (मेरे लिए) कोई निशानी मुकर्रर फरमा। खुदा ने फरमाया निशानी यह है कि तुम लोगो से तीन दिन इशारे के सिवा बात न कर सकोगे। तो (उन दिनो मे) अपने परवरदिगार की ज्यादा से ज्यादा याद और सुबह व शाम उसकी तस्बीह करना। (४१)★

और जब फरिश्तो ने (मरयम से) कहा कि मरयम ! खुदा ने तुमको चुना है और पाक बनाया है और दुनिया की औरतो मे चुन लिया है। (४२) मरयम ! अपने परवरदिगार की फरमाबरदारी करना और सज्दा करना और रुकूअ करने वालो के साथ रुकूअ करना। (४३) (ऐ मुहम्मद !) ये बाते गैब की खबरो मे से है, जो हम तुम्हारे पास भेजते है और जब वे लोग अपने कलम (कुरआ के तौर पर) डाल रहे थे कि मरयम का मुतकफ्फिल कौन बने, तो तुम उनके पास नही थे और न उस वक्त ही उनके पास थे, जब वे आपस मे झगड रहे थे। (४४) (वह वक्त

---

१ हज़रत मरयम अलै० की वालिदा ने यह समझा था कि लडका पैदा होगा और इसी लिए नज्र मानी थी कि उस को दुनिया के कामो से आज़ाद कर के खुदा की इबादत और बैतुलमक्दिस की खिदमत के लिए फारिग रखूगी मगर उन को क्या मालूम था कि लडका होगा या लडकी। जब लडकी हुई तो ख्याल किया कि नज्र तो पूरी न हुई क्योकि दस्तूर था कि लडका नज्र किया जाए, तो कहने लगी कि परवरदिगार ! मेरे तो लडकी हुई है और इबादत की ताकत और मस्जिद की खिदमत के लिहाज़ से लडकी लडके जैसी नही होती है। मगर खुदा ने उस लडकी को कुबूल फरमाया। वह निहायत मुस्तैदी से खुदा की इबादत किया करती और दीन की बाते सोचती। खुदा ने उन को दुनिया की औरतो मे चुन लिया और उन के पेट से एक ऊचे किस्म के पैगम्बर यानी ईसा अलैहिस्सलाम भी पैदा किए।

★रु ४/१२ आ ११

इज़् क़ालतिल्-मला - इकतु या मर्-यमु इन्नल्ला - ह युबश्शिरुकि बिकलिमतिम्-मिन्हु- ق -स्मुहुलमसीहु ईसब्नु मर्य - म वजीहन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व मिनल्मुकर्रबीन ۙ (४५) व युकल्लिमुन्ना-स फ़िलमह्दि व कह्लंव-व मिनस्सालिहीन (४६) कालत् रब्बि अन्ना यकूनु ली व-लदुंव्-व लम् यम्सस्नी ब-शरुन् ط क़ा-ल कज़ालिकिल्लाहु यख़्लुकु मा यशा - उ ط इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़ इन्नमा यकूलु लहू कुन् फ़ यकून (४७) व युअल्लिमुहुल्-किता-ब वल्हिक्म-त वत्तौरा-त वलइन्जी-ल ج (४८) व रसूलन् इला बनी इस्राई-ल ۙ अन्नी कद् जिअ्तुकुम् बि आयतिम्-मिर्रब्बिकुम् لا अन्नी अख़्लुकु लकुम् मिनत्तीनि क-हैअतित्तैरि फ अन्फुख़ु फ़ीहि फ़ यकूनु तैरम्-बिइज़्निल्लाहि ج व उब्रिउल्-अक्म-ह वल्अब-र-स व उह्यिलमौता बि इज़्निल्लाहि ج व उनब्बिउकुम् बिमा तअ्कुलू-न व मा तद्दख़िरू-न لا फ़ी बुयूतिकुम् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल - आयतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ج (४९) व मुसद्दिकल्लिमा बै-न य-दय-य मिनत्तौराति व लि उहिल्-ल लकुम् बअ्- ज़ल्लज़ी हुर्रि - म अलैकुम् व जिअ्तुकुम् बि आयतिम् - मिर्रब्बिकुम् فة फ-त्तकुल्ला-ह व अतीअून (५०) इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फअ्-बुदूहु ط हाज़ा सिरातुम् - मुस्तकीम (५१) फ़ लम्मा अ-हस्-स ईसा मिन्हुमुल्कुफ्-र का - ल मन् अन्सारी इलल्लाहि ط कालल्हवारिय्यू - न नह्नु अन्सारुल्लाहि ج आमन्ना बिल्लाहि ج वश्हद् बि अन्ना मुस्लिमून (५२) रब्बना आमन्ना बिमा अन्जल्-त वत्तबअ्-नर्रसू-ल फक्तुब्ना म-अश्शाहिदीन (५३)

آل عمران ٤٤ تلك الرسل ٣

مَرْيَمَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٤﴾ إِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ
يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى
ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَيُكَلِّمُ
النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ رَبِّ أَنّٰى
يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا
يَشَآءُ إِذَا قَضٰٓى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾ وَيُعَلِّمُهُ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُوْلًا إِلٰى بَنِيْٓ
إِسْرَآءِيْلَ أَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ أَنِّيْٓ أَخْلُقُ لَكُمْ
مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللّٰهِ
وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِ الْمَوْتٰى بِإِذْنِ اللّٰهِ وَأُنَبِّئُكُمْ
بِمَا تَأْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِيْ بُيُوْتِكُمْ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَلِأُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ
رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوْنِ ﴿٥٠﴾ إِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ
هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾ فَلَمَّآ أَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ
مَنْ أَنْصَارِيْٓ إِلَى اللّٰهِ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللّٰهِ
اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ أَنْزَلْتَ

منزل ١

भी याद करने के लायक है) जब फरिश्तो ने (मरयम से कहा) कि मरयम ! खुदा तुमको अपनी तरफ से एक फैज की खुशखबरी देता है, जिस का नाम मसीह (और मशहूर) ईसा बिन मरयम होगा (और जो) दुनिया और आखिरत मे बा-आबरू और (खुदा के) खासो मे से होगा। (४५) और मा की गोद मे और बडी उम्र का होकर (दोनो) हालतो मे लोगो से (एक ही तरह) बाते करेगा और नेकों मे होगा। (४६) मरयम ने कहा, परवरदिगार ! मेरे यहा बच्चा कैसे होगा कि किसी इसान ने मुझे हाथ तक तो लगाया नही। फरमाया कि खुदा इसी तरह जो चाहता है, पैदा करता है। जब वह कोई काम करना चाहता है, तो इर्शाद फरमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाता है। (४७) और वह उन्हे लिखना (-पढना) और दानाई और तौरात और इंजील-सिखाएगा। (४८) और (ईसा) बनी इस्राईल की तरफ पैगम्बर (हो कर जाएगे और कहेगे) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशानी लेकर आया हू, वह यह कि तुम्हारे सामने मिट्टी की मूर्ति, परिंदे की शक्ल की बनाता हू, फिर उसमे फूक मारता हू तो वह खुदा के हुक्म से (सच मुच) जानवर हो जाता है। और अब्रस (सफेद दागी) को तन्दुरुस्त कर देता हू और खुदा के हुक्म से मुर्दे मे जान डाल देता हू। और जो कुछ तुम खा कर आते हो और जो कुछ अपने घरो मे जमा कर रखते हो, सब तुम को बता देता हू। अगर तुम ईमान वाले हो, तो इन बातो मे तुम्हारे लिए (खुदा की कुदरत की) निशानी है। (४९) और मुझ से पहले जो तौरात (नाज़िल हुई) थी, उसकी तस्दीक भी करता हू और (मैं) इसलिए भी (आया हू) कि कुछ चीजे जो तुम पर हराम थी, उनको तुम्हारे लिए हलाल कर दू और मैं तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशानी लेकर आया हू, तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (५०) कुछ शक नही कि खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। (५१) जब ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उनकी तरफ से ना-फरमानी (और कत्ल की नीयत) देखी, तो कहने लगे कि कोई है जो खुदा का तरफदार और मेरा मददगार हो। हवारी बोले कि हम खुदा के (तरफदार और आपके) मददगार है। हम खुदा पर ईमान लाये और आप गवाह रहे कि हम फरमाबरदार है। (५२) ऐ परवरदिगार ! जो (किताब) तूने नाजिल फरमायी है, हम उस पर ईमान ले आये और (तेरे) पैगम्बर के ताबेदार हो चुके, तो हमको मानने वालो मे लिख रख। (५३) और वे

व म-करू व म-क-रल्लाहु ط वल्लाहु ख़ैरुल्माकिरीन ★ ● (५४) इज़् कालल्लाहु या ईसा इन्नी मु-त-वफ़्फ़ी-क व राफ़िअु-क इलय्-य व मुतह्हिरु-क मिनल्लज़ी-न क-फ़रू व जाअिलुल्लज़ीनत्तबअू-क फ़ौकल्लज़ी-न क-फ़रू इला यौमिल्क़ियामति ج सुम्-म इलय्-य मर्जिअुकुम् फ़ अह्कुमु बैनकुम् फ़ी मा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (५५) फ़ अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ उअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ز व मा लहुम् मिन्नासिरीन (५६) व अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् ط वल्लाहु ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (५७) ज़ालि-क नत्लूहु अलै-क मिनल्-आयाति वज़्ज़िक्रिल्-हकीम (५८) इन्-न म-स-ल ईसा अिन्दल्लाहि क म-सलि आद-म ط ख़-ल-क़हू मिन् तुराबिन् सुम्-म का-ल लहू कुन् फ़-यकून (५९) अल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ ला तकुम्मिनल्-मुम्तरीन (६०) फ़ मन् हा-ज्ज-क फ़ीहि मिम्बअ़्-दि मा जा-अ-क मिनल्अिल्मि फ़ क़ुल् तआ़लौ नद्अु अब्ना-अना व अब्ना-अकुम् व निसा-अना व निसा-अकुम् व अन्फ़ु-सना व अन्फ़ु-सकुम् قف सुम्-म नब्तहिल् फ़ नज्अल् लअ़्-न-तल्लाहि अ-लल्काज़िबीन (६१) इन्-न हाज़ा ल हुवल्-क़-ससुल्-हक़्क़ु व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहु ط व इन्नल्ला-ह ल-हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (६२) फ इन् तवल्लौ फ़ इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बिल्मुफ़्सिदीन ★ (६३) क़ुल् या अह्लल्किताबि तआ़लौ इला कलिमतिन् सवा-इम्-बैनना व बैनकुम् अल्ला नअ़्-बु-द इल्लल्ला-ह व ला नुश्रि-क बिही शैअंव्-व ला यत्तख़ि-ज़ बअ़्-ज़ुना बअ़्-ज़न् अर्बाबम्मिन् दूनिल्लाहि ط फ़ इन् तवल्लौ फ़ क़ूलुश्हदू बिअन्ना मुस्लिमून (६४)

وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِينَ ۝ وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللّٰهُ
وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِينَ ۝ إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيسٰى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَ
رَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ
اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا
فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ
نّٰصِرِينَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِينَ ۝ ذٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيٰتِ وَالذِّكْرِ
الْحَكِيمِ ۝ إِنَّ مَثَلَ عِيسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ
ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ
الْمُمْتَرِينَ ۝ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَ
أَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِينَ ۝ إِنَّ
هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللّٰهُ ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ
لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ۝
قُلْ يٰأَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا إِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ
إِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ

(यानी यहूदी, ईसा के कत्ल के बारे मे एक) चाल चले, और खुदा भी (ईसा को बचाने के लिए) चाल चला और खुदा खूब चाल चलने वाला है। (५४) ✱ ●

उस वक्त खुदा ने फरमाया कि ईसा! मैं तुम्हारी दुनिया मे रहने की मुद्दत पूरी करके तुम को अपनी तरफ उठा लूगा और तुम्हे काफिरो (की सोहबत) से पाक कर दूगा और जो लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे, उनको काफिरो पर कियामत तक फाइक (यानी बढ कर और गालिब) रखूगा, फिर तुम सब मेरे पास लौट कर आओगे, तो जिन बातो मे तुम इख्तिलाफ करते थे, उस दिन तुम मे उनका फैसला कर दूगा। (५५) यानी जो काफिर हुए, उनको दुनिया और आख़िरत (दोनो मे) सख्त अजाब दूगा और उनका कोई मददगार न होगा। (५६) और जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उन को खुदा पूरा-पूरा बदला देगा और खुदा जालिमो को दोस्त नहीं रखता। (५७) (ऐ मुहम्मद!) यह हम तुमको (खुदा की) आयते और हिक्मत भरी नसीहते पढ-पढ कर सुनाते है। (५८) ईसा का हाल खुदा के नजदीक आदम का-सा है कि उसने (पहले) मिट्टी से उनका कालिब बनाया, फिर फरमाया कि (इसान) हो जा, तो वह (इसान) हो गये। (५९) (यह बात) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक है, सो तुम हरगिज शक करने वालो मे न होना। (६०) फिर अगर ये लोग ईसा के बारे मे तुम से झगडा करे और तुमको हकीकत तो मालूम ही हो चली है, तो उनसे कहना कि आओ, हम अपने बेटो और औरतो को बुलाए, तुम अपने बेटो और औरतो को बुलाओ और हम खुद भी आएं और तुम खुद भी आओ फिर दोनो फरीक (खुदा से) दुआ व इल्तिजा करें और झूठो. पर खुदा की लानत भेजे। (६१) ये तमाम बयानात सही है और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही और बेशक खुदा गालिब (और) हिक्मत वाला है। (६२) तो अगर ये लोग फिर जाए तो खुदा मुफसिदो (फसाद फैलाने वालो) को खूब जानता है। (६३ ✱

कह दो कि ऐ अह्ले किताब! जो बात हमारे और तुम्हारे दर्मियान एक ही (मान ली गयी) है, उसकी तरफ आओ, वह यह कि खुदा के सिवा हम किसी की इबादत न करें और उसके साथ किसी चीज को शरीक न बनाएं और हममे से कोई किसी को खुदा के सिवा अपना कारसाज न समझे। अगर ये लोग (इस बात को) न माने तो (उनसे) कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम

★रु ५/१३ आ १३ ●सु ३/४ ★रु. ६/१४ आ ६

या अह्लल्किताबि लि-म तुहाज्जू-न फ़ी इब्राही-म व मा उन्ज़िलतित्तौरातु वल्इन्जीलु इल्ला मिम्बअ् - दिही ط अ-फ़-ला तअ् - क़िलून (६५) हा अन्तुम् हा-उला-इ हाजज्तुम् फ़ीमा लकुम् बिही अिल्मुन् फ़ लि-म तुहाज्जू-न फ़ी मा लै-स लकुम् बिही अिल्मुन् ط वल्लाहु यअ्-लमु व अन्तुम् ला तअ्-लमून (६६) मा का-न इब्राहीमु यहूदिय्यव् - व ला नस्रानिय्यंव्-व लाकिन् का-न हनीफम्-मुस्लिमन् ط व मा का-न मिनल्-मुश्रिकीन (६७) इन-न औलन्नासि बि इब्राही-म लल्लज़ीनत्तबअूहु व हाज़न्नबिय्यु वल्लज़ी-न आमनू ط वल्लाहु वलिय्युल्-मुअ्मिनीन (६८) वद्दत्ता-इ-फ़तुम्-मिन् अह्लिल्किताबि लौ युज़िल्लूनकुम् ط व मा युज़िल्लू-न इल्ला अन्फुसहुम् व मा यश्अुरून (६९) या अह्लल्किताबि लि-म तक्फुरू-न बि आयातिल्लाहि व अन्तुम् तश्हदून (७०) या अह्लल्किताबि लि-म तल्बिसूनल्हक्-क बिल्बातिलि व तक्तुमूनल्-हक्-क व अन्तुम् तअ्-लमून ★ (७१) व क़ालत्ता - इफ़तुम् - मिन् अह्लिल्किताबि आमिनू बिल्लज़ी उन्ज़ि-ल अ-लल्लज़ी - न आमनू वज्हन्नहारि वक्फ़ुरू आखिरहू ल-अल्लहुम् यर्जिअून صلے (७२) व ला तुअ्मिनू इल्ला लिमन् तबि - अ दीनकुम् ط कुल् इन्नल्हुदा हुदल्लाहि ۷ अंय्युअ्ता अ-हदुम्मिस्-ल मा ऊतीतुम् औ युहाज्जूकुम् अिन् - द रब्बिकुम् ط कुल् इन्नलफ़ज़् - ल बि यदिल्लाहि ج युअ्तीहि मंय्यशा-उ ط वल्लाहु वासिअुन् अलीम ج (७३) यख्तस्सु बि रह्मतिही मंय्यशा-उ ط वल्लाहु ज़ुल्फज़्लिल् - अज़ीम (७४)

دُوْنِ اللّٰهِ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ۝ يٰٓاَھْلَ
الْكِتٰبِ لِمَ تُحَاۗجُّوْنَ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمَآ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِيْلُ
اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ ھٰٓاَنْتُمْ ھٰٓؤُلَاۗءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا
لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاۗجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّ
لٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنَّ اَوْلَى
النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَھٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ
وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَدَّتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ لَوْ
يُضِلُّوْنَكُمْ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَھُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ يٰٓاَھْلَ
الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝ يٰٓاَھْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝
وَقَالَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَي
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّھُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝
وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى ھُدَى اللّٰهِ ۙ
اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَاۗجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۭ قُلْ
اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝
يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ وَمِنْ

★रु. ७/१५ आ ८

(खुदा के) फरमावरदार हैं। (६४) ऐ अह्ले किताव ! तुम इब्राहीम के वारे मे क्यो झगड़ते हो हालाकि तौरात और इंजील उनके वाद उतरी हैं (और वह पहले हो चुके है), तो क्या तुम अक़्ल नही रखते ? (६५) देखो, ऐसी वात मे तो तुमने झगड़ा किया ही था, जिनका तुम्हे कुछ इल्म था भी, मगर ऐसी वात मे क्यो झगड़ते हो, जिसका तुम को कुछ भी इल्म नही और खुदा जानता है और तुम नही जानते। (६६) इब्राहीम न तो यहूदी थे और न ईसाई, वल्कि सवने वे-ताल्लुक होकर एक (खुदा) के हो रहे थे और उसी के फरमावरदार थे और मुश्रिकों मे न थे। (६७) इब्राहीम से कुर्व (करीवी ताल्लुक) रखने वाले तो वे लोग है, जो उन की पैरवी करते है और यह पैगम्बर (आखिरी) और वे लोग जो ईमान लाये हैं, और खुदा मोमिनो का कारसाज है। (६८) (ऐ इस्लाम मानने वालो !) कुछ अह्ले किताब इस बात की ख्वाहिश रखते हैं कि तुमको गुमराह कर दे, मगर ये (तुमको क्या गुमराह करेगे) अपने आप को ही गुमराह कर रहे हैं और नहीं जानते। (६९) ऐ अह्ले किताव ! तुम खुदा की आयतो से क्यो इकार करते हो और तुम (तौरात को) मानते तो हो।[1] (७०) ऐ अह्ले किताव ! तुम सच को झूठ के साथ गड्ड-मड्ड क्यो करते हो ? और हक को क्यो छिपाते हो ? और तुम जानते भी हो। (७१) ★

और अह्ले किताब एक दूसरे से कहते हैं कि जो (किताव) मोमिनो पर नाजिल हुई है, उस पर दिन के शुरू में तो ईमान ले आया करो और उसके आखिर मे इंकार कर दिया करो, ताकि वे (इस्लाम से) हट जाए। (७२) और अपने दीन की पैरवी करने वालो के सिवा किसी और के कायल न होना (ऐ पैगाम्वर !) कह दो कि हिदायत तो खुदा ही की हिदायत है। (वे यह भी कहते हैं), यह भी (न मानना) कि जो चीज़ तुम को मिली है, वैसी किसी और को मिलेगी या वे तुम्हे ख़ुदा के सामने कायल-माक़ूल कर सकेगे। यह भी कह दो कि वुजुर्गी खुदा ही के हाथ में है। वह जिसे चाहता है, देता है और खुदा वुस्अत वाला (और) इल्म वाला है। (७३) वह अपनी रहमत से जिस को चाहता है, खास कर लेता है और खुदा वड़े फज्ल का मालिक है। (७४) और

---

१. यानी तुम इकरार करते हो कि तौरात और इन्जील कलाम खुदा के है, फिर इन में जो [illegible] मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैं, उन के क्यो इन्कारी होते हो ?

व मिन् अह्लिल्किताबि मन् इन् तअ्मन्हु बि क़िन्तारिंय्युअद्दिही इलै-क ج व मिन्हुम् मन् इन् तअ्मन्हु बि दीनारिल्ला युअद्दिही इलै-क इल्ला मा दुम्-त अलैहि का-इमन् ط ज़ालि - क बि अन्नहुम् कालू लै-स अलैना फ़िल्उम्मिय्यी-न सबीलुन् ج व यकूलू-न अ-लल्लाहिल्-कज़ि-ब व हुम् यअ्-लमून (७५) बला मन् औफ़ा बि अह्दिही वत्तका फ़-इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुत्तकीन (७६) इन्नल्लज़ी-न यश्तरू-न बि अह्दिल्लाहि व ऐमानिहिम् स-म-नन् क़लीलन् उला-इ-क ला ख़ला - क़ लहुम् फ़िल्आख़िरति व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु व ला यन्ज़ुरु इलैहिम् यौमल्क़ियामति व ला युज़क्कीहिम् ص व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (७७) व इन् - न मिन्हुम् ल फ़रीकय्यल्वू-न अल्सि-न-तहुम् बिल्किताबि लि तह्सबूहु मिनल्किताबि ج व मा हु - व मिनल्किताबि व यकूलू - न हु - व मिन् अिन्दिल्लाहि व मा हु - व मिन् अिन्दिल्लाहि व यकूलू-न अलल्लाहिल्कज़ि-ब व हुम् यअ्-लमून (७८) मा का-न लि ब-शरिन् अंय्युअ्तियहुल्लाहुल् - किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त सुम्-म यकू-ल लिन्नासि कूनू अिबादल्ली मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् कूनू रब्बानिय्यी - न बिमा कुन्तुम् तुअल्लिमूनल् - किता - ब व बिमा कुन्तुम् तद्रुसून ۙ (७९) व ला यअ्मुरकुम् अन् तत्तख़िज़ुल् - मला - इ-क-तु वन्नबिय्यी - न अर्बाबन् ط अ यअ्मुरुकुम् बिल्कुफ़्रि बअ्-द इज़् अन्तुम् मुस्लिमून★ (८०) व इज़् अ - ख़ - ज़ल्लाहु मीसाक़न्नबिय्यी - न लमा आतैतुकुम् मिन् किताबिंव - व हिक्मतिन् सुम् - म जा - अकुम् रसूलुम्-मुसद्दिकुल्लिमा म-अकुम् ल-तुअ्मिनुन्-न बिही व ल तन्सुरुन्नहू ط क़ा - ल अ अक़्रर्तुम् व अ-ख़ज़्तुम् अला ज़ालिकुम् इस्री ط कालू अक़्रर्ना ط क़ा - ल फ़श्हदू व अ-न म - अकुम् मिनश्शाहिदीन (८१)

أَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ إِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
إِنْ تَأْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ۗ ذٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ بَلٰى مَنْ أَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَإِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ إِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَأَيْمَانِهِمْ
ثَمَنًا قَلِيْلًا أُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ
وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ۝
وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ أَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ
الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا
هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝
مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ
لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا
كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۝ وَلَا يَأْمُرَكُمْ
أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ
إِذْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ
مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ
لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۗ قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ

★रु. ८/१६ आ ६

अह्ले किताब मे से कोई तो ऐसा है कि अगर तुम उसके पास (रुपयो का) ढेर अमानत रख दो तो तुम को (फौरन) वापस दे दे और कोई इस तरह का है कि अगर उसके पास एक दीनार भी अमानत रखो, तो जब तक उसके सर पर हर वक़्त खड़े न रहो, तुम्हे दे ही नही। यह इस लिए कि वे कहते है कि उम्मियो के बारे में हमारी पकड न होगी। ये ख़ुदा पर सिर्फ झूठ बोलते है और (इस बात को) जानते भी नही। (७५) हा, जो शख़्स अपने इकरार को पूरा करे और ख़ुदा से डरे, तो ख़ुदा डरने वालो को दोस्त रखता है। (७६) जो लोग ख़ुदा के इकरारो और अपनी कसमों (को बेच डालते हैं और उन) के बदले थोडी सी कीमत हासिल करते हैं, उनका आख़िरत मे कुछ हिस्सा नही, उनसे ख़ुदा न तो कलाम करेगा और न कियामत के दिन उनकी तरफ देखेगा और न उनको पाक करेगा और उनको दुख देने वाला आजाब होगा। (७७) और इन (अह्ले किताब) मे कुछ ऐसे है कि किताब (तौरात) को जुबान मरोड-मरोड कर पढते है, ताकि तुम समझो कि जो कुछ वे पढते है किताब मे से है, हालाकि वह किताब मे से नही होता और कहते है कि वह ख़ुदा की तरफ से (नाजिल हुआ) है, हालांकि वह ख़ुदा की तरफ से नही होता और ख़ुदा पर झूठ बोलते है और (यह बात) जानते भी है। (७८) किसी आदमी को मुनासिब नही कि ख़ुदा तो उसे किताब और हुकूमत और नुबूवत अता फरमाए और वह लोगो से कहे कि ख़ुदा को छोड कर मेरे बन्दे हो जाओ, बल्कि (उस के लिए यह कहना मुनासिब है कि ऐ अह्ले किताब!) तुम (उलेमा-ए-) रब्बानी हो जाओ क्योकि तुम (ख़ुदा की) किताब पढते रहते हो। (७९) और उसको यह भी नही कहना चाहिए कि तुम फरिश्तो और पैगम्बरों को ख़ुदा बना लो। भला जब तुम मुसलमान हो चुके तो क्या उसे मुनासिब है कि तुम्हे काफिर होने को कहे। (८०) ★

और जब ख़ुदा ने पैगम्बरो से अह्द लिया कि जब मैं तुमको किताब और दानाई अता करूं फिर तुम्हारे पास कोई पैगम्बर आये, जो तुम्हारी किताब की तस्दीक करे तो तुम्हें जरूर उस पर ईमान लाना होगा और जरूर उस की मदद करनी होगी। और (अह्द लेने के बाद) पूछा कि भला तुम ने इकरार किया और इस इक़रार पर मेरा ज़िम्मा लिया (या मुझे ज़ामिन ठहराया) उन्होंने कहा (हां), हमने इकरार किया। (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि तुम (इस अह्द व पैमान के) गवाह रहो

★रु. ८/१६आ ६

फ़ मन् तवल्ला बअ्-द ज़ालि-क फ उलाइ-क हुमुल्-फासिक़ून (८२) अ-फ़-ग़ै-र दीनिल्लाहि यब्गू-न व लहू अस्ल-म मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअ व-व कर्हव-व इलैहि युर्जअून (८३) कुल् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल अलैना व मा उन्ज़ि-ल अला इब्राही-म व इस्माअी-ल व इस्हा-क़ व यअ्-कूब वल्अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व अीसा वन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ला नुफ़र्रिकु बै-न अ-हदिम्मिन्हुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून (८४) व मय्यब्तगि ग़ैरल्-इस्लामि दीनन् फ लय्युक्ब-ल मिन्हु व हु-व फिल्आख़िरति मिनलखासिरीन (८५) कै-फ यह्दिल्लाहु कौमन् क-फरू बअ्-द ईमानिहिम् व शहिदू अन्नर्रसू-ल हक़्क़ुंव-व जाअ हुमुल्बय्यिनातु वल्लाहु ला यह्दिल्-कौमज़्ज़ालिमीन (८६) उलाइ-क जज़ाउहुम् अन्-न अलैहिम् लअ्-न-तल्लाहि वलमलाइकति वन्नासि अज्मअीन (८७) खालिदी-न फ़ीहा ला युखफ़्फ़फु अन्हुमुल्-अज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून (८८) इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्बअ्दि ज़ालि-क व अस्लहू फ इन्नल्ला-ह गफ़ूरुर्रहीम (८९) इन्नल्लज़ी-न क-फरू बअ्-द ईमानिहिम् सुम्मज्दादू कुफ़्रल्लन् तुक़्ब-ल तौबतुहुम् व उलाइ-क हुमुज्ज़ाल्लून (९०) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ्फारुन् फ-लय्युक्ब-ल मिन् अ-हदिहिम् - मिल् - उल्अर्ज़ि ज-ह-बंव-व लविफ़्तदा बिही उलाइ - क लहुम् अज़ाबुन् अलीमुंव-व मा लहुम् मिन्नासिरीन ★ (९१)

तلك الرسل ٣ — ٤٨ — آل عمران ٣

إصري قالوا أقررنا قال فاشهدوا وأنا معكم من الشاهدين ﴿٨١﴾
فمن تولى بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون ﴿٨٢﴾ أفغير دين الله
يبغون وله أسلم من في السماوات والأرض طوعا وكرها
وإليه يرجعون ﴿٨٣﴾ قل آمنا بالله وما أنزل علينا وما أنزل
على إبراهيم وإسماعيل وإسحاق ويعقوب والأسباط وما
أوتي موسى وعيسى والنبيون من ربهم لا نفرق بين
أحد منهم ونحن له مسلمون ﴿٨٤﴾ ومن يبتغ غير الإسلام دينا
فلن يقبل منه وهو في الآخرة من الخاسرين ﴿٨٥﴾ كيف يهدي
الله قوما كفروا بعد إيمانهم وشهدوا أن الرسول حق و
جاءهم البينات والله لا يهدي القوم الظالمين ﴿٨٦﴾ أولئك
جزاؤهم أن عليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين ﴿٨٧﴾
خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينظرون ﴿٨٨﴾
إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور
رحيم ﴿٨٩﴾ إن الذين كفروا بعد إيمانهم ثم ازدادوا كفرا لن
تقبل توبتهم وأولئك هم الضالون ﴿٩٠﴾ إن الذين كفروا وماتوا
وهم كفار فلن يقبل من أحدهم ملء الأرض ذهبا ولو
افتدى به أولئك لهم عذاب أليم وما لهم من ناصرين ﴿٩١﴾

★रु ९/१७ आ ११

और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हू। (८१) तो जो इसके वाद फिर जाएं, वे बद-किरदार हैं। (८२) क्या ये (काफिर) खुदा के दीन के सिवा किसी और दीन के तालिब है, हालांकि सब आसमानों और ज़मीन वाले, खुशी या जबरदस्ती से ख़ुदा के फरमाबरदार है और उसी की तरफ लौट कर जाने वाले है। (८३) कहो कि हम ख़ुदा पर ईमान लाये और जो किताब हम पर नाज़िल हुई और जो सहीफे (ग्रन्थ) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और उनकी औलाद पर उतरे और जो किताबे मूसा और ईसा और दूसरे नबियो को परवरगिदार की तरफ से मिलीं, सब पर ईमान लाये। हम इन पैगम्बरों मे से किसी मे कुछ फर्क नही करते और हम उसी (एक खुदा) के फरमाबरदार है। (८४) और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा वह उससे हरगिज़ नही कुबूल किया जाएगा और ऐसा शख्स आखिरत मे नुक्सान उठाने वालों में होगा। (८५) खुदा ऐसे लोगो को कैसे हिदायत दे जो ईमान लाने के बाद काफिर हो गये और (पहले) इस बात की गवाही दे चुके कि पैगम्बर हक पर है और उनके पास दलीलें भी आ गयीं। और ख़ुदा वे-इंसाफो को हिदायत नही देता। (८६) उन लोगो की सज़ा यह है कि उन पर खुदा की और फरिश्तो की और इंसानो की सब की लानत हो। (८७) हमेशा इस लानत में (गिरफ्तार) रहेगे, उन से न तो अजाब हल्का किया जाएगा और न उन्हे मुहलत दी जाएगी। (८८) हां, जिन्होंने उसके बाद तौबा की और अपनी हालत दुरुस्त कर ली, तो खुदा बख्शने वाला, मेहरबान है। (८९) जो लोग ईमान लाने के वाद काफिर हो गये, फिर कुफर मे बढते गये, ऐसों की तौबा हरगिज़ कुबूल नही होगी और ये लोग गुमराह हैं (९०) जो लोग काफिर हुए और कुफ्र ही की हालत में मर गये वे अगर (निजात हासिल करना चाहे और) बदले मे जमीन भर कर सोना दें तो हरगिज़ कुबूल नहीं किया जाएगा। इन लोगो को दुख देने वाला अज़ाब होगा और उन की कोई मदद नहीं

चौथा पारः लन्तनालू

सूरतु आलि इम्रान आयत ९२ से २००

लन्तनालुल्बिर्-र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून ط व मा तुन्फिकू मिन् शैइन् फ इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम (९२) कुल्लुत्तआमि का-न हिल्ललिबनी इस्राई-ई-ल इल्ला मा हर्र-र-म इस्राई-ई-लु अ़ला नफ़्सिही मिन् कब्लि अन्तुनज्जलत्तौरातु ط क़ुल् फअ्तूबित्तौराति फ़त्लूहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (९३) फ़ मनिफ्तरा अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब मिम्बअ्-दि ज़ालि-क फउलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून ▨ (९४) कुल् स-द-कल्लाहु قف फत्तबिअू मिल्ल-त इब्राही-म हनीफन् ط व मा का-न मिनलमुश्रिकीन (९५) इन्-न अव्व-ल बैतिंव्वुज़ि-अ लिन्नासि लल्लज़ी बि बक्क-त मुबार-कव्-व हुदल्-लिल्-आलमीन ج (९६) फीहि आयातुम्-बय्यिनातुम् - मकामु इब्राही - म ج व मन् द-ख़-लहू का-न आमिनन् ط व लिल्लाहि अलन्नासि हिज्जुल्बैति मनिस्तता-अ इलैहि सबीलन् ط व मन् क-फ-र फ़ इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अ़निल्आलमीन (९७) क़ुल् या अह्लल्किताबि लि-म तक्फुरू-न बि आयातिल्लाहि صلے वल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा तअ्-मलून (९८) कुल् या अह्लल्-किताबि लि - म तसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि मन् आम-न तब्ग़ूनहा अि-व-जंव्-व अन्तुम् शुहदा-उ ط व मल्लाहु बि ग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्-मलून (९९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तुतीअू फरीक़म्-मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब यरुद्दूकुम् बअ्-द ईमानिकुम् काफिरीन (१००) व कै-फ़ तक्फुरू-न व अन्तुम् तुत्ला अलैकुम् आयातुल्लाहि व फीकुम् रसूलुहू ط व मंय्यअ्-तसिम् बिल्लाहि फ़-कद् हुदि-य इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ★ (१०१)

لن تنالوا ٤ ٣٩ ال عمران ٣

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ
شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿٩٢﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْٓ
اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ
تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِیْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٤﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ
حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ
لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿٩٦﴾ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ
بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَی
النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٩٧﴾ قُلْ یٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ
بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ۖۗ وَاللّٰهُ شَهِیْدٌ عَلٰی مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾ قُلْ یٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ
شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا
اِنْ تُطِیْعُوْا فَرِیْقًا مِّنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ یَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِیْمَانِكُمْ
كٰفِرِیْنَ ﴿١٠٠﴾ وَكَیْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰی عَلَیْكُمْ اٰیٰتُ اللّٰهِ وَفِیْكُمْ
رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ یَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِیَ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿١٠١﴾

منزل ١

▨ व जिब्रील अ॰ ★ रु १०/१ आ १०

करेगा (९१)★ (मोमिनो !) जब तक तुम उन चीज़ो मे से, जो तुम्हे प्यारी है. (खुदा की राह मे) खर्च न करोगे, कभी नेकी न हासिल कर सकोगे और जो चीज़ तुम खर्च करोगे, खुदा उसको जानता है। (९२) बनी इस्राईल के लिए (तौरात के नाज़िल होने मे) पहले खाने की सब चीज़े हलाल थी, उनके अलावा, जो याकूब ने खुद अपने ऊपर हराम कर ली थी। कह दो कि अगर सच्चे हो तो तौरात लाओ और उसे पढो (यानी दलील पेश करो)।[1] (९३) जो इसके बाद भी खुदा पर झूठी बात गढ़े, तो ऐसे लोग ही बे-इंसाफ है ▨ (९४) कह दो कि खुदा ने सच फरमा दिया. पस इब्राहीम के दीन की पैरवी करो, जो सब से बे-ताल्लुक होकर एक (खुदा) के हो रहे थे। और मुश्रिकों मे से न थे। (९५) पहला घर जो लोगो (के इबादत करने) के लिए मुकर्रर किया गया था वही है जो मक्के मे है, बरकत वाला और दुनिया के लिए हिदायत। (९६) इसमे खुली हुई निशानिया है जिनमे से एक इब्राहीम के खडे होने की जगह है।[2] जो शख्स इस (मुबारक) घर मे दाखिल हुआ उसने अम्न पा लिया। और लोगो पर खुदा का हक (यानी फर्ज़) है कि जो इस घर तक जाने की कुदरत रखे, वह इसका हज करे, और जो इस हुक्म की तामील न करेगा. तो खुदा भी दुनिया वालो से बे-नियाज है। (९७) कहो कि ऐ अह्ले किताब ! तुम खुदा की आयतो से क्यो कुफ्र करते हो और खुदा तुम्हारे सब आमाल से बा-खबर है। (९८) कहो कि ऐ अह्ले किताब ! तुम मोमिनो को खुदा के रास्ते से क्यो रोकते हो और बावजूद इसके कि तुम इसे जानते हो, इसमे टेढ निकालते हो और खुदा तुम्हारे कामो से बे-खबर नही। (९९) मोमिनो ! अगर तुम अह्ले किताब के किसी फरीक का कहा मान लोगे, तो वे तुम्हे ईमान लाने के बाद काफिर बना देगे। (१००) और तुम किस तरह कुफ्र करोगे, जबकि तुम को खुदा की आयते पढ-पढ कर सुनायी जाती है और तुम मे उसके पैगम्बर मौजूद है। और जिसने खुदा (की हिदायत की रस्सी) को मजबूत पकड लिया वह सीधे रास्ते लग गया। (१०१) ★

---

१ यहूदी प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते थे कि आप को दावा तो हज़रत इब्राहीम अलै० के तरीके पर चलने का है, लेकिन जो चीजे हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के खानदान मे, जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पोते थे, हराम थी, उन को आप खाते हैं। खुदा ने इसे रद्द किया और फरमाया कि तौरात नाज़िल होने से पहले खाने की सब चीजे याकूब अलैहिस्सलाम को हलाल थी, मगर वह जो उन्होने खुद अपने ऊपर हराम कर ली थी, उस की सूरत यह है कि हज़रत याकूब एक गाव मे रहते थे वहा उन को इर्कुन्निसा का मर्ज़ हो गया, जिस की वजह से उन को बहुत तक्लीफ थी, तो उन्होने नज़्र मानी कि जो चीज़ सब से ज़्यादा पसन्द है, वह छोड दूगा, चुनाचे ऊट का गोश्त खाना छोड दिया। याकूब अलैहिस्सलाम के बेटो ने भी उन की पैरवी मे ऊट का गोश्त छोड दिया था। गरज़ तौरात के नाज़िल होने से पहले खाने की तमाम चीज़े हज़रत याकूब पर हलाल थी और खुदा ने उन को उन पर हराम नही किया था। इस वजह से खुदा ने फरमाया कि ऐ पैगम्बर ! यहूद से कह दो कि अगर सच्चे हो तो तौरात लाओ और दिखाओ कि इस मे कहा लिखा है कि इब्राहीम अलै-हिस्सलाम के वक्त मे ऊट हराम था। हा, यहूदियो की नाफरमानियो और गुनाहो की वजह से कुछ चीज़े उन पर हराम कर दी गयी थी, और इस से उन को उन की शरारतो की सज़ा देनी थी।

२ 'मकामे इब्राहीम', जिस का तर्जुमा 'इब्राहीम के खडे होने की जगह' किया गया है, एक पत्थर है जिस पर खडे हो कर काबे की दीवारें चुनते थे। कहते हैं कि इस पत्थर पर हज़रत इब्राहीम के कदमो के निशान थे, जो अब मिट गये हैं।

या अय्युहल्लजी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह हक़-क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून (१०२) वअ्-तसिमू बि हब्लिल्लाहि जमीअ़व-व ला तफ़र्रक़ू वज्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अ़लैकुम् इज् कुन्तुम् अअ्-दा-अन् फ़ अल्ल-फ़ बै-न क़ुलूबिकुम् फ़ अस्बह्तुम् बि निअ्-मतिही इख्वानन् ज व कुन्तुम् अ़ला शफ़ा हुफ्रतिम्-मिनन्नारि फ़ अन्क़-ज़कुम् मिन्हा ط कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ल-अ़ल्लकुम् तह्तदून (१०३) वल्तकुम् - मिन्कुम् उम्मतुंय्यद्अू-न इलल्ख़ैरि व यअ्मुरू-न बिलमअ्-रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निलमुन्करि ط व उला-इ-क हुमुल्-मुफ्लिहून (१०४) व ला तकूनू कल्लज़ी-न तफ़र्रक़ू वख़्त-लफ़ू मिम्बअ़्-दि मा जा-अ-हुमुल्-बय्यिनातु ط व उला-इ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (१०५) यौ - म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्-व तस्वद्दु वुजूहुन् ज फ़ अम्मल्-लज़ीनस्-वद्दत् वुजूहुहुम् قف अ-क-फ़र्तुम् बअ़्-द ईमानिकुम्

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا
نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ
بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ
مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَ
لْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۟ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ
فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ
اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ
الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَ

फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (१०६) व अम्मल्लज़ीनब्यज़्ज़त् वुजूहुहुम् फ़फ़ी रह्मतिल्लाहि ط हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (१०७) तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि ط व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल्लिल्-आ़लमीन (१०८) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व इलल्लाहि तुर्जअुल् - उमूर ★ (१०९) कुन्तुम् ख़ै - र उम्मतिन् उख्रिजत् लिन्नासि तअ्मुरू-न बिलमअ्-रूफि व तन्हौ - न अ़निलमुन्करि व तुअ्मिनू - न बिल्लाहि ط व लौ आम-न अह्लुल्-किताबि ल का - न ख़ैरल्लहुम् ط मिन्हुमुल् - मुअ्मिनू - न व अक्सरु - हुमुलफ़ासिक़ून (११०)

★रु० ११/ २ आ ८

मोमिनो ! खुदा से डरो, जैसा कि उस से डरने का हक है और मरना तो मुसलमान ही मरना। (१०२) और सब मिल कर खुदा की (हिदायत की) रस्सी को मजबूत पकडे रहना और अलग-अलग न होना और खुदा की उस मेहरबानी को याद करो, जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे, तो उसने तुम्हारे दिलो मे उल्फत डाल दी और तुम उसकी मेहरबानी से भाई-भाई हो गये और तुम आग के गढे के किनारे तक पहुच चुके थे, तो खुदा ने तुम को इससे बचा लिया। इस तरह खुदा तुम को अपनी आयते खोल-खोल कर सुनाता है ताकि तुम हिदायत पाओ। (१०३) और तुम मे एक जमाअत ऐसी होनी चाहिए, जो लोगो को नेकी की तरफ बुलाए और अच्छे काम करने का हुक्म दे और बुरे कामो से मना करे, यही लोग हैं जो निजात पाने वाले है।[1] (१०४) और उन लोगो की तरह न होना जो अलग-अलग हो गये और खुले हुक्मो के आने के बाद एक दूसरे से (खिलाफ व) इख्तिलाफ करने लगे। ये वह लोग है, जिनको (कियामत के दिन) बडा अजाब होगा (१०५) जिस दिन बहुत से मुह सफेद होंगे और बहुत से मुह स्याह, तो जिन लोगो के मुह स्याह होगे, (उनसे खुदा फरमायेगा), क्या तुम ईमान ला कर काफिर हो गये थे ? सो (अब) इस कुफ़्र के बदले अजाब (के मजे) चखो। (१०६) और जिन लोगो के मुह सफेद होगे, वे खुदा की रहमत (के बागो) मे होगे और उनमे हमेशा रहेगे। (१०७) ये खुदा की आयतें है, जो हम तुम को सेहत के साथ पढ कर सुनाते है और अल्लाह अह्ले आलम पर ज़ुल्म नही करना चाहता। (१०८) और जो कुछ आसमानो मे और जो कुछ ज़मीन मे है, सब खुदा ही का है और सब कामो का रुजूअ और अजाम खुदा ही की तरफ है। (१०९) ★

(मोमिनो !) जितनी उम्मते (यानी कौमे) लोगो मे पैदा हुई, तुम उन सब से बेहतर हो कि नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामो से मना करते हो और खुदा पर ईमान रखते हो और अगर अह्ले किताब भी ईमान ले आते, तो उन के लिए बहुत अच्छा होता। इन मे ईमान लाने वाले भी हैं (लेकिन थोडे) और अक्सर ना-फरमान हैं। (११०) और ये

१- 'नेकी', जो लफ्ज़ 'ख़ैर' का तर्जुमा किया गया है, उस से मुराद कुरआन मजीद की पैरवी है, खुदा ने इस मामले को फर्ज करार दिया है कि मुसलमानो मे हर ज़माने मे ऐसी जमाअत होनी चाहिए जो भलाई की तरफ बुलाये, नेकियो का हुक्म दे और बुराइयो से रोके, ताकि लोग कुरआन पर चलें, अच्छे काम करें और बुराइयो से बचते रहें। यह हुक्म ऐसा है कि जिस पर बहुत तवज्जोह और कोशिश से अमल होना चाहिए ताकि लोग कामियाब बनने के हकदार हो सकें। पर बडे अफसोस की जगह है कि इस ज़माने मे इस हुक्म पर अमल नही होता, इसी वजह से मुसलमानो की दीनी व दुनियावी हालत अच्छी नही रही। उन के हालात देख कर डर होता है कि कही ऐसा वक्त न आ जाए कि ये दुआ करे और वह खुदा के यहा से रद्द कर दी जाए, जैसा कि एक हदीस में आया है कि 'तुम लोगो को चाहिए कि नेक काम करने का हुक्म करो और बुरे कामो से मना करते रहो, नही तो उस ज़ात की कसम ! जिस के हाथ मे मेरी जान है कि अल्लाह तआला तुम पर अज़ाब भेजेगा, फिर तुम खुदा से दुआ मागोगे और वह उसे कुबूल न करेगा। खुदा मुसलमानो को तौफीक बख्शे कि उस के हुक्मो पर अमल करे ताकि उस की रहमत के हकदार हो और उस के अज़ाब से बचे रहे।

★रु ११/ २ आ ८

लंय्यज़ुरू कुम् इल्ला अ-ज़न् ط व इंय्युक़ातिलूकुम् युवल्लू - कुमुल्अद्बार
सुम्-म ला युन्सरून (१११) ज़ुरिबत् अलैहिमुज़्ज़िल्लतु ऐनमा सुक़िफ़ू
इल्ला बि हब्लिम्-मिनल्लाहि व हब्लिम्-मिनन्नासि व बा-ऊ बि ग़-ज़बिम्-मिनल्लाहि
व ज़ुरिबत् अलैहिमुल्-मस्कनतु ط ज़ालि-क बि अन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू - न
बि आयातिल्लाहि व यक़्तुलूनल्-अम्बिया-अ
बिग़ैरि हक़्क़िन् ط ज़ालि - क बिमा
अ़-सव्-व कानू यअ्-तदून ق (११२) लैसू
सवा- अन् ط मिन् अह्लिल् - किताबि
उम्मतुन् क़ा-इमतुंय्यत्लू-न आयातिल्लाहि
आना-अल्लैलि व हुम् यस्जुदून (११३)
युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि
व यअ्मुरू-न बिलमअ्-रूफ़ि व यन्हौ-न
अ़निल्मुन्करि व युसारिअू - न फिलख़ैराति ط
व उला-इ-क मिनस्सालिहीन (११४) व
मा यफ़्अलू मिन् ख़ैरिन् फ़ लंय्युक्फरूहु ط
वल्लाहु अ़लीमुम् - बिलमुत्तक़ीन (११५)
इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लन् तुग़्नि-य अ़न्हुम्

لن تنالوا ٤ — ٥١ — آل عمران ٣

إن يقاتلوكم يولوكم الادبار ثم لا ينصرون ۝ ضربت عليهم
الذلة اين ما ثقفوا الا بحبل من الله وحبل من الناس و
باءو بغضب من الله وضربت عليهم المسكنة ذلك بانهم
كانوا يكفرون بايت الله ويقتلون الانبياء بغير حق ذلك
بما عصوا وكانوا يعتدون ۝ ليسوا سواء من اهل الكتب امة
قائمة يتلون ايت الله اناء اليل وهم يسجدون ۝ يؤمنون
بالله واليوم الاخر ويامرون بالمعروف وينهون عن المنكر
ويسارعون في الخيرت واولئك من الصلحين ۝ وما يفعلوا
من خير فلن يكفروه والله عليم بالمتقين ۝ ان الذين
كفروا لن تغني عنهم اموالهم ولا اولادهم من الله شيئا
واولئك اصحب النار هم فيها خلدون ۝ مثل ما ينفقون
في هذه الحيوة الدنيا كمثل ريح فيها صر اصابت حرث
قوم ظلموا انفسهم فاهلكته وما ظلمهم الله ولكن انفسهم
يظلمون ۝ يايها الذين امنوا لا تتخذوا بطانة من دونكم لا
يالونكم خبالا ودوا ما عنتم قد بدت البغضاء من افواههم
وما تخفي صدورهم اكبر قد بينا لكم الايت ان كنتم
تعقلون ۝ هانتم اولاء تحبونهم ولا يحبونكم وتؤمنون بالكتب

अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् ط व उलाइ - क
अस्हाबुन्नारि ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (११६) म-सलु मा युन्फ़िक़ू-न फी
हाज़िहिल्-हयातिद्दुन्या क-म-सलि रीहिन् फ़ीहा सिर्रुन् असाबत् हर-स क़ौमिन्
अ - लमू अन्फुसहुम् फ़ अह्ल - कत्हु ط व मा ज - ल - महुमुल्लाहु व लाकिन्
अन्फुसहुम् यज़्लिमून (११७) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू ला तत्तख़िज़ू
बितानतम् - मिन् दूनिकुम् ला यअ्लूनकुम् ख़बालन् ط वद्दू मा अ़नित्तुम् ج
क़द् ब - दतिल् - बग़्ज़ा - उ मिन् अफ़्वाहिहिम् صلے व मा तुख़्फी सुदूरुहुम्
अक्बरु ط क़द् बय्यन्ना लकुमुल् - आयाति इन् कुन्तुम् तअ्-क़िलून (११८)

तुम्हे हल्की-सी तक्लीफ के अलावा कुछ नुक्सान नही पहुंचा सकेंगे और अगर तुमसे लड़ेंगे, तो पीठ फेर कर भाग जाएंगे, फिर उनको मदद भी (कही से) नही मिलेगी। (१११) ये जहा नज़र आएंगे, जिल्लत (को देखोगे कि) उनसे चिमट रही है, अलावा इसके कि ये ख़ुदा और (मुसलमान) लोगो की पनाह मे आ जाएं। और ये लोग ख़ुदा के गज़ब मे गिरफ्तार है और नादारी उनसे लिपट रही है, यह इस लिए कि ख़ुदा की आयतों से इंकार करते थे और (उस के) पैगम्बरों को ना-हक़ क़त्ल कर देते थे। यह इस लिए कि ये नाफरमानी किए जाते और हद से बढे जाते थे। (११२) ये भी सब एक जैसे नही है। इन अह्ले किताब मे कुछ लोग (ख़ुदा के हुक्म पर) कायम भी हैं, जो रात के वक्त ख़ुदा की आयतें पढ़ते और (उसके आगे) सज्दे करते हैं। (११३) (और) ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते और अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातो से मना करते और नेकियो पर लपकते है और यही लोग नेक लोग है। (११४) और ये जिस तरह की नेकी करेंगे, उसकी ना-क़द्री नही की जाएगी और ख़ुदा परहेज़गारो को ख़ूब जानता है। (११५) जो लोग काफिर हैं, उनके माल और औलाद ख़ुदा के अज़ाब को हरगिज़ नही टाल सकेंगे और ये लोग दोज़ख़ी हैं कि हमेशा उसी में रहेगे। (११६) ये जो माल दुनिया की ज़िंदगी मे खर्च करते है, उसकी मिसाल हवा की-सी है, जिस में सख़्त सर्दी हो और वह ऐसे लोगो की खेती पर जो अपने आप पर ज़ुल्म करते थे, चले और उसे तबाह कर दे और ख़ुदा ने उन पर कुछ ज़ुल्म नही किया, बल्कि ये ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे है। (११७) मोमिनो! किसी गैर (मज़हब के आदमी) को अपना राज़दार न बनाना। ये लोग तुम्हारी ख़राबी (और फ़िला फैलाने) मे किसी तरह की कोताही नही नही करते और चाहते है कि (जिस तरह हो,) तुम्हे तक्लीफ पहुंचे। उन की ज़ुबानो से तो दुश्मनी ज़ाहिर हो ही चुकी है और जो (कपट) उनके सीनो मे छिपे है, वे कही ज़्यादा हैं। अगर तुम अक़्ल रखते हो तो हमने तुमको अपनी आयते खोल-खोल कर सुना दी हैं। (११८) देखो, तुम ऐसे (साफ़

हा-अन्तुम् उला-इ तुहिब्बूनहुम् व ला युहिब्बूनकुम् व तुअ्मिनू-न बिल्किताबि कुल्लिही ह व इज़ा लक़ूकुम् क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लौ अज़्ज़ू अलैकुमुल्-अनामि-ल मिनल्ग़ैज़ि ط क़ुल् मूतू बि ग़ैज़िकुम् ط इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बि ज़ातिस्सुदूर (११९) इन् तम्सस्कुम् ह-स-नतुन् तसुअ्हुम् व इन् तुसिब्कुम् सय्यिअतु य्यफ़्रहू बिहा ط व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू ला यजुर्रुकुम् कैदुहुम् शैअन् ط इन्नल्ला - ह बिमा यअ्-मलू-न मुहीत ★ (१२०) व इज़् ग़दौ - त मिन् अह्लि - क तुबव्वि-उल्-मुअ्मिनी-न मक़ाअि-द लिल्किताल ط वल्लाहु समीअुन् अलीम ل (१२१) इज़् हम्मत्ता-इ-फ़तानि मिन्कुम् अन् तफ़्शला ل वल्लाहु वलिय्युहुमा ط व अलल्लाहि फ़ल्य-त-वक्कलिल् मुअ्मिनून (१२२) व ल-क़द् न-स-रकुमुल्लाहु बि बद्रिंव-व अन्तुम् अज़िल्लतुन् ह फ़त्तक़ुल्ला-ह ल-अल्लकुम् तश्कुरून (१२३) इज़् तक़ूलु लिल्-मुअ्मिनी-न अलंय्यक्फ़ि-यकुम् अंय्युमिद्दकुम् रब्बुकुम् बिसलासति आलाफ़िम् - मिनल् मला - इकति मुन्ज़लीन ط (१२४) बला ل इन् तस्बिरू व तत्तक़ू व यअ्तूकुम् मिन् फ़ौरिहिम् हाज़ा युम्दिद्-कुम् रब्बुकुम् बि ख़म्सति आलाफ़िम्-मिनल्-मला-इकति मुसव्विमीन ●(१२५) व मा ज-अ-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा लकुम् व लि ततमइन्-न क़ुलूबुकुम् बिही ط व मन्नस्रु इल्ला मिन् अिन्-दिल्लाहिल्-अज़ीज़िल्-हकीम ل (१२६) लि य-क़्-त-अ त-र-फ़म्-मिनल्लज़ी-न क-फ़रू औ यक्बितहुम् फ़ यन्क़लिबू ख़ा-इबीन (१२७) लै-स ल-क मिनल्अम्रि शैउन् औ यतू-ब अलैहिम् औ युअज़्ज़िबहुम् फ़ इन्नहुम् ज़ालिमून (१२८) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط यग़्फ़िरु लि मंय्यशा-उ व युअज़्ज़िबु मंय्यशा-उ ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (१२९)

لن تنالوا ٥٢ آل عمران

كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ
مِنَ الْغَيْظِ ۭ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۝ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْھُمْ ۡ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ
يَّفْرَحُوْا بِهَا ۭ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُھُمْ شَيْـًٔـا ۭ
اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَھْلِكَ تُبَوِّئُ
الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِذْ ھَمَّتْ
طَّاۗىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ
يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُنْزَلِيْنَ ۝ بَلٰٓى ۙ اِنْ
تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِھِمْ ھٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ
بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا
بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَىِٕنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۭ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ
اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ
يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَاۗىِٕبِيْنَ ۝ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ
عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّھُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ

منزل

★रु १२/३ आ ११ ●

दिल) लोग हो कि उन लोगो से दोस्ती रखते हो, हालाकि वे तुमसे दोस्ती नही रखते और तुम सब किताबो पर ईमान रखते हो (और वे तुम्हारी किताब को नही मानते) और जब तुमसे मिलते हैं, तो कहते है, हम ईमान ले आए और जब अलग होते हैं, तो तुम पर गुस्से की वजह से उंगलिया काट-काट खाते है। (उनसे) कह दो कि (बद-बख्तो!) गुस्से मे मर जाओ। खुदा तुम्हारे दिलो की बातो को खूब जानता है। (११९) अगर तुम्हें आमूदगी हासिल हो, तो उनको बुरी लगती है और अगर रंज पहुचे तो खुश होते है और अगर तुम तक्लीफो की बर्दाश्त और (उन से) किनाराकशी करते रहोगे तो उनका फरेब तुम्हे कुछ भी नुक्सान न पहुचा सकेगा। ये जो कुछ करते है खुदा उस पर एहाता किए हुए है। (१२०) ✱

और (उस वक्त को याद करो) जब तुम सुबह को अपने घर से रवाना हो कर ईमान वालो को लडाई के लिए मोर्चो पर (मौका-बे-मौका) तेनात करने लगे और खुदा सब कुछ सुनता और जानता है। (१२१) उस वक्त तुम मे से दो जमाअतो ने जी छोड देना चाहा, मगर खुदा उन का मददगार था और मोमिनो को खुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए।[1] (१२२) और खुदा ने बद्र की लडाई में भी तुम्हारी मदद की थी और उस वक्त भी तुम बे-सर व सामान थे, पस खुदा से डरो (और उन एहसानो को याद करो) ताकि शुक्र करो। (१२३) जब तुम मोमिनो से यह कह (कर उनके दिल बढा) रहे थे कि क्या यह काफी नही कि परवरदिगार तीन हजार फ़रिश्ते नाज़िल कर के तुम्हे मदद दे। (१२४) हा, अगर दिल को मजबूत रखो और (खुदा से) डरते रहो और काफिर तुम पर जोश के साथ यकायकी हमला कर दे तो परवरदिगार पाच हज़ार फरिश्ते, जिन पर निशान होंगे, तुम्हारी मदद को भेजेगा (१२५) ● और उस मदद को तो खुदा ने तुम्हारे लिए बशारत (खुश-खबरी) का (जरिया) बनाया, यानी इस लिए कि तुम्हारे दिलो को उस से तसल्ली हासिल हो, वरना मदद तो खुदा ही की है, जो गालिब (और) हिक्मत वाला है। (१२६) (यह खुदा ने) इस लिए (किया) कि काफिरो की एक जमाअत को हलाक या उन्हे ज़लील व मग्लूब कर दे कि (जैसे आए थे, वैसे ही) नाकाम वापस जाए। (१२७) (ऐ पैगम्बर!) इस काम मे तुम्हारा कुछ अख्तियार नही। (अब दो शक्ले है) या खुदा उनके हाल पर मेहरबानी करे या उन्हें अज़ाब दे कि ये ज़ालिम लोग हैं। (१२८) और जो कुछ आसमानो मे है और जो कुछ ज़मीन मे है, सब खुदा ही का है। वह जिसे चाहे बख्श दे, और जिसे चाहे अजाब करे और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है (१२९) ✱

---

१ बद्र की लडाई मे जब काफिरो को हार और मोमिनो की जीत हुई, तो काफिरो ने अगले साल फौज जमा कर के मदीने पर चढाई की और उहद के करीब, जो मदीने के पास एक पहाड है, आ उतरे। हजरत सल्ल० ने सहाबा रजि० से मश्विरा लिया कि शहर से बाहर निकल कर लडना चाहिए या शहर के अन्दर रह कर? उन्होंने सलाह दी कि बाहर निकल कर लडना चाहिए, मगर अब्दुल्लाह बिन उबई ने, जो मुनाफिको का सरदार था, मश्विरा दिया कि शहर मे रहना चाहिए। हजरत ने बाहर निकल कर लडना मुनासिब समझा, चुनांचे आप ने खुद ज़िरह पहन ली और एक हजार सहाबा को साथ ले कर मदीना से बाहर निकले। अब्दुल्लाह भी लडाई मे शरीक हुआ, मगर ना-खुशी से, क्योंकि उस की सलाह नही मानी गयी थी। जब शौत नामी जगह पर

(शेष पृष्ठ १०३ पर)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलुर्रिबा अज़्-आफ़म्-मुज़ा-अ-फ-तन् वत्तक़ुल्ला-ह ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ج (१३०) वत्तकुन्नारल्लती उअ़िद्दत् लिल्काफ़िरीन ج (१३१) व अतीअ़ुल्ला-ह वर्रसू-ल ल-अल्लकुम् तुर्हमून ج(१३२) व सारिअ़ू इला मग्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्ज़ुहस्-समावातु वल्अर्ज़ु لا उअ़िद्दत् लिल्मुत्तक़ीन (१३३) अ़ल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न फ़िस्सर्रा-इ वज़्ज़र्रा-इ वल्काज़िमीनल्-गै-ज़ वल्आफ़ी-न अनिन्नासि ط वल्लाहु युहि़ब्बुल्-मुह्सिनीन ج (१३४) वल्लज़ी-न इज़ा फ़-अलू फ़ाहि़श-तन् औ ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् ज़-करुल्ला-ह फ़स्तग्फ़रू लि ज़ुनूबिहिम् ص व मंय्यग्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्लल्लाहु قف व लम् युसिर्रू अ़ला मा फ़-अलू व हुम् यअ्-लमून (१३५) उला-इ-क जज़ा-उ-हुम् मग्फ़ि-रतुम्-मिर्रब्बिहिम् व जन्नातुन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ط व निअ्-म अज्रुल्-आ़मिलीन ط (१३६)

الِ عمرٰن ۳ ۵۳ لن تنالوا ۴

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً
وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۝
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝
الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ
عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً
اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ڞ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰي مَا فَعَلُوْا وَھُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝
اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُھُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ ھٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَھُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝
وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ۭ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ
نُدَاوِلُھَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ
شُهَدَاۗءَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا

منزل ۱

क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिकुम् सुननुन् ؕ फ सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ का-न आ़क़िबतुल्-मुकज़्ज़िबीन (१३७) हाज़ा बयानुल्लिन्नासि व हुदव-व मौअ़िज़तुल्-लिल्मुत्तक़ीन (१३८) व ला तहिनू व ला तह़्ज़नू व अन्तुमुल्-अअ्-लौ-न इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१३९) इंय्यम्सस्कुम् क़र्हुन् फ़-क़द् मस्सलक़ौ-म क़र्हुम्-मिस्लुहू ط व तिल्कल्-अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्नासि ج व लि यअ्-ल-मल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यत्तख़ि-ज़ मिन्कुम् शुहदा-अ ط वल्लाहु ला युहि़ब्बुज़्ज़ालिमीन (१४०) व लि युमह़्हि़सल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यम्ह़-क़ल्-काफ़िरीन (१४१)

ऐ ईमान वालो ! दोगुना-चौगुना सूद न खाओ और ख़ुदा से डरो, ताकि निजात हासिल करो। (१३०) और (दोज़ख़ की) आग से बचो, जो काफ़िरो के लिए तैयार की गयी है। (१३१) और ख़ुदा और उस के रसूल की इताअत करो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (१३२) और अपने परवरदिगार की बख़्शिश और बहिश्त की तरफ लपको, जिस की चौडाई आसमान और ज़मीन के बराबर है और जो (ख़ुदा से) डरने वालो के लिए तैयार की गयी है। (१३३) जो आसूदगी और तंगी मे (अपना माल ख़ुदा की राह मे) खर्च करते है और गुस्से को रोकते और लोगो के कुसूर माफ करते हैं और ख़ुदा नेक लोगो को दोस्त रखता है। (१३४) और वह कि जब कोई खुला गुनाह या अपने हक मे कोई और बुराई कर बैठते हैं तो ख़ुदा को याद करते और अपने गुनाहो की बख़्शिश मागते है और ख़ुदा के सिवा गुनाह बख्श भी कौन सकता है ! और जान-बूझ कर अपने कामो पर अडे नही रहते। (१३५) ऐसे ही लोगो का बदला परवरदिगार की तरफ से बख़्शिश और बाग हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही है (और) वे उस मे हमेशा बसते रहेगे और (अच्छे) काम करने वालो का बदला बहुत अच्छा है। (१३६) तुम लोगो से पहले भी बहुत से वाकिआत गुज़र चुके है, तो तुम ज़मीन मे सैर कर के देख लो कि झुठलाने वालो का कैसा अजाम हुआ। (१३७) यह (कुरआन) लोगों के लिए खुला बयान और तक्वा वालो के लिए हिदायत और नसीहत है। (१३८) और देखो बे-दिल न होना और न किसी तरह का गम करना, अगर तुम (सच्चे) मोमिन हो, तो तुम ही गालिब रहोगे। (१३९) अगर तुम्हे (हार खाने का) घाव लगा है, तो उन लोगो को भी ऐसा घाव लग चुका है और ये दिन हैं कि हम इन लोगो मे बदलते रहते हैं, और इस से यह भी मक्सूद था कि ख़ुदा ईमान वालो को अलग कर दे और तुम में से गवाह बनाए और ख़ुदा बे-इन्साफो को पसन्द नही करता। (१४०) और यह भी मक़्सूद था कि ख़ुदा ईमान वालो को ख़ालिस (मोमिन) बना दे और काफ़िरो को नाबूद (ख़त्म) कर दे। (१४१) क्या तुम यह समझते हो कि (बे-आज़माइश) बहिश्त

(पृष्ठ १०१ का शेष)

पहुचे तो अब्दुल्लाह लश्कर के एक हिस्से को ले कर लौट चला और उस के बहकाने से कबीला खज़रज में से बनू सलमा ने और कबीला औस मे से बनू हारिसा ने, जो फौज के दाहिने-बाए मोर्चे पर मुकर्रर थे, हिम्मत हार देनी चाही, लेकिन ख़ुदा ने उन के दिलो को मज़बूत किया और वे मैदान मे जमे रहे। इस आयत मे इन्ही दो जमाअतो, यानी बनू सलमा और बनू हारिसा का ज़िक्र है और उन्ही के बारे मे ख़ुदा ने फरमाया कि ख़ुदा उन का मददगार था।

अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ्-लमिल्लाहुल्लज़ी-न जाहदू मिन्कुम् व यअ्-ल-मस्साबिरीन (१४२) व ल-कद् कुन्तुम् तमन्नौनलमौ-त मिन् क़ब्लि अन् तल्कौहु ص फ-कद् रऐतुमूहु व अन्तुम् तन्ज़ुरून ★ (१४३)
व मा मुहम्मदुन् इल्ला रसूलुन् ج कद् ख - लत् मिन् कब्लिहिर्रुसुलु ط अ-फ-इम्मा-त औ कुतिलन्-क़लब्तुम् अ़ला अअ्-काबिकुम् ط व मय्यन्क़लिब् अ़ला अकिबैहि फ लय्यजुर्रल्ला-ह शैअन् ط व स-यज्ज़िल्लाहुश्-शाकिरीन (१४४) व मा का-न लि नफ़्सिन् अन् तमू - त इल्ला बि इज़्निल्लाहि किताबम् - मुअज्जलन् ط व मय्युरिद् स - वाबद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा ج व मय्युरिद् स - वाबल् - आख़िरति नुअ्तिही मिन्हा ط व स-नज्ज़िश्-शाकिरीन (१४५) व क-अय्यिम्-मिन् नबिय्यिन् क़ात-ल ل म-अहू रिब्बिय्यू-न कसीरुन् ج फ़ मा व-हनू लिमा असाबहुम् फी सबीलिल्लाहि व मा ज़अुफू व मस्तकानू ط वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन (१४६)

يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ كُنْتُمْ
تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَ اَنْتُمْ
تَنْظُرُوْنَ ۝ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ
اَفَا۟ىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۭ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰي
عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ۭ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَمَا
كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ۭ وَمَنْ يُّرِدْ
ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۭ وَ
سَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ
فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا
اسْتَكَانُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ قَوْلَھُمْ اِلَّآ
اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ
اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَي الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ فَاٰتٰىھُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ
الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّھَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓي اَعْقَابِكُمْ
فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَھُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝
سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا
لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىھُمُ النَّارُ ۭ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝

व मा का-न क़ौलहुम् इल्ला अन् कालू रब्बनग्फ़िर् लना ज़ुनूबना व इसराफना फी अम्रिना व सब्बित् अक्दामना वन्सुर्ना अ़लल्कौमिल् - काफिरीन (१४७) फ़-आताहुमुल्लाहु सवाबद्दुन्या व हुस्-न सवाबिल्-आख़िरति ط वल्लाहु युहिब्बुल् - मुह्सिनीन ★ (१४८) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू इन् तुतीअुल्लज़ी-न क-फरू यरुद्दूकुम् अ़ला अअ-काबिकुम् फ तन्क़लिबू ख़ासिरीन (१४९) बलिल्लाहु मौलाकुम् ج व हु-व ख़ैरुन्नासिरीन (१५०) सनुल्की फी कुलूबिल्लज़ी-न क-फरुर्रुअ्-ब बिमा अश्रकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानन् ج व मअ्वाहुमुन्नारु ط व बिअ्-स मस्वज़्ज़ालिमीन (१५१)

मे जा दाखिल होगे, हालाकि अभी खुदा ने तुम मे से जिहाद करने वालो को तो अच्छी तरह् मालूम किया ही नहीं और (यह भी मक्सूद है) कि वह साबित-कदम रहने वालो को मालूम करे। (१४२) और तुम मौत (शहादत) के आने से पहले उस की तमन्ना किया करते थे, सो तुम ने उस को आखों से देख लिया। (१४३) ★

और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तो सिर्फ (खुदा के) पैगम्बर है। इन से पहले भी बहुत से पैगम्बर हो गुज़रे है। भला अगर यह मर जाएं या मारे जाएं, तो तुम उल्टे पाव फिर जाओ ? (यानी दीन से फिर जाओ ?)और जो उल्टे पाव फिर जाएगा,तो खुदा का कुछ नुक्सान नही कर सकेगा और खुदा शुक्रगुजारो को (बडा) सवाब देगा। (१४४) और किसी शख्स मे ताकत नही कि खुदा के हुक्म के बगैर मर जाए। (उस ने मौत का) वक्त मुकर्रर कर के लिख रखा है और जो शख्स दुनिया मे (अपने आमाल का) बदला चाहे, उस को हम यही बदला दे देंगे। और जो आखिरत मे सवाब का तालिब हो, उस को वहा अज्र अता करेगे। और हम शुक्रगुज़ारो को बहुत जल्द (बहुत अच्छा) बदला देगे। (१४५) और बहुत से नबी हुए है जिन के साथ हो कर अक्सर अल्लाह वाले (खुदा के दुश्मनो से) लडे है, तो जो मुसीबते उन पर खुदा की राह मे वाके हुई, उनकी वजह से उन्हो ने न तो हिम्मत हारी और न बुजदिली की, न(काफिरो से)दबे और खुदा जमाव रखने वालो को दोस्त रखता है। (१४६) और (इस हालत मे) उन के मुह से कोई बात निकलती तो यही कि,ऐ परवरदिगार ! हमारे गुनाह और ज्यादतिया जो हम अपने कामो मे करते रहे है, माफ फरमा और हम को साबित-कदम रख और काफिरों पर फत्ह इनायत फरमा। (१४७) तो खुदा ने उन को दुनिया में भी बदला दिया और आखिरत मे भी बहुत अच्छा बदला (देगा) और खुदा नेक लोगो को दोस्त रखता है। (१४८) ★

मोमिनो ! अगर तुम काफिरो का कहा मान लोगे, तो वे तुम को उल्टे पांव फेर (कर मुर्तद कर) देगे, फिर तुम बडे घाटे मे पड जाओगे। (१४९) (ये तुम्हारे मददगार नही है,) बल्कि खुदा तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। (१५०) हम बहुत जल्द काफिरो के दिलो में तुम्हारा रौब बिठा देगे, क्योकि ये खुदा के साथ शिर्क करते हैं, जिस की उस ने कोई भी दलील नही उतारी और उन का ठिकाना दोज़ख है, वह जालिमो का बहुत बुरा ठिकाना है। (१५१) और

★रु १४/५ आ १४ ★रु १५/६ आ ५

व ल-क़द् स-द-ककुमुल्लाहु वअ्-दहू इज् तहुस्सूनहुम् बि इज्निही ج हत्ता इज़ा फ़शिल्तुम् व तनाज़अ्-तुम् फ़िल्अम्रि व असैतुम् मिम्बअ्दि मा अराकुम् मा तुहिब्बू - न ط मिन्कुम् मय्युरीदुद्-दुन्या व मिन्कुम् मंय्युरीदुल् - आख़िर-त ج सुम्-म स-र-फकुम् अन्हुम् लि यब्तलि-यकुम् ج व ल - कद् अफ़ा अन्कुम् ط वल्लाहु ज़ू फज़्लिन् अ-लल् - मुअ्मिनीन (१५२) इज् तुस्अिदू-न व ला तल्वू-न अला अ-ह़दिंव्वर्रसूलु यद्अूकुम् फी उख़्रा कुम् फ़ असावकुम् ग़म्मम् - वि ग़म्मिल्-लिकैला तह्ज़नू अला मा फ़ातकुम् व ला मा असाबकुम् ط वल्लाहु ख़बीरुम् - बिमा तअ्-मलून (१५३) सुम्-म अन्ज-ल अलैकुम् मिम्बअ्-दिल् - गम्मि अ-म-नतन्नुआ-सय्यग़्शा ता - इ - फ़ - तम् - मिन्कुम् ۙ व ता-इ-फतुन् क़द् अहम्मत्हुम् अन्फुसुहुम् यज़ुन्नू - न बिल्लाहि गैरल्हक़्क़ि ज़न्नल्-जाहिलिय्यति ط यकूलू-न हल्लना मिनल्अम्रि मिन् शैइन् ط कुल् इन्नल् - अम्-र कुल्लहू लिल्लाहि ط युख़्फ़ू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् मा ला युब्दू-न ल - क ط यकूलू - न लौ का-न लना मिनल्-अम्रि शैउम्मा क़ुतिल्ना हाहुना ط कुल् लौ कुन्तुम् फी बुयूतिकुम् ल ब-र-जल्लज़ी-न कुति-ब अलैहिमुल्क़त्लु इला मज़ाजिअिहिम् ج व लि यब्तलियल्लाहु मा फी सुदूरिकुम् व लि युमह्हि-स मा फ़ी कुलूबिकुम् ط वल्लाहु अलीमुम्-वि ज़ातिस्सुदूर (१५४) इन्नल्लज़ी-न तवल्लौ मिन्कुम् यौमल्-त-क़ल्-जम्आनि ۙ इन्नमस्तज़ल्ल-हुमुश्-शैतानु वि बअ्-ज़ि मा क-सबू ج व ल-कद् अ-फ़ल्लाहु अन्हुम् ط इन्नल्ला-ह गफूरुन् हलीम ★ (१५५)

لن تنالوا ٤ ٥٥ آل عمران ٣

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا
فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا
تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ
صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ ۞ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ
فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا
مَآ اَصَابَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۞ ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ
بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَاۗىِٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَاۗىِٕفَةٌ قَدْ
اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ يَقُوْلُوْنَ
هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۭ يُخْفُوْنَ
فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۭ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ
شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۭ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ
صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا
اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ

★रु० १६/७ आ ७

खुदा ने अपना वायदा सच्चा कर दिया (यानी) उस वक्त जबकि तुम काफिरो को उस के हुक्म से कत्ल कर रहे थे, यहा तक कि जो तुम चाहते थे, खुदा ने तुम को दिखा दिया, इस के बाद तुम ने हिम्मत हार दी और (पैगम्बर के) हुक्म मे झगडा करने लगे और उस की ना-फ़रमानी की, कुछ तो तुम मे से दुनिया की ख्वाहिश कर रहे थे और कुछ आखिरत के तालिब। उस वक्त खुदा ने तुम को उन (के मुकाबले) से फेर (कर भगा) दिया, ताकि तुम्हारी आजमाइश करे और उस ने तुम्हारा कुसूर माफ कर दिया और खुदा मोमिन पर फज्ल करने वाला है। (१५२) (वह वक्त भी याद करने के लायक है,) जब तुम लोग दूर भागे जाते थे और किसी को पीछे फिर कर नही देखते थे और अल्लाह के रसूल तुम को तुम्हारे पीछे खडे बुला रहे थे तो खुदा ने तुम को गम पर गम पहुचाया ताकि जो चीज़ तुम्हारे हाथ से जाती रही,या जो मुसीबत तुम पर वाकेअ हुई है, इस से तुम गमगीन न हो और खुदा सब आमाल से खबरदार है।[1] (१५३) फिर खुदा ने गम व रंज के बाद तुम पर तसल्ली नाज़िल फरमायी (यानी) नीद, कि तुम मे से एक जमाअत पर छा गयी और कुछ लोग जिन के जान के लाले पड रहे थे, खुदा के बारे मे ना-हक कुफ़ (के दिनो) जैसे गुमान करते थे और कहते थे कि भला हमारे अख्तियार की कुछ बात है? तुम कह दो कि बेशक सब बाते अल्लाह ही के अख्तियार मे है, ये लोग (बहुत-सी बाते) दिलो मे छिपा रखते थे, जो तुम पर ज़ाहिर नही करते थे। कहते थे कि हमारे बस की बात होती तो हम यहा कत्ल ही न किये जाते। कह दो कि अगर तुम अपने घरो मे भी होते तो जिनकी तक्दीर मे मारा जाना लिखा था, -वे अपनी-अपनी कत्ल गाहो की तरफ ज़रूर निकल आते। इस से गरज़ यह थी कि खुदा तुम्हारे सीनो की बातो को आजमाए और जो कुछ तुम्हारे दिलो मे है, उन को खालिस और साफ कर दे और खुदा दिलो की बातो को खूब जानता है। (१५४)

जो लोग तुम मे से (उहुद के दिन) जबकि (मोमिनो और काफिरो की) दो जमाअते एक दूसरे से गुथ गयी, (लडाई से) भाग गये तो उन के कुछ कामो की वजह से शैतान ने उन को फिसला दिया, मगर खुदा ने उनका कुसूर माफ कर दिया। बेशक खुदा बख्शने वाला (और) बुर्दबार है।

---

१ यह उहुद की लडाई का किस्सा है। इस लडाई मे, शुरू-शुरू मे तो मुसलमान गालिब रहे, मगर बाद मे हज़रत सल्ल० की ना-फरमानी की वजह से हार हो गयी। ना-फरमानी यह हुई थी कि हज़रत ने तीरन्दाज़ो की एक जमाअत को एक मोर्चे पर लगा कर हुक्म दिया कि तुम यहा खडे रहना और हरगिज़ न लडना। वे लोग तो वहा खडे हुए और बाकी फौज लडाई मे लग गयी। लडाई मे अल्लाह तआला ने मुसलमानो की मदद की और उन को गलबा दिया। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत सल्ल० की जैसी मदद अल्लाह तआला ने उहुद के दिन की, ऐसी किसी मौके पर नही की। जब मुसलमान जीते और काफिर हार कर भागने लगे तो, तीरंदाज़ो ने चाहा कि मोर्चा छोड कर जीत मे शामिल हो जाए और गनीमत का माल लें, तो वे मोर्चा छोड कर चल दिए।
(शेष पृष्ठ १०६ पर)

या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तकूनू कल्लजी-न क-फरू व क़ालू लि इख़्वानिहिम् इज़ा ज-रबू फ़िल्‌अर्ज़ि औ कानू गुज्जल्लौ कानू अिन्दना मा मातू व मा क़ुतिलू ع लि यज्अ-लल्लाहु जालि-क हस्-र-तन् फी कुलूबिहिम् ط वल्लाहु युह्यी व युमीतु ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीर (१५६) व लइन् क़ुतिल्तुम् फी सबीलिल्लाहि औ मुत्तुम् ल मग्फि-रतुम्-मिनल्लाहि व रह्मतुन् ख़ैरुम्मिम्मा यज्मअून (१५७) व लइम् मुत्तुम् औ कुतिल्तुम् ल - इलल्लाहि तुह्शरून (१५८) फ बिमा रह्मतिम्-मिनल्लाहि लिन्-त लहुम् ج व लौ कुन-त फ़ज़्ज़न् ग़लीज़ल्कल्बि लन्फ़ज़्ज़ू मिन् हौलिक ص फ़अ्फ़ु अन्हुम् वस्तग्फिर्-लहुम् व शाविर्हुम् फिल्‌अम्रि ع फ इज़ा अ-ज़म-त फ-त-वक्कल् अ-लल्लाहि ط इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मु-त-वक्किलीन (१५९) इंय्यन्सुर्-कुमुल्लाहु फ ला ग़ालि-ब लकुम् ع व इंय्यख़्ज़ुल्कुम् फ-मन् ज़ल्लज़ी यन्सुरुकुम् मिम्बअ्-दिही ط व अ-लल्लाहि फल्य-त-वक्कलिल् - मुअ्मिनून (१६०) व मा का-न लि नबिय्यिन् अंय्यग़ुल्-ल ط व मंय्यग्लुल् यअ्ति बिमा ग़ल्-ल यौमल्‌कियामति ع सुम-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्मा-क-स-बत् व हुम् ला युज़्लमून (१६१) अ फ मनित्त-ब-अ रिज़्वानल्लाहि क-मम्बा-अ बि स-ख़तिम्-मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु ط व बिअ्सलमसीर (१६२) हुम् द-र-जातुन् अिन्दल्लाहि ط वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ्-मलून (१६३) ल-कद् मन्नल्लाहु अ-लल्-मुअ्मिनी-न इज़् ब-अ-स फीहिम् रसूलम्मिन् अन्फ़ुसिहिम् यत्लू अलैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्‌हिक्म-तु ع व इन् कानू मिन् क़ब्लु ल - फी ज़लालिम् - मुबीन ● (१६४)

كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِى الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ
كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِىْ
قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَلَئِنْ
قُتِلْتُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ
مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝ وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ۝
فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ
لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۪ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ
فِى الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ۝
اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِىْ
يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَمَا
كَانَ لِنَبِىٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ
ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ اَفَمَنِ
اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ ۝ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا
مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ اَوَلَمَّا

● नि १/२

(१५५) मोमिनो ! उन लोगो जैसे ने होना, जो कुफ़ करते है और उन के (मुसलमान) भाई जब (खुदा की राह में) सफर करे (और मर जाए) या जिहाद को निकले (और मारे जाएं) तो उन के बारे मे कहते है कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। इन बातो से मक्सूद यह है कि खुदा इन लोगो के दिलो मे अफसोस पैदा कर दे और ज़िदगी और मौत तो खुदा ही देता है और खुदा तुम्हारे सब कामो को देख रहा है। (१५६) और अगर तुम खुदा के रास्ते मे मारे जाओ या मर जाओ, तो जो (माल व मताअ) लोग जमा करते हैं, उस से खुदा की वख्शिश और रहमत कही बेहतर है। (१५७) और अगर तुम मर जाओ, या मारे जाओ, खुदा के हुज़ूर मे ज़रूर इकट्ठे किये जाओगे। (१५८) (ऐ मुहम्मद !) खुदा की मेहरबानी से, तुम्हारी तबियत इन लोगो के लिए नर्म वाके हुई है और अगर तुम बुरी तबियत के और सख्त-दिल होते, तो ये तुम्हारे पास से भाग खडे होते, तो उन को माफ कर दो और उन के लिए (खुदा से) मग्फिरत मागो और अपने कामो मे उन से मश्विरा लिया करो और जब (किसी काम का) पक्का इरादा कर लो तो खुदा पर भरोसा रखो। बेशक खुदा भरोसा रखने वालो को दोस्त रखता है। (१५९) अगर खुदा तुम्हारा मददगार है, तो तुम पर कोई गालिब नही आ सकता और अगर वह तुम्हे छोड दे, तो फिर कौन है कि तुम्हारी मदद करे और मोमिनो को चाहिए कि खुदा ही पर भरोसा रखें। (१६०) और कभी नही हो सकता कि (खुदा के) पैगम्बर ख़ियानत करें और ख़ियानत करने वालो को कियामत के दिन ख़ियानत की हुई चीज़ (खुदा के सामने) ला हाज़िर करनी होगी। फिर हर शख्स को उसके आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और बे-इन्साफी नही की जाएगी। (१६१) भला जो शख्स खुदा की खुश्नूदी का ताबेअ हो, वह उस शख्स की तरह ख़ियानत कर सकता है, जो खुदा की ना-खुशी मे गिरफ़्तार हो और जिस का ठिकाना दोज़ख है और वह बुरा ठिकाना है। (१६२) उन लोगो के खुदा के यहा (अलग-अलग और मुख्तलिफ) दर्जे है और खुदा उन के सब आमाल को देख रहा है। (१६३) खुदा ने मोमिनो पर बडा एहसान किया है कि उन मे उन्ही मे से एक पैगम्बर भेजे, जो उन को खुदा की आयते पढ-पढ कर सुनाते और उन को पाक करते और (खुदा की) किताब और दानाई सिखाते हैं और पहले तो ये लोग खुली गुमराही मे थे (१६४) ● (भला यह)

(पृष्ठ १०७ का शेष)

अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने जो उन के अफसर थे, उन को हर तरह मना किया, मगर उन्हो ने उन के कहने पर अमल न किया। इधर तो यह सूरत हुई, उधर खालिद बिन वलीद ने, जो उस वक्त काफिरो के साथ थे, पीछे से हमला कर दिया और इस से लडाई की शक्ल बदल गयी यानी जीतने वालो को हार और हार खाने वालो की जीत हुई। खुद हज़रत सल्ल० का चेहरा-ए-मुबारक ज़ख्मी हुआ, सामने के चार दांत टूट गये, खूद सर में घुस गया और यह मशहूर हो गया कि आप शहीद हो गये, गरज़ मुसलमान भाग खडे हुए। उस वक्त आप फ़रमाते थे कि ऐ खुदा के बन्दो ! मेरे पास आओ, मैं खुदा का पैगम्बर हू। जो कोई फिर काफिरो पर हमला करेगा, उस को जन्नत मिलेगी।

गम पर गम पहुचाने से यह मुराद है कि एक तो ग़नीमत के माल सें महरूम हुए, क़त्ल और ज़ख्मी किये गये, दूसरे हज़रत सल्ल० का शहीद होना सुना और काफिरो का गल्बा देखा।

ज़. १६/१० आ ७ ● नि १/२

अ-व लम्मा असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़द् असब्तुम् मिस्लैहा ﻻ क़ुल्तुम् अन्ना
हाज़ा ط क़ुल् हु-व मिन् अिन्दि अन्फुसिकुम् ط इन्नल्ला-ह अला कुल्लि
शैइन् क़दीर (१६५) व मा असाबकुम् यौमल्-त-कल्-जम्आनि फ़बि-इज्-
निल्लाहि व लि-यअ्-ल-मल्-मुअ्मिनीन ﻻ (१६६) व लि-यअ्-ल-मल्लज़ी-न
नाफ़क़ू صلے व क़ी-ल लहुम् तआलौ
कातिलू फी सबीलिल्लाहि अविद्फ़अू ط
कालू लौ नअ्-लमु कितालल्-लत्तबअ्-नाकुम्
हुम् लिल्कुफ़्रि यौमइज़िन् अक़्रबु मिन्हुम्
लिल्-ईमानि ج यकूलू-न बिअफ़्वाहिहिम्
मा लै-स फ़ी कुलूबिहिम् ط वल्लाहु अअ-लमु
बिमा यक्तुमून (१६७) अल्लज़ी-न कालू
लि-इख़्वानिहिम् व क़-अदू लौ अताअूना मा
कुतिलू ط कुल् फद्रऊ अन् अन्फुसिकुमुल्मौ-त
इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१६८) व ला
तह्स-बन्नल्लज़ी-न कुतिलू फी सबीलिल्लाहि
अम्वातन् ط बल् अह्या-उन् अिन्-द
रब्बिहिम् युर्ज़कून ﻻ (१६९) फ़रिहृी-न

أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ هُوَ
مِنْ عِندِ أَنفُسِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمَا أَصَابَكُمْ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَلِيَعْلَمَ
الَّذِينَ نَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا ۖ
قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَاكُمْ ۗ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ
لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا يَكْتُمُونَ ۝ الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا
مَا قُتِلُوا ۗ قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝
وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ
عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ۝ فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ
وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَ
فَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا
لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِن بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا
مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ
قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ
وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝ فَانقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ

बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फज़्लिही ﻻ व यस्तब्शिरू-न बिल्लज़ी-न
लम् यल्हक़ू बिहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् ﻻ अल्ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम्
व ला हुम् यह्ज़नून ▨(१७०) यस्तब्शिरू-न बिनिअ्-मतिम्-मिनल्लाहि व
फ़ज़्लिव ﻻ- व अन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्रल्-मुअ्मिनीन ع★(१७१)
अल्लज़ीनस्तजाबू लिल्लाहि वर्रसूलि मिम्बअ्-दि मा असाबहुमुल्क़र्हु ط
लिल्लज़ी-न अह्सनू मिन्हुम् वत्तकौ अज्रुन् अज़ीम ج (१७२)
अल्लज़ी-न का-ल लहुमुन्नासु इन्नन्ना-स क़द् ज-मअू लकुम् फख़्शौ हुम्
फज़ादहुम् ईमानंव-व कालू हस्बुनल्लाहु व निअ्-मल्-वकील (१७३)

▨ व लाज़िम ★रु. १७/८ आ १६, ∴ मु अ़ि मु त क २

क्या (बात है कि) जब (उहुद के दिन काफिरो के हाथ से) तुम पर मुसीबत वाकेअ हुई, हालाकि (बद्र की लड़ाई मे) इस से दोगुनी मुसीबत तुम्हारे हाथ से उन पर पड चुकी है, तो तुम चिल्ला उठे कि (हाय) आफत (हम पर) कहा से आ पडी। कह दो कि यह तुम्हारी ही शामते-आमाल है, (तुम ने पैगम्बर के हुक्म के खिलाफ किया) बेशक खुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (१६५) और जो मुसीबत तुम पर दोनो जमाअतो के मुकाबले के दिन वाकेअ हुई, सो खुदा के हुक्म से (वाकेअ हुई) और इस से यह मक्सूद था कि खुदा मोमिनो को अच्छी तरह मालूम कर ले और मुनाफिको को भी मालूम कर ले। (१६६) और (जब) उन से कहा गया कि आओ खुदा के रास्ते मे लड़ो या (काफिरो के) हमलो को रोको, तो कहने लगे कि अगर हम को इस की खबर होती तो हम जरूर तुम्हारे साथ रहते। ये उस दिन ईमान के मुकाबले मे कुफ्र से ज्यादा करीब थे। मुह से वे बातें कहते है जो उन के दिल मे नही है और जो कुछ ये छिपाते है, खुदा उसे खूब जानता है। (१६७) ये खुद तो (लड़ाई से बच कर) बैठ ही रहे थे, मगर (जिन्होने खुदा की राह मे जाने कुर्बान कर दी) •अपने (उन) भाइयो के बारे मे भी कहते हैं कि अगर हमारा कहा मानते तो कत्ल न होते। कह दो कि अगर सच्चे हो तो अपने ऊपर से मौत को टाल देना। (१६८) जो लोग खुदा की राह मे मारे गये, उन को मरे हुए न समझना, (वे मरे हुए नही हैं), बल्कि खुदा के नजदीक ज़िन्दा है और उनको रोज़ी मिल रही है। (१६९) जो कुछ खुदा ने उन को अपने फज़्ल से बख्श रखा है, उस में खुश है, और जो लोग उन के पीछे रह गये और (शहीद हो कर) उन मे शामिल नही हो सके,[1] उन के बारे में खुशिया मना रहे हैं कि (कियामत के दिन) उन को भी न कुछ खौफ होगा और न वे गमनाक होगे ▨ (१७०) और खुदा के इनामो और फज़्ल से खुश हो रहे हैं और इस से कि खुदा मोमिनो का बदला बर्बाद नही करता (१७१) ★∴ जिन्होंने जख्म खाने के बावजूद खुदा और रसूल (के हुक्म) को कुबूल किया,∴ जो लोग इन मे नेक और परहेजगार हैं, उन के लिए बड़ा सवाब है। (१७२) (जब) उनसे लोगो ने आ कर बयान किया कि काफिरो ने तुम्हारे (मुकाबले के) लिए (बडी फौज) जमा की है, तो उन से डरो, तो उन का ईमान और ज्यादा हो गया और कहने लगे हम को खुदा काफी है

---

१ यानी जो शहीद नही हुए और लडाई मे लगे हुए हैं।

▨ व. लाज़िम ★रु. १७/८ आ १६ ∴मु ज़ि मु त क़. २

फ़न्क़लबू बि निअ्-मतिम्-मिनल्लाहि व फ़ज्लिल्लम् यम्सस्हुम् सूउंव-ला व -त्तबअ़ू रिज़्वानल्लाहि ط वल्लाहु जू फज्लिन् अ़ज़ीम (१७४) इन्नमा ज़ालिकुमुश्शैतानु युख़व्विफ़ु औलिया-अहू صلے फ ला तख़ाफ़ू-हुम् व ख़ाफ़ूनि इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१७५) व ला यह्ज़ुन्कल्लज़ी-न युसारिअ़ू-न फ़िल्कुफ़्रि ج इन्नहुम् लय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन् ط युरीदुल्लाहु अल्ला यज्-अ़-ल लहुम् हज़्ज़न् फ़िल्आख़िरति ج व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (१७६) इन्नल्लज़ीनश्त-र-वुल्-कुफ़्-र बिल्ईमानि लंय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन् ج व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (१७७) व ला यह्स-बन्नल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नमा नुम्ली लहुम् ख़ैरुल्लि-अन्फ़ुसिहिम् ط इन्नमा नुम्ली लहुम् लि यज़्दादू इस्मन् ج व लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (१७८) मा कानल्लाहु लि य-ज़-रल्-मुअ्मिनी-न अ़ला मा अन्तुम् अ़लैहि हत्ता यमीज़ल्-ख़बी-स मिनत्तय्यिबि ط व मा कानल्लाहु लि युत्लि-अ़कुम् अ़लल्ग़ैबि व लाकिन्नल्ला-ह यज्तबी मिर्रुसुलिही मंय्यशा-उ صلے फ़ आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही ج व इन् तुअ्मिनू व तत्तक़ू फ-लकुम् अज्रुन् अ़ज़ीम (१७९) व ला यह्सबन्नल्लज़ी-न यब्ख़लू-न बिमा आता-हुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही हु-व ख़ैरल्लहुम् ط बल् हु-व शर्रुल्लहुम् ط सयुतव्वक़ू-न मा बख़िलू बिही यौमल्क़ियामति ط व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर ★ (१८०) ल-क़द् समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह फ़क़ीरुंव्-व नह्नु अग़्नियाउ ⁂ सनक्तुबु मا क़ालू व क़त्लहुमुल्-अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व नक़ूलु ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-हरीक़ (१८१)

سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ۝ اِنَّمَا
ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ
اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ
يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى
مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ
خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ۝ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّ
نَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ
وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ

★रु. १८/६/६ ⁂ व लाज़िम

और वह बहुत अच्छा कारसाज है। (१७३) फिर वे ख़ुदा की नेमतो और उस की मेहरबानी के साथ (ख़ुशी-ख़ुशी) वापस आए, उन को किसी तरह का नुक़्सान न पहुंचा और वे ख़ुदा की ख़ुश्नूदी के ताबेअ रहे और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (१७४) यह (ख़ौफ़ दिलाने वाला) तो शैतान है, जो अपने दोस्तो से डराता है, तो अगर तुम मोमिन हो, तो उन से मत डरना और मुझी से डरते रहना। (१७५) और जो लोग कुफ़्र में जल्दी करते हैं, उन (की वजह) से गमगीन न होना, यह ख़ुदा का कुछ नुक्सान नही कर सकते, ख़ुदा चाहता है कि आख़िरत मे उन को हिस्सा न दे और उन के लिए बडा अजाब (तैयार) है। (१७६) जिन लोगो ने ईमान के बदले कुफ़्र ख़रीदा, वे ख़ुदा का कुछ नही बिगाड़ सकते और उन को दुख देने वाला अज़ाब होगा। (१७७) और काफिर लोग यह न ख़्याल करे कि हम जो उन को मुहलत दिए जाते हैं, तो यह उन के हक मे अच्छा है। (नही, बल्कि) हम उन को इस लिए मुहलत देते है कि और गुनाह कर लें। आख़िरकार उन को ज़लील करने वाला अजाब होगा। (१७८) (लोगो !) जब तक ख़ुदा नापाक को पाक से अलग न कर देगा, मोमिनो को इस हाल मे, जिस मे तुम हो, हरगिज़ नही रहने देगा और अल्लाह तुम को गैब की बातों से भी मुत्तला नही करेगा, हा, ख़ुद अपने पैगम्बरो मे से जिसे चाहता है, चुन लेता है, तो तुम ख़ुदा पर और उस के रसूलो पर ईमान लाओ और अगर ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे तो तुम को बड़ा बदला मिलेगा। (१७९) जो लोग माल मे जो ख़ुदा ने अपने फ़ज़्ल से उन को अता फ़रमाया है, बुख़्ल (कजूसी) करते है, वे इस बुख़्ल को अपने हक मे अच्छा न समझे (वह अच्छा नही,) बल्कि उन के लिए बुरा है। वे जिस माल मे बुख़्ल करते हैं, कियामत के दिन उस का तौक (हार) बना कर उन की गरदनों मे डाला जाएगा और आसमानो और ज़मीन का वारिस ख़ुदा ही है और जो अमल तुम करते हो, ख़ुदा को मालूम है। (१८०) ★

अल्लाह ने उन लोगो का कौल सुन लिया है, जो कहते है कि ख़ुदा फकीर है और हम अमीर हैं, ▨ ये जो कहते है, हम इसको लिख लेंगे और पैगम्बरो को जो ये ना-हक कत्ल करते रहे है, उसको भी (लिख लेंगे) और (कियामत के दिन) कहेगे कि जलती (आग के) अज़ाब के मज़े चखते रहो। (१८१)

★रु. १८/६/६ ▨ व लाज़िम

जालि-क बिमा क़द्द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बि ज़ल्लामिल्-लिल्अबीद
(१८२) अल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह अहि-द इलैना अल्ला नुअ्मि-न
लि रसूलिन् हत्ता यअ्ति-यना बि क़ुर्बानिन् तअ्कुलुहुन्नारु ط क़ुल् क़द्
जा-अकुम् रुसुलुम्मिन् क़ब्ली बिल्बय्यिनाति व बिल्लज़ी क़ुल्तुम् फ़ लि-म
क़तल्तुमूहुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१८३)
फ़ इन् कज़्ज़बू-क फ़-क़द् कुज़्ज़ि-ब रुसुलुम्मिन्
क़ब्लि-क जा-ऊ बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि
वल्किताबिल्-मुनीर (१८४) . कुल्लु नफ़्सिन्
ज़ाइक़तुल्मौति ط व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ-न
उजूरकुम् यौमल्क़ियामति ط फ़ मन् ज़ुह्ज़ि-ह़
अनिन्नारि व उद्ख़िलल्-जन्न-त फ़-क़द् फ़ा-ज़ ط
व मल्ह़यातुद्दुन्या इल्ला मताअुल् - ग़ुरूर
(१८५) ल-तुब-ल-वुन्-न फ़ी अम्वालिकुम् व
अन्फ़ुसिकुम् قف व ल तस्मअुन्-न मिनल्लज़ी-न
ऊतुल्किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व मिनल्लज़ी-न
अश्रकू अ - ज़न् कसीरन् ط व इन्
तस्बिरू व तत्तक़ू फ इन्-न ज़ालि-क मिन्
अज़्मिल्-उमूर (१८६) व इज़् अ-ख़-ज़ल्लाहु मीसाक़ल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब
लतुबय्यिनुन्नहू लिन्नासि व ला तक्तुमूनहू ز फ-न-बज़ूहु वरा-अ ज़ुहूरिहिम्
वश्तरौ बिही स-म-नन् क़लीलन् ط फ बिअ्-स मा यश्तरून (१८७) ला
तह्सबन्नल्लज़ी-न यफ़्रहू-न बिमा अतव्-व युहिब्बू-न अय्युह्मदू बिमा लम् यफ़्अ़लू
फ ला तह्सबन्नहुम् बि मफ़ाज़तिम्-मिनल्-अज़ाबि ج व लहुम् अ़ज़ाबुन्
अलीम (१८८) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط वल्लाहु अ़ला
कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (१८९) इन्-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि
वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि ल-आयातिल्-लि उलिल्-अल्बाब ع (१९०)

أَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ
اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ
جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِىْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِىْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ
جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ
وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ
اُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝
لَتُبْلَوُنَّ فِىْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۟ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَاِنْ
تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ
مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۫
فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا
يَشْتَرُوْنَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ
اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ
الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ۝

यह उन कामो की सज़ा है जो तुम्हारे हाथ आगे भेजते रहे है और खुदा तो बन्दो पर बिल्कुल जुल्म नही करता। (१८२) जो लोग कहते है कि खुदा ने हमे हुक्म भेजा है कि जब तक कोई पैगम्बर हमारे पास ऐसी नियाज़ ले कर न आए, जिस को आग आ कर खा जाए, तब तक हम उस पर ईमान न लाएगे। (ऐ पैगम्बर ! इन से) कह दो कि मुझ से पहले कई पैगम्बर तुम्हारे पास खुली हुई निशानिया ले कर आए और वह (मोजज़ा) भी लाये, जो तुम कहते हो, तो अगर सच्चे हो तो तुम ने उन को कत्ल क्यो किया ?[1] (१८३) फिर अगर ये लोग तुम को सच्चा न समझे, तो तुम से पहले बहुत-से पैगम्बर खुली हुई निशानिया और सहीफे (ग्रथ) और रोशन किताबें ले कर आ चुके है और लोगो ने उन को भी सच्चा नही समझा। (१८४) हर जान को मौत का मजा चखना है और तुम को कियामत के दिन तुम्हारे आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, तो जो शख्स जहन्नम की आग से दूर रखा गया और बहिश्त मे दाखिल किया गया, वह मुराद को पहुच गया। और दुनिया की जिन्दगी तो धोखे का सामान है। (१८५) (ऐ ईमान वालो !) तुम्हारे माल व जान मे तुम्हारी आजमाइश की जाएगी और तुम अहले किताब से और उन लोगो से, जो मुश्रिक है, बहुत-सी तक्लीफ की बातें सुनोगे तो अगर सब्र और परहेज़गारी करते रहोगे तो ये बडी हिम्मत के काम हैं। (१८६) और जब खुदा ने उन लोगो से, जिन को किताब इनायत की गयी थी, इकरार लिया कि (जो कुछ इस मे लिखा है) उस मे साफ-साफ बयान करते रहना और (उस की किसी बात) को न छिपाना, तो उन्हो ने उस को पीठ पीछे डाल दिया और उस के बदले थोडी-सी कीमत हासिल की। ये जो कुछ हासिल करते हैं, बुरा है। (१८७) जो लोग अपने (ना-पसन्द) कामो मे खुश होते हैं और (पसन्दीदा काम) जो करते नही, उन के लिए चाहते है कि उन की तारीफ की जाए, उन के बारे मे ख्याल न करना कि वह अज़ाब से रुस्तगार हो जाएगे (और उन्हे दर्द देने वाला अज़ाब होगा)। (१८८) और आसमानो और ज़मीन की बादशाही खुदा ही की है और खुदा हर चीज़ पर कादिर है। (१८९) ★

बेशक आसमानो और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन के बदल-बदल कर आने-जाने मे

---

१ अल्लाह तआला ने कुछ पैगम्बरो को यह मोजज़ा बख्शा था कि उन की उम्मत के लोग जो कुर्बानी और नज़्र व नियाज़ खुदा के लिए करते, तो उस को मैदान मे रख देते। आसमान से आग आती और उस को जला देती तो यह समझा जाता कि कुर्बानी खुदा की जनाब मे कुबूल हुई। यहूदी आखिरी पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्ल० से कहने लगे कि खुदा ने हम को यह हुक्म दे रखा है कि हम किसी पैगम्बर पर ईमान न लाएं जब तक यह मोजज़ा न देख ले, तो आप भी यह मोजज़ा दिखाए। खुदा ने फरमाया, तुम उन के जवाब मे कह दो कि कई पैगम्बर मुझ से पहले कई तरह के मोजज़े ले कर आए और यह मोजज़ा भी, जो तुम कहते हो, लेकिन अगर तुम सच्चे हो तो इन पैगम्बरो को कत्ल क्यो करते रहे ? मतलब यह कि पैगम्बरो को झुठलाना और ना-फ़रमानी करना तुम्हारी आदत मे दाखिल है।

★रु १६/१० आ ६

अ़ल्लजी-न यज़्कुरूनल्ला-ह कियामव-व कुअूदव्-व अ़ला जुनूबिहिम् व् य-त-फ़क्करू-न फी ख़ल्किस्समावाति वल्अर्जि ८ रब्बना मा ख-लक़्-त हाज़ा बातिलन् ८ सुब्हान-क फ क़िना अजाबन्नार (१९१) रब्बना इन्न-क मन् तुद्खिलिन्ना-र फ-कद् अख़्जैतहू ط व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार (१९२) रब्बना इन्नना समिअ्-ना मुनादियय्युनादी लिलईमानि अन् आमिनू बि रब्बिकुम् फ़ आमन्ना रब्बना फग्फिर्लना जुनूबना व कफ्फ़िर् अ़न्ना सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना म-अल् - अब्रार (१९३) रब्बना व आतिना मा वअ़त्तना अ़ला रुसुलि-क व ला तुख़्ज़िना यौमल्-क़ियामति ط इन्न-क ला तुख़्लिफुल्-मीआद (१९४) फस्तजा-ब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी ला उज़ीअु अ-म-ल आमिलिम्-मिन्कुम् मिन् ज-करिन् औ उन्सा ८ बअ्-जुकुम् मिम्बअ्-ज़िन् ८ फल्लजी-न हाजरू व उ-ख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व ऊज़ू फ़ी सबीली व क़ातलू व कुतिलू लउकफ्फिरन्न-न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल उद्खिलन्न-हुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ८ सवाबम्-मिन् अ़िन्दिल्लाहि ط वल्लाहु अ़िन्दहू हुस्नुस्सवाब (१९५) ला यग़ुर्रन्न-क तक़ल्लुबुल्लजी-न क-फरू फ़िल्बिलाद (१९६) मताअुन् कलीलुन् सुम्-म मअ्वाहुम् जहन्न-मु ط व बिअ्सल्मिहाद (१९७) लाकिनिल्-लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा नुजुलम्मिन् अ़िन्दिल्लाहि ط व मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुल्लिल्-अब्रार ● (१९८) व इन्-न मिन् अह्लिल्किताबि लमंय्युअ्मिनु बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् व मा उन्ज़ि - ल इलैहिम् ख़ाशिअ़ी - न

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ
فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ
فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي
لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَ
كَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا
عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝
فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِنْكُمْ مِنْ
ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا
مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ۝ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ
الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ
اللَّهِ خَيْرٌ لِلْأَبْرَارِ ۝ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَ
مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ

● सु ३/४

अक्ल वालो के लिए निशानिया है। (१९०) जो खडे और बैठे और लेटे (हर हाल मे) ख़ुदा को याद करते और आसमान और जमीन की पैदाइश मे गौर करते (और कहते) हैं कि ऐ परवरदिगार! तू ने इस (मख़्लूक) को बे-फायदा नही पैदा किया। तू पाक है, तो (कियामत के दिन) हमे दोजख़ के अजाब से बचाइयो। (१९१) ऐ परवरदिगार! जिस को तूने दोज़ख मे डाला, उमे रुस्वा किया और जालिमो का कोई मददगार नही। (१९२) ऐ परवरदिगार! हम ने एक पुकारने वाले को सुना कि ईमान के लिए पुकार रहा था, (यानी) अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये। ऐ परवरदिगार! हमारे गुनाह माफ फरमा और हमारी बुराइयो को हम मे दूर कर और हम को दुनिया से नेक बन्दो के साथ उठा। (१९३) ऐ परवरदिगार! तू ने जिन-जिन चीज़ो के हम से अपने पैगम्बरो के जरिए से वायदे किये है, वह हमे अदा फरमा और क़ियामत के दिन हमे रुस्वा न कीजियो। कुछ शक नही कि तू वायदा के खिलाफ नही करता। (१९४) तो उन के परवरदिगार ने उन की दुआ कुबूल कर ली। (और फरमाया) कि मैं किसी अमल करने वाले के अमल को, मर्द हो या औरत जाया नही करता। तुम एक दूसरे की जिन्स हो, तो जो लोग मेरे लिए वतन छोड़ गये और अपने घरो से निकाले गये और सताये गये और लडे और कत्ल किये गये, मैं उन के गुनाह दूर कर दूगा और उन को बहिश्तो मे दाखिल करूगा, जिन के नीचे नहरे बह रही हैं। (यह) खुदा के यहा से बदला है और खुदा के यहा अच्छा बदला है। (१९५) (ऐ पैगम्बर!) काफिरो का शहरो मे चलना-फिरना तुम्हे धोखा न दे। (१९६) (यह दुनिया का) थोडा-सा फायदा है, फिर (आखिरत मे) तो उन का ठिकाना दोज़ख है और वह बुरी जगह है।[1] (१९७) लेकिन जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे, उन के लिए बाग है, जिन के नीचे नहरे बह रही है (और) उन मे हमेशा रहेगे। (यह) खुदा के यहा से (उन की)

---

१ यानी काफिर जो शहरो मे तिजारत के लिए चलते-फिरते और बहुत-सा माल पैदा करते है, तुम इन का ख्याल न करना और यह न समझना कि यह भारी फायदा है, क्योकि फना होने वाला है और दुनिया के तमाम फायदे, आख़िरत के सवाव के मुकावले मे बहुत कम है। उन काफिर ताजिरो और मालदारो का आख़िरत मे ठिकाना दोज़ख है और खुदा ने जो मुसलमानो के लिए तैयार कर रखा है, वे बहिश्त के बाग हैं, जिन के आराम वाकी है और हमेशा रहेगे।

लिल्लाहि ᵁ ला यश्तरू-न वि आयातिल्लाहि स-म-नन् क़लीलन् ᵇ उला-इ-क लहुम् अज्रुहुम् अिन् - द रव्विहिम् ᵇ इन्नल्ला - ह सरीअुल्हिसाव (१९९) या अय्युहल्लजी-न आमनुस्विरू व साविरू व राविनू वत्तक़ुल्ला-ह ल-अ़ल्लकुम् तुफ्लिहून ★ (२००)

४ सूरतुन्निसा-इ ९२

(मदनी) इस सूर मे अरवी के १६६६७ अक्षर, ३७२० शव्द, १७६ आयतें और २४ रुकूअ हैं।

विस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

या अय्युहन्नासुत्तकू रव्वकुमुल्लजी ख - ल - क़कुम् मिन् नफ़्सिव्वाहिदतिंव्-व ख-ल-क़ मिन्हा जौजहा व वस्-स मिन्हुमा रिजालन् कसीरंव् - व निसा - अन् वत्तक़ुल्लाहल्लजी तसा - अलू - न विही वल्अर्हा-म ᵇ इन्नल्ला-ह का-न अलैकुम् रक़ीबा (१) व आतुल्यतामा अम्वालहुम् व ला त-त-वद्दलुल्खवी-स वित्तय्यिवि ᵓ व ला तअ्कुलू अम्वालहुम् इला अम्वालिकुम् ᵇ इन्नहू का - न हूबन् कवीरा (२) व इन् खिफ़्तुम् अल्ला तुक़्सितू फ़िल्यतामा फ़न्किहू मा ता-व लकुम् मिनन्निसा - इ मस्ना व सुला-स व रुवा-अ़ ᵕ फ़ इन् खिफ़्तुम् अल्ला तअ्-दिलू फ वाहिद-तन् औ मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् ᵇ जालि-क अद्ना अल्ला तअूलू ᵇ (३) व आतुन्निसा - अ सदुक़ातिहिन् - न निह्-ल - तुन् ᵇ फ इन् तिव्-न लकुम् अन् शैइम्-मिन्हु नफ़्सन् फ कुलूहु हनी-अम्-मरी-आ (४) व ला तुअ्तुस्सुफ़-हा-अ अम्वालकुमुल्लती ज-अ-लल्लाहु लकुम् कियामंव्वर्ज़ुक़ू-हुम् फ़ीहा वक्सूहुम् व क़ूलू लहुम् कौलम्मअ्-रूफ़ा (५)

اللهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا
وَاتَّقُوا اللهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝
سورة النساء مدنية وهي مائة وست وسبعون آية وأربع وعشرون ركوعا
بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ
وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا
اللهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللهَ كَانَ عَلَيْكُمْ
رَقِيبًا ۝ وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ
وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ۝
وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ
مِنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا
فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ۝ وَ
آتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ
نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَرِيئًا ۝ وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ
الَّتِي جَعَلَ اللهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَ
قُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝ وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا

मेहमानी है और जो कुछ खुदा के यहा है, वह नेको के लिए बहुत अच्छा है। (१९८) ● और कुछ अह्ले किताब ऐसे भी हैं, जो खुदा पर और उस (किताब) पर, जो तुम पर नाजिल हुई, और उस पर जो उन पर नाजिल हुई, ईमान रखते हैं और खुदा के आगे आजिज़ी करते है और खुदा की आयतो के बदले थोडी-सी कीमत नही लेते। यही लोग है, जिन का बदला उस के परवरदिगार के यहा तैयार है। और खुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (१९९) ऐ अह्ले ईमान! (काफिरो के मुकाबले मे) साबित-कदम रहो। और इस्तिकामत (जमाव) रखो और (मोर्चो पर) जमे रहो और खुदा से डरो, ताकि मुराद हासिल करो। (२००) ★

४ सूरः निसा ९२

सूर निसा मदनी है और इसमे एक सौ सतहत्तर आयते और चौबीस रुकूअ हे

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगो! अपने परवरदिगार से डरो, जिसने तुमको एक शख्स से पैदा किया (यानी पहले) उस से उसका जोडा बनाया, फिर उन दोनो से कसरत से मर्द व औरत (पैदा करके धरती पर) फैला दिए और खुदा से जिस के नाम को तुम जरूरत पूरी करने का जरिया बनाते हो, **डरो**, रिश्तेदारी (काट देने) से (बचो)। कुछ शक नही कि खुदा तुम को देख रहा है। (१) और यतीमो का माल (जो तुम्हारे कब्ज़े मे हो) इनके हवाले कर दो और उनके पाकीजा (और उम्दा) माल को (अपने खराब और) बुरे माल से न बदलो और न उनका माल अपने माल मे मिला कर खाओ कि यह बडा सख्त गुनाह है। (२) और अगर तुमको इस बात का डर हो कि यतीम लडकियो के बारे मे इसाफ न कर सकोगे, तो उन के सिवा जो औरते तुम को पसन्द हो, दो-दो या तीन-तीन या चार-चार, उनसे निकाह कर लो और अगर इस बात का डर हो कि सब औरतो से बराबर का व्यवहार न कर सकोगे, तो एक औरत (काफी है) या लौडी, जिस के तुम मालिक हो. इन मे तुम बे-इन्साफी से बच जाओगे। (३) और औरतो को उन के मह्र खुशी से दे दिया करो, हा, अगर वे अपनी खुशी से उसमे से कुछ तुम को छोड दें तो उसे खुशी-खुशी खा लो। (४) और बे-अक्लो को उन का माल जिसे खुदा ने तुम लोगो के लिए रोजी का जरिया बनाया है मत दो, (हा,) उसमे से उनको खिलाते

वव्तलुल् - यतामा हत्ता इज़ा ब-लगुन्निका-ह़ ج फ इन् आनस्तुम् मिन्हुम् रुश्दन् फद्फ़अ़ू इलैहिम् अम्वालहुम् ج व ला तअ्कुलूहा इस्राफ़ंव् - व विदारन् अय्यक्बरू ط व मन् का-न ग़निय्यन् फल्यस्तअ्-फिफ़् ج व मन् का-न फ़क़ीरन् फ़ल्यअ्कुल् बिलमअ् - रूफि ط फ़ इज़ा द-फ़अ् - तुम् इलैहिम् अम्वालहुम् फ अश्हिदू अलैहिम् ط व कफा बिल्लाहि ह़सीबा (६) लिर्रिजालि नसीबुम्-मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि वल्अक़्रबू-न ص व लिन्निसा-इ नसीबुम्मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि वल्अक़्रबू-न ص मिम्मा कल्-ल मिन्हु औ कसु-र ط नसीबम्-मफ्रूज़ा (७) व इज़ा ह-ज-रल् किस्म-तु उलुल्कुर्बा वल्यतामा वलमसाकीनु फर्ज़ुक़ूहुम् मिन्हु व क़ूलू लहुम् क़ौलम् मअ्-रूफा (८) वल्यख़्शल्लज़ी-न लौ त-रकू मिन् ख़ल्फ़िहिम् ज़ुर्रिय्य-तन् ज़िआफ़न् ख़ाफू अलैहिम् ص फ़ल्यत्तकुल्ला - ह वल्यकूलू कौलन् सदीदा (९) इन्नल्लज़ी-न यअ्कुलू-न अम्वालल्-यतामा ज़ुल्मन् इन्नमा यअ्कुलू-न फी बुतूनिहिम् नारन् ط व स-यस्लौ - न सअ़ीरा★(१०) यूसी - कुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम् ق लिज़्ज - करि मिस्लु ह़ज़्ज़िल्-उन्सयैनि ج फ इन् कुन्-न निसा-अन् फ़ौक़स्-नतैनि फ लहुन्-न सुलुसा मा त-र-क ج व इन् कानत् वाहि-द-तन् फ़ लहन्निस्फु ط व लि अ-ब-वैहि लि कुल्लि वाहिदिम्मिन्-हुमस्सुदुसु मिम्मा त-र-क इन् का-न लहू व-लदुन् ج फ़ इल्लम् यकुल्लहू व-लदुंव्-व वरिसहू अ-ववाहु फ लि-उम्-मिहिस्सुलुसु ج फ इन् का-न लहू इख़्वतुन् फ लि उम्-मिहिस्सुदुसु मिम्बअ्-दि वसिय्यतिय्यूसी बिहा औदैन ط आबा-उकुम् व अब्ना-उकुम् ला तद्रू-न अय्युहुम् अक़्रबु लकुम् नफ़अ़न् ط फरीज़्-तम् - मिनल्लाहि ط इन्नल्ला - ह का - न अ़लीमन् हकीमा (११)

النِّكَاحَ ۚ فَإِنْ آنَسْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ
وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا
فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا
دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝
لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ
مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا
مَفْرُوضًا ۝ وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ
فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝ وَلْيَخْشَ الَّذِينَ
لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ
وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ
ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۝ يُوصِيكُمُ
اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ ۚ فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً
فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ
وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ
وَلَدٌ ۚ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِنْ
كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ ۚ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا
أَوْ دَيْنٍ ۗ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ

और पहनाते रहो और उनसे मुनासिब बाते कहते रहो। (५) और यतीमो को बालिग होने तक काम-काज मे लगाये रखो, फिर (बालिग होने पर) अगर उन मे अक्ल की पुख्तगी देखो, तो उनका माल उनके हवाले कर दो और इस डर से कि वे बडे हो जाएगे (यानी बडे होकर तुम से अपना माल वापस ले लेगे) उसको फिजूलखर्ची और जल्दी मे न उडा देना। जो शख्स खुशहाल हो उसको (ऐसे माल से कतई तौर पर) परहेज़ रखना चाहिए और जो बद-हालहो, वह मुनासिब तौर पर (यानी खिदमत के बराबर) कुछ ले ले और जब उन का माल उनके सुपुर्द करने लगो तो गवाह कर लिया करो और हकीकत मे तो खुदा ही गवाह (और) हिसाब लेने वाला काफी है। (६) जो माल मा-बाप और रिश्तेदार छोड मरे, थोडा हो या बहुत, उसमे मर्दो का भी हिस्सा है और औरतो का भी। ये हिस्से (खुदा के) मुकर्रर किये हुए हैं। (७) और जब मीरास की तक्सीम के वक्त (गैर वारिस) रिश्तेदार और यतीम और मुहताज आ जाए, तो उन को भी उस मे से कुछ दे दिया करो और मीठी बातो से पेश आया करो। (८) और ऐसे लोगो को डरना चाहिए जो (ऐसी हालत मे हो कि) अपने बाद नन्हे-नन्हे बच्चे छोड जाए और उन को उन के बारे मे डर हो (कि उनके मरने के बाद इन बेचारो का क्या हाल होगा) पस चाहिए कि ये लोग खुदा से डरे और माकूल बात कहे। (९) जो लोग यतीमो का माल नाजायज तौर पर खाते है, वे अपने पेट मे आग भरते है और दोजख में डाले जाएगे। (१०) ✶

खुदा तुम्हारी औलाद के बारे मे तुम को इर्शाद फरमाता है कि एक लडके का हिस्सा दो लडकियो के हिस्से के बराबर है और अगर मरने वाले की औलाद सिर्फ लडकिया ही हो (यानी दो या) दो से ज़्यादा, तो कुल तर्के मे उन का दो तिहाई और अगर सिर्फ एक लडकी हो तो उस का हिस्सा आधा और मय्यत के मा-बाप का यानी दोनो मे हर एक का तर्के मे छठा हिस्सा, बशर्ते कि मय्यत के औलाद हो, और अगर औलाद न हो और सिर्फ मा-बाप ही उस के वारिस हो तो एक तिहाई मा का हिस्सा। और अगर मय्यत के भाई भी हो तो मा का छठा हिस्सा (और मय्यत के तर्के की यह तक्सीम) वसीयत (के पूरा करने) के बाद, जो उसने की हो या कर्ज़ के (अदा होने के बाद जो उसके ज़िम्मे हो, अमल मे आएगी) तुम को मालूम नही कि तुम्हारे बाप-दादो, बेटो-पोतो मे से फायदे के लिहाज़ से कौन तुम से ज्यादा करीब है। ये हिस्से खुदा के मुकर्रर किये हुए है और खुदा सब कुछ जानने वाला और हिक्मत वाला है। (११) और जो माल तुम्हारी औरतें छोड मरे, अगर

★रु १/१२ आ १०

व लकुम् निस्फु मा त-र-क अज़्वाजुकुम् इल्लम् यकुल्लहुन्-न व-लदुन् फ़ इन् का-न लहुन्-न व-लदुन् फ़ लकुमुर्रुबुअु मिम्मा त-रक्-न मिम्बअ्-दि वसिय्यतिय्यूसी-न बिहा औदैनिन् व लहुन्नर्रुबुअु मिम्मा त-रक्तुम् इल्लम् यकुल्लकुम् व-लदुन् फ़ इन् का-न लकुम् व-लदुन् फ लहुन्नस्सुमुनु मिम्मा तरक्तुम् मिम्बअ्-दि वसिय्यतिन् तूसू-न बिहा औदैनिन् व इन्का-न रजुलुय-यूरसु कलाल-तुन् अविम्र-अतुंव्-व लहू अखुन् औ उख्तुन् फ लि कुल्लि वाहिदिम्-मिन्हुमस्सुदुसु फ इन् कानू अक्स-र मिन् ज़ालि-क फ़हुम् शुरका-उ फिस्सुलुसि मिम्बअ्-दि वसिय्यतिय्यूसा बिहा औदैनिन् गै-र मुज़ार्रिन् वसिय्यतम्-मिनल्लाहि वल्लाहु अ़लीमुन् ह़लीम (१२) तिल्-क हुदूदुल्लाहि व मय्युतिअिल्ला-ह व रसूलहू युद्खिल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फीहा व ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (१३) व मय्यअ्-सिल्ला-ह व रसूलहू व य-त-अ़-द्-द हुदूदहु युद्खिल्हु नारन् ख़ालिदन् फ़ीहा व लहू अ़ज़ाबुम्-मुहीन★(१४) वल्लाती यअ्तीनल्-फाहि-श-त मिन् निसा-इकुम् फस्तश्हिदू अ़लैहिन्-न अर्ब-अ़-तम्-मिन्कुम् फ़ इन् शहिदू फ़ अम्सिकू-हुन्-न फ़िल्बुयूति हत्ता य-त-वफ़्फ़ा-हुन्नल्मौतु औ यज-अ़-लल्लाहु लहुन्-न सबीला (१५) वल्लज़ानि यअ्तियानिहा मिन्कुम् फ आज़ूहुमा फ इन् ताबा व अस्लहा फ़ अअ्-रिज़ू अन्हुमा इन्नल्ला-ह का-न तव्वाबर्रहीमा (१६) इन्नमत्तौबतु अ़-लल्लाहि लिल्लज़ी-न यअ्-मलूनस्सू-अ बि जहालतिन् सुम्-म यतूबू-न मिन् करीबिन् फ़ उला-इ-क यतूबुल्लाहु अ़लैहिम् व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा (१७)

فريضة من الله ان الله كان عليما حكيما ۝ ولكم نصف ما ترك
ازواجكم ان لم يكن لهن ولد فان كان لهن ولد فلكم الربع
مما تركن من بعد وصية يوصين بها او دين ولهن الربع
مما تركتم ان لم يكن لكم ولد فان كان لكم ولد فلهن
الثمن مما تركتم من بعد وصية توصون بها او دين وان
كان رجل يورث كللة او امراة وله اخ او اخت فلكل واحد
منهما السدس فان كانوا اكثر من ذلك فهم شركاء في الثلث
من بعد وصية يوصى بها او دين غير مضار وصية من الله
والله عليم حليم ۝ تلك حدود الله ومن يطع الله ورسوله
يدخله جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها وذلك
الفوز العظيم ۝ ومن يعص الله ورسوله ويتعد حدوده
يدخله نارا خالدا فيها وله عذاب مهين ۝ والتي يأتين
الفاحشة من نسائكم فاستشهدوا عليهن اربعة منكم فان
شهدوا فامسكوهن في البيوت حتى يتوفهن الموت او يجعل
الله لهن سبيلا ۝ والذان يأتينها منكم فاذوهما فان تابا و
اصلحا فاعرضوا عنهما ان الله كان توابا رحيما ۝ انما التوبة
على الله للذين يعملون السوء بجهالة ثم يتوبون من قريب

★रु २/१३ आ ४

उन के औलाद न हो, तो उस मे आधा हिस्सा तुम्हारा और अगर औलाद हो तो तर्के मे तुम्हारा हिस्सा चौथाई। (लेकिन यह बांट) वसीयत (के पूरा करने) के बाद, जो उन्होने की हो या कर्ज़ के (अदा होने के वाद, जो उन के ज़िम्मे हो) की जाएगी और जो माल तुम (मर्द) छोड मरो, अगर तुम्हारे औलाद न हो तो तुम्हारी औरतो का उसमे चौथा हिस्सा। और अगर औलाद हो तो उन का आठवां हिस्सा। (ये हिस्से) तुम्हारी वसीयत (के पूरा करने के) बाद जो तुम ने की हो और कर्ज़ के (अदा होने के बाद) बाटे जाएगे। और अगर ऐसे मर्द या औरत की मीरास हो, जिसके न बाप हो, न बेटा, मगर उसके भाई या बहन हो तो उनमे से हर एक का छठा हिस्सा और अगर एक से ज्यादा हों तो सब एक तिहाई मे शरीक होगे। (ये हिस्से भी)वसीयत व कर्ज़ के अदा होने के वाद, बशर्ते कि उनसे मय्यत ने किसी का नुक्सान न किया हो (तक्सीम किये जाएगे।) यह खुदा का फरमान है और खुदा निहायत इल्म वाला (और) निहायत हिल्म वाला है। (१२) ये (तमाम हुक्म) ख़ुदा की हदे है और जो आदमी ख़ुदा और उसके पैगम्बर की फरमाबरदारी करेगा, ख़ुदा उसको जन्नतो मे दाख़िल करेगा, जिंन में नहरे बह रही है, वे उनमें हमेशा रहेगे और यह बडी कामियाबी है। (१३) और जो ख़ुदा और उसके रसूल की ना-फरमानी करेगा, और उस की हदो से निकल जाएगा, उस को ख़ुदा दोज़ख में डालेगा, जहा वह हमेशा रहेगा और उस को ज़िल्लत का अज़ाब होगा। (१४)★

मुसलमानो! तुम्हारी औरतो मे जो बद-कारी कर बैठें, उन पर अपने लोगो मे चार आदमियो की गवाही लो। अगर वे (उन की बद-कारी की) गवाही दें, तो इन औरतो को घरो मे बंद रखो, यहा तक कि मौत उन का काम तमाम कर दे या खुदा उन के लिए कोई और रास्ता (पैदा) करे। (१५) और जो मर्द तुम में से बदकारी करे, तो उनको ईज़ा (तक्लीफ) दो, फिर अगर वे तौबा कर ले और भले बन जाएं तो उनका पीछा छोड़ दो। वेशक ख़ुदा तौबा कुबूल करने वाला (और) मेहरबान है। (१६) ख़ुदा उन्ही लोगो की तौबा कुबूल करता है, जो नादानी से बुरी हरकत कर बैठते है, फिर जल्द तौबा कर लेते है, पस ऐसे लोगो पर खुदा मेहरबानी करता है और वह सब कुछ जानता (और) हिक्मत वाला है। (१७) और ऐसे लोगो की तौबा कुबूल नहीं होती

★रु २/१३ आ ४

जो (सारी उम्र) बुरे काम करते रहे, यहा तक कि जब उन मे से किसी की मौत आ मौजूद हो, तो उस वक्त कहने लगे कि अब मैं तौबा करता हू और न उनकी (तौबा कुबूल होती है) जो कुफ्र की हालत मे मरें। ऐसे लोगो के लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (१८) मोमिनो! तुमको जायज नही कि जबरदस्ती औरतो के वारिस बन जाओ और (देखना) इस नीयत से कि जो कुछ तुमने उन को दिया है उसमे से कुछ ले लो, उन्हे (घरो मे) मत रोक रखना। हा अगर वे खुले तौर पर बद-कारी करे, (तो रोकना मुनासिब नही) और उनके साथ अच्छी तरह से रहो-सहो। अगर वह तुम को ना-पसन्द हो तो अजब नही कि तुम किसी चीज को ना-पसन्द करो और खुदा उसमे बहुत-सी भलाई पैदा कर दे। (१९) और अगर तुम एक औरत को छोड कर दूसरी औरत करनी चाहो और पहली औरत को बहुत-सा माल दे चुके हो, तो उसमे से कुछ मत लेना। भला तुम ना-जायज़ तौर पर और खुले जुल्म से अपना माल उससे वापस लोगे? (२०) और तुम दिया हुआ माल किस तरह वापस ले सकते हो, जबकि तुम एक दूसरे के साथ सोहबत कर चुके हो और वे तुम से पक्का अह्द भी ले चुकी है। (२१) और जिन औरतो से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो, उन से निकाह मत करना, मगर (जाहिलियत मे) जो हो चुका, (सो हो चुका), यह निहायत बे-हयाई और (खुदा की) ना-खुशी की बात थी और बहुत बुरा दस्तूर था। (२२) ☆

तुम पर तुम्हारी माए और बेटिया, बहने और फूफिया और खालाए और भतीजिया और भाजिया और वे माएं, जिन्होने तुम को दूध पिलाया हो,[1] और रज़ाअी बहने और सासे हराम कर दी गयी है और जिन औरतो से तुम सोहबत कर चुके हो, उन की लडकिया, जिन्हे तुम पाला करते हो, (वे भी तुम पर हराम है,) हां अगर उनके साथ तुम ने सोहबत न की हो, तो (उनकी लडकियो के साथ निकाह कर लेने में) तुम पर कुछ गुनाह नही और तुम्हारे सगे बेटो की औरते भी और दो बहनो का इकट्ठा करना भी (हराम है), मगर जो हो चुका, (सो हो चुका)[2] बेशक खुदा बख्शने

---

१ यानी दाइया कि दूध पिलाने के एतबार से वे भी तुम्हारी माए हैं।

२ हदीस शरीफ मे फूफी और भतीजी और खाला और भाजी का जमा करना भी हराम है।

★रु. ३/१४ आ ८

पांचवां पारः वल्मुह्-सनातु

सूरतुन्निसा-इ आयत २४ से १४७

वल्मुह्सनातु मिनन्निसा-इ इल्ला मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् ० किताबल्लाहि अलैकुम् ० व उहि़ल-ल लकुम् मा वरा-अ जालिकुम् अन् तब्तग़ू बि अम्वालिकुम् मुह्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िही-न ० फ़-मस्तम्तअ्-तुम् बिही मिनहुन्-न फ़-आतूहुन्-न उजूरहुन्-न फरी-ज़-तन् ० व ला जुना-ह अलैकुम् फ़ी मा तराज़ैतुम् बिही मिम्बअ्-दिल्-फ़रीजति ० इन्नल्ला-ह का-न अलीमन् हकीमा (२४) व मल्लम् यस्ततिअ् मिन्कुम् तौलन् अंय्यन्किहल्-मुह्सनातिल्-मुअ्मिनाति फ़-मिम्मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् मिन् फ़-त-यातिकुमुल्-मुअ्मिनाति ० वल्लाहु अअ्-लमु बि ईमानिकुम् ० बअ्-जुकुम् मिम्बअ् - जिन् ० फ़न्किहूहुन् - न बि इज्नि अह्लिहिन्-न व आतूहुन्-न उजूरहुन्-न बिलमअ्-रूफ़ि मुह्सनातिन् ग़ै-र मुसाफ़िहातिव्वला मुत्तख़ि-ज़ाति अख़्दानिन् ० फ़ इज़ा उह्सिन्-न फ़ इन् अतै-न बि फ़ाहिशतिन् फ़ अलैहिन्-न निस्फु मा अ-लल्-मुह्सनाति मिनल्अज़ाबि ० ज़ालि-क लि मन् ख़शियल्-अ-न-त मिन्कुम् ० व अन् तस्बिरू ख़ैरुल्लकुम् ० वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (२५) युरीदुल्लाहु लि युबय्यि-न लकुम् व यह्दियकुम् सुन-नल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् व यतू-ब अलैकुम् ० वल्लाहु अलीमुन् हकीम (२६) वल्लाहु युरीदु अंय्यतू-ब अलैकुम् व युरीदुल्लज़ी-न यत्तबिअूनश्-श-हवाति अन् तमीलू मैलन् अज़ीमा (२७) युरीदुल्लाहु अंय्युख़फ़्फ़ि-फ अन्कुम् ० व ख़ुलिकल्-इन्सानु ज़ईफ़ा (२८)

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۭ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
فَرِيْضَةً ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ
يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۭ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ
فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ
فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ
الْعَذَابِ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۭ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝
وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۣ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ
اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ
الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ وَ

★रु ४/१ आ ३

वाला (और) रहम वाला है। (२३) और शौहर वाली औरतें भी (तुम पर हराम हैं), मगर वे जो (कैद होकर लौंडियो की शक्ल मे) तुम्हारे क़ब्ज़े मे आ जाएं।[1] यह हुक्म खुदा ने तुमको लिख दिया है और इन महरमात(यानी जो हराम कर दी गयी) के अलावा और औरतें तुम को हलाल है, इस तरह से कि माल खर्च करके उनसे निकाह कर लो, बशर्ते कि (निकाह से) मक्सूद पाक-दामनी कायम रखनी हो, न कि शह्वत पूरी करनी हो। तो जिन औरतो से तुम फायदा हासिल करो, उनका मह्र जो मुकर्रर किया हो, अदा कर दो और अगर मुकर्रर करने के बाद आपस की रज़ामंदी से मह्र में कमी-बेशी कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नही। बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२४) और जो शख्स तुम मे से मोमिन आज़ाद औरतो (यानी बीवियो) से निकाह करने की कुद्रत न रखे, तो मोमिन लौंडियो मे ही, जो तुम्हारे कब्ज़े मे आ गयी हो (निकाह कर ले) और खुदा तुम्हारे ईमान को अच्छी तरह जानता है। तुम आपस मे एक दूसरे के हम-जिंस हो, तो उन लौंडियो के साथ उनके मालिको से इजाज़त हासिल करके निकाह कर लो और दस्तूर के मुताबिक उन का मह्र भी अदा कर दो, बशर्ते कि पाकदामन हो, न ऐसी कि खुल्लम-खुल्ला बद-कारी करे और न पर्दे की आड़ मे दोस्ती करना चाहे। फिर अगर निकाह मे आकर बद-कारी कर बैठे, तो जो सजा आज़ाद औरतो (यानी बीवियो) के लिए है, उनकी आधी उस को (दी जाए), यह (लौंडी के साथ निकाह करने की) इजाज़त उस शख्स को है जिसे गुनाह कर बैठने का डर हो और अगर सब्र करो तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (२५) ★

खुदा चाहता है कि (अपनी आयतें) तुम से खोल-खोल कर बयान फरमाए और तुम को अगले लोगो के तरीक़े बताए और तुम पर मेहरबानी करे और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२६) और खुदा तो चाहता है कि तुम पर मेहरबानी करे और जो लोग अपनी ख्वाहिशो के पीछे चलते है, वे चाहते है कि तुम सीधे रास्ते से भटक कर दूर जा पड़ो। (२७) खुदा चाहता है कि तुम पर से बोझ हल्का करे और इसान (कुद्रती तौर पर) कमज़ोर पैदा हुआ है। (२८)

---

१ यानी 'दारुल हर्ब' की औरतें अगर ख़ाविंद वाली हो, तो भी हराम नही, जबकि दारुल हर्ब से निकलें और उन के साथ खाविंद न आएं, तब मुबाह (जायज़) हैं, अगर उन के खाविंद भी मुसलमान हो जाएं, तो अपनी ओर ले लें।

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलू अम्वालकुम् वैनकुम् विल्वातिलि इल्ला
अन् तकू-न तिजा-र-तन् अन् तराजिम्-मिन्कुम् قف व ला तक़्तुलू अन्फ़ुसकुम् ط
इन्नल्ला-ह का-न विकुम् रहीमा (२९) व मंय्यफ्अल् ज़ालि-क अुद्वानंव्-व ज़ुल्मन्
फ़ सौ-फ नुस्लीहि नारन् ط व का-न ज़ालि-क अ़-लल्लाहि यसीरा (३०) इन् तज्तनिवू
कवा-इ-र मा तुन्हौ-न अन्हु नुकफ़्फ़िर् अ़न्कुम्
सय्यिआतिकुम् व नुद्ख़िल्कुम् मुद्-ख़-लन् करीमा
(३१) व ला त-तमन्नौ मा फ़ज़्ज़लल्लाहु
विही वअ्-जकुम् अला वअ्-ज़िन् ط लिर्रिजालि
नसीवुम् - मिम्मक्तसवू ط व लिन्निसा - इ
नसीवुम्-मिम्मक्तसब्-न ط वस्अलुल्ला - ह मिन्
फज्लिही ط इन्नल्ला-ह का-न वि कुल्लि शैइन्
अलीमा (३२) व लि कुल्लिन् ज-अल्ना
मवालि-य मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि वल्-
अक्रवू-न ط वल्लज़ी-न अ़-क-दत् ऐमानुकुम् फ़ आतू-
हुम् नसीवहुम् ط इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि
शैइन् शहीदा ✱ (३३) अर्रिजालु क़व्वामू-न
अ़लन्निसा-इ विमा फ़ज़्ज़लल्लाहु वअ्-जहुम् अला
वअ्-जिंव्-व विमा अन्फक़ू मिन् अम्वालिहिम् ط

السآء ٤ ٦٦ والمحصنت ٥

لا تقتلوا انفسكم ان الله كان بكم رحيما ۝ ومن يفعل ذلك
عدوانا وظلما فسوف نصليه نارا وكان ذلك على الله
يسيرا ۝ ان تجتنبوا كبائر ما تنهون عنه نكفر عنكم سياتكم
وندخلكم مدخلا كريما ۝ ولا تتمنوا ما فضل الله به
بعضكم على بعض للرجال نصيب مما اكتسبوا وللنساء
نصيب مما اكتسبن وسئلوا الله من فضله ان الله كان بكل
شيء عليما ۝ ولكل جعلنا موالي مما ترك الوالدن و
الاقربون والذين عقدت ايمانكم فاتوهم نصيبهم ان
الله كان على كل شيء شهيدا ۝ الرجال قومون على النساء
بما فضل الله بعضهم على بعض وبما انفقوا من اموالهم
فالصلحت قنتت حفظت للغيب بما حفظ الله والتي
تخافون نشوزهن فعظوهن واهجروهن في المضاجع
واضربوهن فان اطعنكم فلا تبغوا عليهن سبيلا ان الله
كان عليا كبيرا ۝ وان خفتم شقاق بينهما فابعثوا حكما
من اهله وحكما من اهلها ان يريدا اصلاحا يوفق الله
بينهما ان الله كان عليما خبيرا ۝ واعبدوا الله ولا تشركوا
به شيئا وبالوالدين احسانا وبذي القربى واليتمى والمسكين

منزل

फ़स्सालिहातु क़ानितातुन् हाफ़िज़ातुल् - लिल्ग़ैवि विमा ह़फ़िज़ल्लाहु ط वल्लाती
तख़ाफ़ू-न नुशूज़हुन्-न फ अ़िज़ूहुन्-न वह्जुरूहुन्-न फ़िलमज़ाजिअि वज्रिबूहुन्-न ج फ़ इन्
अ-त़अ्-नकुम् फ़ला तब्ग़ू अ़लैहिन्-न सवीला ؕ इन्नल्ला-ह का-न अ़लिय्यन् कवीरा (३४)
व इन् ख़िफ़्तुम् शिक़ा-क वैनिहिमा फ़ब्अ़सू ह़-क-मम्-मिन् अह्लिही व ह़-क-मम्-
मिन् अह्लिहा ج इंय्युरीदा इस्लाहंय्युवफ़्फ़िक़िल्लाहु वैनहुमा ط इन्नल्ला - ह
का-न अ़लीमन् ख़वीरा (३५) वअ्वुदुल्ला-ह व ला तुश्रिकू विही शैअंव्-व विल्-
वालिदैनि इह्सानंव्-व वि ज़िल्क़ुर्वा वल्यतामा वल्मसाकीनि वल्जारि ज़िल्क़ुवा

★रु. ५/२ आ ८

मोमिनो ! एक दूसरे का माल नाहक न खाओ।[1] हा, अगर आपस की रज़ामदी से तिजारत का लेन-देन हो (और उनसे माली फायदा हासिल हो जाए, तो वह जायज़ है) और अपने आप को हलाक न करो। कुछ शक नही कि खुदा तुम पर मेहरबान है। (२९) और जो सरकशी और ज़ुल्म से ऐसा करेगा, हम उस को बहुत जल्द जहन्नम मे दाखिल करेंगे और यह खुदा को आसान है। (३०) अगर तुम बड़े-बड़े गुनाहो से, जिनसे तुम को मना किया जाता है, बचोगे, तो हम तुम्हारे (छोटे-छोटे) गुनाह माफ कर देंगे और तुम्हे इज्जत के मकानो मे दाखिल करेंगे। (३१) और जिस चीज़ मे खुदा ने तुम मे से कुछ को कुछ पर फजीलत दी है, उसका लालच मत करो। मर्दो को उन कामो का सवाब है, जो उन्होने किये, औरतो को उन कामो का सवाब है जो उन्होने किये और खुदा से उस का फज़्ल (व करम) मागते रहो। कुछ शक नही कि अल्लाह हर चीज़ को जानता है। (३२) और जो माल मा-बाप और रिश्तेदार छोड मरे, तो (हकदारो मे बाट दो कि) हम ने हर एक के हकदार मुकर्रर कर दिए है और जिन लोगो से तुम अह्द कर चुके हो, उन को भी उनका हिस्सा दो।[1] बेशक खुदा हर चीज के सामने है। (३३)★

मर्द औरतोपर हाकिम व मुसल्लत हैं, इसलिए कि खुदा ने कुछ को कुछ से अफ्जल बनाया है। और इसलिए भी कि मर्द अपना माल ख़र्च करते है, तो जो नेक बीबिया है, वे मर्दो के हुक्म पर चलती है और उन के पीठ पीछे खुदा की हिफाज़त मे (माल व आबरू की) खबरदारी करती है और जिन औरतो के बारे मे तुम्हे मालूम हो कि सरकशी (और बद चलनी) करने लगी है, तो (पहले) उनको (ज़ुबानी) समझाओ, (अगर न समझे, तो) फिर उनके साथ सोना छोड दो। अगर इस पर भी न माने तो मारो-पीटो और अगर फरमाबरदार हो जाए तो फिर उनको तक्लीफ देने का कोई बहाना मत ढूढो। बेशक खुदा सबसे ऊचा और जलीलुल कद्र (ऊची इज्जत वाला) है। (३४) और अगर तुम को मालूम हो की मिया-बीवी मे अन-बन है, तो एक मुसिफ, मर्द के खानदान मे से और एक मुसिफ औरत के खानदान मे से मुकर्रर करो। वे अगर सुलह करा देनी चाहेंगे, तो खुदा उनमे मुवाफकत पैदा कर देगा। कुछ शक नही कि खुदा सब कुछ जानता और सब बातो से खबरदार है। (३५) और खुदा ही की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाओ और मा-बाप करावत वालो और यतीमो और मुहताजो और रिश्तेदार पडोसियो और अजनबी पड़ोसियो और पहलू के साथियो (यानी पास बैठने वालो) और मुसाफिरो और जो लोग तुम्हारे कब्ज़े मे हो, सब के साथ एहसान करो कि खुदा (एहसान, करने वालो को दोस्त रखता है और) घमंड करने वाले, बडाई मारने वाले को दोस्त नही रखता। (३६) जो खुद भी बुख्ल

---

१ अह्द करने से मुराद है दीनी भाई बनाना, ऐसे लोगो के लिए तर्का नही है। तर्का सिर्फ करावतदारो का हक है। दीनी भाइयो का हिस्सा यह है कि उन से मुहब्बत और दोस्ती रखी जाए और जरूरत के वक्त उन की मदद की जाए। कुछ लोगो ने आयत का मतलब यह लिखा हैं कि अगर दीनी भाइयो को कुछ दिलाना मजूर हो, तो उन के लिए वसीयत कर जाओ। पहले जो लोग गोद लिए जाते थे, वे वारिस ठहराये जाते थे, मगर अल्लाह तआला ने मीरास मे उन का हिस्सा मुकर्रर फरमाया, बल्कि उन का हिस्सा वसीयत मे ठहराया है।

वल्जारिल्-जुनुबि वस्साहि़बि बिल् जम्बि वब्निस्सबीलि ۙ व मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् ط इन्नल्ला-ह ला युहि़ब्बु मन् का-न मुख़्तालन् फ़ख़ूरा ۙ (३६) अ्ल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्ना-स बिल्बुख़्लि व यक्तुमू-न मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही ط व अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम्मुहीना ۚ (३७) वल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् रिआ-अन्नासि व ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्-यौमिल् - आख़िरि ط व मंय्यकुनिश् - शैतानु लहू क़रीनन् फ़ सा-अ क़रीना (३८) व माज़ा अ़लैहिम् लौ आमनू बिल्लाहि वल्-यौमिल् - आख़िरि व अन्फ़क़ू मिम्मा र - ज़-क़हुमुल्लाहु ط व कानल्लाहु बिहिम् अ़लीमा (३९) इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमु मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् ۚ व इन्तकु ह़-स-नतंय्युज़ा-अिफ़्हा व युअ्ति मिल्लदुन्हु अज्रन् अ़ज़ीमा (४०) फ़ कै-फ़ इज़ा जिअ्ना मिन् कुल्लि उम्मतिम्-बि शहीदिव्-व जिअ्ना बि-क अ़ला हा-उला-इ शहीदा ▨ ط (४१) यौमइज़िय्यवद्दुल्-लज़ी-न क-फ़रू व अ-स़-वुर्रसू-ल लौ तुसव्वा बिहिमुल्अर्ज़ु ط व ला यक्तुमूनल्ला-ह ह़दीसा ★ (४२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़्रबुस्-स़ला-त व अन्तुम् सुकारा ह़त्ता तअ्-लमू मा तक़ूलू-न व ला जुनुबन् इल्ला आ़बिरी सबीलिन् ह़त्ता तग़्तसिलू ط व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अ़ला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-ह़दुम्-मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़ लम् तजिदू मा-अन् फ़-त-यम्ममू स़अ़ीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बि वुजूहिकुम् व ऐदीकुम् ط इन्नल्ला-ह का-न अफ़ुव्वन् ग़फ़ूरा (४३)

والمحصنت ٥ — ٧٤ — النساء ٤

وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ
السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا
فَخُورًا ۝ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ
مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۝
وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ۝
وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ
اللَّهُ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ
وَإِنْ تَكُ حَسَنَةً يُضَاعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝
فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ
شَهِيدًا ۝ يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ
بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَ
لَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ
أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ
فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَ
أَيْدِيكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا

▨ व न बी स ★ रु ६/३ आ ६

(कजूसी) करें और लोगो को भी बुख्ल सिखाएं और जो (माल) खुदा ने उन को अपने फ़ज़्ल से अता फरमाया है, उसे छिपा-छिपा के रखे और हमने ना-शुक्रो के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (३७) और खर्च भी करें तो (खुदा के लिए नही, बल्कि) लोगो के दिखाने को और ईमान न खुदा पर लाए, न आखिरत के दिन पर, (ऐसे लोगो का साथी शैतान है) और जिस का साथी शैतान हो, तो (कुछ शक नही कि) वह बुरा साथी है। (३८) और अगर ये लोग खुदा पर और कियामत के दिन पर ईमान लाते और जो कुछ खुदा ने उनको दिया था, उसमे से खर्च करते तो उनका क्या नुक्सान होता और खुदा उन को खूब जानता है। (३९) खुदा किसी की ज़रा भी हक़तल्फी नही करता और अगर नेकी (की) होगी तो उसको दो गुना कर देगा और अपने यहा से बड़ा बदला बख्शेगा। (४०) भला उस दिन क्या हाल होगा, जब हम हर उम्मत मे से अह्वाल बताने वाले को बुलाएगे और तुमको उन लोगो का (हाल बताने को) गवाह तलब करेंगे▨(४१) उस दिन काफिर और पैगम्बर के ना-फरमान आरजू करेगे कि काश् उन को जमीन मे दफ्न करके मिट्टी बराबर कर दी जाती और खुदा से कोई बात छिपा नही सकेंगे। (४२) ★

मोमिनो! जब तुम नशे की हालत में हो तो जब तक (उन लफ़्जो को) जो मुह से कहो, समझने (न) लगो, नमाज के पास न जाओ।[1] और जनाबत (ना-पाकी) की हालत मे भी (नमाज के पास न जाओ), जब तक कि गुस्ल (न) कर लो। हा, अगर सफर की हालत मे रास्ता चले जा रहे हो (और पानी न मिलने की वजह से गुस्ल न कर सको, तो तयम्मुम कर के नमाज पढ लो) और अगर तुम बीमार हो या सफर मे हो या कोई तुम मे से बैतुल खला (टट्टी) से होकर आया हो, या तुम औरतो से हम-बिस्तर हुए हो और तुम्हे पानी न मिले, तो पाक मिट्टी लो और मुंह और हाथो का मसह (कर के तयम्मुम) कर लो। बेशक खुदा माफ करने वाला और बख्शने वाला है। (४३)

---

१ यह उस वक्त का हुक्म है कि शराब के बारे मे इस के हराम होने का हुक्म नाज़िल हुआ था।

▨ व न वी स ★रु. ६/३ आ ६

अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम्मिनल्-किताबि यश्तरूनज़्ज़ला-ल-त व युरीदू-न अन् तज़िल्लुस्सबील ط (४४) वल्लाहु अअ्-लमु बि अअ्-दा-इकुम् ط व कफा बिल्लाहि वलिय्यं ق व्-व कफा बिल्लाहि नसीरा (४५) मिनल्लज़ी-न हादू युहर्रिफूनल्-कलि-म अम्मवाज़िअिही व यकूलू-न समिअ्-ना व असैना वस्मअ्-ग़ै-र मुस्मअिव्-व राअिना लय्यम्-बि-अल्सिनतिहिम् व तअ्-नन् फ़िद्दीनि ط व लौ अन्नहुम् क़ालू समिअ्-ना व अतअ्-ना वस्मअ् वन्ज़ुर्ना ल का-न ख़ैरल्लहुम् व अक़्वम ؕ व लाकिल्ल-अ-न-हुमुल्लाहु बि कुफ़्रिहिम् फ ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला (४६) या अय्युहल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब आमिनू बिमा नज़्ज़ल्ना मुसद्दिकल्लिमा म-अकुम् मिन् कब्लि अन्नत्मि-स वुजूहन् फ़ नरुद्दहा अला अद्बारिहा औ नल्-अ-नहुम् कमा ल-अन्ना अस्हाबस्सब्ति ط व का-न अम्रुल्लाहि मफ्अूला (४७) इन्नल्ला-ह ला यग्फिरु अय्युश्र-क बिही व यग़्फ़िरु मा दू-न ज़ालि-क लि मंय्यशाउ ج व मय्युश्रिक् बिल्लाहि फ कदिफ्तरा इस्मन् अज़ीमा (४८) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न युज़क्कू-न अन्फुसहुम् ط बलिल्लाहु युज़क्की मंय्यशाउ व लायुज़्लमू-न फतीला (४९) उन्ज़ुर् कै-फ यफ्तरू-न अ-लल्लाहिल्-कज़ि-ब ط व कफा बिही इस्मम्-मुबीना ★ (५०) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न ऊ-तू नसीबम्मिनल् किताबि युअ्मिनू-न बिल्जिब्ति वत्ताग़ूति व यकूलू-न लिल्लज़ी-न क-फ़रू हा-उला-इ अह्दा मिनल्लज़ी-न आमनू सबीला (५१) उला-इकल्लज़ी-न ल-अ़-नहुमुल्लाहु ط व मंय्यल्अनिल्लाहु फ़ लन् तजि-द लहू नसीरा ط (५२)

والمحصنٰت ٥ ٩٨ النسآء ٤

نَصِيبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا
السَّبِيْلَ ۝ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى
بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ۝ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ
وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا
بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّيْنِ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَ
اسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ
بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا
فَنَرُدَّهَا عَلٰٓي اَدْبَارِهَآ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ۭ وَكَانَ
اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا
دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا
عَظِيْمًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۭ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ
يَّشَاۗءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَي اللّٰهِ
الْكَذِبَ ۭ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا
هٰٓؤُلَاۗءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ۝ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ
اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ۝ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ

भला तुमने उन लोगो को नही देखा, जिन को किताव से हिस्सा दिया गया था
खरीदते है और चाहते है कि तुम भी रास्ते से भटक जाओ। (४४) और खुदा
खूब जानता है और खुदा ही काफी कारसाज़ और काफी मददगार है। (४५)
उनमे कुछ लोग ऐसे भी है कि कलिमात (बातो) को उनकी जगहो मे बदल देते
हमने सुन लिया और नही माना और सुनिए, न सुनवाए जाओ और ज़ुबान को
मे तान की राह से (तुम से बात-चीत करते वक्त) राअिना कहते है और अगर (यो) कहते कि
हमने सुन लिया और मान लिया और (सिर्फ) इस्मअ, और (राअिना की जगह) उन्ज़ुर्ना[1]
(कहते) तो उन के हक मे वेहतर होता और बात भी बहुत दुरुस्त होती। लेकिन खुदा ने उनके कुफ्र
की वजह से उन पर लानत कर रखी है, तो ये कुछ थोड़े ही ईमान लाते है। (४६) ऐ किताब
वालो! इसके पहले कि हम लोगो के मुहो को बिगाड कर उन की पीठ की तरफ फेर दे या उन पर
इस तरह लानत न करें, जिस तरह हफ्ते वालो पर की थी। हमारी नाज़िल की हुई किताब पर, जो
तुम्हारी किताब की भी तस्दीक करती है, ईमान ले आओ और खुदा ने जो हुक्म फरमाया, सो
(समझ लो कि) हो चुका।[2] (४७) खुदा उस गुनाह को नही बख्शेगा कि किसी को उस का शरीक
बनाया जाए और उसके सिवा और गुनाह जिसको चाहे माफ कर दे और जिसने खुदा का शरीक
मुकर्रर किया, उसने बडा बुहतान बाधा। (४८) क्या तुमने उन लोगो को नही देखा जो अपने को
पाकीज़ा कहते है। (नही,) बल्कि खुदा ही जिस को चाहता है, पाकीज़ा करता है और उन पर
धागे बराबर भी ज़ुल्म नही होगा। (४९) देखो, ये खुदा पर कैसा झूठ (तूफान) बाधते है और
यही खुला गुनाह काफी है। (५०) ★

भला तुम ने उन लोगो को नही देखा, जिन को किताब से हिस्सा दिया गया है कि बुतो और
शैतान को मानते है और काफिरो के बारे मे कहते है कि ये लोग मोमिनो के मुकाबले मे सीधे रास्ते
पर है। (५१) यही लोग हैं, जिन पर खुदा ने लानत की है और जिस पर खुदा लानत करे, तो तुम

---

१ यहूदी जनाव रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जव कोई ऐसी वात पूछनी चाहते जो सुन न सके हो, तो 'राअिना' कहते। इस का तफ्सीली वयान सूर वकर मे हुआ है और जव आप (सल्ल०) बात फरमाते तो ये लोग जवाव मे कहते, हम ने सुन लिया यानी हम ने कुवूल किया, लेकिन धीरे से कहते कि नही माना और इस्तरह से खिताव के वक्त यह भी कहते कि सुनिए, न सुनवाए जाओ। ज़ाहिर मे यह दुआ नेक है कि तुम ऐसे गालिब रहो कि कोई तुम को वुरी वात न सुना सके, मगर दिल मे यह मुराद रखते कि खुदा करे तुम बहरे हो जाओ और कुछ न सुन सको। खुदा ने फरमाया कि अगर ये लोग वजाए समिअना व असैना के समिअना व अतअना और इस्मअ गैर मुस्मअिन की जगह सिर्फ 'इस्मअ' और 'राअिना' की जगह 'उन्ज़ुर्ना' कहते तो उन के हक मे वेहतर होता।

२. यानी ईमान लाओ पहले अजाव के आने से, जो शक्ल इन्सान की वदल कर हैवान की शक्ल हो जाए जैसे यहूदियो मे 'सनीचर वालो' की शक्लें वन्दर और सुअर की वन गयी थी। 'सनीचर वालो' का किस्सा सूरः ... मे आएगा।

★रु. ७/४ आ ८

अम् लहुम् नसीबुम्-मिनल्मुल्कि फ इज़ल्ला युअ्तूनन्ना-स नक़ीरा ⅄ (५३) अम् यह्सुदूनन्ना-स अ़ला मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही ج फ-क़द् आतैना आ-ल इब्राहीमल्-किता-ब वल्-हिक्म-त व आतैनाहुम् मुल्कन् अ़ज़ीमा (५४) फ मिन्हुम् मन् आम-न बिही व मिन्हुम् मन् सद्-द अ़न्हु ط व कफ़ा बि जहन्न-म सअ़ीरा (५५) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बि आयातिना सौ-फ़ नुस्लीहिम् नारन् ط कुल्लमा नज़िजत् जुलूदुहुम् बद्दल्ना हुम् जुलूदन् ग़ैरहा लि यज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब ط इन्नल्ला-ह का-न अ़ज़ीज़न् हकीमा ● (५६) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति सनुद्-ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम्-मुतह्ह-रतुंव् व नुद्ख़िलुहुम् ज़िल्लन् ज़लीला (५७) इन्नल्ला-ह यअ्मुरुकुम् अन् तुअद्दुल्-अमानाति इला अह्लिहा ⅄ व इज़ा ह-कम्तुम् बैनन्नासि अन् तह्कुमू बिल्-अ़द्लि ط इन्नल्ला-ह निअि़म्मा यअि़ज़ुकुम् बिही ط इन्नल्ला-ह का-न समीअ़म्-बसीरा (५८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल व उलिल्-अम्रि मिन्कुम् ج फ़ इन् तनाज़अ्-तुम् फ़ी शैइन् फ रुद्दूहु इलल्लाहि वर्रसूलि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि ط ज़ालि-क ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला ★ (५९) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न यज़्अुमू-न अन्नहुम् आमनू बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क युरीदू-न अय्यतहाकमू इलत्ताग़ूति व क़द् उमिरू अंय्यक्फ़ुरू बिही ط व युरीदुश्शैतानु अंय्युज़िल्लहुम् ज़लालम्-बअ़ीदा (६०)

مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ۝ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ
عَلٰى مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ۝ فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ
مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۭ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ۭ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ
جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۡ
وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ۝ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ
اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ
تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى
الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ
قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ
يَّكْفُرُوْا بِهٖ ۭ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝ وَ

● रुकूअ १/४ ★ रु. ८/५ आ ६

उस का किसी को मददगार न पाओगे। (५२) क्या उनके पास बादशाही का कुछ हिस्सा है कि तो लोगो को तिल बराबर भी न देंगे। (५३) या जो खुदा ने लोगो को अपने फज्ल मे दे रखा है, उस पर जलते है, तो हमने इब्राहीम के खानदान को किताब और दानाई अता फरमायी थी और बड़ी सल्तनत (हुकूमत) भी बख्शी थी। (५४) फिर लोगो मे से किसी ने तो उस किताब को माना और कोई उससे रुका (और हटा) रहा, तो उन न मानने वालो (के जलाने) को दोजख की जलती हुई आग काफी है। (५५) जिन लोगो ने हमारी आयतो से कुफ्र किया, उनको हम जल्द आग मे दाखिल करेगे, जब उनकी खाले गल (और जल) जाएगी, तो हम और खालें बदल देंगे, ताकि (हमेशा) अजाब का (मज़ा) चखते रहे। बेशक खुदा गालिब हिक्मत वाला है ●(५६) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उन को हम बहिश्तो मे दाखिल करेगे, जिन के नीचे नहरे बह रही हैं, वे उन मे हमेशा-हमेशा रहेगे। वहा उन के लिए पाक बीविया है और उन को हम घने साए मे दाखिल करेगे। (५७) खुदा तुम को हुक्म देता है कि अमानत वालो की अमानतें उन के हवाले कर दिया करो और जब लोगो मे फैसला करने लगो, तो इसाफ से फैसला किया करो। खुदा तुम्हे बहुत ख़ूब नसीहत करता है। बेशक खुदा सुनता और देखता है। (५८) मोमिनो! खुदा और उस के रसूल की फरमांबरदारी करो और जो तुम मे से हुकूमत वाले है, उनकी भी और किसी बात मे तुम मे इख्तिलाफ पैदा हो तो अगर खुदा और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो, तो उसमे खुदा और उसके रसूल (के हुक्म) की तरफ रुजूअ करो। यह बहुत अच्छी बात है और इस का अजाम भी अच्छा है। (५९) ✶

क्या तुमने उन लोगो को नही देखा जो दावा तो यह करते है कि जो (किताब) तुम पर नाजिल हुई और जो (किताबे) तुम से पहले नाजिल हुई, उन सब पर ईमान रखते है और चाहते यह है कि अपना मुकदमा एक सरकश के पास ले जा कर फैसला कराएं, हालाकि उन को हुक्म दिया गया था कि उस से एतकाद न रख और शैतान (तो यह) चाहता है कि उन को बहका कर रास्ते मे

●रुकूअ १/४ ★रु ८/५ आ ६

व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआलौ इला मा अन्जलल्लाहु व इलर्रसूलि रऐ-तल्-मुनाफ़िक़ी-न यसुद्दू-न अन्-क सुदूदा ج (६१) फ़ कै-फ़ इज़ा असाबत्हुम् मुसीबतुम्-बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम् सुम्-म जा-ऊ-क यह्लिफ़ू-न صلے बिल्लाहि इन् अ-रद्ना इल्ला इह्सानंव्-व तौफ़ीक़ा (६२) उला-इ-कल्लज़ी-न यअ्-लमुल्लाहु मा फ़ी कुलूबिहिम् ق फ़ अअ्-रिज् अन्हुम् व अिज़्हुम् व कुल्लहुम् फ़ी अन्फ़ुसिहिम् क़ौलम्-बलीग़ा (६३) व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला लि युता-अ वि इज़्निल्लाहि ط व लौ अन्नहुम् इज़्ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् जा-ऊ-क फ़स्तग्फ़रुल्ला-ह वस्तग़्फ़-र लहुमुर्रसूलु ल-व-जदुल्ला-ह तव्वाबर्रहीमा (६४) फ़ ला व रब्बि-क ला युअ्मिनू-न हत्ता युहक्किमू-क फ़ीमा श-ज-र बैनहुम् सुम्-म ला यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् ह-र-जम्मिम्मा क़ज़ै-त व युसल्लिमू तस्लीमा (६५) व लौ अन्ना क-तब्ना अ़लैहिम् अनिक़्तुलू अन्फ़ुसकुम् अविख़्रुजू मिन् दियारिकुम् मा फ़-अ़लूहु इल्ला क़लीलुम्-मिन्हुम् ط व लौ अन्नहुम् फ-अ़लू मा यू-अ़ज़ू-न बिही लका-न ख़ैरल्लहुम् व अशद्-द तस्बीतंव्- (६६) व इज़ल-ल-आतैनाहुम् मिल्लदुन्ना अज्रन् अ़ज़ीमा لا (६७) व ल-हदैनाहुम् सिरातम्-मुस्तक़ीमा (६८) व मय्युतिअिल्ला-ह वर्रसू-ल फ़ उला-इ-क म-अ़ल्लज़ी-न अन्-अ़-मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन्नबिय्यीन वस्सिद्दीक़ी-न वश्शुहदा-इ वस्सालिही-न ج व हसु-न उला-इ-क रफ़ीक़ा ط (६९) ज़ालिकल्-फ़ज़्लु मिनल्लाहि ط व कफ़ा बिल्लाहि अ़लीमा ★ (७०) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ख़ुज़ू हिज़्रकुम् फ़न्फ़िरू सुबातिन् अविन्फ़िरू जमीआ (७१)

إِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ
يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا ۝ فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا
قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا
وَتَوْفِيقًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُل لَّهُمْ فِي أَنفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ۝ وَمَا
أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوا
أَنفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا
اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ۝ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا
شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا
تَسْلِيمًا ۝ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا
مِن دِيَارِكُم مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا
يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ۝ وَإِذًا لَّآتَيْنَاهُم
مِّن لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝ وَمَن
يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ
النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ ۚ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ
رَفِيقًا ۝ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانفِرُوا ثُبَاتٍ أَوِ انفِرُوا جَمِيعًا ۝ وَإِنَّ

★रु ९/६ आ ११

दूर डाल दे। (६०) और जब उन से कहा जाता है कि जो हुक्म ख़ुदा ने नाजिल फरमाया है, उसी की तरफ (रुजूअ) करो और पैगम्बर की तरफ आओ, तो तुम मुनाफिको को देखते हो कि तुम से एराज़ करते और रुके जाते है। (६१) तो कैसी (शर्म की) बात है कि जब उनके आमाल (की शामत) से उन पर कोई मुसीबत वाकेअ होती है, तो तुम्हारे पास भागे आते है और कस्मे खाते है कि वल्लाह! हमारा मक्सूद तो भलाई और मुवाफकत था।[1] (६२) उन लोगो के दिलो मे जो-जो कुछ है, खुदा उसको खूब जानता है। तुम उन (की बातो) का कुछ ख्याल न करो और उन्हे नसीहत करो और उनसे ऐसी बाते कहो, जो उन के दिलो पर असर कर जाएं। (६३) और हमने जो पैगम्बर भेजा है, इसलिए भेजा है कि ख़ुदा के फरमान के मुताबिक उस का हुक्म माना जाए और ये लोग जब अपने हक मे जुल्म कर बैठे थे, अगर तुम्हारे पास आते और ख़ुदा से बख्शिश मागते और (खुदा के) रसूल भी उन के लिए बख्शिश तलब करते तो ख़ुदा को माफ करने वाला (और) मेहरबान पाते। (६४) तुम्हारे परवरदिगार की कसम! ये लोग जब तक अपने झगडो मे तुम्हे मुन्सिफ न बनाये और जो फैसला तुम कर दो उस से अपने दिल मे तंग न हो, बल्कि उस को खुशी से मान लें, तब तक मोमिन नही होगे। (६५) और अगर हम उन्हे हुक्म देते कि अपने आप को कत्ल कर डालो या अपने घर छोड कर निकल जाओ, तो उनमे से थोडे ही ऐसा करते और अगर ये इस नसीहत पर कारबद होते जो उनको की जाती है, तो उनके हक मे बेहतर और (दीन) मे ज्यादा साबित कदमी की वजह बनता। (६६) और हम उनको अपने यहा से बडा बदला भी देते। (६७) और सीधा रास्ता भी दिखाते। (६८) और जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल की इताअत करते है वे (कियामत के दिन) उन लोगो के साथ होगे, जिन पर ख़ुदा ने बडा फज्ल किया यानी नबी और सिद्दीक और शहीद और नेक लोग।[2] और इन लोगो का साथ बहुत ही खूब है। (६९) यह ख़ुदा का फज्ल है और ख़ुदा जानने वाला काफी है। (७०) ★

मोमिनो! (जिहाद के लिए) हथियार ले लिया करो, फिर या तो जमाअत-जमाअत हो कर

---

१ मदीने मे एक यहूदी और एक मुनाफिक मे झगडा हुआ। यहूदी ने कहा कि चलो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फैसला कराए। मुनाफिक ने कहा कि काब बिन अशरफ के पास चलो। यह शख्स यहूद का सरदार था। इस इख्तिलाफ की वजह यह थी कि यहूदी हक पर था और जानता था कि हज़रत इस मुकदमे का फैसला उस के हक मे करेंगे, तो वह हज़रत ही के पास जाने पर ज़ोर देता था। मुनाफिको मे जो ज़ाहिर मे मुसलमान और बातिन मे काफिर था, आप के पास जाना नही चाहता था। आखिर दोनो हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और हज़रत ने मुकदमा यहूदी के हक मे फैसला किया। जब बाहर निकले तो मुनाफिक ने कहा कि हज़रत उमर के पास चलो जो वह फैसला कर दें वह मुझे मजूर हो। हज़रत उमर रज़ि० उन दिनो जनाब सरवरे कायनात के हुक्म से मदीने मे कज़ा (जजी) करते थे। मुनाफिक ने ख्याल किया कि हज़रत उमर रज़ि० शारि-ए-इस्लाम के धोखे मे आ कर मेरा ख्याल करेंगे। जब वहा गये तो यहूदी ने पहले माजरा बयान कर दिया और कह दिया कि हम हज़रत सल्ल० की खिदमत मे हो आए हैं और उन्हो ने मेरा हक साबित कर दिया है। यह सुन कर हज़रत उमर रज़ि० ने मुनाफिक को कत्ल कर दिया। उस के वारिस हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गये और खून का दावा किया और कस्मे खाने लगे कि हम हज़रत उमर रज़ि० के पास सिर्फ इस लिए गये थे कि शायद वह सुलह करा दें, तब ये आयतें नाज़िल हुयी।

(शेष पृष्ठ १३६ पर)

★रु. ९/६ आ ११

व इन्-न मिन्कुम् ल-मल्-लयुबत्तिअन्-न ८ फ इन् असाबत्कुम् मुसीबतुन् का-ल क़द् अन्-अ-मल्लाहु अलय्-य इज् लम् अकुम्-म-अहुम् शहीदा (७२) व लइन् असावकुम् फ़ज़्लुम्-मिनल्लाहि ल-यकूलन्-न क-अल्लम् तकुम्बैनकुम् व बैनहू मवद्दतुय्यालैतनी कुन्तु म-अहुम् फ़ अफ़ू-ज फौजन् अज़ीमा (७३) फ़ल्युकातिल् फी सबीलिल्लाहिल्लज़ी-न यश्रूनल्-ह्यातद्दुन्या बिल्आख़िरति ط व मय्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़ युक्तल् औ यग्लिब् फ़ सौ-फ़ नुअ्तीहि अज्रन् अज़ीमा (७४) व मा लकुम् ला तुक़ातिलू-न फी सबीलिल्लाहि वल्-मुस्तज़्अफी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्-विल्दानिल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना अख्रिज्ना मिन् हाज़िहिल् - कर्यतिज़्ज़ालिमि अह्लुहा ८ वज्अल्लना मिल्लदुन - क वलिय्यव्-ᶜ वज्अल्लना मिल्लदुन्-क नसीरा ط (७५) अल्लज़ी - न आमनू युकातिलू-न फी सबीलिल्लाहि ८ वल्लज़ी-न क-फरू युकातिलू-न फी सबीलित्तागूति फ़ क़ातिलू औलिया - अश्शैतानि ८ इन्-न कैदश्शैतानि का-न ज़अीफ़ा ★ (७६) अ - लम् त - र इलल्लज़ी-न की - ल लहुम् कुफ़्फ़ू ऐदि-यकुम् व अक़ीमुस्सला-त व आतुज्जका-त ८ फ-लम्मा कुति-ब अलैहिमुल्-कितालु इज़ा फ़रीकुम्मिन्हुम् यख्शौनन्ना-स क-ख़श्यतिल्लाहि औ अशद्-द ख़श्य-तन् ८ व क़ालू रब्बना लि - म क-तब्-त अलैनल्किता-ल८ लौला अख़्ख़र्तना इला अ-जलिन् क़रीबिन् ط कुल् मताअुद्दुन्या कलीलुन् ८ वल्-आखिरतु ख़ैरुल्लिमनित्तक़ा قف व ला तुज़्लमू-न फतीला (७७)

والمحصنت ٥ — النساء ٤

مِنْكُمْ لَمَنْ لَيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ۝ وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ
مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ
مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ
اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
نَصِيْرًا ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ
كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا
اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ
اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ
وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ
قَرِيْبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۗ وَ
لَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ

★रु १०/७ आ ६

निकला करो या इकट्ठे कूच किया करो। (७१) और तुम मे कोई ऐसा भी है कि (जान-बूझ कर) देर लगाता है, फिर अगर तुम पर कोई मुसीबत पड जाए, तो कहता है कि ख़ुदा ने मुझ पर बड़ी मेहरबानी की कि मै उन मे मौजूद न था। (७२) और अगर ख़ुदा तुम पर फ़ज़्ल करे तो इस तरह से कि गोया तुम मे उस मे दोस्ती थी ही नही, (अफसोस करता और) कहता है कि काश! मैं भी उनके साथ होता तो बडा मक्सूद हासिल करता। (७३) तो जो लोग आख़िरत (को ख़रीदते और उस) के बदले दुनिया की ज़िंदगी को बेचना चाहते है, उन को चाहिए कि ख़ुदा की राह मे जंग करे और जो शख्स ख़ुदा की राह मे जंग करे, फिर शहीद हो जाए या गलबा पाए, हम बहुत जल्द उसको बड़ा सवाब देंगे।[1] (७४) और तुम को क्या हुआ है कि ख़ुदा की राह मे और उन बे-बस मर्दो और औरतो और बच्चो के लिए नही लडते, जो दुआए किया करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम को इस शहर मे, जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं, निकाल कर कही और ले जा और अपनी तरफ से किसी को हमारा हामी बना और अपनी ही तरफ से किसी को हमारा मददगार मुकर्रर फरमा। (७५) जो मोमिन है, वे तो ख़ुदा के लिए लड़ते है और जो काफिर है, वे बुतो के लिए लडते हैं, सो तुम शैतान के मददगारो से लडो (और डरो मत) क्यो कि शैतान का दाव बोदा होता है। (७६)★

भला तुम ने उन लोगो को नही देखा, जिनको (पहले यह) हुक्म दिया गया था कि अपने हाथो को (लड़ाई से) रोके रहो और नमाज पढते और ज़कात देते रहो। फिर जब उन पर जिहाद फर्ज कर दिया गया, तो कुछ लोग उन मे से लोगो से यो डरने लगे जैसे ख़ुदा से डरा करते है, बल्कि उस से भी ज्यादा और बड-बडाने लगे कि ऐ ख़ुदा! तू ने हम पर जिहाद (जल्द) क्यो फर्ज़ कर दिया। थोड़ी मुद्दत और हमे क्यो मुहलत न दी? (ऐ पैगम्बर! उनसे) कह दो, दुनिया का फायदा बहुत थोड़ा है और बहुत अच्छी चीज तो परहेजगार के लिए आख़िरत (की निजात) है और तुम पर धागे बराबर भी जुल्म नही किया जाएगा। (७७) (ऐ जिहाद से डरने वालो!) तुम कही

(पृष्ठ १३७ का शेष)

२ सिद्दीक मुबालगे का लफ्ज़ है यानी बडा सच्चा, तो सिद्दीक बडे सच्चे हुए। या सिद्दीक मे वे लोग मुराद है जो नबियो की पैरवी मे सब से बडा रुत्बा रखते है। हज़रत अबूबक्र रज़ि० को जो सिद्दीक कहते है, तो उन पर ये दोनो मानी सही उतरते है। शहीद वे जो ख़ुदा की राह मे मारे जाए। हज़रत उमर रज़ि० और उस्मान रज़ि० और अली रज़ि० सब शहीद हैं। नेक लोग यानी आम नेकी वाले भले लोग। सब मे ऊंचा दर्जा नबियो का है फिर सिद्दीको का, फिर शहीदो का, फिर नेक और भले लोगो का।

१ यानी मुसलमानो को चाहिए कि दुनिया की ज़िंदगी पर नज़र न रखें, आख़िरत चाहे और समझे कि अल्लाह के हुक्म मे हर तरह नफा हैं।

ऐ-न मा तकूनू युद्‌रिक्कुमुल्-मौतु व लौ कुन्तुम् फ़ी बुरूजिम्-मुशय्यदतिन् ط व इन् तुसिब्हुम् ह़ - स - नतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अिन्दिल्लाहि ج व इन् तुसिब्हुम् सय्यिअतुय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अिन्दि - क ط क़ुल् कुल्लुम् - मिन् अिन्दिल्लाहि ط फ मा लि हा-उला-इल्-क़ौमि ला यकादू-न यफ़्क़हू-न ह़दीसा (७८) मा असा-ब-क मिन् ह़-स-नतिन् फ़ मिनल्लाहि ز व मा असा-ब-क मिन् सय्यिअतिन् फ़ मिन्नफ़्सि-क ط व अर्सल्ना-क लिन्नासि रसूलन् ط व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा (७९) मंय्युति़अिर्रसू-ल फ-क़द् अताअ़ल्ला-ह ج व मन् तवल्ला फ़ मा अर्सल्ना-क अलैहिम् ह़फ़ीज़ा ط (८०) व यक़ूलू-न ता़अतुन् ز फ इज़ा ब-रज़ू मिन् अिन्दि-क बय्य-त ता़-इफतुम्-मिन्हुम् गैरल्लज़ी तक़ूलु ط वल्लाहु यक्तुबु मा युबय्यितू-न ج फ अअ़्-रिज़् अन्हुम् व त-वक्कल् अ़-लल्लाहि ط व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (८१) अ-फला य-त-दब्बरूनल्-क़ुर्आन ط व लौ का - न मिन् अिन्दि ग़ैरिल्लाहि ल-व-जदू फ़ीहिख़्तिलाफन् कसीरा (८२) व इज़ा जा-अहुम् अम्रुम्मिनल्-अम्नि अविल्ख़ौफि अज़ाअ़ू बिही ط व लौ रद्‌दूहु इलर्रसूलि व इला उलिल्-अम्रि मिन्हुम् ल अ़लिमहुल्लज़ी-न यस्तम्बितूनहू मिन्हुम् ط व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह़्मतुहू लत्तबअ़्-तुमुश्शैता़-न इल्ला कलीला (८३) फ़ क़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि ج ला तुकल्लफ़ु इल्ला नफ़्स-क व ह़र्रिज़िल्-मुअ़्मिनीन ج अ़-सल्लाहु अंय्यकुफ़्-फ बअ़्सल्लज़ी-न क-फ़रू ط वल्लाहु अशद्‌दु बअ़्संव्-व अशद्‌दु तन्कीला (८४) मंय्यश्फअ़्-शफाअ़तन् ह़-स-न-तय्यकुल्लहू नसी़बुम्मिन्हा ج व मंय्यश्फअ़् शफ़ा-अ-त़न् सय्यिअतय्यकुल्लहू किफ्लुम्मिन्हा ط व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्मुक़ीता (८५)

النسآء ٤ ٤٢ والمحصنت ٥

فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ۚ قُلْ
كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ
حَدِيْثًا ۝ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ
سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ۚ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيْدًا ۝ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۝ وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۡ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ
طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ۚ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ
وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۝ وَاِذَا
جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ۚ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ
وَاِلٰٓى اُولِي الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ۚ وَلَوْ
لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝
فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ
تَنْكِيْلًا ۝ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَ
مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

منزل

रहो, मौत तो तुम्हे आकर रहेगी, चाहे बडे-बड़े महलों मे रहो और उन लोगो को अगर कोई फायदा पहुंचता है, तो कहते है कि यह खुदा की तरफ से है और कोई तक्लीफ़ पहुचती है तो (ऐ मुहम्मद ! तुम से) कहते हैं कि यह (तक्लीफ) आप की वजह से (हमे पहुची) है। कह दो कि (रज व राहत) सब अल्लाह ही की तरफ से है। इन लोगो को क्या हो गया है कि बात भी नही समझ सकते। (७८) (ऐ आदम की औलाद !) तुझ को जो फायदा पहुचे, वह खुदा की तरफ से है और जो नुक्सान पहुचे, वह तेरे ही (आमाल की शामत की) वजह से है और (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुमको लोगों (की हिदायत) के लिए पैगम्बर वना कर भेजा है और (इस बात का) खुदा ही गवाह काफी है। (७९) जो शख्स रसूल की फरमावरदारी करेगा, तो वेशक उसने खुदा की फरमाबरदारी की और जो ना-फरमा बरदारी करे तो ऐ पैगम्बर ! तुम्हे हमने उनका निगहबान बना कर नही भेजा। (८०) और ये लोग मुह से तो कहते हैं कि (आप की) फरमाबरदारी (दिल से मन्जूर) है लेकिन जब तुम्हारे पास से चले जाते हैं. तो उनमे से कुछ लोग रात को तुम्हारी बातो के खिलाफ मश्विरे करते है और जो मश्विरे ये करते है खुदा उन को लिख लेता है तो उनका कुछ ख्याल न करो और खुदा पर भरोसा रखो और खुदा ही काफी कारसाज़ है। (८१) भला ये कुरआन मे गौर क्यों नही करते ? अगर यह खुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता, तो उसमे (बहुत-सा)इख्तिलाफ पाते। (८२) और जब उन के पास अमल या खौफ की कोई खबर पहुचती है, तो उसे मशहूर कर देते है और अगर उसको पैगम्बर और अपने सरदारो के पास पहुंचाते, तो खोज लगाने वाले उसकी खोज लगा लेते। और अगर तुम पर खुदा का फज्ल और उन की मेहरबानी न होती, तो कुछ लोगो के अलावा सब शैतान की पैरवी करने वाले होते। (८३) तो (ऐ मुहम्मद !) तुम खुदा की राह मे लडो, तुम अपने सिवा किसी के जिम्मेदार नही हो।[1] और मोमिनो को भी उभारो। करीब है कि खुदा काफिरो की लडाई को बन्द कर दे और खुदा लड़ाई के एतबार मे बहुत सख्त है और सज़ा के लिहाज़ से भी बहुत सख्त है। (८४) जो शख्स नेक बात की सिफारिश करे, तो उस (के सवाब) मे से हिस्सा मिलेगा और जो बुरी बात की सिफारिश करे उसको उस (के अजाब) मे से हिस्सा मिलेगा और खुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (८५)

---

१ यानी तुम से औरो के वारे मे नही पूछा जाएगा, क्योकि हर आदमी अपने काम का ज़िम्मेदार है।

व इज़ा हुय्यीतुम् बितहिय्यतिन् फ़हय्यू बिअह्स-न मिन्हा औरुद्दूहा ط इन्नल्ला-ह का-न अला कुल्लि शैइन् हसीबा ● (८६) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व ط ल-यज्मअन्नकुम् इला यौमिल्क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि ط व मन् अस्दकु मिनल्लाहि हदीसा ★ (८७) फ़ मा लकुम् फ़िल्मुनाफ़िक़ी-न फ़िअतैनि वल्लाहु अर्कसहुम् बिमा क-सबू ط अतुरीदू-न अन् तह्दू मन् अ-ज़ल्लल्लाहु ط व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ लन् तजि-द लहू सबीला (८८) वद्दू लौ तक्फ़ुरू-न कमा क-फ़रू फ तकूनू-न सवा-अन् फ ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् औलिया-अ हत्ता युहाजिरू फ़ी सबीलिल्लाहि ط फ इन् तवल्लौ फ ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु वजत्तुमूहुम् ص व ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् वलिय्यव्-व ला नसीरा لا (८९) इल्लल्लज़ी-न यसिलू-न इला क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् औ जा-ऊकुम् हसिरत् सुदूरुहुम् अय्युक़ातिलूकुम् औ युक़ातिलू क़ौमहुम् ط व लौ शा-अल्लाहु ल सल्ल-त़-हुम् अलैकुम् फ-ल-क़ातलूकुम् ج फ इनिअ्-त-ज़लूकुम् फ लम् युक़ातिलूकुम् व अल्क़ौ इलैकुमुस्स-लम لا फ मा ज-अ-लल्लाहु लकुम् अलैहिम् सबीला (९०) स-तजिदू-न आख़री-न युरीदू-न अय्यअ्मनूकुम् व यअ्मनू क़ौमहुम् ط कुल्लमा रुद्दू इलल्फ़ित्नति उर्किसू फ़ीहा ج फ इल्लम् यअ-तज़िलूकुम् व युल्क़ू इलैकुमुस्स-ल-म व यकुफ्फ़ू ऐदियहुम् फ ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम् ط व उला-इकुम् ज-अल्ना लकुम् अलैहिम् सुल्तानम् - मुबीना ★ (९१)

شَيْءٍ مُّقِيتًا ۝ وَإِذَا حُيِّيتُم بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ۝ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۝
فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُم بِمَا كَسَبُوا أَتُرِيدُونَ
أَن تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۝
وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ
أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِن تَوَلَّوْا فَخُذُوهُمْ وَ
اقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا
نَصِيرًا ۝ إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ
أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَن يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ
يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۝
سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَن يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا
رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا فَإِن لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَ
يَكُفُّوا أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأُولَٰئِكُمْ جَعَلْنَا
لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۝ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا
خَطَأً وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ

और जब तुम को कोई दुआ दे तो (जवाब मे) तुम उस से बेहतर (कलमे) से (उसे) दुआ दो या उन्ही लफ़्ज़ो से दुआ दो। बेशक खुदा हर चीज का हिसाब लेने वाला है● (८६) खुदा वह सच्चा माबूद है कि उस के सिवा कोई इबादत के लायक नही। वह कियामत के दिन तुम सब को जरूर जमा करेगा और खुदा से बढ़ कर बात का सच्चा कौन है? (८७)★

तो क्या वजह है कि तुम मुनाफिको के बारे मे दो गिरोह हो रहे हो, हाल यह है कि खुदा ने उनके करतूतो की वजह से औंधा कर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि जिस शख्स को खुदा ने गुमराह कर दिया है, उस को रास्ते पर ले आओ? और जिस शख्स को खुदा गुमराह कर दे, तुम उसके लिए कभी भी रास्ता नही पाओगे। (८८) वे तो यही चाहते हैं कि जिस तरह वे खुद काफिर है, (उसी तरह) तुम भी काफिर हो कर (सब) बराबर हो जाओ, तो जब तक वे खुदा की राह मे वतन न छोड जाएं, उनमे से किसी को दोस्त न बनाना। अगर (वतन छोडने को) कुबूल न करे तो उन को पकड़ लो और जहा पाओ, कत्ल कर दो और उन मे से किसी को अपना साथी और मदद-गार न बनाओ। (८९) मगर जो लोग ऐसे लोगो से जा मिले हो, जिन मे और तुम मे (सुलह का) अह्द हो या इस हाल मे कि उन के दिल तुम्हारे साथ या अपनी कौम के साथ लडने मे रुक गये हो, तुम्हारे पास आ जाए (तो एहतराज जरूरी नही) और अगर खुदा चाहता तो उन को तुम पर गालिब कर देता, तो वे तुम से जरूर लडते। फिर अगर वे तुम से (लडने से) हट जाए और लडे नही और तुम्हारी तरफ (सुलह का पैगाम) भेजे तो खुदा ने तुम्हारे लिए उन पर (ज़बरदस्ती करने की) कोई सबील मुकर्रर नही की। (९०) तुम कुछ और लोग ऐसे भी पाओगे, जो यह चाहते हैं कि तुम मे भी अम्न मे रहे और अपनी कौम से भी अम्न मे रहे, लेकिन जब, फ़ित्ना पैदा करने को बुलाये जाएं तो उसमे औंधे मुह गिर पडे तो ऐसे लोग अगर तुम से (लडने मे) न किनारा करें और न तुम्हारी तरफ सुलह (का पैगाम) भेजें और न अपने हाथो को रोके तो उन को पकड़ लो और जहा पाओ, कत्ल कर दो। उन लोगो के मुकाबले मे हमने तुम्हारे लिए खुली सनद मुकर्रर कर

व मा का-न लि मुअ्मिनिन् अय्यक़्तु-ल मुअ्मिनन् इल्ला ख़-त़्-अन् ج व मन् क़-त-ल मुअ्मिनन् ख़-त़्-अन् फ तह़्रीरु र-क़-बतिम्-मुअ्मिनतिंव्-व दियतुम्-मुसल्लमतुन् इला अह्लिही इल्ला अंय्यस्सद्दक़ू ط फ इन् का-न मिन् क़ौमिन् अदुव्विल्लकुम् व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ तह़्रीरु. र-क़-बतिम्-मुअ्मिनतिन् ط व इन् का-न मिन् क़ौमिम्-बैनकुम् व बैनहुम् मीसाकुन् फ दि-यतुम्-मुसल्लमतुन् इला अह्लिही व तह़्रीरु र-क-बतिम्-मुअ्मिनतिन् ج फ मल्लम् यजिद् फ सियामु शह्रैनि मुत - ताबिअ़ैनि ز तौबतम्मिनल्लाहि ط व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा (९२) व मंय्यक़्तुल् मुअ्मिनम्-मु-त-अम्मिदन् फ जज़ा-उहू जहन्नमु ख़ालिदन् फ़ीहा व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहि व ल-अ़-नहू व अ-द्-द-लहू अ़ज़ाबन् अ़ज़ीमा (९३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू. इज़ा ज़रब्तुम् फी सबीलिल्लाहि फ त-बय्यनू व ला तक़ूलू लि मन् अल्क़ा इलैकुमुस्सला-म लस्-त मुअ्मिनन् ج तब्तग़ू-न अ-र-ज़ल्-हयातिद्दुन्या ز फ़ अिन्दिल्लाहि मग़ानिमु कसीरतुन् ط कज़ालि-क कुन्तुम् मिन् क़ब्लु फ़-मन्नल्लाहु अलैकुम् फ त-बय्यनू ط इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा (९४) ला यस्तविल्क़ाअिदू-न मिनल्मुअ्मिनी-न ग़ैरु उलिज्ज़ररि वल्मुजाहिदू-न फी सबीलिल्लाहि बि अम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम् ط फ़ज़्ज़लल्लाहुल्-मुजाहिदी-न बि अम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम् अ-लल्क़ाअिदी-न द-र-ज-तन् ط व कुल्लंव्व - अ - दल्लाहुल्-हुस्ना ط व फ़ज़्ज़लल्लाहुल्-मुजाहिदीन अ-लल्-क़ाअिदी-न अज्रन् अ़ज़ीमा ۙ (९५) द-र-जातिम्मिन्हु व मग़्फ़ि-र-तंव्-व रह़्म-तुन् ط व कानल्लाहु ग़फ़ूररहीमा ★(९६) इन्नल्लज़ी-न तवफ़्फ़ाहुमुल्-मला-इकतु ज़ालिमी अन्फुसिहिम् क़ालू फ़ी-म कुन्तुम् ط क़ालू कुन्ना मुस्तज़्-अफ़ी-न फ़िल्अर्ज़ि ط क़ालू अ-लम् तकुन् अर्ज़ुल्लाहि वासि-अ-तन् फ तुहाजिरू फ़ीहा ط फ उला-इ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु ط व सा-अत् मसीरा ۙ (९७)

والمحصنت ٥ — النساء ٤

إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَن يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ وَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم
مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝ وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا
وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ
إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِندَ اللَّهِ
مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ كُنتُم مِّن قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۚ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَّا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۚ
فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ
وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ
أَجْرًا عَظِيمًا ۝ دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَّحِيمًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ
كُنتُمْ ۖ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ
اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا ۚ فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَاءَتْ

★रु. १३/१० आ ५

दी है ★ (९१) और किसी मोमिन को मुनासिब नही कि मोमिन को मार डाले मगर भूल कर, और, जो भूल कर भी मोमिन को मार डाले, तो (एक तो) एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद कर दे और (दूसरे) मक़्तूल के वारिसो को ख़ूबहा दे। हा अगर वे माफ कर दे, (तो उन को अख़्तियार है)। अगर मक्तूल तुम्हारे दुश्मनो की जमाअत मे से हो और वह ख़ुद मोमिन हो, तो सिर्फ एक मुसलमान गुलाम आजाद करना चाहिए और अगर मक्तूल ऐसे लोगो मे से हो, जिन मे और तुम मे सुलह का अह्द हो तो मक्तूल के वारिसो को ख़ूंबहा देना और एक मुसलमान गुलाम आज़ाद करना चाहिए और जिस को यह न मिले, वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे। यह (कफ्फारा) ख़ुदा की तरफ से तौबा (कबूल करने के लिए) है और ख़ुदा (सब कुछ) जानता और बडी हिक्मत वाला है। (९२) और जो शख़्स मुसलमान को जान-बूझ कर मार डालेगा, तो उस की सज़ा दोज़ख़ है, जिसमे वह हमेशा (जलता) रहेगा और ख़ुदा उस पर गज़बनाक होगा और उस पर लानत करेगा और ऐसे शख़्स के लिए उस ने बड़ा (सख़्त) अजाब तैयार कर रखा है। (९३) मोमिनो! जब तुम ख़ुदा की राह मे बाहर निकला करो तो छान-बीन से काम लिया करो और जो शख़्स तुम से 'सलामुन् अलैक' करे, उससे यह न कहो कि तुम मोमिन नही हो। और इससे तुम्हारी गरज़ यह हो कि दुनिया की ज़िंदगी का फायदा हासिल करो। सो ख़ुदा के पास बहुत-सी गनीमते है तुम भी तो पहले ऐसे ही थे, फिर ख़ुदा ने तुम पर एहसान किया, तो (आगे) छान-बीन कर लिया करो, और जो अमल तुम करते हो, ख़ुदा को सब की ख़बर है। (९४) जो मुसलमान (घरो मे) बैठे रहते और लडने से जी चुराते है और कोई उज्र नही रखते, वे और जो ख़ुदा की राह मे अपने माल और जान मे लडते है, वे, दोनों बराबर नही हो सकते। ख़ुदा ने माल और जान से जिहाद करने वालो को, बैठे रहने वालो पर दर्जे मे फज़ीलत बख़्शी है, और (गो) नेक वायदा सब से है, लेकिन बड़े बदले के लिहाज से ख़ुदा ने जिहाद करने वालो को बैठे रहने वालो पर कही फ़ज़ीलत बख़्शी है, (९५) (यानी) ख़ुदा की तरफ से, दर्जो मे और बख़्शिश मे और रहमत मे, और ख़ुदा बडा बख़्शने वाला (और) मेहरबान है। (९६) ★

जो लोग अपनी जानो पर ज़ुल्म करते है, जब फरिश्ते उन की जान कब्ज़ करने लगते है, तो उनसे पूछते है कि तुम किस हाल मे थे। वे कहते है कि हम मुल्क मे आजिज़ व नातवा थे। फरिश्ते कहते हैं, क्या ख़ुदा का मुल्क फराख़ नही था कि तुम उसमे हिजरत कर जाते? ऐसे लोगो का

इल्लल्ल्-मुस्तज्अफ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्विल्दानि ला यस्ततीअू-न ह़ील-तंव्-व ला यह्तदू-न सबीला (९८) फ़ उला-इ-क असल्लाहु अंय्यअ्-फु-व अन्हुम् ط व कानल्लाहु अफुव्वन् गफूरा (९९) व मय्युहाजिर फ़ी सबीलिल्लाहि यजिद् फ़िल्अर्ज़ि मुरा-ग-मन् कसीरव-व स-अ-तन् ط व मय्यख़्रुज् मिम्बैतिही मुहाजिरन् इलल्लाहि व रसूलिही सुम्-म युद्रिक्हुल्मौतु फ़-क़द् व-क़-अ अज्रुहू अलल्लाहि ط व कानल्लाहु गफूररह़ीमा★(१००) व इज़ा जरब्तुम् फिल्अर्जि फ़-लै-स अलैकुम् जुनाहुन् अन् तक़्सुरू मिनस्सलाति صلے इन् ख़िफ़्तुम् अय्यफ्ति-न - कुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ط इन्नल्काफ़िरी-न कानू लकुम् अदुव्वम्-मुबीना (१०१) व इज़ा कुन-त फ़ीहिम् फ-अ-कम्-त लहुमुस्सला-त फ़ल्तकुम् ता-इफ़तुम् मिन्हुम् म-अ-क वल्यअ्खुज़ू अस्लि-ह़-तहुम् قف फ़ इज़ा स-जदू फ़ल्यकूनू मिव्वरा-इकुम् ص वल्तअ्ति ता-इफतुन् उख़्रा लम् युसल्लू फल्युसल्लू म-अ-क वल्-यअ्खुज़ू ह़िज़्रहुम् व अस्लि-ह-तहुम् ج वद्दल्लज़ी-न क-फ़रू लौ तग़्फुलू-न अन् अस्लिह़तिकुम् व अम्ति-अतिकुम् फ यमीलू-न अलैकुम् मैलतंव्वाहि-द-तन् ط व ला जुना-ह़ अलैकुम् इन् का-न बिकुम् अ-ज़म्-मिम्-म-तरिन् औ कुन्तुम् मर्ज़ा अन् त-ज-अू अस्लि-ह़-तकुम् ج व ख़ुज़ू ह़िज़्-रकुम् ط इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्काफ़िरी-न अज़ाबम्मुहीना (१०२) फ इज़ा कज़ैतुमुस्सला-त फ़ज़्कुरुल्ला-ह क़ियामंव्-व कुअूदंव्-व अला जुनूबिकुम् ج फ़ इज़त़्मअ्-नन्तुम् फ अक़ीमुस्सला-त ج इन्नस्सला-त कानत् अलल्मुअ्मिनी-न किताबम्-मौकूता (१०३)

النساء ٤ — ٧٥ — والمحصنت ٥

مصيرا ۙ إلا المستضعفين من الرجال والنساء والولدان لا
يستطيعون حيلة ولا يهتدون سبيلا ۙ فأولئك عسى الله
أن يعفو عنهم ۚ وكان الله عفوا غفورا ۝ ومن يهاجر في
سبيل الله يجد في الأرض مرغما كثيرا وسعة ۚ ومن يخرج
من بيته مهاجرا إلى الله ورسوله ثم يدركه الموت فقد
وقع أجره على الله ۗ وكان الله غفورا رحيما ۝ وإذا ضربتم
في الأرض فليس عليكم جناح أن تقصروا من الصلوة ۖ إن
خفتم أن يفتنكم الذين كفروا ۚ إن الكفرين كانوا لكم عدوا
مبينا ۝ وإذا كنت فيهم فأقمت لهم الصلوة فلتقم طائفة منهم
معك وليأخذوا أسلحتهم ۖ فإذا سجدوا فليكونوا من ورائكم
ولتأت طائفة أخرى لم يصلوا فليصلوا معك وليأخذوا
حذرهم وأسلحتهم ۚ ود الذين كفروا لو تغفلون عن أسلحتكم
وأمتعتكم فيميلون عليكم ميلة واحدة ۚ ولا جناح عليكم
إن كان بكم أذى من مطر أو كنتم مرضى أن تضعوا أسلحتكم
وخذوا حذركم ۗ إن الله أعد للكفرين عذابا مهينا ۝ فإذا
قضيتم الصلوة فاذكروا الله قيما وقعودا وعلى جنوبكم ۚ فإذا
اطمأننتم فأقيموا الصلوة ۚ إن الصلوة كانت على المؤمنين كتابا

منزل

★रु. १४/११ आ ४

ठिकाना दोजख़ है और वह बुरी जगह है। (९७) हा, जो मर्द और औरते और बच्चे बे-बस है कि न तो कोई चारा कर सकते है और न रास्ता जानते है, (९८) करीब है कि ख़ुदा ऐसो को माफ करदे और ख़ुदा माफ करने वाला (और) बख्शने वाला है। (९९) और जो शख्स ख़ुदा की राह मे घर-बार छोड़ जाए, वह जमीन मे बहुत सी जगह और फैलाव पाएगा और जो शख्स ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ हिज्रत कर के घर से निकल जाए, फिर उसको मौत आ पकडे, तो उसका सवाब ख़ुदा के जिम्मे हो चुका और ख़ुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (१००) ★

और जब तुम सफर को जाओ, तो तुम पर कुछ गुनाह नही कि नमाज़ को कम कर के पढो, बशर्ते कि तुमको डर हो कि काफिर लोग तुम को ईज़ा (तक्लीफ) देंगे। बेशक काफिर तुम्हारे खुले दुश्मन है।[1] (१०१) और (ऐ पैग़म्बर !) जब तुम उन (मुजाहिदो के लश्कर) मे हो और उन को नमाज पढाने लगो, तो चाहिए कि एक जमाअत तुम्हारे साथ हथियारो से लैस होकर खडी रहे, जब वे सज्दा कर चुके, तो परे हो जाए, फिर दूसरी जमाअत, जिसने नमाज नही पढी (उनकी जगह आये और होशियार और हथियारो से लैस होकर) तुम्हारे साथ नमाज अदा करे। काफिर इस घात मे है कि तुम ज़रा अपने हथियारों और सामानो से गाफ़िल हो जाओ, तो तुम पर एकबारगी हमला कर दे। अगर तुम बारिश की वजह से तक्लीफ मे हो या बीमार हो, तो तुम पर कुछ गुनाह नही कि हथियार उतार रखो, मगर होशियार ज़रूर रहना। ख़ुदा ने काफिरो के लिए जिल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (१०२) फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर चुको, तो खडे और बैठे और लेटे (हर हालत मे) ख़ुदा को याद करो। फिर जब डर जाता रहे, तो (उस तरह से) नमाज़ पढो (जिस तरह अम्न की हालत मे पढते हो) बेशक नमाज़ का मोमिनो पर (मुकर्रर) वक्तो मे अदा करना

---

१ सफर, चाहे किसी गरज़ से हो, उस मे नमाज़ की क़स्र करना यानी चार-चार रक्अतो की जगह दो-दो रक्अते पढना जायज़ है। आयत से तो यह पाया जाता है कि जब कुफ्फार से तक्लीफ पहुचने का डर हो, तब कस्र करना चाहिए, लेकिन सही हदीसो से साबित है कि मुसाफिर को अम्न की हालत मे भी नमाज़ का कस्र करना दुरुस्त है। बुखारी व मुस्लिम मे है कि आप ने जुह्र और अस्र की नमाज़ मिना मे कस्र कर के पढी और उस वक्त किसी तरह का खौफ न था। तिर्मिज़ी मे इब्ने अब्बास से रिवायत है कि हम ने सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मक्के और मदीने के बीच मे अम्न की हालत मे दो-दो रक्अत पढी तो सफर में कस्र को हज़रत की सुन्नत समझना चाहिए।

व ला तहिनू फ़िब्तिग़ा-इल्-क़ौमि ط इन् तकूनू तअ्लमू-न
फ़ इन्नहुम् यअ्लमू-न कमा तअ्लमू-न ج व तर्जू-न मिनल्लाहि
मा ला यर्जू-न ط व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा ★(१०४) इन्ना
अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्ह़क़्क़ि लि-तह़्कु-म बैनन्नासि बिमा
अराकल्लाहु ط व ला तकुल्लिल्ख़ा-इनी-न
ख़सीमंव्- ﻻ (१०५) वस्तग़्फ़िरिल्ला-ह ط
इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रह़ीमा ج (१०६)
व ला तुजादिल् अ़निल्लज़ी-न यख़्तानू-न
अन्फ़ुसहुम् ط इन्नल्ला-ह ला युह़िब्बु
मन् का-न ख़व्वानन् असीमय्- ج
(१०७) -यस्तख़्फ़ू-न मिनन्नासि व ला
यस्तख़्फ़ू-न मिनल्लाहि व हु-व म-अ़हुम् इज़्
युबय्यितू-न मा ला यर्ज़ा मिनल्क़ौलि ط
व कानल्लाहु बिमा यअ़्मलू-न मुह़ीता
(१०८) हा-अन्तुम् हा-उला-इ जादल्तुम्
अन्हुम् फ़िल्-ह़यातिद्-दुन्या

والمحصنت ٥ — ٩٧ — النساء ٤

مُّوقُوتًا ۝ وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ إِن تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ
يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۖ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ إِنَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَا أَرَاكَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَكُن لِّلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ۝ وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ ۖ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنفُسَهُمْ ۚ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا ۝ يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَ
لَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ
الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ۝ هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ
عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَن يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
أَم مَّن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝ وَمَن يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ
ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا
يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَن يَكْسِبْ
خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا
مُّبِينًا ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ
أَن يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ ۖ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِن شَيْءٍ ۚ
وَأَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ ۚ
وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝ لَّا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ

फ़ मंय्युजादिलुल्ला-ह अ़न्हुम् यौमल्-क़ियामति अम्मय्यकूनु अ़लैहिम् वकीला
(१०९) व मंय्यअ्-मल् सू-अन् औ यज़्लिम् नफ़्सहू सुम्-म यस्तग़्फ़िरिल्ला-ह
यजिदिल्ला-ह ग़फ़ूरर्रहीमा (११०) व मंय्यक्सिब् इस्मन् फ़ इन्नमा
यक्सिबुहू अ़ला नफ़्सिही ط व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा (१११) व
मंय्यक्सिब् ख़ती-अ-तन् औ इस्मन् सुम-म यर्मि बिही बरी-अन् फ़ कदिह्त-म-ल
बुह्तानव्-व इस्मम्-मुबीना ★(११२) व लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै-क
व रह़्मतुहू ल-हम्मत्ताइ-फ-तुम्-मिन्हुम् अंय्युज़िल्लू-क ط व मा
युज़िल्लू-न इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा यजुर्रू-न-क मिन् शैइन् ط व
अन्ज़-लल्लाहु अ़लैकल्-किता-ब वल्ह़िक्म-त व अ़ल्ल-म-क मा लम्
तकुन् तअ्-लमु ط व का-न फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै-क अ़ज़ीमा ●(११३)

★रु १५/१२ आ ४ ★रु १६/१३ आ ८ ●सु. ३/४

फर्ज है। (१०३) और कुफ्फार का पीछा करने मे सुस्ती न करना। अगर तुम बे-आराम होते हो, तो जिस तरह तुम बे-आराम होते हो, उसी तरह वे भी बे-आराम होते है। और तुम ख़ुदा से ऐसी-ऐसी उम्मीदें रखते हो, जो वे नही रख सकते और ख़ुदा सब कुछ जानता है (और) बडी हिक्मत वाला है। (१०४) ✶

(ऐ पैगम्बर !) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाजिल की है ताकि ख़ुदा की हिदायतो के मुताबिक लोगो के मुकदमो का फैसला करो और (देखो) दगाबाजो की हिमायत मे कभी बहस न करना। (१०५) और ख़ुदा से बख़्शिश मागना। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।[1] (१०६) और जो लोग अपने हम-जिसो की ख़ियानत करते है उनकी तरफ से बहस न करना, क्यो कि ख़ुदा ख़ियानत करने वालो और मुज्रिमो को दोस्त नही रखता। (१०७) ये लोगो से तो छिपते है और ख़ुदा से नही छिपते, हालाकि जब वे रातो को ऐसी बातो के मश्विरे किया करते है, जिसको वह पसन्द नही करता, तो उनके साथ हुआ करता है। और ख़ुदा उन के तमाम कामो पर एहाता किए हुए है। (१०८) भला तुम लोग दुनिया की जिदगी मे तो उनकी तरफ से बहस कर लेते हो, कियामत को उनकी तरफ से ख़ुदा के साथ कौन झगडेगा और कौन उनका वकील बनेगा ? (१०९) और जो शख़्स कोई बुरा काम कर बैठे या अपने हक मे जुल्म कर ले, फिर ख़ुदा से बख़्शिश मागे, तो ख़ुदा को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा। (११०) और जो कोई गुनाह करता है, तो उस का वबाल उसी पर है और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१११) और जो शख़्स कोई कुसूर या गुनाह तो ख़ुद करे, लेकिन किसी बे-गुनाह पर उसका इत्तिहाम (आरोप) लगाये, तो उसने बुहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने सर पर रखा। (११२) ✶

और अगर तुम पर ख़ुदा का फज्ल और मेहरबानी न होती, तो उन मे से एक जमाअत तुमको बहकाने का इरादा कर ही चुकी थी और ये अपने सिवा (किसी को) बहका नही सकते और न तुम्हारा कुछ बिगाड सकते है। और ख़ुदा ने तुम पर किताब और दानाई नाजिल फरमायी है और तुम्हें वे बाते सिखायी है, जो तुम जानते नही थे और तुम पर ख़ुदा का बडा फज्ल है ● (११३)

---

१ एक अन्सारी थे, उन की एक जिरह एक शख़्स तअमा बिन अबीरक ने चुरा ली। अन्सारी ने हजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ कर फरियाद की। तअमा ने यह चालाकी की जिरह किसी और के घर मे डलवा दी और यह कैफियत अपने कुवे वालो से बयान कर के कहने लगा कि तुम हजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाओ और कहो कि तअमा बे-गुनाह है, उस ने जिरह नही चुराई, बल्कि दूसरे शख़्स ने चुराई है। आप तअमा की बे-गुनाही लोगो के सामने बयान फरमाए। हजरत गैब के जानने वाले तो थे ही नही, ख़्याल फरमाया कि ये लोग सच कहते होगे। आप ने खडे हो कर उस की बे-गुनाही का एलान कर दिया, तब ख़ुदा ने ये आयतें नाजिल फरमायी कि तुम दगाबाजो और ख़ियानत करने वालो के तरफदार न बनो और उन की तरफ से बहस न करो, और ख़ुदा से माफी मागो। मुसलमान वकील जो चोरो, डाकुओ, ख़ियानत करने वालो और हर किस्म के मुजरिमो की तरफ से मुकदमो मे वकालत करते और झगडते हैं और अपनी लच्छेदार तक्रीरो और बहसो से उन को सजा से बचा लेते हैं, उन्हे अल्लाह के इस फरमान पर अमल करना चाहिए और जिन लोगो के बारे मे मुकदमे की रिपोर्ट पर नजर कर के उन का दिल कह दे कि वे हकीकत मे मुजरिम हैं, उन की तरफ से वकालत नही करनी चाहिए।

ला ख़ै-र फी कसीरिम्-मिन्नज्वाहुम् इल्ला मन् अ-म-र बि स़-द-क़तिन् औ मअ्-रूफ़िन् औ इस्लाहिम् - बैनन्नासि ط व मंय्यफ् - अल् ज़ालि-कब्तिगा-अ मर्ज़ातिल्लाहि फ सौ-फ नुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा (११४) व मय्युशाक़्क़िर्रसू-ल मिम्बअ्-दि मा तबय्य-न लहुल्हुदा व यत्तबिअ् गै-र सबीलिल्-मुअमिनी-न नुवल्लिही मा तवल्ला व नुस्लिही जहन्न-म ط व सा-अत् मसीरा ★ (११५) इन्नल्ला-ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश-र-क बिही व यग़्फ़िरु मा दू-न ज़ालि-क लि मंय्यशाउ ط व मंय्युशरिक् बिल्लाहि फ-कद् ज़ल-ल ज़लालम् बअ़ीदा (११६) इय्यद्अू-न मिन्दूनिही इल्ला इनासन् ج व इय्यद्अू-न इल्ला शैतानम् -मरीदल् لا (११७) -ल-अ-नहुल्लाहु ▨ व क़ा-ल ल-अत्तख़िज़न्-न मिन् अ़िबादि-क नसीबम्-मफ़रूज़ंव- لا (११८) -व ल-उज़िल्लन्नहुम् व ल उमन्नियन्नहुम् व ल आमुरन्नहुम् फ-ल-युबत्ति-कुन-न आज़ानल्-अन्आमि व ल-आमुरन्नहुम् फ़-ल-युग़य्यिरुन-न ख़ल्कल्लाहि ط व मय्यत्तख़िज़िश्-शैता-न वलिय्यम् - मिन् दूनिल्लाहि फ - कद् ख़सि - र ख़ुस्रानम्-मुबीना ط (११९) यअ़िदुहुम् व युमन्नीहिम् ط व मा यअिदुहुमुश्शैतानु इल्ला गुरूरा (१२०) उला-इ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु ز व ला यजिदू-न अन्हा महीसा (१२१) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फीहा अ-ब-दन् ط वअ्-दल्लाहि हक़्क़न् ط व मन् अस्दकु मिनल्लाहि क़ीला (१२२) लै-स बि अमानिय्यिकुम् व ला अमानिय्यि अह्लिल्-किताबि ط मय्यअ-मल् सू - अय्युज - ज बिही لا व ला यजिद् लहू मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यव-व ला नसीरा (१२३) व मय्यअ्-मल् मिनस्सालिहाति मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ उला-इ-क यद्ख़ुलूनल् - जन्न-त व ला युज़्लमू-न नक़ीरा (१२४)

إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَنْ
يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾
وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ
سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾
إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ
وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾ إِنْ يَدْعُونَ مِنْ
دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ﴿١١٧﴾ لَعَنَهُ اللَّهُ ۘ
وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ﴿١١٨﴾ وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَ
لَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ
فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ
فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا ﴿١١٩﴾ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ
الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾ أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا
مَحِيصًا ﴿١٢١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَ
مَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَابِ ۗ
مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا
نَصِيرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

★रु १७/१४ आ ३ ▨ व लाज़िम

उन लोगो के बहुत से मश्विरे अच्छे नही, हा, (उस शख्स का मश्विरा अच्छा हो सकता है) जो खैरात या नेक बात या लोगो मे सुलह करने को कहे और जो ऐसे काम खुदा की खुश्नूदी हासिल करने के लिए करेगा, तो हम उसको बडा सवाब देगे। (११४) और जो शख्स सीधा रास्ता मालूम होने के बाद पैगम्बर की मुखालफत करे और मोमिनो के रास्ते के सिवा और रास्ते पर चले, तो जिधर वह चलता है, हम उसे उधर ही चलने देगे। और (कियामत के दिन) जहन्नम मे दाखिल करेगे और वह बुरी जगह है। (११५) ★

खुदा उस गुनाह को नही बख्शेगा कि किसी को उसका शरीक बनाया जाए और इसके सिवा (और गुनाह) जिसको चाहेगा, बख्श देगा। और जिसने खुदा के साथ शरीक बनाया, वह रास्ते से दूर जा पड़ा। (११६) ये जो खुदा के सिवा पूजा करते है तो औरतो ही की, और पुकारते है तो शैतान सरकश ही को, (११७) जिस पर खुदा ने लानत की है ▨ (जो खुदा से) कहने लगा, मैं तेरे बन्दो से (गैर खुदा की नज्र दिलवा कर माल का) एक मुकर्रर हिस्सा ले लिया करूगा। (११८) और उनको गुमराह करता और उम्मीदे दिलाता रहूगा और यह सिखाता रहूगा कि जानवरो के कान चीरते रहे और (यह भी) कहता रहूगा कि वे खुदा की बनायी हुई सूरतो को बदलते रहे और जिस शख्स ने खुदा को छोड कर शैतान को दोस्त बनाया, वह खुले नुक्सान मे पड गया। (११९) वह उनको वायदे देता है और उम्मीदे दिलाता है और जो कुछ शैतान उन्हे वायदे देता है, वह धोखा ही धोखा है। (१२०) ऐसे लोगो का ठिकाना जहन्नम है और वह वहा से मुख्लसी नही पा सकेगे। (१२१) और जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उनको हम बहिश्तो मे दाखिल करेगे, जिनके नीचे नहरे जारी है। हमेशा-हमेशा उनमे रहेगे, यह खुदा का सच्चा वायदा है, और खुदा से ज्यादा बात का सच्चा कौन हो सकता है। (१२२) (निजात) न तो तुम्हारी आरजूओ पर है और न अह्ले किताब की आरजूओ पर। जो शख्स बुरे अमल करेगा, उसे उसी (तरह) का बदला दिया जाएगा और वह खुदा के सिवा न किसी को हिमायती पाएगा और न मददगार। (१२३) और जो नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत और वह ईमान वाला भी होगा, तो ऐसे लोग जन्नत मे दाखिल होगे और उनका तिल बराबर भी हक न मारा जाएगा। (१२४) और उस शख्स ने किसका

★रु १७/१४ आ ३ ▨ व. लाज़िम

व मन् अह्सनु दीनम्मिम्मन् अस्ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुंव्वत्त-ब-अ मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न् ط वत्त-ख़-ज़ल्लाहु इब्राही-म ख़लीला (१२५) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु बि कुल्लि शैइम्मुहीता ★ (१२६) व यस्तफ़्तून-क फ़िन्निसा-इ ط क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़ीहिन् - न لا व मा युत्ला अलैकुम् फ़िल्किताबि फ़ी यतामन्निसा-इल्लाती ला तुअ्तूनहुन्-न मा कुति-ब लहुन्-न व तर्ग़बू-न अन् तन्किहूहुन्-न वल्-मुस्तज़्अफ़ी-न मिनल्-विल्दानि لا व अन् तक़ूमू लिल्यतामा बिल्क़िस्ति ط व मा तफ़-अलू मिन् ख़ैरिन् फ़ इन्नल्ला-ह का-न बिही अलीमा (१२७) व इनिम्र - अतुन् ख़ाफ़त् मिम्बअ्लिहा नुशूज़न् औ इअ्-राज़न् फ़ ला जुना-ह अलैहिमा अय्युस्लिहा बैनहुमा सुल्हन् ط वस्सुल्हु ख़ैरुन् ط व उह्ज़िरतिल् - अन्फ़ुसुश्शुह - ह् ط व इन् तुह्सिनू व तत्तक़ू फ़ इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा (१२८) व लन् तस्ततीअू अन् तअ्-दिलू बैनन्निसा-इ व लौ ह-रस्तुम् फ़ ला तमीलू कुल्लल्मैलि फ़-त-ज़रूहा कल्मु-अल्लक़ति ط व इन् तुस्लिहू व तत्तक़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूररहीमा (१२९) व इय्य-त-फ़र्रक़ा युग़्निल्लाहु कुल्लम्मिन् स - अतिही ط व कानल्लाहु वासिअन् हकीमा (१३०) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व ल-क़द् वस्सैनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व इय्याकुम् अनित्तक़ुल्ला-ह ط व इन् तक्फ़ुरू फ़ इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु ग़निय्यन् हमीदा (१३१)

فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ۝ وَمَنْ اَحْسَنُ
دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ
حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ۝ وَيَسْتَفْتُوْنَكَ
فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي
الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ
وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَ
اَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ۝ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ
اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ
خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ
اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا
بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا
كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝
وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا
حَكِيْمًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنْ

★रु. १८/१५ आ ११

दीन अच्छा हो सकता है, जिस ने खुदा के हुक्म को कुबूल किया और वह भले काम करने वाला भी है और इब्राहीम के दीन की पैरवी करने वाला भी है, जो यकसू (मुसलमान) थे और खुदा ने इब्राहीम को अपना दोस्त बनाया था। (१२५) और आसमान और जमीन मे जो कुछ है, सब खुदा ही का है और खुदा हर चीज पर एहाता किये हुए है। (१२६) ★

(ऐ पैगम्बर !) लोग तुमसे (यतीम) औरतो के बारे मे फत्वा तलब करते है, कह दो कि खुदा तुमको उनके (साथ निकाह करने के) मामले मे इजाज़त देता है और जो हुक्म इस किताब मे पहले दिया गया है, वह उन यतीम औरतो के बारे मे है, जिनको तुम उनका हक तो देते नही और ख्वाहिश रखते हो कि उनके साथ निकाह कर लो और (नीज) बेचारे बेकस बच्चो के बारे मे और यह (भी हुक्म देता है) कि यतीमो के बारे मे इंसाफ पर कायम रहो और जो भलाई तुम करोगे, खुदा उसको जानता है। (१२७) और अगर किसी औरत को अपने ख़ाविंद की तरफ से ज्यादती या बे-रग्बती का डर हो, तो मिया-बीवी पर कुछ गुनाह नही कि आपस मे किसी करारदाद पर सुलह कर ले। और सुलह खूब (चीज) है और तबीयतें तो बुख्ल की तरफ मायल होती हैं।[1] और अगर तुम भले और परहेज़गार बनोगे, तो खुदा तुम्हारे सब कामो को जानता है। (१२८) और तुम चाहे कितना ही चाहो, औरतो मे हरगिज़ बराबरी नही कर सकोगे, तो ऐसा भी न करना कि एक ही की तरफ ढलक जाओ और दूसरी को (ऐसी हालत मे) छोड दो कि गोया अधर मे लटक रही है[2] और अगर आपस मे मुवाफकत कर लो और परहेज़गारी करो तो खुदा बख्शने वाला, मेहरबान है। (१२९) और अगर मिया-बीवी (मे मुवाफकत न हो सके और) एक-दूसरे से जुदा हो जाए तो खुदा हर एक को अपनी दौलत से गनी कर देगा और खुदा बडी फराखी वाला और हिक्मत वाला है। (१३०) और जो कुछ आसमानो में है और जो कुछ ज़मीन मे है, सब खुदा ही का है और जिन लोगो को तुमसे पहले किताब दी गई थी, उनको भी और (ऐ मुहम्मद !) तुमको भी हमने ताकीदी हुक्म किया है कि खुदा से डरते रहो और अगर कुफ़ करोगे तो (समझ रखो कि) जो कुछ आसमानो मे और जो कुछ जमीन मे है, सब खुदा ही का है और खुदा बे-परवाह और तारीफ के लायक है। (१३१)

---

१ यानी बुख्ल और लालच इन्सान के मिज़ाज मे दाखिल हैं, वह अपना हक तो पूरा लेना चाहता है और दूसरे के हक की कुछ परवा नही करता। औरत तो चाहती है अपना हक—खाना, कपडा और मकान पूरा ले और मर्द चाहता है कि बिला हक दिए अपना काम निकाले, लेकिन अगर औरत मर्द को खुश करने के लिए अपना हक छोड दे तो मुनासिब है।

२ यानी न आसमान पर है, न ज़मीन पर, मतलब यह कि न शौहर वाली है कि शौहर से एहसान की उम्मीद हो, न आज़ाद है कि और शौहर कर ले।

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (१३२) इंय्यशअ्-युज़्हिब्कुम् अय्युहन्नासु व यअ्ति बि आख़री-न ط व कानल्लाहु अ़ला ज़ालि-क कदीरा (१३३) मन् का-न युरीदु सवाबद्दुन्या फ़ अि़न्दल्लाहि सवाबुद्दुन्या वल्आख़िरति ط व कानल्लाहु समीअ़म्-बसीरा ★ (१३४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न बिल्क़िस्ति शुहदा-अ लिल्लाहि व लौ अ़ला अन्फुसिकुम् अविल्-वालिदैनि वल्अक़्रबी-न ج इंय्यकुन् ग़नियन् औ फ़क़ीरन् फ़ल्लाहु औला बिहिमा قف फ़ ला तत्तबिअुल्-हवा अन् तअ़्-दिलू ج व इन् तल्वू औ तुअ्-रिज़ू फ़ इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा (१३५) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वल्-किताबिल्लज़ी नज़्ज़-ल अ़ला रसूलिही वल्-किताबिल्लज़ी अन्ज़-ल मिन् क़ब्लु ط व मंय्यक्फ़ुर् बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल्-यौमिल्-आख़िरि फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम्-बअ़ीदा (१३६) इन्नल्लज़ी-न आमनू सुम-म क-फ़रू सुम-म आमनू सुम-म क-फ़रू सुम्मज़्दादू कुफ़्रल्लम् यकुनिल्लाहु लि यग़्फ़ि-र लहुम् व ला लि यह्दियहुम् सबीला ط(१३७) बश्शिरिल्-मुनाफ़िक़ी-न बि अन-न लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा ۙ(१३८) अ़ल्लज़ी-न यत्तख़िज़ूनल् - काफ़िरी - न औलिया-अ मिन् दूनिल्-मुअ्मिनी-न ط अ-यब्तग़ू-न अि़न्दहुमुल्-अिज़्ज़-त फ़-इन्नल्-अिज़्ज़-त लिल्लाहि जमीआ़ ط (१३९)

النسآء ٤ ٧٩ والمحصنت ٥

تكفروا فان لله ما في السموت وما في الارض وكان الله
غنيا حميدا ۝ ولله ما في السموت وما في الارض وكفى
بالله وكيلا ۝ ان يشا يذهبكم ايها الناس ويات باخرين
وكان الله على ذلك قديرا ۝ من كان يريد ثواب الدنيا
فعند الله ثواب الدنيا والاخرة وكان الله سميعا بصيرا ۝
يايها الذين امنوا كونوا قومين بالقسط شهداء لله
ولو على انفسكم او الوالدين والاقربين ان يكن غنيا
او فقيرا فالله اولى بهما فلا تتبعوا الهوى ان تعدلوا
وان تلوا او تعرضوا فان الله كان بما تعملون خبيرا ۝
يايها الذين امنوا امنوا بالله ورسوله والكتب الذي
نزل على رسوله والكتب الذي انزل من قبل ومن
يكفر بالله وملئكته وكتبه ورسله واليوم الاخر فقد
ضل ضللا بعيدا ۝ ان الذين امنوا ثم كفروا ثم
امنوا ثم كفروا ثم ازدادوا كفرا لم يكن الله ليغفر لهم
ولا ليهديهم سبيلا ۝ بشر المنفقين بان لهم عذابا
اليما ۝ الذين يتخذون الكفرين اولياء من دون المؤمنين
ايبتغون عندهم العزة فان العزة لله جميعا ۝ وقد نزل

★रु १६/१६ आ ८

और (फिर सुन रखो कि) जो कुछ आसमानो मे और जो कुछ ज़मीन मे है, सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा ही कारसाज़ काफी है। (१३२) लोगो ! अगर वह चाहे तो तुम को फना कर दे और (तुम्हारी जगह) और लोगो को पैदा कर दे और ख़ुदा इस बात पर कुदरत रखता है। (१३३) जो शख़्स दुनिया (मे) अमलो का बदला चाहता हो, तो ख़ुदा के पास दुनिया और आख़िरत (दोनो) के लिए बदला (मौजूद) है और ख़ुदा सुनता-देखता है। (१३४) ✶

ऐ ईमान बालो ! इन्साफ पर कायम रहो और ख़ुदा के लिए सच्ची गवाही दो, चाहे (इस मे) तुम्हारा या तुम्हारे मा-बाप और रिश्तेदारो का नुक्सान ही हो। अगर कोई अमीर है या फकीर, तो ख़ुदा उनका ख़ैरख़्वाह है। तो तुम नफ्स की ख़्वाहिश के पीछे चल कर अद्ल (इन्साफ) को न छोड देना। अगर तुम पेचदार शहादत दोगे या (शहादत से) बचना चाहोगे, तो (जान रखो) ख़ुदा तुम्हारे सब कामो को जानता है। (१३५) मोमिनो ! ख़ुदा पर और उस के रसूल पर और जो किताब उस ने अपने (आख़िरी) पैगम्बर पर नाज़िल की है और जो किताबे इस से पहले नाज़िल की थी, सब पर ईमान लाओ और जो शख़्स ख़ुदा और उस के फरिश्तो और उस की किताबो और उसके पैग़म्बरो और कियामत के दिन से इन्कार करे, वह रास्ते से भटक कर दूर जा पडा। (१३६) जो लोग ईमान लाये, फिर काफिर हो गये, फिर ईमान लाये, फिर काफिर हो गये, फिर कुफ्र मे बढ़ते गए, उन को ख़ुदा न तो बख़्शेगा और न सीधा रास्ता दिखायेगा। (१३७) (ऐ पैगम्बर !) मुनाफिको (यानी दो-रुख़े लोगो) को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (१३८) जो मोमिनो को छोड कर काफिरो को दोस्त बनाते है, क्या ये उन के यहा इज्जत हासिल करनी चाहते है, तो इज़्ज़त तो सब ख़ुदा ही की है। (१३९) और ख़ुदा ने तुम

★रु १६/१६ आ ८

व क़द् नज़्ज-ल अ़लैकुम् फ़िल्किताबि अन् इज़ा समिअ्-तुम् आयातिल्लाहि युक्फरु बिहा व युस्तह्ज़उ बिहा फ़-ला तक़्अुदू म-अ़हुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही صلے इन्नकुम् इज़म्मिस्लुहुम् ط इन्नल्ला - ह जामिअुल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्-काफ़िरी-न फी जहन्न-म जमीआ لا (१४०) अ्ल्लज़ी-न य-त-रब्बसू-न बिकुम् ج फ़ इन् का-न लकुम् फ़त्हुम्-मिनल्लाहि क़ालू अ-लम् नकुम्म - अकुम् صلے व इन् का-न लिल्काफ़िरी - न नसीबुन् لا क़ालू अ - लम् नस्तह्विज् अ़लैकुम् व नम्नअ् - कुम् मिनल्-मुअ्मिनी-न ط फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनकुम् यौमल् - क़ियामति ط व लय्यज्अ़लल्लाहु लिल्-काफिरी-न अ-लल्-मुअ्मिनी-न सबीला ★(१४१) इन्नल्-मुनाफिक़ी-न युख़ादिअूनल्ला-ह व हु-व ख़ादिअुहुम् ج व इज़ा क़ामू इलस्सलाति क़ामू कुसाला لا युराऊनन्ना-स व ला यज़्कुरूनल्ला-ह इल्ला क़लीला لا (१४२) मुज़ब्ज़बी-न बै - न ज़ालि - क صلے ला इला हा उला - इ ط व ला इला हा उला-इ व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़ लन् तजि-द लहू सबीला (१४३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल् मुअ्मिनी-न ط अ तुरीदू - न अन् तज्अ़लू लिल्लाहि अ़लैकुम् सुल्तानम् - मुबीना (१४४) इन्नल् - मुनाफिक़ी - न फिद्दर्किल्-अस्फलि मिनन्नारि ج व लन् तजि-द लहुम् नसीरा لا (१४५) इल्लल्लज़ी-न ताबू व अस्लहू वअ्-त-समू बिल्लाहि व अख़्लसू दीनहुम् लिल्लाहि फ़ उला-इ-क म-अ़ल् - मुअ्मिनी-न ط व सौ - फ़ युअ्तिल्लाहुल् - मुअ्मिनी - न अज्रन् अ़ज़ीमा (१४६) मा यफ़्अ़लुल्लाहु वि अ़ज़ाबिकुम् इन् शकर्तुम् व आमन्तुम् ط व कानल्लाहु शाकिरन् अ़लीमा (१४७)

السّلام ٨٠ والمحصنٰت ٥

عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ
بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ
اِذًا مِّثْلُهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ
جَمِيْعَا ۙ الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ
قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ڮ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ
نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا
اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا
اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَاۗءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ
اِلَّا قَلِيْلًا ۙ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ڰ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ وَلَآ اِلٰى
هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ
اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ
فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ
تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ مَا
يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ۝

★रु. २०/१७ आ ७

(मोमिनो) पर अपनी किताब मे (यह हुक्म) नाज़िल फरमाया है कि जब तुम (कही) सुनो कि खुदा की आयतो से इन्कार हो रहा है और उन की हंसी उडाई जाती है तो जब तक वे लोग और बाते (न) करने लगे, उन के पास मत बैठो, वरना तुम भी उन्ही जैसे हो जाओगे। कुछ शक नही कि खुदा मुनाफिको और काफिरो सब को दोजख मे इकट्ठा करने वाला है। (१४०) जो तुम को देखते रहते है, अगर खुदा की तरफ से तुम को फत्ह मिले, तो कहते है, क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफिरो को (फत्ह) नसीब हो, तो (उस से) कहते है, क्या हम तुम पर गालिब नही थे और तुम को मुसलमानो (के हाथ) से बचाया नही, तो खुदा तुम मे कियामत के दिन फैसला कर देगा और खुदा काफिरो को मोमिनो पर हरगिज गलबा नही देगा। (१४१) ★

मुनाफिक (इन चालो से अपने नजदीक) खुदा को धोखा देते है, (ये उस को क्या धोखा देंगे) वह उन्ही को धोखे मे डालने वाला है और जब ये नमाज को खडे होते है, तो सुस्त और काहिल होकर (सिर्फ) लोगो के दिखाने को और खुदा की याद ही नही करते, मगर बहुत कम। (१४२) बीच मे पडे लटक रहे हैं, न उनकी तरफ (होते है), न इन की तरफ और जिस को खुदा भटकाए, तो तुम उसके लिए कभी भी रास्ता न पाओगे। (१४३) ऐ अह्ले ईमान! मोमिनो के सिवा काफिरों को दोस्त न बनाओ, क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर खुदा का खुला इल्जाम लो ? (१४४) कुछ शक नही कि मुनाफिक लोग दोज़ख के सब से नीचे के दर्जे मे होगे और तुम उनका किसी को मददगार न पाओगे। (१४५) हा, जिन्होंने तौबा की और अपनी हालत को दुरुस्त किया और खुदा (की रस्सी) को मजबूत पकडा और खास खुदा के फरमाबरदार हो गये, तो ऐसे लोग मोमिनो के साथ होगे और खुदा बहुत जल्द मोमिनो को बडा सवाब देगा। (१४६) अगर तुम (खुदा के) शुक्रगुजार रहो और (उस पर) ईमान ले आओ.तो खुदा तुम को अज़ाब देकर क्या करेगा और खुदा तो कदशनास और जानता-बूझता है। (१४७) खुदा इस बात को पसंद नही करता कि

★रु २०/१७ आ ७

छठा पारः लायुहिब्बुल्लाहु

सूरतुन्निसा-इ आयत १४८ से १७६

लायुहिब्बुल्लाहुल्-जह्-र बिस्सू-इ मिनल्क़ौलि इल्ला मन् ज़ुलि-म ط व कानल्लाहु समीअ़न् अ़लीमा (१४८) इन् तुब्दू ख़ैरन् औ तुख़्फ़ूहु औ तअ़्-फ़ू अ़न् सू-इन् फ़ इन्नल्ला-ह का-न अ़फ़ूव्वन् क़दीरा (१४९) इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व रुसुलिही व युरीदू-न अय्युफ़र्रिक़ू बैनल्लाहि व रुसुलिही व यक़ूलू-न नुअ्मिनु बि बअ्-ज़िंव्-व नक्फ़ुरु बि बअ्-ज़िंव्-व युरीदू-न अय्यत्तख़िज़ू बै-न ज़ालि-क सबीला لا (१५०) उला-इ-क हुमुल् काफ़िरू-न हक़्क़न् ج व् अअ्-तद्ना लिल्-काफ़िरी-न अ़ज़ाबम्मुहीना (१५१) वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही व-लम् युफ़र्रिक़ू बै-न अ-ह्दिम्-मिन्हुम् उला-इ-क सौ-फ़ युअ्तीहिम् उजूरहुम् ط व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा ★ (१५२) यस्अलु-क अह्लुल्किताबि अन् तुनज्जि-ल अलैहिम् किताबम्-मिनस्समा-इ फ़-क़द् स-अलू मूसा अक्ब-र मिन् ज़ालि-क फ़ क़ालू अरिनल्ला-ह जह्-र-तन् फ़ अ-ख़-ज़त्-हुमुस्साअि-क़तु बि ज़ुल्मिहिम् ج सुम्मत्त-ख़-ज़ुल्-अिज-ल मिम्बअ्-दि मा जा-अत्-हुमुल्बय्यिनातु फ़ अ़फ़ौना अ़न् ज़ालि-क ج व आतैना मूसा सुल्तानम्-मुबीना (१५३) व र-फ़अ्-ना फ़ौक़हुमुत्तू-र बि मीसाक़िहिम् व क़ुल्ना लहुमुद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदव्-व क़ुल्ना लहुम् ला तअ्-दू फ़िस्सब्ति व अ-ख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा (१५४) फ़ बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् व कुफ़्रिहिम् बि आयातिल्लाहि व क़त्लिहिमुल् अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व क़ौलिहिम् क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन् ط बल् त-ब-अ़ल्लाहु अ़लैहा बि कुफ़्रिहिम् फ़ ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला لا (१५५) व बि कुफ़्रिहिम् व क़ौलिहिम् अ़ला मर्-य-म बुह्तानन् अ़ज़ीमा لا (१५६)

لا يحب الله ٨١ النساء

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ
سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ
وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ
نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ
ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ
اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۝ يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ
فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ
الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ
الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ وَ
رَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا
وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝
فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ
بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا

منزل

★रु. २१/१ आ ११

कोई किसी को एलानिया बुरा कहे, मगर वह जो मज्लूम हो और ख़ुदा (सब कुछ) सुनता (और) जानता है।[1] (१४८) अगर तुम लोग भलाई खुल्लम खुल्ला करोगे या छिपा कर या बुराई से दरगुज़र करोगे, तो ख़ुदा भी माफ़ करने वाला (और) कुदरत वाला है। (१४९) जो लोग ख़ुदा से और उस के पैगम्बरो से कुफ़्र करते है और ख़ुदा और उस के पैगम्बरो मे फ़र्क करना चाहते है और कहते है कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नही मानते और ईमान और कुफ़्र के बीच मे एक राह निकालनी चाहते है, (१५०) वे बिला किसी शक-शुब्हे के काफ़िर है और काफ़िरो के लिए हम ने ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (१५१) और जो लोग ख़ुदा और उस के पैगम्बरो पर ईमान लाये और उन मे से किसी मे फ़र्क न किया (यानी सब को माना), ऐसे लोगो को वह बहुत जल्द उन (की नेकियो) का बदला अता फ़रमायेगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१५२) ★

(ऐ मुहम्मद !) अह्ले किताब तुम से दर्ख़्वास्त करते है कि तुम उन पर एक (लिखी हुई) किताब आसमान से उतार लाओ, तो ये मूसा से इस से भी बडी-बडी दर्ख़्वास्तें कर चुके है। (उन से) कहते थे, हमें ख़ुदा को ज़ाहिर (यानी आखो से) दिखा दो, सो उन के गुनाह की वजह से, उन को बिजली ने आ पकडा। फिर खुली निशानिया आये पीछे, बछडे को (माबूद) बना बैठे, तो उस से भी हम ने दर-गुज़र की और मूसा को खुला गलबा दिया। (१५३) और उस से अह्द लेने को हम ने उस पर तूर पहाड उठा खडा किया और उन्हे हुक्म दिया कि (शहर के) दरवाजे मे (दाख़िल होना, तो) सज्दा करते हुए दाख़िल होना और यह भी हुक्म दिया कि हफ़्ते के दिन (मछलिया पकड़ने) मे हद से आगे (यानी हुक्म के ख़िलाफ़) न करना। गरज हम ने उन से मज़बूत अह्द लिया। (१५४) (लेकिन उन्हो ने अह्द को तोड डाला) तो उन के अह्द तोड देने और ख़ुदा की आयतो से कुफ़्र करने और नबियो को ना-हक मार डालने और यह कहने की वजह से कि हमारे दिलो पर पर्दे (पड़े हुए) है, (ख़ुदा ने उन को मर्दूद कर दिया और उन के दिलो पर पर्दे नही हैं), बल्कि उन के कुफ़्र की वजह से ख़ुदा ने उन पर मुहर कर दी है, तो ये कम ही ईमान लाते है। (१५५) और उन के कुफ़्र की वजह से और मरयम पर एक बड़ा बुहतान बाधने की वजह से (१५६) और यह

---

१ किसी की बुराई बयान करना और उस का ऐब ज़ाहिर करना कि इसी का नाम गीबत है, बहुत बुरा है ख़ुदा को निहायत ना-पसद है। हा, अगर किसी पर कोई ज़ुल्म है, तो उस का ज़ुल्म बयान करना और मज्लूम का ज़ालिम को बुरा कहना मुनासिब है।

★रु. २१/१ आ ११

व क़ौलिहिम् इन्ना क-तल्नल्-मसी-ह् ओसब्-न मर्य-म रसूलल्लाहि ॡ व मा क-तलूहु व मा स-लबूहु व लाकिन् शुब्बि-ह लहुम् ♭ व इन्नल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फीहि ल-फी शक्किम्मिन्हु ♭ मा लहुम् बिही मिन् अिलमिन् इल्लत्तिबाअ़ज़्ज़न्नि ॡ व मा क-तलूहु यकीना ॥ (१५७) बर्र-फ-अ़हुल्लाहु इलैहि ♭ व कानल्लाहु अज़ीज़न् ह़कीमा (१५८) व इम्मिन् अह़्लिल्-किताबि इल्ला ल-युअ्मिनन्-न बिही क़ब्-ल मौतिही ॡ व यौमल् - कियामति यकूनु अलैहिम् शहीदा ॡ (१५९) फ बि-ज़ुल्मिम्-मिनल्लज़ी-न हादू ह़र्रम्ना अ़लैहिम् त़य्यिबातिन् उह़िल्लत् लहुम् व बि स़द्दिहिम् अ़न् सबीलिल्लाहि कसीरा ॥ (१६०) व अख़्ज़िहिमुर्रिबा व कद् नुहू अन्हु व अक्लिहिम् अम्वालन्नासि बिल्बातिलि ♭ व अअ-तद्ना लिल्काफिरी-न मिन्हुम् अज़ाबन् अलीमा (१६१) लाकिनिर्-रासिख़ू-न फ़िल्-अ़िल्मि मिन्हुम् वल्मुअ्मिनू-न युअ्मिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क वल्मुकीमीनस्स़ला-त वल्-मुअ्तूनज़्ज़का-त वल्मुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि ♭ उला-इ-क सनुअ्तीहिम् अज्रन् अज़ीमा ✶ (१६२) इन्ना औहैना इलै-क कमा औहैना इला नूहिंव्वन्नबिय्यी-न मिम्बअ्-दिही ॡ व औहैना इला इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हा-क व यअ्कू-ब वल्-अस्बाति व ओसा व अय्यू-ब व यूनु-स व हारू-न व सुलैमा-न ॡ व आतैना दवू-द ज़बूरा ॡ (१६३) व रुसुलन् कद् क-सस्नाहुम् अलै-क मिन् क़ब्लु व रुसुलल्लम् नक़्सुस्हुम् अ़लै-क ♭ व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा ॡ (१६४) रुसुलुम्-मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न लिअल्ला यकू-न लिन्नासि अ़-लल्लाहि हुज्जतुम्-बअ्-दर्रुसुलि ♭ व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् ह़कीमा (१६५)

لا يحب الله ٨٢ النساء ٤

عظيما ۝ وقولهم انا قتلنا المسيح عيسى ابن مريم رسول الله
وما قتلوه وما صلبوه ولكن شبه لهم وان الذين
اختلفوا فيه لفي شك منه ما لهم به من علم الا اتباع
الظن وما قتلوه يقينا ۝ بل رفعه الله اليه وكان الله
عزيزا حكيما ۝ وان من اهل الكتب الا ليؤمنن به قبل
موته ويوم القيمة يكون عليهم شهيدا ۝ فبظلم من
الذين هادوا حرمنا عليهم طيبت احلت لهم وبصدهم
عن سبيل الله كثيرا ۝ واخذهم الربوا وقد نهوا عنه و
اكلهم اموال الناس بالباطل واعتدنا للكفرين منهم
عذابا اليما ۝ لكن الرسخون في العلم منهم والمؤمنون يؤمنون
بما انزل اليك وما انزل من قبلك والمقيمين الصلوة و
المؤتون الزكوة والمؤمنون بالله واليوم الاخر اولئك
سنؤتيهم اجرا عظيما ۝ انا اوحينا اليك كما اوحينا الى نوح
والنبين من بعده واوحينا الى ابرهيم واسمعيل واسحق
ويعقوب والاسباط وعيسى وايوب ويونس وهرون وسليمن
واتينا داود زبورا ۝ ورسلا قد قصصنهم عليك من قبل
ورسلا لم نقصصهم عليك وكلم الله موسى تكليما ۝ رسلا

منزل

★रु २२/२ आ १०

कहने की वजह से कि हम ने मर्यम के बेटे ईसा मसीह को, जो खुदा के पैगम्बर (कहलाते थे,) कत्ल कर दिया है, (खुदा ने उन को मलऊन कर दिया) और उन्होने ईसा को कत्ल नही किया और न उन्हे सूली पर चढाया, बल्कि उन को उन की-सी सूरत मालूम हुई और जो लोग उन के बारे मे इख्तिलाफ करते है, वे उन के हाल से शक मे पडे हुए है और बदगुमानी की पैरवी के सिवा उन को इस का कुछ भी इल्म नही और उन्हो ने ईसा को यकीनन कत्ल नही किया, (१५७) बल्कि खुदा ने उन को अपनी तरफ उठा लिया और खुदा गालिब और हिक्मत वाला है। (१५८) और कोई अह्ले किताब नही होगा, मगर उनकी मौत से पहले उनपर ईमान ले आयेगा और वह क़ियामत के दिन उन पर गवाह होगे। (१५९) तो हम ने यहूदियो के जुल्मो की वजह से (बहुत-सी) पाकीज़ा चीज़े, जो उन को हलाल थी, उन प रहराम कर दी।[1] और इस वजह से भी कि वे अक्सर खुदा के रास्ते से (लोगो को) रोकते थे। (१६०) और इस वजह से भी कि मना किए जाने के बावजूद सूद लेते थे और इस वजह से भी कि लोगो का माल नाहक खाते थे और उन मे से जो काफिर है, उन के लिए हम ने दर्द देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है, (१६१) मगर जो लोग उन मे से इल्म मे पक्के है और जो मोमिन है, वे इस (किताब) पर जो तुम पर नाजिल हुई और जो (किताबें) तुम से पहले नाजिल हुई (सब पर) ईमान रखते है और नमाज पढते है और जकात देते है और खुदा और आखिरत के दिन को मानते है। उनको हम बहुत जल्द बडा बदला देगे (१६२)★

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम्हारी तरफ उसी तरह वह्य भेजी है, जिस तरह नूह और उन मे पिछले पैगम्बरो की तरफ भेजी थी और इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और याकूब की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलेमान की तरफ भी हम ने वह्य भेजी थी और दाऊद को हम ने ज़बूर भी इनायत की थी। (१६३) और बहुत से पैगम्बर है, जिनके हालात हम तुम से पहले बयान कर चुके है, और बहुत से पैगम्बर है जिनके हालात तुममे बयान नही किये। और मूसा से तो खुदा ने बाते भी की। (१६४) (सब) पैगम्बरो को (खुदाने) खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले (बना कर भेजा था), ताकि पैगम्बरो के आने के बाद लोगों को खुदा पर इल्जाम का मौका न रहे और खुदा गालिब हिक्मत वाला है। (१६५) लेकिन खुदा ने जो (किताब) तुम पर

---

१. जो चीज़ें खुदा ने उन लोगो पर हराम कर दी थी, उन का बयान सूर अन्आम आयत १४६ मे है।

★रु. २२/२ आ १०

लाकिनिल्लाहु यश्हदु बिमा अन्ज़-ल इलै-क अन्ज-लहू बि अिल्मिही ج वल्-मलाइ-कतु यश्हदू-न ط व कफा बिल्लाहि शहीदा ط (१६६) इन्नल्लजी-न क-फरू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि क़द् जल्लू ज़लालम्-बओदा (१६७) इन्नल्लजी-न क-फरू व ज़-लमू लम् यकुनिल्लाहु लि यग़्फ़िर लहुम् व ला लि यह्दियहुम् तरीका لا (१६८) इल्ला तरी-क जहन्न-म खालिदी-न फीहा अ-ब-दन् ط व का-न ज़ालि-क अ-लल्लाहि यसीरा (१६९) या अय्युहन्नासु कद् जा-अकुमुर्रसूलु बिल्हक़्क़ि मिर्रब्बिकुम् फ़ आमिनू खैरल्लकुम् ط व इन् तक्फुरू फ इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा (१७०) या अह्लल्किताबि ला तग्लू फ़ी दीनिकुम् व ला तकूलू अ-लल्लाहि इल्लल्-हक़्-क़ ط इन्नमल्-मसीहु ओसब्नु मर्य-म रसूलुल्लाहि व कलिमतुहू ج अल्क़ाहा इला मर्य-म व रूहुम्मिन्हु ز फ आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही व ला तकूलू सलासतुन् ط इन्तहू खैरल्लकुम् ط इन्नमल्लाहु इलाहुव्वाहिदुन् ط सुब्हानहू अंय्यकू-न लहू व-लदुन् ▨ लहू मा फिस्-समावाति व मा फिल्अर्ज़ि ط व कफा बिल्लाहि वकीला ★ (१७१) लय्यस्तन्किफ़ल्-मसीहु अंय्यकू-न अब्दल्-लिल्लाहि व लल्-मलाइकतुल्-मुकर्रबू-न ط व मय्यस्तन्किफ् अन् अिबादतिही व यस्तक्बिर् फ-स-यह्शुरुहुम् इलैहि जमीआ (१७२) फ़-अम्मल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़-युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही ج व अम्मल्लजीनस्तन्कफ़ू वस्तक्बरू फ युअ़ज़्ज़िबुहुम् अज़ाबन् अलीमंव्- لا ٥ व ला यजिदू-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा (१७३)

مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ
الرُّسُلِ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ
اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًا
بَعِيْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ۝ اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا
وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ
بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ
عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَ
رُوْحٌ مِّنْهُ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ اِنْتَهُوْا خَيْرًا
لَّكُمْ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ لَهٗ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ لَنْ
يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ
وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ۝
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَ

▨ व. लाज़िम ★ रु २३/३ आ ९

नाज़िल की है, उस की निस्बत ख़ुदा गवाही देता है कि उस ने अपने इल्म से नाज़िल की है और फ़रिश्ते भी गवाही देते है और गवाह तो ख़ुदा ही काफ़ी है। (१६६) जिन लोगो ने कुफ़्र किया और (लोगो को) ख़ुदा के रास्ते से रोका, वे रास्ते से भटक कर दूर जा पडे। (१६७) जो लोग काफिर हुए और ज़ुल्म करते रहे, ख़ुदा उन को बख़्शने वाला नही और न उन्हे रास्ता ही दिखाएगा। (१६८) हा, दोजख का रास्ता, जिसमे वे हमेशा (जलते) रहेगे और यह (बात) ख़ुदा को आसान है। (१६९) लोगो ! ख़ुदा के पैगम्बर तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक बात ले कर आए है, तो (उन पर) ईमान लाओ, (यही) तुम्हारे हक मे बेहतर है और अगर कुफ़्र करोगे तो (जान रखो कि) जो कुछ आसमानो और जमीन मे है, सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा सब कुछ जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१७०) ऐ अह्ले किताब ! अपने दीन (की बात) मे हद से न बढो और ख़ुदा के बारे मे हक के सिवा कुछ न कहो। मसीह (यानी) मरयम के बेटे ईसा (न ख़ुदा थे, न ख़ुदा के बेटे, बल्कि) ख़ुदा के रसूल और उस (की बशारत) का कलिमा थे, जो उस ने मरयम की तरफ भेजा था और उस की तरफ से एक रूह थे, तो ख़ुदा और उस के रसूलो पर ईमान लाओ और (यह) न कहो (कि ख़ुदा) तीन (है, इस एतकाद से) बाज आओ कि यह तुम्हारे हक मे बेहतर है। ख़ुदा ही अकेला माबूद है और इस से पाक है कि इस के औलाद हो। जो कुछ आसमानो मे और जो कुछ ज़मीन मे है सब उसी का है और ख़ुदा ही कारसाज काफी है। (१७१) ★

मसीह इस बात से आर (लाज-शर्म) नही रखते कि ख़ुदा के बन्दे हो और न मुकर्रब फरिश्ते (आर रखते है) और जो शख़्स ख़ुदा का बन्दा होने को आर की वजह समझे और सरकशी करे तो ख़ुदा सब को अपने पास जमा कर लेगा। (१७२) तो जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, वह उन को उन का पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज्यादा भी इनायत करेगा और जिन्हो ने (बन्दा होने से) आर व इंकार और घमड किया, उन को वह तक्लीफ देने वाला अजाब

व लाजिम ★रु २३/३ आ ६

या अय्युहन्नासु कद् जा-अ कुम् बुर्हानुम्-मिर्रब्बिकुम् व अन्जल्ना इलैकुम् नूरम्मुबीना (१७४) फ अम्मल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि वअ्-त-समू बिही फ-स-युद् ख़िलुहुम् फी रह़्मतिम् - मिन्हु व फ़ज़्लिव्[لا]- व यह्दीहिम् इलैहि सिरात़म् - मुस्तकीमा ط (१७५). यस्तफ्तून - क ط कुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फिल्कलालति ط इनिम्रु-उन् ह-ल-क लै-स लहू व-लदुव्-व लहू उख़्तुन् फ लहा निस्फु मा त-रक ج व हु-व यरिसुहा इल्लम् यकुल्लहा व-लदुन् ط फ इन् का-न-तस्नतैनि फ़-लहुमस्-सुलुसानि मिम्मा त-र-क ط व इन् कानू इख़्वतर्रिजालव्-व निसा-अन् फ़ लिज़्ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल् - उन्सयैनि ط युबय्यिनुल् लाहु लकुम् अन् तज़िल्लू ط वल्लाहु बि कुल्लि शैइन् अलीम ★ (१७६)

يَزِيدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنْكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۙ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝
يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا
مُّبِينًا ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ
فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝
يَسْتَفْتُونَكَ ۚ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ
لَهُ وَلَدٌ وَّلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا إِنْ لَّمْ يَكُنْ
لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانُوا
إِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ
أَنْ تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝
سُورَةُ الْمَائِدَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوعًا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ
إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرُمٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ
مَا يُرِيدُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ
الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِّينَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ
فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ

५ सूरतुल्मा-इदति ११२

(मदनी) इस सूर. मे अरबी के १३४६४ अक्षर, २८४२ शब्द, १२० आयते और १६ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू औफ़ू बिल्‌अुकूदि ط उहिल्लत् लकुम् बहीमतुल्-अन्आमि इल्ला मा युत्ला अलैकुम् गै-र मुहिल्लिस्सैदि व अन्तुम् हुरुमुन् ط इन्नल्ला-ह यह़्कुमु मा युरीद (१) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहिल्लू शआ-इरल्लाहि व लश्शहरल्-हरा-म व लल्हद-य व लल्कला-इ-द व ला आम्मीनल्-बैतल्-ह़रा-म यब्तगू-न फ़ज़्-लम्-मिर्रब्बिहिम् व रिज़्वानन् ط व इज़ा ह-लल्तुम् फ़स्तादू ط व ला यज्रिमन्नकुम् शन-आनु क़ौमिन् अन् सद्दूकुम् अनिल्-मस्जिदिल्-ह़रामि अन् तअ्-तदू ⫻ व तआवनू अ-लल्बिर्रि वत्तक्वा صلے व ला तआवनू अ-लल्-इस्मि वल्‌अुद्वानि صلے वत्तकुल्ला-ह ط इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिकाब ● (२)

★रु २४/४ आ ५ ⫻ व लाज़िम ●रुब्अ १/४

देगा। (१७३) और ये लोग खुदा के सिवा अपना हामी और मददगार न पाएंगे। (१७४) लोगो! तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास (रोशन) दलील आ चुकी है और हम ने (कुफ्र और भटकाव का अंधेरा दूर करने को) तुम्हारी तरफ चमकता हुआ नूर भेज दिया है। पस जो लोग खुदा पर ईमान लाये और उस (के दीन की रस्सी) को मजबूत पकडे रहे, उन को वह अपनी रहमत और फ़ज्ल (के बहिश्तो) मे दाखिल करेगा और अपनी तरफ (पहुचने का) सीधा रास्ता दिखाएगा। (१७५) (ऐ पैगम्बर!) लोग तुम से (कलाला के बारे में खुदा का) हुक्म मालूम करते है।[1] कह दो कि खुदा कलाला के बारे मे यह हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मर जाए, जिस के औलाद न हो (और न मा-बाप) और उस के बहन हो तो उस को भाई के तर्के मे मे आधा हिस्सा मिलेगा और अगर बहन मर जाए और उस के औलाद न हो तो उस के तमाम माल का वारिस भाई होगा और अगर (मरने वाले भाई की) दो बहने हो तो दोनो को भाई के तर्के मे से दो तिहाई और अगर भाई और बहन यानी मर्द और औरते मिले-जुले वारिस हो तो मर्द का हिस्सा दो औरतो के हिस्से के बराबर है, खुदा (ये अह्काम) तुम से इस लिए बयान फरमाता है कि भटकते न फिरो और खुदा हर चीज़ जानता है। (१७६)★

५ सूरः माइदः ११२

सूर माइद मदनी है और इस मे एक सौ बीस आयतें और और सोलह रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो! अपने इकरारो को पूरा करो। तुम्हारे लिए चार पाए जानवर, (जो चरने वाले है,) हलाल कर दिए गये है, अलावा उन के जो तुम्हे पढ कर सुनाये जाते है, मगर (हज के) एहराम मे शिकार को हलाल न जानना। खुदा जैसा चाहता है, हुक्म देता है। (१) मोमिनो! खुदा के नाम की चीज़ों की बे-हुर्मती न करना और न अदब के महीने की और न कुर्बानी के जानवरो की (जो खुदा की नज्र कर दिए गये हो और) जिनके गलो मे पट्टे बधे हो। और न उन लोगो की, जो इज्जत के घर (यानी बैतुल्लाह) को जा रहे हो (और) अपने परवरदिगार के फ़ज्ल और उस की खुश्नूदी की तलब रखते हो और जब एहराम उतार दो, तो (फिर अख्तियार है कि) शिकार करो और लोगो की दुश्मनी इस वजह से कि उन्होने तुमको इज्जत वाली मस्जिद से रोका था, तुम्हे इस बात पर तैयार न करे कि तुम उन पर ज्यादती करने लगो ▨ और (देखो) नेकी और परहेजगारी के कामो मे एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और जुल्म की बातो मे मदद न किया करो और खुदा से डरते

---

१ कलाला इसे कहते है कि जिस का बेटा और बाप न हो कि असल वारिस यही है तो उस वक्त उस के भाई-बहन को बेटा-बेटी का हुक्म है और अगर सगे न हो तो यही हुक्म सौतेले का है। एक बहन तो आधा और दो बहन हो, तो तिहाई उस माल से जो छोड़ मरा और अगर भाई-बहन हो तो मर्द को दोहरा हिस्सा और औरत को इकहरा और जो निरे भाई हो तो उन को फरमाया कि वह बहन के माल के वारिस हों यानी हिस्सा ते नहीं वह 'अस्बा' हैं। अगर बेटी हो और बहन हो तो हिस्सा बेटी को और बहन 'अस्बा' है यानी हिस्सेदारो से बचे तो अस्बा लेवे।

★रु २४/४ आ ५ ▨ व लाज़िम

हुर्रिमत् अ़लैकुमुलमैततु वद्दमु व लह्मुल्-ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल लि ग़ैरिल्लाहि बिही वल्मुन्ख़निकतु वल्मौक़ूज़तु वल्मुतरद्दियतु वन्नतीहतु व मा अ-क-लस्सबुअ़ु इल्ला मा ज़क्कैतुम् قف व मा ज़ुबि-ह अ़-लन्नुसुवि व अन् तस्तक़्सिमू बिल्-अज़्लामि ط ज़ालिकुम् फ़िस्कुन् ط अल्यौ-म य-इसल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् दीनिकुम् फ़ ला तख़्शौहुम् वख़्शौनि ط अल्यौ-म अक्मल्तु लकुम् दीनकुम् व अत्मम्तु अ़लैकुम् निअ़्-मती व रज़ीतु लकुमुल्-इस्ला-म दीनन् ط फ मनिज़्तुर-र फ़ी मख़्-म-स़तिन् ग़ै-र मु-त-जानिफ़िल्लि इस्मिन् ل फ़ इन्नल्ला-ह गफ़ूरुर्रहीम (३) यस्अलून-क माज़ा उहिल्-ल लहुम् ط क़ुल् उहिल्-ल लकुमुत्-तय्यिबातु ل व मा अ़ल्लम्तुम् मिनल्-जवारिहि मुकल्लिवी-न तुअ़ल्लिमूनहुन्-न मिम्मा अ़ल्-ल-मकुमुल्लाहु ز फ़ कुलू मिम्मा अम्सक-न अ़लैकुम् वज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहि वत्तकुल्ला-ह ط इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल्हिसाब (४) अल्यौ-म उहिल्-ल लकुमुत्तय्यिबातु ط व तआ़मुल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब हिल्लुल्लकुम् ص व तआ़मुकुम् हिल्लुल्लहुम् ز वल्मुह्सनातु मिनल्-मुअ्मिनाति वल्मुह्सनातु मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् इज़ा आतैतुमूहुन्-न उजूरहुन्-न मुह्सिनी-न गै-र मुसाफ़िही-न व ला मुत्तख़िज़ी अख़्दानिन् ط व मंय्यक्फ़ुर् बिल्ईमानि फ-क़द् हबि-त अ़-मलुहू ز व हु-व फ़िल्-आख़िरति मिनल्-ख़ासिरीन ★ (५)

شنان قوم ان صدوكم عن المسجد الحرام ان تعتدوا وتعاونوا
على البر والتقوى ولا تعاونوا على الاثم والعدوان واتقوا الله
ان الله شديد العقاب ۝ حرمت عليكم الميتة والدم ولحم
الخنزير وما اهل لغير الله به والمنخنقة والموقوذة والمتردية
والنطيحة وما اكل السبع الا ما ذكيتم وما ذبح على النصب
وان تستقسموا بالازلام ذلكم فسق اليوم يئس الذين
كفروا من دينكم فلا تخشوهم واخشون اليوم اكملت لكم
دينكم واتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الاسلام دينا
فمن اضطر في مخمصة غير متجانف لاثم فان الله غفور
رحيم ۝ يسئلونك ماذا احل لهم قل احل لكم الطيبت و
ما علمتم من الجوارح مكلبين تعلمونهن مما علمكم الله فكلوا
مما امسكن عليكم واذكروا اسم الله عليه واتقوا الله ان
الله سريع الحساب ۝ اليوم احل لكم الطيبت وطعام الذين
اوتوا الكتب حل لكم وطعامكم حل لهم والمحصنت من
المؤمنت والمحصنت من الذين اوتوا الكتب من قبلكم اذا
اتيتموهن اجورهن محصنين غير مسفحين ولا متخذي
اخدان ومن يكفر بالايمان فقد حبط عمله وهو في

★रु १/५ आ ५

रहो। कुछ शक नही कि ख़ुदा का अज़ाब सख़्त है (२) तुम पर मरा हुआ जानवर और (बहता) लहू और सुअर का गोश्त और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए और जो जानवर गला घुट कर मर जाए और जो चोट लगकर मर जाए और जो गिरकर मर जाए और जो सीग लग कर मर जाए, ये सब हराम है और वे जानवर भी, जिसको दरिंदे फाड खाए, मगर जिसको तुम (मरने से पहले) ज़िब्ह कर लो और वे जानवर भी, जो थान पर ज़िब्ह किया जाए और यह भी कि पासो[1] से किस्मत मालूम करो। ये सब गुनाह (के काम) है। आज काफिर तुम्हारे दीन मे ना-उम्मीद हो गये है, तो उन से मत डरो और मुझी से डरते रहो (और) आज हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और अपनी नेमते तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया, हा, जो शख़्स भूख मे ना-चार हो जाए, (बशर्ते कि) गुनाह की तरफ मायल (झुकाव) न हो, तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।[2] (३) तुम से पूछते है कि कौन-कौन-सी चीज़े उन के लिए हलाल है, (उन से) कह दो कि सब पाकीज़ा चीज़ें तुम को हलाल है। और वह शिकार भी हलाल है, जो तुम्हारे लिए उन शिकारी जानवरो ने पकडा हो, जिन को तुम ने सधा रखा हो और जिस (तरीके) से ख़ुदा ने तुम्हे (शिकार करना) सिखाया है (उस तरीके से) तुम ने उन को सिखाया हो, तो जो शिकार वे तुम्हारे लिए पकड रखे, उस को खा लिया करो और (शिकारी जानवरो के छोडते वक्त) ख़ुदा का नाम ले लिया करो। और ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (४) आज तुम्हारे लिए सब पाकीजा चीज़े हलाल कर दी गयी और अह्ले किताब का खाना भी तुम को हलाल है और तुम्हारा खाना उन को हलाल है और पाकदामन मोमिन औरते और पाकदामन अह्ले किताब औरते भी (हलाल है), जब कि उन का मह्र दे दो और उन से अिफ्फत (पाकदामनी) रखनी मक्सूद हो, न खुली बद-कारी करनी और न छिपी दोस्ती करनी और जो शख़्स ईमान का मुन्किर हुआ, उस के अमल जाया हो गये और वह आखिरत मे नुक्सान पाने वालो मे होगा। (५) ★

---

१ अरब जाहिलियत मे यह काम करते थे कि तीन पासे होते थे। एक पर लिखा था, यह काम कर, दूसरे पर 'मत कर', तीसरा खाली था, यानी उस पर कुछ नही लिखा होता था। जब वे कोई काम करना चाहते तो पासे डालते। अगर हुक्म निकलता, तो इस काम को करते, अगर इन्कार निकलता तो न करते और अगर खाली निकलता, तो फिर डालते। बुखारी, मुस्लिम मे आया है कि जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब काबे मे दाखिल हुए तो वहा इब्राहीम और इस्माईल अलै० की तस्वीरें पायी। उन के हाथो मे पासे थे। आप ने फरमाया, ख़ुदा इन लोगो को हलाक करे। ये ख़ूब जानते हैं कि इब्राहीम और इस्माईल ने कभी पासा नही फेंका। मुजाहिद कहते हैं कि वे पासे जुआ खेलने के थे, मगर इस मे कलाम है, क्योकि ख़ुदा ने पासो और जुए मे फर्क किया है। पासो को 'अज़लाम' कहा है, जुए को मैसर। हा, यो कहा जा सकता है कि कभी उन को इस्तिखारे मे और कभी जुए मे इस्तेमाल करते थे। ख़ुदा ने इस काम को गुनाह कहा और इस से रोका।

२ रिवायत है कि हातिम का बेटा अदी और ज़ैद बिन खैल आहज़रत सल्ल० के पास आये और कहा, या रसूलल्लाह! हम ऐसे मकान मे है कि वहा कुत्ते शिकार करते हैं। हम उन मे से कुछ को ज़िब्ह करते हैं और कुछ को पाल लेते हैं और कुछ को कुत्ते बर्बाद कर देते हैं। यह शिकार हलाल है या मुर्दार। इस पर अगली आयत उतरी।

या अय्युहल्लजी-न आमनू इज़ा कुम्तुम् इलस्सलाति फ़ग़्सिलू वुजूहकुम् व ऐदि-यकुम् इलल्-मराफ़िक़ि वम्सहू बि रुऊसिकुम् वअर्जु-लकुम् इलल्कअ्-बैनि ᵇ व इन् कुन्तुम् जुनुबन् फत्तह-हरू ᵇ व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम्-मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़-लम् तजिदू मा-अन् फ-त-यम्ममू सअीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बि वुजूहिकुम् व ऐदीकुम् मिन्हु ᵇ मा युरीदुल्लाहु लि यज्-अ-ल अलैकुम् मिन् ह-रजिव्-व लाकिय्युरीदु लि युतह्हि-रकुम् व लि युतिम्-म निअ्-म-तहू अलैकुम् ल-अल्लकुम् तश्कुरून (६) वज्कुरू निअ्-मतल्लाहि अलैकुम् व मीसाक़हुल्लज़ी वास - क़कुम् बिही ᵘ इज़् क़ुल्तुम् समिअ्-ना व अ-तअ्-ना ˣ वत्तक़ुल्ला-ह ᵇ इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बि - ज़ातिस्सुदूर (७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न लिल्लाहि शु-हदा-अ बिल्क़िस्ति ˣ व ला यज्रिमन्नकुम् शनआनु क़ौमिन् अला अल्ला तअ् - दिलू ᵇ इअ् - दिलू قف हु - व अक़्रबु लित्तक़्वा ˣ वत्तक़ुल्ला - ह ᵇ इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ्-मलू-न (८) व-अ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ᵘ लहुम् मग़्फ़ि-र-तुव - व अज्रुन् अ़ज़ीम (९) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि आयातिना उला-इ-क अस्हाबुल्-जहीम (१०) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम् इज़् हम्-म क़ौमुन् अय्यब्सुतू इलैकुम् ऐदियहुम् फ-कफ़्-फ ऐदियहुम् अन्कुम् ᶜ वत्तक़ुल्ला-ह ᵇ व अ-लल्लाहि फल्-य-त-वक्कलिल् - मुअ्मिनून ★ (११)

الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ
فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ
وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ
مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰي سَفَرٍ اَوْ جَاۗءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَاۗىِٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ
النِّسَاۗءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَاۗءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ
وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ۭ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ
يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَ
اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ اِذْ قُلْتُمْ
سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَاۗءَ بِالْقِسْطِ ۡ وَلَا
يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓي اَلَّا تَعْدِلُوْا ۭ اِعْدِلُوْا ۣ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ
اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا

★रु. २/६ आ ६

मोमिनो ! तुम जब नमाज़ पढने का इरादा किया करो, तो मुह और कुहनियो तक हाथ[1] धो लिया करो और सर का मसह कर लिया करो और टखनो तक पाव (धो लिया करो) और अगर नहाने की जरूरत हो तो (नहा कर) पाक हो जाया करो और अगर बीमार हो या सफर मे हो या कोई तुम मे से बैतुल-खला (टट्टी) से हो कर आया हो या तुम औरतो से हम-बिस्तर हुए हो और तुम्हे पानी न मिल सके तो पाक मिट्टी लो और उस से मुह और हाथो का मसह (यानी तयम्मुम) कर लो। खुदा तुम पर किसी तरह की तगी नही करना चाहता, बल्कि यह चाहता है कि तुम्हे पाक करे और अपनी नेमतें तुम पर पूरी करे, ताकि तुम शुक्र करो। (६) और खुदा ने तुम पर जो एहसान किये हैं, उन को याद करो और उस अह्द को भी, जिस का तुम से कौल लिया था, (यानी) जब तुम ने कहा था कि हम ने (खुदा का हुक्म) सुन लिया और कुबूल किया और खुदा से डरो। कुछ शक नही कि खुदा दिलो की बातो (तक) को जानता है। (७) ऐ ईमान वालो ! खुदा के लिए इंसाफ की गवाही देने के लिए खड़े हो जाया करो और लोगो की दुश्मनी तुम को इस बात पर तैयार न करे कि इंसाफ छोड दो। इसाफ किया करो कि यही परहेज़गारी की बात है और खुदा से डरते रहो। कुछ शक नही कि खुदा तुम्हारे तमाम कामो से खबरदार है। (८) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन से खुदा ने वायदा फरमाया है कि उन के लिए बख्शिश और बडा अज्र है। (९) और जिन्हों ने कुफ़ किया और हमारी आयतो को झुठलाया, वे जहन्नमी है। (१०) ऐ ईमान वालो ! खुदा ने जो तुम पर एहसान किया है, उस को याद करो, जब एक जमाअत ने इरादा किया कि तुम पर हाथ उठाएं, तो उस ने उन के हाथ रोक दिए और खुदा से डरते रहो और मोमिनो को खुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए। (११) ★

---

१ कुछ तफ्सीर लिखने वालो ने लिखा है कि इस्लाम के शुरू मे हर नमाज़ के लिए वुज़ू करना वाजिब था, मगर बाद मे वह भी वाजिब न रहा। एक हदीस मे है कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर नमाज़ के लिए वुज़ू किया करते थे, जब फत्हे मक्का का दिन आया तो आप ने वुज़ू कर के दोनो मोज़ो पर मसह किया और एक ही वुज़ू से कई नमाजे पढी। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! आप ने वह काम किया है जो पहले कभी नही करते थे। आप ने फरमाया, मैं ने यह काम जान-बूझ कर किया है।

★रु. २/६ आ ६

व ल-कद् अ-ख़-ज़ल्लाहु मीसा-क बनी इस्रा-ई-ल व ब-अ़स्ना मिन्हुमुस्नै-अ़-श-र नक़ीबन् व क़ालल्लाहु इन्नी म-अ़कुम् लइन् अ-क़म्तुमुस्सला-त व आतैतुमुज़्-ज़का-त व आमन्तुम् बि रुसुली व अ़ज़्ज़र्तुमूहुम् व अक़्रज़्तुमुल्ला-ह क़र्ज़न् ह़-स-नल्-ल उकफ़्फ़िरन्-न अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व ल-उद्ख़िलन्नकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु फ़-मन् क-फ़-र बअ़्-द ज़ालि-क मिन्कुम् फ़-क़द् ज़ल्-ल सवा-अस्सबील (१२) फ़ बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् लअ़न्नाहुम् व ज-अ़ल्ना क़ुलूबहुम् क़ासिय-तन् युहर्रिफ़ूनल्कलि-म अ़म्मवाज़िअ़िही व नसू ह़ज़्ज़म्मिम्मा ज़ुक्किरू बिही व ला तज़ालु तत्तलिअ़ु अ़ला ख़ा-इनतिम्-मिन्हुम् इल्ला क़लीलम्-मिन्हुम् फ़अ़्-फ़ु अ़न्हुम् वस्फ़ह़् इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुह़्सिनी-न् (१३) व मिनल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा अ-ख़ज़्ना मीसाक़हुम् फ़-नसू ह़ज़्ज़म्मिम्मा ज़ुक्किरू बिही फ़ अग़्रैना बैनहुमुल्-अ़दाव-त वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल् - क़ियामति व सौ-फ़ युनब्बिउ-हुमुल्लाहु बिमा कानू यस्नअ़ून (१४) या अह़्लल्-किताबि क़द् जा-अकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् कसीरम्मिम्मा कुन्तुम् तुख़्फ़ू-न मिनल्किताबि व यअ़्-फ़ू अ़न् कसीरिन् क़द् जा-अकुम् मिनल्लाहि नूरुंव्-व किताबुम्-मुबीन (१५) यह्दी बिहिल्लाहु मनित्त-ब-अ रिज़्वानहू सुबुलस्सलामि व युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि बि इज़्निही व यह्दीहिम् इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (१६) ल-क़द् क-फ़-रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्मसीहुब्नु मर्य-म क़ुल् फ़ मय्यम्लिकु मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द अंय्युह्लिकल्-मसीहब्-न मर्य-म व उम्महू व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा यख़्लुक़ु मा यशा - उ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (१७)

مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا ۖ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ ۖ لَئِنْ أَقَمْتُمُ
الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَ
أَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَ
جَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ ۙ وَنَسُوا
حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَىٰ خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا
قَلِيلًا مِنْهُمْ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝
وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا
ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ
وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ
جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ ۝
يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُمْ مِنَ
الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ لَقَدْ
كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ
مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَ

और खुदा ने बनी इस्राईल से इकरार लिया और उन मे हम ने बारह सरदार मुकर्रर किये फिर खुदा ने फरमाया कि मैं तुम्हारे साथ हू। अगर तुम नमाज पढते और जकात देते रहोगे और पैगम्बरो पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और खुदा को कर्ज़ हसना दोगे, तो मैं-तुम से तुम्हारे गुनाह दूर कर दूगा और तुम को बहिश्तो मे दाखिल करूगा, जिन के नीचे नहरे बह रही है, फिर जिस ने इस के बाद तुम मे से कुफ़ किया, वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१२) तो उन लोगो के अह्द तोड देने की वजह से हम ने उन पर लानत की, और उन के दिलो को सख्त कर दिया। ये लोग कलिमात (किताब) को अपनी जगहो से बदल देते है और जिन बातो की उन को नसीहत की गयी थी, उन का भी एक हिस्सा भुला बैठे और थोड़े आदमियो के सिवा हमेशा उन की (एक न एक) खियानत की खबर पाते रहते हो, तो उन की खताएं माफ कर दो और (उन से) दर-गुज़र करो कि खुदा एहसान करने वालो को दोस्त रखता है। (१३) और जो लोग (अपने को) कहते है कि हम नसारा है, हम ने उन से भी अह्द लिया था, मगर उन्हो ने भी उस नसीहत का, जो उन को की गयी थी, एक हिस्सा भुला दिया, तो हम ने उन के आपस मे कियामत तक के लिए दुश्मनी और कीना डाल दिया और जो कुछ वे करते रहे, खुदा बहुत जल्द उन को उस से आगाह करेगा। (१४) ऐ अह्ले किताब! तुम्हारे पास हमारे (आखिरी) पैगम्बर आ गये हैं कि जो कुछ तुम (खुदा की) किताब मे छिपाते थे, वह इस मे से बहुत कुछ तुम्हे खोल-खोल कर बता देते है और तुम्हारे बहुत-से कुसूर माफ कर देते है। बेशक तुम्हारे पास खुदा की तरफ से नूर और रोशन किताब आ चुकी है, (१५) जिस से खुदा अपनी रिज़ा पर चलने वालों को निजात के रास्ते दिखाता है और अपने हुक्म से अंधेरे मे से निकाल कर रोशनी की तरफ ले जाता और उनको सीधे रास्ते पर चलाता है। (१६) जो लोग इस बात के कायल है कि ईसा बिन मरयम खुदा है, वे बेशक काफिर है। (उन से) कह दो कि अगर खुदा ईसा बिन मरयम और उन की वालिदा को और जितने लोग जमीन मे है, सब को हलाक करना चाहे, तो उसके आगे किस की पेश चल सकती है? और आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन दोनो मे है, सब पर खुदा ही की बादशाही है। वह जो चाहता है पैदा करता है और खुदा

व कालतिल्-यहूदु वन्नसारा नह्नु अब्ना-उल्लाहि व अहिब्बा-उहू ط कुल् फ़-लि-म युअज्जिबुकुम् बि जुनूबिकुम् ط बल् अन्तुम् बशरुम्मिम्मन् ख-ल-क ط यग्फिरु लि मय्यशा-उ व युअज्जिबु मंय्यशा-उ ط व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा ز व इलैहिल्-मसीर (१८) या अह्लल् - किताबि कद् जा-अकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् अला फत्रतिम्-मिनर्रुसुलि अन् तकूलू मा जा-अना मिम्बशीरिव्-व ला नजीरिन् ز फ-कद् जा - अकुम् बशीरुव्-व नजीरुन् ط वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (१९) व इज् क़ा - ल मूसा लि कौमिही याकौमिज्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम् इज् ज-अ-ल फीकुम् अम्बिया-अ व ज - अ - लकुम् मुलूकंव् ق-व आताकुम् मालम् युअ्ति अ-ह-दम्मिनल्-आलमीन (२०) या कौमिद्खुलुल्-अर्जल्-मुकद्-द-स-तल्-लती क-त-बल्लाहु लकुम् व ला तर्तद्दू अला अद्बारिकुम् फ-तन्क़लिबू खासिरीन (२१) कालू या मूसा इन-न फीहा कौमन् जब्बारी-न ق व इन्ना लन् नद्खुलहा हत्ता यख्रुजू मिन्हा ج फ इय्यख्रुजू मिन्हा फ इन्ना दाखिलून (२२) का-ल रजुलानि मिनल्लज़ी-न यखाफू-न अन-अ-मल्लाहु अलैहिमद्खुलू अलैहिमुल्बा-ब ج फ इज़ा द-खल्तुमूहु फ़-इन्नकुम् गालिबू - न ج व अ - लल्लाहि फ - त-वक्कलू इन् कुन्तुम् - मुअ्मिनीन (२३) कालू या मूसा इन्ना लन्नद्खुलहा अ - ब - दम् - मा दामू फ़ीहा फज्हब् अन्-त व रब्बु-क फ कातिला इन्ना-हाहुना काअिदून (२४)

مَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۚ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَ
قَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ۚ قُلْ فَلِمَ
يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۫
وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ
عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْ بَشِيْرٍ وَّلَا
نَذِيْرٍ ۫ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ
اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ
كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝
قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى
يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ۝ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ
الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا
دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ

★रु ३/७ आ ८

हर चीज पर कुदरत रखता है। (१७) और यहूद और नसारा कहते है कि हम खुदा के बेटे और उस के प्यारे है। कहो कि फिर वह तुम्हारी बद-आमालियो की वजह से तुम्हे अज़ाब क्यो देता है, (नही,) बल्कि तुम उस की मख्लूक़ात मे (दूसरो की तरह के) इसान हो। वह जिसे चाहे बख्शे और जिसे चाहे अजाब दे और आसमान और जमीन और जो कुछ इन दोनो मे है, सब पर खुदा ही की हुकूमत है और (सब को) उसी की तरफ लौट कर जाना है। (१८) ऐ अह्ले किताब ! (पैगम्बरो के आने का सिलसिला जो एक अर्से तक कटा-सा रहा, तो) अब तुम्हारे पास हमारे पैगम्बर आ गये है, जो तुम से (हमारे हुक्म) बयान करते हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई खुशखबरी या डर सुनाने वाला नही आया, सो (अब) तुम्हारे पास खुशखबरी और डर सुनाने वाले आ गये है और खुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (१९)★

और जब मूसा ने अपनी कौम के कहा कि भाइयो ! तुम पर खुदा ने जो एहसान किये हैं, उन को याद करो कि उस ने तुम मे पैगम्बर पैदा किये और तुम्हे बादशाह बनाया और तुम को इतना कुछ इनायत किया कि दुनिया वालो मे से किसी को नही दिया। (२०) तो भाइयो ! तुम अर्जे मुकद्दस (पाक धरती, यानी शाम मुल्क) मे, जिसे खुदा ने तुम्हारे लिए लिख रखा है, चल दाखिल हो और (देखना, मुकाबले के वक्त) पीठ न फेर देना, वरना नुक्सान मे पड जाओगे। (२१) वे कहने लगे कि मूसा ! वहां तो बडे ज़बरदस्त लोग (रहते) है और जब तक वह इस धरती से निकल न जाए, हम वहा जा नही सकते, हां, अगर वे वहा से निकल जाएं, तो हम जा दाखिल होंगे। (२२) जो लोग (खुदा से) डरते थे, उन मे से दो शख्स, जिन पर खुदा की इनायत थी, कहने लगे कि इन लोगो पर दरवाजे के रास्ते से हमले कर दो। जब तुम दरवाज़े मे दाखिल हो गये तो फत्ह तुम्हारी है और खुदा ही पर भरोसा रखो, बशर्ते कि ईमान वाले हो। (२३) वे बोले कि मूसा ! जब तक वे लोग वहा है, हम कभी वहा नहीं जा सकते। (अगर लडना ही ज़रूरी है,) तो तुम और तुम्हारा

★रु ३/७ आ ८

का-ल रब्बि इन्नी ला अम्लिकु इल्ला नफ़्सी व अख़ी फ़फ़्रुक़् बैनना व बैनल्-क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन (२५) क़ा-ल फ़ इन्नहा मुहर्रमतुन् अलैहिम् अर्बओ-न स-न-तन् ج यतीहू-न फ़िल्अर्ज़ि ط फ़ ला तअ् - स अ़लल्-क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन★(२६) वत्लु अ़लैहिम् न-ब-अब्नै - आद - म बिल्हक़्क़ि ▨ इज् क़र्रबा क़ुर्बानन् फ़तुक़ुब्बि-ल मिन् अ-हदिहिमा व लम् युत-क़ब्बल् मिनल् - आख़रि ط का-ल ल-अक़्तुलन्न-क ط क़ा - ल इन्नमा य - त-क़ब्बलुल्लाहु मिनल्मुत्तक़ीन ● (२७) लइम्-ब-सत्-त इलय्-य य-द-क लि तक़्तुलनी मा अना बि बासितिय्यदि-य इलै-क लि अक़्तु-ल-क ج इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह रब्बल्-आलमीन (२८) इन्नी उरीदु अन् तबू-अ बि इस्मी व इस्मि-क फ़-तकू-न मिन् अस्हाबिन्नारि ج व ज़ालि-क जज़ा - उज़्-ज़ालिमीन ج (२९) फ़-तव्व-अ़त् लहू नफ़्सुहू क़त्-ल अख़ीहि फ़-क-त-लहू फ अस्ब-ह़ मिनल्ख़ासिरीन (३०) फ़-ब-अ-सल्लाहु ग़ुराबय्यब्हसु फ़िल्अर्ज़ि लि युरियहू कै-फ युवारी सौ-अ-त अख़ीहि ط का-ल यावैलता अ अजज्तु अन् अकू-न मिस्-ल हाज़ल्ग़ुराबि फ़ उवारि-य सौ-अ-त अख़ी ج फ-अस् - ब - ह मिनन्नादिमीन ج (३१) मिन् अज्लि ज़ालि - क ج ▨ क-तब्ना अ़ला बनी इस्राई-ल अन्नहू मन् क-त-ल नफ़्सम्-बिग़ैरि नफ़्सिन् औ फ़सादिन् फ़िल्अर्ज़ि फ क-अन्नमा क़-त-लन्ना-स जमीअ़न् ط व मन् अह्याहा फ़ क - अन्नमा अह्यन्ना - स जमीअ़न् ط व ल-क़द् जा-अत्हुम् रुसुलुना बिल्बय्यिनाति ز सुम्-म इन्-न कसीरम्-मिन्हुम् बअ्-द ज़ालि - क फ़िल्अर्ज़ि ल मुस्रिफ़ून (३२) इन्नमा जज़ा-उल्लज़ी-न युहारिबूनल्ला-ह व रसूलहू व यस्औ-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-सादन् अंय्युक़त्तलू औ युसल्लबू औ तुक़त्त-अ ऐदीहिम् व अर् - जुलुहुम् मिन् ख़िलाफ़िन् औ युन्फ़ौ मिनल्अर्ज़ि ط ज़ालि - क लहुम् ख़िज़्युन् फ़िद्दुन्या व लहुम् फ़िल्आख़िरति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम ﻻ (३३)

المآئدة ٥ — ٨٩ — لا يحب الله ٦

فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِيْ
وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝ قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ
عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا
فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ۭ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ۭ
قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ
لِتَقْتُلَنِيْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْۗاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ
النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ
فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي
الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ۭ قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى اَعَجَزْتُ
اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ اَخِيْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ
النّٰدِمِيْنَ ۝ مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚ كَتَبْنَا عَلٰي بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اَنَّهٗ
مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ
جَمِيْعًا ۭ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ وَلَقَدْ جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُنَا
بِالْبَيِّنٰتِ ۡ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ۝ اِنَّمَا
جَزٰۗؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ

منزل

★रु ४/८ आ ७ ▨ व. मंज़िल ● नि· १/२, ∴ मु· अ़ि मु ता ख ५ ▨ व न वी स·

खुदा जाओ और लड़ो, हम यहा बैठे रहेगे। (२४) मूसा ने (खुदा से) इल्तिजा की कि परवर्-दिगार ! मैं अपने और अपने भाई के सिवा और किसी पर अख्तियार नही रखता, तो हम मे और इन ना-फरमान लोगो मे जुदाई कर दे। (२५) खुदा ने फरमाया कि वह मुल्क उन पर चालीस बरस तक के लिए हराम कर दिया गया (कि वहा जाने न पाएगे और जगल की) जमीन मे परेशान फिरते रहेगे, तो उन ना-फरमान लोगो के हाल पर अफसोस न करो (२६) और (ऐ मुहम्मद) उन को आदम के दो बेटो (हाबील और काबील) के हालात (जो बिल्कुल सच्चे हैं) पढ कर सुनादो कि जब उन दोनो ने (खुदा की जनाब मे) कुछ नियाजे चढायी, तो एक की नियाज़ तो कुबूल हो गयी और दूसरे की कुबूल न हुई, (तब काबील हाबील से) कहने लगा कि मैं तुझे कत्ल कर दूगा। उस ने कहा कि खुदा परहेज़गारी ही की (नियाज) कुबूल फरमाया करता है। (२७)

और अगर तू मुझे कत्ल करने के लिए मुझ पर हाथ चलाएगा, तो मैं तुझ को कत्ल करने के लिए तुझ पर हाथ नही चलाऊगा, मुझे तो अल्लाह रव्वुल आलमीन से डर लगता है। (२८) मैं चाहता हू कि तू मेरे गुनाह मे भी पकडा जाए और अपने गुनाह मे भी, फिर दोज़ख वालो मे से हो। और जालिमो की यही सजा है। (२९) मगर उस के नफ्स ने उस को भाई के कत्ल ही पर उभारा, तो उस ने उसे कत्ल कर दिया और घाटा उठाने वालो मे हो गया।[1] (३०) अब खुदा ने एक कव्वा भेजा, जो जमीन कुरेदने लगा, ताकि उसे दिखाए कि अपने भाई की लाश को कैसे छिपाये। कहने लगा, ऐ हे ! मुझ से इतना भी न हो सका कि इस कव्वे के बराबर होता कि अपने भाई की लाश को छिपा देता। फिर वह शर्मिन्दा हुआ। (३१) इस (कत्ल) की वजह से हम ने बनी इस्राईल पर यह हुक्म नाजिल किया कि जो शख्स किसी को (ना-हक) कत्ल करेगा (यानी) बगैर इस के कि जान का बदला जान लिया जाए या मुल्क मे खराबी पैदा करने की सजा दी जाए, उसने गोया तमाम लोगो को कत्ल किया और जो उस की जिदगी की वजह बना, तो गोया तमाम लोगो की जिंदगी की वजह बना और उन लोगो के पास हमारे पैगम्बर रोशन दलीले ला चुके है। फिर इस के बाद भी इन मे बहुत-से लोग मुल्क मे एतदाल की हद से निकल जाते है। (३२) जो लोग खुदा और उस के रसूल से लडाई करे और मुल्क मे फसाद करने को दौडते फिरे, उन की यह सजा है कि कत्ल कर दिए जाए या सूली चढ़ा दिये जाएं या उन के एक-एक तरफ के हाथ और एक-एक तरफ के पांव काट दिए जाए। यह तो दुनिया मे उन की रुसवाई है और आखिरत मे उन के लिए बडा (भारी) अज़ाब

---

१ हज़रत आदम के जिन दो वेटो का यह किस्सा है, उन का नाम हावील और कावील था। यह वात मशहूर है कि हजरत हव्वा के पेट से दो जुडवा वच्चे पैदा होते थे, एक लडका, एक लडकी। चूकि ज़रूरत समझी जाती थी, इस लिए एक पेट के लडके से दूसरे पेट की लडकी को और इस पेट की लडकी को उस पेट के लडके से व्याह देते थे। इत्तिफाक यह हुआ कि कावील के साथ जो लडकी पैदा हुई, वह वहुत खूबसूरत थी और हावील के साथ जो पैदा हुई, वह वदसूरत थी। तो कावील ने चाहा कि उस की वहन का निकाह हावील से न हो, बल्कि खुद उसी से हो। आदम अलैहिस्सलाम ने कहा कि तुम दोनो नियाज़ करो, जिस की नियाज़ कुबूल हो, वह उस को मिले। हावील ने नियाज़ मे मोटी-ताजी वकरी दी और वह कुवूल हुई और कावील ने अनाज की वाल दी, वह भी निकम्मी और खराव, वह कुवूल न हुई। उन दिनो नियाज़ के कुवूल होने की यह निशानी थी कि जो कुबूल होती उस को आग आसमान से उतर कर जला जाती। हावील की नियाज़ को आग जला गयी और कावील की

(शेष पृष्ठ १७७ पर)

इल्लल्लजी-न ताबू मिन् कब्लि अन् तक्दिरू अलैहिम् ϵ फअ्-लमू अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ✱ (३४) या अय्युहल्लजी-न आमनुत्तकुल्ला-ह वब्तग़ू इलैहिल्-वसी-ल-त व जाहिदू फ़ी सबीलिही ल-अल्लकुम् तुफ़्लिहून (३५) इन्नल्लजी-न क-फ़रू लौ अन्-न लहुम् मा फिल्अर्ज़ि जमीअव्-व मिस्लहू म-अहू लि यफ़्तदू बिही मिन् अ़ज़ाबि यौमिल्-क़ियामति मा तुक़ुब्बि-ल मिन्हुम् ϵ व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (३६) युरीदू-न अय्यख्रुजू मिनन्नारि व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिन्हा ॅ व लहुम् अ़ज़ाबुम्मुक़ीम (३७) वस्सारिकु वस्सारिकतु फ़क्तअू ऐदियहुमा जज़ा-अम्-बिमा क-सबा नकालम्-मिनल्लाहि ॅ वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (३८) फ-मन् ता-ब मिम्बअ्-दि ज़ुल्मिही व अस्-ल-ह फ़-इन्नल्ला-ह यतूबु अलैहि ॅ इन्नल्ला-ह गफ़ूरुर्रहीम (३९) अ-लम् तअ्-लम् अनल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ॅ युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ व यग्फिरु लि मंय्यशा-उ ॅ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् कदीर (४०) या अय्युहर्रसूलु ला यह्ज़ुन्कल्लजी-न युसारिअू-न फिल्कुफ़्रि मिनल्लजी-न कालू आमन्ना बि अफ़्वाहिहिम् व लम् तुअ्मिन् कुलूबुहुम् ϵ व मिनल्लजी-न हादू ϵ सम्माअू-न लिल्कज़िबि सम्माअू-न लि कौमिन् आख़री-न ॥ लम् यअ्तू-क ॅ युहर्रिफूनल्-कलि-म मिम्बअ्-दि मवाज़िअ़िही ϵ यकूलू-न इन् ऊतीतुम् हाज़ा फ ख़ुज़ूहु व इल्लम् तुअ्तौहु फह्ज़रू ॅ व मंय्युरिदिल्लाहु फित्-न-तहू फ़ लन् तम्लि-क लहू मिनल्लाहि शैअन् ॅ उलाइ-कल्लजी-न लम् युरिदिल्लाहु अंय्युतह्हि-र कुलूबहुम् ॅ लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्-व लहुम् फिल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (४१)

يقتلوا او يصلبوا او تقطع ايديهم وارجلهم من خلاف او ينفوا
من الارض ذلك لهم خزي في الدنيا ولهم في الاخرة عذاب
عظيم ۝ الا الذين تابوا من قبل ان تقدروا عليهم فاعلموا ان
الله غفور رحيم ۝ يايها الذين امنوا اتقوا الله وابتغوا اليه الوسيلة و
جاهدوا في سبيله لعلكم تفلحون ۝ ان الذين كفروا
لو ان لهم ما في الارض جميعا ومثله معه ليفتدوا به
من عذاب يوم القيمة ما تقبل منهم ولهم عذاب اليم ۝
يريدون ان يخرجوا من النار وما هم بخرجين منها ولهم
عذاب مقيم ۝ والسارق والسارقة فاقطعوا ايديهما جزاء
بما كسبا نكالا من الله والله عزيز حكيم ۝ فمن تاب من
بعد ظلمه واصلح فان الله يتوب عليه ان الله غفور رحيم ۝
الم تعلم ان الله له ملك السموت والارض يعذب من
يشاء ويغفر لمن يشاء والله على كل شيء قدير ۝ يايها
الرسول لا يحزنك الذين يسارعون في الكفر من الذين قالوا
امنا بافواههم ولم تؤمن قلوبهم ومن الذين هادوا
سمعون للكذب سمعون لقوم اخرين لم ياتوك يحرفون
الكلم من بعد مواضعه يقولون ان اوتيتم هذا فخذوه و

★रु ५/६ आ ८, ∴ मु. अ़ि मु. ता क ३

(तैयार) हैं। (३३) हां, जिन लोगो ने इस से पहले कि तुम्हारे काबू आ जाएं, तौबा कर ली, तो जान रखो कि ख़ुदा बख़्शने वाला, मेहरबान है। (३४)★

ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा से डरते रहो और उसका क़ुर्ब हासिल करने का ज़रिया खोजते रहो और उस के रास्ते मे जिहाद करो ताकि कामियाबी पाओ। (३५) जो लोग काफिर है, अगर उन के पास धरती (के तमाम ख़ज़ाने और उस) का सब माल व मताअ हो, और उस के साथ उतना ही और भी हो, ताकि कियामत के दिन अज़ाब से (छुटकारा पाने का) बदला दे, तो उन से कुबूल नही किया जाएगा और उन को दर्द देने वाला अज़ाब होगा। (३६) (पूरी तरह) चाहेगे कि आग से निकल जाएं, मगर उस से नही निकल सकेंगे और उन के लिए हमेशा का अज़ाब है। (३७) और जो चोरी करे, मर्द हो या औरत, उन के हाथ काट डालो। यह उन के फेलो की सज़ा और ख़ुदा की तरफ से सीख है और ख़ुदा ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (३८) और जो शख़्स गुनाह के बाद तौबा करे और भला बन जाये तो ख़ुदा उस को माफ कर देगा। कुछ शक नही कि ख़ुदा बख़्शने वाला, मेहरबान है। (३९) क्या तुम को मालूम नही कि आसमानो और ज़मीन मे ख़ुदा ही की सल्तनत है ? जिस को चाहे अज़ाब करे और जिसे चाहे बख़्श दे और ख़ुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (४०) ऐ पैगम्बर ! जो लोग कुफ़ मे जल्दी करते है, (कुछ तो) उन मे से (है), जो मुह से कहते है कि हम मोमिन है और (कुछ) उन मे से हैं जो यहूदी है, उन की वजह से गमनाक न होना। ये गलत बाते बनाने के लिए जासूसी करते फिरते हैं और ऐसे लोग लोगो (के बहकाने) के लिए जासूस बने हैं, जो अभी तुम्हारे पास नही आए। (सही) बातो को उन की जगहो (पर साबित होने) के बाद बदल देते है और (लोगो से) कहते हैं कि अगर तुम को यही (हुक्म) मिले तो उमे कुबूल कर लेना और अगर यह न मिले तो उस मे एहतराज़ करना और अगर किसी को ख़ुदा गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तुम कुछ भी ख़ुदा से (हिदायत का) अख़्तियार नही रखते। ये वह लोग है, जिन के दिलो को ख़ुदा ने पाक करना नही चाहा। उन के लिए दुनिया मे भी ज़िल्लत है और आख़िरत मे भी बड़ा अज़ाब है।[1] (४१) (ये) झूठी बातें बनाने के लिए जासूसी करने वाले और

(पृष्ठ १७५ का शेष)

उसी तरह पडी रही। तब काबील को भाई से जलन पैदा हो गई और उस से कहने लगा कि मैं तुझ को कत्ल कर के रहूगा। चुनाचे उस ने उस को कत्ल कर ही दिया। एक जमाअत का यह ख्याल है कि नियाज़ का किया जाना औरत की वजह से न था, कुरआन के जाहिर लफ्ज़ो से भी यही पाया जाता है कि नियाज़ की वजह औरत न थी, बल्कि दोनो भाइयो ने नियाज़ की थी। एक की कुबूल हुई और दूसरे की ना-मक्बूल हुई, अल्लाह ही बेहतर जाने।

१ यह आयत यहूदियो के हक मे नाज़िल हुई है। तौरात मे हुक्म था कि जो बद-कारी करे, उस को सगसार कर दिया जाए, मगर उन्हो ने इस हुक्म को बदल कर यह अमल जारी किया कि बद-फेली करने वाले को कोडे मारते और गधे पर सवारी करा कर रुसवा करते। जनाब सरवरे कायनात सल्ल० के वक्त मे कई वाकिआत हुए कि वे उन को फैसले के लिए आप के पास लाए। हिजरत के बाद यह वाकिआ हुआ कि यहूदी ने एक यहूदिन से मुह काला किया। यहूदियो ने आपस मे कहा कि चलो इस का फैसला हज़रत सल्ल० से करायें। अगर कोडे लगाने और मुह काला करने का हुक्म दें, तो मान लेना चाहिए, नही तो नही। इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि

(शेष १७६ पर)

★रु ५/६ आ ८ ∴ मु अ़ि मु ता क ३

सम्माअू-न लिल्कज़िबि अक्कालू-न लिस्सुह्ति ط फ़इन् जाऊ-क फ़ह्कुम् बैनहुम् औ अअ्रिज़् अन्हुम् ج व इन् तुअ्-रिज् अन्हुम् फ़ लय्यज़ुर्रू-क शैअन् ط व इन् ह-कम्-त फ़ह्कुम् बैनहुम् बिल्किस्ति ط इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन (४२) व कै - फ़ युहक्किमू-न - क व अिन्दहुमुत्तौरातु फ़ीहा हुक्मुल्लाहि सुम्-म य-त-वल्लौ-न मिम्बअ्-दि ज़ालि-क ط व मा उला-इ-क बिल्-मुअ्मिनीन ★ (४३) इन्ना अन्जल्नत्तौरा - त फ़ीहा हुदव् - व नूरुन् ج यह्कुमु बिहन्नबिय्यूनल्लज़ी - न अस्लमू लिल्लज़ी-न हादू वर्रब्बानिय्यू-न वल्-अह्बारु बि मस्तुह्फ़िज़ू मिन् किताबिल्लाहि व कानू अलैहि शुहदा-अ ج फ़-ला तख़्शवुन्ना-स वख़्शौनि व ला तश्तरू बि आयाती स-म-नन् क़लीलन् ط व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज-लल्लाहु फ़ उला-इ-क हुमुल्काफ़िरून (४४) व क-तब्ना अलैहिम् फ़ीहा अन्नन्नफ़् - स बिन्नफ़्सि لا वल्अै-न बिल्अैनि वल्-अन्-फ़ बिल्-अन्फ़ि वल्-उज़ु-न बिल्-उज़ुनि वस्सिन्-न बिस्सिन्नि لا वल्जुरू-ह् क़िसासुन् ط फ़ मन् त-सद्-द-क़ बिही फ़हु-व कफ़्फ़ारतुल्लहू ط व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज-लल्लाहु फ़ उला-इ-क हुमुज़्ज़ालिमून (४५) व क़फ़्फ़ैना अला आसारिहिम् बि ओसब्नि मर्य-म मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति ص व आतैनाहुल्-इन्जी - ल फ़ीहि हुदंव् - व नूरुंव لا- व मुसद्दिक़ल्लिमा बै - न यदैहि मिनत्तौराति व हुदव् - व मौअिज़तुल् - लिल्मुत्तक़ीन ط (४६)

لازم لله ۔ ١١ ۔ للنبي

إِن لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا ۚ وَمَن يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَن تَمْلِكَ
لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَن يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۚ
لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ أَكَّالُونَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِن جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ
أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِن تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَن يَضُرُّوكَ شَيْئًا ۖ وَ
إِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝
وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِندَهُمُ التَّوْرَاةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ
مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّا أَنزَلْنَا التَّوْرَاةَ
فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا
لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِن
كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَ
اخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم
بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ۝ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ
فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنفَ بِالْأَنفِ
وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَن
تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ

مدرك

★रु ६/१० आ ६

(रिश्वत का) हराम माल खाने वाले हैं। अगर ये तुम्हारे पास (कोई मुकदमा फ़ैसला कराने को) आएं, तो तुम उन मे फ़ैसला कर देना या ऐराज़ करना और अगर उन से ऐराज़ करोगे, तो वे तुम्हारा कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे और अगर फ़ैसला करना चाहो तो इसाफ का फ़ैसला करना कि ख़ुदा इसाफ करने वालो को दोस्त रखता है। (४२) और ये तुम से (अपने मुकदमे) किस तरह फ़ैसला करायेंगे, जब कि ख़ुद उन के पास तौरात (मौजूद) है, जिस मे ख़ुदा का हुक्म (लिखा हुआ) है। (ये उसे जानते है,) फिर इस के बाद उस से फिर जाते हैं। और ये लोग ईमान ही नही रखते। (४३) ★

बेशक हमी ने तौरात नाज़िल फरमायी, जिस मे हिदायत और रोशनी है। उसी के मुताबिक नबी, जो (ख़ुदा के) फरमांबरदार थे, यहूदियो को हुक्म देते रहे हैं, और मशाइख और उलेमा भी, क्यो कि वे ख़ुदा की किताब के निगहबान मुकर्रर किये गये थे और इस पर गवाह थे (यानी अल्लाह के हुक्म पर यकीन रखते थे), तो तुम लोगो से मत डरना और मुझी से डरते रहना और मेरी आयतो के बदले थोडी-सी कीमत न लेना और जो ख़ुदा के नाज़िल फरमाए हुए हुक्मो के मुताबिक हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग काफ़िर है। (४४) और हम ने उन लोगो के लिए तौरात मे यह हुक्म लिख दिया था कि जान के बदले जान और आख के बदले आख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दात के बदले दांत और सब ज़ख्मो का इसी तरह बदला है, लेकिन जो शख्स बदला माफ कर दे, वह उस के लिए कफ्फारा होगा और जो ख़ुदा के नाज़िल फरमाये हुए हुक्मो के मुताबिक हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग बे-इसाफ है। (४५) और इन पैगम्बरो के बाद उन्ही के कदमो पर हम ने ईसा बिन मरयम को भेजा, जो अपने से पहले की किताब तौरात की तस्दीक करते थे और उन को इंजील इनायत की, जिस मे हिदायत और नूर है और तौरात की जो इस से पहली (किताब) है, तस्दीक करती है और परहेजगारो को राह बताती और नसीहत करती है। (४६)

(पृष्ठ १७७ का शेष)
यहूद हज़रत के पास आए और बयान किया कि इन मे से एक मर्द ने औरत से बदकारी की है। इस बारे मे क्या इर्शाद है ? आप ने फरमाया कि तौरात मे क्या लिखा है ? उन्हो ने कहा कि हम तो कोडे मारते और रुसवा करते है। आप ने फरमाया कि तौरात लाओ। तौरात लायी गयी और एक शख्स पढने लगा। जब इस आयत पर गुज़र हुआ, जिस मे बद-कारी की सज़ा रज्म यानी सगसार करना लिखा था, तो उस पर हाथ रख दिया और आगे-पीछे की आयतें पढ दी। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने, जो तौरात के बडे माहिर थे, अर्ज़ किया कि आप हुक्म दें कि यह हाथ उठाए। हाथ उठाया तो उस के नीचे रज्म की आयत थी। हज़रत ने रज्म का हुक्म फरमा दिया और दोनो सगसार कर दिए गये। इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि उन के सगसार के वक्त मैं भी मौजूद था। मैं ने मर्द को देखा कि औरत पर झुक-झुक जाता था और उस को पत्थर से बचाता था।

★रु ६/१० आ ६

वल्-यह्कुम् अह्लुल्-इन्जीलि बिमा अन्ज-लल्लाहु फ़ीहि ط व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़-लल्लाहु फ उला-इ-क हुमुल्-फ़ासिकून (४७) व

अन्जल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनल्-

किताबि व मुहैमिनन् अलैहि फ़ह्कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज-लल्लाहु व ला तत्तबिअ् अह्वा-अहुम् अम्मा जा-अ-क

मिनल् - हक़्क़ि ط लि कुल्लिन् ज - अल्ना मिन्कुम् शिर्-अ-तव्-व मिन्हाजन् ط व लौ

शा-अल्लाहु ल ज-अ-लकुम् उम्मतव्वाहिदतव्-व लाकिल्-लि यब्लु-व-कुम् फ़ी मा आताकुम्

फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति ط इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम्

जमीअ़न् फ़ युनब्बि-उकुम् बिमा कुन्तुम्

फ़ीहि तख़्तलिफ़ून ४ (४८) व अनिह्कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज-लल्लाहु

व ला तत्तबिअ् अह्वा-अहुम् वह्ज़र्हुम्

अंय्यफ़्तिनू-क अम्बअ्-ज़ि मा अन्ज-लल्लाहु

इलै-क ط फ़-इन् तवल्लौ फ़अ्-लम् अन्नमा युरीदुल्लाहु अय्युसीबहुम् बि बअ्-ज़ि

ज़ुनूबिहिम् ط व इन्-न कसीरम्-मिनन्नासि ल-फ़ासिकून (४९) अ-फ़-हुक्मल्-

जाहिलिय्यति यब्ग़ू-न ط व मन् अह्सनु मिनल्लाहि हुक्मल्लिक़ौमिंय्यूक़िनून ★ (५०) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-यहू-द वन्नसारा

औलिया-अ ▨ बअ्-ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्-ज़िन् ط व मय्य-त-वल्लहुम् मिन्कुम्-

फ़ इन्नहू मिन्हुम् ط इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमज्ज़ालिमीन (५१)

لا يحب الله ٦ — ٩٢ — المائدة ٥

مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ
فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ
هُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَا
اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَا اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلٍّ جَعَلْنَا
مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ
لٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ
جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ
بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْ
بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ
يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾
اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ
يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى
اَوْلِيَآءَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهُ مِنْهُمْ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ

★रु ७/११ आ ७ ▨ व लाज़िम , व गु , व म

और अह्ले इंजील को चाहिए कि जो हुक्म खुदा ने उस मे नाज़िल फरमाये हैं, उस के मुताबिक हुक्म दिया करें और जो खुदा के नाजिल किये हुए हुक्मो के मुताबिक हुक्म न देगा, तो ऐसे लोग ना-फरमान है। (४७) और (ऐ पैगम्बर !) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है, जो अपने से पहली किताबो की तस्दीक करती है और उन (सब) पर शामिल है, तो जो हुक्म खुदा ने नाज़िल फरमाया है, उस के मुताबिक उन का फैसला करना और हक, जो तुम्हारे पास आ चुका है, उस को छोड़ कर उन की ख्वाहिशो की पैरवी न करना। हम ने तुम मे से हर एक (फ़िर्क़े) के लिए एक दस्तूर और एक तरीका मुकर्रर किया है और अगर खुदा चाहता तो तुम सब को एक ही शरीअत पर कर देता, मगर जो हुक्म उस ने तुम को दिए है, उन मे वह तुम्हारी आज़माइश करनी चाहता है, सो नेक कामो मे जल्दी करो। तुम सब को खुदा की तरफ लौट कर जाना है, फिर जिन बातो मे तुम को इख्तिलाफ था, वह तुम को बता देगा। (४८) और (हम फिर ताकीद करते है कि) जो (हुक्म) खुदा ने नाजिल फरमाया है, उसी के मुताबिक उन मे फैसला करना और उन की ख्वाहिशो की पैरवी न करना और उन से बचते रहना कि किसी हुक्म से, जो खुदा ने तुम पर नाज़िल फरमाया है, ये कही तुम को बहका न दे। अगर ये न माने तो जान लो कि खुदा चाहता है कि उन के कुछ गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत नाज़िल करे और अक्सर लोग तो ना-फरमान है। (४९) क्या ये जाहिलियत के जमाने के हुक्म के ख्वाहिशमंद है ? और जो यकीन रखते हैं, उन के लिए खुदा से अच्छा हुक्म किस का है ? (५०) ★

ऐ ईमान वालो ! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ ▩ ये एक दूसरे के दोस्त हैं। और जो शख्स तुम मे से उन को दोस्त बनाएगा, वह भी उन्ही मे से होगा। बेशक खुदा ज़ालिम लोगों को

★रु ७/११ आ ७ ▩व. लाज़िम व गु व. मं

फ़-त-रल्लजी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुंय्युसारिअू-न फ़ीहिम् यक़ूलू-न नख़्शा अन् तुसीबना दा-इरतुन् ط फ़ अ़-सल्लाहु अंय्यअ्ति-य बिलफ़त्हि औ अम्रिम्-मिन् अिन्दिही फ़युस्बिहू अ़ला मा असर्रू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् नादिमीन ط (५२) व यक़ूलुल्लजी-न आमनू अ हा-उला-इल्लजी-न अक़्समू बिल्लाहि जह्-द

ऐमानिहिम् ला इन्नहुम् ल-म-अकुम् ط हबितत् अअ्-मालुहुम् फ़ अस्बहू खासिरीन ● (५३) या अय्युहल्लजी-न आमनू मंय्यर्तद्-द मिन्कुम् अन् दीनिही फ़-सौ-फ़ यअ्तिल्लाहु बि क़ौमिंय्युहिब्बुहुम् व युहिब्बूनहू ला अज़िल्लतिन् अ़-लल्-मुअ्मिनी-न अअिज़्ज़तिन् अ़लल्काफ़िरी-न ز युजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि व ला यख़ाफ़ू-न लौम-त ला-इमिन् ط ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ ط वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (५४) इन्नमा वलिय्युकुमुल्ला-हु व रसूलुहू वल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज्जका-त व हुम् राकिअून (५५) व मंय्य-त-वल्लल्ला-ह

مرض يسارعون فيهم يقولون نخشى أن تصيبنا دائرة
فعسى الله أن يأتي بالفتح أو أمر من عنده فيصبحوا على
ما أسروا في أنفسهم ندمين ۝ ويقول الذين آمنوا
أهؤلاء الذين أقسموا بالله جهد أيمانهم إنهم لمعكم
حبطت أعمالهم فأصبحوا خسرين ۝ يأيها الذين آمنوا من
يرتد منكم عن دينه فسوف يأتي الله بقوم يحبهم و
يحبونه أذلة على المؤمنين أعزة على الكفرين يجاهدون
في سبيل الله ولا يخافون لومة لائم ذلك فضل الله
يؤتيه من يشاء والله واسع عليم ۝ إنما وليكم الله ورسوله
والذين آمنوا الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكوة و
هم ركعون ۝ ومن يتول الله ورسوله والذين آمنوا فإن
حزب الله هم الغلبون ۝ يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا الذين
اتخذوا دينكم هزوا ولعبا من الذين أوتوا الكتب من
قبلكم والكفار أولياء واتقوا الله إن كنتم مؤمنين ۝
وإذا ناديتم إلى الصلوة اتخذوها هزوا ولعبا ذلك بأنهم
قوم لا يعقلون ۝ قل يأهل الكتب هل تنقمون منا إلا
أن آمنا بالله وما أنزل إلينا وما أنزل من قبل وأن أكثركم

व रसूलहू वल्लज़ी-न आमनू फ़ इन्-न हिज़्बल्लाहि हुमुल्ग़ालिबून ★ (५६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-लज़ीनत्तख़ज़ू दीनकुम् हुज़ुवंव्-व लअिबम्-मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् वल्कुफ़्फ़ा-र औलिया-अ ज वत्तक़ुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (५७) व इज़ा नादैतुम् इलस्सलातित्-त-ख़ज़ूहा हुज़ुवंव-व लअिबन् ط ज़ालि-क बि अन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ्क़िलून (५८) क़ुल् या अह्लल्किताबि हल् तन्क़िमू-न मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लु ला व अन्-न अक्स-रकुम् फ़ासिक़ून (५९)

● सु० ३/४ ★ रु० ८/१२ आ ६

हिदायत नही देता। (५१) तो जिन लोगो के दिलो मे (निफाक का) मर्ज़ है, तुम उन को देखोगे कि उन मे दौड़-दौड के मिले जाते है। कहते हैं कि हमे डर है कि कही हम पर ज़माने की गर्दिश न आ जाए। सो करीब है कि खुदा फत्ह भेजे या अपने यहा से कोई अम्र (नाजिल फरमाए), फिर ये अपने दिल की बातो पर, जो छिपाया करते थे, शर्मिन्दा हो कर रह जाएगे। (५२) (उस वक़्त) मुसलमान (ताज्जुब से) कहेगे कि क्या ये वही है, जो खुदा की सख़्त-सख़्त कसमे खाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ है। उन के अमल अकारत गए और वह घाटे मे पड़ गए● (५३) ऐ ईमान वालो ! अगर तुम मे से कोई अपने दीन से फिर जाएगा, तो खुदा ऐसे लोग पैदा कर देगा, जिन को वह दोस्त रखे और जिसे वे दोस्त रखें। और जो मोमिनो के हक मे नर्मी करे और काफिरो से सख़्ती से पेश आएं, खुदा की राह मे जिहाद करे, और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरे, यह खुदा का फज्ल है, वह जिसे चाहता है, देता है। और खुदा बडे फैलाव वाला और जानने वाला है। (५४) तुम्हारे दोस्त तो खुदा और उस के पैगम्बर और मोमिन लोग ही है, जो नमाज़ पढते और जकात देते और (खुदा के आगे) झुकते है। (५५) और जो शख़्स खुदा और उस के पैगम्बर और मोमिनो से दोस्ती करेगा तो (वह खुदा की जमाअत मे दाखिल होगा और) खुदा की जमाअत ही गलबा पाने वाली है। (५६) ★

ऐ ईमान वालो ! जिन लोगो को तुम से पहले किताबे दी गयी थी, उन को और काफिरो को जिन्हो ने तुम्हारे दीन को हंसी और खेल बना रखा है, दोस्त न बनाओ और मोमिन हो तो खुदा से डरते रहो। (५७) और जब तुम लोग नमाज़ के लिए अज़ान देते हो, तो ये उसे भी हसी और खेल बनाते है। यह इस लिए कि समझ नही रखते। (५८) कहो कि अह्ले किताब ! तुम हम मे बुराई ही क्या देखते हो, इस के सिवा कि हम खुदा पर और जो (किताब) हम पर नाज़िल हुई, उस पर और जो (किताबे) पहले नाजिल हुई, उन पर ईमान लाए है और तुम मे अक्सर बद-किरदार है। (५९)

●सु ३/४ ★रु ८/१२ आ ६

क़ुल् हल् उनब्बिउकुम् बि शर्रिम्मिन् ज़ालि-क मसूब-तन् अिन्दल्लाहि ط मल्ल-अ-न-हुल्लाहु व ग़ज़ि-ब अ़लैहि व ज-अ़-ल मिन्हुमुल्-क़िर-द-त वल्ख़नाज़ी-र व अ-ब-दत्ताग़ू-त ط उला-इ-क शर्रुम्मकानंव्-व अज़ल्लु अ़न् सवा-इस्सबील (६०) व इज़ा जा-ऊकुम् क़ालू आमन्ना व क़द्-द-ख़लू बिल्कुफ़्रि व हुम् क़द् ख़-रजू बिही ط वल्लाहु अअ़्-लमु बिमा कानू यक्तुमून (६१) व तरा कसीरम्-मिन्हुम् युसारिअ़ू-न फ़िल्इस्मि वल्अ़ुद्वानि व अक्लिहिमुस्सुह्-त ط ल-बिअ़्-स मा कानू यअ़्-मलून (६२) लौला यन्हाहुमुर्-रब्बानिय्यू-न वल्-अह्बारु अ़न् क़ौलिहिमुल्-इस्-म व अक्लिहिमुस्सुह्-त ط ल बिअ़्-स मा कानू यस्नअ़ून (६३) व क़ालतिल्-यहूदु यदुल्लाहि मग़्लूलतुन् ط ग़ुल्लत् ऐदीहिम् व लुअ़िनू बिमा क़ालू ▨ बल् यदाहु मब्सूततानि لا युन्फ़िक़ु कै-फ़ यशा-उ ط व-ल-यज़ीदन्-न कसीरम्-मिन्हुम् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क तुग़्यानंव्-व कुफ़्रन् ط व अल्क़ैना बैनहुमुल्-अ़दा-व-त वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल्-क़ियामति ط कुल्लमा औक़दू नारल्-लिल्हर्बि अत्-फ़-अ-हल्लाहु لا व यस्औ़-न फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन् ط वल्लाहु ला युहिब्बुल्-मुफ़्सिदीन (६४) व लौ अन्-न अह्लल्-किताबि आमनू वत्तक़ौ ल-कफ़्फ़र्ना अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-अद्ख़ल्नाहुम् जन्नातिन्नअ़ीम (६५) व लौ अन्नहुम् अक़ामुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैहिम् मिर्रब्बिहिम् ल अ-क-लू मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम् ط मिन्हुम् उम्मतुम्-मुक़्तसिदतुन् ط व कसीरुम्-मिन्हुम् सा-अ मा यअ़्-मलून ★ (६६)

فٰسِقُوْنَ ○ قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ
مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ
وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ○
وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا
بِهٖ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ○ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
يُسَارِعُوْنَ فِي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ
الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ○ وَقَالَتِ
الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا بَلْ
يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا
لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا وَاللّٰهُ لَا
يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ○ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا
عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ○ وَلَوْ اَنَّهُمْ
اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ
لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ

▨ व. लाज़िम ★ रु. ९/१३ आ १०

कहो कि मैं तुम्हे बताऊ कि खुदा के यहा इस से भी बुरा बदला (सज़ा) पाने वाले कौन हैं, वे लोग है, जिन पर खुदा ने लानत की और जिन पर वह गज़बनाक हुआ और (जिन को) उन मे से बन्दर और सुअर बना दिया और जिन्हो ने शैतान की पूजा की। ऐसे लोगो का बुरा ठिकाना है और वे सीधे रास्ते से बहुत दूर है। (६०) और जब ये लोग तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए, हालाकि कुफ्र ले कर आते हैं और उसी को ले कर जाते है। और जिन बातो को ये छिपाए रखते हैं, खुदा उन को खूब जानता है। (६१) और तुम देखोगे कि उन मे अक्सर गुनाह और ज्यादती और हराम खाने मे जल्दी कर रहे हैं। बेशक ये जो कुछ करते है बुरा करते है। (६२) भला उन के मशाइख और उलेमा उन्हे गुनाह की बातो और हराम खाने से मना क्यो नही करते हैं। (६३) और यहूद कहते है कि खुदा का हाथ (गरदन से) बंधा हुआ है (यानी अल्लाह बखील है), उन्ही के हाथ बाधे जाए और ऐसा कहने की वजह से उन पर लानत हो ▨ (उस का हाथ बंधा हुआ नही), बल्कि उस के दोनो हाथ खुले हैं। वह जिस तरह (और जितना) चाहता है, खर्च करता है।[1] और (ऐ मुहम्मद !) यह (किताब) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुई, इस से उन मे से अक्सर की शरारत और इन्कार बढेगा और हम ने उन की आपसी दुश्मनी और कपट को कियामत तक के लिए डाल दिया है। ये जब लडाई के लिए आग जलाते है, खुदा उस को बुझा देता है और यह मुल्क मे फसाद के लिए दौडे फिरते है और खुदा फसाद करने वालो को दोस्त नही रखता। (६४) और अगर अह्ले किताब ईमान लाते और परहेजगारी करते, तो हम उनसे उनके गुनाह मिटा देते और उनको नेमत के बागो मे दाखिल करते। (६५) और अगर वे तौरात और इंजील को और जो (और किताबे) उन के परवरदिगार की तरफ से उन पर नाज़िल हुईं, उन को कायम रखते, तो (उन पर रोज़ी वर्षा की तरह बरसती कि) अपने ऊपर से और पावो के नीचे से खाते। इन मे कुछ लोग दर्मियानी रास्ता अपनाने वाले हैं और बहुत से ऐसे है जिन के अमल बुरे है। (६६)★

---

१ उन लोगो का अजब हाल था, कभी अल्लाह तआला को फ़कीर कहते और अपने आप को गनी। यानी जब मालदार थे, तो अपने आप को गनी कहते थे और खुदा को फकीर। अब जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के झुठलाने और उन की मुखालफत करने से उन को गरीबी ने आ घेरा, तो यो चिल्लाने लगे कि खुदा बखील है और बुख्ल की वजह से हम पर से अपने अता का हाथ खीच लिया है। अल्लाह तआला ने इन बे-अदबियो की वजह से उन पर लानत की और फरमाया कि हमारे तो दोनो हाथ खुले हैं और जिस तरह चाहते है, खर्च करते हैं।

▨ व. लाज़िम ★रु ९/१३ आ १०

या अय्युहर्रसूलु वल्लिग़् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रव्वि-क ط व इल्लम् तफ़्अल् फ़-मा-वल्लग़्-त रिसाल-तहू ط वल्लाहु यअ्-सिमु-क मिनन्नासि ط इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमल् - काफ़िरीन (६७) क़ुल् या अह्लल् - किताबि लस्तुम् अला शैइन् हत्ता तुक़ीमुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रव्विकुम् ط व ल-यज़ीदन्-न कसीरम्-मिन्हुम् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रव्वि-क तुग्यानंव्-व कुफ़्रन् ج फ़ ला तअ्-स अ्-लल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन (६८) इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वस्साबिऊ-न वन्नसारा मन् आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व अ़मि-ल सालिहन् फ़ ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (६९) ल-क़द् अ-ख़ज़्ना मीसा-क़ वनी इस्रा-ई-ल व अर्सल्ना इलैहिम् रुसुलन् ط कुल्लमा जा - अहुम् रसूलुम्-विमा ला तह्वा अन्फ़ुसुहुम् ل फ़रीक़न् कज़्ज़बू व फ़रीक़ंय्यक़्तुलून ق (७०) व हसिबू अल्ला तकू-न फ़ित-नतुन् फ़ अ़मू व सम्मू सुम्-म ताबल्लाहु अ़लैहिम् सुम्-म अ़मू व सम्मू कसीरुम्-मिन्हुम् वल्लाहु वसीरुम्-विमा यअ्-मलून (७१) ल-क़द् क-फ़-रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्-मसीहुब्नु मर्य-म ط व क़ालल्मसीहु या वनी इस्रा-ई-लअ्-बुदुल्ला-ह रब्बी व रव्वकुम् ط इन्नहू मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ-क़द् हर्रमल्लाहु अ़लैहिल्-जन्न-त व मअ्वाहुन्नारु ط व मा लिज़्ज़ालिमी - न मिन् अन्सार (७२) ल-क़द् क-फ़-रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह सालिसु सलासतिन् ▨ व मा मिन् इलाहिन् इल्ला इलाहुंव्वाहिदुन् ط व इल्लम् यन्तहू अ़म्मा यक़ूलू-न ल-य-मस्सन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अज़ाबुन् अलीम (७३)

وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ
إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ ۚ وَاللَّهُ
يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝
قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ حَتَّىٰ تُقِيمُوا التَّوْرَاةَ وَ
الْإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ ۗ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم
مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۖ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْكَافِرِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ وَ
النَّصَارَىٰ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي
إِسْرَائِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا
لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ۝ وَحَسِبُوا
أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا
وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِّنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ لَقَدْ كَفَرَ
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمَسِيحُ
يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ
بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ أَنصَارٍ ۝ لَّقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۘ وَمَا

▨ व- लाज़िम

ऐ पैगम्बर ! जो इर्शाद खुदा की तरफ से तुम पर नाज़िल हुए है, सब लोगो को पहुचा दो और अगर ऐसा न किया तो तुम ने खुदा के पैगाम पहुंचाने मे कोताही की (यानी पैगम्बरी का फर्ज़ अदा न किया) और खुदा तुम को लोगो से बचाए रखेगा। बेशक खुदा मुन्किरो को हिदायत नही देता। (६७) कहो कि ऐ अह्ले किताब ! जब तक तुम तौरात और इजील को और जो (और किताबे) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम लोगो पर नाज़िल हुईं, उन को कायम न रखोगे, कुछ भी राह पर नही हो सकते और (यह कुरआन) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुआ है, इस से उन मे से अक्सर की सर-कशी और कुफ्र और बढेगा, तो तुम काफिरो की कौम पर अफसोस न करो। (६८) जो लोग खुदा पर और आखिरत के दिन पर ईमान लाएगे और नेक अमल करेंगे, चाहे वे मुसलमान हो या यहूदी या सितारा परस्त या ईसाई, उन को (कियामत के दिन) न कुछ खौफ होगा और न वे गमनाक होगे। (६९) हम ने बनी इस्राईल से अह्द भी लिया और उन की तरफ पैगम्बर भी भेजे, (लेकिन) जब कोई पैगम्बर उन के पास ऐसी बाते ले कर आता, जिन को उन के दिल नहीं चाहते थे, तो वह (नबियो की) एक जमाअत को तो झुठला देते और एक जमाअत को कत्ल कर देते थे। (७०) और यह ख्याल करते थे कि (इस से उन पर) कोई आफत नही आने की, तो वे अधे और बहरे हो गये फिर खुदा ने उन पर मेहरबानी फरमायी, (लेकिन) फिर उन मे से बहुत से अधे और बहरे हो गए और खुदा उन के सब कामो को देख रहा है। (७१) वे लोग बे-शुबहा काफिर है, जो कहते है कि मरयम के बेटे (ईसा) मसीह खुदा हैं, हालाकि मसीह यहूद से यह कहा करते थे कि ऐ बनी इस्राईल ! खुदा ही की इबादत करो, जो मेरा भी परवरदिगार है और तुम्हारा भी, (और जान रखो कि) जो शख्स खुदा के साथ शिर्क करेगा, खुदा उस पर बहिश्त को हराम कर देगा और उस का ठिकाना दोजख है और जालिमो का कोई मददगार नही। (७२) वे लोग (भी) काफिर हैं, जो इस बात के कायल है कि खुदा तीन मे का तीसरा है▨ हालाकि उस एक माबूद के सिवा कोई इबादत के लायक नही। अगर ये लोग ऐसे कौल (व अकीदो) से बाज नही आएंगे, तो उन मे जो काफिर हुए है, वे तक्लीफ देने वाला अज़ाब पाएगे। (७३) तो ये क्यो खुदा

▨ व लाजिम

अ-फ़-ला यतूबू-न इलल्लाहि व यस्तग्फ़िरूनहू ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (७४) मल्मसीहुब्नु मर्य-म इल्ला रसूलुन् ج क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु ط व उम्मुहू सिद्दीक़तुन् ط काना यअ्कुलानित्तआ-म ط उन्ज़ुर् कै-फ़ नुबय्यिनु लहुमुल्आयाति सुम्मन्ज़ुर् अन्ना युअ्फ़कून (७५) क़ुल् अ-तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् ज़र्रव्-व ला नफ़्अ़न् ط वल्लाहु हुवस्समीअुल् - अ़लीम (७६) क़ुल् या अह्लल्-किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् ग़ैरल्-हक़्क़ि व ला तत्तबिअू अह्वा-अ क़ौमिन् क़द् ज़ल्लू मिन् क़ब्लु व अज़ल्लू कसीरंव्-व ज़ल्लू अ़न् सवा - इस्सबील ★ (७७) लुअ़िनल्लज़ी-न क-फ़रू मिम्-बनी इस्रा-ई-ल अ़ला लिसानि दावू-द व ईसब्नि मर्य-म ط ज़ालि-क बिमा अ़-सव्-व कानू यअ्-तदून (७८) कानू ला य-त-नाहौ-न अ़म्मुन्करिन् फ़-अ़-लूहु ط ल बिअ्-स मा कानू यफ़्अ़लून (७९) तरा कसीरम्-मिन्हुम् य-त-वल्लौनल्लज़ी-न क-फ़रू ط ल-बिअ्-स मा क़द्दमत् लहुम् अन्फ़ुसुहुम् अन् सख़ितल्लाहु अ़लैहिम् व फ़िल्अ़ज़ाबि हुम् ख़ालिदून (८०) व लौ कानू युअ्मिनू-न बिल्लाहि वन्नबिय्यि व मा उन्ज़ि-ल इलैहि मत्तख़ज़ूहुम् औलिया-अ व लाकिन्-न कसीरम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (८१) ल-त-जिदन्-न अशद्दन्नासि अ़दावतल्-लिल्लज़ी-न आमनुल्-यहू-द वल्लज़ी-न अश्रकू ج व ल - तजिदन्-न अक़्र-बहुम् मवद्दतल्-लिल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा ط ज़ालि-क बि अन्-न मिन्हुम् क़िस्सीसी-न व रुह्बानव्-व अन्नहुम् ला यस्तक्बिरून (८२)

लا يحب الله ٦ — ٩٦ — المآئدة ٥

مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ
كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا
تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا
عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝ لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى
لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝
كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝
تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ
اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا
مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَ
الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا
نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝

★ र १०/१४ आ ११

के आगे तौबा नही करते और उस से गुनाहो की माफी नही मागते। और ख़ुदा तो बख्शने वाला मेहरबान है। (७४) मसीह बिन मरयम तो सिर्फ़ (ख़ुदा के) पैगम्बर थे, उन से पहले भी बहुत-से रसूल गुज़र चुके थे और उन की वालिदा (मरयम ख़ुदा की वली और) सच्ची फरमाबरदार थी। दोनो (इंसान थे और) खाना खाते थे। देखो, हम इन लोगो के लिए अपनी आयते किस तरह खोल-खोल कर बयान करते हैं, फिर (यह) देखो कि ये किधर उलटे जा रहे हैं। (७५) कहो कि तुम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज की क्यो पूजा करते हो, जिस को तुम्हारे नफा और नुक्सान का कुछ भी अख्तियार नही और ख़ुदा ही (सब कुछ) सुनता-जानता है (७६) कहो कि अह्ले किताब ! अपने दीन (की बात) मे ना-हक मुबालगा न करो और ऐसे लोगो की ख्वाहिशो के पीछे न चलो, जो (ख़ुद भी) पहले गुमराह हुए और भी अक्सरो को गुमराह कर गये और सीधे रास्ते से भटक गये। (७७) ★

जो लोग बनी इस्राईल मे काफिर हुए, उन पर दाऊद और ईसा बिन मरयम की ज़ुबान से लानत की गयी, यह इस लिए कि ना-फरमानी करते थे और हद से आगे बढ जाते थे। (७८) (और) बुरे कामो से जो वे करते थे, एक दूसरे को रोकते नही थे। बिला शुब्हा वे बुरा करते थे। (७९) तुम उन मे से बहुतो को देखोगे कि काफिरो से दोस्ती रखते हैं। उन्हो ने जो कुछ अपने वास्ते आगे भेजा है, बुरा है (वह यह) कि ख़ुदा उन से ना-खुश हुआ और वे हमेशा अजाब मे (पडे) रहेगे। (८०) और अगर वे ख़ुदा पर और पैगम्बर पर और जो किताब उन पर नाज़िल हुई थी, उस पर यकीन रखते तो उन लोगो को दोस्त न बनाते, लेकिन उन मे अक्सर बद-किरदार हैं। (८१) (ऐ पैगम्बर !) तुम देखोगे कि मोमिनो के साथ सब से ज्यादा दुश्मनी करने वाले यहूदी और मुश्रिक हैं और दोस्ती के लिहाज़ से मोमिनो से करीब-तर उन लोगो को पाओगे, जो कहते हैं कि हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन मे आलिम भी है और मशाइख भी और वे तकब्बुर नही करते। (८२)

और जब इस (किताब) को सुनते हैं, जो (सब से पिछले) पैगम्बर (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल हुई तो तुम देखते हो कि उन की आखो से आसू जारी हो जाते हैं, इस लिए कि उन्हों ने हक बात पहचान ली और वे (ख़ुदा की जनाब मे) अर्ज करते हैं कि ऐ परवर-दिगार ! हम ईमान लाए, तो हम को मानने वालो मे लिख ले। (८३) और हमे क्या हुआ है कि

★रु १०/१४ आ ११

सातवां पारः वइज़ासमिअ़ू

सूरतुल्मा-इदति़ आयत ८३ से १२०

व इज़ा समिअ़ू मा उन्ज़ि-ल इलर्रसूलि तरा अअ्-युनहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दम्अि़ मिम्मा अ़-रफ़ू मिनल्हक़्क़ि ج यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़क्तुब्ना म-अश्शाहिदीन (८३) व मा लना ला नुअ्मिनु बिल्लाहि व मा जा-अना मिनल्हक़्क़ि ॥ व नत़्मअ़ु अय्युद्ख़ि-लना रब्बुना म-अल्-क़ौमिस्सालिहीन (८४) फ़-असाबहुमुल्लाहु बिमा क़ालू जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ط व ज़ालि-क जज़ा-उल् मुह़्सिनीन (८५) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि आयातिना उला-इ-क अस्ह़ाबुल्-जह़ीम ★ (८६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुह़र्रिमू त़य्यिबाति मा अ-ह़ल्लल्लाहु लकुम् व ला तअ्-तदू ط इन्नल्ला-ह ला युहि़ब्बुल्-मुअ्-तदीन (८७) व कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु हलालन् त़य्यिबंव् ص - वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (८८) ला युआख़िज़ु-कुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिय्युआख़िज़ुकुम् बिमा अ़क़्क़त्तुमुल्-ऐमा-न ج फ़-कफ़्फ़ारतुहू इत़्आमु अ़-श-रति़ मसाकी-न मिन् औसति़ मा तुत़्अिमू-न अह्लीकुम् औ किस्वतुहुम् औ तह़्रीरु र-क-बतिऩ् ط फ़ मल्लम् यजिद् फ़सि़यामु सलासति़ अय्यामिऩ् ط ज़ालि-क कफ़्फ़ारतु ऐमानिकुम् इज़ा ह़-लफ़्तुम् ط वह़्फ़ज़ू ऐमानकुम् ط कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (८९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्ख़म्-रु वल्मैसिरु वल्अन्साबु वल्अज़्लामु रिज्सुम्मिन् अ़-मलिश्शैतानि फ़ज्तनिबूहु ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (९०)

وإذا سمعوا ما أنزل إلى الرسول ترى أعينهم تفيض من
الدمع مما عرفوا من الحق يقولون ربنا آمنا فاكتبنا مع
الشاهدين ۝ وما لنا لا نؤمن بالله وما جاءنا من الحق و
نطمع أن يدخلنا ربنا مع القوم الصالحين ۝ فأثابهم الله
بما قالوا جنات تجري من تحتها الأنهار خالدين فيها وذلك
جزاء المحسنين ۝ والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك
أصحاب الجحيم ۝ يا أيها الذين آمنوا لا تحرموا طيبات ما
أحل الله لكم ولا تعتدوا إن الله لا يحب المعتدين ۝ و
كلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا واتقوا الله الذي أنتم به
مؤمنون ۝ لا يؤاخذكم الله باللغو في أيمانكم ولكن يؤاخذكم
بما عقدتم الأيمان فكفارته إطعام عشرة مساكين من
أوسط ما تطعمون أهليكم أو كسوتهم أو تحرير رقبة فمن
لم يجد فصيام ثلاثة أيام ذلك كفارة أيمانكم إذا حلفتم
واحفظوا أيمانكم كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تشكرون ۝
يا أيها الذين آمنوا إنما الخمر والميسر والأنصاب والأزلام
رجس من عمل الشيطان فاجتنبوه لعلكم تفلحون ۝ إنما
يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء في الخمر والميسر

★रु ११/१ आ ९

ख़ुदा पर और हक बात पर, जो हमारे पास आयी है, ईमान न लाएं। और हम उम्मीद रखते हैं कि परवरदिगार हम को नेक बन्दो के साथ बहिश्त मे दाख़िल करेगा। (८४) तो ख़ुदा ने उन को इस कहने के बदले (बहिश्त के) बाग अता फरमाये, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वे हमेशा उन मे रहेगे और भले लोगो का यही बदला है। (८५) और जिन लोगो ने कुफ़्र किया और हमारी आयतो को झुठलाया, वे जहन्नमी है। (८६) ★

मोमिनो! जो पाकीज़ा चीज़ें ख़ुदा ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, उनको हराम न करो और हद से न बढो कि ख़ुदा हद से बढने वालो को दोस्त नही रखता।(८७)और हलाल पाक रोज़ी ख़ुदा ने तुमको दी है, उसे खाओ और ख़ुदा से, जिस पर ईमान रखते हो, डरते रहो।(८८) ख़ुदा तुम्हारी बे-इरादा[1] क़समो की तुमसे पकड न करेगा,[2] लेकिन पुख़्ता कसमो पर(जिनके खिलाफ करोगे, तो)पकड लेगा, तो उस का कफ्फारा दस मुहताजो को औसत दर्जे का खाना खिलाना है, जो तुम अपने बाल-बच्चो को खिलाते हो या उन को कपडे देना या एक गुलाम आजाद करना, और जिस को यह न मिले, वह तीन रोजे रखे। यह तुम्हारी कसमो का कफ्फारा है, जब तुम कसम खा लो (और उसे तोड दो) और (तुम को) चाहिए कि अपनी कस्मो की हिफाजत करो। इस तरह ख़ुदा तुम्हारे (समझाने के) लिए अपनी आयते खोल-खोल कर बयान फरमाता है, ताकि तुम शुक्र करो। (८९) ऐ ईमान वालो! शराब और जुआ और बुत और पासे (ये सब) नापाक काम शैतान के अमलो से है, सो

---

१ जैसें कोई दूर से किसी आदमी को देखे और कहे कि ख़ुदा की कसम यह तो अब्दुल्लाह है, मगर हकीकत मे अब्दुल्लाह न हो या जैसे कुछ लोगो की आदत होती है कि बिला इरादा—'ला वल्लाह' या 'बला वल्लाह' या 'वल्लाह', 'बिल्लाह' कहते है। ऐसी कस्मो पर कोई पकड नही है।

२ जैसे कोई आदमी कसम खाये कि मैं कभी मास नही खाऊंगा, या निकाह नही करूंगा।

इन्नमा युरीदुश्शैतानु अंय्यूक़ि-अ़ बैनकुमुल्अ़दाव-त् वल्बग़्जा-अ फ़िल्ख़म्रि वल्मैसिरि व यसुद्दकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व अ़निस्सलातिज फ़ हल् अन्तुम् मुन्तहून (९१) व अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल वह्ज़रूज फ इन् तवल्लैतुम् फ़अ्-लमू अन्नमा अला रसूलिनल्-बलाग़ुल्-मुबीन (९२) लै-स अ़-लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जुनाहुन् फ़ीमा तअ़िमू इज़ा मत्तक़व्-व आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सुम्मत्तक़व्-व आमनू सुम्मत्तक़व्-व अह्सनू ط वल्लाहु युहिब्बुल् - मुह्सिनीन ★(९३) या अय्युहल्-लज़ी-न आमनू ल-यब्लुवन्-न-कुमुल्लाहु बि शैइम्-मिनस्सैदि तनालुहू ऐदीकुम् व रिमाहुकुम् लि यअ्-ल-मल्लाहु मंय्यख़ाफ़ुहू बिल्ग़ैबिज फ़-मनिअ्-तदा बअ्-द ज़ालि-क फ़-लहू अ़ज़ाबुन् अलीम (९४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़्तुलुस्सै - द व अन्तुम् हुरुमुन्ط व मन् क़-त-लहू मिन्कुम् मुतअ़म्मिदन् फ जज़ा-उम्-मिस्लु मा क़-त-ल मिनन्न-अ़मि यह्कुमु बिही ज़वा अ़द्लिम् - मिन्कुम् हद्यम्-बालिग़ल्-कअ्-बति औ कफ़्फ़ारतुन् तआमु मसाकी-न औ अ़द्लु ज़ालि-क सियामल्-लि यज़ू-क व-बा-ल अम्रिही ط अ़फ़ल्लाहु अ़म्मा स-लफ़ ط व मन् आ-द फ़ यन्तक़िमुल्लाहु मिन्हु ط वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (९५) उहिल् - ल लकुम् सैदुल्बह्रि व तआमुहू मताअ़ल्लकुम् व लिस्सय्यारतिज व हुर्रि - म अ़लैकुम् सैदुल्बर्रि मा दुम्तुम् हुरुमन् ط वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि तुह्शरून (९६) ज-अ़-लल्लाहुल् - कअ् - बतल् - बैतल् - हरा-म क़ियामल्लिन्नासि वश्शह्रल् - हरा - म वल्हद-य वल्क़ला - इ - दط ज़ालि-क लि तअ्-लमू अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अन्नल्ला-ह बि कुल्लि शैइन् अ़लीम (९७)

واذا سمعوا ٩٨

وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾ وَاَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى
رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا
وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۚ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ
لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۗ وَمَنْ
قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ
ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ
ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ۗ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ۗ وَمَنْ عَادَ
فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ
وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا
دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ
الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ۗ
ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

منزل

★रु १२/२ आ ७

इन से बचते रहना, ताकि निजात पाओ। (९०) शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए की वजह से तुम्हारे आपस मे दुश्मनी और रंजिश डलवा दे और तुम्हे खुदा की याद से और नमाज़ से रोक दे, तो तुम को (इन कामो से) बाज़ रहना चाहिए।[1] (९१) और खुदा की फरमाबरदारी और (खुदा के) रसूल की इताअत करते रहो और डरते रहो। अगर मुंह फेरोगे तो जान रखो कि हमारे पैगम्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ पैगाम का खोल कर पहुचा देना है। (९२) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन पर उन चीज़ो का कुछ गुनाह नही जो वह खा चुके, जब कि उन्होने परहेज़ किया और ईमान लाये और नेक काम किए। फिर परहेज़ किया और भले काम किए और खुदा भला करने वालो को दोस्त रखता है। (९३) ★

मोमिनो! किसी कदर शिकार से, जिन को तुम हाथो और नेज़ो से पकड सको, खुदा तुम्हारी आजमाइश करेगा, (यानी एहराम की हालत मे शिकार के मना करने से), ताकि मालूम करे कि उस से गायबाना कौन डरता है, तो जो उस के बाद ज्यादती करे, उस के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (९४) मोमिनो! जब तुम एहराम की हालत मे हो, तो शिकार न मारना और जो तुम मे से जान-बूझ कर उसे मारे तो (या तो उस का) बदला (दे और वह यह है कि) उसी तरह का चारपाया, जिसे तुम मे से दो एतबार वाले आदमी तै कर दे, कुर्बानी (करे और यह कुर्बानी) काबे पहुंचायी जाए, या कफ्फारा (दे और वह) मिस्कीनो को खाना खिलाना (है) या उस के बराबर रोज़े रखे ताकि अपने काम की सजा (का मज़ा) चखे (और) जो पहले हो चुका, वह खुदा ने माफ कर दिया और जो फिर (ऐसा काम) करेगा, तो खुदा उस से बदला लेगा और खुदा गालिब और बदला लेने वाला है। (९५) तुम्हारे लिए दरिया (की चीज़ो) का शिकार और उन का खाना हलाल कर दिया गया है, (यानी) तुम्हारे और मुसाफिरो के फायदे के लिए और जगल (की चीजो) का शिकार जब तक तुम एहराम की हालत मे रहो, तुम पर हराम है और खुदा से, जिस के पास तुम (सब) जमा किये जाओगे, डरते रहो। (९६) खुदा ने इज्जत के घर (यानी) काबे को लोगो के लिए अम्न की वजह मुकर्रर फरमाया है और इज्जत के महीनो को और कुर्बानी को और उन जानवरो को, जिन के गले मे पट्टे बंधे हो, यह इस लिए कि तुम जान लो कि जो कुछ आसमानो मे और जो कुछ जमीन मे है, खुदा सब को जानता है और यह कि खुदा को हर चीज का इल्म है। (९७) जान

१ यह तर्जुमा हम ने 'फ हल अन्तुम मुन्तहून' का किया है और इस मे सवाल नही है। इन मे हुक्म ही हमारे नज़दीक सही है।

★रु १२/२ आ ७

इअ्-लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्‌अिकाबि व अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ط (९८) मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ु ط वल्लाहु यअ्-लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून (९९) कुल् ला यस्तविल्ख़बीसु वत्तय्यिबु व लौ अअ्-ज-ब-क कस्रतुल्-ख़बीसि फत्तक़ुल्ला-ह या उलिल्‌अल्बाबि ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ★(१००) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तस्अलू अ़न् अश्या-अ इन् तुब्-द लकुम् तसुअ्‌कुम् ج व इन् तस्अलू अ़न्हा ह़ी-न युनज्ज़लुल्-कुर्-आनु तुब् - द लकुम् ط अ़फ़ल्लाहु अ़न्हा ط वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम (१०१) कद् स-अ-लहा कौमुम्मिन् क़ब्लिकुम् सुम्-म अस्बहू बिहा काफ़िरीन (१०२) मा ज-अ़-लल्लाहु मिम्बह़ीरतिंव्-व ला सा-इबतिंव - व ला वसीलतिंव्-व ला हामिंव्-ل-व लाकिन्नल्-लज़ी-न क-फ़रू यफ़्तरू - न अ़-लल्लाहिल्-कज़ि-ब ط व अक्सरुहुम् ला यअ्-किलून (१०३) व इज़ा की-ल लहुम् तआलौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि कालू हस्बुना मा व - जद्ना अ़लैहि आबा-अना ط अ-व लौ का-न आबा-उहुम् ला यअ्-लमू-न शैअंव्-व ला यह्तदून (१०४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अ़लैकुम् अन्फ़ुसकुम् ج ला यज़ुर्रुकुम् मन् ज़ल् - ल इज़हतदैतुम् ط इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१०५) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू शहादतु बैनिकुम् इज़ा ह़-ज़-र अ-ह-दकुमुल्मौतु ह़ीनल्-वसिय्यतिस्नानि ज़वा अ़द्‌लिम्-मिन्कुम् औ आख़रानि मिन् ग़ैरिकुम् इन् अन्तुम् ज़रब्तुम् फ़िल्‌अर्ज़ि फ-असाबत्कुम् मुसीबतुल्मौति ط तह्बिसूनहुमा मिम्बअ् - दिस्सलाति फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि इनिर्-तब्तुम् ला नश्तरी बिही स-म-नंव्-व लौ का-न ज़ाकुर्बा ل व ला नक्तुमु शहा-द-त ل ल्लाहि इन्ना इज़ल्लमिनल् - आसिमीन (१०६)

رحيم ۝ ما على الرسول إلا البلغ ۗ والله يعلم ما تبدون وما تكتمون ۝
قل لا يستوي الخبيث والطيب ولو أعجبك كثرة الخبيث ۚ فاتقوا
الله يا أولي الألباب لعلكم تفلحون ۝ يا أيها الذين آمنوا لا تسئلوا
عن أشياء إن تبد لكم تسؤكم وإن تسئلوا عنها حين ينزل القرآن
تبد لكم عفا الله عنها ۗ والله غفور حليم ۝ قد سألها قوم من
قبلكم ثم أصبحوا بها كفرين ۝ ما جعل الله من بحيرة ولا سائبة
ولا وصيلة ولا حام ۙ ولكن الذين كفروا يفترون على الله الكذب ۖ
وأكثرهم لا يعقلون ۝ وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله و
إلى الرسول قالوا حسبنا ما وجدنا عليه آباءنا ۚ أولو كان آباؤهم
لا يعلمون شيئا ولا يهتدون ۝ يا أيها الذين آمنوا عليكم أنفسكم ۖ
لا يضركم من ضل إذا اهتديتم ۚ إلى الله مرجعكم جميعا
فينبئكم بما كنتم تعملون ۝ يا أيها الذين آمنوا شهادة بينكم
إذا حضر أحدكم الموت حين الوصية اثنان ذوا عدل منكم أو
آخران من غيركم إن أنتم ضربتم في الأرض فأصابتكم مصيبة
الموت ۚ تحبسونهما من بعد الصلوة فيقسمان بالله إن ارتبتم
لا نشتري به ثمنا ولو كان ذا قربى ۙ ولا نكتم شهادة الله إنا
إذا لمن الآثمين ۝ فإن عثر على أنهما استحقا إثما فآخران يقومن

★रु. १३/३ आ ७

रखो कि खुदा सख्त अज़ाब देने वाला है और यह कि खुदा बख़्शने वाला मेहरबान भी है (९८) पैगम्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ (खुदा का पैगाम) पहुंचा देना है और जो कुछ तुम जाहिर करते हो और कुछ छिपाते हो, खुदा को सब मालूम है। (९९) कह दो कि ना-पाक और पाक चीज़े बराबर नही होती, गो ना-पाक चीजो की ज्यादती तुम्हे खुश ही लगे, तो अक्ल वालो! खुदा से डरते रहो, ताकि कामियाबी हासिल करो (१००) ★ मोमिनो! ऐसी चीज़ो के बारे मे मत सवाल करो कि अगर (उन की हक़ीकतें) तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएं तो तुम्हे बुरी लगें और अगर कुरआन के नाजिल होने के दिनो मे ऐसी बातें पूछोगे, तो तुम पर जाहिर भी कर दी जाएगी। (अब तो) खुदा ने ऐसी बातो (के पूछने) से दर-गुजर फरमाया है और खुदा बख़्शने वाला बुर्दबार है। (१०१) इस तरह की बाते तुम से पहले लोगो ने भी पूछी थी (मगर जब बतायी गयी तो) फिर उन के इकारी हो गये। (१०२) खुदा ने न तो बहीरा[1] कुछ चीज बनाया है और न साइबा[2] और न वसीला[3] और न हाम[4] बल्कि काफिर खुदा पर झूठ गढते है और ये अक्सर अक़्ल नही रखते।[5] (१०३) और जब इन लोगो से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने नाजिल फरमायी है, उस की और अल्लाह के रसूल की तरफ रुजू करो, तो कहते है कि जिस तरीके पर हम ने अपने बाप-दादा को पाया है, वही हमे काफी है। भला अगर उन के बाप-दादा, न तो कुछ जानते हो और न सीधे रास्ते पर हो, (तब भी?) (१०४) ऐ ईमान वालो! अपनी जानो की हिफाज़त करो। जब तुम हिदायत पर हो, तो कोई गुमराह तुम्हारा कुछ भी बिगाड नही सकता। तुम सब को खुदा की तरफ से लौट कर जाना है। उस वक्त वह तुम को तुम्हारे सब कामो से जो (दुनिया मे) किये थे, आगाह करेगा (और उन का बदला देगा।) (१०५) मोमिनो! जब तुम मे से किसी की मौत आ मौजूद हो, तो शहादत (गवाही, का निसाब) यह है कि वसीयत के वक्त तुम (मुसलमानो) मे से दो मर्द अद्ल वाले (यानी एतबार वाले) गवाह हो, या अगर (मुसलमान न मिलें और) तुम सफर कर रहे हो और (उस वक्त) तुम पर मौत की मुसीबत वाकेअ हो तो किसी दूसरे मजहब के दो (शख़्सो को) गवाह (कर लो)। अगर तुम को उन गवाहो के बारे मे कुछ शक हो, तो उन को (अस्र की) नमाज़ के बाद खडा करो और दोनो खुदा की कस्मे खाए कि हम शहादत का बदला नही लेंगे, गो हमारा रिश्तेदार ही हो और न हम अल्लाह की गवाही को छिपाएगे, अगर ऐसा करेंगे, तो गुनाहगार

---

१ ऊटनी जो बुतो की नज़्र की जाती थी, उस के कान फाड कर छोड देते थे और कोई उस का दूध दूह नही सकता था।

२ जानवर जो बुतो के नाम पर छोड दिया जाता था और उस पर बोझ नही लादते थे।

३ ऊटनी जो अव्वल उम्र मे ऊपर तले दो मादा बच्चे देती, उसे बुतो के नाम पर छोड देते थे।

४ ऊट जिस की नस्ल से कुछ बच्चे ले कर सवारी वगैरह का काम लेना छोड देते थे।

५ काफिरो ने बहीरा और साइबा और वसीला और हाम तो खुद मुकर्रर कर रखे थे और यह कहते थे कि यह इब्राहीमी शरीअत के हुक्म हैं और इन से अल्लाह का कुर्ब हासिल होता है। खुदा ने फरमाया, यह सब झूठ और खुदा पर बुहतान है। उस ने न किसी जानवर का नाम बहीरा वगैरह रखा, न उस को शरअी हैसियत दी, न इसे कुर्बत का ज़रिया करार दिया।

फ़इन् अुसि - र अ़ला अन्नहुमस्तहक़्क़ा इस्मन् फ़आख़रानि यक़ूमानि मक़ामहुमा मिनल्लज़ीनस्-तहक़्-क अ़लैहिमुल्-औलयानि फयुक़्सिमानि बिल्लाहि ल-शहादतुना अहक़्क़ु मिन् शहादति - हिमा व मअ़् - तदैना ~~इन्ना~~ इन्ना इज़ल्लमिनज़्-आलिमीन (१०७) ज़ालि-क अद्ना अय्यअ्तू बिश्शहादति अ़ला वज्हिहा औ यख़ाफ़ू अन् तुरद्-द ऐमानुम्बअ़् - द ऐमानिहिम् ط वत्तक़ुल्ला - ह वस्मअ़ू ط वल्लाहु ला यह्दिल् - क़ौमल् - फ़ासिक़ीन★(१०८) यौ-म यज्मअ़ुल्लाहुर्-रुसु - ल फ़ - यक़ूलु माज़ा उजिब्तुम् ط क़ालू ला अ़िल्-म लना ط इन्न-क अन्-त अ़ल्लामुल्ग़ुयूब (१०९) इज़् क़ालल्लाहु या ई़सब्-न मर्यमज़्कुर् निअ़्मती अ़लै-क व अ़ला वालिदति - क ⁂ इज़् अय्यत्तु - क बिरूहिल्क़ुदुसि क़ फ़ तुकल्लिमुन्ना - स फ़िलमह्दि व कह्लन् ج व इज़् अ़ल्लम्तुकल् - किता-ब वल्हिक्म-त वत्तौरा-त वल्इन्जी-ल ج व इज़् तख़्लुक़ु मिनत्तीनि कहैअतित्तैरि बि-इज़्नी फ़ तन्फ़ुख़ु फ़ीहा फ़तकूनु तैरम् - बि - इज़्नी व तुब्रिउल्-अक्-म-ह वल्-अब्-र-स बि-इज़्नी ج व इज़् तुख़्रिजुलमौता बि-इज़्नी ج व इज़् क - फ़फ़्तु बनी इस्रा - ई-ल अ़न्-क इज़् जिअ्तहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (११०) व इज़् औहैतु इलल्-हवारिय्यी-न अन् आमिनू बी व बि-रसूली ج क़ालू आमन्ना वश्हद् बि-अन्नना मुस्लिमून (१११) इज़् क़ालल्-हवारिय्यू-न या ई़सब्-न मर्य-म हल् यस्ततीअ़ु रब्बु-क अय्युनज़्ज़िज-ल अ़लैना मा-इ-द-तम्-मिनस्समा-इ ط क़ालत्तक़ुल्ला - ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (११२) क़ालू नुरीदु अन् नअ्कु-ल मिन्हा व तत्म-इन्-न क़ुलूबुना व नअ़्-ल-म अन् क़द् स़दक़्तना व नकू-न अ़लैहा मिनश्शाहिदीन ●(११३)

المآئدة ١٠٠ واذا سمعوا ٧

مقامهما من الذين استحق عليهم الاوليٰن فيقسمن بالله
لشهادتنا احق من شهادتهما وما اعتدينا انا اذا لمن
الظلمين ۝ ذلك ادنىٰ ان يأتوا بالشهادة علىٰ وجهها او يخافوا
ان ترد ايمان بعد ايمانهم واتقوا الله واسمعوا والله لا يهدي
القوم الفسقين ۝ يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا اجبتم
قالوا لا علم لنا انك انت علام الغيوب ۝ اذ قال الله يعيسى
ابن مريم اذكر نعمتي عليك وعلىٰ والدتك اذ ايدتك بروح
القدس تكلم الناس في المهد وكهلا واذ علمتك الكتب و
الحكمة والتورىة والانجيل واذ تخلق من الطين كهيئة الطير
باذني فتنفخ فيها فتكون طيرا باذني وتبرئ الاكمه والابرص
باذني واذ تخرج الموتىٰ باذني واذ كففت بني اسراءيل عنك
اذ جئتهم بالبينت فقال الذين كفروا منهم ان هذا الا سحر
مبين ۝ واذ اوحيت الى الحواريّن ان امنوا بي وبرسولي
قالوا امنا واشهد باننا مسلمون ۝ اذ قال الحواريون
يعيسى ابن مريم هل يستطيع ربك ان ينزل علينا مآئدة
من السماء قال اتقوا الله ان كنتم مؤمنين ۝ قالوا نريد ان
نأكل منها وتطمئن قلوبنا ونعلم ان قد صدقتنا ونكون

★रु १४/४ आ ८ ⁂ व. लाज़िम ● रुबुअ १/४

होगे। (१०६) फिर अगर मालूम हो जाए कि इन दोनो ने (झूठ बोल कर) गुनाह हासिल किया है तो जिन लोगों का उन्हो ने हक मारना चाहा था, उन मे से उन की जगह और दो गवाह खड़े हो, जो (मय्यत से) क़रीबी ताल्लुकात रखते हो, फिर वे खुदा की कस्में खाएं कि हमारी गवाही उन की गवाही से बहुत सच्ची है और हम ने कोई ज्यादती नही की, ऐसा किया हो, तो हम बे-इंसाफ है। (१०७) इस तरीके से बहुत करीब है कि ये लोग सही-सही गवाही दें या इस बात से डरें कि (हमारी) कस्मे उन की कस्मो के बाद रद्द कर दी जाएगी। और खुदा से डरो और (उस के हुक्मो को कान खोल कर सुनो और) खुदा ना-फरमान लोगो को हिदायत नही देता। (१०८) ★

(वह दिन याद रखने के लायक है) जिस दिन खुदा पैगम्बरो को जमा करेगा, फिर उनसे पूछेगा कि तुम्हे क्या जवाब मिला था। वे अर्ज करेंगे कि हमे कुछ मालूम नही। तू ही गैब की बातो को जानता है। (१०९) जब खुदा (ईसा से) फरमाएगा कि ऐ ईसा बिन मरयम! मेरे उन एहसानो को याद करो, जो मैंने तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर किए ▨ जब मैंने रूहुल कुद्स (यानी जिब्रील) से तुम्हारी मदद की। तुम झूले मे और जवान होकर एक ही नस्क पर लोगो से बातें करते थे और जब मैं ने तुम को किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी का जानवर बना कर उस में फूक मार देते थे, तो वह मेरे हुक्म से उडने लगता था और पैदाइशी अंधे और सफेद दाग वाले मेरे हुक्म से चंगा कर देते थे और मुर्दे को मेरे हुक्म से (ज़िंदा कर के कब्र से) निकाल खडा करते थे और जब मैं ने बनी इस्राईल (के हाथो) को तुम से रोक दिया, जब तुम उन के पास खुले निशान ले कर आए, तो जो उन मे से काफिर थे, कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (११०) और जब मैंने हवारियो की तरफ हुक्म भेजा कि मुझ पर और मेरे पैगम्बर पर ईमान लाओ। वे कहने लगे कि (परवरदिगार!) हम ईमान लाये, तो गवाह रहियो कि हम फरमाबरदार हैं।[1] (१११) (वह किस्सा भी याद करो) जब हवारियो ने कहा कि ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुम्हारा परवरदिगार ऐसा कर सकता है कि हम पर आसमान से (खाने का) ख्वान नाज़िल करे? उन्हो ने कहा कि अगर ईमान रखते हो तो खुदा से डरो। (११२) वे बोले कि हमारी यह ख्वाहिश है कि हम उस मे से खाए और हमारे दिल तसल्ली पाए और हम जान ले कि तुम ने हम से सच कहा है और हम इस (ख्वान के नाजिल होने पर) गवाह रहे ● (११३) (तब)

---

१ हज़रत ईसा की पैरवी करने वाले और मदद करने वाले यानी साथी हवारी कहलाते थे। हवारी हकीकत में धोबी को कहते है और वे लोग भी ज्यादातर धोबी थे। आजकल यह लफ्ज़ ज्यादा आम हो गया है और दूसरे लोगो के साथियो के लिए भी इसे बोलने लगे हैं।

★रु १४/४ आ ८ ▨ व. लाज़िम ● रुकूअ़ १/४

क़ा-ल अीसब्नु मर्यमल्लाहुम-म रब्बना अन्ज़िल अलैना मा-इद-तम्-मिनस्समा-इ तकूनु लना अीदल्लि-अव्वलिना व आख़िरिना व आयतम्-मिन्-क वर्ज़ुक़्ना व अन्-त ख़ैरुर्राज़िक़ीन (११४) क़ालल्लाहु इन्नी मुनज़्ज़िलुहा अलैकुम् ८ फ़-मंयक्फ़ुर् बअ्-दु मिन्कुम् फ़-इन्नी उ-अज़्ज़िबुहू अज़ाबल्ला उ-अज़्ज़िबुहू अ-ह़-दम्मिनल् - आलमीन ★ (११५) व इज़् कालल्लाहु या अीसब-न मर्य-म अ अन्-त कुल्-त लिन्नासित्-तख़िज़ूनी व उम्मि-य इलाहैनि मिन् दूनिल्लाहि ط क़ा - ल सुब्हान-क मा यकूनु ली अन् अक़ू-ल मा लै - स ली ق बिह़क़्क़िन् ط ▨ इन् कुन्तु क़ुल्तुहू फ-क़द् अलिम्तहू ط तअ्-लमु मा फी नफ़्सी व ला अअ्-लमु मा फी नफ़्सि-क ط इन्न-क अन्-त अल्लामुल्-गुयूब (११६) मा कुल्तु लहुम् इल्ला मा अमर्तनी बिही अनिअ-बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम् ८ व कुन्तु अलैहिम् शहीदम्मा दुम्तु फ़ीहिम् ८ फ़ - लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्-त अन्तर्रकी-ब अलैहिम् ط व अन्-त अला कुल्लि शैइन् शहीद (११७) इन् तुअज़्ज़िब्हुम् फ-इन्नहुम् अिबादु-क ८ व इन् तग़्फ़िर् लहुम् फ़-इन्न-क अन्तल्-अज़ीज़ुल्-ह़कीम (११८) क़ालल्लाहु हाज़ा यौमु यन्फ़अुस्सादिक़ी-न सिद्क़ुहुम् ط लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط रज़ियल्लाहु अन्हुम् व रज़ू अन्हु ط ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अज़ीम (११९) लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा फ़ीहिन्-न ط व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर ★ (१२०)

عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ
عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ
وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ
يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ
اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ
بِحَقٍّ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ
نَفْسِكَ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ فَلَمَّا
تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝
اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝
قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّخَمْسٌ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً وَّعِشْرُوْنَ رُكُوْعًا
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ

६ सूरतुल् अन्आमि ५५

(मक्की) इस सूर: मे अरबी के १२९३५ अक्षर, ३१०० शब्द, १६५ आयते और २० रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व ज-अ-लज़्ज़ुलुमाति वन्नू - र ط सुम्मल्लज़ी - न क - फ़रू बिरब्बिहिम् यअ् - दिलून (१)

★रु १५/५ आ ७ ▨ व न वी स ★रु १६/६ आ ५

ईसा बिन मरयम ने दुआ की कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर आसमान से ख्वान नाज़िल फरमा कि हमारे लिए (वह दिन) ईद करार पाए यानी हमारे अगलो और पिछलो (सब) के लिए और वह तेरी तरफ से निशानी हो और हमे रिज़्क दे, तू बेहतर रिज़्क देने वाला है (११४) ख़ुदा ने फरमाया, मैं तुम पर ज़रूर ख्वान नाज़िल फरमाऊगा, लेकिन जो इस के बाद तुम मे से कुफ़ करेगा, उसे ऐसा अज़ाब दूंगा कि दुनिया वालो मे किसी को ऐसा अज़ाब न दूगा।' (११५) ★

और (उस वक्त को भी याद रखो) जब ख़ुदा फरमाएगा, ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुमने लोगो से कहा था कि ख़ुदा के सिवा मुझे और मेरी मा को माबूद मुकर्रर करो? वह कहेगे कि तू पाक है, मुझे कब मुनासिब था कि मैं ऐसी बात कहता, जिस का मुझे कुछ हक नही ▨ अगर मैं ने ऐसा कहा होगा, तो तुझ को मालूम होगा, (क्यो कि) जो बात मेरे दिल में है, तू उसे जानता है और जो तेरे ज़मीर मे है, उसे मैं नही जानता, बेशक तू गैबो का जानने वाला है। (११६) मैं ने उन से कुछ नही कहा, अलावा इस के, जिस का तू ने हुक्म दिया है, वह यह है कि तुम ख़ुदा की इबादत करो, जो मेरा और तुम्हारा सब का परवरदिगार है और जब तक मैं उन मे रहा उन (के हालात) की खबर रखता रहा। जब तू ने मुझे दुनिया से उठा लिया तो तू उन का निगरा था और तू हर चीज मे ख़बरदार है। (११७) अगर तू उन को अजाब दे, तो ये तेरे बन्दे है और अगर बख्श दे तो (तेरी मेहरबानी है।) बेशक तू गालिब (और) हिक्मत वाला है। (११८) ख़ुदा फरमायेगा कि आज वह दिन है कि सच्चो को उन की सच्चाई ही फायदा देगी। उन के लिए बाग है, जिन के नीचे नहरे बह रही है। हमेशा-हमेशा उन मे बसते रहेगे। ख़ुदा उन से ख़ुश है और वे ख़ुदा से ख़ुश है, यह बडी कामियाबी है। (११९) आसमान और जमीन और जो कुछ इन (दोनो) मे है, सब पर ख़ुदा ही की बादशाही है और वह हर चीज पर कुदरत रखता है। (१२०) ★

६ सूरः अन्आम ५५

सूर अन्आम मक्की है और इस मे एक सौ पैंसठ आयते और बीस रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हर तरह की तारीफ ख़ुदा ही को मुनासिब है जिस ने आसमानो और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरा और रोशनी बनायी, फिर भी काफिर (और चीजो को) ख़ुदा के बराबर ठहराते

---

१ ये हवारी या तो ज़रूरतमद थे या दिल के इत्मीनान के लिए उन्हो ने माइद (ख्वान) उतरने की दर्ख्वास्त की थी। कुछ भी हो ख़ुदा ने उन पर खाने का ख्वान नाज़िल फरमाया। तफसीर लिखने वालो ने लिखा है कि ख्वान इतवार के दिन नाज़िल हुआ था, जो ईसाइयो की ईद है।

★रु १५/५ आ ७ ▨ व न बी स ★रु १६/६ आ ५

हुवल्लज़ी ख़-ल-ककुम् मिन् तीनिन् सुम्-म क़ज़ा अ-ज-लन् ط व अ-जलुम्-मुसम्मन् अिन्दहू सुम्-म अन्तुम् तम्तरून (२) व हुवल्लाहु फ़िस्समावाति व फ़िल्अर्ज़ि ط यअ् - लमु सिर्रकुम् व जह-रकुम् व यअ-लमु मा तक्सिबून (३) व मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम्-मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अन्हा मुअ्-रिज़ीन (४) फ़-क़द् कज्ज़बू बिल्हक़्क़ि लम्मा जा - अहुम् ط फसौ - फ़ यअ्तीहिम् अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (५) अ-लम् यरौ कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निम्-मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि मा लम् नुमक्किल्लकुम् व अर्सल्नस्समा-अ अलैहिम् मिद्रारव्-व ज-अल्नल्-अन्हा-र तज्री मिन् तह्तिहिम् फ़ - अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अन्शअ्ना मिम्बअ्-दिहिम् क़र्नन् आख़रीन (६) व लौ नज्ज़ल्ना अलै-क किताबन् फ़ी क़िर्तासिन् फ़-ल-मसूहु बिऐदीहिम् ल-क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (७) व कालू लौला उन्ज़ि-ल अलैहि म-लकुन् ط व लौ अन्ज़ल्ना म-ल-कल्-लक़ुज़ियल्-अम्रु सुम्-म ला युन्ज़रून (८) व लौ ज-अल्नाहु म-ल-कल्ल-जअल्नाहु रजुलव्-व ल-लबस्ना अलैहिम् मा यल्बिसून (९) व ल-क़दिस्तुह्ज़ि - अ बिरुसुलिम् - मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (१०) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि सुम्मन्ज़ुरू कै - फ़ का-न आक़िबतुल्-मुकज़्ज़िबीन (११) क़ुल् लिमम्मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط क़ुल् लिल्लाहि ط क-त-ब अला नफ़्सिहिर्रह्-म-त ط ल-यज्मअ़न्नकुम् इला यौमिल्क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि ط अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् फहुम् ला युअ्मिनून (१२)

ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن طِينٍ
ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا ۖ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُ ۖ ثُمَّ أَنتُمْ تَمْتَرُونَ ۝ وَهُوَ
اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ ۖ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ۝
وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝
فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ مَّكَّنَّاهُمْ
فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّن لَّكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِم مِّدْرَارًا وَ
جَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا
مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝ وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ
فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝
وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ
لَا يُنظَرُونَ ۝ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا
يَلْبِسُونَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ
سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ
ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ قُل لِّمَن مَّا فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۖ قُل لِّلَّهِ ۚ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

★रु. १/७ आ १०

है। (१) वही तो है, जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर (मरने का) एक वक्त मुकर्रर कर दिया और एक मुद्दत उस के यहा और है, फिर भी तुम (ऐ काफिरो! खुदा के बारे मे) शक करते हो। (२) और आसमान और ज़मीन मे वही (एक) खुदा है, तुम्हारी छिपी और खुली, सब बातें जानता है, और तुम जो अमल करते हो, सब का जानकार है। (३) और खुदा की निशानियो मे से कोई निशानी उन लोगो के पास नही आती, मगर ये उस से मुंह फेर लेते हैं। (४) जब उन के पास हक आया, तो उस को भी झुठला दिया, सो उन को उन चीज़ों का जिन का ये मज़ाक उडाते है, बहुत जल्द अंजाम मालूम हो जाएगा। (५) क्या उन्हो ने नही देखा कि हम ने उन से पहले कितनी उम्मतो को हलाक कर दिया, जिन के पांव मुल्क मे ऐसा जमा दिए थे कि तुम्हारे पाव भी ऐसे नही जमाए और उन पर आसमान से लगातार मेह बरसाया और नहरे बना दी जो उन मे (मकानो के) नीचे बह रही थी। फिर उन को उन के बाद गुनाहो की वजह से हलाक कर दिया और उन के बाद और उम्मते पैदा कर दी। (६) और अगर हम तुम पर कागज़ो पर लिखी हुई किताब नाज़िल करते और ये उसे अपने हाथो से टटोल लेते तो जो काफिर है वह यही कह देते कि यह तो (साफ़ और) खुला जादू है। (७) और कहते है कि इन (पैगम्बर) पर फ़रिश्ता क्यो नाज़िल न हुआ, (जो उन की तस्दीक करता)। अगर हम फरिश्ता नाज़िल करते, तो काम ही का फैसला हो जाता, फिर उन्हें (बिल्कुल) मोहलत न दी जाती। (८) और हम किसी फरिश्ते को भेजते, तो उस मर्द की सूरत मे भेजते और जो शुब्हा (अब) करते है, उसी शुब्हे मे उन्हे फिर डाल देते।[1] (९) और तुम से पहले भी पैगम्बरो के साथ मज़ाक होता रहा है, सो जो लोग उन मे मे मज़ाक किया करते थे, उन को मज़ाक की सज़ा ने आ घेरा। (१०) ★

कहो कि (ऐ रिसालत के इंकारियो!) मुल्क मे चलो-फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालो का क्या अंजाम हुआ। (११) (उन से) पूछो कि आसमान और ज़मीन मे जो कुछ है, किस का है? कह दो खुदा का। उसने अपनी (पाक) ज़ात पर रहमत को लाज़िम कर लिया है। वह तुम सब को कियामत के दिन, जिसमे कुछ भी शक नही, ज़रूर जमा करेगा। जिन लोगो ने अपने को नुक्सान

---

१. मुश्रिको ने कहा था कि पैगम्बर फरिश्ता क्यो नही आता, इस पर हक तआला ने यह फरमाया कि जैसे अब आदमी की पैगम्बरी के कायल नही हैं, उस वक्त भी ताना करते कि यह तुम्हारी तरह का आदमी है।

व लहू मा स-क-न फ़िल्लैलि वन्नहारि ط व हुवस्समीअुल्-अ़लीम (१३) क़ुल् अग़ैरल्लाहि अत्तख़िज़ु वलिय्यन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि व हु-व युत्अिमु व ला युत्अमु ط क़ुल् इन्नी उमिर्तु अन् अकू-न अव्व-ल मन् अस्ल-म व ला तकूनन्-न मिनल्मुश्रिकीन (१४) क़ुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (१५) मंय्युस्रफ़् अ़न्हु यौमइज़िन् फ़-क़द् रहि़महू ط व ज़ालिकल्फ़ौज़ुल्मुबीन (१६) व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फला काशि-फ़ लहू इल्ला हु-व ط व इंय्यम्सस-क बिख़ैरिन् फ़हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् कदीर (१७) व हुवल्क़ाहिरू फ़ौ-क अ़िबादिही ط व हुवल्-ह़कीमुल्-ख़बीर (१८) क़ुल् अय्यु शैइन् अक्बरु शहा-द-तन् ط क़ुलिल्लाहु قف لا शहीदुम्-बैनी व बैनकुम् قف व ऊहि़-य इलय्-य हाज़ल्क़ुर्-आनु लिउन्ज़िर-कुम् बिही व मम्-ब-ल-ग़ ط अइन्नकुम् ल-तश्हदू-न अन्-न म-अ़ल्लाहि आलि-ह-तन् उख़रा ط क़ुल् ला अश्हदु ج क़ुल् इन्नमा हु-व इलाहुंव्वाहि़दुंव्-व इन्ननी बरी-उम्-मिम्मा तुश्रिकून ▨ (१९) अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ्-रिफ़ूनहू कमा यअ्-रिफ़ू-न अब्ना-अहुम् ▨ अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून ★ (२०) व मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही ط इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (२१) व यौ-म नह़्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्-म नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू ऐ-न शुरका-उकुमुल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अुमून (२२) सुम-म लम् तकुन् फ़ित्नतुहुम् इल्ला अन् क़ालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन (२३) उन्ज़ुर् कै-फ़ क-ज़बू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (२४)

الانعام ١٠٣

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳﴾ قُلْ اَغَيْرَ
اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ قُلْ
اِنِّيْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۴﴾
قُلْ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾ مَنْ
يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۶﴾ وَاِنْ
يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ
فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۷﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَهُوَ الْحَكِيْمُ
الْخَبِيْرُ ﴿۱۸﴾ قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللّٰهُ شَهِيْدٌ بَيْنِيْ وَ
بَيْنَكُمْ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْ بَلَغَ اَئِنَّكُمْ
لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ قُلْ اِنَّمَا
هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْۤءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ
بِاٰيٰتِهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ
نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۲۲﴾
ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿۲۳﴾
اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

منزل ٢

▨ व लाज़िम ▨ व लाज़िम ★ रु २/८ आ १०

मे डाल रखा है, वे ईमान नही लाते। (१२) और जो मख्लूक रात और दिन मे बसती है, सब उसी की है और वह सुनता-जानता है। (१३) कहो, क्या मैं खुदा को छोड़ कर किसी और को मददगार बनाऊं कि (वही तो) आसमानो और ज़मीन का पैदा करने वाला है और वही (सब को) खाना देता है और खुद किसी से खाना नही लेता।[1] (यह भी) कह दो कि मुझे यह हुक्म हुआ है कि मैं सब से पहले इस्लाम लाने वाला हू और यह कि तुम (ऐ पैगम्बर !) मुश्रिको में न होना। (१४) (यह भी) कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की ना-फरमानी करूं, तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है। (१५) जिस शख्स से उस दिन अज़ाब टाल दिया गया, उस पर खुदा ने (बडी) मेहरबानी फरमायी और यह खुली कामियाबी है। (१६) और अगर खुदा तुम को कोई सख्ती पहुचाए, तो इस के सिवा उस को कोई दूर करने वाला नही और अगर नेमत (व राहत) अता करे तो (कोई उस को रोकने वाला नही), वह हर चीज पर कादिर है। (१७) और वह अपने बन्दो पर गालिब है और वह हकीम और खबरदार है। (१८) उन से पूछो कि सब से बढ कर (इंसाफ़ के क़रीब) किस की गवाही है। कह दो कि खुदा ही मुझ मे और तुम मे गवाह है और यह क़ुरआन मुझ पर इस लिए उतारा गया है कि इसके ज़रिए से तुम को और जिस शख्स तक वह पहुच सके उस को आगाह कर दू। क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि खुदा के साथ और भी माबूद हैं। (ऐ मुहम्मद !) कह दो कि मैं तो ऐसी गवाही नही देता। कह दो कि सिर्फ वही एक माबूद है और जिन को तुम लोग शरीक बनाते हो, मैं उन से बेज़ार हू ▧ (१९) जिन लोगो को हमने किताब दी है, वे इन (हमारे पैगम्बर) को इस तरह पहचानते है, जिस तरह अपने बेटो को पहचाना करते हैं, ▧ जिन्होने अपने आप को नुक्सान मे डाल रखा है, वे ईमान नही लाते। (२०)✱

और उस शख्स से ज्यादा कौन जालिम है, जिसने खुदा पर झूठ गढा या उसकी आयतो को झुठलाया। कुछ शक नही कि जालिम लोग निजात नही पाएगे। (२१) और जिस दिन हम सब लोगो को जमा करेगे, फिर मुश्रिको से पूछेंगे कि (आज) वे तुम्हारे शरीक कहा है, जिन का तुम्हे दावा था ? (२२) तो उन से कुछ उज़्र (बहाना) न बन पडेगा (और) इस के अलावा (कुछ चारा न होगा) कि कहें, खुदा की कसम ! जो हमारा परवरदिगार है, हम शरीक नही बनाते थे। (२३) देखो, वे अपने ऊपर कैसा झूठ बोले और जो कुछ ये झूठ गढा करते थे, सब उन मे जाता

१ क्योकि वह खाने-पीने की जरूरत से पाक है। उसे इस की जरूरत ही नही।

व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअु इलै-क ج व ज-अ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन्
अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक्‌रन् ط व इंय्यरौ कुल्-ल आयतिल्ला
युअ्मिनू बिहा ط हत्ता इज़ा जा-ऊ-क युजादिलून-क यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू
इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (२५) व हुम् यन्हौ-न अन्हु
व यन्औ - न अन्हु ج व इंय्युह्लिकू - न
इल्ला अन्फुसहुम् व मा यश्अुरून (२६)
व लौ तरा इज़् वुक़िफ़ू अ़लन्नारि
फ़क़ालू यालैतना नुरद्दु व ला नुकज़्ज़ि-ब
बिआयाति रब्बिना व नकू-न मिनल्-
मुअ्मिनीन (२७) बल् बदा लहुम् मा
कानू युख़्फ़ू-न मिन् क़ब्लु ط व लौ रुद्दू
ल-आ़दू लिमा नुहू अ़न्हु व इन्नहुम्
लकाज़िबून (२८) व क़ालू इन् हि-य
इल्ला हयातुनद्दुन्या व मा नह्नु
बिमब्अूसीन (२९) व लौ तरा इज़्
वुक़िफ़ू अ़ला रब्बिहिम् ط क़ा - ल अलै-स

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ
وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِنْ يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا ۚ حَتَّىٰ إِذَا
جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْأَوْنَ عَنْهُ ۖ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا
يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِآيَاتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾ بَلْ
بَدَا لَهُمْ مَا كَانُوا يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ
وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا
بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾
قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ
ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣١﴾ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَ
لَهْوٌ ۖ وَلَلدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾ قَدْ
نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ
الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ
فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتَّىٰ أَتَاهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ

منزل

हाज़ा बिल्हक़्क़ि ط क़ालू बला व रब्बिना ط क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा
कुन्तुम् तक्फ़ुरून ★ (३०) क़द् ख़सिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ा-इल्लाहि ط
हत्ता इज़ा जा-अत्-हुमुस्साअ़तु बग़्-त-तन् क़ालू या हस्-र-तना अ़ला
मा फ़र्रत्ना फ़ीहा ز व हुम् यह्मिलू-न औज़ारहुम् अ़ला ज़ुहूरिहिम् ط
अला सा-अ मा यज़िरून (३१) व मल्हयातुद्दुन्या इल्ला लअिबुव्-व
लह्वुन् ط व लद्दारुल् - आख़िरतु ख़ैरुल् - लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न ط अ-फ़ला
तअ्‌क़िलून (३२) क़द् नअ्‌लमु इन्नहू ल-यह्ज़ुनुकल्लज़ी यक़ूलू-न फ़-इन्नहुम्
ला युकज़्ज़िबू-न-क व लाकिन्नज़्ज़ालिमी-न बिआयातिल्लाहि यज्हदून
(३३) व ल-क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलुम्मिन् क़ब्लि-क फ़-स-बरू अ़ला मा
कुज़्ज़िबू व ऊज़ू हत्ता अताहुम् नस्रुना ج व ला मुबद्दि-ल
लिकलिमातिल्लाहि ج व ल-क़द् जा-अ-क मिन् न-बइल् - मुर्सलीन (३४)

★रु ३/६ आ १०

रहा। (२४) और उन मे कुछ ऐसे है कि तुम्हारी (बातो की) तरफ कान रखते हैं और हम ने उन के दिलो पर तो परदे डाल दिए हैं कि उन को समझ न सके और कानो मे बोझ पैदा कर दिया है (कि सुन न सके) और अगर ये तमाम निशानिया भी देख ले तब भी उन पर ईमान न लाए, यहा तक कि जब तुम्हारे पास तुम से बहस करने को आते है, तो जो काफिर हैं, कहते हैं, यह (कुरआन) और कुछ भी नही, सिर्फ पहले लोगो की कहानिया है। (२५) वे इस से (और को भी) रोकते है और खुद भी परे रहते है, मगर (इन बातो से) अपने आप ही को हलाक करते हैं और (इस से) बे-खबर है। (२६) काश, तुम (उन को उस वक्त) देखो, जब ये दोज़ख के किनारे खडे किये जाएंगे और कहेगे कि ऐ काश ! हम फिर (दुनिया मे) लौटा दिए जाएं, ताकि अपने परवरदिगार की आयतो को झुठलाएं नही और मोमिन हो जाएं। (२७) हा, ये जो कुछ पहले छिपाया करते थे, (आज) उन पर ज़ाहिर हो गया और अगर ये (दुनिया मे) लौटाए भी जाएं, तो जिन (कामो) से उनको मना किया गया था, वही फिर करने लगे। कुछ शक नही कि ये झूठे है। (२८) और कहते हैं कि हमारी जो दुनिया की जिंदगी है, बस यही (ज़िंदगी) है और हम (मरने के बाद) फिर ज़िंदा नही किये जाएंगे। (२९) और काश ! तुम (उन को उस) वक़्त देखो, जब ये अपने परवरदिगार के सामने खडे किये जाएगे और वह फरमाएगा, क्या यह (दोबारा ज़िंदा होना) हक नही, तो कहेगे, क्यो नही, परवरदिगार की कसम ! (बिल्कुल हक है।) खुदा फरमाएगा, अब कुफ्र के बदले (जो दुनिया मे करते थे) अज़ाब (के मज़े) चखो। (३०) ★

जिन लोगो ने खुदा के सामने हाज़िर होने को झूठ समझा, वे घाटे मे आ गये, यहा तक कि जब उन पर कियामत यकायक आ मौजूद होगी, तो बोल उठेंगे कि (हाय !) उस खता पर अफसोस है, जो हमने कियामत के बारे मे की और वह अपने (आमाल के) बोझ अपनी पीठो पर उठाए हुए होगे। देखो, जो बोझ ये उठा रहे है, बहुत बुरा है। (३१) और दुनिया की ज़िंदगी तो एक खेल और मशगला है और बहुत अच्छा घर तो आखिरत का घर है (यानी) उन के लिए, जो (ख़ुदा से) डरते है, क्या तुम समझते नही ? (३२) हम को मालूम है कि इन काफिरो की बातें तुम्हे रंज पहुचाती हैं, (मगर) ये तुम्हे झुठलाते नही, बल्कि ज़ालिम खुदा की आयतो से इंकार करते है। (३३) और तुम से पहले भी पैगम्बर झुठलाए जाते रहे, तो वे झुठलाने और तक्लीफ देने पर सब्र करते रहे, यहा तक कि उन के पास हमारी मदद पहुंचती रही और खुदा की बातो को कोई भी बदलने वाला नही। और तुम को पैगम्बरो (के अहवाल) की खबर पहुच चुकी है, (तो तुम भी

★रु. ३/६ आ १०

व इन् का-न कबु-र अ़लै-क इअ्-राज़ुहुम् फ़इनिस्त-तअ्-त अन् तब्तगि-य न-फ़-कन् फ़िल्अर्ज़ि औ सुल्लमन् फ़िस्समाइ फ़-तअ्तियहुम् बिआयतिन्, व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-म-अ़हुम् अ़-लल्हुदा फ़ला तकूनन्-न मिनल्-जाहिलीन (३५) इन्नमा यस्तजीबुल्लज़ी-न यस्मअ़ू-न व्लमौता यब्असुहुमुल्लाहु सुम्-म इलैहि युर्जअ़ून (३६) व क़ालू लौला नुज़्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही, कुल् इन्नल्ला-ह क़ादिरुन् अ़ला अय्युनज़्ज़ि-ल आयतव्-व लाकिन्-न अक्सरहुम् ला यअ्-लमून (३७) व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला ताइरिंय्यतीरु बिजनाहैहि इल्ला उ-ममुन् अम्सालुकुम्, मा फ़र्रत्ना फ़िल्-किताबि मिन् शैइन् सुम्-म इला रब्बिहिम् युह्शरून (३८) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना सुम्मुव्-व बुक्मुन् फ़िज़्ज़ुलुमाति, मय्य-श-इल्लाहु युज़्लिल्हु, व मय्यशअ् यज्अल्हु अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (३९)

<table><tr><td>

الانعام ١٠٥

لكلمت الله ولقد جاءك من نباى المرسلين ۝ وان كان كبر

عليك اعراضهم فان استطعت ان تبتغى نفقا فى الارض او

سلما فى السماء فتاتيهم باية ولو شاء الله لجمعهم على

الهدى فلا تكونن من الجهلين ۝ انما يستجيب الذين يسمعون

والموتى يبعثهم الله ثم اليه يرجعون ۝ وقالوا لولا نزل عليه

اية من ربه قل ان الله قادر على ان ينزل اية ولكن اكثرهم

لا يعلمون ۝ وما من دابة فى الارض ولا طئر يطير بجناحيه

الا امم امثالكم ما فرطنا فى الكتب من شىء ثم الى ربهم

يحشرون ۝ والذين كذبوا بايتنا صم وبكم فى الظلمت من

يشا الله يضلله ومن يشا يجعله على صراط مستقيم ۝ قل

ارءيتكم ان اتىكم عذاب الله او اتتكم الساعة اغير الله

تدعون ان كنتم صدقين ۝ بل اياه تدعون فيكشف ما

تدعون اليه ان شاء وتنسون ما تشركون ۝ ولقد ارسلنا الى

امم من قبلك فاخذنهم بالباساء والضراء لعلهم يتضرعون ۝

فلولا اذ جاءهم باسنا تضرعوا ولكن قست قلوبهم وزين

لهم الشيطن ما كانوا يعملون ۝ فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا

عليهم ابواب كل شىء حتى اذا فرحوا بما اوتوا اخذنهم بغتة

</td></tr></table>

क़ुल् अ-रएतकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि औ अतत्कुमुस्साअ़तु अग़ैरल्लाहि तद्अ़ू-न इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४०) बल् इय्याहु तद्अ़ू-न फ़-यक्शिफु मा तद्अ़ू-न इलैहि इन् शा-अ व तन्सौ-न मा तुश्रिकून ★ (४१) व ल-कद् अर्सल्ना इला उममिम्मिन् क़ब्लि-क फ़-अ-ख़ज़्नाहुम् बिल्बअ्साइ वज़्ज़र्राइ ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़र्रअ़ून (४२) फ़लौला इज् जाअहुम् बअ्सुना तज़र्रअ़ू व लाकिन् क़-सत् क़ुलूबुहुम् व ज़य्-य-न लहुमुश्शैतानु मा कानू यअ्-मलून (४३) फ-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही फ़-तह्ना अ़लैहिम् अब्वा-ब कुल्लि शैइन्, हत्ता इज़ा फ़रिहू बिमा ऊतू अ-ख़ज़्नाहुम् बग्-त-तन् फ-इज़ा हुम् मुब्लिसून (४४)

● नि. १/२ व गु फ़ व. मन्ज़िल ★ रु ४/१० आ ११

सब्र से काम लो)। (३४) और अगर उन का एराज़ तुम पर बोझ होता है, तो अगर ताकत हो तो ज़मीन मे कोई सुरंग ढूढ निकालो या आसमान में सीढी (तलाश करो), फिर उन के पास कोई मोजज़ा लाओ और अगर खुदा चाहता तो सब को हिदायत पर ,जमा कर देता, पस तुम हर गिज़ ना-दानों मे न होना● (३५) बात यह है कि (हक़ को) कुबूल वही करते है, जो सुनते भी हैं ▨ और मुर्दों को तो खुदा (कियामत ही को) उठाएगा, फिर उसी की तरफ लौटकर जाएंगे।[1] (३६) ▨ और कहते है कि उन पर उन के परवरदिगार के पास से कोई निशानी क्यो नाज़िल नही हुई। कह दो कि खुदा निशानी उतारने पर कुदरत रखता है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (३७) और ज़मीन मे जो चलने फिरने वाला (हैवान) या दो परो से उडने वाला जानवर है, उन की भी तुम लोगो की तरह जमाअतें है। हमने किताब (यानी लौहे मह्फूज़) मे किसी चीज़ (के लिखने) मे कोताही नही की, फिर सब अपने परवरदिगार की तरफ जमा किये जाएंगे। (३८) और जिन लोगो ने हमारी आयतो को झुठलाया, वे बहरे और गूगे है। (इसके अलावा) अंधेरे मे (पड़े हुए), जिसको खुदा चाहे, गुमराह कर दे और जिसे चाहे सीधे रास्ते पर चला दे। (३९) कहो, (काफिरो!) भला देखो तो, अगर तुम पर खुदा का अजाब आ जाए या कियामत आ मौजूद हो, तो क्या तुम (ऐसी हालत मे) खुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे? अगर सच्चे हो (तो बताओ)। (४०) (नही) बल्कि, (मुसीबत के वक्त तुम) उसी को पुकारते हो, तो जिस दुख के लिए उसे पुकारते हो, वह अगर चाहता है, तो उसको दूर कर देता है और जिनको तुम शरीक बनाते हो, (उस वक्त) उन्हे भूल जाते हो। (४१) ★

और हमने तुम से पहले बहुत-सी उम्मतो की तरफ पैगम्बर भेजे, फिर (उन की ना-फरमानियो की वजह से) हम उन्हे सख्तियो और तक्लीफो मे पकडते रहे, ताकि आजिज़ी करें। (४२) तो जब उन पर अज़ाब आता रहा, क्यो नही आजिज़ी करते रहे, मगर उन के तो दिल ही सख्त हो गये थे और जो वे काम करते थे, शैतान उन को (उन की नज़रो मे) सजा कर दिखाता था। (४३) फिर जब उन्होने उस नसीहत को, जो उन को की गयी थी भुला दिया, तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहा तक कि जब उन चीज़ो से जो उन को दी गयी थी, खूब खुश हो गये, तो हमने उन को यकायक पकड़ लिया और वे उस वक्त ना-उम्मीद हो कर रह गये। (४४) गरज़

१ यानी तुम्हारी बात तो वही लोग कुबूल करते हैं जो सुनते भी हैं और ये कुफ्फार तो मुर्दा दिल है, ये क्या सुनने लगे। इन मुर्दों को तो खुदा कियामत ही के दिन उठाएगा और उन के आमाल का बदला देगा।

फ़क़ुति़ - अ़ दाबिरुल् - क़ौमिल्लज़ी-न ज़-लमू ط वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् - आ़लमीन (४५) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अ-ख़-ज़ल्लाहु सम्अ़कुम् व अब्सा़रकुम् व ख़-त-म अ़ला क़ुलूबिकुम् मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिही ط उन्ज़ुर् कै-फ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति सुम्-म हुम् यस्दिफ़ून (४६) क़ुल् अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि बग़्-त-तन् औ जह्-र-तन् हल् युह्लकु इल्लल्-क़ौमुज़्ज़ालिमून (४७) व मा नुर्सिलुल्-मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न ج फ़-मन् आम-न व अस्-ल-ह़ फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (४८) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना यमस्सुहुमुल्-अ़ज़ाबु बिमा कानू यफ़्सुक़ून (४९) क़ुल् ला अक़ूलु लकुम् अ़िन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ्-लमुल्ग़ै-ब व ला अक़ूलु लकुम् इन्नी म-लकुन् ج इन् अत्तबिअ़ु इल्ला मा यूहा इलय्-य ط क़ुल् हल् यस्तविल्अअ्-मा वल्बसी़रु ط अ-फ़ला त-त-फ़क्करून ★ (५०) व अन्ज़िर् बिहिल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न अंय्युह़्शरू इला रब्बिहिम् लै-स लहुम् मिन् दूनिही वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअ़ुल्-ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून (५१) व ला तत़्रुदिल्लज़ी-न यद्अ़ू-न रब्बहुम् बिल्ग़दाति़ वल्अ़शिय्यि युरीदू-न वज्हहू ط मा अ़लै - क मिन् ह़िसाबिहिम् मिन् शैइंव्-व मा मिन् ह़िसाबि-क अ़लैहिम् मिन् शैइन् फ़-तत़्रुदहुम् फ़-तकू-न मिनज़्ज़ालिमीन (५२) व कज़ालि-क फ़-तन्ना बअ्-ज़हुम् बिबअ्-ज़िल् -लियक़ूलु अ-हा-उला-इ मन्नल्लाहु अ़लैहिम् मिम्बैनिना ط अलैसल्लाहु बिअअ्-ल-म बिश्शाकिरीन (५३) व इज़ा जा-अकल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिआयातिना फ़क़ुल् सलामुन् अ़लैकुम् क-त-ब रब्बुकुम् अ़ला नफ़्सिहिर्रह्-म-त لا अन्नहू मन् अ़मि-ल मिन्कुम् सूअम् - बिजहालतिन् सुम्-म ता-ब मिम्बअ्-दिही व अस्-ल-ह़ फ़-अन्नहू ग़फ़ूरुर्रहीम (५४)

الانعام ١٠٦

فاذا هم مبلسون ۝ فقطع دابر القوم الذين ظلموا والحمد لله
رب العلمين ۝ قل ارءيتم ان اخذ الله سمعكم وابصاركم و
ختم على قلوبكم من اله غير الله ياتيكم به انظر كيف
نصرف الايت ثم هم يصدفون ۝ قل ارءيتكم ان اتكم عذاب
الله بغتة او جهرة هل يهلك الا القوم الظلمون ۝ وما
نرسل المرسلين الا مبشرين ومنذرين فمن امن واصلح
فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ والذين كذبوا بايتنا
يمسهم العذاب بما كانوا يفسقون ۝ قل لا اقول لكم عندي
خزائن الله ولا اعلم الغيب ولا اقول لكم اني ملك ان اتبع الا
ما يوحى الي قل هل يستوي الاعمى والبصير افلا تتفكرون ۝
وانذر به الذين يخافون ان يحشروا الى ربهم ليس لهم من
دونه ولي ولا شفيع لعلهم يتقون ۝ ولا تطرد الذين يدعون
ربهم بالغدوة والعشي يريدون وجهه ما عليك من حسابهم
من شيء وما من حسابك عليهم من شيء فتطردهم فتكون
من الظلمين ۝ وكذلك فتنا بعضهم ببعض ليقولوا اهؤلاء من
الله عليهم من بيننا اليس الله باعلم بالشكرين ۝ واذا جاءك
الذين يؤمنون بايتنا فقل سلم عليكم كتب ربكم على نفسه

★रु. ५/११ आ ६

ज़ालिम लोगो की जड काट दी गयी और सब तारीफ खुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही के लिए है। (४५) (इन काफिरो से) कहो कि भला देखो तो, अगर खुदा तुम्हारे कान और आखे छीन ले और तुम्हारे दिलो पर मुहर लगा दे तो खुदा के सिवा कौन-सा माबूद है जो तुम्हे ये नेमते फिर बख्शे ? देखो हम किस-किस तरह अपनी आयते बयान करते है। फिर भी ये लोग मुंह फेरे जाते है। (४६) कहो कि भला बताओ तो अगर तुम पर खुदा का अज़ाब बेखबरी मे या खबर आने के बाद आये, तो क्या ज़ालिम लोगो के सिवा कोई और भी हलाक होगा ? (४७) और हम जो पैग़म्बरो को भेजते रहे है, तो खुशखबरी सुनाने और डराने को, फिर जो शख्स ईमान लाये और भला आदमी हो जाए, तो ऐसे लोगो को न कुछ खौफ होगा और न वे गमगीन होंगे। (४८) और जिन्होंने हमारी आयतो को झुठलाया, उन की ना-फरमानियो की वजह से उन्हे अजाब होगा। (४९) कह दो कि मैं तुम से यह नही कहता कि मेरे पास अल्लाह तआला के खज़ाने है और न (यह कि) मैं गैब जानता हू और न तुम से यह कहता हू कि मैं फरिश्ता हू। मैं तो सिर्फ उस हुक्म पर चलता हू जो मुझे (खुदा की तरफ से) आता है, कह दो कि भला अधा और आख वाले बराबर होते है ? तो फिर तुम गौर क्यो नही करते ? (५०) ★

और जो लोग खौफ रखते है कि अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर किये जाएगे (और जानते है कि) उस के सिवा न तो कोई उनका दोस्त होगा और न सिफारिश करने वाला, उन को इस (कुरआन) के ज़रिए से नसीहत करो ताकि परहेजगार बनें। (५१) और जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार से दुआ करते है और उस की जात की तलब मे है, उन को (अपने पास से) मत निकालो। उनके हिसाब (आमाल) की जवाब देही तुम पर कुछ नही और तुम्हारे हिसाब की जवाब देही उन पर कुछ नही। (पस ऐसा न करना) अगर उन को निकालोगे, तो ज़ालिमो मे हो जाओगे।[1] (५२) और इसी तरह हमने कुछ लोगो की कुछ से आज़माइश की है कि (जो दौलतमद है, वे गरीबो के बारे मे) कहते है, क्या यही लोग है, जिन पर खुदा ने हम मे मे फज्ल किया है। (खुदा ने फरमाया) भला खुदा शुक्र करने वालो को नही जानता। (५३) और जब तुम्हारे पास ऐसे लोग आया करे, जो हमारी आयतो पर ईमान लाते है, तो (उनसे) 'सलामु अलैकुम' कहा करो। खुदा ने अपनी (पाक) ज़ात पर रहमत को ज़रूरी कर लिया है कि जो कोई तुम मे से नादानी से कोई बुरी हरकत कर बैठे, फिर उसके बाद तौबा कर ले और भला हो जाए, तो वह

---

१ साद बिन अबी वक्कास रिवायत करते हैं कि यह आयत हम छ आदमियो के हक मे उतरी है यानी साद रज़ि० और इब्ने मसूऊद रज़ि० और सुहैब रज़ि० और बिलाल रज़ि० और अम्मार रज़ि० और मिक्दाद रज़ि० के हक मे। हम लोग रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत मे हाज़िर होते तो करीब हो कर बैठते और बातें सुनते। कुरैश के कुफ्फार को यह बात ना-गवार हुई तो उन्हो ने आप से कहा कि हमारा दिल आप की बातें सुनने को तो चाहता है, लेकिन हम को इन गुलामो के साथ बैठते हुए शर्म आती है। पस जब हम आप के पास आया करें तो आप उन को उठा दिया कीजिए और जब चले जाया करें, तो फिर आप को अख्तियार है, उन को अपने पास बिठा लिया करें। आप ने इस बात को मान लिया, तो उन्हो ने कहा कि आप हमें इस मज्मून की एक तहरीर लिख दीजिए। आप ने कागज़ मगवाया और हज़रत अली रज़ि० को लिखने के लिए बुलाया। इतने मे हज़रत जिब्रील यह आयत ले कर आए कि अगरचे खुदा की तलब वाले गरीब हैं, लेकिन उन का ध्यान रखना चाहिए, तब से आप सल्ल० हमारा बहुत ध्यान रखने लगे।

★रु. ५/११ आ ९

व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व लितस्तबी - न सबीलुल् - मुज्रिमीन ★ (५५) क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्‌ - बुदल्लज़ी - न तद्‌ऊ - न मिन् दूनिल्लाहि ط क़ुल् ला अत्तबिअ़ु अह्‌वा - अकुम् ل क़द् ज़लल्तु इज़ंव्-व मा अ-न मिनल्-मुह्तदीन (५६) क़ुल् इन्नी अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी

وَإِذَا سَمِعُوا ٧ الأنعام

الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَ
أَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ
سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ ۚ قُلْ لَا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ
الْمُهْتَدِينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ ۚ مَا عِنْدِي
مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ الْحَقَّ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ
قُلْ لَّوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ وَاللَّهُ
أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ
الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ
بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى
ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ
فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ۝ ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ
الْحَقِّ ۚ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ۝ قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ
مِّنْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّئِنْ أَنْجَانَا
مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ

व कज़्ज़ब्तुम् बिही ط मा अ़िन्दी मा तस्तअ्‌ - जिलू - न बिही ط इनिल् - हुक्मु इल्ला लिल्लाहि ط यक़ुस्सुल्-हक़्-क़ व हु-व ख़ैरुल्फ़ासिलीन (५७) क़ुल् लौ अन्-न अ़िन्दी मा तस्तअ्‌-जिलू-न बिही लक़ुज़ियल्-अम्रु बैनी व बैनकुम् ط वल्लाहु अअ्‌-लमु बिज़्ज़ालिमीन (५८) व अ़िन्दहू मफ़ातिहुल्ग़ैबि ला यअ्‌-लमुहा इल्ला हु-व ط व यअ्‌-लमु मा फ़िल्बर्रि वल्बह्‌रि ط व मा तस्क़ुतु मिंव्व-र - क़तिन् इल्ला यअ्‌-लमुहा व ला हब्बतिन् फ़ी ज़ुलुमातिल्-अर्ज़ि व ला रत्‌बिंव्-व ला याबिसिन् इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन (५९) व हुवल्लज़ी य-त-वफ़्फ़ाकुम् बिल्लैलि व यअ्‌-लमु मा जरह्‌तुम् बिन्नहारि सुम्-म यब्‌असुकुम् फ़ीहि लियुक्ज़ा अ-जलुम् - मुसम्मन् ج सुम्-म इलैहि मर्जिअ़ुकुम् सुम्-म युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्‌-मलून ★ (६०) व हुवल्क़ाहिरु फ़ौ - क़ अ़िबादिही व युर्सिलु अ़लैकुम् ह़-फ़-ज़-तन् ط हत्ता इज़ा जा - अ अह़-दकुमुल्मौतु तवफ़्फ़त्हु रुसुलुना व हुम् ला युफ़र्रितून (६१) सुम्-म रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि ط अला लहुल्हुक्मु قف व हु - व अस्रअ़ुल्-हासिबीन (६२) क़ुल् मंय्युनज्जीकुम् मिन् ज़ुलुमातिल् - बर्रि वल्बह्‌रि तद्‌ऊनहू तज़र्रुअ़ंव् - व ख़ुफ़्य-तन् ج लइन् अन्जाना मिन् हाज़िही ल-न-कूनन्-न मिनश्शाकिरीन (६३) क़ुलिल्लाहु युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन् कुल्लि कर्बिन् सुम्-म अन्तुम् तुश्रिकून (६४)

★रु ६/१२ आ ५ ★रु. ७/१३ आ ५

बख़्शने वाला मेहरबान है। (५४) और इसी तरह हम अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते है (ताकि तुम लोग उन पर अमल करो) और इस लिए कि गुनाहगारो का रास्ता ज़ाहिर हो जाए। (५५) ✱

(ऐ पैगम्बर! कुफ्फार से) कह दो कि जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, मुझे उनकी इबादत से मना किया गया है। (यह भी) कह दो कि मैं तुम्हारी ख्वाहिशो की पैरवी नही करूंगा, ऐसा करू, तो गुमराह हो जाऊ और हिदायत पाये हुए लोगो मे न रहू। (५६) कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार की रोशन दलील पर हू और तुम उस को झुठलाते हो। जिस चीज़ (यानी अज़ाब) के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, वह मेरे पास नही है। (ऐसा) हुक्म अल्लाह ही के अख्तियार में है, वह सच्ची बात बयान फरमाता है और वह सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (५७) कह दो कि जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, अगर वह मेरे अख्तियार मे होती, तो मुझ मे और तुम मे फैसला हो चुका होता और खुदा जालिमो को खूब जानता है। (५८) और उसी के पास गैब की कुंजिया है, जिन को उस के सिवा कोई नही जानता और उसे जगलो और नदियो की सब चीज़ो का इल्म है और कोई पत्ता नही झडता, मगर वह उस को जानता है और जमीन के अंधेरो मे कोई दाना और कोई हरी और सूखी चीज़ नही है, मगर रोशन किताब मे (लिखी हुई) है। (५९) और वही तो है जो रात को (सोने की हालत मे) तुम्हारी रूह कब्ज़ कर लेता है और जो कुछ तुम दिन मे करते हो, उस की खबर रखता है, फिर तुम्हे दिन को उठा देता है, ताकि (यही सिलसिला जारी रख कर जिंदगी की) तै मुद्दत पूरी कर दी जाए, फिर तुम (सब) को उसी की तरफ लौट कर जाना है। (उस दिन) वह तुम को तुम्हारे अमल, जो तुम करते हो (एक-एक कर के) बताएगा ✱ (६०) और वह अपने बन्दो पर गालिब है और तुम पर निगहबान मुकर्रर किए रखता है, यहां तक कि जब तुम मे से किसी की मौत आती है, तो हमारे फरिश्ते उस की रूह कब्ज़ कर लेते हैं और वे किसी तरह की कोताही नही करते। (६१) फिर (कियामत के दिन तमाम) लोग अपने सच्चे मालिक अल्लाह के पास वापस बुलाये जाएंगे। सुन लो कि हुक्म उसी का है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (६२) कहो, भला तुम को जंगलो और नदियो के अंधेरो मे कौन खलासी देता है, (जब) कि तुम उसे आजिज़ी और (दिल मे) छिपी नियाज़मंदी से पुकारते हो (और कहते हो), अगर खुदा हम को इस (तगी) से निजात बख्शे, तो हम उस के बहुत शुक्रगुज़ार हो। (६३) कहो कि खुदा ही तुम को इस (तंगी) से और हर सख्ती से निजात बख्शता है, फिर (तुम) उस के साथ शिर्क करते हो। (६४) कह दो कि वह (इस पर भी) कुदरत रखता है

कुल् हुवल्क़ादिरु अ़ला अंय्यब्-अ़-स अ़लैकुम् अ़ज़ाबम्-मिन् फ़ौक़िकुम् औ मिन् तह़्ति अर्जुलिकुम् औ यल्बि-सकुम् शिय-अंव्-व युज़ी-क़ बअ्-ज़कुम् बअ्-स बअ्-ज़िन्, उन्ज़ुर् कै-फ़ नुसर्रिफुल्-आयाति ल-अ़ल्लहुम् यफ़्क़हून (६५) व कज्ज़-ब बिही क़ौमु-क व हुवल्ह़क़्क़ु ط कुल् लस्तु अ़लैकुम् बिवकील ط (६६) लिकुल्लि न-बइम् - मुस्तक़र्रुंव्-व सौ - फ़ तअ्-लमून (६७) व इज़ा रऐतल्लज़ी-न यख़ूज़ू-न फ़ी आयातिना फ़-अअ्-रिज़् अ़न्हुम् ह़त्ता यख़ूज़ू फ़ी ह़दीसिन् ग़ैरिही ط व इम्मा युन्सियन्नकश्-शैतानु फ़ला तक़्अुद् बअ्-दज़्ज़िक्रा म-अ़ल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (६८) व मा अ़-लल्लज़ी-न यत्तक़ू-न मिन् ह़िसाबिहिम् मिन् शैइंव - व लाकिन् ज़िक्रा ल-अ़ल्लहुम् यत्तकून (६९) व ज़रिल्लज़ीनत्-त-ख़ज़ू दीनहुम् लअ़िबंव - व लह्वंव् - व ग़र्रत्हुमुल् - ह़यातुद्दुन्या व ज़क्किर-बिही अन् तुब्-स-ल नफ़्सुम्-बिमा क-स-बत् ﷺ लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअ़ुन् ج व इन् तअ्-दिल् कुल्-ल अ़द्लिल्ला युअ्ख़ज् मिन्हा ط उला - इकल्लज़ी - न उब्सिलू बिमा क - सबू ج लहुम् शराबुम् - मिन् ط ह़मीमिंव्-व अ़ज़ाबुन् अलीमुम्-बिमा कानू यक्फ़ुरून ★ (७०) कुल् अ-नद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुना व ला यज़ुर्रुना व नुरद्दु अ़ला अअ्-क़ाबिना बअ्-द इज़् हदानल्लाहु कल्लज़िस्तह्वत्हुश्-शयातीनु फ़िल्अर्ज़ि ह़ैरा-न ص लहू अस्ह़ाबुंय्यद्अूनहू इलल्-हुदअ्तिना ط कुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्हुदा ط व उमिर्ना लिनुस्लि - म लिरब्बिल् - आ़लमीन ᐟ (७१) व अन् अक़ीमुस्सला-त वत्तक़ूहु ط व हुवल्लज़ी इलैहि तुह़्शरून (७२)

كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ
عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ
بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ۗ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ۝
وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۗ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۝ لِكُلِّ نَبَاٍ
مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا
فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۗ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ
الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَذَرِ
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ
اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا
شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ ۝ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ
عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِي
الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ اِنَّ
هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاتَّقُوْهُ ۗ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ

★रु ८/१४ आ १०

कि तुम पर ऊपर की तरफ से या तुम्हारे पाव के नीचे से अज़ाब भेजे या तुम्हे फ़िर्क़ा-फ़िर्क़ा कर दे और एक को दूसरे (से लड़ा कर आपस) की लडाई का मज़ा चखा दे। देखो हम अपनी आयतो को किस-किस तरह बयान करते है, ताकि ये लोग समझें। (६५) और इस (कुरआन) को तुम्हारी कौम ने झुठलाया, हालाकि वह हक है, कह दो कि मैं तुम्हारा दारोगा नही हू। (६६) हर खबर के लिए एक वक़्त मुकर्रर है और तुम को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (६७) और जब तुम ऐसे लोगो को देखो, जो हमारी आयतो के बारे मे बेहूदा बकवास कर रहे हों, तो उन से अलग हो जाओ, यहा तक कि वे और बातो मे लग जाएं और अगर (यह बात) शैतान तुम्हे भुला दे, तो याद आने पर ज़ालिम लोगो के साथ न बैठो। (६८) और परहेजगारो पर उन लोगो के हिसाब की कुछ भी जवाबदेही नही, हां नसीहत, ताकि वे भी परहेजगार हो। (६९) और जिन लोगो ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है और दुनिया की जिंदगी ने उन को धोखे मे डाल रखा है, उन से कुछ काम न रखो। हा, इस (कुरआन) के जरिए से नसीहत करते रहो, ताकि (कियामत के दिन) कोई अपने आमाल की सज़ा मे हलाकत मे न डाला जाए, (उस दिन) खुदा के सिवा न तो कोई उसका दोस्त होगा और न सिफारिश करने वाला और अगर वह हर चीज, (जो धरती पर है,) मुआवज़े (के तौर पर) देना चाहे, तो वह उस से कुबूल न हो। यही लोग है कि अपने आमाल के बवाल में हलाकत मे डाले गये उन के लिए पीने को खौलता हुआ पानी और दुख देने वाला अज़ाब है, इस लिए कि कुफ़्र करते थे। (७०) ★

कहो, क्या हम खुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारें, जो न हमारा भला कर सके न बुरा और जब हम को खुदा ने सीधा रास्ता दिखा दिया, तो (क्या) हम उल्टे पांव फिर जाए? (फिर हमारी ऐसी मिसाल हो) जैसे किसी जिन्नात ने जंगल मे भुला दिया हो (और वह) हैरान (हो रहा हो) और उस के कुछ साथी हो जो उस को रास्ते की तरफ बुलाए कि हमारे पास चला आ। कह दो कि रास्ता तो वही है, जो खुदा ने बताया है और हमें तो यह हुक्म मिला है कि हम अल्लाह, रब्बुल आलमीन के फरमाबरदार हो। (७१) और यह (भी) कि नमाज़ पढते रहो और उस से डरते रहो और वही तो है, जिस के पास तुम जमा किये

★रु. ८/१४ आ १०

व हुवल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि ط व यौ-म यक़ूलु कुन्
फ़-यकूनु ج ● क़ौलुहुल्-हक़्क़ु ط व लहुल्मुल्कु यौ-म युन्फ़खु
फ़िस्सूरि ط आलिमुल्ग़ैबि वश्शहादति ط व हुवल्-हकीमुल्-ख़बीर (७३) व
इज़् क़ा-ल इब्राहीमु लिअबीहि आज-र अ-तत्तख़िज़ु अस्नामन् आलिह-तन् ج
इन्नी अरा-क व क़ौम-क फ़ी ज़लालिम्-
मुबीन (७४) व कज़ालि-क नुरी इब्राही-म
म-ल-कूतस्समावाति वल्अर्ज़ि व लियकू-न
मिनल्मूक़िनीन (७५) फ़-लम्मा जन-न
अलैहिल्लैलु रआ कौक-बन् ج का-ल हाज़ा
रब्बी ج फ़लम्मा अ-फ़-ल का-ल ला
उहिब्बुल्-आफ़िलीन (७६) फ़-लम्मा र-अल्-
क़-म-र बाज़िग़न् क़ा - ल हाज़ा रब्बी ج
फ़लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल लइल्लम् यह्दिनी
रब्बी ल-अकूनन्-न मिनल्-क़ौमिज़्ज़ाल्लीन
(७७) फ़-लम्मा र-अश्शम-स बाज़िग-तन् क़ा-ल
हाज़ा रब्बी हाज़ा अक्बरु ج फ़ - लम्मा
अ-फ़-लत् क़ा-ल याक़ौमि इन्नी बरीउम्-मिम्मा
तुश्रिकून (७८) इन्नी वज्जह्तु वज्हि-य
लिल्लज़ी फ़-त़-रस्समावाति वल्अर्-ज़ हनीफ़ंव-व मा अ-न मिनल्मुश्रिकीन ج
(७९) व हाज्जहू क़ौमुहू ط क़ा-ल अतुहाज्जून्नी फ़िल्लाहि व क़द् हदानि ط
व ला अख़ाफ़ु मा तुश्रिकू-न बिही इल्ला अय्यशा-अ रब्बी शैअन् ط
वसि-अ रब्बी कुल-ल शैइन् अिल्मन् ط अ-फ़-ला त-त-ज़क्करून (८०) व कै-फ
अख़ाफ़ु मा अश्रक्तुम् व ला तख़ाफ़ू-न अन्नकुम् अश्रक्तुम् बिल्लाहि मा
लम् युनज़्ज़िल् बिही अलैकुम् सुल्तानन् ط फ़अय्युल्-फ़रीक़ैनि अहक़्क़ु बिल्-
अम्नि ج इन् कुन्तुम् तअ्-लमून ▨ (८१) अल्लज़ी-न आमनू व लम्
यल्बिसू ईमानहुम् बिज़ुल्मिन् उलाइ-क लहुमुल्-अम्नु व हुम् मुह्तदून
★ (८२) व तिल-क हुज्जतुना आतैनाहा इब्राही-म अला क़ौमिही ط
नर्फ़अु द-र-जातिम्-मन् नशाउ ط इन्-न रब्ब-क हकीमुन् अलीम (८३)

الانعام ١٠٩ واذا سمعوا

الْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ وَيَوْمَ يَقُولُ كُن فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ
يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿٧٣﴾ وَإِذْ قَالَ
إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً ۖ إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٧٤﴾ وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ قَالَ هَٰذَا
رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْآفِلِينَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ
هَٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ
الضَّالِّينَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا
أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي
فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٧٩﴾ وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ ۚ
قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۚ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا
أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾
وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ
الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ
نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ

● सु. ३/४ ▨ व लाज़िम ★ रु. ९/१५ आ १२

जाओगे। (७२) और वही तो है, जिस ने आसमानो और ज़मीन को तद्बीर से पैदा किया है और जिस दिन वह फरमायेगा कि होजा तो (हश्र बरपा) हो जाएगा● उस का इर्शाद बर-हक है और जिस दिन सूर फूका जाएगा (उस दिन) उसी की बादशाहत होगी। वही छिपे और ज़ाहिर (सब) का जानने वाला है और वही हिक्मत वाला और खबर वाला है। (७३) और (वह वक्त भी याद करने के लायक है) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा कि तुम बुतो को क्या माबूद बनाते हो। मैं देखता हू कि तुम और तुम्हारी कौम खुली गुमराही मे हो।[1] (७४) और हम इस तरह इब्राहीम को आसमान और जमीन के अजाइबात दिखाने लगे ताकि वह खूब यकीन करने वालो मे हो जाए। (७५) (यानी) जब रात ने उन को (अंधेरे के पर्दे) से ढाप लिया, तो (आसमान मे) एक सितारा नजर पडा। कहने लगे, यह मेरा परवरदिगार है। जब वह गायब हो गया तो कहने लगे कि मुझे गायब हो जाने वाले पसन्द नही। (७६) फिर जब चाद को देखा कि चमक रहा है, तो कहने लगे, यह मेरा परवरदिगार है। लेकिन जब वह भी छिप गया, तो बोल उठे कि अगर मेरा परवरदिगार मुझे सीधा रास्ता नही दिखाएगा, तो मैं उन लोगो मे हो जाऊंगा, जो भटक रहे है। (७७) फिर जब सूरज को देखा कि जगमगा रहा है, तो कहने लगे, मेरा परवरदिगार यह है, यह सब से बडा है, मगर जब वह भी डूब गया तो कहने लगे, लोगो! जिन चीजो को तुम (खुदा का) शरीक बनाते हो, मैं उन से बे-ज़ार हू। (७८) मैंने सब से यक्सू होकर अपने को उसी ज़ात की तरफ मुतवज्जह किया, जिस ने आसमानो और जमीन को पैदा किया है और मैं मुश्रिकों मे से नही हू। (७९) और उन की क़ौम उन से बहस करने लगी, तो उन्होंने कहा कि तुम मुझ से खुदा के बारे मे (क्या) बहस करते हो, उसने तो मुझे सीधा रास्ता दिखा दिया है। और जिन चीजो को तुम उस का शरीक बनाते हो, मै उन से नही डरता। हा, जो मेरा परवरदिगार कुछ चाहे। मेरा परवरदिगार अपने इल्म से हर चीज पर एहाता किये हुए है, क्या तुम ख्याल नही करते? (८०) भला मे उन चीज़ो से, जिन को तुम (खुदा का) शरीक बनाते हो, कैसे डरूं, जब कि तुम इस से नही डरते कि खुदा के साथ शरीक बनाते हो, जिसकी उसने कोई सनद नाजिल नही की। अब दोनो फरीक मे से कौन-सा फरीक अम्न (और दिल के सुकून) का हकदार है, अगर समझ रखते हो (तो बताओ)▨ (८१) जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को (शिर्क के) ज़ुल्म से गड्-मड् नही किया, उन के लिए अम्न (और दिल का सुकून) है और वही हिदायत पाने वाले है। (८२)★

और यह हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को उन की कौम के मुकाबले मे अता की थी। हम जिसके चाहते है, दर्जे बुलन्द कर देते है। बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिक्मत वाला और इल्म

---

१ कुरआन मजीद से तो हज़रत इब्राहीम के वालिद का नाम आजर मालूम होता है, लेकिन तौरात मे उन का नाम तारिख लिखा है और नसब व तारीख के उलमा के नज़दीक भी उन का यही नाम है। तफ्सीर लिखने वालो ने इस के जवाब मे कहा है, शायद उन के दो नाम होंगे, एक आज़र, दूसरा तारिख या एक नाम होगा, दूसरा लकब। फिर यह कि आज़र फारसी लफ्ज है और इस का मतलब 'बूढा आदमी' है। पस यह भी हो सकता है कि 'अबी हि आज़र' से यह मुराद हो कि उन्हो ने बूढे बाप से कहा, कुछ लोगो ने कहा कि आज़र बुत का नाम था, शायद इस वजह से कि हज़रत इब्राहीम के वालिद उन की बहुत खिदमत करते हो, उन को भी आज़र कहने लगे। बहरहाल जो वजह भी हो, उन्हे आजर भी कहते थे।

●सु ३/४ ▨ व. लाज़िम ★रु. ९/१५ आ १२

व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ्-कू-ब ط कुल्लन् हदैना ج व नूहन् हदैना मिन् क़ब्लु व मिन् ज़ुर्रिय्यतिही दावू-द व सुलैमा-न व अय्यू-ब व यूसु-फ़ व मूसा व हारू-न ط व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन لا (८४) व ज-करिय्या व यह्या व ओ़सा व इल्या-स ط कुल्लुम्-मिनस्सालिहीन لا (८५) व इस्-माओ़-ल वल्य-स्-अ़ व यूनु-स व लूतन् ط व कुल्लन् फ़ज़्ज़ल्ना अ़-लल् - आ़लमीन لا (८६) व मिन् आबाइहिम् व ज़ुर्रियातिहिम् व इख़्वानिहिम् ج वज् - तबैनाहुम् व हदैनाहुम् इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (८७) ज़ालि-क हुदल्लाहि यह्दी बिही मय्यशाउ मिन् अ़िबादिही ط व लौ अश्रकू ल-हबि-त अ़न्हुम् मा कानू यअ़्मलून (८८) उलाइकल्लज़ी-न आतैना हुमुल्-किता-ब वल्हुक् - म वन्नुबुव्व - त ج फ़इंय्यक्फ़ुर् बिहा हा-उला-इ फ़-क़द् वक्कल्ना बिहा क़ौमल्लैसू बिहा बिकाफ़िरीन (८९) उला-इकल्लज़ी - न हदल्लाहु फ़बिहुदा - हुमुक्तदिह् ط कुल् ला अस्अलुकुम् अ़लैहि अज्रन् ط इन् हु - व इल्ला ज़िक्रा लिल् - आ़लमीन ★ (९०) व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क क़द्रिही इज़् कालू मा अन्ज़लल्लाहु अ़ला ब-शरिम्मिन् शैइन् ط कुल् मन् अन्ज़लल् - किताबल्लज़ी जा - अ बिही मूसा नूरंव-व हुदल्-लिन्नासि तज्अ़लूनहू करातौ-स तुब्दूनहा व तुख़्फ़ू - न कसीरन् ج व अ़ुल्लिम्तुम् मा लम् तअ़् - लमू अन्तुम् व ला आबा-उकुम् ط क़ुलिल्लाहु لا सुम्-म ज़र्हुम् फ़ी ख़ौज़िहिम् यल्अ़बून (९१) व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुम्-मुसद्दिकुल्लज़ी बैन-न यदैहि व लितुन्ज़ि-र उम्मल्कुरा व मन् हौलहा ط वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति युअ्मिनू-न बिही व हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून (९२)

وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُودَ وَ
سُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٥﴾ وَإِسْمَاعِيلَ
وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٨٦﴾ وَمِنْ آبَائِهِمْ
وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾
ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ
عَنْهُم مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٨﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ
وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَإِن يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا
بِكَافِرِينَ ﴿٨٩﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۖ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ ۗ قُل لَّا
أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾ وَمَا قَدَرُوا
اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ ۗ قُلْ مَنْ
أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ ۖ تَجْعَلُونَهُ
قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا ۖ وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنتُمْ وَ
لَا آبَاؤُكُمْ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾ وَهَٰذَا كِتَابٌ
أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَ
مَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ
صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا

★रु० १०/१६ आ ८

वाला है। (८३) और हमने उन को इस्हाक और याकूब बख्शे (और) सब को हिदायत दी और पहले नूह को भी हिदायत दी थी और उनकी औलाद मे से दाऊद और सुलेमान और अय्यूब और यूसुफ और मूसा और हारून को भी और हम नेक लोगो को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (८४) और जकरीया और यह्या और ईसा और इल्यास को भी। ये सब भले लोग थे। (८५) और इस्माईल और अल-यसअ् और यूनुस और लूत को भी और उन सब को दुनिया के लोगो पर फज़ीलत बख्शी थी। (८६) और किसी-किसी को उन के बाप-दादा और औलाद और भाइयो मे से भी और उन को चुन भी लिया था और सीधा रास्ता भी दिखाया था। (८७) यह खुदा की हिदायत है। इस पर अपने बन्दो मे से जिसे चाहे चलाये। और अगर वे लोग शिर्क करते, तो जो अमल वे करते थे, सब बर्बाद हो जाते। (८८) ये वह लोग थे, जिन को हमने किताब और हुक्म (शरीअत) और नबूवत अता फरमायी थी। अगर ये (कुफ्फार) इन बातो से इन्कार करे तो हमने उन पर (ईमान लाने के लिए) ऐसे लोग मुकर्रर कर दिए हैं कि वे उन से कभी इन्कार करने वाले नही। (८९) ये वह लोग है जिन को खुदा ने हिदायत दी थी, तो तुम उन्ही की हिदायत की पैरवी करो। कह दो कि मैं तुम से इस (कुरआन) का बदला नही मागता। यह तो दुनिया के लोगो के लिए सिर्फ नसीहत है। (९०) ✶

और उन लोगो ने खुदा की कद्र जैसी जाननी चाहिए थी, न जानी। जब उन्होंने कहा कि खुदा ने इंसान पर (वह्य और किताब वगैरह) कुछ भी नाज़िल नही किया। कहो कि जो किताब मूसा ले कर आये थे, उसे किसने नाजिल किया था, जो लोगो के लिए नूर और हिदायत थी और जिसे तुमने अलग-अलग पन्नो (पर नकल) कर रखा है। उन (के कुछ हिस्से) को तो जाहिर करते हो और अक्सर को छिपाते हो। तुम को वे बाते सिखायी गयी, जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप-दादा। कह दो (इस किताब को) खुदा ही ने (नाज़िल किया था), फिर उन को छोड दो कि अपनी बेहूदा बकवास मे खेलते रहे। (९१) और (वैसी ही) यह किताब है, जिसे हमने नाज़िल किया है, बरकत वाली, जो अपने से पहली (किताबो) की तस्दीक करती है और (जो) इस लिए (नाज़िल की गयी है) कि तुम मक्के और उसके आस-पास के लोगो को आगाह कर दो और जो लोग आखिरत पर ईमान रखते है वे उस किताब पर भी ईमान रखते है और वे अपनी

✶रु. १०/१६ आ ८

व मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि कज़िबन् औ क़ा-ल ऊहि-य इलय्-य
व लम् यू-ह् इलैहि शैउंव्-व मन् क़ा-ल सउन्ज़िलु मिस्-ल मा अन्जलल्लाहु
व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न फ़ी ग़-मरातिल् - मौति वल्मलाइकतु बासितू
ऐदीहिम् ८ अख़्रिजू अन्फ़ुसकुम् ७ अल्यौ - म तुज्ज़ौ - न अ़ज़ाबल्हूनि बिमा
कुन्तुम् तक़ूलू-न अ़-लल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि व
कुन्तुम् अ़न् आयातिही तस्तक्बिरून
(९३) व ल - क़द् जिअ्तुमूना फ़ुरादा
कमा ख़-लक़्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व तरक्तुम्
मा ख़व्वल्नाकुम् वरा - अ ज़ुहूरिकुम् ८
व मा नरा म-अकुम् शु-फ़आ-अकुमुल्लज़ी-न
ज़ - अ़म्तुम् अन्नहुम् फ़ीकुम् शुरका-उ ७
लक़त्तक़त्त-अ़ बैनकुम् व ज़ल्-ल अ़न्कुम् मा
कुन्तुम् तज़्अुमून ✶ (९४) इन्नल्ला-ह
फ़ालिक़ुल् - हब्बि वन्नवा ७ युख़्रिजुल्हय्-य
मिनल्मय्यिति व मुख़्रिजुल्मय्यिति मिनल्हय्यि ७
ज़ालिकुमुल्लाहु फ़-अन्ना तुअ्फ़कून (९५)
फ़ालिक़ुल् - इस्बाहि ८ व ज-अ़-लल्लै - ल
स-क-नंव्वश्शम्-स वल्क़-म-र हुस्बानन् ७ ज़ालि-क
तक़्दीरुल्-अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (९६) व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुन्नुजू - म
लितह्तदू बिहा फ़ी ज़ुलुमातिल्बर्रि वल्बह्रि ७ क़द् फ़स्सल्नल् - आयाति
लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (९७) व हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहिदतिन्
फ़मुस्तक़र्रुंव् - व मुस्तौदअुन् ७ क़द् फ़स्सल्नल् - आयाति लिक़ौमिंय्यफ़्क़हून
(९८) व हुवल्लज़ी अन्ज - ल मिनस्समा - इ मा-अन् ८ फ़-अख़्रज्ना
बिही नबा-त कुल्लि शैइन् फ़ - अख़्रज्ना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु
हब्बम् - मुतराकिबन् ८ व मिनन्नख़्लि मिन् - तल्‌अिहा क़िन्वानुन्
दानियतुंव्-व जन्नातिम्मिन् अअ्-नाबिंव्वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मुश्तबिहंव्-व ग़ै-र
मुतशाबिहिन् ७ उन्ज़ुरू इला स-मरिही इज़ा अस्म - र व यन्‌अिही ७
इन् - न फ़ी ज़ालिकुम् लआयातिल् - लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (९९)

أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ
مَا أَنزَلَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ
بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمُ ۖ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ
بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ۝
وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَاكُمْ
وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ
فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝
إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ
مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ
سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَهُوَ
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ
فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُم مِّن نَّفْسٍ
وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ۝
وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ
فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِن
طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ
مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ انظُرُوا إِلَىٰ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ ۚ إِنَّ فِي

नमाज़ो की (पूरी) खबर रखते है। (९२) और उस से बढ कर ज़ालिम कौन होगा, जो ख़ुदा पर झूठ गढे या यह कहे कि मुझ पर वह्य आयी है, हालाकि उस पर कुछ भी वह्य न आयी हो और जो यह कहे कि जिस तरह की किताब ख़ुदा ने नाज़िल की है, उस तरह की मैं भी बना लेता हू और काश ! तुम उन ज़ालिम (यानी मुश्रिक) लोगो को उस वक्त देखो, जब मौत की सख्तियो मे (पडे) हो और फ़रिश्ते (उन की तरफ अज़ाब के लिए) हाथ बढा रहे हों कि निकालो अपनी जाने, आज तुम को ज़िल्लत के अजाब की सजा दी जाएगी, इसलिए कि तुम ख़ुदा पर झूठ बोला करते थे और उस की आयतो से सरकशी करते थे। (९३) और जैसा हमने तुम को पहली बार पैदा किया था, ऐसा ही आज अकेले हमारे पास आए और जो (माल व मताअ) हमने तुम्हे अता फरमाया था, वह सब अपनी पीठ पीछे छोड आये और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे सिफारिशियो को भी नहीं देखते, जिन के बारे मे तुम ख्याल करते थे कि वे तुम्हारे (शफीअ यानी शफाअत करने वाले और हमारे) शरीक है। (आज) तुम्हारे आपस के सब ताल्लुकात खत्म हो गये और जो दावे तुम किया करते थे, सब जाते रहे। (९४) ★

बेशक ख़ुदा ही दाने और गुठली को फाड (कर उन से पेड वगैरह) उगाता है, वही जानदार को बे-जान से निकालता है और वही बे-जान का जानदार से निकालने वाला है। यही तो ख़ुदा है, फिर तुम कहा बहके फिरते हो ? (९५) वही (रात के अंधेरे से) सुबह की रोशनी फाड निकालता है और उसी ने रात को आराम (की वजह ठहराया और सूरज और चाद को गिन्ती (का ज़रिया) बनाया है। ये ख़ुदा के (मुकर्रर किये हुए) अन्दाज़े है, जो गालिब (और) इल्म वाला है। (९६) और वही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाये, ताकि जगलो और नदियो के अंधेरो में उन मे रास्ते मालूम करो। अक्ल वालो के लिए हमने अपनी आयते खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (९७) और वही तो है, जिसने तुम को एक शख्स से पैदा किया, फिर (तुम्हारे लिए) एक ठहरने की जगह है और एक सुपुर्द होने की।[1] समझने वालो के लिए हम ने (अपनी) आयते खोल-खोल कर बयान कर दी है। (९८) और वही तो है जो आसमान से वर्षा बरसाता है। फिर हम ही (जो बर्षा बरसाते है) उस मे हर तरह की हरियाली उगाते है, फिर उस में से हरी-हरी कोपलें निकालते है और इन कोपलो में से एक दूसरे के साथ जुडे हुए दाने निकालते है और खजूर के गाभे मे से लटकते हुए गुच्छे और अंगूरो के बाग और ज़ैतून और अनार, जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी है और नही भी मिलते। ये चीज़े जब फलती हैं, तो उन के फलो पर और (जब पकती हैं तो) उन के पकने पर नज़र करो। इन मे उन लोगो के लिए जो ईमान लाते है (ख़ुदा की कुदरत की

---

१ यानी एक मुद्दत तक दुनिया मे ज़िंदा रखे जाते, फिर ज़मीन में दफन हो कर ख़ुदा के सुपुर्द किये जाते हैं।

व ज-अ़लू लिल्लाहि शुरका-अल्जिन्-न व ख़-ल-क़हुम् व ख़-रक़ू लहू बनी-न व बनातिम् - बिग़ैरि अ़िल्मिन् ط सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा यसिफ़ून ★ (१००) बदीअ़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط अन्ना यकूनु लहू व-लदुंव्-व लम् तकुल्लहू साहिबतुन् ط व ख़-ल-क़ कुल्-ल शैइन् ج व हु-व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (१०१) ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ج ला इला - ह इल्ला हु - व ج ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् फ़अ्-बुदूहु ج व हु-व अ़ला कुल्लि शैइंव्वकील (१०२) ला तुद्रिकुहुल्-अब्सारु ز व हु - व युद्रिकुल् - अब्सा-र ز व हुवल्लतीफ़ुल्-ख़बीर (१०३) क़द् जा-अकुम् बसा-इरु मिर्रब्बिकुम् ج फ़-मन् अब्स़-र फ़लिनफ़्सिही ج व मन् अ़मि-य फ़अ़लैहा ط व मा अ-न अ़लैकुम् बिहफ़ीज (१०४) व कज़ालि - क नुसर्रिफ़ुल्-आयाति व लियकूलू द-रस्-त व लिनुबय्यिनहू लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (१०५) इत्तबिअ् मा ऊहि-य इलै-क मिर्रब्बि-क ج ला इला-ह इल्ला हु-व ج व अअ्-रिज़् अ़निल्मुश्रिकीन (१०६) व लौ शा - अल्लाहु मा अश्रकू ط व मा ज-अ़ल्ना - क अ़लैहिम् हफ़ीजन् ج व मा अन्-त अ़लैहिम् बिवकील (१०७) व ला तसुब्बुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि फ़यसुब्बुल्ला-ह अ़द्-वम्-बिग़ैरि अ़िल्मिन् ط कज़ालि-क ज़य्यन्ना लिकुल्लि उम्मतिन् अ़-म-लहुम् ص सुम्-म इला रब्बिहिम् मर्जिअ़ुहुम् फ़युनब्बिउहुम् बिमा कानू यअ्-मलून (१०८) व अक़्समू बिल्लाहि जह-द ऐमानिहिम् लइन् जा-अत्हुम् आयतुल्लयुअ्मिनुन्-न बिहा ط क़ुल् इन्नमल् - आयातु अ़िन्दल्लाहि व मा युश्अ़िरुकुम् ۙ अन्नहा इज़ा जा - अत् ला युअ्मिनून (१०९) व नुक़ल्लिबु अफ़्इ-द-तहुम् व अब्सारहुम् कमा लम् युअ्मिनू बिही अव्व-ल मर्रतिंव्-व न-ज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्-महून ★ (११०)

ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ
وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝
بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَ
خَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝
لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ؗ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝
قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ
وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ
وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا
جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَلَا تَسُبُّوا
الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ
زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ
لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا
جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا
لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

★रु. १२/१८ आ ६ ★रु १३/१९ आ १०

बहुत-सी) निशानिया है। (९९) और उन लोगो ने जिन्नो को खुदा का शरीक ठहराया हालांकि उन को उसी ने पैदा किया और बे-समझे (झूठ-बुहतान) उस के लिए बेटे और बेटिया बना खड़ी की। वह इन बातो से जो वे उस के बारे मे बयान करते हैं, पाक है और उसकी शान उन से बुलंद है। (१००) ✱

(वही) आसमानो और ज़मीन का पैदा करने वाला (है), उस के औलाद कहा से हो, जबकि उस की बीवी ही नही और उस ने हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज की खबर रखता है। (१०१) यही (खूबिया रखने वाला) खुदा तुम्हारा परवरदिगार है। उसके सिवा कोई माबूद नही। (वही) हर चीज का पैदा करने वाला (है), तो उसी की इबादत करो और वह हर चीज़ का निगरा है। (१०२) (वह ऐसा है कि) निगाहे उस का इद्राक नही कर सकती और वह निगाहो का इद्राक कर सकता है और वह भेद जानने वाला खबरदार है। (१०३) (ऐ मुहम्मद! उन से कह दो कि) तुम्हारे (पास) परवरदिगार की तरफ से (रोशन) दलीलें पहुच चुकी है, तो जिस ने (उन को आख खोलकर) देखा, उस ने अपना भला किया और जो अधा बना रहा, उस ने अपने हक मे बुरा किया और मै तुम्हारा निगहबान नही हू। (१०४) और हम इसी तरह अपनी आयतें फेर-फेर कर बयान करते है, ताकि काफिर यह न कहे कि तुम (ये बाते अह्ले किताब से) सीखे हुए हो और ताकि समझने वाले लोगो के लिए तश्रीह कर दे।[1] (१०५) और जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास आता है, उसी की पैरवी करो। उस (परवरदिगार) के सिवा कोई माबूद नही और मुश्रिकों से किनारा करो। (१०६) और अगर खुदा चाहता तो ये लोग शिर्क न करते और (ऐ पैगम्बर) हमने तुम को उन पर निगहबान मुकर्रर नही किया और न तुम उन के दारोगा हो। (१०७) और जिन लोगो को ये मुश्रिक खुदा के सिवा पुकारते हैं, उनको बुरा न कहना कि ये भी कही खुदा को बे-अदबी से बे-समझे बुरा (न) कह बैठे। इस तरह हमने हर एक फ़िर्क़े के आमाल (उन की नज़रों मे) अच्छे कर दिखाये है। फिर उनको अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है, तब वह उन को बतायेगा कि वे क्या-क्या किया करते थे। (१०८) और ये लोग खुदा की सख्त-सख्त क़समे खाते है कि अगर उनके पास कोई निशानी आये, तो वे उन पर ज़रूर ईमान ले आए। कह दो कि निशानियां तो सब खुदा ही के पास है और (मोमिनो!) तुम्हें क्या मालूम है, (ये तो ऐसे बद-बख्त हैं कि उनके पास) निशानिया आती जाए, तब भी ईमान न लाएं। (१०९) और हम उन के दिलो और आखो को उलट देंगे (तो) जैसे ये इस (क़ुरआन) पर पहली बार ईमान नही लाये, (वैसे फिर न लाएगे) और उन को छोड देंगे कि अपनी सरकशी मे बहकते रहे। (११०) ★

---

१ जिस तरीके पर क़ुरआन मजीद मे आयतें फेर-फेर कर बयान की गयी हैं, वह ऐसा नही है कि कोई यह कह सके कि ये मज्मून किसी शख्स से सीखे गये हैं। कही खुदा की कुदरत का बयान है, कही उस की हस्ती और वह्दानियत की ज़ोरदार दलीलें है। कही ईमान वालो को बशारतें सुनायी गयी हैं, कही कुफ्फार को डराया गया है। कही नेक अमल करने के लिए हुक्म दिया गया है, कही बुरे आमाल से मना किया गया है, कही नसीहतें हैं, कही हिक्मतें है। ग़रज़ तरह-तरह के बयान है और इसी लिए इर्शाद हुआ है कि हम इसी तरह (अपनी) आयतें फेर-फेर कर बयान करते हैं ताकि यह न कहे कि आहज़रत सल्ल० ने ये बातें यहूदी उलमा से या किसी दूसरे से सीखी हैं।

आठवां पारः वलौ अन्नना

सूरतुल्-अन्आमि आयत १११ से १६७

व लौ अन्नना नज्जल्ना इलैहिमुल्-मलाइक-त व कल्लमहुमुल्-मौता व ह्-शर्ना अलैहिम् कुल-ल शैइन् क़ुबुलम्मा कानू लियुअ्मिनू इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु व लाकिन-न अक्सरहुम् यज्हलून (१११) व कज़ालि-क ज-अ्ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अ्दुव्वन् शयातीनल्-इन्सि वल्जिन्नि यूही बअ्-ज़ुहुम् इला बअ्-जिन् ज़ुख़रुफ़ल्कौलि गुरूरन् ط व लौ शा-अ रब्बु-क मा फ़-अलूहु फ-ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून (११२) व लितस्ग़ा इलैहि अफ्इ-दतुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति व लियर्ज़ौहु व लियक्तरिफ़ू मा हुम् मुक्तरिफ़ून (११३) अ-फ़-ग़ैरल्लाहि अब्तग़ी ह-क-मंव्-व हुवल्लज़ी अन्-ज-ल इलैकुमुल् - किता-ब मुफ़स्सलन् ط वल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ-लमू-न अन्नहू मुनज्ज़लुम्-मिर्रब्बि-क बिल्हक़्क़ि फला तकूनन्-न मिनलमुम्तरीन (११४) व तम्मत् कलिमतु रब्बि-क सिद्कव्-व अ्द्लन् ط ला मुबद्दि-ल लिकलिमातिही ج व हुवस्समीअुल् - अ्लीम (११५) व इन् तुतिअ् अक्स-र मन् फ़िल्अर्ज़ि युज़िल्लू-क अन् सबीलिल्लाहि ط इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न-न व इन् हुम् इल्ला यख़रुसून (११६) इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु मंयज़िल्लु अन् सबीलिही ج व हु-व अअ्-लमु बिलमुह्तदीन (११७) फकुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ्लैहि इन् कुन्तुम् बिआयातिही मुअ्मिनीन (११८) व मा लकुम् अल्ला तअ्कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ्लैहि व कद् फ़स्स-ल लकुम् मा हर्र-म अ्लैकुम् इल्ला मज़्तुरितुम् इलैहि ط व इन्-न कसीरल्-लयुज़िल्लू-न बिअह्वाइहिम् बिग़ैरि अि्ल्मिन् ط इन् - न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिलमुअ्-तदीन (११९)

ولو اننا ٨ — ١١٣ — الانعام ٦

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ
كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوٓا إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿١١١﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِينَ
الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا
وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغٰٓى
إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا
مَا هُمْ مُّقْتَرِفُونَ ﴿١١٣﴾ أَفَغَيْرَ اللّٰهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيٓ أَنْزَلَ
إِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِينَ آتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ
مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ
كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهِ ۚ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٥﴾ وَإِنْ تُطِعْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ
عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ إِنْ يَّتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٦﴾
إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾
فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيٰتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾ وَ
مَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ
مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ
بِأَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾

منزل

और अगर हम उन पर फरिश्ते भी उतार देते और मुर्दे भी उन से बातें करने लगते और हम सब चीजो को उनके सामने ला मौजूद भी कर देते, तो भी ये ईमान लाने वाले न थे इल्ला मा शाअल्लाह। बात यह है कि ये अक्सर नादान हैं। (१११) और इसी तरह हमने शैतान-इन्सानो और जिन्नों—को हर पैगम्बर का दुश्मन बना दिया था। वे धोखा देने के लिए एक दूसरे के दिल मे मुलम्मा की बातें डालते रहते थे और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो वे ऐसा न करते तो उन को और जो कुछ ये गढते है, उसे छोड़ दो। (११२) और (वे ऐसे काम) इस लिए भी (करते थे) कि जो लोग आखिरत पर ईमान नही रखते, उन के दिल उन की बातो पर मायल हो और वे उन्हे पसद करे और जो काम वे करते थे, वही करने लगें। (११३) (कहो) क्या मैं खुदा के सिवा और इसाफ करने वाला ढूढू, हालाकि उस ने तुम्हारी तरफ मतलब साफ करने वाली किताब भेजी है। और जिन लोगो को हमने किताब (तौरात) दी, वे जानते है कि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक पर नाजिल हुई कि तुम हरगिज शक करने वालो मे न होना। (११४) और तुम्हारे परवरदिगार की बाते सच्चाई और इंसाफ मे पूरी हैं। उसकी बातो को कोई बदलने वाला नही और वह सुनता-जानता है। (११५) और अक्सर लोग, जो जमीन पर आबाद है, (गुमराह है)। अगर तुम उन का कहना मान लोगे, तो वे तुम्हे खुदा का रास्ता भुला देगे। ये सिर्फ ख्याल के पीछे चलते और निरे अटकल के तीर चलाते है। (११६) तुम्हारा परवरदिगार उन लोगो को खूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटके हुए है और उन को भी खूब जानता है जो रास्ते पर चल रहे है। (११७) तो जिस चीज पर (जिब्ह के वक्त) खुदा का नाम लिया जाए, अगर तुम उस की आयतो पर ईमान रखते हो, तो उसे खा लिया करो। (११८) और वजह क्या है कि जिन चीज पर खुदा का नाम लिया जाए, तुम उसे खाओ, हालाकि जो चीजे उसने तुम्हारे लिए हराम ठहरा दी है, वह एक-एक कर के बयान कर दी है। (बेशक उन को नही खाना चाहिए) मगर इस सूरत मे कि उन के (खाने के) लिए ना-चार हो जाओ और बहुत से लोग बे-समझे बूझे अपने नफ्स की ख्वाहिशो से लोगो को बहका रहे हैं। कुछ शक नही कि ऐसे लोगो को, जो (खुदा की मुकर्रर की हुई) हद से बाहर निकल जाते है, तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है। (११९) और जाहिरी

व ज़रू ज़ाहिरल्-इस्मि व बातिनहू *b* इन्नल्लज़ी-न यक्सिबूनल्-इस्-म सयुज्ज़ौ-न बिमा कानू यक़्तरिफून (१२०) व ला तअ्कुलू मिम्मा लम् युज़्करिस्मुल्लाहि अ़लैहि व इन्नहू लफ़िस्कुन् *b* व इन्नश्शयाती-न लयूहू-न इला औलियाइहिम् लियुजादिलूकुम् *c* व इन् अ-त़अ् - तुमूहुम् इन्नकुम् लमुश्रिकून ★(१२१)

अ-व-मन् का-न मैतन् फ़-अह्‌यैनाहु व ज-अ़ल्ना लहू नूरय्यम्शी बिही फ़िन्नासि क-मम्-म-सलुहू फ़िज़्ज़ुलुमाति लै-स बिख़ारिजिम् - मिन्हा *b* कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिल्काफ़िरी-न मा कानू यअ़्-मलून (१२२) व कज़ालि-क ज-अ़ल्ना फ़ी कुल्लि कर्यतिन् अकाबि-र मुज्रिमीहा लियम्कुरू फ़ीहा *b* व मा यम्कुरू-न इल्ला बिअन्फ़ुसिहिम् व मा यश्अुरून (१२३) व इज़ा जा - अत्हुम् आयतुन् कालू लन् नुअ्मि-न ह़त्ता नुअ्ता मिस्-ल मा ऊति-य रुसुलुल्लाहि *ṭ* ▩ अल्लाहु अअ् - लमु हैसु यज्अ़लु रिसाल-तहू *b* सयुसीबुल्लज़ी-न अज्रमू-सग़ारुन् अिन्दल्लाहि व अ़ज़ाबुन् शदीदुम्-बिमा कानू यम्कुरून (१२४) फ़मंय्युरिदिल्लाहु अंय्यह्‌दियहू यश्रह् सद्रहू लिल्इस्लामि *c* व मय्युरिद् अंय्युज़िल्लहू यज्अ़ल् सद् - रहू ज़य्यिकन् ह-र-जन् क-अन्नमा यस्सअ्-अदु फ़िस्समाइ *b* कज़ालि-क यज्अ़लुल्लाहुर्रिज-स अ-लल्लज़ी-न ला युअ्मिनून (१२५) व हाज़ा सिरातु रब्बि-क मुस्तकीमन् *b* कद् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्यज़्ज़क्करून (१२६) लहुम् दारुस्सलामि अिन्-द रब्बिहिम् व हु-व वलिय्युहुम् बिमा कानू यअ़्-मलून (१२७) व यौ-म यह्‌शुरुहुम् जमीअ़न् *c* यामअ् - शरल्जिन्नि कदिस्तक्सर्तुम् मिनल्इन्सि *c* व क़ा - ल औलियाउहुम् मिनल्इन्सि रब्ब-नस्तम्त-अ़् बअ्-ज़ुना बिबअ्-ज़िन्-व व - लग़्ना अ-ज-ल-नल्लज़ी अज्जल-त लना *b* क़ालन्नारु मस्वाकुम् ख़ालिदी - न फ़ीहा इल्ला मा शा-अल्लाहु *b* इन् - न रब्ब - क ह़कीमुन् अ़लीम (१२८)

الانعام ١١٤ ولو اننا

وذروا ظاهر الإثم وباطنه إن الذين يكسبون الإثم
سيجزون بما كانوا يقترفون ۝ ولا تأكلوا مما لم يذكر اسم
الله عليه وإنه لفسق وإن الشياطين ليوحون إلى أوليائهم
ليجادلوكم وإن أطعتموهم إنكم لمشركون ۝ أومن كان ميتا
فأحييناه وجعلنا له نورا يمشي به في الناس كمن مثله في
الظلمات ليس بخارج منها كذلك زين للكافرين ما كانوا
يعملون ۝ وكذلك جعلنا في كل قرية أكابر مجرميها ليمكروا
فيها وما يمكرون إلا بأنفسهم وما يشعرون ۝ وإذا جاءتهم
آية قالوا لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما أوتي رسل الله الله
أعلم حيث يجعل رسالته سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله
وعذاب شديد بما كانوا يمكرون ۝ فمن يرد الله أن يهديه
يشرح صدره للإسلام ومن يرد أن يضله يجعل صدره
ضيقا حرجا كأنما يصعد في السماء كذلك يجعل الله الرجس
على الذين لا يؤمنون ۝ وهذا صراط ربك مستقيما قد فصلنا
الآيات لقوم يذكرون ۝ لهم دار السلام عند ربهم وهو
وليهم بما كانوا يعملون ۝ ويوم يحشرهم جميعا يا معشر الجن
قد استكثرتم من الإنس وقال أولياؤهم من الإنس ربنا استمتع

★रु १४/१ आ ११ ▩ व. लाज़िम व. मंज़िल

और पोशीदा (हर तरह का) गुनाह छोड़ दो। जो लोग गुनाह करते हैं, वह बहुत जल्द अपने किए की सज़ा पायेंगे। (१२०) और जिस चीज़ पर ख़ुदा का नाम न लिया जाए, उसे मत खाओ कि उस का खाना गुनाह है।[1] और शैतान (लोग) अपने साथियों के दिलो मे यह बात डालते हैं कि तुम से झगडा करे और अगर तुम लोग उनके कहे पर चले तो बेशक तुम भी मुश्रिक हुए। (१२१)★

भला जो पहले मुर्दा था, फिर हमने उस को ज़िंदा किया और उसके लिए रोशनी कर दी, जिस के ज़रिए से वह लोगो मे चलता-फिरता है, कही उस शख़्स जैसा हो सकता है, जो अंधेरे मे पड़ा हुआ हो और उस से निकल ही न सके। इसी तरह काफ़िर जो अमल कर रहे हैं, वे उन्हें अच्छे मालूम होते है। (१२२) और इसी तरह हमने हर बस्ती मे बड़े-बड़े मुजरिम पैदा किये कि उनमें मक्कारिया करते रहे और जो मक्कारिया ये करते है, उनका नुक्सान उन्ही को है और (इसमें) बे-ख़बर है। (१२३) और जब उन के पास कोई आयत आती है, तो कहते हैं कि जिस तरह की रिसालत ख़ुदा के पैग़म्बरों को मिली है, जब तक उसी तरह की रिसालत हम को न मिले, हम हरगिज़ ईमान नही लाएगे ⁂ इसको ख़ुदा ही ख़ूब जानता है कि (रिसालत का कौन-सा महल है और) वह अपनी पैग़म्बरी किसे इनायत फ़रमाए। जो लोग जुर्म करते है, उन को ख़ुदा के यहा ज़िल्लत और कडा अज़ाब होगा, इस लिए कि मक्कारिया करते थे। (१२४) तो जिस शख़्स को ख़ुदा चाहता है कि हिदायत बख़्शे, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे चाहता है कि गुमराह करे, उस का सीना तग और घुटा हुआ कर देता है, गोया वह आसमान पर चढ़ रहा है। इस तरह ख़ुदा उन लोगो पर जो ईमान नही लाते, अज़ाब भेजता है। (१२५) और यही तुम्हारे परवरदिगार का सीधा रास्ता है। जो लोग ग़ौर (विचार) करने वाले हैं, उनके लिए हमने अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (१२६) उन के लिए उन के आमाल के बदले मे परवरदिगार के यहा सलामती का घर है और वही उनका दोस्तदार है। (१२७) और जिस दिन वह सब (जिन्न व इंस) को जमा करेगा (और फ़रमाएगा कि) ऐ जिन्नो के गिरोह! तुम ने इंसानो से बहुत (फ़ायदे) हासिल किये, तो जो इंसानो मे उन के दोस्तदार होंगे, वे कहेंगे कि परवरदिगार! हम एक-दूसरे से फायदा उठाते रहे[2] और (आख़िर) इस वक़्त को पहुच गये, जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर किया था। ख़ुदा फ़रमायेगा (अब) तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है। हमेशा उसमे (जलते) रहोगे, मगर जो ख़ुदा चाहे, बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिक्मत वाला और ख़बरदार है। (१२८)

---

१ यानी जिस जानवर के ज़िब्ह करने के वक़्त ख़ुदा का नाम न लिया गया हो, उस का खाना हराम है। इमाम शाफ़ई रह० कहते है कि ख़ुदा का नाम न लिए जाने से यह मुराद है कि जो जानवर ग़ैर-ख़ुदा के लिए ज़िब्ह किया जाए, ऐसे ही जानवर का खाना गुनाह है और इस की दलील उन के नज़दीक इसी सूर की आयत १४५ है। इस मे तो कुछ शक ही नही कि ग़ैर-अल्लाह के लिए किया गया ज़िब्ह हराम है, लेकिन एक जमाअते सहाबा ताबईन और फ़ुक़हा का यह मज़हब है कि जिस जानवर पर ज़िब्ह करते वक़्त अल्लाह का नाम न लिया गया हो चाहे भूल कर, चाहे जान-बूझ कर, उस का खाना भी हराम है। हा, एक हदीस से जो हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत की गयी है, यह मालूम होता है कि अगर किसी जानवर के बारे मे यह मालूम न हो कि ज़िब्ह के वक़्त उस पर ख़ुदा का नाम लिया गया है या नही, तो ख़ुदा का नाम ले कर उस का खाना जायज़ है। हदीस यो है कि कुछ लोगो ने हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत मे अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! कुछ लोग हमारे पास गोश्त लाते हैं और हम नही जानते कि उस पर अल्लाह का नाम लिया गया है या नहीं। आप ने फ़रमाया कि तुम उस पर अल्लाह का नाम ले लिया करो और खा लिया करो।

२ जिन्नो से आदमियो का फ़ायदा उठाना यह है कि नफ़्स की आरज़ूओ की तरफ़ राह दिखा दी आदमियो को और जिन्नो का आदमियो से फ़ायदा यह है कि आदमी जिन्नो के ताबेदार हो गये।

★रु. १४/१ आ ११ ⁂ व. लाज़िम व. मंज़िल

व कज़ालि-क नुवल्ली बअ्-ज़ज्ज़ालिमी-न बअ्-ज़म्-बिमा कानू यक्सिबून ★ (१२९) यामअ्-शरल्जिन्नि वल्इन्सि अ-लम् यअ्तिकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यक़ुस्सू-न अ़लैकुम् आयाती व युन्ज़िरूनकुम् लिका-अ यौमिकुम् हाज़ा ط क़ालू शहिद्ना अ़ला अन्फ़ुसिना व ग़र्रत्हुमुल्-ह़यातुद्दुन्या व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन (१३०) ज़ालि-क अल्लम् यकुर्रब्बु - क मुह्लिकल्कुरा बिज़ुल्मिव - व अह्लुहा ग़ाफ़िलून (१३१) व लिकुल्लिन् द-र-जातुम्-मिम्मा अ़मिलू ط व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ्-मलून (१३२) व रब्बुकल् - ग़निय्यु ज़ुर्रह्मति ط इ य्य - शअ् युज़्हिब्कुम् व यस्तख़्लिफ़् मिम्बअ्-दि-कुम् मा यशाउ कमा अन्श-अकुम् मिन् ज़ुर्रिय्यति क़ौमिन् आख़रीन ط (१३३) इन्न मा तूअ़दू - न लआतिव ۙ - व मा अन्तुम् बिमुअ्-जिज़ीन (१३४) क़ुल् या क़ौमिअ्-मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आमिलुन् ج फ़सौ-फ तअ्-लमू-न ۙ मन् तकूनु लहू आ़किबतुद्दारि ط इन्नहू ला युफ्लिहुज्ज़ालिमून (१३५) व ज-अलू लिल्लाहि मिम्मा ज़-र-अ मिनल्ह़र्सि वल्अन्आमि नसीबन् फ़क़ालू हाज़ा लिल्लाहि बिज़अ्-मिहिम् व हाज़ा लिशुरकाइना ج फ़मा का-न लिशुरकाइहिम् फ़ला यसिलु इलल्लाहि ج व मा का-न लिल्लाहि फहु-व यसिलु इला शुरकाइहिम् ط सा - अ मा यह्कुमून (१३६) व कज़ालि-क ज़य्य-न लिकसीरिम् - मिनल्मुश्रिकी - न क़त् - ल औलादिहिम् शुरकाउहुम् लियुर्दूहुम् व लियल्बिसू अ़लैहिम् दीनहुम् ط व लौ शाअल्लाहु मा फ़-अलूहु फ़ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून (१३७)

ولو اننا ١١٥ الانعام

بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ۭ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ
نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَ
يُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓي اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝ ذٰلِكَ
اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰي بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ۝ وَ
لِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَ
رَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ
مَّا يَشَاۗءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ
لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا
يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ
نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَاۗىِٕنَا ۚ فَمَا كَانَ
لِشُرَكَاۗىِٕهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰي
شُرَكَاۗىِٕهِمْ ۭ سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ
الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَاۗؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا

★रु १५/२ आ ८

और इसी तरह हम ज़ालिमो को, उनके अमाल की वजह से, जो वे करते थे, एक दूसरे पर मुसल्लत कर देते है। (१२९) ✯

ऐ जिन्नो और इसानो की जमाअत ! क्या तुम्हारे पास तुम्ही मे से पैगम्बर नही आते रहे ? जो मेरी आयते तुम को पढ़-पढ कर सुनाते और उस दिन के सामने आ मौजूद होने से डराते थे। वे कहेगे कि (परवरदिगार!) हमे अपने गुनाहो का इकरार है। इन लोगो को दुनिया की ज़िदगी ने धोखे मे डाल रखा था और (अब) खुद अपने ऊपर गवाही दी कि कुफ़ करते थे। (१३०) (ऐ मुहम्मद !) यह (जो पैगम्बर आते रहे और किताबे नाज़िल होती रही तो इस लिए कि तुम्हारा परवरदिगार ऐसा नही कि बस्तियो को जुल्म से हलाक कर दे और वहा के रहने वालो को (कुछ भी) खबर न हो। (१३१) और सब लोगो के आमाल के लिहाज़ मे दर्जे मुकर्रर है और जो काम ये लोग करते हैं, खुदा उन से बे-खबर नही। (१३२) और तुम्हारा परवरदिगार बे-परवा (और) रहमत वाला है। अगर चाहे (तो ऐ बन्दो !) तुम्हे खत्म कर दे और तुम्हारे बाद जिन लोगो को चाहे, तुम्हारा जानशी बनाये, जैसा तुम को भी दूसरे लोगो की नस्ल से पैदा किया है। (१३३) कुछ शक नही कि जो वायदा तुम से किया जाता है, वह पूरा होने वाला है और तुम (खुदा को) मग्लूब नही कर सकते। (१३४) कह दो कि लोगो ! तुम अपनी जगह अमल किये जाओ, मैं (अपनी जगह) अमल किये जाता हू। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा कि आखिरत मे (बहिश्त) किस का घर होगा। कुछ शक नही कि मुश्रिक निजात नही पाने के। (१३५) और (ये लोग) खुदा ही की पैदा की हुई चीज़ो यानी खेत और चौपायों मे खुदा का भी एक हिस्सा मुकर्रर करते है और अपने (झूठे) ख्याल से कहते है कि यह (हिस्सा) तो खुदा का और यह हमारे शरीक (यानी बुतो) का तो जो हिस्सा उन के शरीको का होता है, वह तो खुदा की तरफ नही जा सकता और जो हिस्सा खुदा का होता है, वह उन के शरीको की तरफ जा सकता है। यह कैसा बुरा इन्साफ़ है।[1] (१३६) इसी तरह बहुत से मुश्रिको को उन के शरीको ने उन के बच्चो को जान से मार डालना अच्छा कर दिखाया है, ताकि उन्हे हलाकत मे डाल दे और उन के दीन को उन पर गड्-मड् कर दे। और अगर खुदा चाहता तो वे ऐसा न करते, तो उन को छोड दो कि वह जाने और उन का झूठ। (१३७)

---

१ इस आयत मे खुदा मुश्रिको की बुराई करता है कि उन्हो ने तरह-तरह की कुफ़ व शिर्क की रस्मे निकाली है, जिन मे औरो को खुदा का शरीक बनाया है। मख्लूक तो खुदा की और उसी मे से एक हिस्सा खुदा का मुकर्रर करते यानी खेती और फलो और चारपायो मे एक हिस्सा खुदा और दूसरा हिस्सा बुतो को करार देते। इस से बढ कर यह बेवकूफ़ी कि बुतो को खुदा के मुकाबले मे आगे रखते, इस तरह से कि अगर बुतो के हिस्से मे से कुछ खर्च हो जाता तो उतना खुदा के हिस्से मे से ले लेते और अगर खुदा के हिस्से मे से कुछ खर्च हो जाता तो बुतो के हिस्से मे से न लेते और कहते कि खुदा गनी है और बुत फकीर है।

★रु. १५/२ आ ८

व क़ालू हाजिही अन्आमुंव्-व हर्सुन् हिज्रुल् ला यत्अमुहा इल्ला मन् नशाउ बिज़अ्-मिहिम् व अन्आमुन् हुर्रिमत् ज़ुहूरुहा व अन्आमुल्ला यज्कुरूनस्मल्लाहि अलैहफ़्तिरा-अन् अलैहि स-यज्जीहिम् बिमा कानू यफ़्तरून (१३८) व क़ालू मा फ़ी बुतूनि हाज़िहिल्-अन्आमि ख़ालिसतुल्-लिज़ुकूरिना व मुहर्रमुन् अला अज़्वाजिना व इंय्यकुम्मैत-तुन् फ़हुम् फ़ीहि शुरकाउ स्यज्जीहिम् वस्फ़हुम् इन्नहू हकीमुन् अलीम (१३९) क़द् ख़सिरल्लज़ी-न क़-तलू औलादहुम् स-फ़-हम्-बिगैरि अिल्मिंव्-व हर्रमू मा र-ज़-क़हुमुल्लाहुफ़्तिरा-अन् अ-लल्लाहि क़द् ज़ल्लू व मा कानू मुह्तदीन★●(१४०) व हुवल्लज़ी अन्श-अ जन्नातिम्-मअ्-रूशातिंव्-व ग़ै-र मअ्-रूशातिंव्-वन्नख़-ल वज़्ज़र-अ मुख़्तलिफ़न् उकुलुहू वज्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मु-तशाबिहंव्-व ग़ै-र मु-तशाबिहिन् कुलू मिन् स-मरिही इज़ा अस्म-र व आतू हक़्क़हू यौ-म हसादिही व ला तुस्रिफ़ू इन्नहू ला युहिब्बुल्मुस्रिफ़ीन (१४१) व मिनल्-अन्आमि हमूल-तंव्-व फ़र्शन् कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु व ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि इन्नहू लकुम् अदुव्वुम्-मुबीन (१४२) समानि-य-त अज़्वाजिन् मिनज़्ज़अ्-निस्नैनि व मिनल्मअ्ज़िस्नैनि क़ुल्आज़्ज़-करैनि हर्र-म अमिल्उन्सयैनि अम्मश्-त-म-लत् अलैहि अर्हामुल्-उन्सयैनि नब्बिऊनी बिअिल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१४३)

عليهم دينهم ولو شاء الله ما فعلوه فذرهم وما يفترون ۝
وقالوا هذه أنعام وحرث حجر لا يطعمها إلا من نشاء
بزعمهم وأنعام حرمت ظهورها وأنعام لا يذكرون اسم
الله عليها افتراء عليه سيجزيهم بما كانوا يفترون ۝ وقالوا
ما في بطون هذه الأنعام خالصة لذكورنا ومحرم على
أزواجنا وإن يكن ميتة فهم فيه شركاء سيجزيهم وصفهم
إنه حكيم عليم ۝ قد خسر الذين قتلوا أولادهم سفها بغير
علم وحرموا ما رزقهم الله افتراء على الله قد ضلوا وما كانوا
مهتدين ۝ وهو الذي أنشأ جنات معروشات وغير معروشات
والنخل والزرع مختلفا أكله والزيتون والرمان متشابها وغير
متشابه كلوا من ثمره إذا أثمر وآتوا حقه يوم حصاده ولا
تسرفوا إنه لا يحب المسرفين ۝ ومن الأنعام حمولة وفرشا
كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوات الشيطان إنه لكم عدو
مبين ۝ ثمانية أزواج من الضأن اثنين ومن المعز اثنين
قل آلذكرين حرم أم الأنثيين أما اشتملت عليه أرحام
الأنثيين نبئوني بعلم إن كنتم صادقين ۝ ومن الإبل
اثنين ومن البقر اثنين قل آلذكرين حرم أم الأنثيين

★रु॰ १६/३ आ ११ ●रुब्अ १/४

और अपने ख्याल से यह भी कहते है कि ये चारपाए और खेती मना है। उसे उस शख्स के सिवा, जिसे हम चाहे, कोई न खाये, और (कुछ) चारपाए ऐसे है, कि उन की पीठ पर चढना मना कर दिया गया है और कुछ मवेशी ऐसे है, जिन पर (जिब्ह करते वक़्त) खुदा का नाम नही लेते। सब खुदा पर झूठ है। वह बहुत जल्द उन को उन के झूठ का बदला देगा। (१३८) और यह भी कहते है कि जो बच्चा इन चारपायो के पेट में है, वह खास हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतो को उस का खाना हराम है और अगर वह बच्चा मरा हुआ हो, तो सब उस में शरीक हैं (यानी उसे मर्द और औरतें सब खाएं) बहुत जल्द खुदा उन को उन के ढकोसलो की सज़ा देगा। बेशक वह हिक्मत वाला खबरदार है।[1] (१३९) जिन लोगो ने अपनी औलाद को बे-वकूफी से, बे-समझी से कत्ल किया और खुदा पर झूठ गढ कर के उस की दी हुई रोजी को हराम ठहराया, वे घाटे मे पड गये। वे बे-शुब्हा गुमराह हैं और हिदायत पाए हुए नही है। (१४०) ★ ●

और खुदा ही तो है जिस ने बाग पैदा किए, छतरियो पर चढाए हुए भी और जो छतरियो पर नही चढ़ाये हुए, वह भी और खजूर और खेती, जिन के तरह-तरह के फल होते है और जैतून और अनार जो (कुछ बातो मे) एक-दूसरे से मिलते-जुलते है और (कुछ बातो मे) नही मिलते, जब ये चीजें फलें तो उन के फल खाओ और जिस दिन (फल तोडो और खेती) काटो, तो खुदा का हक भी उस में से अदा करो। और बे-जा न उडाना कि खुदा बे-जा उडाने वालो को दोस्त नही रखता। (१४१) और चारपायों में बोझ उठाने वाले (यानी बडे-बडे) भी पैदा किये और जमीन से लगे हुए (यानी छोटे-छोटे) भी। (पस) खुदा की दी हुई रोज़ी खाओ और शैतान के कदमों पर न चलो, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१४२) (ये बडे-छोटे चारपाए) आठ किस्म के (हैं), दो (-दो) भेडों में से और दो(-दो) बकरियो मे (यानी एक-एक नर और एक-एक मादा)। (ऐ पैगम्बर! उन से) पूछो कि (खुदा ने दोनों(के)नरो को हराम किया है या दोनो (की) मादिनो को या जो बच्चा मादिनो के पेट में लिपट रहा हो उसे, अगर सच्चे हो तो मुझे सनद से बताओ।(१४३)

---

१ मुश्रिको ने एक यह भी रस्म निकाल रखी है कि अगर जानवर जिब्ह किया जाए और उस के पेट मे से बच्चा निकले तो अगर बच्चा ज़िदा निकले, मर्दो को उस का खाना हलाल और औरतो को हराम और अगर मुर्दा निकले तो मर्दो और औरतो सब के लिए हलाल।

व मिनल् - इबिलिस्नैनि व मिनल् - ब-करिस्नैनि ط कुल् आज्ज-करैनि हर्र-म अमिल्-उन्सयैनि अम्मश्त-म-लत् अलैहि अर्हामुल्-उन्सयैनि अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज् वस्साकुमुल्लाहु बिहाजा ج फ़-मन् अज्-लमु मिम्मनिफ्तरा अ - लल्लाहि कजिबल्-लियुज़िल्लन्ना-स बिगैरि अिल्मिन् ط इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-कौमज़्ज़ालिमीन ☆ (१४४) कुल् ला अजिदु फी मा ऊहि-य इलय्-य मुहर्रमन् अला ताअिमिय्यत्-अमुहू इल्ला अय्यकू-न मैत-तन् औ द-मम्-मस्फूहन् औ लह्-म खिन्जीरिन् फ-इन्नहू रिज्सुन् औ फिस्कन् उहिल्-ल लिगैरिल्लाहि बिही ج फ-मनिज्तुर्-र गै-र बागिव्-व ला आदिन् फइन्-न रब्ब-क गफूरुर्रहीम (१४५) व अ-लल्-लजी-न हादू हर्रम्ना कुल्-ल जी जुफुरिन् ج व मिनल्ब-करि वल्ग-नमि हर्रम्ना अलैहिम् शुहूमहुमा इल्ला मा ह-म-लत् जुहूरुहुमा अविल्हवाया औ मख्-त-लत् वि-अज्मिन् ط जालि - क जजैनाहुम् बिबग्यिहिम् صلے व इन्ना ल-सादिकून (१४६) फइन् कज्जबू-क फ़कुर्रब्बुकुम् जू रह्मतिव्वा-सिअतिन् ج व ला युरद्दु बअ्सुहू अनिल्कौमिल्-मुज्रिमीन (१४७) स-य-कूलुल्लजी-न अश्रकू लौ शा-अल्लाहु मा अश्रक्ना व ला आबा-उना व ला हर्रम्ना मिन् शैइन् ط क-ज़ालि-क कज्जबल्लजी-न मिन् कब्लिहिम् हत्ता जाकू बअ्सना ط कुल् हल् अिन्दकुम् मिन् अिल्मिन् फतुख्रिजूहु लना ط इन् तत्तबिअू - न इल्लज़्ज़न-न व इन् अन्तुम् इल्ला तख्रुसून (१४८) कुल् फलिल्लाहिल्-हुज्जतुल्-बालिगतु ج फलौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअीन (१४९) कुल् हलुम्-म शुहदा-अकुमुल्लजी-न यश्हदू-न अन्नल्ला-ह हर्र-म हाजा ج फइन् शहिदू फला तश्हद् म-अहुम् ج व ला तत्तबिअ् अह्वा-अल्लजी-न कज्जबू बिआयातिना वल्लजी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आखिरति व हुम् बिरब्बिहिम् यअ्-दिलून ★ (१५०)

الانعام ١١٤ ولو اننا

اما اشتملت عليه ارحام الانثيين ام كنتم شهداء اذ وصىكم
الله بهذا فمن اظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس
بغير علم ان الله لا يهدي القوم الظلمين ۝ قل لا اجد في
ما اوحي الي محرما على طاعم يطعمه الا ان يكون ميتة او
دما مسفوحا او لحم خنزير فانه رجس او فسقا اهل لغير
الله به فمن اضطر غير باغ ولا عاد فان ربك غفور رحيم ۝
وعلى الذين هادوا حرمنا كل ذي ظفر ومن البقر والغنم حرمنا
عليهم شحومهما الا ما حملت ظهورهما او الحوايا او ما اختلط بعظم
ذلك جزينهم ببغيهم وانا لصدقون ۝ فان كذبوك فقل
ربكم ذو رحمة واسعة ولا يرد باسه عن القوم المجرمين ۝
سيقول الذين اشركوا لو شاء الله ما اشركنا ولا اباؤنا ولا حرمنا
من شيء كذلك كذب الذين من قبلهم حتى ذاقوا باسنا
قل هل عندكم من علم فتخرجوه لنا ان تتبعون الا الظن و
ان انتم الا تخرصون ۝ قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهدىكم
اجمعين ۝ قل هلم شهداءكم الذين يشهدون ان الله حرم
هذا فان شهدوا فلا تشهد معهم ولا تتبع اهواء الذين كذبوا
بايتنا والذين لا يؤمنون بالاخرة وهم بربهم يعدلون ۝ قل

★रु० १७/४ आ ४ ★रु १८/५ आ ६

और दो(-दो) ऊंटो मे से और दो-(दो) गायो मे से. (उन के बारे मे भी उन से) पूछो कि (ख़ुदा ने) दोनो (के) नरो को हराम किया है, या दोनो (की) मादिनो को या जो बच्चा मादिनो के पेट मे लिपट रहा है, उस को। भला जिस वक्त ख़ुदा ने तुम को इस का हुक्म दिया था तुम उस वक्त मौजूद थे ? तो उस शख़्स से ज्यादा कौन जालिम है, जो ख़ुदा पर झूठ गढे ताकि बे-जाने-बूझे लोगो को गुमराह करे। कुछ शक नही कि ख़ुदा जालिम लोगो को हिदायत नही देता। (१४४) ★

कहो कि जो हुक्म मुझ पर नाज़िल हुए है, मैं उन मे कोई चीज, जिसे खाने वाला खाये, हराम नही पाता, इस के अलावा कि वह मरा हुआ जानवर हो या बहता लहू या सुअर का गोश्त कि ये सब नापाक है या कोई गुनाह की चीज़ हो कि उस पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो और अगर कोई मजबूर हो जाए, लेकिन न तो ना-फरमानी करे और न हद से बाहर निकल जाए, तो तुम्हारा परवरदिगार बख़्शने वाला मेहरबान है। (१४५) और यहूदियो पर हम ने सब नाख़ून वाले जानवर हराम कर दिए थे और गायो और बकरियो से उन की चर्बी हराम कर दी थी, सिवा इस के, जो उन की पीठ पर लगी हो या ओझडी मे हो या हड्डी मे मिली हो यह सजा हम ने उन को उन की शरारत की वजह से दी थी और हम तो सच कहने वाले है।[1] (१४६) और अगर ये लोग तुम्हे झुठलाएं, तो कह दो कि तुम्हारा परवरदिगार फैली रहमत वाला है, मगर उस का अजाब गुनाहगार लोगो से नही टलेगा। (१४७) जो लोग शिर्क करते है, वे कहेगे कि अगर ख़ुदा चाहता, तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप-दादा (शिर्क करते) और न हम किसी चीज को हराम ठहराते। इसी तरह उन लोगो ने झुठलाया था, जो उन से पहले थे, यहा तक कि हमारे अजाब का मज़ा चख कर रहे। कह दो, क्या तुम्हारे पास कोई सनद है ? (अगर है) तो उसे हमारे सामने निकालो। तुम सिर्फ़ ख़्याल के पीछे चलते और अटकल के तीर चलाते हो। (१४८) कह दो कि ख़ुदा ही की हुज्जत गालिब है। अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता। (१४९) कहो कि अपने गवाहो को लाओ जो बताएं कि ख़ुदा ने ये चीजे हराम की है, फिर अगर वे (आ कर) गवाही दे, तो तुम उन के साथ गवाही न देना और न उन लोगो की ख़्वाहिशो की पैरवी करना, जो हमारी आयतो को झुठलाते है और जो आख़िरत पर ईमान नही लाते और (बुतो को) अपने परवर-दिगार के बराबर ठहराते है। (१५०) ★

---

१ जिन चीज़ो को ख़ुदा ने यहूदियो पर उन के जुल्म और शरारत और सरकशी की वजह से हराम किया था, जिस का कुछ बयान सूर निसा की आयत १६० मे है, उन की तफ़्सील इस आयत मे है। वे एक तो वह जानवर थे, जिन की उगलिया फटी हुई हो, जैसे ऊट और शुतुर मुर्ग और बतख या खुर वाले जानवर, जैसे गोर खर या पंजे वाले दरिंदे और गाय और बकरी की चर्बी, सिवा उस चर्बी के, जो उन की पीठ पर या ओझडी मे लगी हुई हो या हड्डी मे मिली हुई हो जैसे हाथ-पाव या पसली या आख या कान की चर्बी कि यह हलाल थी।

क़ुल् तआलौ अत्लु मा ह़र्र-म रब्बुकुम् अ़लैकुम् अल्ला तुश्रिकू बिही शैअव्-व बिल्वालिदैनि इह़्सानन् व ला तक़्तुलू औलादकुम् मिन् इम्लाक़िन् नह़्नु नर्ज़ुक़ुकुम् व इय्याहुम् व ला तक़्रबुल्-फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब-त़न व ला तक़्तुलुन्नफ़्सल्लती ह़र्रमल्लाहु इल्ला बिल्ह़क़्क़ि ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही ल-अ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून (१५१) व ला तक़्रबू मालल्-यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह़्सनु ह़त्ता यब्लु-ग अशुद्दहू व औफ़ुल्कै-ल वलमीज़ा-न बिल्क़िस्ति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा व इज़ा क़ुल्तुम् फ़अ़्-दिलू व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा व बि-अ़ह्दिल्लाहि औफ़ू ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही ल-अ़ल्लकुम् त-ज़क्करून (१५२) व अन्-न हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमन् फ़त्तबिअ़ूहु व ला तत्तबिअ़ुस्-सुबु-ल फ़-त-फ़र्र-क बिकुम् अ़न् सबीलिही ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही ल-अ़ल्लकुम् तत्तक़ून (१५३) सुम्-म आतैना मूसल्किता-ब तमामन् अ-लल्लज़ी अह़्-स-न व तफ़्सीलल्लिकुल्लि शैइव्-व हुदव्-व रह़्मतुल्ल-अ़ल्लहुम् बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् युअ्मिनून ★(१५४) व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुन् फत्तबिअ़ूहु वत्तक़ू ल-अ़ल्लकुम् तुर्ह़मून (१५५) अन् तक़ूलू इन्नमा उन्ज़िलल्-किताबु अ़ला ताइफ़तैनि मिन् क़ब्लिना व इन् कुन्ना अ़न् दिरासतिहिम् लग़ाफ़िलीन (१५६) औ तक़ूलू लौ अन्ना उन्ज़ि-ल अ़लैनल्-किताबु लकुन्ना अह्दा मिन्हुम् फ़-क़द् जा-अकुम् बय्यिनतुम्-मिर्रब्बिकुम् व हुदव्-व रह़्मतुन् फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् कज़्ज़-ब बिआयातिल्लाहि व स़-द-फ़ अ़न्हा स-नज्ज़िल्लज़ी-न यस़्दिफ़ू-न अ़न् आयातिना सू-अल्-अ़ज़ाबि बिमा कानू यस़्दिफ़ून (१५७)

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ
وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ
الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ
وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ
وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ
وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۭ ذٰلِكُمْ
وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۙ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا
فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ
وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا
عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً
لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ۧ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ
فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۙ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ
الْكِتٰبُ عَلٰي طَاۗىِٕفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۠ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ
لَغٰفِلِيْنَ ۙ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى
مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاۗءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۭ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ

★रु. १९/६ आ ४

कहो कि (लोगो !) आओ मैं तुम्हे वे चीज़े पढ कर सुनाऊं, जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर हराम कर दी है, (उन के बारे में उस ने इस तरह इर्शाद फरमाया है) कि किसी चीज़ को ख़ुदा का शरीक न बनाना और माँ-बाप से (बद-सुलूकी न करना, बल्कि) सुलूक करते रहना और नादारी (के ख़तरे) से अपनी औलाद को कत्ल न करना, क्योकि तुम को और उन को हमी रोजी देते है और बे-हयाई के काम जाहिर हो या छिपे हुए, उन के पास न फटकना। और किसी जान (वाले) को जिस के कत्ल को ख़ुदा ने हराम कर दिया है, कत्ल न करना, मगर जायज़ तौर पर (यानी) जिस का शरीअत हुक्म दे। इन बातो की वह तुम्हे ताकीद फरमाता है, ताकि तुम समझो। (१५१) और यतीम के माल के पास भी न जाना, मगर ऐसे तरीके से कि बहुत पसदीदा हो, यहा तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और नाप और तौल इसाफ के साथ पूरी-पूरी किया करो। हम किसी को तक्लीफ नही देते, मगर उस की ताकत के मुताबिक और जब (किसी के बारे मे) कोई बात कहो, तो इंसाफ से कहो, गो वह (तुम्हारा) रिश्तेदार ही हो और ख़ुदा के अह्द को पूरा करो। इन बातो का ख़ुदा तुम्हे हुक्म देता है, ताकि तुम नसीहत करो। (१५२) और यह कि मेरा सीधा रास्ता यही है, तो तुम उसी पर चलना और और रास्तो पर न चलना कि (उन पर चल कर) ख़ुदा के रास्ते से अलग हो जाओगे। इन बातो का ख़ुदा तुम्हे हुक्म देता है, ताकि तुम परहेज़गार बनो। (१५३) (हा) फिर (सुन लो कि) हम ने मूसा को किताब दी थी, ताकि उन लोगो पर जो भले है, नेमत पूरी कर दे और (उस मे) हर चीज़ का बयान (है) और हिदायत (है) और रहमत है, ताकि (उन की उम्मत के) लोग अपने परवरदिगार के सामने जाहिर होने का यकीन करे। (१५४) ✱

और (ऐ कुफ्र करने वालो !) यह किताब भी हमी ने उतारी है बरकत वाली, तो उस की पैरवी करो और (ख़ुदा से) डरो, ताकि तुम पर मेहरबानी की जाए। (१५५) (और इस लिए उतारी है) कि (तुम यो न) कहो कि हम से पहले दो ही गिरोहो पर किताबें उतरी हैं और हम उन के पढने से (मजबूर और) बे-ख़बर थे। (१५६) या (यह न) कहो कि अगर हम पर भी किताब नाज़िल होती तो हम उन लोगो के मुकाबले कही सीधे रास्ते पर होते, सो तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से दलील और हिदायत और रहमत आ गयी है। तो उस से बढ कर जालिम कौन होगा जो ख़ुदा की आयतो को झुठलाये और उन से (लोगो को) फेरे। जो लोग हमारी आयतो से फेरते है, इस फेरने की वजह से हम उन को बुरे अजाब की सज़ा देंगे। (१५७) ये इस

★रु. १९/६ आ ४

हल् यन्जुरू-न इल्ला अन् तअ्ति-य-हुमुल्-मला-इकतु औ यअ्ति-य रब्बु-क औ यअ्ति-य बअ्-जु आयाति रब्बि-क यौ-म यअ्ती बअ्-जु आयाति रब्बि-क ला यन्फ़अु नफ़्सन् ईमानुहा लम् तकुन् आम-नत् मिन् कब्लु औ क-स-बत् फ़ी ईमानिहा ख़ैरन् कुलिन-तज़िरू इन्ना मुन्तज़िरून (१५८) इन्नल्लज़ी-न फ़र्रकू दीनहुम् व कानू शि-य-अ़ल्लस्-त मिन्हुम् फ़ी शैइन् इन्नमा अम्रुहुम् इलल्लाहि सुम्-म युनब्बिउहुम् बिमा कानू यफ़्-अ़लून (१५९) मन् जा-अ बिल्ह़-स-नति फ़-लहू अश्रु अम्सालिहा व मन् जा-अ बिस्सय्यिअति फ़ला युज्जा इल्ला मिस्लहा व हुम् ला युज़-लमून (१६०) कुल् इन्ननी हदानी रब्बी इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम दीनन् कि-य-मम्मिल्-ल-त इब्राही-म ह़नीफ़न् व मा का-न मिनलमुश्रिकीन (१६१) कुल् इन्-न सलाती व नुमुकी व मह्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (१६२) ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क उमिर्तु व अ-न. अव्वलुल्-मुस्-लिमीन (१६३) कुल् अ-ग़ैरल्लाहि अब्ग़ी रब्बव्-व हु-व रब्बु कुल्लि शैइन् व ला तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् इल्ला अ़लैहा व ला तज़िरु वाज़िरतुंव्विज़-र उख़्रा सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअुकुम् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (१६४) व हुवल्लज़ी ज-अ-लकुम् ख़ला-इफ़ल्-अर्ज़ि व र-फ़-अ़ बअ्-जकुम् फ़ौ-क़ बअ्-ज़िन् द-र-जातिल्-लियब्लु-वकुम् फ़ी मा आताकुम् इन्-न रब्ब-क सरीअुल्-अिक़ाबि व इन्नहू ल-गफ़ूरुर्रहीम ★ ● (१६५)

الانعام ٦ — ١١٩ — ولو اننا ٨

يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ۝
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ
بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا
اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا
قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا
شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا
وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝
قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ
اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ
وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيْكَ لَهٗ
وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ
رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ
الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ
اٰتٰىكُمْ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

منزل

★रु २०/७ आ ११● नि १/२

के सिवा और किस बात के इन्तिजार मे है कि उन के पास फरिश्ते आएं या खुद तुम्हारा परवरदिगार आये या तुम्हारे परवरदिगार की कुछ निशानिया आयें (मगर) जिस दिन तुम्हारे परवरदिगार की कुछ निशानिया आ जाएगी, तो जो शख्स पहले ईमान नही लाया होगा, उस वक्त उसे ईमान लाना कुछ फायदा नही देगा या अपने ईमान (की हालत) मे नेक अमल नही किये होगे, (तो गुनाहो से तौबा करना मुफीद न होगा। (ऐ पैगम्बर ! उन से) कह दो कि तुम भी इंतिजार करो, हम भी इतिजार करते है। (१५८) जिन लोगो ने अपने दीन मे (बहुत से) रास्ते निकाले और कई-कई फिर्के हो गये, उनसे तुमको कुछ काम नही। उन का काम खुदा के हवाले। फिर जो-जो कुछ वे करते रहे है, वह उन को (सब) बतायेगा।[1] (१५९) जो कोई (खुदा के हुजूर) नेकी ले कर आयेगा, उस की वैसी दस नेकिया मिलेगी और जो बुराई लाएगा उसे सजा वैसी ही मिलेगी और उन पर जुल्म नही किया जाएगा। (१६०) कह दो कि मुझे मेरे परवरदिगार ने सीधा रास्ता दिखा दिया है (यानी सही दीन) मजहब इब्राहीम का, जो एक (खुदा) ही की तरफ के थे, और मुश्रिको मे से न थे। (१६१) (यह भी) कह दो कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। (१६२) जिस का कोई शरीक नही और मुझ को इसी बात का हुक्म मिला है और मैं सब से अव्वल फरमाबरदार हू। (१६३) कहो, क्या मैं खुदा के सिवा और परवरदिगार खोजू ? और वही तो हर चीज का मालिक है। और जो कोई (बुरा) काम करता है, तो उस का नुक्सान उसी को होता है। और कोई शख्स किसी (के गुनाह) का बोझ नही उठायेगा, फिर तुम सब को अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है, तो जिन-जिन बातो मे तुम इख्तिलाफ किया करते थे, वह तुम को बतायेगा। (१६४) और वही तो है, जिस ने ज़मीन मे तुम को अपना नायब बनाया और एक दूसरे पर दर्जे बुलद किये ताकि जो कुछ उस ने तुम्हे बख्शा है, उस मे तुम्हारी आजमाइश करे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जल्द अजाब देने वाला मेहरबान भी है। (१६५) ☆ ◯

---

१ दीन मे तफरका डालना और कई-कई फिर्के बन जाना खुदा को सख्त ना-पसन्द है। इसी लिए फरमाया है कि जिन लोगो ने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और कई-कई फिर्के बन गये, (ऐ पैगम्बर !) उन से तुम्हारा कोई मतलब नही। अल्लाह तआला की मर्जी तो यह है कि सब लोग एक दीन (यानी इस्लाम) पर जो सच्चा दीन है, चले और उस की हिदायतो पर अमल करे, मगर कोई किसी रास्ते पर चलता है, कोई किसी पर। किसी ने कोई तरीका अख्तियार किया है, किसी ने कोई राह और आपस मे इत्तिफाक की जगह नफरत व अदावत पैदा हो जाती है। कुछ शक नही कि इन बातो की वजह यह है कि वे कुरआन को गौर से नही पढ़ते और उस के अहकाम पर नही चलते। अगर अल्लाह तआला के मक्सद को समझ लिया जाए तो इख्तिलाफ व तफर्के का नाम व निशान न रहे।

★रु २०/७ आ ११● नि १/२

७ सूरतुल् अअ्राफ़ि ३९

(मक्की) इस सूर मे अरबी के १४६३५ अक्षर, ३३८७ शब्द, २०६ आयत और २४ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ्-लाम्-मीम्-साद् ८ (१) किताबुन् उन्जि - ल इलै-क फला यकुन् फ़ी सद्रि-क ह-रजुम्-मिन्हु लितुन्जि-र बिही व जिक्रा लिल्मुअ्मिनीन (२) इत्तबिअू मा उन्जि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् व ला तत्तबिअू मिन् दूनिही औलिया-अ ७ कलीलम्-मा त-जक्करून (३) व कम् मिन् कर्यतिन् अह्लक्नाहा फजा-अहा बअ्सुना ब-यातन् औ हुम् क़ा-इलून (४) फ़मा का-न दअ्-वाहुम् इज् जा-अहुम् बअ्सुना इल्ला अन् क़ालू इन्ना कुन्ना जालिमीन (५) फ़-ल-नस्अलन्नल्-लज़ी-न उर्सि-ल इलैहिम् व ल-नस्-अलन्नल्-मुर्सलीन ॥ (६) फ़-ल-नकुस्सन्-न अलैहिम् बिअिल्मिव्-व मा कुन्ना गा-इबीन (७) वल्वज्नु यौमइजि-निल् - हक़्कु ८ फ़ - मन् सकुलत् मवाजीनुहू फ़ - उलाइ-क हुमुल्-मुफ्लिहून (८) व मन् ख़फ्फत् मवाजीनुहू फ-उला - इकल्लज़ी - न ख़सिरू अन्फुसहुम् बिमा कानू बिआयातिना यज्लिमून (९) व ल-कद् मक्कन्नाकुम् फ़िल्अर्जि व ज-अल्ना लकुम् फ़ीहा मआयि-श७ क़लीलम्मा तश्कुरून ★(१०) व ल - क़द् ख़ - लक्नाकुम् सुम् - म सव्वर्नाकुम् सुम् - म कुल्ना लिल्मला - इकतिस्जुदू लि-आद-म फ-स-जदू इल्ला इब्ली - स ७ लम् यकुम् - मिनस्साजिदीन (११) का - ल मा म-न-अ-क अल्ला तस्जु-द इज् अमर्तु-क ७ क़ा - ल अ-न ख़ैरुम् - मिन्हु ख़-लक़्तनी मिन् नारिव्-व ख़-लक़्तहू मिन् तीन (१२) का-ल फ़ह्बित मिन्हा फ़मा यकूनु ल-क अन् त-त-कब्ब-र फ़ीहा फ़ख्रुज् इन्न-क मिनस्सागिरीन (१३)

سُورَةُ الْأَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَتَانِ وَسِتُّ آيَاتٍ وَأَرْبَعٌ وَعِشْرُونَ رُكُوعًا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
المص ۝ كِتَابٌ أُنزِلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُن فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ
لِتُنذِرَ بِهِ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ اتَّبِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم
مِّن رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝
وَكَم مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا أَوْ هُمْ قَائِلُونَ ۝
فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ إِذْ جَاءَهُم بَأْسُنَا إِلَّا أَن قَالُوا إِنَّا كُنَّا
ظَالِمِينَ ۝ فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ ۝
فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِم بِعِلْمٍ وَمَا كُنَّا غَائِبِينَ ۝ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ
الْحَقُّ فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَنْ
خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُم بِمَا كَانُوا
بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا
مَعَايِشَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ
ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ لَمْ يَكُن
مِّنَ السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ قَالَ أَنَا
خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۝ قَالَ
فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَن تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ

★रु १/८ आ १०

७ सूरः आराफ़ ३९

सूर. आराफ मक्की है और इस मे दो सौ छ आयते और चौबीस रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ्-लाम्-मीम्-स्वाद्। (१) (ऐ मुहम्मद ! यह) किताब (जो) तुम पर नाज़िल हुई है, इस से तुम को तंगदिल नही होना चाहिए। (यह नाज़िल) इस लिए (हुई है) कि तुम इस के ज़रिए से (लोगो को) डर सुनाओ और (यह) ईमान वालो के लिए नसीहत है। (२) (लोगो !) जो (किताब) तुम पर तुम्हारे परवरदिगार के यहा से नाजिल हुई है, उस की पैरवी करो और इस के सिवा और साथियो की पैरवी न करो (और) तुम कम ही नसीहत कुबूल करते हो। (३) और कितनी ही बस्तिया है कि हम ने तबाह कर डाली, जिन पर हमारा अजाब (या तो रात को) आता था, जबकि वे सोते थे, या (दिन को) जब वे कैलूला (यानी दोपहर को आराम) करते थे। (४) तो जिस वक़्त उन पर अजाब आता था, उन के मुह से यही निकलता था कि (हाय !) हम (अपने ऊपर) ज़ुल्म करते रहे। (५) तो जिन लोगो की तरफ पैगम्बर भेजे गये, हम उन से भी पूछेगे और पैगम्बरो से भी पूछेगे। (६) फिर अपने इल्म से उन के हालात बयान करेगे और हम कही गायब तो नही थे। (७) और उस दिन (आमाल का) तुलना बर-हक है, तो जिन लोगो के (अमलो के) वज़्न भारी होगे, वे तो निजात पाने वाले है। (८) और जिन के वज़न हल्के होगे, तो यही लोग हैं, जिन्हो ने अपने को घाटे मे डाला, इस लिए कि हमारी आयतो के बारे मे बे-इंसाफी करते थे। (९) और हमी ने ज़मीन मे तुम्हारा ठिकाना बनाया और इस मे तुम्हारे लिए रोज़ी के सामान पैदा किए (मगर) तुम कम ही शुक्र करते हो। (१०) ★

और हमी ने तुम को (शुरू मे मिट्टी से) पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत-शक्ल बनायी, फिर फरिश्तो को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो, तो (सब ने) सज्दा किया, लेकिन इब्लीस, कि वह सज्दा करने वालो मे (शामिल) न हुआ। (११) (खुदा ने) फ़रमाया, जब मैं ने तुझ को हुक्म दिया, तो किस चीज ने तुझे सज्दा करने से रोका। उस ने कहा कि मैं इस स अफ्ज़ल हूं। मुझे तू ने आग से पैदा किया है और इसे मिट्टी से बनाया है। (१२) फ़रमाया, तू (बहिश्त से) उतर जा। तुझे मुनासिब नही कि यहा घमंड करे, पस निकल जा, तू ज़लील है। (१३) उस ने कहा कि

★ र १/८ आ १०

का-ल अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्अ़सून (१४) का-ल इन्न-क मिनल्मुन्ज़रीन (१५) का-ल फ़बिमा अग्वै-तनी ल-अक्अ़ुदन्-न लहुम् सिरात-कल्-मुस्तक़ीम (१६) सुम्-म ल-आतियन्नहुम् मिम्बैनि ऐदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् व अ़न् ऐमानिहिम् व अ़न् शमा-इलिहिम् व ला तजिदु अक्स-रहुम् शाकिरीन (१७) कालख़्रुज् मिन्हा मज़्ऊमम्-मद्हूरन् ल-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् ल-अम्-ल-अन्-न जहन्न-म मिन्कुम् अज्मअ़ीन (१८) व या आदमुस्कुन् अन्-त व ज़ौजुकल्जन्न-त फ़कुला मिन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़्रबा हाज़िहिश्श-ज-र-त फ़-तकूना मिनज़्ज़ालिमीन (१९) फ़-वस्-व-स लहुमश्शैतानु लियुब्दि-य लहुमा मा वूरि-य अ़न्हुमा मिन् सौआतिहिमा व का-ल मा नहाकुमा रब्बुकुमा अ़न् हाज़िहिश्श-ज-रति इल्ला अन् तकूना म-लकैनि औ तकूना मिनल्ख़ालिदीन (२०) व क़ास-महुमा इन्नी लकुमा लमिनन्नासिहीन (२१) फ़-दल्लाहुमा बिग़ुरूरिन् फ़-लम्मा ज़ाक़श्श-ज-र-त ब-दत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिव्-व-रक़िल्-जन्नति व नादाहुमा रब्बुहुमा अ-लम् अन्-हकुमा अ़न् तिल्कुमश्श-ज-रति व अक़ुल्लकुमा इन्नश्शैता-न लकुमा अ़दुव्वुम्-मुबीन (२२) क़ाला रब्बना ज़-लम्ना अन्फ़ुसना सक्तः व इल्लम् तग्फ़िर्लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनल्ख़ासिरीन (२३) कालह्बितू बअ़्-ज़ुकुम् लिबअ़्-ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्तक़र्रुव्-व मताअ़ुन् इला हीन (२४) क़ा-ल फ़ीहा तह्यौ-न व फ़ीहा तमूतू-न व मिन्हा तुख़्रजू-न ★ (२५) या बनी आद-म क़द् अन्ज़ल्ना अ़लैकुम् लिबासंय्युवारी सौआतिकुम् व रीशन् व लिबासुत्तक़्वा ज़ालि-क ख़ैरुन् ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि ल-अ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून (२६)

والواماء ١٢١ الاعراف ٧

الصٰغرين ﴿١٣﴾ قال انظرني الى يوم يبعثون ﴿١٤﴾ قال انك من
المنظرين ﴿١٥﴾ قال فبما اغويتني لاقعدن لهم صراطك المستقيم ﴿١٦﴾
ثم لاٰتينهم من بين ايديهم ومن خلفهم وعن ايمانهم وعن
شمائلهم ولا تجد اكثرهم شٰكرين ﴿١٧﴾ قال اخرج منها مذءوما
مدحورا لمن تبعك منهم لاملئن جهنم منكم اجمعين ﴿١٨﴾ و
يٰاٰدم اسكن انت وزوجك الجنة فكلا من حيث شئتما ولا تقربا
هٰذه الشجرة فتكونا من الظٰلمين ﴿١٩﴾ فوسوس لهما الشيطٰن ليبدي
لهما ما وري عنهما من سواٰتهما وقال ما نهٰىكما ربكما عن
هٰذه الشجرة الا ان تكونا ملكين او تكونا من الخٰلدين ﴿٢٠﴾
وقاسمهما اني لكما لمن النٰصحين ﴿٢١﴾ فدلٰىهما بغرور فلما ذاقا
الشجرة بدت لهما سواٰتهما وطفقا يخصفٰن عليهما من ورق
الجنة ونادٰىهما ربهما الم انهكما عن تلكما الشجرة واقل
لكما ان الشيطٰن لكما عدو مبين ﴿٢٢﴾ قالا ربنا ظلمنا انفسنا
وان لم تغفر لنا وترحمنا لنكونن من الخٰسرين ﴿٢٣﴾ قال اهبطوا
بعضكم لبعض عدو ولكم في الارض مستقر ومتاع الى
حين ﴿٢٤﴾ قال فيها تحيون وفيها تموتون ومنها تخرجون ﴿٢٥﴾
يٰبني اٰدم قد انزلنا عليكم لباسا يواري سواٰتكم وريشا ولباس

★ रु २/९ आ १५

मुझे उस दिन तक मुहलत अता फरमा, जिस दिन लोग (कब्रो से) उठाए जाएगे। (१४) फरमाया, (अच्छा,) तुझ को मुहलत दी जाती है। (१५) (फिर) शैतान ने कहा कि मुझे तो तू ने मल्ऊन किया ही है। मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर उन (को गुमराह करने) के लिए बैठूगा। (१६) फिर उन के आगे से और पीछे से और दाए से और बाए से (गरज हर तरफ से) आऊगा (और उन की राह मारूगा) और तू उन मे अक्सर को शुक्रगुज़ार नही पायेगा। (१७) (खुदा ने) फरमाया, निकल जा यहा से पाजी मर्दूद। जो लोग उन मे से तेरी पैरवी करेगे, मैं (उन को और तुझ को जहन्नम मे डाल कर) तुम सब से जहन्नम को भर दूगा। (१८) और (हम ने) आदम (से कहा कि) तुम और तुम्हारी बीवी बहिश्त मे रहो-सहो और जहा से चाहो (और जो चाहो) खाओ, मगर इस पेड के पास न जाना, वरना गुनाहगार हो जाओगे। (१९) तो शैतान दोनो को बहकाने लगा ताकि उन के सतर की चीजे, जो उन से छिपी थी, खोल दे और कहने लगा कि तुम को तुम्हारे परवरदिगार ने पेड़ से सिर्फ इस लिए मना किया है कि तुम फरिश्ते न बन जाओ या हमेशा जीते न रहो। (२०) और उन से क़सम खा कर कहा कि मैं तो तुम्हारा भला चाहने वाला हू। (२१) गरज़ (मर्दूद ने) धोखा दे कर उन को (गुनाह की तरफ) खीच ही लिया, जब उन्होने उस पेड़ (के फल) को खा लिया, तो उन के सतर की चीज खुल गयी और वह बहिश्त मे (पेडो के) पत्ते (तोड-तोड कर) अपने ऊपर चिपकाने (और सतर छिपाने) लगे। तब उन के परवरदिगार ने उन को पुकारा कि क्या मैं ने तुम को इस पेड (के पास जाने) से मना नही किया था और बता नही दिया था कि शैतान तुम्हारा खुल्लम-खुल्ला दुश्मन है। (२२) दोनो कहने लगे कि परवरदिगार! हम ने अपनी जानो पर जुल्म किया और अगर तू हमे नही बख्शेगा और हम पर रहम नही करेगा, तो हम तबाह हो जाएगे। (२३) (खुदा ने) फरमाया, (तुम सब बहिश्त से) उतर जाओ। (अब से) तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए एक (खास) वक्त तक जमीन पर ठिकाना और (ज़िंदगी का) सामान (कर दिया गया) है। (२४) (यानी) फरमाया कि उसी मे तुम्हारा जीना होगा और उसी मे मरना, उसी मे से (कियामत को जिंदा कर के) निकाले जाओगे। (२५) ★

ऐ बनी आदम! हम ने तुम पर पोशाक उतारी कि तुम्हारा सतर ढाके और (तुम्हारे बदन को) ज़ीनत (दे) और (जो) परहेजगारी का लिबास (है)। वह सब से अच्छा है। ये खुदा की निशानिया है ताकि लोग नसीहत पकड़े। (२६) ऐ बनी आदम! (देखना कही) शैतान तुम्हे

★रु २/९ आ १५

या बनी आद-म ला यफ़्तिनन्नकुमुश्शैतानु कमा अख़्-र-ज अ-ब-वैकुम् मिनल्जन्नति यन्ज़िअु अन्हुमा लिबा-सहुमा लियुरि-यहुमा सौआतिहिमा ط इन्नहू यराकुम् हु-व व क़बीलुहू मिन् हैसु ला तरौनहुम् ط इन्ना ज-अल्नश्-शयाती-न औलिया-अ लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनून (२७) व इज़ा फ़-अलू फ़ाहि-श-तन् क़ालू व-जद्ना अलैहा आबा-अना वल्लाहु अ-म-रना बिहा ط कुल् इन्नल्ला-ह ला यअ्मुरु बिल्फ़ह्-शा-इ ط अ-तक़ूलू-न अ-लल्लाहि मा ला तअ्-लमून (२८) कुल् अ-म-र रब्बी बिल्क़िस्ति قف व अक़ीमू वुजूहकुम् अिन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्वद्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न ط कमा ब-द-अकुम् त-अूदून ط (२९) फ़रीक़न् हदा व फ़रीक़न् हक़्-क़ अलैहिमुज़्ज़लालतु ط इन्नहुमुत्त-ख़ज़ुश्-शयाती-न औलिया-अ मिन् दूनिल्लाहि व यह्सबू-न अन्नहुम् मुह्तदून (३०) या बनी आद-म ख़ुज़ू ज़ीन-तकुम् अिन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्-व कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफ़ू ج इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्रिफ़ीन ★(३१) क़ुल् मन् हर्-र-म ज़ीनतल्लाहिल्लती अख़्-र-ज लिअिबादिही वत्तय्यिबाति मिनर्रिज़्क़ ط क़ुल् हि-य लिल्लज़ी-न आमनू फ़िल्-हयातिद्दुन्या ख़ालि-स-तंय्यौमल्-क़ियामति ط कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (३२) कुल् इन्नमा हर्-र-म रब्बियल्-फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब-त-न वल्इस्-म वल्बग़्-य बिग़ैरिल्हक़्क़ि व अन् तुश्रिकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव्-व अन् तक़ूलू अ-लल्लाहि मा ला तअ्-लमून (३३)

التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ
اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ
عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ
حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا
قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝
قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ۝ فَرِيْقًا
هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ
اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ
اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ
مَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ

★रु ३/१० आ ६

बहका न दे, जिस तरह तुम्हारे मा-बाप को (बहका कर) बहिश्त से निकलवा दिया और उन से उन के कपडे उतरवा दिए, ताकि उन से सतर उन को खोल कर दिखा दे। वह और उस के भाई तुम को ऐसी जगह से देखते रहते हैं, जहां से तुम उन को नही देख सकते। हम ने शैतानो को उन्ही लोगो का साथी बनाया है, जो ईमान नही रखते। (२७) और जब कोई बे-हयाई का काम करते है, तो कहते हैं कि हम ने अपने बुजुर्गो को इसी तरह करते देखा है और खुदा ने भी हम को यही हुक्म दिया है। कह दो कि खुदा बे-हयाई के काम करने का हुक्म हरगिज़ नही देता। भला तुम खुदा के बारे मे ऐसी बात क्यो कहते हो, जिस का तुम्हे इल्म नही। (२८) कह दो कि मेरे परवरदिगार ने तो इन्साफ करने का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज़ के वक्त सीधा (किब्ले की तरफ) रुख किया करो और खास उसी की इबादत करो और उसी को पुकारो। उस ने जिस तरह तुम को शुरू मे पैदा किया था, उसी तरह तुम फिर पैदा होगे। (२९) एक फरीक को तो उस ने हिदायत दी और एक फरीक पर गुमराही साबित हो चुकी। इन लोगो ने खुदा को छोड़ कर शैतानो को दोस्त बना लिया और समझते (यह) है कि हिदायत पाये हुए हैं। (३०) ऐ बनी आदम! हर नमाज़ के वक़्त अपने को मुज़य्यन (सुसज्जित) किया करो।[1] और खाओ और पियो और बे-जा न उडाओ कि खुदा बे-जा उडाने वालो को दोस्त नही रखता। (३१) ★

पूछो तो, कि जो ज़ीनत (व आराइश) और खाने (-पीने) की पाक चीजें खुदा ने अपने बन्दो के लिए पैदा की है, उन को हराम किस ने किया है? कह दो कि ये चीजे दुनिया की ज़िंदगी मे ईमान वालों के लिए है और कियामत के दिन खास उन्ही का हिस्सा होगी। इसी तरह खुदा अपनी आयतें समझने वालो के लिए खोल-खोल कर बयान फरमाता है।[2] (३२) कह दो कि मेरे परवर-दिगार ने तो बे-हयाई की बातो को, ज़ाहिर हो या छिपी हुई और गुनाह को और ना-हक ज़्यादती करने को हराम किया है और इस को भी कि तुम किसी को खुदा का शरीक बनाओ, जिस की उस ने कोई सनद नाज़िल नही की और इस को भी कि खुदा के बारे मे ऐसी बातें कहो, जिन का तुम्हे

---

१ ज़ीनत उस चीज़ को कहते हैं, जिस से सजावट की जाए जैसे लिबास। इब्ने अब्बास कहते हैं कि जाहिलियत के ज़माने मे लोग काबे का तवाफ नगे करते थे। खुदा ने उस से मना फरमाया और हुक्म दिया कि जब तवाफ को या मस्जिद मे नमाज़ को आओ, तो कपडा पहन कर आओ, नगे न आओ। इस से नमाज़ मे पर्दे की चीज़ो को ढाकना फ़र्ज़ हो गया। इल्म वालो के नज़दीक हर हालत मे सतरे औरत ढाकना फर्ज़ है, चाहे आदमी तन्हा ही क्यो न हो। कुछ ने कहा कि सजाने से मुराद कघी करना और खुश्बू लगाना है, मगर वही पहली बात सही है। और अगर कघी भी कर ली जाए और खुश्बू भी लगा ली जाए तो सजावट पर सजावट है। 'खाओ और पियो' के इर्शाद से मक्सद खुदा की नेमतो से फायदा उठाना है यानी पाकीज़ा और सुथरी चीज़ो से, जो खुदा ने तुम्हारे ही लिए पैदा की हैं फायदा उठाओ और खुदा का शुक्र अदा करो। एक हदीस मे आया है कि खाओ और पियो और पहनो और सद्का दो, लेकिन न बे-जा उडाओ, न इतराओ, क्योकि अल्लाह तआला को यह बात भली लगती है कि अपनी नेमत अपने बदे पर देखे। जिस तरह पाक रोज़ी के खाने-पीने की इजाज़त है, उसी तरह बे-जा उडाने से मना किया गया है यानी बे-ज़रूरत खाना या पेट-भरे की हालत मे खाना कि यह ज़्यादा है, फिज़ूल-खर्ची मे दाखिल है। यह आयत फिज़ूल खर्ची करने वालो के हक मे एक डरावा है।

२. इस आयत से पाया जाता है कि जिस तरह खाने-पीने की चीज़ो और माल का उड़ाना हराम है, इसी तरह उन को छोड देना और उन मे फायदा न उठाना भी खुदा को ना-पसन्द है और सच पूछो तो यह खुदा की नेमतो

(शेष पृष्ठ २४३ पर)

★रु. ३/१० आ ६

व लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन् फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्खिरू-न सा-अतंव्-व ला यस्तक़्दिमून (३४) या बनी आद-म इम्मा यअ्तियन्नकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यक़ुस्सू-न अलैकुम् आयाती फ़-मनित्तक़ा व अस्-ल-ह फला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (३५) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा उला-इ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (३६) फ़-मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि क़ज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही उला-इ-क यनालुहुम् नसीबुहुम् मिनल्-किताबि हत्ता इज़ा जा-अत्हुम् रुसुलुना य-त-वफ़्फ़ौनहुम् क़ालू ऐ-न मा कुन्तुम् तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन (३७) क़ालद्ख़ुलू फी उममिन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिकुम् मिनल्जिन्नि

أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝
يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي فَمَنِ
اتَّقَى وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ أُولَٰئِكَ
يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ
قَالُوا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَ
شَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝ قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ
لَعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ
رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِنَ النَّارِ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَلَٰكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ
السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

वल्इन्सि फ़िन्नारि कुल्लमा द-ख-लत् उम्मतुल्-ल-अ-नत् उख़्तहा हत्ता इज़द्दारकू फ़ीहा जमीअ़न् क़ालत् उख़्राहुम् लिऊलाहुम् रब्बना हा-उला-इ अ-ज़ल्लूना फ़-आतिहिम् अज़ाबन् ज़िअ़्-फ़म्-मिनन्नारि क़ा-ल लिकुल्लिन् ज़िअ़्-फ़ुंव्-व लाकिल्ला तअ़्-लमून (३८) व क़ालत् ऊलाहुम् लिउख़्राहुम् फ़मा का-न लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिन् फ़ज़ूक़ुल्-अज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्सिबून ★ (३९) इन्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा ला तुफ़त्तहु लहुम् अब्वाबुस्समा-इ व ला यद्ख़ुलूनल्जन्न-त हत्ता यलिजल्-ज-मलु फ़ी सम्मिल्-ख़ियाति व कज़ालि-क नज्ज़ि-ल-मुज्रिमीन (४०) लहुम् मिन् जहन्न-म मिहादुंव्-व मिन्-फ़ौक़िहिम् ग़वाशिन् व कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (४१)

★रु ४/११ आ ८

कुछ इल्म नही। (३३) और हर एक फ़िर्के के लिए (मौत का) एक वक्त मुकर्रर है। जब वह वक्त आ जाता है, तो न तो एक घड़ी देर कर सकते है, न जल्दी। (३४) ऐ बनी आदम! (हम तुम को यह नसीहत हमेशा करते रहे हैं कि) जब हमारे पैगम्बर तुम्हारे पास आया करें और हमारी आयतें तुम को सुनाया करे (तो उन पर ईमान लाया करो कि) जो शख्स (उन पर ईमान ला कर) खुदा से डरता रहेगा और अपनी हालत ठीक रखेगा, तो ऐसे लोगो को न कुछ खौफ होगा और न वे गमनाक होंगे। (३५) और जिन्हों ने हमारी आयतो को झुठलाया और उनसे सर-ताबी की, वही दोज़खी है कि हमेशा उस मे (जलते) रहेगे। (३६) तो उस से ज्यादा ज़ालिम कौन है, जो खुदा पर झूठ वाधे या उस की आयतो को झुठलाये, उन को उन के नसीब का लिखा मिलता ही रहेगा, यहा तक कि जब उन के पास हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) जान निकालने आएगे, तो कहेगे कि जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारा करते थे, वे (अब) कहा हैं? वे कहेगे, (मालूम नही) कि वे हम से (कहां) गायब हो गये? और इकरार करेंगे कि बेशक वे काफिर थे। (३७) तो खुदा फरमाएगा कि जिन्नो और इन्सानो की जो जमाअतें तुम से पहले हो गुज़री है, उन्ही के साथ तुम भी जहन्नम मे दाखिल हो जाओ। जब एक जमाअत (वहां) दाखिल होगी तो अपनी (मज़हबी) बहन (यानी अपनी जैसी दूसरी जमाअत) पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उस में दाखिल हो जाएगे, तो पिछली जमाअत पहली के बारे मे कहेगी कि ऐ परवरदिगार! इन्ही लोगो ने हम को गुमराह किया था, तो इन को जहन्नम की आग का दोगुना अज़ाब दे। खुदा फरमाएगा कि (तुम) सब को दोगुना (अज़ाब दिया जाएगा), मगर तुम नही जानते। (३८) और पहली जमाअत पिछली से कहेगी कि तुम को हम पर कुछ भी फज़ीलत न हुई, तो जो (अमल) तुम किया करते थे, उसके बदले मे अज़ाब के मज़े चखो। (३९) ★

जिन लोगो ने हमारी आयतो को झुठलाया और उन से सर-ताबी की, उन के लिए न आसमान के दरवाज़े खोले जाएंगे और न वे बहिश्त मे दाखिल होगे, यहा तक कि ऊंट सूई के नाके मे से निकल जाए।[1] और गुनाहगारो को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते है। (४०) ऐसे लोगो के लिए (नीचे) बिछौना भी जहन्नम (की आग) का होगा और ऊपर से ओढना भी (इसी का) और ज़ालिमो को

(पृष्ठ २४१ का शेष)

की ना-शुक्री है। अगर खुदा किसी को अच्छी किस्म की चीज़ें खाने-पीने-पहनने को दे, तो वह उन को छोड कर मामूली चीज़ो को क्यो अपनाये? ऐसा करना खुदा की सुन्नत के खिलाफ है। उस ने तमाम खाने-पीने और पहनने की और ज़ेब व ज़ीनत की चीज़ें हलाल की हैं और जब तक कोई शरअी मजबूरी रुकावट न बने, उन से फायदा उठाना चाहिए। इमाम फख्रुद्दीन राज़ी रह० कहते हैं कि इस आयत मे हर किस्म के लिबास और ज़ेवर दाखिल हैं। अगर मर्दों के लिए सोने और रेशम का पहनना हराम न होता तो आयत के आम होने से इस का मतलब उन पर सही ठहरता। गरज़ खाने-पीने और ज़ीनत की बेहतर और अच्छी चीज़ो को जुह्द (दुनिया को छोड देने) की बुनियाद पर छोड देना गलती है। हा, अगर कोई खाकसारी के जज़्बे से अच्छे कपडे न पहने और फटे-पुराने पहनने लगे, तो जायज़ है।

१ यह हकीकत से मुताल्लिक है कि न ऊट सूई के नाके मे से निकल सके, न कुफ्फार बहिश्त मे दाखिल हों।

★रु ४/११ आ ८

वल्लज़ी - न आमनू व अमिलुस्सालिहाति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्-अहा उला-इ-क अस्हाबुल्जन्नति हुम् फ़ीहा खालिदून (४२) व न-ज़अ्-ना मा फी सुदूरिहिम् मिन् गिल्लिन् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा व मा कुन्ना लिनह्-तदि-य लौला अन् हदानल्लाहु ल-क़द् जा-अत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि व नूदू अन् तिल्कुमुल्-जन्-नतु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून ● (४३) व नादा अस्हाबुल्-जन्नति अस्हाबन्नारि अन् क़द् व-जद्-ना मा व-अ्-दना रब्बुना हक़्क़न् फ़-हल् वजत्तुम् मा व-अ्-द रब्बुकुम् हक़्क़न् कालू न - अम् फ़-अज़्-ज़न मुअज़्ज़िनुम्-बैनहुम् अल्लअ्-नतुल्लाहि अ्-लज़्ज़ालिमीन (४४) अ्ल्लज़ी-न यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अि-व-जन् व हुम् बिल्आखिरति काफ़िरून ▨ (४५) व बैनहुमा हिजाबुन् व अ-लल्-अअ्-राफि रिजालुंय्यअ्-रिफ़ू-न कुल्लम् - बिसीमाहुम् व नादौ अस्हाबल् - जन्नति अन् सलामुन् अ्लैकुम् लम् यद्ख़ुलूहा व हुम् यत्मअू - न (४६) व , इज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्का - अ अस्हाबिन्नारि कालू रब्बना ला तज्-अल्ना म-अल् - कौमिज़्ज़ालिमीन ★(४७) व नादा अस्हाबुल् - अअ्-राफ़ि रिजालंय्यअ्-रिफ़ू-न-हुम् बिसीमाहुम् कालू मा अग़्ना अन्कुम् जम्अुकुम् व मा कुन्तुम् तस्तक्बिरून (४८) अ - हा - उला - इल्लज़ी - न अक़्सम्तुम् ला यनलुहुमुल्लाहु बिरह् - मतिन् उद्ख़ुलुल्-जन्न-त ला ख़ौफ़ुन् अ्लैकुम् व ला अन्तुम् तह्-ज़नून (४९)

الاعراف ٧ ١٢٤ ولو اننا ٨

لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ۞ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن
تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا
لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ
وَنُودُوا أَن تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۞
وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَن قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا
رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ فَأَذَّنَ
مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۞ الَّذِينَ يَصُدُّونَ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ۞ وَ
بَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ وَ
نَادَوْا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَن سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ۞
وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۞ وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُم
بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ۞
أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا
خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ۞ وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ
الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ

●सु ३/४ ▨ व लाज़िम ★रु. ५/१२ आ ८

हम ऐसी ही सज़ा देते है। (४१) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे और हम (अमलो के लिए) किसी शख़्स को उस की ताकत से ज्यादा तक्लीफ देते ही नही। ऐसे ही लोग जन्नत वाले है (कि) उस मे हमेशा रहेगे। (४२) और जो कीने (कपट) उन के सीनो मे होगे, हम सब निकाल डालेगे उन के (महलो के) नीचे नहरे बह रही होगी। और कहेगे कि खुदा का शुक्र है, जिस ने हम को यहा का रास्ता दिखाया और अगर खुदा हम को रास्ता न दिखाता तो हम रास्ता न पा सकते। बेशक हमारे परवरदिगार के रसूल हक बात ले कर आये थे और उस (दिन) मुनादी कर दी जाएगी कि तुम उन आमाल के बदले मे जो (दुनिया मे) करते थे, इस बहिश्त के वारिस बना दिये गये हो ●(४३) और जन्नत वाले दोज़खियो से पुकार कर कहेगे कि जो वायदा हमारे परवरदिगार ने हम से किया था, हम ने उसे सच्चा पा लिया। भला जो वायदा तुम्हारे परवरदिगार ने तुम से किया था, तुम ने भी उसे सच्चा पाया ? वे कहेगे, हा, तो (उस वक्त) उन मे एक पुकारने वाला पुकार देगा कि बे-इन्साफो पर खुदा की लानत, (४४) जो खुदा की राह से रोकते और उस मे कजी ढूढते और आखिरत से इंकार करते थे ▨(४५) उन दोनो, यानी जन्नत और दोज़ख के दर्मियान (आराफ नाम की) एक दीवार होगी, और आराफ पर कुछ आदमी होगे जो सब को उन की सूरतो मे पहचान लेगे, तो वे जन्नत वालो को पुकार कर कहेगे कि तुम पर सलामती हो। ये लोग (अभी) जन्नत मे दाखिल तो नही हुए होगे, मगर उम्मीद रखते होगे। (४६) और जब उन की निगाहे पलट कर दोज़ख वालो की तरफ जाएंगी, तो अर्ज़ करेगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! इस को जालिम लोगो के साथ (शामिल) न कीजिये। (४७) ✱

और आराफ वाले (काफिर) लोगो को, जिन्हे उन की सूरतो से शनाख़्त करते होगे, पुकारेंगे और कहेंगे (कि आज) न तो तुम्हारी जमाअत ही तुम्हारे कुछ काम आयी और न तुम्हारा तकब्बुर (यानी घमंड ही फायदेमंद हुआ)। (४८) (फिर मोमिनो की तरफ इशारा कर के कहेगे) क्या ये वही लोग है, जिन के बारे मे तुम कस्मे खाया करते थे कि खुदा अपनी रहमत से उन की दस्तगीरी नही करेगा, (तो मोमिनो !) तुम बहिश्त मे दाखिल हो जाओ। तुम्हे कुछ डर नही और न तुम को

व नादा अस्हाबुन्नारि अस्हाबल्-जन्नति अन् अफ़ीज़ू अलैना मिनलमा-इ औ मिम्मा र-ज-क़कुमुल्लाहु ط क़ालू इन्नल्ला - ह हर्र-महुमा अ - लल्काफ़िरीन (५०) अल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनहुम् लह्वंव्-व लअिबंव्-व ग़र्रतहुमुल्-हयातुद्दुन्या ج फ़ल्यौ-म नन्साहुम् कमा नसू लिक़ा-अ यौमिहिम् हाज़ा لا व मा कानू बिआयातिना यज्हदून (५१) व ल-क़द् जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अला अिल्मिन् हुदंव्-व रह्-म-तल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (५२) हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला तअ्वीलहू ط यौ-म यअ्ती तअ्वीलुहू यक़ूलुल्लज़ी-न नसूहु मिन् क़ब्लु क़द् जा-अत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ ج फ़ - हल्लना मिन् शु-फ-आ-अ फ़-यश्फ़अू लना औ नुरद्दु फ-नअ्-म-ल ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्-मलु ط क़द् ख़सिरू अन्फुसहुम् व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून★(५३) इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् 'सुम्मस्तवा अ - लल्अर्शि युग़्शिलैलन्नहा - र यत्लुबुहू हसीसंव्-व वश्शम्-स वल्क़-म-र वन्नुजू - म मुसख़्ख़रातिम्-बिअम्रिही ط अला लहुल्ख़ल्क़ु वल्-अम्रु ط तबा-र-कल्लाहु रब्बुल्-आलमीन (५४) उद्अू रब्बकुम् त-ज़र्रुअंव्-व ख़ुफ़्य-तन् ط इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुअ्-तदीन ج (५५) व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्-द इस्लाहिहा वद्अूहु ख़ौफ़व्-व त-म-अन् ط इन्-न रह्मतल्लाहि क़रीबुम्-मिनलमुह्सिनीन (५६) व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिही ط हत्ता इज़ा अ-क़ल्लत् सहाबन् सिक़ालन् सुक़्नाहु लि-ब-लदिम्-मय्यितिन् फ़-अन्ज़ल्ना बिहिल्मा-अ फ़-अख़्-रज्ना बिही मिन् कुल्लिस्स-म-राति ط क-ज़ालि-क नुख़्रिजुलमौता ल-अल्लकुम् त-ज़क्करून (५७)

ولو اننا ١٧٥ الاعراف

اللّٰهُ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا
وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ
هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ
عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا
تَاْوِيْلَهٗ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ
جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ
اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۣ يُغْشِي الَّيْلَ
النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۢ بِاَمْرِهٖ ۭ
اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ۭ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ
تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۭ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ
يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۭ حَتّٰٓي اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاۗءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ

★रु. ६/१३ आ ६

कुछ रज व गम होगा। (४९) और दोज़खी जन्नतियो से (गिडगिडा कर) कहेगे किसी कदर हम पर पानी बहाओ या जो रोज़ी खुदा ने तुम्हे दी है, उन मे से (कुछ हमे भी दो)। वे जवाव देगे कि खुदा ने बहिश्त का पानी और रोज़ी काफिरो पर हराम कर दी है, (५०) जिन्हो ने अपने दीन को तमाशा और खेल बना रखा था और दुनिया की ज़िंदगी ने उन को धोखे मे डाल रखा था, तो जिस तरह ये लोग उस दिन के आने को भूले हुए थे और हमारी आयतो से मुकिर हो रहे थे, उसी तरह आज हम भी उन्हे भुला देगे।[1] (५१) और हम ने उन के पास किताब पहुचा दी है, जिस को इल्म व दानिश के साथ खोल-खोल कर बयान कर दिया है (और) वह मोमिन लोगो के लिए हिदायत और रहमत है। (५२) क्या ये लोग उस से अज़ाब के वायदे के इतिज़ार मे है ? जिस दिन वह वायदा आ जाएगा, तो जो लोग उस को पहले से भूले हुए होगे, वे बोल उठेगे कि बेशक हमारे परवरदिगार के रसूल हक ले कर आये थे। भला (आज) हमारे कोई सिफारिशी है कि हमारी सिफारिश करे या हम (दुनिया मे) फिर लौटा दिए जाए कि जो (बुरा) अमल हम (पहले) करते थे, (वह न करे, बल्कि) उन के सिवा और (नेक) अमल करे। बेशक उन लोगो ने अपना नुक्सान किया और जो कुछ ये झूठ गढा करते थे, उन से सब जाता रहा। (५३) ★

कुछ शक नही कि तुम्हारा परवरदिगार खुदा ही है, जिस ने आसमानो और ज़मीन को छ दिन मे पैदा किया फिर अर्श पर जा ठहरा।[2] वही रात को दिन का लिबास पहनाता है कि वह उसके पीछे दौडता चला आता है और उसी ने सूरज और चांद और सितारो को पैदा किया। सब उसी के हुक्म के मुताबिक काम मे लगे हुए है। देखो सब मख्लूक भी उसी की है और हुक्म भी (उसी का है)। यह खुदा-ए-रब्बुल आलमीन बडी बरकत वाला है। (५४) (लोगो !) अपने परवरदिगार से आजिज़ी से और चुपके-चुपके दुआए मागा करो। वह हद से बढने वालो को दोस्त नही रखता। (५५) और मुल्क मे इस्लाह के बाद खराबी न करना और खुदा से खौफ करते हुए और उम्मीद रख कर दुआएं मागते रहना। कुछ शक नही कि खुदा की रहमत नेकी करने वालो से करीब है। (५६) और वही तो है जो अपनी रहमत (यानी बारिश) से पहले हवाओ को खुशखबरी (बना कर) भेजता है, यहा तक कि जब वह भारी-भारी बादलो को उठा लाती है, तो हम उस को एक मरी हुई बस्ती की तरफ हाक देते है। फिर बादल मे मेह (वर्षा) बरसाते है, फिर मेह से हर तरह के फल पैदा करते हैं। इसी तरह हम मुर्दो को (ज़मीन से) जिंदा कर के बाहर निकालेगे। (ये आयते इस लिए बयान

---

१ खुदा तो भूलने वाला नही है। मतलब यह है कि हम उन के साथ ऐसा मामला करेंगे जैसे कोई किसी को भुला देता है, यानी वे दोज़ख मे जलते रहेगे और हम उन को पूछेंगे भी नही।

२ अमल लफ्ज़ 'इस्तवा' इस्तेमाल हुआ है, जिस का मतलब डिक्शनरी मे बुलद होने और ठहरने के हैं। चारो इमाम और तमाम मुहद्दिसो का खुदा के बारे मे यह मज़हब है कि वह अर्श पर मुस्तवी यानी ठहरा हुआ है और वह ठहरना ऐसा है, जो उस की शान के लायक है और जिस की असल सूरत मालूम नही। अल्लाह तआला की जो सिफतें हैं, उन पर लफ्ज़ तो वही बोले जाते हैं, जो मख्लूक की सिफतो पर बोले जाते हैं, जैसे खुदा को भी कहते हैं कि देखता है, इन्सान को भी कहते है कि देखता है। खुदा को भी कहते हैं कि सुनता है, इन्सान को भी कहते हैं कि सुनता है, लेकिन खुदा का देखना और सुनना और तरह का है। मख्लूक की सिफतो का खुदा की सिफतो से कोई मेल नही और कुरआन की यह आयत इस पर दलील है—'लै-स कमिस्लिही शैउन' – यानी कोई उस के मिस्ल नही। पस जब कोई चीज़ खुदा जैसी नही तो खुदा को 'मुजस्सम' कैसे कह सकते हैं ?

(शेष पृष्ठ २४९ पर)

वल-ब-लदुत्तय्यिबु यख़्रुजु नबातुहू बिइज़्नि रब्बिही ج वल्लज़ी ख़बु-स ला यख़्रुजु इल्ला नकिदन् ط कज़ालि-क नुसर्रिफुल्-आयाति लिक़ौमिय्यश्कुरून ★ (५८) ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़-क़ा-ल याक़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ط इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (५९) क़ालल्मलउ मिन् क़ौमिही इन्ना ल-नरा-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (६०) क़ा-ल या क़ौमि लै-स बी ज़लालतुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम्-मिर्रब्बिल्-आ़ल-मीन (६१) उबल्लिगुकुम् रिसालाति रब्बी व अन्स़हु लकुम् व अअ्-लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्-लमून (६२) अ-व अ़जिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्-मिर्-रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम् वलितत्तक़ू व ल-अ़ल्लकुम् तुर्हमून (६३) फ़-कज़्ज़बूहु फ-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्कि व अग़्रक़्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना ط इन्नहुम् कानू क़ौमन् अ़मीन ★ (६४) व इला आ़दिन् अख़ाहुम् हूदन् ط का-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ط अ-फ़ला तत्तक़ून (६५) कालल्-मलउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही इन्ना ल-नरा-क फ़ी सफ़ाहतिंव्-व इन्ना ल-नज़ुन्नु-क मिनल्-काज़िबीन (६६) का-ल या क़ौमि लै-स बी सफ़ाह-तुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम्-मिर्रब्बिल्-आल-मीन (६७) उबल्लिगुकुम् रिसालाति रब्बी व अ-न लकुम् नासिहुन् अमीन (६८) अ-व अ़जिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्-मिर्रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम् ط वज़्कुरू इज़् ज-अ़-लकुम् ख़ु-ल-फ़ा-अ मिम्बअ्-दि क़ौमि नूहिंव्-व ज़ादकुम् फ़िल्ख़ल्क़ि बस्त़-तुन् ج फ़ज़्कुरू आला-अल्लाहि ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (६९) क़ालू अजिअ्तना लिनअ्-बुदल्ला-ह वह्-दहू व न-ज़-र मा का-न यअ्-बुदु आबा-उना ج फ़अ्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (७०)

وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾ لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ
مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾
قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ يَا قَوْمِ
لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾ أُبَلِّغُكُمْ
رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾ أَوَعَجِبْتُمْ
أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ
وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ﴿٦٤﴾ وَ
إِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ
غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ
فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي
سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٧﴾ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي
وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴿٦٨﴾ أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ
عَلَىٰ رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ
قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَسْطَةً ۖ فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ

★रु ७/१४ आ ५ ★रु. ८/१५ आ ६

की जाती है) ताकि तुम नसीहत पकडो। (५७) जो जमीन पाकीज़ा (है), उस मे से सब्ज़ा भी परवरदिगार के हुक्म से (अच्छा ही) निकलता है और जो खराब है, उस मे से जो कुछ निकलता है, नाकिस (खराब) होता है। इसी तरह हम आयतो को शुक्रगुज़ार लोगो के लिए फेर-फेर कर बयान करते है★(५८) हम ने नूह को उन की कौम की तरफ भेजा, तो उन्हो ने (उस से) कहा, ऐ मेरी बिरादरी के लोगो! खुदा की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नही। मुझे तुम्हारे बारे मे बडे दिन के अज़ाब का (बहुत ही) डर है। (५९) तो जो उन की कौम मे सरदार थे, वे कहने लगे कि हम तुम्हे खुली गुमराही मे (पड़े) देखते है। (६०) उन्हो ने कहा, ऐ कौम! मुझ मे किसी तरह की गुमराही नही है, बल्कि मैं दुनिया के परवरदिगार का पैगम्बर हू। (६१) तुम्हे अपने परवरदिगार के पैगाम पहुचाता हू और तुम्हारी खैर-ख्वाही करता हूं और मुझ को खुदा की तरफ से ऐसी बातें मालूम है, जिन से तुम बे-खबर हो। (६२) क्या तुम को इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम मे से एक शख्स के हाथ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास नसीहत आयी, ताकि वह तुमको डराये और ताकि तुम परहेज़गार बनो और ताकि तुम पर रहम खाया जाए। (६३) मगर उन लोगों ने उन को झुठलाया, तो हम ने नूह को और जो उन के साथ कश्ती मे सवार थे, उन को तो बचा लिया और जिन लोगो ने हमारी आयतो को झुठलाया था, उन्हे डुबा दिया। कुछ शक नही कि वे अंधे लोग थे। (६४) ★

और (इसी तरह) आद कौम की तरफ उन के भाई हूद को भेजा। उन्होने कहा कि भाइयो! खुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नही, क्या तुम डरते नही? (६५) तो उन की क़ौम के सरदार, जो काफिर थे, कहने लगे कि तुम हमे बेवकूफ नजर आते हो और हम तुम्हे झूठा ख्याल करते है। (६६) उन्हो ने कहा कि भाइयो! मुझ मे बेवकूफी की कोई बात नही है, बल्कि मैं रब्बुल आलमीन का पैगम्बर हू। (६७) मैं तुम्हे खुदा के पैगाम पहुचाता हू और तुम्हारा अमानतदार खैर-ख्वाह हू। (६८) क्या तुम को इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम मे से एक शख्स के हाथ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास नसीहत आयी, ताकि वह तुम्हे डराये और याद तो करो जब उस ने तुम को नूह की कौम के बाद सरदार बनाया और तुम्हे फैलाव ज्यादा दिया, पस खुदा की नेमतो को याद करो, ताकि निजात हासिल करो। (६९) वे कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इस लिए आये हो कि हम अकेले खुदा ही की इबादत करे और जिन को हमारे बाप-दादा पूजते चले आए हैं, उनको छोड दे? तो अगर सच्चे हो, तो जिस चीज़ से हमे डराते हो, उसे ले आओ। (७०)

(पृष्ठ २४७ का शेष)
मुजस्सम चीज़ की कैफियत मालूम होती है और खुदा की किसी सिफत की कैफ़ियत मालूम नही। कोई शख्स नही बता सकता कि खुदा का देखना-सुनना किस तरह का है, क्योकि न उस की ऐसी आखें है, जिस तरह की हम रखते हैं, न ऐसे कान जिस तरह के हमारे है। पस जब उस का देखना और सुनना ही ऐसा है कि उस की कैफियत मालूम नही और वह उसी तरह का होगा, जैसा उस की शान है, तो उस के ठहरने की सूरत भी किसी को मालूम नही और वह भी उसी तरह का होगा, जैसे उस की शान को जचता हो। हैरत की बात है कि लोग खुदा मे दूसरी सिफतें तो जानते हैं, उन से उस को मुजस्सम करार नही देते, हालाकि मख्लूक मे उन सिफतो के लिए 'जिस्मियत' लाज़िम है, लेकिन 'इस्तवा' के लिए उस का मुजस्सम होना क़रार देते हैं और इस वजह से उस
(शेष पृष्ठ २५१ पर)

★रु० ७/१४ आ ५ ★रु ८/१५ आ ६

क़ा-ल क़द् व-क-अ् अ़लैकुम् मिर्रब्बिकुम् रिज्सुंव्-व ग-ज-बुन् ط अतुजादिलूननी फ़ी अस्मा-इन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबा-उकुम् मा नज्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन् ط फन्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन (७१) फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अ़हू बि-रह़्मतिम्-मिन्ना व क़-तअ्-ना दाबिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व मा कानू मुअ्मिनीन ★ (७२) व इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् ⁂ क़ा-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् गैरुहू ط क़द् जा-अत्कुम् बय्यिनतुम्-मिर्रब्बिकुम् ط हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आय-तन् फ़-ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िलाहि व ला त-मस्सूहा बिसू-इन् फ़यअ्-ख़ु-ज़कुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (७३) वज़्कुरू इज़् ज-अ़-लकुम् ख़ु-लफ़ा-अ मिम्बअ्-दि आ़दिंव्-व बव्व-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि तत्तख़िज़ू-न मिन् सुहूलिहा क़ुसूरंव्-व तन्हितूनल्-जिबा-ल बुयूतन् ج फ़ज़्कुरू आला-अल्लाहि व ला तअ्-सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (७४) क़ालल्म-लउल्-लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लिल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिमन् आम-न मिन्हुम् अतअ्-लमू-न अन्-न सालिहम्-मुर्सलुम्-मिर्रब्बिही ط क़ालू इन्ना बिमा उर्सि-ल बिही मुअ्मिनून (७५) क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना बिल्लज़ी आमन्तुम् बिही काफ़िरून (७६) फ़-अ़-क़रुन्नाक़-त व अ़तौ अ़न् अम्रि रब्बिहिम् व क़ालू यासालिहुअ्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनल्-मुर्सलीन (७७) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुर्रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (७८)

مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا ۚ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝
قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ
فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ
سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ
وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ
مَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ
نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا
بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ
مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا
وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا
مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ
اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝
قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝
فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا
تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

★रु ६/१६ आ ८ ⁂ व लाज़िम

हूद ने कहा कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर अज़ाब और गज़ब (का नाज़िल होना) मुकर्रर हो चुका है। क्या तुम मुझ से ऐसे नामो के बारे मे झगडते हो, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने (अपनी तरफ से) रख लिए है, जिन की खुदा ने कोई सनद नाज़िल नही की, तो तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं। (७१) फिर हम ने हूद को और जो लोग उन के साथ थे, उन को निजात बख्शी और जिन्हो ने हमारी आयतो को झुठलाया था, उन की जड काट दी और वे ईमान लाने वाले थे ही नही। (७२) ★

और समूद कौम की तरफ उन के भाई सालेह को भेजा, (तो) सालेह ने कहा कि ऐ कौम ! खुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नही। तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक मोजज़ा आ चुका है, (यानी) यही खुदा की ऊंटनी तुम्हारे लिए मोजज़ा है, तो उसे (आजाद) छोड दो कि खुदा की ज़मीन मे चरती फिरे और तुम उसे बुरी नीयत से हाथ भी न लगाना वरना दर्दनाक अजाब तुम्हे पकड लेगा। (७३) और याद तो करो जब उस ने तुम को आद कौम के बाद सरदार बनाया और ज़मीन पर आबाद किया कि नर्म जमीन से (मिट्टी ले कर) महल बनाते हो और पहाडो को काट-छाट कर घर बनाते हो, पस खुदा की नेमतो को याद करो, ज़मीन मे फसाद न करते फिरो। (७४) तो उन की कौम मे सरदार लोग जो घमड रखते थे, गरीब लोगो से, जो उनमे से ईमान ले आये थे, कहने लगे, भला तुम यकीन करते हो कि सालेह अपने परवरदिगार की तरफ से भेजे गये है ? उन्हो ने कहा, हां, जो चीज वह दे कर भेजे गये है, हम उस पर बिला शुब्हा ईमान रखते है। (७५) तो घमडी (सरदार) कहने लगे कि जिस चीज़ पर तुम ईमान लाये हो, हम तो उस को नही मानते। (७६) आखिर उन्हो ने ऊटनी (की कूचो) को काट डाला और अपने परवरदिगार के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे कि सालेह ! जिस चीज़ से तुम हमे डराते थे, अगर तुम (खुदा के) पैगम्बर हो, तो उसे हम पर ले आओ। (७७) तो उन को भूंचाल ने आ पकडा और वे अपने घरो मे औंधे पडे रह गये। (७८) फिर सालेह उन से (ना-उम्मीद हो कर)

(पृष्ठ २४९ का शेष)

की तावील करना ज़रूरी समझते हैं। फिर इस के बावजूद सब उसको हर जगह हाज़िर और रगे गरदन से ज्यादा करीब भी समझते हैं। अगर खुदा को अर्श पर ठहरने की वजह से उसे 'मुजस्सम' करार दिया जाए, तो वह सब जगह हाज़िर और रगे गरदन से ज्यादा नज़दीक कैसे माना जा सकता है। मुजस्सम महमूद होता है और जो हर जगह हाज़िर हो, वह गैर महदूद। पस महदूद, गैर-महदूद कैसे हो सकता है ? बहरहाल अल्लाह तआला मुजस्सम नही। उस की जितनी सिफ़तें हैं, उन की वह सूरत नही जो इन्सान की सूरतो की हैं, इस लिए इन्सानी सिफतो को अल्लाह तआला की सिफतो पर नही सोचा जा सकता और इसी लिए उस को मुजस्सम नही कह सकते।

गरज यह कि खुदा ने जिन बातो को अपनी सिफत करार दिया है, उन को मानना चाहिए और उन की वह सूरत नही समझनी चाहिए जो मख्लूक की सिफ़तो की होती है।

वह तख्त, जिस को अर्श कहते हैं, उस की सूरत मालूम नही कि वह किस तरह का है, तो उस पर अल्लाह तआला के ठहरने की क्या सूरत मालूम हो सकती है ?

★रु. ९/१६ आ ८ व लाज़िम

फ़-त-वल्ला अन्हुम् व का-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसाल-त रब्बी व नसह्तु लकुम् व लाकिल्ला तुहिब्बूनन्नासिहीन (७९) व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्तूनल्-फ़ाहि़श-त मा स-ब-ककुम् बिहा मिन् अ-ह़दिम्-मिनल्-आलमीन (८०) इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्रिजा-ल शह्-व-तम्-मिन् दूनिन्निसा-इ ⌐ बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून (८१) व मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजूहुम् मिन् कर्यतिकुम् ᶜ इन्नहुम् उनासुंय्य-त - तह्हरून (८२) फ़-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्-र - अ-तहू ﺻﻠﮯ कानत् मिनल्गाबिरीन (८३) व अम्तर्ना अ़लैहिम् म-त़-रन् ⌐ फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का - न आक़िबतुल्-मुज्रिमीन ★ (८४) व इला मद्य - न अख़ाहुम् शुअ़ैबन् ⌐ क़ा-ल या क़ौमिअ-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ⌐ क़द् जा-अत्कुम् बय्यिनतुम्-मिर्रब्बिकुम् फ़औफ़ुल्कै-ल वल्मीज़ा - न व ला तब्ख़सुन्ना - स अश्या - अ हुम् व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्‌ - द इस्लाहि़हा ⌐ ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ᶜ (८५) व ला तक़्अुदू बिकुल्लि सिरातिन् तूअि़दू-न व तसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि मन् आम-न बिही व तब्ग़ूनहा अि़-व-जन् ᶜ वज़्कुरू इज़् कुन्तुम् क़लीलन् फ़-कस्-स - रकुम् ᵒ वन्ज़ुरू कै - फ का-न आक़िबतुल् - मुफ़्सिदीन (८६) व इन् का - न ता-इफ़तुम् - मिन्कुम् आमनू बिल्लज़ी उर्सिल्तु बिही व ता - इफ़तुल्लम् युअ्मिनू फ़स्बिरू हत्ता यह्कुमल्लाहु बैनना ᶜ व हु - व ख़ैरुल्-हाकिमीन (८७)

الاعراف ٧ ١٢٨ ولو اننا ٨

فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ
أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُحِبُّونَ النَّاصِحِينَ ۝
وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُم بِهَا مِنْ
أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ۝ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ
بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا
أَخْرِجُوهُم مِّن قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ۝ فَأَنجَيْنَاهُ
وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم
مَّطَرًا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝ وَإِلَىٰ
مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ
إِلَٰهٍ غَيْرُهُ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝
وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ
اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا
فَكَثَّرَكُمْ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَإِن
كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ
يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

★रु. १०/१७ आ १२

फिरे और कहा कि ऐ मेरी कौम ! मैं ने तुम को खुदा का पैगाम पहुचा दिया और तुम्हारी खैरख्वाही की, मगर तुम (ऐसे हो कि खैरख्वाहो को दोस्त ही नही रखते। (७९) और (इसी तरह जब हमने) लूत को (पैगम्बर बना कर भेजा, तो) उस वक्त उन्हो ने अपनी कौम से कहा, तुम ऐसी बे-हयाई का काम क्यो करते हो कि तुम से पहले अह्ले आलम मे से किसी ने इस तरह का काम नही किया। (८०) यानी नफ्स की ख्वाहिश पूरा करने के लिए औरतो को छोड़ कर लौंडो पर गिरते हो। हकीकत यह है कि तुम लोग हद से निकल जाने वाले हो। (८१) तो उन से इस का जवाब कुछ न बन पडा और बोले, तो यह बोले कि इन लोगो (यानी लूत और उन के घर वालो) को अपने गाव से निकाल दो (कि) ये लोग पाक बनना चाहते हैं। (८२)तो हम ने उन को और उन के घर वालो को बचा लिया, मगर उन की बीवी (न बची) कि वह पीछे रहने वालो मे थी। (८३) और हम ने उन पर (पत्थरो का) मेह बरसाया, सो देख लो कि गुनाहगारो का कैसा अजाम हुआ। (८४) ★

और मदयन की तरफ उन के भाई शुऐब को भेजा, (तो) उन्हो ने कहा कि ऐ क़ौम ! खुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नही। तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशानी आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी किया करो और लोगो को चीजे कम न दिया करो और जमीन मे सुधार के बाद खराबी न करो। अगर तुम ईमान वाले हो तो समझ लो कि यह बात तुम्हारे हक मे बेहतर है।[1] (८५) और हर रास्ते पर मत बैठा करो कि जो शख्स खुदा पर ईमान लाता है, उसे तुम डराते और खुदा की राह से रोकते और उस मे टेढ ढूंढते हो और (उस वक़्त को) याद करो, जब तुम थोडे-से थे तो खुदा ने तुम को बडी जमाअत बना दिया और देख लो कि खराबी पैदा करने वालो का अंजाम कैसा हुआ।[2] (८६) और अगर तुम मे से एक जमाअत मेरी रिसालत पर ईमान ले आयी है और एक जमाअत ईमान नही लायी; तो सब्र किये रहो, यहा तक कि खुदा हमारे-तुम्हारे दर्मियान फैसला कर दे और वह सब से बेहतर फैसला करने वाला है। (८७)

---

१. ज़मीन मे सुधार के बाद खराबी न करने से यह मुराद है कि जिस ज़मीन मे गुनाह के काम होते थे, हराम चीज़ो को हलाल कर लिया जाता था, कत्ल व खूरेज़ी होती थी, जब उस मे पैगम्बर आये और उन्हो ने लोगो को खुदा की तरफ बुलाया तो उस का सुधार हो गया। अब उस भली ज़मीन मे ऐसे काम न करो, जिन से यह समझा जाए कि सुधार खराबी मे बदल गया और उस मे फसाद हो रहा है।

२ वे लोग डाकू और लूट-मार करने वाले थे। रास्तो पर बैठ कर लोगो को डराते थे कि अगर तुम हम को माल न दोगे तो हम तुम को कत्ल कर डालेंगे या रास्ते से मुराद वे रास्ते हैं, जो हज़रत शुऐब की तरफ जाते थे। वे लोग उन रास्तो पर बैठ जाते थे और जिस शख्स को उस तरफ जाते देखते थे, उस को डराते-धमकाते थे कि तुम शुऐब के पास क्यो जाते हो। वह झूठा मक्कार है, खुदा का पैगम्बर नही, खुदा की राह से रोकने से मुराद हज़रत शुऐब के पास जाने और मोमिन बनने से मना करना है।

★रु. १०/१७ आ १२

नवां पारः क़ालल्मलउ

सूरतुल्-अअ्राफ़ि आयत ८८ से २०६

क़ालल्-मलउल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लनुख़्रिजन्न-क याशुअ़ैबु वल्लज़ी-न आमनू म-अ-क मिन् क़र्यतिना औ ल-त-अूदुन्-न फ़ी मिल्लतिना ط का-ल अ-व लौ कुन्ना कारिहीन قف (८८) क़दिफ़्तरैना अ-लल्लाहि कज़िबन् इन् अुद्ना फ़ी मिल्लतिकुम् बअ्-द इज़् नज्जानल्लाहु मिन्हा ط व मा यकूनु लना अन् नअू - द फ़ीहा इल्ला अंय्यशा - अल्लाहु रब्बुना ط वसि-अ रब्बुना कुल्-ल शैइन् अिल्मन् ط अ - लल्लाहि त-वक्कल्ना ط रब्बनफ़्तह़् बैनना व बै - न क़ौमिना बिल्ह़क़्क़ि व अन्-त ख़ैरुल्फ़ातिह़ीन (८९) व क़ालल्-मलउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही लइनित्तबअ्तुम् शुअ़ैबन् इन्नकुम् इज़ल-ल ख़ासिरून (९०) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुर्-रज्फ़तु फ़ - अस्बह़ू फ़ी दारिहिम् जासिमीन ﺻﻠﮯ (९१) अ्ल्लज़ी-न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् क-अल्लम् यग़्नौ फ़ीहा ج अल् - लज़ी - न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् कानू हुमुल्ख़ासिरीन (९२) फ़-त-वल्ला अन्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसालाति रब्बी व न-स़ह़्तु लकुम् ج फ़-कै-फ आसा अ़ला क़ौमिन् काफ़िरीन ﻉ ★ (९३) व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम् - मिन् नबिय्यिन् इल्ला अ-ख़ज़्ना अह्लहा बिल्बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ ल-अ़ल्लहुम् यज़्ज़र्रअ़ून (९४) सुम्-म बद्दल्ना मकानस्-सय्यिअतिल्-ह़-स-न-त ह़त्ता अ-फ़व्-व क़ालू क़द् मस्-स आबा-अनज़्-ज़र्रा-उ वस्सर्रा-उ फ़-अ-ख़ज़्नाहुम् बग़्-त-तंव्-व हुम् ला यश्अ़ुरून (९५) व लौ अन्-न अह्लल्क़ुरा आमनू वत्तक़ौ ल-फ़-तह़्ना अ़लैहिम् ब-र-कातिम्-मिनस्समा इ वल्अर्ज़ि व लाकिन् कज़्ज़बू फ़-अ-ख़ज़्नाहुम् बिमा कानू यक्सिबून (९६)

قال الملأ ٩ ١٢٩ الاعراف ٧

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۭ قَالَ اَوَلَوْ
كُنَّا كٰرِهِيْنَ ۞ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ
بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ۭ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ
يَّشَاۗءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ۭ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۭ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۭ
رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ۞ وَ
قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَىِٕنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ
اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۞ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۞
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا
كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ۞ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ
رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰي قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۞ وَ
مَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَاۗءِ وَالضَّرَّاۗءِ
لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ۞ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا
وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَاۗءَنَا الضَّرَّاۗءُ وَالسَّرَّاۗءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ۞ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ
بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ۞ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا

.·. मु. अि मु. त क. ★ रु. ११/१ आ ६

(तो) उन की कौम में जो लोग सरदार और बडे आदमी थे, वे कहने लगे कि शुऐब ! (या तो) हम तुम को और जो लोग तुम्हारे साथ ईमान लाए है, उन को अपने शहर से निकाल देंगे या तुम हमारे मजहब मे आ जाओ। उन्हो ने कहा, चाहे हम (तुम्हारे दीन से) बे-ज़ार ही हो (तो भी ?) (८८) अगर हम इस के बाद कि खुदा हमे इस से निजात बख्श चुका है, तुम्हारे मजहब मे लौट जाएं, तो बेशक हम ने खुदा पर झूठ इफ़्तरा बाधा और हमे मुनासिब नही कि हम उस मे लौट जाएं। हा, खुदा जो हमारा परवरदिगार है, वह चाहे तो (हम मजबूर है), हमारे परवरदिगार का इल्म हर चीज पर एहाता किए हुए है। हमारा खुदा ही पर भरोसा है। ऐ परवरदिगार ! हम में और हमारी क़ौम में इसाफ के साथ फ़ैसला कर दे और तू सब से बेहतर फैसला करने वाला है। (८९) और उन की कौम मे से सरदार लोग जो काफिर थे, कहने लगे कि (भाइयो !) अगर तुम ने शुऐब की पैरवी की तो बेशक तुम घाटे मे पड गये। (९०) तो उन को भूंचाल ने आ पकडा और वे अपने घरों मे औधे पड़े रह गये। (९१) (ये लोग) जिन्हो ने शुऐब को झुठलाया था; ऐसे बर्बाद हुए कि गोया वे उन मे कभी आबाद ही न हुए थे। (गरज) जिन्हो ने शुऐब को झुठलाया वे घाटे मे पड़ गये। (९२) तो शुऐब उन मे से निकल आये और कहा कि भाइयो ! मै ने तुम को अपने परवरदिगार के पैगाम पहुचा दिए है, और तुम्हारी खैरख्वाही की थी, तो मैं काफिरो पर (अज़ाब नाज़िल होने से) रंज व गम क्यो करूं ? (९३) ★

और हम ने किसी शहर में कोई पैगम्बर नही भेजा, मगर वहा के रहने वालो को जो ईमान न लाये, दुखों और मुसीबतो मे डाल दिया, ताकि वे आजिज़ी और ज़ारी करें। (९४) फिर हम ने तक्लीफ को आसूदगी (खुशहाली) से बदल दिया, यहां तक कि (माल व औलाद मे) ज्यादा हो गये तो कहने लगे कि इसी तरह रज व राहत हमारे बड़ो को भी पहुचता रहा है, तो हम ने उन को यकायक पकड़ लिया और वे (अपने हाल मे) बे-खबर थे। (९५) अगर इन बस्तियो के लोग ईमान ले आते और परहेज़गार हो जाते, तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतो (के दरवाज़े) खोल देते, मगर उन्हों ने तो झुठलाया, सो उन के आमाल की सजा में हम ने उन को पकड

∵ मु. अ़ि मु. ता ख. १५ ★रु. ११/१ आ ९

अ-फ़-अमि-न अह्लुल्कुरा अंय्यअ्तियहुम् बअ्सुना बयातव्-व हुम् ना-इमून (९७) अ-व अमि-न अह्लुल्कुरा अय्यअ्तियहुम् बअ्सुना ज़ुहव्वहुम् यल्-अबून (९८) अ-फ़अ्मिनू मक्रल्लाहि फला यअ्मनु मक्रल्लाहि इल्लल्कौमुल्-ख़ासिरून ★ (९९) अ-व लम् यह्दि लिल्लजी-न यरिसूनल्अर-ज़ मिम्बअ्-दि अह्लिहा अल्लौ नशा-उ अ-सब्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व नत्बअु अला कुलूबिहिम् फ़हुम् ला यस्मअून (१००) तिल्कल्कुरा नकुस्सु अलै-क मिन् अम्बा-इहा व ल-क़द् जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फमा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज्जबू मिन् कब्लु कज़ालि-क यत्बअुल्लाहु अला कुलूबिल्काफ़िरीन (१०१) व मा व-जद्ना लि-अक्सरिहिम् मिन् अ-ह्दिन् व इव्व-जद्ना अक्सरहुम् लफासिकीन (१०२) सुम्-म ब-अस्ना मिम्बअ्-दिहिम् मूसा बिआयातिना इला फ़िर्औ-न व म-लइही फ-ज़-लमू बिहा फ़न्ज़ुर् कै-फ का-न आक़िबतुल्-मुफ़्सिदीन (१०३) व का-ल मूसा या फ़िर्औनु इन्नी रसूलुम्-मिर्रब्बिल्-आलमीन (१०४) हक़ीक़ुन् अला अल्ला अकू-ल अ-लल्लाहि इल्लल्हक्-क़ क़द् जिअ्तुकुम् बिबय्यिनतिम्-मिर्रब्बिकुम् फअर्सिल् मअि-य बनी इस्रा-ई-ल (१०५) का-ल इन् कुन्-त जिअ्-त बिआयतिन् फअ्ति बिहा इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (१०६) फ़-अल्का असाहु फइज़ा हि-य सुअ्बानुम्-मुबीन (१०७) व न-ज-अ य-दहू फइज़ा हि-य बैज़ा-उ लिन्नाज़िरीन ★ (१०८) कालल्मलउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुन् अलीम (१०९) युरीदु अंय्युख़्रिजकुम् मिन् अर्ज़िकुम् फ माज़ा तअ्मुरून (११०) क़ालू अर्जिह व अख़ाहु व अर्सिल् फ़िल्-मदाइनि हाशिरीन (१११) यअ्तू-क बिकुल्लि साहिरिन् अलीम (११२) व जा-अस्-स-ह-रतु फ़िर्औ-न क़ालू इन्-न लना ल-अज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल्गालिबीन (११३)

الاعراف ١٣٠ قال الملأ ٩

وَهُمْ نَآئِمُونَ ۝ أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا ضُحًى
وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ
الْخَاسِرُونَ ۝ أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ أَهْلِهَا
أَن لَّوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا
يَسْمَعُونَ ۝ تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِن قَبْلُ
كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۝ وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِم مِّنْ عَهْدٍ
وَإِن وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝
وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ حَقِيقٌ عَلَىٰ أَن
لَّا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ
فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝ قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ بِآيَةٍ فَأْتِ
بِهَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ
مُّبِينٌ ۝ وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ مِن
قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ۝ يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ
أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۝ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ
حَاشِرِينَ ۝ يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ۝ وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ

★रु. १२/२ आ ६ ★रु १३/३ आ ९

लिया। (९६) क्या बस्तियो के रहने वाले इस से बे-खौफ हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रात को आए और वे (बे-खबर) सो रहे हो। (९७) और क्या शहर वाले निडर है कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ नाज़िल हो और वे खेल रहे हो। (९८) क्या ये लोग ख़ुदा के दांव का डर नही रखते ? (सुन लो कि) ख़ुदा के दाव से वही लोग निडर होते है जो घाटा पाने वाले हैं। (९९) ★

क्या इन लोगो को जो अह्ले ज़मीन के (मर जाने के) बाद ज़मीन के मालिक होते है, यह बात हिदायत की वजह नही बनी कि अगर हम चाहे तो उन के गुनाहो की वजह से उन पर मुसीबत डाल दे और उन के दिलो पर मुहर लगा दें कि कुछ सुन ही न सकें। (१००) ये बस्तिया है, जिन के कुछ हालात हम तुम को सुनाते हैं, और उन के पास उन के पैगम्बर निशानिया ले कर आए, मगर वे ऐसे नही थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके हो, उसे मान लें। इसी तरह ख़ुदा काफिरो के दिलो पर मुहर लगा देता है। (१०१) और हम ने उन में से अक्सरो मे (अह्द का निवाह) नही देखा और उन मे अक्सरो को (देखा तो) बदकार ही देखा। (१०२) फिर इन (पैगम्बरो) के बाद हम ने मूसा को निशानियां दे कर फिर्औन और उस के सरदारो के पास भेजा, तो उन्हो ने उन के साथ कुफ्र किया। सो देख लो, कि ख़राबी करने वालो का अंजाम क्या हुआ। (१०३) और मूसा ने कहा कि ऐ फिर्औन ! मैं रब्बुल आलमीन का पैगम्बर हू। (१०४) मुझ पर वाजिब है कि ख़ुदा की तरफ से जो कुछ कहूं, सच ही कहूं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशानी ले कर आया हू। सो बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने की रुख़्सत दे दीजिए। (१०५) फिर्औन ने कहा कि अगर तुम निशानी ले कर आए हो, तो अगर सच्चे हो, तो लाओ (दिखाओ)। (१०६) मूसा ने अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दी, तो वह उसी वक्त खुला अज़दहा (हो गया), (१०७) और अपना हाथ बाहर निकाला तो उसी दम देखने वालो की निगाहो मे सफ़ेद बर्राक (था), (१०८) ★

तो फिर्औन की कौम मे जो सरदार थे, वे कहने लगे कि यह बडा अल्लामा जादूगर है। (१०९) इस का इरादा यह है कि तुम को तुम्हारे मुल्क से निकाल दे, भला तुम्हारी क्या सलाह है ? (११०) उन्हो ने (फिर्औन से) कहा कि फिलहाल मूसा और उस के भाई के मामले को माफ रखिए और शहरो मे नकीब रवाना कर दीजिए, (१११) कि तमाम माहिर जादूगरो को आप के पास ले आएं। (११२) (चुनाचे ऐसा ही किया गया) और जादूगर फिर्औन के पास आ पहुंचे और कहने लगे, कि अगर हम जीत गये, तो हमें सिला (इनाम) अता किया जाए। (११३) (फिर्औन ने)

★रु॰ १२/२ आ ६ ★रु १३/३ आ ९

का-ल न-अम् व इन्नकुम् लमिनल्-मुकर्रबीन (११४) कालू या मूसा इम्मा अन् तुल्कि-य व इम्मा अन्नकू-न नह्नुल्-मुल्कीन (११५) क़ा-ल अल्कू फ़-लम्मा अल्कौ स-हरू अअ्-युनन्नासि वस्तर्हबूहुम् व जा-ऊ बिसिह्रिन् अज़ीम (११६) व औहैना इला मूसा अन् अल्कि असाक ज फइज़ा हि-य तल्क़फ़ु मा यअ्फिकून ज (११७) फ व-क-अल्-हक्कु व ब-त-ल मा कानू यअ्-मलून ज (११८) फग़ुलिबू हुनालि - क वन्कलबू साग़िरीन ज (११९) व उल्कियस्स-ह्-रतु साजिदीन (१२०) कालू आमन्ना बिरब्बिल् - आलमीन ॥ (१२१) रब्बि मूसा व हारून (१२२) क़ा-ल फ़िर्औनु आमन्तुम् बिही कब्-ल अन् आज-न लकुम् ज इन् - न हाज़ा ल - मक्रुम् - मकर्तुमूहु फ़िलमदीनति लितुख्रिजू मिन्हा अह्-लहा ज फसौ-फ़ तअ्-लमून (१२३) ल-उ-क़त्ति-अन्-न ऐदियकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िन्

قالوا ان لنا لاجرا ان كنا نحن الغلبين ۝ قال نعم وانكم لمن
المقربين ۝ قالوا يموسى اما ان تلقي واما ان نكون نحن
الملقين ۝ قال القوا فلما القوا سحروا اعين الناس واسترهبوهم
وجاءو بسحر عظيم ۝ واوحينا الى موسى ان الق عصاك فاذا
هي تلقف ما يافكون ۝ فوقع الحق وبطل ما كانوا يعملون ۝
فغلبوا هنالك وانقلبوا صغرين ۝ والقي السحرة سجدين ۝
قالوا امنا برب العلمين ۝ رب موسى وهرون ۝ قال فرعون
امنتم به قبل ان اذن لكم ان هذا لمكر مكرتموه في
المدينة لتخرجوا منها اهلها فسوف تعلمون ۝ لاقطعن
ايديكم وارجلكم من خلاف ثم لاصلبنكم اجمعين ۝
قالوا انا الى ربنا منقلبون ۝ وما تنقم منا الا ان امنا بايت ربنا
لما جاءتنا ربنا افرغ علينا صبرا وتوفنا مسلمين ۝ وقال
الملا من قوم فرعون اتذر موسى وقومه ليفسدوا في الارض
ويذرك والهتك قال سنقتل ابناءهم ونستحي نساءهم و
انا فوقهم قهرون ۝ قال موسى لقومه استعينوا بالله واصبروا
ان الارض لله يورثها من يشاء من عباده والعاقبة
للمتقين ۝ قالوا اوذينا من قبل ان تاتينا ومن بعد ما

सुम्-म लउसल्लिबन्नकुम् अज्-मईन (१२४) कालू इन्ना इला रब्बिना मुन्क़लिबून ज (१२५) व मा तन्क़िमु मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिआयाति रब्बिना लम्मा जा-अतना ॥ रब्बना अफ़्रिग् अलैना सब्रव्-व तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन ★ (१२६) व कालल्मलउ मिन् कौमि फ़िर्औ-न अ-त-ज़रु मूसा व क़ौमहू लियुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व य-ज़-र-क व आलिह-त-क ॥ क़ा - ल सनुकत्तिलु अब्ना - अहुम् व नस्तह्यी निसा - अहुम् ज व इन्ना फ़ौक़हुम् क़ाहिरून (१२७) क़ा-ल मूसा लिक़ौमिहिस्तईनू बिल्लाहि वस्बिरू ज इन्नल्अर् - ज़ लिल्लाहि ॥ यूरिसुहा मंय्यशा - उ मिन् अिबादिही ॥ वल्आक़िबतु लिलमुत्तक़ीन (१२८) क़ालू ऊज़ीना मिन् क़ब्लि अन् तअ्ति-यना व मिम्बअ्-दि मा जिअ्तना ॥ का-ल अ़सा रब्बुकुम् अय्युह्लि-क अदुव्वकुम् व यस्तख़्लि-फकुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्-मलून ★ (१२९)

★रु १४/४ आ १८ ★रु. १५/५ आ ३

कहा, हा (जरूर) और (उस के अलावा) तुम मुकर्रिबो मे दाखिल कर लिए जाओगे। (११४) (जब दोनो फरीक मुकर्रर दिन को जमा हुए, तो) जादूगरो ने कहा कि मूसा या तो तुम (जादू की चीज़) डालो या हम डालते है। (११५) (मूसा ने) कहा, तुम ही डालो, जब उन्होंने (जादू की चीजे) डाली तो लोगो की आखो पर जादू कर दिया, (यानी नजरबन्दी कर दी) और (लाठियो और रस्सियो के सांप बना-बना कर) उन्हे डरा-डरा दिया और बडा भारी जादू दिखाया। (११६) (उस वक़्त) हम ने मूसा की तरफ वह्य भेजी कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो, वह फौरन (साप बन कर) जादूगरो के बनाए हुए सापो को (एक-एक कर के) निगल जाएगी। (११७) (फिर) तो हक साबित हो गया और जो कुछ फिऔनी करते थे, बातिल हो गया। (११८) और वे मग्लूब हो गए और ज़लील हो कर रह गए। (११६) (यह सूरत देख कर) जादूगर सज्दे मे गिर पडे। (१२०) और कहने लगे कि हम जहान के परवरदिगार पर ईमान लाए, (१२१) (यानी) मूसा और हारून के परवरदिगार पर। (१२२) फ़िऔन ने कहा कि इस से पहले कि मैं तुम्हे इजाज़त दूं, तुम उस पर ईमान ले आए? बेशक यह फ़रेब है, जो तुम ने मिल कर शहर मे किया है, ताकि शहर वालों को यहा से निकाल दो। सो बहुत जल्द (इस का नतीजा) मालूम कर लोगे। (१२३) मैं (पहले तो) तुम्हारे एक तरफ के हाथ और दूसरे तरफ के पांव कटवा दूंगा, फिर तुम सब को सूली चढ़वा दूगा। (१२४) वह बोले कि हम तो अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाने वाले है। (१२५) और उस के सिवा तुझ को हमारी कौन-सी बात बुरी लगी है कि जब हमारे परवरदिगार की निशानियां हमारे पास आ गयी, तो हम उन पर ईमान ले आए। ऐ परवदिगार! हम पर सब्र व इस्तिकामत के दहाने खोल दे और हमे (मारियो तो) मुसलमान ही मारियो। (१२६) ★

और फिऔन की क़ौम मे जो सरदार[1] थे, कहने लगे कि क्या आप मूसा और उस की कौम को छोड़ दीजिएगा कि मुल्क में खराबी करें और आप से और आप के माबूदो से हाथ खीच लें। वह बोले कि हम उन के लड़को को कत्ल कर डालेंगे और लडकियो को ज़िदा रहने देंगे और बे-शुब्हा हम उन पर गालिब हैं। (१२७) मूसा ने अपनी कौम से कहा कि खुदा से मदद मागो और साबित कदम रहो। ज़मीन तो खुदा की है और वह अपने बन्दो मे से जिसे चाहता है, उस का मालिक बनाता है और आखिर भला तो डरने वालो का है। (१२८)

१ रिवायत मे है कि फिऔन खल्क को अपनी बदगी का हुक्म करता था और आप सितारो को पूजता था और अपनी शक्ल के बुत बनवा कर कौम को देता था कि तुम उन की पूजा करो, ताकि वे बुत तुम को मुझ से नज़दीक कर दें और सरदारो ने फिऔन को याद दिलायी मूसा के कत्ल की, जो उन्होंने उस की कौम के एक आदमी का किया था।

★रु १४/४ आ १८

व ल-क़द् अ-ख़ज़्ना आ-ल फ़िर्औ-न बिस्सिनी-न व नक़्सिम्-मिनस्स-मराति ल-अल्लहुम् यज़्ज़क्करून (१३०) फ़इज़ा जा-अत्हुमुल्-ह़-स-नतु क़ालू लना हाज़िही ज व इन् तुसिब्हुम् सय्यिअतुं य्यत्तय्यरू बिमूसा व मम्म - अहू, अला इन्नमा ता - इरुहुम् अिन्दल्लाहि व लाकिन् - न अक्सरहुम् ला यअ्-लमून (१३१) व क़ालू मह्मा तअ्तिना बिही मिन् आयतिल्-लितस-ह़-रना बिहा ॥ फ़मा नह्नु ल - क बिमुअ्मिनीन (१३२) फ़ - अर्सल्ना अ़लैहिमुत्तूफ़ा - न वल्जरा-द वल्क़ुम्म-ल वज़्ज़फ़ादि-अ वद्-द-म आयातिम् - मुफ़स्सलातिन् क़फ़ फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम्-मुज्रिमीन (१३३) व लम्मा व-क़-अ अ़लैहिमुर्रिज्ज़ु क़ालू या मूसद्अु लना रब्ब-क बिमा अ़हि-द अिन्द-क ज लइन् क-श-फ़्-त अन्नर्रिज्-ज़ लनुअ्मिनन्-न ल-क व लनुर्सिलन्-न म-अ-क बनी इस्रा - ई-ल (१३४) फ़-लम्मा क-शफ़्ना अन्हुमुर्रिज्-ज़ इला अ-जलिन् हुम् बालिग़ूहु इज़ा हुम् यन्कुसून (१३५) फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़्रक़्नाहुम् फ़िल्यम्मि बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अन्हा ग़ाफ़िलीन (१३६) व औरस्नल्-क़ौमल्लज़ी-न कानू युस्तज़्अफ़ू-न मशारि-क़ल्-अर्ज़ि व मग़ारिबहल्लती बारक्ना फ़ीहा ط व तम्मत् कलिमतु रब्बिकल्हुस्ना अ़ला बनी इस्रा - ई - ल ط बिमा स-बरू ط व दम्मर्ना मा का-न यस्नअु फ़िर्औनु व क़ौमुहू व मा कानू यअ्-रिशून ●(१३७) व जावज़्ना बि बनी इस्रा-ईलल्-बह्-र फ़-अतौ अ़ला क़ौमिय्यअ्-कुफ़ू - न अ़ला अस्नामिल्लहुम् ज क़ालू या मूसज्अल् लना इलाहन् कमा लहुम् आलिहतुन् ط क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुन् तज्हलून (१३८)

جئتنا قال عسى ربكم أن يهلك عدوكم ويستخلفكم في
الأرض فينظر كيف تعملون ۝ ولقد أخذنا آل فرعون
بالسنين ونقص من الثمرات لعلهم يذكرون ۝ فإذا
جاءتهم الحسنة قالوا لنا هذه ۖ وإن تصبهم سيئة يطيروا
بموسى ومن معه ۗ ألا إنما طائرهم عند الله ولكن أكثرهم
لا يعلمون ۝ وقالوا مهما تأتنا به من آية لتسحرنا بها فما
نحن لك بمؤمنين ۝ فأرسلنا عليهم الطوفان والجراد و
القمل والضفادع والدم آيات مفصلات فاستكبروا وكانوا
قوما مجرمين ۝ ولما وقع عليهم الرجز قالوا يا موسى ادع لنا
ربك بما عهد عندك ۖ لئن كشفت عنا الرجز لنؤمنن لك
ولنرسلن معك بني إسرائيل ۝ فلما كشفنا عنهم الرجز
إلى أجل هم بالغوه إذا هم ينكثون ۝ فانتقمنا منهم فأغرقناهم
في اليم بأنهم كذبوا بآياتنا وكانوا عنها غافلين ۝ وأورثنا
القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق الأرض ومغاربها
التي باركنا فيها ۖ وتمت كلمت ربك الحسنى على بني إسرائيل
بما صبروا ۖ ودمرنا ما كان يصنع فرعون وقومه وما كانوا
يعرشون ۝ وجاوزنا ببني إسرائيل البحر فأتوا على قوم

वे बोले कि तुम्हारे आने से पहले भी हम को तक्लीफे पहुचती रही और आने के बाद भी। मूसा ने कहा कि करीब है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और उस की जगह तुम्हे जमीन मे खलीफा बनाए, फिर देखे कि तुम कैसे अमल करते हो ★(१२९) और हम ने फ़िऔनियो को कहतो और मेवो के नुक्सान मे पकडा ताकि नसीहत हासिल करे। (१३०) तो जब उन को सुख हासिल होता तो कहते कि हम इस के हकदार हैं और अगर सख़्ती पहुचती तो मूसा और उन के साथियो की बद-शगूनी बताते। देखो, उन की बद-शगूनी खुदा के यहा (तै) है, लेकिन उन मे अक्सर नही जानते। (१३१) और कहने लगे कि तुम हमारे पास (चाहे) कोई भी निशानी लाओ, ताकि उस से हम पर जादू करो, मगर हम तुम पर ईमान लाने वाले नही हैं। (१३२) तो हम ने उन पर तूफान और टिड्डिया और जुएं और मेढक और खून कितनी खुली हुई निशानिया भेजी, मगर वे तकब्बुर (घमड) ही करते रहे और वे लोग थे ही गुनाहगार। (१३३) और जब उन पर अज़ाब आता तो कहते कि मूसा हमारे लिए अपने परवरदिगार से दुआ करो, जैसा उस ने तुम से अह्द कर रखा है, अगर तुम हम से अजाब को टाल दोगे तो हम तुम पर ईमान भी लाएगे और बनी इस्राईल को भी तुम्हारे साथ जाने (की इजाजत) देगे। (१३४) फिर जब हम एक मुद्दत के लिए, जिस तक उन को पहुचना था, उन से अजाब दूर कर देते, तो वह अह्द को तोड़ डालते। (१३५) तो हम ने उन से बदला ले कर ही छोडा कि उन को दरिया मे डुबो दिया, इस लिए कि वे हमारी आयतो को झुठलाते और उनसे बे-परवाई करते थे।[1] (१३६) और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे, उनको (शाम यानी सीरिया की) जमीन के पूरब व पच्छिम का, जिसमे हम ने बरकत दी थी, वारिस कर दिया और बनी इस्राईल के बारे मे उन के सब्र की वजह से तुम्हारे परवरदिगार का नेक वायदा पूरा हुआ और फ़िऔन की कौम वाले जो (महल) बनाते और (अगूर के बाग) जो छतरियो पर चढाते थे, सब को हम ने तबाह कर दिया ●(१३७) और हम ने बनी इस्राईल को दरिया से पार उतारा, तो वह ऐसे लोगो के पास जा पहुचे जो अपने बुतों (की इबादत) के लिए बैठे रहते थे। (बनी इस्राईल) कहने लगे कि मूसा, जैसे इन लोगो के माबूद है, हमारे लिए भी माबूद बना दो। मूसा ने कहा कि तुम बडे ही जाहिल लोग हो। (१३८) ये लोग जिस (काम) मे (फसे हुए) है,

---

१ ये सब बलाएं उन पर आयी एक-एक हफ्ते के फर्क से। अव्वल हज़रत मूसा फ़िऔन को कह आये कि अल्लाह तुम पर यह बला भेजेगा, वही बला आती, फिर परेशान हो जाते और हज़रत मूसा की खुशामद करते। उन की दुआ से दूर हो जाती और फिर इन्कारी हो जाते। आखिर को बवा पडी। आधी रात को सारे शहर मे हर शख्स का पहला बेटा मर गया। वह मुर्दो के गम मे फस गये। हजरत मूसा अपनी कौम को ले कर शहर से निकल गये। फिर कई दिन के बाद फ़िऔन फौज समेत गर्क हो गया।

★रु. १५/५ आ ३ ●रुबुअ १/४

इन्-न हा-उला-इ मुतब्बरुम्मा हुम् फ़ीहि व बातिलुम्मा कानू यअ्-मलून (१३९) क़ा-ल अग़ैरल्लाहि अब्ग़ीकुम् इलाहंव्-व-हु-व फ़ज़्ज़-लकुम् अ़-लल्-आलमीन (१४०) व इज् अन्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ-न यसूमूनकुम् सू-अल्अज़ाबि ० युक़त्तिलू-न अब्ना-अ-कुम् व यस्तह्यू-न निसा-अ-कुम् ؕ व फ़ी ज़ालिकुम् बला-उम् - मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम ★ (१४१) व वाअ़द्ना मूसा सलासी-न लैल-तंव्-व अत्मम्नाहा बिअ़श्रिन् फ़-तम्-म मीक़ातु रब्बिही अर्बई-न लैल-तन् ० व क़ा-ल मूसा लिअख़ीहि हारूनख़्लुफ़्नी फ़ी क़ौमी व अस्लिह़ व ला तत्तबिअ़ सबीलल्-मुफ़्सिदीन (१४२) व लम्मा जा-अ मूसा लिमीक़ातिना व कल्ल-महू रब्बुहू ۙ क़ा-ल रब्बि अरिनी अन्ज़ुर् इलै-क ؕ क़ा-ल लन् तरानी व लाकिनिन्ज़ुर् इलल् - ज-बलि फ़इनिस्त-क़र्-र मकानहू फ़सौ - फ़ तरानी ० फ़-लम्मा त-जल्ला रब्बुहू लिल्-ज-बलि ज-अ़-लहू दक्कंव्-व ख़र्-र मूसा स़अिक़न् ० फ़-लम्मा अफ़ा-क़-क़ा-ल सुब्हा-न - क तुब्तु इलै-क व अ-न अव्वलुल्-मुअ्मिनीन (१४३) क़ा-ल या मूसा इन्निस्तफ़ैतु-क अ़लन्नासि बिरिसालाती व बिकलामी ۖ फ़ख़ुज् मा आतैतु-क व कुम् - मिनश्शाकिरीन (१४४) व क-तब्ना लहू फ़िल्अल्वाहि मिन् कुल्लि शैइम्-मौअ़िज़-तंव् - व तफ़्सीलल् - लिकुल्लि शैइन् ० फ़ - ख़ुज्-हा बिक़ुव्वतिंव्वअ्मुर् क़ौम-क यअ्ख़ुज़ू बिअह़्सनिहा ؕ स-उरीकुम् दारल् - फ़ासिक़ीन (१४५)

قال الملأ ٩ — ١٣٢ — الأعراف ٧

يعكفون على أصنام لهم قالوا يا موسى اجعل لنا إلها كما لهم
آلهة قال إنكم قوم تجهلون ۝ إن هؤلاء متبر ما هم فيه وباطل
ما كانوا يعملون ۝ قال أغير الله أبغيكم إلها وهو فضلكم
على العالمين ۝ وإذ أنجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء
العذاب يقتلون أبناءكم ويستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء
من ربكم عظيم ۝ وواعدنا موسى ثلاثين ليلة وأتممناها
بعشر فتم ميقات ربه أربعين ليلة وقال موسى لأخيه
هارون اخلفني في قومي وأصلح ولا تتبع سبيل المفسدين ۝
ولما جاء موسى لميقاتنا وكلمه ربه قال رب أرني أنظر
إليك قال لن تراني ولكن انظر إلى الجبل فإن استقر
مكانه فسوف تراني فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر
موسى صعقا فلما أفاق قال سبحانك تبت إليك وأنا أول
المؤمنين ۝ قال يا موسى إني اصطفيتك على الناس برسالاتي
وبكلامي فخذ ما آتيتك وكن من الشاكرين ۝ وكتبنا له
في الألواح من كل شيء موعظة وتفصيلا لكل شيء
فخذها بقوة وأمر قومك يأخذوا بأحسنها سأريكم دار
الفاسقين ۝ سأصرف عن آياتي الذين يتكبرون في الأرض

منزل ٢

★रु. १६/६ आ १२

वह बरबाद होने वाला है और जो काम ये करते है, सब बेहूदा है। (१३९) (और यह भी) कहा कि भला मैं ख़ुदा के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद खोजू हालाकि उस ने तुम को तमाम दुनिया वालो पर फजीलत बख्शी है। (१४०) और (हमारे उन एहसानो को याद करो) जब हम ने तुम को फिऔनियो (के हाथ) से निजात बख्शी, वे लोग तुम को बडा दुख देते थे। तुम्हारे बेटो को तो कत्ल कर डालते थे और बेटिया ज़िन्दा रहने देते थे और इस मे तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से सख्त आजमाइश थी। (१४१) ★

और हम ने मूसा से तीस रात की मीयाद मुकर्रर की और दस (राते) और मिला कर उसे पूरा (चिल्ला) कर दिया, तो उस के परवरदिगार की चालीस रात की मीयाद पूरी हो गयी। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरे (तूर पहाड पर जाने के) बाद तुम मेरी कौम मे जानशीन हो, (उन की) इस्लाह करते रहना और शरीरो के रास्ते पर न चलना।[1] (१४२) और जब मूसा हमारे मुकर्रर किए हुए वक्त पर (तूर पहाड पर) पहुचे और उन के परवरदिगार ने उन से कलाम किया तो कहने लगे कि ऐ परवरदिगार ! तू मुझे (जलवा) दिखा कि मैं तेरा दीदार (भी) देखू। परवरदिगार ने फरमाया कि तुम मुझे हरगिज न देख सकोगे। हा, पहाड की तरफ देखते रहो, अगर यह अपनी जगह कायम रहा तो तुम मुझ को देख सकोगे। जब उन का परवरदिगार पहाड़ पर जाहिर हुआ तो (रब के अन्वार की तजल्ली ने) उस को रेजा-रेजा कर दिया और मूसा बे-होश हो कर गिर पडे। जब होश मे आये तो कहने लगे कि तेरी जात पाक है और मैं तेरे हुजूर मे तौबा करता हू और जो ईमान लाने वाले है उन मे सब से अव्वल हू। (१४३) (ख़ुदा ने (फरमाया, मूसा ! मैं ने तुम को अपने पैगाम और अपने कलाम से लोगो से मुम्ताज़ किया है, तो जो मैं ने तुम को अता किया है, उसे पकड रखो और (मेरा) शुक्र बजा लाओ। (१४४) और हम ने (तौरात की) तख्तियों मे उन के लिए हर किस्म की नसीहत और हर चीज की तफ्सील लिख दी, फिर (इर्शाद फरमाया कि) इसे जोर से पकडे रहो और अपनी कौम से भी कह दो कि इन बातो को, जो इस मे (दर्ज है और) बहुत बेहतर है, पकडे रहे। मैं बहुत जल्द तुम को ना-फरमान लोगो का घर

---

१ ख़ुदा ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को चालीस रातों के लिए बुलाया था, ताकि उन को तौरात इनायत की जाए। इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ख़ुदा ने मुझे तीस रात के लिए तलब फरमाया है। मैं तुम मे अपने भाई हारून को अपनी जगह छोडे जाता हू। जब मूसा अलैहिस्सलाम वहा से तशरीफ़ ले गये, तो अल्लाह तआला ने दस रातें और बढा दी। इस आखिरी दस दिन मे बनी इस्राईल बछडे की पूजा कर के गुमराह हो गये। चुनाचे सामरी के बछडा बनाने का किस्सा आगे आता है। जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम के लोगो से कहा था कि मैं तुम मे अपने भाई हारून को जानशीन करता हू, इसी तरह हज़रत हारून से कहा कि आप मेरी कायम मकामी कीजिएगा और इन लोगो की इस्लाह करते रहिएगा ताकि कोई फसाद न होने पाए।

★रु. १६/६ आ १२

स-अस्रिफ़ु अन् आयातियल्लज़ी-न य-त-कब्बरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि ؕ व इंय्यरौ कुल् - ल आयतिल्ला - युअ्मिनू बिहा ۚ व इंय्यरौ सबीलर्रुश्दि ला यत्तख़िज़ूहु सबीलन् ۚ व इंय्यरौ सबीलल्ग़य्यि यत्तख़िज़ूहु सबीलन् ؕ ज़ालि-क बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अन्हा ग़ाफ़िलीन (१४६)

بغير الحق وان يروا كل اية لا يؤمنوا بها وان يروا سبيل
الرشد لا يتخذوه سبيلا وان يروا سبيل الغي يتخذوه
سبيلا ذلك بانهم كذبوا باياتنا وكانوا عنها
غافلين ۝ والذين كذبوا باياتنا ولقاء الاخرة حبطت اعمالهم
هل يجزون الا ما كانوا يعملون ۝ واتخذ قوم موسى من
بعده من حليهم عجلا جسدا له خوار الم يروا انه لا
يكلمهم ولا يهديهم سبيلا اتخذوه وكانوا ظالمين ۝ ولما
سقط في ايديهم وراوا انهم قد ضلوا قالوا لئن لم يرحمنا
ربنا ويغفر لنا لنكونن من الخاسرين ۝ ولما رجع موسى الى
قومه غضبان اسفا قال بئسما خلفتموني من بعدي
اعجلتم امر ربكم والقى الالواح واخذ براس اخيه يجره
اليه قال ابن ام ان القوم استضعفوني وكادوا يقتلونني
فلا تشمت بي الاعداء ولا تجعلني مع القوم الظالمين ۝ قال
رب اغفر لي ولاخي وادخلنا في رحمتك وانت ارحم الراحمين ۝
ان الذين اتخذوا العجل سينالهم غضب من ربهم وذلة
في الحيوة الدنيا وكذلك نجزي المفترين ۝ والذين عملوا
السيات ثم تابوا من بعدها وامنوا ان ربك من بعدها لغفور

वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल्-आख़िरति हबितत् अअ्-मालुहुम् ؕ हल् युज्ज़ौ-न इल्ला मा कानू यअ्-मलून ★ (१४७) वत्त-ख़-ज क़ौमु मूसा मिम्बअ्-दिही मिन् हुलिय्यिहिम् अिज्लन् ज-स-दल्लहू ख़ुवारुन् ؕ अ-लम् यरौ अन्नहू ला युकल्लिमुहुम् व ला यह्दीहिम् सबीला ▨ इत्तख़ज़ूहु व कानू ज़ालिमीन (१४८) व लम्मा सुक़ि-त फ़ी ऐदीहिम् व रऔ अन्नहुम् क़द् ज़ल्लू ۙ क़ालू लइल्लम् यर्हम्ना रब्बुना व यग़्फ़िर्लना ल-नकूनन्-न मिनल्ख़ासिरीन (१४९) व लम्मा र-ज-अ मूसा इला क़ौमिही ग़-ज़्-बा-न असिफ़न् ۙ क़ा - ल बिअ्-समा ख़-लफ़्तुमूनी मिम्बअ् - दी ۚ अ अजिल्तुम् अम-र रब्बिकुम् ۚ व अल्क़ल् - अल्वा-ह व अ-ख़-ज बिरअ्सि अख़ीहि यजुर्रुहू इलैहि ؕ क़ालब्-न उम्-म इन्नल् - क़ौमस्तज़् - अफ़ूनी व कादू यक़्तुलूननी ۫ फ़ला तुश्मित् बियल्-अअ्-दा-अ व ला तज्-अल्नी म-अल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (१५०) क़ा-ल रब्बिग़्फ़िर्ली व लि - अख़ी व अद्ख़िल्ना फ़ी रह्मति-क ۫ व अन्-त अर्हमुर्-राहिमीन ★ (१५१) इन्नल्लज़ीनत्तख़ज़ुल् - अिज्-ल स - यनालुहुम् ग़-ज़बुम्मिर्रब्बिहिम् व ज़िल्लतुन् फ़िल्हयातिद्दुन्या ؕ व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुफ़्तरीन (१५२) वल्लज़ी-न अमिलुस्सय्यिआति सुम्-म ताबू मिम्बअ्-दिहा व आमनू ۡ इन्-न रब्ब - क मिम्बअ् - दिहा ल - ग़फ़ूरुर्रहीम (१५३)

★रु. १७/७ आ ६ ▨ व. लाज़िम ★रु १८/८ आ ४

दिखाऊंगा। (१४५) जो लोग ज़मीन मे ना-हक घमड करते है, उन को अपनी आयतो से फेर दूगा। अगर ये सब निशानिया भी देख ले, तब भी उन पर ईमान न लाएं और अगर रास्ती का रास्ता देखें तो उसे (अपना) रास्ता न बनाएं। और अगर गुमराही की राह देखें तो उसे रास्ता बना ले। यह इस लिए कि उन्हो ने हमारी आयतो को झुठलाया और उस से गफलत करते रहे। (१४६) और जिन लोगो ने हमारी आयतो और आख़िरत के आने को झुठलाया, उन के आमाल बर्बाद हो जाएगे। ये जैसे अमल करते है वैसा ही उन को बदला मिलेगा। (१४७) ★

और मूसा की कौम ने मूसा के बाद अपने ज़ेवर का एक बछडा बना लिया। (वह) एक जिस्म (था) जिस मे से बैल की आवाज़ निकलती थी। उन लोगो ने यह न देखा कि वह न उन से बात कर सकता है और न उन को रास्ता दिखा सकता है ▨ उस को उन्होने (माबूद) बना लिया और (अपने हक मे) ज़ुल्म किया।[1] (१४८) और जब वे शर्मिदा हुए और देखा कि गुमराह हो गये हैं, तो कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार हम पर रहम नही करेगा और हम को माफ नही फरमायेगा तो हम बर्बाद हो जाएगे। (१४९) और जब मूसा अपनी कौम मे निहायत गुस्से और अफसोस की हालत मे वापस आये तो कहने लगे कि तुमने मेरे बाद बहुत ही बुरा काम किया। क्या तुम ने अपने परवरदिगार का हुक्म (यानी मेरा अपने पास आना) जल्द चाहा। (यह कहा) और (गुस्से की तेज़ी से तौरात की) तख्तियां डाल दी और अपने भाई के सर (के बालो) को पकड़ कर अपनी तरफ खीचने लगे। उन्होने कहा कि भाई जान! लोग तो मुझे कमजोर समझते थे और करीब था कि कत्ल कर दे. तो ऐसा काम न कीजिए कि दुश्मन मुझ पर हसें और मुझे जालिम लोगो में मत मिलाइए। (१५०) तब उन्होने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे और मेरे भाई को माफ फरमा और हमे अपनी रहमत मे दाखिल कर, तू सब से बढ़ कर रहम करने वाला है। (१५१) ★

(खुदा ने फरमाया कि) जिन लोगो ने बछडे को माबूद बना लिया था, उन पर परवरदिगार का गज़ब वाके होगा और दुनिया की ज़िदगी मे जिल्लत (नसीब होगी) और हम झूठ गढने वालो को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१५२) और जिन्होने बुरे काम किए, फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए, तो कुछ शक नही कि तुम्हारा परवरदिगार इस के बाद (बख़्श देगा कि वह)

---

१ ऐसा मालूम होता है कि मूसा अलैहिस्सलाम की कौम के लोग अक्ल व होश से काम नही लेते थे। मूसा अलैहिस्सलाम के तूर पहाड पर चले जाने के बाद, एक शख़्स सामरी नाम का, जो उन्ही लोगो मे से था, उन से कहने लगा कि मैं तुम को एक खुदा बना देता हू, उस की पूजा किया करना। उन्हो ने यह बात मान ली तो उस ने सोने के गहने इकट्ठा किये और उस को गला कर बछडा बनाया और उस के मुह मे हज़रत जिब्रील के घोडे के पाव के तले की मुट्ठी भर मिट्टी, जो उस को मिल गयी थी, डाल दी। वह गाय की-सी आवाज़ करने लगा। सामरी ने कहा, लो यह खुदा है, इस की पूजा करो। वे उस की पूजा करने लगे। खुदा फरमाता है कि उन्हो ने इतना न सोचा कि यह कैसा माबूद है, जो न कलाम करने की ताकत रखता है और न हिदायत कर सकता है, भला बछडा क्या और खुदा क्या? और जो यह फरमाया कि मूसा की कौम ने मूसा के बाद अपने ज़ेवर का एक बछडा बना लिया, हालाकि बछडा सामरी ने बनाया था, तो इस वजह से है कि सामरी उन्ही मे से था और सब उस के इस काम से खुश थे।

★रु १७/७ आ ६ ▨ व. लाज़िम ★रु १८/८ आ ४

व लम्मा स-क-त अ़म्मूसल्-ग़-ज़बु अ-ख़-ज़ल् - अल्वा-ह़ ﺻﻠﮯ व फ़ी नुस्ख़तिहा हुदंव्-व रह़्मतुल्-लिल्लज़ी-न हुम् लिरब्बिहिम् यर्हबून (१५४) वख़्ता-र मूसा क़ौमहू सब्ई़-न रजुलल् लिमीक़ातिना ۚ फ़-लम्मा अ-ख़-ज़त्-हुमुर्रज्-फ़तु क़ा-ल रब्बि लौ शिअ्-त अह़-लक्तहुम् मिन् क़ब्लु व इय्या-य ۖ अतुह्लिकुना बिमा फ़-अ़-लस्सुफ़हाउ मिन्ना ۚ इन् हि-य इल्ला फ़ित्नतु - क ۖ तुज़िल्लु बिहा मन् तशाउ व तह्दी मन् तशाउ ۖ अन्-त वलिय्युना फ़ग़्फ़िर्लना वर्ह़म्ना व अन्-त ख़ैरुल्ग़ाफ़िरीन (१५५) वक्तुब् लना फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह़-स-न-तुंव्-व फ़िल्आख़िरति इन्ना हुद्ना इलै-क ۖ क़ा-ल अ़ज़ाबी उसीबु बिही मन् अशाउ ۚ व रह़्मती वसि-अत् कुल् - ल शैइन् ۖ फ़-स-अक्तुबुहा लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न व युअ्तूनज़्ज़का-त वल्लज़ी-न हुम् बिआयातिना युअ्मिनून ۚ (१५६) अल्लज़ी - न यत्तबिअू़नर् - रसूलन्नबिय्यल् - उम्मिय्यल्लज़ी यजिदूनहू मक्तूबन् अि़न्दहुम् फ़ित्तौराति वल्इन्जीलि ۡ यअ्मुरुहुम् बिल्मअ्-रूफ़ि व यन्हाहुम् अ़निल्मुन्करि व युह़िल्लु लहुमुत्तय्यिबाति व युह़र्रिमु अ़लैहिमुल्-ख़बाइ-स व य - ज़-अु अ़न्हुम् इस्रहुम् वल्अग़्लालल्लती कानत् अ़लैहिम् ۖ फ़ल्लज़ी-न आमनू बिही व अ़ज़्ज़रूहु व न-स-रूहु वत्तबअु़न्नूरल्लज़ी उन्ज़ि-ल म-अ़हू ۙ उलाइ-क हुमुल् - मुफ़्लिहून ★ (१५७) क़ुल् या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमी-अ़ - निल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ۚ ला इला - ह इल्ला हु - व युह़्यी व युमीतु ۖ फ़ - आमिनू बिल्लाहि व रसूलिहिन्नबिय्यिल् - उम्मिय्यिल्लज़ी युअ्मिनु बिल्लाहि व कलिमातिही वत्तबिअू़हु ल-अ़ल्लकुम् तह्तदून (१५८)

قال الملأ ٩ — ١٣٥ — الاعراف ٧

رحيم ۝ ولما سكت عن موسى الغضب اخذ الالواح ۖ وفي
نسختها هدى ورحمة للذين هم لربهم يرهبون ۝ واختار
موسى قومه سبعين رجلا لميقاتنا ۚ فلما اخذتهم الرجفة قال
رب لو شئت اهلكتهم من قبل واياي ۖ اتهلكنا بما فعل
السفهاء منا ۚ ان هي الا فتنتك تضل بها من تشاء وتهدي
من تشاء ۖ انت ولينا فاغفر لنا وارحمنا وانت خير الغفرين ۝
واكتب لنا في هذه الدنيا حسنة وفي الاخرة انا هدنا اليك ۚ
قال عذابي اصيب به من اشاء ۚ ورحمتي وسعت كل شيء ۚ
فساكتبها للذين يتقون ويؤتون الزكوة والذين هم باياتنا
يؤمنون ۝ الذين يتبعون الرسول النبي الامي الذي يجدونه
مكتوبا عندهم في التورىة والانجيل يامرهم بالمعروف و
ينههم عن المنكر ويحل لهم الطيبت ويحرم عليهم الخبئث
ويضع عنهم اصرهم والاغلل التي كانت عليهم ۚ فالذين امنوا
به وعزروه ونصروه واتبعوا النور الذي انزل معه ۙ اولئك هم
المفلحون ۝ قل يايها الناس اني رسول الله اليكم جميعا
الذي له ملك السموت والارض ۚ لا اله الا هو يحي ويميت
فامنوا بالله ورسوله النبي الامي الذي يؤمن بالله وكلمته

★रु १९/९ आ ६

बख्शने वाला मेहरबान है। (१५३) और जब मूसा का गुस्सा दूर हुआ तो (तौरात की) तख्तिया उठा ली और जो कुछ उन मे लिखा था, वह उन लोगो के लिए, जो अपने परवरदिगार से डरते है, हिदायत और रहमत थी। (१५४) और मूसा ने उस मीआद पर, जो हमने मुकर्रर की थी, अपनी कौम के सत्तर आदमी चुन (कर के तूर पहाड पर हाजिर) किए। जब उन को ज़लज़ले ने पकडा तो मूसा ने कहा कि ऐ परवरदिगार ! अगर तू चाहता तो उन को और मुझ को पहले ही से हलाक कर देता। क्या तू इस काम की सज़ा मे, जो हम मे से बे-अक्ल लोगो ने किया है, हमे हलाक कर देगा। यह तो तेरी आज़माइश है। इस से तू जिस को चाहे, गुमराह करे और जिसे चाहे हिदायत बख्शे, तू ही हमारा कारसाज़ है, तो हमे (हमारे गुनाह) बख्श दे और हम पर रहम फरमा और तू सब से बेहतर बख्शने वाला है। (१५५) और हमारे लिए इस दुनिया मे भी, भलाई लिख दे और आख़िरत मे, भी हम तेरी तरफ रुजू हो चुके। फरमाया कि जो मेरा अज़ाब है, उसे तो जिस पर चाहता हू नाज़िल करता हूं और जो मेरी रहमत है, वह हर चीज़ को शामिल है। मैं इस को उन लोगो के लिए लिख दूंगा जो परहेज़गारी करते, और जकात देते और हमारी आयतो पर ईमान रखते है। (१५६) वे जो (मुहम्मद, अल्लाह के) रसूल के जो नबी-ए-उम्मी है, पैरवी करते है, जिन की (ख़ूबियो) को वे अपने यहा तौरात और इजील मे लिखा हुआ पाते हैं, वे उन्हे नेक काम का हुक्म देते है और बुरे काम से रोकते है और पाक चीजो को उन के लिए हलाल करते है और नापाक चीज़ो को उन पर हराम ठहराते है और उन पर से बोझ और तौक जो उन (के सर) पर (और गले मे) थे, उतारते हैं, तो जो लोग उन पर ईमान लाए और उन का साथ दिया और उन्हे मदद दी और जो नूर उन के साथ नाज़िल हुआ है, उसकी पैरवी की, वही मुराद पाने वाले है। (१५७) ★

(ऐ मुहम्मद !) कह दो कि लोगो ! मैं तुम सब की तरफ खुदा का भेजा हुआ (यानी उस का रसूल) हूं। (वह) जो आसमानों और ज़मीन का बादशाह है, उसके सिवा कोई माबूद नही। वही जिंदगी बख्शता और वही मौत देता है, तो खुदा पर और उस के रसूल पैगम्बर उम्मी पर, जो खुदा पर और उसके तमाम कलाम पर ईमान रखते हैं, ईमान लाओ और उनकी पैरवी करो, ताकि

★रु १९/९ आ ६

व मिन् क़ौमि मूसा उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्ह़क़्क़ि व बिही यअ्-दिलून (१५९) व क़त्तअ्-ना-हुमुस्नतै-अश्-र-त अस्बातन् उम-मन् ᛍ व औह़ैना इला मूसा इज़िस्तस्क़ाहु क़ौमुहू अनिज़्रिब् बिअसाकल् - ह-जर ᛍ फ़म्ब-ज-सत् मिन्हुस्नता अश्-र-त अ़ैनन् ᛍ क़द् अलि - म कुल्लु उनासिम्-मश्रबहुम् ᛍ व ज़ल्लल्ना अ़लैहिमुल्-ग़मा-म व अन्ज़ल्ना अ़लैहिमुल्-मन्-न वस्सल्वा ᛍ कुलू मिन् तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् ᛍ व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (१६०) व इज़् क़ी-ल लहुमुस्कुनू हाज़िहिल्क़र्य-त व कुलू मिन्हा ह़ैसु शिअ्तुम् व क़ूलू हित्ततुंव्वद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदन्-नग़्फ़िर् लकुम् ख़तीआतिकुम् ᛍ स-नज़ीदुल्-मुह़्सिनीन (१६१) फ़-बद्-द-लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रिज्-ज़म्-मिनस्समा-इ बिमा कानू यज़्लिमून ★ (१६२) वस्-अल्हुम् अ़निल्क़र्यतिल्लती कानत् ह़ाज़िर-तल् - बह़्रि ▒ इज़् यअ् - दू - न फ़िस्सब्ति इज़् तअ्तीहिम् ह़ीतानुहुम् यौ-म सब्तिहिम् शुर्रअ़ंव् - व यौ - म ला यस्बितू - न ᛍ ला तअ्तीहिम् ᛍ कज़ालि - क ᛍ नब्लूहुम् बिमा कानू यफ़्सुक़ून ● (१६३) व इज़् क़ालत् उम्मतुम् - मिन्हुम् लि-म तअ़िज़ू - न क़ौमनि -ल्लाहु मुह़्लिकुहुम् औ मुअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदा ᛍ क़ालू मअ़-ज़ि-र-तन् इला रब्बिकुम् व ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून (१६४) फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही अन्जैनल्लज़ी-न यन्हौ-न अ़निस्सू-इ व अ-ख़ज़-नल्लज़ी - न ज़ - लमू बिअ़ज़ाबिम्-बईसिम्-बिमा कानू यफ़्सुक़ून (१६५) फ़ - लम्मा अ़तौ अम्मा नुहू अ़न्हु क़ुल्ना लहुम् कूनू कि-र-द-तन् ख़ासिईन (१६६)

قال الملأ ٩ ١٣٦ الأعراف ٧

وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ
وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۝ وَقَطَّعْنَاهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَا
إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانْبَجَسَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ
الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۚ
وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا
هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا
الْبَابَ سُجَّدًا نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَاتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۝ فَبَدَّلَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ۝ وَاسْأَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي
كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ
يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۙ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَبْلُوهُمْ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝ وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ
اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ
عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ۝ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً

★रु २०/१० आ ५ ▒ व लाज़िम ∴ मु अ़ि मु त क ६ ● नि. १/२

हिदायत पाओ। (१५८) और मूसा की कौम मे से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हक का रास्ता वताते और उसी के साथ इंसाफ करते है। (१५६) और हमने उनको (यानी वनी इस्राईल को) अलग-अलग करके वारह कबीले (और) बडी-बडी जमाअतें बना दिया और जव मूसा से उन की कौम ने पानी तलब किया तो हम ने उनकी तरफ वह्य भेजी कि अपनी लाठी पत्थर पर मार दो, तो उसमे से बारह चश्मे फूट निकले और सब लोगो ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया और हमने उनके (सरो पर) बादल को सायबान बनाये रखा और उन पर मन्न व सल्वा उतारते रहे (और उन से कहा कि) जो पाकीज़ा चीज़े हम तुम्हे देते हैं, उन्हे खाओ और उन लोगों ने हमारा कुछ नुक्सान नही किया, बल्कि (जो) नुक्सान (किया) वह अपना ही किया। (१६०) और (याद करो) जब उन से कहा गया कि इस शहर मे रहो-बसो, और इस मे जहा से जी चाहे खाना (पीना) और (हा शहर मे जाना तो) 'हित्तुन' कहना और दरवाज़े मे दाखिल होना तो सज्दा करना। हम तुम्हारे गुनाह माफ कर देंगे और नेकी करने वालो को और ज्यादा देंगे। (१६१) मगर जो उन मे ज़ालिम थे, उन्होने उस लफ्ज़ को, जिस का उन को हुक्म दिया गया था, बदल कर उसकी जगह और लफ्ज़ कहना शुरू किया, तो हमने उन पर आसमान से अज़ाब भेजा इस लिए कि ज़ुल्म करते थे। (१६२) ★

और उनसे उस गांव का हाल तो पूछो, जो दरिया के किनारे वाकेअ था ▨ जब ये लोग हफ्ते के दिन के बारे में हद से आगे निकल जाने लगे (यानी) उस वक़्त कि उन के हफ्ते के दिन मछलिया उनके सामने पानी के ऊपर आतो और जब हफ्ते का दिन न होता, तो न आती, इसी तरह हम∴उन∴ लोगों को उनकी ना-फरमानियो की वजह से आज़माइश मे डालने लगे। (१६३) ● और जब उनमे से एक जमाअत ने कहा कि तुम ऐसे लोगो को क्यो नसीहत करते हो, जिन को ख़ुदा हलाक करने वाला या सख़्त अज़ाब देने वाला है, तो उन्होने कहा, इसलिए कि तुम्हारे परवरदिगार के सामने माज़रत कर सके (यानी मजबूरी ज़ाहिर कर सके) और अजब नही कि वे परहेज़गारी अपनाएं। (१६४) जब उन्होंने इन बातो को भुला दिया, जिन की उन को नसीहत की गयी थी, तो जो लोग बुराई से मना करते थे, उनको हमने निजात दी और जो ज़ुल्म करते थे, उनको बुरे अज़ाब मे पकड लिया कि नाफरमानी किये जाते थे। (१६५) ग़रज़ जिन (बुरे) आमाल से उनको मना किया गया था, जब वे उन (पर इस्रार और हमारे हुक्म) से गरदनकुशी करने लगे, तो हम ने उन को हुक्म दिया कि ज़लील बन्दर हो जाओ। (१६६) और (उस वक्त को याद करो) जब तुम्हारे

★रु. २०/१० आ ५ ▨ व लाज़िम∴मु अ़ि मु ता ख़. ६ ● नि. १/२

व इज़् त-अज़्ज़-न रब्बु-क ल-यब्-अ़-सन्-न अ़लैहिम् इला यौमिल्क़ियामति मंय्यसूमुहुम् सूअल्अ़ज़ाबि ط इन्-न रब्ब-क ल-सरीअुल् - अिक़ाबि صلے व इन्नहू ल - ग़फ़ूरुर्-रहीम (१६७) व क़त्तअ्-नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि उ-म-मन् ج मिन्हुमुस्सालिहू-न व मिन्हुम् दू-न ज़ालि-क ۚ व बलौनाहुम् बिल्ह़-स-नाति वस्सय्यिआति ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (१६८) फ़-ख़-ल-फ़ मिम्बअ्-दि-हिम् ख़ल्फ़ुंव्वरिसुल्-किता-ब यअ्ख़ुज़ू-न अ़-र-ज़ हाज़ल्अद्ना व यक़ूलू-न स-युग़्फ़रु लना ج व इंय्यअ्तिहिम् अ़-र-ज़ुम् - मिस्लुहू यअ्ख़ुज़ूहु ط अ-लम् युअ्ख़ज़् अ़लैहिम् मीसाक़ुल्-किताबि अल्ला यक़ूलू अ़-लल्लाहि इल्लल्ह़क़्-क़ व द-रसू मा फ़ीहि ط वद्दारुल्आख़िरतु ख़ैरुल्लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न ط अ-फ़ला तअ्-क़िलून (१६९) वल्-लज़ी-न युमस्सिकू-न बिल्किताबि व अक़ामुस्-सला-त ط इन्ना ला नुज़ीअ़ु अज्रल्-मुस्लिहीन (१७०) व इज़् न-तक़्नलज-ब-ल फ़ौक़हुम् क-अन्नहू ज़ुल्लतुंव्-व ज़न्नू अन्नहू वाक़िअ़ुम्-बिहिम् ج ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि ल - अ़ल्लकुम् तत्तक़ून ★ (१७१) व इज़् अ-ख़-ज़ रब्बु-क मिम्बनी आद-म मिन् ज़ुहूरिहिम् ज़ुर्रिय्यतहुम् व अश्ह - दहुम् अ़ला अन्फ़ुसिहिम् ج अ - लस्तु बिरब्बिकुम् ط क़ालू बला ∴ शहिद्ना ∴ अन् तक़ूलू यौमल् - क़ियामति इन्ना कुन्ना अ़न् हाज़ा ग़ाफ़िलीन ۙ (१७२) औ तक़ूलू इन्नमा अश्-र-क आबाउना मिन् क़ब्लु व कुन्ना ज़ुर्रिय्यतम्-मिम्बअ्-दिहिम् ج अ- फ़-तुह-लिकुना बिमा फ़-अ़-लल्-मुब्तिलून (१७३) व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (१७४) वत्लु अ़लैहिम् न-ब-अल्लज़ी आतैनाहु आयातिना फ़न्स-ल-ख़ मिन्हा फ़-अत्ब-अ़हुश्-शैतानु फ़-का-न मिनल्ग़ावीन (१७५)

قال الملأ ٩   ١٣٦   الأعراف ٧

خٰسِئِیْنَ ۝ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ
يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ
دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝
فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا
الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ
اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ
وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا
نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝ وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ
وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ
شَهِدْنَا ۛۚ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ۝ اَوْ
تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ
اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ

★रु २१/११ आ ९ ∴मु. ख़ि मु ता ख़. ७

परवरदिगार ने (यहूद को) आगाह कर दिया था कि वह उन पर कियामत तक ऐसे शख्स को मुसल्लत रखेगा, जो उन को बुरी-बुरी तक्लीफें देता रहे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जल्द अजाब करने वाला है और वह बख्शने वाला मेहरबान भी है। (१६७) और हमने उन को जमाअत-जमाअत कर के मुल्क मे बिखरा दिया। कुछ उन मे भले काम करने वाले है और कुछ और तरह के (यानी बुरे) और हम आरामो और तक्लीफो (दोनो) से उन की आज़माइश करते रहे ताकि (हमारी तरफ) रुजूअ करें। (१६८) फिर उन के बाद ना-खलफ उनके कायम मकाम हुए, जो किताब के वारिस बने। यह (बे-झिझक) इस बे-क़ीमत दुनिया का माल व मताअ ले लेते है और कहते है कि हम बख्श दिए जाएगे। और (लोग ऐसो पर तान करते है) अगर उन के सामने भी वैसा ही माल आ जाता है, तो वह भी उसे ले लेते है। क्या उन से किताब के बारे मे अह्द नही लिया गया कि खुदा पर सच के सिवा और कुछ नही कहेगे और जो कुछ इस (किताब) मे है, उस को उन्होंने पढ भी लिया है और आखिरत का घर परहेज़गारो के लिए बेहतर है, क्या तुम समझते नही ? (१६९) और जो लोग किताब को मजबूत पकड़े हुए है, और नमाज़ का इल्तिजाम रखते हैं (उन को हम बदला देंगे कि) हम भले लोगो का बदला बर्बाद नही करते। (१७०) और जब हमने उन (के सरो) पर पहाड उठा खडा किया, गोया वह सायबान था और उन्होने ख्याल किया कि वह उन पर गिरता है, तो (हमने कहा कि) जो हमने तुम्हें दिया है, उसे जोर से पकडे रहो और जो इसमे लिखा है, उस पर अमल करो ताकि बच जाओ। (१७१) ★

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने बनी आदम से यानी उन की पीठों से उन की औलाद निकाली, तो उन से खुद उनके मुकाबले मे इकरार करा लिया (यानी उन से पूछा कि) क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नही हू ? वे कहने लगे, क्यो नही; हम गवाह हैं: (कि तू हमारा परवरदिगार है)। (यह इकरार इस लिए कराया था) कि कियामत के दिन (कही यो न) कहने लगो कि हम को इस की खबर ही न थी। (१७२) या यह (न) कहो कि शिर्क तो पहले हमारे बड़ो ने किया था और हम तो उन की औलाद थे (जो) उन के बाद (पैदा हुए) तो क्या जो काम अह्ले बातिल करते रहे, उस के बदले तू हमें हलाक करता है। (१७३) और इसी तरह हम (अपनी) आयते खोल-खोल कर बयान करते है, ताकि ये रुजू करें। (१७४) और उन को उस शख्स का हाल पढ कर सुना दो, जिस को हमने अपनी आयतें अता फरमायी, तो उसने उनको उतार दिया, फिर शैतान उस के पीछे लगा,

★रु २१/११ आ ६: मु. ख़ि मु ता ख़· ७

व लौ शिअ्ना ल-र-फ़अ्-नाहु बिहा व लाकिन्नहू अख़्-ल-द इलल्अर्ज़ि वत्त-ब-अ हवाहु ᵹ फ़-म-सलुहू क-म - 'सलिलकल्बि ᵹ इन् तह्मिल् अलैहि यल्हस् औ तत्रुक्हु यल्हस् ᵇ ज़ालि - क म-सलुल् - क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना ᵹ फ़क़्सुसिल्-क़-स-स ल-अल्लहुम् य-त-फ़क्करून (१७६) सा-अ म-स-ल-निल्-क़ौमुल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व अन्फ़ुसहुम् कानू यज़्लिमून (१७७) मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्-मुह्तदी ᵹ व मंय्युज़्लिल् फ़ - उलाइ - क हुमुल्ख़ासिरून (१७८) व ल-क़द् ज़-रअ्ना लिज-हन्न-म कसीरम् - मिनल्जिन्नि वल् - इन्सि ᵹ लहुम् क़ुलूबुल् - ला - यफ़्क़हू - न बिहा व लहुम् अअ्-युनुल्-ला-युब्सिरू - न बिहा व लहुम् आज़ानुल् - ला-यस्मअू-न बिहा ᵇ उलाइ-क कल्अन्आमि बल् हुम् अज़ल्लु ᵇ उलाइ - क हुमुलग़ाफ़िलून (१७९) व लिल्लाहिल् - अस्माउल्-हुस्ना फ़द्अूहु बिहा ᵹ व ज़रुल्लज़ी - न युल्हिदू - न फ़ी अस्माइही ᵇ स - युज्ज़ौ-न मा कानू यअ्-मलून (१८०) व मिम्मन् ख़-लक़्ना उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्-दिलून ★ (१८१) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना स-नस्तद्रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ्-लमून ᵹ (१८२) व उम्ली लहुम् ᵹ इन - न कैदी मतीन (१८३) अ-व लम् य-त-फ़क्करू ᵹ मा बिसाहिबिहिम् मिन् जिन्नतिन् ᵇ इन् हु-व इल्ला नज़ीरुम्मुबीन (१८४) अ-व लम् यन्ज़ुरू फ़ी म-ल-कूतिस्-समावाति वल्अर्ज़ि व मा ख़-ल-क़ल्लाहु मिन् शैइंव्-व अन् असा अंय्यकू-न क़दिक़्-त-र-ब अ-जलुहुम् ᵹ फ़बिअय्यि हदीसिम्बअ्-दहू युअ्मिनून (१८५)

مِنْهَا فَاتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ
بِهَا وَلٰكِنَّهٗ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ
الْكَلْبِ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ذٰلِكَ مَثَلُ
الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ سَآءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ
كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ وَمَنْ يُّضْلِلْ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ
بِهَا وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ
اَضَلُّ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ
بِهَا وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ
يَعْدِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاُمْلِيْ لَهُمْ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ
يَتَفَكَّرُوْا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝
اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ
مِنْ شَيْءٍ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ فَبِاَيِّ

★ रु. २२/१२ आ १०

तो वह गुमराहो मे हो गया। (१७५) और अगर हम चाहते तो इन आयतो से उस (के दर्जे) को बुलंद कर देते, मगर वह तो पस्ती की तरफ मायल हो गया और अपनी ख्वाहिश के पीछे चल पडा, तो उस की मिसाल कुत्ते की-सी हो गयी कि अगर सख्ती करो, तो ज़ुबान निकाले रहे और यो ही छोड दो, तो भी ज़ुबान निकाले रहे। यही मिसाल उन लोगो की है, जिन्होने हमारी आयतो को झुठलाया तो (उन से) यह किस्सा बयान कर दो, ताकि वे फिक्र करे। (१७६) जिन लोगो ने हमारी आयतो को झुठलाया, उन की मिसाल बुरी है और उन्होने नुक्सान (किया, तो) अपना ही किया। (१७७) जिस को खुदा हिदायत दे, वही हिदायत पर है और जिस को गुमराह करे, तो ऐसे ही लोग नुक्सान उठाने वाले हैं। (१७८) और हम ने बहुत से जिन्न और इसान दोज़ख के लिए पैदा किये हैं, उन के दिल हैं, लेकिन उनसे समझते नही और उन की आखें हैं, मगर उन से देखते नही। और उन के कान हैं, पर उन से सुनते नही। ये लोग (बिल्कुल) चारपायो की तरह है बल्कि उन से भी भटके हुए। यही वे है जो गफलत मे पडे हुए है। (१७९) और खुदा के सब नाम अच्छे ही अच्छे है, तो उस को उसके नामो से पुकारा करो और जो लोग उसके नामो मे टेढ़ (अपनाया) करते है, उन को छोड दो। वे जो कुछ कर रहे है, बहुत जल्द उस की सज़ा पाएगे। (१८०) और हमारी मख्लूकात में से एक वे लोग हैं, जो हक का रास्ता बताते है और उसी के साथ इसाफ करते है। (१८१) ★

और जिन लोगो ने हमारी आयतो को झुठलाया, उन को तर्तीब से इस तरीके से पकडेगे कि उन को मालूम ही न होगा। (१८२) और मैं उन को मुहलत दिए जाता हू, मेरी तद्बीर (बड़ी) मजबूत है। (१८३) क्या उन्होने गौर नही किया कि उन के साथी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को (किसी तरह का भी) जुनून नही है। वह तो जाहिर-जहूर डर सुनाने वाले है। (१८४) उन्होने आसमान व जमीन की बादशाही मे और जो चीज़े खुदा ने पैदा की हैं, उन पर नज़र की और इस बात पर (ख्याल नही किया) कि अजब नहीं उन (की मौत) का वक्त नजदीक व गया हो, तो इस के बाद वह और किस बात पर ईमान लाएगे। (१८५) जिस शख्स को खुदा

मंय्युज-लिलिल्लाहु फ़ला हादि-य लहू ط व य-ज़-रुहुम् फ़ी तुग्यानिहिम् यअ्-महून (१८६) यस्-अलू-न-क अ़निस्साअ़ति अय्या-न मुर्साहा ط कुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन् - द रब्बी ج ला युजल्लीहा लिवक़्तिहा इल्ला हु - व ▨ सकुलत् फ़िस्समावाति वल्अर्जि ط ला तअ्तीकुम् इल्ला बग़्त - तन् ط यस्अलून - क क-अन्न-क हफ़िय्युन् अ़न्हा ط क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून (१८७) कुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी नफ़्अ़व्-व ला ज़र्रन् इल्ला मा शाअल्लाहु ط व लौ कुन्तु अअ्-लमुल्ग़ै-ब लस्तक्सर्तु मिनल्ख़ैरि صلے व मा मस्सनियस्सूउ ج इन् अ-न इल्ला नज़ीरुंव् - व बशीरुल् - लिक़ौमिय्युअ्मिनून ★(१८८) हुवल्लज़ी ख़ - ल-ककुम् मिन् नफ़्सिव्वाहिदतिव्-व ज-अ-ल मिन्हा ज़ौजहा लियस्कु-न इलैहा ج फ़-लम्मा त - गश्शाहा ह-म-लत् ह़म्लन् ख़फ़ीफ़न् फ़-मर्रत बिही ج फ़-लम्मा अस्क़लद्-द-अ-वल्ला-ह रब्बहुमा लइन् आतैतना सालिहल्-ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (१८९) फ़-लम्मा आताहुमा सालिहन् ज-अला लहू शु-रका-अ फ़ीमा आताहुमा ج फ़-त-आ़लल्लाहु अ़म्मा युश्रिकून (१९०) अयुश्रिकू-न मा ला यख़्लुकु शैअंव्-व हुम् युख़-लकून صلے (१९१) व ला यस्ततीअू-न लहुम् नस्रंव्-व ला अन्फ़ुसहुम् यन्सुरून (१९२) व इन् तद्अूहुम् इलल्हुदा ला यत्तबिअूकुम् ط सवाउन् अ़लैकुम् अ-दऔतुमूहुम् अम् अन्तुम् सामितून (१९३) इन्नल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि अ़िबादुन् अम्सालुकुम् फ़द्अूहुम् फ़ल्यस्तजीबू लकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१९४)

حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝ مَنْ يُضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ
وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ
مُرْسٰهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ
ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً يَسْـَٔلُونَكَ كَأَنَّكَ
حَفِيٌّ عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللّٰهُ
وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ
السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ هُوَ الَّذِي
خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشّٰهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ فَلَمَّا
أَثْقَلَتْ دَعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَنَكُونَنَّ مِنَ
الشّٰكِرِينَ ۝ فَلَمَّا آتٰهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتٰهُمَا
فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَهُمْ
يُخْلَقُونَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۝
وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ
أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللّٰهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ

▨ व लाज़िम व मंज़िल ∴ मु अ़ि मु ता ख़ ८ ★रु २३/१३ आ ७

गुमराह करे, उसको कोई हिदायत देने वाला नही और वह उन (गुमराहों) को छोडे रखता है कि अपनी सरकशी मे पड़े बहकते रहे। (१८६) (ये लोग) तुम से कियामत के बारे में पूछते हैं कि इस के वाकेअ होने का वक्त कब है। कह दो कि इस का इल्म तो मेरे परवरदिगार ही को है। वही उसे उस के वक्त पर जाहिर कर देगा ※ वह आसमान और ज़मीन मे एक भारी बात होगी और यकायक तुम पर आ जाएगी। यह तुम से इस तरह पूछते है कि गोया तुम इस को अच्छी तरह जानते हो। कहो कि इस का इल्म तो खुदा ही को है, लेकिन अक्सर लोग यह नही जानते। (१८७) कह दो कि मैं अपने फायदे और नुक्सान का कुछ भी अख्तियार नही रखता, मगर जो खुदा चाहे और अगर मैं गैब की बाते जानता होता, तो बहुत से फ़ायदे जमा कर लेता∴और मुझ को कोई तक्लीफ न पहुचती,∴ मैं तो मोमिनो को डर और खुशख़बरी सुनाने वाला हू। (१८८) ★

वह खुदा ही तो है, जिसने तुम को एक शख्स से पैदा किया, और उस से उसका जोड़ा बनाया, ताकि उस से राहत हासिल करे, सो जब वह उस के पास जाता है, तो उसे हल्का-सा हमल रह जाता है और वह उसके साथ चलती-फिरती है। फिर जब कुछ बोझा मालूम करती (यानी बच्चा पेट मे बड़ा होता) है तो दोनो (मिया-बीवी) अपने परवरदिगार खुदा-ए अज्ज व जल्ल से इल्तिजा करते है कि अगर तू हमे सही व सालिम (बच्चा) देगा, तो हम तेरे शुक्रगुज़ार होगे। (१८९) जब वह उनको सही व सालिम (बच्चा) देता है, तो उस (बच्चे) मे जो वह उन को देता है, उसका शरीक मुकर्रर करते हैं। जो वे शिर्क करते है, खुदा का (रुत्बा) इस से बुलंद है।[1] (१९०) क्या वे ऐसो को शरीक बनाते है, जो कुछ भी पैदा नही कर सकते और खुदा पैदा किये जाते हैं। (१९१) और न उन की मदद की ताकत रखते है और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। (१९२) अगर तुम उन को सीधे रास्ते की तरफ बुलाओ, तो तुम्हारा कहा न मानें, तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन को बुलाओ या चुपके हो रहो। (१९३) (मुश्रिको!) जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, वह (तुम्हारी) तरह के बन्दे ही है, (अच्छा) तुम उन को पुकारो, अगर सच्चे हो तो चाहिए कि वह

---

१ इस आयत की तफसीर मे तमाम तफसीर लिखने वालो को बडी मुश्किल पेश आयी कि इस को हज़रत आदम व हव्वा का किस्सा समझ कर ख्याल किया कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से भी शिर्क का बडा गुनाह हुआ, हालाकि नबी शिर्क से मासूम होते हैं। तो कुछ ने इस सवाल को इस तरह हल किया है कि यह गुनाह सिर्फ हव्वा से हुआ न कि आदम से, यह तो सिर्फ कहने का अन्दाज़ है जैसा कि और जगहो पर इस्तेमाल हुआ है।

※ व. लाज़िम व. मंज़िल ∴ मु अ़ि मु ता ख ८ ★ रु २३/१३ आ ७

अ-लहुम् अर्जुलुं य्यम्शू-न बिहा अम् लहुम् ऐदिंय्यब्तिशू - न बिहा अम् लहुम् अअ्-युनुं य्युब्सिरू - न बिहा अम् लहुम् आजानुं य्यस्मअू - न बिहा कुलिद्अू शुरका-अकुम् सुम्-म कीदूनि फ़ला तुन्ज़िरून (१९५) इन्-न वलिय्यि-यल्लाहुल्लज़ी नज्जलल् - किता-ब व हु-व य - त - वल्लस्सालिहीन (१९६) वल्लजी-न तद्अू-न मिन् दूनिही ला यस्ततीअू-न नस्रकुम् व ला अन्फ़ुसहुम् यन्सुरून (१९७) व इन् तद्अूहुम् इलल्हुदा ला यस्मअू ط व तराहुम् यन्ज़ुरू-न इलै-क व हुम् ला युब्सिरून (१९८) ख़ुज़िल्अफ़्-व वअ्मुर् बिल्अुर्फि व अअ्-रिज़् अनिल्जाहिलीन (१९९) व इम्मा यन्ज़ग़न्न-क मिनश्शैतानि नज्गुन् फ़स्तअिज़् बिल्लाहि ط इन्नहू समीअुन् अलीम (२००) इन्नल्लज़ीनत्तक़ौ इज़ा मस्सहुम् ताइफ़ुम् - मिनश्शैतानि त-ज़क्करू फ़-इज़ा हुम् मुब्सिरून ج (२०१) व इख़्वानु-

قَالَ الْمَلَاُ ٩ ۔ ١٣٠ ۔ الاعراف ٧

صٰدِقِيْنَ ۝ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ
بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا
قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝ اِنَّ وَلِيِّ اللّٰهُ
الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝
وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ
وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ
الْجٰهِلِيْنَ ۝ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ
الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ
فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ۝ وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا
اجْتَبَيْتَهَا قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ هٰذَا بَصَآئِرُ
مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَاِذَا قُرِئَ
الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَ
الْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۝

منزل ٢

हुम् यमुद्दूनहुम् फ़िल्गय्यि सुम्-म ला युक़्सिरून (२०२) व इज़ा लम् तअ्तिहिम् बिआयतिन् कालू लौलज्तबैतहा ط कुल् इन्नमा अत्तबिअु मा यूहा इलय्-य मिर्रब्बी ج हाज़ा बसाइरु मिर्रब्बिकुम् व हुदव् - व रह्मतुल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (२०३) व इज़ा कुरिअल्-कुर्आनु फस्तमिअू लहू व अन्सितू ल-अल्लकुम् तुर्हमून (२०४) वज़्कुर्रब्ब-क फी नफ्सि - क तज़र्रुअं व्-व ख़ीफ़-तंव्-व-दूनल्जह्रि मिनल्कौलि बिल्गुदुव्वि वल्आसालि व ला तकुम्मिनल्-ग़ाफ़िलीन (२०५) इन्नल्लज़ी-न अिन्-द रब्बि-क ला यस्तक्बिरू-न अन् अिबादतिही व युसब्बिहूनहू व लहू यस्जुदून ★ ● □ (२०६)

★रु. २४/१४ आ १८ ●सु ३/४ □सज्द: १

तुम को जवाव भी दे। (१९४) भला उन के पाव है, जिन से चलें या हाथ है, जिन से पकड़े या आंखे है जिन से देखे या कान है, जिन से सुने ? कह दो कि अपने शरीको को बुला लो और मेरे बारे मे (जो) तद्बीर (करनी हो) कर लो और मुझे कुछ मुहलत भी न दो (फिर देखो कि) वह मेरा क्या कर सकते है ? (१९५) मेरा मददगार तो खुदा ही है जिस ने (हक) किताव नाजिल की और नेक लोगो का वही दोस्तदार है। (१९६) और जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, वह न तुम्हारी ही मदद की ताकत रखते है और न खुद अपनी ही मदद कर सकते है। (१९७) और अगर तुम उन को सीधे रास्ते की तरफ बुलाओ, तो सुन न सके और तुम उन्हे देखते हो कि (देखने मे) आखे खोले तुम्हारी तरफ देख रहे है, मगर (सच मे) कुछ नही देखते। (१९८) (ऐ मुहम्मद !) अफ्व (माफ करना) अख्तियार करो और नेक काम करने का हुक्म दो और जाहिलो से किनारा कर लो। (१९९) और अगर शैतान की तरफ से तुम्हारे दिल मे किसी तरह कोई वस्वसा पैदा हो तो खुदा से पनाह मागो, बेशक वह सुनने वाला (और) सव कुछ जानने वाला है। (२००) जो लोग परहेजगार है, जब उन को शैतान की तरफ से कोई वस्वसा पैदा होता है तो चौक पड़ते है और (दिल की आखे खोल कर) देखने लगते है। (२०१) और इन (कुफ्फार) के भाई उन्हे गुमराही मे खीचे जाते है, फिर (उस मे किसी तरह की) कोताही नही करते। (२०२) और जब तुम उन के पास (कुछ दिनो तक) कोई आयत नही लाते, तो कहते है कि तुमने (अपनी तरफ से) क्यो नही वना ली। कह दो कि मैं तो उसी हुक्म की पैरवी करता हू, जो मेरे परवरदिगार की तरफ से मेरे पास आता है। यह (कुरआन) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से दानिश व वसीरत और मोमिनो के लिए हिदायत और रहमत है। (२०३) और जब कुरआन पढा जाए तो तवज्जोह से सुना करो और खामोश रहा करो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (२०४) और अपने परवरदिगार को दिल ही दिल मे आजिजी और खौफ से और पस्त आवाज से, सुबह व शाम याद करते रहो, और (देखना) गाफिल न होना। (२०५) जो लोग तुम्हारे परवरदिगार के पास है, वे उस की इवादत से गरदन कुशी नही करते और उस पाक जात को याद करते और उसके आगे सज्दे करते रहते है।[1] (२०६) ★ ● □

---

१ इस आयत की तिलावत से सज्दा फर्ज होता है, जो कर लेना चाहिए।

★रु २४/१४ आ १८ ●सु ३/४ □सज्दः १

८ सूरतुल्‌अन्फ़ालि ८८

(मदनी) इस सूर मे अरबी के ५५२२ अक्षर, १२५३ शब्द, ७५ आयत और १० रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीम •

यस्-अलून - क अनिल्-अन्फ़ालि ط कुलिल् - अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्रसूलि ج फत्तक़ुल्ला-ह व अस्लिहू ज़ा-त बैनिकुम् ص व अतीअुल्ला-ह व रसूलहू इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१) इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् व इज़ा तुलियत् अलैहिम् आयातुहू जादत्हुम् ईमानव्-व अला रब्बिहिम् य-त - वक्कलून ع (२) अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला - त व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून ط (३) उलाइ-क हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक़्क़न् ط लहुम् द-रजातुन् अिन्-द रब्बिहिम् व मग़्फ़ि-रतु व्-व रिज़्क़ुन् करीम ج (४) कमा अख़्-र-ज-क रब्बु-क मिम्बैति - क बिल्हक़्क़ि ص व इन - न फरीक़म्मिनल् - मुअ्मिनी - न लकारिहून ل (५) युजादिलून-क फ़िल्हक़्क़ि बअ्-द मा त-बय्य-न क-अन्नमा युसाक़ू-न इलल्मौति व हुम् यन्ज़ुरून ط (६) व इज़् यअिदु-कुमुल्लाहु इह्‌दत्ता - इफतैनि अन्नहा लकुम् व त-वद्दू-न अन्-न ग़ै-र ज़ातिश्शौकति तकूनु लकुम् व युरीदुल्लाहु अय्युहिक़्क़ल्-हक़्-क बिकलिमातिही व यक्त-अ दाबिरल्-काफ़िरीन ل (७) लियुहिक़्क़ल्-हक़्-क व युब्तिलल् - बाति-ल व लौ करिहल्-मुज्रिमून ج (८) इज़् तस्तग़ीसू-न रब्बकुम् फस्तजा-ब लकुम् अन्नी मुमिद्दुकुम् बिअल्फ़िम्-मिनल्-मला-इकति मुर्दिफीन (९) व मा ज-अ-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा व लितत्मइन्-न बिही क़ुलूबुकुम् ج व मन्नस्रु इल्ला मिन् अिन्दिल्लाहि ط इन्नल्ला - ह अज़ीज़ुन् हकीम ★ (१०)

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّعَشْرُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ
وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ
كَرِيْمٌ ۝ كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا
يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى
الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ
لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝
لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ
رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝
وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ
اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ

★रु १/१५ आ १०

८ सूरः अन्फ़ाल ८८

सूर अन्फाल मदनी है और इसमे पचहत्तर आयतें और दस रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद ! मुजाहिद लोग) तुमसे गनीमत के बारे मे सवाल करते है (कि क्या हुक्म है।) कह दो कि गनीमत खुदा और उसके रसूल का माल है, तो खुदा से डरो और आपस मे मुलह रखो और अगर ईमान रखते हो तो खुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो। (१) मोमिन तो वे हैं कि जब खुदा का ज़िक्र किया जाता है, तो उन के दिल डर जाते है और जब उन्हे उस की आयते पढ कर सुनायी जाती है, तो उन का ईमान और बढ जाता है और वे अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (२) (और) वे जो नमाज पढते है और जो माल हमने उन को दिया है, उसमे से ये (नेक कामो) में खर्च करते हैं। (३) यही सच्चे मोमिन है और उन के लिए परवरदिगार के यहा (बडे-बडे) दर्जे और बख्शिश और इज्जत की रोजी है। (४) (उन लोगो को अपने घरो से उमी तरह निकलना चाहिए था) जिस तरह तुम्हारे परवरदिगार ने तुमको तद्‌वीर के साथ अपने घर से निकाला और (उस वक्त) मोमिनो की एक जमाअत ना-खुश थी (५) वे लोग हक बात मे उस के जाहिर हुए पीछे तुम से झगडने लगे, गोया मौत की तरफ धकेले जाते है और देख रहे हैं। (६) और (उस वक्त को याद करो) जब खुदा तुम से वायदा करता था। कि (अबू सुफियान और अबूजह्ल के) दो गिरोहो मे से एक गिरोह तुम्हारे (काबू मे) हो जाएगा और तुम चाहते थे कि जो काफिला (बे-शान व) शौकत (यानी बे-हथियार) है, वह तुम्हारे हाथ आ जाएगा और खुदा चाहता था कि अपने फरमान से हक को कायम रखे और काफिरो की जड काट कर (फेंक) दे,[1] (७) ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दे, गो मुश्रिक ना-खुश ही हो। (८) जब तुम अपने परवरदिगार मे फरियाद करते थे, तो उसने तुम्हारी दुआ कुबूल कर ली (और फरमाया) कि (तसल्ली रखो), हम हजार फरिश्तो से जो एक-दूसरे के पीछे आते जाएगे तुम्हारी मदद करेगे। (९) और इस मदद को खुदा ने सिर्फ बशारत बनाया था कि तुम्हारे दिल इस से इत्मीनान हासिल करें और मदद तो अल्लाह ही की तरफ से है। बेशक खुदा गालिब हिक्मत वाला है। (१०) ★

---

१ ये आयते बद्र की लडाई से मुताल्लिक है। कुछ तारीख लिखने वालो और तफ्सीर लिखने वालो ने इस लडाई की यह वजह लिखी है कि वह काफिला, जो अबू सुफियान शाम से ले कर आ रहा था, उस को प्यारे नबी सल्ल० और उन के सहाबियो रज़ि० ने यह ख्याल कर के कि लोग बहुत कम है और माल बहुत ज्यादा है, लूट लेने के इरादे मे कूच किया था। जब यह खबर मक्का के कुरैश को पहुची, तो बहुत सी फौज ले कर काफिले को बचाने के लिए निकले और बद्र नामी जगह पर लडाई शुरू हो गयी। लडाई का नतीजा यह था कि कुरैश के सत्तर आदमी मारे गये और इतने ही गिरफ्तार हुए। जो माल व अस्बाब वह छोड कर भाग आये थे, वह सब मुसलमानो के हाथ आया। मगर कुरआनी आयतो से साफ मालूम होता है कि रसूले खुदा सल्ल० को मक्का के कुरैश का मदीने पर चढाई करने का हाल पहले मालूम हो चुका था और इस के बाद आप ने उन के मुकाबले के लिए कूच फरमाया था। बेशक कुछ सहाबा किराम की राय होगी कि शाम के काफिले को लूट लिया जाए और इसी गिरोह के बारे मे खुदा ने फरमाया कि तुम बे-शान व शौकत गिरोह को लेना चाहते हो, मगर खुदा ने उस राय को मंजूर न

(शेष २८१ पर)

★रु १/१५ आ १०

इज़् युग़श्शीकुमुन्नुआ-स अ-म-न-तम्-मिन्हु व युनज़्ज़िलु अलैकुम् मिनस्समा-इ मा-अल्-लियुतह्हि-रकुम् बिही व युज़्हि-ब अन्कुम् रिज्ज़श्शैतानि व लि-यर्बि-त अला क़ुलूबिकुम् व युसब्बि-त बिहिल्अक़्दाम ط (११) इज़् यूही रब्बु-क इलल्-मला-इकति अन्नी म-अ़-कुम् फ़-सब्बितुल्लज़ी-न आमनू ط स-उल्क़ी फी क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रुर्रुअ़्-ब फज़्रिबू फौक़ल्-अअ़्-नाक़ि वज़्रिबू मिन्हुम् कुल्-ल बनान ط (१२) ज़ालि-क बिअन्-नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह व रसूलहू ج व मंय्युशाक़िक़िल्ला - ह व रसूलहू फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब (१३) ज़ालिकुम् फ़ज़ूक़ूहु व अन्-न लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबन्नार (१४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी-न क - फ़रू ज़ह्-फ़न् फ़ला तुवल्लूहुमुल् - अद्बार ج (१५) व मय्युवल्लिहिम् यौ-म-इज़िन् दुबुरहू इल्ला मुतहर्रिफल्-लिक़ितालिन् औ मुत-हय्यिज़न् इला फ़ि-अतिन् फ-क़द् बा-अ बिग-ज़बिम् - मिनल्लाहि व मअ़्वाहु ज-हन्-नमु ط व बिअ़्-सल्-मसीर (१६) फ-लम् तक़्तुलूहुम् व लाकिन्नल्ला-ह क़-त-लहुम् ص व मा रमै-त इज़् रमै-त व लाकिन्नल्ला-ह र-मा ج व लियुब्लियल् - मुअ्मिनी-न मिन्हु बला-अन् ह-स-नन् ط इन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम (१७) ज़ालिकुम् व अन्नल्ला-ह मूहिनु कैदिलकाफिरीन (१८) इन् तस्तफ़्तिहू फ-क़द् जा-अकुमुल्-फ़त्हु ج व इन् तन्तहू फहु-व ख़ैरुल्लकुम् ج व इन् तअ़ूदू नअ़ुद् ج व लन् तुग़्नि-य अ़न्कुम् फ़िअतुकुम् शैअव्-व वलौ कसुरत् ط व अन्नल्ला-ह म-अ़ल्-मुअ्मिनीन ★ (१९) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू अतीअ़ुल्ला-ह व रसूलहू व ला तवल्लौ अ़न्हु व अन्तुम् तस्मअ़ून ج (२०)

قال الملا ٩ ١٤٢ الانفال ٨

أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَ
يُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ
الْأَقْدَامَ ۝ إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا
الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ
النَّارِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا
تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ۝ وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ
أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ
جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ
وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ
مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ ذَٰلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ
مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ۝ إِن تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ ۖ
وَإِن تَنتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِن تَعُودُوا نَعُدْ وَلَن تُغْنِيَ
عَنكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ ع
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ

منزل

★रु २/१६ आ ९

जब उसने (तुम्हारी) तस्कीन के लिए अपनी तरफ से तुम्हे नीद (की चादर) उढा दी और तुम पर आसमान से पानी बरसा दिया ताकि तुम को उससे (नहला कर) पाक कर दे और शैतानी नजासत को तुम से दूर कर दे और इसलिए भी कि तुम्हारे दिलो को मजबूत करदे और इससे तुम्हारे पाव जमाए रखे। (११) जब तुम्हारा परवरदिगार फरिश्तो को इर्शाद फरमाता था कि मैं तुम्हारे साथ हू, तुम मोमिनो को तसल्ली दो कि साबित कदम रहे। मैं अभी-अभी काफिरों के दिलो मे रौब व हैबत डाले देता हू, तो उन के सर मार (कर) उडा दो और उन का पोर-पोर मार कर (तोड) दो। (१२) यह (सजा) इस लिए दी गयी कि उन्होने खुदा और उसके रसूल की मुखालफत की और जो शख्स खुदा और उसके रसूल की मुखालफत करता है, तो खुदा भी सख्त अजाब देने वाला है। (१३) यह (मज़ा तो यहा) चखो और यह (जाने रहो) कि काफिरो के लिए दोजख का अज़ाब (भी तैयार) है। (१४) ऐ ईमान वालो! जब लडाई के मैदान मे कुफ्फार से तुम्हारा मुकाबला हो तो उन से पीठ न फेरना। (१५) और जो शख्स लडाई के दिन इस सूरत के सिवा कि लडाई के लिए किनारे-किनारे चले (यानी हिक्मते अमली से दुश्मन को मारे) या अपनी फौज मे जा मिलना चाहे, उन से पीठ फेरेगा तो (समझो कि) वह खुदा के गज़ब मे गिरफ्तार हो गया और उस का ठिकाना दोज़ख है और वह बहुत ही बुरी जगह है। (१६) तुम लोगो ने उन (कुफ्फार) को कत्ल नही किया, बल्कि खुदा ने उन्हे कत्ल किया और (ऐ मुहम्मद!) जिस वक्त तुम ने ककरिया फेंकी थी, तो वह तुम ने नही फेंकी थी, बल्कि अल्लाह ने फेकी थी। इस से यह गरज थी कि मोमिनो को अपने (एहसानो) से अच्छी तरह आजमा ले। बेशक खुदा सुनता-जानता है। (१७) (बात) यह (है), कुछ शक नही कि खुदा काफिरो की तद्बीर को कमज़ोर कर देने वाला है। (१८) (काफिरो!) अगर तुम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर) फत्ह चाहते हो, तो तुम्हारे पास फत्ह आ चुकी। (देखो) अगर तुम (अपने फेल से) रुक जाओ तो तुम्हारे हक मे बेहतर है और अगर फिर (ना-फरमानी) करोगे, तो हम भी फिर (तुम्हे अजाब) करेगे और तुम्हारी जमाअत, वह कितनी ही बडी हो, तुम्हारे कुछ भी काम न आयेगी और खुदा तो मोमिनो के साथ है ★ (१९)

ऐ ईमान वालो! खुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो और उससे रू-गरदानी न करो

(पृष्ठ २७९ का शेष)

फरमाया और यही चाहा कि हथियारो से लैस फौज से जग करे और बहादुरी दिखा कर फत्ह हासिल करें, चुनाचे ऐसा ही हुआ। इस लडाई की वजह, जो ज्यादा सही लगती है, यह है कि मक्का के कुरैश को मुहाजिरो और मदीने के असार के साथ कडी दुश्मनी थी और वे हमेशा उन को तक्लीफ पहुचाने पर तैयार रहते थे, तो हुजूर सल्ल० अपने दुश्मनो के हालात और इरादो से आगाह रहने के लिए कभी-कभी मक्का के चारो तरफ आदमी रवाना फरमाते। चुनाचे एक बार नखला नामी जगह को, जो मक्का और ताइफ के बीच वाकेअ है, आप ने कुछ लोगो को रवाना किया, जिन के सरदार आप के फूफीजाद भाई अब्दुल्लाह बिन जह्श थे। नखला एक निहायत खतरनाक जगह थी और वहा जाने मे बहुत खतरा था। आप ने अब्दुल्लाह को एहतियात के साथ एक मोहर परचा दिया और फरमाया कि मक्के की तरफ बराबर चले चलो। तीन दिन के बाद इस परचे को खोल कर पढना और जो कुछ उस मे लिखा है, उस पर अमल करना। परचे मे लिखा था, 'नखला तक चले जाओ और वहा पहुच कर छिपे तौर पर कुरैश के हालात मालूम करो और हमारे पास उन की खबर लाओ।' मगर यहा

(शेष पृष्ठ २८३ पर)

★रु २/१६ आ ९

व ला तकूनू कल्लज़ी-न क़ालू समिअ्-ना व हुम् ला यस्मअून (२१) इन्-न शर्रद्दवाब्बि अिन्दल्लाहिस्सुम्मुल्-बुक्मुल्लज़ी-न ला यअ्-किलून (२२) व लौ अलिमल्लाहु फ़ीहिम् ख़ैरल्-ल अस्म-अहुम् व लौ अस्म-अहुम् ल-त-वल्लव्वहुम् मुअ्-रिज़ून (२३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा दआकुम् लिमा युह्यीकुम् वअ्-लमू अन्नल्ला-ह यहूलु बैनल्मरइ व कल्बिही व अन्नहू इलैहि तुह्शरून (२४) वत्तक़ू फ़ित्-न-तल्ला-तुसीबन्नल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्कुम् ख़ास्सतन् वअ्-लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब (२५) वज़्कुरू इज़् अन्तुम् क़लीलुम्-मुस्तज़्-अफ़ू-न फ़िल्अर्ज़ि तख़ाफ़ू-न अंय्य-त-ख़त्त-फ़-कुमुन्नासु फ-आवाकुम् व अय्य-दकुम् बिनस्रिही व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (२६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तख़ूनुल्ला-ह वर्रसू-ल व तख़ूनू अमानातिकुम् व अन्तुम् तअ्-लमून (२७) वअ्-लमू अन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्-नतुंव्-व अन्नल्ला-ह अिन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम★(२८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तत्तक़ुल्ला-ह यज्-अ़ल्लकुम् फ़ुर-क़ानंव्-व युकफ्फ़िर् अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व यग़्फ़िर् लकुम् वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (२९) व इज़् यम्कुरु बिकल्लज़ी-न क-फ़रू लियुस्बितू-क औ यक़्तुलू-क औ युख़्रिजू-क व यम्कुरू-न व यम्कुरुल्लाहु वल्लाहु ख़ैरुल्-माकिरीन (३०) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना क़ालू क़द् समिअ्-ना लौ नशाउ ल-क़ुल्ना मिस्-ल हाज़ा इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (३१)

قال الملأ ٩ ۲۴۳ الانفال ٨

أَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ
لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ
لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ
لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ
بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا
تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝ وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهِ
وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝
وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ
فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ۝ وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ
أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ۝
وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ

★रु. ३ १७आ ९

और तुम सुनते हो। (२०) और उन लोगो जैसे न होना जो कहते है कि हम ने (खुदा का हुक्म) सुन लिया, मगर (हकीकत मे) नही सुनते। (२१) कुछ शक नही कि खुदा के नज़दीक तमाम जानदारो से बद-तर बहरे गूंगे है, जो कुछ नही समझते। (२२) और अगर खुदा उन मे नेकी (का माद्दा) देखता तो उन को सुनने की तौफीक बख्शता और अगर (हिदायत की सलाहियत के बगैर) समाअत देता तो वे मुह फेर कर भाग जाते। (२३) मोमिनो! खुदा और उस के रसूल का हुक्म कुबूल करो, जब कि खुदा के रसूल तुम्हे ऐसे काम के लिए बुलाते है, जो तुम को ज़िंदगी (हमेशा की) बख्शता है और जान रखो कि खुदा आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल हो जाता है और यह भी कि तुम सब उस के रू-ब-रू जमा किये जाओगे। (२४) और उस फ़िले से डरो, जो खुसूसियत के साथ उन्ही लोगो पर वाकेअ न होगा, जो तुम मे गुनाहगार है और जान रखो कि खुदा सख्त अज़ाब देने वाला है। (२५) और (उस वक्त को) याद करो, जब तुम ज़मीन (मक्का) मे थोडे और कमजोर समझे जाते थे और डरते रहते थे कि लोग तुम्हे उडा (न) ले जाए (यानी बे-घर-बार न कर दे) तो उस ने तुम को जगह दी और अपनी मदद से तुम को ताकत बख्शी और पाकीज़ा चीज़े खाने को दी, ताकि (उस का) शुक्र करो। (२६) ऐ ईमान वालो! न तो खुदा और रसूल की अमानत मे खियानत करो और न अपनी अमानतो मे खियानत करो और तुम (इन बातो को) जानते हो। (२७) और जान रखो कि तुम्हारा माल और औलाद बडी आज़माइश है और यह कि खुदा के पास (नेकियो का) बडा सवाब है। (२८) ✱

मोमिनो! अगर तुम खुदा से डरोगे, तो वह तुम्हारे लिए फर्क करने वाली चीज पैदा कर देगा (यानी तुम को मुम्ताज कर देगा) और तुम्हारे गुनाह मिटा देगा और तुम्हे बख्श देगा और खुदा बड़े फज्ल वाला है। (२९) और (ऐ मुहम्मद! उस वक़्त को याद करो) जब काफिर लोग तुम्हारे बारे मे चाल चल रहे थे कि तुम को कैद कर दें या जान से मार डाले या (वतन से) निकाल दे तो (इधर से) वे चाल चल रहे थे और (उधर) खुदा चाल चल रहा था और खुदा सब से बेहतर चाल चलने वाला है। (३०) और जब उन को हमारी आयते पढ कर सुनायी जाती है तो कहते है, (यह कलाम) हमने सुन लिया है, अगर हम चाहे तो इसी तरह का (कलाम) हम भी कह दे और यह है

(पृष्ठ २८१ का शेष)

और ही मामला पेश आया, कि उन के नखले मे पहुचने के दो दिन बाद कुरैश का एक छोटा-सा काफिला तायफ से तिजारत का माल लिए हुए आ पहुचा। अब्दुल्लाह और उन के साथियो को इर्शादे नबवी और इस परचे का ख्याल न रहा और उन्हो ने उन लोगो पर हमला कर दिया। नतीजा यह हुआ कि अम्र बिन अब्दुल्लाह हज़रमी जो मक्के के सरदारो मे से था, तीर से मारा गया और हकम बिन केसान और उस्मान बिन अब्दुल्लाह मख्ज़ूमी गिरफ्तार हो गये। जनाब रसूले खुदा सल्ल० ने उन लोगो को इस हरकत पर बहुत मलामत की और बंदियो को भी छोड दिया और अब्दुल्लाह बिन हज़रमी का खून बहा भी अपने पास से दे दिया। मगर मक्का वालो के कपट की आग बगैर भडके न रही और उन्हो ने साढे नौ सौ के करीब लडने के तजुर्बेकार योद्धा जमा किये, जिन मे से तीन सौ के पास घोडे और बाकी के पास सवारी और बोझ ढोने के लिए सात सौ ऊंट थे। इस के अलावा किसी ने यह हवाई उडा दी कि जनाब रसूलुल्लाह अबू सुफियान वाले काफिले को जो शाम से मक्के को आ रहा है लूटने का इरादा रखते है। इस खबर से उन का गुस्सा और भी भडक उठा और वे फ़ौरन मदीना पर हमला करने के लिए निकल खडे हुए। इधर मदीने मे यह खबर पहुच चुकी थी कि मक्का के कुरैश बहुत ज़ोर-शोर से

(शेष पृष्ठ २८५ पर)

✱रु. ३/१७ आ ६

व इज़् क़ालुल्लाहुम्-म इन् का-न हाज़ा हुवल्हक़्-क़ मिन् अिन्दि-क फ़-अम्तिर् अ़लैना हिजा-र-तम्-मिनस्समाइ अविअ्तिना बिअज़ाबिन् अलीम (३२)

व मा कानल्लाहु लियुअ़ज़्ज़िबहुम् व अन्-त फ़ीहिम् ط व मा कानल्लाहु मुअज़्ज़िबहुम् व हुम् यस्तग़्फ़िरून (३३) व मा लहुम् अल्ला युअज़्ज़िब-हुमुल्लाहु व हुम् यसुद्दू-न अनिल्-मस्जिदिल्-हरामि व मा कानू औलिया-अहू ط इन् औलिया-उहू इल्लल्-मुत्तकू-न व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (३४) व मा का-न सलातुहुम् अिन्दल्बैति इल्ला मुकाअव्-व तस्दि-य-तन् ط फ़-ज़ूक़ुल् - अज़ा - ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (३५) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् लियसुद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि ط फ-स-युन्फिकू-न-हा सुम् - म तकूनु अलैहिम् हस्-र-तन् सुम्-म युग्लबू-न ط वल्लज़ी-न क-फ़रू इला ज - हन्न - म युह्शरून ۙ (३६) लियमीज़ल्लाहुल् - ख़बी-स मिनत्तय्यिबि व यज्-अ-लल्-ख़बी-स बअ्-ज़हू अला बअ्-ज़िन् फ-यर्कुमहू जमीअ़न् फ - यज्अ़ - लहू फ़ी जहन्न-म ط उला - इ - क हुमुल्ख़ासिरून ★ (३७)

ق‍ال الملاء ١٤٤ الانفال ٨

هٰذَآ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ
كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ
اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ
وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَمَا لَهُمْ اَلَّا
يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا
اَوْلِيَآءَهٗ ۭ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ۭ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ
اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ
عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۥ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ
يُحْشَرُوْنَ ۝ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ
بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ
مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ
لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۭ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

منزل

कुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू इय्यन्तहू युग्फ़र् लहुम् मा क़द् स - लफ़ ج व इंय्यअूदू फ़-क़द् म-जत् सुन्नतुल् - अव्वलीन (३८) व क़ातिलू - हुम् हत्ता ला तकू - न फ़ित्नतुंव्-व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि ج फ़इनिन्तहौ फ़इन्नल्ला-ह बिमा यअ् - मलू - न बसीर (३९) व इन् तवल्लौ फ़अ्-लमू अन्नल्ला-ह मौलाकुम् ط निअ्-मलमौला व निअ्-मन्नसीर (४०)

★रु ४/१८ आ ६

ही क्या, सिर्फ अगले लोगो की हिकायते है। (३१) और जब उन्होने कहा कि ऐ खुदा ! अगर यह (कुरआन) तेरी तरफ बरहक है, तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई और तक्लीफ देने वाला अज़ाब भेज। (३२) और ख़ुदा ऐसा न था कि जब तक तुम उन मे थे, उन्हे अज़ाब देता और न ऐसा था कि वे बख्शिश मांगे और उन्हे अजाब दे। (३३) और (अब) उन के लिए कौन-सी वजह है कि वह उन्हे अजाब न दे, जबकि वह मस्जिदे मोहतरम (मे नमाज़ पढने) से रोकते हैं और वे उस मस्जिद के मुतवल्ली भी नही। उसके मुतवल्ली तो सिर्फ परहेज़गार है, लेकिन उन मे के अक्सर नही जानते, (३४) और उन लोगो की नमाज़ खाना-ए-काबा के पास सीटिया और तालिया बजाने के सिवा कुछ न थी, तो तुम जो कुफ्र करते थे, अब उस के बदले अज़ाब (का मजा) चखो। (३५) जो लोग काफिर है, अपना माल खर्च करते है कि (लोगो को) खुदा के रास्ते से रोके, सो अभी और खर्च करेगे मगर आखिर वह (खर्च करना) उनके लिए अफसोस (की वजह) होगा और वे मग्लूब हो जाएंगे। और काफिर लोग दोजख की तरफ हाके जाएंगे, (३६) ताकि खुदा पाक को ना-पाक से अलग कर दे और ना-पाक को एक दूसरे पर रख कर एक ढेर बना दे। फिर उस को दोज़ख मे डाल दे। यही लोग घाटा पाने वाले हैं। (३७) ★

(ऐ पैगम्बर !) कुफ्फार से कह दो कि अगर वे अपने फेलो से बाज़ आ जाए तो जो हो चुका, वह उन्हे माफ कर दिया जाएगा और अगर फिर (वही हरकतें) करने लगेगे तो अगले लोगो का (जो) तरीका जारी हो चुका है (वही उन के हक मे बरता जाएगा), (३८) और उन लोगो से लडते रहो, यहा तक कि फित्ना (यानी कुफ्र का फसाद) बाकी न रहे और दीन सब खुदा ही का हो जाए और अगर बाज़ आ जाए तो खुदा उन के कामो को देख रहा है। (३९) और अगर रू-गरदानी करें तो जान रखो कि खुदा तुम्हारा हिमायती है (और) वह खूब हिमायती और खूब मददगार है। (४०)

(पृष्ठ २८३ का शेष)

मदीने पर चढाई की तैयारिया कर रहे हैं। ऐसी हालत मे ज़रूरी था कि रसूले खुदा सल्ल० अपनी हिफाज़त का इन्तिज़ाम फरमाते, तो आप ने तीन सौ तेरह आदमियो के साथ मदीने से कूच फरमाया, जिन मे से एक या दो के पास घोडे थे और बाकी के पास सिर्फ सत्तर ऊट थे, जिन पर बारी-बारी तीन-तीन, चार-चार आदमी सवार होते थे। चुनाचे खुद जनाब सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० और ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० एक ही ऊंट पर बारी-बारी सवार होते रहे। जब बद्र के मकाम पर पहुचे तो कुरैश से लडाई हुई, जिस मे उन के सत्तर आदमी मारे गये और इतने ही गिरफ्तार हुए और बहुत-सा माल व अस्बाब मुसलमानो के हाथ आया। मक्तूलो मे अबू जह्ल, उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन उत्बा, हज़ला बिन सुफियान, नौफुल और अबुल बख्तरी वगैरह चौबीस आदमी कुरैश के सरदारो मे से थे, जिन मे से इब्ने हिशाम की रिवायत के मुताबिक नौ को हज़रत अली रज़ि० ने कत्ल किया था। मुसलमानो मे से सिर्फ चौदह आदमी मारे गये, जिन मे छ मुहाजिर और आठ असार थे। कुरआन की आयतो को देखो, पाचवी आयत से मालूम होता है कि नबी सल्ल० अभी मदीने ही मे थे और कूच नही फरमाया था कि सहाबा रज़ि० मे इख्तिलाफ हो गया। कुछ लडाई को पसन्द करते थे और कुछ ना-पसन्द करते थे। छठी आयत से मालूम होता है कि मुसलमान मक्का के कुरैश की इस भारी फौज से हिचकिचाते थे, जो उन्हो ने मदीने पर हमले की गरज़ से जमा की थी वरना तिजारत के काफिले को लूट लेने के इरादे से तक्लीफ करना किसी सूरत मे भी मौत की तरफ

(शेष पृष्ठ २८७ पर)

★रु ४/१८ आ ६

दसवां पारः वअ्-लमू

सूरतुल्-अन्फ़ालि आयत ४१ से ७५

वअ्-लमू अन्नमा गनिम्तुम् मिन् शैइन् फ-अन्-न लिल्लाहि खुमुसहू व लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि ۙ इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि व मा अन्जल्ना अला अब्दिना यौमल्फ़ुर्क़ानि यौमल्-त-क़ल्-जम्आनि ؕ वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् क़दीर (४१) इज़् अन्तुम् बिल्-अुद्वतिद्दुन्या व हुम् बिल्-अुद्वतिल् क़ुस्वा वर्रक्बु अस्फ़-ल मिन्कुम् ؕ व लौ तवा-अत्तुम् लख़्त-लफ़्तुम् फ़िल्मीआदि ۙ व लाकिल्-लियक़्-ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्-अूलल् ۙ लियह्लि-क मन् ह-ल-क अम्बय्यिनतिंव्-व यह्या मन् हय्-य अम्बय्यिनतिन् ؕ व इन्नल्ला-ह ल-समीअुन् अलीम ۙ (४२) इज़् युरीकहुमुल्लाहु फ़ी मनामि-क क़लीलन् ؕ व लौ अराकहुम् कसीरल्-ल फ़शिल्तुम् व ल-तनाज़अ्-तुम् फ़िल्अम्रि व लाकिन्नल्ला-ह सल्ल-म ؕ इन्नहू अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (४३) व इज़् युरीकुमूहुम् इज़िल्तक़ैतुम् फ़ी अअ्-युनिकुम् क़लीलंव्-व युक़ल्लिलुकुम् फ़ी अअ्-युनिहिम् लियक़्-ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्-अूलन् ؕ व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर ★ (४४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुम् फ़ि-अ-तन् फ़स्बुतू वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्-ल-अल्लकुम् तुफ़्लिहून ۚ (४५) व अतीअुल्ला-ह व रसूलहू व ला तनाज़अू फ़-तफ़्शलू व तज़्-ह-ब रीहुकुम् वस्बिरू ؕ इन्नल्ला-ह म-अस्साबिरीन ۚ (४६) व ला तकूनू कल्लज़ी-न ख़-र-जू मिन् दियारिहिम् ब-तरंव्-व रिआअन्नासि व यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि ؕ वल्लाहु बिमा यअ्-मलू-न मुहीत (४७)

واعلموا ١٣٥ الانفال ٨

وَاعْلَمُوٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ
وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ اِنْ كُنْتُمْ
اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا
وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ
لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ
لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ
اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ؕ وَلَوْ
اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ
فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا
كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ
وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ
خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ

★रु ५/१ आ ७

और जान रखो कि जो चीज तुम (कुफ्फार से) लूट कर लाओ उसमे से पाचवा हिस्सा खुदा का और उस के रसूल का और करावतदारो का और यतीमो का और मुहताजो का और मुसाफिरो का है। अगर तुम खुदा पर और उस (मदद) पर ईमान रखते हो, जो (हक व बातिल मे) फर्क करने के दिन (यानी बद्र की लडाई मे) जिस दिन दोनो फौजो मे मुठभेड़ हो गयी, अपने बन्दे (मुहम्मद) पर नाजिल फरमायी और खुदा हर चीज पर कादिर है। (४१) जिस वक्त तुम (मदीने से) करीब के नाके पर थे और काफिर दूर के नाके पर और काफ़िला तुम से नीचे (उतर गया) था और अगर तुम (लड़ाई के लिए) आपस में करारदाद कर लेते तो तै किये हुए वक्त पर (जमा होने) मे आगे-पीछे हो जाता, लेकिन खुदा को मजूर था कि जो काम हो कर रहने वाला था, उसे कर ही डाले, ताकि जो मेरे बसीरत पर (यानी यकीनी जान कर) मरे और जो जीता रहे, वह भी बसीरत पर (यानी हक पहचान कर) जीता रहे और कुछ शक नही कि खुदा सुनता-जानता है। (४२) उस वक्त खुदा ने ख्वाब मे काफिरो को थोडी तायदाद मे दिखाया और अगर बहुत कर के दिखाता तो तुम लोग जी छोड देते और (जो) काम (सामने था, उस) मे झगडने लगते, लेकिन खुदा ने (तुम्हे इस से) बचा लिया। बेशक वह सीनो की बातो तक को जानता है। (४३) और उस वक्त जब तुम एक दूसरे के मुकाबले मे हुए तो काफिरो को तुम्हारी नजरो मे थोडा कर के दिखाता था, और तुम को उन की निगाहो मे थोडा कर के दिखाता था, ताकि खुदा को जो काम करना मजूर था, उसे कर डाले और सब कामो का रुजू खुदा ही की तरफ है। (४४) ★

मोमिनो! जब (कुफ्फार की) किसी जमाअत स तुम्हारा मुकाबला हो, तो साबित कदम रहो और खुदा को बहुत याद करो, ताकि मुराद हासिल करो। (४५) और खुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो और आपस मे झगडा न करना कि (ऐसा करोगे तो) तुम बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारा इकबाल जाता रहेगा और सब्र से काम लो कि खुदा सब्र करने वाले का मददगार है। (४६) और उन लोगो जैसे न होना, जो इतराते हुए (यानी हक का मुकाबला करने के लिए) और लोगो को दिखाने के लिए घरो से निकल आये और लोगो को खुदा की राह से रोकते हैं। और जो आमाल

(पृष्ठ २८५ का शेष)

हाका जाना नही हो सकता। सातवी आयत मे दो गिरोहो का जिक्र है, एक जो लड़ाइ का साज व सामान नही रखता था और वह अबू सुफियान का तिजारत का काफिला था, जो शाम से आ रहा था। दूसरा गिरोह मक्का के कुरैश यानी अबू जह्ल का लश्कर था, जिस की तायदाद बहुत ज्यादा थी और जिस के साथ बहुत-सा जग का सामान था, गरज बे-हथियार लोगो पर हमला करना तो खुदा को मंजूर और पसद न था, हथियारो मे लैस फौज का मुकाबला किया गया, तो उस के वायदे के मुताबिक मुसलमानो को फत्ह हासिल हुई।

★रु ५/१ आ ७

व इज़् जय्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्-मालहुम् व क़ा-ल ला ग़ालि-ब लकुमुल्यौ-म मिनन्नासि व इन्नी जारुल्लकुम् ج फ-लम्मा तराअतिल् - फ़ि-अतानि न-क-स अ़ला अ़क़िबैहि व का-ल इन्नी बरीउम्-मिन्कुम् इन्नी अरा मा ला तरौ-न इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह ط वल्लाहु शदीदुल् - अ़िकाब ★(४८) इज़् यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी - न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुन् ग़र्-र हाउला-इ दीनुहुम् ط व मंय्य-त-वक्कल् अ-लल्लाहि फ-इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम (४९) व लौ तरा इज़् य-त-वफ़्फ़ल्लज़ी - न क-फ़रू-لا -ल्मलाइकतु यज़्रिबू - न वुजूहहुम् व अद्बारहुम् ج व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-हरीक़ (५०) ज़ालि-क बिमा क़द्-द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल् - लिल्अ़बीद لا (५१) क-दअ्‌बि आलि फ़िर्‌औ-न لا वल्लज़ी- - न मिन् क़ब्लिहिम् ط क-फ़रू बिआयातिल्लाहि फ-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम् ط इन्नल्ला-ह क़विय्युन् शदीदुल् अ़िकाब (५२) ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह लम् यकु मुग़य्यिरन्-निअ्‌-म-तन् अन्-अ-महा अ़ला क़ौमिन् ह़त्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फ़ुसिहिम् لا व अन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम لا (५३) क-दअ्‌बि आलि फ़िर्‌औ - न لا वल्लज़ी - न मिन् क़ब्लिहिम् ط कज़्ज़बू बिआयाति रब्बिहिम् फ़-अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अग़्रक़्ना आ-ल फ़िर्‌औ-न ج व कुल्लुन् कानू ज़ालिमीन (५४) इन्-न शर्रद्-दवाब्बि अ़िन्दल्लाहिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़हुम् ला युअ्‌मिनून (५५) अल्लज़ी-न आ़हत्-त मिन्हुम् सुम्-म यन्क़ुज़ू-न अ़ह्-दहुम् फ़ी कुल्लि मर्रतिंव्-व-हुम् ला यत्तक़ून (५६) फ-इम्मा तस्क़फ़न्नहुम् फ़िल्‌ह़र्बि फ-शर्रिद् बिहिम् मन् ख़ल्फ़हुम् ल-अ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून (५७)

واعلموا ١٠　　١٤٦　　الانفال ٨

الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَ
اِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ
اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ وَاللّٰهُ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَاۗءِ دِيْنُهُمْ ۭ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰۗىِٕكَةُ
يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ كَدَاْبِ
اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ
اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ
اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا
بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ
وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّ شَرَّ الدَّوَاۗبِّ
عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ
مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ۝
فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ

★रु. ६/ २ आ ४

ये करते है, खुदा उन पर एहाता किये हुए है। (४७) और जब शैतानो ने उन के आमाल उन को सजा कर दिखाये और कहा कि आज के दिन लोगो मे से कोई तुम पर गालिब न होगा और मैं तुम्हारा साथी हू, (लेकिन) जब दोनो फौजे एक दूसरे के मुकाबले मे (आ खडी) हुई तो पसपा हो कर चल दिया और कहने लगा कि मुझे तुम से कोई वास्ता नही। मै तो ऐसी चीज़े देख रहा हू, जो तुम नही देख सकते। मुझे तो खुदा से डर लगता है और खुदा सख्त अजाब करने वाला है। (४८) ★

उस वक्त मुनाफिक और (काफिर), जिन के दिलो मे मर्ज़ था कहते थे कि उन लोगो को उन के दीन ने घमड मे डाल रखा है और जो शख्स खुदा पर भरोसा रखता है, तो खुदा गालिब हिक्मत वाला है। (४९) और काश ! तुम उस वक्त (की कैफ़ियत) देखो, जब फरिश्ते काफ़िरो की जानें निकालते है, उन के मुहो और पीठो पर (कोडे और हथोडे वगैरह) मारते (है और कहते) है कि (अब) आग के अज़ाब (का मजा) चखो। (५०) यह उन (अःमाल) की सजा है, जो तुम्हारे हाथो ने आगे भेजे है और यह (जान रखो) कि खुदा बन्दो पर जुल्म नही करता। (५१) जैसा हाल फिऔनियो का और उन से पहले लोगो का (हुआ था, वैसा ही उन का हुआ कि) उन्होने खुदा की आयतो से कुफ्र किया, तो खुदा ने उनके गुनाहो की सजा मे उन को पकड लिया। वेशक खुदा जबरदस्त और सख्त अज़ाब देने वाला है। (५२) यह इस लिए कि जो नेमत खुदा किसी कौम को दिया करता है, जब तक वे खुद अपने दिलो की हालत न बदल डाले, खुदा उसे बदला नही करता। और इस लिए कि खुदा सुनता-जानता है। (५३) जैसा हाल फिऔनियो और उन से पहले लोगो का (हुआ था, वैसा ही उनका हुआ), उन्हो ने अपने परवरदिगार की आयतो को झुठलाया तो हमने उनके गुनाहो की वजह से हलाक कर डाला और फिऔनियो को डुबा दिया और वे सब जालिम थे। (५४) जानदारो मे सब से बद-तर खुदा के नज़दीक वे लोग है जो काफिर है, सो वे ईमान नही लाते। (५५) जिन लोगो से तुम ने (सुलह) का अह्द किया है, फिर वे हर बार अपने अह्द को तोड डालते है और (ख़ुदा से) नही डरते। (५६) अगर तुम उनको लडाई मे पाओ तो उन्हे ऐसी सज़ा दो कि जो लोग उनको पीछे (से मदद दे रहे) हो वे उनको देख कर भाग जाएं। अजब नही कि उन को (इस से) इबरत (सबक) हो। (५७) और अगर तुम को किसी कौम से

★रु ६/२ आ ४

व इम्मा तख़ाफ़न्-न मिन् क़ौमिन् ख़ियान-तन् फ़म्बिज़् इलैहिम् अला सवाइन् ط इन्नल्ला - ह ला युहिब्बुल् - ख़ा - इनीन ★ (५८) व ला यह्सबन्नल्लज़ी-न क-फ़रू स-बक़ू ط इन्नहुम् ला युअ्-जिज़ून (५९) व अअिद्दू लहुम् मस्त-तअ्-तुम् मिन् क़ुव्वतिंव्-व मिर्रिबातिल्ख़ैलि तुर्हिबू-न बिही अदुव्वल्लाहि व अदुव्वकुम् व आख़री-न मिन् दूनिहिम् ج ला तअ्-लमूनहुम् ج अल्लाहु यअ् - लमुहुम् ط व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़ी सबीलिल्लाहि युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (६०) व इन् ज-नहू लिस्सल्मि फ़ज्नह् लहा व त - वक्कल् अ़ - लल्लाहि ط इन्नहू हुवस्समीअुल् - अलीम (६१) व इंय्युरीदू अंय्यख़्दअू-क फ़इन्-न हस्बकल्लाहु ط हुवल्लज़ी अय्य - द - क बिनस्रिही व बिल् - मुअ्मिनीन ل (६२) व अल्ल - फ़ बै - न क़ुलूबिहिम् ط लौ अन्फ़क - त मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म् - मा अल्लफ़-त बै-न क़ुलूबिहिम् व लाकिन्नल्ला-ह अल्ल - फ़ बैनहुम् ط इन्नहू अज़ीज़ुन् हकीम (६३) या अय्युहन्नबिय्यु हस्बुकल्लाहु व मनित्त-ब-अ-क मिनल्-मुअ्मिनीन ★ (६४) या अय्युहन्नबिय्यु हर्रिज़िल् - मुअ्मिनी - न अ़ - लल् - क़ितालि ط इंय्यकुम् - मिन्कुम् अिश्रू - न साबिरू - न यग्लिबू मि-अतैनि ج व इंय्यकुम् - मिन्कुम् मि-अतुंय्यग्लिबू अल्फ़म् - मिनल्लज़ी - न क-फ़रू बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यफ़्क़हून (६५) अल्आ - न ख़फ़्फ़फ़ल्लाहु अन्कुम् व अ़लि - म अन् - न फ़ीकुम् ज़अ़् - फ़न् ط फ़इंय्यकुम् - मिन्कुम् मि-अतुन् साबिरतुंय्यग्लिबू मि - अतैनि ج व इंय्यकुम् - मिन्कुम् अल्फ़ुंय्यग्लिबू अल्फ़ैनि बिइज़्निल्लाहि ط वल्लाहु म - अस्साबिरीन (६६)

واعلموا ١٠   الأنفال ٨

يذكرون ۝ وإما تخافن من قوم خيانة فانبذ إليهم على
سواء إن الله لا يحب الخائنين ۝ ولا يحسبن الذين
كفروا سبقوا إنهم لا يعجزون ۝ وأعدوا لهم ما استطعتم
من قوة ومن رباط الخيل ترهبون به عدو الله وعدوكم و
آخرين من دونهم لا تعلمونهم الله يعلمهم وما تنفقوا
من شيء في سبيل الله يوف إليكم وأنتم لا تظلمون ۝ و
إن جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على الله إنه هو السميع
العليم ۝ وإن يريدوا أن يخدعوك فإن حسبك الله هو
الذي أيدك بنصره وبالمؤمنين ۝ وألف بين قلوبهم
لو أنفقت ما في الأرض جميعا ما ألفت بين قلوبهم ولكن
الله ألف بينهم إنه عزيز حكيم ۝ يا أيها النبي حسبك الله
ومن اتبعك من المؤمنين ۝ يا أيها النبي حرض المؤمنين
على القتال إن يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مائتين
وإن يكن منكم مائة يغلبوا ألفا من الذين كفروا بأنهم قوم
لا يفقهون ۝ الآن خفف الله عنكم وعلم أن فيكم ضعفا
فإن يكن منكم مائة صابرة يغلبوا مائتين وإن يكن
منكم ألف يغلبوا ألفين بإذن الله والله مع الصابرين ۝

★रु० ७/३ आ १० ★रु ८/४ आ ६

दग़ाबाज़ी का ख़ौफ़ हो तो (उन का अह्द) उन्ही की तरफ फेंक दो (और) बराबर (का जवाब दो)। कुछ शक नही कि ख़ुदा दग़ाबाज़ो को दोस्त नही रखता। (५८) ★

और काफिर यह न ख़्याल करे कि वे भाग निकले हैं। वे (अपनी चालो से हम को हरगिज) आजिज नही कर सकते। (५९) और जहा तक हो सके (फौज की जमईयत के) ज़ोर से और घोडो के तैयार रखने से उन के (मुकाबले) के लिए मुस्तैद रहो कि उस से ख़ुदा के दुश्मनो और तुम्हारे दुश्मनो और उन के सिवा और लोगो पर, जिन को तुम नही जानते और ख़ुदा जानता है, हैबत बैठी रहेगी,और तुम जो कुछ ख़ुदा के रास्ते मे खर्च करोगे उस का सवाब तुम को पूरा-पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा ज़रा नुक्सान नही किया जाएगा। (६०) और अगर ये लोग सुलह की तरफ मायल हो, तुम भी उस की तरफ मायल हो जाओ और ख़ुदा पर भरोसा रखो। कुछ शक नही कि वह सब कुछ सुनता (और) जानता है। (६१) और अगर यह चाहे कि तुम को फरेब दे, तो ख़ुदा तुम्हे किफायत करेगा। वही तो है, जिस ने तुम को अपनी मदद से और मुसलमानो (की जमाअत) से ताकत पहुचायी। (६२) और उनके दिलो मे उल्फ़त (मुहब्बत) पैदा कर दी और अगर तुम दुनिया भर की दौलत खर्च करते, तब भी उन के दिलो मे उल्फत पैदा न कर सकते, मगर ख़ुदा ही ने उनमे उल्फ़त डाल दी। बेशक वह जबर्दस्त (और) हिक्मत वाला है। (६३) ऐ नबी! ख़ुदा तुम को और मोमिनों को, जो तुम्हारे पैरो है, काफी है। (६४) ★

ऐ नबी! मुसलमानो को जिहाद पर उभारो। अगर तुम मे २० आदमी साबित कदम रहने वाले होगे, तो दो सौ काफिरो पर ग़ालिब रहेगे और अगर सौ (ऐसे) होंगे, तो हज़ार पर ग़ालिब रहेगे, इस लिए कि काफ़िर ऐसे लोग है कि कुछ भी समझ नही रखते। (६५) अब ख़ुदा ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और मालूम कर लिया कि (अभी) तुम मे किसी कदर कमज़ोरी है।[1] पस अगर तुम मे एक सौ साबित कदम रहने वाले होगे, तो दो सौ पर ग़ालिब रहेगे और अगर एक हज़ार होगे, तो ख़ुदा के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेगे और ख़ुदा साबित कदम रहने वालो का मददगार है। (६६) पैग़म्बर को मुनासिब नही कि उसके कब्ज़े मे कैदी रहे,

---

१ साबित कदम रहने वालो से मुराद बहादुर और मजबूत दिल हैं और हकीकत मे जिहाद करना भी बहादुरो का काम है और बहादुरी ईमानी कूवत से बढती है। जितना ईमान ज्यादा होता है, उतनी ही बहादुरी ज्यादा होती है। इसी लिए हज़रत सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक अह्द के मोमिनो के बारे मे यह इर्शाद हुआ है कि अगर तुम मे बीस बहादुर होंगे तो दो सौ काफिरो पर ग़ालिब रहेंगे और ईमान की इसी ताकत की बुनियाद पर कुछ लोगो ने इसे 'हुक्म' माना है यानी ईमान वालो को ख़ुदा का हुक्म यह है कि अगर काफिर उन से दस गुने भी हो, तब भी उन के मुकाबले मे जमे रहे। अपने से दो गुने कुफ्फार के मुकाबले मे साबित कदम रहने का हुक्म इस ताकत की और भी कमज़ोरी की वजह से है। चुनाचे इसी लिए बाद की आयत मे यह इर्शाद हुआ कि, 'अब ख़ुदा ने तुम से बोझ हल्का कर दिया और मालूम कर लिया कि (अभी) तुम मे कमज़ोरी है, पस अगर तुम मे से एक हज़ार होंगे तो ख़ुदा के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे। अब अगर दो गुने काफ़िर मुकाबले पर हो, तो हरगिज नही भागना चाहिए यानी कम से कम एक सौ मोमिन को दो सौ काफ़िरो पर भारी होना चाहिए और एक हज़ार को दो हज़ार पर।

★रु ७/३ आ १० ★रु ८/४ आ ६

मा का-न लिनबिय्यिन् अंय्यकू-न लहू अस्रा हत्ता युस्खि-न फ़िल्अर्ज़ि ♭ तुरीदू-न अ-र-ज़द्दुन्या ﺻﻠﮯ वल्लाहु युरीदुल्-आखि-र-तः ♭ वल्लाहु अज़ीज़ुन् हकीम (६७) लौला किताबुम्-मिनल्लाहि स-ब-क़ ल-मस्सकुम् फ़ीमा अ-ख़ज़्तुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (६८) फ़कुलू मिम्मा ग़निम्तुम् हलालन् तय्यिबव्-व-त्तकुल्ला-ह ♭ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (६९) या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लिमन् फ़ी ऐदीकुम् मिनल्अस्रा ॥ इंय्यअ्-लमिल्लाहु फ़ी कुलूबिकुम् ख़ैरंय्युअ्तिकुम् ख़ैरम्मिम्मा उख़ि-ज़ मिन्कुम् व यग़्फ़िर् लकुम् ♭ वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (७०) व इंय्युरीदू ख़ियान-त-क फ़-क़द् ख़ानुल्ला-ह मिन् क़ब्लु फ़-अम्क-न मिन्हुम् ♭ वल्लाहु अलीमुन् हकीम (७१) इन्नल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न आवव्-व न-सरू उला-इक बअ्-ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्-ज़िन् ♭ वल्लज़ी-न आमनू व लम् युहाजिरू मा लकुम् मिंव्वलायतिहिम् मिन् शैइन् हत्ता युहाजिरू ᘓ व इनिस्तन्सरूकुम् फ़िद्दीनि फ़-अलैकुमुन्नस्रु इल्ला अला क़ौमिम्बैनकुम् व बैनहुम् मीसाकुन् ♭ वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीर (७२) वल्लज़ी-न क-फ़रू बअ्-ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्-ज़िन् ♭ इल्ला तफ़्अलूहु तकुन् फ़ित्-न-तुन् फ़िल्अर्ज़ि व फ़सादुन् कबीर ♭ (७३) वल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न आवव्-व न-सरू उलाइ-क हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक़्क़न् ♭ लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्कुन् करीम (७४)

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِؕ
تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَاۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۝ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًاۖ وَّاتَّقُوا
اللّٰهَؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّمَنْ فِىْٓ
اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰىٓۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِىْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ
خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَ
اِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْؕ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا
اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا
مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَىْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْاۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ
فِى الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِّيْثَاقٌؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَآءُ بَعْضٍؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِى الْاَرْضِ وَفَسَادٌ
كَبِيْرٌؕ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّاؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ

★रु. ९/५ आ ५

जब तक (काफिरो को कत्ल कर के) जमीन मे कसरत मे खून (न) बहा दे। तुम लोग दुनिया के माल के तालिब हो और खुदा आखिरत (की भलाई) चाहता है और खुदा गालिब हिक्मत वाला है। (६७) अगर खुदा का हुक्म पहले न हो चुका होता, तो जो (फिद्या) तुम ने लिया है, उसके बदले तुम पर बडा अज़ाब नाज़िल होता। (६८) तो गनीमत का जो माल तुम को मिला है, उसे खाओ (कि वह तुम्हारे लिए) पाक-हलाल (है) और खुदा से डरते रहो। बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (६९) ✶

ऐ पैगम्बर ! जो कैदी तुम्हारे हाथ मे (गिरफ्तार) है, उनसे कह दो कि अगर खुदा तुम्हारे दिलो मे नेकी मालूम करेगा, तो जो (माल) तुम से छिन गया है, उस से बेहतर तुम्हे इनायत फरमाएगा। और तुम्हारे गुनाह भी माफ कर देगा और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (७०) और अगर ये लोग तुम से दगा करना चाहेगे तो ये पहले ही खुदा से दगा कर चुके है, तो उसने उन को (तुम्हारे) कब्ज़े मे कर दिया और खुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (७१) जो लोग ईमान लाये और वतन से हिजरत कर गये और खुदा की राह मे अपने माल और जान से लडे, वे और जिन्होने (हिजरत करने वालो को) जगह दी और उन की मदद की, वे आपस मे एक दूसरे के साथी है। और जो लोग ईमान तो ले आये, लेकिन हिजरत नही की, तो जब तक वे हिजरत न करे, तुम को उन के साथ से कुछ वास्ता नही। और अगर वे तुमसे दीन (के मामलो) मे मदद तलब करे तो तुम को मदद करनी जरूरी है, मगर उन लोगो के मुकाबले मे कि तुम मे और उन मे (सुलह का) अह्द हो, (मदद नही करनी चाहिए) और खुदा तुम्हारे सब कामो को देख रहा है। (७२) और जो लोग काफिर है (वे भी) एक दूसरे के साथी है, तो (मोमिनो !) अगर तुम यह (काम) न करोगे तो मुल्क मे फित्ना बरपा हो जाएगा और बडा फसाद मचेगा। (७३) और जो लोग ईमान लाये और वतन से हिजरत कर गये और खुदा की राह मे लडाइया करते रहे और जिन्होने (हिजरत करने वालो को) जगह दी और उनकी मदद की, यही लोग सच्चे मुसलमान है। उन के लिए (खुदा

★रु ९/५ आ ५

वल्लज़ी-न आमनू मिम्बअ्-दु वं हाजरू व जाहदू म-अ़कुम् फउलाइ-क मिन्कुम् ♭ व उलुल् - अर्हामि बअ् - ज़ुहुम् औला बिबअ् - ज़िन् फी किताबिल्लाहि ♭ इन्नल्ला - ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ★ ●(७५)

९ सूरतुत्तौबति ११३

(मदनी) इस सूर में अरबी के ११३६० अक्षर, २५३७ शब्द, १२९ आयते और १६ रुकूअ़ है।

बराअतुम्मिनल्लाहि व रसूलिही इलल्लज़ी-न आ़हत्तुम् मिनल्मुश्रिकीन ♭ (१) फसीहू फिल्अर्ज़ि अर्ब-अ-त़ अश्हुरिव्वअ्-लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ् - जिज़िल्लाहि ᒍ व अन्नल्ला-ह मुख़्ज़िलकाफिरीन (२) व अज़ानुम्मिनल्लाहि व रसूलिही इलन्नासि यौमल्-हज्जिल्-अक्बरि अन्नल्ला-ह बरीउम् मिनल् - मुश्रिकी - न ᒍ व रसूलुहू ♭ फ-इन् तुब्तुम् फ़हु - व ख़ैरुल्लकम् ج व इन् तवल्लैतुम् फ़अ्-लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ्-जिज़िल्लाहि ♭ व बश्शिरिल्लज़ी-न क-फ़रू बिअ़ज़ाबिन् अलीम ᒍ (३) इल्लल्लज़ी - न आ़हत्तुम् मिनल्-मुश्रिकी-न सुम्-म लम् यन्क़ुसूकुम् शैअव्-व लम् युज़ाहिरू अ़लैकुम् अ-ह्-दन् फ-अतिम्मू इलैहिम् अ़ह्दहुम् इला मुद्दतिहिम् ♭ इन्नल्ला - ह युहिब्बुल् - मुत्तक़ी-न (४) फ़इज़न्-स-ल - ख़ल् - अश्हुरुल्-हुरुमु फक़्तुलुल्-मुश्रिकी-न हैसु वजत्तुमूहुम् व ख़ुज़ूहुम् वह्सुरूहुम् वक़्अुदू लहुम् कुल्-ल मर्सदिन् ج फइन् ताबू व अक़ामुस् - स़ला - त़ व आतवुज्ज़का - त़ फ़ख़ल्लू सबीलहुम् ♭ इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर्रहीम (५) व इन् अ - ह़दुम्मिनल् - मुश्रिकीनस्तजा-र - क फ़ - अजिर्हु हत्ता यस्म-अ् कलामल्लाहि सुम् - म अब्लिग़्हु मअ्-म - नहू ♭ ज़ालि-क बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ्-लमून ★ (६)

التوبة ٩ ١٣٩ واعلموا ١٠

وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۞ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ ۚ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي
كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۞
سُورَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَتِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوعًا
بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۞
فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي
اللَّهِ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ۞ وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى
النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۙ وَ
رَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ
غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۞ إِلَّا
الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ
يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۞ فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ
حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ
مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا
سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۞ وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ
اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ

★रु १०/६ आ ६ ● रुब्अ़ १/४ ★रु. १/७ आ ६

के यहा) बख्शिश और इज्जत की रोजी है। (७४) और जो लोग वाद मे ईमान लाये और वतन मे हिजरत कर गये और तुम्हारे साथ हो कर जिहाद करते रहे, वे भी तुम्ही मे से है और रिश्तेदार खुदा के हुक्म के मुताविक एक दूसरे के ज्यादा हकदार है। कुछ शक नही कि खुदा हर चीज़ को जानता है। (७५) ★●

९ सूरः तौबा ११३

सूर तौबा मदनी है और इस मे एक सौ उन्तीस आयते और सोलह रुकूअ है।

(ऐ मुसलमानो ! अब)[1] खुदा और उसके रसूल की तरफ से मुश्रिको से, जिन से तुम ने अह्द (समझौता) कर रखा था, बे-ज़ारी (और जग की तैयारी) है। (१) तो (मुश्रिको ! तुम) ज़मीन मे चार महीने[2] चल फिर लो और जान रखो कि तुम खुदा को आजिज़ न कर सकोगे और यह भी कि खुदा काफिरो को रुसवा करने वाला है। (२) और हज्जे अक्बर के दिन खुदा और उसके रसूल की तरफ से लोगो को आगाह किया जाता है कि खुदा मुश्रिको से बेजार है और उस का रसूल भी (उन से दस्तबरदार है)। पस अगर तुम तौबा कर लो, तो तुम्हारे हक मे बेहतर है और न मानो (और खुदा से मुकाबला करो) तो जान रखो कि तुम खुदा को हरा नही सकोगे और (ऐ पैगम्बर !) काफिरो को दुख देने वाले अज़ाब की खबर सुना दो। (३) अल-बत्ता, जिन मुश्रिको के साथ तुम ने अह्द किया हो, और उन्होने तुम्हारा किसी तरह का कुसूर न किया हो और न तुम्हारे मुकाबले मे किसी की मदद की हो, तो जिस मुद्दत तक उनके साथ अह्द किया हो, उसे पूरा करो (कि) खुदा परहेजगारो को दोस्त रखता है। (४) जब इज्जत के महीने गुजर जाए, तो मुश्रिको को जहा पाओ, कत्ल कर दो और पकड़ लो और घेर लो और हर घात की जगह पर उनकी ताक मे बैठे रहो, फिर अगर वे तौबा कर ले और नमाज पढने और जकात देने लगे, तो उन की राह छोड़ दो। बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (५) और अगर कोई मुश्रिक तुम मे पनाह चाहता हो, तो उसको पनाह दो, यहा तक कि खुदा का कलाम सुनने लगे, फिर उसको अम्न की जगह वापस पहुचा दो, इस लिए कि ये बे-खबर लोग है। (६) ★

---

१ इस सूर के शुरू मे बिस्मिल्लाह नही लिखी गयी और इस की बहुत-सी वजहे बयान की गयी है। हजरत अली रज़ि० कहते है कि बिस्मिल्लाह मे अमान है, क्योकि इस मे खुदा का नाम इस खूबी के साथ लिया जाता है, जो अमान का काम करने वाला है यानी रहमत और यह सूर लडाई और जग और अमान उठाने के लिए नाज़िल हुई है, इस लिए इस मे बिस्मिल्लाह नही है। कुछ ने कहा कि अरब की आदत थी कि जब उन मे और किसी कौम मे समझौता होता था और वे उस को तोडना चाहते थे, तो इस बारे मे जो खत कि उस कौम को लिखते थे, उस पर बिस्मिल्लाह नही लिखते थे। जब कुफ्फार ने वह अह्द (समझौता), जो मुसलमानो ने खुदा के हुक्म से उन के साथ किया था, तोड डाला, तो खुदा ने मुसलमानो से फरमाया कि तुम को भी अपने अह्द पर कायम रहना ज़रूरी नही। पस चूकि इस सूर मे अह्द तोड डाला गया है और इस के नाज़िल होने पर हुजूर सल्ल० ने हजरत अली रजि० को मुश्रिको के पास भेजा। उन्हो ने यह सूर उन को सुना दी और उन ने कह दिया कि अब समझौता टूट चुका है। चार महीने के बाद हर जगह तुम लोगो से जग है, इस लिए उन की आदत के मुताबिक उस के शुरू मे 'बिस्मिल्लाह' नही लिखी। इन के अलावा भी कई कौल हैं, मगर ज्यादा सही पहला कौल मालूम होता है।

२ ज़िल हिज्जा की दसवी तारीख से रबीउल अव्वल आखिर की दसवी तक।

★रु १०/६ आ ६ ●रुबुअ् १/४ ★रु १/७ आ ६

कै-फ़ यकूनु लिल्मुश्रिकी-न अ़ह्दुन् अि़न्दल्लाहि व अि़न्-द रसूलिही इल्लल्-लज़ी-न आ़हत्तुम् अि़न्दल्-मस्जिदिल्-ह़रामि ج फ-मस्तकामू लकुम् फस्तकीमू लहुम् ط इन्नल्ला-ह युह़िब्बुल्-मुत्तक़ीन (७) कै-फ व इ य्यज़्हरू अ़लैकुम् ला यर्क़ुबू फ़ीकुम् इल्लव्-व ला ज़िम्म - तन् ط युर्ज़ूनकुम् बिअफ्वाहिहिम् व तअ्बा कुलूबुहुम् ج व अक्सरुहुम् फासिकून ج (८) इश्तरौ बिआयातिल्लाहि स-म-नन् क़लीलन् फ़-सद्दू अन् सबीलिही ط इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ्-मलून (९) ला यर्क़ुबू-न फी मुअ्मिनिन् इल्लव्-व ला ज़िम्म-तन् ط व उलाइ - क हुमुल्मुअ्-तदून (१०) फ़इन् ताबू व अकामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त फ़इख़्वानुकुम् फिद्दीनि ط व नुफस्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिय्यअ्-लमून (११) व इन्न-कसू ऐमानहुम् मिम्बअ्-दि अ़ह्दिहिम् व त़-अनू फ़ी दीनिकुम् फ़क़ातिलू अइम्म-तल् - कुफ़्रि لا इन्नहुम् ला ऐमा-न लहुम् ल-अ़ल्लहुम् यन्तहून (१२) अला तुकातिलू-न क़ौमन्-न-कसू ऐमानहुम् व हम्मू बिइख़्राजिर्रसूलि व हुम् ब-दऊकुम् अव्व-ल मर्रतिन् ط अ - तख़्शौनहुम् ج फल्लाहु अ-ह़क्कु अन् तख़्शौहु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१३) कातिलू-हुम् युअज़्ज़िब्-हुमुल्लाहु बिऐदीकुम् व युख़्ज़िहिम् व यन्सुर्कुम् अलैहिम् व यश्फि सुदू - र क़ौमिम् - मुअ्मिनीन لا (१४) व युज़्हिब् गै - ज़ क़ुलूबिहिम् ط व यतूबुल्लाहु अ़ला मंय्यशाउ ط वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (१५)

التوبة ٩　　١٥٠　　واعلموا ١٠

بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ ۝ كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ
اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝
كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً
يُرْضُونَكُم بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ۝
اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ۝ فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا
الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝
وَإِن نَّكَثُوا أَيْمَانَهُم مِّن بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ
فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنتَهُونَ ۝
أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَ
هُم بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ أَتَخْشَوْنَهُمْ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ
إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَ
يُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ۝
وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ

منزل ٢

भला मुश्रिको के लिए (जिन्होने अह्द तोड़ डाला), खुदा और उसके रसूल के नज़दीक अह्द किस तरह कायम रह सकता है,[1] हा, जिन लोगो के साथ तुम ने मस्जिदे मोहतरम (यानी खाना-ए-काबा) के नज़दीक अह्द किया है अगर वे (अपने अह्द पर) कायम रहे, तो तुम भी अपने कौल व करार (पर) कायम रहो। वेशक खुदा परहेजगारों को दोस्त रखता है। (७) (भला उन से अह्द) किस तरह (पूरा किया जाए, जव उन का हाल यह है) कि अगर तुम पर गलवा पा लें, तो न कराबत का लिहाज़ करें, न अह्द का, यह मुह से तो तुम्हे खुश कर देते है, लेकिन उनके दिल (इन बातो को) कुबूल नही करते और उन मे अक्सर ना-फरमान है। (८) ये खुदा की आयतो के वदले थोडा सा फायदा हासिल करते और लोगो को खुदा के रास्ते से रोकते है। कुछ शक नही कि जो काम ये करते है, बुरे है। (९) ये लोग किसी मोमिन के हक में न तो रिश्तेदारी का पास करते है, न अह्द का और ये हद से आगे वढ जाने वाले है। (१०) अगर ये तौबा कर लें और नमाज पढने और ज़कात देने लगे, तो दीन मे तुम्हारे भाई है और समझने वाले लोगो के लिए हम अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते है। (११) और अगर अह्द करने के वाद अपनी कस्मो को तोड डाले और तुम्हारे दीन में ताने करने लगे, तो उन कुफ्र के पेशवाओ से जंग करो, (ये बे-ईमान लोग है और) इन की कस्मो का कुछ एतवार नही है। अजव नही कि (अपनी हरकतो से) बाज़ आ जाएं। (१२) भला तुम ऐसे लोगो से क्यों न लडो, जिन्होने अपनी कस्मो को तोड डाला और (खुदा के) पैगम्बर के निकालने का पक्का इरादा कर लिया और उन्होने तुम से (किया गया अह्द तोड़ना) शुरू किया। क्या तुम ऐसे लोगो से डरते रहो, हालाकि डरने के लायक खुदा है, वशर्ते कि ईमान रखते हो। (१३) उन से (खूब) लडो। खुदा उन को तुम्हारे हाथो से अजाव मे डालेगा और रुसवा करेगा और तुम को उन पर गलवा देगा और मोमिन लोगो के सीनो को शिफा बख्शेगा। (१४) और उन के दिलो से गुस्सा दूर करेगा और जिस पर चाहेगा, रहमत करेगा और

---

१ हुदैबिया मे कुफ्फार के साथ दस वर्ष का समझौता हुआ था और इस शर्त पर सुलह करार पायी थी कि जो लोग मुसलमानो की पनाह मे हैं, उन पर न मक्के वाले खुद हमला करेंगे और न हमला करने वालो की मदद करेंगे और जो लोग मक्के वालो की पनाह मे हैं, उन पर मुसलमान न हमला करेंगे और न हमला करने वालो की मदद करेंगे, मगर कुरैश ने अपना अह्द तोड डाला। यानी बनूबक्र ने जो मक्के वालो की पनाह मे थे, खुज़ामा पर जो हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पनाह मे थे चढाई कर दी और कुरैश ने उन की मदद की। यह वाकिआ होने पर खुज़ामा मे से एक शख्स अम्र बिन सालिम नाम का हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत मे हाज़िर हुआ और कहा कि मक्के के काफिरो ने अपना अह्द तोड डाला, तब आप ने फ़रमाया मैं तुम्हारी मदद करूंगा। गरज़ आप को मक्के वालो से जंग करनी पडी। चुनान्चे आप ने सन् ०८ हि० मे उन पर चढाई की और मक्का फत्ह कर लिया।

अम् ह़सिब्तुम् अन् तुत्रकू व लम्मा यअ्-लमिल्लाहुल्लज़ी-न जाहदू मिन्कुम् व लम् यत्तख़िज़ू मिन् दूनिल्लाहि व ला रसूलिही व लल्मुअ्मिनी-न वलीज-तन्

वल्लाहु ख़बीरुम् - बिमा तअ् - मलून ★ (१६) मा का-न लिल्मुश्रिकी-न अंय्यअ्-मुरू मसाजिदल्लाहि शाहिदी-न अला अन्फ़ुसिहिम् बिल्कुफ़्रि उलाइ-क ह़बितत् अअ् - मालुहुम् ج व फ़िन्नारि हुम् ख़ालिदून (१७) इन्नमा यअ्-मुरु मसाजिदल्लाहि मन् आम - न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व अकामस्सला-त़ व आतज्जका-त़ व लम् यख़्-श इल्लल्ला-ह फ-असा उलाइ-क अंय्यकूनू मिनल्-मुह्तदीन (१८) अ-ज-अल्तुम् सिकाय-तल् - हाज्जि व अिमार-तल्-मस्जिदिल्-ह़रामि क - मन् आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व जा-ह-द फी सबीलिल्लाहि ط ला यस्तवू-न अिन्दल्लाहि ط वल्लाहु ला यह्दिल्-कौमज़्-ज़ालिमी-न ▨(१९) अल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू फी सबीलिल्लाहि बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अअ्-ज़मु द-र-ज-तन् अिन्दल्लाहि ط व उलाइ - क हुमुल्-फ़ाइज़ून (२०)

युबश्शिरुहुम् रब्बुहुम् बिरह़्मतिम्मिन्हु व रिज़्वानिंव्-व जन्नातिल्लहुम् फीहा नअीमुम्-मुकीम ۙ (२१) ख़ालिदी - न फीहा अ-ब - दन् ط इन्नल्ला - ह अिन्दहू अज्रुन् अज़ीम (२२) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू ला तत्तख़िज़ू आबा - अकुम् व इख़्वानकुम् औलिया - अ इनिस्तह़ब्बुल्कुफ़ - र अ-लल्ईमानि ط व मंय्य-त-वल्लहुम् मिन्कुम् फ-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (२३)

التوبة ٩ ١٥١ واعلموا

جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا
الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ مَا كَانَ
لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ
اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚ وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ اِنَّمَا يَعْمُرُ
مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ
اٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ
الْمُهْتَدِيْنَ ۝ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَا
يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝
يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا
نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ
عَظِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ
اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ
وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ

★रु २/८ आ १० ▨व. लाज़िम

खुदा सब कुछ जानता (और) हिक्मत वाला है। (१५) क्या तुम लोग यह ख्याल करते हो कि (बे-आजमाइश) छोड दिये जाओगे और अभी तो खुदा ने ऐसे लोगो को अलग किया ही नही, जिन्हो ने तुम मे से जिहाद किये और खुदा और उसके रसूल और मोमिनो के सिवा किसी को दिली दोस्त नही बनाया और खुदा तुम्हारे सब कामो को जानता है। (१६) ★

मुश्रिको को मुनासिब नही कि खुदा की मस्जिदो को आबाद करे, जबकि वे अपने आप पर कुफ्र की गवाही दे रहे है। उन लोगो के सब अमल बेकार है, और ये हमेशा दोजख मे रहेगे। (१७) खुदा की मस्जिदो को तो वे लोग आबाद करते हैं, जो खुदा पर और कियामत के दिन पर ईमान लाते है और नमाज पढते और जकात देते है और खुदा के सिवा किसी से नही डरते। यही लोग, उम्मीद है कि हिदायत पाये हुए लोगो मे (दाखिल) हो। (१८) क्या तुमने हाजियो को पानी पिलाना और मस्जिदे मोहतरम (यानी खाना-ए-काबा) को आबाद करना उस शख्स के अमल जैसा ख्याल किया है जो खुदा और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है और खुदा की राह मे जिहाद करता है? ये लोग खुदा के नजदीक बराबर नही है और खुदा जालिम लोगो को हिदायत नही किया करता ▨ (१९) जो लोग ईमान लाये और वतन छोड गये और खुदा की राह मे माल और जान से जिहाद करते रहे, खुदा के यहा इन के दर्जे बहुत बडे है और वही मुराद को पहुचने वाले है। (२०) उनका परवरदिगार उनको अपनी रहमत की और खुश्नूदी की और बहिश्तो की खुश-खबरी देता है, जिन मे उन के लिए हमेशा-हमेशा की नेमते है। (२१) (और वे) उनमे हमेशा-हमेशा रहेगे। कुछ शक नही कि खुदा के यहा बडा बदला तैयार है। (२२) ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे (मा-) बाप और (बहन-) भाई ईमान के मुकाबले मे कुफ्र को पसंद करे तो उनसे दोस्ती न रखो और जो उन से दोस्ती रखेगे, वे जालिम है। (२३) कह दो कि अगर तुम्हारे बाप

★रु २/८ आ १० ▨ व. लाजिम

कुल् इन् का-न आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व इख़्वानुकुम् व अज़्वाजुकुम् व अशीरतुकुम् व अम्वालु निक्-त-रफ़्तुमूहा व तिजारतुन् तख़्शौ-न कसादहा व मसाकिनु तर्ज़ौनहा अ-ह्-ब्-ब इलैकुम् मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन् फी सबीलिही फ़-त-रब्बसू हत्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही ॰ वल्लाहु ला यह्दिल्-कौमल्-फ़ासिक़ीन ★ (२४) ल-क़द् न-स़-र-कुमुल्लाहु फी मवाति़-न कसीरतिंव्-व यौ-म हुनैनिन् ॰ इज् अअ्-ज-बत्कुम् कस्-रतुकुम् फ-लम् तुग़्नि अन्कुम् शैअंव्-व ज़ाकत् अलैकुमुल्अर्ज़ु बिमा रहुबत् सुम्-म वल्लैतुम् मुद्‌बिरीन ॰ (२५) सुम्-म अन्ज-लल्लाहु सकीन-तहू अला रसूलिही व अ-लल्-मुअ्मिनी-न व अन्ज-ल जुनूदल्लम् तरौहा व अज़्ज़बल्लज़ी-न क-फ़रू ॰ व ज़ालि-क जज़ाउल्काफ़िरीन (२६) सुम्-म यतूबुल्लाहु मिम्बअ-दि ज़ालि-क अला मय्यशाउ ॰ वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (२७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्-मुश्रिकू-न न-जसुन् फला यक्रबुल्-मस्जिदल्-हरा-म बअ्-द आमिहिम् हाज़ा ॰ व इन् ख़िफ़्तुम् अै-ल-तन् फसौ-फ युग़्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही इन् शा-अ ॰ इन्नल्ला-ह अलीमुन् हकीम (२८) क़ातिलुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्-यौमिल्-आख़िरि व ला युहर्रिमू-न मा हर्रमल्लाहु व रसूलुहू व ला यदीनू-न दीनल्हक़्क़ि मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब हत्ता युअ्-तुल्-जिज्-य-त अंय्यदिंव्-व हुम् सा़ग़िरून ★(२९) व कालतिल्-यहूदु उज़ैरुनिब्नुल्लाहि व कालतिन्नसा़रल्-मसीहुब्नुल्लाहि ॰ ज़ालि-क क़ौलुहुम् बि-अफ़्वाहिहिम् ॰ युज़ाहिऊ-न क़ौलल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ब्लु ॰ कात-लहुमुल्लाहु ॰ अन्ना युअ्-फकून (३०)

التوبة ٩ ١٥٢ واعلموا ١٠

كسادها ومسكن ترضونها احب اليكم من الله ورسوله وجهاد
في سبيله فتربصوا حتى يأتي الله بامره والله لا يهدي
القوم الفسقين ۝ لقد نصركم الله في مواطن كثيرة ويوم
حنين اذ اعجبتكم كثرتكم فلم تغن عنكم شيئا وضاقت
عليكم الارض بما رحبت ثم وليتم مدبرين ۝ ثم انزل
الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين وانزل جنودا
لم تروها وعذب الذين كفروا وذلك جزاء الكفرين ۝
ثم يتوب الله من بعد ذلك على من يشاء والله غفور رحيم ۝
يايها الذين امنوا انما المشركون نجس فلا يقربوا المسجد
الحرام بعد عامهم هذا وان خفتم عيلة فسوف يغنيكم
الله من فضله ان شاء ان الله عليم حكيم ۝ قاتلوا الذين
لا يؤمنون بالله ولا باليوم الاخر ولا يحرمون ما حرم
الله ورسوله ولا يدينون دين الحق من الذين اوتوا الكتب
حتى يعطوا الجزية عن يد وهم صغرون ۝ وقالت اليهود
عزير ابن الله وقالت النصرى المسيح ابن الله ذلك قولهم
بافواههم يضاهئون قول الذين كفروا من قبل قتلهم
الله انى يؤفكون ۝ اتخذوا احبارهم ورهبانهم اربابا

منزل

★रु. ३/९ आ ८ ★रु. ४/१० आ ५

और बेटे और भाई और औरतें और खानदान के आदमी और माल, जो तुम कमाते हो और तिजारत, जिस के बन्द होने से डरते हो, और मकान, जिनको पसंद करते हो, खुदा और उस के रसूल से और खुदा की राह मे जिहाद करने से, तुम्हे ज्यादा अजीज हो, तो ठहरे रहो, यहा तक कि खुदा अपना हुक्म (यानी अजाब) भेजे। और ना-फरमान लोगो को हिदायत नही दिया करता। (२४) ★

खुदा ने बहुत-से मौको पर तुम को मदद दी है। और हुनैन (की लडाई) के दिन, जबकि तुम को अपनी (जमाअत की) ज्यादती पर फख्र था, तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आये और जमीन बावजूद (इतनी बडी) फराखी के, तुम पर तग हो गयी, फिर तुम पीठ फेर कर फिर गये। (२५) फिर खुदा ने अपने पैगम्बर पर और मोमिनो पर अपनी तरफ से तस्कीन नाजिल फरमायी (तुम्हारी मदद को फरिश्तो के) लश्कर, जो तुम्हे नजर नही आते थे, (आसमान से) उतारे और काफिरो को अजाब दिया और कुफ्र करने वालो की यही सजा है। (२६) फिर खुदा इस के बाद जिस पर चाहे, मेहरबानी से तवज्जोह फरमाये और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है।[1] (२७) मोमिनो! मुश्रिक तो पलीद हैं, तो इस वर्ष के बाद वे खाना-ए-काबा के पास न जाने पाए और अगर तुम को गरीबी का डर हो, तो खुदा चाहेगा, तो तुम को अपने फज्ल से गनी कर देगा। बेशक खुदा सब कुछ जानता (और) हिक्मत वाला है। (२८) जो लोग अह्ले किताब मे से खुदा पर ईमान नही लाते और न आखिरत के दिन पर (यकीन रखते है) और न उन चीजो को हराम समझते है, जो खुदा और उसके रसूल ने हराम की हैं और न दीने हक को कुबूल करते है, उन से जग करो, यहा तक कि ज़लील हो कर अपने हाथ से जिजया दे। (२९) ★

और यहूद कहते है कि उजैर खुदा के बेटे है और ईसाई कहते है कि मसीह खुदा के बेटे है। यह उन के मुह की बाते है। पहले काफिर भी इसी तरह की बाते कहा करते थे, ये भी उन्ही की रीस करने लगे है। खुदा इनको हलाक करे, ये कहा बहके फिरते है। (३०) इन्होने अपने उलेमा और

---

१ इन आयतो मे खुदा ने उन मेहरबानियो का इज्हार फरमाया है, जो मुसलमानो पर की थी। जब मक्का फत्ह हो चुका और मक्का वाले इस्लाम ले आये, तो जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह खबर पहुची कि हवाज़िन कबीले के लोग हुनैन मे आप के साथ लडाई करने को जमा हैं। यह वाकिआ सन् ०८ हि० का है। हवाज़िन एक तीरदाज़ कौम थी और हुनैन एक वादी है जो मक्के और तायफ के दर्मियान वाकेअ है। मुसलमानों की फौज ग्यारह या बारह या सोलह हज़ार थी और काफिर सिर्फ चार हज़ार। इन्हे अपनी फौज की ज्यादती पर घमड हो गया कि काफिर है ही क्या। उन को तो यो ही मार कर भगा देगे। खुदा को घमड पसन्द न था। जब ये दुश्मन की तरफ चले तो वे जगल के रास्तो और पहाड के दर्रो मे बडी मुस्तैदी से उन की घात मे लगे हुए थे। हज़रत सल्ल० मय सहाबा रज़ि० के सुबह के अधेरे मे मैदान मे उतरे थे कि उन्हो ने यकायक तीरदाजी शुरू कर दी। तलवारें खीच कर यकबारगी ऐसा हमला किया कि मुसलमानो की फौज बिखर गयी, मगर हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि अपने खच्चर पर सवार थे, उसी तरह जमे रहे और उस को दुश्मनो की तरफ बढाया। आप के चचा अब्बास रज़ि० रकाब पकडे हुए थे और दूसरी रकाब अबू सुफियान बिन हर्स बिन अब्दुल

(शेष पृष्ठ ३०३ पर)

★रु ३/९ आ ८ ★रु ४/१० आ ५

इत्तख़ज़ू अह़्बारहुम् व रुह्बानहुम् अर्बाबम्मिन दूनिल्लाहि वलमसीह़ब् - न मर्-य-म ॰ व मा उमिरू इल्ला लियअ्-बुदू इलाहंव्वाहिदन् ॰ ला इला-ह इल्ला हु-व ط सुब्हानहू अम्मा युश्रिकून (३१) युरीदू-न अंय्युत्फ़िऊ नूरल्लाहि बिअफ़्वाहिहिम् व यअ्बल्लाहु इल्ला अंय्युतिम्-म नूरहू व लौ करिहल्-काफ़िरून (३२) हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्हक़्क़ि लियुज़्हिरहू अलद्दीनि कुल्लिही ला व लौ करिहल् - मुश्रिकून ●(३३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न कसीरम्मिनल्- अह़्बारि वर्रुह्बानि ल-यअ्कुलू-न अम्वालन्नासि बिल्बातिलि व यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि ط वल्लज़ी-न यक्निज़ूनज़्ज़-ह-ब वल्-फ़िज़्ज़-त व ला युन्फ़िक़ूनहा फ़ी सबीलिल्लाहि ला फ़ - बश्शिरहुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीम ला (३४) यौ-म युह़्मा अलैहा फ़ी नारि ज-हन्-न-म फ़तुक्वा बिहा जिबाहुहुम् व जुनूबुहुम् व ज़ुहूरुहुम् ط हाज़ा मा क-नज़्तुम् लि-अन्फुसिकुम् फ़ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्निज़ून (३५) इन् - न अिद्दतश्शुहूरि अिन्दल्लाहिस्ना-अ-श्-र शह्रन् फ़ी किताबिल्लाहि यौ - म ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर् - ज़ मिन्हा अर्ब-अतुन् हुरुमुन् ط ज़ालिकद्दीनुल् - क़य्यिमु ॰ फ़ला तज़्लिमू फ़ीहिन् - न अन्फ़ुसकुम् व क़ातिलुल्-मुश्रिकी - न काफ़्फ़-तन् कमा युक़ातिलूनकुम् काफ़्फ़-तन् ط वअ् - लमू अन्नल्ला - ह म - अल्मुत्तक़ीन (३६) इन्नमन्नसीउ ज़ियादतुन् फ़िल्कुफ़्रि युज़ल्लु बिहिल्लज़ी-न क-फ़रू युहिल्लूनहू आमव्-व युहर्रिमूनहू आमल्-लियुवातिऊ अिद्-द - त मा हर्रमल्लाहु फ़युहिल्लू मा हर्रमल्लाहु ط ज़ुय्यि - न लहुम् सूउ अअ् - मालिहिम् ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल् - काफ़िरीन ★ (३७)

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا
اِلٰهًا وَّاحِدًا لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ يُرِيْدُوْنَ
اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ
وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ
دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ
النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ
اَلِيْمٍ ۝ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ
وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ
تَكْنِزُوْنَ ۝ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ
اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذٰلِكَ
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ
كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ
الْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّمَا النَّسِيْٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ وَاللّٰهُ لَا

● नि. १/२ ★रु ५/११ आ ८

मशाइख़ (बुजुर्गों) और मसीह इब्ने मरयम को अल्लाह के सिवा खुदा बना लिया, हालाकि उनको यह हुक्म दिया गया था कि एक खुदा के सिवा किसी की इबादत न करे। उस के सिवा कोई माबूद नही। और वह उन लोगो के शरीक मुकर्रर करने से पाक है। (३१) ये चाहते है कि खुदा के नूर को अपने मुह से (फूक मार कर) बुझा दे और खुदा अपने नूर को पूरा किये बगैर रहने का नही, अगरचे काफिरो को बुरा ही लगे। (३२) वही तो है जिसने अपने पैगम्बर को हिदायत और दीने हक देकर भेजा, ताकि उस (दीन) को (दुनिया के) तमाम दीनो पर गालिब करे, अगरचे काफिर ना-खुश ही हो।(३३) ● मोमिनो !(अह्ले किताब के) बहुत-से आलिम और मशाइख़ लोगो का माल ना-हक खाते और (उन को) खुदा की राह से रोकते है और जो लोग सोना और चादी जमा करते है और उस को खुदा की राह मे खर्च नही करते, उन को उस दिन के दर्दनाक अजाब की खुशखबरी सुना दो. (३४) जिस दिन वह माल दोज़ख की आग मे (खूब) गर्म किया जाएगा, फिर उस मे इन (बखीलो) की पेशानिया और पहलू और पीठे दागी जाएगी (और कहा जाएगा कि) यह वही है, जो तुम ने अपने लिए जमा किया था, सो जो तुम जमा करते थे, (अब) उसका मजा चखो। (३५) खुदा के नजदीक महीने गिनती मे (बारह है, यानी) उस दिन (से) कि उस ने आसमानो और ज़मीन को पैदा किया। खुदा की किताब में (बर्ष के) बारह महीने (लिखे हुए) है। उन मे से चार महीने' अदब के है। यही दीन (का) सीधा रास्ता है। तो इन (महीनो) मे (ना-हक खूरेज़ी से) अपने आप पर जुल्म न करना और तुम सब के सब मुश्रिको से लडो, जैसे वे सब के सब तुम मे लडते है और जान रखो कि खुदा परहेजगारो के साथ है। (३६) अम्न के किसी महीने को हटा कर आगे-पीछे कर देना कुफर मे बढती करता है। इस से काफिर गुमराही मे पडे रहते है। एक साल तो उस को हलाल समझ लेते है और दूसरे साल हराम, ताकि अदब के महीनो की, जो खुदा ने मुकर्रर किये है, गिनती पूरी कर ले और जो खुदा ने मना किया है, उसको जायज कर ले। उन के बुरे अमल उन को भले दिखायी देते है और खुदा काफिर लोगो को हिदायत नही दिया करता। (३७) ★

(पृष्ठ ३०१ का शेष)
मुत्तलिब के हाथ मे थी। वह खच्चर को रोकते थे कि तेज़ न चले। हज़रत अपना नामे मुबारक ले-ले कर मुसलमानो को पुकारते थे कि खुदा के बंदो ! कहा जाते हो, मेरी तरफ आओ। मैं खुदा का रसूल हू। यह भी फरमाते थे कि 'अनन्नबीयु ला कज़िब० अनब्नु अब्दिल मुत्तलिब'। लिखा है कि माँ के करीब सहाबी साबित कदम रहे, बाकी सब के पाव उखड गये। आप ने अपने चचा अब्बास से, कि वह बुलद आवाज़ थे, इर्शाद फरमाया कि खूब ज़ोर से पुकारे। वह पुकारने लगे तो लोग हज़रत की तरफ रुजू हुए। जब कुछ लोग इस तरह पर जमा हो गये, तो हज़रत ने उन को हमला करने का हुक्म दिया। चुनाचे इस हमले मे हवाज़िन को हार हुई। इस लडाई मे खुदा ने मुसलमानो की मदद के लिए फरिश्तो का लश्कर भेजा, जो मुसलमानो की तसल्ली की वजह बना। गरज खुदा ने मुसलमानो को उन के इतराने और घमड करने पर चेतावनी दे कर उन्हे जिताया। इस लडाई मे कुफ्फार के कत्ल और गिरफ्तारी के अलावा बहुत-सा माल हाथ आया। कहते है कि इस से ज्यादा कोई बडी गनीमत हाथ नहीं आयी थी।

१ ज़ीकादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब।

● नि १/२ ★रु ५/११ आ ८

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मा लकुम् इज़ा की-ल लकुमुन्फ़िरू फ़ी सबीलिल्लाहिस्साकल्तुम् इलल्अर्ज़ि ط अ - रज़ीतुम् बिल् - हयातिद्दुन्या मिनल्-आख़िरति ج फ़-मा मताअुल्-हयातिद्दुन्या फ़िल्आख़िरति इल्ला क़लील (३८) इल्ला तन्फ़िरू युअज़्ज़िबकुम् अज़ाबन् अलीमव् لا - व यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ै-रकुम् व ला तज़ुर्रूहु शैअन् ط वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् कदीर (३९) इल्ला तन्सुरूहु फ़-क़द् न-स्-रहुल्लाहु इज़् अख़्-र-जहुल्लज़ी-न क-फ़रू सानियस्नैनि इज़् हुमा फ़िल्ग़ारि इज़् यक़ूलु लिसाहिबिही ला तह़्-ज़न् इन्नल्ला-ह म-अना ج फ़-अन्-ज़-लल्लाहु सकी-न-तहू अलैहि व अय्यदहू बिजुनूदिल्लम् तरौहा व ज-अ-ल कलिमतल्-लज़ी-न क-फ़रुस्सुफ़ला ط व कलिमतुल्लाहि हियल्अुल्या ط वल्लाहु अज़ीज़ुन् हकीम (४०) इन्फ़िरू ख़िफ़ाफ़व्-व सिक़ालव्-व जाहिदू बिअम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी सबीलिल्लाहि ط ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (४१) लौ का-न अ-र-ज़न् क़रीबव्-व स-फ़-रन् क़ासिदल्लत्तबअू-क व लाकिम्-बअुदत् अलैहिमुश्शुक़्क़तु ط व स-यह़्लिफ़ू-न बिल्लाहि लविस्त-तअ्-ना ल-ख़-रज्ना म-अकुम् ج युह्लिकू-न अन्फ़ुसहुम् ج वल्लाहु यअ्-लमु इन्नहुम् ल-काज़िबून ★ (४२) अ-फ़ल्लाहु अन्-क ج लि-म अज़िन्-त लहुम् हत्ता य-त-बय्य-न ल-कल्लज़ी-न स-दक़ू व तअ्-ल-मल्क़ाज़िबीन (४३) ला यस्तअ्ज़िनु-कल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि अय्युजा-हिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् ط वल्लाहु अलीमुम्-बिलमुत्तक़ीन (४४)

يهدي القوم الكافرين ۝ يا أيها الذين آمنوا ما لكم إذا قيل
لكم انفروا في سبيل الله اثاقلتم إلى الأرض أرضيتم بالحياة
الدنيا من الآخرة فما متاع الحياة الدنيا في الآخرة إلا
قليل ۝ إلا تنفروا يعذبكم عذابا أليما ويستبدل قوما
غيركم ولا تضروه شيئا والله على كل شيء قدير ۝
إلا تنصروه فقد نصره الله إذ أخرجه الذين كفروا ثاني
اثنين إذ هما في الغار إذ يقول لصاحبه لا تحزن إن الله
معنا فأنزل الله سكينته عليه وأيده بجنود لم تروها وجعل
كلمة الذين كفروا السفلى وكلمة الله هي العليا والله عزيز
حكيم ۝ انفروا خفافا وثقالا وجاهدوا بأموالكم وأنفسكم
في سبيل الله ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ۝ لو كان
عرضا قريبا وسفرا قاصدا لاتبعوك ولكن بعدت عليهم
الشقة وسيحلفون بالله لو استطعنا لخرجنا معكم
يهلكون أنفسهم والله يعلم إنهم لكاذبون ۝ عفا الله
عنك لم أذنت لهم حتى يتبين لك الذين صدقوا وتعلم
الكاذبين ۝ لا يستأذنك الذين يؤمنون بالله واليوم الآخر
أن يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم والله عليم بالمتقين ۝

★रु. ६/१२ आ ५

मोमिनो ! तुम्हे क्या हुआ है कि जब तुम से कहा जाता है कि खुदा की राह मे (जिहाद के लिए) निकलो, तो तुम (काहिली की वजह से) जमीन पर गिरे जाते हो (यानी घरो से निकलना नही चाहते) ? क्या तुम आखिरत (की नेमतो) को छोड कर दुनिया की ज़िंदगी पर खुश हो बैठे हो ? दुनिया की ज़िंदगी के फ़ायदे तो आखिरत के मुकाबले बहुत ही कम है। (३८) अगर तुम न निकलोगे तो खुदा तुमको बडी तक्लीफ का अजाब देगा और तुम्हारी जगह और लोग पैदा कर देगा (जो खुदा के पूरे फरमांबरदार होंगे) और तुम उस को कुछ नुक्सान न पहुचा सकोगे और खुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (३९) अगर तुम पैगम्बर की मदद न करोगे तो खुदा उन का मददगार है। (वह वक़्त तुमको याद होगा) जब उन को काफिरो ने घरो से निकाल दिया, (उस वक्त) दो (ही शख्स थे, जिन) में (एक अबूबक्र थे), दूसरे (खुद अल्लाह के रसूल), जब वे दोनो (सौर के) गार मे थे, उस वक्त पैगम्बर अपने साथी को तसल्ली देते थे कि गम न करो, खुदा हमारे साथ है, तो खुदा ने उन पर तस्कीन नाजिल फरमायी और उन को ऐसी फौजो से मदद दी, जो तुम को नजर नही आते थे और काफिरो की बात को पस्त कर दिया और बात तो खुदा ही की बुलद है और खुदा ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (४०) तुम हल्के हो या बोझल (यानी माल व अस्बाब थोडा रखते हो या बहुत, घरो से) निकल आओ और खुदा के रास्ते मे माल और जान से लडो। यही तुम्हारे हक में अच्छा है, बशर्ते कि समझो। (४१) अगर गनीमत का माल आसानी से हासिल हो जाने वाला और सफर भी हलका-सा होता, तो तुम्हारे साथ (शौक से) चल देते, लेकिन सफर उनको दूर (का) नज़र आया, (तो उज़्र करेंगे) और खुदा की कस्मे खाएगे कि अगर हम ताकत रखते, तो आपके साथ निकल खड़े होते। ये (ऐसे उज़्रो से) अपने आप को हलाक कर रहे हैं और खुदा जानता है कि ये झूठे है। (४२) ★

खुदा तुम्हे माफ करे। तुमने इससे पहले कि, वे लोग भी जाहिर हो जाते, जो सच्चे है और वे भी तुम्हे मालूम हो जाते जो झूठे है, उन को इजाज़त क्यो दी ? (४३) जो लोग खुदा पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते है, वे तुम से इजाज़त नही मागते (कि पीछे रह जाए, बल्कि चाहते है कि) अपने माल और जान से जिहाद करे और खुदा डरने वालो को जानता है। (४४)

★रु ६/१२ आ ५

इन्नमा यस्तअ्जिनुकल्लजी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आखिरि वर्ताबत् कुलूबुहुम् फहुम् फी रैबिहिम् य-त-रद्ददून (४५) व लौ अरादुल्-खुरू-ज ल-अ-अ़द्दू लहू अुद्दतव्-व लाकिन् करिहल्लाहुम्बिआसहुम् फ-सब्-ब-त़हुम् व कीलक्अुदू मअल्काअिदीन (४६) लौ ख-रजू फीकुम् मा जादूकुम् इल्ला ख़बालव्-व ल औज़अ़ू ख़िलालकुम् यब्गूनकुमुल्-फित-न-त ج व फीकुम् सम्माअू-न लहुम् ط वल्लाहु अ़लीमुम् - बिज़्ज़ालिमीन (४७) ल-कदिब्त-गवुल्-फ़ित्-न-त मिन् कब्लु व कल्लबू ल-कल्-उमू-र हत्ता जा-अल्हक्कु व अ़-ह-र अम्रुल्लाहि व हुम् कारिहून (४८) व मिन्हुम् मय्यकूलुअ्-जल्ली व ला तफ्तिन्नी ط अला फिल्फ़ित - नति स-कतू ط व इन्-न जहन्न-म लमुही-ततुम् बिल्काफिरीन (४९) इन् तुसिब्-क ह-स-नतुन् तसुअ्हुम् ج व इन् तुसिब्-क मुसीबतु य्यकूलू कद् अ - खज्ना अम - रना मिन् कब्लु व य-त - वल्लव्वहुम् फरिहून (५०) कुल्लय्युसीबना इल्ला मा क-त-बल्लाहु लना ج हु-व मौलाना ج व अ-लल्लाहि फल्-य-त-वक्कलिल्-मुअ्मिनून (५१) कुल् हल् त-रब्बसू-न बिना इल्ला इह्दल् - हुस - नयैनि ط व नह्नु न-त-रब्बसु बिकुम् अय्युसी-ब - कुमुल्लाहु बिअ़जाबिम् - मिन् अिन्दिही औ बिऐदीना صلے फ - त - रब्बसू इन्ना म-अकुम् मु-त - रब्बिसून (५२) कुल् अन्फिकू तौअन् औ करहल्-लय्युत - कब्ब - ल मिन्कुम् ط इन्नकुम् कुन्तुम् कौमन् फासिकीन (५३) व मा म-न-अहुम् अन् तुक्ब-ल मिन्हुम् न-फ-कातुहुम् इल्ला अन्नहुम् क - फरू बिल्लाहि व बिरसूलिही व ला यअ्तूनस्सला - त इल्ला व हुम् कुसाला व ला युन्फिकू - न इल्ला व हुम् कारिहून (५४)

إنما يستأذنك الذين لا يؤمنون بالله واليوم الآخر وارتابت
قلوبهم فهم في ريبهم يترددون ۝ ولو أرادوا الخروج
لأعدوا له عدة ولكن كره الله انبعاثهم فثبطهم وقيل
اقعدوا مع القاعدين ۝ لو خرجوا فيكم ما زادوكم إلا خبالا
ولأوضعوا خلالكم يبغونكم الفتنة وفيكم سماعون لهم
والله عليم بالظالمين ۝ لقد ابتغوا الفتنة من قبل وقلبوا
لك الأمور حتى جاء الحق وظهر أمر الله وهم كارهون ۝ و
منهم من يقول ائذن لي ولا تفتني ألا في الفتنة سقطوا
وإن جهنم لمحيطة بالكافرين ۝ إن تصبك حسنة
تسؤهم وإن تصبك مصيبة يقولوا قد أخذنا أمرنا
من قبل ويتولوا وهم فرحون ۝ قل لن يصيبنا إلا ما
كتب الله لنا هو مولانا وعلى الله فليتوكل المؤمنون ۝
قل هل تربصون بنا إلا إحدى الحسنيين ونحن نتربص
بكم أن يصيبكم الله بعذاب من عنده أو بأيدينا
فتربصوا إنا معكم متربصون ۝ قل أنفقوا طوعا أو كرها
لن يتقبل منكم إنكم كنتم قوما فاسقين ۝ وما منعهم
أن تقبل منهم نفقاتهم إلا أنهم كفروا بالله وبرسوله و

इजाजत वही लोग मागते है, जो खुदा पर और पिछले दिन पर ईमान नही रखते और उनके दिल शक मे पडे हुए है, सो वे अपने शक मे डावा-डोल हो रहे है। (४५) और अगर वे निकलने का इरादा करते है तो उसके लिए सामान तैयार करते, लेकिन खुदा ने उनका उठना (और निकलना) पसन्द न किया, तो उनको हिलने-जुलने ही न दिया और (उनसे) कह दिया गया कि जहा (माजूर) बैठे है, तुम भी उन के साथ बैठे रहो। (४६) अगर वे तुम मे (शामिल होकर) निकल भी खडे होते तो, तुम्हारे हक मे शरारत करते और तुम मे फसाद डलवाने की गरज़ से दौडे-दौडे फिरते और तुम मे उन के जासूस भी है और खुदा जालिमो को खूब जानता है। (४७) ये पहले भी फसाद चाहने वाले रहे है और बहुत-सी बातों मे उलट-फेर करते रहे है, यहा तक कि हक आ पहुचा और खुदा का हुक्म ग़ालिब हुआ और वे बुरा मानते ही रह गये। (४८) और उन मे कोई ऐसा भी है, जो कहता है कि मुझे तो इजाजत ही दीजिए और आफत मे न डालिए। देखो, ये आफत मे पड गये है और दोजख सब काफिरो को घेरे हुए है। (४९) (ऐ पैगम्बर !) अगर तुम को आराम (व सुख) मिलता है, तो उन को बुरा लगता है और अगर कोई कठिन (घडी आ) पडती है, तो कहते है कि हमने अपना काम पहले ही (ठीक) कर लिया था और खुशिया मनाते लौट जाते है। (५०) कह दो कि हम को कोई मुसीबत नही पहुच सकती, उस के अलावा, जो खुदा ने हमारे लिए लिख दी हो। वही हमारा कारसाज है और मोमिनो को खुदा ही का भरोसा रखना चाहिए। (५१) कह दो कि तुम हमारे हक मे दो भलाइयो मे से एक के इंतिजार मे हो और हम तुम्हारे हक मे इस बात के इतिजार मे है कि खुदा (या तो) अपने पास से तुम पर कोई अजाब नाजिल करे या हमारे हाथो से अजाब दिलवाये तो तुम भी इतिजार करो, हम भी तुम्हारे साथ इतिज़ार करते है। (५२) कह दो कि तुम (माल) खुशी से खर्च करो या ना-खुशी से, हरगिज़ कुबूल नही किया जाएगा। तुम नाफरमान लोग हो। (५३) और उन के खर्च (मालो) के कुबूल होने मे कोई चीज़ रोक नही बनी, सिवा इसके कि उन्होंने खुदा से और उसके रसूल से कुफ्र किया और नमाज को आते है, तो सुस्त व काहिल हो कर और खर्च करते है तो ना-खुशी से। (५४) तुम उन के माल और औलाद से ताज्जुब न करना।

फ़ला तुअ् - जिब-क अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् ♭ इन्नमा युरीदुल्लाहु लियु-अ्ज़िबहुम् बिहा फिल्ह़यातिद्दुन्या व तज़्-ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (५५) व यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि इन्नहुम् लमिन्कुम् ♭ व मा हुम् मिन्कुम् व लाकिन्नहुम् कौमुंय्यफ़्रक़ून (५६) लौ यजिदू-न मल्ज-अन् औ मग़ारातिन् औ मुद्द-ख़-लल्-ल वल्लौ इलैहि व हुम् यज्महून (५७) व मिन्हुम् मय्यल्मिज़ु-क फ़िस्स़-द-क़ाति ♭ फ़-इन् उअ्-तू मिन्हा रज़ू व इल्लम् युअ्-तौ मिन्हा इज़ा हुम् यस्ख़तून (५८) व लौ अन्नहुम् रज़ू मा आताहुमुल्लाहु व रसूलुहू ॥ व क़ालू ह़स्बुनल्लाहु सयुअ्तीनल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व रसूलुहू ॥ इन्ना इलल्लाहि राग़िबून ★ (५९) इन्नमस्स़-द-क़ातु लिल्फ़ुक़राइ वल्मसाकीनि वल्आमिली-न अलैहा वल्मुअल्लफ़ति क़ुलूबु-हुम् व फ़िर्रिक़ाबि वल्ग़ारिमी-न व फ़ी सबीलिल्लाहि वब्निस्सबीलि ♭ फ़री-ज़ - तम् - मिनल्लाहि ♭ वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (६०) व मिन्हुमुल्लज़ी - न युअ्ज़ूनन्नबिय्-य व यक़ूलू - न हु - व उज़ुनुन् ♭ क़ुल् उज़ुनु ख़ैरिल्लकुम् युअ्मिनु बिल्लाहि व युअ्मिनु लिल्-मुअ्मिनी-न व रह़्मतुल्-लिल्लज़ी - न आमनू मिन्कुम् ♭ वल्लज़ी - न युअ्ज़ू - न रसूलल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (६१) यह्लिफ़ू - न बिल्लाहि लकुम् लियुर्ज़ूकुम् ♭ वल्लाहु व रसूलुहू अ-ह़क़्क़ु अंय्युर्ज़ूहु इन् कानू मुअ्मिनीन (६२) अ-लम् यअ्-लमू अन्नहू मंय्युहादिदिल्ला - ह व रसूलहू फ़अन् न लहू ना-र ज-हन्न-म ख़ालिदन् फ़ीहा ♭ ज़ालिकल् - ख़िज़्युल् - अज़ीम ● (६३)

وَلَا يَأْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ
فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ
وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ
يَّفْرَقُوْنَ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا
اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ فَاِنْ
اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ وَ
لَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ
سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ
اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ
قُلُوْبُهُمْ وَفِى الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ
فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ
لِيُرْضُوْكُمْ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ
اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ

★रु० ७/१३ आ १७ ●सु. ३/४

खुदा चाहता है कि इन चीजो से दुनिया की जिंदगी मे उन को अजाब दे और (जब) उन की जान निकले, तो (उस वक्त भी) वे काफिर ही हो। (५५) और खुदा की कस्मे खाते है कि वे तुम्ही मे से हैं हालांकि वे तुम मे से नही है। असल यह है कि ये डरपोक लोग है। (५६) अगर उन को कोई बचाव की जगह (जैसे किला) या गार व मगाक या (जमीन के अंदर) घुसने की जगह मिल जाए, तो उसी तरह रस्सिया तुडाते हुए भाग जाएं। (५७) और उनमे कुछ ऐसे भी है कि सदको (की तक्सीम) मे तुम पर ताना जनी करते है। अगर उन को उसमे से (अच्छा-भला कुछ) मिल जाए तो खुश रहे और अगर (इस कदर) न मिले तो झट खफ़ा हो जाए। (५८) और अगर वे इस पर खुश रहते जो खुदा और उसके रसूल ने उनको दिया था और कहते कि हमे खुदा काफी है और खुदा अपने फज़्ल से और पैगम्बर (अपनी मेहरबानी से) हमे (फिर) दे देंगे और हमें तो खुदा ही की ख्वाहिश है, (तो उन के हक मे बेहतर होता)। (५९) ★

सदके (यानी ज़कात व ख़ैरात) तो मुफ़्लिसो और मुहताजो और सदकात के लिए काम करने वालो का हक है और उन लोगो का जिन के दिलो का रखना मंजूर है और गुलामो के आजाद कराने में और कर्ज़दारो (के कर्ज़ अदा करने मे) और खुदा की राह मे और मुसाफिरो (की मदद) मे (भी यह माल खर्च करना चाहिए। ये हुकूक) खुदा की तरफ से मुकर्रर कर दिए गये है और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (६०) और इन मे कुछ ऐसे है, जो पैगम्बर को ईजा (तक्लीफ) देते है और कहते है कि यह शख्स निरा कान है।[1] (उन से) कह दो कि (वह) कान (है, तो) तुम्हारी भलाई के लिए। वह खुदा का और मोमिनो (की बात) का यकीन रखता है और जो लोग तुम मे ईमान लाये है, उन के लिए रहमत है और जो लोग रसूले खुदा को रंज पहुंचाते हैं, उनके लिए दर्दनाक अजाब (तैयार) है। (६१) मोमिनो! ये लोग तुम्हारे सामने खुदा की कस्मे खाते हैं, ताकि तुम को खुश कर दें, हालांकि अगर ये (दिल से) मोमिन होते, तो खुदा और और उसके पैग़म्बर खुश करने के ज्यादा हकदार है ●(६२) क्या इन लोगो को मालूम नही कि जो शख्स खुदा और उसके रसूल से मुकाबला करता है, तो उसके लिए जहन्नम की आग (तैयार) है, जिस मे वह हमेशा (जलता) रहेगा, यह बडी रुसवाई है। (६३) मुनाफिक डरते रहते है कि उन

---

१ कुछ मुनाफिक जनाब सरवरे कायनात को ईज़ा देते थे यानी कहते थे कि ये तो निरे कान हैं। जो कोई उन से बात कह देता है, उस को हमारे हक मे सच जान लेते हैं और जब हम आ कर कसम खा लेते हैं तो हमे सच्चा जानते हैं। खुदा ने फरमाया कि यह बात नही कि वह हक व बातिल मे तमीज़ नही करते, बल्कि सच्चे को झूठे मे खूब पहचानते है, लेकिन अमलन दरगुज़र करते हैं और जो मुनाफिक ऐसी बात कह कर पैगम्बरे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ईज़ा देते हैं, उन को सख्त अजाब होगा।

★रु ७/१३ आ १७ ●सु ३/४

यह्ज़रुल् मुनाफ़िक़ू-न अन् तुनज़्ज़-ल अलैहिम् सूरतुन् तुनब्बिउहुम् बिमा फ़ी क़ुलूबिहिम् कुलिस्तह्ज़िऊ इन्नल्ला-ह मुख़्रिजुम् - मा तह्ज़रून (६४) व लइन् स-अल्तहुम् ल-यक़ूलुन्-न इन्नमा कुन्ना नख़ूज़ु व नल्अबु क़ुल् अबिल्लाहि व आयातिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्तह्ज़िऊन (६५) ला तअ्-तज़िरू क़द् क-फ़र्तुम् बअ्-द ईमानिकुम् इन्नअ् - फु अन् ताइफ़तिम् - मिन्कुम् नुअज़्ज़िब् ताइ-फ़ - तम् - बिअन्नहुम् कानू मुज्रिमीन ★ (६६) अल्मुनाफ़िक़ू - न वल्मुनाफ़िक़ातु बअ् - ज़ुहुम् मिम्बअ्-ज़िन् यअ्मुरू-न बिल्मुन्करि व यन्हौ-न अनिल्मअ्-रूफ़ि व यक़्बिज़ू - न ऐदियहुम् नसुल्ला - ह फ़-नसि-यहुम् इन्नल्-मुनाफ़िक़ी - न हुमुल् - फ़ासिक़ून (६७) व-अ-दल्लाहुल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल्कुफ़्फ़ा-र ना-र ज-हन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा हि - य हस्बुहुम् व ल-अ - नहुमुल्लाहु व लहुम् अ़ज़ाबुम्मुक़ीम (६८) कल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् कानू अशद् - द मिन्कुम् क़ुव्वतंव्-व अक्स-र अम्वालंव् - व औलादन् फ़स्तम्तअ़ू बिख़लाक़िहिम् फ़स्तम्तअ़् - तुम् बिख़लाक़िकुम् क-मस्-तम्त-अल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् बिख़लाक़िहिम् व ख़ुज़्तुम् कल्लज़ी ख़ाज़ू उलाइ-क हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व उलाइ-क हुमुल्ख़ासिरून (६९) अ-लम् यअ्तिहिम् न-ब-उल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़ौमि नूहिंव्-व आदिंव्-व समू-द व क़ौमि इब्राही-म व अस्हाबि मद्-य-न वल्मुअ्तफ़िकाति अ-तत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानल्लाहु लि-यज़्लि-महुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (७०)

جهنم خالدا فيها ذلك الخزي العظيم ۝ يحذر المنفقون
أن تنزل عليهم سورة تنبئهم بما في قلوبهم قل
استهزءوا إن الله مخرج ما تحذرون ۝ ولئن سألتهم
ليقولن إنما كنا نخوض ونلعب قل أبالله وآيته ورسوله
كنتم تستهزءون ۝ لا تعتذروا قد كفرتم بعد إيمانكم
إن نعف عن طائفة منكم نعذب طائفة بأنهم كانوا
مجرمين ۝ المنفقون والمنفقت بعضهم من بعض
يأمرون بالمنكر وينهون عن المعروف ويقبضون
أيديهم نسوا الله فنسيهم إن المنفقين هم الفسقون ۝
وعد الله المنفقين والمنفقت والكفار نار جهنم خالدين
فيها هي حسبهم ولعنهم الله ولهم عذاب مقيم ۝
كالذين من قبلكم كانوا أشد منكم قوة وأكثر أموالا و
أولادا فاستمتعوا بخلاقهم فاستمتعتم بخلاقكم كما
استمتع الذين من قبلكم بخلاقهم وخضتم كالذي
خاضوا أولئك حبطت أعمالهم في الدنيا والآخرة و
أولئك هم الخسرون ۝ ألم يأتهم نبأ الذين من قبلهم
قوم نوح وعاد وثمود وقوم إبرهيم وأصحب مدين

★रु ८/१४ आ ७ व. लाज़िम

(के पैगम्बर) पर कही कोई ऐमी सूरत (न) उतर आये कि उनके दिल की बातो का उन (मुस्लमानो) पर जाहिर कर दे। कह दो कि हसी किये जाओ। जिम बात मे तुम डरते हो, खुदा उम को जरूर जाहिर कर देगा। (६४) और अगर तुम उन से (इस बारे मे) पूछो, तो कहेगे कि हम तो यों ही बात-चीत और दिल्लगी करते थे कहो, क्या तुम खुदा और उस की आयतो और उम के रसूल से हंसी करते थे? (६५) बहाने मत बनाओ, तुम ईमान लाने के बाद काफिर हो चुके हो। अगर हम तुम मे से एक जमाअत को माफ कर दे तो दूसरी जमाअत को मजा भी देगे, क्योकि वे गुनाह करते रहे है। (६६) ✱

मुनाफ़िक मर्द और मुनाफिक औरते एक दूसरे के हम जिंस (यानी एक ही तरह के) है,▒कि बुरे काम करने को कहते और नेक कामो से मना करते और (खर्च करने मे) हाथ बन्द किये रहते है, उन्होंने खुदा को भुला दिया तो खुदा ने भी उन को भुला दिया। बेशक मुनाफिक ना-फरमान है। (६७) अल्लाह ने मुनाफिक मर्दो और मुनाफिक औरतो और काफिरो मे जहन्नम की आग का वायदा किया है, जिसमे हमेशा (जलते) रहेगे। वही उन के लायक है और खुदा ने उन पर लानत कर दी है और उनके लिए हमेशा का अजाब (तैयार) है। (६८) (तुम मुनाफिक लोग) उन लोगो की तरह हो, जो तुम से पहले हो चुके है, वह तुम से बहुत ताकतवर और माल व औलाद मे कही ज्यादा थे, तो वे अपने हिस्से मे फायदा उठा चुके सो जिस तरह तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फायदा उठा चुके है, उसी तरह तुम ने अपने हिस्से से फायदा उठा लिया और जिस तरह वे बातिल मे डूबे रहे, उसी तरह तुम बातिल मे डूबे रहे। ये वह लोग है, जिन के अमल दुनिया और आखिरत मे बर्बाद हो गये। और यही नुक्सान उठाने वाले है। (६९) क्या इन को उन लोगो (के हालात) की खबर नही पहुची, जो इन से पहले थे (यानी नूह और आद और समूद की कौम और इब्राहीम की कौम और मद्यन वाले, उलटी हुई बस्तियो वाले, उन के पास पैगम्बर निशानिया ले-ले कर आए और खुदा तो ऐसा न था कि उन पर जुल्म करता लेकिन वही अपने आप पर जुल्म करते थे। (७०)

★रु ८/१४ आ ७ ▒व लाज़िम

वलमुअ्मिनू-न वलमुअ्मिनातु वअ्-जुहुम् औलिया-उ बअ्-ज़िन् यअ्मुरू-न विल्-मअ्-रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निलमुन्करि व युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज्ज़का-त व युतीअूनल्ला-ह व रसूलहू उलाइ-क स-यर्हमुहुमुल्लाहु इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम (७१) व-अ़-दल्लाहुल्-मुअ्मिनी-न वलमुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व मसाकि-न तय्यि-ब-तन् फी जन्नाति अ़द्निन् व रिज़्वानुम् - मिनल्लाहि अक्बरु ज़ालि-क हुवल्-फ़ौज़ुल् - अ़ज़ीम ★ (७२) या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल् - कुफ़्फ़ा - र वलमुनाफ़िक़ी - न वग्लुज़् अलैहिम् व मअ्वाहुम् जहन्नमु व बिअ्सल्मसीर (७३) यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि मा क़ालू व ल-क़द् क़ालू कलि-म-तल्-कुफ़्रि व क-फ़रू बअ्-द इस्लामिहिम् व हम्मू बिमा लम् यनालू व मा न - क़मू इल्ला अन् अग्नाहुमुल्लाहु व रसूलुहू मिन् फ़ज़्लिही फ़इंय्यतूबू यकु ख़ैरल्लहुम् व इंय्य-त-वल्लौ युअ़ज़्ज़िब्-हुमुल्लाहु अ़ज़ाबन् अलीमन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व मा लहुम् फ़िल्अर्ज़ि मिंव्वलिय्यिंव्वला नसीर (७४) व मिन्हुम् मन् आ़-ह-दल्ला-ह लइन् आताना मिन् फ़ज़्लिही ल-नस्सद्द-कन्-न व ल-नकूनन्-न मिनस्सालिहीन (७५) फ़-लम्मा आताहुम् मिन् फ़ज़्लिही बख़िलू बिही व त-व-ल्लव्-व हुम् मुअ्-रिज़ून (७६)

والمؤتفكٰت اتتهم رسلهم بالبيّنٰت فما كان الله
ليظلمهم ولٰكن كانوا انفسهم يظلمون ۝ والمؤمنون و
المؤمنٰت بعضهم اولياء بعض يامرون بالمعروف و
ينهون عن المنكر ويقيمون الصلٰوة ويؤتون الزكٰوة و
يطيعون الله ورسوله اولٰئك سيرحمهم الله ان الله عزيز
حكيم ۝ وعد الله المؤمنين والمؤمنٰت جنّٰت تجري
من تحتها الانهٰر خٰلدين فيها ومسٰكن طيبة في جنّٰت
عدن ورضوان من الله اكبر ذٰلك هو الفوز العظيم ۝
يٰايها النبي جاهد الكفار والمنٰفقين واغلظ عليهم و
ماوٰىهم جهنم وبئس المصير ۝ يحلفون بالله ما قالوا
ولقد قالوا كلمة الكفر وكفروا بعد اسلامهم وهموا
بما لم ينالوا وما نقموا الا ان اغنٰىهم الله ورسوله من
فضله فان يتوبوا يك خيرا لهم وان يتولوا يعذبهم
الله عذابا اليما في الدنيا والاٰخرة وما لهم في الارض
من ولي ولا نصير ۝ ومنهم من عٰهد الله لئن اٰتٰىنا
من فضله لنصدقن ولنكونن من الصٰلحين ۝ فلما
اٰتٰىهم من فضله بخلوا به وتولوا وهم معرضون ۝

व लाज़िम ★रु. ९/१५ आ ६

और मोमिन मर्द और मोमिन औरते एक दूसरे के दोस्त है कि अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातो से मना करते और नमाज़ पढते और ज़कात देते और खुदा और उस के पैगम्बर की इताअत करते है। यही लोग है, जिन पर खुदा रहम करेगा, वेशक खुदा गालिव हिक्मत वाला है। (७१) खुदा ने मोमिन मर्दो और मोमिन औरतो से बहिश्तो का वायदा किया है, जिन के नीचे नहरे बह रही है (वे) उनमे हमेशा रहेगे और हमेशा-हमेशा की बहिश्तो मे उम्दा मकानो का (वायदा किया है) और खुदा की रज़ामदी तो सब से वढ़ कर नेमत है। यही वडी कामियावी है। (७२) ★

ऐ पैगम्बर ! काफिरो और मुनाफिको से लड़ो और उन पर सख्ती करो और उन का ठिकाना दोज़ख है और वुरी जगह है। (७३) ये खुदा की कस्मे खाते है कि उन्होने (तो कुछ) नही कहा, हालाकि उन्होने कुफर का कलिमा कहा है और ये इस्लाम लाने के वाद काफिर हो गये हैं और ऐसी वात का कस्द कर चुके है, जिस पर कुदरत नही पा सके और उन्होने (मुसलमानो मे) ऐव ही कौन-सा देखा है, सिवा इस के कि खुदा ने अपने फज्ल से और उसके पैगम्बर ने (अपनी मेहरवानी से) उन को दौलतमद कर दिया है, तो अगर ये लोग तौवा कर ले, तो उन के हक मे वेहतर होगा और अगर मुह फेर लें, तो खुदा उन को दुनिया और आखिरत में दुख देने वाला अज़ाब देगा और ज़मीन मे उनका कोई दोस्त और मददगार न होगा। (७४) और उनमे कुछ ऐसे है, जिन्होने खुदा से अह्द किया था कि अगर वह हम को अपनी मेहरवानी से (माल) अता फरमाएगा, तो हम ज़रूर खैरात किया करेगे और नेक लोगो मे हो जाएगे। (७५) लेकिन जव खुदा ने उनको अपने फज्ल से (माल) दिया तो उसमें वुख्ल करने लगे और (अपने अह्द से) रू-गरदानी कर के फिर वैठे। (७६) तो खुदा

व. लाज़िम ★रु ९/१५ आ ६

फ-अअ्-क-बहुम् निफ़ाकन् फ़ी कुलूबिहिम् इला यौमि यल्कौनहू बिमा अख़्-लफुल्ला-ह मा व-अदूहु व बिमा कानू यक्जिबून (७७) अ-लम् यअ्-लमू अन्नल्ला-ह यअ्-लमु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् व अन्नल्ला-ह अ़ल्लामुलगुयूब ج (७८) अल्लज़ी-न यल्मिज़ूनल्-मुत्तव्विओ़-न मिनल्-मुअ्मिनी-न फ़िस्स-द-काति वल्लज़ी-न ला यजिदू-न इल्ला जुह्-दहुम् फ़-यस्ख़रू-न मिन्हुम् ط सख़िरल्लाहु मिन्हुम् ز व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (७९) इस्तग्फिर् लहुम् औ ला तस्तग्फिर् लहुम् ط इन् तस्तग्फिर् लहुम् सब्ओ़-न मर्र-तन् फ़-लय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम् ط ज़ालि-क बिअन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही ط वल्लाहु ला यह्दिल्क़ौमल्-फ़ासिकीन★(८०) फ़रिहल्-मुख़ल्लफ़ू-न बिमक्अदिहिम् ख़िला-फ़ रसूलिल्लाहि व करिहू अय्युजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम् फ़ी सबीलिल्-लाहि व कालू ला तन्फ़िरू फ़िल्हर्रि ط कुल् नारु ज-हन्न-म अशद्दु हर्रन् ط लौ कानू यफ़्कहून (८१) फ़ल्-यज़्हकू कलीलव्वल्-यब्कू कसीरन् ج जज़ा-अम्-बिमा कानू यक्सिबून (८२) फ़इर्-र-ज-अ़-कल्लाहु इला ता-इफ़तिम्-मिन्हुम् फ़स्तअ्ज़नू-क लिल्ख़ुरूजि फ़कुल्लन् तख़रुजू मअि-य अ-ब-दव्-व लन् तुक़ातिलू मअि-य अ़दुव्वन् ط इन्नकुम् रज़ीतुम् बिल्क़ुअूदि अव्व-ल मर्रतिन् फ़क़्अुदू म-अल्-ख़ालिफ़ीन (८३) व ला तुसल्लि अ़ला अ-हदिम्मिन्हुम् मा-त अ-ब-दव्-व ला तकुम् अ़ला क़ब्रिही ط इन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही व मातू व हुम् फ़ासिक़ून (८४)

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهَ
مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ الَّذِينَ
يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ
لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝
فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ
يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا
تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا
يَفْقَهُونَ ۝ فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۝ فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَىٰ طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوكَ
لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ
عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ۝
وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ
إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ ۝ وَلَا

★रु १०/१६ आ ८

ने उसका अजाम यह किया कि उस दिन तक के लिए, जिस मे वे खुदा के सामने हाजिर होगे, उन के दिलो मे निफाक डाल दिया, इस लिए कि उन्होने खुदा से जो वायदा किया था, उस के खिलाफ किया और इसलिए कि वे झूठ बोलते थे। (७७) क्या उनको मालूम नही कि खुदा उन भेदो और मश्विरो तक को जानता है और यह कि वह गैव की बाते जानने वाला है। (७८) जो (ताकत वाले) मुसलमान दिल खोलकर खैरात करते है और जो (बेचारे गरीब) सिर्फ उतना ही कमा सकते है, जितनी मजदूरी करते (और उस थोड़ी-सी कमाई मे से भी खर्च करते) है, उन पर जो (मुनाफिक) तान करते और हंसते है, खुदा उन पर हसता है और उन के लिए तक्लीफ देने वाला अज़ाव (तैयार) है।[1] (७९) तुम उन के लिए वख्शिश मागो या न मागो, (वात एक है) अगर उनके लिए सत्तर बार भी वख्शिश मागोगे, तो भी खुदा उन को नही बख्शेगा, यह इस लिए कि उन्होने खुदः और उसके रसूल से कुफ्र किया और खुदा ना-फरमान लोगो को हिदायत नही देता। (८०)✶

जो लोग (तवूक की लडाई) मे पीछे रह गये, वे पैगम्बर (की मर्ज़ी) के खिलाफ बैठे रहने से खुश हुए और इस वात को ना-पसद किया कि खुदा की राह मे अपने माल और जान से जिहाद करें और (औरो से भी) कहने लगे कि गर्मी मे मत निकलना। (उन से) कह दो कि दोजख की आग इस से कही ज्यादा गर्म है। काश! ये (इस बात) को समझते। (८१) ये दुनिया मे) थोडा-सा हस ले और (आखिरत मे) उनको उन आमाल के वदले, जो करते रहे है, बहुत-सा रोना होगा। (८२) फिर अगर खुदा तुम को उन मे से किसी गिरोह की तरफ़ ले जाए और वह तुम से निकलने की इजाज़त तलव करे, तो कह देना कि तुम मेरे साथ हरगिज नही निकलोगे और न मेरे साथ (मदद-गार हो कर) दुश्मन से लडाई करोगे। तुम पहली वार बैठे रहने से खुश हुए तो अव भी पीछे रहने वालो के साथ बैठे रहो। (८३) और (ऐ पैगम्बर!) इन मे से कोई मर जाए तो कभी उस (के जनाजे) पर नमाज न पढना और न उस की कब्र पर (जा कर) खडे होना। ये खुदा और उस के रसूल के साथ कुफ्र करते रहे और मरे भी तो ना-फरमान (ही मरे), (८४) और उन के माल और

---

१ जनाव रमूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व मल्लम ने खैरात के लिए हुक्म फरमाया तो मोमिन अपनी-अपनी ताकत के मुताविक माल लाने लगे। कोई तो वहुत-मा रुपया लाया और कोई अनाज। अव्दुर्रहमान बिन औफ चार हजार दिरहम लाये और कहा कि मेरे पास आठ हज़ार दिरहम थे। चार हजार मैं अल्लाह तआला को कर्ज देने के लिए ले आया हू और चार हज़ार तो वीवी-बच्चो के खर्च के लिए छोड आया हू। आमिम के पाम रुपया न था, वह चार मेर गल्ला लाये, वह भी जौ और कहने लगे कि मैं मजदूरी कर के आठ सेर जौ लाया था, चार सेर खैरात करता हू और चार सेर बच्चो के लिए रखे है। यह हालत देख कर मुनाफिक ताने देने और मजाक उडाने लगे। अव्दुर्रहमान को तो कहने लगे कि इस ने दिखावे के लिए इतना माल दे दिया है, ताकि लोग तारीफ करें और आसिम के बारे में कहने लगे कि इन मिया को देखो, न सोना, न चादी, जौ ही उठा लाए कि नाम खैरात करने वालो में होगा --

हम भी लहू लगा के शहीदो मे मिल गये

भला जौ क्या और खैरात क्या और खुदा को इन जवो की जरूरत ही क्या है? खुदा ने फरमाया कि जिम तरह मे मुनाफिक मुमलमानो से मज़ाक करते है, खुदा भी इन को अज़ाव दे कर उन के मज़ाक का जवाव देगा।

✶रु १०/१६ आ ८

व ला तुअ्-जिब्-क अम्वालुहुम् व औलादुहुम् ط इन्नमा युरीदुल्लाहु अय्यु-अ्ज़िबहुम् बिहा फ़िद्दुन्या व तज्-ह-क अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (८५) व इज़ा उन्ज़ि-लत् सूरतुन् अन् आमिनू बिल्लाहि व जाहिदू म-अ रसूलि हिस्-तअ्-ज़-न-क उलुत्तौलि मिन्हुम् व कालू ज़र्‌ना नकुम्म-अल्-क़ाअिदीन (८६) रज़ू बिअय्यकूनू म-अल्-ख़वालिफ़ि व तुबि-अ अला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून (८७) लाकिनिर्रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अहू जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् ط व उलाइ-क लहुमुलख़ैरातु ج व उलाइ-क हुमुल्मुफ़्लिहून (८८) अ-अद्दल्लाहु लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ط ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अज़ीम ★ (८९) व जा-अल्-मुअज़्ज़िरू-न मिनल्-अअ-राबि लियुअ्-ज़-न लहुम् व क-अ्-दल्लज़ी-न क-ज़बुल्ला-ह व रसूलहू ط सयुसीबुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (९०) लै-स अ-लज़्ज़ु-अफ़ा-इ व ला अ-लल्मर्ज़ा व ला अ-लल्लज़ी-न ला यजिदू-न मा युन्फ़िक़ू-न ह-रजुन् इज़ा न-सहू लिल्लाहि व रसूलिही ط मा अ-लल्-मुह्सिनी-न मिन् सबीलिन् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (९१) व ला अ-लल्लज़ी-न इज़ा मा अतौ-क लितह्मि-लहुम् क़ुल्-त ला अजिदु मा अह्मिलुकुम् अलैहि त-वल्लव्-व अअ्-युनुहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दम्अि ह-ज-नन् अल्ला यजिदू मा युन्फ़िक़ून ط (९२) इन्नमस्सबीलु अ-लल्लज़ी-न यस्तअ्ज़िनू-न-क व हुम् अग़्निया-उ ट रज़ू बिअय्यकूनू मअलख़वालिफ़ि व त-ब-अल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यअ्-लमून (९३)

واعلموا　١٩٠　التوبة ٩

تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا
فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ وَإِذَا أُنْزِلَتْ
سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُوا
الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقَاعِدِينَ ۝ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا
مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝ لَٰكِنِ
الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝ وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ
الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا
عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَ
رَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَلَا
عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ
تَوَلَّوْا وَأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ۝
إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِأَنْ
يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

★रु. ११/१७ आ ९

औलाद से ताज्जुब न करना। इन चीज़ो से खुदा यह् चाहता है कि उन को दुनिया मे अजाब करे और (जब) उन की जान निकले तो (उस वक्त भी) ये काफिर ही हो। (८५) और जब कोई सूर नाज़िल होती है कि खुदा पर ईमान लाओ और उस के रसूल के साथ हो कर लडाई करो, तो जो उन मे दौलतमद है, वे तुम से इजाज़त तलब करते है और कहते हैं कि हमे तो रहने ही दीजिए कि जो लोग घरो मे रहेगे, हम भी उन के साथ रहें। (८६) ये इस बात से खुश है कि औरतो के साथ, जो पीछे रह जाती है (घरो मे बैठे) रहे। उन के दिलो पर मुहर लगा दी गयी है, तो ये समझते ही नही। (८७) लेकिन पैगम्बर और जो लोग उन के साथ ईमान लाये, सब अपने माल और जान से लड़े। इन्ही लोगो के लिए भलाइया है।[1] और यही मुराद पाने वाले हैं। (८८) खुदा ने उन के लिए बाग तैयार कर रखे है, जिन के नीचे नहरे बह रही है, हमेशा उन मे रहेगे, यह बडी कामियाबी है। (८९)। ★

और सहरा नशीनो मे से भी कुछ लोग उज्र करते हुए (तुम्हारे पास) आये कि उन को भी इजाजत दी जाए और उन्हो ने खुदा और उन के रसूल से झूठ बोला, वे (घर मे) बैठे रहे। सो जो लोग उन मे से काफिर हुए है, उन को दुख देने वाला अजाब पहुचेगा। (९०) न तो बूढो पर कुछ गुनाह है और न बीमारो पर और न उन पर जिन के पास खर्च मौजूद नही (कि जिहाद मे शरीक हो, यानी) जबकि खुदा और उस के रसूल की भलाई चाहने वाले (और दिल से उन के साथ) हो। भले लोगो पर किसी तरह का इल्जाम नही है और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (९१) और न उन (बे सर व सामान) लोगो पर (इल्जाम है कि तुम्हारे पास आए कि उन को सवारी दो और तुम ने कहा कि मेरे पास कोई ऐसी चीज नही, जिस पर तुम को सवार करू, तो वह लौट गए और इन गम से कि उन के पास खर्च मौजूद न था, उन की आखो से आसू बह रहे थे। (९२) इल्जाम तो उन लोगो पर है जो दौलतमद है और (फिर) तुम से इजाज़त तलब करते है (यानी) इस बात से खुश है कि औरतो के साथ जो पीछे रह जाती है (घरो मे बैठ) रहे। खुदा ने उन के दिलो पर मुहर

---

१ यानी उन के वास्ते दोनो दुनिया की नेकिया हैं, दुनिया मे फत्ह और गनीमत का माल और आखिरत में करामत और बहिश्त।

★रु ११/१७ आ ९

ग्यारहवां पारः यअ्-तज़िरून

सूरतुत्तौबति आयत ६४ से १२६

यअ्-तजिरू-न इलैकुम् इज़ा र-जअ्-तुम् इलैहिम् ط कुल्ला तअ्-तज़िरु लन्नुअ्मि-न लकुम् कद् नब्ब-अ-नल्लाहु मिन् अख़्बारिकुम् ط व स-य-रल्लाहु अ-म-लकुम् व रसूलुहू सुम्-म तुरद्दू-न इला आलिमिल्ग़ैबि वश्शहादति फयुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (६४) स-यह्लिफू-न बिल्लाहि लकुम् इज़न्क़लब्तुम् इलैहिम् लितुअ्-रिज़ू अन्हुम् ط फ-अअ्-रिज़ू अन्हुम् ط इन्नहुम् रिज्सुंव् - व मअ्वाहुम् जहन्नमु ج जज़ा-अम् - बिमा कानू यक्सिबून (९५) यह्लिफू-न लकुम् लितर्ज़ौ अन्हुम् ج फ-इन् तर्ज़ौ अन्हुम् फइन्नल्ला-ह ला यर्ज़ा अनिल् - कौमिल्-फ़ासिकीन (९६) अल्अअ्-राबु अशद्दु कुफ्रंव्-व निफाकंव्-व अज्दरु अल्ला यअ्-लमू हुदू-द मा अन्ज़लल्लाहु अला रसूलिही ط वल्लाहु अलीमुन् हकीम (९७) व मिनल्अअ्-राबि मंय्यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु मग़्रमंव् -व य-त-रब्बसु बिकुमुद्दवाइर ط अलैहिम् दाइ-रतुस्सौइ ط वल्लाहु समीअुन् अलीम (९८) व मिनल्अअ्-राबि मंय्युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु क़ुरुबातिन् अिन्दल्लाहि व स - ल-वातिर्रसूलि ط अला इन्नहा क़ुर् - बतुल्लहुम् ط सयुद्ख़िलुहुमुल्लाहु फी रह्मतिही ط इन्नल्ला-ह ग़फूरुर्रहीम ★ (९९) वस्साबिकूनल्-अव्वलू-न मिनल्मुहाजिरी - न वल्अन्सारि वल्लज़ीनत्त - ब - अू - हुम् बिइह्सानिर् ‖ - रज़ियल्लाहु अन्हुम् व रज़ू अन्हु व अ-अद्-द लहुम् जन्नातिन् तज्री तह्-तहल्-अन्हारु ख़ालिदी - न फीहा अ-ब - दन् ط ज़ालिकल् - फ़ौज़ुल् - अज़ीम (१००)

يعتذرون اليكم اذا رجعتم اليهم ۚ قل لا تعتذروا لن
نؤمن لكم قد نبانا الله من اخباركم ۚ وسيرى الله عملكم
ورسوله ثم تردون الى علم الغيب والشهادة فينبئكم بما
كنتم تعملون ۝ سيحلفون بالله لكم اذا انقلبتم اليهم
لتعرضوا عنهم ۖ فاعرضوا عنهم ۖ انهم رجس ۖ وماوىهم جهنم ۚ
جزاء بما كانوا يكسبون ۝ يحلفون لكم لترضوا عنهم ۚ فان
ترضوا عنهم فان الله لا يرضى عن القوم الفسقين ۝ الاعراب
اشد كفرا ونفاقا واجدر الا يعلموا حدود ما انزل الله على
رسوله ۗ والله عليم حكيم ۝ ومن الاعراب من يتخذ ما ينفق
مغرما ويتربص بكم الدوائر ۚ عليهم دائرة السوء ۗ والله
سميع عليم ۝ ومن الاعراب من يؤمن بالله واليوم الاخر
ويتخذ ما ينفق قربت عند الله وصلوت الرسول ۗ الا انها
قربة لهم ۗ سيدخلهم الله في رحمته ۗ ان الله غفور رحيم ۝
والسبقون الاولون من المهجرين والانصار والذين اتبعوهم
باحسان ۙ رضي الله عنهم ورضوا عنه واعد لهم جنت تجري
تحتها الانهر خلدين فيها ابدا ۗ ذلك الفوز العظيم ۝ وممن
حولكم من الاعراب منفقون ۛ ومن اهل المدينة ۛ مردوا

★रु १२/१ आ १०

लगा दी है। पस वे समझते नही। (९३) जब तुम उन के पास वापस जाओगे, तो तुम से उज्र् करेंगे। तुम कहना कि उज्र् मत करो, हम हरगिज तुम्हारी बात नही मानेंगे। खुदा ने हम को तुम्हारे सब हालात बता दिए है और अभी खुदा और उस का रसूल तुम्हारे अमलो को (और) देखेंगे, फिर तुम गायब व हाजिर के जानने वाले (एक खुदा) की तरफ लौटाए जाओगे। और जो अमल तुम करते रहे हो, वह सब तुम्हे बताएगा। (९४) जब तुम उन के पास लौट कर जाओगे, तो तुम्हारे सामने खुदा की कस्मे खाएगे, ताकि तुम उनको दरगुजर करो, सो उन की तरफ तवज्जोह न करना। ये नापाक है और जो काम ये करते रहे है, उन के बदले उन का ठिकाना दोजख है। (९५) ये तुम्हारे आगे कस्मे खाएगे, ताकि तुम उन से खुश हो जाओ, लेकिन अगर तुम उन से खुश हो जाओगे, तो खुदा तो नाफरमान लोगो से खुश नही होता। (९६) देहाती लोग सख्त काफिर और सख्त मुनाफिक है और इस काबिल है कि जो (शरीअत से) अह्काम खुदा ने अपने रसूल पर नाजिल फरमाए है, उन्हे जानते (ही) न हो और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (९७) और कुछ देहाती है कि जो कुछ खर्च करते है, उसे जुर्माना समझते है और तुम्हारे हक मे मुसीबतो के इन्तिजार मे है। उन्ही पर बुरी मुसीबत (वाकेअ) हो और खुदा सुनने वाला (और) जानने वाला है। (९८) और कुछ देहाती ऐसे है कि खुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते है और जो कुछ खर्च करते है, उस को खुदा की कुर्बत और पैगम्बर की दुआओ का जरिया समझते है। देखो वह बे-शुब्हा उन के कुर्बत (की वजह) है। खुदा उन को बहुत जल्द अपनी रहमत मे दाखिल करेगा। बेशक खुदा बख्शने वाला है। (९९) ★

जिन लोगो ने सब्कत की (यानी सब से) पहले (ईमान लाए) मुहाजिरो मे से भी और अन्सार मे से भी और जिन्हो ने भले लोगो के साथ उन की पैरवी की, खुदा उन मे खुश है और वे खुदा से खुश है और उन के लिए बाग तैयार किए है, जिन के नीचे नहरे बह रही है (और) हमेशा उन मे रहेगे। यह कामियाबी है। (१००) और तुम्हारे पास-पडोस के कुछ देहाती मुनाफिक है और कुछ मदीने वाले भी निफाक पर अडे हुए है, ▨ तुम उन्हे नही जानते, हम जानते है। हम उन को दोहरा अजाब देगे, फिर वह बडे अजाब की तरफ लौटाए जाएगे। (१०१) और कुछ और लोग है कि अपने

★रु १२/१ आ १०: मु अिं मु ता ख ५ ▨व. मंजिल

व मिम्मन् हौलकुम् मिनल्अअ् - राबि मुनाफ़िकू-न ط व मिन् अह्लिल्-मदीनति قف ▨ म´ - रदू अलन्निफ़ाकि قف ला तअ् - लमुहुम् ط नह्नु नअ्-लमुहुम् ط सनु-अ़ज़्ज़िबुहुम् मर्रतैनि सुम्-म युरद्दू-न इला अ़ज़ाबिन् अ़ज़ीम ط (१०१) व आख़रूनअ्-त-रफू बिज़ुनूबिहिम् ख़-लतू अ-म-लन् सालिहव्-व आख़-र सय्यिअन् ط अ़-सल्लाहु अय्यतू - ब अ़लैहिम् ط इन्नल्ला-ह गफ़ूरुर्रहीम (१०२) ख़ुज़् मिन् अम्वालिहिम् स-द-क-तन् तुतह्हिरुहुम् व तुज़क्कीहिम् बिहा व सल्लि अ़लैहिम् ط इन्-न स़ला-त-क स - कनुल्लहुम् ط वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (१०३) अ-लम् यअ्-लमू अन्नल्ला-ह हु-व यक़्बलुत्तौब-त अन् अ़िबादिही व यअ्ख़ुज़ुस्स-द-क़ाति व अन्नल्ला - ह हुवत्तव्वाबुर्रहीम (१०४) व कुलिअ्-मलू फ़-स-य-रल्लाहु अ़-म-लकुम् व रसूलुहू वल्-मुअ्मिनू-न ط व सतुरद्दू-न इला आ़लिमिल्ग़ैबि वश्शहादति फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून ع (१०५) व आख़रू-न मुर्जौ-न लिअम्रिल्लाहि इम्मा युअ़ज़्ज़िबुहुम् व इम्मा यतूबु अ़लैहिम् ط वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (१०६) वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मस्जिदन् ज़िरारंव्-व कुफ़रव्-व तफ़्रीकम्-बैनल्मुअ्मिनी-न व इर्सादल्लिमन् हा़र-बल्ला-ह व रसूलहू मिन् क़ब्लु ط व ल-यह्लिफ़ुन-न इन् अरद्ना इल्लल् - हुस्ना ط वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् ल-काज़िबू-न (१०७) ला तकुम् फ़ीहि अ-ब-दन् ط ल-मस्जिदुन् उस्सि-स अ़लत्तक़्वा मिन् अव्वलि यौमिन् अहक़्क़ु अन् तकू-म फ़ीहि ط फ़ीहि रिजालुय्युहिब्बू-न अय्यत-तह्हरू ط वल्लाहु युहिब्बुल् - मुत्तह-हिरीन (१०८) अ फ़-मन् अस्स-स बुन्यानहू अ़ला तक़्वा मिनल्लाहि व रिज़्वानिन् ख़ैरुन् अम् मन् अस्स - स बुन्यानहू अ़ला शफ़ा जुरुफ़िन् हारिन् फ़न्हा - र बिही फ़ी नारि ज-हन्न-म ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन (१०९)

التوبة ٩ ١٩٢ يعتذرون ١١

عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ
يُرَدُّونَ إِلَى عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝ وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا
عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا
وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ
يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ
اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَ
رَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَتُرَدُّونَ إِلَى عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَآخَرُونَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَ
إِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا
ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِمَنْ حَارَبَ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَى وَاللَّهُ يَشْهَدُ
إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَى
مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا
وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ۝ أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَى تَقْوَى مِنَ
اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ
فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ لَا

منزل ٢

∴ मु. ङि. मु ता क़. ५ ▨ व. मंजिल

गुनाहो का (साफ) इकरार करते हैं। उन्हो ने अच्छे और बुरे अमलो को मिला-जुला दिया था। करीब है कि खुदा उन पर मेहरबानी से तवज्जोह फरमाये। बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (१०२) उन के माल मे से ज़कात कुबूल कर लो कि उस से तुम उन को (जाहिर मे) भी पाक और (बातिन मे भी) पाकीज़ा करते हो और उन के हक मे दुआ-ए-खैर करो कि तुम्हारी दुआ उन की तस्दीक की वजह है और खुदा सुनने वाला जानने वाला है। (१०३) क्या ये लोग नही जानते कि खुदा ही अपने बन्दो से तौबा कुबूल फरमाता और सद्कात (व खैरात) लेता है और बेशक खुदा ही तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है। (१०४) और उन से कह दो कि अमल किये जाओ, खुदा और उस का रसूल और मोमिन (सब) तुम्हारे अमलो को देख लेंगे और तुम गायब व हाज़िर के जानने वाले (एक खुदा) की तरफ लौटाए जाओगे। फिर जो कुछ करते रहे हो, वह सब तुम को बता देगा। (१०५) और कुछ और लोग हैं, जिन का काम खुदा के हुक्म पर रुका हुआ है, चाहे उन को अज़ाब दे और चाहे माफ कर दे और खुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (१०६) और (उन मे ऐसे भी है), जिन्हो ने इस गरज से मस्जिद बनायी है कि नुक्सान पहुचाए और कुफ्र करे और मोमिनों मे फूट डाले और जो लोग खुदा और उस के रसूल से पहले जग कर चुके है उन के लिए घात की जगह बनाएं और कस्मे खाएगे कि हमारा मक्सूद तो सिर्फ भलाई थी, मगर खुदा गवाही देता है कि वे झूठे है। (१०७) तुम इस (मस्जिद) मे कभी (जा कर) खडे भी न होना, अल-बत्ता वह मस्जिद जिस की बुनियाद पहले दिन से तक्वा पर रखी गयी है, इस काबिल है कि इस मे जाया (और नमाज़ पढाया) करो। इस मे ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसन्द करते है और खुदा पाक रहने वाले ही को पसन्द करता है। (१०८) भला जिस शख्स ने अपनी इमारत की बुनियाद खुदा के खौफ और उस की रज़ामदी पर रखी, वह अच्छा है या वह जिस ने अपनी इमारत की बुनियाद गिर जाने वाली खाई के किनारे पर रखी कि वह उस को दोज़ख की आग मे ले कर गिरी।[1] और खुदा

---

१. मदीने मे एक मस्जिद थी जो मस्जिदे कुबा के नाम से मशहूर थी। हज़रत सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर हफ्ते के दिन वहा तश्रीफ ले जाते और नमाज़ पढते। मुनाफिको ने चाहा कि उस के मुकाबले मे अपनी एक अलग मस्जिद बनाए। इस की बुनियाद यह हुई कि मदीने मे आहज़रत के तश्रीफ ले जाने से पहले एक शख्स अबू आमिर नाम का रहता था जो जाहिलियत के ज़माने मे ईसाई हो गया था, निहायत टेढे मिज़ाज का आदमी था। वह आप के मदीना मे तश्रीफ ले जाने पर इस्लाम तो क्या लाता, आप का खुल्लम-खुल्ला दुश्मन हो गया और वहा से निकल कर मक्के के काफिरो से जा मिला और उन को आहज़रत से लडने पर उभारा। चुनाचे उहुद की लडाई हुई और वह उस मे काफिरो के साथ था, फिर रोम के बादशाह के पास चला गया और उस से आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुकाबले के लिए मदद चाही। उस ने मदद का वायदा कर लिया। यह उस के पास ठहरा रहा और मदीने के काफिरो को लिख भेजा कि रोम से बहुत जल्द एक लश्कर आता है, जो मुसलमानो को तबाह कर देगा। तुम एक मज़बूत जगह बना रखो, जहा वह शख्स, जो उस के पास से पैगाम पहुचाने आया करे, कियाम किया करे, तो उन लोगो ने मस्जिदे कुबा के पास ही एक मस्जिद बनानी शुरू की। इस मस्जिद को मस्जिदे ज़रार कहते हैं। जब वह तैयार हो चुकी, तो मुनाफिक आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत मे हाज़िर हुए और कहने लगे कि हम ने बीमारो और कमज़ोरो के लिए, साथ ही बरसात के ख्याल से एक मस्जिद बनायी है। आप वहा तश्रीफ ले चलें और नमाज़ पढें और बरकत की दुआ करे, ताकि वहा

(शेष पृष्ठ ३२३ पर)

ला यजालु बुन्यानुहुमुल्लज़ी बनौ री-ब-तन् फी क़ुलूबिहिम् इल्ला अन् त-कत्त-अ कुलूबुहुम् ط वल्लाहु अलीमुन् हकीम ★ (११०) इन्नल्लाहश्तरा मिनलमुअ्मिनी-न अन्फु-स-हुम् व अम्वालहुम् बिअन्-न लहुमुल्जन्न-त ط युक़ातिलू-न फी सबीलिल्लाहि फ-यक्तुलू-न व युक्तलू-न वअ्-दन् अलैहि हक़्क़न् फित्तौराति वल्इन्जीलि वल्कुर्आनि ط व मन् औफ़ा बिअह्दिही मिनल्लाहि फ़स्तब्शिरू बिबैअिकुमुल्लज़ी बायअ्-तुम् बिही ط व ज़ालि-क हुवल्फ़ौज़ुल्-अज़ीम (१११) अत्ता-इबूनल्-आबिदूनल्-हामिदूनस्-सा-इहूनर्-राकिअूनस्-साजिदूनल्-आमिरू-न बिलमअ्-रूफि वन्नाहू-न अनिलमुन्करि वल्हाफ़िज़ू-न लिहुदूदिल्लाहि ط व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन (११२) मा का-न लिन्नबिय्यि वल्लज़ी-न आमनू अय्यस्तग्फ़िरू लिलमुश्रिकी-न व लौ कानू उली कुर्बा मिम्बअ्-दि मा त-बय्य-न लहुम् अन्नहुम् अस्हाबुलजहीम (११३) व मा कानस्तिग्फ़ारु इब्राही-म लिअबीहि इल्ला अम्मौअिदतिव्-व-अ-दहा इय्याहु ج फ-लम्मा त-बय्य-न लहू अन्नहू अदुव्वुल्लिल्लाहि तबर्र-अ मिन्हु ط इन्-न इब्राही-म ल-अव्वाहुन् हलीम (११४) व मा कानल्लाहु लियुज़िल्-ल कौमम्-बअ्-द इज़् हदाहुम् हत्ता युबय्यि-न लहुम् मा यत्तकू-न ط इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अलीम (११५) इन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि ط युह्यी व युमीतु ط व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिव्वलिय्यिव्-व ला नसीर (११६) ल-क़त्ताबल्लाहु अ़-लन्नबिय्यि वलमुहाजिरी-न वल्-अन्सारिल्लज़ीनत्तब-अूहु फी साअतिल्-उस्रति मिम्बअ्-दि मा का-द यज़ीगु कुलूबु फ़रीक़िम्-मिन्हुम् सुम्-म ता-ब अलैहिम् ط इन्नहू बिहिम् रऊफ़ुर्रहीम ۙ (११७)

يزال بنيانهم الذي بنوا ريبة في قلوبهم إلا أن تقطع قلوبهم
والله عليم حكيم ﴿١١٠﴾ إن الله اشترى من المؤمنين أنفسهم
وأموالهم بأن لهم الجنة يقاتلون في سبيل الله فيقتلون
ويقتلون وعدا عليه حقا في التوراة والإنجيل والقرآن و
من أوفى بعهده من الله فاستبشروا ببيعكم الذي بايعتم به
وذلك هو الفوز العظيم ﴿١١١﴾ التائبون العابدون الحامدون السائحون
الراكعون الساجدون الآمرون بالمعروف والناهون عن المنكر
والحافظون لحدود الله وبشر المؤمنين ﴿١١٢﴾ ما كان للنبي
والذين آمنوا أن يستغفروا للمشركين ولو كانوا أولي قربى
من بعد ما تبين لهم أنهم أصحاب الجحيم ﴿١١٣﴾ وما كان استغفار
إبراهيم لأبيه إلا عن موعدة وعدها إياه فلما تبين له أنه
عدو لله تبرأ منه إن إبراهيم لأواه حليم ﴿١١٤﴾ وما كان الله ليضل
قوما بعد إذ هداهم حتى يبين لهم ما يتقون إن الله بكل
شيء عليم ﴿١١٥﴾ إن الله له ملك السماوات والأرض يحيي ويميت
وما لكم من دون الله من ولي ولا نصير ﴿١١٦﴾ لقد تاب الله على
النبي والمهاجرين والأنصار الذين اتبعوه في ساعة العسرة
من بعد ما كاد يزيغ قلوب فريق منهم ثم تاب عليهم إنه بهم

★रु १३/२ आ ११

ज़ालिम लोगो को हिदायत नही देता। (१०९) यह इमारत, जो उन्हो ने वनायी है, हमेशा उन के दिलो मे शक भरी बेचैनी (की वजह) रहेगी, मगर यह कि उन के टुकडे-टुकडे हो जाए। और ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (११०) ★

ख़ुदा ने मोमिनो से उन की जानें और उन के माल ख़रीद लिए है (और इस के) बदले मे उन के लिए बहिश्त (तैयार की) है। ये लोग ख़ुदा की राह मे लडते है तो मारते भी है और मारे जाते भी हैं। यह तौरात और इजील और कुरआन मे सच्चा वायदा है, जिस का पूरा करना उसे ज़रूर है और ख़ुदा से ज्यादा वायदा पूरा करने वाला कौन है, तो जो सौदा तुम उस से किया है, उस से ख़ुश रहो और यही बड़ी कामियाबी है। (१११) तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रुकूअ करने वाले, सज्दा करने वाले, नेक कामों का हुक्म देने वाले और बुरी बातो से मना करने वाले, ख़ुदा की हदो की हिफाज़त करने वाले (यही मोमिन लोग है) और ऐ पैगम्बर मोमिनो को (बहिश्त की) ख़ुशख़बरी सुना दो। (११२) पैगम्बर और मुसलमानों को मुनासिब नही कि जब उन पर जाहिर हो गया कि मुश्रिक दोज़ख़ी है, तो उन के लिए बख़्शिश मागे, गो वे उन के कराबतदार (रिश्तेदार) ही हो। (११३) और इब्राहीम का अपने बाप के लिए बख़्शिश मागना तो एक वायदे की वजह से था, जो वह उस से कर चुके थे, लेकिन जब उन को मालूम हो गया कि वह ख़ुदा का दुश्मन है, तो उस से बे-जार हो गये। कुछ शक नही कि इब्राहीम बड़े नर्म दिल और बुर्दबार थे। (११४) और ख़ुदा ऐसा नही कि किसी कौम को हिदायत देने के बाद गुमराह कर दे, जब तक उन को वह चीज न बता दे, जिस से वह परहेज करे। बेशक ख़ुदा हर चीज को जानता है। (११५) ख़ुदा ही है, जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। वही ज़िंदगानी बख़्शता और मौत देता है, ख़ुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नही है। (११६) बेशक ख़ुदा ने पैगम्बर पर मेहरबानी की और मुहाजिरो और अन्सार पर, जो बावजूद इस के कि उन मे से कुछ-एक के दिल जल्द फिर जाने को थे, कठिन घडी मे पैगम्बर के साथ रहे, फिर ख़ुदा ने उन पर मेहरबानी फरमायी। बेशक वह उन से बहुत ज्यादा मुहब्बत करने वाला और मेहरबान है। (११७) और उन तीनो पर भी,

---

(पृष्ठ ३२१ का शेष)

जमाअत कायम हो जाए। आप को उस वक्त तक बिल्कुल इल्म न था कि यह मस्जिद किस नीयत और किस गरज़ से बनायी गयी है। इस लिए आप ने फरमाया कि अब तो हम सफर मे जा रहे हैं, जब वापस आएगे, तब इन्शाअल्लाह वहा नमाज़ पढेंगे। जब आप तबूक की लडाई से वापस हुए और मदीना पहुचने मे एक-आध दिन का रास्ता रह गया तो यह आयत नाज़िल हुई जिस से आप को मालूम हो गया कि मुनाफ़िकों का मक्सद इस मस्जिद के बनाने से, मुसलमानो को मस्जिदे कुबा से, जिस की बुनियाद तक्वा पर रखी गयी थी, अलग करना और उन मे फूट डालना था, तब आप ने हुक्म दिया कि हमारे पहुचने से पहले वह मस्जिद ढा दी जाए और जला दी जाए। चुनाचे इस हुक्म की तामील की गयी और मस्जिद ढा दी गयी और जला दी गयी।

★रु १३/२ आ ११

व अ-लस् - सलासतिल्-लज़ी-न खुल्लिफ़ू हत्ता इज़ा ज़ाकत् अलैहिमुल् - अर्ज़ु बिमा रहुबत् व ज़ाकत् अलैहिम् अन्फ़ुसुहुम् व ज़न्नू अल्ला मल्ज-अ मिनल्लाहि इल्ला इलैहि सुम्-म ता - ब अलैहिम् लियतूबू इन्नल्ला - ह हुवत्तव्वाबुर्रहीम ★ (११८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तकुल्ला-ह व कूनू म-अस्सादिक़ीन (११९) मा का-न लिअह्लिल्-मदीनति व मन् हौल - हुम् मिनल्अअ्-राबि अय्य-त-ख़ल्लफ़ू अर्रसूलिल्लाहि व ला यर्ग़बू बिअन्फ़ुसिहिम् अन् नफ़्सिही ज़ालि - क बिअन्नहुम् ला युसीबुहुम् ज़-मउव्-व ला न-स-बुव्-व ला मख़्म-स-तुन् फ़ी सबीलिल्लाहि व ला य-त-ऊ-न मौतिअय्यगीज़ुल्-कुफ़्फ़ा-र व ला यनालू-न मिन् अदुव्विन्नैलन् इल्ला कुति-ब लहुम् बिही अ - मलुन् सालिहुन् इन्नल्ला - ह ला युज़ीअ़ु अज्रल् - मुह्सिनीन (१२०) व ला युन्फ़िक़ू-न न-फ़-क-तुन् सग़ीरतंव्-व ला कबीरतंव्-व ला यक़्तअ़ू-न

वादियन् इल्ला कुति - ब लहुम् लियज्ज़ि-य-हुमुल्लाहु अह्-स-न मा कानू यअ़्-मलून (१२१) व मा कानल् - मुअ्मिनू-न लियन्फ़िरू काफ़्फ़तन् फ़लौला न - फ़ - र मिन् कुल्लि फ़िर्क़तिम् - मिन्हुम् ताइफ़तुल् - लिय-त-फ़क़्क़हू फ़िद्दीनि व लियुन्ज़िरू क़ौमहुम् इज़ा रजअ़ू इलैहिम् ल - अ़ल्लहुम् यह्ज़रून ★ (१२२) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू क़ातिलुल्लज़ी - न यलूनकुम् मिनल्कुफ़्फ़ारि वल्यजिदू फ़ीकुम् ग़िल्-ज़ - तन् वअ़् - लमू अन्नल्ला-ह मअ़ल्मुत्तक़ीन ● (१२३) व इज़ा मा उन्ज़ि-लत् सूरतुन् फ़मिन्हुम् मंय्यक़ूलु अय्युकुम् ज़ादत्हु हाज़िही ईमानन् फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़-ज़ादत्-हुम् ईमानंव्-व-हुम् यस्तब्शिरून (१२४)

★रु. १४/३ आ ८ ★रु. १५/४ आ ४ ● रुबुअ १/४

जिन का मामला मुलतवी किया गया था, यहा तक कि ज़मीन अपने फैलाव के बाद भी उन पर तग हो गयी और उन की जाने भी उन पर दूभर हो गयी और उन्हो ने जान लिया कि खुदा के हाथ से खुद उस के सिवा कोई पनाह नही। फिर (खुदा) ने उन पर मेहरबानी की ताकि तौबा करें। बेशक खुदा तौबा करने वाला मेहरबान है।[1] (११८) ✶

ऐ ईमान वालो ! खुदा से डरते रहो और सच्चो के साथ रहो। (११९) मदीना वालो को और जो उन के आस-पास देहाती रहते है, उन को मुनासिब न था कि खुदा के पैग़म्बर से पीछे रह जाए और न यह कि अपनी जानो को उन की जान से ज़्यादा अज़ीज़ रखें। यह इस लिए कि उन्हे खुदा की राह में जो तक्लीफ पहुचती है, प्यास की या मेहनत की या भूख की या वे ऐसी जगह चलते है कि काफिरो को गुस्सा आये या दुश्मनो से कोई चीज लेते है तो हर बात पर नेक अमल लिखा जाता है। कुछ शक नही कि खुदा भलो का बदला बर्बाद नही करता। (१२०) और (इसी तरह) वे जो खर्च करते है, थोडा या बहुत, या कोई मैदान तै करते है, तो यह सब कुछ उन के लिए (भले कामो मे) लिख लिया जाता है, ताकि खुदा उनको उनके अमलो का बहुत अच्छा बदला दे। (१२१) और यह तो हो नही सकता कि मोमिन सब के सब निकल आए, तो यो क्यो न किया कि हर एक जमाअत मे से कुछ लोग निकल जाते ताकि दीन (का इल्म सीखते और उस) मे समझ पैदा करते और जब अपनी कौम की तरफ वापस आते तो उन को डर सुनाते ताकि वे हज़र करते। (१२२) ★

ऐ ईमान वालो ! अपने नजदीक के (रहने वाले) काफिरो से जग करो और चाहिए कि वह तुम मे सख्ती (यानी मेहनत और लडाई की ताकत) मालूम करे और जान रखो कि खुदा परहेज़गारो के साथ है। (१२३) ● और जब कोई सूर नाजिल होती है तो कुछ मुनाफिक (मज़ाक उड़ाते और) पूछते है कि इस सूर ने तुम मे से किस का ईमान ज़्यादा किया है ? सो जो ईमान वाले है, उन का तो ईमान ज़्यादा किया और वे खुश

---

१ ये तीन शख्स भी उन्हीं लोगो मे है, जो तबूक की लडाई से पीछे रह गये थे और जनाब रिसालत मआब के साथ लडाई मे नही गये थे। तबूक एक कस्बे का नाम है, जो शाम और वादिल कुरा के दर्मियान वाकेअ है। इस लडाई मे पीछे रह जाने वाले तीन किस्म के लोग थे—१ एक मुनाफिक, ये बे-ईमान भला क्यो घर से निकलने लगे थे। उन्हो ने तरह-तरह के हीले-बहाने किये और इस वजह से खुदा ने उन पर सख्त लानत व तान की, २. दूसरे मुसलमान जो किसी मजबूरी से पीछे रह गये थे, ३ तीसरे यही तीन शख्स जो किसी मजबूरी से न गये। तो जिन शख्सो ने अपने कुसूरो को मान लिया, उन को माफ कर दिया गया, मगर इन तीन शख्सो का मामला सज़ा के तौर पर पचास दिन तक मुलतवी रखा गया। ये तीन शख्स मुरारा बिन रबीअ, काब बिन मालिक और हिलाल बिन उमैया थे। इन दिनो मे इन पर ऐसी सख्त हालत गुज़री कि उसे मौत से भी बद-तर समझते थे। आखिर सच कहने की वजह से उन के कुसूर भी माफ कर दिए गये।

व अम्मल्लज़ी - न फ़ी कुलूबिहिम् म-र-जुन् फ-ज़ादत्हुम् रिज्-सन् इला रिज्सिहिम् व मातू व हुम् काफिरून (१२५) अ-व ला यरौ-न अन्नहुम् युफ्तनू-न फी कुल्लि आमिम्-मर्र-तन् औ मर्रतैनि सुम्-म ला यतूबू-न व ला हुम् यज़्ज़क्करून (१२६) व इज़ा मा उन्ज़ि-लत सूरतुन् न-ज़-र बअ्-ज़ुहुम् इला बअ् - ज़िन् ط हल् यराकुम् मिन् अ-हदिन् सुम्मन्स-रफू ط स-र-फ़ल्लाहु कुलूबहुम् बिअन्नहुम् कौमुल्ला यफ्क़हून (१२७) ल-कद् जा-अ कुम् रसूलुम्-मिन् अन्फुसिकुम् अज़ीजुन् अलैहि मा अनित्तुम् ह़रीसुन् अलैकुम् बिल्मुअ्मिनी - न रऊफुर्रहीम (१२८) फ-इन् तवल्लौ फ़कुल् हस् - बियल्लाहु صلے ला इला - ह इल्ला हु-व ط अलैहि त-वक्कल्तु व हु-व रब्बुल् - अर्शिल् - अज़ीम ★ (१२९)

هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ
رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ
يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ
يَذَّكَّرُوْنَ ۝ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ
هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا
عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝
سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّتِسْعُ اٰيَاتٍ وَّاَحَدَ عَشَرَ رُكُوْعًا
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ
اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ
لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ
مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مَا مِنْ شَفِيْعٍ
اِلَّا مِنْ بَعْدِ اِذْنِهٖ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝

१० सूरतु यूनुस ५१

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ७७३३ अक्षर, १८६१ शब्द, १०९ आयते और ११ रुकूअ है!

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़्-लाम्-रा तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-हकीम (१) अ-का-न लिन्नासि अ-ज-बन् अन् औहैना इला रजुलिम्-मिन्हुम् अन् अन्ज़िरिन्ना-स व बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू अन्-न लहुम् क-द-म सिद्क़िन् अिन्-द रब्बिहिम् ▨ कालल्काफ़िरू-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुम्-मुबीन (२) इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-कस्समावाति वल्अर्-ज फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ-लल्-अर्शि युदब्बिरुल् - अम् - र ط मा मिन् शफ़ीअ़िन् इल्ला मिम्बअ् - दि इज़्निही ط ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फअ्-बुदूहु ط अ-फ़ला त - ज़क्करून (३)

★रु १६/५ आ ७ ▨ व. न वी स.

होते हैं।(१२४)और जिनके दिलो मे मर्ज़ है, उनके हक़ में गंदगी पर गंदगी ज़्यादा की और वे मरे भी तो काफ़िर के काफिर। (१२५) क्या ये देखते नही कि ये हर साल एक या दो बारबला मे फसा दिए जाते है, फिर भी तौबा नही करते और न नसीहत पकडते है। (१२६) और जब कोई सूर. नाज़िल होती है, तो एक दूसरे की तरफ देखने लगते है (और पूछते है कि) भला तुम्हे कोई देखता है? फिर जाते है। खुदा ने उन के दिलो को फेर रखा है, क्योकि ये ऐसे लोग हैं कि समझ से काम नही लेते। (१२७) (लोगो!) तुम्हारे पास तुम ही मे से एक पैगम्बर आए है। तुम्हारी तक्लीफ उन को बोझ जान पडती है और तुम्हारी भलाई के बडे ख्वाहिशमद है। और ईमान वालो पर निहायत मुहब्बत करने वाले (और) मेहरबान है। (१२८) फिर अगर ये लोग फिर जाएं (और न मानें) तो कह दो कि खुदा मुझे काफी है। उस के सिवा कोई माबूद नही। उसी पर मेरा भरोसा है और वही बड़े अर्श का मालिक है। (१२९) ★

१० सूरः यूनुस ५१

सूर यूनुस मक्की है और इस मे एक सौ नौ आयतें और ग्यारह रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-रा, यह बडी दानाई (हिक्मत) की किताब की आयतें है। (१) क्या लोगो को ताज्जुब हुआ कि हम ने उन्ही मे से एक मर्द को हुक्म भेजा कि लोगो को डर सुना दो और ईमान वालों को खुशखबरी दे दो कि उन के परवरदिगार के यहां उन का सच्चा दर्जा है▨(ऐसे आदमी के बारे मे) काफिर कहते है कि यह तो खुला जादूगर है। (२) तुम्हारा परवरदिगार तो खुदा ही है, जिस ने आसमान और जमीन छ दिन मे बनाए, फिर अर्श (तख़्ते शाही) पर कायम हुआ। वही हर एक काम का इन्तिज़ाम करता है कोई (उस के पास) उस की इजाज़त हासिल किए बगैर (किसी) की सिफारिश नही कर सकता। यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी की इबादत करो। भला

★रु. १६/५ आ ७ ▨ व. न बी स.

इलैहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न् ط वअ़् - दल्लाहि ह़क्क़न् ط इन्नहू यब्दउल् - ख़ल्-क़ सुम् - म युई़दुहू लियज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति बिल्क़िस्ति ط वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् शराबुम्-मिन् ह़मीमिंव्-व अ़ज़ाबुन् अलीमुम्-बिमा कानू यक्फ़ुरून (४) हु-वल्लज़ी ज-अ-लश्शम्-स ज़ियाअंव्वल्क़-म-र नूरंव्-व क़द्-द-रहू मनाज़ि-ल लितअ़्-लमू अ़-द-दस्सिनी-न वल्ह़िसा-ब ط मा ख़-ल-क़ल्लाहु ज़ालि - क इल्ला बिल्ह़क़्क़ि ج युफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ़्-लमून (५) इन्-न फ़िख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा ख़-ल - क़ल्लाहु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल्लिक़ौमिंय्यत्तक़ून (६) इन्नल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना व रज़ू बिल्ह़यातिद्दुन्या वत्म-अन्नू बिहा वल्लज़ी - न हुम् अ़न् आयातिना ग़ाफ़िलून لا (७) उलाइ-क मअ्वाहुमुन्नारु बिमा कानू यक्सिबून (८) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति यह्दीहिम् रब्बुहुम् बिईमानिहिम् ج तज्री मिन् तह्तिहिमुल् - अन्हारु फ़ी जन्नातिन्नई़म (९) दअ़्-वाहुम् फ़ीहा सुब्ह़ान-कल्लाहुम-म व तह़िय्यतुहुम् फ़ीहा सलामुन् ج व आख़िरु दअ़्-वाहुम् अनिल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन★(१०) व लौ युअ़ज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश् - शर्रस्तिअ़्-जा-ल-हुम् बिल्ख़ैरि लक़ुज़ि-य इलैहिम् अ-जलुहुम् ط फ-न - ज़रुल्लज़ी-न ला यर्जू - न लिक़ा - अना फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ़्-महून (११) व इज़ा मस्सल् - इन्सानज़्ज़ुर्रु द - आ़ना लिजम्बिही औ क़ाअ़िदन् औ क़ाइमन् ج फ़-लम्मा क-शफ़्ना अ़न्हु ज़ुर्रहू मर्-र क-अल्लम् यद्अ़ुना इला ज़ुर्रिम्मस्सहू ط कज़ालि-क ज़ुय्यि - न लिल्मुस्रिफ़ी-न मा कानू यअ़् - मलून (१२)

يونس ١٠ ١٩٦ يعتذرون ١١

إليه مرجعكم جميعا وعد الله حقا إنه يبدؤا الخلق ثم يعيده
ليجزي الذين آمنوا وعملوا الصالحات بالقسط والذين كفروا لهم
شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون ۝ هو الذي
جعل الشمس ضياء والقمر نورا وقدره منازل لتعلموا عدد
السنين والحساب ما خلق الله ذلك إلا بالحق يفصل الآيات
لقوم يعلمون ۝ إن في اختلاف الليل والنهار وما خلق الله
في السماوات والأرض لآيات لقوم يتقون ۝ إن الذين لا
يرجون لقاءنا ورضوا بالحياة الدنيا واطمأنوا بها والذين هم
عن آياتنا غافلون ۝ أولئك مأواهم النار بما كانوا يكسبون ۝
إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات يهديهم ربهم بإيمانهم
تجري من تحتهم الأنهار في جنات النعيم ۝ دعواهم فيها
سبحانك اللهم وتحيتهم فيها سلام وآخر دعواهم أن الحمد لله
رب العالمين ۝ ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير
لقضي إليهم أجلهم فنذر الذين لا يرجون لقاءنا في طغيانهم
يعمهون ۝ وإذا مس الإنسان الضر دعانا لجنبه أو قاعدا أو
قائما فلما كشفنا عنه ضره مر كأن لم يدعنا إلى ضر مسه
كذلك زين للمسرفين ما كانوا يعملون ۝ ولقد أهلكنا القرون

★रु. १/६ आ १०

तुम गौर क्यो नही करते ? (३) उसी के पास तुम सब को लौट कर जाना है। खुदा का वायदा सच्चा है, वही खल्कत को पहली बार पैदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि ईमान वालो और नेक काम करने वालो को इंसाफ़ के साथ बदला दे। और जो काफिर है उन के लिए पीने को बहुत गर्म पानी और दर्द देने वाला अजाब होगा, क्यो कि (खुदा से) इकार करते थे। (४) वही तो है जिस ने सूरज को रोशन और चाद को मुनव्वर (नूर) बनाया और चाद की मंज़िलें मुकर्रर की, ताकि तुम वर्षो की गिनती और (कामों का) हिसाब मालूम करो। यह (सब कुछ) खुदा ने तद्बीर से पैदा किया है। समझने वालो के लिए वह अपनी आयते खोल-खोल कर बयान फरमाता है। (५) रात और दिन के (एक दूसरे के पीछे) आने-जाने मे और जो चीज़े खुदा ने आसमान और ज़मीन मे पैदा की हैं (सब मे) डरने वालो के लिए निशानिया है। (६) जिन लोगो को हम से मिलने की उम्मीद नही और दुनिया की ज़िदगी से खुश और उसी पर मुतमइन हो बैठे और हमारी निशानियो से गाफिल हो रहे है। (७) उन का ठिकाना उन (आमाल) की वजह से, जो वे करते हैं, दोज़ख है। (८) (और) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन को परवरदिगार उन के ईमान की वजह से (ऐसे महलो की) राह दिखाएगा (कि) उन के नीचे नेमत के बागो मे नहरे बह रही होगी। (९) (जब वे) उन मे (उन की नेमतो को देखेंगे, तो बे-साख्ता) कहेगे, सुब्हानल्लाह और आपस मे उन की दुआ 'सलामुन् अलैकुम' होगी और उन का आखिरी कौल यह (होगा) कि खुदा-ए-रब्बुल आलमीन की हम्द (और उस का शुक्र) है। (१०) ★

और अगर खुदा लोगो की बुराई मे जल्दी करता, जिस तरह वे भलाई चाहने मे जल्दी करते है, तो उन की (उम्र की) मीयाद पूरी हो चुकी होती सो जिन लोगो को हम से मिलने की उम्मीद नही, उन्हे हम छोड़े रखते है कि अपनी सर-कशी मे बहकते रहे। (११) और जब इसान को तक्लीफ़ पहुचती है तो लेटा और बैठा और खडा (हर हाल मे) हमे पुकारता है, फिर जब हम तक्लीफ को इस से दूर कर देते है तो (बे-लिहाज हो जाता और) इस तरह गुज़र जाता है कि गोया किसी तक्लीफ पहुचने पर हमे कभी पुकारा ही न था। इसी तरह हद से निकल जाने वालो का उन के

★रु १/६ आ १०

व ल-क़द् अह्लक्नल्-कुरू-न मिन् क़ब्लिकुम् लम्मा ज़-लमू ॥ व जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व मा कानू लियुअ्मिनू ᵇ कज़ालि - क नज्ज़िल्-क़ौमल्-मुज्रिमीन (१३) सुम्-म ज-अल्नाकुम् ख़लाइ-फ फ़िल्अर्ज़ि मिम्बअ्-दिहिम् लिनन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्-मलून (१४) व इज़ा तुत्ला अलैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् ॥ क़ालल्लज़ी - न ला यर्जू-न लिक़ा-अनअ्ति बिक़ुर्आनिन् ग़ैरि हाज़ा औ बद्दिल्हु ᵇ क़ुल् मा यकूनु ली अन् उबद्दिलहू मिन् तिल्क़ाइ नफ़्सी ᶜ इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय् - य इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (१५) क़ुल् लौ शा-अल्लाहु मा तलौतुहू अलैकुम् व ला अद्राकुम् बिही ᶻ फ़ - क़द् लबिस्तु फ़ीकुम् अुमुरम्मिन् क़ब्लिही ᵇ अ-फ़ला तअ्-क़िलून (१६) फ़ - मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़ - लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़ - ब बिआयातिही ᵇ इन्नहू ला युफ़्लिहुल् - मुज्रिमून (१७) व यअ् - बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अ़ुहुम् व यक़ूलू-न हाउलाइ शुफ़-आउना अ़िन्दल्लाहि ᵇ क़ुल् अतुनब्बिऊनल्ला - ह बिमा ला यअ्-लमु फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि ᵇ सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (१८) व मा कानन्नासु इल्ला उम्मतंव्वाहि-द - तन् फ़ख़्- त - लफ़ू व लौला कलिमतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् फ़ी मा फ़ीहि यख़्-तलिफ़ून (१९) व यक़ूलू - न लौला उन्ज़ि-ल अलैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही ᶜ फ़क़ुल् इन्नमल् - ग़ैबु लिल्लाहि फ़न्तज़िरू ᶜ इन्नी म-अकुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन ★ (२०) व इज़ा अ - ज़क़्नन्ना-स रह्-म-तम्-मिम्बअ् - दि ज़र्रा-अ मस्सत्हुम् इज़ा लहुम् मक्-रुन् फ़ी आयातिना ᵇ क़ुलिल्लाहु अस्-रअु मक्रन् ᵇ इन्-न रुसुलना यक्तुबू-न मा तम्कुरून (२१)

من قبلكم لما ظلموا وجاءتهم رسلهم بالبينت وما كانوا
ليؤمنوا كذلك نجزي القوم المجرمين ۝ ثم جعلنكم خلئف
في الأرض من بعدهم لننظر كيف تعملون ۝ وإذا تتلى عليهم
اياتنا بينت قال الذين لا يرجون لقاءنا ائت بقران غير هذا
أو بدله قل ما يكون لي أن أبدله من تلقاي نفسي إن
أتبع إلا ما يوحى إلي إني أخاف إن عصيت ربي عذاب يوم
عظيم ۝ قل لو شاء الله ما تلوته عليكم ولا أدرىكم به فقد
لبثت فيكم عمرا من قبله أفلا تعقلون ۝ فمن أظلم ممن
افترى على الله كذبا أو كذب بايته إنه لا يفلح المجرمون ۝ و
يعبدون من دون الله ما لا يضرهم ولا ينفعهم ويقولون هؤلاء
شفعاؤنا عند الله قل أتنبئون الله بما لا يعلم في السموت و
لا في الأرض سبحنه وتعلى عما يشركون ۝ وما كان الناس إلا
أمة وحدة فاختلفوا ولولا كلمة سبقت من ربك لقضي
بينهم فيما فيه يختلفون ۝ ويقولون لولا أنزل عليه اية
من ربه فقل إنما الغيب لله فانتظروا إني معكم من المنتظرين ۝
وإذا أذقنا الناس رحمة من بعد ضراء مستهم إذا لهم مكر في
اياتنا قل الله أسرع مكرا إن رسلنا يكتبون ما تمكرون ۝ هو

★रु २/७ आ १०

आमाल सजा कर दिखाए गए है। (१२) और तुम से पहले हम कई उम्मतो को, जब उन्हो ने जुल्म अख्तियार किया, हलाक कर चुके हैं और उन के पास पैगम्बर खुली निशानियां ले कर आये, मगर वे ऐसे न थे कि ईमान लाते। हम गुनाहगार लोगो को इसी तरह बदला दिया करते है। (१३) फिर हम ने उन के बाद तुम लोगो को मुल्क मे खलीफा बनाया, ताकि देखे कि तुम कैसे काम करते हो। (१४) और उन को हमारी आयते पढ कर सुनायी जाती है, तो जिन लोगो को हम से मिलने की उम्मीद नही, वे कहते हैं कि (या तो) इस के सिवा कोई और कुरआन (बना) लाओ या इस को बदल दो। कह दो कि मुझ को अख्तियार नही है कि इसे अपनी तरफ से बदल दू। मैं तो उसी हुक्म का ताबेअ हू जो मेरी तरफ आता है। अगर मैं अपने परवरदिगार की ना-फरमानी करूं, तो मुझे बडे (सख्त) दिन के अज़ाब से खौफ आता है। (१५) (यह भी) कह दो कि अगर खुदा चाहता तो (न तो) मैं ही यह (किताब) तुम को पढ कर सुनाता और न वही तुम्हे इस के बारे मे बताता। मैं इस से पहले तुम मे एक उम्र रहा हू (और कभी एक कलिमा भी इस तरह का नही कहा), भला तुम समझते नहीं। (१६) तो उस से बढ कर ज़ालिम कौन जो खुदा पर झूठ गढे और उस की आयतो को झुठलाए। बेशक गुनाहगार कामियाबी नही पाएगे। (१७) और ये (लोग) खुदा के सिवा ऐसी चीज़ो की इबादत करते है, जो न उन का कुछ बिगाड ही सकती हैं और न कुछ भला ही कर सकती हैं और कहते है कि ये खुदा के पास हमारी सिफारिश करने वाले हैं। कह दो, क्या तुम खुदा को ऐसी चीज बताते हो, जिस का वजूद उसे न आसमानो मे मालूम होता है और न ज़मीन मे। वह पाक है और (उस की शान) उन के शिर्क करने से बहुत बुलद है। (१८)और (सब) लोग (पहले) एक ही उम्मत (यानी एक ही मिल्लत पर) थे। फिर अलग-अलग हो गए और अगर एक बात जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से पहले हो चुकी है, न होती, तो जिन बातो मे वे इख्तिलाफ करते है, उन में फैसला कर दिया जाता। (१९) और कहते हैं कि इस पर उन के परवरदिगार की तरफ से कोई निशानिया क्यो नाज़िल नही हुई। कह दो कि गैब (का इल्म) तो खुदा ही को है, सो तुम इंतिज़ार करो। मैं भी तुम्हारे साथ इतिज़ार करता हूं। (२०) ★

और जब हम लोगो को तक्लीफ पहुचने के बाद (अपनी) रहमत (से सुख) का मज़ा चखाते है, तो वे हमारी आयतो मे ही हीले करने लगते हैं। कह दो कि खुदा बहुत जल्द हीला करने वाला है। और जो हीले तुम करते हो, हमारे फरिश्ते उन को लिखते जाते हैं। (२१) वही तो है जो तुम

★रु २/७ आ १०

हुवल्लज़ी युसय्यिरुकुम् फ़िल्बर्रि वल्बह्रि हत्ता इज़ा कुन्तुम् फ़िल्फ़ुल्कि व जरै-न बिहिम् बिरीहिन् त़य्यिबतिव्-व फ़रिहू बिहा जाअत्हा रीहुन् आसिफ़ुंव्-व जा-अहुमुल्-मौजु मिन् कुल्लि मकानिंव्-व ज़न्नू अन्नहुम् उहीत़ बिहिम् द-अ-वुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दीन-न लइन् अन्जैतना मिन् हाज़िही ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (२२) फ़-लम्मा अन्जाहुम् इज़ाहुम् यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्हक़्क़ि या अय्युहन्नासु इन्नमा बग़्युकुम् अला अन्फ़ुसिकुम् मताअल्-हयातिद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअुकुम् फ़नुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (२३) इन्नमा म-सलुल्-हयातिद्दुन्या कमा-इन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समाइ फ़ख़्-त-ल-त़ बिही नबातुल्अर्ज़ि मिम्मा यअ्कुलुन्नासु वल्-अन्आमु हत्ता इज़ा अ-ख़-ज़तिल्-अर्-ज़ु ज़ुख़्-रुफ़हा वज़्ज़य्य-नत् व ज़न्-न अह्लुहा अन्नहुम् क़ादिरू-न अलैहा अताहा अम्रुना लैलन् औ नहारन् फ़-ज-अल्नाहा हसीदन् क-अल्लम् तग़्-न बिल्-अम्सि कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (२४) वल्लाहु यद्अू इला दारिस्सलामि व यह्दी मंय्यशाउ इला सिरातिम्मुस्तक़ीम (२५) लिल्लज़ी-न अह्सनुल्हुस्ना व ज़िया-द-तुन् व ला यर्हक़ु वुजूहहुम् क-त-रुंव्-व ला ज़िल्लतुन् उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२६) वल्लज़ी-न क-सबुस्सय्यिआति जज़ाउ सय्यिअतिम्-बिमिस्लिहा व तर्हक़ुहुम् ज़िल्लतुन् मा लहुम् मिनल्लाहि मिन् आसिमिन् क-अन्नमा उग़्शियत् वुजूहुहुम् क़ि-त़-अम्-मिनल्लैलि मुज़्लिमन् उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२७) व यौ-म नह्शुरुहुम् जमीअन् सुम्-म नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू मकानकुम् अन्तुम् व शु-रकाउकुम् फ़-ज़य्यल्ना बैनहुम् व क़ा-ल शु-रकाउ-हुम् मा कुन्तुम् इय्याना तअ्-बुदून (२८)

يونس ١٠ — ١٦٨ — يعتذرون ١١

الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ
بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ
كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ
لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ
يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ
مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾
إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ
الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا
وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ
نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَنْ لَمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٥﴾ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ
وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٦﴾
وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ
مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِنَ
اللَّيْلِ مُظْلِمًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ
جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ فَزَيَّلْنَا

को जगल और दरिया मे चलने-फिरने और सैर करने की तौफीक देता है, यहा तक कि जब तुम कश्तियो मे (सवार) होते हो और कश्तिया पाकीजा हवा (के नर्म-नर्म झोको) से सवारो को ले कर चलने लगती है और वे उन से खुश होते है, तो यकायकी ज़न्नाटे की हवा चल पडती है और लहरे हर तरफ से उन पर (जोश मारती हुई) आने लगती है और वे ख्याल करते है कि (अब तो) लहरो मे घिर गए, तो उह वक्त खालिस खुदा ही की इबादत कर के उससे दुआ मागने लगते है कि (ऐ खुदा!) अगर तू हम को इस से निजात वख्शे तो हम (तेरे) वहुत ही शुक्रगुज़ार हो। (२२) लेकिन जव वह उन को निजात दे देता है. तो मुल्क मे ना-हक शरारत करने लगते है। लोगो! तुम्हारी शरारत का ववाल तुम्हारी ही जानो पर होगा, तुम दुनिया की ज़िंदगी के फायदे उठा लो, फिर तुम को हमारे ही पास लौट कर आना है। उस वक़्त तुम को बताएंगे, जो कुछ तुम किया करते थे। (२३) दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल मेंह् की-सी है कि हम ने उस को आसमान से बरसाया। फिर उस के साथ सब्जा, जिसे आदमी और जानवर खाते है, मिल कर निकला, यहा तक कि जमीन सब्ज़े से खुशनुमा (हुई) और सज गयी और ज़मीन वालो ने ख्याल किया कि वह इस पर पूरा कब्ज़ा रखते हैं, यकायक रात को या दिन को हमारे (अज़ाब का हुक्म) आ पहुचा, तो हम ने उस को काट (कर ऐसा कर) डाला कि गोया कल वहा कुछ था ही नही। जो लोग गौर करने वाले हैं, उन के लिए हम (अपनी कुदरत की) निशानिया इसी तरह खोल-खोल कर बयान करते है। (२४) और खुदा सलामती के घर की तरफ वुलाता है और जिस को चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है। (२५) जिन लोगो ने भले काम किए, उन के लिए भलाई है और (कुछ) और भी। और उन के मुहो पर न तो स्याही छाएगी और न रुसवाई। यही जन्नती है कि उस मे हमेशा रहेगे। (२६) और जिन्हो ने बुरे काम किये, तो वुराई का वदला वैसा ही होगा और उन के मुहो पर ज़िल्लत छा जाएगी और कोई उन को खुदा से वचाने वाला न होगा। उन के मुहो (की स्याही का हाल होगा कि उन) पर गोया अंधेरी रात के टुकडे उढा दिए गए है। यही दोज़खी है कि हमेशा उस मे रहेगे। (२७) और जिस दिन हम इन सव को जमा कर देगे, फिर मुश्रिको से कहेगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी-अपनी जगह ठहरे रहो, तो हम उन मे फूट डाल देगे उन के शरीक (उन से) कहेगे कि तुम हम को तो नही पूजा

फ़-कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनना व बैनकुम् इन् कुन्ना अ़न् अि़बादतिकुम् लग़ाफ़िलीन (२९) हुनालि-क तब्लू कुल्लु नफ़्सिम्मा अस्-ल-फ़त् व रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-ह़क़्क़ि व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून ★ ● (३०) क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि अम्मंय्यम्लिकुस्-सम्-अ वल्-अब्सा-र व मंय्युख़्रिजुल्ह़य्-य मिनल्मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्ह़य्यि व मंय्युदब्बिरुल्-अम्-र ط फ़-स-यक़ूलूनल्लाहु ج फ़क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून (३१) फ़-ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमुल्-ह़क़्क़ु ج फ़माज़ा बअ्-दल्-ह़क़्क़ि इल्लज़्ज़लालु صلے फ़-अन्ना तुस्रफ़ून (३२) क-ज़ालि-क ह़क़्क़त् कलिमतु रब्बि-क अ़-लल्लज़ी-न फ़-सक़ू अन्नहुम् ला युअ्मिनून (३३) क़ुल् हल् मिन् शुरकाइकुम् मंय्यब्दउल्-ख़ल-क़ सुम्-म युई़दुहू ط क़ुलिल्लाहु यब्दउल्ख़ल-क़ सुम्-म युई़दुहू फ़-अन्ना तुअ्फ़कून (३४) क़ुल् हल् मिन् शुरकाइकुम् मंय्यह्दी इलल्ह़क़्क़ि ط क़ुलिल्लाहु यह्दी लिल्ह़क़्क़ि ط अ-फ़-मंय्यह्दी इलल्ह़क़्क़ि अह़क़्क़ु अंय्युत्त-ब-अ़ अम्मल्ला यहिद्दी इल्ला अंय्युह्दा ج फ़मा लकुम् قف कै-फ़ तह़्कुमून (३५) व मा यत्तबिअ़ु अक्सरुहुम् इल्ला ज़न्नन् ط इन्नज़्ज़न्-न ला युग़्नी मिनल्ह़क़्क़ि शैअन् ط इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिमा यफ़्-अ़लून (३६) व मा का-न हाज़ल्क़ुर्आनु अंय्युफ़्तरा मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै-न यदैहि व तफ़्सीलल्-किताबि ला रै-ब फ़ीहि मिर्रब्बिल्-आ़लमीन قف (३७) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु ط क़ुल् फ़अ्-तू बिसूरतिम्-मिस्लिही वद्अ़ू मनिस्त-तअ़्-तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३८)

بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاؤُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ۝ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ
شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ۝ هُنَالِكَ
تَبْلُو كُلُّ نَفْسٍ مَا أَسْلَفَتْ وَرُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ
يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ
الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا
تَتَّقُونَ ۝ فَذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ
فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ۝ كَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا
أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ
ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝
قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي
لِلْحَقِّ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمَّنْ لَا يَهِدِّي
إِلَّا أَنْ يُهْدَىٰ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا
ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝
وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ
الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا

★रु. ३/८ आ १० ● नि. १/२

करते थे। (२८) हमारे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा ही गवाह काफी है। हम तुम्हारी पूजा से बिल्कुल बे-ख़बर थे। (२९) वहां हर आदमी (अपने आमाल की), जो उस ने आगे भेजे होंगे, बुहतान आजमाइश कर लेगा।' और वे अपने सच्चे मालिक की तरफ लौट जाएगे और जो कुछ वे बांधा करते थे, सब उन से जाता रहेगा। (३०) ★ ●

(उन से) पूछो कि तुम को आसमान व ज़मीन मे रोज़ी कौन देता है या (तुम्हारे) कानो और आखो का मालिक कौन है और बे-जान से जानदार कौन पैदा करता है और जानदार से बे-जान कौन पैदा करता है और दुनिया के कामो का इन्तिज़ाम कौन करता है। झट कह देंगे कि अल्लाह, तो कहो कि फिर तुम (ख़ुदा से) डरते क्यो नही? (३१) यही ख़ुदा तो तुम्हारा परवरदिगारे बर-हक है और हक बात के ज़ाहिर होने के बाद गुमराही के सिवा है ही क्या? तो तुम कहा फिर जाते हो? (३२) इसी तरह ख़ुदा का इर्शाद इन ना-फरमानो के हक मे साबित हो कर रहा कि ये ईमान नही लाएंगे। (३३) (उन से) पूछो कि भला तुम्हारे शरीको मे कोई ऐसा है कि मख़्लूकात को पहले पैदा करे (और) फिर उस को दोबारा बनाये। कह दो कि ख़ुदा ही पहली बार पैदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पैदा करेगा तो तुम कहा उलटे जा रहे हो? (३४) पूछो कि भला तुम्हारे शरीको में कौन ऐसा है कि हक का रास्ता दिखाए। कह दो कि ख़ुदा ही हक का रास्ता दिखाता है, भला जो हक का रास्ता दिखाए, वह इस काबिल है कि उस की पैरवी की जाए या वह कि जब तक कोई उसे रास्ता न बताए, रास्ता न पाए। तो तुम को क्या हुआ है, कैसा इंसाफ करते हो? (३५) और उन मे के अक्सर सिर्फ ज़न (गुमान) की पैरवी करते हैं। और कुछ शक नही कि हक के मुकाबले मे कुछ भी कारआमद नही हो सकता। बेशक ख़ुदा तुम्हारे (तमाम) कामो को जानता है। (३६) और यह कुरआन ऐसा नही कि ख़ुदा के सिवा कोई उस को अपनी तरफ से बना लाए। हा, (हां, यह ख़ुदा का कलाम है), जो (किताबें) इन से पहले (की) हैं, उन की तस्दीक करता है और उन्ही किताबो की (इस में) तफ्सील है। इस मे शक नही (कि) यह रब्बुल आलमीन की तरफ से (नाज़िल हुआ) है। (३७) क्या ये लोग कहते है कि पैगम्बर ने उस को अपनी तरफ से बना लिया है। कह दो कि अगर सच्चे हो, तो तुम भी इस तरह की एक सूर· बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जिन को तुम बुला सको, बुला भी लो। (३८) हकीकत यह है कि जिस चीज़ के इल्म पर ये

---

१ यानी जब उस को उस के आमाल का बदला मिलेगा, तब उसे मालूम हो जाएगा कि उस ने दुनिया मे कैसे काम किए थे।

वल् कज़्ज़बू बिमा लम् युहीतू बिअि़ल्मिही व लम्मा यअ्तिहिम् तअ्-वीलुहू ط कज़ालि-क कज़्ज़-बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़न्ज़ुर् कै-फ का-न आकिबतुज़्ज़ालिमीन (३९) व मिन्हुम् मंय्युअ्मिनु बिही व मिन्हुम् मल्ला युअ्मिनु बिही ط व रब्बु-क अअ्-लमु बिल्मुफ़्सिदीन ★(४०) व इन् कज़्ज़बू-क फ़कुल् ली अ़-मली व लकुम् अ़-मलुकुम् अन्तुम् बरीऊ-न मिम्मा अअ्-मलु व अन्न बरीउम्-मिम्मा तअ्-मलून (४१) व मिन्हुम् मंय्यस्तमिऊ-न इलै-क ط अ-फ़-अन्-त तुस्मिउ़स्-सुम्-म व लौ कानू ला यअ्-क़िलून (४२) व मिन्हुम् मंय्यन्ज़ुरु इलै-क ط अ-फ़-अन्-त तह्दिल्‌उ़म्-य व लौ कानू ला युब्सिरून (४३) इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमुन्ना-स शैअव्-व लाकिन्नन्ना-स अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (४४) व यौ-म यह्शुरुहुम् क-अल्लम् यल्बसू इल्ला सा-अ-तम्-मिनन्नहारि य-त-आ़रफ़ू-न बैनहुम् ط कद् ख़सिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिकाइल्लाहि व मा कानू मुह्तदीन (४५) व इम्मा नुरियन्न-क बअ्-ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-त-वफ़्फ़-यन्न-क फ-इलैना मर्जिउ़हुम् सुम्मल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा यफ-अ़लून (४६) व लिकुल्लि उम्मतिर्रसूलुन् फ़इज़ा जा-अ रसूलुहुम् क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्किस्ति व हुम् ला युज़्लमून (४७) व यकूलू-न मता हाज़ल्‌वअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिकीन (४८) कुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी ज़र्‌र्-व्-व ला नफ्-अन् इल्ला मा शाअल्लाहु ط लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन् ط इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् फ़ला यस्तअ्ख़िरू-न साअ-तंव्-व ला यस्तक़्दिमून (४९) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुहू बयातन् औ नहारम्-माज़ा यस्तअ्-जिलु मिन्हुल्-मुज्रिमून (५०)

مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۸﴾ بَلْ كَذَّبُوْا
بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۹﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿۴۰﴾
وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ
وَاَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ
تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ
تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ
شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ
يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۴۵﴾ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ
نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا
يَفْعَلُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ
بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ
اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ
لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۴۹﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

★रु. ४/६ आ १०

काबू नही पा सके, उस को (नादानी से) झुठला दिया और अभी इस की हकीकत उन पर खुली ही नही। इसी तरह जो लोग इन से पहले थे, उन्हो ने झुठलाया था, सो देख लो जालिमो का कैसा अंजाम हुआ। (३९) और इन मे से कुछ तो ऐसे है कि इस पर ईमान ले आते है और कुछ ऐसे है कि ईमान नही लाते। और तुम्हारा परवरदिगार शरीरो को खूब जानता है। (४०) ★

और अगर यह तुम्हे झुठलाएं, तो कह दो कि मुझ को मेरे अमल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे अमल (का)। तुम मेरे अमलो के जवाबदेह नही हो और मैं तुम्हारे अमलो का जवाबदेह नही हूं। (४१) और इन मे कुछ ऐसे है कि तुम्हारी तरफ कान लगाते है, तो क्या तुम बहरो को सुनाओगे, अगरचे कुछ भी (सुनते,) समझते न हो। (४२) और कुछ ऐसे है कि तुम्हारी तरफ देखते हैं, तो क्या तुम अधो को रास्ता दिखाओगे, अगरचे कुछ भी देखते (भालते) न हो।[1] (४३) खुदा तो लोगो पर कुछ जुल्म नही करता, लेकिन लोग ही अपने आप पर जुल्म करते है (४४) और जिस दिन खुदा उन को जमा करेगा (तो वे दुनिया के बारे मे ऐसा ख्याल करेगे कि) गोया (वहा) घडी भर दिन से ज्यादा रहे ही नही थे (और) आपस मे एक दूसरे को पहचानेगे भी। जिन लोगो ने खुदा के सामने हाज़िर होने को झुठलाया, वे घाटे मे पड गये और राहयाब न हुए। (४५) अगर हम कोई अज़ाब, जिस का इन लोगो मे वायदा करते है, तुम्हारी आखो के सामने (नाज़िल) करे या (इस वक्त, जब) तुम्हारी जिदगी की मुद्दत पूरी कर दे, तो उन को हमारे ही पास लौट कर आना है। फिर जो कुछ ये कर रहे है, खुदा उस को देख रहा है। (४६) और हर एक उम्मत की तरफ पैगम्बर भेजा गया, जब उन का पैगम्बर आता है, तो उन मे इसाफ के साथ फैसला कर दिया जाता है और उन पर कुछ जुल्म नही किया जाता। (४७) और ये कहते है कि अगर तुम सच्चे हो तो (जिस अजाब का) यह वायदा (है, वह आयेगा) कब ? (४८) कह दो कि मैं तो अपने नुक्सान और फायदे का भी कुछ अख्तियार नही रखता, मगर जो खुदा चाहे। हर एक उम्मत के लिए (मौत का) एक वक्त मुक़र्रर है। जब वह वक्त आ जाता है, तो एक घडी भी देर नही कर सकते और न जल्दी कर सकते है। (४९) कह दो कि भला देखो तो अगर उस का अजाब तुम पर (यकायक) आ जाए, रात को या दिन को, तो फिर गुनाहगार किस बात की जल्दी करेंगे। (५०) क्या जब वह आ

---

१ यानी उन का तुम्हारी तरफ कान लगाना या नजर करना उन को कुछ फायदा नही देगा, क्योंकि उन की मिसाल बहरो और अधो की-सी है कि न सुन सके, न देख सकें, खास तौर से इस हालत मे कि अक्ल और समझ से कोरे हो। बहरे को इशारे से समझा सकते है, अधे को आवाज से बता सकते हैं, मगर जो अक्ल ही न रखे, उस को किसी तरह समझाना भी नफा नही देता। मतलब यह है कि लोग न शौक और तवज्जोह से तुम्हारी बातो को सुनते हैं, न यकीन रखते हैं, इस लिए इन का हिदायत पाना कठिन है।

अ-सुम्-म इज़ा मा व-क-अ आमन्तुम् बिही ط आल्आ-न व क़द् कुन्तुम् बिही तस्तअ्-जिलून (५१) सुम्-म क़ी-ल लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अज़ाबल्-ख़ुल्दि हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला बिमा कुन्तुम् तक्सिबून (५२) व यस्तम्बिऊन-क अहक़्क़ुन् हु-व ط ▨ क़ुल् ई व रब्बी इन्नहू लहक़्क़ुन् ﴿ج﴾ ▨ व मा अन्तुम् बिमुअ्-जिज़ीन ✱ (५३) व लौ अन्-न लिकुल्लि नफ़्सिन् ज़-ल-मत् मा फ़िल्अर्ज़ि लफ़्-त-दत् बिही ط व असर्रुन्नदा-म-त लम्मा र-अवुल्-अज़ा-ब ج व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून (५४) अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط अला इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (५५) हु-व युह़्यी व युमीतु व इलैहि तुर्जअून (५६) या अय्युहन्नासु क़द् जा-अत्कुम् मौअि-ज़-तुम्-मिर्रब्बिकुम् व शिफ़ाउल्लिमा फ़िस्सुदूरि ५ व हुदव्-व रह्-मतुल्-लिल्मुअ्मिनीन (५७) क़ुल् बिफ़ज़्लिल्लाहि व बिरह़्मतिही फ़बिज़ालि-क फ़ल्-यफ़्रहू ط हु-व ख़ैरुम्मिम्मा यज्मअून (५८) क़ुल् अ-रऐतुम् मा अन्ज़-लल्लाहु लकुम् मिर्रिज़्क़िन् फ़-ज-अल्तुम् मिन्हु ह़रामव्-व ह़लालन् ط क़ुल् आल्लाहु अज़ि-न लकुम् अम् अ-लल्लाहि तफ़्तरून (५९) व मा ज़न्नुल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अलल्लाहिल्-कज़ि-ब यौमल्-क़ियामति ط इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़-लन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून ✱ (६०) व मा तकूनु फ़ी शअ्निव्-व मा तत्लू मिन्हु मिन् क़ुर्आनिव्-व ला तअ्-मलू-न मिन् अ़-मलिन् इल्ला कुन्ना अलैकुम् शुहूदन् इज् तुफ़ीज़ू-न फ़ीहि ط व मा यअ्-ज़ुबु अर्रब्बि-क मिम्मिस्क़ालि ज़र्रतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व ला अस्-ग़-र मिन् ज़ालि-क व ला अक्ब-र इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन (६१)

يونس ١٠ ١٤١ يعتذرون ١١

ماذا يستعجل منه المجرمون ۝ أثم إذا ما وقع آمنتم به آلآن
وقد كنتم به تستعجلون ۝ ثم قيل للذين ظلموا ذوقوا عذاب
الخلد هل تجزون إلا بما كنتم تكسبون ۝ ويستنبئونك أحق هو
قل إي وربي إنه لحق وما أنتم بمعجزين ۝ ولو أن لكل
نفس ظلمت ما في الأرض لافتدت به وأسروا الندامة لما رأوا
العذاب وقضي بينهم بالقسط وهم لا يظلمون ۝ ألا إن لله
ما في السماوات والأرض ألا إن وعد الله حق ولكن أكثرهم لا
يعلمون ۝ هو يحيي ويميت وإليه ترجعون ۝ يا أيها الناس قد
جاءتكم موعظة من ربكم وشفاء لما في الصدور وهدى
ورحمة للمؤمنين ۝ قل بفضل الله وبرحمته فبذلك فليفرحوا
هو خير مما يجمعون ۝ قل أرأيتم ما أنزل الله لكم من
رزق فجعلتم منه حراما وحلالا قل آلله أذن لكم أم على
الله تفترون ۝ وما ظن الذين يفترون على الله الكذب يوم
القيامة إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون ۝
وما تكون في شأن وما تتلو منه من قرآن ولا تعملون من
عمل إلا كنا عليكم شهودا إذ تفيضون فيه وما يعزب عن
ربك من مثقال ذرة في الأرض ولا في السماء ولا أصغر من

▨ व न बी स ▨ व न बी स ★ रु ५/१० आ १३ ★ रु ६/११ आ ७

जाएगा, तब उस पर ईमान लाओगे (उस वक्त कहा जाएगा कि) और अब (ईमान लाये ?) इसी के लिए तो तुम जल्दी मचाया करते थे। (५१) फिर जालिम लोगो से कहा जाएगा कि हमेशा के अजाब का मजा चखो। (अब) तुम उन्ही (आमाल) का बदला पाओगे, जो (दुनिया मे) करते रहे। (५२) और तुम से पूछते है कि क्या यह सच है ▨ कह दो, हा, खुदा की कसम ! सच है ▨ और तुम (भाग कर खुदा को) आजिज नही कर सकोगे ✯ (५३) और अगर हर एक ना-फरमान शख्स के पास धरती की तमाम चीजे हो तो (अजाब से बचने के) बदले मे (सब) दे डाले और जब वे अजाब देखेगे तो (पछताएंगे और) नदामत को छिपाएगे और उन मे इसाफ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और (किसी तरह का) उन पर जुल्म नही होगा। (५४) सुन रखो कि जो कुछ आसमानो और जमीन मे है, सब खुदा ही का है और यह भी सुन रखो कि खुदा का वायदा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (५५) वही जान बख्शता और (वही) मौत देता है और तुम लोग उसी की तरफ लौट कर जाओगे। (५६) लोगो ! तुम्हारे पास परवरदिगार की तरफ से नसीहत और दिलो की बीमारियो की शिफा और मोमिनो के लिए हिदायत और रहमत आ पहुची है। (५७) कह दो कि (यह किताब) खुदा के फज्ल और उस की मेहरबानी से (नाज़िल हुई है,) तो चाहिए कि लोग इस से खुश हो। यह उस से कही बेहतर है, जो वे जमा करते है। (५८) कहो कि भला देखो तो, खुदा ने तुम्हारे लिए जो रोजी उतारी, तो तुम ने उस मे से (कुछ को) हराम ठहराया और (कुछ को) हलाल, (उन से) पूछो, क्या खुदा ने तुम्हे इस का हुक्म दिया है या तुम खुदा पर झूठ गढते हो ? (५९) और जो लोग खुदा पर झूठ गढते है, वे कियामत के दिन के बारे मे क्या ख्याल रखते है ? बेशक खुदा लोगो पर मेहरबान है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नही करते। (६०) ✯

और तुम जिस हाल मे होते हो, या कुरआन मे से कुछ पढते हो, या तुम लोग कोई (और) काम करते हो, जब उस मे लग जाते हो, हम तुम्हारे सामने होते है और तुम्हारे परवरदिगार से जर्रा बराबर भी कोई चीज छिपी हुई नही है, न ज़मीन मे और न आसमान मे और न कोई चीज़ उस से छोटी है या बडी, मगर रोशन किताब मे (लिखी हुई) है। (६१) सुन रखो कि जो खुदा के

▨ व न वी स　▨ व न वी स　✯ रु ५/१० आ १३　✯ रु ६/११ आ ७

अला इन्-न औलिया-अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (६२) अल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तकून ط (६३) लहुमुल्बुश्रा फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्आखिरति ط ला तब्दी - ल लिकलिमातिल्लाहि ط ज़ालि-क हुवल्फ़ौज़ुल् - अज़ीम ط (६४) व ला यह्ज़ुन् - क क़ौलुहुम् ※

इन्नल्अिज़्ज़ - त लिल्लाहि जमीअ़न् ط हुवस्समीअ़ुल्-अलीम (६५) अला इन्-न लिल्लाहि मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि ط व मा यत्तबिअ़ुल्लज़ी - न यद-अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि शु - रका - अ ط इ य्यत्तबिअ़ू-न इल्लज़् - ज़न्-न व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून (६६) हुवल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्लै - ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल - लिक़ौमिय्यस्मअ़ून (६७) कालुत्त-ख़-ज़ल्लाहु व - ल - दन् सुब्हानहू ط हुवल्ग़निय्यु ط लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط इन् अिन्दकुम् मिन् सुल्तानिम्-बिहाज़ा ط अ तक़ूलू-न अ-लल्लाहि मा ला तअ्-लमून (६८) क़ुल् इन्नल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ-लल्लाहिल् - कज़ि - ब ला युफ़्लिहून ط (६९) मताअ़ुन् फ़िद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअ़ुहुम् सुम्-म नुज़ीक़ुहुमुल्-अ़ज़ाबश्शदी-द बिमा कानू यक्फ़ुरून ★ ● (७०) वत्लु अलैहिम् न-ब-अ नूहिन् ※ इज़् का-ल लिक़ौमिही या क़ौमि इन् का-न कबु-र अलैकुम् मक़ामी व तज़्कीरी बिआयातिल्लाहि फ़-अ-लल्लाहि त-वक्कल्तु फ़-अज्मिअ़ू अम्रकुम् व शुरका-अ कुम् सुम्-म ला यकुन् अम्रुकुम् अलैकुम् ग़ुम्म-तन् सुम्मक़्ज़ू इलय्-य व ला तुन्ज़िरून (७१) फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़मा स-अल्तुकुम् मिन् अज्रिन् ط इन् अज्रि-य इल्ला अलल्लाहि ۙ व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्-मुस्लिमीन (७२)

ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ۝ اَلَآ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ
وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا یَتَّقُوْنَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرٰی
فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَفِی الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِیْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۝ وَلَا یَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِیْعًا ؕ هُوَ
السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ۝ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ ؕ
وَمَا یَتَّبِعُ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ یَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا
الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا یَخْرُصُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ
لِتَسْكُنُوْا فِیْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ۝
قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِیُّ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِی الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَی اللّٰهِ مَا
لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا
یُفْلِحُوْنَ ۝ مَتَاعٌ فِی الدُّنْیَا ثُمَّ اِلَیْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِیْقُهُمُ
الْعَذَابَ الشَّدِیْدَ بِمَا كَانُوْا یَكْفُرُوْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَیْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ
اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ یٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَیْكُمْ مَّقَامِیْ وَتَذْكِیْرِیْ بِاٰیٰتِ
اللّٰهِ فَعَلَی اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْۤا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا یَكُنْ
اَمْرُكُمْ عَلَیْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْۤا اِلَیَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝ فَاِنْ تَوَلَّیْتُمْ
فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَی اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ

※ व लाज़िम ★ रु. ७/१२ आ १० ● सु. ३/४ ※ व लाज़िम

दोस्त है, उनको न कुछ ख़ौफ होगा और न वे गमनाक होगे। (६२) (यानी) वे जो ईमान लाये और परहेजगार रहे, (६३) उन के लिए दुनिया की ज़िंदगी मे भी ख़ुशख़बरी है और आख़िरत मे भी, ख़ुदा की बातें बदलती नही, यही तो बडी कामियाबी है। (६४) और (ऐ पैगम्बर !) उन लोगो की बातो मे गमजदा न होना (क्योकि) इज्जत सब ख़ुदा ही की है। वह (सब कुछ) सुनता (और) जानता है। (६५) सुन रखो कि जो मख़्लूक आसमानो मे है और जो लोग जमीन मे है, सब ख़ुदा ही के (बन्दे और उस के मख़्लूक) हैं और यह जो ख़ुदा के सिवा (अपने बनाए हुए) शरीको को पुकारते हैं, वे (किसी और चीज के) पीछे नही चलते, सिर्फ जन के पीछे चलते है और सिर्फ अटकले दौडा रहे है। (६६) वही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए रात बनायी, ताकि इस मे आराम करो और रोशन दिन बनाया, (ताकि उस मे काम करो) जो लोग सुनने (का माद्दा) रखते है, उन के लिए उन मे निशानिया है। (६७) (कुछ लोग) कहते हैं कि ख़ुदा ने बेटा बना लिया है। उस की ज़ात (औलाद से) पाक है (और) वह बे-नियाज है। जो कुछ आसमानो मे और जो कुछ ज़मीन मे है, सब उसी का है, (ऐ झूठ गढने वालो !) तुम्हारे पास इस (झूठी बात) की कोई दलील नही है। तुम ख़ुदा के बारे में ऐसी बात क्यो कहते हो जो जानते नही ? (६८) कह दो कि जो लोग ख़ुदा पर झूठ बुहतान बाधते है, फलाह (कामियाबी) नही पाएगे। (६९) उन के लिए जो फायदे हैं, दुनिया मे (है), फिर उन को हमारी ही तरफ लौट कर आना है। उस वक्त हम उन को कडे अजाब (के मजे) चखाएंगे, क्योकि कुफ़्र (की बाते) किया करते थे। (७०) ● ★

और उन को नूह का किस्सा पढ कर सुना दो जब उन्हो ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम ! अगर तुम को मेरा तुम मे रहना और ख़ुदा की आयतो से नसीहत करना ना-गवार हो, तो मैं तो ख़ुदा पर भरोसा रखता हू। तुम अपने शरीको के साथ मिल कर एक काम (जो मेरे बारे मे करना चाहो) मुकर्रर कर लो और वह तुम्हारी तमाम जमाअत (को मालूम हो जाए और किसी) से पोशीदा न रहे, फिर वह काम मेरे हक मे कर गुजरो और मुझे मुहलत न दो। (७१) और अगर तुम ने मुह फेर लिया तो (तुम जानते हो कि) मैंने तुम से कुछ मुआवजा नही मागा। मेरा मुआवज़ा तो ख़ुदा के जिम्मे है और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं फरमाबरदारो मे रहू। (७२) लेकिन उन लोगो ने

व लाज़िम ★रु. ७/१२ आ १० ●सु ३/४ व लाजिम

फ़-कज़्ज़बूहु फ़-नज्जैनाहु व मम्-म-अहू फ़िल्फ़ुल्कि व ज-अल्नाहुम् ख़लाइ-फ़ व अग्-रक़्-नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़िबतुल् - मुन्ज़रीन (७३) सुम्-म ब-अस्ना मिम्बअ्-दिही रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊ-हुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू बिही मिन् क़ब्लु कज़ालि-क नत्बअु अला क़ुलूबिल्- मुअ्-तदीन (७४) सुम्-म ब-अस्ना मिम्बअ्-दिहिम् मूसा व हारू-न इला फ़िर्औ - न व म-लइही बिआयातिना फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम् - मुज्रिमीन (७५) फ़ - लम्मा जा-अ-हुमुल् - हक़्क़ु मिन् अिन्दिना क़ालू इन्-न हाज़ा ल-सिह्रुम्-मुबीन (७६) क़ा-ल मूसा अ-तक़ूलू-न लिल्हक़्क़ि लम्मा जा - अकुम् अ-सिह्रुन् हाज़ा व ला युफ़्लिहुस् - साहिरून (७७) क़ालू अजिअ्तना लितल्फ़ि-तना अम्मा व-जद्ना अलैहि आबा-अना व तकू - न लकुमल्- किब्रियाउ फ़िल्अर्ज़ि व मा नह्नु लकुमा बिमुअ्मिनीन (७८) व क़ा-ल फ़िर्औनुअ्तूनी बिकुल्लि साहिरिन् अलीम (७९) फ़-लम्मा जा-अस्-स-ह-रतु क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़ून (८०) फ़-लम्मा अल्क़ौ क़ा - ल मूसा मा जिअ्तुम् बिहिस्सिह्रु इन्नल्ला - ह सयुब्तिलुहू इन्नल्ला-ह ला युस्लिहु अ-म-लल्मुफ़्सिदीन (८१) व युहिक़्क़ुल्लाहुल्-हक़्-क़ बिकलिमातिही व लौ करिहल् - मुज्रिमून ✱ (८२) फ़मा आम - न लिमूसा इल्ला ज़ुर्रिय्यतुम्-मिन् क़ौमिही अला ख़ौफ़िम्मिन् फ़िर्औ-न व मल-इहिम् अंय्यफ़्ति-नहुम् व इन्-न फ़िर्औ-न ल - आलिन् फ़िल्अर्ज़ि व इन्नहू लमिनल्मुस्रिफ़ीन (८३) व क़ा-ल मूसा या क़ौमि इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि फ़-अलैहि तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुस्लिमीन (८४)

أكون من المسلمين ۝ فكذبوه فنجيناه ومن معه في الفلك
وجعلناهم خلائف وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا فانظر كيف
كان عاقبة المنذرين ۝ ثم بعثنا من بعده رسلا إلى قومهم
فجاءوهم بالبينات فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا به من قبل
كذلك نطبع على قلوب المعتدين ۝ ثم بعثنا من بعدهم
موسى وهارون إلى فرعون وملإيه بآياتنا فاستكبروا وكانوا
قوما مجرمين ۝ فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا إن هذا
لسحر مبين ۝ قال موسى أتقولون للحق لما جاءكم أسحر
هذا ولا يفلح الساحرون ۝ قالوا أجئتنا لتلفتنا عما وجدنا
عليه آباءنا وتكون لكما الكبرياء في الأرض وما نحن لكما
بمؤمنين ۝ وقال فرعون ائتوني بكل ساحر عليم ۝ فلما
جاء السحرة قال لهم موسى ألقوا ما أنتم ملقون ۝ فلما ألقوا
قال موسى ما جئتم به السحر إن الله سيبطله إن الله لا
يصلح عمل المفسدين ۝ ويحق الله الحق بكلماته ولو كره
المجرمون ۝ فما آمن لموسى إلا ذرية من قومه على خوف
من فرعون وملإيهم أن يفتنهم وإن فرعون لعال في
الأرض وإنه لمن المسرفين ۝ وقال موسى يا قوم إن كنتم

★रु. ८/१३ आ १२

उनको झुठलाया, तो हमने उनको और जो लोग उनके साथ नाव मे मवार थे, सवको (तूफान मे) वचा लिया और उन्हे (जमीन मे) खलीफा बना दिया और जिन लोगो ने हमारी आयतो को झुठलाया, उन को गर्क कर दिया, तो (देख लो कि) जो लोग डराए गये थे, उन का कैसा अजाम हुआ। (७३) फिर नूह के बाद हम ने और पैगम्बर अपनी-अपनी कौम की तरफ भेजे, तो वे उन के पाम खुली निशानिया ले कर आये, मगर वे लोग ऐसे न थे कि जिस चीज को पहले झुठला चुके थे, उस पर ईमान ले आते। इसी तरह हम ज्यादती करने वालो के दिलो पर मुहर लगा देते है। (७४) फिर उन के वाद हम ने मूमा और हारून को अपनी निशानिया दे कर फिऔन और उस के सरदारो के पास भेजा, तो उन्हो ने तकव्बुर (घमंड) किया और व गुनाहगार लोग थे। (७५) तो जब उन के पास हमारे यहा से हक आया, तो कहने लगे कि यह खुला जादू है। (७६) मूसा ने कहा, क्या तुम हक के वारे मे, जव वह तुम्हारे पास आये, यह कहते हो कि यह जादू है, हालाकि जादूगर फलाह नही पाने के। (७७) वे वोले, क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि (जिस राह) पर हम अपने वाप-दादा को पाते रहे है, उस से हम को फेर दो और (इस) देश मे तुम दोनो ही की सरदारी हो जाए और हम तुम पर ईमान लाने वाले नही है। (७८) और फिऔन ने हुक्म दिया कि सव माहिर जादूगरो को हमारे पास ले आओ। (७९) जव जादूगर आये, तो मूसा ने उन मे कहा कि जो तुम को डालना हो, डालो। (८०) जव उन्हो ने (अपनी रस्सियो और लाठियो को) डाला तो मूसा ने कहा कि जो चीज़े तुम (वना कर) लाये हो, जादू है। खुदा इस को अभी नेस्त व नावूद कर देगा। खुदा शरीरो के काम सवारा नही करता। (८१) और खुदा अपने हुक्म से मच को सच ही कर देगा, अगरचे गुनाहगार बुरा ही माने। (८२) ★

तो मूसा पर कोई ईमान न लाया मगर उस की कौम मे मे कुछ लडके (और वह भी) फिऔन और उस के दरबारियो से डरते-डरते कि कही वह उन को आफत मे न फसा दे। और फिऔन मुल्क मे मुतकब्बिर व मुतगल्लिव और (कित्र व कुफ्र मे) हद से वढा हुआ था। (८३) और मूमा ने कहा कि भाइयो ! अगर तुम खुदा पर ईमान लाये हो तो अगर (दिल से) फरमावरदार हो तो उसी

★रु ८/१३ आ १२

फ़-क़ालू अ़-लल्लाहि त-वक्कल्ना ۚ रब्बना ला तज्-अ़ल्ना फ़ित-न-तल्लिल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन ۙ (८५) व नज्जिना बिरह्‌मति-क मिनल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन (८६) व औहैना इला मूसा व अख़ीहि अन-तबव्वआ लिक़ौमि-कुमा बिमिस्-र बुयूतंव्वज्अ़लू बुयूतकुम् क़िब्लतंव्-व अक़ीमुस्सला-त ۗ व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन (८७) व क़ा-ल मूसा रब्बना इन्न-क आतै-त फ़िर्औ-न व म-ल-अहू ज़ीनतंव्-व अम्वालन् फ़िल्-हयातिद्दुन्या ۙ रब्बना लियुज़िल्लू अ़न् सबीलि-क ۚ रब्बनत्मिस् अ़ला अम्वालिहिम् वश्दुद् अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़ला युअ्मिनू हत्ता य-र-वुल्-अ़ज़ाबल्-अलीम (८८) क़ा-ल क़द् उजीबद्दअ्-वतु-कुमा फ़स्तक़ीमा व ला तत्तबिआ़न्नि सबीलल्लज़ी-न ला यअ्-लमून (८९) व जावज़्ना बिबनी इस्राईलल्-बह्-र फ़-अत्ब-अहुम् फ़िर्औनु व जुनूदुहू बग़्यंव्-व अ़द्वन् ۗ हत्ता इज़ा अद्-र-कहुल्-ग़-रक़ु ۙ क़ा-ल आमन्तु अन्नहू ला इला-ह इल्लल्लज़ी आम-नत् बिही बनू इस्राई-ल व अ-न मिनल्-मुस्लिमीन (९०) आल्आ-न व क़द् अ़सै-त क़ब्लु व कुन्-त मिनल्-मुफ़्सिदीन (९१) फ़ल्यौ-म नुनज्जी-क बि-ब-दनि-क लितकू-न लिमन् ख़ल्फ़-क आयतन् ۗ व इन्-न कसीरम्-मिनन्नासि अ़न् आयातिना लग़ाफ़िलून ★ (९२) व ल-क़द् बव्वअ्ना बनी इस्राई-ल मुबव्व-अ सिद्क़िंव्-व र-ज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति ۚ फ़-मख़्त-लफ़ू हत्ता जा-अहुमुल्-अ़िल्मु ۗ इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (९३) फ़इन् कुन्-त फ़ी शक्किम्-मिम्मा अन्ज़ल्ना इलै-क फ़स्अलिल्लज़ी-न यक़्-रऊनल्-किता-ब मिन् क़ब्लि-क ۚ ल-क़द् जा-अकल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न मिनल्मुम्तरीन ۙ (९४)

آمنتم بالله فعليه توكلوا إن كنتم مسلمين ۝ فقالوا على
الله توكلنا ربنا لا تجعلنا فتنة للقوم الظلمين ۝ ونجنا
برحمتك من القوم الكفرين ۝ وأوحينا إلى موسى وأخيه أن
تبوا لقومكما بمصر بيوتا واجعلوا بيوتكم قبلة وأقيموا الصلوة
وبشر المؤمنين ۝ وقال موسى ربنا إنك آتيت فرعون و
ملأه زينة وأموالا في الحيوة الدنيا ربنا ليضلوا عن سبيلك
ربنا اطمس على أموالهم واشدد على قلوبهم فلا يؤمنوا حتى
يروا العذاب الأليم ۝ قال قد أجيبت دعوتكما فاستقيما و
لا تتبعان سبيل الذين لا يعلمون ۝ وجوزنا ببني إسراءيل
البحر فأتبعهم فرعون وجنوده بغيا وعدوا حتى إذا أدركه
الغرق قال آمنت أنه لا إله إلا الذي آمنت به بنوا إسراءيل
وأنا من المسلمين ۝ آلئن وقد عصيت قبل وكنت من
المفسدين ۝ فاليوم ننجيك ببدنك لتكون لمن خلفك
آية وإن كثيرا من الناس عن آيتنا لغفلون ۝ ولقد بوأنا
بني إسراءيل مبوأ صدق ورزقنهم من الطيبت فما
اختلفوا حتى جاءهم العلم إن ربك يقضي بينهم يوم
القيمة فيما كانوا فيه يختلفون ۝ فإن كنت في شك مما

★रु ९/१४ आ १०

पर भरोसा रखो। (८४) तो बोले कि हम खुदा ही पर भरोसा रखते है। ऐ हमारे परवरदिगार! हम को ज़ालिम लोगो के हाथ से आजमाइश मे न डाल। (८५) और अपनी रहमत से काफिरो की कौम से निजात बख्श। (८६) और हम ने मूसा और उस के भाई की तरफ वह्य भेजी कि अपने लोगो के लिए मिस्र मे घर बनाओ और अपने घरो को किब्ला (यानी मस्जिदे) ठहराओ और नमाज पढो और मोमिनो को खुशखबरी सुना दो। (८७) और मूसा ने कहा, ऐ परवरदिगार! तू ने फिऔन और उस के सरदारो को दुनिया की जिंदगी मे (बहुत-सा) साज़ व सामान, धन-दौलत दे रखा है, ऐ परवरदिगार! इन का मआल (अजाम) यह है कि तेरे रास्ते से गुमराह कर दे। ऐ परवरदिगार! इन के माल को बर्बाद कर दे और इन के दिलो को सख्त कर दे कि ईमान न लाएं, जब तक दर्दनाक अजाब न देख ले। (८८) (खुदा ने) फरमाया कि तुम्हारी दुआ कुबूल कर ली गयी, तो तुम साबित-कदम रहना और बे-अक्लो के रास्ते न चलना। (८९) और हम ने बनी इस्राईल को दरिया मे पार कर दिया, तो फिऔन और उस के लश्कर ने सरकशी और तअद्दी से उन का पीछा किया, यहा तक कि जब उस को गर्क (के अजाब) ने आ पकडा तो कहने लगा, मै ईमान लाया कि जिस (खुदा) पर वनी इस्राईल ईमान लाये हैं, उस के सिवा कोई माबूद नही, और मैं फरमाबरदारो मे हू। (९०) (जवाब मिला कि) अब (ईमान लाता है,) हालाकि तू पहले नाफ़रमानी करता रहा और फसाद फैलाने वाला बना रहा? (९१) तो आज हम तेरे बदन को (दरिया से) निकाल लेंगे, ताकि तू पिछलो के लिए इबरत (सबक) हो और बहुत से लोग हमारी निशानियो से बे-खबर है। (९२) ★

और हम ने वनी इस्राईल को रहने को उम्दा जगह दी और खाने को पाकीजा चीजे अता की, लेकिन वह बावजूद इल्म हासिल होने के इख्तिलाफ करते रहे। बेशक जिन बातो मे वे इख्तिलाफ करते रहे है, तुम्हारा परवरदिगार! कियामत के दिन उन मे उन बातो का फैसला कर देगा। (९३) अगर तुम को इस (किताब के) बारे मे, जो हम ने तुम पर नाजिल की है, कुछ शक हो, तो जो लोग तुम से पहले की (उतरी हुई) किताबें पढते है, उन से पूछ लो। तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास हक आ चुका है, तो तुम हरगिज शक करने वालो मे न होना। (९४) और न उन लोगो मे

★रु ९/१४ आ १०

व ला तकूनन्-न मिनल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि फ़-तकू-न मिनल्ख़ासिरीन (९५) इन्नल्लज़ी-न हक़्क़त् अ़लैहिम् कलिमतु रब्बि-क ला युअ्मिनून (९६) व लौ जा-अत्हुम् कुल्लु आयतिन् हत्ता य-रवुल्-अ़ज़ाबल्-अलीम (९७) फ़-लौला कानत् कर्यतुन् आम-नत् फ़-न-फ़-अहा ईमानुहा इल्ला

أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِينَ يَقْرَءُونَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَآءَكَ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُونَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٩٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ
حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ
اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ
فَنَفَعَهَآ إِيمَانُهَآ إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّآ اٰمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ
الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ إِلٰى حِينٍ ﴿٩٨﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ
لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى
يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٩٩﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ
اللّٰهِ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾ قُلِ انْظُرُوا
مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ
قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوٓا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٢﴾
ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ اٰمَنُوا كَذٰلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾
قُلْ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي فَلَآ أَعْبُدُ الَّذِينَ
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ أَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِي يَتَوَفّٰىكُمْ وَ
أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٤﴾ وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ

क़ौ-म यूनुस ط लम्मा आमनू क-शफ़्ना अ़न्हुम् अ़ज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्-हयातिद्दुन्या व मत्तअ्-नाहुम् इला हीन (९८) व लौ शा-अ रब्बु-क ल-आम-न मन् फ़िल्अर्ज़ि कुल्लुहुम् जमीअ़न् ط अ-फ़-अन्-त तुक्रिहुन्ना-स हत्ता यकूनू मुअ्मिनीन (९९) व मा का-न लिनफ़्सिन् अन् तुअ्मि-न इल्ला बिइज़्निल्लाहि ط व यज्अ़लुर्रिज-स अ़-लल्लज़ी-न ला यअ्-क़िलून (१००) क़ुलिन्ज़ुरू माज़ा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व मा तुग़्निल्-आयातु वन्नुज़ुरु अन् क़ौमिल्-ला युअ्मिनून (१०१) फ़-हल् यन्तज़िरू-न इल्ला मिस्-ल अय्यामिल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिहिम् ط क़ुल् फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन (१०२) सुम्-म नुनज्जी रुसुलना वल्लज़ी-न आमनू कज़ालि-क ج हक़्क़न् अ़लैना नुन्जिल्-मुअ्मिनीन ★ (१०३) क़ुल् या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी शक्किम्-मिन् दीनी फ़ला अअ्-बुदुल्लज़ी-न तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् अअ्-बुदुल्लाहल्लज़ी य-त-वफ़्फ़ाकुम् ج व उमिरतु अन् अकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन ﻻ (१०४) व अन् अक़िम् वज्ह-क लिद्दीनि हनीफ़न् ج व ला तकूनन्-न मिनल्-मुश्रिकीन (१०५)

★रु. १०/१५ आ ११

होना, जो ख़ुदा की आयतो को झुठलाते है, नही तो नुक्सान उठाओगे। (९५) जिन लोगो क वारे मे ख़ुदा (के अज़ाब) का हुक्म करार पा चुका है, वे ईमान नही लाने के, (९६) जव तक कि दर्दनाक अज़ाव न देख ले, चाहे उन के पास हर (तरह की) निशानी आ जाए। (९७) तो कोई वस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान लाती तो उस का ईमान उसे नफा देता, हा, यूनुस की कौम कि जव ईमान लायी तो हम ने दुनिया की जिंदगी मे उन से जिल्लत का अजाव दूर कर दिया और एक मुद्दत तक (दुनिया के फायदो से) उन को नवाज़ा। (९८) और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो जितने लोग जमीन पर है, सब के सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगो पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो कि वे मोमिन हो जाएं। (९९) हालाकि किसी शख़्स को कुदरत नही है कि ख़ुदा के हुक्म के बगैर ईमान लाये और जो लोग बे-अक्ल है, उन पर वह (कुफ्र व जिल्लत) की नजासत डालता है। (१००) (इन कुफ्फार से) कहो कि देखो तो आसमानो और जमीन मे क्या-क्या कुछ है, मगर जो लोग ईमान नही रखते, उन की निशानिया और डरावे कुछ काम नही आते। (१०१) जैसे (बुरे) दिन इन से पहले लोगो पर गुज़र चुके है। उसी तरह के (दिनो के) ये इन्तिजार मे है। कह दो कि तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिजार करता हू। (१०२) और हम अपने पैगम्बरो को और मोमिनो को निजात देते रहे है। इसी तरह हमारा ज़िम्मा है कि मुसलमानो को निजात दे। (१०३)★

(ऐ पैगम्बर !) कह दो कि लोगो ! अगर तुम को मेरे दीन मे किसी तरह का शक हो तो (सुन रखो कि) जिन लोगो की तुम ख़ुदा के सिवा इबादत करते हो, मैं उन की तो इबादत नही करता, बल्कि मैं ख़ुदा की इबादत करता हू जो तुम्हारी रूहे कब्ज़ कर लेता है और मुझ को यही हुक्म हुआ है कि ईमान लाने वालो मे हू। (१०४) और यह कि (ऐ मुहम्मद ! सव से) यकसू होकर (इस्लाम) दीन की पैरवी किए जाओ और मुश्रिको मे हरगिज़ न होना। (१०५) और ख़ुदा को

★रु. १०/१५ आ ११

व ला तद्अु मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अु-क व ला यज़ुर्रु-क ج फ-इन् फ-अ़ल्-त फ़इन्न-क इज़म्-मिनज़्ज़ालिमीन (१०६) व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फला काशि-फ लहू इल्ला हु-व ج व इंय्युरिद-क बिख़ैरिन् फला राद-द लिफज़्लिही ط युसीबु बिही मंय्यशाउ मिन् अिबादिही ط व हुवल् गफूरुर्रहीम (१०७) कुल् या अय्युहन्नासु कद् जा-अकुमुल्हक़्कु मिर्रब्बिकुम् ج फ़-मनिह्तदा फ-इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही ج व मन् ज़ल्-ल फ-इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा ج व मा अ-न अलैकुम् बिवकील ط (१०८) वत्तबिअ्- मा यूहा इलै-क वस्बिर् हत्ता यह्कुमल्लाहु ج व हु-व ख़ैरुल्हाकिमीन ★(१०९)

حنيفا ولا تكونن من المشركين ﴿١٠٥﴾ ولا تدع من دون الله ما
لا ينفعك ولا يضرك فإن فعلت فإنك إذا من الظالمين ﴿١٠٦﴾ وإن
يمسسك الله بضر فلا كاشف له إلا هو وإن يردك بخير فلا راد
لفضله يصيب به من يشاء من عباده وهو الغفور الرحيم ﴿١٠٧﴾
قل يا أيها الناس قد جاءكم الحق من ربكم فمن اهتدى
فإنما يهتدي لنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها و
ما أنا عليكم بوكيل ﴿١٠٨﴾ واتبع ما يوحى إليك واصبر حتى
يحكم الله وهو خير الحاكمين ﴿١٠٩﴾
سورة هود مكية وهي مائة وثلاث وعشرون آية وعشر ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
الر كتاب أحكمت آياته ثم فصلت من لدن حكيم خبير ﴿١﴾ ألا
تعبدوا إلا الله إنني لكم منه نذير وبشير ﴿٢﴾ وأن استغفروا ربكم
ثم توبوا إليه يمتعكم متاعا حسنا إلى أجل مسمى ويؤت
كل ذي فضل فضله وإن تولوا فإني أخاف عليكم عذاب
يوم كبير ﴿٣﴾ إلى الله مرجعكم وهو على كل شيء قدير ﴿٤﴾
ألا إنهم يثنون صدورهم ليستخفوا منه ألا حين يستغشون
ثيابهم يعلم ما يسرون وما يعلنون إنه عليم بذات الصدور ﴿٥﴾

११ सूरतु हूदिन् ५२

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ७६२४ अक्षर, १९३६ शब्द, १२३ आयते और १० रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ् - लाम् - रा قف किताबुन् उह्किमत् आयातुहू सुम्-म फ़ुस्सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् खबीर لا (१) अल्ला तअ्-बुदू इल्लल्ला-ह ط इन्ननी लकुम् मिन्हु नजीरुव्-व बशीरुव- لا (२) व अनिस्तग्फिरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युमत्तिअ-कुम् मताअन् ह-स-नन् इला अ-जलिम्-मुसम्मव्-व युअ्ति कुल-ल ज़ी फज़्लिन् फ़ज़्लहू ط व इन् त-वल्लौ फइन्नी अख़ाफु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् कबीर (३) इलल्लाहि मर्जिअुकुम् ج व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर (४) अला इन्नहुम् यस्नू-न सुदूरहुम् लि-यस्तख़्फ़ू मिन्हु ط अला ही-न यस्तग्शू - न सियाबहुम् لا यअ्-लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्-लिनू-न ج इन्नहू अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (५)

★रु ११/१६ आ ६

छोड कर ऐसी चीज को न पुकारना, जो न तुम्हारा कुछ भला कर सके और न कुछ बिगाड
अगर ऐसा करोगे, तो जालिमो मे हो जाओगे। (१०६) और अगर ख़ुदा तुम को कोई त
पहुचाए, तो उस के सिवा इस का कोई दूर करने वाला नही और अगर तुम से भलाई करनी चा
उस के फ़ज्ल को कोई रोकने वाला नही। वह अपने बन्दो मे से, जिसे चाहता है फायदा पहुचा
है और वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (१०७) कह दो कि लोगो! तुम्हारे परवरदिगार के य
तुम्हारे पास हक आ चुका है, तो जो कोई हिदायत हासिल करता है, तो हिदायत से अपने ही
भलाई करता है और जो गुमराही अख़्तियार करता है, तो गुमराही से अपना ही नुक्सान कर
और मैं तुम्हारा वकील नही हू। (१०८) और (ऐ पैगम्बर!) तुम को जो हुक्म भेजा जा
उस की पैरवी किये जाओ और (तक्लीफो पर) सब्र करो, यहा तक कि ख़ुदा फ़ैसला कर दे
सब से बेहतर फैसला करने वाला है। (१०९) ★

११ सूरः हूद ५२

सूर हूद मक्की है और इस मे एक सौ तेईस आयतें और दस रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-रा, यह वह किताब है, जिस की आयतें मुस्तहकुम है और हकीम व ख़बीर
की तरफ से तफ्सील से बयान कर दी गयी है, (१) (वह यह) कि ख़ुदा के सिवा किसी की इ
न करो और मैं उस की तरफ से तुम को डर सुनाने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हू। (२)
यह कि अपने परवरदिगार से बख़्शिश मागो और उस के आगे तौबा करो। वह तुम को एक मु
वक्त तक नेक पूजी से बहरा मंद करेगा (नवाजेगा) और हर बुज़ुर्गी वाले को उस की बुज़ुर्गी
दाद) देगा और अगर रू-गरदानी करोगे तो मुझे तुम्हारे बारे में (कियामत के) बड़े दिन के अ
का डर है। (३) तुम (सब) को ख़ुदा की तरफ लौट कर जाना है और वह हर चीज़ पर क
है। (४) देखो, यह अपने सीनो को दोहरा करते है, ताकि ख़ुदा से पर्दा करे। सुन रखो, जिस
ये कपडो मे लिपट कर पडते है (तब भी) वह उन की छिपी और खुली बातो को जानता है। व

बारहवां पारः व मा मिन् दाब्बतिन्

सूरतु हूदिन् आयत ६ से १२३

व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्जि इल्ला अ-लल्लाहि रिज-कुहा व यअ्-लमु मुस्तकर्रहा व मुस्तौद-अहा कुल्लुन् फ़ी किताबिम्-मुबीन (६) व हु-वल्लज़ी ख-ल-कस्समावाति वल्अर-ज़ फी सित्तति अय्यामिव्-व का-न अर्शुहू अ-लल्माइ लि-यब-लुवकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ-म-लन्, व लइन् कुल्-त इन्नकुम् मब्अूसू-न मिम्बअ्-दिल्-मौति ल-यकूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्मुबीन (७) व लइन् अख़्ख़र्ना अन्हुमुल्-अज़ा-ब इला उम्मतिम्-मअ-दूदतिल्-ल-यकूलुन-न मा यह्बिसुहू, अला यौ-म यअ्तीहिम् लै-स मस्रूफन् अन्हुम् व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (८) व लइन् अ-ज़क्-नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्-म-तन् सुम्-म न-ज़अ्-नाहा मिन्हु, इन्नहू ल-यऊसुन् कफूर (९) व लइन् अ-ज़क्नाहु नअ्-मा-अ बअ्-द ज़र्रा-अ मस्सत्हु ल-यकूलन्-न ज़-ह-बस्सय्यिआतु अ़न्नी, इन्नहू ल-फरिहुन् फख़ूर (१०) इल्लल्लज़ी-न स-बरू व अमिलुस्सालिहाति, उलाइ-क लहुम् मग्फि-रतुव्-व अज्रुन् कबीर (११) फ ल-अल्ल-क तारिकुम्बअ्-ज मा यूहा इलै-क व ज़ाइ-कुम्-बिही सद्रु-क अय्यकूलू लौला उन्जि-ल अलैहि कन्ज़ुन् औ जा-अ म-अहू म-लकुन्, इन्नमा अन्-त नज़ीरुन्, वल्लाहु अला कुल्लि शैइव्-वकील (१२) अम् यकूलूनफ्तराहु, कुल् फअ्तू बिअश्रि सु-वरिम्-मिस्लिही मुफ्त-र-यातिंव्वद्अू मनिस-त-तअ्-तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१३) फइल्लम् यस्तजीबू लकुम् फअ्-लमू अन्नमा उन्जि-ल बिअिल्मिल्लाहि व अल्ला इला-ह इल्ला हु-व फ-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (१४)

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا
وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتٰبٍ مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ
أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِنْ قُلْتَ إِنَّكُمْ مَّبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ
الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ
لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ وَ
لَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَـُٔوسٌ كَفُورٌ ۝
وَلَئِنْ أَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّـَٔاتُ
عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ أُولٰٓئِكَ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ
وَضَآئِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَآءَ مَعَهُ
مَلَكٌ إِنَّمَآ أَنْتَ نَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيلٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ
افْتَرٰىهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ
مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝ فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا
أَنَّمَآ أُنْزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ۝
مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا

★रु १/१ आ ८

दिलो तक की बातो से आगाह है। (५) और ज़मीन पर कोई चलने-फिरने वाला नही, मगर उस की रोजी ख़ुदा के ज़िम्मे है, वह जहा रहता है, उसे भी जानता है और जहा सौपा जाता है, उसे भी। यह सब कुछ रोशन किताब मे (लिखा हुआ) है। (६) और वही तो है जिस ने आसमानो और ज़मीन को छ दिनो मे बनाया और (उस वक्त) उस का अर्श पानी पर था। (तुम्हारे पैदा करने से) मक्सूद यह है कि वह तुम को आज़माये कि तुम मे अमल के लिहाज से कौन बेहतर है और अगर तुम कहो कि तुम लोग मरने के बाद (ज़िंदा कर के) उठाए जाओगे, तो काफिर कह देगे कि यह तो खुला जादू है। (७) और अगर एक तै मुद्दत तक हम उन पर अज़ाब को रोक दे, तो कहेगे कि कौन-सी चीज अजाब को रोके हुए है। देखो, जिस दिन वह उन पर वाकेअ होगा, (फिर) टलने का नही और जिस चीज़ का मज़ाक उडाया करते है. वह उन को घेर लेगी। (८) ✱

और अगर हम इंसान को अपने पास से नेमत बख्शे, फिर उस से उसको छीन लें, तो ना-उम्मीद (और) ना-शुक्रा (हो जाता) है। (९) और अगर तक्लीफ पहुचने के बाद आसाइश (आराम, सुख) का मज़ा चखाएं, तो (खुश हो कर) कहता है कि (आ-हा) सब सख्तिया मुझ से दूर हो गयी। बेशक वह खुशिया मनाने वाला (और) फख्र करने वाला है। (१०) हा, जिन्हो ने सब्र किया और नेक अमल किये, यही हैं जिन के लिए बख्शिश और बडा बदला है। (११) शायद तुम कुछ चीज़ वह्य मे से जो तुम्हारे पास आती है, छोड दो और इस (ख्याल) से तुम्हारा दिल तग हो कि (काफिर) यह कहने लगे कि उस पर कोई खजाना क्यो नही नाज़िल हुआ या उस के साथ कोई फरिश्ता क्यो नही आया ? ऐ मुहम्मद ! तुम तो सिर्फ नसीहत करने वाले हो और ख़ुदा हर चीज़ का निगेहबान है। (१२) ये क्या कहते है कि इस ने कुरआन खुद से बना लिया है ? कह दो कि अगर सच्चे हो तो तुम भी ऐसी दस सूरते बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जिस-जिस को बुला सकते हो, बुला भी लो। (१३) अगर वे तुम्हारी बात कुबूल न करे तो जान लो कि वह ख़ुदा के इल्म मे उतरा है और यह कि उस के सिवा कोई माबूद नही, तो तुम्हे भी इस्लाम ले आना चाहिए।[1] (१४)

---

१ यह आम लोगो से खिताब है, जो इस्लाम नही लाते थे, यानी जब कुरआन मजीद का यह एजाज देख चुके हो कि कोई शख्स ऐसा कलाम नही बना सकता, तो तुम को भी उसे मानना चाहिए कि ख़ुदा का कलाम है और इस्लाम ले आना चाहिए।

★रु १/१ आ ८

मन् का-न युरीदुल्-हयातद्दुन्या व जी-न-तहा नुवफ़्फ़ि इलैहिम् अअ्-मालहुम् फ़ीहा व हुम् फ़ीहा ला युब्ख़सून (१५) उलाइकल्लजी-न लै-स लहुम् फ़िल्आख़िरति इल्लन्नारु व हबि-त मा स-नअू फ़ीहा व बातिलुम्मा कानू यअ्-मलून (१६) अ-फ-मन् का-न अला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बिही व यत्लूहु शाहिदुम्-मिन्हु व मिन् कब्लिही किताबु मूसा इमामव्-व रह्-म - तन् ط उलाइ - क युअ्मिनू - न बिही ط व मय्यक्फुर् बिही मिनल् - अह्ज़ाबि फ़न्नारु मौअिदुहू फ़ला-तकु फ़ी मिर्यतिम् - मिन्हु ق इन्नहुल्-हक्कु मिर्रब्बि-क व लाकिन-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (१७) व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ्तरा अ-लल्लाहि कज़िबन् ط उलाइ-क युअ्-रज़ू-न अला रब्बिहिम् व यकूलुल्-अश्हादु हाउलाइल्लजी-न क-ज़बू - अला रब्बिहिम् अला लअ्-नतुल्लाहि अ-लज़्ज़ालिमीन (१८) अल्लजी-न यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि व यब्गूनहा अि-व-जन् ط व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून (१९) उलाइ-क लम् यकूनू मुअजिजी-न फ़िल्अर्जि व मा का-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ ▨ युज़ा-अफु लहुमुल्-अज़ाबु ط मा कानू यस्ततीअूनस्सम्-अ व मा कानू युब्सिरून (२०) उलाइकल्लजी-न ख़सिरू अन्फु-सहुम् व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून (२१) ला ज-र-म अन्नहुम् फ़िल्आख़िरति हुमुल्-अख़्सरून (२२) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व अख़्-बतू इला रब्बिहिम् ۙ उलाइ - क अस्हाबुल् - जन्नति ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२३) म-सलुल्-फ़रीकैनि कल्-अअ्-मा वल्-असम्मि वल्बसीरि वस्समीअि ط हल् यस्तवियानि म-स-लन् ط अ-फ़ला तज़क्करून ★ (२४) व ल-कद् अर्-सल्ना नूहन् इला कौमिही ز इन्नी लकुम् नज़ीरुम् - मुबीन ۙ (२५)

وهم فيها لا يبخسون ۝ أولئك الذين ليس لهم في الآخرة
إلا النار وحبط ما صنعوا فيها وباطل ما كانوا يعملون ۝ أفمن
كان على بينة من ربه ويتلوه شاهد منه ومن قبله كتب
موسى إماما ورحمة أولئك يؤمنون به ومن يكفر به من
الأحزاب فالنار موعده فلا تك في مرية منه إنه الحق من
ربك ولكن أكثر الناس لا يؤمنون ۝ ومن أظلم ممن افترى
على الله كذبا أولئك يعرضون على ربهم ويقول الأشهد هؤلاء
الذين كذبوا على ربهم ألا لعنة الله على الظلمين ۝ الذين
يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا وهم بالآخرة هم
كفرون ۝ أولئك لم يكونوا معجزين في الأرض وما كان لهم
من دون الله من أولياء يضعف لهم العذاب ما كانوا يستطيعون
السمع وما كانوا يبصرون ۝ أولئك الذين خسروا أنفسهم و
ضل عنهم ما كانوا يفترون ۝ لا جرم أنهم في الآخرة هم
الأخسرون ۝ إن الذين آمنوا وعملوا الصلحت وأخبتوا إلى
ربهم أولئك أصحب الجنة هم فيها خلدون ۝ مثل الفريقين
كالأعمى والأصم والبصير والسميع هل يستويان مثلا أفلا
تذكرون ۝ ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه إني لكم نذير مبين

▨ व लाज़िम ★ रु २/२ आ १६

जो लोग दुनिया की जिंदगी और उस की जेब व जीनत के तालिब हो, हम उन के आमाल का बदला उन्हे दुनिया ही मे दे देते है और इस मे उन का हक नही मारा जाता। (१५) ये वह लोग है, जिनके लिए आखिरत मे (जहन्नम की) आग के सिवा और कुछ नहो और जो अमल उन्हो ने दुनिया मे किए, सब बर्बाद और जो कुछ वे करते रहे, सब झूठ। (१६) भला जो लोग अपने परवरदिगार की तरफ से (रोशन) दलील रखते हो और उन के साथ एक (आसमानी) गवाह भी उस की तरफ मे हो और उस से पहले मूसा की किताब हो, जो पेशवा और रहमत है, (तो क्या वे कुरआन पर ईमान नही लाएगे ?) यही लोग तो उस पर ईमान लाते है। और जो कोई और फिर्को मे से इस का इकारी हो, तो उस का ठिकाना आग है तो तुम इस (कुरआन) से शक मे न होना, यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नही लाते। (१७) और इस से बढ कर जालिम कौन होगा, जो खुदा पर झूठ गढे, ऐसे लोग खुदा के सामने पेश किए जाएगे और गवाह कहेगे कि यही लोग है, जिन्हो ने अपने परवरदिगार पर झूठ बोला था, सुन रखो कि जालिमो पर खुदा की लानत है। (१८) जो खुदा के रास्ते से रोकते है और उस मे टेढ चाहते है और वे आखिरत से भी इकार करते है, (१९) ये लोग जमीन मे (कही भाग कर खुदा को) हरा नही सकते और न खुदा के सिवा कोई उन का हिमायती है, (ऐ पैगम्बर !) उन को दोगुना अजाब दिया जाएगा, क्योकि ये (कुफ्र की ज्यादती की वजह से तुम्हारी बात) नही सुन सकते थे और न (तुम को) देख सकते थे। (२०) यही है जिन्होने अपने आपको घाटे मे डाला और जो कुछ ये गढा करते थे, उनसे जाता रहा। (२१) बिला शुब्हा ये लोग आख़िरत मे सब से ज्यादा नुक्सान पाने वाले है। (२२) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये और अपने परवरदिगार के आगे आजिज़ी की, यही जन्नत वाले है, हमेशा उस मे रहेगे। (२३) दोनो फिर्कों (यानी काफिर व मोमिन) की मिसाल ऐसी है, जैसे एक अंधा-बहरा हो और एक देखता-सुनता, भला दोनो का हाल बराबर हो सकता है ? फिर तुम सोचते क्यो नही ? (२४) ★

और हम ने नूह को उन की कौम की तरफ भेजा (तो उन्हो ने उन से कहा) कि मैं तुम को खोल-खोल कर डर सुनाने (और यह पैगाम पहुचाने) आया हू, (२५) कि खुदा के सिवा किसी की

व लाज़िम ★रु २/२ आ १६

अल्ला तअ्-बुदू इल्लल्ला-ह ط इन्नी अख़ाफु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् अलीम (२६) फ-कालल्-म-ल-उल्लज़ी-न क-फरू मिन् कौमिही मा नरा-क इल्ला ब-श-रम्-मिस्-लना व मा नराकत्-त-ब-अ-क इल्लल्लज़ी-न हुम् अराज़िलुना बादियर्रअ्यि ج व मा नरा लकुम् अलैना मिन् फज़्लिम्-बल् नज़ुन्नुकुम् काज़िबीन (२७) का-ल या कौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व आतानी रह - म - तम् - मिन् अिन्दिही फ - अुम्मियत् अलैकुम् ط अनुल्ज़िमुकुमू - हा व अन्तुम् लहा कारिहून (२८) व या कौमि ला अस् - अलुकुम् अलैहि मालन् ط इन् अज्रि-य इल्ला अ-लल्लाहि व मा अ-न बितारिदिल्लज़ी - न आमनू ط इन्नहुम् मुलाकू रब्बिहिम् व लाकिन्नी अराकुम् कौमन् तज्-हलून (२९) व या कौमि मय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् तरत्तुहुम् ط अ-फला त-ज़क्करून (३०) व ला अकूलु लकुम् अिन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ्-लमुल्-ग़ै-ब व ला अकूलु इन्नी मलकुं व्-व ला अकूलु लिल्लज़ी-न तज़्दरी अअ्-युनुकुम् लंय्युअ्ति-य-हुमुल्लाहु ख़ैरन् ط अल्लाहु अअ् - लमु बिमा फ़ी अन्फुसिहिम् ج इन्नी इज़ल्-लमिनज्-ज़ालिमीन (३१) कालू या नूहु कद् जादल्-तना फ-अक्सर्-त जिदालना फ़अ्-तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (३२) क़ा-ल इन्नमा यअ्तीकुम् बिहिल्लाहु इन् शा-अ व मा अन्तुम् बिमुअ्-जिज़ीन (३३) व ला यन्फ़अुकुम् नुस्ही इन् अरत्तु अन् अन्स-ह लकुम् इन् कानल्लाहु युरीदु अंय्युग्वि - य - कुम् ط हु - व रब्बुकुम् व इलैहि तुर्जअून ط (३४) अम् यकूलूनफ्तराहु ط कुल् इनिफ़्तरैतुहू फ-अ-लय् - य इज्रामी व अ-न बरीउम् - मिम्मा तुज्रिमून (३५) ★

أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝ فَقَالَ
الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ
اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا
مِن فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن
كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً مِّنْ عِندِهِ فَعُمِّيَتْ
عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنتُمْ لَهَا كَارِهُونَ ۝ وَيَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ
عَلَيْهِ مَالًا إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا
إِنَّهُم مُّلَاقُو رَبِّهِمْ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ۝ وَيَا قَوْمِ مَن
يَنصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِن طَرَدتُّهُمْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ وَلَا أَقُولُ
لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ
وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَن يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ
أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنفُسِهِمْ إِنِّي إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ۝ قَالُوا يَا نُوحُ
قَدْ جَادَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ
الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ اللَّهُ إِن شَاءَ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ۝
وَلَا يَنفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدتُّ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِن كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ
أَن يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ
قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيَّ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ۝

★रु ३ /३ आ ११

इबादत न करो। मुझे तुम्हारे बारे मे दर्दनाक अजाब का डर है। (२६) तो उन की कौम के सरदार, जो काफिर थे, कहने लगे कि हम तुम को अपने ही जैसा एक आदमी देखते है और यह भी देखते है कि तुम्हारी पैरवी करने वाले वही लोग हुए है, जो हम मे निचले दर्जे के है और वह भी ज़ाहिर राय से (न कि गौर व फिक्र से) और हम तुम मे अपने ऊपर किसी तरह की फज़ीलत नही देखते, बल्कि तुम्हे झूठा ख्याल करते है। (२७) उन्हो ने कहा कि ऐ कौम ! देखो तो अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ से (रोशन) दलील रखता हूं और उस ने मुझे अपने यहा से रहमत बख्शी हो, जिस की हकीकत तुम से छिपा रखी गयी है, तो क्या हम इस के लिए तुम्हे मजबूर कर सकते है और तुम हो कि उस से ना-खुश हो रहे हो। (२८) और ऐ कौम ! मैं इस (नसीहत) के बदले तुम से माल व जर की ख्वाहिश नही रखता हू, मेरा बदला तो खुदा के जिम्मे है और जो लोग ईमान लाए हैं, मैं उन को निकालने वाला भी नही हू। वह तो अपने परवरदिगार से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हू कि तुम लोग ना-दानी कर रहे हो। (२९) और ऐ मेरी कौम के लोगो ! अगर मैं उन को निकाल दू तो खुदा (के अजाब) से (बचाने के लिए) कौन मेरी मदद कर सकना है ? भला तुम गौर क्यो नही करते ? (३०) मैं न तुम से यह कहता हू कि मेरे पास खुदा के खजाने है और न यह कि मैं गैब जानता हू और न यह कहता हू कि मैं फरिश्ता हू और न उन लोगो के बारे मे, जिन को तुम नीची नजर से देखते हो, यह कहता हू कि खुदा उन को भलाई (यानी आमाल का नेक बदला) नही देगा, जो उन के दिलो मे है, इसे खुदा खूब जानता है। अगर मैं ऐसा कहू तो बे-इन्साफो मे हू। (३१) उन्हो ने कहा कि नूह ! तुम ने हम से झगडा तो किया और झगडा भी बहुत किया, लेकिन अगर सच्चे हो, तो जिस चीज से हमे डराते हो, वह हम पर ला नाजिल करो। (३२) नूह ने कहा कि इस को तो खुदा ही चाहेगा, तो नाजिल करेगा और तुम (उस को किसी तरह) हरा नही सकते। (३३) और अगर मैं यह चाहू कि तुम्हारी खैरख्वाही करू और खुदा यह चाहे कि तुम्हे गुमराह करे, तो मेरी खैरख्वाही तुम को कुछ फायदा नही दे सकती। वही तुम्हारा परवरदिगार है और तुम्हे उसी की तरफ लौट कर जाना है। (३४) क्या ये कहते है कि इस (पैगम्बर) ने कुरआन अपने दिल से बना लिया है ? कह दो कि अगर मैं ने दिल से बना लिया है, तो मेरे गुनाह का वबाल मुझ पर और जो गुनाह तुम करते हो, उस की जिम्मेदारी से मैं बरी हू।(३५) ★

★रु ३/३ आ ११

व ऊहि-य इला नूहिन् अन्नहू लय्युअ्मि-न मिन् क़ौमि-क इल्ला मन् क़द् आम-न फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यफ्-अलून (३६) वस्नअिल्-फुल-क बिअअ-युनिना व वह्यिना व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू इन्नहुम् मुग़रकून (३७) व यस्-नअुल्फुल-क व कुल्लमा मर्-र अलैहि म - ल - उम्मिन् क़ौमिही सख़िरू मिन्हु का-ल इन् तस्ख़रू मिन्ना फ़इन्ना नस्ख़रु मिन्कुम् कमा तस्ख़रून (३८) फ़सौ-फ तअ्-लमू-न मय्यअ्तीहि अज़ाबु य्युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अलैहि अज़ाबुम् - मुक़ीम (३९) हत्ता इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु कुल्नह्मिल् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्ल-क इल्ला मन् स-ब - क अलैहिल् - क़ौलु व मन् आम-न व मा आम-न म-अहू इल्ला क़लील (४०) व क़ालर्कबू फ़ीहा बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा

وأوحي إلى نوح أنه لن يؤمن من قومك إلا من قد آمن
فلا تبتئس بما كانوا يفعلون ۝ واصنع الفلك بأعيننا و
وحينا ولا تخاطبني في الذين ظلموا إنهم مغرقون ۝ ويصنع
الفلك وكلما مر عليه ملأ من قومه سخروا منه قال إن
تسخروا منا فإنا نسخر منكم كما تسخرون ۝ فسوف تعلمون
من يأتيه عذاب يخزيه ويحل عليه عذاب مقيم ۝ حتى
إذا جاء أمرنا وفار التنور قلنا احمل فيها من كل زوجين
اثنين وأهلك إلا من سبق عليه القول ومن آمن وما
آمن معه إلا قليل ۝ وقال اركبوا فيها بسم الله مجريها ومرسيها
إن ربي لغفور رحيم ۝ وهي تجري بهم في موج كالجبال
ونادى نوح ابنه وكان في معزل يبني اركب معنا ولا تكن
مع الكافرين ۝ قال سآوي إلى جبل يعصمني من الماء قال
لا عاصم اليوم من أمر الله إلا من رحم وحال بينهما الموج
فكان من المغرقين ۝ وقيل يأرض ابلعي ماءك ويسماء
أقلعي وغيض الماء وقضي الأمر واستوت على الجودي و
قيل بعدا للقوم الظالمين ۝ ونادى نوح ربه فقال رب إن
ابني من أهلي وإن وعدك الحق وأنت أحكم الحاكمين ۝

इन-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम (४१) व हि-य तज्री बिहिम् फ़ी मौजिन् कल्जिबालि व नादा नूहु-निब्नहू व का-न फ़ी मअ्-ज़िलिं-य्याबुनय्यर्कम्म-अना व ला तकुम्म-अल्-काफ़िरीन (४२) क़ा-ल स-आवी इला ज-बलिंय्यअ्-सिमुनी मिनल्माइ क़ा - ल ला आसिमल्यौ - म मिन् अम्रिल्लाहि इल्ला मर्रहि-म व हा-ल बैनहुमल् - मौजु फ़का-न मिनल्मुग़्रकीन (४३) व की-ल या अर्ज़ुब्लई मा-अकि व यासमा-उ अक़्लिई व ग़ीज़ल्-माउ व क़ुज़ियल् - अम्रु वस्तवत् अ - लल्जूदिय्यि व की-ल बुअ् - दल्लिल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन ● (४४) व नादा नूहुर्रब्बहू फ़का-ल रब्बि इन्नब्नी मिन् अह्ली व इन-न वअ्-द-कल्-हक़्क़ु व अन्-त अह्कमुल्-हाकिमीन (४५)

●रुकूअ १/४

और नूह की तरफ वह्य की गयी कि तुम्हारी कौम मे जो लोग ईमान ला चुके, (ला चुके), उनके सिवा और कोई ईमान नही लाएगा, तो जो काम ये कर रहे है, उन की वजह से गम न खाओ। (३६) और एक कश्ती हमारे हुक्म से हमारे सामने बनाओ और जो लोग जालिम है, उनके बारे मे हम से कुछ न कहना, क्योंकि वे जरूर गर्क कर दिए जाएगे। (३७) तो नूह ने कश्ती बनानी शुरू कर दी और जब उन की कौम के सरदार उनके पास से गुजरते तो उनका मजाक उडाते। वह कहते कि अगर तुम हमारा मजाक उडाते हो, तो जिस तरह तुम हमारा मज़ाक उडाते हो, उसी तरह (एक वक्त) हम भी तुम्हारा मज़ाक उडाएंगे। (३८) और तुम को जल्द मालूम हो जाएगा कि किस पर अजाब आता है, जो उसे रुसवा करेगा और किस पर हमेशा का अजाव नाज़िल होता है ? (३९) यहा तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुचा औरतन्नूर जोश मारने लगा तो हमने (नूह को) हुक्म दिया कि हर किस्म (के जानदारो) मे से जोडा-जोडा (यानी) दो (दो जानवर—एक-एक नर और एक-एक मादा) ले लो और जिस शख्स के बारे मे हुक्म हो चुका है (कि हलाक हो जाएगा) उस को छोड कर अपने घर वालो को और जो ईमान लाया हो, उसको कश्ती मे सवार कर लो और उनके साथ ईमान बहुत ही कम लोग लाए थे। (४०) (नूह ने) कहा कि खुदा का नाम लेकर (कि उसी के हाथ में) उस का चलना और ठहरना (है), उस मे सवार हो जाओ। बेशक मेरा परवरदिगार बख्शने वाला मेहरबान है। (४१) और वह उनको लेकर (तूफ़ान की) लहरो मे चलने लगी, (लहरें क्या थी), गोया पहाड (थे)। उस वक्त नूह ने अपने बेटे को कि (कश्ती से) अलग था, पुकारा कि बेटा! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरो मे शामिल न हो। (४२) उसने कहा कि मैं (अभी) पहाड से जा लगूगा, वह मुझे पानी से बचा लेगा। उन्होने कहा कि आज खुदा के अज़ाब से कोई बचाने वाला नही (और न कोई बच सकता है,) मगर जिस पर खुदा रहम करे। इतने मे दोनो के दर्मियान लहर आ, रोक बन गयी और वह डूब कर रह गया। (४३) और हुक्म दिया गया कि ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल जा और ऐ आसमान! थम जा, तो पानी खुश्क हो गया और काम तमाम कर दिया गया और कश्ती जूदी पहाड पर जा ठहरी और कह दिया गया कि बे-इसाफ लोगो पर लानत ● (४४) और नूह ने अपने परवरदिगार को पुकारा और कहा कि परवरदिगार! मेरा बेटा भी मेरे घर वालो मे है, (तो उस को भी निजात दे), तेरा वायदा सच्चा

● रुकूअ १/४

क़ा-ल या नूहु इन्नहू लै-स मिन् अह्लिक इन्नहू अ-मलुन् ग़ैरु सालिहिन् फ़ला तस्-अलि मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन् इन्नी अअिज़ु-क अन् तकू-न मिनल्-जाहिलीन (४६) क़ा-ल रब्बि इन्नी अअूज़ु बि-क अन् अस्अ-ल-क मा लै-स ली बिही अिल्मुन् व इल्ला तग़्फ़िर् ली व तर्हम्नी अकुम्मिनल्-ख़ासिरीन (४७) क़ी-ल यानूहुह्बित् बिसलामिम्-मिन्ना व ब-र-कातिन् अलै-क व अला उम-मिम्-मिम्मम्-म-अक व उम-मुन् सनुमत्तिअुहुम् सुम्-म य-मस्सुहुम् मिन्ना अज़ाबुन् अलीम (४८) तिल्-क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि नूहीहा इलै-क मा कुन्-त तअ्-लमुहा अन्-त व ला क़ौमु-क मिन् क़ब्लि हाज़ा फ़स्बिर् इन्नल्-आक़ि-ब-त लिल्मुत्तक़ीन ★ (४९) व इला आदिन् अख़ाहुम् हूदन् क़ा-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू इन् अन्तुम् इल्ला मुफ़्तरून (५०) या क़ौमि ला अस्अलुकुम् अलैहि अज-रन् इन् अजिर-य इल्ला अ-लल्लज़ी फ़-त्-रनी अ-फ़ला तअ्-क़िलून (५१) व या क़ौमिस्-तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम-म तूबू इलैहि युर्सिलिस्-समा-अ अलैकुम् मिद्रारंव-व यज़िद्कुम् क़ुव्व-तन् इला क़ुव्वतिकुम् व ला त-त-वल्लौ मुज्रिमीन (५२) क़ालू या हूदु मा जिअ्-तना बिबय्यिनतिंव्-व मा नह्नु बितारिकी आलिहतिना अन् क़ौलि-क व मा नह्नु ल-क बिमुअ्मिनीन (५३) इन्नक़ूलु इल्लाअ्-तरा-क बअ्-ज़ु आलिहतिना बिसूइन् क़ा-ल इन्नी उश्हिदुल्ला-ह वश्हदू अन्नी बरीउम्-मिम्मा तुश्रिकू-न (५४) मिन् दूनिही फ़कीदूनी जमीअन् सुम्-म ला तुन्ज़िरून (५५) इन्नी त-वक्कल्तु अ-लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम् मा मिन् दाब्बतिन् इल्ला हु-व आख़िज़ुम्-बिनासि-यतिहा इन्-न रब्बी अला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (५६)

قَالَ يٰنُوحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْـَٔلْ
نِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ
اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ
اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَ
عَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ
مِنْ قَبْلِ هٰذَا فَاصْبِرْ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ
هُوْدًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا
مُفْتَرُوْنَ ۝ يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ
فَطَرَنِيْ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ
يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا
عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ
بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ
مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ۝
اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا
اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ

है और तू सब से बेहतर हाकिम है। (४५) खुदा ने फरमाया कि नूह ! वह तेरे घर वालो मे नही है। वह तो नाशाइस्ता (ना-जेबा) अमल है, तो जिस चीज की तुमको हकीकत मालूम नही, उसके बारे मे मुझ से सवाल ही न करो और मैं तुमको नसीहत करता हू कि नादान न बनो। (४६) नूह ने कहा, परवरदिगार ! मैं तुझ से पनाह मागता हू कि ऐसी चीज़ का तुझ से सवाल करू, जिस की मुझे हकीकत मालूम नही और अगर तू मुझे नही बख्शेगा, और मुझ पर रहम नही करेगा, तो मैं तबाह हो जाऊगा। (४७) हुक्म हुआ कि नूह ! हमारी तरफ से सलामती और बरकतो के साथ (जो) तुम पर और तुम्हारे साथ की जमाअतो पर (नाजिल की गयी है) उतर आओ और कुछ और जमाअते होगी, जिन को हम (दुनिया के फायदो से) नवाजेंगे, फिर उन को हमारी तरफ से दर्दनाक अजाब पहुचेगा। (४८) ये (हालात) तमाम गैब की खबरो मे से है, जो हम तुम्हारी तरफ भेजते है और इससे पहले न तुम ही इनको जानते थे और न तुम्हारी कौम (ही इन को जानती थी), तो सब्र करो कि अजाम परहेजगारो ही का (भला) है। (४९) ★

और हमने आद की तरफ उन के भाई हूद को (भेजा)। उन्होने कहा कि मेरी कौम ! खुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नही। तुम (शिर्क करके खुदा पर) सिर्फ बुहतान बाधते हो। (५०) मेरी कौम ! मैं इस (वाज व नसीहत) का तुम से कुछ बदला नही मागता। मेरा बदला तो उसके जिम्मे है, जिस ने मुझे पैदा किया। भला, तुम समझते क्यो नही ? (५१) और ऐ कौम ! अपने परवरदिगार से बख्शिश मागो, फिर उसके आगे तौबा करो। वह तुम पर आसमान से मूसलाधार मेंह बरसाएगा और तुम्हारी ताकत पर ताकत बढाएगा और (देखो) गुनाहगार बनकर रू-गरदानी न करो। (५२) वे बोले, हूद ! तुम हमारे पास कोई जाहिर दलील नही लाए और हम (सिर्फ) तुम्हारे कहने से न अपने माबूदो को छोडने वाले है और न तुम पर ईमान लाने वाले है। (५३) हम तो यह समझते है कि हमारे किसी माबूद ने तुम्हे आसेब पहुचा (कर दीवाना कर) दिया है। उन्होने कहा कि मै खुदा को गवाह करता हू और तुम भी गवाह रहो कि जिन को तुम (खुदा का) शरीक बनाते हो, उन से बेजार हू। (५४) (यानी जिन की) खुदा के सिवा (इबादत करते हो, तो) तुम सब मिल कर मेरे बारे मे (जो) तद्बीर (करनी चाहो,) कर लो और मुझे मोहलत न दो। (५५) मैं खुदा पर, जो मेरा और तुम्हारा (सब का) परवरदिगार है, भरोसा रखता हू (ज़मीन पर) जो चलने फिरने वाला है, वह उसको चोटी से पकडे हुए है। बेशक मेरा परवरदिगार सीधे रास्ते पर है। (५६) अगर तुम रू-गरदानी करोगे, तो जो पैगाम

फ-इन् तवल्लौ फ - क़द् अब् - लग्तुकुम् मा उर्सिल्तु बिही इलैकुम् ᵇ व यस्तख़्लिफु रब्बी कौमन् गै-रकुम् ᶜ व ला तजुर्रूनहू शैअन् ᵇ इन्-न रब्बी अ़ला कुल्लि शैइन् हफ़ीज़ (५७) व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना हूदंव्वल्लज़ी-न आमनू म-अहू बिरह्मतिम्-मिन्ना ᶜ व नज्जैनाहुम् मिन् अ़ज़ाबिन् ग़लीज़ (५८) व तिल् - क आ़दुन् ज-हदू बिआयाति रब्बिहिम् व असौ रुसुलहू वत्तबअ़ू अम्-र कुल्लि जब्बारिन् अ़नीद (५९) व उत्बिअ़ू फी हाज़िहिद्दुन्या लअ़्-न-तंव्-व यौमल्-कियामति ᵇ अला इन्-न आ़दन् क-फरू रब्बहुम् ᵇ अला बुअ़्-दल्लिआ़दिन् कौमि हूद ★ (६०) व इला समू - द अख़ाहुम् सालिहन् ▒ का-ल याकौमिअ़्-बुदुल्-ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ᵇ हु-व अन्श-अकुम् मिनल्अर्ज़ि वस्तअ़्-म-र-कुम् फीहा फस्तग्फिरूहु सुम् - म तूबू इलैहि ᵇ इन्-न रब्बी करीबुम्-मुजीब (६१) कालू या सालिहु कद् कुन्-त फीना मर्जुव्वन् कब्-ल हाज़ा अ-तन्हाना अन् नअ़्-बु-द मा यअ़्-बुदु आबाउना व इन्नना लफी शक्किम्मिम्मा तद्अ़ूना इलैहि मुरीब (६२) का-ल या कौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व आतानी मिन्हु रह्-म-तन् फमंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् अ़सैतुहू फमा तज़ीदूननी ग़ै-र तख़्सीर (६३) व या कौमि हाज़िही नाकतुल्लाहि लकुम् आय-तन् फ-ज़रूहा तअ़्कुल् फी अर्ज़िल्लाहि व ला त-मस्सूहा बिसूइन् फ-यअ़्ख़ुज़कुम् अ़ज़ाबुन् करीब (६४) फ-अ़-करूहा फ-का-ल त-मत्तअ़ू फी दारिकुम् सलास-त अय्यामिन् ᵇ ज़ालि-क वअ़्-दुन् ग़ैरु मक्ज़ूब (६५) फ-लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना सालिहंव्वल्लज़ी-न आमनू म-अहू बिरह्मतिम्-मिन्ना व मिन् ख़िज़्यि यौमिइज़िन् ᵇ इन्-न रब्ब-क हुवल्कविय्युल्-अ़ज़ीज़ (६६)

هود ١١ ١٨٢ وما من دآبة ١٢

بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ
رَبِّيْ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝ وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝ وَ
تِلْكَ عَادٌ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ
جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَآ
اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝ وَاِلٰي ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ
صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ هُوَ اَنْشَاَكُمْ
مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ
قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ
اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝
قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰي بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً
فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۣ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ۝
وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَ
لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْۗءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ۝ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ
تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ۝ فَلَمَّا جَاۗءَ
اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ
يَوْمِىِٕذٍ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا

★रु. ५/५ आ ११ ▒ व लाजिम

मेरे हाथ तुम्हारी तरफ भेजा गया है, वह मैं ने तुम्हे पहुंचा दिया है और मेरा परवरदिगार तुम्हारी जगह् और लोगो को ला बसाएगा और तुम खुदा का कुछ भी नुक्सान नही कर सकते। मेरा परवरदिगार तो हर चीज पर निगेहबान है। (५७) और जब हमारा हुक्म (अज़ाव) आ पहुचा तो हमने हूद को और जो लोग उन के साथ ईमान लाए थे, उनको अपनी मेहरबानी से बचा लिया और उन्हे भारी अजाब से निजात दी। (५८) ये (वही) आद है, जिन्होने खुदा की निशानियो से इन्कार किया और उसके पैगम्बरो की ना-फरमानी की और हर मुतकब्बिर व सर-कश का कहा माना। (५९) तो इस दुनिया मे भी उनके पीछे लानत लगी रही और कियामत के दिन भी (लगी रहेगी)। देखो आद ने अपने परवरदिगार से कुफ्र किया (और) सुन रखो हूद की कौम पर फिटकार है। (६०) ★

और समूद की तरफ उन के भाई सालेह् को (भेजा) ▨ तो उन्होने कहा कि कौम! खुदा ही की इबादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नही, उसी ने तुम को जमीन से पैदा किया और उसमे आबाद किया, तो उस से मग्फिरत मागो और उसके आगे तौबा करो। बेशक मेरा परवरदिगार नजदीक (भी है और दुआ का) कुबूल करने वाला (भी) है। (६१) उन्होने कहा कि सालेह्! इस से पहले हम तुम से (कई तरह् की) उम्मीदे रखते थे। (अब वे खत्म हो गयी) क्या तुम हम को उन चीजों को पूजने से मना करते हो, जिन को हमारे बुज़ुर्ग पूजते आए है? और जिस बात की तरफ तुम हमे बुलाते हो, इस मे हमे जबरदस्त शुब्हा है। (६२) सालेह् ने कहा, कौम! भला देखो तो अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ से खुली दलील पर हू और उसने मुझे अपने यहा से (नुबूवत की) नेमत बख्शी हो, तो अगर मैं खुदा की ना-फरमानी करूं, तो उसके सामने मेरी मदद करेगा? तुम तो (कुफ्र की बातो से) मेरा नुक्सान करते हो। (६३) और (यह भी कहा कि) ऐ कौम! यह खुदा की ऊटनी तुम्हारे लिए एक निशानी (यानी मोजजा) है तो इसको छोड़ दो कि खुदा की जमीन मे (जहा चाहे) चरे और उसको किसी तरह् की तक्लीफ न देना, वरना तुम्हे जल्द अजाव आ पडेगा। (६४) मगर उन्होने उसकी कूचे काट डाली, तो (सालेह् ने) कहा कि अपने घरो मे तीन दिन (और) फायदे उठा लो। यह वायदा है कि झूठा न होगा। (६५) जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने सालेह् को और जो लोग उन के साथ ईमान लाये थे, उनको अपनी मेहरबानी से बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से (बचाए रखा)। बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताकतवर

★रु ५/५ आ ११ ▨ व लाजिम

व अ-ख़-ज़ल्लज़ी-न ज़-ल-मुस्सैहतु फ-अस्बहू फी दियारिहिम् जासिमीन ॥(६७) क-अल्लम् यग्नौ फ़ीहा ط अला इन्-न समू - द क - फरू रब्बहुम् ط अला बुअ्-दल्लि-समूद ✱ (६८) व ल-क़द् जा-अत् रुसुलुना इब्राही-म बिल्बुश्रा कालू सलामन् ط क़ा-ल सलामुन् फमा लबि-स अन् जा - अ बिअिज्लिन् हनीज (६९) फ़-लम्मा रआ ऐदियहुम् ला तसिलु इलैहि नकि-रहुम् वऔज-स मिन्हुम् खीफ़-तुन् ط कालू ला त-ख़फ़् इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमि लूत ط (७०) वम्र-अतुहू क़ाइमतुन् फ़-ज़हिकत् फ-बश्शर्ना-हा बिइस्हा - क़ ॥ व मिंव्वराइ इस्हा-क यअ्-कूब (७१) कालत् यावैलता अ अलिदु व अ-न अजूज़ु व्-व हाज़ा बअ्-ली शैख़न् ط इन् - न हाज़ा लशैउन् अजीब (७२) कालू अ-तअ्-जबी-न मिन् अम्रिल्लाहि रह्मतुल्लाहि व ब-र-कातुहू अलैकुम् अह्लल्बैति ط इन्नहू हमीदुम् - मजीद (७३) फ़-लम्मा ज़-ह-ब अन् इब्राहीमर् - रौअु व जा-अत्हुल् - बुश्रा युजादिलुना फी क़ौमि लूत ط (७४) इन-न इब्राही-म ल-हलीमुन् अव्वाहुम्-मुनीब (७५) या इब्राहीमु अअ्-रिज् अन् हाज़ा ج इन्नहू कद् जा-अ अम्रु रब्बिक ج व इन्नहुम् आतीहिम् अज़ाबुन् गैरु मर्दूद (७६) व लम्मा जा-अत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क बिहिम् ज़र्अव्-व का-ल हाज़ा यौमुन् असीब (७७) व जा-अहू कौमुहू युह्रअू-न इलैहि ط व मिन् कब्लु कानू यअ्-मलूनस् - सय्यिआति ط का - ल या कौमि हाउलाइ बनाती हुन्-न अत्हरु लकुम् फत्तकुल्ला - ह व ला तुख्ज़ूनि फी ज़ैफ़ी अलै-स मिन्कुम् रजुलुर्रशीद (७८) कालू ल-क़द् अलिम्-त मा लना फी बनाति-क मिन् हक्किन् ج व इन्न - क ल-तअ्-लमु मा नुरीद (७९)

هود ١١ ١٨٣ وما من دابة ١٢

الصيحة فاصبحوا في ديارهم جثمين ۝ كان لم يغنوا فيها ۗ الا
ان ثمودا كفروا ربهم ۗ الا بعدا لثمود ۝ ولقد جاءت رسلنا
ابرهيم بالبشرى قالوا سلما ۖ قال سلم فما لبث ان جاء بعجل
حنيذ ۝ فلما را ايديهم لا تصل اليه نكرهم واوجس منهم
خيفة ۚ قالوا لا تخف انا ارسلنا الى قوم لوط ۝ وامراته قائمة
فضحكت فبشرنها باسحق ومن وراء اسحق يعقوب ۝ قالت
يويلتى ءالد وانا عجوز وهذا بعلي شيخا ۖ ان هذا لشيء عجيب ۝
قالوا اتعجبين من امر الله رحمت الله وبركته عليكم اهل
البيت ۚ انه حميد مجيد ۝ فلما ذهب عن ابرهيم الروع و
جاءته البشرى يجادلنا في قوم لوط ۝ ان ابرهيم لحليم
اواه منيب ۝ يابرهيم اعرض عن هذا ۚ انه قد جاء
امر ربك ۚ وانهم اتيهم عذاب غير مردود ۝ ولما جاءت
رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا وقال هذا يوم عصيب ۝
وجاءه قومه يهرعون اليه ومن قبل كانوا يعملون السيات ۚ
قال يقوم هؤلاء بناتي هن اطهر لكم فاتقوا الله ولا تخزون
في ضيفي ۖ اليس منكم رجل رشيد ۝ قالوا لقد علمت ما
لنا في بناتك من حق ۚ وانك لتعلم ما نريد ۝ قال لو ان لي

★रु ६/६ आ ८

और जबरदस्त है। (६६) और जिन लोगो ने जुल्म किया था, उनको चिंघाड (की शक्ल मे अजाब) ने आ पकडा, तो वे घरो में औंधे पडे रह गये, (६७) गोया कभी उन मे बसे ही न थे। सुन रखो कि समूद ने अपने परवरदिगार से कुफ्र किया और सुन रखो समूद पर फिटकार है। (६८) ★

और हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास खुशखबरी[1] लेकर आए, तो सलाम कहा। उन्होने भी (जवाब मे) सलाम कहा। अभी कुछ देर भी नही हुई थी कि (इब्राहीम) एक भुना हुआ बछडा ले आए (६९) जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ नही जाते (यानी वह खाना नही खाते) तो उन को अजनबी समझ कर दिल मे डरे। (फरिश्तो ने) कहा कि डरिए नही, हम लूत की कौम की तरफ (उन के हलाक करने को) भेजे गये है। (७०) और इब्राहीम की बीवी (जो पास) खडी थी, हस पडी, तो हम ने उसको इस्हाक के बाद याकूब की खुशखबरी दी। (७१) उस ने कहा, ऐ है! मेरे बच्चा होगा? मैं तो बुढिया हू और यह मेरे मिया भी बूढे हैं। यह तो बडी अजीब बात है। (७२) उन्होंने कहा, क्या तुम खुदा की कुदरत से ताज्जुब करती हो? ऐ अह्ले बैत! तुम पर खुदा की रहमत और उसकी बरकते है। वह तारीफ के लायक और बुजुर्गवार है। (७३) जब इब्राहीम से डर जाता रहा और उन को खुशखबरी भी मिल गयी, तो लूत की कौम के बारे मे लगे हम से बहस करने।[2] (७४) बेशक इब्राहीम बडे तहम्मुल वाले, नर्मदिल और रुजू करने वाले थे। (७५) ऐ इब्राहीम! इस बात को जाने दो। तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म आ पहुचा है और इन लोगो पर अज़ाब आने वाला है, जो कभी नही टलने का। (७६) और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास आये, तो वह उन (के आने) से गमनाक और तग दिल हुए और कहने लगे कि आज का दिन बडी मुश्किल का दिन है। (७७) और लूत की कौम के लोग उनके पास बे-तहाशा दौड़ते हुए आए और ये लोग पहले ही से गन्दा काम किया करते थे। लूत ने कहा कि ऐ कौम! यह (जो) मेरी (कौम की) लडकिया है, ये तुम्हारे लिए (जायज और) पाक है, तो खुदा से डरो और मेरे मेहमानो के (बारे) मे मेरी आबरू न खोओ। क्या तुम मे से कोई भी शायस्ता (शिष्ट) आदमी नही! (७८) वे बोले, तुम को मालूम है कि तुम्हारी (कौम की) बेटियो की हमे कोई ज़रूरत नही और जो हमारी गरज़ है उसे तुम (खूब) जानते हो। (७९) लूत ने कहा कि ऐ काश! मुझ मे

---

१ जो फरिश्ते खुशखबरी ले कर आए थे, वे जिब्रील, मीकाईल और इस्राफील थे और खूबसूरत नवजवान की शक्ल मे आए थे। हज़रत इब्राहीम ने उन को मुअज्जिज़ मेहमान समझ कर उन के लिए एक मोटा-ताज़ा बछडा ज़िब्ह किया और उसके कबाब बना कर उन के पास लाये। हज़रत इब्राहीम की बीवी हज़रत सारा ने जब देखा कि इब्राहीम मेहमानो की खातिर और सत्कार करते हैं, तो खुद भी उन की खिदमत के लिए आ खडी हुयी। मेहमानो का यह हाल कि खाना सामने रखा है और उन के हाथ खाने की तरफ जाते ही नही, यह हाल देख कर हज़रत इब्राहीम के दिल मे डर पैदा हुआ कि ये लोग किसी बुरे इरादे से न आये हो, क्योकि उन लोगो की आदत थी कि जब कोई मेहमान आता और मेज़बान के यहा खाना न खाता, तो वह यह ख्याल करते कि यह नेक नीयत से नही आया, बल्कि किसी बुरे इरादे से आया है। मेहमानो ने कहा, डरिए नही, हम खुदा के फरिश्ते है और लूत की कौम को हलाक करने के लिए भेजे गए है। फरिश्तो का यह कौल सुन कर बीवी सारा हस पडी। फिर फरिश्तो ने बीवी सारा को हज़रत इस्हाक और हज़रत इस्हाक के बाद हज़रत याकूब के पैदा होने की खुशखबरी सुनायी, तो वह मारे खुशी के बे-साख्ता हस पडी।

२ जब हज़रत इब्राहीम को फरिश्तो के आने की वजह मालूम हुई और उन की बीवी को हज़रत इस्हाक की

(शेष पृष्ठ ३६५ पर)

★रु ६/६ आ ८

क़ा-ल लौ अन्-न ली विकुम् कुव्वतन् औ आवी इला रुक्निन् शदीद (८०) कालू या लूतु इन्ना रुसुलु रब्बि-क लय्यसिलू इलै-क फ-असरि बिअह्लि-क बिक़िल्अिम्-मिनल्लैलि व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-हदुन् इल्लम्-र-अ-तक ط इन्नहू मुसीबुहा मा असाबहुम् ط इन्-न मौअि-द-हुमुस्सुब्हु ط अलैसस्सुब्हु बिक़रीब (८१) फ़-लम्मा जा-अ अम्रुना ज-अ़ल्ना आलियहा साफ़िलहा व अम्तर्ना अ़लैहा हिजा-र-तम्-मिन् सिज्जीलिम् ला- मन्जूदिम् ला (८२) मुसव्वम्-तन् अिन्-द रब्बि-क ط व मा हि-य मिनज़्ज़ालिमी-न बिबअीद ●★(८३) व इला मद्-य-न अख़ाहुम् शुअैबन् ط का-ल या कौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ط व ला तन्कुसुल्-मिक्या-ल वल्मीजा-न इन्नी अराकुम् बिख़ैरिव्-व इन्नी अख़ाफु अलैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिम्मुहीत (८४) व या कौमि औफ़ुल्-मिक्या-ल वलमीजा-न बिल्क़िस्ति व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तअ-सौ फ़िल्अर्जि मुफ़्सिदीन (८५) बक़िय्यतुल्लाहि ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनी-न ج व मा अ-न अलैकुम् बिहफ़ीज़ (८६) कालू या शुअैबु अ-सलातु-क तअ-मुरु-क अन् नत-रु-क मा यअ्-बुदु आबाउना औ अन् नफ्-अ़-ल फ़ी अम्वालिना मा नशाउ ط इन्न-क ल-अन्तल्-हलीमुर्रशीद (८७) का-ल या कौमि अ र-ऐतुम् इन् कुन्तु अला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व र-ज-क़नी मिन्हु रिज-कन् ह-स-नन् ط व मा उरीदु अन् उख़ालिफ़कुम् इला मा अन्हाकुम् अन्हु ط इन् उरीदु इल्लल्-इस्ला-ह मस्त-तअ्-तु ط व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि ط अलैहि त-वक्कल्तु व इलैहि उनीब (८८) व या कौमि ला यजिरमन्नकुम् शिक़ाक़ी अय्युसीबकुम् मिस्लु मा असा-ब कौ-म नूहिन् औ कौ-म हूदिन् औ कौ-म सालिहिन् ط व मा कौमु लूतिम्-मिन्कुम् बिबअीद (८९)

بكم قوة او اوي الى ركن شديد ۝ قالوا يلوط انا رسل ربك
لن يصلوا اليك فاسر باهلك بقطع من اليل ولا يلتفت منكم
احد الا امراتك انه مصيبها ما اصابهم ان موعدهم الصبح
اليس الصبح بقريب ۝ فلما جاء امرنا جعلنا عاليها سافلها
وامطرنا عليها حجارة من سجيل منضود ۝ مسومة
عند ربك وما هي من الظلمين ببعيد ۝ والى مدين اخاهم
شعيبا قال يقوم اعبدوا الله ما لكم من اله غيره ولا تنقصوا
المكيال والميزان اني اركم بخير واني اخاف عليكم عذاب
يوم محيط ۝ ويقوم اوفوا المكيال والميزان بالقسط ولا تبخسوا
الناس اشياءهم ولا تعثوا في الارض مفسدين ۝ بقيت الله
خير لكم ان كنتم مؤمنين وما انا عليكم بحفيظ ۝ قالوا
يشعيب اصلوتك تامرك ان نترك ما يعبد اباؤنا او ان نفعل
في اموالنا ما نشؤا انك لانت الحليم الرشيد ۝ قال يقوم
ارءيتم ان كنت على بينة من ربي ورزقني منه رزقا حسنا
وما اريد ان اخالفكم الى ما انهىكم عنه ان اريد الا الاصلاح
ما استطعت وما توفيقي الا بالله عليه توكلت واليه انيب ۝
ويقوم لا يجرمنكم شقاقي ان يصيبكم مثل ما اصاب قوم نوح

★रु ७/७ आ १५ ● नि १/२

तुम्हारे मुकाबले की ताकत होती या मैं किसी मजबूत किले मे पनाह पकड सकता। (८०) फरिश्तो ने कहा कि लूत! हम तुम्हारे परवरदिगार के फरिश्ते है। ये लोग हरगिज तुम तक नही पहुच सकेगे, तो कुछ रात रहे ये अपने घर वालो को लेकर चल दो और तुम मे से कोई शख्स पीछे फिर कर न देखे, मगर तुम्हारी बीवी कि जो आफत उन पर पडने वाली है, वही उस पर पडेगी। उनके (अजाब के) वायदे का वक्त सुबह है और क्या सुबह कुछ दूर है? (८१) तो जब हमारा हुक्म आया, हमने उस (बस्ती) को (उलट कर) नीचे-ऊपर कर दिया और उन पर पत्थर की तह-ब-तह ककरिया बरसायी, (८२) जिन पर तुम्हारे परवरदिगार के यहा से निशान किये हुए थे और वह (बस्ती इन) जालिमो से कुछ दूर नही●★(८३)और मदयन' की तरफ उनके भाई शुऐब को (भेजा), तो उन्होने कहा कि ऐ कौम! खुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नही। और नाप-तौल मे कमी न किया करो। मैं तो तुम को खुशहाल देखता हू और (अगर तुम ईमान न लाओगे, तो) मुझे तुम्हारे बारे मे एक ऐसे दिन के अज़ाब का डर है, जो तुम को घेर कर रहेगा। (८४) और कौम! नाप और तौल इंसाफ के साथ पूरी-पूरी किया करो और लोगो को उनकी चीजे कम न दिया करो और जमीन मे खराबी करते न फिरो। (८५) अगर तुम को (मेरे कहने का) यकीन हो तो खुदा का दिया हुआ नफा ही तुम्हारे लिए है और मैं तुम्हारा निगेहबान नही हू। (८६) उन्होने कहा, शुऐब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हे यह सिखाती है कि जिन को हमारे बाप-दादा पूजते आए है, हम उनको छोड दे या अपने माल से जो काम लेना चाहे, न ले। तुम बड़े नर्म दिल और रास्तबाज़ हो। (८७) उन्होने कहा कि ऐ कौम! देखो तो, अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ से रोशन दलील पर हू और उस ने अपने यहा से मुझे नेक रोजी दी हो। (तो क्या मैं उनके खिलाफ करूगा?) और मैं नही चाहता कि जिस बात से मैं तुम्हे मना करू, खुद मैं उसको करने लगू, मैं तो जहा तक मुझ से हो सके (तुम्हारे मामलो की) इस्लाह चाहता हू और (इस बारे मे) मुझे तौफीक का मिलना खुदा ही (के फज्ल) से है। मैं उसी पर भरोसा रखता हू और उसी की तरफ रुजूअ करता हू। (८८) और ऐ कौम! मेरी मुखालफत तुम से कोई ऐसा काम न करा दे कि जैसी मुसीबत नूह की कौम या हूद की कौम या सालेह की कौम पर वाकेअ हुई थी, वैसी ही मुसीबत तुम पर वाकेअ हो और लूत की कौम (का जमाना तो) तुम से कुछ दूर नही। (८९)

(पृष्ठ ३६३ का शेष)

बशारत भी मिल गयी और उन का डर भी दूर हो गया, तो वह हज़रत लूत के बारे मे फरिश्तो से बातें करने लगे, जिस को खुदा ने अपने से मुताल्लिक फरमाया है। वे बातें यह थी कि जब फरिश्तो ने कहा कि हम लूत के गाव को तबाह करने आये है, तो हज़रत इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ऐसे गाव को तबाह करोगे, जिस मे तीन सौ मोमिन रहते हैं। फरिश्तो ने कहा, नही। फिर इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ऐसे गाव को हलाक करोगे, जिस मे चालीस मोमिन है? कहा नही। फिर उन्होने कहा, भला जिस गाव मे तीस या बीस या दस या पाच मोमिन हो, क्या तुम उस को भी हलाक करोगे? कहा, नही। फिर उन्हो ने कहा कि अगर उस गाव मे एक ही मोमिन हो, तब भी उसे तबाह कर दोगे? कहा, नही। तब इब्राहीम ने कहा कि उस गाव मे तो लूत हैं। उन्हो ने कहा, जो-जो उस मे हैं, मालूम है। हम लूत को और उन के घर वालो को तो बचा लेंगे, पर उन की औरत नही बचेगी। हज़रत इब्राहीम, चूकि बहुत नर्म दिल थे, इस लिए चाहते थे कि इन लोगों के अज़ाब मे देर हो जाए, तो अच्छा

(शेष पृष्ठ ३६७ पर)

वस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि ᵇ इन्-न रब्बी रहीमुव्वदूद (९०) क़ालू या शुऐबु मा नफ़्क़हु कसीरम्-मिम्मा तक़ूलु व इन्ना ल-नरा-क फ़ीना ज़ईफ़न् ᶜ व लौला रह्तु-क ल-र-जम्नाक ᵛ व मा अन्-त अलैना बि-अज़ीज़ (९१) क़ा-ल या क़ौमि अ-रह्ती अ-अज़्ज़ु अलैकुम् मिनल्लाहि ᵇ वत्तख़ज़्तुमूहु वरा-अकुम् ज़िह्रिय्यन् ᵇ इन्-न रब्बी बिमा तअ्-मलू-न मुहीत (९२) व या क़ौमिअ्-मलू अला मकानतिकुम् इन्नी आमिलुन् ᵇ सौ-फ़ तअ्-लमून ᴵᴵ मंय्यअ्तीहि अज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व मन् हु-व काज़िबुन् ᵇ वर्तक़िबू इन्नी म-अकुम् रक़ीब (९३) व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना शुऐबंव्वल्-लज़ी-न आमनू म-अहू बिरह्मतिम्-मिन्ना व अ-ख़-ज़तिल्लज़ी-न ज़-ल-मुस्सैहतु फ़-अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन ᴵᴵ (९४) क-अल्लम् यग़्नौ फ़ीहा ᵇ अला बुअ्-दल्-लि मद-य-न कमा बअ़िदत् समूद ★ (९५)

اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوْا
رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا
نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ
لَرَجَمْنٰكَ ؗ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ
مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝
وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ
عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ۝ وَلَمَّا
جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ كَاَنْ لَّمْ
يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا
مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا
اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ۝ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ۝ وَاُتْبِعُوْا فِيْ
هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ۝ ذٰلِكَ مِنْ
اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ۝ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ
وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۝

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन ᴵᴵ (९६) इला फ़िर्औ-न व म-लइही फ़त्तबअू अम्-र फ़िर्औ-न ᶜ व मा अम्रु फ़िर्औ-न बिरशीद (९७) यक़्दुमु क़ौमहू यौमल्-क़ियामति फ़-औ-र-द हुमुन्ना-र ᵇ व बिअ्सल्-विर्दुल्-मौरूद (९८) व उत्बिअू फ़ी हाज़िही लअ्-नतंव्-व यौमल्-क़ियामति ᵇ बिअ्सर्रिफ़्दुल्-मर्फ़ूद (९९) ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्क़ुरा नक़ुस्सुहू अलै-क मिन्हा क़ाइमुंव्-व हसीद (१००) व मा ज़-लम्नाहुम् व लाकिन् ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् फ़मा अग़्-नत् अन्-हुम् आलिहतुहुमुल्लती यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि मिन् शैइल्लम्मा जा-अ अम्रु रब्बि-क ᵇ व मा ज़ादूहुम् ग़ै-र तत्बीब (१०१)

★रु ८/८ आ १२

और अपने परवरदिगार से बख्शिश मागो और उसके आगे तौबा करो। बेशक मेरा परवरदिगार रहम वाला और मुहब्बत वाला है।' (९०) उन्होने कहा कि शुऐब ! तुम्हारी बहुत सी बाते हमारी समझ मे नही आती और हम देखते हैं कि तुम हम मे कमजोर भी हो और अगर तुम्हारे भाई-बंद न होते, तो हम तुमको सगसार कर देते और तुम हम पर (किसी तरह भी) गालिब नही हो। (९१) उन्होने कहा कि कौम ! क्या मेरे भाई-बदो का दबाव तुम पर खुदा से ज्यादा है और उसको तुम ने पीठ पीछे डाल रखा है। मेरा परवरदिगार तो तुम्हारे सब अमाल पर एहाता किये हुए है। (९२) और मेरी कौम ! तुम अपनी जगह काम किये जाओ, मैं (अपनी जगह) काम किये जाता हू। तुमको बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि रुसवा करने वाला अजाब किस पर आता है और झूठा कौन है और तुम भी इतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इतिज़ार करता हू। (९३) और जब हमारा हुक्म आ पहुचा तो हमने शुऐब को और जो लोग उन के साथ ईमान लाए थे, उन को तो अपनी रहमत से बचा लिया और जो ज़ालिम थे, उनको चिंघाड ने आ दबोचा, तो वह अपने घरो मे औंधे पड़े रह गये। (९४) गोया उनमे कभी बसे ही न थे। सुन रखो कि मदयन पर (वैसी ही) फिटकार है, जैसी समूद पर फिटकार थी। (९५) ✶

और हमने मूसा को अपनी निशानिया और रोशन दलील देकर भेजा। (९६) (यानी) फिऔंन और उसके सरदारो की तरफ, तो वह फिऔंन ही के हुक्म पर चले और फिऔंन का हुक्म दुरुस्त नही था। (९७) वह कियामत के दिन अपनी कौम के आगे-आगे चलेगा और उनको दोजख मे जा उतारेगा और जिस मकाम पर वे उतारे जाएगे, वह बुरा है। (९८) और इस दुनिया मे भी लानत उनके पीछे लगा दी गयी और कियामत के दिन भी (पीछे लगी रहेगी), जो इनाम उन को मिला है, बुरा है। (९९) ये (पुरानी) बस्तियो के थोडे से हालात है, जो हम तुम से बयान करते है। इन में से कुछ तो बाकी है और कुछ का तहस-नहस हो गया। (१००) और हमने उन लोगो पर जुल्म नही किया, बल्कि उन्होने खुद अपने ऊपर जुल्म किया, गरज जब तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म आ पहुचा, तो जिन माबूदो को, वे खुदा के सिवा पुकारा करते थे, वह उनके कुछ भी काम न आए और तबाह करने के सिवा उनके हक मे और कुछ न कर सके। (१०१) और

(पृष्ठ ३६५ का शेष)

है। शायद वे ईमान ले आए और बद-फेलियो से रुक जाए। फरिश्तो ने इब्राहीम से कहा, यह ख्याल छोड दीजिए उन के लिए अज़ाब का हुक्म हो चुका है और अज़ाब हो कर रहेगा।

१ मदयन हज़रत इब्राहीम के बेटे का नाम था, फिर उन की औलाद मे से एक कबीले का यह नाम हो गया। इस जगह यही कबीला मुराद है।

१ 'वदूद' (मुहब्बत वाला) यानी बदो को दोस्त रखे या बदे उस को दोस्त रखे। कुत्बुल अब्रार मौलाना याकूब चर्खी कद्-स सिर्रहू 'शरहे' 'अस्माउल्लाह' मे वदूद के मानी इस तरह बयान किये है कि तमाम ख़ल्क के साथ नेकी का दोस्त रखने वाला और उन दिलो का दोस्त कि जो हक की तरफ झुके हुए हैं, यानी वह नेकी को दोस्त रखता है और नेक लोग उस को दोस्त रखते हैं।

★रु ८/८ आ १२

व कज़ालि-क अख़्ज़ु रब्बि-क इज़ा अ-ख़-ज़ल्कुरा व हि-य ज़ालिमतुन् इन्-न अख़्-ज़हू अलीमुन् शदीद (१०२) इन्-न फी ज़ालि-क ल-आयतल्-लिमन् ख़ा-फ अज़ाबल्-आख़िरति ज़ालि-क यौमुम् - मज्मूअुल् - लहुन्नासु व ज़ालि - क यौमुम्मश्हूद (१०३) व मा नु-अख़्ख़िरुहू इल्ला लिअ - जलिम्-मअ-दूद (१०४) यौ-म यअ्ति ला त-कल्लमु नफ़्सुन् इल्ला बिइज़्निही फमिन्हुम् शक़ियुंव-व सअीद (१०५) फ-अम्मल्लज़ी-न शक़ू फफ़िन्नारि लहुम् फीहा ज़फीरुंव-व शहीक़ (१०६) ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा - अ रब्बु-क इन्-न रब्ब-क फअ् - आलुल्लिमा युरीद (१०७) व अम्मल्लज़ी-न सुअिदू फफ़िल्जन्नति ख़ालिदी-न फीहा मा दामतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा - अ रब्बु-क अता-अन् ग़ै-र मज्ज़ूज़ (१०८) फला तकु फी मिर्यतिम्मिम्मा यअ्बुदु हा-उलाइ मा यअ्बुदू - न इल्ला कमा यअ्बुदु आबाउहुम् मिन् क़ब्लु व इन्ना लमुवफ़्फ़ूहुम् नसीबहुम् ग़ै - र मन्क़ूस ✶ (१०९) व-ल-क़द् आतैना मूसल्किता - ब फख़्तुलि - फ फीहि व लौला कलिमतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् व इन्नहुम् लफी शक्किम्-मिन्हु मुरीब (११०) व इन् - न कुल्ललम्मा लयुवफ्फियन्नहुम् रब्बु-क अअ-मालहुम् इन्नहू बिमा यअ्-मलू-न ख़बीर (१११) फ़स्तक़िम् कमा उमिर-त व मन् ता-ब म-अ़क व ला तत्ग़ौ इन्नहू बिमा तअ्-मलू-न बसीर (११२) व ला तर्कनू इलल्लज़ी-न ज़-लमू फ-त-मस्सकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ सुम्-म ला तुन्सरून (११३) व अक़िमिस्सला-त त़-र - फयिन्नहारि व ज़ु-ल्-फम् - मिनल्लैलि इन्नल् - ह-स-नाति युज़्हिब्नस्-सय्यिआति ज़ालि-क ज़िक्रा लिज़्ज़ाकिरीन (११४)

١٨٦

وَكَذٰلِكَ اَخۡذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الۡقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخۡذَهٗۤ
اَلِيۡمٌ شَدِيۡدٌ ۞ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنۡ خَافَ عَذَابَ الۡاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ
يَوۡمٌ مَّجۡمُوۡعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوۡمٌ مَّشۡهُوۡدٌ ۞ وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا
لِاَجَلٍ مَّعۡدُوۡدٍ ؕ يَوۡمَ يَاۡتِ لَا تَكَلَّمُ نَفۡسٌ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ۚ فَمِنۡهُمۡ
شَقِىٌّ وَّسَعِيۡدٌ ۞ فَاَمَّا الَّذِيۡنَ شَقُوۡا فَفِى النَّارِ لَهُمۡ فِيۡهَا زَفِيۡرٌ وَّ
شَهِيۡقٌ ۙ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالۡاَرۡضُ اِلَّا مَا شَآءَ
رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيۡدُ ۞ وَاَمَّا الَّذِيۡنَ سُعِدُوۡا فَفِى الۡجَـنَّةِ
خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالۡاَرۡضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً
غَيۡرَ مَجۡذُوۡذٍ ۞ فَلَا تَكُ فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّمَّا يَعۡبُدُ هٰٓؤُلَاۤءِ ؕ مَا يَعۡبُدُوۡنَ
اِلَّا كَمَا يَعۡبُدُ اٰبَآؤُهُمۡ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوۡهُمۡ نَصِيۡبَهُمۡ غَيۡرَ
مَنۡقُوۡصٍ ۞ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ فَاخۡتُلِفَ فِيۡهِ ؕ وَلَوۡلَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتۡ مِنۡ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ ؕ وَاِنَّهُمۡ لَفِىۡ شَكٍّ مِّنۡهُ مُرِيۡبٍ ۞
وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمۡ رَبُّكَ اَعۡمَالَهُمۡ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ ۞
فَاسۡتَقِمۡ كَمَاۤ اُمِرۡتَ وَمَنۡ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطۡغَوۡا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ
بَصِيۡرٌ ۞ وَلَا تَرۡكَنُوۡۤا اِلَى الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَـكُمۡ
مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ اَوۡلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنۡصَرُوۡنَ ۞ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ
طَرَفَىِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيۡلِ ؕ اِنَّ الۡحَسَنٰتِ يُذۡهِبۡنَ السَّيِّاٰتِ ؕ

★रु ९/९ आ १४

तुम्हारा परवरदिगार जब ना-फरमान वस्तियो को पकडा करता है, तो उस की पकड इसी तरह की होती है। बेशक उसकी पकड दुख देने वाली (और) सख्त है। (१०२) इन (किस्सो) मे उस शख्स के लिए, जो आखिरत के अजाव से डरे, इब्रत है। यह वह दिन होगा, जिसमे सव लोग इकट्ठे किए जाएगे और यही वह दिन होगा, जिसमे सव (खुदा के सामने) हाजिर किए जाएगे। (१०३) और हम उसके लाने मे एक तै वक्त तक ताखीर कर रहे है। (१०४) जिस दिन वह आ जाएगा, तो कोई शख्स खुदा के हुक्म के बगैर बोल भी नही सकेगा। फिर उनमे से कुछ वद-वख्त होगे और कुछ नेक-बख्त। (१०५) तो जो बद-वख्त होगे वे दोजख मे (डाल दिए जाएंगे), उस मे उनको चिल्लाना और धाडना होगा। (१०६) (और) जव तक आसमान व ज़मीन हैं, हमेशा उसी मे रहेगे, मगर जितना तुम्हारा परवरदिगार चाहे। वेशक तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है, कर देता है। (१०७) और जो नेक-वख्त होगे, वे बहिश्त मे (दाखिल किए जाएगे और) जब तक आसमान और जमीन है, हमेशा इसी मे रहेगे, मगर जितना तुम्हारा परवरदिगार चाहे, यह (खुदा की) वख्शिश है, जो कभी खत्म नही होगी। (१०८) तो ये लोग, जो (गैर-खुदा की) पूजा करते है, उस से तुम शक मे न पडना, ये इसी तरह पूजा करते है, जिस तरह पहले से इन के वाप-दादा पूजा करते आये है और हम उन को उन का हिस्सा पूरा-पूरा वगैर कुछ घटाए-बढाए देने वाले है। (१०९) ★

और हमने मूसा को किताव दी, तो उसमे इख्तिलाफ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक वात पहले न हो चुकी होती, तो उन मे फैसला कर दिया जाता और वे तो इस से भारी शुब्हे मे (पडे हुए) है। (११०) और तुम्हारा परवरदिगार इन सब को (कियामत के दिन) उन के आमाल का पूरा-पूरा वदला देगा। वेशक जो अमल ये करते है, वह उसे जानता है। (१११) सो (ऐ पैगम्वर!) जैसा तुम को हुक्म होता है (उस पर) तुम और जो लोग तुम्हारे साथ तौबा कर चुके है, कायम रहो और हद से आगे न जाना। वह तुम्हारे सब अमल देख रहा है। (११२) और जो लोग जालिम है, उन की तरफ मायल न होना, नही तो तुम्हे (दोजख की) आग आ लिपटेगी और खुदा के सिवा तुम्हारे और दोस्त नही है। अगर तुम जालिमो की तरफ मायल हो गये, तो फिर तुम को (कही से) मदद न मिल सकेगी। (११३) और दिन के दोनो सिरो (यानी सुवह और शाम के वक्तो मे और रात की चद पहली) साअतो मे नमाज़ पढा करो। कुछ शक नही कि नेकिया गुनाहो को दूर कर देती है, यह उनके लिए नसीहत है, जो नसीहत

★रु ९/९ आ १४

वस्बिर् फ़-इन्नल्ला-ह ला युजीअु अज्-रल्-मुह्सिनीन (११५) फलौला का-न मिनल्कुरूनि मिन् कब्लिकुम् उलू बकिय्यतिंय्यन्हौ-न अनिल्फसादि फिल्अर्जि इल्ला क़लीलम्-मिम्मन् अन्जैना मिन्हुम् ॖ वत्त - ब - अल्लजी-न जलमू मा उत्रिफ़ू फीहि व कानू मुज्रिमीन (११६) व मा का - न रब्बु-क लियुह्लिकल्-कुरा बिजुल्मिव् - व अह्लुहा मुस्लिहून (११७) व लौ शा-अ रब्बु-क ल-ज-अ-लन्ना-स उम्मतव्वाहिद-तव् - व ला यज़ालू-न मुख्तलिफीन ॥ (११८) इल्ला मर्रहि-म रब्बुक ♭ व लिजालि-क ख़-ल-क हुम् ♭ व तम्मत् कलिमतु रब्बि - क ल अम्-ल-अन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि अज्-मअीन (११९) व कुल्लन् नकुस्सु अलै-क मिन् अम्बाइर्रुसुलि मा नुसब्बितु बिही फुआ-द - क ॖ व जा - अ-क फी हाज़िहिल्-हक्कु व मौअिज़तुव्-व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन (१२०) व कुल् लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनूनअ्-मलू 'अला मकानतिकुम् ♭ इन्ना आमिलून ॥ (१२१) वन्तज़िरू ॖ इन्ना मुन्तज़िरून (१२२) व लिल्लाहि गैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि व इलैहि युर्जअुल्-अम्रु कुल्लुहू फअ्-बुद्हु व त-वक्कल् अलैहि ♭ व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ-मलून ★ (१२३)

ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۝ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ
يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ
وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ
رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ
لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ۝ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ
رَبُّكَ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ
مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ
اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۝ وَانْتَظِرُوْا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ
وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَّاثْنَا عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ

१२ सूरतु यूसु-फ़ ५३

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ७४११ अक्षर, १८०८ शब्द, १११ आयन और १२ रुकूअ हैं।

विस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ़् - लाम् - रा तिल - क आयातुल् - किताबिल् - मुबीन (१) इन्ना अन्ज़ल्नाहु कुर-आनन् अ-रबिय्यल्-ल-अल्लकुम् तअ्-क़िलून (२)

★रु १०/१० आ १४

कुबूल करने वाले है। (११४) और सब्र किये रहो कि खुदा नेक लोगो का बदला बर्बाद नही करता। (११५) तो जो उम्मतें तुम से पहले गुज़र चुकी है, उनमे ऐसे होशमद क्यो न हुए, जो मुल्क मे खराबी करने से रोकते, हा (ऐसे) थोडे से (थे), जिन को हम ने उन मे से मुख्लिसी बख्शी और जो जालिम थे, उन्ही बातो के पीछे लगे रहे, जिन मे ऐश व आराम था और वे गुनाहो मे डूबे हुए थे। (११६) और तुम्हारा परवरदिगार ऐसा नही है कि बस्तियो मे, जबकि वहां के रहने वाले नेक हो ज़ुल्म के तौर पर तबाह कर दे। (११७) और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो तमाम लोगो को एक ही जमाअत कर देता, लेकिन वे हमेशा इख्तिलाफ करते रहेगे। (११९) मगर जिन पर तुम्हारा परवरिगार रहम करे और इसी लिए उस ने उनको पैदा किया है और तुम्हारे परवरदिगार का कौल पूरा हो गया कि मैं दोज़ख को जिन्नो और इंसानो, सब से भर दूगा। (१२०) ऐ (मुहम्मद !) और पैगम्बरो के वे सब हालात जो हम तुम से बयान करते है, उन से हम तुम्हारे दिल को कायम रखते है और इन (किस्सो) मे तुम्हारे पास हक पहुच गया और (यह) मोमिनो के लिए नसीहत और इब्रत है। (१२०) और जो लोग ईमान नही लाए उन से कह दो कि तुम अपनी जगह अमल किये जाओ, हम (अपनी जगह) अमल किये जाते है। (१२१) और (आमाल के नतीजे का) तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी इन्तिज़ार करते है। (१२२) और आसमानो और जमीन की छिपी चीज़ो का इल्म खुदा ही को है और तमाम मामलो का पलटना उसी की तरफ है, तो उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और जो कुछ तुम कर रहे हो, तुम्हारा परवरदिगार उस से बे-खबर नही। (१२३) ★

१२ सूरः यूसुफ़ ५३

सूर यूसुफ मक्की है और इसमे एक सौ ग्यारह आयते और बारह रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ-लाम-रा, यह रोशन किताब की आयते है। (१) हमने इस कुरआन को अरबी मे नाज़िल किया है, ताकि तुम समझ सको। (२) (ऐ पैगम्बर !) हम इस कुरआन के ज़रिए से, जो

★रु १०/१० आ १४

नह्नु नकुस्सु अलै-क अह्-स-नल्-क-ससि बिमा औहैना इलै-क हाज़ल्-कुर्आ-न व इन् कुन्-त मिन् कब्लिही लमिनल्गाफ़िलीन (३) इज् का-ल यूसुफु लि-अबीहि या अ-बति इन्नी र-ऐतु अ-ह-द अ-श-र कौकबव्वश्शम-स वल्क़-म-र रऐतुहुम् ली साजिदीन (४) का-ल या बुनय्-य ला तक्सुस् रुअ्-या-क अला इख्वति-क फ़-यकीदू ल-क कैदन् इन्नश्शैता-न लिल्इन्सानि अदुव्वुम्-मुबीन (५) व कज़ालि-क यज्तबी-क रब्बु-क व युअल्लिमु-क मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि व युतिम्मु निअ्-म-तहू अलै-क व अला आलि यअ्-कू-ब कमा अतम्महा अला अ-ब-वै-क मिन् कब्लु इब्राही-म व इस्हा-क इन्-न रब्ब-क अलीमुन् हकीम (६) ★ ल-कद् का-न फ़ी यूसु-फ व इख्वतिही आयातुल्लिस्-सा-इलीन (७) इज् कालू ल-यूसुफु व अख़ूहु अहब्बु इला अबीना मिन्ना व नह्नु उस्बतुन् इन्-न अबाना लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन (८) उक्तुलू यूसु-फ अवित्रहूहु अर्-जंय्यख़्लु लकुम् वज्हु अबीकुम् व तकूनू मिम्बअ्-दिही कौमन् सालिहीन (९) का-ल काइलुम्-मिन्हुम् ला तक्तुलू यूसु-फ व अल्क़ूहु फ़ी गयाबतिल्-जुब्बि यल्तकित्हु बअ्-जुस्-सय्यारति इन् कुन्तुम् फ़ाअिलीन (१०) कालू या अबाना मा ल-क ला तअ्मन्ना अला यूसु-फ व इन्ना लहू लनासिहून (११) अर्सिल्हु म-अना गदंय्यर्तअ् व यल-अब् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (१२) का-ल इन्नी ल-यह्ज़ुनुनी अन् तज़्हबू बिही व अख़ाफु अंय्यअ्कुलहुज़्ज़िअ्बु व अन्तुम् अन्हु गाफ़िलून (१३) कालू लइन् अ-क-लहुज़्ज़िअ्बु व नह्नु उस्बतुन् इन्ना इज़ल्लख़ासिरून (१४)

إِلَيْكَ هَٰذَا الْقُرْآنَ وَإِن كُنتَ مِن قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ۝ إِذْ قَالَ
يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ۝ قَالَ يَا بُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ
فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ
يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِن قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَ
إِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ لَّقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ
آيَاتٌ لِّلسَّائِلِينَ ۝ إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ أَبِينَا مِنَّا وَ
نَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ اقْتُلُوا يُوسُفَ
أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِن بَعْدِهِ قَوْمًا
صَالِحِينَ ۝ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَابَتِ
الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ۝ قَالُوا يَا أَبَانَا
مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ۝ أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا
يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَن تَذْهَبُوا
بِهِ وَأَخَافُ أَن يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۝ قَالُوا لَئِنْ
أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَّخَاسِرُونَ ۝ فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ
وَأَجْمَعُوا أَن يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُم

★रु १/११ आ ६

हमने तुम्हारी तरफ भेजा है, तुम्हे एक बहुत अच्छा किस्सा सुनाते है और तुम इस से पहले बेखबर थे। (३) जब यूसुफ ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा ! मैं ने (ख्वाब मे) ग्यारह सितारे और सूरज और चाद को देखा है। देखता (क्या) हू कि वे मुझे सज्दा कर रहे है। (४) उन्होने कहा कि बेटा ! अपने ख्वाब का जिक्र अपने भाइयो से न करना, नही तो वे तुम्हारे हक मे फरेब की की चाल चलेगे। कुछ शक नही कि शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। (५)और इसी तरह खुदा तुम्हे बर्गुजीदा (चुना हुआ खास) करेगा और (ख्वाब की) बातो की ताबीर का इल्म सिखाएगा और जिस तरह उस ने अपनी नेमत पहले तुम्हारे दादा परदादा इब्राहीम और इस्हाक पर पूरी की थी, उसी तरह तुम पर और याकूब की औलाद पर पूरी करेगा। बेशक तुम्हारा परवरदिगार (सब कुछ) जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (६) ★

हा, यूसुफ और उन के भाइयो (के किस्से) मे पूछने वालो के लिए (बहुत सी) निशानिया है।[1] (७) जब उन्होने (आपस मे) तज्किरा किया कि यूसुफ और उसका भाई अब्बा को हम से ज्यादा प्यारे हैं, हालाकि हम जमाअत (की जमाअत) है। कुछ शक नही कि अब्बा खुली गलती पर है।[2] (८) तो यूसुफ को (या तो जान से) मार डालो या किसी मुल्क मे फेक आओ फिर अब्बा की तवज्जोह सिर्फ तुम्हारी तरफ हो जाएगी और इसके बाद तुम अच्छी हालत मे हो जाओगे। (९) उन मे से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ को जान से न मारो, किसी गहरे कुए मे डाल दो कि कोई राह चलता आदमी निकाल (कर और मुल्क मे) ले जाएगा। अगर तुम को करना है (तो यो करो)। (१०) (यह मश्विरे कर के वे याकूब से) कहने लगे कि अब्बा जान ! क्या वजह है कि आप यूसुफ के बारे मे हमारा एतबार नही करते, हालाकि हम उस के खैरख्वाह है। (११) कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए कि खूब मेवे खाये और खेले-कूदे। हम उस के निगहबान है। (१२) उन्होने कहा कि यह बात मुझे गमनाक किये देती है कि तुम उसे ले जाओ (यानी वह मुझ से जुदा हो जाए) और मुझे यह खौफ है कि तुम (खेल मे) उस से गाफिल हो जाओ और उसे भेडिया खा जाए। (१३) वे कहने लगे कि अगर हमारी मौजूदगी मे, कि हम एक ताकतवर जमाअत है, भेडिया

---

१ यहूदियो ने जनाब रिसालत मआब से कहा कि हमे उन पैगम्बर का हाल बताइए, जो शाम मे रहते थे और उन का बेटा मिस्र की तरफ निकाल दिया गया था। वह बेटे के गम मे इतना रोते रहे कि आख की रोशनी जाती रही। कहते हैं कि उस वक्त मक्का मे कोई शख्स अह्ले किताब मे से न था और न कोई ऐसा आदमी था जो पिछले नबियो के हालात का इल्म रखता हो। इस लिए यहूदियो ने एक शख्स को मदीने से यह सवाल करने को हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास मक्का मे भेजा, तब खुदा ने यह सूर नाजिल फरमायी।

२ हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम के ग्यारह भाई थे, जिन मे से दस तो सौतेले थे और एक सगे। उन का नाम बिन यामीन था और यह सब मे छोटे थे। यहा 'इस के भाई' से मुराद यही बिन यामीन है।

★रु १/११ आ ६

फ़-लम्मा ज़-हबू बिही व अज-मअ़ू अय्यज-अ़लूहु फ़ी गयाबतिल्-जुब्बि ج व औहैना इलैहि ल-तुनब्बि-अन्न-हुम् बिअम्रिहिम् हाजा व हुम् ला यश-अ़ुरून (१५) व जाऊ अबाहुम् अिशाअंय्यब-कून ط (१६) कालू या अबाना इन्ना ज़-हब्ना नस्तबिकु व त-रक्ना यूसु-फ अिन्-द मताअिना फ-अ-क-लहुज्-जिअ्बु ج व मा अन्-त बिमुअ्मिनिल्लना व लौ कुन्ना सादिक़ीन ● (१७) व जाऊ अ़ला क़मीसिही बिदमिन् कज़िबिन् ط का-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फुसुकुम् अम्-रन् ط फ - सब्रुन् जमीलुन् ط वल्लाहुल् - मुस्तआनु अला मा तसिफून (१८) व जा-अत् सय्यारतुन् फ-अर्सलू वारि - दहुम् फ-अद्ला दल्-वहू ط का-ल या बुश्रा हाज़ा गुलामुन् ط व अ - सर्रूहु बिज़ा - अ़तन् ط वल्लाहु अलीमुम् - बिमा यअ्-मलून (१९) व शरौहु बि-स-मनिम् - बख़्सिन् दराहि-म मअ् - दूदतिन् ج व कानू फ़ीहि मिनज् - ज़ाहिदीन ✱ (२०) व क़ालल्लज़िश्तराहु मिम्मिस्-र लिम-र-अतिही अक्रिमी मस्-वाहु अ़सा अंय्यन्फ़-अ़ना औ नत्तख़ि-ज़हू व-ल-दन् ط व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ फ़िल्अर्ज़ि ز व लिनु-अ़ल्लिमहू मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि ط वल्लाहु ग़ालिबुन् अ़ला अम्रिही व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून (२१) व लम्मा ब-ल-ग अशुद्दहू आतैनाहु हुक्मंव्-व अिल-मन् ط व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (२२) व रा-व-दत्-हुल्लती हु-व फी बैतिहा अ़न् नफ़्सिही व गल्ल-क़तिल्-अब-वा-ब व कालत् है-त लक ط क़ा-ल मआ़ज़ल्लाहि इन्नहू रब्बी अह्-स-न मस्वा-य ط इन्नहू ला युफ्लिहुज्ज़ालिमून (२३) व ल-क़द् हम्मत् बिही ج व हम्-म बिहा लौला अर्रआ बुर्हा-न रब्बिही ط कज़ालि-क लिनस्रि-फ अ़न्हुस्सू - अ वल् - फ़ह्शा-अ ط इन्नहू मिन् अ़िबादिनल्-मुख़्-लसीन (२४)

يوسف — ١٨٩ — وما من دابة

بأمرهم هذا وهم لا يشعرون (١٥) وجاءو أباهم عشاء يبكون (١٦)
قالوا يأبانا إنا ذهبنا نستبق وتركنا يوسف عند متاعنا فأكله
الذئب وما أنت بمؤمن لنا ولو كنا صادقين (١٧) وجاءو على
قميصه بدم كذب قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر
جميل والله المستعان على ما تصفون (١٨) وجاءت سيارة فأرسلوا
واردهم فأدلى دلوه قال يبشرى هذا غلم وأسروه بضاعة و
الله عليم بما يعملون (١٩) وشروه بثمن بخس دراهم معدودة
وكانوا فيه من الزاهدين (٢٠) وقال الذي اشتراه من مصر
لامرأته أكرمي مثواه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا وكذلك
مكنا ليوسف في الأرض ولنعلمه من تأويل الأحاديث
والله غالب على أمره ولكن أكثر الناس لا يعلمون (٢١) ولما
بلغ أشده آتيناه حكما وعلما وكذلك نجزي المحسنين (٢٢)
وراودته التي هو في بيتها عن نفسه وغلقت الأبواب وقالت
هيت لك قال معاذ الله إنه ربي أحسن مثواي إنه لا يفلح
الظالمون (٢٣) ولقد همت به وهم بها لولا أن رأى برهان ربه
كذلك لنصرف عنه السوء والفحشاء إنه من عبادنا المخلصين (٢٤)
واستبقا الباب وقدت قميصه من دبر وألفيا سيدها لدا الباب

● सु- ३/४ ★ रु- २/१२ आ १४

खा गया, तो हम बडे नुक्सान मे पड गये। (१४) गरज़ जब वे उस को ले गये और इस पर एक राय हो गये कि उसको गहरे कुए मे डाल दे, तो हमने यूसुफ की तरफ वह्य भेजी कि (एक वक्त ऐसा आऐगा कि) तुम उन को इस व्यवहार से आगाह करोगे और उनको (इस वह्य की) कुछ खबर न होगी। (१५) (यह हरकत करके) वे रात के वक्त बाप के पास रोते हुए आये, (१६) (और) कहने लगे कि अब्बाजान ! हम तो दौडने और एक दूसरे से आगे निकलने मे लग गये और यूसुफ को अपने सामान के पास छोड गये तो भेडिया खा गया और आप हमारी बात को, गो हम सच ही कहते हो, मान कर न देगे ●(१७) और उनके कुरते पर झूठ-मूठ का लहू भी लगा लाये। याकूब ने कहा (कि हकीकत यो नही है), बल्कि तुम अपने मन से (यह) बात बना लाये हो।[1] अच्छा सब्र (कि वही) खूब (है) और जो तुम बयान करते हो, उसके बारे मे खुदा ही से मदद चाहिये। (१८) (अब खुदा की शान देखो कि उस कुए के करीब) एक काफिला आया और उन्होने (पानी के लिये) अपना सक्का भेजा। उस ने कुए मे डोल लटकाया (तो यूसुफ उसमे लटक गये)। वह बोला, जहे किस्मत ! यह तो (निहायत हसीन) लटका है और उसको कीमती सरमाया समझ कर छिपा लिया और जो कुछ वे करते थे, खुदा को सब मालूम था। (१९) और उसको थोडी-सी कीमत (यानी) गिनती के कुछ दिरहमो पर बेच डाला और उन्हे उन (के बारे) मे कुछ लालच भी न था। (२०) ★

और मिस्र मे जिस शख्स[2] ने उस को खरीदा, उसने अपनी बीवी से, (जिस का नाम ज़ुलेखा था) कहा कि इस को इज्जत व इकराम से रखो। अजब नही कि यह हमे फायदा दे या हम इसे अपना बेटा बना ले। इस तरह हमने यूसुफ को (मिस्र की) धरती पर जगह दी और गरज़ यह थी कि हम उन को (ख्वाब की) बातो की ताबीर सिखाएं और खुदा अपने काम पर गालिब है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (२१) और जब वह अपनी जवानी को पहुचे तो हमने उनको हिक्मत और इल्म दिया और भले लोगो को हम इसी तरह बदला दिया करते है। (२२) तो जिस औरत के घर मे वह रहते थे उसने उन को अपनी तरफ मायल करना चाहा और दरवाज़े बन्द करके कहने लगी, (यूसुफ !) जल्दी आओ। उन्होने कहा कि खुदा पनाह मे रखे, वह (यानी तुम्हारे मिया) तो मेरे आका है, उन्होने मुझे अच्छी तरह से रखा है, (मैं ऐसा ज़ुल्म नही कर सकता,) बेशक जालिम लोग फलाह नही पाएगे। (२३) और उस औरत ने उनका कस्द किया और उन्होने उसका कस्द किया।[3] अगर वह अपने परवरदिगार की निशानी न देखते (तो जो होता, होता,) यो इसलिए (किया गया) कि हम उनसे बुराई और बे-हयाई को रोक दे। बेशक वह हमारे खालिस बन्दो मे से थे। (२४)

---

१ कुरते पर झूठ-मूठ का लहू लगा लाये, ताकि यह समझा जाए कि भेडिया सचमुच खा गया है, लेकिन यह ख्याल न किया कि भेडिया सचमुच खा जाता, तो भेडिए के दातो से कुरता भी फट जाता, हालाकि वह बिल्कुल सालिम था। जब इन मक्कारो ने हज़रत याकूब से आ कर कहा कि यूसुफ को भेडिया खा गया, तो उन्हो ने कुरता ही देख कर समझ लिया कि ये झूठ कहते हैं और कहा, *भेडिया तो बडा अक्लमद था कि यूसुफ को तो खा गया और कुरता न फटने दिया।*

२ उस शख्स का नाम कुत्फीर था। कुछ लोगो ने लुत्फीर कहा है। यह मिस्र के बादशाह का, जिस का नाम रय्यान बिन वलीद था, वज़ीर था और उस का लकब 'अज़ीज़' था।

३ ज़ुलेखा का कस्द जैसा होगा, जाहिर है, क्योकि वह यूसुफ अलैहिस्सलाम के हुस्न व जमाल पर फरेफ्ता था

(शेष पृष्ठ ३७७ पर)

वस्त-ब-क़ल्बा-ब व क़द्-दत् क़मी-स़हू मिन् दुबुरिव्-व अल्फया सय्यि-दहा ल-दल्बाबि ♭ कालत् मा जज़ा-उ मन् अरा-द बि-अह्लि-क सूअन् इल्ला अय्युस्ज-न औ अज़ाबुन् अलीम (२५) का-ल हि-य रा-व-दत्नी अन् नफ़्सी व शहि-द शाहिदुम्-मिन् अह्लिहा ℭ इन् का-न कमीसुहू कुद-द मिन् कुबुलिन् फ-स-द-कत्

व हु-व मिनल्काजिबी-न (२६) व इन् का-न कमीसुहू कुद्-द मिन् दुबुरिन् फ-क-ज-वत् व हु-व मिनस्-सादिकीन (२७) फ-लम्मा रआ कमी-स़हू कुद्-द मिन् दुबुरिन् का-ल इन्नहू मिन् कैदि-कुन्-न ♭ इन्-न कै-द-कुन्-न अ़ज़ीम (२८) यूसुफु अअ्-रिज़् अन् हाज़ा वस्तग्फिरी लिज़म्बिकि इन्नकि कुन्ति मिनल्-खातिईन ★ (२९) व का-ल निस्-वतुन् फ़िल्-मदीनतिम-र-अतुल्-अज़ीज़ि तुराविदु फताहा अन् नफ़्सिही ℭ कद् श-ग-फहा हुब्बन् ♭ इन्ना ल-न-राहा फी ज़लालिम्-मुबीन (३०)

قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا
اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝
وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝
فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ اِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيْمٌ ۝ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ
اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ۝ وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ
تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ
كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ
وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ
كَرِيْمٌ ۝ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ
نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ وَلَىِٕنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا
مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ
وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝
فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝
ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ۝

फ़-लम्मा समिअत् बिमक्रिहिन्-न अर्स-लत् इलैहिन-न व अअ्-त-दत् लहुन्-न मुत्त-क-अव्-व आतत् कुल-ल वाहिदतिम्-मिन्हुन्-न सिक्कीनव्-व कालतिख़-रुज् अलैहिन्-न फ-लम्मा रऐनहू अक्बर-नहू व कत्तअ्-न ऐदि-यहुन्-न व कुल-न हा-श लिल्लाहि मा हाज़ा ब-शरन् ♭ इन् हाज़ा इल्ला म-लकुन् करीम (३१) कालत् फ़ज़ालिकुन्-नल्लज़ी लुम्तुन्ननी फीहि ♭ व ल-कद् रावत्तुहू अन् नफ़्सिही फ़स्तअ्-सम ♭ व लइल्लम् यफ़्-अल् मा आमुरुहू लयुस्जनन्-न व ल-यकूनम्-मिनस्साग़िरीन (३२) का-ल रब्बिस्सिज्नु अहब्बु इलय्-य मिम्मा यद्-ऊननी इलैहि ℭ व इल्ला तस्रिफ् अन्नी कै-द-हुन्-न अस्बु इलैहिन्-न व अकुम्मिनल्-जाहिलीन (३३) फ़स्तजा-ब लहू रब्बुहू फ-स़-र-फ अ़न्हु कैदहुन्-न ♭ इन्नहू हुवस्समीउ़ल्-अलीम (३४) सुम्-म बदा लहुम् मिम्बअ्-दि मा र-अवुल्-आयाति ल-यस्जुनुन्नहू हत्ता हीन ★ (३५)

और दोनो दरवाजे की तरफ भागे (आगे यूसुफ, पीछे जुलेखा) और औरत ने उनका कुर्ता पीछे से (पकड कर जो खीचा, तो) फाड डाला और दोनो को दरवाजे के पास औरत का खाविंद मिल गया, तो औरत बोली कि जो शख्स तुम्हारी बीवी के साथ बुरा इरादा करे, उस की इस के सिवा क्या सजा है कि या तो कैद किया जाए या दुख का अजाब दिया जाए। (२५) यूसुफ ने कहा, उसी ने मुझ को अपनी तरफ मायल करना चाहा था। उस के कबीले मे से एक फैसला करने वाले ने यह फैसला किया कि अगर उसका कुरता आगे से फटा हो, तो यह सच्ची और यूसुफ झूठा। (२६) और अगर कुरता पीछे से फटा हो तो यह झूठी और वह सच्चा। (२७) जब उसका कुरता देखा (तो) पीछे से फटा था, (तब उसने जुलेखा से कहा) कि यह तुम्हारा ही फरेब है और कुछ शक नही कि तुम औरतो के फरेब बडे (भारी) होते है। (२८) यूसुफ! इस बात का ख्याल न कर और (जुलेखा) तू अपने गुनाह की बख्शिश माग, बेशक खता तेरी ही है। (२९) ★

और शहर मे औरते बाते करने लगी कि अजीज की बीवी अपने गुलाम को अपनी तरफ मायल करना चाहती है और उसकी मुहब्बत उसके दिल मे घर कर गयी है। हम देखते है कि वह खुली गुमराही मे है। (३०) जब जुलेखा ने इन औरतो की (बाते, जो हकीकत मे यूसुफ के दीदार के लिए एक) चाल (थी) सुनी तो उनके पास (दावत का) पैगाम भेजा और उनके लिए एक महफिल सजायी और (फल काटने के लिए) हर एक को एक-एक छुरी दी और (यूसुफ से) कहा कि इनके सामने बाहर आओ। जब औरतो ने उनको देखा तो उन (के हुस्न) का रौब ऐसा छा गया कि (फल काटते-काटते) अपने हाथ काट लिए। और बे-साख्ता बोल उठी कि सुब्हानल्लाह! (यह हुस्न!) यह आदमी नही कोई बुजुर्ग फरिश्ता है। (३१) तब जुलेखा ने कहा, यह वही है जिसके बारे मे तुम मुझे ताने देती थी और बेशक मैं ने उस को अपनी तरफ मायल करना चाहा, मगर यह बचा रहा और अगर यह वह काम न करेगा, जो मै इसे कहती हू, तो कैद कर दिया जाएगा और जलील होगा। (३२) यूसुफ ने दुआ की कि परवरदिगार! जिस काम की तरफ ये मुझे बुलाती है, उस के मुकाबले मे मुझे कैद पसन्द है और अगर तू मुझ से उन के फरेब को न हटायेगा, तो मै उन की तरफ मायल हो जाऊगा और नादानो मे दाखिल हो जाऊगा। (३३) तो खुदा ने उन की दुआ कुबूल कर ली और उन से औरतो का मक्र खत्म कर दिया। बेशक वह सुनने (और) जानने वाला है। (३४) फिर बावजूद इस के कि वे लोग निशान देख चुके थे, उन की राय यही ठहरी कि कुछ दिनो के लिए उन को कैद ही कर दे। (३५) ★

(पृष्ठ ३७५ का शेष)

रही थी, मगर यूसुफ का कस्द ऐसा नही हो सकता, क्योकि वह ऐसे काम से खुदा की पनाह मागने है और अमानत मे खियानत करने को जुल्म समझते हैं और यह कह कर जुलेखा का कहा नही मानते। वह उन के इसरार से उस की तरफ झुक तो गये, लेकिन किसी रजामदी, चाव और दिल से नही, बल्कि बे-मन से और जब कस्द इन्सानी तबीयत के तकाजे से न हो और उस मे इरादा न शामिल हो यानी सिर्फ ख्याल ही ख्याल हो, इस पर पकड नही। जुलेखा के कस्द मे दिल का चाव शामिल था, इसरार था और यूसुफ के कस्द मे चाव न था। दोनो के कस्द मे बडा फर्क था। अव्वल तो यूसुफ अलैहिस्सलाम का कस्द चाव का न था, फिर उन्हो ने परवरदिगार की कोई निशानी देख ली, तो वह कस्द भी जाता रहा।

★रु ३/१३ आ ९ ★रु ४/१४ आ ६

व द-ख़-ल म-अहुस्सिज्-न फ़-तयानि ط का-ल अ-ह्दुहुमा इन्नी अरानी अअ्-सिरु ख़म्-रन् ج व कालल्-आख़रु इन्नी अरानी अह्मिलु फौ-क रअ्-सी ख़ुब-जन् तअ - कुलुत्तैरु मिन्हु नब्बिअ् - ना बितअ् - वीलिही ج इन्ना नरा - क मिनलमुह्सिनीन (३६) का-ल ला यअ्तीकुमा तआमुन् तुर्जकानिही इल्ला नब्बअ्-तुकुमा बितअ - वीलिही क़ब् - ल अंय्यअ - ति - यकुमा ط जालिकुमा मिम्मा अल्ल-मनी रब्बी ط इन्नी तरक्तु मिल्ल-तु कौमिल्ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफिरून (३७) वत्तबअ्-तु मिल्ल-त आबाई इब्राही - म व इस्हा-क व यअ्-कू-ब ط मा का-न लना अन् नुशिर - क बिल्लाहि मिन् शैइन् ط जालि-क मिन् फज़्लिल्लाहि अलैना व अ-लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (३८) या साहिबयिस्-सिज्नि अ-अर्बाबुम्-मुत-फर्रिकू-न ख़ैरुन् अमिल्लाहुल्-वाहिदुल्-कह्हार ط (३९) मा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिही इल्ला अस्मा-अन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज - लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन् ط इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि ط अ - म - र अल्ला तअ-बुदू इल्ला इय्याहु ط जालिकद-दीनुल्-कय्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून (४०) या साहिबयिस्-सिज्नि अम्मा अहदुकुमा फ-यस्की रब्बहू ख़म् - रन् ج व अम्मल् - आख़रु फयुस् - लबु फ - तअ्कुलुत्तैरु मिर्रअ - सिही ط कुज़ियल् - अम्रुल्लज़ी फीहि तस्तफ्तियान ط (४१) व का-ल लिल्लज़ी ज़न् - न अन्नहू नाजिम् - मिन्हुमज़ - कुर्नी अिन् - द रब्बि - क ✓ फ-अन्साहुश्शैतानु जिक् - र रब्बिही फ - लबि - स फिस्सिज्नि बिज्-अ सिनीन ط ★ (४२)

يوسف ١٢ ١٩١ وما من دآبة ١٢

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۗ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ
وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۗ
نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا
طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ۗ ذٰلِكُمَا
مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ۗ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ
بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ ۗ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ
اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۳۸﴾
يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۳۹﴾
مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ
مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۗ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۗ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا
اِلَّآ اِيَّاهُ ۗ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۰﴾
يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ
فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ۗ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ
تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿۴۱﴾ وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ
رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿۴۲﴾ ع
وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ

★रु ५/१५ आ ७

और उन के साथ दो और जवान भी जेल मे दाख़िल हुए। एक ने उन मे से कहा कि (मैं ने ख़्वाब देखा है।) देखता (क्या) हू कि शराब (के लिए अगूर) निचोड रहा हू। दूसरे ने कहा कि (मैं ने भी ख़्वाब देखा है।) मैं यह देखता हू कि अपने सर पर रोटिया उठाये हुए हू और जानवर उन मे से खा रहे हैं (तो) हमे उन की ताबीर बता दीजिए कि हम तुम्हे नेक देखते हैं। (३६) यूसुफ ने कहा कि जो खाना तुम को मिलने वाला है, वह आने नही पायेगा कि मैं इस से पहले तुम को उन की ताबीर बता दूगा। यह उन (बातो) मे से है, जो मेरे परवरदिगार ने मुझे सिखायी है। जो लोग ख़ुदा पर ईमान नही लाते और आख़िरत के दिन का इन्कार करते है, मैं उन का मज़हब छोड़े हुए हू। (३७) और अपने बाप-दादा, इब्राहीम और इस्हाक और याकूब के मज़हब पर चलता हू हमे मुनासिब नही है कि किसी चीज को ख़ुदा के साथ शरीक बनाए। यह ख़ुदा का फ़ज्ल है, हम पर भी और लोगो पर भी। लेकिन अक्सर लोग शुक्र नही करते। (३८) मेरे जेलख़ाने के साथियो! भला कई जुदा-जुदा आका अच्छे या (एक) ख़ुदा-ए-यक्ता व गालिब। (३६) जिन चीज़ो को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, वे सिर्फ नाम है, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए है। ख़ुदा ने उन की कोई सनद नाज़िल नही की। (सुन रखो कि) ख़ुदा के सिवा किसी की हुकूमत नही है। उस ने इर्शाद फरमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (४०) मेरे जेल के साथियो! तुम मे से एक (जो पहला ख़्वाब बयान करने वाला है, वह) तो अपने आका को शराब पिलाया करेगा और जो दूसरा है, वह सूली दिया जाएगा और जानवर उस का सर खा-खा जाएगे। जो बात तुम मुझ से पूछते थे, उस का फ़ैसला हो चुका है। (४१) और दोनो शख़्सो मे से जिस के बारे मे (यूसुफ ने) ख़्याल किया कि वह रिहाई पा जाएगा, उस से कहा कि अपने आका से मेरा ज़िक्र भी करना, लेकिन शैतान ने उन का अपने आका से ज़िक्र करना भुला दिया और यूसुफ कई वर्ष जेलख़ाने ही मे रहे। (४२) ✶

★रु· ५/१५ आ ७

व क़ालल्मलिकु इन्नी अरा सब्-अ. ब-करातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन् अिजाफ़ुंव्-व सब्-अ. सुम्बुलातिन् ख़ुज़्रिंव - व उख़ - र याबिसातिन् या अय्युहल्मलउ अफ़्तूनी फ़ी रुअ्या-य इन् कुन्तुम् लिर्रुअ्या तअ्बुरून (४३) क़ालू अज़्गासु अह्लामिन् व मा नह्नु बितअ्वीलिल् - अह्लामि बिआलिमीन (४४) व क़ालल्लज़ी नजा मिन्हुमा वद्द-क-र बअ्-द उम्मतिन् अ-न उनब्बिउकुम् बितअ्वीलिही फ़ - अर्सिलून (४५) यूसुफ़ु अय्युहस्सिद्दीक़ु अफ़्तिना फ़ी सब्अि ब-क-रातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन् अिजाफ़ुंव् - व सब्अि सुम्बुलातिन् ख़ुज़्रिंव् - व उख़ - र याबिसातिल्लअ़ल्ली अर्जिअु इलन्नासि ल-अ़ल्लहुम् यअ्लमून (४६) क़ा-ल तज़्-रअू-न सब्-अ. सिनी-न द-अ-बन् फ़मा ह़सत्तुम् फ़-ज़रूहु फ़ी सुम्बुलिही इल्ला क़लीलम् - मिम्मा तअ्कुलून (४७) सुम्-म यअ्ती मिम्बअ्-दि ज़ालि-क सब्अुन् शिदादुंय्यअ्कुल-न मा क़द्दम्तुम् लहुन्-न इल्ला क़लीलम्-मिम्मा तुह्सिनून (४८) सुम्-म यअ्ती मिम्बअ्-दि ज़ालि-क आमुन् फ़ीहि युग़ासुन्नासु व फ़ीहि यअ् - सिरून ★ (४९) व क़ालल् - मलिकुअ्तूनी बिही फ़लम्मा जा - अहुर् - रसूलु क़ालर्जिअ् - इला रब्बि - क फ़स्अल्हु मा बालुन्-निस्वतिल्लाती क़त्तअ्-न ऐदि-यहुन्-न इन्-न रब्बी बिकैदिहिन्-न अ़लीम (५०) का-ल मा ख़त्बुकुन्-न इज़् रावत्तुन-न यूसु - फ़ अन् नफ़्सिही क़ुल् - न हा - श लिल्लाहि मा अ़लिम्ना अ़लैहि मिन् सूइन् क़ालतिम्-र-अतुल् - अज़ीज़िल्आ - न ह़स्-ह़-सल् - ह़क़्क़ु अ-न रावत्तुहू अन् नफ़्सिही व इन्नहू लमिनस्सादिक़ीन (५१) ज़ालि-क लियअ्-ल-म अन्नी लम् अख़ुन्हु बिल्ग़ैबि व अन्नल्ला-ह ला यह्दी कैदल्ख़ाइनीन (५२)

१९٢

وسبع سنبلت خضر واخر يبست يايها الملا افتوني في
رءياي ان كنتم للرءيا تعبرون ۝ قالوا اضغاث احلام و
ما نحن بتاويل الاحلام بعلمين ۝ وقال الذي نجا منهما
وادكر بعد امة انا انبئكم بتاويله فارسلون ۝ يوسف ايها
الصديق افتنا في سبع بقرت سمان ياكلهن سبع عجاف
وسبع سنبلت خضر واخر يبست لعلي ارجع الى الناس
لعلهم يعلمون ۝ قال تزرعون سبع سنين دابا فما حصدتم
فذروه في سنبله الا قليلا مما تاكلون ۝ ثم ياتي من بعد
ذلك سبع شداد ياكلن ما قدمتم لهن الا قليلا مما
تحصنون ۝ ثم ياتي من بعد ذلك عام فيه يغاث الناس و
فيه يعصرون ۝ وقال الملك ائتوني به فلما جاءه
الرسول قال ارجع الى ربك فسئله ما بال النسوة التي
قطعن ايديهن ان ربي بكيدهن عليم ۝ قال ما خطبكن
اذ راودتن يوسف عن نفسه قلن حاش لله ما علمنا
عليه من سوء قالت امرات العزيز الئن حصحص الحق
انا راودته عن نفسه وانه لمن الصدقين ۝ ذلك
ليعلم اني لم اخنه بالغيب وان الله لا يهدي كيد الخائنين

★रु. ६/१६ आ ७

और बादशाह ने कहा कि मैं (ने ख्वाब देखा है।) देखता (क्या) हू कि सात मोटी गाये है जिन को सात दुबली गाये खा रही है और सात हरी बालिया है और (सात) सूखी। ऐ सरदारो ! अगर तुम ख्वाबो की ताबीर दे सकते हो, तो मुझे मेरे ख्वाब की ताबीर बताओ। (४३) उन्हो ने कहा, ये तो परेशान से ख्वाब है और हमे ऐसे ख्वाबो की ताबीर नही आती। (४४) अब वह शख्स, जो दोनो कैदियो मे से रिहाई पा गया था और जिसे मुद्दत के बाद वह बात याद आ गयी, बोल उठा कि मैं आप को उसकी ताबीर (ला) बताता हू। मुझे (जेलखाने) जाने की इजाजत दीजिए। (४५) (गरज वह यूसुफ के पास आया और कहने लगा) यूसुफ ! ऐ बडे सच्चे (यूसुफ !) हमे (इस ख्वाब की ताबीर) बताइए कि सात मोटी गायो को सात दुबली गाये खा रही है और सात बालिया हरी है और सात सूखी ताकि मैं लोगो के पास जा (कर ताबीर बताऊ), अजब नही कि वे (तुम्हारी कद्र) जानें। (४६) उन्हो ने कहा कि तुम लोग सात साल लगातार खेती करते रहोगे, तो जो (अनाज) काटो तो थोडे से अनाज के सिवा, जो खाने मे आए, उसे बालियो ही मे रहने देना। (४७) फिर इस के बाद (सूखे के) सात सख्त (साल) आएगे कि जो (अनाज) तुम ने जमा कर रखा होगा, वे उस सब को खा जाएगे, सिर्फ वही थोडा-सा रह जाएगा, जो तुम एहतियात मे रख छोडोगे। (४८) फिर इस के बाद एक साल ऐसा आएगा कि खूब मेह बरसेगा और लोग उस मे रस निचोडेंगे★(४९) (यह ताबीर सुन कर) बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ को मेरे पास ले आओ। जब कासिद उन के पास गया, तो उन्हो ने कहा कि अपने आका के पास वापस जाओ और उन से पूछो कि उन औरतो का क्या हाल है, जिन्हो ने अपने हाथ काट लिए थे। बेशक मेरा परवर-दिगार उन के मक्रो को खूब जानता है। (५०) बादशाह ने (औरतो से) पूछा कि भला उस वक्त क्या हुआ था, जब तुमने यूसुफ को अपनी तरफ मायल करना चाहा। सब बोल उठी कि 'हाशा लिल्लाह' हम ने उस मे कोई बुराई नही मालूम की। अजीज की औरत ने कहा कि अब सच्ची बात तो जाहिर हो ही गयी है। (असल यह है कि) मै ने उस को अपनी तरफ मायल करना चाहा था और वह बेशक सच्चा है। (५१) (यूसुफ ने कहा कि मैंने) यह बात इस लिए (पूछी है) कि अजीज को यकीन हो जाए कि मै ने उस की पीठ पीछे उस की (अमानत मे) खियानत नही की और खुदा खियानत करने वालो के मक्रो को (सीधा) रास्ता नही दिखाता। (५२) और मैं अपने आप को

★रु ६/१६ आ ७

तेरहवां पारः व मा उबर्रिउ

सूरतु यूसु-फ़ आयत ५३ से १११

व मा उबर्रिउ नफ़्सी इन्नन्नफ़ - स ल-अम्मारतुम् - बिस्सू-इ इल्ला मा रहि-म रब्बी इन्-न रब्बी गफ़ूरुर्रहीम (५३) व कालल्-मलिकुअ्तूनी बिही अस्तख़्लिस्हु लिनफ़्सी फ़-लम्मा कल्ल - महू का - ल इन्नकल्-यौ-म लदैना मकीनुन् अमीन (५४) कालज्अल्नी अला ख़ज़ाइनिल् - अर्ज़ि इन्नी हफ़ीज़ुन् अ़लीम (५५) व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ फ़िल्अर्ज़ि य-त-बव्वउ मिन्हा हैसु यशाउ नुसीबु बिरह्-मतिना मन् नशाउ व ला नुज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन (५६) व ल-अज्रुल्-आख़िरति ख़ैरुल्लिल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तकून ★ (५७) व जा - अ इख़्वतु यूसु-फ फ-द-ख़लू अलैहि फ-अ-र-फहुम् व हुम् लहू मुन्किरून (५८) व लम्मा जह्-ह-ज-हुम् बिजहाज़िहिम् कालअ्तूनी बि - अख़िल्लकुम् मिन् अबीकुम् अला तरौ - न अन्नी ऊफ़िल्-कै-ल व अना ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِيٓ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيٓ
إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِي بِهِۦٓ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي
فَلَمَّا كَلَّمَهُۥ قَالَ إِنَّكَ ٱلْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ ٱجْعَلْنِي
عَلَىٰ خَزَآئِنِ ٱلْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ
فِي ٱلْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَآءُ
وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾ وَلَأَجْرُ ٱلْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا
وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾ وَجَآءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَ
هُمْ لَهُۥ مُنكِرُونَ ﴿٥٨﴾ وَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ قَالَ ٱئْتُونِي بِأَخٍ
لَّكُم مِّنْ أَبِيكُمْ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّيٓ أُوفِي ٱلْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ ٱلْمُنزِلِينَ ﴿٥٩﴾
فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِۦ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِي وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٠﴾ قَالُوا
سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ ٱجْعَلُوا
بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَآ إِذَا ٱنقَلَبُوٓا إِلَىٰٓ أَهْلِهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوٓا إِلَىٰٓ أَبِيهِمْ قَالُوا يَٰٓأَبَانَا مُنِعَ مِنَّا
ٱلْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَآ أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَافِظُونَ ﴿٦٣﴾ قَالَ
هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَآ أَمِنتُكُمْ عَلَىٰٓ أَخِيهِ مِن قَبْلُ فَٱللَّهُ
خَيْرٌ حَافِظًا وَهُوَ أَرْحَمُ ٱلرَّاحِمِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا
بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَٰٓأَبَانَا مَا نَبْغِي هَٰذِهِۦ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ

(५९) फ़इल्लम् तअ्तूनी बिही फ़ला कै-ल लकुम् अिन्दी व ला तक़्रबून (६०) कालू सनुराविदु अ़न्हु अबाहु व इन्ना लफ़ाअिलून (६१) व का-ल लिफ़ित्यानिहिज्-अलू बिज़ा-अ़-तहुम् फ़ी रिहालिहिम् ल-अ़ल्लहुम् यअ्-रिफ़ूनहा इज़न्क़-लबू इला अह्लिहिम् ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअून (६२) फ-लम्मा र-ज-अू इला अबीहिम् कालू या अबाना मुनि - अ मिन्नल्कैलु फ - अर्सिल् म-अना अख़ाना नक्तल् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (६३) का-ल हल् आमनुकुम् अ़लैहि इल्ला कमा अमिन्तुकुम् अ़ला अख़ीहि मिन् क़ब्लु फ़ल्लाहु ख़ैरुन् हाफ़िज़ंव् - व हु - व अर्हमुर्-राहिमीन (६४)

★ ७/१ आ ८

पाक-साफ नही कहता, क्यो कि नफ्से अम्मारा (इसान को) बुराई ही सिखाता रहता है, मगर यह कि मेरा परवरदिगार रहम करे। बेशक मेरा परवरदिगार बख्शने वाला मेहरबान है। (५३) बादशाह ने हुक्म दिया कि उसे मेरे पास लाओ। मैं उसे अपना खास मुसाहिब बनाऊगा। फिर जब उन से बातें की तो कहा कि आज से तुम हमारे यहा दर्जे वाले और एतबार वाले हो। (५४) (यूसुफ ने) कहा, मुझे इस मुल्क के खजानों पर मुकर्रर कर दीजिए, क्यो कि मैं हिफाजत भी कर सकता हू और इस काम को जानता हूं। (५५) इस तरह हम ने यूसुफ को मुल्क (मिस्र) मे जगह दी और वह उस मुल्क मे जहां चाहते थे। रहते थे हम अपनी रहमत जिस पर चाहते हैं, करते है और नेक लोगो के अज्र को बर्बाद नही करते। (५६) और जो लोग ईमान लाए और डरते रहे, उन के लिए आखिरत का अज्र बहुत बेहतर है। (५७) ★

और यूसुफ के भाई (कन्आन से मिस्र मे गल्ला खरीदने के लिए) आए तो यूसुफ के पास गये तो यूसुफ ने उनको पहचान लिया और वह उनको न पहचान सके। (५८) जब यूसुफ ने उनके लिए उन का सामान तैयार कर दिया तो कहा कि (फिर आना तो) जो बाप की तरफ से तुम्हारा एक और भाई है, उसे भी मेरे पास लेते आना। क्या तुम नही देखते कि मैं नाप भी पूरी-पूरी देता हू और मेहमानदारी भी खूब करता हू। (५९) और अगर तुम उसे मेरे पास न लाओगे, तो न तुम्हें मेरे यहा से गल्ला मिलेगा, और न तुम मेरे पास ही आ सकोगे। (६०) उन्हो ने कहा कि हम उस के बारे मे उसके वालिद से तज्किरा करेगे और हम यह (काम) करके रहेगे। (६१) और (यूसुफ ने) अपने नौकरों से कहा कि उन का सरमाया (यानी गल्ले की कीमत) उन के शलीतो मे रख दो। अजब नही कि जब ये अपने बाल-बच्चो मे जाए तो उसे पहचान ले (और) अजब नही कि ये फिर यहा आए। (६२) जब वे अपने बाप के पास वापस गए तो कहने लगे कि अब्बा! (जब तक हम बिन यामीन को साथ न ले जाएं) हमारे लिए गल्ले की पाबदी कर दी गयी है, तो हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए, ताकि हम फिर अनाज लाए और हम इस के निगेहबान है। (६३) (याकूब ने) कहा कि मैं इस के बारे मे तुम्हारा एतबार नही करता, मगर वैसा ही जैसा पहले इस के भाई के बारे मे किया था, सो खुदा ही बेहतर निगेहबान है और वह सब से ज्यादा रहम

★रु ७/१ आ ८

व लम्मा फ़-तहू मताअहुम् व-जदू बिज़ा-अ-तहुम् रुद्दत् इलैहिम् ط कालू या अबाना मा नब्ग़ी ط हाज़िही बिज़ाअतुना रुद्दत् इलैना ج व नमीरु अह्-लना व नह्फ़ज़ु अख़ाना व नज़्दादु कै-ल बओरिन् ط ज़ालि-क कैलुंय्यसीर (६५) का-ल लन् उर्सि-लहू म-अकुम् हत्ता तुअ्तूनि मौसिक़म्-मिनल्लाहि ल-तअ्तुन्ननी बिही इल्ला अंय्युहा-त बिकुम् ج फ-लम्मा आतौहु मौसिक़हुम् कालल्लाहु अला मा नक़ूलु वकील (६६) व क़ा-ल या बनिय्-य॰ ला तद्ख़ुलू मिम्बाबिंव्वाहिदिंव्वद्ख़ुलू मिन् अब्वाबिम् - मुतफ़र्रिक़तिन् ط व मा उग़्नी अन्कुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन् ط इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि ط अलैहि तवक्कल्तु ج व अलैहि फल-य-त-वक्कलिल्-मु-त-वक्किलून (६७) व लम्मा द-ख़-लू मिन् हैसु अ-म-रहुम् अबूहुम् ط मा का-न युग़्नी अन्हुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन् इल्ला हाज-तन् फी नफ़्सि यअ्-कू-ब क़ज़ाहा ط व इन्नहू लज़ू अिल्मिल्लिमा अल्लम्नाहु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून ★ (६८) व लम्मा द-ख़लू अला यूसु-फ आवा इलैहि अख़ाहु का-ल इन्नी अ-न अख़ू-क फला तब्तइस् बिमा कानू यअ्-मलून (६९) फ-लम्मा जह्-ह-ज-हुम् बिजहाज़िहिम् ज-अ-लस्सिकाय-त फ़ी रह्लि अख़ीहि सुम्-म अज़्ज़-न मुअज़्ज़िनुन् अय्यतुहल्-ओरु इन्नकुम् लसारिक़ून (७०) कालू व अक़्बलू अलैहिम् माज़ा तफ़्क़िदून (७१) कालू नफ़्क़िदु सुवाअल्-मलिकि व लिमन् जा-अ बिही हिम्लु बओरिंव्-व अना बिही ज़ओम (७२) कालू तल्लाहि ल-क़द् अलिम्तुम् मा जिअ्ना लिनुफ़्सि-द फ़िल्अर्ज़ि व मा कुन्ना सारिक़ीन (७३) कालू फ़मा जज़ाउहू इन् कुन्तुम् काज़िबीन (७४) कालू जज़ाउहू मंव्वुजि-द फ़ी रह्लिही फ़हु-व जज़ाउहू ط कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (७५)

إلينا ونمير أهلنا ونحفظ أخانا ونزداد كيل بعير ذلك كيل
يسير ﴿٦٥﴾ قال لن أرسله معكم حتى تؤتون موثقا من الله
لتأتنني به إلا أن يحاط بكم فلما آتوه موثقهم قال الله على
ما نقول وكيل ﴿٦٦﴾ وقال يا بني لا تدخلوا من باب واحد وادخلوا
من أبواب متفرقة وما أغني عنكم من الله من شيء إن الحكم إلا
لله عليه توكلت وعليه فليتوكل المتوكلون ﴿٦٧﴾ ولما دخلوا من
حيث أمرهم أبوهم ما كان يغني عنهم من الله من شيء إلا
حاجة في نفس يعقوب قضاها وإنه لذو علم لما علمناه ولكن
أكثر الناس لا يعلمون ﴿٦٨﴾ ولما دخلوا على يوسف آوى إليه
أخاه قال إني أنا أخوك فلا تبتئس بما كانوا يعملون ﴿٦٩﴾ فلما
جهزهم بجهازهم جعل السقاية في رحل أخيه ثم أذن مؤذن
أيتها العير إنكم لسارقون ﴿٧٠﴾ قالوا وأقبلوا عليهم ماذا تفقدون ﴿٧١﴾
قالوا نفقد صواع الملك ولمن جاء به حمل بعير وأنا به
زعيم ﴿٧٢﴾ قالوا تالله لقد علمتم ما جئنا لنفسد في الأرض وما
كنا سارقين ﴿٧٣﴾ قالوا فما جزاؤه إن كنتم كاذبين ﴿٧٤﴾ قالوا جزاؤه
من وجد في رحله فهو جزاؤه كذلك نجزي الظالمين ﴿٧٥﴾ فبدأ
بأوعيتهم قبل وعاء أخيه ثم استخرجها من وعاء أخيه

★रु ८/२ आ ११

करने वाला है। (६४) और जब उन्हो ने अपना सामान देखा कि उन का सरमाया उन को वापस कर दिया गया है' कहने लगे, अब्बा! हमे (और) क्या चाहिए? (देखिए) यह हमारी पूजी हमे वापस कर दी गयी है। अब हम अपने बाल-बच्चो के लिए फिर गल्ला लाएगे और अपने भाई की निगेहबानी करेगे और एक ऊट बोझ ज्यादा लाएगे (कि) यह अनाज (जो हम लाए है) थोडा है। (६५) (याकूब ने) कहा कि जब तक तुम खुदा का अह्द न दो कि उस को मेरे पास (सही व सालिम) ले आओगे, मैं इसे हरगिज़ तुम्हारे साथ नही भेजने का, मगर यह कि तुम घेर लिए जाओ (यानी बे-बस हो जाओ तो मजबूरी है)। जब उन्हो ने उन से अह्द कर लिया, तो (याकूब) ने कहा कि जो कौल व करार हम कर रहे है, उस का खुदा वकील (ज़ामिन) है। (६६) और हिदायत की कि बेटा! एक ही दरवाजे से दाखिल न होना, बल्कि अलग-अलग दरवाजो से दाखिल होना और मैं खुदा की तक्दीर तो तुम से नही रोक सकता। (बेशक) हुक्म उसी का है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और भरोसे वालो को उसी पर भरोसा रखना चाहिए। (६७) और जब वे उन-उन जगहो से दाखिल हुए, जहा-जहा से (दाखिल होने के लिए) बाप ने उन से कहा था तो वह तद्बीर खुदा के हुक्म को जरा भी टाल नही सकती थी। हा, वह याकूब के दिल की ख्वाहिश थी, जो उन्हो ने पूरी की थी और बेशक वह इल्म वाले थे, क्यो कि हम ने उन को इल्म सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (६८)★

और जब वे लोग यूसुफ के पास पहुचे तो यूसुफ ने अपने सगे भाई को अपने पास जगह दी और कहा कि मैं तुम्हारा भाई हू तो जो सुलूक ये (हमारे साथ) करते रहे है, इस पर अफसोस न करना। (६९) जब उन का सामान तैयार कर दिया, तो अपने भाई के शलीते मे गिलास रख दिया, फिर (जब वे आबादी से बाहर निकल गये तो) एक पुकारने वाले ने आवाज़ दी कि काफिले वालो! तुम तो चोर हो।[1] (७०) वे उन की तरफ मुतवज्जह हो कर कहने लगे कि तुम्हारी क्या चीज़ खोयी गयी है। (७१) वह बोले कि बादशाह (के पानी पीने) का गिलास खोया गया है और जो शख़्स उस को ले आए, उस के लिए एक ऊट बोझ (इनाम) और मैं उस का जामिन हू। (७२) वे कहने लगे कि खुदा की कसम! तुम को मालूम है कि हम (इस) मुल्क मे इस लिए नही आए कि खराबी करे और न हम चोरी किया करते है। (७३) बोले कि अगर तुम झूठे निकले (यानी चोरी साबित हुई) तो उस की सजा क्या है? (७४) उन्हो ने कहा कि उस की सजा यह कि जिस के शलीते मे वह मिले, वही उस का बदल करार दिया जाए। हम ज़ालिमो को यही सजा

---

१ पुकारने वाले ने उन को सच मे चोर समझा था, क्योकि उन को यह मालूम न था कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने यह तद्बीर की है।

फ-ब-द-अ बिऔअियतिहिम् कब्-ल विआ-इ अखीहि सुम्मस्तख्-र-जहा मिंव्विआइ अख़ीहि ط कज़ालि - क किद्ना लियूसु-फ ط मा का - न लियअ्खु-ज अखाहु फ़ी दीनिल्मलिकि इल्ला अंय्यशाअल्लाहु ط नर्फ़अु द - र - जातिम् - मन नशाउ ط व फ़ौ - क़ कुल्लि ज़ी अिल्मिन् अ़लीम (७६) क़ालू इंय्यस्रिक् फ-कद् स-र-क अखुल्लहू मिन् क़ब्लु ج फ - असर्रहा यूसुफु फी नफ़्सिही व लम् युब्दिहा लहुम् ج का-ल अन्तुम् शर्रुम्-मकानन् ج वल्लाहु अअ् - लमु बिमा तसिफ़ून (७७) कालू या अय्युहल्-अजीज़ु इन-न लहू अ-बन् शैखन् कबीरन् फखुज् अ - ह - दना मकानहू ج इन्ना नरा - क मिनलमुह्सिनीन (७८) का-ल मआज़ल्लाहि अन्नअ्खु-ज इल्ला मव्व-जद्ना मता-अना अिन्दहू ۙ इन्ना इज़ल्लज़ालिमून ★ (७९) फ-लम्मस्तै-असू मिन्हु ख - लसू नजिय्यन् ط का-ल कबीरुहुम् अ-लम् तअ्-लमू अन-न अबाकुम् कद् अ-ख-ज अलैकुम् मौसिकम्-मिनल्लाहि व मिन् कब्लु मा फर्रत्तुम् फी यूसु-फ ج फ-लन् अब्-र-हल्-अर-ज हत्ता यअ्ज-न ली अबी औ यह्कुमल्लाहु ली ج व हु-व खैरुल्-हाकिमीन (८०) इर्जिअू इला अबीकुम् फ़कूलू या अबाना इन्नब्न-न-क स-र-क ج व मा शहिद्ना इल्ला बिमा अलिम्ना व मा कुन्ना लिल्ग़ैबि हाफ़िज़ीन (८१) वस् - अलिल् - क़र्यतल्लती कुन्ना फ़ीहा वल्-ओ़ीरल्लती अक़्बल्ना फ़ीहा ط व इन्ना लसादिकून (८२) का-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फुसुकुम् अम्रन् ط फ - सब - रुन् जमीलुन् ط अ-सल्लाहु अंय्यअ्तियनी बिहिम् जमीअन् ط इन्नहू हुवल्-अलीमुल्-हकीम (८३) व त-वल्ला अन्हुम् व का-ल या अ-सफा अला यूसु-फ वब्यज़्ज़त् अैनाहु मिनल्हुज़्नि फहु-व कज़ीम (८४) कालू तल्लाहि तफ़्-तउ तज़्कुरु यूसु-फ हत्ता तकू-न ह-र-ज़न् औ तकू-न मिनल्-हालिकीन (८५)

كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ
يَّشَآءَ اللّٰهُ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝
قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ
نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
تَصِفُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا
مَكَانَهٗ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا
مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝ فَلَمَّا اسْتَيْئَسُوْا مِنْهُ
خَلَصُوْا نَجِيًّا قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ
مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ
حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝ اِرْجِعُوْٓا
اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝ وَسْئَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ
الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ
اَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا اِنَّهٗ
هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ
وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا
تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ۝

★ ९/३ आ ११

दिया करते है। (७५) फिर यूसुफ ने अपने भाई के शलीते मे पहले उन के शलीतो को देखना शुरू किया। फिर अपने भाई के शलीते मे से उस को निकाल लिया। इस तरह हम ने यूसुफ के लिए तद्बीर की (वरन्) बादशाह के कानून के मुताबिक वह खुदा की मशीयत के सिवा अपने भाई को नही ले सकते थे।' हम जिस के चाहते है दर्जे बुलन्द करते है और हर इल्म वाले से दूसरा इल्म वाला बढ कर है। (७६) (यूसुफ के भाइयो ने) कहा कि अगर इस ने चोरी की हो तो (कुछ अजब नही कि) इस के एक भाई ने भी पहले चोरी की थी।' यूसुफ ने इस बात को अपने दिल मे छिपाए रखा और उन पर जाहिर न होने दिया (और) कहा कि तुम बडे बद-क्माश (दुष्ट) हो और जो तुम बयान करते हो, खुदा उसे खूब जानता है (७७) वे कहने लगे कि ऐ अजीज ! इस के वालिद बहुत बूढे है (और इस से बहुत मुहब्बत रखते हैं) तो (उस को छोड दीजिए और) उस की जगह हम मे से किसी को रख लीजिए, हम देखते है कि आप एहसान करने वाले है। (७८) (यूसुफ ने) कहा कि खुदा पनाह मे रखे कि जिस शख्स के पास हम ने अपनी चीज पायी है, उस के सिवा किसी और को पकड ले। ऐसा करे तो हम (बड़े) बे-इसाफ है। (७९)★

जब वे इस से ना-उम्मीद हो गये तो अलग हो कर सलाह करने लगे। सब मे बडे ने कहा, क्या तुम नही जानते कि तुम्हारे वालिद ने तुम से खुदा का अह्द लिया है और इस से पहले भी तुम यूसुफ के बारे मे कुसूर कर चुके हो तो जब तक वालिद साहब मुझे हुक्म न दे, मैं तो इस जगह से हिलने का नही या खुदा मेरे लिए कोई और तद्बीर करे और वह सब से बेहतर फैसला करने वाला है। (८०) तुम सब वालिद साहब के पास जाओ और कहो कि अब्बा ! आप के साहबजादे ने (वहा जा कर) चोरी की और हम ने तो अपने जानते आप से (उस के ले आने का) अह्द किया था, मगर हम गैब (की बातो) के (जानने और) याद रखने वाले तो नही थे। (८१) और जिस बस्ती मे हम (ठहरे) थे, वहा से (यानी मिस्र वालो से) और जिस काफिले मे आए है, उस से पूछ लीजिए और हम (इस बयान मे) बिल्कुल सच्चे है। (८२) (जब उन्हो ने यह बात याकूब से आ कर कही तो) उन्हो ने कहा (कि हकीकत यो नही है,) बल्कि यह बात तुम ने अपने दिल से बना ली है, तो सब्र ही बेहतर है। अजब नही कि खुदा इन सब को मेरे पास ले आए। बेशक वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (८३) फिर उन के पास से चले गये और कहने लगे कि हाय अफसोस, यूसुफ ! (हाय अफसोस !) और रज व दुख से (इस कदर रोये कि) उन की आखे सफेद हो गयी और उन का दिल गम से भर रहा था। (८४) बेटे कहने लगे कि खुदा की कसम ! अगर आप यूसुफ को इसी तरह याद ही करते रहेंगे, तो या तो बीमार हो जाएगे या जान ही दे

---

१ इब्राहीमी शरीअत मे चोर की सजा यह थी कि जिस की चोरी की हो, उस को एक वर्ष तक मस्रूर गुलाम बना कर रखा जाए, इस के बाद छोड दिया जाए। यही सजा यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाइयो ने बयान की और इसी के मुताबिक बिन यामीन को ले लिया गया, वरना मिस्र का कानून तो यह था कि चोर को मार-पीटे और चोरी के माल से दोगुना जुर्माना ले लें और यह कानून इजाजत नही देता था कि जिस के पास से चीज निकले उस को पकड लिया जाए। गरज यह तद्बीर हजरत यूसुफ ने इस लिए की थी कि उन को मालूम था कि याकूब की शरीअत मे चोर की सजा उसे गिरफ्तार कर के एक साल तक गुलाम बना रखना है और इसी से वह अपने मक्सद मे कामियाब रहे।

२ उस के एक भाई से उन की मुराद यूसुफ अलैहिस्सलाम थे, क्योंकि बिन यामीन और यूसुफ एक मा से थे और

(शेष पृष्ठ ३८९ पर)

★रु ९/३ आ ११

का-ल इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाहि व अअ्-लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्-लमून (८६) या बनिय्यज़्हबू फ त-हस्ससू मिय्यू-सु-फ व अख़ीहि व ला तँ-असू मिर्‌रौहिल्लाहि ط इन्नहू ला यँ-असु मिर्‌रौहिल्लाहि इल्लल्-क़ौमुल्-काफ़िरून (८७) फ-लम्मा द-ख़लू अलैहि क़ालू या अय्युहल्-अज़ीज़ु मस्सना व अह्-ल-नज़्ज़ुर्रु व जिअ्ना बिबिज़ाअतिम्-मुज्जातिन् फ-औफि लनल्कै-ल व त-सद-दक् अलैना ط इन्नल्ला-ह यज्‌ज़िल्-मु-त-सद्दिक़ीन (८८) का-ल हल् अलिम्तुम् मा फ-अल्तुम् बियूसु-फ व अख़ीहि इज़् अन्तुम् जाहिलून (८९) क़ालू अ-इन्न-क ल-अन्-त यूसुफु ط का-ल अ-न यूसुफु व हाज़ा अख़ी ز क़द् मन्नल्लाहु अलैना ط इन्नहू मय्यत्तकि व यस्बिर् फ़इन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन (९०) क़ालू तल्लाहि ल-क़द् आस-र-कल्लाहु अलैना व इन् कुन्ना ल-ख़ातिईन (९१)

١٩٦

قال انما اشكوا بثي وحزني الى الله واعلم من الله ما لا تعلمون ○
يبني اذهبوا فتحسسوا من يوسف واخيه ولا تايئسوا من روح
الله انه لا يايئس من روح الله الا القوم الكفرون ○ فلما
دخلوا عليه قالوا يايها العزيز مسنا واهلنا الضر وجئنا
ببضاعة مزجىة فاوف لنا الكيل وتصدق علينا ان الله
يجزي المتصدقين ○ قال هل علمتم ما فعلتم بيوسف و
اخيه اذ انتم جهلون ○ قالوا ءانك لانت يوسف قال انا يوسف
وهذا اخي قد من الله علينا انه من يتق ويصبر فان الله
لا يضيع اجر المحسنين ○ قالوا تالله لقد اثرك الله علينا و
ان كنا لخطئين ○ قال لا تثريب عليكم اليوم يغفر الله لكم
وهو ارحم الرحمين ○ اذهبوا بقميصي هذا فالقوه على
وجه ابي يات بصيرا واتوني باهلكم اجمعين ○ ولما فصلت
العير قال ابوهم اني لاجد ريح يوسف لولا ان تفندون ○
قالوا تالله انك لفي ضللك القديم ○ فلما ان جاء البشير
القىه على وجهه فارتد بصيرا قال الم اقل لكم اني اعلم
من الله ما لا تعلمون ○ قالوا يابانا استغفر لنا ذنوبنا انا كنا
خطئين ○ قال سوف استغفر لكم ربي انه هو الغفور الرحيم ○

का-ल ला तस्री-ब अलैकुमुल्-यौ-म ط यग्फ़िरुल्लाहु लकुम् ز व हु-व अर्हमुर्‌-राहिमीन (९२) इज़्हबू बिक़मीसी हाज़ा फ-अल्क़ूहु अला वज्हि अबी यअ्ति बसीरन् ج वअ्तूनी बिअह्लिकुम् अज्मईन ★ (९३) व लम्मा फ-स-लतिल्‌ईरु का-ल अबूहुम् इन्नी ल-अजिदु री-ह यूसु-फ लौला अन् तुफन्निदून (९४) क़ालू तल्लाहि इन्न-क लफ़ी ज़लालिकल्-क़दीम ● (९५) फ-लम्मा अन् जा-अल्-बशीरु अल्क़ाहु अला वज्हिही फर्तद्-द बसीरन् ج का-ल अ-लम् अकुल्लकुम् ج इन्नी अअ्-लमु मिनल्लाहि मा ला तअ-लमून (९६) क़ालू या अबानस्तग्फ़िर् लना ज़ुनूबना इन्ना कुन्ना ख़ातिईन (९७) का-ल सौ-फ़ अस्तग्फ़िरु लकुम् रब्बी ط इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (९८)

★रु० १०/४ आ १४ ● रुबुअ् १/४

दगे। (८५) उन्हो ने कहा कि मैं तो अपने गम व दुख को ख़ुदा से ही ज़ाहिर करता हू और ख़ुदा की तरफ से वह बाते जानता हू, जो तुम नही जानते। (८६) बेटा! (यो करो कि एक बार फिर) जाओ और यूसुफ और उस के भाई को खोजो और ख़ुदा की रहमत से ना-उम्मीद न हो कि ख़ुदा की रहमत से बे-ईमान लोग ना-उम्मीद हुआ करते है। (८७) जब वे यूसुफ के पास गए तो कहने लगे कि अज़ीज! हमे और हमारे बाल-बच्चो को बड़ी तक्लीफ हो रही है और हम थोडी सी पूंजी लाए है। आप हमे (इस के बदले) पूरा अनाज दीजिए और ख़ैरात कीजिए कि ख़ुदा ख़ैरात करने वालो को सवाब देता है। (८८) (यूसुफ ने) कहा, कि तुम्हे मालूम है कि जब तुम ना-दानी मे फसे हुए थे तो तुम ने यूसुफ और उस के भाई के साथ क्या किया था? (८९) वे बोले, क्या तुम्ही यूसुफ हो? उन्हो ने कहा, हा मैं ही यूसुफ हू और (बिन यामीन की तरफ इशारा कर के कहने लगे,) यह मेरा भाई है। ख़ुदा ने हम पर बडा एहसान किया है। जो शख़्स ख़ुदा से डरता और सब्र करता है तो ख़ुदा नेक लोगो का बदला बर्बाद नही करता। (९०) वे बोले, ख़ुदा की कसम! ख़ुदा ने तुम को हम पर फजीलत बख़्शी है और बेशक हम ख़ताकार थे। (९१) (यूसुफ ने) कहा कि आज के दिन (से) तुम पर कुछ इताब (व मलामत) नही है। ख़ुदा तुम को माफ करे और वह बहुत रहम करने वाला है। (९२) यह मेरा कुरता ले जाओ और इसे वालिद साहब के मुह पर डाल दो। उन की रोशनी वापस आ जाएगी और अपने तमाम बाल-बच्चो को मेरे पास ले आओ★ (९३) और जब काफिला (मिस्र से) रवाना हुआ, तो उन के वालिद कहने लगे कि अगर मुझ को यह न कहो कि (बूढा) बहक गया है, तो मुझे तो यूसुफ की बू आ रही है। (९४) वे बोले कि ख़ुदा की कसम! आप उसी पुरानी गलती मे पडे हुए है● (९५) जब ख़ुशख़बरी देने वाला आ पहुचा तो कुरता याकूब के मुह पर डाल दिया और उन की रोशनी लौट आयी, (और बेटो से कहने लगे), क्या मैं ने तुम से नही कहा था कि मै ख़ुदा की तरफ से वे बाते जानता हू, जो तुम नही जानते। (९६) बेटो ने कहा कि अब्बा! हमारे लिए हमारे गुनाह की मग्फिरत मागिए, बेशक हम ख़ताकार थे। (९७) उन्हो ने कहा कि मै अपने परवरदिगार से तुम्हारे लिए बख़्शिश मागूगा।

(पृष्ठ ३८७ का शेष)

वे दूसरी माओ से, मगर यूसुफ अलैहिस्सलाम ने कभी चोरी नही की और यूसुफ जैसा शख़्स चोरी कर सकता ही नही। जिस वाकिए को उन लोगो ने चोरी करार दिया, वह यो हुआ था कि जब यूसुफ पैदा हुए, तो उन की फूफी उन की परवरिश करने लगी और वह उन से निहायत मुहब्बत रखती थी। जब आप कुछ साल के हुए तो याकूब अलैहिस्सलाम बहन के पास आए और कहा कि अब यूसुफ को दे दो। वह उन को अपने से दम भर जुदा रखना भी गवारा नही कर सकती थी। उन्हो ने कहा ख़ुदा की कसम! मैं इस को अपने से अलग नही करूगी। तुम इसे कुछ मुद्दत और मेरे पास रहने दो, ताकि मै इसे देख-देख कर दिल ठंडा करती रहू। जब याकूब अलैहिस्सलाम बहन के पास से बाहर चले गये तो उन्हो ने यूसुफ को अपने पास रखने की यह तदबीर की कि हज़रत इस्हाक का एक पटका उन के पास था, जो मीरास के तौर पर उस शख़्स को मिलता था जो सब मे बड़ा होता था और चूकि याकूब अलैहिस्सलाम की यह बहन सब मे बडी थी, इस लिए वह उन को मिला था, तो उन्हो ने वह पटका यूसुफ की कमर से बाध दिया और मशहूर यह किया कि पटका गुम हो गया है और इसे ढूंढना शुरू किया। जब खोजने पर न मिला तो कहा कि घर वालो की जामा तलाशी करनी चाहिए। जामा तलाशी की तो यूसुफ की कमर से बधा हुआ मिला। तब कहा कि इस ने मेरी चोरी की है, इस लिए मैं इसे छोडने की नही और इस

(शेष पृष्ठ ३९१ पर)

★रु १०/४ आ १४ ●रुबुअ १/४

फलम्मा द-खलू अला यूसु-फ आवा इलैहि अ-बवैहि व कालद्खुलू मिस्-र इन्शाअल्लाहु आमिनीन ط (९९) व र-फ-अ अ-बवैहि अ-लल्-अर्शि व खर्रू लहू सुज्जदन् ج व का-ल या अ-बति हाजा तअ्वीलु रुअ्या-य मिन् कब्लु لا कद् ज-अ-लहा रब्बी हक्कन् ط व कद् अह्-स-न बी इज् अख्-र-जनी मिनस्सिज्नि व जा-अ बिकुम् मिनलबद्वि मिम्बअ्-दि अन् न-ज-गश्शैतानु बैनी व बै-न इख्वती ط इन्-न रब्बी लतीफुल्लिमा यशाउ ط इन्नहू हुवल्-अलीमुल्-हकीम (१००) रब्बि कद् आतैतनी मिनलमुल्कि व अल्लम्तनी मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि ج फातिरस्समावाति वल्अर्जि قف अन-त वलिय्यी फिद्दुन्या वल्आखिरति ج त-वफ्फनी मुस्लिमव्-व अल्-हिक्नी बिस्सालिहीन (१०१) जालि-क मिन् अम्बाइलगैबि नूहीहि इलै-क ج व मा कुन्-त लदैहिम् इज् अज-मअू अम्-रहुम् व हुम् यम्कुरून (१०२) व मा अक्सरुन्नासि व लौ ह-रस्-त बिमुअ्मिनीन (१०३) व मा तस-अलुहुम् अलैहि मिन् अज्रिन् ط इन् हु-व इल्ला जिक्रुल्लिल्-आलमीन ★ (१०४) व क-अय्यिम्मिन् आयतिन् फिस्समावाति वल्अर्जि यमुर्रू-न अलैहा व हुम् अन्हा मुअ्-रिजून (१०५) व मा युअ्मिनु अक्सरुहुम् बिल्लाहि इल्ला व हुम् मुश्रिकून (१०६) अ-फ-अमिनू अन् तअ्-ति-यहुम् गाशि-यतुम्-मिन् अजाबिल्लाहि औ-तअ्ति-य-हुमुस्साअतु बग्त-तव्-व हुम् ला यश्अुरून (१०७) कुल् हाजिही सबीली अद्अू इलल्लाहि قف ▨ अला बसीरतिन् अ-न व मनित्त-ब-अनी ط व सुब्हानल्लाहि व मा अ-न मिनल्-मुश्रिकीन (१०८)

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن
شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ۝ وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا ۖ وَ
قَالَ يَا أَبَتِ هَٰذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ مِن قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۖ
وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُم مِّنَ الْبَدْوِ
مِن بَعْدِ أَن نَّزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ
لِّمَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ
وَعَلَّمْتَنِي مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنتَ
وَلِيِّي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ۝
ذَٰلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ
أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ۝ وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ
حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ
لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَكَأَيِّن مِّنْ آيَةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ
عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ۝ وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُم بِاللَّهِ إِلَّا
وَهُم مُّشْرِكُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا أَن تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ
أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ قُلْ هَٰذِهِ سَبِيلِي
أَدْعُو إِلَى اللَّهِ ۚ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَ
مَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا

★ रु ११/५ आ ११ ▨ व न बी स

बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (६८) जब (ये सब लोग) यूसुफ के पास पहुंचे, तो यूसुफ ने अपने मा-बाप को अपने पास बिठाया और कहा कि मिस्र मे दाखिल हो जाइए। ख़ुदा ने चाहा तो अम्न व सुकून मे रहिएगा। (६६) और अपने मा-बाप को तख़्त पर बिठाया और सब यूसुफ के आगे सज्दे मे गिर पडे और (उस वक़्त) यूसुफ ने कहा, अब्बा जान! यह मेरे उस ख़्वाब की ताबीर है, जो मैं ने पहले (बचपन मे) देखा था। मेरे परवरदिगार ने उसे सच कर दिया और उस ने मुझ पर (बहुत से) एहसान किए है कि मुझ को जेलख़ाने से निकाला और इस के बाद कि शैतान ने मुझ मे और मेरे भाइयो मे फ़साद डाल दिया था, आप को गाव से यहा लाया। बेशक मेरा परवरदिगार जो चाहता है तद्बीर से करता है। वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१००) (जब ये सब बाते हो ली, तो यूसुफ ने ख़ुदा से दुआ की कि) ऐ मेरे परवरदिगार! तू ने मुझ को हुकूमत से नवाजा और ख़्वाबो की ताबीर का इल्म बख़्शा। ऐ आसमानो और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही दुनिया व आख़िरत मे मेरा कारसाज़ है। तू मुझे (दुनिया से) अपनी इताअत (की हालत) मे उठाइयो और आख़िरत मे अपने नेक बदो मे दाख़िल कीजियो। (१०१) (ऐ पैग़म्बर!) ये ख़बरें गैब में से है जो हम तुम्हारी तरफ भेजते है और जब यूसुफ के भाइयो ने अपनी बात पर इत्तिफ़ाक़ किया था और वे फ़रेब कर रहे थे, तो तुम उनके पास तो न थे। (१०२) और बहुत से आदमी, गो तुम (कितनी ही) ख़्वाहिश करो, ईमान लाने वाले नही है। (१०३) और तुम उनसे इस (ख़ैर-ख़्वाही) का कुछ बदला भी तो नही मागते। यह कुरआन और कुछ नहीं तमाम दुनिया के लिए नसीहत है। (१०४) ★

और आसमान व ज़मीन मे बहुत-सी निशानिया है, जिन पर ये गुज़रते है और इनसे मुह छिपाते हैं। (१०५) और ये अक्सर ख़ुदा पर ईमान नही रखते, मगर (उसके साथ) शिर्क करते है।[1] (१०६) क्या ये (इस बात) से बे-ख़ौफ़ है कि उन पर ख़ुदा का अज़ाब नाज़िल हो कर उन को ढाप ले या उन पर यकायक क़ियामत आ जाए और उन्हे ख़बर भी न हो। (१०७) कह दो कि मेरा रास्ता तो यह है मैं ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हू ▨ (यक़ीन के मुताबिक़) समझ-बूझ कर मैं भी (लोगो को ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हू) और मेरी पैरवी करने वाले भी और ख़ुदा पाक है और मै शिर्क करने वालों मे से नही

(पृष्ठ ३८६ का शेष)

तद्बीर से उन को अपने पास रख लिया। चूंकि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर चोरी का इल्ज़ाम था, इस लिए याक़ूब अलैहिस्सलाम भी मजबूर थे और बेटे को बहन से नही ले सकते है, ग़रज़ यूसुफ फूफी के पास रहते और परवरिश पाते रहे, यहा तक कि फूफी का इन्तिकाल हो गया। भला यह वाक़िआ चोरी है और कोई शख़्स इसे सुन कर कह सकता है कि हज़रत यूसुफ ने चोरी की थी? तफ़्सीर लिखने वालो ने इस के सिवा कई और बाते लिखी है। जैसे, घर मे एक मुर्गी थी, वह उन्हो ने फ़क़ीर को दे दी थी या दस्तरख़्वान से खाना ले जाते थे और मुहताजो को दे आते थे, मगर ये बाते ऐसी है जिन्हे देख कर चोरी नही कहा जा सकता और सच तो यह है कि यूसुफ अलै० पर चोरी का इल्ज़ाम सिर्फ़ झूठ है। यूसुफ के भाइयो को तो झूठ बोलने मे झिझक थी ही नही, तफ़्सीर लिखने वालो ने भी ऐसी झूठी बातो को चोरी क़रार देने और उन को यूसुफ से मुताल्लिक़ कर देने की ग़लती की है।

१ यानी ख़ुदा को मानते भी हैं और यह जानते भी है कि ज़मीन व आसमान और जो कुछ उन मे है, उन का पैदा करने वाला और मालिक वही है, मगर साथ ही बुतो की पूजा भी करते है या उन को ख़ुदा की बराबरी का भी ठहराते हैं। यह खुला हुआ शिर्क है। इस तरीक़े पर ख़ुदा को मानने वाला मोमिन नहीं कहलाता, मुश्रिक

(शेष पृष्ठ ३६३ पर)

व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् मिन् अह्लिल्कुरा ᑲ अ-फ-लम् यसीरू फ़िल्अर्जि फ-यन्ज़ुरू कै-फ का-न आक़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ᑲ व ल-दारुल् - आख़िरति ख़ैरुल्लिल्-लज़ीनत्तक़ौ ᑲ अ - फ़ला तअ्-क़िलून (१०९) हत्ता इज़स्तै-अ-सर् - रुसुलु व ज़न्नू अन्नहुम् क़द् कुज़िबू जा-अहुम् नस्रुना // फनुज्जि-य मन् नशाउ ᑲ व ला युरद्दु बअ्-सुना अनिल्-क़ौमिल्-मुज्रिमीन (११०) ल-क़द् का-न फ़ी क़सिसिहिम् अिब्रतुल् - लिउलिल् - अल्बाबि ᑲ मा का - न हदीसय्युफ़्तरा व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै - न यदैहि व तफ़्सी-ल कुल्लि शैइव् - व हुदव - व रह्-म-तुल् - लिक़ौमिय्युअ्मिनून ★ (१११)

१३ सूरतुर्रअ्-दि ९६

(मदनी) इस सूर. मे अरबी के ३६१४ अक्षर, ८६३ शब्द, ४३ आयतें और ६ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अलिफ़् - लाम्-मीम्-रा قف तिल - क आयातुल् - किताबि ᑲ वल्लज़ी उन्ज़ि - ल इलै - क मिर्रब्बिकल् - हक़्क़ु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (१) अल्लाहुल्लज़ी र-फ-अस्-समावाति बिग़ैरि अ-म-दिन् तरौनहा सुम्मस्तवा अ-लल्अर्शि व सख़्ख़रश्-शम-स वल्क़ - म - र ᑲ कुल्लुय्यज्री लि - अ-जलिम् - मुसम्मन् ᑲ युदब्बिरुल्-अम-र युफ़स्सिलुल्-आयाति ल-अल्लकुम् बिलिक़ाइ रब्बिकुम् तूक़िनून (२) व हुवल्लज़ी मद्दल्-अर्-ज व ज-अ-ल फ़ीहा रवासि - य व अन्हारन् ᑲ व मिन् कुल्लिस्समराति ज - अ - ल फ़ीहा ज़ौजैनिस्नैनि युग़्शिल् - लैलन्नहा-र ᑲ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् - लिक़ौमिय्य-त-फ़क्करून (३)

الرعد ١٣ ١٩٨ وما ابرئ ١٣

يُوحِىٓ إِلَيْهِم مِّنْ أَهْلِ ٱلْقُرَىٰٓ ۗ أَفَلَمْ يَسِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَيَنظُرُوا۟
كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ ٱلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ
ٱتَّقَوْا۟ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠٩﴾ حَتَّىٰٓ إِذَا ٱسْتَيْـَٔسَ ٱلرُّسُلُ وَظَنُّوٓا۟
أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا۟ جَآءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّىَ مَن نَّشَآءُ ۖ وَلَا
يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ ٱلْقَوْمِ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿١١٠﴾ لَقَدْ كَانَ فِى قَصَصِهِمْ
عِبْرَةٌ لِّأُو۟لِى ٱلْأَلْبَٰبِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن
تَصْدِيقَ ٱلَّذِى بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَىْءٍ وَهُدًى
وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾

سُورَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

الٓمٓر ۚ تِلْكَ ءَايَٰتُ ٱلْكِتَٰبِ ۗ وَٱلَّذِىٓ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ٱلْحَقُّ وَ
لَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ ٱللَّهُ ٱلَّذِى رَفَعَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ بِغَيْرِ
عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ ۖ وَسَخَّرَ ٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ ۖ كُلٌّ
يَجْرِى لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ يُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ لَعَلَّكُم بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ
تُوقِنُونَ ﴿٢﴾ وَهُوَ ٱلَّذِى مَدَّ ٱلْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَٰسِىَ وَأَنْهَٰرًا ۖ
وَمِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ ٱثْنَيْنِ ۖ يُغْشِى ٱلَّيْلَ ٱلنَّهَارَ ۚ
إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣﴾ وَفِى ٱلْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجَٰوِرَٰتٌ

منزل ٣

★रु० १२/६ आ ७

हू । (१०८) और हम ने तुम से पहले बस्तियो के रहने वालो मे से मर्द ही भेजे थे । जिन की तरफ हम वह्य भेजते थे, क्या इन लोगो ने देश मे (घूमना-फिरना) नही किया कि देख लेते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अंजाम क्या हुआ और मुत्तकियो के लिए आखिरत का घर बहुत अच्छा है। क्या तुम समझते नही ? (१०९) यहा तक कि जब पैगम्बर ना-उम्मीद हो गये और उन्हो ने ख्याल किया कि (अपनी) मदद के बारे मे जो बात उन्हो ने कही थी, उस मे वे सच्चे न निकले । तो उनके पास हमारी मदद आ पहुची । फिर जिसे हम ने चाहा, बचा दिया और हमारा अज़ाब उतर कर गुनाहगार लोगो से फिरा नही करता । (११०) उन के क़िस्से मे अक्लमंदो के लिए सबक है। यह (कुरआन) ऐसी बात नही है जो (अपने दिल से) बना ली गयी हो, बल्कि जो किताबें इस से पहले (नाज़िल हुई) है, उन की तस्दीक (करने वाला) है और हर चीज़ की तफ़्सील (करने वाला) और मोमिनो के लिए हिदायत और रहमत है। (१११) ☆

१३ सूरः रअ़्द ९६

सूर. राद मक्की है और इस मे ४३ आयते और छ. रुकूअ है ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

अलिफ्-लाम्-मीम्-रा, (ऐ मुहम्मद !) ये (अल्लाह की) किताब की आयते है और जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाजिल हुआ है, हक है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नही लाते । (१) खुदा वही तो है, जिस ने स्तूनो के बगैर आसमान, जैसा कि तुम देखते हो, (इतने) ऊचे बनाये, फिर अर्श पर जा ठहरा और सूरज और चाद को काम मे लगा दिया । हर-एक एक तै मीयाद तक घूम रहा है । वही (दुनिया के) कामो का इंतिजाम करता है । (इस तरह) वह अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करता है कि तुम अपने परवरदिगार के रू-ब-रू जाने का यकीन करो । (२) और वह वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया और उस मे पहाड और दरिया पैदा किए और हर तरह के मेवो की दो-दो किस्मे बनायी । वही रात को दिन का लिबास पहनाता है । गौर करने वालो के लिए इस मे बहुत

(पृष्ठ ३६१ का शेष)

कहलाता है और शिर्क ऐसा गुनाह है, जो कभी नही बख्शा जाएगा । (अल्लाह तआला हमे उस से पनाह दे) । कुछ लोगो ने इस आयत को मुनाफिको पर चस्पा किया है कि ज़ाहिर मे वे मोमिन थे और अन्दर से मुश्रिक । कुछ लोगो ने कहा है कि इस से मुराद अह्ले किताब हैं यानी यहूदी और ईसाई कि वे खुदा को भी मानते हैं और साथ ही उज़ैर और ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा का बेटा भी कहते हैं और यह शिर्क है, क्योकि खुदा औलाद से पाक है । कुछ लोगो ने कहा है कि ऐसे दिखावट करने वाले लोग मुराद हैं कि वे खुदा पर ईमान रखते है, लेकिन चूकि खास अमल खुदा के लिए नही करते, बल्कि दिखावे के लिए करते हैं और दिखावे के लिए अमल करना शिर्क मे दाखिल है, इस लिए वे मुश्रिक हैं । शेख सादी रह० के मुताबिक जो सिफते खुदा की जात से मख्सूस है, उन के बारे मे यह एतकाद रखना कि वे किसी और मे भी पायी जाती है, यह भी शिर्क है और आज-कल जो मुसलमान खुदा के भी कायल हैं और साथ ही कब्र-परस्ती, पीर-परस्ती और ताज़िया परस्ती भी करते हैं उन मे और इसी तरह की और चीज़ो मे खुदा के-से तसर्रुफात मानते है, इस आयत मे वे भी शामिल हैं । अल्लाह तआला मुसलमानो को तौफीक बख्शे कि वे उस को इस तरह जानें और उस पर इस तरह ईमान रखें कि उस मे शिर्क बिल्कुल न मिला हो, उन का ईमान शिर्क से बिल्कुल पाक हो और वे खालिस मोमिन हो ।

★रु १२/६ आ ७

व फिल्अर्ज़ि कि-त्-अुम्-मु-तजाविरातु व-व जन्नातुम्-मिन् अअ्-नाविव्-व जर्अुं व-व नखीलुन् सिन्वानु व्-व गैरु सिन्वानिय्युस्का विमाइ व्वाहिदिन् वقف व नुफज़्ज़िलु बअ्-जहा अला बअ्-जिन् फिल्उकुलि ط इन्-न फी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकौमिय्यअ्-किलून (४) व इन् तअ्-जब् फ-अ-जबुन् कौलुहुम् अ इज़ा कुन्ना तुराबन्

وَجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى
بِمَآءٍ وَّاحِدٍ وَّنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا
ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ
فِىْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَ
يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ
وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ
اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى
وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ
وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝ لَهٗ
مُعَقِّبٰتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ
بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝ هُوَ
الَّذِىْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝
وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ

अ इन्ना लफी खल्किन् जदीदिन् ط उलाइकल्लज़ी-न क-फरू बिरब्बिहिम् ج व उलाइकल्-अग्लालु फी अअ्-नाकिहिम् ج व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि ج हुम् फीहा खालिदून (५) व यस्तअ्-जिलून-क बिस्-सय्यिअति कब्-लल्-ह-स-नति व कद् ख-लत् मिन् कब्लिहिमुल्-मसुलातु ط व इन्-न रब्ब-क लज़ू मग्फि-रतिल्-लिन्नासि अला ज़ुल्मिहिम् ج व इन्-न रब्ब-क ल-शदीदुल्-अिकाब (६) व यकूलुल्लज़ी-न क-फरू लौला उन्ज़ि-ल अलैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही ط इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरुंव्-व लिकुल्लि कौमिन् हाद ★ (७) अल्लाहु यअ्-लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल्-अर्हामु व मा तज़्दादु ط व कुल्लु शैइन् अिन्दहू बिमिक्दार (८) आलिमुल्-ग़ैबि वश्शहादतिल्-कबीरुल्-मु-त-आल (९) सवाउम्-मिन्कुम् मन् अ-सर्रल्-कौ-ल व मन् ज-ह-र बिही व मन् हु-व मुस्तख़्फिम्-बिल्लैलि व सारिबुम्-बिन्नहार (१०) लहू मुअक्किबातुम्-मिम्बैनि यदैहि व मिन् खल्फिही यह्फ़ज़ूनहू मिन् अम्रिल्लाहि ط इन्नल्ला-ह ला युग़य्यिरु मा बिकौमिन् हत्ता युग़य्यिरू मा बि-अन्फुसिहिम् ط व इज़ा अरादल्लाहु बिकौमिन् सू-अन् फला म-रद्-द लहू ج व मा लहुम् मिन् दूनिही मिंव्वाल (११) हुवल्लज़ी युरीकुमुल्बर-क खौफंव्-व त्-म-अंव्-व युन्शिउस्-सहाबस्-सिकाल ج (१२) व युसब्बिहुर्रअ्-दु बिहम्दिही वल्मलाइकतु मिन् खीफ़तिही ج व युर्सिलुस्सवाअि-क फयुसीबु बिहा मय्यशाउ व हुम् युजादिलू-न फिल्लाहि ج व हु-व शदीदुल्-मिहाल ط (१३)

★रु १/७ आ ७

सी निशानिया है। (३) और जमीन मे कई तरह के कतात है, एक दूसरे से मिले हुए और अगूर के बाग और खेती और खजूर के पेड, कुछ की बहुत सी शाखें होती है और कुछ की इतनी नही होती (इस के बावजूद कि) पानी सब को एक ही मिलता है और हम कुछ मेवो को कुछ पर लज्जत मे बढा देते है। इस मे समझने वालो के लिए बहुत-सी निशानिया है। (४) अगर तुम अजीब बात सुननी चाहो तो काफिरो का यह कहना अजीब है कि जब हम (मर कर) मिट्टी हो जाएगे तो क्या फिर से पैदा होगे। यही लोग है जो अपने परवरदिगार से मुकिर हुए है और यही है जिन की गरदनो मे तौक होगे, और यही दोजख वाले है कि हमेशा उस मे (जलते) रहेगे। (५) और ये लोग भलाई से पहले तुम से बुराई के जल्द चाहने वाले (यानी अज़ाब चाहने वाले) है, हालाकि उन से पहले अज़ाब (वाकेअ) हो चुके है और तुम्हारा परवरदिगार लोगो को उन की बे-इसाफियो के बावजूद माफ करने वाला है और बेशक तुम्हारा परवरदिगार सख्त अज़ाब देने वाला है। (६)औरकाफ़िरलोग कहते है कि इस (पैगम्बर) पर उस के परवरदिगार की तरफ से कोई निशानी कियों नाजिल नही हुई।' सो (ऐ मुहम्मद !) तुम तो सिर्फ हिदायत करने वाले हो और हर एक कौम के लिए रहनुमा हुआ करता है। (७) ★

खुदा ही उस बच्चे को जानता है, जो औरत के पेट मे होता है और पेट के सुकडने और बढने को भी (जानता है) और हर चीज का उस के यहा एक अन्दाजा मुकर्रर है। (८) वह छिपे और खुले का जानने वाला है। सब से बुजुर्ग (और) बुलद रुत्बा है। (९) कोई तुम मे से चुपके से बात कहे या पुकार कर या रात को कही छिप जाए या दिन (की रोशनी) मे खुल्लम-खुल्ला चले-फिरे (उस के नज़दीक) बराबर है। (१०) उस के आगे और पीछे खुदा के चौकीदार है, जो खुदा के हुक्म मे उस की हिफाज़त करते है। खुदा उस (नेमत) को, जो किसी कौम को (हासिल) है, नही बदलता, जब तक कि वह अपनी हालत को न बदले और जब खुदा किसी कौम के साथ बुराई का इरादा करता है, तो फिर वह फिर नही सकती और खुदा के सिवा उन का कोई मददगार नही होता। (११) और वही तो है जो तुम को डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता और भारी-भारी बादल पैदा करता है। (१२) और राद और फरिश्ते सब उस के डर से उस की तस्बीह व तह्मीद करते रहते है' और वही बिजलिया भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा भी देता है और वे खुदा के

---

१ मक्का के काफिर कहते थे कि जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी अज़दहा होती थी और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दे को जिन्दा करते थे, वैसा ही काम यह नबी सल्ल० क्यो नही करते ?

२ राद नाम है एक फरिश्ते का, जो बदली का रखवाला है।

★रु १/७ आ ७

लहू दअ-वतुल्-हक़्क़ि ط वल्लजी-न यद्अू-न मिन् दूनिही ला यस्तजीबू-न लहुम्
बिशैइन् इल्ला कबासिति कफ़्फ़ैहि इलल्-मा-इ लियब-लु-ग फ़ाहु व मा हु-व
बिबालिगिही ط व मा दुआउल् - काफ़िरी - न इल्ला फ़ी ज़लाल (१४)
व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़िस्समावाति वल्अर्जि तौअ़ व-व कर्हव-व ज़िलालुहुम्
बिल्गुदुव्वि वल् - आसाल □(१५) कुल्
मर्रब्बुस्समावाति वल्अर्जि ط कुलिल्लाहु ط
कुल् अ - फ़त्त - ख़ज़्तुम् मिन् दूनिही
औलिया-अ ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम्
नफ़अ़ व्-व ला ज़र्रन् ط कुल् हल् यस्तविल्-
अअ् - मा वल्बसीरु ۙ अम् हल्
तस्तविज़्ज़ुलुमातु वन्नूरु ج अम् ज - अलू
लिल्लाहि शु-रका-अ ख़-लकू क-ख़ल्किही
फ - तशावहल् - ख़ल्कु अलैहिम् ج कुलिल्लाहु
ख़ालिकु कुल्लि शैइ व्-व हुवल्-वाहिदुल् -
कह्हार (१६) अन्ज - ल मिनस्समाइ
मा-अन् फ सालत् औदियतुम्-बिक-दरिहा
फ़ह्-त-मलस्सैलु ज-ब-दर्-राबियन् ط व मिम्मा यूकिदू-न अलैहि फ़िन्नारिब्तिगा-अ
हिल्यतिन् औ मताअिन् ज-ब-दुम् - मिस्लुहू ط कजालि - क यज़्रिबुल्लाहुल्-
हक़्-क वल्बाति-ल ۙ फ़-अम्मज़् - ज-बदु फ - यज-हबु जुफ़ा-अन् ج व अम्मा
मा यन्फ़अुन्ना - स फ - यम्कुसु फ़िल्अर्जि ط कजालि - क यज़्रिबुल्लाहुल् -
अम्साल ط (१७) लिल्लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिमुल् - हुस्ना ط
▨ वल्लजी - न लम् यस्तजीबू लहू लौ अन - न लहुम् मा फ़िल्अर्जि
जमीअ व्-व मिस्लहू म - अहू लफ़्तदौ बिही ط उलाइ - क लहुम् सूउल्-
हिसाबि ۙ व मअ्वाहुम् ज - हन्नमु ط व बिअ्सल् - मिहाद
★● (१८) अ-फ़-मय्यअ्-लमु अन्नमा उन्ज़ि-ल इलै - क मिर्रब्बिकल् - हक़्क़ु
क-मन् हु - व अअ् - मा ط इन्नमा य-त-ज़क्करु उलुल्-अल्बाब ۙ (१९)

الرعد ١٣ ٢٠٠ وما أبرئ ١٣

فَيُصِيبُ بِهَا مَن يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ۝
لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُم
بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ ۚ وَمَا
دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُم بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۩ ۝ قُلْ مَن رَّبُّ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُم مِّن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ
لِأَنفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ
هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ ۗ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ
فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۚ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝
أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ
زَبَدًا رَّابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ
زَبَدٌ مِّثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ
جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ
اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝ لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ
يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا
بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝
أَفَمَن يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ

□ सजदः २ ▨ व नवी स ★ रु २/८ आ ११ ● नि १/२

बारे मे झगडते है और वह बडी ताकत वाला है। (१३) सूदमद पुकारना तो उसी का है और जिन को ये लोग उस के सिवा पुकारते है, वह उन की पुकार को किसी तरह कुबूल नही करते, मगर उस शख्स की तरह जो अपने दोनो हाथ पानी की तरफ़ फैला दे, ताकि (दूर ही से) उस के मुह तक आ पहुंचे, हालाकि वह (उस तक कभी भी) नही आ सकता और (इसी तरह) काफिरो की पुकार बेकार है। (१४) और जितनी मख्लूक आसमानों और जमीन मे है, खुशी से या ज़बरदस्ती से खुदा के आगे सज्दा करती है और उन के साए भी सुबह व शाम सज्दा करते हैं [1]□(१५) उन से पूछो कि आसमानो और ज़मीन का परवरदिगार कौन है ? (तुम ही उन की तरफ से) कह दो कि खुदा फिर (उन से) कहो कि तुम ने खुदा को छोड कर ऐसे लोगो को क्यो कारसाज बनाया है जो खुद अपने नफ़ा-नुक्सान का भी कुछ अख्तियार नही रखते ? (यह भी) पूछो, क्या अधा और आखो वाला बराबर है ? या अंधेरा और उजाला बराबर हो सकता है ? भला उन लोगो ने जिन को खुदा का शरीक मुकर्रर किया है, क्या उन्होने खुदा की-सी मख्लूकात पैदा की है, जिस की वजह से उन की मख्लूकात मुश्तबह हो गयी है। कह दो कि खुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह यक्ता (और) ज़बरदस्त है। (१६) उसी ने आसमान से मेह बरसाया, फिर उस मे अपने-अपने अन्दाज़े के मुताबिक नाले वह निकले, फिर नाले पर फूला हुआ झाग आ गया और जिस चीज को ज़ेवर या कोई और सामान बनाने के लिए आग मे तपाते है, उस मे भी ऐसा ही झाग होता है। इस तरह खुदा हक और बातिल की मिसाल बयान फरमाता है। सो झाग तो सूख कर खत्म हो जाता है। और (पानी) जो लोगों को फायदा पहुचाता है, वह जमीन मे ठहरा रहता है। इस तरह खुदा (सही और गलत की) मिसाले बयान फरमाता है, (ताकि तुम समझो)। (१७) जिन लोगो ने खुदा के हुक्म को कुबूल किया, उन की हालत बहुत बेहतर होगी और जिन्हो ने इस को कुबूल न किया अगर धरती के सब खज़ाने उन के अख्तियार मे हो, तो वे सब के सब और उन के साथ उतने ही और, (निजात) के बदले मे खर्च कर डालें, (मगर निजात कहां ?) ऐसे लोगो का हिसाब भी बुरा होगा और उन का ठिकाना भी दोज़ख है और वह बुरी जगह है। (१८) ★ ●

भला जो शख्स यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाजिल हुआ है, हक है, वह उस शख्स की तरह है, जो अंधा है ? और समझते तो वही है, जो अक्लमद

---

१. जो यकीन लाया अल्लाह पर, वह खुशी से सर रखता है उस के हुक्म पर और जो न यकीन लाया आखिर उस पर भी उसी का हुक्म जारी है और परछाइयां सुबह-शाम ज़मीन पर फैल जाती हैं, यही है उन का सज्दा।

अल्लजी-न यूफू-न बिअह्दिल्लाहि व ला यन्कुज़ूनल् - मीसाक ॥ (२०) वल्लजी-न यसिलू-न मा अ-म-रल्लाहु बिही अय्यूस-ल व यख़्शौ-न रब्बहुम् व यख़ाफू-न सूअल्-हिसाब ▫ (२१) वल्लजी-न स-बरुब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़कू मिम्मा र-ज़क्नाहुम् सिर्-रव-व अलानि-य-तव्-व यद्रऊ-न बिल् - ह्-स-नतिस् - सय्यि-अ-त उलाइ - क लहुम् उक्बद्दार ॥ (२२) जन्नातु अद्निय्यद्ख़ुलूनहा व मन् स-ल-ह मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् वलमलाइकतु यद्ख़ुलू - न अलैहिम् मिन् कुल्लि बाब ८ (२३) सलामुन् अलैकुम् बिमा स-बर्तुम् फ़निअ्-म उक्बद्दार ▫ (२४) वल्लजी-न यन्कुज़ू-न अह् - दल्लाहि मिम्बअ-दि मीसाकिही व यक्तअू-न मा अ-म-रल्लाहु बिही अय्यूस-ल व युफ्सिदू - न फ़िल्अर्ज़ि ॥ उलाइ - क लहुमुल्लअ्-नतु व लहुम् सूउद्दार (२५)

إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا
يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۝ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ
وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ
وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ جَنَّاتُ
عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ
وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن كُلِّ بَابٍ ۝ سَلَامٌ عَلَيْكُم بِمَا
صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝ وَالَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِن
بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝ اللَّهُ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ
عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي
إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ
أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ۝ كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ
مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ

अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़ - क लिमय्यशाउ व यक्दिरु ▫ व फ़रिहू बिल्-हयातिद्दुन्या ▫ व मल् - हयातुद्दुन्या फ़िल् - आख़िरति इल्ला मता-अ ★ (२६) व यक़ूलुल्लजी-न क-फ़रू लौला उन्ज़ि - ल अलैहि आयतुम् - मिर्रब्बिही ▫ कुल् इन्नल्ला - ह युज़िल्लु मय्यशाउ व यह्दी इलैहि मन् अनाब ८ (२७) अल्लज़ी - न आमनू व तत्मइन्नु कुलूबुहुम् बिज़िक - रिल्लाहि ▫ अला बिज़िक - रिल्लाहि तत्मइन्नुल् - कुलूब ▫ (२८) अल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति तूबा लहुम् व हुस्नु मआब (२९) कज़ालि-क अर्सल्ना-क फ़ी उम्मतिन् कद् ख़-लत् मिन् कब्लिहा उ-ममुल्-लितत्-लु-व अलैहिमुल्लज़ी औहैना इलै - क व हुम्-यक्फ़ुरू-न बिर्रह्मानि ▫ कुल् हु-व रब्बी ला इला-ह इल्ला हु-व ८ अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि मताब (३०)

★रु. ३/९ आ ८

है। (१६) जो खुदा के अह्द को पूरा करते हैं और इकरार को नही तोडते। (२०) और जिन (करावतदारो) के जोडे रखने का खुदा ने हुक्म दिया है, उन को जोडे रखते और अपने परवरदिगार से डरते रहते और बुरे हिसाब से खौफ रखते है। (२१) और जो परवरदिगार की खुश्नूदी हासिल करने के लिए (मुसीबतो पर) सब्र करते है और नमाज पढते है और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस मे से छिपे और जाहिर खर्च करते है और नेकी से बुराई को दूर करते है। यही लोग है जिन के लिए आकिवत का घर है, (२२) (यानी) हमेशा रहने के बाग, जिन मे वे दाखिल होगे और उन के बाप-दादा और बीवियो और औलाद मे से जो नेक होगे, वे भी (वहिश्त मे जाएगे) और फरिश्ते (वहिश्त के) हर एक दरवाजे से उन के पास आएगे, (२३) (और कहेंगे) तुम पर रह्मत हो (यह) तुम्हारी सावित कदमी का वदला है और आकिबत का घर खूब (घर) है। (२४) और जो लोग खुदा से पक्का अह्द कर के उस को तोड डालते और जिन (करावत के रिश्तो) के जोडे रखने का खुदा ने हुक्म दिया है, उन को काट डालते हैं और मुल्क मे फसाद करते है, ऐसो पर लानत है और उनके लिए घर भी बुरा है। (२५) खुदा जिस की चाहता है, रोजी फैला देता है, और जिस की चाहता है तग कर देता है और काफिर लोग दुनिया की जिंदगी पर खुश हो रहे है और दुनिया की जिदगी मे आखिरत (के मुकावले) मे (वहुत) थोडा फायदा है। (२६)★

और काफिर कहते है कि इस (पैगम्बर पर) उस के परवरदिगार की तरफ से कोई निशानी क्यो नाजिल नही हुई। कह दो कि खुदा जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जो (उस की तरफ) रुजू होता है, उस को अपनी तरफ का रास्ता दिखाता है।[1] (२७) (यानी) जो लोग ईमान लाते और जिन के दिल खुदा की याद से आराम पाते है (उन को) और सुन रखो कि खुदा की याद से दिल आराम पाते है। (२८) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उन के लिए खुशहाली और उम्दा ठिकाना है। (२६) (जिस तरह हम और पैगम्बर भेजते रहे है) उसी तरह (ऐ मुहम्मद) हम ने तुम को इस उम्मत मे, जिस से पहले वहुत सी उम्मते गुजर चुकी है, भेजा है, ताकि तुम उन को वह (किताव) जो हम ने तुम्हारी तरफ भेजी है, पढ कर सुना दो और ये लोग रहमान को नही मानते। कहो, वही तो मेरा परवरदिगार है, उस के सिवा कोई माबूद नही। मै उसी पर भरोसा

१ यानी ईमान की तौफीक देता है वगैर मोजज़ा दिखाए उस को, जो कोई उस की तरफ आजिजी करता है और खुदा की तरफ सब को छोड कर फिरता है।

★रु ३/६ आ ८

व लौ अन्-न कुर्आनन् मुय्यिरत् बिहिल्-जिबालु औ कुत्तिअत् बिहिल्-अर - ज़ु औ कुल्लि - म बिहिल्मौता ط बल् लिल्लाहिल् - अम्रु जमीअन् ط अ-फ-लम् यै-असिल्लजी-न आमनू अल्लौ यशाउल्लाहु ल-ह-दन्ना-स जमीअन् ط व ला यज़ालुल्लज़ी-न क-फ़रू तुसीबुहुम् बिमा स-न-अू कारिअतुन् औ तहुल्लु करीबम्मिन् दारिहिम् हत्ता यअ्ति - य वअ्-दुल्लाहि ط इन्नल्ला - ह ला युख्लिफ़ुल्-मीआद ★ (३१) व ल - क़दिस्तुह्ज़ि-य बिरुसुलिम् - मिन् क़ब्लि - क फ अम्लैतु लिल्लज़ी-न क-फ़रू सुम-म अ-ख़ज्-तुहुम् फकै-फ का-न अिक़ाब (३२) अ-फ-मन् हु-व क़ाइमुन् अला कुल्लि नफ़्सिम् - बिमा क-स-बत् ج व ज-अलू लिल्लाहि शु-रका-अ ط कुल् सम्मूहुम् ط अम् तुनब्बिऊनहू बिमा ला यअ्-लमु फिल्अर्ज़ि अम् बिज़ाहिरिम्-मिनल्क़ौलि ط बल् ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी - न क-फरू मक्रुहुम् व सुद्दू अनिस्सबीलि ط व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फमा लहू मिन् हाद (३३) लहुम् अज़ाबुन् फिल्-हयातिद्दुन्या व ल-अज़ाबुल्-आख़िरति अशक्क़ु ج व मा लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (३४) म-सलुल्-जन्नतिल्लती वुअिदल् - मुत्तक़ू - न ط तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ط उकुलुहा दाइमुंव - व ज़िल्लुहा ط तिल-क अुक़्बल्लज़ीनत्तक़व्-व उक़्बल् - काफ़िरीनन्नार (३५) वल्लज़ी - न आतैनाहुमुल् - किता-ब यफ़्रहू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मिनल्-अह्ज़ाबि मंय्युन्किरु बअ् - ज़हू ط कुल् इन्नमा उमिर्तु अन् अअ्-बुदल्ला-ह व ला उश्रि-क बिही ط इलैहि अद्अू व इलैहि मआब (३६) व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु हुक्मन् अ-रबिय्यन् ط व ल - इनित्तबअ्-त अह्वाअहुम् बअ्-द मा जा-अ-क मिनल्-अिल्मि ۙ मा ल-क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव-व ला वाक़ ★ (३७)

بِالرَّحْمٰنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ۝
وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ
الْمَوْتٰى ۗ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ۗ اَفَلَمْ يَايْئَسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ
لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى
يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ
بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ۝ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا
لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ۗ قُلْ سَمُّوْهُمْ ۗ اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ
بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ
السَّبِيْلِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝ لَهُمْ عَذَابٌ فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ
وَّاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۗ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ
اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۗ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ
النَّارُ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ
مِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۗ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ
اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۗ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ

रखता हू और उसी की तरफ रुजू करता हू। (३०) और अगर कोई कुरआन ऐसा होता कि उस (के असर मे) पहाड चल पडते या ज़मीन फट जाती या मुर्दो से कलाम कर सकते (तो यही कुरआन इन खूबियो वाला होता मगर) बात यह है कि सब बाते खुदा के अख्तियार मे है, तो क्या मोमिनो को इस से इत्मीनान नही हुआ कि अगर खुदा चाहता तो सब लोगो को हिदायत के रास्ते पर चला देना और काफिरो पर हमेशा उन के आमाल के बदले बला आती रहेगी या उन के मकानो के करीब नाजिल होती रहेगी, यहा तक कि खुदा का वायदा आ पहुचे। बेशक खुदा वायदा खिलाफ नही करता। (३१) ★

और तुम से पहले भी रसूलो का मज़ाक होता रहा है, तो हम ने काफिरो को मोहलत दी, फिर पकड लिया, सो (देख लो कि) हमारा अज़ाब कैसा था। (३२) तो क्या जो (खुदा हर) नफ्स के आमाल का निगरा (व निगहबान) है (वह बुतो की तरह बे-इल्म व बे-खबर हो सकता है) और उन लोगो ने खुदा के शरीक मुकर्रर कर रखे है। उन से कहो कि (जरा) उन के नाम तो लो। क्या तुम उसे ऐसी चीज़े बताते हो जिस को वह ज़मीन मे (कही भी) मालूम नही करता या (सिर्फ) ज़ाहिरी (बातिल और झूठी) बात के (पीछे चलते हो)। असल यह है कि काफिरो को उन के फरेब खूबसूरत मालूम होते है और वे (हिदायत के) रास्ते से रोक लिए गए है और जिसे खुदा गुमराह करे, उसे कोई हिदायत करने वाला नही। (३३) उन को दुनिया की जिदगी मे भी अज़ाब है और आखिरत का अज़ाब तो बहुत ही सख्त है और उन को खुदा (के अजाब मे) कोई भी बचाने वाला नही। (३४) जिस बाग़ का मुत्तकियो से वायदा किया गया है, उस की खूबिया ये है कि उस के नीचे नहरे बह रही है, उस के फल हमेशा (कायम रहने वाले) है और उस के साए भी। यह उन लोगो का अंजाम है, जो मुत्तकी है और काफिरो का अजाम दोज़ख है। (३५) और जिन लोगो को हम ने किताब दी है, वे उस (किताब) से जो तुम पर नाजिल हुई है, खुश होते है और कुछ फिर्के, जिन की कुछ बाते नही भी मानते। कह दो कि मुझ को यही हुक्म हुआ है कि खुदा ही की इबादत करू और उस के साथ (किसी को) शरीक न बनाऊ। मैं उसी की तरफ बुलाता हू और उसी की तरफ मुझे लौटना है। (३६) और इसी तरह हम ने इस कुरआन को अरबी जुबान का फरमान नाजिल किया है और अगर तुम इल्म (व दानिश) आने के बाद उन लोगो की ख्वाहिशो के पीछे चलोगे तो खुदा के सामने कोई न तुम्हारा मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (३७) ★

★रु ४/१० आ ५ ★रु ५/११ आ ६

व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम्-मिन् कब्लि-क व ज-अल्ना लहुम् अज्वाजव्-व जुर्रिय्य-तुन् ط व मा का-न लिरसूलिन् अय्यअ्ति-य बिआयतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ط लिकुल्लि अ-जलिन् किताब (३८) यम्हुल्लाहु मा यशाउ व युस्बितु صلے व अिन्दहू उम्मुल्-किताब (३९) व इम्मा नुरियन्न-क बअ्-जल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-त-वफ्फ-यन्न-क फ-इन्नमा अलैकल्-बलागु व अलैनल्-हिसाब (४०) अ-व लम् यरौ अन्ना नअ्तिल्-अर्-ज नन्कुसुहा मिन् अत्राफिहा ط वल्लाहु यह्कुमु ला मुअक़्क़ि-ब लिहुक्मिही ط व हु-व सरीअुल्-हिसाब (४१) व कद् म-क-रल्लज़ी-न मिन् कब्लिहिम् फलिल्लाहिल्-मक्रु जमीअन् ط यअ्-लमु मा तक्सिबु कुल्लु नफ्सिन् ط व स-यअ्-लमुल्-कुफ़्फ़ारु लिमन् अुक्बद्दार (४२) व यकूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लस्-त मुर्सलन् ط कुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम् لا व मन् अिन्दहू अिल्मुल्-किताब ★ (४३)

حُكْمًا عَرَبِيًّا ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ
قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ
يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ۝ يَمْحُو اللَّهُ مَا يَشَاءُ
وَيُثْبِتُ ۖ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ۝ وَإِنْ مَا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي
نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝ أَوَ
لَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا
مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ
الْكُفَّارُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ
قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ۝
سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَانِ وَخَمْسُونَ آيَةً وَسَبْعُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الر ۚ كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ
بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي
السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝
الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ

१४ सूरतु इब्राही-म ७२

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३६०१ अक्षर, ८४५ शब्द, ५२ आयते और ७ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अलिफ्-लाम्-रा قف किताबुन् अन्जल्नाहु इलै-क लितुख्रिजन्ना-स मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि لا बिइज़्नि रब्बिहिम् इला सिरातिल्-अज़ीज़िल्-हमीद لا (१) अल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व वैलुल्लिल्-काफ़िरी-न मिन् अज़ाबिन् शदीद لا (२) अल्लज़ी-न यस्तहिब्बूनल्-हयातद्दुन्या अ-लल्-आख़िरति व यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि व यब्गूनहा अि-व-जन् ط उलाइ-क फी ज़लालिम्-बअीद (३)

★रु. ६/१२ आ ६

और (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम से पहले भी पैगम्बर भेजे थे और उनको बीवियां और औलाद भी दी थी और किसी पैगम्बर के अख्तियार की बात न थी कि खुदा के हुक्म के बगैर कोई निशानी लाए। कजा (का) हर (हुक्म किताब मे) लिखा हुआ है। (३८) खुदा जिस को चाहता है, मिटा देता है और (जिस को चाहता है) कायम रखता है और उसी के पास असल किताब है। (३९) और अगर हम कोई अजाब, जिस का उन लोगो से वायदा करते है, तुम्हे दिखाए (यानी तुम्हारे सामने उन पर नाजिल करे) या तुम्हारी जिंदगी की मुद्दत पूरी कर दे (यानी) तुम्हारे इंतिकाल के बाद अज़ाब भेजे, तो तुम्हारा काम (हमारे हुक्मो का) पहुचा देना है और हमारा काम हिसाब लेना है। (४०) क्या उन्हो ने नही देखा कि हम जमीन को उस के किनारो से घटाते चले आते है।[1] और खुदा (जैसा चाहता है) हुक्म करता है, कोई उस के हुक्म का रद्द करने वाला नही और वह जल्द हिसाब लेने वाला है। (४१) जो लोग उन से पहले थे, वे भी (बहुतेरी) चाले चलते रहे, सो चाल तो सब अल्लाह ही की है। हर नफ्स जो कुछ कर रहा है, वह उसे जानता है और काफिर जल्द मालूम करेगे कि आकिवत का घर (यानी अच्छाई का अजाम) किस के लिए है? (४२) और काफिर लोग कहते है कि तुम (खुदा के) रसूल नही हो। कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान खुदा और वह शख्स, जिस के पास (आसमानी) किताब का इल्म है,[2] गवाह काफी है। (४३)★

१४ सूरः इब्राहीम ७२

सूरः इब्राहीम मक्की है और इस मे ५२ आयते और सात रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो वडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ्-लाम्-रा, यह एक (पुरनूर) किताब (है), इस को हम ने तुम पर इस लिए नाज़िल किया है कि लोगो को अंधेरे से निकाल कर रोशनी की तरफ ले जाओ (यानी) उन के परवरदिगार के हुक्म से गालिव और तारीफ के काविल (खुदा) के रास्ते की तरफ। (१) वह खुदा कि जो कुछ आसमानो और ज़मीन मे है, सब उसी का है और काफिरो के लिए सख्त अज़ाब (की वजह) से खरावी है, (२) जो आखिरत के मुकावले दुनिया को पसन्द करते और (लोगो को) खुदा के रास्ते से रोकते और उस मे टेढ़ चाहते है। ये लोग परले सिरे की गुमराही मे है। (३) और हम ने कोई

---

१ ज़मीन के घटाने से यह मुराद है कि कुफ्र मुल्क से कम होता जाता और इस्लाम फैलता जाता है। किसी ने कहा कि देहात वीरान हुए जाते हैं। किसी ने कहा कि जानें और फल और मेवे ज़ाया हो रहे हैं।

२ जिस के पास किताव का इल्म है, उस से मुराद या तो अब्दुल्लाह विन सलाम हैं जो अह्ले किताव मे से थे और जिन्हो ने हज़रत की रिसालत की गवाही दी थी और इस्लाम ले आये थे, चुनाचे वह इस वात के कायल भी थे कि यह आयते इलाही के हक मे नाज़िल हुई है या आम अह्ले किताव मुराद है जिन की पिछली किताबो से आप की गवाही मालूम है।

★रु. ६/१२ आ ६

व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला बिलिसानि कौमिही लियुबय्यि-न लहुम् ط फयुज़िल्लुल्लाहु मय्यशा-उ व यह्दी मय्यशाउ ط व हुवल्-अज़ीज़ुल्-हकीम (४) व ल-कद् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना अन् अख्रिज् कौम-क मिनज़्-ज़ुलुमाति इलन्नूरि ۙ व ज़क्किर्हुम् बिअय्यामिल्लाहि ط इन्-न फी

سَبِيلِ اللّٰهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ أُولٰٓئِكَ فِي ضَلٰلٍ بَعِيدٍ ۝ وَمَآ
أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلُّ اللّٰهُ
مَن يَشَآءُ وَيَهْدِي مَن يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَلَقَدْ
أَرْسَلْنَا مُوسٰى بِاٰيٰتِنَآ أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّورِ ۙ
وَذَكِّرْهُم بِأَيّٰىمِ اللّٰهِ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝
وَإِذْ قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجٰىكُم
مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَآءَكُمْ وَ
يَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِي ذٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝ وَإِذْ
تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ ۖ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي
لَشَدِيدٌ ۝ وَقَالَ مُوسٰى إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ وَمَن فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا فَإِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ مِن
قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ
إِلَّا اللّٰهُ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوٓا أَيْدِيَهُمْ فِيٓ أَفْوٰهِهِمْ
وَقَالُوٓا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَآ
إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلٰٓى
أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوٓا إِنْ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيدُونَ أَن

ज़ालि-क लआयातिल्लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (५) व इज् का-ल मूसा लिकौमिहिज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम् इज् अन्जाकुम् मिन् आलि फिर्औ-न यसूमूनकुम् सूअल्-अज़ाबि व युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम् ط व फी ज़ालिकुम् बलाउम्-मिर्रब्बिकुम् अज़ीम ★ (६) व इज् त-अज़्ज़-न रब्बुकुम् लइन् श-कर्तुम् ल-अज़ीदन्नकुम् व लइन् क-फ़र्तुम् इन्-न अज़ाबी ल-शदीद (७) व का-ल मूसा इन् तक्फुरू अन्तुम् व मन् फिल्अर्ज़ि जमीअन् ۙ फइन्नल्ला-ह लग़निय्युन् हमीद (८) अ-लम् यअ्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न मिन् कब्लिकुम् कौमि नूहिंव्-व आदिंव्-व समू-द ۛ वल्लज़ी-न मिम्बअ्-दिहिम् ط ला यअ्-लमुहुम् इल्लल्लाहु ط जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फरद्दू ऐदि-यहुम् फ़ी अफ्वाहिहिम् व कालू इन्ना क-फ़र्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही व इन्ना लफ़ी शक्किम्-मिम्मा तद्अूनना इलैहि मुरीब ● (९) कालत् रुसुलुहुम् अफिल्लाहि शक्कुन् फातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि ط यद्अूकुम् लियग्फि-र लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख्ख़ि-रकुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन् ط कालू इन् अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना ط तुरीदू-न अन् तसुद्दूना अम्मा का-न यअ्बुदु आबाउना फअ्तूना बिसुल्तानिम्-मुबीन (१०)

★रु १/१३ आ ६-मु अ़ मु त क ६ ●पु ३/४

पैगम्बर नही भेजा, मगर अपनी कौम की जुबान बोलता था,[१] ताकि उन्हे (खुदा के हुक्म) खोल-खोल कर बता दे, फिर खुदा जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और वह गालिब (और) हिक्मत वाला है, (४) और हम ने मूसा को अपनी निशानिया दे कर भेजा कि अपनी कौम को अधेरे से निकाल कर रोशनी मे ले जाओ और उन को खुदा के दिन याद दिलाओ,[२] इस मे उन लोगो के लिए जो सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले है, (खुदा की कुदरत की) निशानिया हैं। (५) और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि खुदा ने जो तुम पर मेहरबानिया की है, उन को याद करो, जब कि तुम को फिऔंन की कौम (के हाथ) मे मुख्लिसी दी। वे लोग तुम्हे बुरे अजाब देते थे और तुम्हारे बेटो को मार डालते थे और औरन जात यानी तुम्हारी लडकियो को जिंदा रहने देते थे और उस मे तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बडी (सख्त) आजमाइश थी. (६) ✶

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने (तुम को) आगाह किया कि अगर शुक्र करोगे, तो मैं तुम्हे ज्यादा दूगा और अगर नाशुक्री करोगे तो (याद रखो कि) मेरा अजाब (भी) सख्त है। (७) और मूसा ने (साफ-साफ) कह दिया कि अगर तुम और जितने और लोग जमीन मे है, सब के सब ना-शुक्री करो, तो खुदा भी बे-नियाज़ (और) तारीफ के काबिल है। (८) भला तुम को उन लोगो (के हालात) की खबर नही पहुची जो तुम से पहले थे (यानी) नूह और आद और समूद की कौम और जो उन के बाद थे, जिन का इल्म खुदा के सिवा किसी को नही। (जब) उन के पास पैगम्बर निशानिया ले कर आए तो उन्हो ने अपने हाथ उन के मुहो पर रख दिए (कि खामोश रहो) और कहने लगे कि हम तो तुम्हारी रिसालत को नही मानते और जिस चीज की तरफ तुम हमे बुलाते हो, हम उस मे भारी शक मे है ● (९) उन के पैगम्बरो ने कहा, क्या (तुम को) खुदा (के बारे) मे शक है, जो आसमानो और जमीन का पैदा करने वाला है। वह तुम्हे इस लिए बुलाता है कि तुम्हारे गुनाह बख्शने और (फायदा पहुचाने के लिए) एक मुकर्रर मुद्दत तक तुम को मोहलत दे। वे बोले तुम तो हमारे ही जैसे आदमी हो, तुम्हारा यह मशा है कि जिन चीजो को हमारे बडे पूजते रहे हैं, उन (के पूजने) मे हम को बन्द कर दो तो (अच्छा!) कोई खुली दलील लाओ (यानी मोजज़ा

---

१ काफिर कहते थे कि और जुबान मे कुरआन उतरता, तो हम यकीन करते, यह तो उस शख्स की बोली है, शायद आप कह लाता हो, इस का यह जवाब है।

२ खुदा के दिनो से मुराद वे वाकिए है जो उस की तरफ से जाहिर होते रहते हैं।

क़ालत् लहुम् रुसुलुहुम् इन् नह्नु इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुकुम् व लाकिन्नल्ला-ह यमुन्नु अला मय्यशाउ मिन् अिबादिही ط व मा का-न लना अन्-नअ्ति-यकुम् बिसुल्तानिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ط व अ-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल्-मुअ्मिनून (११) व मा लना अल्ला न-त-वक्क-ल अ-लल्लाहि व क़द् हदाना सुबुलना ط व ल-नस्बिरन्-न अला मा आज़ैतुमूना ط व अ-लल्लाहि फल्-य-त-वक्कलिल्-मुत-वक्किलून ★ (१२) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिरुसुलिहिम् लनुख्रिजन्नकुम् मिन् अर्ज़िना औ ल-तअूदुन्-न फ़ी मिल्लतिना ط फऔहा इलैहिम् रब्बुहुम् लनुह्लिकन्नज़्-ज़ालिमीन لا (१३) व लनुस्किनन्न-कुमुल्-अर्-ज मिम्बअ्-दिहिम् ط ज़ालि-क लिमन् ख़ा-फ मक़ामी व ख़ा-फ वओद (१४) वस्तफ्तहू व ख़ा-ब कुल्लु. जब्बारिन् अनीदिम् لا (१५) मिव्वराइही जहन्नमु व युस्क़ा मिम्-माइन् सदीदिय् لا (१६) य-त-जर्रअुहू व ला यकादु युसीगुहू व यअ्तीहिल्-मौतु मिन् कुल्लि मकानिव्-व मा हु-व बिमय्यितिन् ط व मिव्वराइही अज़ाबुन् ग़लीज़ (१७) म-सलुल्लज़ी-न क-फरू बिरब्बिहिम् अअ्-मालुहुम् क-रमादि-नि-श्तद्दत् बिहिर्रीहु फ़ी यौमिन् आसिफ़िन् ला यक़्दिरू-न मिम्मा क-सबू अला शैइन् ط ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बओद (१८) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज बिल्हक़्क़ि ط इं य्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्किन् जदीद لا (१९) व मा ज़ालि-क अ-लल्लाहि बिअ़ज़ीज़ (२०) व ब-रज़ू लिल्लाहि जमीअन् फ-क़ालज़्ज़ुअफ़ाउ लिल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-ब-अन् फ-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अन्ना मिन् अज़ाबिल्लाहि मिन् शैइन् ط क़ालू लौ हदानल्लाहु ल-हदैनाकुम् सवाउन् अलैना अ-जज़िअ्-ना अम् स-बर्ना मा लना मिम्महीस★ (२१)

ابراهيم ١٤ — ٢٥٥ — وما أبرئ ١٣

تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَتْ
لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ
اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى
اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُم
مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۖ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ
الظَّالِمِينَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِن بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ۝ وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ
جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مِّن وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ صَدِيدٍ ۝
يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَ
مَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِن وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝ مَّثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِرَبِّهِمْ ۖ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ
لَّا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۝
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝ وَبَرَزُوا
لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ

★रु २/१४ आ ६ ★रु. ३/१५ आ ९

दिखलाओ)। (१०) पैगम्बरो ने उन से कहा कि हा, हम तुम्हारे ही जैसे आदमी है, लेकिन खुदा अपने बन्दो मे से, जिस पर चाहता है (नुबूवत का) एहसान करता है और हमारे अख्तियार की वात नही कि हम खुदा के हुक्म के बगैर तुम को (तुम्हारी फरमाइश के मुताबिक) मोजजा दिखाए और खुदा ही पर मोमिनो को भरोसा रखना चाहिए। (११) और हम क्यो न खुदा पर भरोसा रखे हालाकि उस ने हम को हमारे (दीन के सीधे) रास्ते बताए है, और जो तक्लीफे तुम हम को देते हो, उस पर सब्र करेगे और भरोसा करने वालो को खुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए। (१२)★

और जो काफिर थे उन्हो ने अपने पैगम्बरो से कहा कि (या तो) हम तुम को अपने मुल्क से वाहर निकाल देगे या हमारे मज़हब मे दाखिल हो जाओ। तो परवरदिगार ने उन की तरफ वह्य भेजी कि हम जालिमो को हलाक कर देगे। (१३) और उन के बाद तुम को उस जमीन मे आबाद कर देगे। यह उस शख्स के लिए है जो (कियामत के दिन) मेरे सामने खडे होने से डरे और मेरे अज़ाब से खौफ करे। (१४) और पैगम्बरो ने (खुदा से अपनी) फत्ह चाही, तो हर सरकश, ज़िद्दी, ना-मुराद रह गया। (१५) उस के पीछे दोज़ख है और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा, (१६) वह उस को घूट-घूट पिएगा और गले से नही उतार सकेगा और हर तरफ से उसे मौत आ रही होगी, मगर वह मरने मे नही आएगा और उस के पीछे सख्त अजाब होगा। (१७) जिन लोगो ने अपने परवरदिगार से कुफ्र किया, उन के आमाल की मिसाल राख की-सी है कि आधी के दिन उस पर जोर की हवा चले (और) उसे उडा ले जाए, (इसी तरह) जो काम वे करते रहे, उन पर उन को कुछ कुदरत न होगी। यही तो परले सिरे की गुमराही है। (१८) क्या तुम ने नही देखा कि खुदा ने आसमानो और ज़मीन को तद्बीर से पैदा किया है, अगर वह चाहे, तो तुम को नाबूद कर दे और (तुम्हारी जगह) नयी मख्लूक पैदा कर दे-। (१९) और यह खुदा को कुछ भी मुश्किल नही। (२०) और (क़ियामत के दिन) सब लोग खुदा के सामने खडे होगे, तो (अक्ल के) कमज़ोर (पैरवी करने वाले अपने) घमंडी (सरदारो) से कहेगे कि हम तो तुम्हारी पैरवी करने वाले थे। क्या तुम खुदा का कुछ अजाव हम पर से हटा सकते हो ? वे कहेगे कि अगर खुदा हम को हिदायत करता तो हम तुम को हिदायत करते। अव हम घवराएं या सब्र करे, हमारे हक मे वरावर है। कोई जगह (भागने

★रु २/१४ आ ६

व कालश्शैतानु लम्मा कुज़ियल्-अम्रु इन्नल्ला-ह व-अ-दकुम् वअ-दल्हक्कि व वअत्तुकुम् फ-अख़्लफ़्तुकुम् ⅎ व मा का-न लि-य अलैकुम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला अन् दऔतुकुम् फस्तजब्तुम् ली ج फला तलूमूनी व लूमू अन्फुसकुम् ⅎ मा अ-न बिमुस्रिखिकुम् व मा अन्तुम् बिमुस्रिखिय्-यⅎ इन्नी क-फ़र्तु बिमा अश-रक्तुमूनि मिन् क़ब्लु ⅎ इन्नज़्ज़ालिमी-न लहुम् अज़ाबुन् अलीम (२२) व उद्खिलल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु खालिदी-न फ़ीहा बिइज़्नि रब्बिहिम् ⅎ तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलाम (२३) अ-लम् त-र कै-फ ज़-र-बल्लाहु म-स-लन् कलि-म-तन् तय्यि-ब-तन् क-श-ज-रतिन् तय्यिबतिन् अस्लुहा साबितु व्-व फ़र्अुहा फ़िस्समाइ ⅃ (२४) तुअ्ती उकुलहा कुल्-ल हीनिम्-बिइज़्नि रब्बिहा ⅎ व यज़्रिबुल्लाहुल्-अम्सा-ल लिन्नासि ल-अल्लहुम् य-त-ज़क्करून (२५) व म-सलु कलिमतिन् खबीसतिन् क-श-जरतिन् खबीसति-नि-ज्तुस्सत् मिन् फ़ौकिल्अर्ज़ि मा लहा मिन् करार (२६) युसब्बितुल्लाहुल्-लज़ी-न आमनू बिल्-कौलिस्साबिति फ़िल्-हयातिद्दुन्या व फ़िल्आखिरति ج व युज़िल्लुल्लाहुज़्-ज़ालिमी-न ⅃ व यफ्-अलुल्लाहु मा यशाउ★ (२७) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न बद्दलू निअ्-म-तल्लाहि कुफ़्रव्-व अहल्लू कौमहुम् दारल्बवार ⅃ (२८) जहन्न-म ج यस्लौनहा ⅎ व बिअ्सल्करार (२९) व ज-अलू लिल्लाहि अन्दादल्-लियुज़िल्लू अन् सबीलिही ⅎ क़ुल् त-मत्तअू फ-इन-न मसीरकुम् इलन्नार (३०)

تبعا فهل انتم مغنون عنا من عذاب الله من شيء قالوا لو
هدىنا الله لهديناكم سواء علينا اجزعنا ام صبرنا ما لنا من
محيص ﴿٢١﴾ وقال الشيطن لما قضي الامر ان الله وعدكم وعد
الحق ووعدتكم فاخلفتكم وما كان لي عليكم من سلطن الا
ان دعوتكم فاستجبتم لي فلا تلوموني ولوموا انفسكم ما انا
بمصرخكم وما انتم بمصرخي اني كفرت بما اشركتمون من قبل
ان الظلمين لهم عذاب اليم ﴿٢٢﴾ وادخل الذين امنوا وعملوا
الصلحت جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها باذن
ربهم تحيتهم فيها سلم ﴿٢٣﴾ الم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة
طيبة كشجرة طيبة اصلها ثابت وفرعها في السماء ﴿٢٤﴾ تؤتي
اكلها كل حين باذن ربها ويضرب الله الامثال للناس
لعلهم يتذكرون ﴿٢٥﴾ ومثل كلمة خبيثة كشجرة خبيثة اجتثت
من فوق الارض ما لها من قرار ﴿٢٦﴾ يثبت الله الذين امنوا
بالقول الثابت في الحيوة الدنيا وفي الاخرة ويضل الله
الظلمين ويفعل الله ما يشاء ﴿٢٧﴾ الم تر الى الذين بدلوا نعمت الله
كفرا واحلوا قومهم دار البوار ﴿٢٨﴾ جهنم يصلونها وبئس القرار ﴿٢٩﴾
وجعلوا لله اندادا ليضلوا عن سبيله قل تمتعوا فان مصيركم

★रु ४/१६ आ ६

और) रिहाई की हमारे लिए नही है★(२१) जब (हिसाब-किताव का काम) फैसला हो चुकेगा, तो शैतान कहेगा (जो) वायदा खुदा ने तुम से किया था, (वह तो) सच्चा (था) और (जो) वायदा मैं ने तुम से किया था, वह झूठा था और मेरा तुम पर किसी तरह का जोर नही था। हा, मैं ने तुम को (गुमराही और बातिल की तरफ) बुलाया, तो तुम ने (जल्दी से और बे-दलील) मेरा कहना मान लिया तो, (आज) मुझे मलामत न करो, अपने आप ही को मलामत करो। न मैं तुम्हारी फरियादरसी कर सकता हूं और न तुम मेरी फरियादरसी कर सकते हो। मैं इस बात से इकार करता हू कि तुम पहले मुझे शरीक बनाते थे। बेशक जो ज़ालिम हैं, उन के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है। (२२) और जो ईमान लाये और नेक अमल किये, वे बहिश्तो मे दाखिल किये जाएगे, जिन के नीचे नहरे बह रही है, अपने परवरदिगार के हुक्म से हमेशा उन मे रहेगे, वहा उन की साहब-सलामत सलाम होगा। (२३) क्या तुम ने नही देखा कि खुदा ने पाक बात की कैसी मिसाल बयान फरमायी है, (वह ऐसी है) जैसे पाक पेड, जिस की जड मज़बूत (यानी ज़मीन को पकडे हुए) हो और शाखे आसमान मे।[1] (२४) अपने परवरदिगार के हुक्म से हर वक्त फल आता (और मेवे देता) हो और खुदा लोगो के लिए मिसाले बयान फरमाता है, ताकि वे नसीहत पकडे। (२५) और नापाक बात की मिसाल नापाक पेड की-सी है, (न जड मजबूत न शाखे ऊची) ज़मीन के ऊपर ही से उखाड कर फेंक दिया जाए, उस को जरा भी करार (व सबात) नही।[2] (२६) खुदा मोमिनो (के दिलो) को (सही और) पक्की बात से दुनिया की ज़िंदगी मे भी मज़बूत रखता है और आखिरत मे भी (रखेगा) और खुदा बे-इन्साफों को गुमराह कर देता है और खुदा जो चाहता है, करता है। (२७)★

क्या तुम ने उन लोगो को नही देखा, जिन्हो ने खुदा के एहसान को ना-शुक्री से बदल दिया और अपनी कौम को तबाही के घर में उतारा। (२८) (वह घर) दोज़ख है, (सब ना-शुक्रे) उस मे दाखिल होगे और वह बुरा ठिकाना है। (२९) और उन लोगो ने खुदा के शरीक मुकर्रर किये कि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करे। कह दो कि (कुछ दिन) फायदे उठा लो। आखिरकार

---

१ पाक बात से मुराद कलिमा-ए-तौहीद 'ला इला-ह इल्लल्लाह' है। फरमाया कि कलिमा-ए-तौहीद की मिसाल उस पाक पेड की-सी है, जिस की जड ज़मीन मे मज़बूत हो और उस की शाखे बुलंदी मे आसमान तक पहुची हुई हो और हर मौसम मे फल देता हो। कलिमा-ए-तौहीद की जड भी दिलो मे कायम व मुस्तहकम होती है और उस की शाखें यानी अमल आसमान पर चढते रहते है और उन की बरकत हर वक्त हासिल होती रहती है।

२ ना-पाक बात से मुराद शिर्क का कलिमा है। फरमाया शिर्क के कलिमे की मिसाल ऐसे पेड की है, जिस की जड ज़मीन पर से उखाड दी गयी हो, उसे ज़रा करार व सबात न हो यानी शिर्क का कलिमा बिल्कुल बे-अमल होता है, न उस के लिए मज़बूत दलील होती है, न शिर्क के कामो की कुबूलियत होती है, न उस मे खैर व बरकत होती है।

★रु. ३/१५ आ ९ ★रु ४/१६ आ ६

क़ुल् लिअिबादियल्-लज़ी-न आमनू युक़ीमुस्सला-त व युन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् सिर्-रंव्-व अलानियतम्-मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला बैअुन् फ़ीहि व ला ख़िलाल (३१) अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्-ज़-ल मिनस्समाइ माअन् फ़-अख़-र-ज बिही मिनस्स - मराति रिज़्क़ल्लकुम् ج व सख़्ख़-र लकुमुल्फ़ुल-क लितज्रि-य फ़िल्बह्रि बिअम्रिही ج व सख़्ख़ - र लकुमुल् - अन्हार ج (३२) व सख़्ख़-र लकुमुश्शम-स वल्क़-म-र दाइबैनि ج व सख़्ख़-र लकुमुल्-लै - ल वन्नहार ج (३३) व आताकुम् मिन् कुल्लि मा स - अल्तुमूहु ط व इन् तअुद्दू निअ - म-तल्लाहि ला तुह्सूहा ط इन्नल् - इन्सा - न ल - ज़लूमुन् कफ़्फ़ार ★ (३४) व इज़् का - ल इब्राहीमु रब्बिज्-अल् हाज़ल्ब-ल-द आमिनंव्वज्नुब्नी व बनिय्-य अन् नअ्-बुदल्-अस्नाम ط (३५) रब्बि इन्नहुन् - न अज़्-लल्-न कसीरम्-मिनन्नासि ج फ़-मन् तबि-अ़नी फ़-इन्नहू मिन्नी ج व मन् अ़सानी फ़इन्न-क ग़फ़ूरुर्रहीम (३६) रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन् ज़ुर्रिय्यती बिवादिन् ग़ैरि-ज़ी ज़र्अिन् अिन्-द बैतिकल्-मुहर्रमि ٧ रब्बना लियुक़ीमुस्सला-त फ़ज्-अल् अफ़्इ-द-त-म् मिनन्नासि तह्वी इलैहिम् वर्ज़ुक़-हुम् मिनस्स-मराति ल-अ़ल्लहुम् यश्कुरून (३७) रब्बना इन्न-क तअ्-लमु मा नुख़्फ़ी व मा नुअ्-लिनु ط व मा यख़्फ़ा अ-लल्लाहि मिन् शैइन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ (३८) अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी व-ह-ब ली अ़-लल्किब्रि इस्माई-ल व इस्हा-क़ ط इन्-न रब्बी ल-समीअुद्दुआइ (३९) रब्बिज - अल्नी मुक़ीमस्सलाति व मिन् ज़ुर्रिय्यती ج रब्बना व त - क़ब्बल् दुआइ (४०) रब्बनग़्फ़िर्ली व लिवालिदय्-य व लिल्मुअ्मिनी-न यौ-म यक़ूमुल् - हिसाब ★ (४१)

النار ○ قل لعبادي الذين امنوا يقيموا الصلوة وينفقوا مما
رزقنهم سرا وعلانية من قبل ان ياتي يوم لا بيع فيه ولا
خلل ○ الله الذي خلق السموت والارض وانزل من السماء ماء
فاخرج به من الثمرت رزقا لكم وسخر لكم الفلك لتجري في
البحر بامره وسخر لكم الانهر ○ وسخر لكم الشمس والقمر دائبين
وسخر لكم اليل والنهار ○ واتىكم من كل ما سالتموه وان
تعدوا نعمت الله لا تحصوها ان الانسان لظلوم كفار ○ واذ
قال ابرهيم رب اجعل هذا البلد امنا واجنبني وبني ان نعبد
الاصنام ○ رب انهن اضللن كثيرا من الناس فمن تبعني
فانه مني ومن عصاني فانك غفور رحيم ○ ربنا اني اسكنت
من ذريتي بواد غير ذي زرع عند بيتك المحرم ربنا ليقيموا
الصلوة فاجعل افدة من الناس تهوي اليهم وارزقهم
من الثمرت لعلهم يشكرون ○ ربنا انك تعلم ما نخفي وما
نعلن وما يخفى على الله من شيء في الارض ولا في السماء ○
الحمد لله الذي وهب لي على الكبر اسمعيل واسحق ان ربي
لسميع الدعاء ○ رب اجعلني مقيم الصلوة ومن ذريتي ربنا و
تقبل دعاء ○ ربنا اغفر لي ولوالدي وللمؤمنين يوم يقوم الحساب ○

★रु. ५/१७ आ ७ ★रु. ६/१८ आ ७

तुम को दोज़ख की तरफ लौट कर जाना है। (३०) (ऐ पैगम्बर !) मेरे मोमिन बन्दों से कह दो कि नमाज़ पढा करे और उस दिन के आने से पहले, जिस में न (आमाल) का सौदा होगा और न दोस्ती (काम आएगी) हमारे दिए हुए माल मे से छिपे और ज़ाहिर ख़र्च करते रहे। (३१) ख़ुदा ही तो है, जिस ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से मेह बरसाया, फिर उस से तुम्हारे खाने के लिए फल पैदा किए और कश्तियो (और जहाज़ो) को तुम्हारे फरमान के तहत किया, ताकि दरिया (और समुन्दर) मे उस के हुक्म से चले और नहरो को भी तुम्हारे फरमान के तहत किया। (३२) और सूरज और चाद को तुम्हारे लिए काम मे लगा दिया कि दोनो (दिन-रात)एक दस्तूर पर चल रहे है और रात और दिन को भी तुम्हारे लिए काम मे लगा दिया। (३३) और जो कुछ तुम ने मागा, सब मे से तुम को इनायत किया और अगर ख़ुदा के एहसान गिनने लगो तो गिन न सको, (मगर लोग नेमतो का शुक्र नही करते)। कुछ शक नही कि इसान बडा बे-इंसाफ़ और ना-शुक्रा है। (३४) ★

और जब इब्राहीम ने दुआ की कि मेरे परवरदिगार ! इस शहर को (लोगो के लिए) अम्न की जगह बना दे[1] और मुझे और मेरी औलाद को इस बात से कि बुतो की पूजा करने लगे, बचाए रख। (३५) ऐ परवरदिगार ! उन्हों ने बहुत से लोगो को गुमराह किया है, सो जिस शख़्स ने मेरा कहा माना, वह मेरा और जिस ने मेरी ना-फरमानी की, तो तू बख़्शने वाला मेहरबान है। (३६) ऐ परवरदिगार ! मैं ने अपनी औलाद (मक्का के) मैदान मे, जहा खेती नही, तेरे इज़्ज़त (व अदब) वाले घर के पास ला बसायी है, ऐ परवरदिगार ! ताकि ये नमाज़ पढे, तो लोगो के दिलो को ऐसा कर दे कि उन की तरफ झुके रहे और उन को मेवो से रोजी दे ताकि (तेरा) शुक्र करे। (३७) ऐ परवरदिगार ! जो बात हम छिपाते और ज़ाहिर करते है, तू सब जानता है और ख़ुदा से कोई चीज़ छिपी हुई नही, (न) ज़मीन मे, न आसमान मे। (३८) ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने मुझ को बडी उम्र में इस्माईल और इस्हाक बख़्शे। बेशक मेरा परवरदिगार दुआ सुनने वाला है। (३९) ऐ परवरदिगार ! मुझ को (ऐसी तौफ़ीक इनायत) कर कि नमाज़ पढता रहूं और मेरी औलाद को भी (यह तौफ़ीक बख़्श), ऐ परवरदिगार ! मेरी दुआ कुबूल फरमा। (४०) ऐ परवरदिगार ! हिसाब (-किताब) के दिन मुझ को और मेरे मा-बाप को और मोमिनो को मग्फिरत कीजियो, (४१) ★

---

१ यानी इलाही ! मक्का को सब बलाओ और आफतो से अमान मे रख।

व ला तह्स-बन्नल्ला-ह ग़ाफिलन् अम्मा यअ - मलुज़्ज़ालिमू - न ط इन्नमा युअख़्ख़िरुहुम् लियौमिन् तश्खसु फ़ीहिल्-अब्सार ॥ (४२) मुह्तिई - न मुक़्निई-रुऊसिहिम् ला यर्तद्दु इलैहिम् तर्‌ - फ़ुहुम् ج व अफ़् - इदतुहुम् हवा-अ् ط (४३) व अन्ज़िरिन्ना-स यौ-म यअ्तीहिमुल्-अज़ाबु फ-यक़ूलुल्-लज़ी-न ज़-लमू रब्बना अख़्ख़िर्ना इला अ-जलिन् क़रीबिन् ॥ नुजिब् दअ्-व-त-क व नत्तबिअिर्-रुसु-ल ط अ-व लम् तकूनू अक्सम्तुम् मिन् क़ब्लु मा लकुम् मिन् ज़वालिन् ॥ (४४) व स-कन्तुम् फी मसाकिनिल्लज़ी-न ज़-लमू अन्फुसहुम् व त-बय्य-न लकुम् कै-फ फ-अ़ल्ना बिहिम् व ज़-रब्ना लकुमुल्-अम्साल (४५) व क़द् म-करू मक्रहुम् व अिन्दल्लाहि मक्रुहुम् ط व इन् का-न मक्रुहुम् लि-तज़ू-ल मिन्हुल्-जिबाल (४६) फला तह्-स-बन्नल्ला-ह मुख़्लि-फ़ वअ्-दिही रुसुलहू ط इन्नल्ला - ह अज़ीज़ुन् ज़ुन्तिका - म ط (४७) यौ-म तुबद्दलुल्-अर्ज़ु ग़ैरल्अर्ज़ि वस्समावातु व ब - रज़ू लिल्लाहिल्-वाहिदिल्-क़ह्हार (४८) व त - रल्मुज्रिमी - न यौमइज़िम्-मुक़र्रनी-न फिल्-अस्फाद ج (४९) सराबीलुहुम् मिन् क़तिरानिंव-व तग़्शा वुजूह-हुमुन्नार ॥ (५०) लियज्ज़ियल्लाहु कुल-ल नफ्सिम्-मा क-स-बत् ط इन्नल्ला-ह सरीअुल्-हिसाब (५१) हाज़ा बलाग़ुल्लिन्नासि व लियुन्ज़रू बिही व लियअ-लमू अन्नमा हु-व इलाहुंव्वाहिदुंव-व लि-यज़्ज़क्क-र उलुल्-अल्बाब★(५२)

٢٨

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ
تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۝ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ
طَرْفُهُمْ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ۝ وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ
فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ
وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۝
وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ
فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ۝ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ
اللّٰهِ مَكْرُهُمْ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝ فَلَا تَحْسَبَنَّ
اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ يَوْمَ تُبَدَّلُ
الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝
وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ
قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَ
لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝

१५ सूरतुल् हिज्र ५४

(मक्की) इस सूर मे अ़रबी के २८०७ अक्षर, ६६३ शब्द, ९९ आयते और ६ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ्-लाम्-रा तिल-क आयातुल्-किताबि व क़ुर्आनिम्-मुबीन (१)

और (मोमिनो !) मत ख्याल करना कि ये जालिम जो अमल कर रहे हैं, खुदा उन से बे-खबर है। वह उन को उस दिन तक मुहलत दे रहा है, जबकि (दहशत की वजह से) आखें खुली की खुली रह जाएंगी, (४२) (और लोग) सर उठाए हुए (कियामत के मैदान की तरफ) दौड रहे होगे, उन की निगाहे उन की तरफ लौट न सकेगी और उन के दिल (मारे डर के) हवा हो रहे होगे। (४३) और लोगो को उस दिन से आगाह कर दो, जब उन पर अजाब आ जाएगा, तब जालिम लोग कहेगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमे थोडी सी मोहलत की मुद्दत अता कर, ताकि हम तेरी (तौहीद की) दावत कुबूल करे और (तेरे) पैगम्बरो के पीछे चले। (तो जवाब मिलेगा) क्या तुम पहले कस्मे नही खाया करते थे कि तुम को (उस हाल से जिस मे तुम हो) जवाल (और कियामत को आमाल का हिसाब) नही होगा। (४४) और जो लोग अपने आप पर जुल्म करते थे, तुम उन के मकानो मे रहते थे और तुम पर जाहिर हो चुका था कि हम ने उन लोगो के साथ किस तरह (का मामला) किया था और तुम्हारे (समझाने) के लिए मिसाले भी बयान कर दी थी। (४५) और उन्हो ने (बड़ी-बड़ी) तद्बीरे की और उन की (सब) तद्बीरे खुदा के यहा (लिखी हुई) है, गो वे तद्बीरे ऐसी (गजब की) थी कि उन से पहाड भी टल जाए। (४६) तो ऐसा ख्याल न करना कि खुदा ने जो अपने पैगम्बरो से वायदा किया है, उस के खिलाफ करेगा। बेशक खुदा जबरदस्त (और) बदला लेने वाला है। (४७) जिस दिन यह जमीन दूसरी जमीन से बदल दी जाएगी और आसमान भी (बदल दिए जाएगे) और सब लोग खुदा-ए-यगाना व जबरदस्त के सामने निकल खडे होगे। (४८) और उस दिन तुम गुनाहगारो को देखोगे कि जजीरो मे जकडे हुए है। (४९) उन के कुरते गधक के होगे और उन के मुहों को आग लिपट रही होगी। (५०) यह इस लिए कि खुदा हर शख्स को उस के आमाल का बदला दे, बेशक खुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (५१) यह (कुरआन) लोगो के नाम (खुदा का पैगाम) है, ताकि उन को उस से डराया जाए और ताकि वे जान ले कि वही अकेला माबूद है और ताकि अक्ल वाले नसीहत पकडे। (५२) ★

१५ सूरः हिज्र ५४

सूर हिज्र मक्की है और इस मे ९९ आयते और छ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ्-लाम्-रा, यह (खुदा की) किताब और रोशन कुरआन की आयते है। (१) किसी वक्त

★रु० ७/१९ आ ११

चौदहवां पारः रु-बमा

सूरतुल्-हिज्र आयत २ से ९९

रु-बमा य-वद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ कानू मुस्लिमीन (२) ज़र्हुम् यअ्कुलू व य-त-मत्तअ़ू व युल्हि-हिमुल्-अ-मलु फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (३) व मा अह्-लक्ना मिन् कर्यतिन् इल्ला व लहा किताबुम्-मअ्-लूम (४) मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्ख़िरून (५) व क़ालू या अय्युहल्लज़ी नुज़्ज़ि-ल अ़लैहिज़्-ज़िक्रु इन्न-क ल-मज्नून (६) लौ मा तअ्तीना बिल्मलाइकति इन् कुन-त मिनस्सादिक़ीन (७) मा नुनज़्ज़िलुल्-मलाइ-क-त इल्ला बिल्हक़्क़ि व मा कानू इज़म्मुन्ज़रीन (८) इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्नज़्-ज़िक-र व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (९) व ल-क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क फ़ी शि-यअ़िल्-अव्वलीन (१०) व मा यअ्तीहिम् मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (११) कज़ालि-क नस्लुकुहू फ़ी क़ुलूबिल्-मुज्रिमीन (१२) ला युअ्मिनू-न बिही व क़द् ख़-लत् सुन्नतुल्-अव्वलीन (१३)

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ۝ ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَ
يَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِن
قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَعْلُومٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَ
مَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ
لَمَجْنُونٌ ۝ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝
مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ ۝ إِنَّا نَحْنُ
نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي
شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝
كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ
خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا
فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ
مَسْحُورُونَ ۝ وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ۝
وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۝ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ
فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُبِينٌ ۝ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا
رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَوْزُونٍ ۝ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا
مَعَايِشَ وَمَنْ لَسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ۝ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا
خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَعْلُومٍ ۝ وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ

व लौ फ़-तह्ना अ़लैहिम् बाबम्-मिनस्समाइ फ़-ज़ल्लू फ़ीहि यअ्-रुजून (१४) लक़ालू इन्नमा सुक्किरत् अब्सारुना बल् नह्नु क़ौमुम्-मस्हूरून ★ (१५) व ल-क़द् ज-अ़ल्ना फ़िस्समाइ बुरूजंव्-व ज़य्यन्नाहा लिन्नाज़िरीन (१६) व हफ़िज़्नाहा मिन् कुल्लि शैतानिर्-रजीम (१७) इल्ला मनिस्त-र-क़स्सम-अ़ फ़-अत-ब-अ़हू शिहाबुम्-मुबीन (१८) वल्अर्-ज़ म-दद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि शैइम्-मौज़ून (१९) व ज-अ़ल्ना लकुम् फ़ीहा मआ़यि-श व मल्लस्तुम् लहू बिराज़िक़ीन (२०) व इम्मिन् शैइन् इल्ला अ़िन्दना ख़ज़ाइनुहू व मा नुनज़्ज़िलुहू इल्ला बि क-दरिम्-मअ्-लूम (२१)

★रु० १/१ आ १५

काफिर लोग आरजू करेंगे कि ऐ काश ! वे मुसलमान होते। (२) (ऐ मुहम्मद !) उन को उन के हाल पर रहने दो कि खा ले और फायदे उठा ले और (लम्बी) उम्मीद उन को (दुनिया मे) फसाए रहे। बहुत जल्द उन को (इस का अजाम) मालूम हो जाएगा। (३) और हम ने कोई बस्ती हलाक नही की, मगर उस का वक्त लिखा हुआ और तै था। (४) कोई जमाअत अपनी (वक्त की) मुद्दत से न आगे निकल सकती है, न पीछे रह सकती है। (५) और (काफिर) कहते है कि ऐ शख्स ! जिस पर नसीहत (की किताब) नाज़िल हुई है, तू तो दीवाना है। (६) अगर तू सच्चा है, तो हमारे पास फरिश्तो को क्यो नही ले आता ? (७) (कह दो) हम फरिश्तो को नाजिल नही किया करते, मगर हक के साथ और उस वक्त उन को मोहलत नही मिलती। (८) बेशक यह (किताब) नसीहत हम ही ने उतारी है और हम ही इस के निगेहबान है। (९) और हम ने तुम से पहले लोगो मे भी पैगम्बर भेजे थे। (१०) और उन के पास कोई पैगम्बर नही आता था, मगर वे उस का मज़ाक उडाते थे। (११) इसी तरह हम (इस झूठ और गुमराही) को गुमराहो के दिलो मे दाखिल कर देते हैं। (१२) सो वे इस पर ईमान नही लाते और पहलो का रवैया भी यही रहा है, (१३) और अगर हम आसमान का कोई दरवाज़ा खोल दे और वे उस मे चढने भी लगे, (१४) तो भी यही कहे कि हमारी आखें नशीली हो गयी हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है। (१५) ★

और हम ही ने आसमान मे बुर्ज बनाये और देखने वालो के लिए उस को सजा दिया। (१६) और हर शैतान, धुत्कारे हुए से उसे महफ़ूज़ कर दिया। (१७) हा, अगर कोई चोरी से सुनना चाहे, तो चमकता हुआ अगारा उस के पीछे लपकता है। (१८) और ज़मीन को भी हम ही ने फैलाया और उस पर पहाड़ (बना कर) रख दिए और उस मे हर एक सजीदा चीज उगायी। (१९) और हम ही ने तुम्हारे लिये और उन लोगो के लिए, जिन को तुम रोज़ी नही देते, उस मे रोज़ी के सामान पैदा किए। (२०) और हमारे यहां हर चीज के खजाने है और हम उन को मुनासिब मिक़्दार मे

★रु. १/१ आ १५

व अर्सल्नर्रिया-ह़ ल-वाकि-ह़ फ-अन्जलना मिनस्समाइ माअन् फ - अस्कैना कुमूहु ट व मा अन्तुम् लहू बिख़ाजिनीन (२२) व इन्ना ल - नह़नु नुह़यी व नुमीतु व नह़नुल्-वारिसून (२३) व ल - कद् अलिम्नल्-मुस्तक़्दिमी-न मिन्कुम् व ल-कद् अलिम्-नल्-मुस्तअ्-ख़िरीन (२४) व इन्-न रब्ब-क हु-व यह़्शुरुहुम् ط इन्नहू हकीमुन् अ़लीम ✱ (२५) व ल-कद् ख़-लक्नल्-इन्सा-न मिन् स़ल्सालिम्मिन् ह़ - म-इम्-मस्नून ट (२६) वल्जान् - न ख़-लक्नाहु मिन् कब्लु मिन्नारिस्-समूम (२७) व इज़् का-ल रब्बु-क लिलमलाइकति इन्नी ख़ालिकुम् - ब-श-रम्मिन् स़ल्स़ालिम् - मिन् ह़-म-इम्-मस्नून (२८) फइजा सव्वैतुहू व न-फ़ख़्तु फीहि मिर्रूह़ी फ-कअू लहू साजिदीन (२९) फ-स-ज-दल् - मलाइकतु कुल्लुहुम् अज्मअ़ून ⅃ (३०) इल्ला इब्ली-स ط अबा अय्यकू-न म-अस्-साजिदीन

فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ۝
وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ
مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ
حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ
مَسْنُونٍ ۝ وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السَّمُومِ ۝ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ
لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝
فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۝ فَسَجَدَ
الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى أَنْ يَكُونَ مَعَ
السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ۝
قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝
قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ
الدِّينِ ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِينَ ۝ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي
لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عِبَادَكَ
مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۝ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ۝ إِنَّ
عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ۝
وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ

(३१) का-ल या इब्लीसु माल-क अल्ला तकू-न म-अस्-साजिदीन (३२) का-ल लम् अ-कुल्लि-अस्जु-द लिब-शरित् ख-लक्तहू मिन् सल्सालिम् - मिन् ह़-म-इम्-मस्नून (३३) का-ल फख़्-रुज् मिन्हा फइन्न-क रजीमुव्- ⅃ (३४) व इन्-न अलैकल्-लअ्-न-त़ इला यौमिद्दीन (३५) का-ल रब्बि फ-अन्जिर्नी इला यौमि युब्-असून (३६) का-ल फइन्न-क मिनल्-मुन्जरीन ⅃ (३७) इला यौमिल्-वक़्तिल् - मअ्-लूम (३८) का-ल रब्बि बिमा अग्वैतनी लउजय्यिनन-न लहुम् फिल्अर्जि व ल-उग्वियन्नहुम् अज्-मईन ⅃ (३९) इल्ला अ़िबाद-क मिन्-हुमुल्-मुख़्-लसीन (४०) का-ल हाज़ा सिरातुन् अलय्-य मुस्तकीम (४१) इन्-न अिबादी लैं-स ल-क अलैहिम् सुल्तानुन् इल्ला मनित्तब-अ-क मिनल्-गावीन (४२) व इन्-न जहन्न-म लमौअिदुहुम् अज-मईन ۝ (४३) लहा सब्-अतु अब्वाबिन् ط लिकुल्लि बाबिम् - मिन्हुम् जुज्उम् - मक्सूम ★ (४४)

उतारते रहते है। (२१) और हम ही हवाए चलाते है (जो बादलो के पानी मे) भरी हुई (होती है) और हम ही आसमान से मेह बरसाते है और हम ही तुम को उस का पानी पिलाते है और तुम तो उस का खजाना नही रखते, (२२) और हम ही जिंदगी बख्शते और हम ही मौत देते है और हम ही सब के वारिस (मालिक) है, (२३) और जो लोग तुम मे पहले गुजर चुके हैं, हम को मालूम है और जो पीछे आने वाले है, वे भी हम को मालूम है, (२४) और तुम्हारा परवरदिगार (कियामत के दिन) उन सब को जमा करेगा, वह बडा जानने वाला (और) खबरदार है। (२५) ★

और हम ने इन्सानो को खनखनाते सडे हुए गारे से पैदा किया है, (२६) और जिन्नो को इन से भी पहले बे-धुए की आग से पैदा किया था, (२७) और तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तो से फरमाया कि मैं खनखनाते हुए सडे हुए गारे से एक बशर बनाने वाला हू। (२८) जब उस को (इसानी शक्ल मे) ठीक कर लू और उस मे अपनी (कीमती चीज यानी) रूह फूक दू, तो उस के आगे सज्दे मे गिर पडना। (२९) तो फरिश्ते तो सब के सब सज्दे मे गिर पडे। (३०) मगर शैतान कि उसने सज्दा करने वालो के साथ होने मे इंकार कर दिया, (३१) (खुदा ने) फरमाया कि इब्लीस तुझ को क्या हुआ कि कि तू सज्दा करने मे शामिल न हुआ। (३२) (उस ने) कहा, मै ऐसा नही हू कि इसान को, जिस को तू ने खनखनाते सडे हुए गारे से बनाया है, सज्दा करू। (३३) खुदा ने फरमाया, यहा से निकल जा, तू मर्दूद है। (३४) और तुझ पर कियामत के दिन तक लानत (बरसेगी)। (३५) (उस ने) कहा कि परवरदिगार! मुझे उस दिन तक मोहलत दे, जब लोग (मरने के बाद) जिदा किए जाएगे। (३६) फरमाया कि तुझे मोहलत दी जाती है। (३७) मुकर्रर वक्त (यानी कियामत) के दिन तक। (३८) (उस ने) कहा कि परवरदिगार! जैसा तू ने मुझे रास्ते से अलग किया है, मै भी ज़मीन मे लोगो के लिए (गुनाहो को) सजा कर दिखाऊगा और सब को बहकाऊगा। (३९) हा, उन मे जो तेरे मुख्लिस बन्दे है, (उन पर काबू चलना मुश्किल है)। (४०) (खुदा ने) फरमाया कि मुझ तक (पहुचने का) यही सीधा रास्ता है। (४१) जो मेरे (मुख्लिस) बन्दे हैं, उन पर तुझे कुछ कुदरत नही (कि उन को गुनाह मे डाल सके) हा, बद राहो मे से जो तेरे पीछे चल पडे। (४२) और उन सब के वायदे की जगह जहन्नम है। (४३) उस के सात दरवाजे है।[1] हर एक दरवाजे के लिए उन मे से जमाअते तक्सीम कर दी गयी है। (४४) ★

---

१ इब्ने अब्बास कहते है कि दरवाज़ो से मुराद तब्के है यानी दोज़ख के नीचे-ऊपर सात तब्के और मंज़िले हैं। पहला तब्का जहन्नम है, दूसरा लज़्ज़ा, तीसरा हुतमा, चौथा सओर, पाचवा सकर, छठा जहीम, सातवा हाविया। कतादा ने कहा कि ये दर्जे अमल के लिहाज़ मे है, मगर इसका इल्म खुदा ही को है कि किस तरह के अमल और अकीदे के लिए कौन-सा तब्का है।

इन्नल्मुत्तक़ी-न फी जन्नातिंव - व अ़ुयून ꞁ (४५) उद्खुलूहा बिसलामिन् आमिनीन (४६) व न-जअ्-ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् गिल्लिन् इख्-वानन् अला सुरुरिम्-मु-त-काबिलीन (४७) ला यमस्सुहुम् फीहा न-स्-बु व्-व मा हुम् मिन्हा बिमुख्रजीन (४८) नब्बिअ् अिबादी अन्नी अ-नल् - गफूरुर्रहीम (४९) व अन्-न अ़ज़ाबी हुवल्अ़ज़ाबुल्-अलीम (५०) व नब्बिअ्हुम् अन् जैफि इब्राहीम ▨ (५१) इज् द - खलू अलैहि फ-कालू सलामन् ꞁ का - ल इन्ना मिन्कुम् वजिलून (५२) कालू ला तौजल् इन्ना नुबश्शिरु - क बिगुलामिन् अलीम (५३) का-ल अ-बश्शर्तुमूनी अला अम्मस्सनियल् - कि-बरु फबि-म. तुबश्शिरून (५४) कालू बश्शर्ना-क बिल्हक्कि फला तकुम्मिनल्-कानितीन (५५) का-ल व मय्यक्नतु मिर्रह्मति रब्बिही इल्लज़्ज़ाल्लून (५६) का-ल फ मा खत्बुकुम् अय्युहल्-मुर्सलून (५७) कालू इन्ना उर्सिल्ना इला कौमिम् - मुज्रिमीन (५८) इल्ला आ-ल लूतिन् ꞁ इन्ना लमुनज्जूहुम् अज् - मईन (५९) इल्लम्-र-अ-तहू कद्दर्ना इन्नहा लमिनल्-गाबिरीन ✱ (६०) फ - लम्मा जा-अ आ-ल लूति-निल्-मुर्सलून (६१) का-ल इन्नकुम् कौमुम्-मुन्करून (६२) कालू बल् जिअ्ना-क बिमा कानू फीहि यम्तरून (६३) व अतैना-क बिल्हक्कि व इन्ना लसादिकून (६४) फ अस्रि बिअह्लि-क बिकित्अिम् मिनल्लैलि वत्तबिअ् अद्बारहुम् व ला यल्तफित् मिन्कुम् अ-ह-दुंव्वम्जू हैसु तुअ्-मरून (६५) व कजैना इलैहि जालिकल्-अम्-र अन्-न दाबि-र हाउलाइ मक्तूअुम् - मुस्बिहीन (६६) व जा-अ अह्लुल् - मदीनति यस्तब्शिरून (६७) का-ल इन् - न हाउलाइ ज़ैफी फ ला तफ़्ज़हून (६८)

٢١١

بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَّعُيُونٍ ﴿٤٥﴾
اُدْخُلُوهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ
اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ
مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِيْ اَنِّيْ اَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَ
اَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيمَ ﴿٥١﴾
اِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلٰمًا قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا
لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ اَبَشَّرْتُمُونِيْ عَلٰى اَنْ
مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾ قَالُوا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ
الْقٰنِطِينَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖ اِلَّا الضَّآلُّونَ ﴿٥٦﴾
قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾ قَالُوا اِنَّا اُرْسِلْنَا اِلٰى قَوْمٍ
مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾ اِلَّا اٰلَ لُوطٍ اِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ اَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ
قَدَّرْنَا اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوطِ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾
قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ ﴿٦٢﴾ قَالُوا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾
وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُونَ ﴿٦٤﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ
وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ﴿٦٥﴾
وَقَضَيْنَا اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ﴿٦٦﴾
وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا

▨ व लाज़िम ★ रु ४/४ आ १६

जो मुत्तकी है, बागो और चश्मो मे होगे। (४५) (उन से कहा जाएगा कि) उन मे सलामती (और सुकून) से दाखिल हो जाओ, (४६) और उन के दिलो मे जो कदूरत (गदगी) होगी, उसको हम निकाल (कर साफ कर) देगे, (गोया) भाई-भाई तख्तो पर एक-दूसरे के सामने बैठे हुए है। (४७) न उन को वहा कोई तक्लीफ पहुचेगी और न वे वहा से निकाले जाएगे। (४८) (ऐ पैगम्बर !) मेरे बन्दो को बता दो कि मैं बडा बख्शने वाला (और) मेहरबान हू। (४९) और यह कि मेरा अजाब भी दर्द देने वाला अजाब है। (५०) और उन को कोई इब्राहीम के मेहमानो के हालात सुना दो ▨ (५१) वह इब्राहीम के पास आए तो सलाम कहा, (उन्हो ने) कहा, हमे तो तुम से डर लगता है। (५२) (मेहमानो ने) कहा कि डरिये नही, हम आप को एक दानिशमद लडके की खुशखबरी देते है। (५३) (वह) बोले कि जब मुझे बुढापे ने आ पकडा, तो तुम खुशखबरी देने लगे। अब किस बात की खुशखबरी देते हो। (५४) (उन्हो ने) कहा कि हम आप को सच्ची खुश-खबरी देते है। आप मायूस न होजिए। (५५) (इब्राहीम ने) कहा कि खुदा की रहमत से (मैं मायूस क्यो होने लगा, इस से) मायूस होना गुमराहो का काम है। (५६) फिर कहने लगे कि फरिश्तो ! तुम्हे (और) क्या काम है ? (५७) (उन्हो ने) कहा कि हम एक गुनाहगार कौम की तरफ़ भेजे गये हैं (कि उस को अजाब करे), (५८) मगर लूत के घर वाले कि उन सब को हम बचा लेंगे। (५९) अल-बत्ता उन की औरत (कि) उस के लिए हम ने ठहरा दिया है- कि वह पीछे रह जाएगी। (६०) ★

फिर जब फरिश्ते लूत के घर गये, (६१) तो लूत ने कहा, तुम तो अनजान से लोग हो। (६२) वे बोले कि (नही), बल्कि हम आप के पास वह चीज ले कर आए है, जिस मे लोग शक करते थे।[1] (६३) और हम आप के पास यकीनी बात ले कर आए है और हम सच कहते है। (६४) तो आप कुछ रात रहे-से अपने घर वालो को ले निकले और खुद उन के पीछे चले और आप मे से कोई शख्स पीछे मुड कर न देखे और जहा आप को हुक्म हो, वहां चले जाइए। (६५) और हम ने लूत की तरफ वह्य भेजी कि इन लोगो की जड सुबह होते-होते काट दी जाएगी। (६६) और शहर वाले (लूत के पास) खुश-खुश (दौडे) आए। (६७) (लूत ने) कहा कि ये मेरे मेहरबान है, (कहीं

१ यानी हम ऊपर से आदमी नही, फरिश्ते हैं। कौम पर अजाब लाए हैं।

वत्तकुल्ला-ह व ला तुख्ज़ून (६९) क़ालू अ-व लम् नन्-ह-क अनिल्-आलमीन (७०) का-ल हाउलाइ बनाती इन् कुन्तुम् फाअिलीन ط (७१) ल-अम्रु-क इन्नहुम् लफ़ी सक-रतिहिम् यअ्-महून (७२) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुस्सैहतु मुश्रिक़ीन ﻻ (७३) फ-ज-अल्ना आलियहा साफिलहा व अम्तर्ना अलैहिम् हिजा-र-तम् - मिन् सिज्जील ط (७४) इन्-न फी ज़ालि-क लआयातिल्लिल्-मु-त-वस्सिमीन (७५) व इन्नहा लबिसबीलिम्-मुक़ीम (७६) इन्-न फी ज़ालि-क ल-आयतल्लिल् - मुअ्मिनीन ط (७७) व इन् का-न अस्हाबुल्-ऐकति ल-ज़ालिमीन ﻻ (७८) फ़न्-त-क़म्ना मिन्हुम् ▨ व इन्नहुमा लबिइमामिम् - मुबीन ط ★ (७९) व ल-कद् कज्ज-ब अस्हाबुल् - हिज्रिल्-मुर्सलीन ﻻ (८०) व आतैनाहुम् ﻻ आयातिना फ-कानू अन्हा मुअ् - रिज़ीन (८१) व कानू यन्हितू-न मिनल्जिबालि बुयूतन् आमिनीन (८२) फ-अ-ख़-ज़त्-हुमुस्सैहतु मुस्बिहीन ﻻ (८३) फ़मा अग्ना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून ط (८४) व मा ख़-लक़्नस्-समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक्कि ط व इन्नस्सा-अ-त लआतियतुन् फ़स्फहिस्-सफ़्हल्-जमील (८५) इन्-न रब्ब-क हुवल्-ख़ल्लाकुल्-अलीम (८६) व ल-कद् आतैना-क सब्अम्मिनल्-मसानी वल्-कुर्आनल्-अज़ीम (८७) ला तमुद्दन्-न अैनै-क इला मा मत्तअ्-ना बिही अज्वाजम्-मिन्हुम् व ला तह्ज़न् अलैहिम् वख़्फिज़् जना-ह-क लिल्-मुअ्मिनीन (८८) व कुल् इन्नी अ-नन्नज़ीरुल् - मुबीन ج (८९) कमा अन्ज़लना अ-लल्-मुक्तसिमीन ﻻ (९०) अल्लज़ी-न ज-अ - लुल् - क़ुर्आ - न अिज़ी-न (९१) फ़-व रब्बि-क ल-नस्अ-लन्नहुम् अज्मअीन ﻻ (९२) अम्मा कानू यअ्-मलून ● (९३) फ़स्दअ्-बिमा तुअ्मरु व अअ्-रिज़् अनिल्-मुश्रिकीन (९४)

الحجر ١٥ ٢١٢ ربما ١٤

تفضحون ۝ واتقوا الله ولا تخزون ۝ قالوا اولم ننهك عن
العلمين ۝ قال هؤلاء بنتي ان كنتم فعلين ۝ لعمرك انهم
لفي سكرتهم يعمهون ۝ فاخذتهم الصيحة مشرقين ۝ فجعلنا
عاليها سافلها وامطرنا عليهم حجارة من سجيل ۝ ان في
ذلك لايت للمتوسمين ۝ وانها لبسبيل مقيم ۝ ان في
ذلك لاية للمؤمنين ۝ وان كان اصحب الايكة لظلمين ۝
فانتقمنا منهم وانهما لبامام مبين ۝ ولقد كذب اصحب
الحجر المرسلين ۝ واتينهم ايتنا فكانوا عنها معرضين ۝ و
كانوا ينحتون من الجبال بيوتا امنين ۝ فاخذتهم الصيحة
مصبحين ۝ فما اغنى عنهم ما كانوا يكسبون ۝ وما خلقنا
السموت والارض وما بينهما الا بالحق وان الساعة لاتية
فاصفح الصفح الجميل ۝ ان ربك هو الخلق العليم ۝ ولقد
اتينك سبعا من المثاني والقران العظيم ۝ لا تمدن عينيك
الى ما متعنا به ازواجا منهم ولا تحزن عليهم واخفض
جناحك للمؤمنين ۝ وقل اني انا النذير المبين ۝ كما
انزلنا على المقتسمين ۝ الذين جعلوا القران عضين ۝
فوربك لنسئلنهم اجمعين ۝ عما كانوا يعملون ۝ فاصدع بما

▨ व लाज़िम ★ रु ५/५ आ १९ ● रुब्अ १/४

इन के बारे मे) मुझे रुसवा न करना। (६८) और खुदा से डरो और मेरी बे-आबरुई न कीजियो। (६९) वे बोले, क्या हम ने तुम को सारे जहान (की हिमायत व तरफदारी) से मना नही किया ? (७०) (उन्हो ने) कहा कि अगर तुम्हे करना ही है, तो यह मेरी (कौम की) लडकिया है, (इन से शादी कर लो।) (७१) (ऐ मुहम्मद !) तुम्हारी जान की कसम ! वे अपनी मस्ती मे मदहोश (हो रहे) थे। (७२) सो उन को सूरज निकलते-निकलते चिंघाड ने आ पकडा। (७३) और हम ने उस (शहर) को (उलट कर) नीचे-ऊपर कर दिया और उन पर खगर की पथरिया बरसायी। (७४) बेशक इस (किस्से) मे सूझ-बूझ वालो के लिए निशानी है। (७५) और वह (शहर) अब तक सीधे रास्ते पर (मौजूद) है।[1] (७६) बेशक इस मे ईमान लाने वालो के लिए निशानी है। (७७) और बन के रहने वाले (यानी शुऐब की कौम के लोग) भी गुनाहगार थे। (७८) तो हम ने उन से भी बदला लिया और ये दोनो शहर खुले रास्ते पर (मौजूद) है। (७९)★

और हिज्र (की वादी) के रहने वालो ने भी पैगम्बरो को झुठलाया।[2] (८०) हम ने उन को अपनी निशानिया दी और वे उन से मुह फेरते रहे। (८१) और वे पहाडो को काट-छाट कर घर बनाते थे (कि) अम्न (व इत्मीनान) से रहेगे। (८२) तो चीख ने उन को सुबह होते-होते आ पकडा। (८३) और जो काम वे करते थे, वे उन के कुछ भी काम न आये। (८४) और हम ने आसमानों और जमीन को और जो (मख्लूकात) उन मे है, उस को तद्बीर के साथ पैदा किया है और कियामत तो जरूर आ कर रहेगी, तो तुम (उन लोगो से) अच्छी तरह से दर-गुजर करो। (८५) कुछ शक नही कि तुम्हारा परवरदिगार ही (सब कुछ) पैदा करने वाला (और) जानने वाला है। (८६) और हम ने तुम को सात (आयते), जो (नमाज मे) दोहरा कर पढी जाती है (यानी सूर. अल-हम्दु) और अज्मत वाला कुरआन अता फरमाया है। (८७) और हम ने काफिरो की कई जमाअतो को, जो (दुनिया के फायदो से) नवाजा है, तुम उन की तरफ (रग्बत से) आख उठा कर न देखना और न उनके हाल पर गम करना और मोमिनो से खातिर और नवाजो मे पेश आना, (८८) और कह दो कि मैं तो एलानिया डर सुनाने वाला हू, (८९) (और हम इन काफिरो पर इसी तरह अजाब नाजिल करेगे), जिस तरह उन लोगो पर नाज़िल किया, जिन्होने तक्सीम कर दिया। (९०) यानी कुरआन को (कुछ मानने और कुछ न मानने से) टुकडे-टुकडे कर डाला। (९१) तुम्हारे परवरदिगार की कसम ! हम उन से जरूर पूछ-ताछ करेगे, (९२) उन कामो की, जो वे करते रहे (९३)● पस जो हुक्म तुम को (खुदा की तरफ से) मिला है वह (लोगो को) सुना दो और

१ मक्का से शाम को जाते हुए वह बस्ती राह पर नजर आती थी।

२ हिज्र के रहने वालो से मुराद समूद की कौम है। हिज्र मदीने और शाम के दर्मियान एक बस्ती थी। समूद की कौम वहा रहती थी।

इन्ना कफ़ैनाकल् - मुस्तह्ज़िईन ∥ (९५) अ्ल्लज़ी-न यज-अलू-न म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र ⁄ फ़सौ-फ़ यअ-लमून (९६) व ल-क़द् नअ्-लमु अन्न-क यज़ीक़ु सद्रु-क बिमा यक़ूलून ∥ (९७) फ-सब्बिह बिहम्दि रब्बि-क व कुम्-मिनस्साजिदीन ∥ (९८) वअ्-बुद् रब्ब-क हत्ता यअ्ति-य-कल्-यक़ीन ★ (९९)

१६ सूरतुन्नह्-लि ७०

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ७९७४ अक्षर, १८७१ शब्द, १२८ आयतें और १६ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

ربما ٢١٣ النحل

تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِينَ ۝
الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ نَعْلَمُ
أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ
السّٰجِدِينَ ۝ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝
سُورَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
أَتٰى أَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ يُنَزِّلُ
الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلٰى مَنْ يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا
أَنَّهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا فَاتَّقُونِ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ
تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ
مُبِينٌ ۝ وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا
تَأْكُلُونَ ۝ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۝
وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلٰى بَلَدٍ لَمْ تَكُونُوا بٰلِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ
إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا
وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا
جَآئِرٌ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ هُوَ الَّذِيٓ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝ يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ

अता अम्रुल्लाहि फ ला तस्तअ्-जिलूहु ⁄ सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून (१) युनज्जिलुल् - मलाइ - क-त बिर्रूहि मिन् अम्रिही अला मय्यशाउ मिन् अिबादिही अन् अन्जिरू अन्नहू ला इला-ह इल्ला अ-न फत्तक़ून (२) ख़-ल-क़स्-समावाति वल्अर् - ज बिल्हक़्क़ि ⁄ तआला अम्मा युश्रिकून (३) ख़-ल-क़ल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् फ़इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (४) वल्-अन्आ-म ख़-ल-क़हा ⁄ लकुम् फ़ीहा दिफ्उंव्-व मनाफ़िअु व मिन्हा तअ्-कुलून ⁄ (५) व लकुम् फ़ीहा जमालुन् ही-न तुरीहू-न व ही-न तस्रहून ⁄ (६) व तह्मिलु अस्क़ालकुम् इला ब-लदिल्लम् तकूनू बालिगीहि इल्ला बिशिक़्क़िल्-अन्फ़ुसि ⁄ इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम ∥ (७) वल्ख़ै-ल वल्बिग़ा-ल वल्हमी-र लितर्कबूहा व ज़ी-न - तन् ⁄ व यख़्लुक़ु मा ला तअ् - लमून (८) व अ् - लल्लाहि क़स्दुस्सबीलि व मिन्हा जाइरुन् ⁄ व लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्-मअीन ★ (९) हुवल्लज़ी अन्ज-ल मिनस्-समाइ माअल्लकुम् मिन्हु शराबुंव्-व मिन्हु श-जरुन् फ़ीहि तुसीमून (१०)
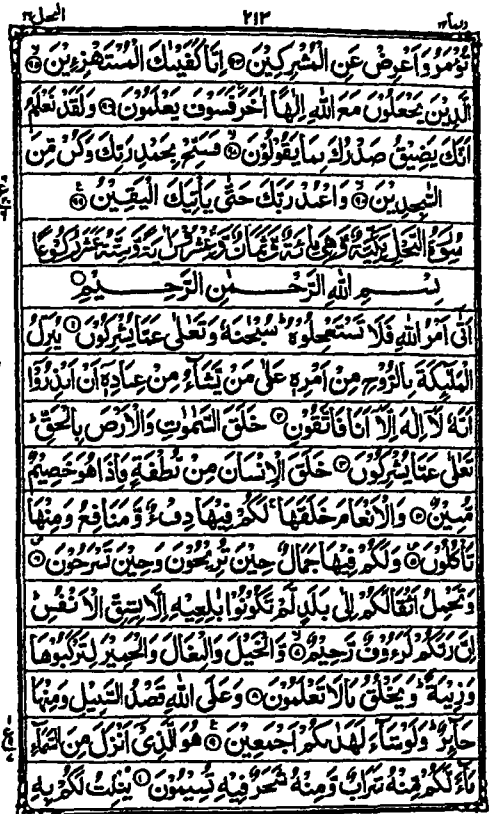
मुश्रिको का (जरा) ख्याल न करो। (६४) हम तुम्हे उन लोगो की (बुराई) से बचाने के लिए जो तुम से मजाक करते है, काफी है। (६५) जो खुदा के साथ और माबूद करार देते है, सो बहुत जल्द उन को (इन बातो का अजाम) मालूम हो जाएगा। (६६) और हम जानते है कि उन की बातो से तुम्हारा दिल तग होता है, (६७) तो तुम अपने परवरदिगार की तस्बीह कहते और (उस की) खूबिया बयान करते रहो और सज्दा करने वालो मे दाखिल रहो। (६८) और अपने परवरदिगार की इबादत किये जाओ, यहा तक कि तुम्हारी मौत (का वक्त) आ जाए। (६६) ★

१६ सूरः नह्ल ७०

सूर नह्ल मक्की है और इस मे १२८ आयते और सोलह रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

खुदा का हुक्म (यानी अजाब गोया) आ ही पहुचा तो (काफिरो!) इस के लिए जल्दी मत करो। ये लोग जो (खुदा का) शरीक बनाते है, वह इस से पाक और बाला-तर है। (१) वही फरिश्तो को पैगाम दे कर अपने हुक्म से अपने बन्दो मे से, जिस के पास चाहता है, भेजता है कि (लोगो को) बता दो कि मेरे सिवा कोई माबूद नही, तो मुझी से डरो। (२) उसी ने आसमानो और जमीन को हिक्मत के साथ पैदा किया, उस की जात इन (काफिरो) के शिर्क से ऊची है। (३) उसी ने इंसान को नुत्फे से बनाया, मगर वह उस (पैदा करने वाले) के बारे मे एलानिया झगडने लगा, (४) और चारपायो को भी उसी ने पैदा किया, उस मे तुम्हारे लिए जडावल[1] और बहुत से फायदे है और इन मे से कुछ को तुम खाते भी हो। (५) और जब शाम को उन्हे (जगल से) लाते हो और जब सुबह को (जगल) चराने ले जाते हो, तो उन मे तुम्हारी इज्जत व शान है। (६) और (दूर-दूर के) इन शहरो मे जहा तुम मशक्कत भरी तक्लीफ के बगैर नही पहुच सकते, वे तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते है। कुछ शक नही कि तुम्हारा परवरदिगार निहायत शफ्कत (मुहब्बत) वाला मेहरबान है। (७) और उसी ने घोड़े और खच्चर और गधे पैदा किये ताकि तुम उन पर सवार हो और (वह तुम्हारे लिए) रौनक व जीनत (भी है) और वह (और चीजे भी) पैदा करता है, जिन की तुम को खबर नही। (८) और सीधा रास्ता तो खुदा तक जा पहुचता है और कुछ रास्ते टेढे है, (वे उस तक नही पहुचते) और अगर वह चाहता तो तुम सब को सीधे रास्ते पर चला देता। (६) ★

वही तो है जिस ने आसमान से पानी बरसाया, जिसे तुम पीते हो और उस से पेड़ भी (हरे-भरे होते है), जिन मे तुम अपने चारपायो को चराते हो। (१०) उसी पानी से वह तुम्हारे लिए

---

१ जाड़े के सामान को जडावल कहते है।

★रु ६/६ आ २० ★रु १/७ आ ६

युम्बितु लकुम् बिहिज्-जर्-अ वज्जैतू-न वन्नख़ी-ल वल्-अअ्-ना-ब व मिन् कुल्लिस्स-मराति ط इन्-न फी जालि-क ल-आ-यतल्-लिकौमिय्य-त-फक्करून (११) व सख़्ख़-र लकुमुल्लै-ल वन्नहा-र ॥ वश्शम्-स वल्क-म-र ط वन्नुजूमु मुसख़्ख़रातुम्-बि-अमरिही ط इन् - न फ़ी जालि - क लआयातिल् - लिकौमिय्यअ् - किलून॥

(१२) व मा ज़-र-अ लकुम् फिल्अर्जि मुख़्तलिफन् अल्वानुहू ط इन्-न फी जालि-क ल-आयतल् - लिकौमिय्यज्जक्करून (१३) व हुवल्लजी सख़्ख़-रल्-बह्-र लि-तअ्कुलू मिन्हु लह्-मन् तरिय्यव्-व तस्तख़्रिजू मिन्हु हिल्-य-तन् तल्बसूनहा ج व त-रल्फुल् - क मवाखि-र फीहि व लितब्तग़ू मिन् फज्लिही व ल-अल्लकुम् तश्कुरून (१४) व अल्का फिल्अर्जि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम् व अन्हारव्-व सुबुलल्-ल-अल्लकुम् तह् - तदून ॥ (१५) व अलामातिन् ط व बिन्नज्मि हुम् यह्तदून (१६) अ-फ-मय्यख़्लुकु क-मल्ला

الزرع والزيتون والنخيل والاعناب ومن كل الثمرات ان في
ذلك لاية لقوم يتفكرون ۝ وسخر لكم اليل والنهار والشمس
والقمر والنجوم مسخرت بامره ان في ذلك لايت لقوم
يعقلون ۝ وما ذرا لكم في الارض مختلفا الوانه ان في ذلك
لاية لقوم يذكرون ۝ وهو الذي سخر البحر لتاكلوا منه لحما
طريا وتستخرجوا منه حلية تلبسونها وترى الفلك مواخر
فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون ۝ والقى في الارض
رواسي ان تميد بكم وانهرا وسبلا لعلكم تهتدون ۝ وعلمت
وبالنجم هم يهتدون ۝ افمن يخلق كمن لا يخلق افلا
تذكرون ۝ وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها ان الله لغفور
رحيم ۝ والله يعلم ما تسرون وما تعلنون ۝ والذين يدعون
من دون الله لا يخلقون شيئا وهم يخلقون ۝ اموات غير
احياء وما يشعرون ايان يبعثون ۝ الهكم اله واحد
فالذين لا يؤمنون بالاخرة قلوبهم منكرة وهم مستكبرون ۝
لا جرم ان الله يعلم ما يسرون وما يعلنون انه لا يحب
المستكبرين ۝ واذا قيل لهم ماذا انزل ربكم قالوا اساطير
الاولين ۝ ليحملوا اوزارهم كاملة يوم القيمة ومن اوزار

यख़्लुकु ط अ-फला त-ज़क्करून (१७) व इन् त-अुद्दू निअ्-म-तल्लाहि ला तुह्सूहा ط इन्नल्ला-ह ल-गफूरुर्-रहीम (१८) वल्लाहु यअ्-लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ्-लिनून (१९) वल्लजी-न यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यख़्लुकू-न शैअव्-व हुम् युख़्लकून ط (२०) अम्वातुन् गैरु अह्याइन् ج व मा यश्अुरू - न॥ अय्या - न युब्असून ★ (२१) इलाहुकुम् इलाहुव्वाहिदुन् ج फल्लजी - न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति कुलूबुहुम् मुन्कि-रतुव्-व हुम् मुस्तक्बिरून (२२) ला ज-र-म अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्-लिनू-न ط इन्नहू ला- युहिब्बुल्-मुस्तक्बिरीन (२३) व इज़ा की-ल लहुम् माज़ा अन्-ज - ल रब्बुकुम्॥ कालू असातीरुल् - अव्वलीन ॥ (२४) लियह्मिलू औजारहुम् कामि-ल - तंय्यौमल् - कियामति ॥ व मिन् औजारिल्लजी - न युजिल्लूनहुम् बिगैरि अिल्मिन् ط अला सा - अ मा यजिरून ★ (२५)

★रु २/८ आ १२ ★रु ३/९ आ ४

खेती और जैतून और खजूर और अगूर (और अनगिनत पेड) उगाता है और हर तरह के फल (पैदा करता है), और गौर करने वालो के लिए इस मे (अल्लाह की कुदरत की वडी) निशानी है। (११) और उसी ने तुम्हारे लिए रात और दिन और सूरज और चाद को काम मे लगाया और उमी के हुक्म से सितारे भी काम मे लगे हुए है, समझने वालो के लिए, इस मे (खुदा की कुदरत की वहुत सी) निशानिया है। (१२) और जो तरह-तरह के रगो की चीज़े उस ने ज़मीन मे पैदा की, (सब तुम्हारे फ़रमान के तहत कर दी), नसीहत पकड़ने वालो के लिए इस मे निशानी है। (१३) और वही तो है, जिस ने दरिया को तुम्हारे अख्तियार मे किया ताकि उस मे से ताज़ा गोश्त खाओ और उस से ज़ेवर (वगैरह) निकालो, जिसे तुम पहनते हो और तुम देखते हो कि कश्तिया दरिया मे पानी को फाडती चली जाती है और इस लिए भी (दरिया को तुम्हारे अख्तियार मे किया) कि तुम खुदा के फज्ल से रोजी तलाश करो और ताकि उस का शुक्र अदा करो। (१४) और उसी ने जमीन पर पहाड़ (बना कर) रख दिए कि तुम को ले कर कही झुक न जाए और नहरे और रास्ते वना दिए ताकि एक जगह से दूसरी जगह तक (आसानी से) जा सको। (१५) और (रास्तो मे) निशानात वना दिए और लोग सितारो से भी रास्ते मालूम करते है। (१६) तो जो (इतनी मख्लू-कात) पैदा करे, क्या वह ऐसा है, जो कुछ भी पैदा न कर सके ? तो फिर तुम गौर क्यो नही करते ? (१७) और अगर तुम खुदा की नेमतो को गिनना चाहो, तो गिन न सको। वेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (१८) और जो कुछ तुम छिपाते और जो कुछ जाहिर करते हो, सव खुदा जानता है। (१९) और जिन लोगो को ये खुदा के सिवा पुकारते हैं, वे कोई चीज़ भी तो नही वना सकते, बल्कि खुद उन को और वनाते है। (२०) (वे) लाशे है, वे-जान, उन को यह भी तो मालूम नही कि उठाए कब जाएगे। (२१) ★

तुम्हारा माबूद तो अकेला खुदा है, तो जो आखिरत पर ईमान नही रखते, उन के दिल इकार कर रहे है और वे सर-कश हो रहे है। (२२) ये जो कुछ छिपाते है और जो ज़ाहिर करते हैं, खुदा जरूर उस को जानता है। वह सर-कशी को हरगिज़ पसद नहीं करता। (२३) और जव इन (काफिरो से) कहा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या उतारा है, तो कहते है कि (वे तो) पहले लोगो की हिकायते है। (२४) (ऐ पैगम्बर ! उन को बकने दो) ये कियामत के दिन अपने (आमाल के) पूरे वोझ भी उठाएगे और जिन को यह वे-तह्कीक गुमराह करते है, उन के बोझ भी (उठाएगे)। सुन रखो कि जो बोझ ये उठा रहे है, बुरे है। (२५) ★

★रु २/८ आ १२ ★रु ३/९ आ ४

क़द् म-क-रल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अ-तल्लाहु बुन्यानहुम् मिनल्-कवाअिदि फ़-ख़र्-र अ़लैहिमुस्सक़्फ़ु मिन् फ़ौक़िहिम् व अताहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून (२६) सुम्-म यौमल्क़ियामति युख़्ज़ीहिम् व यक़ूलु ऐ-न शुरकाइयल्-लज़ी-न कुन्तुम् तुशाक़्क़ू-न फ़ीहिम् ط क़ालल्लज़ी - न ऊतुल्-अिल्-म इन्नल्-ख़िज़्यल्-यौ-म वस्सू - अ अ़-लल्-काफ़िरीन ﻻ (२७) अ़ल्लज़ी - न त - तवफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइकतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् ص फ़-अल्कवुस्स-ल-म मा कुन्ना नअ्-मलु मिन् सूइन् ط बला इन्नल्ला - ह अलीमुम् - बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (२८) फद्ख़ुलू अब्वा-ब ज-हन्न-म ख़ालिदी - न फ़ीहा ط फ़-लबिअ्-स मस्वल् मु-त-कब्बिरीन (२९) व क़ी-ल लिल्लज़ीनत्तक़ौ माज़ा अन्ज-ल रब्बुकुम् ط क़ालू ख़ैरन् ط लिल्लज़ी - न अह्सनू फ़ी हाज़िहिद् - दुन्या ह-स-नतुन् ط व ल-दारुल्-आख़िरति ख़ैरुन् ط व लनिअ्-म दारुल्-मुत्तक़ीन ﻻ (३०) जन्नातु अद्निय्यद्ख़ुलूनहा तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारु लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ-न ط कज़ालि - क यज्ज़िल्लाहुल् - मुत्तक़ीन (३१) अ़ल्लज़ी-न त-त-वफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइकतु तय्यिबी-न ﻻ यक़ूलू-न सलामुन् अलैकुमुद्ख़ुलुल् - जन्न - त बिमा कुन्तुम् तअ् - मलून (३२) हल् यन्ज़ुरू - न इल्ला अन् तअ्तियहुमुल् - मलाइकतु औ यअ्ति - य अम्रु रब्बि-क ط कज़ालि-क फ़-अ-लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ط व मा ज़-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (३३) फ़-असाबहुम् सय्यिआतु मा अमिलू व हा - क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (३४)

٢١٥

الَّذِينَ يُضِلُّونَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُم مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ
مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تُشَاقُّونَ
فِيهِمْ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾
الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ فَأَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ
مِن سُوءٍ بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوا أَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾ وَقِيلَ لِلَّذِينَ
اتَّقَوْا مَاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا خَيْرًا لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ
الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾ جَنَّاتُ
عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ
كَذَٰلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾ الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ
يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾ هَلْ
يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ كَذَٰلِكَ فَعَلَ
الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِن

★रु. ४/१० आ ६

इन से पहले लोगो ने भी (ऐसी ही) मक्कारिया की थी, तो खुदा (का हुक्म) उन की इमारत के स्तूनो पर आ पहुचा और छत उन पर उन के ऊपर से गिर पडी। और (ऐसी तरफ से) उन पर अजाब आ वाकेअ हुआ, जहा से उन को ख्याल भी न था। (२६) फिर वह उन को कियामत के दिन भी जलील करेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक कहा है, जिन के बारे मे तुम झगड़ा करते थे ? जिन लोगो को इल्म दिया गया था, वे कहेगे कि आज काफिरो की रुसवाई और बुराई है। (२७) (उन का हाल यह है कि) जब फ़रिश्ते उन की रूहे कब्ज करने लगते है (और ये) अपने ही हक मे जुल्म करने वाले (होते है) तो इताअतगुजार व फरमांबरदार हो जाते है (और कहते है) कि हम कोई बुरा काम नही करते थे। हा, जो कुछ तुम किया करते थे, खुदा खूब जानता है। (२८) सो दोज़ख के दरवाजो मे दाखिल हो जाओ, हमेशा उस मे रहोगे, अब तकब्बुर (घमंड) करने वालो का बुरा ठिकाना है। (२९) और (जब) परहेज़गारो से पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है, तो कहते है कि बेहतरीन (कलाम)। जो लोग भले है, उन के लिए इस दुनिया मे भी भलाई है और आखिरत का घर तो बहुत अच्छा है और परहेज़गारों का घर बहुत खूब है। (३०) (वह) हमेशा के बहिश्त (है) जिन मे वे दाखिल होगे, उन के नीचे नहरे बह रही है वहा जो चाहेगे, उन के लिए मयस्सर होगा। खुदा परहेजगारो को ऐसा ही बदला देता है। (३१) (उन की हालत यह है कि) जब फरिश्ते उन की जाने निकालने लगते है और ये (कुफ्र व शिर्क से) पाक होते है, तो "सलामुन अलैकुम" कहते हैं (और कहते है कि) जो अमल तुम किया करते थे, उन के बदले मे बहिश्त मे दाखिल हो जाओ। (३२) क्या ये (काफिर) इस बात के इन्तिज़ार मे है कि फरिश्ते उन के पास (जान निकालने) आए या तुम्हारे परवदिगार का हुक्म (अज़ाब का) आ पहुचे। इसी तरह उन लोगो ने किया था जो उन से पहले थे और खुदा ने उन पर जुल्म नही किया, बल्कि वे खुद अपने आप पर जुल्म करते थे। (३३) तो उन के आमाल के बुरे बदले मिले और जिस चीज के साथ वे ठट्ठे किया करते थे, उस ने उन को (हर तरफ से) घेर लिया। (३४) ★

★रु. ४/१० आ ६

व क़ालल्लज़ी-न अश्रकू लौ शाअल्लाहु मा अ-बद्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन् नह्नु व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन् ط कज़ालि-क फ़-अ़-लल्लज़ी - न मिन् क़ब्लिहिम् ج फ - हल् अ-लर्रुसुलि इल्लल् - बलाग़ुल्-मुबीन (३५) व ल-क़द् ब-अ़स्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिर्रसूलन् अनिअ़-बुदुल्ला-ह वज्तनिबुत् - ताग़ू - त ج फ़मिन्हुम् मन् ह - दल्लाहु व मिन्हुम् मन् हक़्क़त् अ़लैहिज़्ज़लालतु ط फ़सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्-मुकज़्ज़िबीन (३६) इन् तह्रिस् अ़ला हुदाहुम् फ़-इन्नल्ला-ह ला यह्दी मय्युज़िल्लु व मा लहुम् मिन्नासिरीन (३७) व अक़्समू बिल्लाहि जह् - द ऐमानिहिम् ؕ ला यब्अ़सुल्लाहु मय्यमूतु ط बला वअ़्-दन् अ़लैहि हक़्क़ंव्-व लाकिन - न अक्सरन्नासि ला यअ़्-लमून ؕ (३८) लियुबय्यि-न लहुमुल्लज़ी यख़्तलिफ़ू-न फ़ीहि व लियअ़्-ल-मल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नहुम् कानू काज़िबीन (३९) इन्नमा क़ौलुना लिशैइन् इज़ा अ-रद्नाहु अन् नक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून ★ (४०) वल्लज़ी-न हाजरू फ़िल्लाहि मिम्बअ़्-दि मा ज़ुलिमू लनुबव्विअन्नहुम् फ़िद्दुन्या ह-स-न - तन् ط व ल - अज्रुल् - आख़िरति अक्बरु ▓ लौ कानू यअ़् - लमून ؕ (४१) अल्लज़ी-न स-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (४२) व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन्नूही इलैहिम् फ़स्-अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ़्-लमून ؕ (४३) बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि ط व अन्ज़ल्ना इलैकज़्ज़िक-र लितुबय्यि-न लिन्नासि मा नुज़्ज़ि-ल इलैहिम् व ल-अ़ल्लहुम् य-त-फ़क्करून ● (४४) अ-फ़-अमिनल्लज़ी - न म-करुस्सय्यिआति अंय्यख़्सिफ़ल्लाहु बिहिमुल्-अर्-ज़ औ यअ्ति-य-हुमुल् - अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अ़ुरून ؕ (४५)

دونه من شيء نحن ولا اباؤنا ولا حرمنا من دونه من
شيء كذلك فعل الذين من قبلهم فهل على الرسل الا
البلغ المبين ۝ ولقد بعثنا في كل امة رسولا ان اعبدوا الله
واجتنبوا الطاغوت فمنهم من هدى الله ومنهم من حقت
عليه الضللة فسيروا في الارض فانظروا كيف كان عاقبة
المكذبين ۝ ان تحرص على هدىهم فان الله لا يهدي من
يضل وما لهم من نصرين ۝ واقسموا بالله جهد ايمانهم
لا يبعث الله من يموت بلى وعدا عليه حقا ولكن اكثر الناس
لا يعلمون ۝ ليبين لهم الذي يختلفون فيه وليعلم الذين
كفروا انهم كانوا كذبين ۝ انما قولنا لشيء اذا اردنه ان
نقول له كن فيكون ۝ والذين هاجروا في الله من بعد ما
ظلموا لنبوئنهم في الدنيا حسنة ولاجر الاخرة اكبر لو
كانوا يعلمون ۝ الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ۝ وما
ارسلنا من قبلك الا رجالا نوحي اليهم فسئلوا اهل الذكر ان
كنتم لا تعلمون ۝ بالبينت والزبر وانزلنا اليك الذكر لتبين
للناس ما نزل اليهم ولعلهم يتفكرون ۝ افامن الذين مكروا
السيات ان يخسف الله بهم الارض او ياتيهم العذاب من

और मुश्रिक कहते है कि अगर खुदा चाहता तो न हम ही उस के सिवा किसी चीज को पूजते और न हमारे बडे ही (पूजते) और न उस के (फरमान के) बगैर हम किसी चीज़ को हराम ठहराते। (ऐ पैगम्बर !) इसी तरह इन से अगले लोगो ने किया था, तो पैगम्बरो के जिम्मे (खुदा के हुक्मो को) खोल कर पहुचा देने के सिवा और कुछ नही। (३५) और हम ने हर जमाअत मे पैगम्बर भेजा कि खुदा ही की इबादत करो और बुतो (की पूजा करने) से बचो, तो उन मे कुछ ऐसे है, जिन को खुदा ने हिदायत दी और कुछ ऐसे है, जिन पर गुमराही साबित हुई, सो जमीन पर चल-फिर कर देख लो कि झुठलाने वालो का अंजाम कैसा हुआ। (३६) अगर तुम इन (काफिरो) को हिदायत के लिए ललचाओ, तो जिस को खुदा गुमराह कर देता है, उस को हिदायत नही दिया करता और ऐसे लोगो का कोई मददगार भी नही होता। (३७) और ये खुदा की सख्त-सख्त कस्मे खाते है कि जो मर जाता है, खुदा उसे (कियामत के दिन कब्र से) नही उठाएगा। हरगिज़ नही ! यह (खुदा का वायदा) सच्चा है और इस का पूरा करना उसे जरूर है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते, (३८) ताकि जिन बातो मे ये इख्तिलाफ करते है, वह उन पर जाहिर कर दे और इस लिए कि काफिर जान ले कि वे झूठे थे। (३९) जब हम किसी चीज का इरादा करते है तो हमारी बात यही है कि उस को कह देते है कि "हो जा" तो वह हो जाती है। (४०)★

और जिन लोगो ने जुल्म सहने के बाद खुदा के लिए वतन छोडा, हम उन को दुनिया मे अच्छा ठिकाना देंगे और आखिरत का बदला तो बहुत बडा है ▨ काश ! वे (उसे) जानते। (४१) यानी वे लोग जो सब्र करते है और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते है। (४२) और हम ने तुम से पहले मर्दो ही को पैगम्बर बना कर भेजा था, जिन की तरफ हम वह्य भेजा करते थे। अगर तुम लोग नही जानते, तो अह्ले किताब से पूछ लो। (४३) (और उन पैगम्बरो को) दलीले और किताबे दे कर (भेजा था) और हम ने तुम पर भी यह किताब नाजिल की है ताकि जो (इर्शादात) लोगो पर नाजिल हुए है, वह उन पर जाहिर कर दे और ताकि वे गौर करे ●(४४) क्या जो लोग बुरी-बुरी चाले चलते है, इस बात से बे-खौफ है कि खुदा उन को जमीन मे धसा दे या (ऐसी तरफ से) उन पर अज़ाब आ जाए जहा से उन को खबर ही न हो। (४५) या उन को चलते-फिरते पकड ले।

★रु ५/११ आ ६ ▨ व लाज़िम ● नि. १/२

औ यअ्ख़ुजहुम् फ़ी तक़ल्लुबिहिम् फ़मा हुम् बिमुअ्-जिज़ीन ॥ (४६) औ यअ्ख़ुजहुम् अ़ला तख़व्वुफ़िन् ♭ फ़-इन्-न रब्बकुम् ल - रऊफ़ुर्रहीम (४७) अ व लम् यरौ इला मा ख़-ल-क़ल्लाहु मिन् शैइय्-य-तफ़य्यउ ज़िलालुहू अ़निल्-यमीनि वश्शमाइलि सुज्जदल् - लिल्लाहि व हुम् दाख़िरून (४८) व लिल्लाहि यस्जुदु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् दाब्बतिंव्वल्-मलाइकतु व हुम् ला यस्तक्बिरून (४९) यख़ाफ़ू-न रब्बहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् व यफ़्-अ़लू-न मा युअ्-मरून ★ ☐ (५०) व क़ालल्लाहु ला तत्तख़िज़ू इलाहैनिस्नैनि Ɛ इन्नमा हु - व इलाहुंव्वाहिदुन् Ɛ फ़इय्या - य फ़र्हबून (५१) व लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व लहुद्दीनु वासिबन् ♭ अ-फ़-ग़ैरल्लाहि तत्तक़ून (५२) व मा बिकुम् मिन् निअ्-मतिन् फ़मिनल्लाहि सुम् - म इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़-इलैहि तज्अरून Ɛ (५३) सुम्-म इज़ा क-श-फ़ज़्ज़ुर्-र अ़न्कुम् इज़ा फ़रीक़ुम् - मिन्कुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून ॥ (५४) लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् ♭ फ़-त - मत्तअू क़िफ़ फ़सौ - फ़ तअ्-लमून (५५) व यज्-अ़लू-न लिमा ला यअ्-लमू-न नसीबम् मिम्मा र-ज़क़्ना-हुम् ♭ तल्लाहि ल-तुस्अलुन्-न अ़म्मा कुन्तुम् तफ़्तरून (५६) व यज्अलू-न लिल्लाहिल्-बनाति सुब्हानहू ॥ व लहुम् मा यश्तहून (५७) व इज़ा बुश्शि-र अ-ह़दुहुम् बिल्उन्सा ज़ल्-ल वज्हुहू मुस्वद्दंव्-व हु-व कज़ीम Ɛ (५८) य-त-वारा मिनल्-क़ौमि मिन् सूइ मा बुश्शि-र बिही ♭ अ-युम्सिकुहू अ़ला हूनिन् अम् यदुस्सुहू फ़ित्तुराबि ♭ अला सा - अ मा यह्कुमून (५९) लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति म - स-लुस्सौइ Ɛ व लिल्लाहिल् - म - सलुल् - अअ् - ला ♭ व हुवल् - अ़ज़ीज़ुल् - ह़कीम ★ (६०)

٢١٤

حيث لا يشعرون ۝ أو يأخذهم في تقلبهم فما هم بمعجزين ۝
أو يأخذهم على تخوف فإن ربكم لرءوف رحيم ۝ أولم يروا
إلى ما خلق الله من شيء يتفيؤا ظلاله عن اليمين والشمائل
سجدا لله وهم داخرون ۝ ولله يسجد ما في السماوات وما في
الأرض من دابة والملائكة وهم لا يستكبرون ۝ يخافون
ربهم من فوقهم ويفعلون ما يؤمرون ۩ ۝ وقال الله لا تتخذوا
إلهين اثنين إنما هو إله واحد فإياي فارهبون ۝ وله ما
في السماوات والأرض وله الدين واصبا أفغير الله تتقون ۝
وما بكم من نعمة فمن الله ثم إذا مسكم الضر فإليه تجأرون ۝
ثم إذا كشف الضر عنكم إذا فريق منكم بربهم يشركون ۝
ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون ۝ ويجعلون
لما لا يعلمون نصيبا مما رزقناهم تالله لتسألن عما كنتم
تفترون ۝ ويجعلون لله البنات سبحانه ولهم ما يشتهون ۝
وإذا بشر أحدهم بالأنثى ظل وجهه مسودا وهو كظيم ۝
يتوارى من القوم من سوء ما بشر به أيمسكه على هون
أم يدسه في التراب ألا ساء ما يحكمون ۝ للذين لا
يؤمنون بالآخرة مثل السوء ولله المثل الأعلى وهو العزيز

★रु ६/१२ आ १० ☐ सजदः ३ ★रु. ७/१३ आ १०

वे (खुदा को) आजिज नही कर सकते। (४६) या जब उन को अजाब का डर पैदा हो गया हो, तो उन को पकड़ ले। बेशक तुम्हारा परवरदिगार बहुत शफकत करने वाला (और) मेहरबान है। (४७) क्या उन लोगो ने खुदा की मख्लूकात में से ऐसी चीजे नही देखी, जिन के साए दाए से (बाए को) और बाए से (दाए को) लौटते रहते है, (यानी) खुदा के आगे आजिज़ हो कर मज्दे मे पड़े रहते है। (४८) और तमाम जानदार जो आसमानो मे है, सब खुदा के आगे सज्दे करते है और फरिश्ते भी और ये तनिक भी घमड नही करते। (४९) और अपने परवरदिगार से, जो उन के ऊपर है, डरते है और जो उन को इर्शाद होता है, उस पर अमल करते है। (५०) ✶☐

और खुदा ने फरमाया है कि दो-दो माबूद न बनाओ। माबूद वही एक है, तो मुझी से डरते रहो। (५१) और जो कुछ आसमानो मे और जो कुछ जमीन मे है, सब उसी का है और उसी की इबादत ज़रूरी है तो तुम खुदा के सिवा औरो से क्यो डरते हो ? (५२) और जो नेमते तुम को मिली है, सब खुदा की तरफ से है, फिर जब तुम को कोई तक्लीफ पहुचती है, तो उसी के आगे चिल्लाते हो। (५३) फिर जब वह तुम को तक्लीफ से दूर कर देता है तो कुछ लोग तुम मे से खुदा के साथ शरीक करने लगते है। (५४) ताकि जो (नेमते) हम ने उन को अता फरमायी है, उन की ना-शुक्री करें तो (मुश्रिको !) दुनिया मे फायदे उठा लो। बहुत जल्द तुम को (इस का अजाम) मालूम हो जाएगा। (५५) और हमारे दिए हुए माल मे से ऐसी चीजो का हिस्सा मुकर्रर करते हैं, जिन को जानते ही नही। (काफिरो !) खुदा की कसम जो कि तुम झूठ गढते हो, उसकी तुम मे जरूर पूछ होगी, (५६) और ये लोग खुदा के लिए तो बेटिया तज्वीज़ करते है (और) वह उन से पाक है और अपने लिए (बेटे), जो पसदीदा (और दिल पसद) है, (५७) हालाकि जब उन मे से किसी को बेटी (के पैदा होने की) खबर मिलती है, तो उस का मुह (गम की वजह से) काला पड जाता है और (उस के दिल को तो देखो तो) वह दुखी हो जाता है। (५८) और इस बुरी खबर से (जो वह सुनता है) लोगो से छिपता-फिरता है (और सोचता है) कि क्या ज़िल्लत बर्दाश्त कर के लड़की को ज़िदा रहने दे या जमीन मे गाड दे। देखो, ये जो तज्वीज करते है, बहुत बुरी है। (५९) जो लोग आखिरत पर ईमान नही रखते, उन्ही के लिए बुरी बाते (मुनासिब) है और खुदा को बुलन्द सिफत (जेब देती है) और वह गालिब हिक्मत वाला है। (६०) ✶

★रु ६/१२ आ १० ☐सजदः ३ ★रु. ७/१३ आ १०

व लौ युआख़िज़ुल्-लाहुन्-ना-स बिज़ुल्मिहिम् मा त-र-क अलैहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्यु-अख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन् ج फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अतंव्-व ला यस्तक़्दिमून (६१) व यज्-अलू-न लिल्लाहि मा यक्-रहू-न व तसिफ़ु अल्सिनतु-हुमुल्-कज़ि-ब अन्-न लहुमुल्-हुस्ना ط ला ज-र-म अन्-न लहुमुन्ना-र व अन्नहुम् मुफ्-रतून (६२) तल्लाहि ल-क़द् अर्सल्ना इला उ-ममिम् - मिन् क़ब्लि-क फ़-ज़य्य-न लहुमुश्-शैतानु अअ्-मालहुम् फ़हु-व वलिय्युहुमुल्-यौ-म व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (६३) व मा अन्ज़ल्ना अलैकल्-किता-ब इल्ला लितुबय्यि-न लहुमुल्लज़िख़्-त-लफ़ू फ़ीहि ۙ व हुदंव् - व रह्-म-तल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (६४) वल्लाहु अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़ - अह़्या बिहिल्अर-ज़ बअ्-द मौतिहा ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-य-तल्लिक़ौमिंय्यस्मअून★(६५) व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आमि ल-अिब-र-तन् ط नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिही मिम्-बैनि फ़र्सिंव्-व दमिल्-ल-ब-नन् ख़ालिसन् साइग़ल्-लिश्शारिबीन (६६) व मिन् स-म-रातिन्-नख़ीलि वल्अअ्-नाबि तत्तख़िज़ू-न मिन्हु स-क-रंव्-व रिज़्क़न् ह़-स-नन् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्-लिक़ौमिंय्यअ्-क़िलून (६७) व औहा रब्बु-क इलन्नह़्लि अनित्तख़िज़ी मिनल्जिबालि बुयूतंव्-व मिनश्शजरि व मिम्मा यअ्-रिशून ۙ (६८) सुम्-म कुली मिन् कुल्लिस्स - मराति फ़स्लुकी सुबु - ल रब्बिकि ज़ुलुलन् ط यख़्रुजु मिम् - बुतूनिहा शराबुम् - मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू फ़ीहि शिफ़ाउल्लिन्नासि ط इन् - न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्-लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (६९)

٢١٨ النحل

الحكيم ۝ ولو يؤاخذ الله الناس بظلمهم ما ترك عليها من
دابة ولكن يؤخرهم إلى أجل مسمى فإذا جاء أجلهم لا
يستأخرون ساعة ولا يستقدمون ۝ ويجعلون لله ما يكرهون
وتصف ألسنتهم الكذب أن لهم الحسنى لا جرم أن لهم
النار وأنهم مفرطون ۝ تالله لقد أرسلنا إلى أمم من قبلك
فزين لهم الشيطان أعمالهم فهو وليهم اليوم ولهم عذاب
أليم ۝ وما أنزلنا عليك الكتاب إلا لتبين لهم الذي اختلفوا
فيه وهدى ورحمة لقوم يؤمنون ۝ والله أنزل من السماء
ماء فأحيا به الأرض بعد موتها إن في ذلك لآية لقوم
يسمعون ۝ وإن لكم في الأنعام لعبرة نسقيكم مما في بطونه
من بين فرث ودم لبنا خالصا سائغا للشاربين ۝ ومن
ثمرات النخيل والأعناب تتخذون منه سكرا ورزقا حسنا
إن في ذلك لآية لقوم يعقلون ۝ وأوحى ربك إلى النحل أن
اتخذي من الجبال بيوتا ومن الشجر ومما يعرشون ۝ ثم كلي
من كل الثمرات فاسلكي سبل ربك ذللا يخرج من بطونها
شراب مختلف ألوانه فيه شفاء للناس إن في ذلك لآية لقوم
يتفكرون ۝ والله خلقكم ثم يتوفاكم ومنكم من يرد إلى

★रु ८/१४ आ ५

और अगर खुदा लोगो को उन के जुल्म की वजह मे पकडने लगे, तो एक जानदार को जमीन पर न छोडे लेकिन उन को एक मुकर्रर वक्त तक मोहलत दिए जाता है। जब वह वक्त आ जाता है, तो एक घडी न पीछे रह सकते है, न आगे बढ सकते है। (६१) और ये खुदा के लिए ऐमी चीज़े तज्वीज करते है, जिन को खुदा ना-पसन्द करते है और ज़ुबान से झूठ बके जाते है कि उन को (कियामत के दिन) भलाई (यानी निजात) होगी। कुछ शक नही कि उन के लिए (दोजख की) आग (तैयार) है और ये (दोजख मे) सब से आगे भेजे जाएगे। (६२) खुदा की कसम ! हम ने तुम से पहली उम्मतो की तरफ पैगम्बर भेजे, तो शैतान ने उन के (बुरे) अमल उन को सजा कर दिखाए, तो आज भी वही उन का दोस्त है और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (६३) और हम ने जो तुम पर किताब नाजिल की है, तो इस के लिए कि जिस मामले मे इन लोगो को इख्तिलाफ है, तुम उन का फैसला कर दो और (यह) मोमिनो के लिए हिदायत और रहमत है। (६४) और खुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस से जमीन को उस के मरने के बाद जिंदा किया। बेशक इस मे सुनने वालो के लिए निशानी है। (६५)★

और तुम्हारे लिए चारपायो मे भी सबक (हासिल करने और गौर करने की) जगह है कि उन के पेटो मे जो गोबर और लहू है, उस मे हम तुम को खालिस दूध पिलाते है जो पीने वालो के लिए खुशगवार है। (६६) और खजूर और अगूर के मेवो मे भी (तुम पीने की चीजे तैयार करते हो) कि उन मे शराब बनाते हो और अच्छी रोजी (खाते हो), जो लोग समझ रखते है, उन के लिए इन (चीजो) मे (खुदा की कुदरत की) निशानी है। (६७) और तुम्हारे परवरदिगार ने शहद की मक्खियो को इर्शाद फरमाया कि पहाडो मे और पेडो मे और ऊची-ऊची छतरियो मे, जो लोग बनाते है, घर बना।[1] (६८) और हर किस्म के मेवे खा और अपने परवरदिगार के साफ रास्तो पर चली जा। उस के पेट से पीने की चीज निकलती है, जिस के मुख्तलिफ रग होते है, उस मे लोगो (के कई मर्जो) की शिफा है। बेशक सोचने वालो के लिए उस मे भी निशानी है। (६९) और खुदा

१ ऊची-ऊची छतरियो से मुराद वे छतरिया है, जो अगूर की बेल चढाने के लिए डाली जाती हैं।

★रु. ८/१४ आ ५

वल्लाहु ख़-ल-ककुम् सुम्-म य-त - वफ़्फ़ाकुम् قف व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला
अर्ज़लिल् अुमुरि लिकै ला यअ्-ल-म बअ्-द अिल्मिन् शैअन् ط इन्नल्ला-ह अलीमुन्
क़दीर ★ (७०) वल्लाहु फ़ज़्ज़-ल बअ्-ज़कुम् अला बअ् - ज़िन् फ़िर्रिज़्क़ ج
फ-मल्लज़ी-न फ़ुज़्ज़िलू बिराद्दी-रिज़्क़िहिम् अला मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फ़हुम्
फ़ीहि सवाउन् ط अ - फ-बिनिअ् - मतिल्लाहि
यज्हदून (७१) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिन्
अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव्-व ज-अ-ल लकुम् मिन्
अज़्वाजिकुम् बनी-न व ह़-फ़-द-तव्-व र-ज-ककुम्
मिनत्तय्यिबाति ط अ-फ-बिल्बातिलि युअ्मिनू - न
व बिनिअ् - मतिल्लाहि हुम् यक्फ़ुरून لا
(७२) व यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा
ला यम्लिकु लहुम् रिज़्क़म्-मिनस्समावाति
वल्अर्ज़ि शैअव्-व ला यस्ततीअून ج (७३)
फ-ला तज़्रिबू लिल्लाहिल् - अम्सा - ल ط
इन्नल्ला-ह यअ्-लमु व अन्तुम् ला तअ्-लमून
(७४) ज़-र-बल्लाहु म-स-लन् अब्दम्-मम्लूकल्-

أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝
وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا
بِرَادِّي رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۚ أَفَبِنِعْمَةِ
اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُمْ
مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ
يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ ۝ وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا
يَسْتَطِيعُونَ ۝ فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَ
أَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ
عَلَىٰ شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا
وَجَهْرًا ۖ هَلْ يَسْتَوُونَ ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝
وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلَىٰ شَيْءٍ
وَهُوَ كَلٌّ عَلَىٰ مَوْلَاهُ أَيْنَمَا يُوَجِّهْهُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ ۖ هَلْ
يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝
وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ
الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَاللَّهُ
أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ

ला यक़्दिरु अला शैइंव्-व मर्रज़क़्नाहु मिन्ना रिज़्क़न् ह-स-नन् फहु-व युन्फ़िक़ु
मिन्हु सिर्रव् - व जह्रन् ط हल् यस्तवू-न ط अल्ह़म्दु लिल्लाहि ط बल्
अक्सरु-हुम् ला यअ्-लमून (७५) व ज़-र-बल्लाहु म-स-लर्-रजुलैनि अ-ह़दुहुमा
अब्कमु ला यक़्दिरु अला शैइंव्-व हु-व कल्लुन् अला मौलाहु لا ऐनमा युवज्जिह्हु
ला यअ्ति बिख़ैरिन् ط हल् यस्तवी हु-व لا व मंय्यअ्मुरु बिल्अद्लि لا
व हु-व अला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ★ (७६) व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति
वल्अर्ज़ि ط व मा अम्रुस्साअ़ति इल्ला क - लम्ह़िल् - ब-सरि औ हु - व
अक़्रबु ط इन्नल्ला - ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (७७) वल्लाहु
अख़्-र-जकुम् मिम्-बुतूनि उम्महातिकुम् ला तअ्-ल-मू-न शैअव्-व ज-अ-ल
लकुमुस्सम् - अ वल्अब्सा - र वल्अफ़्इ-द-त لا ल-अल्लकुम् तश्कुरून (७८)

★रु ९/१५ आ ५ ★रु १०/१६ आ ६

ही ने तुम को पैदा किया, फिर वही तुम को मौत देता है और तुम मे कुछ ऐसे होते है कि निहायत खराब उम्र को पहुच जाते है और (बहुत कुछ) जानने के बाद हर चीज से बे-इल्म हो जाते है। बेशक (खुदा सब कुछ) जानने वाला (और) कुदरत वाला है। (७०)★

और खुदा ने रोजी (और दौलत) मे कुछ को कुछ पर फजीलत दी है तो जिन लोगो को फजीलत दी है, वे अपनी रोजी अपने मम्लूको को तो दे डालने वाले है नही कि सब उस मे बराबर हो जाए, तो क्या ये लोग अल्लाह की नेमत के इकारी है ? (७१) और खुदा ही ने तुम मे से तुम्हारे लिए औरते पैदा की और औरतो से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किए और खाने को तुम्हे पाकीजा चीजे दी, तो क्या ये बे-असल चीजो पर एतकाद रखते और खुदा की नेमतो से इकार करते है ? (७२) और खुदा के सिवा ऐसो को पूजते है, जो उन को आसमानो और ज़मीन मे रोजी देने का जरा भी अख्तियार नही रखते और न (किसी और तरह की) कुदरत रखते है। (७३) तो (लोगो!) खुदा के बारे मे (गलत) मिसाले न बनाओ। (सही मिसालो का तरीका) खुदा ही जानता है और तुम नही जानते। (७४) खुदा एक और मिसाल बयान फरमाता है कि एक गुलाम है जो (बिल्कुल) दूसरे के अख्तियार मे है और किसी चीज़ पर कुदरत नही रखता और एक ऐसा शख्स है, जिस को हम ने अपने यहा से (बहुत-सा) माल बेहतर अता फरमाया है और वह उस मे से (रात-दिन) छिपे और खुले खर्च करता है, तो क्या दोनो शख्स बराबर है ? (हरगिज नही) अलहम्दु लिल्लाह! लेकिन इन मे से अक्सर लोग समझ नही रखते। (७५) और खुदा एक और मिसाल बयान फरमाता है कि दो आदमी है एक उन मे से गूगा (और दूसरे की मिल्क) है, (बे-अख्तियार व कमज़ोर) कि किसी चीज पर कुदरत नही रखता और अपने मालिक को दूभर हो रहा है। वह जहा उसे भेजता है (खैर से कभी) भलाई नही लाता। क्या ऐसा (गूगा-बहरा) और वह शख्स जो (सुनता-बोलता और) लोगो को इसाफ करने का हुक्म देता है और खुद सीधे रास्ते पर चल रहा है, दोनो बराबर है ?[1] (७६)★

और आसमानो और जमीन का इल्म खुदा ही को है और (खुदा के नज़दीक) कियामत का आना यो ही है, जैसे आख का झपकना, बल्कि (उस से भी) जल्दतर। कुछ शक नही कि खुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (७७) और खुदा ही ने तुम को तुम्हारी माओ के पेट मे पैदा किया कि तुम कुछ नही जानते थे और उस ने तुम को कान और आखे और दिल (और उन के अलावा और)

---

१ यानी खुदा के दो बन्दे, एक बहुत निकम्मा, न हिल सके, न चल सके, जैसा कि गूगा गुलाम, दूसरा रसूल जो अल्लाह की राह बतावे हजारो को और आप बन्दगी पर कायम रहे, उस की पैरवी करना बेहतर है या उन की ?

अ-लम् यरौ इलत्तैरि मुसख़्ख़रातिन् फ़ी जव्विस्समाइ ط मा युम्सिकुहुन्-न इल्लल्लाहु ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल् - लिक़ौमिय्युअ्मिनून (७९) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिम्-बुयूतिकुम् स-क-नव्-व ज-अ-ल लकुम् मिन् जुलूदिल्-अन्आमि बुयूतन् तस्तख़िफ़्फ़ूनहा यौ-म ज़अ्-निकुम् व यौ-म इक़ामतिकुम् ل व मिन् अस्वाफ़िहा व औबारिहा व अश्आरिहा असासव्-व मताअन् इलाहीन (८०) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिम्मा ख़-ल-क ज़िलालंव्-व ज-अ-ल लकुम् मिनल्जिबालि अक्नानव्-व ज-अ-ल लकुम् सराबी - ल तक़ीकुमुल्हर् - र व सराबी-ल तक़ीकुम् बअ्-सकुम् ط कज़ालि-क युतिम्मु निअ्-मतहू अलैकुम् ल-अल्लकुम् तुस्लिमून (८१) फ-इन् त-वल्लौ फ-इन्नमा अलैकल्-बलाग़ुल्-मुबीन (८२) यअ्-रिफ़ू-न निअ्-म-तल्लाहि सुम् - म युन्किरूनहा व अक्सरुहुमुल् - काफ़िरून ✱(८३) व यौ - म नब्असु मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् सुम्-म ला युअ्ज़नु लिल्लज़ी-न क-फ़रू व ला हुम् युस्तअ्-तबून (८४) व इज़ा र-अल्लज़ी-न ज़ - लमुल्-अज़ा-ब फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुम् व ला हुम् युन्ज़रून (८५) व इज़ा र-अल्लज़ी-न अश्रकू शु-रका - अहुम् कालू रब्बना हाउलाइ शु-र-काउनल्-लज़ी-न कुन्ना नद्अू मिन् दूनि - क ج फ़-अल्क़ौ इलैहिमुल्क़ौ-ल इन्नकुम् ल - काज़िबून ج ● (८६) व अल्कौ इलल्लाहि यौमइज़ि-निस् - स - लम व ज़ल् - ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून (८७) अल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि ज़िद्नाहुम् अज़ाबन् फ़ौक़ल् - अज़ाबि बिमा कानू युफ्सिदून (८८)

السمع والابصار والافدة لعلكم تشكرون ۝ الم يروا
الى الطير مسخرت في جو السماء ما يمسكهن الا الله ان
في ذلك لايت لقوم يؤمنون ۝ والله جعل لكم من
بيوتكم سكنا وجعل لكم من جلود الانعام بيوتا تستخفونها
يوم ظعنكم ويوم اقامتكم ومن اصوافها واوبارها
واشعارها اثاثا ومتاعا الى حين ۝ والله جعل لكم مما
خلق ظللا وجعل لكم من الجبال اكنانا وجعل لكم
سرابيل تقيكم الحر وسرابيل تقيكم باسكم كذلك يتم
نعمته عليكم لعلكم تسلمون ۝ فان تولوا فانما عليك
البلغ المبين ۝ يعرفون نعمت الله ثم ينكرونها واكثرهم
الكفرون ۝ ويوم نبعث من كل امة شهيدا ثم لا يؤذن
للذين كفروا ولا هم يستعتبون ۝ واذا را الذين ظلموا
العذاب فلا يخفف عنهم ولا هم ينظرون ۝ واذا را
الذين اشركوا شركاءهم قالوا ربنا هؤلاء شركاؤنا الذين
كنا ندعوا من دونك فالقوا اليهم القول انكم لكذبون ۝
والقوا الى الله يومئذ السلم وضل عنهم ما كانوا
يفترون ۝ الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله زدنهم

अग दिए, ताकि तुम शुक्र करो। (७८) क्या इन लोगो ने परिंदो को नही देखा कि आसमान की हवा मे घिरे हुए (उडते रहते) है। उन को खुदा ही थामे रखता है। ईमान वालो के लिए इन मे (बहुत-सी) निशानिया है। (७९) और खुदा ही ने तुम्हारे लिए घरो को रहने की जगह बनाया। और उसी ने चौपायो की खालो से तुम्हारे डेरे बनाए, जिन को तुम हल्का देख कर और हज़र सफर (ठहरने की हालत) मे काम मे लाते हो और उन की ऊन और रेशम और बालो मे तुम सामान और बरतने की चीज़ें (बनाते हो, जो) मुद्दत तक (काम देती है।) (८०) और खुदा ही ने तुम्हारे (आराम के) लिए अपनी पैदा की हुई चीजो के साए बनाए और पहाड़ो मे गारें बनायी और कुरते बनाये, जो तुम को गर्मी से बचाए और (ऐसे) कुरते (भी) जो तुम को जग (के हथियारो के नुक्सान) से बचाये रखे। इसी तरह खुदा अपना एहसान तुम पर पूरा करता है, ताकि तुम फरमा-बरदार बनो। (८१) और अगर ये लोग मुह मोडे तो (ऐ पैगम्बर!) तुम्हारा काम सिर्फ खोल कर सुना देना है। (८२) ये खुदा की नेमतो को जानते है, मगर (जान कर) उन से इन्कार करते है और ये अक्सर ना-शुक्रे है। (८३)★

और जिस दिन हम हर उम्मत मे से गवाह (यानी पैगम्बर) खडा करेंगे तो न तो कुफ्फार को बोलने की) इजाज़त मिलेगी और न उन के उज़्र कुबूल किए जाएगे। (८४) और जब ज़ालिम लोग अज़ाब देख लेगे, तो फिर न तो उन के अज़ाब ही में कमी की जाएगी और न उन को मोहलत ही दी जाएगी। (८५) और जब मुश्रिक अपने (बनाये हुए) शरीको को देखेंगे, तो कहेंगे कि परवर-दिगार! ये वही हमारे शरीक है, जिन को हम तेरे सिवा पुकारा करते थे, तो वे (उन के कलाम को रद्द कर देगे और) उन से कहेगे कि तुम तो झूठे हो●(८६) और उस दिन खुदा के सामने सिर झुका देंगे और जो तूफान वे बाधा करते थे, सब उन से जाता रहेगा। (८७) जिन लोगो ने कुफ्र किया और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोका, हम उन को अज़ाब पर अज़ाब देंगे, इस लिए कि

★रु ११/१७ आ ७ ●सु० ३/४

व यौ-म नब्असु फी कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् अलैहिम् मिन् अन्फुसिहिम् व जिअ्-ना बि-क शहीदन् अला हाउलाइ ط व नज्जल्ना अलैकल्-किता - ब तिब्यानल्-लिकुल्लि शैइ व्-व हुदव्-व रह्मतव्-व बुश्रा लिल्मुस्लिमीन ★(८९) इन्नल्ला - ह यअ्मुरु बिल्अद्लि वल्इह्सानि व ईताइ जिल्कुर्बा व यन्हा अनिल् - फह्शाइ वल्मुन्करि वल्बग्यि ج यअिज़ुकुम् ल - अ़ल्लकुम् त-ज़क्करून (९०) व औफू बिअ़ह्दिल्लाहि इज़ा आहत्तुम् व ला तन्कुज़ुल्-ऐमा-न बअ्-द तौकीदिहा व कद् ज-अल्तुमुल्ला-ह अलैकुम् कफीलन् ط इन्नल्ला-ह यअ् - लमु मा तफ-अलून (९१) व ला तकूनू कल्लती न-क-जत् गज-लहा मिम्बअ-दि कुव्वतिन् अन्कासन् ط तत्तख़िज़ू-न ऐमानकुम् द-ख-लम्-बैनकुम् अन् तकू-न उम्मतुन् हि-य अर्बा मिन् उम्मतिन् ط इन्नमा यब्लूकुमुल्लाहु बिही ط व ल-युबय्यिनन्-न लकुम् यौमल् - कियामति मा कुन्तुम् फीहि तख़्तलिफून (९२) व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-अ-लकुम् उम्मतव्वाहि-द-तव् - व लाकिय्युज़िल्लु मय्यशाउ व यह्दी मय्यशाउ ط व ल-तुस्अलुन्-न अम्मा कुन्तुम् तअ्-मलून (९३) व ला तत्तख़िज़ू ऐमानकुम् द-ख़-लम्-बैनकुम् फ़-तज़िल्-ल क़-दमुम्-बअ्-द सुबूतिहा व तज़ूक़ुस्सू-अ बिमा स-दत्तुम् अन् सबीलिल्लाहि ج व लकुम् अज़ाबुन् अज़ीम (९४) व ला तश्तरू बि - अह्दिल्लाहि स-म - नन् कलीलन् ط इन्नमा अिन्दल्लाहि हु - व ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ् - लमून (९५) मा अिन्दकुम् यन्फ़दु व मा अिन्दल्लाहि बाक़िन् ط व ल - नज्ज़ियन्नल्लज़ी - न स - बरू अजरहुम् बि - अह्सनि मा कानू यअ् - मलून (९६)

ربما ١٤ ٢٢١ النحل ١٦

عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي
كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا
عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى
وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ
الْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ
وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا
عَاهَدتُّمْ وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ
عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي
نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِن بَعْدِ قُوَّةٍ أَنكَاثًا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا
بَيْنَكُمْ أَن تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ
وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ وَلَوْ
شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَ
يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا
تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا
السُّوءَ بِمَا صَدَدتُّمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ إِنَّمَا عِندَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ
إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ مَا عِندَكُمْ يَنفَدُ ۖ وَمَا عِندَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ

★रु. १२/१८ आ ९

शरारत किया करते थे। (८८) और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत मे से खुद उन पर गवाह खडे करेगे और (ऐ पैगम्बर!) तुम को इन लोगो पर गवाह लाएगे। और हम ने तुम पर (ऐसी) किताव नाजिल की है कि (इस मे) हर चीज का बयान (तफ्सील से) है। और मुसलमानो के लिए हिदायत और रहमत और बशारत है। (८९)★

खुदा तुम को इसाफ और एहसान करने और रिश्तेदारो को (खर्च से मदद) देने का हुक्म देता है और बे-हयाई और ना-माकूल कामो से और सर-कशी से मना करता है (और) तुम्हे नसीहत करता है, ताकि तुम याद रखो। (९०) और जब खुदा से पक्का अह्द करो तो उस को पूरा करो और जब पक्की कस्मे खाओ तो उन को मत तोडो कि तुम खुदा को अपना जमानतदार मुकरर कर चुके हो और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को जानता है। (९१) और उस औरत की तरह न होना जिस ने मेहनत से तो सूत काता फिर उस को तोड कर टकडे-टुकडे कर डाला कि तुम अपनी कस्मो को आपस मे इस बात का जरिया बनाने लगो कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से ज्यादा गालिब रहे। बात यह है कि खुदा तुम्हे इस से आजमाता है और जिन बातो मे तुम इख्तिलाफ करते हो, कियामत को उन की हकीकत तुम पर जाहिर कर देगा। (९२) और अगर खुदा चाहता, तो तुम (सब) को एक ही जमाअत बना देता लेकिन वह जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और जो अमल तुम करते हो, (उस दिन) उन के बारे मे तुम से जरूर पूछा जाएगा। (९३) और अपनी कस्मों को आपस मे इस बात का जरिया न बनाओ कि (लोगो के) कदम जम चुकने के बाद लड-खडा जाए और इस वजह से कि तुम ने लोगो को खुदा के रास्ते से रोका, तुम को बुराई का मजा चखना पडे और बडा सख्त अजाब मिले। (९४) और खुदा से जो तुम ने अह्द किया है (उस को मत बेचो और) उस के बदले थोडी सी कीमत न लो (क्योकि वायदा पूरा करने का) जो (बदला) खुदा के यहा मुकर्रर है, वह अगर समझो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। (९५) जो कुछ तुम्हारे पास है, वह खत्म हो जाता है, और जो खुदा के पास है, वह बाकी है (कि कभी खत्म नही होगा) और जिन लोगो ने सब्र किया, हम उन को उन के आमाल का बहुत अच्छा बदला देगे। (९६) और

★रु १२/१८ आ ६

मन् अमि-ल सालिहम्-मिन् ज-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-लनुह्यियन्नहू हयातन् तय्यि-ब-तन् ⅽ व-ल - नज्ज़ियन्नहुम् अज्रहुम् बिअह्सनि मा कानू यअ्-मलून (९७) फइज़ा क - रअ्तल् - कुर्आ-न फ़स्तअिज़् बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्-रजीम (९८) इन्नहू लै-स लहू सुल्तानुन् अ़-लल्लज़ी - न

ربما ١٤ — ٢٢٢ — النحل ١٦

الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ مَنْ عَمِلَ
صَالِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَإِذَا قَرَأْتَ
الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ
سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ إِنَّمَا سُلْطَانُهُ
عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ هُم بِهِ مُشْرِكُونَ ۝ وَإِذَا بَدَّلْنَا
آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنتَ مُفْتَرٍ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِن
رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ۝
وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي
يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَمِيٌّ وَهَٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِينٌ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝ مَن كَفَرَ بِاللَّهِ مِن بَعْدِ
إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِن
مَّن شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى

منزل

आमनू व अला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (९९) इन्नमा सुल्तानुहू अ़-लल्लज़ी-न य-त-वल्लौनहू वल्लज़ी-न हुम् बिही मुश्रिकून ✶ (१००) व इज़ा बद्दल्ना आ-यतम् - मका - न आयतिंव ⅼⅼ - वल्लाहु अअ् - लमु बिमा युनज़्ज़िलु कालू इन्नमा अन्-त मुफ़्तरिन् ｂ बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून (१०१) कुल् नज़्ज़-लहू रूहुल् - कुदुसि मिर्रब्बि-क बिल्हक्कि लियुसब्बि-तल्लज़ी-न आमनू व हुदंव्-व बुश्रा लिल्-मुस्लिमीन (१०२) व ल-कद् नअ्-लमु अन्नहुम् यकूलू-न इन्नमा युअल्लिमुहू ब - शरुन् ｂ लिसानुल्लज़ी युल्हिदू-न इलैहि अअ्-जमिय्युंव्-व हाज़ा लिसानुन् अ-रबिय्युम्-मुबीन (१०३) इन्नल्लज़ी - न ला युअ्मिनू-न बिआयातिल्लाहि ⅼⅼ ला यह्दीहिमुल्लाहु व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (१०४) इन्नमा यफ़्तरिल् - कज़िबल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिआयातिल्लाहि ⅽ व उलाइ-क हुमुल्-काज़िबून (१०५) मन् क-फ़-र बिल्लाहि मिम्बअ्-दि ईमानिही इल्ला मन् उक्रि-ह व कल्बुहू मुत-मइन्नुम्-बिल्ईमानि व लाकिम्मन् श-र-ह बिल्कुफ़्रि सद्-रन् फ-अलैहिम् ग - ज़बुम् - मिनल्लाहि ⅽ व लहुम् अज़ाबुन् अ़ज़ीम (१०६) ज़ालि - क बि - अन्नहुमुस्त - हब्बुल् - हयातद्दुन्या अ - लल् - आख़िरति ⅼⅼ व अन्नल्ला - ह ला यह्दिल् - कौमल् - काफ़िरीन (१०७)

★रु १३/१९ आ ११

नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत, और वह मोमिन भी होगा, तो हम उस को (दुनिया मे) पाक (और आराम की) जिदगी से जिंदा रखेगे और (आखिरत मे) उन के आमाल का निहायन अच्छा बदला देगे। (९७) और जब तुम कुरआन पढने लगो तो शैतान मर्दूद से पनाह माग लिया करो, (९८) कि जो मोमिन हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते है, उन पर उस का कुछ जोर नही चलता। (९९) उस का ज़ोर उन्ही लोगो पर चलता है, जो उस को साथी बनाते है, और उस के (वस्वसे की) वजह से (खुदा के साथ) शरीक मुकर्रर करते है। (१००)★

और जब हम कोई आयत किसी आयत की जगह बदल देते है और खुदा जो कुछ नाज़िल फरमाता है उसे खूब जानता है, तो (काफिर) कहते है तुम तो (यो ही) अपनी तरफ से बना लाते हो। सच तो यह है कि उन मे अक्सर नादान है। (१०१) कह दो कि इस को रूहुल कुद्स तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से सच्चाई के साथ ले कर नाजिल हुए है ताकि यह (कुरआन) मोमिनो को साबित कदम रखे और हुक्म मानने वालो के लिए तो (यह) हिदायत और बशारत है। (१०२) और हमे मालूम है कि ये कहते है कि इस (पैगम्बर) को एक शख्स सिखा जाता है मगर जिस की तरफ (तामील का) ताल्लुक जोडते है उस की जुबान तो अजमी है और यह साफ अरबी ज़ुबान है। (१०३) जो लोग खुदा की आयतो पर ईमान नही लाते, उन को खुदा हिदायत नही देता और उन के लिए दर्दनाक अजाब है। (१०४) झूठ तो वही लोग गढते है, जो खुदा की आयतो पर ईमान नही लाते और वही झूठे है। (१०५) जो शख्स ईमान लाने के बाद खुदा के साथ कुफ्र करे वह नही जो (कुफ्र पर ज़बरदस्ती) मजबूर किया जाए और उस का दिल ईमान के साथ मुत्मइन हो, बल्कि वह जो (दिल से और) दिल खोल कर कुफ्र करे, तो ऐसो पर अल्लाह का गज़ब है और उन को बडा सख्त अज़ाब होगा। (१०६) यह इसलिए कि उन्हो ने दुनिया की ज़िदगी को आखि-रत के मुकाबले मे अजीज रखा और इस लिए कि खुदा काफिर लोगो को हिदायत नही

★रु १३/१९ आ ११

उलाइकल्लजी-न त-ब-अल्लाहु अला कुलूबिहिम् व सम्अिहिम् व अब्सारिहिम् व उलाइ-क हुमुल्गाफिलून (१०८) ला ज-र-म अन्नहुम् फिल्आखिरति हुमुल्खासिरून (१०९) सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न हाजरू मिम्बअ्-दि मा फुतिनू सुम्-म जाहदू व स-बरू इन्-न रब्ब-क मिम्बअ्-दिहा ल-गफूर्रहीम ★ (११०) यौ-म तअ्ती कुल्लु नफ्सिन् तुजादिलु अन्नफ्सिहा व तुवफ्फा कुल्लु नफ्सिम्मा अमिलत् व हुम् ला युज्-लमून (१११) व ज-र-बल्लाहु म-स-लन् कर्-य-तन् कानत् आमि-न-तम् - मुत्मइन्नतय्यअ्तीहा रिज-कुहा र-ग - दम्मिन् कुल्लि मकानिन् फ-क-फ-रत् बि-अन्अुमिल्लाहि फ-अजा-क-हल्लाहु लिबासल्जूअि वल्खौफि बिमा कानू यस - नअून (११२) व ल-क़द् जाअहुम् रसूलुम् - मिन्हुम् फ - कज्जबूहु फ अ-ख-ज-हुमुल्-अजाबु व हुम् ज़ालिमून (११३) फकुलू मिम्मा र-ज-क़कुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबंव - वश्कुरू निअ् - म - तल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्बुदून (११४) इन्नमा हर्र-म अलैकुमुलमैत-त वद्-द-म व लह्मल्-खिन्जीरि व मा उहिल्-ल लिगैरिल्लाहि बिही फ-मनिज्तुर्-र गै-र बागिंव-व ला आदिन् फ - इन्नल्ला - ह ग़फूरुर् - रहीम (११५) व ला तकूलू लिमा तसिफु अल्सि-नतुकुमुल् - कजि - ब हाजा हलालुंव् - व हाजा हरामुल् - लितफ्तरू अ़ - लल्लाहिल् - कजि - ब इन्नल्लजी - न यफ्तरू - न अ़ - लल्लाहिल् - कजि - ब ला युफ्लिहून (११६) मताअुन् कलीलुंव् - व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (११७)

الآخرة وأن الله لا يهدي القوم الكافرين ۝ أولئك
الذين طبع الله على قلوبهم وسمعهم وأبصارهم وأولئك
هم الغافلون ۝ لا جرم أنهم في الآخرة هم الخاسرون ۝
ثم إن ربك للذين هاجروا من بعد ما فتنوا ثم جاهدوا
وصبروا إن ربك من بعدها لغفور رحيم ۝ يوم تأتي
كل نفس تجادل عن نفسها وتوفى كل نفس ما عملت
وهم لا يظلمون ۝ وضرب الله مثلا قرية كانت آمنة
مطمئنة يأتيها رزقها رغدا من كل مكان فكفرت
بأنعم الله فأذاقها الله لباس الجوع والخوف بما كانوا
يصنعون ۝ ولقد جاءهم رسول منهم فكذبوه فأخذهم
العذاب وهم ظالمون ۝ فكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا
واشكروا نعمت الله إن كنتم إياه تعبدون ۝ إنما حرم
عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به
فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن الله غفور رحيم ۝ و
لا تقولوا لما تصف ألسنتكم الكذب هذا حلال وهذا
حرام لتفتروا على الله الكذب إن الذين يفترون على
الله الكذب لا يفلحون ۝ متاع قليل ولهم عذاب

★रु. १४/२० आ १०

देता। (१०७) यही लोग है, जिन के दिलो पर और कानो पर और आखो पर खुदा ने मुहर लगा रखी है और यही गफ़्लत मे पडे हुए हैं। (१०८) कुछ शक नही कि ये आख़िरत मे घाटा उठाने वाले होगे। (१०९) फिर जिन लोगो ने तक्लीफे उठाने के बाद वतन छोडा, फिर जिहाद किये और जमे रहे, तुम्हारा परवरदिगार उन को बेशक इन (आज़माइशो) के बाद बख़्शने वाला (और उन पर) रहमत करने वाला है। (११०)★

जिस दिन हर नफ़्स (शख़्स, जीव) अपनी तरफ से झगडा करने आएगा और हर शख़्स को उस के आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और किसी का नुक्सान नही किया जाएगा। (१११) और खुदा एक बस्ती की मिसाल बयान फरमाता है कि (हर तरह) अम्न-चैन से बसती थी, हर तरफ से फैलाव के साथ रोजी चली आती थी, मगर उन लोगो ने खुदा की नेमतो की नाशुक्री की, तो खुदा ने उन के आमाल की वजह से उन को भूख और खौफ का लिबास पहना कर (ना-शुक्री का) मज़ा चखा दिया। (११२) और उन के पास उन्ही मे से एक पैगम्बर आया, तो उन्हो ने उस को झुठलाया, सो उन को अजाब ने आ पकडा और वे ज़ालिम थे। (११३) पस खुदा ने जो तुम को पाक हलाल रोजी दी है, उसे खाओ और अल्लाह की नेमतो का शुक्र करो, अगर उसी की इबादत करते हो। (११४) उस ने तुम पर मुर्दार और लहू और सुअर का गोश्त हराम कर दिया है और जिस चीज पर खुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए (उस को भी), हां अगर कोई ना-चार हो जाए तो बशर्ते कि गुनाह करने वाला न हो और न हद से निकलने वाला हो, तो खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (११५) और यो ही झूठ, जो तुम्हारी ज़बान पर आ जाए मत कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम है कि खुदा पर झूठ बुहतान बाधने लगो। जो लोग खुदा पर झूठ बुहतान बाधते है, उन का भला नही होगा। (११६) (झूठ का) फायदा तो थोडा सा है, मगर (उस के बदले) उनको दर्दनाक अजाब (बहुत) होगा। (११७) और जो चीज़े हम तुम्हें

★रु. १४/२० आ १०

व अ-लल्लज़ी-न हादू ह़र्रम्ना मा क़-सस्ना अलै-क मिन् क़ब्लु ط व मा ज़-लम्नाहुम् व लाकिन् कानू अन्फुसहुम् यज़्लिमून (११८) सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न अमिलुस्सू-अ बिजहालतिन् सुम्-म ताबू मिम्बअ्-दि ज़ालि-क व अस्-लहू ll इन् - न रब्ब - क मिम्बअ् - दिहा ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम ✶ (११९)

इन्-न इब्राही - म का - न उम्म-तन् क़ानितल् - लिल्लाहि ह़नीफ़न् ط व लम् यकु मिनल् - मुश्रिकीन ll (१२०) शाकिरल् - लि-अन् - अुमिही ط इज्तबाहु व हदाहु इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (१२१) व आतैनाहु फ़िद्दुन्या ह़-स-न - तन् ط व इन्नहू फ़िल्आख़िरति लमिनस् - सालिह़ीन ط (१२२) सुम्-म औह़ैना इलै-क अनित्तबिअ्-मिल्ल-त इब्राही-म ह़नीफ़न् ط व मा का-न मिनल् - मुश्रिकीन (१२३) इन्नमा जुअिलस्-सब्तु अ-लल्-लज़ीनख़्-त-लफ़ू फ़ीहि ط व इन्-न रब्ब-क ल - यह़्कुमु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (१२४) उद्अु इला सबीलि रब्बि-क बिल्ह़िक्मति वल्मौअ़िज़तिल्-ह़-स-नति व जादिल्हुम् बिल्लती हि-य अह़्सनु ط इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिमन् ज़ल्-ल अन् सबीलिही व हु-व अअ्-लमु बिल्मुह्-तदीन (१२५) व इन् आक़ब्तुम् फ़-आक़िबू बिमिस्लि मा अूक़िब्तुम् बिही ط व लइन् स-बर्तुम् लहु-व ख़ैरुल्लिस्साबिरीन (१२६) वस्बिर् व मा सब्रु - क इल्ला बिल्लाहि व ला तह़् - ज़न् अलैहिम् व ला तकु फ़ी ज़ैक़िम् - मिम्मा यम् - कुरून (१२७) इन्नल्ला - ह म - अल्लज़ीनत् - त - क़व्वल्लज़ी-न हुम् मुह़्सिनून ✶ (१२८)

٢٢٣

أَلِيمٌ ۝ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ
مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝
ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ
بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّ
إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝
شَاكِرًا لِأَنْعُمِهِ ۚ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَآتَيْنَاهُ
فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝ ثُمَّ
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ۝ إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ
رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝
ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَ
جَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ
سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا
بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ ۖ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ ۝
وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ
فِي ضَيْقٍ مِمَّا يَمْكُرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَ
الَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ۝

★रु १५/२१ आ ९ ★रु १६/२२ आ ६

पहले बयान कर चुके है वह यहूदियो पर हराम कर दी थी और हम ने उन पर कुछ जुल्म नही किया बल्कि वही अपने आप पर जुल्म किया करते थे। (११८) फिर जिन लोगो ने नादानी मे बुरा काम किया, फिर उसके बाद तौबा की और नेक हो गये, तो तुम्हारा परवरदिगार (उन को) तौबा करने और नेक हो जाने के बाद उन को बख्शने वाला और (उन पर) रहमत करने वाला है। (११९)★

बेशक इब्राहीम (लोगो के) इमाम (और) खुदा के फरमाबरदार थे, जो एक तरफ के हो रहे थे और मुश्रिको मे से न थे।[1] (१२०) उस की नेमतो के शुक्रगुजार थे। खुदा ने उन को चुन लिया था और (अपनी) सीधी राह पर चलाया था। (१२१) और हम ने उन को दुनिया मे भी खूबी दी थी और वह आखिरत मे भी नेक लोगो मे होगे। (१२२) फिर हम ने तुम्हारी तरफ वह्य भेजी कि दीने इब्राहीम की पैरवी अख्तियार करो, जो एक तरफ के हो रहे थे और मुश्रिको मे से न थे। (१२३) हफ्ते (शनिवार) का दिन तो उन्ही लोगो के लिए मुकर्रर किया गया था जिन्हो ने उस मे इख्तिलाफ किया और तुम्हारा परवरदिगार कियामत के दिन उन बातो का फैसला कर देगा, जिन से वे इख्तिलाफ करते थे। (१२४) (ऐ पैगम्बर!) लोगो को दानिश और नेक नसीहत से अपने परवरदिगार के रास्ते की तरफ बुलाओ और बहुत ही अच्छे तरीके से उन से मुनाजरा करो। जो उस के रास्ते से भटक गया तुम्हारा परवरदिगार उसे भी खूब जानता है और जो रास्ते पर चलने वाले है, उन्हे भी खूब जानता है। (१२५) अगर उन को तक्लीफ देनी चाहो तो उतनी ही दो, जितनी तक्लीफ तुम को उन से पहुची और अगर सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत अच्छा है। (१२६) और सब्र ही करो और तुम्हारा सब्र भी खुदा ही की मदद से है और उन के बारे मे गम न करो और जो ये बुरी चाले चलते है उन से तंगदिल न हो। (१२७) कुछ शक नही कि जो परहेजगार है और जो नेक और भले है, खुदा उन का मददगार है। (१२८)★

---

१ यानी हलाल और हराम मे और दीन की बातो मे असल मिल्लते इब्राहीम है और यह लोग [illegible] को हनीफ' और शिर्क करते है, वे आप की राह पर नही।

★रु १५/२१ आ ६ ★रु १६/२२ आ ६

पन्द्रहवां पारः सुब्हानल्लज़ी

१७ सूरतु बनी इस्राईल ५०

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ६७१० अक्षर १५८२ शब्द, १११ आयते और १२ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

सुब्हानल्लज़ी अस्रा बिअब्दिही लैलम्मिनल् - मस्जिदिल् - ह़रामि इलल् - मस्जिदिल् - अक्सल्लज़ी बारक्ना ह़ौलहू लिनुरियहू मिन् आयातिना इन्नहू हुवस्समीअुल्-बसीर (१) व आतैना मूसल्-किता-ब व ज-अ़ल्नाहु हुदल्लिबनी इस्राई - ल अल्ला तत्तखिज़ू मिन् दूनी वकीला (२) ज़ुर्रिय्य-त मन् ह़-मल्ना म-अ नूहिन् इन्नहू का-न अब्दन् शकूरा (३) व क़ज़ैना इला बनी इस्राई - ल फ़िल्किताबि लतुफ्सिदुन्-न फ़िल्अर्ज़ि मर्रतैनि व ल-तअ्लुन्-न अुलुव्वन् कबीरा (४) फ-इज़ा जा-अ वअ्-दु ऊलाहुमा ब-अ़स्ना अ़लैकुम् अिबादल्लना उली बअ्सिन् शदीदिन् फ जासू ख़िलालद्दियारि व का-न वअ्-दम्-मफ्अूला (५) सुम्-म र-दद्ना लकुमुल्कर्र-त अ़लैहिम् व अम्दद्नाकुम् बि-अम्वालिंव्-व बनी-न व ज-अ़ल्नाकुम् अक्स-र नफ़ीरा (६) इन् अह्-सन्तुम् अह्-सन्तुम् लिअन्फुसिकुम् व इन् अ-सअ्-तुम् फ-लहा फ - इज़ा जा-अ वअ्-दुल्आख़िरति लियसूउ वुजूहकुम् व लियद्ख़ुलुल्-मस्जि-द कमा द-ख़लूहु अव्व-ल मर्रतिंव्-व लियुतब्बिरू मा अ़लौ तत्बीरा (७) असा रब्बुकुम् अंय्यर्-ह़-मकुम् व इन् अ़ुत्तुम् अ़ुद्ना व ज-अ़ल्ना ज-हन्न-म लिल्काफ़िरी-न ह़सीरा (८) इन्-न हाज़ल्कुर्आ-न यह्दी लिल्लती हि-य अक्वमु व युबश्शिरुल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ्-मलूनस्-सालिहाति अन्-न लहुम् अज्-रन् कबीरा (९)

سُورَةُ بَنِىٓ اِسْرَآءِيلَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُبْحٰنَ الَّذِىٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِىْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا
اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ
هُدًى لِّبَنِىٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِىْ وَكِيْلًا ۝ ذُرِّيَّةَ
مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝ وَقَضَيْنَآ اِلٰى
بَنِىٓ اِسْرَآءِيْلَ فِى الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِى الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ
عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ
اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝
ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَ
جَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ
وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ
وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا
تَتْبِيْرًا ۝ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا وَجَعَلْنَا
جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ
هِىَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ

▨ व लाज़िम

१७ सूरः बनी इस्राईल ५०

सूर: बनी इस्राईल मक्की है और इस मे एक सौ ग्याग्ह आयते और बारह रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (ज़ात) पाक है, जो एक रात अपने बन्दे को मस्जिदुल हराम (यानी ख़ाना काबा) से मस्जिदे अक्सा (यानी बैतुल मक्दिस) तक, जिस के चारो तरफ हम ने बरकते रखी है, ले गया ताकि हम उसे अपनी (कुदरत की) निशानिया दिखाए। वेशक वह सुनने वाला (और) देखने वाला है। (१) और हम ने मूसा को किताब इनायत की थी और उस को बनी इस्राईल के लिए रहनुमा मुकर्रर किया था कि मेरे सिवा किसी को कारसाज न ठहराना। (२) ऐ उन लोगो की औलाद[1] जिन को हम ने नूह के साथ (किश्ती मे) सवार किया था[1] वेशक नूह (हमारे) शुक्र-गुज़ार बन्दे थे। (३) और हम ने किताब मे बनी इस्राईल से कह दिया था कि तुम ज़मीन मे दो बार फसाद मचाओगे और बड़ी सरकशी करोगे। (४) पस जब पहले (वायदे) का वक्त आया, तो हम ने अपने सख्त लडाई लडने वाले बन्दे तुम पर मुसल्लत कर दिए और वे शहरो के अन्दर फैल गये और वह वायदा पूरा हो कर रहा। (५) फिर हम ने दूसरी बार तुम को उन पर गलबा दिया और माल और बेटो से तुम्हारी मदद की और तुम को बडी जमाअत बना दिया (६) अगर तुम भला करोगे तो अपनी जानो के लिए करोगे और अगर बुरा करोगे तो (उन का) बबाल भी तुम्हारी ही जानो पर होगा, फिर जब दूसरे (वायदे) का वक्त आया (तो हम ने फिर अपने बन्दे भेजे) ताकि तुम्हारे चेहरो को बिगाड दे और जिस तरह पहली बार मस्जिद (बैतुल मक्दिस) मे दाख़िल हो गये थे, उसी तरह फिर उस मे दाख़िल हो जाए और जिस चीज़ पर गलबा पाए उसे तबाह कर दे। (७) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम पर रहम करे और अगर तुम फिर वही (हरकते) करोगे तो हम भी वही (पहला-सा सुलूक) करेगे ▨ और हमने जहन्नम को काफिरो के लिए कैदखाना बना रखा है। (८) यह कुरआन वह रास्ता दिखाता है, जो सब से सीधा है और मोमिनो को जो नेक अमल करते है, खुशखबरी देता है कि उन के लिए बडा अज्र है। (९) और

▨ व ला

पन्द्रहवां पारः सुब्हानल्लज़ी

१७ सूरतु बनी इस्राईल-ल ५०

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ६७१० अक्षर १५८२ शब्द, १११ आयते और १२ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

सुब्हानल्लज़ी अस्रा बिअब्दिही लैलम्मिनल् - मस्जिदिल् - ह़रामि इलल् - मस्जिदिल् - अक्सल्लज़ी बारक्ना ह़ौलहू लिनुरियहू मिन् आयातिना इन्नहू हुवस्समीअुल्-बस़ीर (१) व आतैना मूसल्-किता-ब व ज-अल्नाहु हुदल्लिबनी इस्राई - ल अल्ला तत्तख़िज़ू मिन् दूनी वकीला ؕ (२) ज़ुर्रिय्य-त मन् ह़-मल्ना म-अ नूहिन् ؕ इन्नहू का-न अब्दन् शकूरा (३) व कज़ैना इला बनी इस्राई - ल फ़िल्किताबि लतुफ़्सिदुन-न फ़िल्अर्ज़ि मर्रतैनि व ल-तअ्-लुन्-न अुलुव्वन् कबीरा (४) फ़-इज़ा जा-अ वअ्-दु ऊलाहुमा ब-अस्ना अलैकुम् अिबादल्लना उली बअ्सिन् शदीदिन् फ जासू ख़िलालद्दियारि ؕ व का-न वअ्-दम्-मफ़्अूला (५) सुम्-म र-दद्ना लकुमुल्कर्र-त अलैहिम् व अम्दद्नाकुम् बि-अम्वालिंव्-व बनी-न व ज-अल्नाकुम् अक्स-र नफ़ीरा (६) इन् अह़् - सन्तुम् अह़् - सन्तुम् लिअन्फ़ुसिकुम् व इन् अ-सअ्-तुम् फ़-लहा ؕ फ - इज़ा जा-अ वअ्-दुल्आख़िरति लियसूऊ वुजूहकुम् व लियद्ख़ुलुल्-मस्जि-द कमा द-ख़लूहु अव्व-ल मर्रतिंव्-व लियुतब्बिरू मा अलौ तत्बीरा (७) असा रब्बुकुम् अय्यर्-ह़-मकुम् ۚ व इन् अुत्तुम् अुद्ना ▨ व ज-अल्ना ज-हन्न-म लिल्काफ़िरी-न ह़स़ीरा (८) इन्-न हाज़ल्कुर्आ-न यह्दी लिल्लती हि-य अक्वमु व युबश्शिरुल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ्-मलूनस्-स़ालिह़ाति अन्-न लहुम् अज्-रन् कबीरा ؕ (९)

سورة بني اسرائيل مكية وهي مائة واحدى عشرة آية واثنا عشر ركوعا
بسم الله الرحمن الرحيم
سبحن الذي اسرى بعبده ليلا من المسجد الحرام
الى المسجد الاقصا الذي بركنا حوله لنريه من ايتنا
انه هو السميع البصير ۝ واتينا موسى الكتب وجعلنه
هدى لبني اسراءيل الا تتخذوا من دوني وكيلا ۝ ذرية
من حملنا مع نوح انه كان عبدا شكورا ۝ وقضينا الى
بني اسراءيل في الكتب لتفسدن في الارض مرتين ولتعلن
علوا كبيرا ۝ فاذا جاء وعد اولىهما بعثنا عليكم عبادا لنا
اولي باس شديد فجاسوا خلل الديار وكان وعدا مفعولا ۝
ثم رددنا لكم الكرة عليهم وامددنكم باموال وبنين و
جعلنكم اكثر نفيرا ۝ ان احسنتم احسنتم لانفسكم
وان اساتم فلها فاذا جاء وعد الاخرة ليسوءا وجوهكم
وليدخلوا المسجد كما دخلوه اول مرة وليتبروا ما علوا
تتبيرا ۝ عسى ربكم ان يرحمكم وان عدتم عدنا وجعلنا
جهنم للكفرين حصيرا ۝ ان هذا القران يهدي للتي
هي اقوم ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصلحت ان

▨ व लाज़िम

१७ सूरः बनी इस्राईल ५०

सूर बनी इस्राईल मक्की है और इस मे एक सौ ग्यारह आयते और बारह रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (ज़ात) पाक है, जो एक रात अपने बन्दे को मस्जिदुल हराम (यानी खाना काबा) मे मस्जिदे अक्सा (यानी बैतुल मक्दिस) तक, जिस के चारो तरफ हम ने बरकते रखी है, ले गया ताकि हम उसे अपनी (कुदरत की) निशानिया दिखाए। बेशक वह सुनने वाला (और) देखने वाला है। (१) और हम ने मूसा को किताब इनायत की थी और उस को बनी इस्राईल के लिए रहनुमा मुकर्रर किया था कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठहराना। (२) ऐ उन लोगो की औलाद! जिन को हम ने नूह के साथ (किश्ती मे) सवार किया था ! बेशक नूह (हमारे) शुक्र-गुज़ार बन्दे थे। (३) और हम ने किताब मे बनी इस्राईल से कह दिया था कि तुम जमीन मे दो बार फ़साद मचाओगे और बड़ी सरकशी करोगे। (४) पस जब पहले (वायदे) का वक्त आया, तो हम ने अपने सख्त लडाई लडने वाले बन्दे तुम पर मुसल्लत कर दिए और वे शहरो के अन्दर फैल गये और वह वायदा पूरा हो कर रहा। (५) फिर हम ने दूसरी बार तुम को उन पर गलबा दिया और माल और बेटो से तुम्हारी मदद की और तुम को बडी जमाअत बना दिया (६) अगर तुम भला करोगे तो अपनी जानो के लिए करोगे और अगर बुरा करोगे तो (उन का) वबाल भी तुम्हारी ही जानो पर होगा, फिर जब दूसरे (वायदे) का वक्त आया (तो हम ने फिर अपने बन्दे भेजे) ताकि तुम्हारे चेहरो को बिगाड दें और जिस तरह पहली बार मस्जिद (बैतुल मक्दिस) मे दाखिल हो गये थे, उसी तरह फिर उस मे दाखिल हो जाए और जिस चीज़ पर गलबा पाए उसे तबाह कर दे। (७) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम पर रहम करे और अगर तुम फिर वही (हरकते) करोगे तो हम भी वही (पहला-सा सुलूक) करेंगे ▨ और हमने जहन्नम को काफ़िरो के लिए कैदखाना बना रखा है। (८) यह कुरआन वह रास्ता दिखाता है, जो सब मे सीधा है और मोमिनो को जो नेक अमल करते है, खुशखबरी देता है कि उन के लिए बडा अज्र है। (९) और

▨ व. ला

व अन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आखिरति अअ्-तद्ना लहुम् अज़ाबन् अलीमा ★ (१०) व यद्अुल् - इन्सानु बिश्शर्रि दुआ-अहू बिल्ख़ैरि ط व कानल्-इन्सानु अजूला (११) व ज-अल्नल्लै-ल वन्नहा-र आयतैनि फ-महौना आयतल्लैलि व ज-अल्ना आयतन्नहारि मुब्सि-र-तल् - लि-तब्तग़ू फ़ज़्लम्मिर्-रब्बिकुम् व लितअ्-लमू अ-द-दस्सिनी-न वल्हिसा-ब ط व कुल्-ल शैइन् फ़स्सल्नाहु तफ़्सीला (१२) व कुल्-ल इन्सानिन् अल्ज़म्नाहु ताइ-रहू फ़ी अुनुकिही ط व नुख़्रिजु लहू यौमल्-कियामति किताबय्यल्काहु मन्शूरा (१३) इक्रअ् किता- ब - क ط कफ़ा बिनफ्सिकल्-यौ-म अलै-क हसीबा ط (१४) मनिह्तदा फ़इन्नमा यह्तदी लिनफ्सिही ج व मन् ज़ल् - ल फ-इन्नमा यज़िल्लु अलैहा ط व ला तज़िरु वाज़िरतुंव्विज़-र उख़्रा ط व मा कुन्ना मुअज़्ज़िबी-न हत्ता नब्-अ-स रसूला (१५)

वَلَهُمْ

لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۝ وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ وَيَدْعُ الْإِنسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ
وَكَانَ الْإِنسَانُ عَجُولًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا
مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ وَكُلَّ شَيْءٍ
فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ۝ وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ
وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ۝ اقْرَأْ كِتَابَكَ
كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝ مَّنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا
يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ۝
وَإِذَا أَرَدْنَا أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا
فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ
الْقُرُونِ مِن بَعْدِ نُوحٍ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا
بَصِيرًا ۝ مَّن كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ
لِمَن نُّرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا
مَّدْحُورًا ۝ وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُم مَّشْكُورًا ۝ كُلًّا نُّمِدُّ هَٰؤُلَاءِ

व इज़ा अ-रद्ना अन्नुह्लि-क कर्य-तन् अ-मर्ना मुत-रफीहा फ-फ-सकू फीहा फ-हक्-क अलैहल्कौलु फ़-दम्मर्नाहा तद्मीरा (१६) व कम् अह्-लक्ना मिनल्कुरूनि मिम्बअ्-दि नूहिन् ط व कफ़ा बिरब्बि-क बिज़ुनूबि अिबादिही ख़बीरम्-बसीरा (१७) मन् का - न युरीदुल्-आजि-ल-त अज्जल्ना लहू फीहा मा नशाउ लिमन् नुरीदु सुम्-म-ज-अल्ना लहू जहन्न-म ج यस्लाहा मज़्मूमम्-मद्हूरा (१८) व मन् अरादल् - आखि-र-त व सआ लहा सअ्-यहा व हु-व मुअ्मिनुन् फउलाइ-क का-न सअ्-युहुम् मश्कूरा (१९)

★रु १/१ आ १०

यह भी (बताता है) कि जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (१०)★

और इंसान जिस तरह (जल्दी मे) भलाई मांगता है, इसी तरह बुराई मांगता है और इन्सान जल्दबाज (पैदा हुआ) है। (११) और हम ने दिन और रात को दो निशानियां बनाया है, रात की निशानी को तारीक बनाया और दिन की निशानी को रोशन, ताकि तुम अपने परवरदिगार का फ़ज़्ल (यानी) रोज़ी तलाश करो और वर्षों की गिनती और हिसाब जानो और हम ने हर चीज़ की (अच्छी तरह) तफ़्सील कर दी है। (१२) और हमने हर इंसान के आमाल को (किताब की सूरत मे) उस के गले मे लटका दिया है और कियामत के दिन (वह) किताब उसे निकाल दिखाएंगे, जिसे वह खुला देखेगा। (१३) कहा जाएगा (कि) अपनी किताब पढ ले, तू आज अपना आप ही हिसाब लेने वाला काफी है। (१४) जो शख़्स हिदायत अपनाता है, तो अपने लिए अपनाता है और जो गुमराह होता है, तो गुमराही का नुक्सान भी उसी को होगा और कोई शख़्स किसी दूसरे का बोझ नही उठाएगा और जब तक हम पैगम्बर न भेज ले, अजाब नही दिया करते। (१५) और जब हमारा इरादा किसी बस्ती के हलाक करने का हुआ तो वहां के ख़ुशहाल लोगो को (गंदी बातों पर) लगा दिया, तो वे ना-फ़रमानियां करते रहे। फिर उस पर (अज़ाब का) हुक्म साबित हो गया और हमने उसे हलाक कर डाला। (१६) और हमने नूह के बाद बहुत सी उम्मतों को हलाक कर डाला और तुम्हारा परवरदिगार अपने बन्दो के गुनाहों को जानने और देखने वाला काफी है। (१७) जो शख़्स दुनिया (की ख़ुशहाली) का ख़्वाहिशमंद हो तो हम उस में से जिसे चाहते है और जितना चाहते है, जल्द दे देते है, फिर उस के लिए जहन्नम को (ठिकाना) मुकर्रर कर रखा है, जिस मे नफ़रीन सुन कर और (ख़ुदा की दरगाह से) रांदा हो कर दाख़िल होगा। (१८) और जो शख़्स आख़िरत की तलब मे हो और उस मे इतनी कोशिश करे जितनी वह कर सकता है और वह मोमिन भी हो तो ऐसे ही लोगो की कोशिश ठिकाने लगती है। (१९) हम उन को और उन

★रु १/१ आ १०

कुल्लन्नुमिद्दु हाउलाइ व हाउलाइ मिन् अता - इ रब्बि - क ॰ व मा का-न अताउ रब्बि-क मह़्ज़ूरा (२०) उन्ज़ुर् कै-फ़ फज़्ज़ल्ना बअ्-जहुम् अला बअ्-ज़िन् ॰ व लल्आख़िरतु अक्बरु द-र-जातिंव-व अक्बरु तफ़्ज़ीला (२१) ला तज्अल् म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र फ-तक़्अु-द मज़्मूमम्-मख़्ज़ूला ★ (२२) व कज़ा रब्बु-क अल्ला तअ्-बुदू इल्ला इय्याहु व बिल् - वालिदैनि इह़्सानन् ॰ इम्मा यब्लुग़न्-न अिन्दकल्-कि-ब-र अ-ह़दुहुमा औ किलाहुमा फला तक़ुल्लहुमा उफ़्फ़िंव्-व ला तन्हर्हुमा व क़ुल्लहुमा क़ौलन् करीमा (२३) वख़्फ़िज़् लहुमा जनाह़ज़्-ज़ुल्लि मिनर्रह़्मति व क़ुर्रब्बिर् - ह़म्हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा ॰ (२४) रब्बुकुम् अअ् - लमु बिमा फी नुफ़ूसिकुम् ॰ इन् तकूनू सालिही-न फ-इन्नहू का-न लिल्-अव्वाबी-न ग़फ़ूरा (२५) व आति ज़ल्क़ुर्बा ह़क्क़हू वल्मिस्की-न वब्नस्सबीलि व ला तुबज़्ज़िर् तब्ज़ीरा (२६) इन्नल् - मुबज़्ज़िरी - न कानू इख़्वानश् - शयातीनि ॰ व कानश्शैतानु लिरब्बिही कफ़ूरा (२७) व इम्मा तुअ् - रिज़न्-न अन्हुमुब्तिग़ा-अ रह़्मतिम्-मिर् - रब्बि-क तर्जूहा फ-क़ुल्लहुम् क़ौलम्-मैसूरा (२८) व ला तज-अल् य-द-क मग़्लूल-तन् इला अुनुकि-क व ला तब्सुत्हा कुल्लल्बस्ति फ-तक़्अु-द मलूमम्-मह़्सूरा (२९) इन्-न रब्ब-क यब्सुतुर्रिज़-क़ लिमय्यशाउ व यक़्दिरु ॰ इन्नहू का - न बिअिबादिही ख़बीरम् - बसीरा ★ (३०) व ला तक़्तुलू औलादकुम् ख़श् - य - त इम्लाक़िन् ॰ नह़्नु नर्ज़ुक़ुहुम् व इय्याकुम् ॰ इन-न क़त्-लहुम् का-न ख़ित्-अन् कबीरा (३१) व ला तक़्रबुज़्ज़िना इन्नहू का-न फाहि-श-तन् ॰ व सा-अ सबीला (३२)

وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۚ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ
وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ۝ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا
مَّخْذُوْلًا ۝ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا
اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ
وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ
الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝
رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۚ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ
لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ۝ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ
السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۝ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ
الشَّيٰطِيْنِ ۚ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ۝ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ
عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ۝
وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ
فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ۝ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ
يَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ۝ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۚ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۚ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً
كَبِيْرًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۗ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝

★रु २/२ आ १२ ★रु ३/३ आ ८

को, सब को तुम्हारे परवरदिगार की बख्शिश से मदद देते है और तुम्हारे परवरदिगार की बख्शिश (किसी से) रुकी हुई नही। (२०) देखो हम ने किस तरह कुछ को कुछ पर फज़ीलत बख्शी है और आख़िरत दर्जो मे (दुनिया से) बहुत बरतर और बरतरी मे कही बढ कर है। (२१) और ख़ुदा के साथ कोई और माबूद न बनाना कि मलामते सुन कर और बेकस हो कर बैठे रह जाओगे। (२२)★

और तुम्हारे परवरदिगार ने इर्शाद फरमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो। और मा-बाप के साथ भलाई करते रहो। अगर उन मे से एक या दोनो तुम्हारे सामने बुढापे को पहुच जाए, तो उन को उफ़ तक न कहना और न उन्हे झिडकना और उन से बात अदब के साथ करना।[1] (२३) और नियाजमंदी के साथ उन के आगे झुके रहो और उन के हक मे दुआ करो कि ऐ परवरदिगार! जैसा उन्हो ने मुझे बचपन मे (मुहब्बत से) पाला-पोसा है, तू भी उन (के हाल) पर रहमत फरमा। (२४) जो कुछ तुम्हारे दिलो मे है, तुम्हारा परवरदिगार उसे अच्छी तरह जानता है। अगर तुम नेक होगे, तो वह रुजूअ लाने वालो को बख्श देने वाला है। (२५) और रिश्तेदारो और मुहताजो और मुसाफिरो को उन का हक अदा करो और फिजूलख़र्ची मे माल न उडाओ। (२६) कि फिजूलख़र्ची करने वाले तो शैतान के भाई है और शैतान अपने परवरदिगार (की नेमतो) का कुफ़ान करने वाला (यानी ना-शुक्रा) है। (२७) और अगर तुम अपने परवरदिगार की रहमत के इन्तिजार मे, जिस की तुम्हे उम्मीद हो, उन (हकदारो) की तरफ तवज्जोह न कर सको, तो उन से नर्मी से बात कह दिया करो।[2] (२८) और अपने हाथ को न तो गरदन से बधा हुआ (यानी बहुत तंग) कर लो (कि किसी को कुछ दो ही नही) और न बिल्कुल खोल ही दो (कि सभी कुछ दे डालो और अजाम यह हो) कि मलामत किए हुए और निचले हो कर बैठ जाओ। (२९) बेशक तुम्हारा परवरदिगार, जिस की रोजी चाहता है, फैला देता है और (जिस की रोजी चाहता है) तग कर देता है। वह अपने बन्दो से ख़बरदार है और (उनको) देख रहा है★ (३०)

और अपनी औलाद को मुफ्लिसी के डर मे कत्ल न करना, (क्योकि) उन को और तुम को हम ही रोजी देते है। कुछ शक नही कि इन का मार डालना सख़्त गुनाह है। (३१) और जिना

---

१ यानी रज व अफसोस और ना-ख़ुशी का कलिमा मुह से न निकालना और न घुडकना-झिडकना और यह जो फरमाया कि बुढापे को पहुच जाए तो उन को उफ तक न कहना, यह इस लिए कि बुढापे मे मा-बाप की कुछ कद्र और परवाह नही की जाती। उन की इज्ज़त, अदब और एहतराम करना, चाहे वे जवान हो या बूढे, दोनो हालतो मे फर्ज़ है। इन्सानियत और सआदतमदी का तकाज़ा भी यही है कि मा-बाप को ख़ुश रखा जाए उन का अदब किया जाए। वह शख़्स निहायत ख़ुशनसीब है, जो मा-बाप की खिदमत करे और उन को ख़ुश रखे।

२ यानी देने को कुछ पास नही है और हाथ तग होने की वजह से उन की तरफ तवज्जोह नही कर सकते और चाहते यह हो कि ख़ुदा दे तो उन को दो। तो इस शक्ल मे उन को नर्मी से समझा दिया करो कि ख़ुदा के फज़्ल से माल हाथ आता है तो तुम को भी देते है।

★रु २/२ आ १२ ★रु ३/३ आ ८

व ला तक्तुलुन्-नफ्सल्लती हर्र-मल्लाहु इल्ला बिल्हक्कि ط व मन् कुति-ल मज़्लूमन् फ-कद् ज-अल्ना लिवलिय्यिही सुल्तानन् फला युस्रिफ्-फिल्कत्लि ط इन्नहू का-न मन्सूरा (३३) व ला तक्रबू मालल् - यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्लु - ग अशुद्दहू ص व औफ़ू बिल्अह्दि ج इन्नल्अह - द का - न मस्ऊला (३४) व औफुल्कै-ल इज़ा किल्तुम् व ज़िनू बिल् - किस्तासिल् - मुस्तकीमि ط ज़ालि - क ख़ैरुंव-व अह्सनु तअ्-वीला (३५) व ला तक्फु मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन् ط इन्नस्सम्-अ वल्ब-स-र वल्फुआ - द कुल्लु उलाइ-क का-न अन्हु मस्ऊला (३६) व ला तम्शि फिल्अर्जि म-र-हन् ج इन्न-क लन् तख्रिक़ल्-अर्-ज व लन् तब्लुगल्-जिबा-ल तूला (३७) कुल्लु ज़ालि-क का-न सय्यिउहू अिन्-द रब्बि-क मक्रूहा (३८) ज़ालि-क मिम्मा औहा इलै-क रब्बु-क मिनल्हिक्मति ط

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا
فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِفْ فِي الْقَتْلِ ۖ إِنَّهُ كَانَ
مَنْصُورًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۖ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝ وَأَوْفُوا
الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَ
أَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ
وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۝ وَلَا تَمْشِ فِي
الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۝
كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۝ ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ
إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي
جَهَنَّمَ مَلُومًا مَدْحُورًا ۝ أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ
الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا
الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝ قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ
كَمَا يَقُولُونَ إِذًا لَابْتَغَوْا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۝ سُبْحَانَهُ وَ
تَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ
وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِنْ لَا تَفْقَهُونَ
تَسْبِيحَهُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا

व ला तज्अल् म-अल्लाहि इलाहन् आख-र फ तुल्का फी ज-हन्न-म मलूमम्-मद्हूरा (३९) अ-फ-अस्फाकुम् रब्बुकुम् बिल्बनी-न वत्त-ख़-ज मिनल्-मलाइकति इनासन् ط इन्नकुम् ल - तक़ूलू-न क़ौलन् अज़ीमा ★ (४०) व ल - कद् सर्रफ्ना फी हाज़ल् - कुर्आनि लि - यज़्ज़क्करू ط व मा यज़ीदुहुम् इल्ला नुफूरा (४१) क़ुल् लौ का-न म-अहू आलिहतुन् कमा यकूलू-न इज़ल्लब्तग़ौ इला ज़िल्अर्शि सबीला (४२) सुब्हानहू व तआला अम्मा यकूलू-न अुलुव्वन् कबीरा (४३) तुसब्बिहु लहुस्समावातुस्-सब्अु वल्अर्जु व मन् फीहिन् - न ط व इम्मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व लाकिल्ला तफ्कहू - न तस्बीहहुम् ط इन्नहू का - न हलीमन् गफूरा (४४)

★रु. ४/४ आ १०

के पास भी न जाना कि वह बे-हयाई और बुरी राह है। (३२) और जिस जानदार का मारना खुदा ने हराम किया है, उसे कत्ल न करना मगर जायज तौर पर (यानी शरीअत के फत्वे के मुताबिक) और जो शख्स जुल्म से कत्ल किया जाए, हम ने उस के वारिस को अख्तियार दिया है (कि जालिम कातिल से बदला ले) तो उस को चाहिए कि कत्ल (के किसास) में ज्यादती न करे कि वह मंसूर व फत्हयाब है। (३३) और यतीम के माल के पास भी न फटकना, मगर ऐसे तरीके से कि बहुत बेहतर हो, यहां तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और अह्द (वायदे) को पूरा करो कि अह्द के बारे में जरूर पूछ होगी। (३४) और जब (कोई चीज) नाप कर देने लगो, तो पैमाना पूरा भरा करो और (जब तोल कर दो, तो) तराजू सीधी रख कर तोला करो। यह बहुत अच्छी बात है और अंजाम के लिहाज से भी बहुत बेहतर है। (३५) और (ऐ बन्दे!) जिस चीज का तुझे इल्म नहीं, उस के पीछे न पड़ कि कान और आंख और दिल इन सब (अंगों) से जरूर पूछ-ताछ होगी। (३६) और जमीन पर अकड़ कर (और तन कर) मत चल कि तू जमीन को फाड़ तो नहीं डालेगा और न लंबा हो कर पहाड़ों (की चोटी) तक पहुंच जाएगा। (३७) इन सब (आदतों) की बुराई तेरे परवरदिगार के नजदीक बहुत ना-पसन्द है। (३८) (ऐ पैगम्बर!) यह उन (हिदायतों) में से है जो खुदा ने हिक्मत की बातें तुम्हारी तरफ वह्य की हैं और खुदा के साथ कोई और माबूद न बनाना कि (ऐसा करने से) मलामत किया हुआ और (खुदा की दरगाह से) धुत्कारा हुआ बना कर जहन्नम में डाल दिए जाओगे। (३९) (मुश्रिको!) क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुम को तो लड़के दिए और खुद फरिश्तों को बेटियां बनाया। कुछ शक नहीं कि (यह) तुम बड़ी (ना-मुनासिब) बात कहते हो। (४०) ★

और हम ने इस कुरआन में तरह-तरह की बातें बयान की हैं, ताकि लोग नसीहत पकड़ें मगर वे इस से और बिदक जाते हैं। (४१) कह दो कि अगर खुदा के साथ और माबूद होते जैसा कि ये कहते हैं, तो वे जरूर (खुदा-ए-) मालिके अर्श की तरफ (लड़ने-भिड़ने के लिए) रास्ता निकालते। (४२) वह पाक है और जो कुछ ये बकवास करते हैं, उस से (उस का रुत्बा) बहुत ऊंचा है। (४३) सातों आसमान और जमीन और जो लोग उन में हैं, सब उसी की तस्बीह करते हैं और (मख्लूकात में से) कोई चीज नहीं मगर उस की तारीफ के साथ तस्बीह करती है, लेकिन तुम उन की तस्बीह को नहीं समझते बेशक वह बुर्दबार (और) बख्शने वाला है। (४४) और जब

★रु ४/४ आ १०

व इज़ा क-रअ्तल्-कुर्आ-न ज-अ़ल्ना बै-न-क व बैनल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति हिजाबम्-मस्तूरा (४५) व ज-अ़ल्ना अ़ला कुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक्-रन् व इज़ा ज़-कर्-त रब्ब-क फ़िल्कुर्आनि वह्-दहू वल्लौ अ़ला अद्बारिहिम् नुफ़ूरा (४६) नह्नु अअ्-लमु बिमा यस्तमिअू-न बिही इज् यस्तमिअू-न इलै-क व इज् हुम् नज्वा इज् यकूलुज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम्-मस्हूरा (४७) उन्ज़ुर् कै-फ़ ज़-रबू ल-कल्-अम्सा-ल फ़-ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअू-न सबीला ●(४८) व कालू अ इज़ा कुन्ना अ़िज़ामंव-व रुफ़ातन् अ इन्ना ल-मब्अूसू-न ख़ल्कन् जदीदा (४९) कुल् कूनू हिजा-र-तन् औ हदीदा (५०) औ ख़ल्कम्-मिम्मा यक्बुरु फ़ी सुदूरिकुम् फ़-स-यकूलू-न मंय्युअ़ीदुना कुलिल्लज़ी फ़-त-रकुम् अव्व-ल मर्रतिन् फ़-सयुन्गिज़ू-न इलै-क रुऊसहुम् व यकूलू-न मता हु-व कुल् अ़सा अंय्यकू-न क़रीबा (५१) यौ-म यद्अूकुम् फ़-तस्तजीबू-न बिहम्दिही व तज़ुन्नू-न इल्लबिस्तुम् इल्ला क़लीला ★(५२) व कुल्लि अ़िबादी यकूलुल्लती हि-य अह्सनु इन्नश्शैता-न यन्ज़गु बैनहुम् इन्नश्शैता-न का-न लिल्इन्सानि अ़दुव्वम्-मुबीना (५३) रब्बुकुम् अअ्-लमु बिकुम् इंय्यशअ् यर्हम्कुम् औ इंय्यशअ् युअ़ज़्ज़िब्कुम् व मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् वकीला (५४) व रब्बु-क अअ्-लमु बिमन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व ल-क़द् फ़ज़्ज़ल्ना बअ्-ज़न्नबिय्यी-न अ़ला बअ्-ज़िंव-व आतैना दावू-द ज़बूरा (५५) कुलिद्अुल्लज़ी-न ज़-अ़म्तुम् मिन् दूनिही फ़ला यम्लिकू-न कश्-फ़ज़्ज़ुर्रि अ़न्कुम् व ला तह्वीला (५६)

بينك وبين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا مستورا ۝ و
جعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفي آذانهم وقرا وإذا ذكرت
ربك في القرآن وحده ولوا على أدبارهم نفورا ۝ نحن أعلم بما
يستمعون به إذ يستمعون إليك وإذ هم نجوى إذ يقول
الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا ۝ انظر كيف ضربوا لك
الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا ۝ وقالوا أإذا كنا عظاما
ورفاتا أإنا لمبعوثون خلقا جديدا ۝ قل كونوا حجارة أو
حديدا ۝ أو خلقا مما يكبر في صدوركم فسيقولون من
يعيدنا قل الذي فطركم أول مرة فسينغضون إليك رءوسهم
ويقولون متى هو قل عسى أن يكون قريبا ۝ يوم يدعوكم
فتستجيبون بحمده وتظنون إن لبثتم إلا قليلا ۝ وقل لعبادي
يقولوا التي هي أحسن إن الشيطان ينزغ بينهم إن الشيطان
كان للإنسان عدوا مبينا ۝ ربكم أعلم بكم إن يشأ يرحمكم أو
إن يشأ يعذبكم وما أرسلناك عليهم وكيلا ۝ وربك أعلم
بمن في السماوات والأرض ولقد فضلنا بعض النبيين على بعض
وآتينا داود زبورا ۝ قل ادعوا الذين زعمتم من دونه فلا يملكون
كشف الضر عنكم ولا تحويلا ۝ أولئك الذين يدعون يبتغون

●रुब्अ् १/४ ★रु ५/५ आ १२

तुम कुरआन पढा करते हो, तो हम तुम मे और उन लोगो मे जो आखिरत पर ईमान नही रखते, हिजाब (पर्दा) पर हिजाव कर देते है। (४५) और उन के दिलो पर पर्दा डाल देते है कि उसे समझ न सके और उन के कानो मे बोझ पैदा कर देते है और जब तुम कुरआन मे अपने परवरदिगार यकता का ज़िक्र करते हो, तो वे बिदक जाते और पीठ फेर कर चल देते है। (४६) ये लोग जब तुम्हारी तरफ कान लगाते है तो जिस नीयत से ये सुनते है, हम उसे खूब जानते है और जब ये फूसी करते है, (यानी) जब जालिम कहते है कि तुम तो एक ऐसे शख्स की पैरवी करते हो, जिस पर जादू किया गया है। (४७) देखो, उन्हो ने किस-किस तरह की तुम्हारे बारे मे बाते बनायी, सो ये गुमराह हो रहे है और रास्ता नही पा सकते ●(४८) और कहते है कि जब हम (मर कर बोसीदा) हड्डिया और चूर-चूर हो जाएगे, तो क्या नये सिरे से पैदा हो कर उठेगे। (४९) कह दो कि (चाहे तुम) पत्थर हो जाओ या लोहा, (५०) या कोई और चीज, जो तुम्हारे नज़दीक (पत्थर लोहे से भी) बड़ी (सख्त) हो, (झट कहेगे) कि (भला) हमे दोबारा कौन जिलाएगा ? कह दो वही जिस ने पहली बार पैदा किया, तो (ताज्जुब मे) तुम्हारे आगे सर हिलाएगे और पूछेगे कि ऐसा कब होगा ? कह दो उम्मीद है कि जल्द होगा। (५१) जिस दिन वह तुम्हे पुकारेगा, तो तुम उस की तारीफ के साथ जवाब दोगे और ख्याल करोगे कि तुम (दुनिया मे) बहुत कम (मुद्दत) रहे। (५२)★

और मेरे बन्दो से कह दो कि (लोगो से) ऐसी बाते कहा करे, जो बहुत पसदीदा हो, क्योकि शैतान (बुरी बातो से) उन मे फसाद डलवा देता है। कुछ शक नही कि शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। (५३) तुम्हारा परवरदिगार तुम को खूब जानता है। अगर चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर चाहे तो तुम्हे अज़ाब दे और हम ने तुम को उन पर दारोगा (बना कर) नही भेजा। (५४) और जो लोग आसमानो और जमीन मे है, तुम्हारा परवरदिगार उन्हे खूब जानता है। और हमने कुछ पैगम्बरो को कुछ पर फज़ीलत बख्शी और दाऊद को जबूर दी।(५५) कहो कि (मुश्रिको !) जिन लोगो के बारे मे तुम्हे (माबूद होने का) ख्याल है, उन को बुला देखो। वह तुम मे तक्लीफ के दूर करने या उस को बदल देने का कुछ अख्तियार नही रखते। (५६) ये लोग

●रुकूअ १/४ ★रु ५/५ आ १२

उलाइकल्लज़ी-न यद्‌ऊ-न यब्तगू-न इला रब्बिहिमुल् - वसी-ल - त़ अय्युहुम् अक़्रबु व यर्जू-न रह़्म-तहू व यख़ाफ़ू-न अज़ाबहू ♭ इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बि-क का-न मह़्ज़ूरा (५७) व इम्मिन् क़र्यतिन् इल्ला नह़्नु मुह्लिकूहा क़ब्-ल यौमिल्‌कियामति औ मुअ़ज़्ज़िबूहा अ़ज़ाबन् शदीदा ♭ का - न ज़ालि - क फ़िल्‌किताबि मस्तूरा (५८) व मा म-न-अ़्ना अन्नुर्सि-ल बिल्‌आयाति इल्ला अन् कज़्ज़ - ब बिहल् - अव्वलू-न ♭ व आतैना समूदन्ना-क-त मुब्सि-र-तन् फ़-ज़-लमू बिहा ♭ व मा नुर्सिलु बिल्‌आयाति इल्ला तख़्वीफ़ा (५९) व इज़् क़ुल्ना ल-क इन्-न रब्ब-क अहा-त़ बिन्नासि ♭ व मा ज-अ़ल्नर्रुअ्-यल्लती अरैना - क इल्ला फ़ित-न-तल् - लिन्नासि वश्श-ज-र तल् - मल्‌ऊन-त़ फ़िल्‌कुर्‌आनि ♭ व नुख़व्विफ़ुहुम् ♭♭ फ़मा यज़ीदुहुम् इल्ला तुग़्यानन् कबीरा ★ (६०) व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइकतिस्जुदू लिआद - म

إلى ربهم الوسيلة أيهم أقرب ويرجون رحمته ويخافون عذابه إن
عذاب ربك كان محذورا ۝ وإن من قرية إلا نحن مهلكوها قبل
يوم القيمة أو معذبوها عذابا شديدا كان ذلك في الكتب
مسطورا ۝ وما منعنا أن نرسل بالأيت إلا أن كذب بها الأولون
وآتينا ثمود الناقة مبصرة فظلموا بها وما نرسل بالأيت إلا
تخويفا ۝ وإذ قلنا لك إن ربك أحاط بالناس وما جعلنا الرءيا
التي أريناك إلا فتنة للناس والشجرة الملعونة في القرآن و
نخوفهم فما يزيدهم إلا طغيانا كبيرا ۝ وإذ قلنا للملئكة اسجدوا
لآدم فسجدوا إلا إبليس قال ءأسجد لمن خلقت طينا ۝ قال
أرءيتك هذا الذي كرمت علي لئن أخرتن إلى يوم القيمة
لأحتنكن ذريته إلا قليلا ۝ قال اذهب فمن تبعك منهم فإن
جهنم جزاؤكم جزاء موفورا ۝ واستفزز من استطعت منهم
بصوتك وأجلب عليهم بخيلك ورجلك وشاركهم في الأموال
والأولاد وعدهم وما يعدهم الشيطن إلا غرورا ۝ إن عبادي
ليس لك عليهم سلطن وكفى بربك وكيلا ۝ ربكم الذي
يزجي لكم الفلك في البحر لتبتغوا من فضله إنه كان بكم
رحيما ۝ وإذا مسكم الضر في البحر ضل من تدعون إلا إياه

फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स ♭ का-ल अ अस्जुदु लिमन् ख़-लक़्-त तीना ८ (६१) का-ल अ-रऐ-त-क हाज़ल्लज़ी कर्रम्-त अ़-लय-य ♪ लइन् अख़्ख़र्तनि इला यौमिल्‌कियामति ल-अह्-तनिकन्-न ज़ुर्रिय्य-तहू इल्ला क़लीला (६२) कालज़्‌हब् फ़-मन् तबि-अ-क मिन्हुम् फ़-इन्-न ज-हन्न-म जज़ाउकुम् जज़ाअम्-मौफ़ूरा (६३) वस्तफ़्ज़िज़् मनिस्त-त़अ्-त मिन्हुम् बिसौति-क व अज्लिब् अ़लैहिम् बिख़ैलि-क व रजिलि-क व शारिक्हुम् फ़िल्‌अम्वालि वल्‌औलादि व अ़िद्‌हुम् ♭ व मा यअ़िदुहुमुश्-शैतानु इल्ला ग़ुरूरा (६४) इन्-न अ़िबादी लै-स ल-क अ़लैहिम् सुल्तानुन् ♭ व कफ़ा बिरब्बि-क वकीला (६५) रब्बुकुमुल्लज़ी युज़्जी लकुमुल्फ़ुल्-क फ़िल्‌बह़्रि लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही ♭ इन्नहू का-न बिकुम् रहीमा (६६)

★रु ६/६ आ ८

जिन को (खुदा के सिवा) पुकारते है, वे खुद अपने परवरदिगार के यहा (तकर्रुब का) जरिया तलाश करते है कि कौन उन मे (खुदा का) ज्यादा मुकर्रब (होता) है और उस की रहमत के उम्मीदवार रहते है और उस के अजाब मे खौफ रखते है। बेशक तुम्हारे परवरदिगार का अजाब डरने की चीज है। (५७) और (कुफ्र करने वालो की) कोई बस्ती नही मगर कियामत के दिन से पहले हम उसे हलाक कर देंगे या सख्त अजाब से मुअज्जब करेंगे। यह किताब (यानी तक्दीर) मे लिखा जा चुका है।(५८) और हम ने निशानिया भेजनी इसलिए बन्द कर दी कि अगले लोगो ने उन को झुठलाया था और हम ने समूद को ऊंटनी (सालेह की नुबूवत की खुली) निशानी दी, तो उन्हो ने उस पर जुल्म किया और हम जो निशानिया भेजा करते है, तो डराने को। (५९) जब हम ने तुम से कहा कि तुम्हारा परवरदिगार लोगो को एहाता किए हुए है और जो नुमाइश हम ने तुम्हे दिखायी, उस को लोगो के लिए आजमाइश किया और इसी तरह (थूहर के) पेड को, जिस पर कुरआन मे लानत की गयी और हम उन्हे डराते है तो उन को उस मे बडी (सख्त) सरकशी पैदा हुई है। (६०)★

और जब हमने फरिश्तो से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो सब ने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने न किया, बोला, भला मैं ऐसे शख्स को सज्दा करु, जिस को तू ने मिट्टी से पैदा किया है। (६१) (और तान के तौर पर) कहने लगा कि देख तो यही वह है जिसे तू ने मुझ पर फजीलत दी है। अगर तू मुझ को कियामत के दिन तक की मोहलत दे, तो मै थोडे से शख्सो के सिवा उस की (तमाम) औलाद की जड काटता रहूगा। (६२) खुदा ने फरमाया (यहा से) चला जा। जो शख्स इन मे से तेरी पैरवी करेगा, तो तुम सब की सजा जहन्नम है (और वह) पूरी सजा (है)। (६३) और उन मे से जिस को बहका सके, अपनी आवाज से बहकाता रह और उन पर अपने सवारो और प्यादो को चढा कर लाता रह और उन के माल और औलाद मे शरीक होता रह और उन से वायदे करता रह और शैतान जो वायदे उन से करता है, सब धोखा है। (६४) जो मेरे (मुख्लिस) बन्दे हैं उन पर तेरा कुछ जोर नही और ऐ (पैगम्बर!) तुम्हारा परवरदिगार कारसाज काफी है। (६५) तुम्हारा परवरदिगार वह है, जो तुम्हारे लिए दरिया मे किश्तिया चलाता है ताकि तुम उस के फज्ल से (रोजी) तलाश करो। बेशक वह तुम पर मेहरबान है। (६६) और जब तुम —

★रु ६/६ आ ८

व इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़िल्बह्रि जल्-ल मन् तद्ऊ-न इल्ला इय्याहु फ़-लम्मा नज्जाकुम् इलल्बर्रि अअ्-रज़्तुम् व कानल्-इन्सानु कफ़ूरा (६७) अ-फ़-अमिन्तुम् अय्यख़्सि-फ बिकुम् जानिबल्-बर्रि औ युर्सि-ल अलैकुम् हासिबन् सुम्-म ला तजिदू लकुम् वकीला (६८) अम् अमिन्तुम् अय्युई-दकुम् फ़ीहि ता-र-तन् उख़्रा फ़युर्सि-ल अलैकुम् क़ासिफ़म्-मिनर्रीहि फ़-युग्रिक़-कुम् बिमा क-फ़र्तुम् सुम्-म ला तजिदू लकुम् अलैना बिही तबीआ (६९) व ल-क़द् कर्रम्ना बनी आद-म व ह-मल्नाहुम् फ़िल्बर्रि वल्बह्रि व र-ज़क़्नाहुम् मिनत्-तय्यिबाति व फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अला कसीरिम्-मिम्मन् ख़-लक़्ना तफ़्ज़ीला ★(७०) यौ-म नद्ऊ कुल्-ल उनासिम्-बि-इमामिहिम् फ़-मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही फ़उलाइ-क यक़्रऊ-न किताबहुम् व ला युज़्लमू-न फ़तीला (७१) व मन् का-न फ़ी हाज़िही अअ्-मा फ़हु-व फ़िल्आख़िरति अअ्-मा व अज़ल्लु सबीला (७२) व इन् कादू ल-यफ़्तिनू-न-क अनिल्लज़ी औहैना इलै-क लितफ़्तरि-य अलैना ग़ैरहू व इज़ल्लत्तख़ज़ू-क ख़लीला (७३) व लौला अन् सब्बत्ना-क ल-क़द् कित्-त तर्कनु इलैहिम् शैअन् क़लीला (७४) इज़ल्-ल अ-ज़क़्ना-क ज़िअ्-फ़ल्-हयाति व ज़िअ्-फ़ल्-ममाति सुम्-म ला तजिदु ल-क अलैना नसीरा (७५) व इन् कादू ल-यस्तफ़िज़्ज़ू-न-क मिनल्अर्ज़ि लियुख़्रिजू-क मिन्हा व इज़ल्ला यल्बसू-न ख़िलाफ़-क इल्ला क़लीला (७६) सुन्न-त मन् क़द् अर्सल्ना क़ब्ल-क मिर्रुसुलिना व ला तजिदु लिसुन्नतिना तह्वीला ★(७७) अक़िमिस्सला-त लिदुलूकिश्-शम्सि इला ग़-सक़िल्लैलि व क़ुर्आनल्-फ़ज्रि इन-न क़ुर्आनल्-फ़ज्रि का-न मश्हूदा (७८) व मिनल्लैलि फ़-त-हज्जद् बिही नाफ़ि-ल-तल्ल-क असा अय्यब्अ-स-क रब्बु-क मक़ामम्-मह्मूदा (७९)

سورة بني اسرآءيل ٢٣١ سبحن الذي ١٥

فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ۝ اَفَاَمِنْتُمْ
اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ
وَكِيْلًا ۝ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ
تَبِيْعًا ۝ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ
مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝ يَوْمَ
نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍ بِاِمَامِهِمْ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ
يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ
فِى الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝ وَلَوْ
لَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيْلًا ۝ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ
ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝ وَاِنْ
كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ
خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ
لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ۝ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَ
قُرْاٰنَ الْفَجْرِ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ
نَافِلَةً لَّكَ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ

★रु ७/७ आ १० ★रु. ८/८ आ ७

दरिया मे तक्लीफ पहुचती है (यानी डूबने का ख़ौफ होता है) तो जिन को तुम पुकारा करते हो सब उस (परवरदिगार) के सिवा गुम हो जाते हैं। फिर जब वह तुम को (डूबने मे) बचा कर ख़ुश्की की तरफ ले जाता है, तो तुम मुह फेर लेते हो और इसान है ही ना-शुक्रा। (६७) क्या तुम (इस से) बे-ख़ौफ हो कि ख़ुदा तुम्हें ख़ुश्की की तरफ (ले जा कर ज़मीन मे) धसा दे या तुम पर संगरेज़ो की भरी हुई आधी चला दे, फिर तुम अपना कोई निगहबान न पाओ। (६८) या (इस से) बे-ख़ौफ हो कि तुम को दूसरी बार दरिया मे ले जाए, फिर तुम पर तेज हवा चलाए और तुम्हारे कुफ्र की वजह से तुम्हे डुबो दे। फिर तुम उस गर्क की वजह मे अपने लिए कोई हमारा (पीछा करने वाला) न पाओ। (६९) और हम ने बनी आदम को इज़्ज़त बख़्शी और उन को जगल और दरिया मे सवारी दी और पाकीज़ा रोज़ी अता की और अपनी बहुत-सी मख़्लूकात पर फजीलत दी। (७०) ★

जिस दिन हम सब लोगो को उन के पेशवाओ के साथ बुलाएगे, तो जिन (के आमाल) की किताब उन के दाहिने हाथ मे दी जाएगी, वह अपनी किताब को (ख़ुश हो-हो कर) पढ़ेंगे और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म न होगा। (७१) और जो शख़्स इस (दुनिया) मे अधा हो, वह आखिरत मे भी अधा होगा, और (निजात के) रास्ते से बहुत दूर, (७२) और ऐ पैगम्बर ! जो वह्य हम ने तुम्हारी तरफ भेजी है, करीब था कि ये (काफिर) लोग तुम को इस मे बिचला दे, ताकि तुम इस के सिवा और बाते हमारे बारे मे बना लो और उस वक्त वह तुम को दोस्त बना लेते।[1] (७३) और अगर हम तुम को साबित कदम न रहने देते तो तुम किसी कदर उन की तरफ मायल होने ही लगे थे। (७४) उस वक्त हम तुम को ज़िंदगी मे भी (अज़ाब का) दोगुना और मरने पर भी दोगुना अजाब चखाते, फिर तुम हमारे मुकाबले मे किसी को अपना मददगार न पाते। (७५) और करीब था कि ये लोग तुम्हे जमीन (मक्का) से फिसला दे ताकि तुम्हे वहा से देश निकाला दे दे और उस वक्त तुम्हारे पीछे यह भी न रहते, मगर कम। (७६) जो पैगम्बर हम ने तुम से पहले भेजे थे, उन का (और उन के बारे मे हमारा, यही) तरीका रहा है और तुम हमारे तरीके मे तब्दीली न पाओगे। (७७) ★

(ऐ मुहम्मद !) सूरज के ढलने से रात के अधेरे तक (ज़ुहर, अस्र, मग्रिब, इशा की) नमाज़े और सुबह को कुरआन पढा करो, क्यो कि सुबह के वक्त कुरआन का पढना मूजिबे हुज़ूर (फरिश्ता) है। (७८) और रात के हिस्से मे जागा करो (और तहज्जुद की नमाज़ पढा करो)। (यह रात का जागना) तुम्हारे लिए ज्यादती (की वजह) है, और (तहज्जुद की नमाज तुम को नफ्ल) है करीब है कि ख़ुदा तुम को मकामे महमूद मे दाखिल करे। (७९) और कहो कि ऐ परवरदिगार ! मुझे

---

१ काफिर कहते थे कि इस कलाम मे नसीहत की बातें अच्छी है, मगर हर जगह शिर्क पर रद्द रखा है [illegible] डाल, तो हम इस सब को मानें।

व कुरब्बि अद्खिल्नी मुद्-ख-ल सिद्किव्-व अख्रिज्नी मुख्-र-ज सिद्किव्वज्-अल्ली मिल्लदुन् - क सुल्तानन् नसीरा (८०) व कुल् जा-अल् - हक्कु व ज-ह-कल्-बातिलु ♭ इन्नल्बाति-ल का-न जहूका (८१) व नुनज़्ज़िलु मिनल्कुर्आनि मा हु-व शिफाउव्-व रह्-मतुल्लिल् - मुअ्मिनी-न ‖ व ला यज़ीदुज़्ज़ालिमी-न इल्ला ख़सारा (८२) व इज़ा अन-अम्ना अ-लल्इन्सानि अअ्-र-ज व नआ बिजानिबिही ꞔ व इज़ा मस्सहुश्-शर्रु का-न यऊसा (८३) कुल् कुल्लुंय्यअ्-मलु अला शाकिलतिही ♭ फ-रब्बुकुम् अअ्-लमु बिमन् हु-व अह्दा सबीला ★ (८४) व यस्-अलून-क अनिर्रूहि ♭ कुलिर्रूहु मिन् अम्रि रब्बी व मा ऊतीतुम् मिनल्अिल्मि इल्ला क़लीला (८५) व लइन् शिअ्ना ल-नज्-ह-बन्-न बिल्लज़ी औहैना इलै-क सुम्-म ला तजिदु ल-क बिही अलैना वकीला ‖ (८६) इल्ला रह्-म-तम् - मिर्-रब्बि-क ♭ इन्-न फज़्लहू का-न अलै-क कबीरा (८७) कुल्-ल इनिज्-त-म-अ़तिल्-इन्सु वल्जिन्नु अला अंय्यअ्तू बिमिस्लि हाज़ल्-कुर्आनि ला यअ्तू-न बिमिस्लिही व लौ का-न बअ्-जुहुम् लिबअ्-ज़िन् ज़हीरा (८८) व ल-क़द् सर्रफ्ना लिन्नासि फी हाज़ल्-कुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन् ‖ फ-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफूरा (८९) व कालू लन् नुअ्मि-न ल-क हत्ता तफ्जु-र लना मिनल्अर्ज़ि यम्बूआ ‖ (९०) औतकू-न ल-क जन्नतुम्मिन् नख़ीलिव्-व अि-नबिन् फतुफज्जिरल्-अन्हा-र ख़िलालहा तफ्जीरा ‖ (९१) औ तुस्कितस्समा-अ कमा ज-अम्-त अलैना कि-स-फन् औ तअ्ति-य बिल्लाहि वल्मलाइकति कबीला ‖ (९२) औ यकू-न ल-क बैतुम्मिन् ज़ुख्रुफिन् औ तर्क़ा फिस्समाइ ♭ व लन् नुअ्मि-न लिरुकिय्यि-क हत्ता तुनज्जि-ल अलैना किताबन् नक्रऊहु ♭ कुल् . सुब्हा-न रब्बी हल् कुन्तु इल्ला ब-श-रर्-रसूला ★ (९३)

سُبْحٰنَ الَّذِیْ ١٥ ٣٣٢ بنی اسرآءيل ١٧

مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ
سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ○ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ
زَهُوْقًا ○ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا
يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ○ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَ
نَاٰ بِجَانِبِهٖ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوْسًا ○ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ
فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ○ وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ قُلِ
الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ○ وَلَئِنْ
شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ○
اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ○ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ
الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ
لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ○ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا
الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ○ وَقَالُوْا لَنْ
نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ○ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ
مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ○ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ
كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِیَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ○ اَوْ يَكُوْنَ
لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِی السَّمَآءِ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ
حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا

★रु ९/९ आ ७ ★रु १०/१० आ ६

(मदीने मे) अच्छी तरह दाखिल कीजियो और (मक्के मे) अच्छी तरह निकालियो और अपने यहा से जोर व कूवत को मेरा मददगार बनाइयो। (८०) और कह दो कि हक आ गया और बातिल नाबूद हो गया बेशक बातिल नाबूद होने वाला है। (८१) और हम कुरआन (के जरिए) से वह चीज़ नाजिल करते है, जो मोमिनो के लिए शिफा और रहमत है और जालिमो के हक मे तो इस से नुक्सान ही बढता है। (८२) और जब हम इसान को नेमत बख्शते है, तो मुह फेर लेता और पहलू फेर लेता है और जब उसे सख्ती पहुचती है तो ना-उम्मीद हो जाता है। (८३) कह दो कि हर शख्स अपने तरीके के मुताबिक अमल करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार उस शख्स को खूब जानता है, जो सब से ज्यादा सीधे रास्ते पर है। (८४)★

और तुम से रूह के बारे मे सवाल करते है। कह दो कि वह मेरे परवरदिगार की एक शान है और तुम लोगो को (बहुत ही) कम इल्म दिया गया है। (८५) और अगर हम चाहे तो जो (किताब) हम तुम्हारी तरफ भेजते है, उसे (दिलो से) मिटा दे। फिर तुम उस के लिए हमारे मुकाबले मे किसी को मददगार न पाओ। (८६) मगर (उस का कायम रहना) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है। कुछ शक नही कि तुम पर उस का बडा फज्ल है। (८७) कह दो कि अगर इन्सान और जिन्न इस बात पर जमा हो कि इस कुरआन जैसा बना लाए, तो इस जैसा न ला सके, अगरचे वे एक दूसरे के मददगार हो। (८८) और हम ने इस कुरआन मे सब बाते तरह-तरह से बयान कर दी है, मगर अक्सर लोगो ने इकार करने के सिवा कुबूल न किया। (८९) और कहने लगे कि हम तुम पर ईमान नही लाएगे, जब तक कि (अजीब व गरीब बाते न दिखाओ, यानी या तो) हमारे लिए जमीन मे से चश्मा जारी कर दो, (९०) या तुम्हारा खजूरो और अगूरो का कोई बाग हो और उस के बीच मे नहरे बहा निकालो, (९१) या जैसा तुम कहा करते हो हम पर आसमान से टुकड़े ला गिराओ या खुदा और फरिश्तो को (हमारे) सामने ले आओ। (९२) या तुम्हारा सोने का घर हो या तुम आसमान पर चढ जाओ और हम तुम्हारे चढने को भी नही मानेगे जब तक कि कोई किताब न लाओ, जिसे हम पढ भी ले। कह दो कि मेरा परवरदिगार पाक है। मैं तो सिर्फ एक पैगाम पहुचाने वाला इसान हू। (९३)★

★रु ९/९ आ ७ ★रु १०/१० आ ९

व मा म-न-अ़न्ना-स अय्युअ्मिनू इज़् जा-अ-हुमुल्-हुदा इल्ला अन् कालू अ-ब-अ़-सल्लाहु ब-श-रर्-रसूला (९४) कुल् लौ का-न फ़िल्अर्जि मलाइकतुंय्यम्शू-न मुत्मइन्नी-न ल-नज्ज़ल्ना अ़लैहिम् मिनस्समाइ म-ल-कर्रसूला (९५) कुल् कफा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम् ط इन्नहू का-न बिअिबादिही ख़बीरम्-बसीरा (९६) व मंय्यह्दिल्लाहु फहुवल्मुह्तदि ج व मंय्युज्लिल् फ-लन् तजि-द लहुम् औलिया-अ मिन्दूनिही ط व नह्शुरुहुम् यौमल्कियामति अ़ला वुजूहिहिम् अुम्यव-व बुक्मव-व सुम्मन् ط मअ्वाहुम् जहन्नमु ط कुल्लमा ख-बत् ज़िद्नाहुम् सअ़ीरा ● (९७) ज़ालि-क जज़ाउहुम् बिअन्नहुम् क-फ़रू बिआयातिना व कालू अ इज़ा कुन्ना अ़िज़ामव-व रुफातन् अ इन्ना ल-मब्अूसू-न ख़ल्कन् जदीदा (९८) अ-व-लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख-ल-कस्समावाति वल्अर्-ज़ कादिरुन् अ़ला अंय्यख्लु-क मिस्-लहुम् व ज-अ-ल लहुम् अ-ज-लल्-ला रै-ब फीहि ط फ-अ-बज़्ज़ालिमू-न इल्ला कुफ़ूरा (९९) कुल् लौ अन्तुम् तम्लिकू-न ख़ज़ाइ-न रह्मति रब्बी इज़ल्-ल अम्-सक्तुम् ख़श-य-तल्-इन्फाकि ط व कानल्-इन्सानु कतूरा ★ (१००) व ल-कद् आतैना मूसा तिस्-अ आयातिम्-बय्यिनातिन् फस्अल् बनी इस्राई-ल इज़् जाअहुम् फका-ल लहू फ़िर्औनु इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या मूसा मस्हूरा (१०१) का-ल ल-कद् अ़लिम्-त मा अन्ज-ल हाउलाइ इल्ला रब्बुस्समावाति वल्अर्जि बसाइ-र ج व इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या फ़िर्औनु मस्बूरा (१०२) फ-अरा-द अंय्यस्तफ़िज़्ज़हुम् मिनल्अर्ज़ि फ-अग़रक्नाहु व मम्म-अहू जमीअं ۙ-(१०३) व कुल्ना मिम्बअ्-दिही लिबनी इस्राईलस्कुनुल्-अर्-ज़ फ़इज़ा जा-अ वअ्-दुल्-आख़िरति जिअ्ना बिकुम् लफ़ीफ़ा ط (१०४)

رَسُولًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَن قَالُوا
أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٤﴾ قُل لَّوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ
مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَّسُولًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفَىٰ
بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾ وَمَن
يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِن
دُونِهِ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا مَّأْوَاهُمْ
جَهَنَّمُ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُم بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا
وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾ أَوَلَمْ
يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ
مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾
قُل لَّوْ أَنتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَّأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنفَاقِ
وَكَانَ الْإِنسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَاسْأَلْ
بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا مُوسَىٰ
مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنزَلَ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
بَصَائِرَ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا فِرْعَوْنُ مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾ فَأَرَادَ أَن يَسْتَفِزَّهُم
مِّنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ جَمِيعًا ﴿١٠٣﴾ وَقُلْنَا مِن بَعْدِهِ
لِبَنِي إِسْرَائِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ

● नि. १/२ ★ रु ११/११ आ ७

और जब लोगो के पास हिदायत आ गयी तो उन को ईमान लाने मे इस के सिवा कोई चीज रुकावट न हुई कि कहने लगे कि क्या खुदा ने आदमी को पैगम्बर कर के भेजा है। (९४) कह दो कि अगर जमीन मे फरिश्ते होते (कि इस मे) चलते-फिरते (और) आराम करते (यानी बसते) तो हम उन के पास फरिश्तो को पैगम्बर बना कर भेजते। (९५) कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान खुदा ही गवाह काफ़ी है। वही अपने बन्दो से खबरदार (और उनको) देखने वाला है। (९६) और जिस शख्स को खुदा हिदायत दे, वही हिदायत पाया हुआ है और जिन को गुमराह करे तो तुम अल्लाह के सिवा उन के दोस्त नही पाओगे और हम उन को कियामत के दिन औंधे मुह अंधे-गूंगे और बहरे (बना कर) उठाएंगे। और उन का ठिकाना दोजख है। जब (उस की आग) बुझने को होगी तो हम उन को (अजाब देने) के लिए और भड़का देगे ● (९७) यह उन की सजा है, इस लिए कि वे हमारी आयतो से कुफ्र करते थे और कहते थे कि जब हम (मर कर सड़ी-गली) हड्डिया और चूरा-चूरा हो जाएगे तो क्या नये सिरे से पैदा किये जाएगे ? (९८) क्या उन्हो ने नही देखा कि खुदा जिस ने आसमानो और ज़मीन को पैदा किया है, इस बात की कुदरत रखता है कि उन जैसे (लोग) पैदा कर दे और उस ने उन के लिए एक वक्त मुकर्रर कर दिया है, जिस मे कुछ भी शक नही। तो जालिमो ने इकार करने के सिवा (उसे) कुबूल न किया। (९९) कह दो कि अगर मेरे परवरदिगार की रहमत के खजाने तुम्हारे हाथ मे होते, तो तुम खर्च हो जाने के डर से (उन को) बन्द रखते और इसान दिल का बहुत तग है। (१००) ✶

और हम ने मूसा को नौ खुली निशानिया दी, तो बनी इस्राईल से मालूम कर लो कि जब वह उन के पास आए तो फ़िऔन ने उन से कहा कि मूसा ! मैं ख्याल करता हू कि तुम पर जादू किया गया है। (१०१) उन्हों ने कहा कि तुम यह जानते हो कि आसमानो और जमीन के परवरदिगार के सिवा उन को किसी ने नाजिल नही किया (और वह भी तुम लोगो के) समझाने को और ऐ फ़िऔन ! मैं ख्याल करता हू कि तुम हलाक हो जाओगे। (१०२) तो उस ने चाहा कि उन को (मिस्र की) धरती से निकाल दे, तो हम ने उस को और जो उस के साथ थे, सब को डुबा दिया। (१०३) और उस के बाद बनी इस्राईल से कहा कि तुम इस मुल्क मे रहो-सहो फिर जब आखिरत का वायदा आ जाएगा, तो हम तुम सब को जमा कर के ले जाएगे। (१०४) और हम ने

● नि. १/२ ★रु ११/११ आ ७

व बिल्ह़क्कि अन्ज़ल्नाहु व बिल्ह़क्कि न-ज़ल ط व मा अर्सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरव्-व नज़ीरा ▨(१०५) व क़ुरआनन् फ़-रक़्नाहु लि-तक़्र-अहू अ़लन्नासि अ़ला मुक्सिव्-व नज़्ज़ल्नाहु तन्ज़ीला (१०६) क़ुल् आमिनू बिही औ ला तुअ्मिनू ط इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्अ़िल-म मिन् क़ब्लिही इज़ा युत्ला अ़लैहिम् यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि सुज्जदा ۙ (१०७) व यक़ूलू-न सुब्ह़ा-न रब्बिना इन् का-न वअ्-दु रब्बिना ल-मफ़्अ़ूला (१०८) व यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि यब्कू-न व यज़ीदुहुम् ख़ुशूआ □(१०९) क़ुलिद्अ़ुल्ला-ह अविद्अ़ुर्-रह़्मा-न ط अय्यम्-मा तद्अ़ू फ़-लहुल्-अस्माउल्-ह़ुस्ना ج व ला तज्-हर् बिसलाति-क व ला तुख़ाफ़ित् बिहा वब्तग़ि बै-न ज़ालि-क सबीला (११०) व क़ुलिल्-ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् व-ल-दव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व-लम् यकुल्लहू वलिय्युम्-मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिर्हु तक्बीरा ★(१११)

لَفِيفًا ۝ وَبِالْحَقِّ أَنزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَ
نَذِيرًا ۝ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَىٰ مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنزِيلًا ۝
قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ۚ إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ
عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ۝ وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِن كَانَ
وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۝ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ
خُشُوعًا ۝ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَّا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ۝
وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي
الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ۝

سُورَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَعَشْرُ آيَاتٍ وَاثْنَا عَشَرَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَل لَّهُ عِوَجًا ۝
قَيِّمًا لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّن لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ
يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۝ مَّاكِثِينَ فِيهِ أَبَدًا ۝
وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۝ مَّا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا
لِآبَائِهِمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ إِن يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۝
فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ إِن لَّمْ يُؤْمِنُوا بِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ۝

१८ सूरतुल्-कह्फ़ ६९

(मक्की) इस सूर मे अ़रबी के ६६२० अक्षर, १२०१ शब्द, ११० आयते और १२ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम ●

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़-ल अ़ला अ़ब्दिहिल्-किता-ब व लम् यज्अ़ल्लहू अि-व-जा سكته ط (१) क़य्यिमल्-लियुन्ज़ि-र बअ्-सन् शदीदम्-मिल्लदुन्हु व युबश्शिरल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ्-मलूनस्-सालिह़ाति अन्-न लहुम् अज्-रन् ह़-स-नम्- ۙ (२) माकिसी-न फ़ीहि अ-ब-दव्- ۙ (३) व युन्ज़िरल्लज़ी-न क़ालुत्त-ख़-ज़ल्लाहु व-ल-दा ق (४) मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिव्-व ला लि-आबाइहिम् ط कबुरत् कलि-म-तन् तख़्रुजु मिन् अफ़्वाहिहिम् ط इ य्यक़ूलू-न इल्ला कज़िबा (५) फ़-ल-अ़ल्ल-क बाख़िअुन् नफ़्स-क अ़ला आसारिहिम् इल्लम् युअ्मिनू बिहाज़ल्ह़दीसि अ-स-फ़ा (६)

▨ व लाज़िम □ सजदः ४ ★ रु० १२/१२ आ ११

इस कुरआन को सच्चाई के साथ नाजिल किया है और वह सच्चाई के साथ नाजिल हुआ (ऐ मुहम्मद!) हम ने तुम को सिर्फ खुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला बना कर भेजा है▨(१०५) और हम ने कुरआन को जुज-जुज कर के नाजिल किया है ताकि तुम लोगों को ठहर-ठहर कर, पढ कर सुनाओ और हम ने उस को आहिस्ता-आहिस्ता उतारा है। (१०६) कह दो कि तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ, (यह हक है) जिन लोगो को इस से पहले इल्म (किताब) दिया गया है, जब वह उन को पढ कर सुनाया जाता है, तो वे ठोडियो के बल सज्दे मे गिर पड़ते है, (१०७) और कहते है कि हमारा परवरदिगार पाक है। बेशक हमारे परवरदिगार का वायदा पूरा हो कर रहा। (१०८) और वे ठोडियो के बल गिर पडते है और रोते जाते है और उस से उन को और ज्यादा आजिजी पैदा होती है□(१०९) कह दो कि तुम (खुदा को) अल्लाह (के नाम से) पुकारो या रहमान (के नाम से), जिस नाम से पुकारो, उस के सब नाम अच्छे है, और न नमाज बुलंद आवाज से पढो और न धीरे, बल्कि उस के बीच का तरीका अख्तियार करो। (११०) और कहो कि सब तारीफ खुदा ही को है, जिस ने न तो किसी को बेटा बनाया है और न उसकी बादशाही मे कोई शरीक है और न इस वजह से कि वह आजिज व नातवा है, कोई उस का मददगार है और उस को बड़ा जान कर उस की बडाई करते रहो। (१११)☆

१८ सूरः कहफ़ ६९

सूरः कह्फ मक्की है और इस मे एक सौ दस आयतें और बारह रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ खुदा ही को है, जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर (यह) किताब नाजिल की और इस मे किसी तरह की टेढ (और पेचीदगी) न रखी, (१) (बल्कि) सीधी (और आसान उतारी) ताकि (लोगो को) सख्त अजाब से जो उस की तरफ से (आने वाला) है, डराए और मोमिनो को जो नेक अमल करते है, खुशखबरी सुनाए कि उन के लिए (उन के कामो का) नेक बदला (यानी बहिश्त) है। (२) जिस मे वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। (३) और उन लोगो को भी डराए, जो कहते है कि खुदा ने (किसी को) बेटा बना लिया है। (४) उन को इस बात का कुछ भी इल्म नही और न उन के बाप-दादा ही को था। (यह) बडी सख्त बात है जो उन के मुंह से निकलती है (और कुछ शक नही कि) ये जो कुछ कहते है, सिर्फ झूठ है। (५) (ऐ पैगम्बर!) अगर ये इस कलाम पर ईमान न लाए, तो शायद तुम उनके पीछे रंज करके अपने आप को हलाक कर

---

१ अल्लाह का नाम रहमान लोग जानते थे, इस पर यह फ़रमाया कि नाम दोनों हैं [illegible] पुकारने की नमाज मे बहुत चिल्लाना भी नही और बहुत दबी आवाज भी नही। बीच की चाल [illegible]।

▨ व. लाजिम □ सजूद ४ ☆ रु १२/१२ आ ११

इन्ना ज-अल्ना मा अ-लल्अर्जि ज़ी-नतल्लहा लिनब्लु-वहुम् अय्युहुम् अह्सनु अ़-मला (७) व इन्ना ल-जाअिलू-न मा अ़लैहा स़अीदन् जुरुज़ा ط (८) अम् हसिब्-त अन्-न अस्हाबलकह्फि वर्रकीमि कानू मिन् आयातिना अ-ज-बा (९) इज् अवल्फित्यतु इलल्-कह्फि फ-कालू रब्बना आतिना मिल्लदुन-क रह्-म-तव्-व हय्यिअ् लना मिन् अम्रिना र-शदा (१०) फ - जरब्ना अला आजानिहिम् फिल्-कह्फि सिनी - न अ-द-दा لا (११) सुम्-म ब-अस्नाहुम् लिनअ-ल-म अय्युहल्हिज्बैनि अह्सा लिमा लबिसू अ - मदा ★ (१२) नह्नु नकुस्सु अलै-क न-ब-अहुम् बिल्हक्कि ط इन्नहुम् फित्यतुन् आमनू बिरब्बिहिम् व जिद्नाहुम् हुदव् - صلے (१३) व र-बत्ना अला कुलूबिहिम् इज् कामू फ-कालू रब्बुना रब्बुस्समावाति वल्अर्जि लन्नद्अु-व मिन्दूनिही इलाहल्लकद् कुल्ना इजन् श-त़-ता (१४) हाउलाइ कौमुनत्त-ख़जू मिन् दूनिही आलिह-तुन् ط लौला यअ्तू-न अलैहिम् बिसुल्तानिम्-बय्यिनिन् ط फ-मन् अज्-लमु मिम्मनिफ्तरा अ-लल्लाहि कजिबा ط (१५) व इजिअ्-त-जल्तुमूहुम् व मा यअ्-बुदू-न इल्लल्ला - ह फअ्-वू इलल्कह्फि यन्शुर् लकुम् रब्बुकुम् मिर्रह्मतिही व युहय्यिअ् लकुम् मिन् अम्रिकुम् मिर्फका (१६) व-त-रश्-शम-स इज़ा त़-ल-अत्-तजावरु अन् कह्फिहिम् ज़ातल्यमीनि व इज़ा ग-र-बत्-तक्रिज़ुहुम् ज़ातश्शिमालि व हुम् फी फज्-वतिम्-मिन्हु ط ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि ط मय्यह्दिल्लाहु फहुवल्मुह्तदि ج व मंय्युज्लिल् फ़-लन् तजि-द लहू वलिय्यम्-मुर्शिदा ★ (१७) व तह्सबुहुम् ऐकाज़ंव्वहुम् रुकूदु व् صلے व नुकल्लिबुहुम् ज़ातल्यमीनि व ज़ातश् - शिमालि صلے व कल्बुहुम् बासितुन् ज़िराअ़ैहि बिल्वसीदि ط लवित्तलअ - त अ़लैहिम् ल-वल्लै-त मिन्हुम् फिरारव्-व लमुलिअ्-त मिन्हुम् रुअ्-बा (१८)

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۝
وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ
وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۝ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا
رَبَّنَا آتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝ فَضَرَبْنَا
عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝ ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ
الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ۝ نَّحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم
بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝ وَرَبَطْنَا عَلَىٰ
قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَن نَّدْعُوَ مِن
دُونِهِ إِلَٰهًا لَّقَدْ قُلْنَا إِذًا شَطَطًا ۝ هَٰؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ
آلِهَةً لَّوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِم بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝ وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى
الْكَهْفِ يَنشُرْ لَكُمْ رَبُّكُم مِّن رَّحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُم مِّنْ أَمْرِكُم
مِّرْفَقًا ۝ وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَت تَّزَاوَرُ عَن كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ
وَإِذَا غَرَبَت تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ذَٰلِكَ مِنْ
آيَاتِ اللَّهِ مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا
مُّرْشِدًا ۝ وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ
وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُم بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ

★रु १/१३ आ १२ ★रु २/१४ आ ५

दोगे। (६) जो चीज जमीन पर है, हम ने उस को जमीन के लिए जीनत बनाया है, ताकि लोगो की आजमाइश करे कि उन मे कौन अच्छे अमल करने वाला है। (७) और जो चीज जमीन पर है हम उस को (नाबूद कर के) बजर मैदान कर देगे। (८) क्या तुम ख्याल करते हो कि गार और लौह वाले हमारी निशानियो से अजीब थे। (९) जब वे जवान गार मे जा रहे तो कहने लगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर अपने यहा से रहमत नाजिल फरमा और हमारे काम मे दुरुस्ती (के सामान) मुहय्या कर। (१०) तो हम ने गार मे कई साल तक उन के कानो पर (नीद के) परदे डाले (यानी उन को सुलाए) रखा। (११) फिर उन को जगा उठाया, ताकि मालूम करे कि जितनी मुद्दत वे (गार मे) रहे, दोनो जमाअतो मे से उस की मिक्दार किस को खूब याद है। (१२)★

हम इन के हालात तुम से सही-सही बयान करते है। वे कई जवान थे, जो अपने परवरदिगार पर ईमान लाए थे और हम ने उन को और ज्यादा हिदायत दी थी। (१३) और उन के दिलो को मर्बूत (यानी मजबूत) कर दिया। जब वे (उठ) खडे हुए तो कहने लगे कि हमारा परवरदिगार आसमानो और जमीन का मालिक है, हम उस के सिवा किसी को माबूद (समझ कर) न पुकारेगे। (अगर ऐसा किया) तो उस वक्त हम ने अक्ल मे दूर की बात कही। (१४) इन हमारी कौम के लोगो ने उस के सिवा और माबूद बना रखे है। भला ये उन (के खुदा होने) पर कोई खुली दलील क्यो नही लाते, तो उस से ज्यादा कौन जालिम है, जो खुदा पर झूठ गढे। (१५) और जब तुम ने इन (मुश्रिको) से और जिन की ये खुदा के सिवा इबादत करते है, उन से किनारा कर लिया है, तो गार मे चल रहो। तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे कामो मे आसानी (के सामान) मुहय्या करेगा।' (१६) और जब सूरज निकले तो तुम देखो कि (धूप) उन के गार से दाहिनी तरफ सिमट जाए और जब डूबे तो उन से बायी तरफ कतरा जाए और वे उन के मैदान मे थे। ये खुदा की निशानियो मे से है, जिस को खुदा हिदायत दे, उसे हिदायत मिल गयी और जिस को गुमराह करे, तो तुम उस के लिए कोई दोस्त, राह बताने वाला न पाओगे। (१७)★

और तुम उन को ख्याल करो कि जाग रहे है, हालाकि वे सोते है और हम उन को दाए और बाए करवट बदलाते थे और उनका कुत्ता चौखट पर दोनो हाथ फैलाए हुए था। अगर तुम उनको झाक कर देखते तो पीठ फेर कर भाग जाते और उन मे रौब मे आ जाते। (१८) और इसी तरह हम ने

---

१ तफ्सीरो मे लिखा है कि ये लोग कौम के सरदारो की औलाद थे। एक दिन ईद का दिन था। [illegible] तो देखते है कि लोग बुतो को पूज रहे है और उनके नाम पर जानवर जिब्ह करते है। खुदा ने उनके दिल [illegible] बूझ के नूर से रौशन कर दी थी तो उन्होने लोगो की बुतपरस्ती की हरकत को ना-पसदीदगी की नजर से [illegible] मे कहा कि ये बाते तो खुदा ही के लिए मुनासिब है जो आसमान व जमीन का पैदा करने वाला है [illegible] के लोगो से दूर ही रहने लगे। चुनाचे सब से पहले इन मे से एक शख्स एक पेड के साए तले [illegible]। [illegible] भी वही आ कर बैठ गया, फिर तीसरा भी उन के पास आया और बैठ गया, चौथा आया [illegible]। [illegible] आपस मे एक दूसरे को नही जानते थे, इसी वजह से अपने दिल का हाल एक दूसरे से [illegible] थे। आखिर एक उन मे से बोला कि साहिबो! तुम जो अपने भाई-बन्दो से अलग हो कर यहा आ बैठे हो [illegible] कोई न कोई वजह जरूर है और वह हर शख्स को सच्चाई के साथ बयान कर देना चाहिए। [illegible] सच तो यह है कि मैं ने यह ख्याल किया कि जो काम हमारी कौम के लोग कर रहे है [illegible] हकदार सिर्फ एक खुदा है, जो आसमानो और जमीन का पैदा करने वाला है। तीनो ने कहा कि [illegible]

[illegible]

★रु १/१३ आ १२ ★रु २/१४ आ ५

व कज़ालि-क ब-अस्नाहुम् लि-य-त-साअलू बैनहुम् ط का-ल काइलुम् - मिन्हुम्
कम् लबिस्तुम् ط क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्-ज यौमिन् ط कालू रब्बुकुम्
अअ्-लमु बिमा लबिस्तुम् ط फब-अस्रू अ-ह़-दकुम् बिवरिकिकुम् हाज़िही इलल्-
मदीनति फल्यन्ज़ुर् अय्युहा अज़्का तआमन् फल्-यअ्तिकुम् ब्रिरिज़्किम्-मिन्हु
वल्-य-त ※ लत्तफ़् व ला युश्अिरन्-न बिकुम्
अ - ह़-दा (१९) इन्नहुम् इं य्यज़्हरू
अलैकुम् यर्जुमूकुम् औ युईदूकुम् फी
मिल्लतिहिम् व लन् तुफ़्लिहू इज़न्
अ-ब-दा (२०) व कज़ालि-क अअ्-सर्ना
अलैहिम् लियअ्-लमू अन-न वअ्-दल्लाहि
ह़क्कु व्-व अन्नस्सा-अ-तु ला रै-ब फीहा ج
इज़् य-त-नाज़अू-न बैनहुम् अम्-रहुम् फ-कालुब्नू
अलैहिम् बुन-यानन् ط रब्बुहुम् अअ् - लमु
बिहिम् ط कालल्लज़ी - न ग - लबू अला
अम्रिहिम् ल-नत्तखिज़न्-न अलैहिम् मस्जिदा
(२१) स-यकूलू-न सला-सतुर्-राबिअुहुम्
कल्बुहुम् ج व यकूलू-न खम्सतुन् सादिसुहुम्

الكهف ٢٣٦ سبحن الذي

عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ○ وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ
لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ
بَعْضَ يَوْمٍ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ
هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ
وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ○ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ
اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ○ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ
لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ
بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ
الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ○ سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ
رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ
وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ
اِلَّا قَلِيْلٌ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ
مِّنْهُمْ اَحَدًا ○ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ○ اِلَّآ
اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ
لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ○ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ
وَازْدَادُوْا تِسْعًا ○ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ

कल्बुहुम् रज्-मम्-बिलग़ैबि ج व यकूल , सब्-अतु व्-व सामिनुहुम् कल्बुहुम् ط
कुर्रब्बी अअ्-लमु बिअिद्दतिहिम् मा यअ्-लमुहुम् इल्ला कलीलुन् قف फला
तुमारि फीहिम् इल्ला मिरा-अन् ज़ाहिरव् ص - व ला तस्तफ़्ति फ़ीहिम्
मिन्हुम् अ-ह़-दा ★ (२२) व ला तकूलन्-न लिशैइन् इन्नी फाअिलुन् ज़ालि-क
गदा ۙ (२३) इल्ला अय्यशाअल्लाहु ز वज़्कुर्रब्ब-क इज़ा नसी-त व कुल्
असा अय्यह्दियनि रब्बी लि-अक्-र-ब मिन् हाज़ा र-श-दा (२४) व लबिसू फी
कह्फिहिम् सला-स मिअतिन् सिनी-न वज़्दादू तिस्आ (२५) कुलिल्लाहु अअ्-लमु
बिमा लबिसू ج लहू गैबुस्समावाति वल्अर्जि ط अब्सिर् बिही व अस्मिअ् ط मा
लहुम् मिन्दूनिही मिव्वलियव्-व ला युश्रिकु फी हुक्मिही अ-ह-दा (२६)

※ निस्फ़ुल् कुरआन ★रु ३/१५ आ ५

उन को उठाया ताकि आपस मे एक दूसरे से मालूम करें। एक कहने वाले ने कहा कि तुम (यहा) कितनी मुद्दत रहे ? उन्होने कहा कि एक दिन या इस से भी कम। उन्हो ने कहा कि जितनी मुद्दत तुम रहे हो, तुम्हारा परवरदिगार ही उस को खूब जानता है। तो अपने मे से किसी को यह रुपया दे कर शहर को भेजो, वह देखे कि अच्छा खाना कौन-सा है, तो उस मे से खाना ले आए और धीरे-धीरे आए-जाए और तुम्हारा हाल किसी को न बताए ※ (१९) अगर वह तुम पर कावू पा लेंगे तो तुम्हे पत्थर मार-मार कर हलाक कर देगे या फिर अपने मजहव मे दाखिल कर लेंगे और उस वक्त तुम कभी कामियाबी नही पाओगे। (२०) और इसी तरह हम ने (लोगो को) उन (के हाल) से खबरदार कर दिया, ताकि वे जाने कि खुदा का वायदा सच्चा है और यह कि कियामत (जिस का वायदा किया जाता है) इस मे कुछ शक नही। उस वक्त लोग उन के बारे मे आपस मे झगड़ने लगे और कहने लगे कि उन (के गार) पर इमारत वना दो। उन का परवरदिगार उन (के हाल) को खूब जानता है। जो लोग उन के बारे मे गलवा रखते थे, कहने लगे कि हम उन (के गार) पर मस्जिद बनाएगे। (२१) (कुछ लोग) अटकल-पच्चू कहेंगे कि वे तीन थे (और) चौथा उन का कुत्ता था और (कुछ) कहेंगे कि वे पाच थे (और) छठा उन का कुत्ता था और (कुछ) कहेंगे कि वे सात थे और आठवा उन का कुत्ता था। कह दो कि मेरा परवरदिगार ही उन की गिनती खूब जानता है। उनको जानते भी है तो थोडे ही लोग (जानते है), तो तुम उन (के मामले) मे बात-चीत न करना, मगर सरसरी सी बाते और न उनके बारे मे उनमे से किसी से कुछ मालूम ही करना (२२) ★

और किसी काम के बारे मे न कहना कि मै इसे कल कर दूगा, (२३) मगर (इन्शा अल्लाह) कह कर, (यानी अगर) खुदा चाहे तो (कर दूगा) और जब खुदा का नाम लेना भूल जाओ तो याद आने पर ले लो और कह दो कि उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे इस से भी ज्यादा हिदायत की बाते बताए। (२४) और गार वाले अपने गार मे नौ ऊपर तीन सौ साल रहे। (२५) कह दो कि जितनी मुद्दत वे रहे, उसे खुदा ही खूब जानता है। उसी को आसमानो और जमीन की छिपी बातें (मालूम) है। वह क्या खूब देखने वाला और क्या खूब सुनने वाला है। उस के सिवा उन का कोई कारसाज नही और न वह अपने हुक्म मे किसी को शरीक करता है। (२६) और अपने परवर-

---

(पृष्ठ ४६७ का शेष)

मेरे दिल मे भी यही ख्याल पैदा हुआ था। चौथे ने कहा कि मेरा भी यही ख्याल है। गरज सब [illegible] हो गये और अपनी एक जुदा इबादतगाह बना ली। इस मे एक खुदा की इबादत करते और बुतों की पूजा से [illegible] भी ताल्लुक न रखते। उन का यह हाल लोगो को मालूम हुआ तो उन्हो ने बादशाह से [illegible]। बादशाह बडा जाबिर व जालिम और तगनजर था, लोगो को कुफ्र व शिर्क पर तैयार करता और उन से [illegible] बुतपरस्ती कराता। बादशाह ने उन को बुलाया और पूछा किया। उन्हो ने सब कुछ सच-सच बयान कर दिया। बादशाह ने उन को डराया-धमकाया और कुछ मोहलत दी कि खुदापरस्ती से [illegible], मगर [illegible] तौहीद ऐसी नही कि जब दिल मे बैठ जाए तो कभी निकल सके। उन्हो ने यह सलाह की [illegible] तुम्हे कुछ मतलब नही रहा, तो उन मे रहना क्या जरूरी है। बेहतर यह है कि गार मे चल रहे।

२ यानी जो खुदा चाहता है (वही होता है) और खुदा (की मदद) के सिवा (किसी को) कुछ [illegible] नही।

वत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिन् किताबि रब्बि-क लापाठ मुबद्दि-ल लिकलिमातिही व लन् तजि-द मिन् दूनिही मुल्त-ह-दा (२७) वस्बिर् नफ्-स-क म-अल्लज़ी-न यद्ऊ-न रब्बहुम् बिल्गदाति वल्अशिय्यि युरीदू-न वज्हहू व ला तअ्-दु अैना-क अन्हुम् तुरीदु ज़ीनतल्-हयातिद्-दुन्या व ला तुतिअ् मन् अग्-फल्ना क़ल्बहू अन् ज़िक्रिना वत्त-ब-अ हवाहु व का-न अम्रुहू फ़ुरुता ● (२८) व कुलिल्हक़्कु मिर्-रब्बिकुम् फ-मन् शा-अ फल्-युअ्मिन् व मन्शा-अ फ़ल्यक्फ़ुर् इन्ना अअ्-तद्ना लिज़्ज़ालिमी-न नारन् अहा-त बिहिम् सुरादिकुहा व इंय्यस्तगीसू युगासू बिमाइन् कल्मुह्लि यश्विल्-वुजू-ह बिअ्-सश्शराबु व सा-अत् मुर्तफ़-का (२९) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीअु अज्-र मन् अह्-स-न अ-म-ला (३०) उलाइ-क लहुम् जन्नातु अद्निन् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज-हबिंव-व यल्बसू-न सियाबन् खुज्रम्-मिन् सुन्दुसिंव-व इस्तब्रकिम्-मुत्तकिई-न फ़ीहा अलल्अराइकि निअ्-मस्सवाबु व हसुनत् मुर्त-फ़-का ★ (३१) वज्रिब् लहुम् म-स-लर्रजुलैनि ज-अल्ना लिअहदिहिमा जन्नतैनि मिन् अअ्-नाबिंव-व ह-फ़फ़्नाहुमा बिनख़्लिंव-व ज-अल्ना बैनहुमा ज़र्आ (३२) किल्तल्-जन्नतैनि आतत् उकुलहा व लम् तज़्लिम् मिन्हु शैअंव्-व फज्जर्ना ख़िलालहुमा न-ह-रा (३३) व का-न लहू स-मरुन् फका-ल लिसाहिबिही व हु-व युहाविरुहू अ-न अक्सरु मिन्-क मालंव्-व अ-अज़्ज़ु न-फ-रा (३४) व द-ख़-ल जन्नतहू व हु-व ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही का-ल मा अज़ुन्नु अन् तबी-द हाज़िही अ-ब-दा (३५) व मा अज़ुन्नुस्सा-अ-त क़ाइ-म-तंव्-व लइर्रुदित्तु इला रब्बी ल-अजिदन्-न ख़ैरम्-मिन्हा मुन्क़-लबा (३६)

أَحَدًا ۝ وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن كِتَابِ رَبِّكَ ۖ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ
وَلَن تَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم
بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَن ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ
أَمْرُهُ فُرُطًا ۝ وَقُلِ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَن شَاءَ فَلْيُؤْمِن وَمَن
شَاءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِن
يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ وَ
سَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ
أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ
الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا
مِّن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ
وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝ وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا
جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝ كِلْتَا
الْجَنَّتَيْنِ آتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِم مِّنْهُ شَيْئًا ۚ وَفَجَّرْنَا خِلَالَهُمَا نَهَرًا ۝
وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنكَ مَالًا وَأَعَزُّ
نَفَرًا ۝ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَن تَبِيدَ هَٰذِهِ
أَبَدًا ۝ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّدِدتُّ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا

● सु. ३/४ ★रु. ४/१६ आ ६

दिगार की किताब को, जो तुम्हारे पास भेजी जाती है, पढते रहा करो। उस की बातों को कोई बदलने वाला नही और उस के सिवा तुम पनाह भी नही पाओगे। (२७) और जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार को पुकारते और उस की खुशी चाहते है, उन के साथ सब्र करते रहो और तुम्हारी निगाहे उन मे से (गुजर कर) और तरफ न दौडे कि दुनिया की ज़िंदगी की ज़ीनत चाहने लगो और जिस शख्स के दिल को हम ने अपनी याद मे गाफिल कर दिया है और वह अपनी ख्वाहिश की पैरवी करता है और उस का काम हद से बढ गया है, उस का कहा न मानना ●(२८) और कह दो कि (लोगो!) यह कुरआन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक (पर) है, तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे काफिर रहे। हम ने जालिमो के लिए (दोज़ख की) आग तैयार कर रखी है जिस की कनाते उस को घेर रही होगी और अगर फरियाद करेगे, तो ऐसे खौलते हुए पानी से उन की दादरसी की जाएगी जो पिघले हुए तांबे की तरह (गर्म होगा और जो) मुहो को भून डालेगा। (उन के पीने का) पानी भी बुरा और आरामगाह भी बुरी। (२९) (और) जो ईमान लाए और काम भी नेक करते रहे, तो हम नेक काम करने वालो का बदला बर्बाद नही करते। (३०) ऐसे लोगो के लिए हमेशा रहने के बाग है, जिन मे उन के (महलो के) नीचे नहरे बह रही है। उनको वहां सोने के कंगन पहनाए जाएगे और वे बारीक दीबा और अतलस के हरे कपडे पहना करेंगे (और) तख्तो पर तकिए लगा कर बैठा करेंगे। (क्या) खूब बदला और (क्या) खूब आरामगाह है ★(३१)

और उन से दो शख्सो का हाल बयान करो, जिन मे से एक को हम ने अंगूर के दो बाग (इनायत) किए थे और उन के चारो तरफ खजूरो के पेड लगा दिए थे और उन के दर्मियान खेती पैदा कर दी थी। (३२) दोनो बाग (ज्यादा से ज्यादा) फल लाते और उन की (पैदावार) मे किसी तरह की कमी न होती और दोनो मे हम ने एक नहर भी जारी कर रखी थी। (३३) और (इस तरह) उस (शख्स) को (उन की) पैदावार (मिलती रहती) थी, तो (एक दिन) जबकि वह अपने दोस्त से बाते कर रहा था, कहने लगा कि मै तुम से माल (व दौलत) मे भी ज्यादा हूं और जत्थे (और जमाअत) के लिहाज से भी ज्यादा इज्जत वाला हू। (३४) और (ऐसी शेखियो से) अपने हक मे जुल्म करता हुआ अपने बाग मे दाखिल हुआ कहने लगा कि मैं नही ख्याल करता कि यह बाग कभी तबाह हो। (३५) और न ख्याल करता हू कि कियामत बरपा हो और अगर मै अपने परवरदिगार की तरफ लौटाया भी जाऊं तो (वहां) जरूर इससे अच्छी जगह पाऊंगा। (३६)

●सु ३/४ ★रु ४/१६ आ ६

का-ल लहू साहिबुहू व हु-व युहाविरुहू अ-क-फ़र्-त बिल्लज़ी ख-ल-क-क मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म सव्वा-क रजुला ط (३७) लाकिन्-न हुवल्लाहु रब्बी व ला उश्रिकु बिरब्बी अ-ह्-दा (३८) व लौला इज़् द-खल्-त जन्न-त-क कुल-त मा शा-अल्लाहु ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि ج इन् तरनि अ-न अ-कल्-ल मिन्-क मालव्-व व-ल-दा ج (३९) फ-असा रब्बी अय्युअ्तियनि खैरम्मिन् जन्नति-क व युर्सि-ल अलैहा हुस्बानम् - मिनस्समाइ फतुस्बि-ह सअीदन् ज-ल-का (४०) औ युस्बि-ह माउहा गौरन् फ-लन् तस्ततीअ लहू त-ल-बा (४१) व उही-त बि-स-मरिही फ-अस्ब-ह युकल्लिबु कफ्फैहि अला मा अन्फ-क फीहा व हि-य खावि-यतुन् अला अुरूशिहा व यकूलु यालैतनी लम् उश्रिक् बिरब्बी अ-ह्-दा (४२) व लम् तकुल्लहू फ़िअतुय्यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि व मा का-न मुन्तसिरा ط (४३) हुनालिकल्-वलायतु लिल्लाहिल् - हक्कि ط हु-व खैरुन् सवाबव-व खैरुन् अुक्बा ★ (४४) वज़्रिब् लहुम् म-स-लल्-हयातिद्-दुन्या कमाइन् अन्जल्नाहु मिनस्समाइ फख्त-ल-त बिही नबातुल्अर्ज़ि फ-अस्ब-ह् हशीमन् तज़्-रूहुर्रियाहु ط व कानल्लाहु अला कुल्लि शैइम्-मुक्तदिरा (४५) अल्मालु वल्बनू-न जीनतुल्-हयातिद् - दुन्या ج वल्बाकियातुस्-सालिहातु खैरुन् अिन-द रब्बि-क सवाबव-व खैरुन् अ-म-ला (४६) व यौ-म नुसय्यिरुल्-जिबा-ल व त-रल्अर्-ज़ बारिज-तव्-व ह-शर-नाहुम् फ-लम् नुगादिर् मिन्हुम् अ-ह्-दा ج (४७) व अुरिज़ू अला रब्बि-क सफ़्फ़न् ط ल-कद् जिअ्तुमूना कमा खलक्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिम् बल् ज-अम्तुम् अल्लन् नज्-अ-ल लकुम् मौअिदा (४८) व वुज़िअल्-किताबु फ-त-रल्-मुज्रिमी-न मुश्फिकी-न मिम्मा फीहि व यकूलू-न यावै-ल-तना मालि हाज़ल्-किताबि ला युगादिरु सगी-र-तव्-व ला कबीरतन् इल्ला अह्साहा ج व व-जदू मा अमिलू हाज़िरन् ط व ला यज़्लिमु रब्बु-क अ-ह-दा ★ (४९)

منها منقلبا ۝ قال له صاحبه وهو يحاوره أكفرت بالذي خلقك
من تراب ثم من نطفة ثم سوىك رجلا ۝ لكنا هو الله ربي ولا
أشرك بربي أحدا ۝ ولولا إذ دخلت جنتك قلت ما شاء الله لا قوة
إلا بالله إن ترن أنا أقل منك مالا وولدا ۝ فعسى ربي أن
يؤتين خيرا من جنتك ويرسل عليها حسبانا من السماء فتصبح
صعيدا زلقا ۝ أو يصبح ماؤها غورا فلن تستطيع له طلبا ۝ وأحيط
بثمره فأصبح يقلب كفيه على ما أنفق فيها وهي خاوية على عروشها
ويقول يليتني لم أشرك بربي أحدا ۝ ولم تكن له فئة ينصرونه
من دون الله وما كان منتصرا ۝ هنالك الولاية لله الحق هو خير
ثوابا وخير عقبا ۝ واضرب لهم مثل الحيوة الدنيا كماء أنزلنه
من السماء فاختلط به نبات الأرض فأصبح هشيما تذروه الريح
وكان الله على كل شيء مقتدرا ۝ المال والبنون زينة الحيوة
الدنيا والبقيت الصلحت خير عند ربك ثوابا وخير أملا ۝ و
يوم نسير الجبال وترى الأرض بارزة وحشرنهم فلم نغادر
منهم أحدا ۝ وعرضوا على ربك صفا لقد جئتمونا كما خلقنكم
أول مرة بل زعمتم ألن نجعل لكم موعدا ۝ ووضع الكتب
فترى المجرمين مشفقين مما فيه ويقولون يويلتنا مال هذا

★रु ५/१७ आ १३ ★रु. ६/१८ आ ५

तो उस का दोस्त, जो उस से बात-चीत कर रहा था, कहने लगा कि क्या तुम उस (ख़ुदा) से कुफ्र करते हो, जिस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फे से, फिर तुम्हे पूरा मर्द बनाया। (३७) मगर मैं यह कहता हू कि ख़ुदा ही मेरा परवरदिगार है और मैं अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक नही करता। (३८) और (भला) जब तुम अपने बाग मे दाख़िल हुए, तो तुम ने 'माशा अल्लाह ला कू-व-त इल्ला बिल्लाह' क्यो न कहा, अगर तुम मुझे माल व औलाद मे अपने से कमतर देखते हो? (३९) तो अजब नही कि मेरा परवरदिगार मुझे तुम्हारे बाग से बेहतर अता फरमाए और इस तुम्हारे बाग पर आसमान से आफत भेज दे, तो वह साफ मैदान हो जाए। (४०) या उस (की नहर) का पानी गहरा हो जाए तो फिर तुम उसे न ला सको। (४१) और उस के मेवो को अज़ाब ने आ घेरा और वह अपनी छतरियो पर गिर कर रह गया, तो जो माल उस ने उस पर ख़र्च किया था, उस पर (हसरत से) हाथ मलने लगा और कहने लगा कि काश मैं अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक न बनाता। (४२) (उस वक्त) ख़ुदा के सिवा कोई जमाअत उस की मदद-गार न हुई और न वह बदला ले सका। (४३) यहा (से साबित हुआ) कि हुकूमत सब ख़ुदा-ए-बरहक की है, उसी का सिला बेहतर और (उसी का) बदला अच्छा है। (४४)★

और उस ने दुनिया की जिंदगी की मिसाल भी बयान करो, (वह ऐसी है,) जैसे पानी, जिसे हम ने आसमान से बरसाया, तो उस के साथ जमीन को ज़रखेजी मिल गयी, फिर वह चूरा-चूरा हो गयी कि हवाएं उसे उड़ाती फिरती है और ख़ुदा तो हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (४५) माल और बेटे तो दुनिया की ज़िंदगी की (रौनक व) जीनत है और नेकिया जो बाकी रहने वाली हैं, वे सवाब के लिहाज से तुम्हारे परवरदिगार के यहा बहुत अच्छी और उम्मीद के लिहाज़ से बहुत बेहतर हैं। (४६) और जिस दिन हम पहाडो को चलाएगे और तुम जमीन को साफ मैदान देखोगे और उन (लोगो) को हम जमा कर लेंगे तो उन मे से किसी को भी नही छोडेगे। (४७) और सब तुम्हारे परवरदिगार के सामने सफ बाध कर लाए जाएगे (तो हम उन से कहेंगे कि) जिस तरह हम ने तुम को पहली बार पैदा किया था, (इसी तरह आज) तुम हमारे सामने आए, लेकिन तुम ने तो यह ख्याल कर रखा था कि हम ने तुम्हारे लिए (कियामत का) कोई वक्त मुकर्रर ही नही किया। (४८) और (अमलो की) किताब (खोल कर) रखी जाएगी तो तुम गुनाहगारो को देखोगे कि जो कुछ उस मे (लिखा) होगा, उस से डर रहे होगे और कहेंगे, हाय शामत! यह कैसी किताब है कि न छोटी बात को छोड़ती है, न बडी को, (कोई बात भी नही) मगर उसे लिख रखा है और जो अमल किए होगे, सब को हाज़िर पाएंगे और तुम्हारा परवरदिगार किसी पर ज़ुल्म नही करेगा। (४९)★

★रु ५/१७ आ १३ ★रु. ६/१८ आ ५

व इज़् कुल्ना लिलमलाइकतिस्जुदू लि-आद-म फ-स-जदू इल्ला इब्ली-स॒ का-न मिनल्-जिन्नि फ-फ-स-क अन् अम्रि रब्बिही॒ अ-फ-तत्तखिज़ूनहू व ज़ुर्रिय्यतहू औलिया-अ मिन् दूनी व हुम् लकुम् अदुव्वुन्॒ बिअ्-स लिज़्ज़ालिमी-न ब-द-ला (५०) मा अश्हत्तुहुम् खल्कस्समावाति वल्अर्ज़ि व ला खल्-क अन्फुसिहिम् ॰ व मा कुन्तु मुत्तखिज़ल्-मुज़िल्ली-न अज़ुदा (५१) व यौ-म यकूलु नादू शुरकाइ-यल्लज़ी-न ज-अ़म्तुम् फ-दऔहुम् फ-लम् यस्तजीबू लहुम् व ज-अल्ना बैनहुम् मौबिका (५२) व र-अल्-मुज्रिमूनन्ना-र फ-ज़न्नू अन्नहुम् मुवाकिअूहा व लम् यजिदू अन्हा मस्रिफा ★(५३) व ल-कद् सर्रफ्ना फी हाज़ल्-कुर्आनि लिन्नासि मिन् कुल्लि म-सलिन्॒ व कानल्-इन्सानु अक्स-र शैइन् ज-द-ला (५४) व मा म-न-अ़न्ना-स अय्युअ्मिनू इज़् जाअ-हुमुल्-हुदा व यस्तग्फिरू रब्बहुम् इल्ला अन् तअ्ति-यहुम् सुन्नतुल्-अव्वली-न औ यअ्तियहुमुल्-अज़ाबु कुबुला (५५) व मा नुर्सिलुल्-मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न ॰ व युजादिलुल्लज़ी-न क-फरू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक्-क वत्तखज़ू आयाती व मा उन्ज़िरू हुज़ुवा (५६) व मन् अज़्लमु मिम्मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही फ-अअ्-र-ज अन्हा व नसि-य मा कद्-द-मत् यदाहु॒ इन्ना ज-अल्ना अला कुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ्कहूहु व फी आज़ानिहिम् वक्रन्॒ व इन् तद्-अुहुम् इलल्-हुदा फलंय्यह्तदू इज़न् अ-ब-दा (५७) व रब्बुकल्-गफूरु ज़ुर्रह्मति॒ लौ युआखिज़ुहुम् बिमा क-सबू ल-अज्ज-ल लहुमुल्-अज़ा-ब॒ बल्लहुम् मौअिदुल्-लय्यजिदू मिन् दूनिही मौअिला (५८)

الكهف ٢٣٩ سبحن الذي ١٥

الكتب لا يغادر صغيرة ولا كبيرة الا احصها ووجدوا ما عملوا حاضرا
ولا يظلم ربك احدا ۝ واذ قلنا للملئكة اسجدوا لادم فسجدوا الا
ابليس كان من الجن ففسق عن امر ربه افتتخذونه وذريته
اولياء من دوني وهم لكم عدو بئس للظلمين بدلا ۝ ما
اشهدتهم خلق السموت والارض ولا خلق انفسهم وما كنت
متخذ المضلين عضدا ۝ ويوم يقول نادوا شركاءي الذين زعمتم
فدعوهم فلم يستجيبوا لهم وجعلنا بينهم موبقا ۝ ورا المجرمون
النار فظنوا انهم مواقعوها ولم يجدوا عنها مصرفا ۝ ولقد صرفنا
في هذا القران للناس من كل مثل وكان الانسان اكثر شيء
جدلا ۝ وما منع الناس ان يؤمنوا اذ جاءهم الهدى ويستغفروا ربهم
الا ان تاتيهم سنة الاولين او ياتيهم العذاب قبلا ۝ وما
نرسل المرسلين الا مبشرين ومنذرين ويجادل الذين كفروا
بالباطل ليدحضوا به الحق واتخذوا ايتي وما انذروا هزوا ۝ و
من اظلم ممن ذكر بايت ربه فاعرض عنها ونسي ما قدمت
يده انا جعلنا على قلوبهم اكنة ان يفقهوه وفي اذانهم وقرا و
ان تدعهم الى الهدى فلن يهتدوا اذا ابدا ۝ وربك الغفور ذو
الرحمة لو يؤاخذهم بما كسبوا لعجل لهم العذاب بل لهم موعد

★रु० ७/१९ आ ४

और जब हम ने फरिश्तो को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया मगर इब्लीस (ने न किया), वह जिन्नो मे से था, तो अपने परवरदिगार के हुक्म से बाहर हो गया। क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो, हालाकि वे तुम्हारे दुश्मन है, और (शैतान की दोस्ती) जालिमो के लिए (खुदा की दोस्ती का) बुरा बदल है। (५०) मैं ने उन को न तो आसमानों और जमीन के पैदा करने के वक्त बुलाया था और न खुद उन के पैदा करने के वक्त और मैं ऐसा न था कि गुमराह करने वालो को मददगार बनाता। (५१) और जिस दिन खुदा फरमाएगा कि (अब) मेरे शरीको को, जिन के बारे मे तुम (खुदा होने का) गुमान रखते थे, बुलाओ, तो वह उन को बुलाएगे, मगर वे उन को कुछ जवाब न देंगे और हम उन के बीच मे एक हलाकत की जगह बना देगे। (५२) और गुनाहगार लोग दोजख को देखेगे, तो यकीन कर लेगे कि वे उस मे पडने वाले हैं और इस से बचने का कोई रास्ता न पाएगे★(५३) और हम ने इस कुरआन मे लोगो (के समझाने) के लिए तरह-तरह की मिसाले बयान फरमायी है, लेकिन इसान सब चीजो से बढ कर झगडालू है। (५४) और लोगो के पास जब हिदायत आ गयी, तो उन को किस चीज ने मना किया कि ईमान लाएं और अपने परवरदिगार से बख्शिश मागे, इस के अलावा कि (इस बात के इतिजार मे हो कि) उन्हे भी पहलो का-सा मामला पेश आए या उन पर अजाब सामने मौजूद हो। (५५) और हम जो पैगम्बरो को भेजा करते है, तो सिर्फ इस लिए कि (लोगो को खुदा की नेमतो की) खुशखबरिया सुनाए और (अजाब से) डराए और जो काफिर है, वह बातिल (की सनद) से झगडा करते है, ताकि उस के हक को फिसला दे और उन्हो ने हमारी आयतो को और जिस चीज से उन को डराया जाता है, हसी बना लिया। (५६) और उससे जालिम कौन है जिस को उस के परवरदिगार के कलाम से समझाया गया, तो उस ने उस से मुह फेर लिया और जो आमाल वह आगे कर चुका, उन को भूल गया, हम ने उन के दिलो पर परदे डाल दिए कि उसे समझ न सकें और कानो मे बोझ (पैदा कर दिया है कि सुन न सके) और अगर तुम उन को रास्ते की तरफ बुलाओ तो कभी रास्ते पर न आएगे। (५७) और तुम्हारा परवरदिगार बख्शने वाला, रहमत वाला है। अगर वह उन के करतूतो पर उन को पकडने लगे, तो उन पर झट अजाब भेज दे, मगर उन के लिए एक वक्त (मुकर्रर कर रखा) है कि उस के अजाब से कोई पनाह की जगह न पाएंगे। (५८)

★रु. ७/१६ आ ४

व तिल्कल्-कुरा अह्लक-नाहुम् लम्मा ज़-लमू व ज-अल्ना लिमह्लिकिहिम् मौअिदा ★(५९) व इज़् का-ल मूसा लिफताहु ला अब्रहु हत्ता अब्लु-ग मज्-म-अल्-बह्रैनि औ अम्ज़ि-य हुकुबा (६०) फ़-लम्मा ब-लगा मज्-म-अ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा फत्त-ख-ज़ सबीलहू फिल्बह्रि स-र-बा (६१)

لن يجدوا من دونه موئلا ○ وتلك القرى أهلكناهم لما ظلموا
وجعلنا لمهلكهم موعدا ○ وإذ قال موسى لفتاه لا أبرح حتى
أبلغ مجمع البحرين أو أمضي حقبا ○ فلما بلغا مجمع بينهما نسيا
حوتهما فاتخذ سبيله في البحر سربا ○ فلما جاوزا قال لفتاه آتنا
غداءنا لقد لقينا من سفرنا هذا نصبا ○ قال أرأيت إذ أوينا إلى
الصخرة فإني نسيت الحوت وما أنسانيه إلا الشيطان أن أذكره و
اتخذ سبيله في البحر عجبا ○ قال ذلك ما كنا نبغ فارتدا على
آثارهما قصصا ○ فوجدا عبدا من عبادنا آتيناه رحمة من عندنا
وعلمناه من لدنا علما ○ قال له موسى هل أتبعك على أن
تعلمن مما علمت رشدا ○ قال إنك لن تستطيع معي صبرا ○ و
كيف تصبر على ما لم تحط به خبرا ○ قال ستجدني إن شاء الله صابرا
ولا أعصي لك أمرا ○ قال فإن اتبعتني فلا تسألني عن شيء حتى
أحدث لك منه ذكرا ○ فانطلقا حتى إذا ركبا في السفينة
خرقها قال أخرقتها لتغرق أهلها لقد جئت شيئا إمرا ○ قال ألم
أقل إنك لن تستطيع معي صبرا ○ قال لا تؤاخذني بما نسيت و
لا ترهقني من أمري عسرا ○ فانطلقا حتى إذا لقيا غلاما فقتله
قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا ○

फ़-लम्मा जावज़ा का-ल लिफताहु आतिना ग़दा-अना ल-क़द् लक़ीना मिन् स-फ़रिना हाज़ा न-स्-बा (६२) का-ल अ-रऐ-त इज़् अवैना इलस्-सख्-रति फ-इन्नी नसीतुल्हू-त व मा अन्सानीहु इल्लश्शैतानु अन् अज़्कुरहू ۚ वत्त-ख़-ज़ सबीलहू फिलबह्रि अ-ज-बा (६३) का-ल ज़ालि-क मा कुन्ना नब्ग़ि फर्तद्दा अला आसारिहिमा क-स-सा (६४) फ़-व-जदा अब्दम्-मिन् अिबादिना आतैनाहु रह्-म-तम्मिन् अिन्दिना व अल्लम्नाहु मिल्लदुन्ना अिल्मा (६५) का-ल लहू मूसा हल् अत्तबिअु-क अला अन् तुअल्लिमनि मिम्मा अुल्लिम-त रुश्दा (६६) का-ल इन्न-क लन् तस्ततीअ मअि-य सब्रा (६७) व कै-फ़ तस्बिरु अला मा लम् तुहित् बिही ख़ुब्रा (६८) क़ा-ल स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु साबिरव-व ला अअ-सी ल-क अम्रा (६९) का-ल फ-इनित्तबअ्-तनी फला तस्-अल्नी अन् शैइन् हत्ता उह्दि-स ल-क मिन्हु ज़िक्रा ★(७०) फन्त्-ल-क़ा हत्ता इज़ा रकिबा फिस्सफीनति ख़-र-कहा का-ल अ-ख़-रक्-तहा लितुग्रि-क अह्-लहा ल-क़द् जिअ्-त शैअन् इम्रा (७१) क़ा-ल अ-लम् अकुल् इन्न-क लन् तस्ततीअ मअि-य सब्रा (७२) क़ा-ल ला तुआख़िज़्नी बिमा नसीतु व ला तुर्हिक़्नी मिन् अम्री अुस्रा (७३) फ़न्त्-लक़ा हत्ता इज़ा लक़िया गुलामन् फ़-क-त-लहू का-ल अ-क-तल-त नफ़्सन् ज़कियतम्-बिग़ैरि नफ़्सिन् ल-क़द् जिअ्-त शैअन् नुक्रा (७४)

★रु ८/२० आ ६ ★रु॰ ९/२१ आ ११

और ये बस्तिया (जो वीरान पडी है), जब उन्हो ने (कुफ़्र से) ज़ुल्म किया, तो हम ने उन को तबाह कर दिया और उन की तबाही के लिए एक वक्त मुकर्रर कर दिया था। (५९)✯

और जब मूसा ने अपने शागिर्द[1] से कहा कि जब तक मैं दो दरियाओ के मिलने की जगह न पहुच जाऊ, हटने का नही, चाहे वर्षो चलता रहू। (६०) जब उन के मिलने की जगह पर पहुचे, तो अपनी मछली भूल गये, तो उसने दरिया मे सुरग की तरह अपना रास्ता बना लिया। (६१) जब आगे चले तो (मूसा ने) अपने शागिर्द से कहा कि हमारे लिए खाना लाओ, इस सफर मे हम को बडी थकन हो गयी है। (६२) (उस ने) कहा कि भला आप ने देखा कि जब हम ने पत्थर के पास आराम किया था, तो मैं मछली (वही) भूल गया और मुझे (आप से) उस का ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया और उस ने अजब तरह से दरिया मे अपना रास्ता लिया। (६३) (मूसा ने) कहा, यही तो (वह जगह) है, जिसे हम खोजा करते थे, तो वे अपने पाव के निशान देखते-देखते लौट गये। (६४) (वहा) उन्हो ने हमारे बन्दो मे से एक बन्दा देखा, जिस को हम ने अपने यहा से रहमत (यानी नुबूवत या विलायत की नेमत) दी थी और अपने पास से इल्म बख्शा था। (६५) मूसा ने उन से (जिन का नाम खिज़् था) कहा कि जो इल्म (खुदा की तरफ से) आप को सिखाया गया है, अगर आप उस मे से मुझे कुछ भलाई (की बाते) सिखाए तो मैं आप के साथ रहू। (६६) (खिज़् ने) कहा कि तुम मेरे साथ रह कर सब्र नही कर सकोगे, (६७) और जिस बात की तुम्हे खबर ही नही, उस पर सब्र कर भी क्योकर सकते हो। (६८) मूसा ने कहा, खुदा ने चाहा, तो आप मुझे सब्र करने वाला पाइएगा और मैं आप के इर्शाद के खिलाफ नही करूगा। (६९) (खिज़् ने) कहा, अगर तुम मेरे साथ रहना चाहो तो (शर्त यह है), मुझ से कोई बात न पूछना, जब तक मैं खुद उस का जिक्र तुम से न करू। (७०)✶

तो दोनो चल पडे, यहा तक कि जब कश्ती मे सवार हुए, तो (खिज़् ने) कश्ती को फाड डाला। (मूसा ने) कहा, क्या आप ने उस को इस लिए फाडा है कि सवारो को डुबो दे। यह तो आप ने बडी (अजीब) बात की। (७१) (खिज़् ने) कहा, क्या मैं ने नही कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। (७२) (मूसा ने) कहा कि जो भूल मुझ से हुई, उस पर पकड न कीजिए और मेरे मामले मे मुझ पर मुश्किल न डालिए। (७३) फिर दोनो चले, यहा तक कि (रास्ते मे) एक लडका मिला,[2] तो (खिज़् ने) उसे मार डाला। (मूसा ने) कहा कि आप ने एक बे-गुनाह नफ्स को (नाहक) बगैर किसास के मार डाला। (यह तो) आप ने बुरी बात की। (७४) (खिज़् ने)

---

१ असल लफ्ज़ 'फता' है, जिस का मतलब जवान है। 'फता' से यहा मुराद यूशेअ बिन नून है। चूकि वह मूसा अलैहिस्सलाम के साथ रहते और उन से इल्म हासिल किया करते थे, इस लिए हम ने उन को जवान की जगह शागिर्द लिखा है। कुछ लोगो ने कहा कि वह यूशेअ के भाई थे। कुछ लोगो ने कहा कि मूसा अलैहिस्सलाम का गुलाम था।

२ किसी ने मूसा अलैहिस्सलाम से पूछा कि सब से ज्यादा आलिम कौन है? उन्हो ने कहा कि मैं हू। [illegible] की कि मेरा एक बन्दा दो दरियाओ के मिलने की जगह मे है, वह तुम से ज्यादा इल्म रखता है तो मूसा [illegible] स्सलाम ने उन से मिलने और इल्म हासिल करने की गरज से सफर का इरादा किया। यह बन्दे [illegible] से साबित है, खिज़् थे। उन का नाम जैसा कि सहीह बुखारी मे अबू हुरैरह रज़ि० ने रिवायत किया [illegible] ([illegible])

सोलहवां पारः क़ा-ल अ-लम

सूरतुल् कह्फ़ि आयत ७५ से ११०

का-ल अ-लम् अक़ुल्ल-क इन्न-क लन् तस्ततीअ मअि-य स़ब्रा (७५) क़ा-ल इन् स-अल्तु-क अन् शैइम्-बअ्-दहा फ ला तुस़ाहिब्नी ८ कद् ब-लग्-त मिल्लदुन्नी अुज़्रा (७६) फन्त-लक़ा हत्ता इजा अ-तया अह्-ल कर-यति-निस-तत़्-अमा अह्-लहा फ अबौ अय्युज़य्यिफ़ू हुमा फ-व-जदा फीहा जिदारय्युरीदु अय्यन्कज़्-ज़ फ-अक़ामहू ط का-ल लौ शिअ्-त लत्त-ख़ज्-त अलैहि अज्रा (७७) का-ल हाजा फिराक़ु बैनी व बैनि-क ८ सउनब्बिउ-क बितअ्वीलि मा लम् तस्ततिअ अलैहि स़ब्रा (७८) अम्मस्सफीनतु फ-कानत् लिमसाकी-न यअ्-मलू-न फिल्बह़्रि फ-अरत्तु अन् अ-ईब-हा व का-न वरा-अहुम् मलिकु य्यअ्ख़ुज़ु कुल्-ल सफीनतिन् ग़स्बा (७९) व अम्मल्ग़ुलामु फ़का-न अ-ब-वाहु मुअ्मिनैनि फ-ख़शीना अय्युर्हि-क़-हुमा तुग़्यानव्-व कुफ़्रा ८ (८०) फ - अरद्ना अय्युब्दि-लहुमा रब्बुहुमा ख़ैरम्-मिन्हु जकातंव्-व अक़्र-ब रुह़्मा (८१) व अम्मल्-जिदारु फका-न लिग़ुलामैनि यतीमैनि फिल्-मदीनति व का-न तह़्तहू कन्जुल्लहुमा व का-न अबूहुमा स़ालिहन् ८ फ-अरा-द रब्बु-क अय्यब्लुग़ा अशुद्दहुमा व यस्तख़्रिजा कन्जहुमा صلے रह़्मतम्मिर् - रब्बि - क ८ व मा फ - अल्तुहू अन् अम्री ط ज़ालि-क तअ्वीलु मा लम् तस्तिअ् अलैहि सब्रा ط ★ (८२) व यस्अलून-क अन् ज़िल्करनैनि ط कुल् स-अत्लू अलैकुम् मिन्हु ज़िक्रा ط (८३) इन्ना मक्कन्ना लहू फिल्अर्ज़ि व आतैनाहु मिन् कुल्लि शैइन् स-ब-बा ط (८४) फ-अत्ब-अ् स-ब-बा (८५) हत्ता इजा ब-ल-ग मग़्रिबश्-शम्सि व-ज-दहा तग़्रुबु फी अैनिन् ह़मि-अतिंव्-व व-ज-द अिन्दहा कौमन् ८ कुल्ना याज़ल्-करनैनि इम्मा अन् तुअ़ज़्ज़ि-ब व इम्मा अन् तत्तख़ि-ज फीहिम् हुस्ना (८६)

قال الم ٢٣١ الكهف ١٨

قال الم اقل لك انك لن تستطيع معي صبرا ۝ قال ان
سألتك عن شيء بعدها فلا تصاحبني قد بلغت من لدني
عذرا ۝ فانطلقا حتى اذا اتيا اهل قرية استطعما اهلها فابوا
ان يضيفوهما فوجدا فيها جدارا يريد ان ينقض فاقامه قال
لو شئت لتخذت عليه اجرا ۝ قال هذا فراق بيني وبينك
سانبئك بتاويل ما لم تستطع عليه صبرا ۝ اما السفينة فكانت
لمساكين يعملون في البحر فاردت ان اعيبها وكان وراءهم ملك
ياخذ كل سفينة غصبا ۝ واما الغلم فكان ابواه مؤمنين فخشينا
ان يرهقهما طغيانا وكفرا ۝ فاردنا ان يبدلهما ربهما خيرا
منه زكوة واقرب رحما ۝ واما الجدار فكان لغلمين
يتيمين في المدينة وكان تحته كنز لهما وكان ابوهما صالحا
فاراد ربك ان يبلغا اشدهما ويستخرجا كنزهما رحمة من
ربك وما فعلته عن امري ذلك تاويل ما لم تسطع عليه
صبرا ۝ ويسئلونك عن ذي القرنين قل سأتلوا عليكم منه
ذكرا ۝ انا مكنا له في الارض واتينه من كل شيء سببا ۝
فاتبع سببا ۝ حتى اذا بلغ مغرب الشمس وجدها تغرب في
عين حمئة ووجد عندها قوما قلنا يذا القرنين اما ان

★रु. १०/१ आ १२

कहा, क्या मैं ने नही कहा था कि तुम से मेरे साथ सब्र नही हो सकेगा ? (७५) उन्हो ने कहा कि अगर मैं इस के वाद (फिर) कोई वात पूछू, (यानी एतराज करू), तो मुझे अपने साथ न रखियेगा कि आप मेरी तरफ से उज्र (कुबूल करने मे इतिहा) को पहुंच गये। (७६) फिर दोनो चले, यहा तक कि एक गाव वालो के पास पहुंचे और उन से खाना तलव किया। उन्होने उन की मेहमानी करने से इकार किया। फिर उन्हो ने वहा एक दीवार देखी जो (झुक कर) गिरा चाहती थी तो (खिज़्र ने) उस को सीधा कर दिया। (मूसा ने) कहा कि अगर आप चाहते तो उन से (उस का) मुआवजा लेते, (ताकि खाने का काम चलता।) (७७) (खिज़्र ने) कहा कि अव मुझ मे और तुम मे अलगाव, (मगर) जिन बातो पर तुम सब्र न कर सके, मैं उन का तुम्हे भेद बताए देता हू। (७८) (कि वह जो) कश्ती (थी) गरीब लोगो की थी, जो दरिया मे मेहनत (कर के यानी कश्तिया चला कर गुज़ारा) करते थे और उन के सामने (की तरफ) एक बादशाह था, जो हर एक कश्ती को जबर-दस्ती छीन लेता था, तो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दू (ताकि वह उसे गसब न कर सके)। (७९) और वह जो लडका था, उस के मा-बाप दोनो मोमिन थे, हमे डर हुआ कि वह (वडा हो कर बद-किरदार होगा, कही) उन को सर-कशी और कुफ़ मे न फसा दे।[1] (८०) तो हम ने चाहा कि उनका परवरदिगार उस की जगह उन को और (बच्चा) अता फरमाए जो पाक-मिजाजी मे वेहतर और मुहब्बत मे ज्यादा करीब हो। (८१) और वह जो दीवार थी, सो दो यतीम लडको की थी (जो) शहर मे (रहते थे) और उस के नीचे उन का खजाना (दफन) था और उन का वाप एक नेक आदमी था, तो तुम्हारे परवरदिगार ने चाहा कि वे अपनी जवानी को पहुच जाए और (फिर) अपना खजाना निकाले। यह तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी है और ये काम मैं ने अपनी तरफ से नही किए। यह उन बातो की हकीकत है, जिन पर तुम सब्र न कर सके। (८२) ★

और तुम से जुलकर्नैन के बारे मे पूछते है। कह दो कि मैं उस का किसी कदर हाल पढ कर सुनाता हू। (८३) हम ने उस को जमीन मे बडी दस्तरस (पहुच) दी थी और हर तरह का सामान अता किया था। (८४) तो उसने (सफर का) एक सामान किया। (८५) यहा तक कि जब सूरज के डूब जाने की जगह पहुचा तो उसे ऐसा पाया कि एक कीचड की नदी मे डूब रहा है और उस (नदी) के पास एक कौम देखी। हम ने कहा, जुलकर्नैन! तुम उन को चाहे तक्लीफ दो, चाहे उन (के बारे) मे भलाई अख्तियार करो, (दोनो बातो की तुम को कुदरत है)। (८६) (जुलकर्नैन ने) कहा कि

(पृष्ठ ४७७ का शेष)

इस लिए हुआ कि वह एक सूखी घास पर बैठे थे और वह उन के नीचे हरी-भरी हो गयी।

३ लफ्ज़ो का तर्जुमा तो यह है कि एक लडके से मिले, मगर ऐसे मौके पर इसी तरह बात करते है, जिस तरह हम ने लिखा है।

१ यानी चूकि लडका मा-वाप के तरीके पर न होता और कुफ्र और सरकशी करता, [illegible] हुआ कि जव यह लडका वडा हो, तो उस के मा-वाप कही उस की मुहब्बत मे अंधे हो कर कुफ्र [illegible] न फस जाए, इस लिए उस को मार डालना अल्लाह तआला के हुक्म से था।

★रु. १०/१ आ १२

का-ल अम्मा मन् ज़-ल-म फ़सौ-फ़ नुअज़्ज़िबुहू सुम-म युरद्दु इला रब्बिही फ़युअज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबन् नुक्रा (८७) व अम्मा मन् आम-न व अमि-ल सालिहन् फ़-लहू जज़ा-अ-निल्-हुस्ना ط व स-नकूलु लहू मिन् अम्रिना युस्रा ط (८८) सुम्-म अत्-ब-अ स-ब-बा (८९) हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मत्-लिअश्-शम्सि व-ज-दहा तत्लुअु अ़ला कौमिल्लम् नज्अ़ल्लहुम् मिन् दूनिहा सित्रा ۙ (९०) कज़ालि-क ط व क़द् अहत्-ना बिमा लदैहि ख़ुब्रा (९१) सुम्-म अत-ब-अ स-ब-बा (९२) हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ बैनस्-सद्दैनि व-ज-द मिन् दूनिहिमा कौमल्-ला ۙ यकादू-न यफ़्क़हू-न कौला (९३) कालू याज़ल्-क़र्नैनि इन्-न यअ्जू-ज व मअ्जू-ज मुफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-हल् नज्अलु ल-क ख़र्जन् अ़ला अन् तज्-अ-ल बैनना व बैनहुम सद्दा (९४) का-ल मा मक्कन्नी फ़ीहि रब्बी ख़ैरुन् फ़-अईनूनी बिकुव्वतिन् अज्-अल् बैनकुम् व बैनहुम् रद्मा ۙ (९५) आतूनी ज़ु-ब-रल्-हदीदि ط हत्ता इज़ा सावा बैनस्स-द-फ़ैनि कालन्फ़ुख़ू हत्ता-इज़ा ज-अ-लहू नारन् ۙ का-ल आतूनी उफ़्रिग़् अ़लैहि क़ित्रा ط (९६) फ़-मस्ताअू अय्यज़्हरूहु व मस्तताअू लहू नक़्बा (९७) का-ल हाज़ा रह्-मतुम्मिर्-रब्बी ج फ़-इज़ा जा-अ वअ-दु रब्बी ज-अ-लहू दक्का-अ व का-न वअ्-दु रब्बी हक्का ط (९८) व त-रक्ना बअ्-ज़हुम् यौमइज़िंय्यमूजु फ़ी बअ्-ज़िंव्-व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-ज-मअ्-नाहुम् जम्अ़ व्-ۙ (९९) -व अ-रज़्ना जहन्न-म यौमइज़िल्लिल्-काफ़िरी-न अ़र्ज़ा ۙ (१००) अल्लज़ी-न कानत् अअ्-युनुहुम् फ़ी ग़िताइन् अन् ज़िक्री व कानू ला यस्ततीअू-न सम्-आ ★ (१०१) अ-फ़-हसिबल्लज़ी-न क-फ़रू अंय्यत्तख़िज़ू अ़िबादी मिन् दूनी औलिया-अ ط इन्ना अअ्-तद्ना जहन्न-म लिल्काफ़िरी-न नुज़ुला (१०२)

الکهف ١٨ — ٣٤٢ — قال الم

تعذب واما ان تتخذ فيهم حسنا ۝ قال اما من ظلم فسوف
نعذبه ثم يرد الى ربه فيعذبه عذابا نكرا ۝ واما من امن و
عمل صالحا فله جزاء الحسنى وسنقول له من امرنا يسرا ۝ ثم
اتبع سببا ۝ حتى اذا بلغ مطلع الشمس وجدها تطلع على قوم
لم نجعل لهم من دونها سترا ۝ كذلك وقد احطنا بما لديه
خبرا ۝ ثم اتبع سببا ۝ حتى اذا بلغ بين السدين وجد من
دونهما قوما لا يكادون يفقهون قولا ۝ قالوا يذا القرنين ان
ياجوج وماجوج مفسدون في الارض فهل نجعل لك خرجا على
ان تجعل بيننا وبينهم سدا ۝ قال ما مكني فيه ربي خير فاعينوني
بقوة اجعل بينكم وبينهم ردما ۝ اتوني زبر الحديد حتى اذا ساوى
بين الصدفين قال انفخوا حتى اذا جعله نارا قال اتوني افرغ عليه
قطرا ۝ فما اسطاعوا ان يظهروه وما استطاعوا له نقبا ۝ قال هذا
رحمة من ربي فاذا جاء وعد ربي جعله دكاء وكان وعد ربي
حقا ۝ وتركنا بعضهم يومئذ يموج في بعض ونفخ في الصور فجمعنهم
جمعا ۝ وعرضنا جهنم يومئذ للكفرين عرضا ۝ الذين كانت اعينهم
في غطاء عن ذكري وكانوا لا يستطيعون سمعا ۝ افحسب الذين
كفروا ان يتخذوا عبادي من دوني اولياء انا اعتدنا جهنم للكفرين

★रु ११/२ आ १६

जो (कुफ़् व बद-किरदारी से) जुल्म करेगा उसे हम अजाब देगे, फिर (जब) वह अपने परवरदिगार की तरफ लौटाया जाएगा, तो वह भी उसे बुरा अजाब देगा। (८७) और जो ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, उस के लिए बहुत अच्छा बदला है और हम अपने मामले मे (उस पर किसी तरह की सख्ती नही करेगे, बल्कि) उस से नर्म बात कहेगे। (८८) फिर उस ने एक और सामान (सफर का) किया। (८९) यहा तक कि सूरज के निकलने की जगह पर जा पहुचा तो देखा कि वह ऐसे लोगो पर निकलता है, जिन के लिए हम ने सूरज के उस तरफ कोई ओट नही बनायी थी। (९०) (हकीकत) यो (थी) और जो कुछ उस के पास था, हम को सब की खबर थी। (९१) फिर उस ने एक और सामान किया। (९२) यहा तक कि दो दीवारो के दर्मियान पहुचा, तो देखा कि उन के उस तरफ कुछ लोग है कि बात को समझ नही सकते। (९३) उन लोगो ने कहा कि जुलकर्नैन ! याजूज और माजूज ज़मीन मे फसाद करते रहते है। भला हम आपके लिए खर्च (का इतिजाम) करदे कि आप हमारे और उन के दर्मियान एक दीवार खीच दे। (९४) (जुलकर्नैन ने) कहा कि खर्च की जो कुदरत खुदा ने मुझे बख्शी है, वह बहुत अच्छा है, तुम मुझे (बाजू) की ताकत मे मदद दो। मै तुम्हारे और उन के दर्मियान एक मजबूत ओट बना दूगा। (९५) तुम लोहे के (बडे-बडे) तख्ते लाओ, (चुनाचे काम जारी कर दिया गया), यहा तक कि जब उस ने दानो पहाडो के दर्मियान (का हिस्सा) बराबर कर दिया (और) कहा कि (अब इसे) धौको, यहा तक कि जब उन को (धौंक-धौंक कर) आग कर दिया तो कहा कि (अब) मेरे पास ताबा लाओ कि उस पर पिघला कर डाल दू। (९६) फिर उन मे यह कुदरत न रही कि उस पर चढ सके और न यह ताकत रही कि उस मे नकब लगा सकें। (९७) बोला कि यह मेरे परवरदिगार की मेहरबानी है। जब मेरे परवरदिगार का वायदा आ पहुचेगा, तो उस को (ढा कर) हमवार कर देगा और मेरे परवरदिगार का वायदा सच्चा है। (९८) (उस दिन) हम उनको छोड देगे कि (धरती पर फैल कर) एक दूसरे मे घुस जाएंगे और सूर फूका जाएगा, तो हम सब को जमा कर लेगे। (९९) और उस दिन जहन्नम को काफिरो के सामने लाएंगे, (१००) जिन की आखे मेरी याद से परदे मे थी और सुनने की ताकत नही रखते थे। (१०१)★

क्या काफिर यह ख्याल करते है कि वे हमारे बन्दो को हमारे सिवा (अपना) कारसाज बनाएंगे, (तो हम खफा नही होगे)। हम ने (ऐसे) काफिरो के लिए जहन्नम की मेहमानी तैयार

★रु. ११/२ आ १९

कुल् हल् नुनब्बिउकुम् बिल्-अख्सरी-न अअ्-माला ⸗ (१०३) अल्लज़ी-न जल्-ल सअ्-युहुम् फ़िल्-ह़यातिद्दुन्या व हुम् यह्-सबू-न अन्नहुम् युह्सिनू-न सुन्आ (१०४) उलाइकल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् व लिक़ाइही फ़-ह़बितत् अअ-मालुहुम् फ़ला नुक़ीमु लहुम् यौमल्क़ियामति वज्ना (१०५) ज़ालि-क जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा क-फ़रू वत्त-ख़ज़ू आयाती व रुसुली हुज़ुवा (१०६) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति कानत् लहुम् जन्नातुल्-फ़िर-दौसि नुज़ुला ⸗ (१०७) ख़ालिदी-न फ़ीहा ला यब्ग़ू-न अन्हा हि-वला (१०८) कुल् लौ कानल्-बह़्रु मिदादल्लिकलिमाति रब्बी ल-नफ़िदल्-बह़्रु क़ब्-ल अन् तन्फ़-द कलिमातु रब्बी व लौ जिअ्ना बिमिस्लिही म-द-दा (१०९) कुल् इन्नमा अ-न ब-श-रुम्-मिस्लुकुम् यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुव्वाहिदुन् फ़-मन् का-न यर्जू लिक़ा-अ रब्बिही फ़ल-यअ्-मल् अ़-म-लन् सालिहंव-व ला युश्रिक् बिअ़िबादति रब्बिही अ-ह़-दा★ (११०)

نزلا ۝ قل هل ننبئكم بالأخسرين أعمالا ۝ الذين ضل سعيهم
في الحيوة الدنيا وهم يحسبون أنهم يحسنون صنعا ۝ أولئك الذين
كفروا بآيات ربهم ولقائه فحبطت أعمالهم فلا نقيم لهم يوم القيمة
وزنا ۝ ذلك جزاؤهم جهنم بما كفروا واتخذوا آياتي ورسلي هزوا ۝
إن الذين آمنوا وعملوا الصلحت كانت لهم جنت الفردوس نزلا ۝
خلدين فيها لا يبغون عنها حولا ۝ قل لو كان البحر مدادا لكلمت
ربي لنفد البحر قبل أن تنفد كلمت ربي ولو جئنا بمثله مددا ۝ قل
إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلي أنما إلهكم إله واحد فمن كان يرجوا
لقاء ربه فليعمل عملا صالحا ولا يشرك بعبادة ربه أحدا ۝
سورة مريم مكية وهي ثمان وتسعون آية وست ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
كهيعص ۝ ذكر رحمت ربك عبده زكريا ۝ إذ نادى ربه نداء
خفيا ۝ قال رب إني وهن العظم مني واشتعل الرأس شيبا
ولم أكن بدعائك رب شقيا ۝ وإني خفت الموالي من وراءي
وكانت امرأتي عاقرا فهب لي من لدنك وليا ۝ يرثني ويرث
من آل يعقوب واجعله رب رضيا ۝ يزكريا إنا نبشرك بغلم
اسمه يحيى لم نجعل له من قبل سميا ۝ قال رب أنى يكون

१९ सूरतु मर्य-म ४४

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३८८६ अक्षर, ९६८ शब्द, ९८ आयते और ६ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

काफ़्-हा-या - अ़ैन् - साद् (१) ज़िक्रु रह़्-मति रब्बि-क अ़ब्दहू ज-करिय्या (२) इज़् नादा रब्बहू निदाअन् ख़फ़िय्या (३) क़ा-ल रब्बि इन्नी व-ह-नल्-अ़ज़्मु मिन्नी वश्त-अ-लर्रअ्सु शैबव्-व लम् अकुम्-बिदुआइ-क रब्बि शक़िय्या (४) व इन्नी ख़िफ़्तुल्-मवालि-य मिंव्वराई व कानतिम्-र-अती आक़िरन् फ़-हब-ली मिल्लदुन्-क वलिय्या ⸗ (५) यरिसुनी व यरिसु मिन्आलि यअ्-क़ू-ब वज्-अ़ल्हु रब्बि रज़िय्या (६) या जकरिय्या इन्ना नुबश्शिरु-क बिग़ुलामिनिस्मुहू यह़्या ⸗ लम् नज्-अ़ल् लहू मिन् क़ब्लु समिय्या (७)

★रु. १२/३ आ ६

कर रखी है। (१०२) कह दो कि हम तुम्हे बताए कि जो अमलो के लिहाज से बडे नुक्सान मे है, (१०३) वह लोग, जिन की कोशिश दुनिया की जिदगी मे बर्बाद हो गयी और वे समझे हुए है कि अच्छे काम कर रहे है। (१०४) ये वह लोग है जिन्हो ने अपने परवरदिगार की आयतो और उस के सामने जाने से इन्कार किया, तो उन के आमाल जाया हो गये और हम कियामत के दिन उन के लिए कुछ भी वजन कायम नही करेगे।[1] (१०५) यह उन की सजा है (यानी) जहन्नम, इस लिए कि उन्हो ने कुफ्र किया और हमारी आयतो और हमारे पैगम्बरो की हसी उडायी। (१०६) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उन के लिए बहिश्त के बाग मेमेहमानी होगे। (१०७) हमेशा उन मे रहेगे और वहा से मकान बदलना न चाहेगे। (१०८) कह दो कि अगर समुन्दर मेरे परवरदिगार की बातो के (लिखने के) लिए स्याही हो, तो इस से पहले कि मेरे परवरदिगार की बाते पूरी हो, समुन्दर खत्म हो जाए, अगरचे जो हम वैसा ही और उस की मदद को लाए। (१०९) कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक बशर हू, अल-बत्ता मेरी तरफ वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद (वही) एक माबूद है, तो जो शख्स अपने परवरदिगार से मिलने की उम्मीद रखे, चाहिए कि नेक अमल करे और अपने परवरदिगार की इबादत मे किसी को शरीक न बनाए। (११०)☆

१९ सूरः मर्यम ४४

सूर. मरयम मक्की है और इस मे ९८ आयते और छ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

काफ-हा-या-ऐन-स्वाद, (१) (यह) तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी का बयान (है, जो उस ने) अपने बन्दे ज़करीया पर (की थी), (२) जब उन्हो ने अपने परवरदिगार को दबी आवाज मे पुकारा। (३) (और) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी हड्डिया बुढापे की वजह से कमजोर हो गयी है और सर शोला मारने लगा है[2] और ऐ मेरे परवरदिगार! मै तुझ से माग कर कभी महरूम नही रहा। (४) और मैं अपने बाद अपने भाई-बन्दो से डरता हू और मेरी बीवी बाझ है तो मुझे अपने पास से एक वारिस अता फरमा, (५) जो मेरी और याकूब की औलाद की मीरास का मालिक हो और (ऐ) मेरे परवरदिगार उस को खुश अतवार (अच्छे तौर-तरीके वाला) बनाइयो।[3] (६) ऐ जकरीया! हम तुम को एक लडके की खुशखबरी देते है, जिस का नाम यहया है। इस से पहले हम ने इस नाम का कोई शख्स पैदा नही किया। (७) उन्हो ने कहा, परवरदिगार!

---

१ वे आखिरत को मानते न थे, तो इस के वास्ते कुछ काम न किया, फिर एक पल्ला क्या तौलना ?

२ यानी बालो की सफेदी की वजह से सर आग की तरह चमकने लगा है।

३ मीरास के मालिक होने से मुराद नुबूवत का वारिस होना है न कि माल व दौलत का, क्योंकि पैगम्बरों की नज़रो मे माल व दौलत कुछ चीज़ नही होती, जिस के लिए खुदा से वारिस मागे। उन के नज़दीक जो चीज़ सब से बेहतर और विरासत के काबिल है, वह खुदा का दीन और उस के बन्दो की हिदायत है और पैगम्बर को ऐसे कामो के लिए खुदा से औलाद मागने की उम्मीद होनी चाहिए, साथ ही जैसा कि हदीस मे आया है पैगम्बर का माल खुदा की राह मे सद्का होता है, उस का कोई वारिस नही होता।

क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली गुलामु व्-व कानतिम्-र-अती आक़िरंव्-व क़द् ब-लग़्तु मिनल्कि-बरि अितिय्या (८) का-ल कज़ालि-क ℓ का-ल रब्बु-क हु-व अ्-लय्-य हय्यिनु व्-व क़द् ख़-लक़्तु-क मिन् क़ब्लु व लम् तकु शैआ (९) का-ल रब्बिज्-अल्ली आ-य-तन् ℓ का-ल आयतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स लयालिन् सविय्या (१०)

फ-ख़-र-ज अ्ला क़ौमिही मिनल्-मिह्राबि फऔहा इलैहिम् अन् सब्बिहू बुक्-र-तंव्-व अशिय्या (११) या यह्या ख़ुजिल्किता-ब बिक़ुव्वतिन् ℓ व आतैनाहुल् - हुक् - म सबिय्या ℓ (१२) व ह़नानम् - मिल्लदुन्ना व ज़काततन् ℓ व का - न तक़िय्या ℓ (१३) व बर्रम्-बिवालिदैहि व लम् यकुन् जब्बारन् अ्सिय्या (१४) व सलामुन् अ्लैहि यौ-म वुलि-द व यौ-म यमूतु व यौ-म युब्अमु हय्या ★ (१५) वज़्कुर् फ़िल्किताबि मर्यम ▨ इज़िन - त - ब-ज़त् मिन् अह्लिहा मकानन् शर्क़िय्या ℓ (१६)

لي غلم وكانت امراتي عاقرا وقد بلغت من الكبر عتيا ○ قال
كذلك قال ربك هو علي هين وقد خلقتك من قبل ولم تك
شيا ○ قال رب اجعل لي اية قال ايتك الا تكلم الناس ثلث
ليال سويا ○ فخرج على قومه من المحراب فاوحى اليهم ان سبحوا
بكرة وعشيا ○ يا يحيى خذ الكتب بقوة واتينه الحكم صبيا ○
وحنانا من لدنا وزكوة وكان تقيا ○ وبرا بوالديه ولم يكن
جبارا عصيا ○ وسلم عليه يوم ولد ويوم يموت ويوم يبعث حيا ○
واذكر في الكتب مريم اذ انتبذت من اهلها مكانا شرقيا ○ فاتخذت
من دونهم حجابا فارسلنا اليها روحنا فتمثل لها بشرا سويا ○
قالت اني اعوذ بالرحمن منك ان كنت تقيا ○ قال انما انا رسول
ربك لاهب لك غلما زكيا ○ قالت انى يكون لي غلم ولم يمسسني
بشر ولم اك بغيا ○ قال كذلك قال ربك هو علي هين ولنجعله
اية للناس ورحمة منا وكان امرا مقضيا ○ فحملته فانتبذت
به مكانا قصيا ○ فاجاءها المخاض الى جذع النخلة قالت
يليتني مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا ○ فنادها من تحتها
الا تحزني قد جعل ربك تحتك سريا ○ وهزي اليك بجذع
النخلة تسقط عليك رطبا جنيا ○ فكلي واشربي وقري عينا فاما

फत्त - ख़ - ज़त् मिन् दूनिहिम् हिजाबन् ℓ फ - अर्सल्ना इलैहा रूहना फ़-त-मस्स-ल लहा ब-श-रन् सविय्या (१७) कालत् इन्नी अऊज़ु बिर्रह्मानि मिन्-क इन् कुन्-त तक़िय्या (१८) का-ल इन्नमा अ-न रसूलु रब्बिकि लि-अ-ह-ब लकि गुलामन् ज़किय्या (१९) कालत् अन्ना यकूनु ली गुलामु व्-व लम् यम्सस्नी ब-शरुंव्-व लम् अकु बग़िय्या ● (२०) का-ल कज़ालिकि ℓ का-ल रब्बुकि हु-व अ्-लय्-य हय्यिनुन् ℓ व लिनज्-अ-लहू आयतल्लिन्नासि व रह्-म-तम्मिन्ना ℓ व का-न अम्रम्-मक़्ज़िय्या (२१) फ-ह-म-लत्हु फ़न्त-ब-ज़त् बिही मकानन् क़सिय्या (२२) फ-अजा-अहल्-मख़ाज़ु इला जिज़्अिन्-नख़्-लति ℓ कालत् यालैतनी मित्तु क़ब्-ल हाज़ा व कुन्तु नस-यम्-मन्सिय्या (२३) फ़नादाहा मिन् तह्तिहा अल्ला तह्-ज़नी क़द् ज-अ्-ल रब्बुकि तह्-तकि सरिय्या (२४) व हुज़्ज़ी इलैकि बिजिज़्अिन्-नख़्-लति तुसाक़ित् अ्लैकि रु-त़-बन् जनिय्या ℓ (२५)

★रु. १/४ आ १५ ▨व. लाज़िम ●रुबुअ़ १/४

मेरे यहा किस तरह लडका पैदा होगा, जिस हाल मे मेरी बीवी बाझ है और मैं बुढापे की इन्तिहा को पहुच गया हू। (८) हुक्म हुआ कि इसी तरह (होगा) तुम्हारे परवरदिगार ने फरमाया है कि मुझे यह आसान है और मै पहले तुम को भी तो पैदा कर चुका हू और तुम कुछ चीज न थे। (९) कहा कि परवरदिगार! मेरे लिए कोई निशानी मुकर्रर फरमा। फरमाया, निशानी यह है कि तुम नही व सालिम हो कर तीन(रात -दिन) लोगो से बात न कर सकोगे। (१०) फिर वह (इबादत के) हुज्रे मे निकल कर अपनी कौम के पास आए, तो उन से इशारे मे कहा कि सुबह व शाम (खुदा को) याद करते रहो। (११) ऐ यह्या! (हमारी) किताब को जोर से पकडे रहो और हम ने उन को लडकपन ही मे हुक्म (दानाई) अता फरमायी थी। (१२) और अपने पास से शफकत और पाकीजगी (दी थी) और वह परहेजगार थे। (१३) और मा-बाप के साथ नेकी करने वाले थे और सरकश (और) ना-फरमान नही थे। (१४) और जिस दिन पैदा हुए और जिस दिन वफात पाएगे और जिस दिन जिंदा कर के उठाए जाएगे, उन पर सलाम और रहमत (है)। (१५)★

और किताब (कुरआन) मे मरयम का भी जिक्र करो, जब वह अपने लोगो से अलग हो कर पूरब की तरफ चली गयी, (१६) तो उन्हो ने उन की तरफ से पर्दा कर लिया, (उस वक्त) हम ने उन की तरफ अपना फरिश्ता भेजा, तो वह उनके सामने ठीक आदमी (की शक्ल) बन गया। (१७) (मरयम) बोली कि अगर तुम परहेजगार हो तो मैं तुम से खुदा की पनाह मागती हू। (१८) उन्होंने कहा कि मैं तो तुम्हारे परवरदिगार का भेजा हुआ (यानी फरिश्ता) हू (और इस लिए आया हू) कि तुम्हे पाकीजा लडका बख्शू। (१९) (मरयम) ने कहा कि मेरे यहा लडका कैसे होगा, मुझे किसी इसान ने छुआ तक नही और मैं बद-कार भी नही हू। (२०)●(फरिश्ते ने) कहा कि यों ही (होगा)। तुम्हारे परवरदिगार ने फरमाया कि यह मुझे आसान है और (मैं उसे इसी तरीके पर करूंगा) पैदा ताकि उस को लोगो के लिए अपनी तरफ से निशानी और रहमत (व मेहरबानी का जरिया) बनाऊ और यह काम मुकर्रर हो चुका है। (२१) तो वह उस (बच्चे) के साथ हामिला हो गयी और उसे ले कर एक दूर जगह चली गयी। (२२) फिर दर्देजेह (बच्चा पैदा होने के वक्त का दर्द) उन को खजूर के तने की तरफ ले आया। कहने लगी कि काश मैं इस से पहले मर चुकी और भूली-बिसरी हो गयी होती। (२३) उस वक्त उन के नीचे की तरफ से फरिश्ते ने उन को आवाज दी कि गमनाक न हो। तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे नीचे एक चश्मा पैदा कर दिया है। (२४) और खजूर के तने को पकड कर अपनी तरफ हिलाओ तुम पर ताजा [illegible]

★रु. १/४ आ १५ ▨व. लाजिम ●रुबुअ १/४

फकुली वश-रबी व कर्री अ़ैनन् फइम्मा त-र-यिन्-न मिनल्-ब-शरि अ-ह़-दन्
फकूली इन्नी न-ज़र्तु लिर्रह़्मानि सौमन् फ-लन् उकल्लिमल्-यौ-म इन्सिय्या
(२६) फ-अ-तत् बिही कौमहा तह़्-मिलुहू कालू या मर्यमु ल-कद् जिअ्ति
शैअन् फरिय्या (२७) याउख़्-त हारू-न मा का-न अबूकिम्र-अ सौइंव्-व मा
कानत् उम्मुकि बगिय्या (२८)
फ-अशारत् इलैहि कालू कै-फ नुकल्लिमु
मन् का-न फिलमह्दि स़बिय्या (२९) का-ल
इन्नी अ़ब्दुल्लाहि आतानियल् -
किता-ब व ज-अ़-लनी नबिय्या (३०)
व ज-अ-लनी मुबारकन् ऐ-न मा कुन्तु
व औसानी बिस्स़लाति वज्जकाति मादुम्तु
ह़य्या (३१) व बर्रम् -
बिवालिदती व लम् यज्-अल्नी जब्बारन्
शकिय्या (३२) वस्सलामु अ-लय्-य यौ-म
वुलित्तु व यौ-म अमूतु व यौ-म उब्असु
ह़य्या (३३) ज़ालि-क ई़सब्नु मर्य-म

تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَٰنِ صَوْمًا فَلَنْ
أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۝ فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ قَالُوا يَا مَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ
شَيْئًا فَرِيًّا ۝ يَا أُخْتَ هَارُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ
بَغِيًّا ۝ فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝
قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۝ وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا
أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝ وَبَرًّا
بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ۝ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ
أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝ ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي
فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝ مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ سُبْحَانَهُ إِذَا قَضَىٰ
أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ
هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ
يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ
الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّا
نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۝ وَاذْكُرْ فِي
الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ
تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ۝ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ

कौलल्-ह़क्किल्लज़ी फ़ीहि यम्तरून (३४) मा का-न लिल्लाहि अय्यत्तखि-ज
मिव्व - लदिन् सुब्ह़ानहू इज़ा क़ज़ा अम् - रन् फ-इन्नमा यकूलु लहू
कुन् फ-यकून (३५) व इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फअ्-बुदूहु हाज़ा
सिरातुम् - मुस्तकीम (३६) फख़्त - ल् - फल् - अह़्ज़ाबु मिम् - बैनिहिम्
फ-वैलुल्-लिल्लज़ी - न क-फरू मिम् - मश्हदि यौमिन् अज़ीम (३७)
अस्मिअ बिहिम् व अब्सि़र् यौ - म यअ्तूनना लाकिनिज़् - ज़ालिमूनल्-
यौ-म फी ज़लालिम्-मुबीन (३८) व अन-जिर्हुम् यौमल्-ह़स्-रति इज़्
कुज़ियल् - अम्रु व हुम् फ़ी गफ़्-लतिव्वहुम् ला युअ्मिनून (३९)
इन्ना नह़्नु नरिसुल्अर्-ज व मन् अ़लैहा व इलैना युर्जअून (४०)
वज़् - कुर् फिल्किताबि इब्राही - म इन्नहू का - न सि़द्दीकन्
नबिय्या (४१) इज़् का - ल लिअबीहि या-अ-बति लि-म तअ़् - बुदु
मा ला यस्मअु व ला युब्सि़रु व ला युग़्नी अन्-क शैआ (४२)

व लाज़िम ★रु. २/५ आ २५

पड़ेगी। (२५) तो खाओ और पियो और आखें ठंडी करो। अगर तुम किसी आदमी को देखो तो कहना कि मैं ने खुदा के लिए रोज़े की मन्नत मानी, तो आज मैं किसी आदमी से हरगिज़ बात नहीं करूंगी। (२६) फिर वह उस (बच्चे) को उठा कर अपनी कौम के लोगों के पास ले आयी। वे कहने लगे कि मरयम! यह तो तू ने बुरा काम किया। (२७) ऐ हारून की बहन![1] न तो तेरा बाप बुरी आदतों वाला था और न तेरी मा ही बद-कार थी। (२८) तो मरयम ने उस लड़के की तरफ इशारा किया। वह बोले कि हम इस से कि गोद का बच्चा है, किस तरह बात करें। (२९) (बच्चे ने) कहा कि मैं खुदा का बन्दा हू, उस ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है। (३०) और मैं जहा हू (और जिस हाल में हू) मुझे बरकत वाला बनाया है और जब तक जिंदा हू मुझ को नमाज और जकात का हुक्म इर्शाद फरमाया है। (३१) और (मुझे) अपनी मा के साथ नेक सुलूक करने वाला (बनाया है) और सरकश व बद-बख्त नहीं बनाया, (३२) और जिस दिन मैं पैदा हुआ, जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन जिंदा कर के उठाया जाऊंगा, मुझ पर सलाम (व रहमत) है। (३३) यह मरयम के बेटे ईसा है (और यह) सच्ची बात है, जिसमें लोग शक करते हैं। (३४) खुदा की शान नहीं कि किसी को बेटा बनाए, वह पाक है, जब किसी चीज का इरादा करता है, तो उस को यही कहता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (३५) और बेशक खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है। (३६) फिर (किताब वालों के) फिर्कों ने आपस में इख्तिलाफ किया, सो जो लोग काफिर हुए हैं, उन को बड़े दिन (यानी कियामत के दिन) हाजिर होने से खराबी है। (३७) वे जिस दिन हमारे सामने आएंगे, कैसे सुनने वाले और कैसे देखने वाले होंगे, मगर जालिम आज खुली गुमराही में हैं। (३८) और उन को हसरत (व अफसोस) के दिन से डरा दो, जब बात फैसला कर दी जाएगी और (अफसोस!) वे गफलत में (पड़े हुए) हैं और ईमान नहीं लाते। (३९) हम ही जमीन के और जो लोग उस पर (बसते) हैं, उन के वारिस हैं और हमारी ही तरफ उन को लौटना होगा। (४०) ★

और किताब में इब्राहीम को याद करो। बेशक वह निहायत सच्चे पैगम्बर थे। (४१) जब उन्होंने अपने बाप से कहा कि अब्बा! आप ऐसी चीजों को क्यों पूजते हैं, जो न सुनें और न देखें

---

१ हारून से यहा वह हारून मुराद नहीं, जो हज़रत मूसा के भाई थे, क्योंकि वह हज़रत मरयम से [illegible] हो गुज़रे थे यानी रिश्तेदारी के लिहाज से वह हारून मुराद नहीं है, बल्कि नेकी और परहेज़गारी [illegible] के एतबार से मुराद है, यानी तू हारून जैसी नेक और परहेजगार थी गोया उन की बहन थी [illegible] किया। अली बिन तल्हा और सुद्दी ने कहा कि हारून की बहन इस लिए कहा गया कि [illegible] हारून की नस्ल से थी और अरब की आदत है कि जो शख्स जिस कौम और कबीले का होता, [illegible] और कबीले का भाई कह कर पुकारते हैं, जैसे तमीमी को 'अखा तमीम' (तमीम के भाई) [illegible] 'अखा मुज़र' (मुज़र के भाई) कहते हैं। इसी तरह यहा भी हज़रत मरयम को [illegible] पुकारा।

▨ व लाज़िम ★ रु २/५ आ २५

या-अ-बति इन्नी क़द् जा-अनी मिनल्-अिलिम मा लम् यअ्-ति-क फत्तबिअ्-नी अह्-दि-क सिरातन् सविय्या (४३) याअ-वति ला तअ्-बुदिश्शैता-न ᵇ इन्नश्शैता-न का-न लिर्रह्मानि असिय्या (४४) याअ-वति इन्नी अखाफु अय्य-मस्स-क अज़ाबुम्-मिनर्रह्मानि फ-तकू-न लिश्शैतानि वलिय्या (४५) का-ल अ-राग़िबुन् अन् - त अन् आलिहती याइब्राहीमु लइल्लम् तन्तहि ल-अर्जुमन्न-क वह्जुर्नी मलिय्या (४६) का-ल सलामुन् अलै-क स-अस्तग़्फिरु ल-क रब्बी ᵇ इन्नहू का - न बी हफिय्या (४७) व अअ्-तजिलुकुम् व मा तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि व अद्अू रब्बी असा अल्ला अकू-न बिदुआ - इ रब्बी शकिय्या (४८) फ-लम्मअ्-त-ज-लहुम् व मा यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व-हब्ना लहू इस्-हा-क व यअ्-कू-ब ᵇ व कुल्लन् ज-अल्ना नबिय्या (४९) व व-हब्ना लहुम् मिर्रह्मतिना व ज-अल्ना लहुम् लिसा-न सिद्किन् अलिय्या ★(५०) वज़्कुर् फिल्किताबि मूसा इन्नहू का-न मुख़-ल-सव-व का-न रसूलन् नबिय्या (५१) व नादैनाहु मिन् जानिबित्तूरिल्-ऐ-मनि व कर्रब्नाहु नजिय्या (५२) व व-हब्ना लहू मिर्रह्मतिना अखाहु हारू-न नबिय्या (५३) वज़्कुर् फिल्किताबि इस्माअी-ल इन्नहू का-न सादिक़ल् - वअ्-दि व का-न रसूलन् नबिय्या (५४) व का-न यअ्मुरु अह-लहू बिस्सलाति वज्जकाति व का-न अिन्-द रब्बिही मर्ज़िय्या (५५) वज़्कुर् फिल्किताबि इद्री-स इन्नहू का-न सिद्दीकन् नबिय्या (५६) व र-फअ्-नाहु मकानन् अलिय्या (५७) उलाइकल्लजी-न अन्-अ-मल्लाहु अलैहिम् मिनन्-नबिय्यी-न मिन् ज़ुर्रिय्यति आद-म व मिम्मन् ह-मलना म-अ नूहिन् व मिन् ज़ुर्रिय्यति इब्राही-म व इस्राई - ल व मिम्मन् हदैना वज्तबैना ᵇ इज़ा तुत्ला अलैहिम् आयातुर्रह्मानि खर्रू सुज्जदव - व बुकिय्या □(५८)

جاءني من العلم ما لم يأتك فاتبعني أهدك صراطا سويا ۝ يا أبت
لا تعبد الشيطن إن الشيطن كان للرحمن عصيا ۝ يا أبت
إني أخاف أن يمسك عذاب من الرحمن فتكون للشيطن
وليا ۝ قال أراغب أنت عن الهتي يا إبرهيم لئن لم تنته لأرجمنك
واهجرني مليا ۝ قال سلم عليك سأستغفر لك ربي إنه كان
بي حفيا ۝ وأعتزلكم وما تدعون من دون الله وأدعوا ربي
عسى ألا أكون بدعاء ربي شقيا ۝ فلما اعتزلهم وما يعبدون
من دون الله وهبنا له إسحق ويعقوب وكلا جعلنا نبيا ۝ و
وهبنا لهم من رحمتنا وجعلنا لهم لسان صدق عليا ۝ واذكر
في الكتب موسى إنه كان مخلصا وكان رسولا نبيا ۝ ونادينه
من جانب الطور الأيمن وقربنه نجيا ۝ ووهبنا له من رحمتنا
أخاه هرون نبيا ۝ واذكر في الكتب إسمعيل إنه كان صادق
الوعد وكان رسولا نبيا ۝ وكان يأمر أهله بالصلوة والزكوة
وكان عند ربه مرضيا ۝ واذكر في الكتب إدريس إنه كان
صديقا نبيا ۝ ورفعنه مكانا عليا ۝ أولئك الذين أنعم الله
عليهم من النبين من ذرية ادم وممن حملنا مع نوح ومن
ذرية إبرهيم وإسراءيل وممن هدينا واجتبينا إذا تتلى عليهم

★रु ३/६ आ १० □सज्दः ५

और न आप के कुछ काम आ सकें। (४२) अब्बा! मुझे ऐसा इल्म मिला है, जो आप को नहीं मिला, तो मेरे साथ होजिए, मैं आप को सीधी राह पर चला दूंगा। (४३) अब्बा! शैतान की पूजा न कीजिए बेशक शैतान खुदा का ना-फरमान है। (४४) अब्बा! मुझे डर लगता है कि आप को खुदा का अजाब आ पकड़े, तो आप शैतान के साथी हो जाए। (४५) उस ने कहा कि इब्राहीम! क्या तू मेरे माबूदो से बरगश्ता है? अगर तू बाज न आएगा, तो मैं तुझे संगसार करूंगा और तू हमेशा के लिए मुझ से दूर हो जा। (४६) (इब्राहीम ने) "सलामुन अलैकुम" कहा (और कहा कि) मैं आपके लिए अपने परवरदिगार से बख्शिश मागूगा। बेशक वह मुझ पर निहायत मेहरबान है। (४७) और मै आप लोगो से और जिन को आप खुदा के सिवा पुकारा करते है, उन से किनारा करता हू और अपने परवरदिगार ही को पुकारूगा। उम्मीद है कि मैं अपने परवरदिगार को पुकार कर महरूम नही रहूगा। (४८) और जब इब्राहीम उन लोगो से और जिन की वे खुदा के सिवा पूजा किया करते थे, अलग हो गये, तो हम ने उन को इस्हाक और (इस्हाक को) याकूब बख्शे और सब को पैगम्बर बनाया। (४९) और उन को अपनी रहमत से (बहुत-सी चीज़े) इनायत की और उन का बेहतर जिक्र बुलंद किया। (५०)✱

और किताब में मूसा का भी जिक्र करो। बेशक वह (हमारे) चुने हुए और भेजे हुए (रसूल) पैगम्बर थे। (५१) और हम ने तूर की दाहिनी तरफ पुकारा और बाते करने के लिए नज़दीक बुलाया। (५२) और अपनी मेहरबानी से उन को उन का भाई हारून पैगम्बर अता किया। (५३) और किताब मे इस्माईल का भी जिक्र करो। वह वायदे के सच्चे और (हमारे) भेजे हुए नबी थे। (५४) और अपने घर वालो को नमाज़ और जकात का हुक्म करते थे और अपने परवरदिगार के यहा पसदीदा (व बर्गुजीदा) थे। (५५) और किताब मे इद्रीस का भी जिक्र करो। वह भी निहायत सच्चे नबी थे। (५६) और हम ने उन को ऊची जगह उठा लिया था।[1] (५७) ये वह लोग है जिन पर खुदा ने अपने पैगम्बरो मे से फज़्ल किया (यानी) आदम की औलाद मे से और उन लोगो मे से जिन को हम ने नूह के साथ (कश्ती मे) सवार किया और इब्राहीम और याकूब की औलाद मे से और उन लोगो मे से जिन को हम ने हिदायत दी और चुन लिया जब उन के सामने हमारी आयते पढी जाती थी तो सज्दे मे गिर पडते और रोते रहते थे☐ (५८) फिर उन के बाद कुछ

१ यानी नुबूवत का बुलद दर्जा या दुनिया मे बुलंद मर्तबा बख्शा था या यह कि आस्मान की तरफ [illegible]।

★रु ३/६ आ १० ☐सज्दः ५

फ-ख़-ल-फ़ मिम्बअ्-दिहिम् ख़ल्फुन् अज़ाअुस्सला-त वत्तबअुश्श-ह-वाति फ़सौ-फ यल्क़ौ-न गय्या ॥ (५९) इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अमि-ल सालिहन् फउलाइ-क यद्खुलूनल्-जन्न-त व ला युज़्लमू - न शैआ ॥ (६०) जन्नाति अद्नि-नि-ल्लती व-अ-दर्रह्मानु अिबादहू बिल्ग़ैबि ॥ इन्नहू का-न वअ्-दुहू मअ्तिय्या (६१) ला यस्मअू-न फीहा लग़्-वन् इल्ला सलामन् ॥ व लहुम् रिज् .- क़ुहुम् फ़ीहा बुक-र-तंव्-व अशिय्या (६२) तिल्कल्-जन्नतुल्लती नूरिसु मिन् अिबादिना मन् का-न तक़िय्या (६३) व मा न-त-नज़्ज़लु इल्ला बिअम्रि रब्बि-क ॥ लहू मा बै-न ऐदीना व मा ख़ल्फ़ना व मा बै-न ज़ालि-क ॥ व मा का-न रब्बु-क नसिय्या ॥ (६४) रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा फ़अ् - बुद्हु वस्तबिर् लिअिबादतिही ॥ हल् तअ् - लमु लहू समिय्या ★(६५) व यक़ूलुल्-इन्सानु अ-इज़ा मा मित्तु ल-सौ-फ़ उख़्रजु हय्या (६६) अ-व ला यज़्कुरुल्-इन्सानु अन्ना ख़-लक़्नाहु मिन् क़ब्लु व लम् यकु शैआ (६७) फ़-व रब्बि-क ल-नह्शुरन्नहुम् वश्शयाती-न सुम्-म ल-नुह्ज़िरन्नहुम् हौ-ल जहन्न-म जिसिय्या॥(६८) सुम्-म ल-नन्ज़िअन्-न मिन् कुल्लि शीअतिन् अय्युहुम् अशद्दु अलर्रह्मानि अितिय्या॥(६९) सुम्-म ल-नह्नु अअ्-लमु बिल्लज़ी-न हुम् औला बिहा सिलिय्या (७०) व इम्-मिन्कुम् इल्ला वारिदुहा॥ का - न अला रब्बि - क हत्मम् - मक़्ज़िय्या ॥ (७१) सुम्-म नुनज्जिल्लज़ीनत्तक़व्-व न-ज़-रुज़्ज़ालिमी-न फ़ीहा जिसिय्या (७२) व इज़ा तुत्ला अलैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू ॥ अय्युल्फ़रीक़ैनि ख़ैरुम्-मक़ामव्-व अह्सनु नदिय्या (७३) व कम् अह्-लक्ना क़ब्-लहुम् मिन् क़र्निन् हुम् अह्-सनु असासव्-व रिअ्या (७४)

قال الم ١٦ — ٣٤٧ — مريم ١٩

ءَايٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۝ اِلَّا مَنْ
تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ
شَيْـًٔا ۝ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ اِنَّهٗ كَانَ
وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً
وَّعَشِيًّا ۝ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝ وَمَا
نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ وَ
مَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَ
اصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ۝ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا
مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ۝ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ
وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ۝ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ
جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ
عِتِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ۝ وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا
وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ
نَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ
نَدِيًّا ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ۝

منزل

★रु. ४/७ आ १५

ना-खलफ उन के जानशीन हुए, जिन्होने नमाज को (छोड दिया, गोया उसे) खो दिया और नफ्स की ख्वाहिशो के पीछे लग गये, बहुत जल्द उन को गुमराही (की सजा) मिलेगी। (५९) हा जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किए तो ऐसे लोग बहिश्त मे दाखिल होगे और उन का कुछ नुक्सान न किया जाएगा। (६०) (यानी) हमेशा की बहिश्त (मे) जिस का खुदा ने अपने बन्दो से वायदा किया है (और जो उन की आखो से) छिपा हुआ (है।) बेशक उस का वायदा (नेको के सामने) आने वाला है। (६१) वे उस मे सलाम के सिवा कोई बेहूदा कलाम न सुनेगे और उन के लिए सुबह व शाम खाना तैयार होगा।[1] (६२) यह वह जन्नत है जिस का हम अपने बन्दो मे से ऐसे शख्स को मालिक बनाएगे, जो परहेजगार होगा। (६३) और (फरिश्तो ने पैगम्बर को जवाब दिया कि) हम तुम्हारे परवरदिगार के हुक्म के सिवा उतर नही सकते, जो कुछ हमारे आगे है और जो पीछे है और जो उन के दर्मियान है, सब उसी का है और तुम्हारा परवरदिगार भूलने वाला नही। (६४) (यानी) आसमान और जमीन और जो उन दोनो के दर्मियान है सब का परवरदिगार, तो उसी की इबादत करो और उस की इबादत पर साबित कदम रहो, भला तुम कोई उस का हम-नाम (एक नाम वाला) जानते हो ? (६५)

और (काफिर) इसान कहता है कि जब मैं मर जाऊगा तो क्या जिंदा कर के निकाला जाऊगा ? (६६) क्या (ऐसा) इसान याद नही करता कि हम ने उस को पहले भी तो पैदा किया था और वह कुछ भी चीज न था। (६७) तुम्हारे परवरदिगार की कसम ! हम उन को जमा करेंगे और शैतानो को भी, फिर इन सब को जहन्नम के गिर्द हाजिर करेंगे (और वे) घुटनो पर गिरे हुए (होगे)। (६८) फिर हर जमाअत मे से हम ऐसे लोगो को खीच निकालेगे, जो खुदा से [illegible] कशी करते थे। (६९) और हम उन लोगो को खूब जानते है, जो उन मे दाखिल होने के ज्यादा लायक है। (७०) और तुम मे कोई (शख्स) नही, मगर उसे उस पर गुजरना होगा। यह तुम्हारे परवरदिगार पर जरूरी और मुकर्रर है। (७१) फिर हम परहेजगारो को निजात देगे और जालिमो को उस मे घुटनो के बल पडा हुआ छोड देगे। (७२) और जब उन लोगो के सामने हमारी आयते पढी जाती है, तो जो काफिर है, वे मोमिनो से कहते है कि दोनो फरीक मे से मकान [illegible] और मज्लिसो मे से किस की बेहतर है ? (७३) और हम ने उन से पहले बहुत-सी उम्मते [illegible] दी। वे लोग (उन से) ठाट और दिखावे मे कही अच्छे थे। (७४) कह दो कि जो [illegible]

---

१ बक-बक न सुनेगे और सलामुन अलैकुम की आवाज सुनेगे।

क़ुल् मन् का-न फ़िज़्ज़लालति फ़ल्-यम्दुद् लहुर्रह्मानु मद्-दा ̈ हत्ता इज़ा रऔ मा यूअ़दू-न इम्मल्-अ़ज़ा-ब व इम्मस्सा-अ-तु ́ फ-स-यअ्-ल-मू-न मन् हु-व शर्रुम्-मकानंव्-व अज़्अ़फ़ु जुन्दा (७५) व यज़ीदुल्लाहुल्-लज़ीनह्-तदौ हुदन् ́ वल्बाक़ियातुस्-सालिहातु ख़ैरुन् अ़िन्-द रब्बि-क सवाबंव्-व ख़ैरुम्-म-रद्दा (७६)

अ-फ़-रऐ-तल्लज़ी क-फ़-र बिआयातिना व क़ा-ल ल-ऊ-त-यन्-न मालंव्-व व-ल-दा ́ (७७) अत्त-ल-अल्-ग़ै-ब अमित्त-ख़-ज़ अ़िन्दर्रह्मानि अ़ह्-दा ́ (७८) कल्ला ́ स-नक्तुबु मा यक़ूलु व नमुद्दु लहू मिनल्-अ़ज़ाबि मद्-दा ́ (७९) व नरिसुहू मा यक़ूलु व यअ्तीना फ़र्दा (८०) वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-ह-तल्-लि-यकूनू लहुम् अ़िज़्ज़ा ́ (८१) कल्ला ́ स-यक्फ़ुरू-न बिअ़िबादतिहिम् व यकूनू-न अ़लैहिम् ज़िद्दा ★(८२) अ-लम् त-र अन्ना अर्सल्नश्-शयाती-न अ-लल्-काफ़िरी-न तउज़्ज़ुहुम् अज़्ज़ा ́ (८३) फ़ला तअ्-जल् अ़लैहिम् ́ इन्नमा नअ़ुद्दु लहुम् अ़द्दा ̈ (८४) यौ-म नह्शुरुल्-मुत्तक़ी-न इलर्रह्मानि वफ़्-दा ́ (८५) व नसूक़ुल्-मुज्रिमी-न इला जहन्न-म विर्दा ▨(८६) ला यम्लिकूनश्शफ़ा-अ-त इल्ला मनित्त-ख़-ज़ अ़िन्दर्रह्मानि अ़ह्दा ▨(८७) व क़ालुत्त-ख़-ज़र्रह्मानु व-ल-दा ́ (८८) ल-क़द् जिअ्तुम् शैअन् इद्दा ́ (८९) तकादुस्समावातु य-त-फ़त्तर्-न मिन्हु व तन-शक़्क़ुल्अर्ज़ु व तख़िर्रुल्-जिबालु हद्दा ́ (९०) अन् दऔ लिर्रह्मानि व-ल-दा ̈ (९१) व मा यम्बग़ी लिर्रह्मानि अंय्यत्तख़ि-ज़ व-ल-दा ́ (९२) इन् कुल्लु मन् फ़िस्समावाति वल्-अर्ज़ि इल्ला आतिर्रह्मानि अ़ब्दा ́ (९३) ल-क़द् अह्साहुम् व अ़द्दहुम् अ़द्दा ́ (९४) व कुल्लुहुम् आतीहि यौमल्क़ियामति फ़र्दा (९५) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति स-यज्अ़लु लहुमुर्रह्मानु वुद्दा (९६)

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا
مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ
مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ۝ وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبَاقِيَاتُ
الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ۝ أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ
بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۝ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ
الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ۝ كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ
مَدًّا ۝ وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۝ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً
لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۝ كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ
ضِدًّا ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ۝
فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ۝ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَٰنِ
وَفْدًا ۝ وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا ۝ لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ
إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ۝
لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ۝ تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ
وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۝ أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا ۝ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَٰنِ
أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۝ إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَٰنِ
عَبْدًا ۝ لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝ وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فَرْدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ

★रु॰ ५/८ आ १७ ▨ व॰ लाज़िम ▨ व॰ लाज़िम

पड़ा हुआ है, खुदा उस को धीरे-धीरे मोहलत दिए जाता है, यहां तक कि जब उस चीज़ को देख लेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, ख्वाह अजाब, और ख्वाह कियामत तो (उस वक्त) जान लेगे कि मकान किस का बुरा है और लश्कर किस का कमजोर है। (७५) और जो लोग हिदायत पाए हुए है, खुदा उन को ज्यादा हिदायत देता है और नेकिया जो बाकी रहने वाली हैं, वे तुम्हारे परवरदिगार के बदले के लिहाज से खूब और अंजाम के एतबार से बेहतर है। (७६) भला तुम ने उस शख्स को देखा जिस ने हमारी आयतो से कुफ्र किया और कहने लगा कि (अगर मैं मरने के बाद जिंदा हुआ भी तो यही) माल और औलाद मुझे (वहा) मिलेगा। (७७) क्या उस ने गैब की ख़बर पा ली है, या खुदा के यहा (से) अह्द ले लिया है ? (७८) हरगिज़ नही ! यह जो कुछ कहता है, हम उस को लिखते जाते और धीरे-धीरे अजाब बढाते जाते हैं, (७९) और जो चीजे यह बताता है उन के हम वारिस होंगे और यह अकेला हमारे सामने आएगा। (८०) और उन लोगो ने खुदा के सिवा और माबूद बना लिए है, ताकि वह उन के लिए (इज्जत व) मदद (की वजह) हो। (८१) हर गिज नही। वे (झूठे माबूद) उन की पूजा से इन्कार करेगे और उन के दुश्मन (व मुखालिफ) होगे, (८२)★

क्या तुम ने नही देखा कि हम ने शैतानो को काफिरो पर छोड रखा कि वे उन को उभारते रहते हैं, (८३) तो तुम उन पर (अजाब के लिए) जल्दी न करो और हम तो उन के लिए (दिन) गिन रहे है, (८४) जिस दिन हम परहेजगारो को खुदा के सामने मेहमानो (के तौर पर) जमा करेगे। (८५) और गुनाहगारो को दोजख की तरफ प्यासे हाक ले जाएगे ▨ (८६) (तो लोग) किसी की सिफारिश का अख्तियार न रखेगे, मगर जिस ने खुदा से इकरार लिया हो ▨ (८७) और कहते हैं खुदा बेटा रखता है। (८८) (ऐसा कहने वालो ! यह तो) तुम बुरी बात (जबान पर) लाते हो। (८९) करीब है कि इस (झूठ गढने) से आसमान फट पडे और जमीन फट जाए और पहाड टुकड़े-टुकडे हो कर गिर पडे, (९०) कि उन्हो ने खुदा के लिए बेटा तजवीज किया। (९१) और खुदा को मुनासिब नही कि किसी को बेटा बनाए। (९२) तमाम शख्स जो आसमानों और जमीन मे है, सब खुदा के रू-ब-रू बन्दे हो कर आएगे। (९३) उस ने उन (सब) को [illegible] से) घेर रखा और (एक-एक को) गिन रखा है, (९४) और सब कियामत के दिन उस के सामने अकेले-अकेले हाज़िर होगे। (९५) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए [illegible] मुहब्बत (मख्लूकात के दिल मे) पैदा कर देगा। (९६) (ऐ पैगम्बर !) हम ने [illegible]

★रु. ५/८ आ १७ ▨ व लाज़िम ▨ व. लाज़िम

फइन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लितुबश्शि-र बिहिल्-मुत्तक़ी-न व तुन्ज़ि-र बिही क़ौमल्-लुद्दा (९७) व कम् अह्लक्ना क़ब-लहुम् मिन् क़र्निन् हल् तुहिस्सु मिन्हुम् मिन् अ-हृदिन् औ तस्मअु लहुम् रिक्ज़ा ●★(९८)

वُدًّا ۝ فَإِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ
قَوْمًا لُّدًّا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ
مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۝

سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّخَمْسٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّثَمٰنُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ ۝ مَآ أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ۝ إِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝
تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ۝ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ
اسْتَوٰى ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ
الثَّرٰى ۝ وَإِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفٰى ۝ اَللّٰهُ لَآ إِلٰهَ
إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝ وَهَلْ أَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝ إِذْ
رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوْٓا إِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ
أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝ فَلَمَّآ أَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ۝ إِنِّيْٓ أَنَا رَبُّكَ
فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ
لِمَا يُوْحٰى ۝ إِنَّنِيْٓ أَنَا اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا فَاعْبُدْنِيْ وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ
لِذِكْرِيْ ۝ إِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ۝
فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ۝ وَمَا تِلْكَ
بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ۝ قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلٰى

२० सूरतु ताहा ४५

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ५४६६ अक्षर, १२५१ शब्द, १३५ आयते और ८ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

ता-हा (१) मा अन्ज़ल्ना अलैकल्-कुर्आ-न लितश्क़ा (२) इल्ला तज़्कि-र-तल्-लिमय्यख़्शा (३) तन्ज़ीलम्-मिम्मन् ख़-ल-क़ल्अर्-ज़ वस्समावातिल्-अुला (४) अर्रह्मानु अ-लल्-अर्शिस्तवा (५) लहू मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व मा तह-तस्सरा (६) व इन् तज्-हर् बिल्क़ौलि फ-इन्नहू यअ-लमुस्सिर्-र व अख़्फ़ा (७) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व लहुल्-अस्मा-उल्-हुस्ना (८) व हल् अता-क हदीसु मूसा ▨(९) इज् रआ नारन् फ-का-ल लिअह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु नारल्ल-अल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-क-बसिन् औ अजिदु अ-लन्नारि हुदा (१०) फ़-लम्मा अताहा नूदि-य या मूसा (११) इन्नी अ-न रब्बु-क फख़्लअ् नअ्-लै-क इन्न-क बिल्वादिल्-मुक़द्दसि तुवा (१२) व अनख़्तर्तु-क फ़स्तमिअ् लिमा यूहा (१३) इन्ननी अनल्लाहु ला इला-ह इल्ला अ-न फ़अ्-बुद्नी व अक़िमिस्सला-त लिज़िक्री (१४) इन्नस्सा-अ-त आतियतुन् अकादु उख़्फ़ीहा लितुज़्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा तस्आ (१५) फला यसुद्दन्न-क अन्हा मल्ला युअ्मिनु बिहा वत्तब-अ हवाहु फ-तर्दा (१६) व मा तिल्-क बियमीनि-क या मूसा (१७) का-ल हि-य असाय अ-त-वक्कउ अलैहा व अहुश्शु बिहा अ़ला ग-नमी व लि-य फ़ीहा मआरिबु उख़्रा (१८)

★रु. ६/६ आ १६ ●नि. १/२ ▨व लाज़िम

तुम्हारी ज़ुबान मे आसान (नाज़िल) किया है ताकि तुम इस से परहेज़गारो को ख़ुशख़बरी पहुंचा दो और झगड़ालुओ को डर सुना दो। (९७) और हम ने इस से पहले बहुत से गिरोहो को हलाक कर दिया है, भला तुम उन मे किसी को देखते हो या (कही) उन की भनक सुनते हो। (९८)★○

२० सूरः ता़ हा ४५

सूर त्वा हा मक्की है और इस मे एक सौ पैंतीस आयते और आठ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा हा, (१) (ऐ मुहम्मद !) हमने तुम पर कुरआन इसलिए नाजिल नही किया कि तुम मुशक्कत मे पड जाओ।[1] (२) वल्कि उस शख्स को नसीहत देने के लिए (नाज़िल किया है) जो डर रखता है। (३) यह उस जात का उतारा हुआ है, जिस ने जमीन और ऊचे-ऊचे आसमान बनाए। (४) (यानी ख़ुदा-ए-) रहमान, जिस ने अर्श पर करार पकडा। (५) जो कुछ आसमानो मे है और जो कुछ ज़मीन मे है और जो कुछ इन दोनो के बीच मे है, और जो कुछ (ज़मीन की) मिट्टी के नीचे है, सब उसी का है। (६) और अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह तो छिपे भेद और बहुत छिपी बात तक को जानता है। (७) (वह) माबूद (बर हक) है (कि) उस के सिवा कोई माबूद नही है, उस के (सब) नाम अच्छे है। (८) और क्या तुम्हे मूसा के हाल की खबर मिली है ▨ (९) जब उन्हो ने आग देखी तो अपने घर के लोगो से कहा कि तुम (यहा) ठहरो, मैं ने आग देखी है। (मैं वहा जाता हू) शायद उस मे से मैं तुम्हारे पास अगारे लाऊ या आग (की जगह) का रास्ता मालूम कर सकू। (१०) जब वहा पहुचे तो आवाज आयी कि मूसा ! (११) मैं तो तुम्हारा परवरदिगार हू, तो अपनी जूतिया उतार दो, तुम (यहा) पाक मैदान (यानी) तुवा मे हो। (१२) और मैं ने तुम को चुन लिया है, तो जो हुक्म दिया जाए उसे सुनो। (१३) वेशक मैं ही ख़ुदा हू, मेरे सिवा कोई माबूद नही, तो मेरी इबादत किया करो और मेरी याद के लिए नमाज पढ़ा करो।[2] (१४) कियामत यकीनन आने वाली है। मैं चाहता हू कि उस (के वक्त) को पोशीदा रखूं, ताकि हर शख्स जो कोशिश करे, उस का बदला पाए। (१५) तो जो शख्स उस पर ईमान नही रखता और अपनी ख्वाहिश के पीछे चलता है, (कही) तुम को उस (के यकीन) से रोक न दे, तो (इस शक्ल मे) तुम हलाक हो जाओ। (१६) और मूसा यह तुम्हारे दाहिने हाथ मे क्या है ? (१७) उन्हो ने कहा यह मेरी लाठी है, इस पर मैं सहारा लगाता हू और इस से अपनी बकरियो के लिए पत्ते झाडता हू और इन मे मेरे और भी [illegible]

---

१ जब कुरआन नाज़िल होना शुरू हुआ तो जनाब रिसालत मआब ज्यादा से ज्यादा इबादत करते [illegible] जहमत उठाते, रातो को नमाज़ मे खडे रहते और कुरआन शरीफ पढते रहते [illegible] वाकेअ होने का डर होता था, दूसरे काफिरो ने आप से कहना शुरू किया कि कुरआन तो आप [illegible] तक्लीफ की वजह बन गया, तब यह आयत नाज़िल हुई कि अल्लाह तआला ने आप को [illegible] मना फरमाया।

२ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भी पहली वह्य मे नमाज़ का हुक्म है और हमारे पैगम्बर को [illegible] फ-कब्बिर' और कियामत को छिपाता हू यानी वक्त किसी को नही बताता।

का-ल अल्किहा या मूसा (१६) फ़-अल्काहा फ-इज़ा हि-य हय्यतुन् तस्आ (२०) का-ल खुज़्हा व ला त-ख़फ् وقفة सनुअीदुहा सी-र-त-हल् - ऊला (२१) वज़्मुम् य-द-क इला जनाहि-क तख्-रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइन् आ-य-तुन् उख़्रा ۙ (२२) लिनुरि - य - क मिन् आयातिनल् - कुब्रा ۚ (२३)

इज़्हब् इला फ़िर्औ-न इन्नहू तगा★(२४) का-ल रब्बिश्रह्ली सद्री ۙ (२५) व यस्सिर् ली अम्री ۙ (२६) वह्लुल्-अुक्द-तम्-मिल्लिसानी ۙ (२७) यफ् - क़हू क़ौली ۖ (२८) वज्अल्-ली वज़ीरम्मिन् अह्ली ۙ (२६) हारू-न अख़ि- ۙ (३०) श्दुद् बिही अज्री ۙ (३१) व अश्रिक्हु फ़ी अम्री ۙ (३२) कै नुसब्बि-ह-क कसीरव ۙ (३३) व नज़्कु-र-क कसीरा ۭ (३४) इन्न-क कुन्-त बिना बसीरा (३५) का-ल कद् ऊती-त सुअ्-ल-क या मूसा (३६) व ल-कद् मनन्ना अलै - क मर्रतन् उख़्रा ۙ (३७) इज़् औहैना इला उम्मि-क मा यूहा ۙ (३८) अनिक़्ज़िफ़ीहि फ़ित्ताबूति फक़्ज़िफ़ीहि फ़िल्यम्मि फ़ल्-युल्किहिल्-यम्मु बिस्साहिलि यअ्ख़ुज़्हु अदुव्वुल्ली व अदुव्वुल्लहू ۭ व अल्कैतु अलै-क महब्बतम्मिन्नी ۚ व लितुस्-न-अ् अला अैनी ▨(३६) इज़् तम्शी उख़्तु-क फ-तक़ूलु हल् अदुल्लुकुम् अला मय्यक्-फ़ुलुहू ۭ फ-र-जअ्-ना-क इला उम्मि-क कै त-कर्-र अैनुहा व ला तह्ज़न् ۭ व क़-तल्-त नफ़्सन् फ़-नज्जैना-क मिनल्-ग़म्मि व फ़ - तन्ना-क फ़ुतूनन् ۵ फ-लबिस्-त सिनी-न फ़ी अह्लि मद्-य-न ۵ सुम्-म जिअ्-त अला क़-दरिय्या मूसा (४०) वस्तनअ्-तु-क लिनफ़्सी ۚ (४१) इज़-हब् अन्-त व अख़ू-क बिआयाती व ला तनिया फी ज़िक्री ۚ (४२) इज़्हबा इला फ़िर्औ-न इन्नहू तग़ा ۚ (४३) फक़ूला लहू क़ौलल्लय्यिनल्-ल-अल्लहु य-त-ज़क्करु औ यख़्शा (४४)

قال الم ١٦ — ٢٥٠ — طه ٢٠

غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ۝ قَالَ أَلْقِهَا يَا مُوسَىٰ ۝ فَأَلْقَاهَا فَإِذَا
هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ۝ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ۝
وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ۝
لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ۝ اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝ قَالَ رَبِّ
اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۝ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۝ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ۝
يَفْقَهُوا قَوْلِي ۝ وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ۝ هَارُونَ أَخِي ۝
اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ۝ وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ۝ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ۝
وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ۝ إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ۝ قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ
يَا مُوسَىٰ ۝ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ۝ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ
مَا يُوحَىٰ ۝ أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ
بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِي وَعَدُوٌّ لَهُ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِنِّي
وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ۝ إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَنْ
يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا
فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ
ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَا مُوسَىٰ ۝ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۝ اذْهَبْ
أَنْتَ وَأَخُوكَ بِآيَاتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ۝ اذْهَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ
طَغَىٰ ۝ فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَيِّنًا لَعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ۝ قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا

★रु. १/१० आ २४ ▨ व. लाज़िम

है। (१८) फरमाया कि मूसा ! इसे डाल दो। (१९) तो उन्हो ने उस को डाल दिया और वह यकायक साप बन कर दौडने लगा। (२०) खुदा ने फरमाया कि उसे पकड लो और डरना मत। हम उस को अभी उस की पहली हालत पर लौटा देंगे। (२१) और अपना हाथ अपनी बगल में लगा लो, वह किसी ऐब (व बीमारी) के बगैर सफेद (चमकता-दमकता) निकलेगा। (यह) दूसरी निशानी (है), (२२) ताकि हम तुम्हे अपनी बडी निशानिया दिखाए (२३) तुम फिर्औन के पास जाओ (कि) वह सरकश हो रहा है। (२४)★

कहा, मेरे परवरदिगार ! (इस काम के लिए) मेरा सीना खोल दे। (२५) और मेरा काम आसान कर दे, (२६) और मेरी जुबान की गिरह खोल दे, (२७) ताकि वह मेरी बात समझ ले, (२८) और मेरे घर वालो मे से (एक को) मेरा वजीर (यानी मददगार) मुकर्रर फरमा, (२९) (यानी) मेरे भाई हारून को। (३०) उस मे मेरी ताकत को मजबूत कर (३१) और उसे मेरे काम मे शरीक कर, (३२) ताकि हम तेरी बहुत-सी तस्बीह करें। (३३) और तुझे ज्यादा से ज्यादा याद करें (३४) तू हम को (हर हाल मे) देख रहा है। (३५) फरमाया, मूसा ! तुम्हारी दुआ कुबूल की गयी। (३६) और हम ने तुम पर एक बार और भी एहसान किया था। (३७) जब हम ने तुम्हारी मा को इल्हाम किया था, जो तुम्हे बताया जाता है। (३८) (वह यह था) कि उसे (यानी मूसा को) सदूक मे रखो, फिर उस (सदूक) को दरिया मे डाल दो तो दरिया उस को किनारे पर डाल देगा (और) मेरा और उस का दुश्मन उसे उठा लेगा और (मूसा !) मैं ने तुम पर अपनी तरफ से मुहब्बत डाल दी, (इसलिए कि तुम पर मेहरबानी की जाए) और इसलिए कि तुम मेरे सामने परवरिश पाओ ▨ (३९) जब तुम्हारी बहन (फिर्औन के यहा) गयी और कहने लगी कि मै तुम्हे ऐसा शख्स बताऊ जो उस को पाले, तो (इस तरीके से) हम ने तुम को तुम्हारी मा के पास पहुचा दिया ताकि उन की आखे ठडी हो और वह रज न करे और तुम ने एक शख्स को मार डाला तो हम ने तुम को गम से मुख्लिसी दी और हम ने तुम्हारी (कई बार) आजमाइश की। फिर तुम कई साल मदयन वालो मे ठहरे रहे फिर ऐ मूसा ! तुम (रिसालत की काबिलियत के) अन्दाजे पर आ पहुचे। (४०) और मैं ने तुम को अपने (काम के) लिए बनाया है। (४१) तो तुम और तुम्हारा भाई दोनो हमारी निशानिया ले कर जाओ और मेरी याद मे सुस्ती न करना। (४२) दोनो फिर्औन के पास जाओ, वह सरकश हो रहा है। (४३) और उस से नर्मी से बात करना शायद वह गौर करे या डर जाए। (४४) दोनो कहने लगे कि —

★रु १/१० आ २४ ▨ व. लाजिम

काला रब्बना इन्नना नखाफ़ु अय्यफ़्रु-त अलैना औ अय्यत्गा (४५) का-ल ला तखाफा इन्ननी म-अकुमा अस्मअु व अरा (४६) फअ्तियाहु फकूला इन्ना रसूला रब्बि-क फ़-अर्सिल् म-अना बनी इस्राई-ल व ला तुअ़ज़्ज़िब्हुम् क़द् जिअ्-ना-क बि-आयतिम्-मिर्रब्बि-क वस्सलामु अ़ला मनित्त-ब-अ़ल्-हुदा (४७) इन्ना कद् ऊहि-य इलैना अन्नल्अज़ा-ब अला मन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (४८) क़ा-ल फ-मर्-रब्बुकुमा या मूसा (४९) का-ल रब्बुनल्लज़ी अअ्-ता कुल्-ल शैइन् ख़ल्क़हू सुम्-म हदा (५०) का-ल फ-मा बालुल्-कुरूनिल्-ऊला (५१) का-ल अिल्मुहा अिन्-द रब्बी फी किताबिन् ला यजिल्लु रब्बी व ला यन्-स- (५२) -ल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्अर्-ज़ मह्दव्-व स-ल-क लकुम् फीहा सुबुलव्-व अन्ज-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ-अख़्-रज्ना बिही अज्-वाजम्मिन् नबातिन् शत्ता (५३) कुलू वर्औ अन्-आमकुम् इन्-न फी ज़ालि-क ल-आयातिलिल-उलिन्नुहा ★ (५४) मिन्हा ख़-लक्नाकुम् व फीहा नुअीदुकुम् व मिन्हा नुख्रिजुकुम् तार-तन् ऊख़्रा (५५) व ल-कद् अरैनाहु आयातिना कुल्लहा फ-कज़्ज़-ब व अबा (५६) का-ल अजिअ्-तना लितुख़्रि-जना मिन् अर्जिना बिसिह्रि-क या मूसा (५७) फ-ल-नअ्तियन्न-क बिसिह्रिम्-मिस्लिही फज्-अल् बैनना व बैन-क मौअिदल्ला नुख़्लिफुहू नह्नु व ला अन्-त मकानन् सुवा (५८) का-ल मौअिदुकुम् यौमुज्ज़ीनति व अय्युह्शरन्नासु जुहा (५९) फ-त-वल्ला फिर्औनु फ-ज-म-अ कैदहू सुम्-म अता (६०) का-ल लहुम् मूसा वैलकुम् ला तफ़्तरू अ-लल्लाहि कज़िबन् फ-युस्हितकुम् बिअ़ज़ाबिन् व कद् ख़ा-ब मनिफ़्तरा (६१) फ-त-नाज़अू अम्-रहुम् बैनहुम् व अ-सर्रुन्नज्वा (६२) कालू इन् हाज़ानि ल-साहिरानि युरीदानि अय्युख़्रिजाकुम् मिन् अर्जिकुम् बिसिह्रिहिमा व यज़्हबा बि-तरीक़ति-कुमुल्-मुस्ला (६३)

نخاف ان يفرط علينا او ان يطغى ۝ قال لا تخافا انني معكما
اسمع وارى ۝ فاتياه فقولا انا رسولا ربك فارسل معنا بني
اسراءيل ولا تعذبهم قد جئنك باية من ربك والسلم على
من اتبع الهدى ۝ انا قد اوحي الينا ان العذاب على من كذب
وتولى ۝ قال فمن ربكما يموسى ۝ قال ربنا الذي اعطى كل شيء
خلقه ثم هدى ۝ قال فما بال القرون الاولى ۝ قال علمها عند
ربي في كتب لا يضل ربي ولا ينسى ۝ الذي جعل لكم
الارض مهدا وسلك لكم فيها سبلا وانزل من السماء ماء فاخرجنا
به ازوجا من نبات شتى ۝ كلوا وارعوا انعامكم ان في ذلك لايت
لاولي النهى ۝ منها خلقنكم وفيها نعيدكم ومنها نخرجكم تارة
اخرى ۝ ولقد اريناه ايتنا كلها فكذب وابى ۝ قال اجئتنا لتخرجنا
من ارضنا بسحرك يموسى ۝ فلناتينك بسحر مثله فاجعل بيننا
وبينك موعدا لا نخلفه نحن ولا انت مكانا سوى ۝ قال موعدكم
يوم الزينة وان يحشر الناس ضحى ۝ فتولى فرعون فجمع كيده
ثم اتى ۝ قال لهم موسى ويلكم لا تفتروا على الله كذبا فيسحتكم
بعذاب وقد خاب من افترى ۝ فتنزعوا امرهم بينهم واسروا
النجوى ۝ قالوا ان هذن لسحرن يريدان ان يخرجكم من

★रु २/११ आ ३०

हमारे परवरदिगार ! हमे डर है कि वह हम पर जुल्म करने लगे या ज्यादा सरकश हो जाए। (४५) (खुदा ने) फरमाया कि डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हू (और) सुनता और देखता हू। (४६) (अच्छा) तो उस के पास जाओ और कहो कि हम आप के परवरदिगार के भेजे हुए है, तो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इजाजत दीजिए और उन्हे अजाब न कीजिए। हम आप के पास आप के परवरदिगार की तरफ से निशानी ले कर आए है और जो हिदायत की बात माने उस को सलामती हो। (४७) हमारी तरफ यह वह्य आयी है कि जो झुठलाए और मुह फेरे, उस के लिए अजाब (तैयार) है। (४८) (गरज मूसा और हारून फिऔन के पास गये।) उसने कहा कि मूसा तुम्हारा परवरदिगार कौन है ? (४९) कहा कि हमारा परवरदिगार वह है जिस ने हर चीज को उस की शक्ल व सूरत बख्शी, फिर राह दिखायी। (५०) कहा तो पहली जमाअतो का क्या हाल हुआ ? (५१) कहा कि उनका इल्म मेरे परवरदिगार को है, (जो) किताब मे (लिखा हुआ है)। मेरा परवरदिगार न चूकता है, न भूलता है। (५२) वह (वही तो है,) जिस ने तुम लोगो के लिए जमीन को फर्श बनाया और उस मे तुम्हारे लिए रास्ते जारी किए और आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे किस्म-किस्म की रूईदगिया (पेड़-पौधे) पैदा की। (५३) (कि खुद भी) खाओ और अपने चारपायो को भी चराओ। बेशक इन (बातो) मे अक्ल वालो के लिए (बहुत सी) निशानिया है। (५४)★

इसी (जमीन) से हम ने तुम को पैदा किया और इसी मे तुम्हे लौटाएगे और इसी से दूसरी बार निकालेगे (५५) और हम ने फिऔन को अपनी सब निशानिया दिखायी, मगर वह झुठलाता और इकार ही करता रहा। (५६) कहने लगा कि मूसा ! क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि अपने जादू (के जोर) से हमे हमारे मुल्क से निकाल दो। (५७) तो हम भी तुम्हारे मुकाबले मे ऐसा ही जादू लाएगे, तो हमारे और अपने दर्मियान एक वक्त मुकर्रर कर लो कि न तो हम उस के खिलाफ करे और न तुम। (और यह मुकाबला) एक हमवार मैदान मे (होगा।) (५८) (मूसा ने) कहा कि आप के लिए जीनत के दिन का वायदा है और यह कि लोग उस दिन चाश्त के वक्त इकट्ठे हो जाएं। (५९) तो फिऔन लौट गया और अपने सामान जमा करके फिर आया। (६०) मूसा ने उन (जादूगरो) से कहा कि हाय ! तुम्हारी कम-बख्ती ! [illegible] गढो कि वह तुम्हे अजाब से फना कर देगा और जिस ने झूठ गढा, वह ना-मुराद रहा। (६१) तो वे आपस मे अपने मामले मे झगडने और चुपके-चुपके काना-फूसी करने लगे। (६२) कहने लगे, ये दोनो जादूगर है, चाहते है कि अपने जादू (के जोर) से तुमको तुम्हारे मुल्क से निकाल दे और

★रु २/११ आ ३०

फ़-अज्मिअू कैदकुम् सुम्मअ्तू सफ़्फ़न् ج व क़द् अफ्-ल-हल्यौ-म मनिस्तअ्-ला (६४) क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्कि-य व इम्मा अन् नकू-न अव्व-ल मन् अल्क़ा (६५) क़ा-ल बल् अल्कू ج फ-इज़ा हिबालुहुम् व अिसिय्युहुम् युखय्यलु इलैहि मिन् सिह्रिहिम् अन्नहा तस्आ (६६) फ-औ-ज-स फी नफ़्सिही ख़ीफतम्-मूसा (६७) कुलना ला त-खफ् इन्न-क अन्तल्-अअ्-ला (६८) व अल्कि मा फी यमीनि-क तल्कफ् मा स-नअू ط इन्नमा स-नअू कैदु साहिरिन् ط व ला युफ्लिहुस्साहिरु हैसु अता (६९) फ-उल्कियस्-स-ह-रतु सुज्ज-दन् कालू आमन्ना बिरब्बि हारू-न व मूसा (७०) का-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आ-ज-न लकुम् ط इन्नहू ल - कबीरुकुमुल्लज़ी अ़ल्ल-म-कुमुस्-सिह्-र ج फ़-ल-उ-कत्तिअन्-न ऐदि-यकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िन्-व लउ-सल्लिबन्नकुम् फी जुज़ूअिन्नख़्लि ز व ल-तअ्-लमुन्-न अय्युना अ-शद्दु अज़ाबव्-व अब्क़ा (७१) क़ालू लन् नुअ्सि-र-क अला मा जा-अना मिनल्बय्यिनाति वल्लज़ी फ़-त-रना फक़्ज़ि मा अन्-त क़ाज़िन् ط इन्नमा तक़्ज़ी हाज़िहिल् - ह़यातद्दुन्या ط (७२) इन्ना आमन्ना बिरब्बिना लियग-फ़ि-र लना ख़तायाना व मा अक्-रह्-तना अ़लैहि मिनस्सिह्रि ط वल्लाहु ख़ैरुव्-व अब्क़ा (७३) इन्नहू मंय्यअ्ति रब्बहू मुज्रिमन् फ़-इन्-न लहू जहन्न-म ط ला यमूतु फीहा व ला यह्या (७४) व मंय्यअ्तिही मुअ्मिनन् क़द् अमिलस्सालिहाति फ़-उलाइ-क लहुमुद्-द-र-जातुल्-अुला ط (७५) जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह़्तिहल् - अन्हारु ख़ालिदी - न फीहा ط व ज़ालि - क ज-ज़ाउ मन् त - ज़क्का ★(७६)

قال الم ۱۶ — ۲۵۲ — طٰهٰ ۲۰

أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ ۝ فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ
ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ۝ قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا
أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ۝ قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا
حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ۝
فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَىٰ ۝ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ۝
وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ
السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ۝ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَ
مُوسَىٰ ۝ قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي
عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ
فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ۝ قَالُوا لَنْ
نُؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا ۖ فَاقْضِ مَا أَنْتَ
قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا
خَطَايَانَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۗ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝ إِنَّهُ
مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۝
وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ
الْعُلَىٰ ۝ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَ
ذَٰلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّىٰ ۝ وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي

● सु. ३/४ ★ रु ३/१२ आ २२

तुम्हारे शाइस्ता मजहब को नाबूद कर दे। (६३) तो तुम (जादू का) सामान इकट्ठा कर लो और फिर कतार बाध कर आओ, आज जो गालिब रहा, वही कामियाब हुआ। (६४) बोले कि मूसा या तो तुम (अपनी चीज) डालो या हम (अपनी चीज़ें) पहले डालते है। (६५) मूसा ने कहा, नही, तुम ही डालो। (जब उन्हो ने चीजे डाली) तो यकायक उस की रस्सिया और लाठिया मूसा के ख्याल मे ऐसी आने लगी कि वह (मैदान मे इधर-उधर) दौड रही हैं। (६६) (उस वक्त) मूसा ने अपने दिल मे खौफ मालूम किया। (६७) हमने कहा, खौफ न करो, बेशक तुम ही गालिब हो। (६८) और जो चीज (यानी लाठी) तुम्हारे दाहिने हाथ मे है, उसे डाल दो कि जो कुछ उन्हो ने बनाया है, उस को निगल जाएगी। जो कुछ उन्हो ने बनाया है (यह तो) जादूगरो के हथकंडे है और जादूगर जहा जाए, कामियाबी नही पाएगा। (६९) (गरज़ यह कि यो ही हुआ) तो जादूगर सज्दे मे गिर पडे (और) कहने लगे कि हम मूसा और हारून के परवरदिगार पर ईमान लाए। (७०) (फ़िर्औन) बोला कि इस के पहले कि मै तुम्हे इजाज़त दू, तुम उस पर ईमान ले आए। बेशक वह तुम्हारा बडा (यानी उस्ताद) है, जिस ने तुम को जादू सिखाया है, सो मे तुम्हारे हाथ और पाव, मुखालिफ (तरफ) से कटवा दूगा और खजूर के तनो पर सूली चढवा दूगा, (उस वक्त) तुम को मालूम होगा कि हम मे से किस का अजाब ज्यादा सख्त और देर तक रहने वाला है। (७१) उन्हो ने कहा कि जो दलीले हमारे पास आ गयी है, उन पर और जिस ने हम को पैदा किया है, उस पर हम आप को हरगिज़ तर्जीह नही देगे, तो आप को जो हुक्म देना हो. दे दीजिए और आप (जो) हुक्म दे सकते है, वह सिर्फ इसी दुनिया की ज़िंदगी मे (दे सकते है)। (७२) हम अपने परवरदिगार पर ईमान ले आए ताकि वह हमारे गुनाहो को माफ करे और (उसे भी) जो आप ने हम से ज़बरदस्ती जादू कराया और खुदा बेहतर और बाकी रहने वाला है ● (७३) जो शख्स अपने परवरदिगार के पास गुनाहगार हो कर आएगा तो उस के लिए जहन्नम है, जिस मे न मरेगा, न जिएगा। (७४) और जो उस के रू-ब-रू ईमानदार हो कर आएगा और अमल भी नेक किए होगे, तो ऐसे लोगो के लिए ऊचे-ऊचे दर्जे है। (७५) (यानी) हमेशा रहने के बाग, जिन के नीचे नहरे बह रही है, हमेशा उन मे रहेगे और यह उस शख्स का बदला है, जो पाक हुआ। (७६) ✶

●सु. ३/४ ★रु ३/१२ आ २२

व ल-कद् औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअिबादी फज्रिब् लहुम् तरीकन् फ़िल्बह्रि य-ब-सल्-ला तखाफु द-र-कव्-व ला तख़्शा (७७) फ-अत्ब-अ़हुम् फ़िर्औनु बिजुनूदिही फ़-गशियहुम् मिनल्-यम्मि मा गशि-यहुम् (७८) व अ-जल्-ल फ़िर्औ़नु क़ौमहू व मा हदा (७६) याबनी इस्राई-ल कद् अन्जैनाकुम् मिन् अदुव्विकुम् व वाअद्नाकुम् जानिबत् - तूरिल् - ऐम-न व नज्जलना अलैकुमुल्-मन्-न वस्सल्वा (८०) कुलू मिन् तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् व ला तत्गौ फीहि फ़-यहि़ल्-ल अ़लैकुम् ग-ज़बी व मय्यह्लिल् अलैहि ग-ज़बी फ़-कद् हवा (८१) व इन्नी ल-गफ्फारुल् - लिमन् ता-ब व आम-न व अमि-ल सालिहन् सुम्महतदा (८२) व मा अअ्-ज-ल-क अ़न् कौमि-क या मूसा (८३) का-ल हुम् उलाइ अला अ-सरी व अजिल्तु इलै-क रब्बि लितर्जा (८४) का-ल फ-इन्ना कद् फ-तन्ना कौम-क मिम्बअ्-दि-क व अ-जल्ल-हुमुस्-सामिरिय्यु (८५) फ़-र-ज-अ मूसा इला कौमिही गज्बा-न असिफन् का-ल या कौमि अ-लम् यअिद्कुम् रब्बुकुम् वअ्-दन् ह़-स-नन् अ-फ-ता-ल अ़लैकुमुल्-अह्दु अम् अ-रत्तुम् अय्यहिल्-ल् अ़लैकुम् ग-ज़-बुम्-मिर्रब्बिकुम् फ़-अख़्लफ्तुम् मौअ़िदी (८६) कालू माअख्-लफ्ना मौअि़-द-क बिमल्किना व लाकिन्ना हुम्मिल्ना औजारम्मिन् जीनतिल्कौमि फ-क-ज़फ्नाहा फ़-कजालि-क अल्कस्सामिरिय्यु (८७) फ - अख-र-ज लहुम् अिज्-लन् ज-स-दल्लहू खुवारुन् फ-क़ालू हाजा इलाहुकुम् व इलाहु मूसा फ-नसि-य (८८) अ-फला यरौ - न अल्ला यर्जिअ़ु इलैहिम् कौलव्-व ला यम्लिकु लहुम् जर्-रव्-व ला नफ्आ★(८९) व ल-कद् का-ल लहुम् हारूनु मिन् कब्लु या कौमि इन्नमा फुतिन्तुम् बिही व इन्-न रब्बकुमुर् - रह्मानु फत्तबिअूनी व अतीअू अम्री (९०)

قال الم ١٦ — ۴۵۲ — طه ٢٠

فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَافُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ○
فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُم مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ○ وَ
أَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ ○ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ قَدْ أَنجَيْنَاكُم
مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَاعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ
وَالسَّلْوَىٰ ○ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ
عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۖ وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ ○ وَإِنِّي
لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ○ وَمَا أَعْجَلَكَ
عَن قَوْمِكَ يَا مُوسَىٰ ○ قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ
لِتَرْضَىٰ ○ قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِن بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ○
فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ
وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ
غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِي ○ قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ
بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَا أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَٰلِكَ
أَلْقَى السَّامِرِيُّ ○ فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ فَقَالُوا هَٰذَا
إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ ○ أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا
وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ○ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِن قَبْلُ
يَا قَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَٰنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا

★रु ४१३आ १३

और हमने मूसा की तरफ वह्य भेजी कि हमारे बन्दो को रातो-रात निकाल ले जाओ, फिर उन के लिए दरिया मे लाठी मार कर खुश्क रास्ता बना दो, फिर तुम को न तो (फ़िऔंन के) आ पकडने का डर होगा और न (डूबने का) डर। (७७) फिर फ़िऔंन ने अपने लश्कर के साथ उन का पीछा किया तो दरिया (की मौजो) ने उन पर चढ कर उन्हे ढाक लिया (यानी डुबो दिया।) (७८) और फ़िऔंन ने अपनी कौम को गुमराह कर दिया और सीधे रास्ते पर न डाला। (७९) ऐ याकूब की औलाद ! हमने तुम को तुम्हारे दुश्मन से निजात दी और तौरात देने के लिए तुम से तूर पहाड की दाहिनी तरफ मुकर्रर की और तुम पर मन्न व सलवा नाज़िल किया। (८०) (और हुक्म दिया कि) जो कुछ पाकीज़ा चीज़े हमने तुम को दी है, उन को खाओ और उस में हद से न निकलना, वरना तुम पर मेरा गजब नाज़िल होगा। और जिस पर मेरा अज़ाब नाज़िल हुआ, वह हलाक हो गया।[1] (८१) और जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे, फिर सीधे रास्ते चले, उस को मैं बख्श देने वाला हू। (८२) और ऐ मूसा ! तुम ने अपनी कौम से (आगे चले आने मे) क्यो जल्दी की ? (८३) कहा वह मेरे पीछे (आ रहे हैं) और ऐ मेरे परवरदिगार ! मैं ने तेरी तरफ आने की जल्दी इस लिए की कि तू खुश हो। (८४) फरमाया कि हम ने तुम्हारी कौम को तुम्हारे बाद आजमाइश मे डाल दिया है और सामेरी ने उन को वहका दिया है। (८५) और मूसा गुस्से और गम की हालत मे अपनी कौम के पास वापस आए और कहने लगे कि ऐ कौम ! क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुम से अच्छा वायदा नही किया था !¹ क्या (मेरी जुदाई की) मुद्दत तुम्हे लबी (मालूम) हुई या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से गज़ब नाजिल हो और (इसलिए) तुम ने मुझ से जो वायदा (किया था, उस के) खिलाफ़ किया। (८६) वे कहने लगे कि हमने अपने अख्तियार से तुम से वायदा खिलाफ नही किया, बल्कि हम लोगो के ज़ेवरो का बोझ उठाए हुए थे, फिर हमने उस को (आग मे) डाल दिया और इसी तरह सामरी ने डाल दिया। (८७) तो उस ने उन के लिए एक बछडा बना दिया (यानी उस का) कालिब, जिस की आवाज़ गाय की-सी थी, तो लोग कहने लगे कि यही तुम्हारा माबूद है और यही मूसा का माबूद है, मगर वह भूल गये है। (८८) क्या वे लोग नही देखते कि वह उन की किसी बात का जवाब नही देता और न उन के नुक्सान और नफा का कुछ अख्तियार रखता है। (८९)★

और हारून ने उन से पहले ही कह दिया था कि लोगो ! इस से सिर्फ तुम्हारी आजमाइश की गयी है और तुम्हारा परवरदिगार तो खुदा है, तो मेरी पैरवी करो और मेरा कहा मानो। (९०)

---

१. वायदा तौरात देने का। हज़रत मूसा कौम से तीस दिन का वायदा कर के पहाड पर गये थे, वहा चालीस दिन लगे, पीछे बछडा पूजने लगे।

★रु. ४/१३ आ १३

कालू लन् नब-र-ह् अलैहि आकिफ़ी-न हृत्ता यर्जि-अ इलैना मूसा (९१) का-ल या हारूनु मा म-न-अ्-क इज़् रएैतहुम् ज़ल्लू ﻻ (९२) अल्ला तत्तबिअनि ط अ-फ-असै-त अम्री (९३) का-ल यब्नउम्-म ला तअ्खुज़् बिलिह्-यती व ला बिरअ्-सी ج इन्नी ख़शीतु अन् तकू-ल फ़र्रक्-त बै-न बनी इस्राई-ल व लम् तर्कुब् कौली (९४) का-ल फ़मा ख़त्बु-क या सामिरिय्यु (९५) क़ा-ल बसुर्तु बिमा लम् यब्सुरू बिही फ-क-बज्तु क़ब्ज-तम्-मिन् अ-स-रिर्रसूलि फ-न-बज़्तुहा व कज़ालि-क सव्व-लत् ली नफ़्सी (९६) क़ा-ल फज़्हब् फइन्-न ल-क फिल्हयाति अन् तकू-ल ला मिसा-स ص व इन् - न ल-क मौअिदल्लन् तुख़्-ल-फहू ج वन्जुर् इला इलाहिकल्लज़ी ज़ल् - त अलैहि आकिफ़न् ط लनुहर्रिकन्नहू सुम्-म ल-नन्सिफन्नहू फिल्यम्मि नस्फा (९७) इन्नमा इलाहु-कुमुल्-लाहुल्-लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व ط वसि-अ कुल्-ल शैइन् अिल्मा (९८) कज़ालि-क नकुस्सु अलै-क मिन् अम्बाइ मा कद् स - ब - क ج व कद् आतैना - क मिल्लदुन्ना ज़िक्रा صلے (९९) मन् अअ् - र-ज़ अन्हु फ-इन्नहू यह्मिलु यौमल्कियामति विज़्रा ﻻ (१००) ख़ालिदी-न फीहि ط व सा-अ लहुम् यौमल्कियामति हिम्ला ﻻ (१०१) यौ - म युन्फखु फिस्सूरि व नह्शुरुल् - मुज्रिमी - न यौमइज़िन् ज़ुर्क़न् صلے (१०२) य-त - ख़ाफतू-न बैनहुम् इल्लबिस्तुम् इल्ला अश्रा (१०३) नह्नु अअ्-लमु बिमा यकूलू-न इज़् यकूलु अम्सलुहुम् तरीक-तन् इल्लबिस्तुम् इल्ला यौमा ★ (१०४) व यस्अलू - न - क अनिल्जिबालि फकुल् यन्सिफुहा रब्बी नस्फा ﻻ (१०५) फ़ - य - ज़रुहा काअन् सफ्-स-फ-ﻻ (१०६) ल्ला तरा फीहा अिवजंव् - व ला अम्ता ط (१०७)

طٰهٰ ٢٥٣ قال الم

امري ۞ قالوا لن نبرح عليه عكفين حتى يرجع الينا موسى ۞
قال يهرون ما منعك اذ رايتهم ضلوا ۞ الا تتبعن ۞ افعصيت
امري ۞ قال يبنؤم لا تاخذ بلحيتي ولا براسي اني خشيت
ان تقول فرقت بين بني اسراءيل ولم ترقب قولي ۞ قال
فما خطبك يسامري ۞ قال بصرت بما لم يبصروا به فقبضت
قبضة من اثر الرسول فنبذتها وكذلك سولت لي نفسي ۞
قال فاذهب فان لك في الحيوة ان تقول لا مساس وان لك
موعدا لن تخلفه وانظر الى الهك الذي ظلت عليه عاكفا
لنحرقنه ثم لننسفنه في اليم نسفا ۞ انما الهكم الله الذي لا اله
الا هو وسع كل شيء علما ۞ كذلك نقص عليك من انباء ما قد
سبق وقد اتينك من لدنا ذكرا ۞ من اعرض عنه فانه يحمل
يوم القيمة وزرا ۞ خلدين فيه وساء لهم يوم القيمة حملا ۞
يوم ينفخ في الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا ۞ يتخافتون
بينهم ان لبثتم الا عشرا ۞ نحن اعلم بما يقولون اذ يقول
امثلهم طريقة ان لبثتم الا يوما ۞ ويسئلونك عن الجبال
فقل ينسفها ربي نسفا ۞ فيذرها قاعا صفصفا ۞ لا
ترى فيها عوجا ولا امتا ۞ يومئذ يتبعون الداعي لا

★रु ५/१४ आ १५

वे कहने लगे कि जब तक मूसा हमारे पास वापस न आये, हम तो उस (की पूजा) पर कायम रहेगे। (६१) (फिर मूसा ने हारून से) कहा कि हारून! जब तुम ने उन को देखा था कि गुमराह हो गये है, तो तुम को किस चीज़ ने रोका? (६२) (यानी) इस बात से कि तुम मेरे पीछे चले आओ, भला तुम ने मेरे हुक्म के खिलाफ (क्यो) किया? (६३) कहने लगे कि भाई मेरी दाढी और सर (के बालो) को न पकडिए, मैं तो इस से डरा कि आप यह न कहे कि तुम ने बनी इस्राईल मे फूट डाल दी और मेरी बात को ध्यान मे न रखा। (६४) (फिर सामरी से) कहने लगे कि सामरी तेरा क्या हाल है? (६५) उस ने कहा कि मैं ने ऐसी चीज देखी जो औरो ने नही देखी, तो मैं ने फरिश्ते के पैरो के निशान से (मिट्टी की) एक मुट्ठी भर ली, फिर उस को (बछडे के कालिब मे) डाल दिया और मुझे मेरे जी ने (इस काम को) अच्छा बताया। (६६) (मूसा ने) कहा, जा तुझ को (दुनिया की) ज़िंदगी मे यह (सज़ा) है कि कहता रहे कि "मुझ को हाथ न लगाना"।[1] और तेरे लिए एक और वायदा है (यानी अजाब का) जो तुझ से टल न सकेगा और जिस माबूद (की पूजा) पर तू (कायम व मोतकिफ) था, उस को देख, हम उसे जला देगे, फिर उस (की राख) को उडा कर दरिया मे बिखेर देगे। (६७) तुम्हारा माबूद खुदा ही है, जिस के सिवा कोई माबूद नही, उस का इल्म हर चीज पर छाया हुआ है। (६८) इस तरह पर हम तुम से वे हालात बयान करते है, जो गुज़र चुके हैं और हम ने तुम्हे अपने पास से नसीहत (की किताब) अता फरमायी है। (६६) जो शख्स इस से मुह फेरेगा, वह क़ियामत के दिन (गुनाह का) बोझ उठाएगा। (१००) (ऐसे लोग) हमेशा उस (अज़ाब) मे (पडे) रहेगे और यह बोझ कियामत के दिन उन के लिए बुरा होगा। (१०१) जिस दिन सूर फूका जाएगा और हम गुनाहगारो को इकट्ठा करेंगे और उन की आखे नीली-नीली होगी। (१०२) (तो) वे आपस मे धीरे-धीरे कहेंगे कि तुम (दुनिया मे) सिर्फ दस ही दिन रहे हो। (१०३) जो बाते ये करेंगे, हम खूब जानते हैं। उस वक्त उन में सब से अच्छी राह वाला (यानी अक्ल व होश वाला) कहेगा कि (नही, बल्कि) सिर्फ एक ही दिन ठहरे हो। (१०४)☆

और तुम से पहाडो के बारे मे पूछते हैं, कह दो कि खुदा उन को उडा कर बिखेर देगा। (१०५) और ज़मीन को हमवार मैदान कर छोडेगा, (१०६) जिस मे न तुम टेढ (और

---

१ यानी बनी इस्राईल को गुमराह करने की वजह से अल्लाह तआला ने उस को यह सज़ा दी कि तमाम उम्र सब से अलग रहा। उस की यह हालत थी कि अगर वह किसी को हाथ लगाता या कोई उस को हाथ लगाता तो दोनो के तप आ जाती, इस लिए वह यही कहता रहा कि कोई मुझे छुए नही। यह दुनिया का अज़ाब था और आखिरत का अज़ाब अलग रहा।

यौमइज़िय्यत्तबिअूनद् - दाअि-य ला अि-व-ज लहू ۚ व ख-श-अतिल् - अस्वातु लिर्रह्मानि फला तस्मअु इल्ला हम्सा (१०८) यौमइज़िल्ला तन्फअुश्-शफाअतु इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह्मानु व रज़ि-य लहू क़ौला (१०९) यअ्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फहुम् व ला युहीतू-न बिही अिल्मा (११०) व अ - नतिल् - वुजूहु लिल्हय्यिल् - कय्यूमि ط व कद् ख़ा-ब मन् ह-म-ल ज़ुल्मा (१११) व मय्यअ-मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फला यख़ाफु ज़ुल्मव्-व ला हज़्मा (११२) व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु क़ुर्आनन् अ-र-बिय्यंव्-व सर्रफ़्ना फीहि मिनल्वअीदि ल-अल्लहुम् यत्तक़ू-न औ युह्दिसु लहुम् ज़िक्रा (११३) फ़-त-आलल्लाहुल् - मलिकुल्हक्कु ۚ व ला तअ्-जल् बिल्क़ुर्आनि मिन् कब्लि अंय्युक्ज़ा इलै - क वह्युहू ز व कुर्रब्बि ज़िद्नी अिल्मा (११४) व ल-कद् अहिद्ना इला आद-म मिन् क़ब्लु फ-नसि-य व लम् नजिद् लहू अज़्मा ★ (११५) व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइकतिस्जुदू लिआद-म फ-स-जदू इल्ला इब्ली-स ط अबा (११६) फकुल्ना या आदमु इन्-न हाज़ा अदुव्वुल्ल-क व लिज़ौजि-क फला युख़्रिजन्नकुमा मिनल्जन्नति फ़-तश्का (११७) इन्-न ल-क अल्ला तजू-अ फीहा व ला तअ्-रा ۙ (११८) व अन्न-क ला तज़्मउ फीहा व ला तज़्हा (११९) फ-वस्-व-स इलैहिश्शैतानु क़ा-ल या आदमु हल् अदुल्लु-क अला श-ज-रतिल्-ख़ुल्दि व मुल्किल्-ला यब्ला (१२०) फ़-अ-कला मिन्हा फ-ब-दत् लहुमा सौआतुहुमा व तफिक़ा यख़्सिफ़ानि अलैहिमा मिंव्व - रक़िल् - जन्नति ز व असा आदमु रब्बहू फ़ - ग़वा ۖ (१२१) सुम्मज्तबाहु रब्बुहू फ़ता-ब अलैहि व हदा (१२२) क़ालह्बिता मिन्हा जमीअम्-बअ्-ज़ुकुम् लिबअ् - ज़िन् अदुव्वुन् ۚ फ़इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ - मनित्त-ब-अ् हुदा - य फ़ला यज़िल्लु व ला यश्का (१२३)

عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ۝
يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ
قَوْلًا ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ
عِلْمًا ۝ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۭ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ
ظُلْمًا ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا
وَّلَا هَضْمًا ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ
الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۡ وَ
قُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ۝ وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَ
لَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰى ۝ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا
يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ۝ اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا
تَعْرٰى ۝ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ۝ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ
قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ۝ فَاَكَلَا
مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ
الْجَنَّةِ ۡ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ۝ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ
عَلَيْهِ وَهَدٰى ۝ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ

★रु ६/१५ आ ११

पस्ती) देखोगे, न टीला (और बुलंदी), (१०७) उस दिन लोग एक पुकारने वाले के पीछे चलेंगे और उस की पैरवी से कतरा न सकोगे और खुदा के सामने आवाज़े पस्त हो जाएगी, तो तुम धीमी आवाज के सिवा कुछ न सुनोगे। (१०८) उस दिन (किसी की) सिफारिश कुछ फायदा न देगी, मगर उस शख़्स की, जिसे खुदा इजाजत दे और उस की बात को पसन्द फरमाए। (१०९) जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, वह उस को जानता है और वह (अपने) इल्म से खुदा (के इल्म) पर एहाता नही कर सकते। (११०) और उस जिंदा व कायम के सामने मुह नीचे हो जाएगे और जिस ने ज़ुल्म का बोझ उठाया, वह ना-मुराद रहा। (१११) और जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा, तो उस को न ज़ुल्म का डर होगा और न नुक्सान का। (११२) और हमने उस को इसी तरह का अरबी कुरआन नाज़िल किया है और उस मे तरह-तरह के डरावे बयान कर दिए है, ताकि लोग परहेज़गार बनें या खुदा उन के लिए नसीहत पैदा कर दे। (११३) तो खुदा जो सच्चा बादशाह है आलीकद्र है और कुरआन की वह्य जो तुम्हारी तरफ भेजी जाती है, उस के पूरा होने से पहले कुरआन के (पढने के) लिए जल्दी न किया करो और दुआ करो कि मेरे परवरदिगार मुझे और ज्यादा इल्म दे। (११४) और हमने पहले आदम से वायदा लिया था, मगर वह (उसे) भूल गये और हमने उन में सब्र व सबात न देखा। (११५)★

और जब हमने फरिश्तो से कहा कि आदम के आगे सज्दा करो तो सब सज्दे मे गिर पडे मगर इब्लीस ने इंकार किया। (११६) हमने फरमाया कि आदम ! यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है, तो यह कही तुम दोनो को बहिश्त से निकलवा न दे, फिर तुम तक्लीफ मे पड जाओ। (११७) यहा तुम को यह (आराम) है कि न भूखे रहो, न नगे। (११८) और यह कि न प्यासे रहो और न धूप खाओ। (११९) तो शैतान ने उन के दिल में वस्वसा डाला और कहा कि आदम ! भला मैं तुम को (ऐसा) पेड़ बताऊं (जो) हमेशा की ज़िंदगी (का फल) दे और (ऐसी) बादशाहत कि कभी खत्म न हो। (१२०) तो दोनो ने उस पेड का फल खा लिया, तो उन पर उन की शर्मगाहे ज़ाहिर हो गयी और वे अपने (बदनो) पर बहिश्त के पत्ते चिपकाने लगे और आदम ने अपने परवरदिगार के (हुक्म के) खिलाफ किया, तो (वे अपनी मज़िल से) बे-राह हो गये। (१२१) फिर उन के परवरदिगार ने उन को नवाज़ा तो उन पर मेहरबानी से तवज्जोह फरमायी और सीधी राह बतायी। (१२२) फरमाया कि तुम दोनो यहा से नीचे उतर जाओ। तुम मे कुछ कुछ के दुश्मन (होगे), फिर अगर मेरी तरफ से तुम्हारे पास हिदायत आए तो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, वह न गुमराह होगा और न तक्लीफ मे पड़ेगा। (१२३)

व मन् अअ्-र-ज़ अन् ज़िक्री फ़इन्-न लहू मओ़ी-श-तन् ज़न्कव-व नह़्शुरुहू यौमल्क़ियामति अअ्-मा (१२४) क़ा-ल रब्बि लि-म ह्-शर्तनी अअ्-मा व क़द् कुन्तु बसीरा (१२५) क़ा-ल कज़ालि-क अ-तत्-क आयातुना फ़-नसीतहा ج व कज़ालिकल्-यौ-म तुन्सा (१२६) व कज़ालि-क नज्ज़ी मन् अस्-र-फ़ व लम् युअ्मिम्-बिआयाति रब्बिही ط व ल-अज़ाबुल्-आख़िरति अ-शद्दु व अब्क़ा (१२७) अ-फ लम् यह्दि लहुम् कम् अह्-लक्-ना क़ब्-लहुम् मिनल्क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्लिउलिन्नुहा ★ (१२८) व लौला कलिमतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क ल-का-न लिज़ामव्-व अ-ज-लुम्-मुसम्-म ط (१२९) फ़स्बिर् अला मा यक़ूलू-न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअिश्-शम्सि व क़ब्-ल ग़ुरूबिहा ج व मिन् आनाइल्लैलि फ़-सब्बिह् व अत-राफ़न्नहारि ल-अल्ल-क तर्ज़ा (१३०) व ला तमुद्-दन्-न ऐनै-क इला मा मत्तअ्-ना बिही अज़्वाजम्-मिन्हुम् ज़ह्-र-तल्-ह़यातिद्दुन्या ۵ लिनफ़्तिनहुम् फ़ीहि ط व रिज़्क़ु रब्बि-क ख़ैरुव्-व अब्क़ा (१३१) वअ्मुर् अह्-ल-क बिस्सलाति वस्तबिर् अलैहा ط ला नस्-अलु-क रिज़्-क़न् ط नह़्नु नर्ज़ुक़ु-क ط वल्आक़िबतु लित्तक़्वा (१३२) व क़ालू लौला यअ्-तीना बिआयतिम्-मिर्रब्बिही ط अ-व लम् तअ्तिहिम् बय्यिनतु मा फ़िस्सुहुफ़िल्-ऊला (१३३) व लौ अन्ना अह्-लक्नाहुम् बिअज़ाबिम्-मिन् क़ब्लिही ल-क़ालू रब्बना लौला अर्सल्-त इलैना रसूलन् फ़-नत्तबि-अ् आयाति-क मिन् क़ब्लि अन् नज़िल्-ल व नख़्ज़ा (१३४) क़ुल् कुल्लुम्-मु-त-रब्बिसुन् फ़-त-रब्बसू ج फ़-स-तअ्-लमू-न मन् अस्हाबुस्-सिरातिस्सविय्यि व मनिह्तदा ★ (१३५)

فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ۝
وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ۝
قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ۝ وَكَذٰلِكَ
نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ
وَاَبْقٰى ۝ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ
مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ۝ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا
يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَ
مِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ۝ وَلَا تَمُدَّنَّ
عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ۬ لِنَفْتِنَهُمْ
فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ
عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ۝ وَقَالُوْا لَوْ
لَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝
وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا
رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ۝ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ
فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ۝

★रु. ७/१६ आ १३ ★रु ८/१७ आ ७

और जो मेरी नसीहत से मुह फेरेगा, उसकी जिंदगी तग हो जाएगी और कियामत को हम उसे अधा कर के उठाएंगे (१२४) वह कहेगा कि मेरे परवरदिगार ! तू ने मुझे अधा करके क्यो उठाया, मैं तो देखता-भालता था। (१२५) खुदा फरमाएगा कि ऐसा ही (चाहिए था) तेरे पास हमारी आयतें आयी तो तू ने उनको भुला दिया, इसी तरह आज हम तुझको भुला देगे। (१२६) और जो शख्स हद मे निकल जाए और अपने परवरदिगार की आयतो पर ईमान न लाए, हम उस को ऐसा ही बदला देते है और आखिरत का अजाब बहुत सख्त और बहुत देर रहने वाला है। (१२७) क्या यह बात उन लोगो के लिए हिदायत की वजह न बनी कि हम उन से पहले बहुत से फिर्कों को हलाक कर चुके है, जिन के रहने की जगहो मे ये चलते-फिरते है। अक्ल वालो के लिए इस मे बहुत-सी निशानिया है। (१२८)★

और अगर एक बात तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से पहले ही से न होती और (आमाल के बदले के लिए) एक मीयाद मुकर्रर न हो चुकी होती तो अज़ाब (का आना) जरूरी हो जाता। (१२९) पस जो कुछ ये बकवास करते है, उस पर सब्र करो और सूरज के निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले अपने परवरदिगार की तस्बीह व तह्मीद किया करो, और रात की (अव्वल) घड़ियो मे भी उस की तस्बीह किया करो और दिन के किनारो (यानी दोपहर के करीब ज़ुहर के वक्त भी), ताकि तुम खुश हो जाओ। (१३०) और कई तरह के लोगो को, जो हमने दुनिया की (जिंदगी मे) आराम की चीजो से नवाजा है, ताकि उन की आजमाइश करे, उन पर निगाह न करना और तुम्हारे परवरदिगार की (दी हुई) रोजी बहुत बेहतर और बाकी रहने वाली है। (१३१) और अपने घर वालो को नमाज का हुक्म करो और उस पर कायम रहो। हम तुम से रोजी नही चाहते बल्कि तुम्हे हम रोजी देते है और (नेक) अजाम तक्वा (वालो) का है। (१३२) और कहते है कि यह (पैगम्बर) अपने परवरदिगार की तरफ से हमारे पास कोई निशानी क्यो नही लाते, क्या उन के पास पहली किताबो की निशानी नही आयी ? (१३३) और अगर हम उन को पैगम्बर (के भेजने) से पहले किसी अज़ाब से हलाक कर देते तो वे कहते कि ऐ हमारे परवरदिगार ! तू ने हमारी तरफ कोई पैगम्बर क्यो न भेजा कि हम जलील और रुसवा होने से पहले तेरे कलाम (व अहकाम) की पैरवी करते। (१३४) कह दो कि सब (आमाल के नतीजे के) इतिजार मे है, सो तुम भी इतिज़ार मे रहो। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा कि (दीन के) सीधे रास्ते पर चलने वाले कौन है और (जन्नत की तरफ) राह पाने वाले कौन है (हम या तुम) ? (१३५)★

★रु. ७/१६ आ १३   ★रु ८/१७ आ ७

सत्रहवां पारः इक़्त-र-ब लिन्नासि

२१ सूरतुल्-अम्बियाइ ७३

(मक्की) इस सूरः मे अ़रबी के ५१५४ अक्षर, ११८७ शब्द, ११२ आयतें और ७ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

इक्-त-र-ब लिन्नासि ह़िसाबुहुम् व हुम् फ़ी गफ़्लतिम्-मुअ़्रिज़ून ۚ (१) मा यअ़्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम्-मिर्-रब्बिहिम् मुह़्दसिन् इल्लस्त - म - अ़ूहु व हुम् यल्-अ़बून ۙ (२) लाहि-य-तन् कुलूबुहुम् ؕ व अ - सर्रुन् - नज्वल्-लज़ी - न ज़ - लमू ۖ हल् हाज़ा इल्ला ब - श-रुम् - मिस्लुकुम् ۚ अ-फ-तअ़्तूनस्-सिह्-र व अन्तुम् तुब्सिरून (३) का-ल रब्बी यअ़् - लमुल्कौ-ल फ़िस्समाइ वल्अर्ज़ि ۡ व हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम (४) बल् कालू अज्ग़ासु अह़्लामिम्-बलिफ़्तराहु बल् हु - व शाअ़िरुन् ۖ फल् - यअ़्तिना बिआयतिन् कमा उर्सिलल्-अव्वलून (५) मा आ-म-नत् क़ब्लहुम् मिन् क़र्-यतिन् अह्-लक्नाहा ۚ अ-फहुम् युअ़्मिनून (६) व मा अर्सल्ना क़ब्-ल-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् फस्-अलू अह़्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ़्-लमून (७) व मा ज-अ़ल्नाहुम् ज-स-दल्ला यअ़्कुलूनत्-तआ़-म व मा कानू ख़ालिदीन (८) सुम्-म स-दक़्नाहुमुल्-वअ़्-द फ़-अन्जैनाहुम् व मन् नशाउ व अह़्लक्नल् - मुस्रिफ़ीन (९) ल - क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् किताबन् फ़ीहि ज़िक्रुकुम् ؕ अ-फला तअ़्-क़िलून ★ (१०) व कम् क-सम्ना मिन् क़र्-यतिन् कानत् ज़ालि-म-तंव्-व अन्शअ़्ना बअ़्-दहा क़ौमन् आख़रीन (११) फ़-लम्मा अ-ह़स्सू बअ़्-सना इज़ा हुम् मिन्हा यर्कुज़ून ؕ (१२) ला तर्कुज़ू वर्जिअ़ू इला मा उतरिफ़्तुम् फ़ीहि व मसाकिनिकुम् ल-अ़ल्लकुम् तुस्अलून (१३)

سُوْرَةُ الْاَنْبِيَاءِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝١ مَا
يَأْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ
يَلْعَبُوْنَ ۝٢ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ
هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٣
قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝٤ بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۢ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ
شَاعِرٌ ښ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٥ مَآ اٰمَنَتْ
قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ وَمَآ اَرْسَلْنَا
قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْــَٔـلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ
وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ
نَّشَاۗءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ
ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ
ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا
هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝١٢ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ

★ रु १/१ आ १०

२१ सूरः अंबिया ७३

सूर: अंबिया मक्की है और इस मे एक सौ बारह आयतें और सात रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगो का (आमाल के) हिसाब (का वक्त) नज़दीक आ पहुचा है और वे गफलत मे (पडे उस से) मुह फेर रहे है। (१) उन के पास कोई नयी नसीहत उन के परवरदिगार की तरफ से नही आती, मगर वे उसे खेलते हुए सुनते है। (२) उन के दिल गफलत में पडे हुए है और जालिम लोग (आपस मे) चुपके-चुपके बाते करते है कि यह (शख्स कुछ भी) नही, मगर तुम्हारे जैसा आदमी है तो तुम आखों देखते जादू (की लपेट) मे क्यो आते हो?[1] (३) (पैगम्बर ने) कहा कि जो बात आसमान और ज़मीन मे (कही जाती) है, मेरा परवरदिगार उसे जानता है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (४) बल्कि (ज़ालिम) कहने लगे कि (यह कुरआन) परेशान (बाते है, जो) ख्वाब (मे देख ली) है, (नही) बल्कि उस ने इस को अपनी तरफ से बना लिया है, (नही) बल्कि यह (शेर है जो इस) शायर (का ख्याल) है। तो जैसे पहले (पैगम्बर निशानिया दे कर) भेजे गए थे (उसी तरह) यह भी हमारे पास कोई निशानी लाए। (५) इन से पहले जिन बस्तियो को हमने हलाक किया, वे ईमान नही लाती थी, तो क्या ये ईमान ले आएगे ? (६) और हमने तुम से पहले मर्द ही (पैगम्बर बना कर) भेजे, जिन की तरफ हम वह्य भेजते थे। अगर तुम नही जानते तो जो याद रखते है, उन से पूछ लो। (७) और हमने उन के ऐसे जिस्म नही बनाए थे कि खाना न खाएं और न वे हमेशा रहने वाले थे। (८) फिर हमने उन के बारे मे (अपना) वायदा सच्चा कर दिया तो उन को और जिस को चाहा, निजात दी और हद से निकल जाने वालो को हलाक कर दिया। (९) हमने तुम्हारी तरफ ऐसी किताब नाज़िल की है, जिस मे तुम्हारा तज्किरा है, क्या तुम नही समझते ? (१०)✱

और हमने बहुत सी बस्तियो को जो जालिम थी, हलाक कर मारा और उन के बाद और लोग पैदा कर दिए। (११) जब उन्हो ने हमारे अज़ाब (के मुकदमे) को देखा तो लगे उन से भागने। (१२) मत भागो और जिन (नेमतों) मे तुम ऐश व आराम करते थे उन की ओर अपने घरो की तरफ लौट जाओ, शायद तुम से (इस बारे में) पूछा जाए। (१३) कहने लगे, हाय

---

१ यानी यह मुहम्मद पैगम्बर तो है नही, तुम्हारे जैसे एक आदमी है और जो यह कुरआन सुनाते है वह जादू है जिस को सुन कर आदमी उस की तरफ झुक पडता है, तो तुम जान-बूझ कर उस के जादू मे क्यो फसते हो ?

क़ालू यावैलना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (१४) फ़-मा ज़ालत् तिल्-क दअ्-वाहुम् हृत्ता ज-अल्नाहुम् हसीदन् ख़ामिदीन (१५) व मा ख़-लक्-नस्समा-अ वल्-अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन (१६) लौ अ-रद्ना अन् नत्तख़ि-ज लह्वल्-लत्त-ख़ज़्नाहु मिल्लदुन्ना ﺻﻠﮯ इन् कुन्ना फ़ाअिलीन (१७) बल् नक़्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि अ-लल्बातिलि फ़-यद्मग़ुहू फ़इज़ा हु - व ज़ाहिकुन् ط व लकुमुल्वैलु मिम्मा तसिफ़ून (१८) व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व मन् अिन्दहू ला यस्तक्बिरू-न अन् अिबादतिही व ला यस्तह्सिरून ج (१९) युसब्बिहूनल्लै-ल वन्नहा-र ला यफ़्तुरून (२०) अमित्त-ख़ज़ू आलिहतम्-मिनल्अर्ज़ि हुम् युन्शिरून (२१) लौ का - न फ़ीहिमा आलिहतुन् इल्लल्लाहु ल-फ़-स-दता ج फ़ - सुब्हानल्लाहि रब्बिल् - अर्शि अम्मा यसिफ़ून (२२) ला युस्अलु अम्मा यफ़्अलु व हुम् युस्अलून (२३) अमित्त - ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-ह - तन् ط कुल् हातू बुर्हानकुम् ج हाज़ा ज़िक्रु मम् - मअि-य व ज़िक्रु मन् क़ब्ली ط बल् अक्सरु - हुम् ला यअ्-लमू-नल्हक़्-क फ़हुम् मुअ्-रिज़ून (२४) व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि - क मिर्रसूलिन् इल्ला नूही इलैहि अन्नहू ला इला - ह इल्ला अ-न - फ़अ्-बुदून (२५) व क़ालुत्त-ख़-ज़र् - रह्मानु व-ल-दन् सुब्हानहू ط बल् अिबादुम् - मुक्-रमून ۙ (२६) ला यस्बिक़ूनहू बिल्क़ौलि व हुम् बिअम्रिही यअ्-मलून (२७) यअ्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला यशफ़अू-न ۙ इल्ला लिमनिर्-तज़ा व हुम् मिन् ख़श्-यतिही मुश्फ़िक़ून (२८)

وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝
فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ
نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝ بَلْ نَقْذِفُ
بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا
تَصِفُوْنَ ۝ وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۝ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ
وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ
يُنْشِرُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ
اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ
يُسْـَٔلُوْنَ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ
هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ
الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ
اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ
الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۝ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ
مَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ

शामत ! बेशक हम जालिम थे। (१४) तो वह हमेशा इसी तरह पुकारते रहे यहा तक कि हमने उन को (खेती की तरह) काट कर (और आग की तरह) बुझा कर ढेर कर दिया। (१५) और हमने आसमान और ज़मीन को और जो (मख्लूकात) इन दोनो के दर्मियान है, उस को खेल-तमाशा के लिए पैदा नही किया। (१६) अगर हम चाहते कि खेल (की चीज़े यानी बीवी व लडके) बनाएं तो अगर हम को करना ही होता तो हम अपने पास से बना लेते। (१७) (नही), बल्कि हम सच को झूठ पर खीच मारते हैं, तो वह उस का सर तोड देता है और झूठ उसी वक्त नाबूद हो जाता है और जो बातें तुम बनाते हो, उन से तुम्हारी ही खराबी है। (१८) और जो लोग आसमानों मे और जो जमीन मे है, सब उसी की (मख्लूक और उसी का माल) है और जो (फरिश्ते) उस के पास है, वे उस की इबादत से न कतराते है और न उकताते हैं। (१९) रात-दिन (उस की) तस्बीह करते रहते है, (न थकते है), न थमते है। (२०) भला लोगो ने जो ज़मीन की चीजो से (कुछ को) माबूद बना लिया है (तो क्या) वह उन को (मरने के बाद) उठा खडा करेगे ? (२१) अगर आसमान और ज़मीन मे खुदा के सिवा और माबूद होते, तो ज़मीन व आसमान फसाद से भर जाते। जो बातें ये लोग बताते है, अर्श का मालिक, खुदा उन से पाक है। (२२) वह जो काम करता है, उस की पूछ-ताछ नही होगी और (जो काम ये लोग करते है, उस की) उन से पूछ-ताछ होगी। (२३) क्या लोगो ने खुदा को छोड कर और माबूद बना लिए है कह दो कि (इस बात पर) अपनी दलील पेश करो। यह (मेरी और) मेरे साथ वालो की किताब भी है और जो मुझ से पहले (पैगम्बर) हुए हैं, उन की किताबें भी है, बल्कि (बात यह है कि) उन मे अक्सर हक बात को नही जानते और इसलिए उस से मुह फेर लेते है। (२४) और जो पैगम्बर हमने तुम से पहले भेजे, उन की तरफ यही वह्य भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नही, तो मेरी ही इबादत करो। (२५) और कहते हैं कि खुदा बेटा रखता है, वह पाक है, (उस के न बेटा है, न बेटी है), बल्कि (जिन को ये लोग उस के बेटे-बेटिया समझते हैं) वे उन के इज्जत वाले बन्दे हैं। (२६) उस के आगे बढ कर बोल नही सकते और उस के हुक्म पर अमल करते है। (२७) जो कुछ उन के आगे हो चुका है और जो पीछे होगा, वह सब जानता है और वे (उन के पास किसी की) सिफारिश नही कर सकते, मगर उस शख्स की, जिस से खुदा खुश हो और वे उन की

व मंय्यकुल् मिन्हुम् इन्नी इलाहुम्-मिन् दूनिही फ़जालि-क नज्ज़ीहि जहन्न-म ॰ कज़ालि-क नज्ज़िज़्-ज़ालिमीन ★ (२९) अ-व लम् य-रल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नस्-समावाति वल्अर्-ज़ कानता रत्-कन् फ़-फ़-तक़्नाहुमा ॰ व ज-अ़ल्ना मिनल्मा‍इ कुल्-ल शैइन् हय्यिन् ॰ अ-फ़ला युअ्मिनून (३०) व ज-अल्ना फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिहिम् व ज-अल्ना फ़ीहा फ़िजाजन् सुबुलल्-ल-अल्लहुम् यह्-तदून (३१) व ज-अल्नस्समा-अ सक़्फ़म् - मह्फ़ूज़ंव्- व हुम् अन् आयातिहा मुअ्-रिज़ून (३२) व हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ल्लै-ल वन्नहा-र वश्शम-स वल्क़-म-र ॰ कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिय्यस्बहून (३३) व मा ज-अ़ल्ना लिब-श-रिम्-मिन् क़ब्लिकल् - ख़ुल् - द ॰ अ - फ़इम् - मित्-त फ़हुमुल्-ख़ालिदून (३४) कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइक़-तुल् - मौति ॰ व नब्लूकुम् बिश्शर्रि वल्ख़ैरि फ़ित्-न - तन् ॰ व इलैना तुर्जअून (३५) व इज़ा रआकल्लज़ी-न क-फ़रू इंय्यत्तख़िज़ून-क इल्ला हुज़ुवन् ॰ अ-हाज़ल्लज़ी यज़्कुरु आलिह-तकुम् ॰ व हुम् बिज़िक्रिर् - रह्मानि हुम् काफ़िरून (३६) ख़ुलिक़ल् - इन्सानु मिन् अ-जलिन् ॰ सउरीकुम् आयाती फ़ला तस्तअ्जिलून (३७) व यक़ूलू-न मता हाज़ल् वअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३८) लौ यअ्-लमुल्लज़ी-न क-फ़रू ही-न ला यकुफ़्फ़ू-न अंव्वुजूहि-हिमुन्ना-र व ला अन् ज़ुहूरिहिम् व ला हुम् युन्सरून (३९) बल् तअ्तीहिम् बग्त-तन् फ़ तब्-हतुहुम् फ़ ला यस्ततीअू-न रद्दहा व ला हुम् युन्ज़रून (४०) व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम्-मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क बिल्लज़ी - न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (४१)

الأنبياء ٢١ ٢٥٩ اقترب للناس ١٧

مُشْفِقُونَ ۝ وَمَنْ يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَٰهٌ مِنْ دُونِهِ فَذَٰلِكَ
نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ
كَفَرُوا أَنَّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا
مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ
رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُونَ ۝ وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا
مُعْرِضُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ
أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُمْ
بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ
كَفَرُوا إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ
وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ۝ خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ
سَأُرِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ
عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ۝
بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ
يُنْظَرُونَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ

★रु. २/२ आ १९ ★रु. ३/३ आ १२

हैबत से डरते रहते है। (२८) और जो आदमी उन मे से यह कहे कि खुदा के सिवा मैं माबूद हूं, तो उसे हम दोज़ख की सजा देंगे और ज़ालिमो को हम ऐसी ही सजा दिया करते है। (२९)★

क्या काफिरो ने नही देखा कि आसमान और ज़मीन दोनो मिले हुए थे, तो हमने जुदा-जुदा कर दिया और तमाम जानदार चीजें हमने पानी से बनायी, फिर ये लोग ईमान क्यो नही लाते ? (३०) और हमने जमीन मे पहाड बनाये ताकि लोगो (के बोझ) से हिलने (और झुकने) न लगे और उस मे कुशादा रास्ते बनाये, ताकि लोग उन पर चले। (३१) और आसमान को महफूज छत बनाया, इस पर भी वे हमारी निशानियो से मुह फेर रहे है। (३२) और वही तो है, जिस ने रात और दिन और सूरज और चाद को बनाया (ये) सब (यानी सूरज और चाद और सितारे) आसमान मे (इस तरह चलते है, गोया) तैर रहे हैं। (३३) और (ऐ पैगम्बर !) हमने तुम से पहले किसी आदमी को हमेशा की ज़िंदगी नही बख्शी, भला, अगर तुम मर जाओ तो क्या ये लोग हमेशा रहेगे।[1] (३४) हर नफ्स को मौत का मजा चखना है और हम तुम लोगो को सख्ती और आसूदगी मे आज़माइश के तौर पर डाल देते है और तुम हमारी तरफ ही लौट कर आओगे। (३५) और जब काफिर तुम को देखते है तो तुम्हारा मज़ाक उडाते है कि क्या यही शख्स है जो तुम्हारे माबूदो का ज़िक्र (बुराई से) किया करता है, हालाकि वह खुद रहमान के नाम मे मुकिर है। (३६) इंसान (कुछ ऐसा जल्दबाज़ है कि गोया) जल्दबाजी ही मे बनाया गया है। मै तुम लोगो को बहुत जल्द अपनी निशानिया दिखाऊगा, तो तुम जल्दी न करो। (३७) और कहते है कि अगर तुम सच्चे हो तो (जिस अज़ाब की) यह धमकी (है, वह) कब (आएगा) ? (३८) ऐ काश ! काफिर उस वक्त को जाने, जब वे अपने मुहो पर से (दोजख की) आग को रोक न सकेंगे और न अपनी पीठो पर से और न उन का कोई मददगार होगा। (३९) बल्कि कियामत उन पर यकायक आ वाकेअ होगी और उन के होश खो देगी, फिर न तो वे उस को हटा सकेंगे और न उन को मोहलत दी जाएगी। (४०) और तुम से पहले भी पैगम्बरो के साथ मजाक होता रहा है, तो जो लोग उन मे से मजाक किया करते थे, उन को उसी (अज़ाब) ने जिस की हसी उडाते थे आ घेरा। (४१)★

---

१. काफिर कहते थे कि जब मुहम्मद चल बसेंगे, तो इस्लाम का ज़ोर भी मिट जाएगा और ये सब ताम-झाम जाता रहेगा। जितनी यह धूम-धाम है, उन्ही के दम मे है। खुदा ने फरमाया कि ये लोग तुम्हारी मौत का इन्तिज़ार करते है, लेकिन तुम इन्तिकाल कर जाओगे, तो ये भी हमेशा नही रहेंगे, मौत इन को भी फना कर देगी और तुम्हारे इन्तिकाल से इस्लाम क्यो नाबूद होने लगा, वह तुम्हारी ज़ात मे मुताल्लिक नही है कि जब तक तुम्हारी ज़िंदगी हो, तब तक उस की हस्ती हो, वह हमेशा रहेगा और कभी फना होगा और हकीकत है कि इस्लाम आहज़रत के इन्तिकाल के बाद घटा नही, बल्कि दिन-ब-दिन बढता गया और तमाम दुनिया मे फैल गया और कियामत तक रहेगा।

★रु. २/२ आ १९ ★रु. ३/३ आ १२

क़ुल् मंय्यक्लउकुम् बिल्लैलि वन्नहारि मिनर्-रह़्मानि ط बल् हुम् अन् ज़िक्रि रब्बिहिम् मुअ्-रिज़ून (४२) अम् लहुम् आलिहतुन् तम्नउहुम् मिन् दूनिना ط ला यस्तत़ीऊ-न नस्-र अन्फ़ुसिहिम् व ला हुम् मिन्ना युस्ह़बून (४३) बल् मत्तअ्-ना हाउला-इ व आबा-अहुम् ह़त्ता ता-ल अलैहिमुल्-उ़मुरु ط अ-फला यरौ-न अन्ना नअ्तिल्अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत़्राफ़िहा ط अ-फ़हुमुल्-ग़ालिबून (४४) क़ुल् इन्नमा उन्ज़िरुकुम् बिल्वह़्यि صلے व ला यस्मउ़स्-सुम्मुद्दुआ-अ इज़ा मा युन्ज़रून (४५) व लइम्-मस्सत्हुम् नफ़्ह़तुम्-मिन् अज़ाबि रब्बि-क ल-यक़ूलुन्-न यावैलना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (४६) व न-ज-उ़ल्-मवाज़ीनल्-क़िस-त लियौमिल्-क़ियामति फला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअन् ط व इन् का-न मिस्क़ा-ल ह़ब्बतिम्-मिन् ख़र्-दलिन् अतैना बिहा ط व कफा बिना ह़ासिबीन (४७) व ल-क़द् आतैना मूसा व हारूनल्-फ़ुर्क़ा-न व ज़ियाअंव्-व ज़िक्रल्-लिल्मुत्तक़ीन ⅼⅼ (४८) अल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व हुम् मिनस्साअ़ति मुश्फ़िक़ून (४९) व हाज़ा ज़िक्रुम्-मुबा-रकुन् अन्ज़ल्नाहु ط अ-फ़-अन्तुम् लहू मुन्किरून ★● (५०) व ल-क़द् आतैना इब्राही-म रुश्दहू मिन् क़ब्लु व कुन्ना बिही आ़लिमीन ط (५१) इज़् क़ा-ल लिअबीहि व क़ौमिही मा हाज़िहित्-तमासीलुल्लती अन्तुम् लहा आ़किफ़ून (५२) क़ालू व-जद्ना आबा-अना लहा आ़बिदीन (५३) क़ा-ल ल-क़द् कुन्तुम् अन्तुम् व आबाउकुम् फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (५४) क़ालू अजिअ्-तना बिल्ह़क़्क़ि अम् अन्-त मिनल्लाअिबीन (५५)

الانبياء ٢١ ٤٧٠ اقترب للناس ١٧

سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ قُلْ مَن يَكْلَؤُكُم
بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۚ بَلْ هُمْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِم مُّعْرِضُونَ ۝
أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُم مِّن دُونِنَا ۚ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ
أَنفُسِهِمْ وَلَا هُم مِّنَّا يُصْحَبُونَ ۝ بَلْ مَتَّعْنَا هٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ
حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا
مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ أَفَهُمُ الْغٰلِبُونَ ۝ قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُم بِالْوَحْيِ ۚ وَ
لَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ۝ وَلَئِن مَّسَّتْهُمْ
نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يٰوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِينَ ۝
وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۖ
وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفٰى بِنَا
حٰسِبِينَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسٰى وَهٰرُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاءً وَ
ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُم مِّنَ
السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ۝ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبَارَكٌ أَنزَلْنٰهُ ۚ أَفَأَنتُمْ لَهُ
مُنكِرُونَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرٰهِيمَ رُشْدَهُ مِن قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ
عٰلِمِينَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي
أَنتُمْ لَهَا عٰكِفُونَ ۝ قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عٰبِدِينَ ۝ قَالَ
لَقَدْ كُنتُمْ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۝ قَالُوا أَجِئْتَنَا

★रु. ४/४ आ ६ ● रुबुअ़ १/४

कहो कि रात और दिन मे खुदा से तुम्हारी कौन हिफाज़त कर सकता है ? बात यह है कि ये अपने परवरदिगार की याद से मुह फेरे हुए है। (४२) क्या हमारे सिवा इन के और माबूद हैं कि इन को (मुसीबतो) से बचा सके, वे आप अपनी मदद तो कर ही नही सकेंगे और न हम से पनाह ही दिए जाएगे, (४३) बल्कि हम उन लोगो को और उन के बाप-दादा को नवाजते रहे, यहा तक कि (इसी हालत मे) उन की उम्रे बसर हो गयी। क्या ये नही देखते कि हम जमीन को उस के किनारो से घटाते चले आते हैं, तो क्या ये लोग गलबा पाने वाले है।[1] (४४) कह दो कि मैं तुम को खुदा के हुक्म के मुताबिक नसीहत करता हू और बहरो को जब नसीहत की जाए तो वे पुकार को सुनते ही नही। (४५) और अगर उन को तुम्हारे परवरदिगार का थोड़ा-सा अजाब पहुचे तो कहने लगे कि हाय कमबख्ती ! हम बेशक गुनाहगार थे। (४६) और हम कियामत के दिन इसाफ की तराजू खडी करेंगे, तो किसी शख्स का जरा भी हक न मारा जाएगा और राई के दाने के बराबर भी (किसी का अमल) होगा तो हम उस को ला मौजूद करेंगे और हम हिसाब करने को काफी है। (४७) और हमने मूसा और हारून को (हिदायत और गुमराही मे) फर्क कर देने वाली और (मुकम्मल) रोशनी और नसीहत (की किताब) अता की (यानी) परहेज़गारो के लिए। (४८) जो बिन-देखे अपने परवरदिगार से डरते है और कियामत का भी डर रखते है। (४९) और यह मुबारक नसीहत है, जिसे हमने नाजिल फरमाया है, तो क्या तुम इस से इकार करते हो (५०)★● और हमने इब्राहीम को पहले ही से हिदायत दी थी और हम उन (के हाल) को जानते थे, (५१) जब उन्हो ने अपने बाप और अपनी कौम के लोगो से कहा कि ये क्या मूर्तियां है जिन (की इबादत) पर तुम मोतकिफ (व काइम) हो। (५२) वे कहने लगे कि हमने अपने बाप-दादा को उन की पूजा करते देखा है। (५३) (इब्राहीम ने) कहा कि तुम भी (गुमराह हो) और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही मे पडे रहे। (५४) वे बोले, क्या तुम हमारे पास (सच से) हक लाए हो या (हम से) खेल (की बाते) करते हो। (५५) (इब्राहीम ने) कहा

१ हम घटाते चले आते है यानी अरब के मुल्क मे मुसलमानी फैलने लगी है, कुफ्र घटने लगा।

★रु. ४/४ आ ६ ● रुबूअ् १/४

क़ा-ल बर्रब्बुकुम् रब्बुस्समावाति वल्अर्जिल्लज़ी फ़-त-रहुन्-न व अ-न अला ज़ालिकुम् मिनश्शाहिदीन (५६) व तल्लाहि ल-अकीदन्-न अस्नामकुम् बअ्-द अन् तुवल्लू मुद्बिरीन (५७) फ़-ज-अ-लहुम् जुज़ाज़न् इल्ला कबीरल्लहुम् ल-अल्लहुम् इलैहि यर्जिअून (५८) क़ालू मन् फ़-अ-ल हाज़ा बिआलिहतिना इन्नहू लमिनज़्ज़ालिमीन (५९) कालू समिअ्-ना फ़-तय्यज़्कुरुहुम् युकालु लहू इब्राहीम (६०) क़ालू फ़अ्तू बिही अ़ला अअ्-युनिन्नासि ल-अल्लहुम् यश्हदून (६१) कालू अ-अन्-त फ़-अल्-त हाज़ा बिआलिहतिना या इब्राहीम (६२) का-ल बल् फ़-अ-लहू कबीरुहुम् हाज़ा फ़स्-अलूहुम् इन् कानू यन्तिक़ून (६३) फ़-र-जअ़ू इला अन्फुसिहिम् फ़-कालू इन्नकुम् अन्तुमुज़्-ज़ालिमून (६४) सुम्-म नुकिसू अला रुऊसिहिम् ल-कद् अलिम-त मा हाउलाइ यन्तिकून (६५) का-ल अ-फ़-तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुकुम् शैअव्-व ला यज़ुर्रुकुम् (६६) उफ़्फ़िल्लकुम् व लिमा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि अ-फ़ला तअ्-क़िलून (६७) क़ालू हर्रिकूहु वन्सुरू आलि-ह-तकुम् इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन (६८) कुल्ना या नारु कूनी बर्दंव-व सलामन् अ़ला इब्राहीम (६९) व अरादू बिही कैदन् फ़-ज-अल्ना-हुमुल्-अख़्-सरीन (७०) व नज्जैनाहु व लूतन् इलल्अर्ज़िल्-लती बारक्ना फ़ीहा लिल्आ़लमीन (७१) व व-हब्ना लहू इस्हा-क व यअ्-कू-ब नाफ़िल-तन् व कुल्लन् ज-अ़ल्ना सालिहीन (७२) व ज-अ़ल्नाहुम् अइम्मतंय्यह्दू-न बिअम्रिना व औहैना इलैहिम् फ़िअ्-लल्-ख़ैराति व इक़ामस्-सलाति व ईताअज्-ज़काति व कानू लना आबिदीन (७३)

بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَأَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ وَ
تَاللّٰهِ لَأَكِيْدَنَّ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝ فَجَعَلَهُمْ
جُذٰذًا إِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ۝ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ
هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ إِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ
يُقَالُ لَهٗٓ إِبْرٰهِيْمُ ۝ قَالُوْا فَأْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَشْهَدُوْنَ ۝ قَالُوْٓا ءَأَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓإِبْرٰهِيْمُ ۝ قَالَ
بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ إِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ۝ فَرَجَعُوْٓا
إِلٰٓى أَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا إِنَّكُمْ أَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى
رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ۝ قَالَ أَفَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۝ أُفٍّ لَّكُمْ
وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ
وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ
سَلٰمًا عَلٰٓى إِبْرٰهِيْمَ ۝ وَأَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْأَخْسَرِيْنَ ۝
وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَ
وَهَبْنَا لَهٗٓ إِسْحٰقَ ۖ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ۝
وَجَعَلْنٰهُمْ أَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ

(नही), बल्कि तुम्हारा परवरदिगार आसमानो और जमीन का परवरदिगार है, जिसने उन को पैदा किया है और मैं इस (बात) का गवाह (और इसी का कायल) हू। (५६) और खुदा की कसम! जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे, तो मैं तुम्हारे बुतो से एक चाल चलूगा। (५७) फिर उन को तोड कर टुकडे-टुकडे कर दिया, मगर एक बडे (बुत) को (न तोडा), ताकि वह उस की तरफ रुजूअ करे। (५८) कहने लगे कि हमारे माबूदो के साथ यह मामला किस ने किया? वह तो कोई जालिम है। (५९) लोगो ने कहा कि हमने एक जवान को उन का जिक्र करते हुए सुना है उसे इब्राहीम कहते हैं। (६०) वे बोले कि उसे लोगो के सामने लाओ ताकि वे गवाह रहे। (६१) (जब इब्राहीम आये तो बुतपरस्तों ने) कहा कि भला इब्राहीम! यह काम हमारे माबूदो के साथ तू ने किया है? (६२) (इब्राहीम ने) कहा, बल्कि यह उन के इन बडे (बुत) ने किया (होगा) अगर ये बोलते हो तो इन से पूछ लो। (६३) उन्हो ने अपने दिल मे गौर किया, तो आपस मे कहने लगे, बेशक तुम ही बे-इसाफ हो। (६४) फिर (शर्मिन्दा हो कर) सर नीचा कर लिया, (इस पर भी इब्राहीम से कहने लगे कि) तुम जानते हो, ये बोलते नही। (६५) (इब्राहीम ने) कहा कि फिर तुम खुदा को छोड कर क्यो ऐसी चीजो को पूजते हो, जो न तुम्हे कुछ फायदा दे सके और न नुक्सान पहुचा सके? (६६) अफसोस है तुम पर और जिन को तुम खुदा के सिवा पूजते हो उन पर! क्या तुम अक्ल नही रखते? (६७) (तब वे) कहने लगे कि अगर तुम्हे (इस से अपने माबूद का बदला लेना और) कुछ करना है तो उस को जला डालो और अपने माबूदो की मदद करो। (६८) हमने हुक्म दिया, ऐ आग! सर्द हो जा और इब्राहीम पर सलामती (की वजह बन जा)। (६९) उन लोगो ने बुरा तो उन का चाहा था, मगर हमने उन्ही को नुक्सान मे डाल दिया। (७०) और इब्राहीम और लूत को उस धरती की तरफ बचा निकाला, जिस मे हमने दुनिया वालो के लिए बरकत रखी थी। (७१) और हमने इब्राहीम को इस्हाक अता किए और उस पर याकूब और सब को नेक किया। (७२) और उनको पेशवा बनाया कि हमारे हुक्म से हिदायत करते थे और उन को नेक काम करने और नमाज पढने और जकात देने का हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत

व लूतन् आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्मव्-व नज्जैनाहु मिनल्-क़र्यतिल्लती कानत् तअ्-मलुल् - ख़बाइ-स ط इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़ासिक़ीन لا (७४) व अद्-ख़ल्नाहु फ़ी रह्‌मतिना ط इन्नहू मिनस्सालिहीन ★ (७५) व नूहन् इज़् नादा मिन् क़ब्लु फ़स्-त-जब्ना लहू फ-नज्जैनाहु व अह्‌लहू मिनल्-कर्बिल्-अ़ज़ीम ج (७६) व न - सर्नाहु मिनल्-क़ौमिल्लज़ी - न कज़्ज़बू बिआयातिना ط इन्नहुम् कानू कौ-म सौइन् फ-अग़्रक़्नाहुम् अज्-मअ़ीन (७७) व दावू-द व सुलैमा-न इज़् यह्‌कुमानि फ़िल्‌हर्सि इज़् न-फ़-शत् फ़ीहि ग - नमुल् - क़ौमि ج व कुन्ना लिहुक्मिहिम् शाहिदीन ولا (७८) फ-फह्‌-हम्नाहा सुलैमा-न ج व कुल्लन् आतैना हुक्मंव् - व अ़िल्मव ز व सख़्ख़र्ना म-अ़ दावू-दल्-जिबा-ल युसब्बिह्-न वत्तै-र ط व कुन्ना फ़ाअ़िलीन (७९) व अ़ल्लम्नाहु सन्-अ़-त लबूसिल्लकुम् लितुह्‌सिनकुम् मिम्-बअ्सिकुम् ج फ़-हल् अन्तुम् शाकिरून (८०) व लिसुलैमानर् - री - ह़ आ़सि-फ - तन् तज्री बिअम्रिही इलल् - अर्ज़िल्लती बारक्ना फीहा ط व कुन्ना बिकुल्लि शैइन् आ़लिमीन (८१) व **मिन** श्-शयातीनि मय्यग़ूसू-न लहू व यअ्-मलू-न अ़-म-लन् दू-न ज़ालि-क ج व कुन्ना लहुम् हाफ़िज़ीन لا (८२) व अय्यू-ब इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज़्ज़ुर्रु व अन्-त अर्ह़मुर् - राहिमीन صلے ج (८३) फ़स्त - जब्ना लहू फ़ - क - शफ़्ना मा बिही मिन् ज़ुर्रिंव्-व आतैनाहु अह्-लहू व मिस्-लहुम् म-अ़हुम् रह्-म-तम्-मिन् अ़िन्दिना व ज़िक्रा लिल्‌आ़बिदीन (८४) व इस्माई - ल व इद्‌री - स व ज़ल्किफ़्लि ط कुल्लुम् - मिनस्साबिरीन صلے ج (८५)

الانبياء ٢١ ٤٤٢ اقترب للناس ١٧

إقام الصلوة وإيتاء الزكوة وكانوا لنا عبدين ۝ ولوطا اتينه
حكما وعلما ونجينه من القرية التي كانت تعمل الخبئث
إنهم كانوا قوم سوء فسقين ۝ وأدخلنه في رحمتنا إنه
من الصلحين ۝ ونوحا إذ نادى من قبل فاستجبنا له
فنجينه وأهله من الكرب العظيم ۝ ونصرنه من القوم
الذين كذبوا بايتنا إنهم كانوا قوم سوء فأغرقنهم أجمعين ۝
وداود وسليمن إذ يحكمن في الحرث إذ نفشت فيه غنم
القوم وكنا لحكمهم شهدين ۝ ففهمنها سليمن وكلا
اتينا حكما وعلما وسخرنا مع داود الجبال يسبحن والطير
وكنا فعلين ۝ وعلمنه صنعة لبوس لكم لتحصنكم من
بأسكم فهل أنتم شكرون ۝ ولسليمن الريح عاصفة
تجري بأمره إلى الأرض التي بركنا فيها وكنا بكل شيء
علمين ۝ ومن الشيطين من يغوصون له ويعملون عملا
دون ذلك وكنا لهم حفظين ۝ وأيوب إذ نادى ربه أني
مسني الضر وأنت أرحم الرحمين ۝ فاستجبنا له فكشفنا ما
به من ضر واتينه أهله ومثلهم معهم رحمة من عندنا
وذكرى للعبدين ۝ وإسمعيل وإدريس وذا الكفل كل من

منزل ٤

★रु. ५/५ आ २५

किया करते थे। (७३) और लूत (का किस्सा याद करो जब उन) को हमने हुक्म (यानी हिक्मत व नुबूवत) और इल्म बख्शा और उस वस्ती से, जहा के लोग गन्दे काम किया करते थे, बचा निकाला! बेशक वे बुरे और बद-किरदार लोग थे। (७४) और उन्हे अपनी रहमत (के महल) मे दाखिल किया। कुछ शक नही कि वे नेक किरदारो मे थे। (७५)★

और नूह का (किस्सा भी याद करो) जब (इस से) पहले उन्हो ने हमे पुकारा तो हमने उन की दुआ कुबूल फरमायी और उन को और उन के साथियो को बडी घबराहट मे निजात दी। (७६) और जो लोग हमारी आयतो को झुठलाते थे, उन पर नुसरत बख्शी। वे बेशक बुरे लोग थे, सो हमने उन सब को डुबो दिया। (७७) और दाऊद और सुलेमान (का हाल भी सुन लो कि) जब वे एक खेती का मुकदमा फैसला करने लगे, जिस मे कुछ लोगो की बकरिया रात को चर गयी (और उसे रौंद गयी) थी और हम उन के फैसले के वक्त मौजूद थे।[1] (७८) तो हमने फैसला (करने का तरीका) सुलेमान को समझा दिया और हमने दोनो को हुक्म (यानी हिक्मत व नुबूवत) और इल्म बख्शा था। और हमने पहाडो को दाऊद का ताबेअ कर दिया था कि उन के साथ तस्बीह करते थे और जानवरो को भी (ताबेअ) कर दिया था और हम ही (ऐसा) करने वाले थे। (७९) और हमने तुम्हारे लिए उन को एक (तरह का) लिबास बनाना भी सिखा दिया, ताकि तुम को लडाई (के नुक्सान) से बचाए, पस तुम को शुक्रगुजार होना चाहिए। (८०) और हमने तेज हवा सुलेमान के (फरमान के) ताबेअ कर दी थी, जो उन के हुक्म से उस मुल्क मे चलती थी, जिस मे हमने बरकत दी थी (यानी शाम) और हम हर चीज मे ख़बरदार है। (८१) और देवो (की जमाअत को भी उन के ताबेअ कर दिया था कि उन) मे से कुछ उन के लिए गोते मारते थे और इस के सिवा और काम भी करते थे और हम उन के निगहबान थे। (८२) और अय्यूब (को याद करो,) जब उन्हो ने अपने परवरदिगार से दुआ की कि मुझे तक्लीफ हो रही है और तू सब से बढ कर रहम करने वाला है। (८३) तो हमने दुआ कुबूल कर ली और जो उन को तक्लीफ थी, वह दूर कर दी और उन को बाल-बच्चे भी अता फरमाये और अपनी मेहरबानी से उन के साथ उतने ही और (बख्शे) और इबादत करने वालो के लिए (यह) नसीहत है। (८४) और इस्माईल और इद्रीस जुलकिफ्ल (को भी याद करो), ये सब सब्र करने वाले थे। (८५)

---

१ हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का यह फैसला कि बकरिया [illegible] दिलवा दी, हज़रत सुलेमान अलै० को चरवाहो से यह हाल मालूम हुआ तो उन्होंने कहा कि अगर मै [illegible] फैसला करता तो कुछ और फैसला करता। यह खबर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को हुई तो उन्हो ने [illegible] सुलेमान को बुला कर कहा कि तुम इस मुकदमे का क्या फैसला करते हो। उन्हो ने कहा कि मेरा फैसला [illegible] कि खेती वालो को बकरिया दिलायी जाए कि उन के दूध वगैरह से फायदा उठाए और बकरियो के मालिक [illegible] मे बीज डालें और खेती करें। जब खेती इस हालत मे हो जाए, जिस हालत मे पहले थी तो उन को [illegible] लें और बकरिया उन के मालिको को वापस कर दी जाए।

व अद - ख़ल्नाहुम् फी रह्मतिना इन्नहुम् मिनस् - सालिहीन (८६) व ज़न्नूनि इज़् ज़-ह-ब मुग़ाज़िबन् फ-ज़न-न अल्लन् नक़्दि-र अलैहि फनादा फ़िज़्ज़ुलुमाति अल् - ला इला - ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन (८७) फस्-त - जब्ना लहू व नज्जैनाहु मिनल्ग़म्मि

व कज़ालि-क नुन्जिल्-मुअ्मिनीन (८८) व ज़-करिय्या इज़् नादा रब्बहू रब्बि ला त-ज़र्नी फर्-दव्-व अन्-त ख़ैरुल्-वारिसीन (८९) फस्-त-जब्ना लहू व व-हब्ना लहू यह्या व अस् - लह्ना लहू ज़ौजहू इन्नहुम् कानू युसारिअू-न फिल्ख़ैराति व यद्अूनना र-ग़-बव्-व र-ह-बन् व कानू लना ख़ाशिअीन (९०) वल्लती अह्-स-नत् फ़र्जहा फ-न-फ़ख़्ना फीहा मिर्रूहिना व ज-अ़ल्नाहा वब्-नहा आयतल्-लिल्आलमीन (९१) इन - न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतव्वाहि-द - तव्- व अ-न रब्बुकुम् फअ़्-बुदून (९२) व त-क़त्तअू अम्-रहुम्

الانبياء ٢١ — اقترب للناس ١٧

الصبرين ۚ وادخلنهم في رحمتنا ۖ انهم من الصلحين ۝ و
ذا النون اذ ذهب مغاضبا فظن ان لن نقدر عليه فنادى في
الظلمت ان لا اله الا انت سبحنك اني كنت من الظلمين ۝
فاستجبنا له ونجينه من الغم ۚ وكذلك نـجي المؤمنين ۝ و
زكريا اذ نادى ربه رب لا تذرني فردا وانت خير الورثين ۝
فاستجبنا له ووهبنا له يحيى واصلحنا له زوجه ۚ انهم كانوا
يسرعون في الخيرت ويدعوننا رغبا ورهبا ۖ وكانوا لنا خشعين ۝
والتي احصنت فرجها فنفخنا فيها من روحنا وجعلنها وابنها
اية للعلمين ۝ ان هذه امتكم امة واحدة ۖ وانا ربكم فاعبدون ۝
وتقطعوا امرهم بينهم ۖ كل الينا رجعون ۝ فمن يعمل من
الصلحت وهو مؤمن فلا كفران لسعيه ۚ وانا له كتبون ۝ و
حرم على قرية اهلكنها انهم لا يرجعون ۝ حتى اذا فتحت
يأجوج ومأجوج وهم من كل حدب ينسلون ۝ واقترب
الوعد الحق فاذا هي شاخصة ابصار الذين كفروا ۖ يويلنا قد
كنا في غفلة من هذا بل كنا ظلمين ۝ انكم وما تعبدون
من دون الله حصب جهنم ۖ انتم لها وردون ۝ لو كان
هؤلاء الهة ما وردوها ۖ وكل فيها خلدون ۝ لهم فيها زفير

बैनहुम् कुल्लुन् इलैना राजिअून ★(९३) फ - मय्यअ् - मल् मिनस्-सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फला कुफ़रा-न लिसअ्-यिही व इन्ना लहू कातिबून (९४) व हरामुन् अला क़र-यतिन् अह्-लक्नाहा अन्नहुम् ला यर्जिअून (९५) हत्ता इज़ा फुतिहत् यअ्जूजु व मअ्जूजु व हुम् मिन् कुल्लि ह-दबिंय्यन्सिलून (९६) वक्त-र-बल्-वअ्-दुल्-हक्कु फ-इज़ा हि - य शाख़ि-सतुन् अब्सारुल्लज़ी-न क-फ़रू यावैलना कद् कुन्ना फी ग़फ़-लतिम्-मिन् हाज़ा बल् कुन्ना ज़ालिमीन (९७) इन्नकुम् व मा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ह-सबु जहन्न-म अन्तुम् लहा वारिदून (९८) लौ का-न हाउलाइ आलि-ह - तम् - मा व - रदूहा व कुल्लुन् फीहा ख़ालिदून (९९) लहुम् फ़ीहा ज़फीरुव-व हुम् फीहा ला यस् - मअून (१००)

★रु ६/६ आ १८

और हमने उन को अपनी रहमत मे दाखिल किया। बेशक वह नेक थे। (८६) और जुन्नून (को याद करो), जब वह (अपनी कौम मे नाराज हो कर) गुस्मे की हालत मे चल दिए और ख्याल कि हम उन पर काबू नही पा सकेंगे, आख़िर अंधेरे मे (खुदा को) पुकारने लगे कि "तेरे सिवा कोई माबूद नही। तू पाक है" (और) बेशक मैं कुसूरवार हू"। (८७) तो हमने उन की दुआ कुबूल कर ली और उन को गम से निजात बख्शी। और ईमान वालो को हम इसी तरह निजात दिया करते है। (८८) और जकरीया (को याद करो), जब उन्हो ने अपने परवरदिगार को पुकारा कि परवरदिगार! मुझे अकेला न छोड और तू सब से बेहतर वारिस है। (८९) तो हमने उन की पुकार सुन ली और उनको यह्या बख्शे और उन की बीवी को औलाद के काबिल बना दिया। ये लोग लपक-लपक कर नेकिया करते और हमे उम्मीद और डर मे पुकारते और हमारे आगे आजिजी किया करते थे। (९०) और उन (मरयम) को (भी याद करो), जिन्हो ने अपनी पाकदामनी को बचाए रखा, तो हमने उन मे अपनी रूह फूक दी और उन को और उन के बेटे को दुनिया वालो के लिए निशानी बना दिया। (९१) यह तुम्हारी जमाअत एक ही जमाअत है, और मैं तुम्हारा परवरदिगार हू, तो मेरी ही इबादत किया करो। (९२) और ये लोग अपने मामले मे आपस मे बट गये '(मगर) सब हमारी तरफ रुजूअ करने वाले है। (९३)★

जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा, तो उस की कोशिश बेकार न जाएगी और हम उस के लिए (आमाल का सवाब) लिख रहे है। (९४) और जिस बस्ती (वालो) को हमने हलाक कर दिया, महाल है कि (रुजूअ करे) वह रुजूअ नही करेंगे।' (९५) यहा तक कि याजूज और माजूज खोल दिए जाएं और वे हर बुलंदी से दौड रहे हो। (९६) और (कियामत का) सच्चा वायदा करीब आ जाए, तो यकायक काफ़िरो की आखे खुली की खुली रह जाए (और कहने लगे कि) हाय शामत हम इस (हाल) से गफलत मे रहे, बल्कि हम (अपने हक मे) जालिम थे। (९७) (काफिरो! उस दिन) तुम और जिन की तुम खुदा के सिवा इबादत करते हो, दोजख का ईंधन होगे (और) तुम (सब) उस मे दाखिल हो कर रहोगे। (९८) अगर ये लोग (हकीकत मे) माबूद होते तो उस मे दाखिल न होते, सब उस मे हमेशा (जलते) रहेंगे। (९९) वहा उन को चिल्लाना होगा और उस मे (कुछ) न सुन सकेंगे। (१००) जिन लोगो के लिए हमारी तरफ से पहले भलाई मुकर्रर हो चुकी है, वे इस से दूर रखे जाएंगे। (१०१) (यहा तक कि) उन

---

१ रुजूअ न करने के दो मानी हो सकते है—एक तो यह कि कियामत से पहले दुनिया की तरफ रुजूअ न करेंगे दूसरे यह कि खुदा की तरफ रुजूअ यानी तौबा न करेंगे।

★रु ६/६ आ १८

इन्नल्लजी-न स-ब-क़त् लहुम् मिन्नल्-हुस्ना उलाइ-क अन्हा मुब् - अ़दून (१०१) ला यस् - मअ़ू-न ह़सीसहा व हुम् फ़ी मश्-त-ह़त् अन्फुसुहुम् ख़ालिदून (१०२) ला यह़्ज़ुनुहुमुल्-फ-ज़्-अुल्-अक्बरु व त-त-लक़्क़ाहुमुल्-मलाइकतु ط हाज़ा यौमुकुमुल्लज़ी कुन्तुम् तू-अ़दून (१०३) यौ-म नत्विस्-समा-अ क-तय्यिस् - सिजिल्लि लिल्कुतुबि ط कमा ब-दअ्-ना अव्व-ल ख़ल्क़िन् नुई़दुहू ط वअ्-दन् अ़लैना ط इन्ना कुन्ना फ़ाअ़िलीन (१०४) व ल-क़द् क-तब्ना फ़िज़्ज़बूरि मिम्-बअ्-दिज़्ज़िक्रि अन्नल्अर्-ज़ यरिसुहा अ़िबादियस्-सालिहून (१०५) इन् - न फ़ी हाज़ा ल-ब-लाग़ल्-लिक़ौमिन् आ़बिदीन ط (१०६) व मा अर्सल्ना-क इल्ला रह़्-म-तल्-लिल्आ़लमीन (१०७) क़ुल् इन्नमा यूह़ा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहि़दुन् फ-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (१०८) फ-इन् त-वल्लौ फ़क़ुल् आज़न्तुकुम् अ़ला सवाइन् ط व इन् अद्री अ-क़रीबुन् अम् बई़दुम्मा तू-अ़दून (१०९) इन्नहू यअ्-लमुल्-जह्-र मिनल्क़ौलि व यअ्-लमु मा तक्-तुमून (११०) व इन् अद्री ल-अ़ल्लहू फ़ित्-नतुल् - लकुम् व मताअ़ुन् इला ह़ीन (१११) का-ल रब्बिह़्कुम् बिल्ह़क़्क़ि ط व रब्बुनर्-रह़्मानुल् - मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून★●(११२)

وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ
أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا
اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ۝ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ
الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ نَطْوِي
السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ ۚ وَعْدًا
عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ۝ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ
أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝ إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ
عَابِدِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ
إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝ فَإِن تَوَلَّوْا
فَقُلْ آذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا
تُوعَدُونَ ۝ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ۝
وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝ قَالَ رَبِّ احْكُم
بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝
سُورَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَسَبْعُونَ آيَةً وَعَشْرُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝
يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ

२२ सूरतुल्-ह़ज्जि १०३

(मदनी) इस सूर मे अरबी के ५४३२ अक्षर, १२८३ शब्द, ७८ आयते और १० रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् इन्-न ज़ल्-ज़-ल-तस् - साअ़ति शैउन् अ़ज़ीम (१) यौ-म तरौनहा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़ि-अ़तिन् अ़म्मा अर्ज़-अ़त् व त-ज़-अ़ु कुल्लु ज़ाति-ह़म्लिन् ह़म - लहा व त - रन्ना - स सुकारा व मा हुम् बिसुकारा व लाकिन् - न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद (२)

★रु. ७/७ आ १९ ● नि. १/२

की आवाज भी तो नही सुनेगे और जो कुछ उन का जी चाहेगा उस मे (यानी हर तरह के ऐश और मजे मे) हमेशा रहेगे। (१०२) उन को (इस दिन का) बडा भारी खौफ गमगीन नही करेगा और फरिश्ते उन को लेने आएंगे (और कहेगे कि) यही वह दिन है, जिस का तुम से वायदा किया जाता था। (१०३) जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेट लेंगे, जैसे खतो का तूमार लपेट लेते है, जिस तरह हमने (काइनात) को पहले पैदा किया था, उसी तरह दोबारा पैदा कर देंगे। (यह) वायदा (है जिस का पूरा करना) जरूरी है। हम ऐसा ज़रूर करने वाले है। (१०४) और हमने नसीहत (की किताब यानी तौरात) के बाद ज़बूर मे लिख दिया था कि मेरे नेक बन्दे मुल्क के वारिस होगे, (१०५) इबादत करने वाले लोगो के लिए इस मे (खुदा के हुक्मो की) तब्लीग है। (१०६) और (ऐ मुहम्मद !) हमने तुम को तमाम दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा है। (१०७) कह दो कि मुझ पर (खुदा की तरफ से) यह वह्य आती है कि तुम सब का माबूद एक खुदा है, तो तुम को चाहिए कि फरमाबरदार हो जाओ। (१०८) अगर ये लोग मुह फेरे तो कह दो कि मैं ने तुम सब को एक जैसे (खुदा के हुक्मो से) आगाह कर दिया है और मुझ को मालूम नही कि जिस चीज का तुम से वायदा किया जाता है, वह (बहुत) जल्द (आने वाली) है। (उस का वक्त) दूर है। (१०९) जो बात पुकार कर की जाए, वह उसे भी जानता है और जो तुम छिपा कर करते हो, उसे भी जानता है। (११०) और मैं नही जानता शायद वह तुम्हारे लिए आजमाइश हो और एक मुद्दत तक (तुम उस से) फायदा (उठाते रहो)। (१११) (पैगम्बर ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार ! हक के साथ फैसला कर दे और हमारा परवरदिगार बडा मेहरबान है, उसी से उन बातो में जो तुम बयान करने हो, मदद मागी जाती है। (११२)★○

२२ सूरः हज्ज १०३

सूर हज्ज मदनी है और इस मे ७८ आयते और दस रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगो ! अपने परवरदिगार से डरो कि कियामत का ज़लज़ला एक बडा हादिसा है। (१) (ऐ मुखातब !) जिस दिन तू उस को देखेगा, (उस दिन यह हाल होगा कि) तमाम दूध पिलाने वाली औरते अपने बच्चो को भूल जाएंगी और तमाम हमल वालियो के हमल गिर पड़ेंगे और लोग तुझ को मतवाले नजर आएगे, मगर वे मतवाले नही होगे, बल्कि (अज़ाब देख कर मदहोश हो रहे

व मिनन्नासि मय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अिलमिव-व यत्तबिअु कुल-ल शैतानिम्-मरीद ۙ (३) कुति-व अलैहि अन्नहू मन् त-वल्लाहु फ-अन्नहू युजिल्लुहू व यह्दीहि इला अज़ाबिस्सअीर (४) या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम्-मिनल्बअ्-सि फ-इन्ना ख़-लक्नाकुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत-फतिन् सुम्-म मिन् अ-ल-क़तिन् सुम्-म मिम्-मुज्-ग़तिम्-मुख़ल्लकतिव्-व ग़ैरि मुख़ल्लक़तिल्-लिनुबय्यि-न लकुम् ط व नुक़िर्रु फ़िल्अर्हामि मा नशाउ इला अ-जलिम् - मुसम्मन् सुम्-म नुख़्रिजुकुम् तिफ़्-लन् सुम् - म लितब्लुग़ू अशुद्दकुम् ج व मिन्कुम् मंय्यु-त-वफ्फा व मिन्कुम् मय्युरद्दु इला अर्ज़लिल् - अुमुरि लिकैला यअ्-ल-म मिम्बअ्-दि अिलमिन् शैअन् ط व त-रल्अर्-ज़ हामि-द-तन् फइज़ा अन-ज़ल्ना अलैहल्-मा-अह्तज्जत् व र-बत् व अम्ब-तत् मिन् कुल्लि ज़ौजिम् - बहीज (५) ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल् - हक़्क़ु व अन्नहू युह्यिल् - मौता व अन्नहू अला कुल्लि शैइन् क़दीर ۙ (६) व अन्नस्सा-अ - त आतियतुल्ला रै-ब फ़ीहा ۙ व अन्नल्ला - ह यब्अमु मन् फ़िल्क़ुबूर (७) व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अिल्मिव्-व ला हुदव् - व ला किताबिम् - मुनीर ۙ (८) सानि - य अित्फ़िही लियुज़िल् - ल अन् सबीलिल्लाहि ط लहू फ़िद्दुन्या ख़िज़्युं व व नुज़ीक़ुहू यौमल् - क़ियामति अज़ाबल् - हरीक (९) ज़ालि - क बिमा क़द्-द-मत् यदा-क व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल्-लिल्-अबीद ★(१०)

اقترب للناس ١٧ ٣٤٥ الحج ٢٢

ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَ
لٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۝ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ
تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝ يٰاَيُّهَا
النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ
ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ
مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَاۤءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا
وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاۤءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ
وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ
يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ
لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ
مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ ثَانِيَ
عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ
لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ

★रु. १/८ आ १०

होगे) । बेशक खुदा का अजाब सख़्त है। (२) और कुछ लोग ऐसे हैं जो खुदा (की शान) मे इल्म (और सूझ-बूझ) के बगैर झगड़ते और हर शैतान-सरकश की पैरवी करते है। (३) जिस के बारे मे लिख दिया गया है कि जो उसे दोस्त रखेगा तो वह उस को गुमराह कर देगा और दोजख़ के अज़ाब का रास्ता दिखाएगा। (४) लोगो! अगर तुम को (मरने के बाद) जी उठने मे कुछ शक हो तो हमने तुम को (पहली बार भी तो) पैदा किया था, (यानी शुरू मे) मिट्टी से, फिर उस से नुत्फा बना कर, फिर उस से खून का लोथड़ा बना कर, फिर उससे बोटी बना कर, जिसकी बनावट पूरी भी होती है और अधूरी भी, ताकि तुम पर अपना 'पैदा करने वाला' होना ज़ाहिर कर दे और हम जिस को चाहते है एक मुकर्रर मीआद तक पेट मे ठहराए रखते है, फिर तुम को बच्चा बनाकर निकालते है, फिर तुम जवानी को पहुंचते हो और कुछ (बुढापे से पहले) मर जाते है और कुछ (बूढे खूसट हो जाते और बुढापे की) बहुत खराब उम्र की तरफ लौटाए जाते हैं कि (बहुत कुछ) जानने के बाद बिलकुल बे-इल्म हो जाते है और (ऐ देखने वाले!) तू देखता है (कि एक वक्त मे) जमीन सूखी (पडी होती है), फिर जब हम उस पर मेह बरसाते है तो वह हरी-भरी हो जाती है और उभरने लगती है और तरह-तरह की रौनकदार चीजें उगाती है। (५) इन कुदरतो मे जाहिर है कि खुदा ही (सब कुछ कुदरत रखने वाला है, जो) बरहक है और यह कि वह मुर्दों को जिंदा कर देता है और यह कि वह हर चीज पर कुदरत रखता है। (६) और यह कि क़ियामत आने वाली है। इस मे कुछ शक नही और यह कि खुदा सब लोगो को, जो कब्रो मे है, जिन्दा उठाएगा। (७) और लोगो मे कोई ऐसा भी है जो खुदा (की शान) मे बगैर इल्म (व दानिश) के और बगैर हिदायत के और बगैर रोशन किताब के झगड़ता है। (८) (और घमंड मे) गरदन मोड़ लेता (है) ताकि (लोगो को) खुदा के रास्ते से गुमराह कर दे, उस के लिए दुनिया मे ज़िल्लत है और क़ियामत के दिन हम उसे जलती (आग के) अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (९)

व मिनन्नासि मंय्यअ-बुदुल्ला-ह अला हर्फिन् ج फ-इन् असाबहू ख़ैरुनितम-अन्-न बिही ج व इन् असाबत्हु फित - नतुनिन्-क - ल - ब अला वज्हिही ख़सिरद्दुन्या वल्आख़िर-त़ ط ज़ालि-क हुवल्ख़ुस्रानुल्-मुबीन (११) यद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहू व मा ला यन्फ़अुहू ط ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअीद ج (१२) यद्अू ल - मन् ज़र्रुहू अक़्रबु मिन् नफ़्अिही ط लबिअ्सल् - मौला व लबिअ्सल् - अशीर (१३) इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी - न आमनू व अमिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु ط इन्नल्ला - ह यफ़्अलु मा युरीद (१४) मन् का-न यज़ुन्नु अल्लय्यन्सुरहुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति फल्यम्दुद् बि-स-बबिन् इलस्समाइ सुम्मल्-यक़्तअ् फल्-यन्ज़ुर् हल् युज़्हिबन्-न कैदुहू मा यगीज़ (१५) व क-ज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु आयातिम् - बय्यिनातिंव - व अन्नल्ला - ह यह्दी मंय्युरीद (१६) इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वस्साबिई-न वन्नसारा वलमजू-स वल्लज़ी-न अश्रकू ج इन्नल्ला-ह यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्क़ियामति ط इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् शहीद (१७) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह यस्जुदु लहू मन् फ़िस्समावाति व मन् फिल्अर्ज़ि वश्शम्सु वल्-क-मरु वन्नुजूमु वल्जिबालु वश्श-जरु वद्दवाब्बु व कसीरुम्-मिनन्नासि ط व कसीरुन् हक़् - क़ अलैहिल् - अज़ाबु ط व मय्युहिनिल्लाहु फमा लहू मिम् - मुक्रिमिन् ط इन्नल्ला - ह यफ़्अलु मा यशाउ ط □ (१८) हाज़ानि ख़स्-मानिख़्-त-समू फ़ी रब्बिहिम् ز फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू कुत्तिअत् लहुम् सियाबुम् - मिन् नारिन् ط युसब्बु मिन् फौक़ि रुऊसिहिमुल्-हमीम ج (१९)

فإن أصابه خير اطمأن به وإن أصابته فتنة انقلب على
وجهه خسر الدنيا والآخرة ذلك هو الخسران المبين ۝
يدعوا من دون الله ما لا يضره وما لا ينفعه ذلك هو الضلل
البعيد ۝ يدعوا لمن ضره أقرب من نفعه لبئس المولى
ولبئس العشير ۝ إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا
الصلحت جنت تجري من تحتها الأنهر إن الله يفعل ما
يريد ۝ من كان يظن أن لن ينصره الله في الدنيا والآخرة
فليمدد بسبب إلى السماء ثم ليقطع فلينظر هل يذهبن
كيده ما يغيظ ۝ وكذلك أنزلنه آيت بينت وأن الله
يهدي من يريد ۝ إن الذين آمنوا والذين هادوا والصبئين
والنصرى والمجوس والذين أشركوا إن الله يفصل بينهم
يوم القيمة إن الله على كل شيء شهيد ۝ ألم تر أن الله
يسجد له من في السموت ومن في الأرض والشمس والقمر
والنجوم والجبال والشجر والدواب وكثير من الناس وكثير
حق عليه العذاب ومن يهن الله فما له من مكرم إن الله
يفعل ما يشاء ۝ هذان خصمان اختصموا في ربهم فالذين
كفروا قطعت لهم ثياب من نار يصب من فوق رءوسهم

□ सज्दः ६

(ऐ सरकश !) यह उस (कुफ्र) की सजा है, जो तेरे हाथों ने आगे भेजा है और खुदा अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं★ (१०) और लोगों में कोई ऐसा भी है जो किनारे पर (खड़ा हो कर) खुदा की इबादत करता है। अगर उस को कोई (दुनिया का) फायदा पहुंचे तो उस की वजह से मुतमइन हो जाए और अगर कोई आफत आ पड़े तो मुंह के बल लौट जाए (यानी फिर काफिर हो जाए)। उस ने दुनिया में भी नुक्सान उठाया और आख़िरत में भी यही तो खुला नुक़सान है। (११) यह खुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारता है, जो न उसे नुक्सान पहुंचाए और न फायदा दे सके, यही तो परले दर्जे की गुमराही है। (१२) (बल्कि) ऐसे शख्स को पुकारता है, जिस का नुक्सान फायदे से ज्यादा करीब है, ऐसा दोस्त भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा। (१३) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, खुदा उन को बहिश्तों में दाख़िल करेगा, जिन के नीचे नहरें चल रही हैं। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा जो चाहता है, करता है। (१४) जो आदमी यह गुमान करता हो कि ख़ुदा उस को दुनिया और आख़िरत में मदद नहीं देगा, तो उस को चाहिए कि ऊपर की तरफ (यानी अपने घर की छत में) एक रस्सी बांधे फिर (उस में अपना) गला घोंट ले, फिर देखे कि क्या यह तद्बीर उस के गुस्से को दूर कर देती है। (१५) और इसी तरह हमने इस कुरआन को उतारा है (जिस की तमाम) बातें खुली हुई (हैं) और यह (याद रखो) कि ख़ुदा जिस को चाहता है, हिदायत देता है। (१६) जो लोग मोमिन (यानी मुसलमान) हैं और जो यहूदी हैं और सितारापरस्त और ईसाई और मजूसी और ख़ुदा के मुश्रिक, उन (सब) में कियामत के दिन फ़ैसला कर देगा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ से बा-ख़बर है। (१७) क्या तुम ने नहीं देखा कि जो (मख़्लूक़) आसमानों में है और जो ज़मीन में है और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और चारपाए और बहुत से इंसान ख़ुदा को सज्दा करते हैं और बहुत से ऐसे है, जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है और जिस आदमी को ख़ुदा ज़लील करे, उस को कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं। बेशक ख़ुदा जो चाहता है, करता है□(१८) ये दो (फ़रीक़) एक दूसरे के दुश्मन अपने परवरदिगार (के बारे) में झगड़ते हैं, तो जो काफ़िर हैं उन के लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे (और) उन के सरों पर जलता हुआ पानी डाला जाएगा। (१९) इस से उन के पेट के

युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम् वल्-जुलूद ط (२०) व लहुम् मकामिअु मिन् हदीद (२१) कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन् गम्मिन् उअीदू फिहा ج व जूक़ू अज़ाबल्-हरीक ✱ (२२) इन्नल्ला-ह युद्खिलुल्लज़ी - न आमनू व अमिलुस्-सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु युहल्लौ-न फीहा मिन् असावि-र मिन् ज - हबिव - व लुअ्लुअन् ط व लिबासुहुम् फीहा हरीर (२३) व हुदू इलत्तय्यिबि मिनल्क़ौलि صلے व हुदू इला सिरातिल् - हमीद (२४) इन्नल्लज़ी-न क-फरू व य-सुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि वल्मस-जिदिल्-हरामिल्लज़ी ज-अल्नाहु लिन्नासि सवा-अ-निल्-आकिफु फ़ीहि वल्बादि ط व मय्युरिद् फीहि बि-इल्हादिम् - बिज़ुल्मिन् नुज़िक्हु मिन् अज़ाबिन् अलीम ✱ (२५) व इज़् बव्वअ्ना लिइब्राही - म मकानल्-बैति अल्ला तुश्रिक् बी शैअव - व तहिहर् बैति - य लित्ताइफी - न वल्का-इमी-न वर्रुक्कअिस्सुजूद (२६) व अज़्ज़िन् फिन्नासि बिल्हज्जि यअ्-तू-क रिजालंव-व अला कुल्लि ज़ामिरिंय्यअ्ती-न मिन् कुल्लि फ़ज्जिन् अमीक़िल्- لا (२७) लियश्हदू मनाफि - अ लहुम् व यज़्कुरुस्मल्लाहि फी अय्यामिम्-मअ्-लूमातिन् अला मा र-ज़-क़हुम् मिम् - बहीमतिल् - अन्आमि ج फकुलू मिन्हा व अत्अिमुल् - बाइसल् - फक़ीर ز (२८) सुम्मल् - यक़्ज़ू त-फ-सहुम् वल्यूफू नुज़ूरहुम् वल्यत्तव्वफू बिल्बैतिल्-अतीक (२९) ज़ालि-क ج व मय्युअ्ज़्ज़िम् हुरुमातिल्लाहि फहु - व ख़ैरुल्लहू अिन् - द रब्बिही ط व उहिल्लत् लकुमुल् - अन्आमु इल्ला मा युत्ला अलैकुम् फ़ज्-तनिबुर्रिज् - स मिनल् - औसानि वज - तनिबू कौलज़्ज़ूर لا (३०)

الحميم ﴿١٩﴾ يصهر به ما في بطونهم والجلود ﴿٢٠﴾ ولهم مقامع
من حديد ﴿٢١﴾ كلما أرادوا أن يخرجوا منها من غم أعيدوا
فيها وذوقوا عذاب الحريق ﴿٢٢﴾ إن الله يدخل الذين آمنوا
وعملوا الصالحات جنات تجري من تحتها الأنهار يحلون فيها
من أساور من ذهب ولؤلؤا ولباسهم فيها حرير ﴿٢٣﴾ وهدوا
إلى الطيب من القول وهدوا إلى صراط الحميد ﴿٢٤﴾ إن الذين
كفروا ويصدون عن سبيل الله والمسجد الحرام الذي جعلناه
للناس سواء العاكف فيه والباد ومن يرد فيه بإلحاد بظلم
نذقه من عذاب أليم ﴿٢٥﴾ وإذ بوأنا لإبراهيم مكان البيت
أن لا تشرك بي شيئا وطهر بيتي للطائفين والقائمين والركع
السجود ﴿٢٦﴾ وأذن في الناس بالحج يأتوك رجالا وعلى كل
ضامر يأتين من كل فج عميق ﴿٢٧﴾ ليشهدوا منافع لهم و
يذكروا اسم الله في أيام معلومات على ما رزقهم من بهيمة
الأنعام فكلوا منها وأطعموا البائس الفقير ﴿٢٨﴾ ثم ليقضوا
تفثهم وليوفوا نذورهم وليطوفوا بالبيت العتيق ﴿٢٩﴾
ذلك ومن يعظم حرمات الله فهو خير له عند ربه و
أحلت لكم الأنعام إلا ما يتلى عليكم فاجتنبوا الرجس

★रु० २/९ आ १२ ★रु ३/१० आ ३

अन्दर की चीजे और खाले गल जाएगी। (२०) और उन (के मारने-ठोकने) के लिए लोहे के हथोडे होगे। (२१) जब वे चाहेगे कि इस रंज (व तक्लीफ की वजह) से दोज़ख़ से निकल जाएं, तो फिर उसी मे लौटा दिए जाएंगे और (कहा जाएगा कि) जलने के अज़ाब का मज़ा चखते रहो। (२२)★

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, ख़ुदा उन को बहिश्तो मे दाख़िल करेगा, जिन के तले नहरे बह रही है। वहा उन को सोने के कंगन पहनाए जाएगे और मोती, और वहा उन का लिबास रेशमी होगा। (२३) और उन को पाक कलाम की हिदायत की गयी और (ख़ुदा-ए-) हमीद की राह बतायी गयी। (२४) जो लोग काफिर है और (लोगो को) ख़ुदा के रास्ते से और मस्जिदे मोहतरम से, जिसे हमने लोगो के लिए एक जैसी (इबादतगाह) बनाया है, रोकते है, चाहे वे वहा के रहने वाले हो या बाहर से आने वाले और जो इस मे शरारत से टेढा रास्ता (और कुफ्र) अपनाना चाहे, उस को हम दर्द देने वाले अज़ाब का मज़ा चखाएगे★(२५) और (एक वक्त था) जब हमने इब्राहीम के लिए ख़ाना-काबा को मकाम मुकर्रर किया (और इर्शाद फरमाया) कि मेरे साथ किसी चीज को शरीक न कीजियो और तवाफ करने वालो और कियाम करने वालो और रुकूअ करने वालो (और) सज्दा करने वालो के लिए मेरे घर को साफ रखा करो। (२६) और लोगो मे हज के लिए निदा कर दो कि तुम्हारी तरफ पैदल और दुबले-दुबले ऊटो पर, जो दूर (-दूर के) रास्तो से चले आते हो, (सवार हो कर) चले आएं, (२७) ताकि अपने फायदे के कामो के लिए हाजिर हो और (कुर्बानी के) मालूम दिनो मे चारपायों (के जिब्ह के वक्त) जो ख़ुदा ने उन को दिए है, उन पर ख़ुदा का नाम लें। उस मे से तुम ख़ुद भी खाओ और दबे-कुचले फकीर को भी खिलाओ। (२८) फिर चाहिए कि लोग अपना मैल-कुचैल दूर करें और नज्रे पूरी करे और पुराने घर (यानी बैतुल्लाह) का तवाफ करें। (२९) यह (हमारा हुक्म है) और जो शख़्स अदब की चीज़ों की, जो ख़ुदा ने मुकर्रर की हैं अज़्मत रखे, तो यह परवरदिगार के नज़दीक उस के हक मे बेहतर है और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल कर दिए गए हैं सिवा उन के जो तुम्हे पढ कर सुनाए जाते है तो बुतो की पलीदी से बचो और झूठी बात से बचो। (३०)

★रु. २/९ आ १२ ★रु ३/१० आ ३

हु-न-फा-अ लिल्लाहि गै-र मुश्रिकी-न विही ط व मंय्युश्रिक बिल्लाहि फ-क-अन्नमा ख़र्-र मिनस्समा-इ फ-तख़्तफ़ुहुत्-तैरु औ तह्वी बिहिर्रीहु फी मकानिन् सहीक (३१) जालि-क ق व मंय्युअ़ज़्ज़िम् शआ़इरल्लाहि फ-इन्नहा मिन् तक़्वल्क़ुलूब (३२) लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु इला अ-जलिम्-मुसम्मन् सुम्-म महिल्लुहा इलल्-बैतिल्-अ़तीक ★(३३) व लिकुल्लि उम्मतिन् ज-अ़ल्ना मन्-स-कल्-लि-यज़्कुरुस्मल्लाहि अ़ला मा र-ज़-क़हुम् मिम् बहीमतिल्-अन्-आमि ط फ़इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ-लहू अस्लिमू ط व बश्शिरिल्-मुख़्बितीन ۙ (३४) अल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकि-रल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् वस्साबिरी-न अ़ला मा असा-बहुम् वल्मुक़ीमिस्सलाति ۙ व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (३५) वल्बुद्-न ज-अ़ल्नाहा लकुम् मिन् शआ़इरिल्लाहि लकुम् फ़ीहा ख़ैरुन् ق फ़ज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहा सवाफ़्-फ़ फ-इज़ा व-ज-बत् जुनूबुहा फ़कुलू मिन्हा व अत्‌अिमुल्क़ानि-अ़ वल्मुअ्-तर्-र ط कज़ालि-क सख़्ख़र्नाहा लकुम् ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (३६) लंय्यनालल्ला-ह लुहूमुहा व ला दिमाउहा वलाकिंय्यनालुहुत्-तक़्वा मिन्कुम् ط कज़ालि-क सख़्-ख़-रहा लकुम् लितुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला मा हदाकुम् ط व बश्शिरिल्-मुह्सिनीन (३७) इन्नल्ला-ह युदाफ़िअु अ़निल्लज़ी-न आमनू ط इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल ख़व्वानिन् कफ़ूर ★● (३८) उज़ि-न लिल्लज़ी-न युक़ातलू-न बि-अन्नहुम् ज़ुलिमू ط व इन्नल्ला-ह अ़ला नस्रिहिम् ल-क़दीर ۙ (३९)

اقترب للناس ١٧ — ٣٤٨ — الحج ٢٢

من الأوثان واجتنبوا قول الزور ۝ حنفاء لله غير مشركين به
ومن يشرك بالله فكأنما خر من السماء فتخطفه الطير أو
تهوي به الريح في مكان سحيق ۝ ذلك ومن يعظم شعائر
الله فإنها من تقوى القلوب ۝ لكم فيها منافع إلى أجل
مسمى ثم محلها إلى البيت العتيق ۝ ولكل أمة جعلنا
منسكا ليذكروا اسم الله على ما رزقهم من بهيمة الأنعام
فإلهكم إله واحد فله أسلموا وبشر المخبتين ۝ الذين إذا
ذكر الله وجلت قلوبهم والصابرين على ما أصابهم والمقيمي
الصلوة ومما رزقنهم ينفقون ۝ والبدن جعلنها لكم
من شعائر الله لكم فيها خير فاذكروا اسم الله عليها صواف
فإذا وجبت جنوبها فكلوا منها وأطعموا القانع والمعتر
كذلك سخرنها لكم لعلكم تشكرون ۝ لن ينال الله لحومها
ولا دماؤها ولكن يناله التقوى منكم كذلك سخرها لكم
لتكبروا الله على ما هدىكم وبشر المحسنين ۝ إن الله
يدفع عن الذين آمنوا إن الله لا يحب كل خوان كفور ۝
أذن للذين يقتلون بأنهم ظلموا وإن الله على نصرهم
لقدير ۝ الذين أخرجوا من ديارهم بغير حق إلا أن يقولوا

सिर्फ एक खुदा के हो कर और उस के साथ शरीक न ठहरा कर और जो शख्स (किसी को) खुदा के साथ शरीक मुकर्रर करे, तो वह गोया ऐसा है जैसे आसमान से गिर पडे, फिर उस को परिन्दे उचक ले जाए या हवा किसी दूर जगह उडा कर फेंक दे। (३१) यह (हमारा हुक्म है) और जो शख्स अदब की चीजो की, जो खुदा ने मुकर्रर की है, अज्मत रखे, तो यह (काम) दिलो की परहेजगारी मे से है। (३२) उन मे एक मुकर्रर वक्त तक तुम्हारे लिए फायदे है, फिर उन का पुराने घर (यानी बैतुल्लाह) तक पहुचना (और जिब्ह होना) है। (३३)★

और हम ने हर एक उम्मत के लिए कुर्बानी का तरीका मुकर्रर कर दिया है, ताकि जो मवेशी चारपाए खुदा ने उन को दिए है, (उन के जिब्ह करने के वक्त) उन पर खुदा का नाम ले, सो तुम्हारा माबूद एक ही है, तो उसी के फरमाबरदार हो जाओ और आजिजी करने वालो को खुश-खबरी सुना दो। (३४) ये वह लोग है कि जब खुदा का नाम लिया जाता है, तो उन के दिल डर जाते है और (जब) उन पर मुसीबत पडती है, तो सब्र करते है और नमाज आदाब से पढते है और जो (माल) हम ने उन को अता फ़रमाया है, उस मे से (नेक कामो मे) खर्च करते है। (३५) और कुर्बानी के ऊटो को भी हम ने तुम्हारे लिए 'खुदा शआयर' मुक़र्रर किया है। उन मे तुम्हारे लिए फायदे हैं, तो (कुर्बानी करने के वक़्त) कतार बांध कर उन पर खुदा का नाम लो। जब पहलू के बल गिर पडे तो उन मे से खाओ और (कनाअत) मे बैठ रहने वालो और सवाल करने वालो को भी खिलाओ। इस तरह हम ने उन को तुम्हारे तावेअ कर दिया है, ताकि तुम शुक्र करो। (३६) खुदा तक न उन का गोश्त पहुचता है और न खून, बल्कि उस तक तुम्हारी परहेजगारी पहुचती है। इसी तरह खुदा ने उन को तुम्हारा तावेअ कर दिया है, ताकि इस बात के बदले कि तुम को हिदायत बख्शी है, उसे बुजुर्गी से याद करो और (ऐ पैगम्बर!) नेको को खुशखबरी सुना दो। (३७) खुदा तो मोमिनो से उन के दुश्मनो को हटाता रहता है। बेशक खुदा किसी खियानत करने वाले और नेमत को ठुकराने वाले को दोस्त नही रखता। (३८)★●

जिन मुसलमानो से (खामखाह) लडाई की जाती है, उन को इजाजत है (कि वे भी लडे), क्योकि उन पर जुल्म हो रहा है और खुदा (उन की मदद करेगा, वह) यकीनन उन की मदद पर

★रु. ४/११आ ८ ★रु ५/१२ आ ५ ●सु ३/४

अ्ल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् बिग़ैरि हक्किन् इल्ला अय्यकूलू रब्बुनल्लाहु ط व लौला दफ़्-अुल्लाहिन्ना-स बअ्-ज़्ह-हुम् बिबअ-ज़िल्-लहुद्दिमत् स़वामिअु व बि-यअु व-व स़-ल-वातु व्-व मसाजिदु युज़्करु फ़ीहस्मुल्लाहि कसीरन् ط व ल-यन्सुरन्नल्लाहु मय्यन्सुरुहू ط इन्नल्ला - ह ल-कविय्युन् अज़ीज़ (४०)

अल्लज़ी - न इम्मक्कन्नाहुम् फिल्अर्ज़ि अकामुस्स़ला-त़ व-आ-तवुज्ज़का-त़ व अ-मरू बिलमअ् - रूफि व नहौ अनिल्मुन्करि ط व लिल्लाहि आ़कि-बतुल्-उमूर (४१) व इ य्युकज़्ज़िबू-क फ-क़द् कज़्ज़-बत् क़ब्-लहुम् कौमु नूहिव-व आदु व-व समूद ل (४२) व कौमु इब्राही-म व कौमु लूतिव- ل (४३) व अस़्हाबु मद्-य-न ج व कुज़्ज़ि-ब मूसा फ-अम्लैतु लिल् - काफिरी - न सुम् - म अ-ख़ज़्तुहुम् ج फ कै-फ का-न नकीर (४४) फ-क-अय्यिम्-मिन् कर्-यतिन् अह्-लक्नाहा व हि-य ज़ालि-मतुन् फहि-य ख़ावि-यतुन् अला अ़ुरूशिहा व बिअ्रिम्-मु-अत्त-लतिव-व कस़्रिम् - मशीद (४५) अ-फ-लम् यसीरू फिल्अर्ज़ि फ-तकू-न लहुम् कुलूबु य्यअ्-किलू-न बिहा औ आज़ानु य्यस्-मअू-न बिहा ج फ़-इन्नहा ला तअ्-मल्-अब्स़ारु व लाकिन् तअ्-मल्-क़ुलूबुल्लती फिस्सुदूर (४६) व यस्तअ्-जिलू-न-क बिल्अज़ाबि व लय्युख़्लिफ़ल्लाहु वअ्-दहू ط व इन्-न यौमन् अिन्-द रब्बि-क क-अल्फि स-नतिम्मिम्मा त-अुद्दून (४७) व क-अय्यिम्-मिन् कर्-यतिन् अम्लैतु लहा व हि-य ज़ालि-मतुन् सुम्-म अ-ख़ज़्तुहा ج व इलय्यल्-मस़ीर ★ (४८) कुल् याअय्युहन्नासु इन्नमा अ-न लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन ج (४९) फल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति लहुम् मग्-फ़ि-रतु व्-व रिज्-कुन् करीम (५०)

رَبُّنَا اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ
صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۗ
وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ اَلَّذِيْنَ
اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا
بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ وَاِنْ
يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۝ وَقَوْمُ
اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى
فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ فَكَاَيِّنْ
مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا
وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ
فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي
الصُّدُوْرِ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۗ
وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ
مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ
الْمَصِيْرُ ۝ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ

★रु ६/१२ आ १०

कुदरत रखता है। (३९) ये वह लोग हैं कि अपने घरो मे ना-हक निकाल दिए गए, (उन्हों ने कुछ कुसूर नही किया) हा, यह कहते है कि हमारा परवरदिगार खुदा है और अगर खुदा लोगो को एक-दूसरे से न हटाता रहता तो (राहिबो के) पूजा-घर और (ईसाइयो के) गिरजे और (यहूदियो की) और (मुसलमानो की) मस्जिदे, जिन मे खुदा का बहुत-सा ज़िक्र किया जाता है, गिरायी जा चुकी होती। और जो शख्स खुदा की मदद करता है, खुदा उस की ज़रूर मदद करता है। बेशक खुदा ताकत वाला और गालिब है। (४०) तो ये लोग है कि अगर हम उन को मुल्क मे बसा दे तो नमाज पढे और ज़कात अदा करें और नेक काम करने का हुक्म दे और बुरे कामो मे मना करे और सब कामो का अंजाम खुदा ही के अख्तियार मे है। (४१) और अगर ये लोग तुम को झुठलाते है, तो उन से पहले नूह की कौम और आद और समूद भी (अपने पैगम्बरो को) झुठला चुके है, (४२) और इब्राहीम की कौम और लूत की कौम भी, (४३) और मदयन के रहने वाले भी और मूसा भी तो झुठलाए जा चुके है, लेकिन मैं काफिरो को मोहलत देता रहा, फिर उन को पकड लिया, तो (देख लो कि) मेरा अजाब कैसा (सख्त) था। (४४) और बहुत-सी बस्तिया है कि हम ने उन को तबाह कर डाला था कि वे ना-फरमान थी, सो वे अपनी छतो पर गिर पडी है और (बहुत से) कुए बेकार और (बहुत से)महल वीरान (पडे है)। (४५) क्या उन लोगो ने मुल्क मे सैर नही की, ताकि उनके दिल ऐसे होते कि उन से समझ सकते और कान (ऐसे) होते कि उन से सुन सकते। बात यह है कि आख अधी नही होती, बल्कि दिल, जो सीनो मे है, (वे) अंधे होते है। (४६) और (ये लोग) तुम से अजाब के लिए जल्दी कर रहे है और खुदा अपना वायदा हर गिज़ खिलाफ नही करेगा और बेशक तुम्हारे परवरदिगार के नजदीक एक दिन तुम्हारे हिसाब के मुताबिक हज़ार वर्ष के बराबर है। (४७) और बहुत-सी बस्तियां है कि मैं उन को मोहलत देता रहा और वे ना-फरमान थी। फिर मैं ने उन को पकड लिया और मेरी ही तरफ लौट कर आना है। (४८)★

(ऐ पैगम्बर !) कह दो कि लोगो ! मैं तुम को खुल्लम-खुल्ला नसीहत करने वाला हूं। (४९) तो जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, उन के लिए बख्शिश और आदर की रोज़ी है। (५०)

★रु ६/१३ आ १०

वल्लज़ी-न सऔ फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न उलाइ-क अस्हाबुल् - जहीम (५१) व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रसूलिंव्-व ला नबिय्यिन् इल्ला इज़ा त - मन्ना अल्क़श्शैतानु फ़ी उम्निय्यतिही ट फ-यन्सखुल्लाहु मा युल्क़िश्शैतानु सुम् - म युह़्किमुल्लाहु आयातिही ♭ वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (५२) लि-यज्-अ-ल मा युल्क़िश्शैतानु फ़ित्-न-तल् - लिल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म - रज़ुव्वल् - क़ासियति क़ुलूबुहुम् ♭ व इन्नज़्ज़ालिमी-न लफ़ी शिक़ाक़िम् - बअ़ीद (५३) व लियअ्-ल-मल्लज़ी-न ऊतुल्अिल्-म अन्नहुल्-ह़क़्क़ु मिर्रब्बि-क फ-युअ्मिनू बिही फ़-तुख़्बि-त लहू क़ुलूबुहुम् ♭ व इन्नल्ला-ह लहादिल्लज़ी - न आमनू इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (५४) व ला यज़ालुल्लज़ी-न क - फ़रू फ़ी मिर्यतिम्मिन्हु ह़त्ता तअ्तियहुमुस्सा-अतु बग्-त-तन् औ यअ्ति-यहुम् अ़ज़ाबु यौमिन् अक़ीम (५५) अल्मुल्कु यौमइज़िल् - लिल्लाहि ♭ यह़्कुमु बैनहुम् ♭ फ़ल्लज़ी - न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी जन्नातिन्नअ़ीम (५६) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना फ-उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन ★ (५७) वल्लज़ी - न हाजरू फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म क़ुतिलू औ मातू · ल-यर्ज़ुक़न्नहुमुल्लाहु रिज़्-क़न् ह-स-नन् ♭ व इन्नल्ला-ह लहु-व ख़ैरुर् - राज़िक़ीन (५८) लयुद्ख़िलन्नहुम् मुद - ख़-लय्यर्ज़ौनहू ♭ व इन्नल्ला-ह ल-अ़लीमुन् ह़लीम (५९) ज़ालि-क ट व मन् आक़-ब बिमिस्लि मा ऊक़ि-ब बिही सुम्-म बुग़ि-य अ़लैहि ल - यन्सुरन्नहुल्लाहु ♭ इन्नल्ला-ह ल-अ़फ़ुव्वुन् ग़फ़ूर (६०) ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व अन्नल्ला-ह समीअुम् - बसीर (६१)

الحج ٢٢ ٣٧٠ اقترب للناس ١٧

كريم ۝ والذين سعوا في ءايتنا معجزين اولئك اصحب
الجحيم ۝ وما ارسلنا من قبلك من رسول ولا نبي الا
اذا تمنى القى الشيطن في امنيته فينسخ الله ما يلقي
الشيطن ثم يحكم الله ءايته والله عليم حكيم ۝ ليجعل
ما يلقي الشيطن فتنة للذين في قلوبهم مرض والقاسية
قلوبهم وان الظلمين لفي شقاق بعيد ۝ وليعلم الذين
اوتوا العلم انه الحق من ربك فيؤمنوا به فتخبت له قلوبهم
وان الله لهاد الذين ءامنوا الى صرط مستقيم ۝ و
لا يزال الذين كفروا في مرية منه حتى تاتيهم الساعة
بغتة او ياتيهم عذاب يوم عقيم ۝ الملك يومئذ لله يحكم
بينهم فالذين ءامنوا وعملوا الصلحت في جنت النعيم ۝
والذين كفروا وكذبوا بايتنا فاولئك لهم عذاب مهين ۝
والذين هاجروا في سبيل الله ثم قتلوا او ماتوا ليرزقنهم
الله رزقا حسنا وان الله لهو خير الرزقين ۝ ليدخلنهم
مدخلا يرضونه وان الله لعليم حليم ۝ ذلك و
من عاقب بمثل ما عوقب به ثم بغي عليه لينصرنه الله
ان الله لعفو غفور ۝ ذلك بان الله يولج اليل في النهار

★रु ७/१४ आ ६

और जिन लोगो ने हमारी आयतो मे (अपने झूठे गुमान मे) हमे आजिज करने के लिए कोशिश की, वे दोजख वाले है। (५१) और हम ने तुम से पहले कोई रसूल और नबी नही भेजा, मगर (उस का यह हाल था कि) जब वह कोई आरजू करता था तो शैतान उस की आरजू मे (वस्वसा) डाल देता था, तो जो (वस्वसा) शैतान डालता है, खुदा उस को दूर कर देता है, फिर खुदा अपनी आयतो को मजबूत कर देता है और खुदा इल्म (और) हिक्मत वाला है। (५२) गरज़ (इस से) यह है कि जो (वस्वसा) शैतान डालता है, उस को उन लोगो के लिए, जिन के दिलो मे बीमारी है और जिन के दिल सख्त है, आजमाइश का जरिया ठहराए। बेशक जालिम परले दर्जे की मुखालफत मे है। (५३) और यह भी गरज है कि जिन लोगो को इल्म अता हुआ है, वे जान लें कि वह (यानी वह्य) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक है, तो वह इस पर ईमान लाए और उन के दिल खुदा के आगे आजिजी करे और जो लोग ईमान लाए है, खुदा उन को सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करता है। (५४) और काफिर लोग हमेशा इससे शक मे रहेगे, यहा तक कि कियामत उन पर अचानक आ जाए या एक ना-मुबारक दिन का अजाब उन पर अचानक आ वाकेअ हो। (५५) उस दिन बादशाही खुदा ही की होगी (और) वह उन मे फैसला कर देगा, तो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, ये नेमत के बागो मे होगे। (५६) और जो काफिर हुए और हमारी आयतो को झुठलाते रहे, उन के लिए जलील करने वाला अजाब होगा। (५७) ★

और जिन लोगो ने खुदा की राह मे हिजरत की, फिर मारे गये या मर गये, उन को खुदा अच्छी रोजी देगा और बेशक खुदा सब से बेहतर रोजी देने वाला है। (५८) वह उन को ऐसी जगह दाखिल करेगा, जिसे वे पसद करेगे और खुदा तो जानने वाला (और) बुर्दबार है। (५९) यह (बात खुदा के यहा ठहर चुकी है) और जो शख्स (किसी को) उतनी ही तक्लीफ दे, जितनी तक्लीफ उस को दी गयी, फिर उस शख्स पर ज्यादती की जाए, तो खुदा उस की मदद करेगा। बेशक खुदा माफ करने वाला (और) बख्शने वाला है। (६०) यह इस लिए कि खुदा रात को दिन मे दाखिल करता है और दिन को रात मे दाखिल करता है और खुदा तो सुनने वाला, देखने

★रु ७/१४ आ ६

जालि-क बि-अन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्-न मा यद्‌अू-न मिन्दूनिही हुवल्बातिलु व अन्नल्ला-ह हुवल्अलिय्युल्-कबीर (६२) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज-ल मिनस्समा-इ मा-अन् ز फ-तुस्बिहुल्अर्-ज़ु मुख़्ज़र्र-तुन् ط इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर (६३) लहू मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि ط व इन्नल्ला-ह लहुवल्-ग़निय्युल्-हमीद ★(६४) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फिल्अर्जि वल्फ़ुल्-क तज्री फिल्बह्रि बिअम्रिही ط व युम्सिकुस्समा-अ अन् त-क़-अ अ-लल्अर्ज़ि इल्ला बिइज़्निही ط इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल-रऊफ़ुर्रहीम (६५) व हुवल्लज़ी अह्-याकुम् ز सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह़्यीकुम् ط इन्नल्-इन्सा-न ल-कफ़ूर (६६) लिकुल्लि उम्मतिन् ज-अल्ना मन्-स-कन् हुम् नासिकूहु फला युनाज़िअुन्न-क फिल्अम्रि वद्‌अु इला रब्बि-क ط इन्न-क ल-अला हुदम्-मुस्तक़ीम (६७) व इन् जादलू-क फ़क़ुलिल्लाहु अअ्-लमु बिमा तअ्-मलून (६८) अल्लाहु यह़्कुमु बैनकुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्-तलिफ़ून (६९) अ-लम् तअ्-लम् अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा फ़िस्समाइ वल्अर्ज़ि ط इन्-न ज़ालि-क फ़ी किताबिन् ط इन्-न ज़ालि-क अ-लल्लाहि यसीर (७०) व यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानव्-व मा लै-स लहुम् बिही अिल्मुन् ط व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर (७१)

وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۞ ذٰلِكَ
بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ
وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۞ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً ۫ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ
خَبِيْرٌ ۞ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِنَّ
اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۞ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا
فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۭ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ
اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۞ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ۡ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ اِنَّ
الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ۞ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ
فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ۭ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى
مُّسْتَقِيْمٍ ۞ وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۞
اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۞
اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ
فِيْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۞ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ
عِلْمٌ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۞ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

★रु० ८/१५ आ ७

वाला है। (६१) यह इस लिए कि खुदा ही वरहक है और जिस चीज को (काफिर) खुदा के सिवा पुकारते है, वह झूठ है और इस लिए कि खुदा बडी शान वाला और बडा है। (६२) क्या तुम नही देखते कि खुदा आसमान से मेह बरसाता है, तो जमीन हरी-भरी हो जाती है। बेशक खुदा मेहरबान और खबरदार है। (६३) जो कुछ आसमान मे है और जो कुछ ज़मीन मे है, उसी का है और बेशक खुदा बे-नियाज (और) तारीफ के काबिल है। (६४)★

क्या तुम नही देखते कि जितनी चीज़े जमीन मे है (सब) खुदा ने तुम्हारे ताबेअ कर रखी है और कश्तिया (भी) जो उसी के हुक्म से दरिया मे चलती है और वह आसमान को थामे रहता है कि जमीन पर (न) गिर पडे, मगर उस के हुक्म से। बेशक खुदा लोगो पर बहुत शफकत करने वाला मेहरबान है। (६५) और वही तो है जिस ने तुम को जिंदगी दी, फिर तुम को मारता है, फिर तुम्हे जिंदा भी करेगा और इन्सान तो (बडा) ना-शुक्रा है। (६६) हम ने हर एक उम्मत के लिए एक शरीअत मुकर्रर कर दी, जिस पर वे चलते है तो ये लोग तुम से इस मामले मे झगडा न करे और तुम (लोगो को) अपने परवरदिगार की तरफ बुलाते रहो। बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो। (६७) और अगर ये तुम से झगडा करें, तो कह दो कि जो अमल तुम करते हो, खुदा उन को खूब जानता है। (६८) जिन बातो मे तुम इख्तिलाफ करते हो, खुदा तुम मे कियामत के दिन उन का फैसला कर देगा। (६९) क्या तुम नही जानते कि जो कुछ आसमान और जमीन मे है, खुदा उस को जानता है। यह (सब कुछ) किताब मे (लिखा हुआ) है। बेशक यह सब खुदा को आसान है। (७०) और (ये लोग) खुदा के सिवा ऐसी चीज़ो की इबादत करते है, जिन की उस ने कोई सनद नाजिल नही फरमायी और न उन के पास इस की कोई दलील है और जालिमो का कोई भी मददगार नही

★रु. ८/१५ आ ७

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् तअ-रिफु फी वुजूहिल्लज़ी-न क-फरुल्मुन्क-र ط यकादू-न यस्तू-न बिल्लज़ी-न यत्लू-न अलैहिम् आयातिना ط कुल् अ-फ-उनब्बिउकुम् बिशर्रिम्-मिन् ज़ालिकुम् ط अन्नारु ط व-अ-द-हल्लाहुल्-लज़ी - न क-फरू ط व बिअ्सल् - मसीर ★(७२) या-अय्युहन्नासु जुरि-ब म - सलुन् फ़स्तमिअ़ू लहू ط इन्नल्लज़ी - न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि लय्यख्लुकू ज़ुबाबव - व लविज-त-मअू लहू ط व इ य्यस्लुब् - हुमुज़्-ज़ुबाबु शैअल्ला यस्तन्किज़ूहु मिन्हु ط ज़अुफत्तालिबु वलमत्लूब (७३) मा क-द-रुल्ला-ह हक़-क क़द्रिही ط इन्नल्ला-ह ल-कविय्युन् अ़ज़ीज (७४) अल्लाहु यस्तफी मिनलमलाइकति रुसुलव - व मिनन्नासि ط इन्नल्ला-ह समीअुम् - बसीर ج (७५) यअ-लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा खल्फहुम् ط व इलल्लाहि तुर्जअुल् - उमूर (७६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुर्कअू वस्जुदू वअ्-बुदू रब्बकुम् वफ्-अ़लुल्-खै-र ल - अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ج □(७७) व जाहिदू फिल्लाहि हक़-क जिहादिही ط हुवज्तबाकुम् व मा ज-अ़-ल अलैकुम् फिद्दीनि मिन् ह-रजिन् ط मिल-ल - त़ अबीकुम् इब्राही - म ط हु - व सम्माकुमुल् - मुस्लिमी-न ۵ मिन् क़ब्लु व फी हाज़ा लि-यकूनर्रसूलु शहीदन् अ़लैकुम् व तकूनू शु-ह-दा-अ अ़-लन्नासि ج फ-अकीमुस्सला-त व आतुज्जका-त वअ-तसिमू बिल्लाहि ط हु-व मौलाकुम् ج फ-निअ-मल्-मौला व निअ-मन्नसीर ★(७८)

اقترب للناس ١٧ — ٧٤٧ — الحج ٢٢

اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعۡرِفُ فِىۡ وُجُوۡهِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوا الۡمُنۡكَرَ‌ؕ يَكَادُوۡنَ
يَسۡطُوۡنَ بِالَّذِيۡنَ يَتۡلُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا‌ؕ قُلۡ اَفَاُنَبِّئُكُمۡ بِشَرٍّ
مِّنۡ ذٰ لِكُمُ‌ؕ اَلنَّارُ‌ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا‌ؕ وَبِئۡسَ
الۡمَصِيۡرُ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ‌ؕ اِنَّ
الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ لَنۡ يَّخۡلُقُوۡا ذُبَابًا وَّلَوِ اجۡتَمَعُوۡا
لَهٗ‌ؕ وَاِنۡ يَّسۡلُبۡهُمُ الذُّبَابُ شَيۡـئًا لَّا يَسۡتَنۡقِذُوۡهُ مِنۡهُ‌ؕ ضَعُفَ
الطَّالِبُ وَالۡمَطۡلُوۡبُ۝ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدۡرِهٖ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ
لَقَوِىٌّ عَزِيۡزٌ۝ اَللّٰهُ يَصۡطَفِىۡ مِنَ الۡمَلٰۤـئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ‌ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيۡعٌۢ بَصِيۡرٌ‌۝ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ‌ؕ
وَاِلَى اللّٰهِ تُرۡجَعُ الۡاُمُوۡرُ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا ارۡكَعُوۡا
وَاسۡجُدُوۡا وَاعۡبُدُوۡا رَبَّكُمۡ وَافۡعَلُوا الۡخَيۡرَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ۝
وَجَاهِدُوۡا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ‌ؕ هُوَ اجۡتَبٰٮكُمۡ وَمَا جَعَلَ
عَلَيۡكُمۡ فِى الدِّيۡنِ مِنۡ حَرَجٍ‌ؕ مِلَّةَ اَبِيۡكُمۡ اِبۡرٰهِيۡمَ‌ؕ هُوَ
سَمّٰٮكُمُ الۡمُسۡلِمِيۡنَ ۙ مِنۡ قَبۡلُ وَفِىۡ هٰذَا لِيَكُوۡنَ الرَّسُوۡلُ
شَهِيۡدًا عَلَيۡكُمۡ وَتَكُوۡنُوۡا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ‌ ۖۚ فَاَقِيۡمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعۡتَصِمُوۡا بِاللّٰهِ‌ؕ هُوَ مَوۡلٰٮكُمۡ‌ۚ
فَنِعۡمَ الۡمَوۡلٰى وَنِعۡمَ النَّصِيۡرُ۝

★रु ९/१६ आ ८ □सज्द. शाफ़ई ★रु १०/१७ आ ६

होगा। (७१) और जब उन को हमारी आयतें पढ कर सुनायी जाती हैं, तो (उन की शक्ल बिगड़ जाती है और) तुम उन के चेहरो मे साफ तौर पर ना-खुशी (की निशानिया) देखते हो। क़रीब होते हैं कि जो लोग उन को हमारी आयते पढ कर सुनाते है, उन पर हमला कर दे। कह दो कि तुम को इस से भी बुरी चीज़ बताऊं! वह (दोज़ख की) आग है, जिस का खुदा ने काफ़िरो से वायदा किया है और वह बुरा ठिकाना है। (७२)★

लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, उसे गौर से सुनो कि जिन लोगो को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नही बना सकते, अगरचे उस के लिए सब जमा हो जाए और अगर उन से मक्खी कोई चीज़ छीन ले जाए तो उसे उस से छुडा नही सकते। तालिब और मत्लूब (यानी आबिद और मावूद दोनो) गये-गुज़रे है। (७३) इन लोगो ने खुदा की कद्र जैसी करनी चाहिए थी, नही की, कुछ शक नही कि खुदा जबरदस्त (और) गालिब है। (७४) खुदा फ़रिश्तो मे से पैगाम पहुचाने वाले चुन लेता है और इंसानो में से भी, बेशक खुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है। (७५) जो उन के आगे है और जो उन के पीछे है, वह इसे जानता है और सब लोगो का रुजूअ खुदा ही की तरफ है। (७६) मोमिनो! रुजूअ करते और सज्दे करते और अपने परवरदिगार की इबादत करते रहो और नेक काम करो ताकि कामियाबी पाओ। (७७)□और खुदा (की राह) मे जिहाद करो, जैसा जिहाद करने का हक है। उस ने तुम को चुन लिया है और तुम पर दीन (की किसी बात) मे तंगी नही की (और तुम्हारे लिए) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (पसद किया) उसी ने पहले (यानी पहली किताबो में) तुम्हारा नाम मुसलमान रखा था और इस किताब मे भी (वही नाम रखा है, तो जिहाद करो) ताकि पैगम्बर तुम्हारे बारे में गवाह हो और तुम लोगो के मुकाबले में गवाह हो और नमाज़ पढो और ज़कात दो और खुदा (के दीन की रस्सी) को पकडे रहो। वही तुम्हारा दोस्त है और खूब मददगार है। (७८)★

अठारहवां पारः क़द अफ़्-ल-ह़ल् मुअ्मिनू-न

२३ सूरतुल्-मुअ्मिनू-न ७४

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ४५३८ अक्षर, १०७० शब्द, ११८ आयते और ६ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

क़द् अफ़्-ल-ह़ल्-मुअ्मिनून ⸗ (१) अ्ल्लज़ी-न हुम् फ़ी स़लातिहिम् ख़ाशिअ़ून ⸗ (२) वल्लज़ी-न हुम् अ़निल्लग्वि मुअ्-रिज़ून (३) ⸗ वल्लज़ी-न हुम् लिज़्ज़काति फ़ाअिलून ⸗ (४) वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् ह़ाफ़िज़ून ⸗ (५) इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन ⸗ (६) फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्अ़ादून ⸗ (७) वल्लज़ी-न हुम् लि-अमानाति-हिम् व अ़ह्दिहिम् राअ़ून ⸗ (८) वल्लज़ी-न हुम् अ़ला स़-ल-वातिहिम् युहाफ़िज़ून ▨ (९) उलाइ-क हुमुल् - वारिसून ⸗ (१०) अ्ल्लज़ी-न यरिसूनल् - फ़िर्दौ - स ⸗ हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (११) व ल-क़द् ख़-लक़्नल्-इन्सा-न मिन् सुलालतिम् - मिन् त़ीन ⸗ (१२) सुम्-म ज-अ़ल्नाहु नुत़्-फ़-तन् फ़ी क़रारिम्-मकीन ⸗ (१३) सुम् - म ख़-लक़्-न न्-नुत़-फ़-त़ अ़-ल-क़-तन् फ़-ख़-लक़्नल्-अ़-ल-क़-त़ मुज़्-ग़-तन् फ़-ख़-लक़्नल्-मुज़-ग़-त अ़िज़ामन् फ़-कसौनल्-अ़िज़ा-म लह़् - मन् ⸗ सुम् - म

سورة المؤمنون مكية وهي مائة وثمان عشرة آية وست ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
قد أفلح المؤمنون ۙ الذين هم في صلاتهم خاشعون ۙ و
الذين هم عن اللغو معرضون ۙ والذين هم للزكوة فاعلون ۙ
والذين هم لفروجهم حافظون ۙ إلا على أزواجهم أو ما ملكت
أيمانهم فإنهم غير ملومين ۚ فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم
العادون ۚ والذين هم لأماناتهم وعهدهم راعون ۙ والذين هم
على صلواتهم يحافظون ۘ أولئك هم الوارثون ۙ الذين يرثون
الفردوس هم فيها خالدون ۝ ولقد خلقنا الإنسان من سلالة
من طين ۚ ثم جعلناه نطفة في قرار مكين ۚ ثم خلقنا النطفة
علقة فخلقنا العلقة مضغة فخلقنا المضغة عظاما فكسونا
العظام لحما ثم أنشأناه خلقا آخر ۚ فتبارك الله أحسن الخالقين
ثم إنكم بعد ذلك لميتون ۝ ثم إنكم يوم القيمة تبعثون ۝ و
لقد خلقنا فوقكم سبع طرائق ۖ وما كنا عن الخلق غافلين ۝
وأنزلنا من السماء ماء بقدر فأسكناه في الأرض ۖ وإنا على
ذهاب به لقادرون ۝ فأنشأنا لكم به جنات من نخيل و
أعناب لكم فيها فواكه كثيرة ومنها تأكلون ۝ وشجرة تخرج

अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न् आख़-र ⸗ फ़-त-बा-र-कल्लाहु अह़्सनुल्-ख़ालिक़ीन ⸗ (१४) सुम्-म इन्नकुम् बअ्-द ज़ालि-क ल-मय्यितून ⸗ (१५) सुम्-म इन्नकुम् यौमल्-क़ियामति तुब्-असून (१६) व ल-क़द् ख़-लक़्ना फ़ौक़कुम् सब्-अ तराइ-क़ ⸗ व मा कुन्ना अ़निल्ख़ल्कि ग़ाफ़िलीन (१७) व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ मा-अम् - बि-क़ - दरिन् फ़-अस्कन्नाहु फ़िल्अर्ज़ि ⸗ व इन्ना अ़ला ज़हाबिम्-बिही लक़ादिरून ⸗ (१८) फ़-अन्शअ्ना लकुम् बिही जन्नातिम्मिन् नख़ीलिंव्-व अअ़्-नाबिन् ▨ लकुम् फ़ीहा फ़वाकिहु कसीरतुंव-व मिन्हा तअ्-कुलून ⸗ (१९)

▨ व. लाज़िम ▨ व लाज़िम

२३ सूरः मुअ्मिनून ७४

सूर मुअ्मिनून मक्की है और इस मे एक सौ अठारह् आयतें और छ. रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वेशक ईमान वाले कामियाब हो गये, (१) जो नमाज़ में इज्ज़ व नियाज़ करते है, (२) और जो बेहूदा बातो से मुंह मोडे रहते है, (३) और जो ज़कात अदा करते है, (४) और जो अपनी शर्मगाहो की हिफाजत करते है, (५) मगर अपनी बीवियो से या (बादियो से), जो उन की मिल्कियत होती है कि (उन से सोहबत करने से) उन्हे मलामत नही, (६) और जो इन के सिवा औरो के तालिब हो, वे (खुदा की मुकर्रर की हुई) हद से निकल जाने वाले है, (७) और जो अमानतो और इकरारो का ध्यान करते है, (८) और जो नमाजो की पावंदी करते है, (९) यही लोग मीराम हासिल करने वाले है। (१०) (यानी) जो बहिश्त की मीरास हासिल करेंगे (और) उस मे हमेशा रहेंगे। (११) और हम ने इन्सान को मिट्टी के खुलासे[1] से पैदा किया है। (१२) फिर उस को एक मजबूत (और महफूज़) जगह मे नुत्फा बना कर रखा। (१३) फिर नुत्फे का लोथडा बनाया, फिर लोथड़े की बोटी बनायी, फिर बोटी की हड्डिया बनायी, फिर हड्डियो पर गोश्त (-पोस्त) चढाया, फिर उस को नयी सूरत मे बना दिया, तो खुदा जो सब से बेहतर बनाने वाला, बड़ा बरकत वाला है। (१४) फिर इस के बाद तुम मर जाते हो। (१५) फिर कियामत के दिन उठा खडे किये जाओगे। (१६) और हम ने तुम्हारे ऊपर (की तरफ) सात आसमान पैदा किए और हम ख़ल्क़त से गाफिल नही है। (१७) और हम ही ने आसमान से एक अन्दाजे के साथ पानी उतारा, फिर उस को जमीन मे ठहरा दिया और हम उस के नाबूद कर देने पर भी कादिर है। (१८) फिर हम ने उस से तुम्हारे लिए खजूरो और अगूरों के बाग बनाए उन मे तुम्हारे लिए बहुत-से मेवे पैदा होते है

---

१ 'खुलासा' 'सुलाला' का तर्जुमा है। सुलाला उस को कहते हैं, जो किसी चीज़ के साफ और खालिस करके उस मे से निकालते है और वही खुलासा है और उसी को पल कहते हैं।

व. लाज़िम व लाज़िम

व श-ज-र-तुन् तख़्रुजु मिन्-तूरि सैना-अ तम्बुतु बिद्दुह्नि व सिब्गिलिल्-आकिलीन (२०) व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आमि ल-अिब्-र-तुन् ط नुस्क़ीकुम् मिम्मा फी बुतूनिहा व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु क़सी-रतु व्-व मिन्हा तअ्कुलून لا (२१) व अलैहा व अ्-लल्फुलिक तुह्मलून ★ (२२) व ल-कद् अर्सल्ना नूहन् इला कौमिही फ-का-ल या कौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् गैरुहू ط अ-फ़ला तत्तकून (२३) फ़-काललू-म-ल-उल्लज़ी-न क-फरू मिन् कौमिही मा हाज़ा इल्ला ब-श-रुम्-मिस्लुकुम् لا युरीदु अय्य-त-फ़ज्ज-ल अलैकुम् ط व लौ शा-अल्लाहु ल-अन्ज-ल मलाइक-तम् ج मा समिअ्-ना बिहाज़ा फी आबाइनल्-अव्वलीन ج (२४) इन् हु-व इल्ला रजुलुम्-बिही जिन्नतुन् फ-त-रब्बसू बिही हत्ता हीन (२५) का-ल रब्बिन्सुर-नी बिमा कज़्ज़बून (२६) फ-औहैना इलैहि अनिस्-नअिल्-फुल्-क बि-अअ्-युनिना व वह्यिना फ-इज़ा जा-अ अम्रुना व फारत्तन्नूरु لا फस्लुक फ़ीहा मिन् कुल्लिन् जौजैनिस्नैनि व अह-ल-क इल्ला मन् स-ब-क अलैहिल्-कौलु मिन्हुम् ج व ला तुख़ातिब्नी फिल्लज़ी-न ज़-लमू ج इन्नहुम् मुग़्रकून (२७) फ-इज़स्तवै-त अन्-त व मम्-म-अ-क अ-लल्फुलिक फकुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी नज्जाना मिनल्-कौमिज़्ज़ालिमीन (२८) व कुर्रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्-ज-लम्-मुबारकंव्-व अन्-त ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन (२९) इन्-न फी ज़ालि-क लआयातिंव्-व इन् कुन्ना लमुब्तलीन (३०) सुम्-म अन्शअ्ना मिम्-बअ्-दिहिम् क़र्-नन् आख़रीन ج (३१) फ-अर्सल्ना फीहिम् रसूलम्-मिन्हुम् अनिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् गैरुहू ط अ-फला तत्तकून ★(३२) व कालल्-मल-उ मिन् कौमिहिल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिलिकाइल्-आख़िरति व अत-रफ़्नाहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या لا मा हाज़ा इल्ला ब-श-रुम्-मिस्लुकुम् لا यअ्कुलु मिम्मा तअ्कुलू-न मिन्हु व यश्रबु मिम्मा तश्रबून (३३)

مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ۝ وَاِنَّ لَكُمْ
فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ
وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا
نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا
تَتَّقُوْنَ ۝ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۖۚ
مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِىْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ
فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝ فَاَوْحَيْنَآ
اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ
فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ
الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِىْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ۝
فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ
نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِىْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ
خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْشَاْنَا
مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا

★रु १/१ आ २२ ★रु. २/२ आ १०

और उनमे से तुम खाते हो। (१९)और वह पेड भी(हम ही ने पैदा किया)जो तूरे सैना मे पैदा होता है (यानी जैतून का पेड कि) खाने के लिए रोगन और सालन लिए हुए उगता है। (२०) और तुम्हारे लिए चारपायो मे भी इब्रत (और निशानी) है कि जो उन के पेटो मे है, उस से हम तुम्हे (दूध) पिलाते है और तुम्हारे लिए उन मे (और भी) बहुत से फायदे है और कुछ को तुम खाते भी हो। (२१) और उन पर और कश्तियो पर तुम सवार होते हो। (२२)★

और हम ने नूह को उन की कौम की तरफ भेजा, तो उन्हो ने उन से कहा कि ऐ कौम! खुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नही, क्या तुम डरते नही ? (२३) तो उनकी कौम के सरदार जो काफिर थे, कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है, तुम पर बडाई हासिल करना चाहता है और अगर खुदा चाहता तो फरिश्ते उतार देता। हम ने अपने अगले बाप-दादा मे तो यह बात कभी सुनी नही। (२४) इस आदमी को जो दीवानगी (का मरज)है, तो इसके बारे मे कुछ मुद्दत इन्तिज़ार करो। (२५) (नूह ने) कहा कि परवरदिगार। उन्हो ने मुझे झुठलाया है, तो मेरी मदद कर। (२६) पस हम ने उन की तरफ़ वह्य भेजी है कि हमारे सामने और हमारे हुक्म मे एक कश्ती बनाओ। फिर जब हमारा हुक्म आ पहुचे और तनूर (पानी से भर कर) जोश मारने लगे तो सब (किस्म के जानवरो) मे से जोडा-जोडा (यानी नर और मादा) दो-दो कश्ती मे बिठा लो और घर वालो को भी, सिवा उन के, जिन के बारे मे उन मे से (हलाक होने का) हुक्म पहले (लागू) हो चुका है और जालिमो के बारे मे हमसे कुछ न कहना। वे जरूर डुबो दिए जाएगे।(२७) और जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती मे बैठ जाओ तो (खुदा का शुक्र करना और) कहना कि तारीफ खुदा ही के लिए है, जिस ने हम को जालिम लोगो से निजात बख्शी। (२८) और (यह भी) दुआ करना कि ऐ परवरदिगार! हम को मुबारक जगह उतारियो और तू सब से बेहतर उतारने वाला है। (२९) बेशक इस (किस्से) मे निशानिया है और हमे तो आजमाइश करनी थी, (३०) फिर इन के बाद हम ने एक और जमाअत पैदा की। (३१) और उन्ही मे से एक पैगम्बर भेजा (जिस ने उन से कहा) कि खुदा की इबादत करो (कि) उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नही। तो क्या तुम डरते नही ? (३२)★

तो उन की कौम के सरदार जो काफिर थे और आखिरत के आने को झूठ समझते थे और दुनिया की ज़िदगी मे हम ने उन को आसूदगी दे रखी थी, कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है, जिस किस्म का खाना तुम खाते हो, उसी तरह का यह भी खाता है और जो (पानी) तुम पीते

★रु १/१ आ २२ ★रु. २/२ आ १०

व ल-इन् अ-तअ्-तुम् ब-श-रम्-मिस-लकुम् इन्नकुम् इज़ल्लखासिरून (३४) अ-यअिदुकुम् अन्नकुम् इज़ा मित्तुम् व कुन्तुम् तुराबव्-व अिज़ामन् अन्नकुम् मुख्रजून (३५) हैहा-त हैहा-त लिमा तूअदून (३६) इन् हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा नह्नु बिमब्अूसीन (३७) इन् हु-व इल्ला रजुलु-नि-फ्तरा अ-लल्लाहि कज़िबंव-व मा नह्नु लहू बिमुअ्मिनीन (३८) का-ल रब्बिन्सुर्नी बिमा कज़्ज़बून (३९) का-ल अम्मा कलीलिल्-लयुस्बिहुन्-न नादिमीन (४०) फ-अ-ख़-ज़त्-हुमुस्सैहतु बिल्हक्कि फ ज-अल्नाहुम् गुसा-अन् फबुअ्-दल्लिल्-कौमिज़्ज़ालिमीन (४१) सुम-म अन्शअ्ना मिम्-बअ्-दिहिम् कुरूनन् आख़रीन (४२) मा तस्बिकु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्खिरून (४३) सुम्-म अर्सल्ना रुसुलना तत्रा कुल्लमा जा-अ उम्म-तर्रसूलुहा कज़्ज़बूहु फ़-अत्बअ्-ना बअ-ज़हुम् बअ्-जंव्-व ज-अल्नाहुम् अहादी-स फ़-बुअ्-दल्लिकौमिल्ला युअ्मिनून (४४) सुम्-म अर्सल्ना मूसा व अख़ाहु हारू-न बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन (४५) इला फ़िर्औ-न व म-ल-इही फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमन् आलीन (४६) फ़-कालू अनुअ्मिनु लि-ब-शरैनि मिस्लिना व कौमुहुमा लना आबिदून (४७) फ-कज़्ज़बू-हुमा फ़कानू मिनल्-मुह्लकीन (४८) व ल-क़द् आतैना मूसल्किता-ब ल-अ़ल्लहुम् यह्-तदून (४९) व ज-अ़ल्-नब-न मर्य-म व उम्म्हू आ-य-तव्-व आवैनाहुमा इला रब्-वतिन् जाति करारिव्-व मअीन ★ (५०) या अय्युहर्रुसुलु कुलू मिनत्तय्यिबाति वअ्-मलू सालिहन् इन्नी बिमा तअ्-मलू-न अलीम (५१) व इन्-न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव्वाहि-द-तव्-व अ-न रब्बुकुम् फत्तकू-न (५२)

هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ۝
وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا
مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ۝ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا
تُوْعَدُوْنَ ۝ اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ
بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ
نٰدِمِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ
اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا كُلَّمَا جَآءَ
اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ
فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ
بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا عَالِيْنَ ۝ فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ۝
فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ
اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ۝ يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَ
اعْمَلُوْا صَالِحًا اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝ وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً

★रु ३/३ आ १८

हो, उसी किस्म का यह भी पीता है। (३३) अगर तुमने अपने ही जैसे आदमी का कहा मान लिया, तो घाटे में पड गये। (३४) क्या यह तुम से यह कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी हो जाओगे और हड्डी (के सिवा कुछ न रहेगा) तो तुम (ज़मीन से) निकाले जाओगे ? (३५) जिस बात का तुम से वायदा किया जाता है (बहुत) दूर और (बहुत) दूर है। (३६) जिंदगी तो यही हमारी दुनिया की जिंदगी है कि (इस मे) हम मरते और जीते है और हम फिर नही उठाए जाएंगे। (३७) यह तो एक ऐसा आदमी है, जिस ने खुदा पर झूठ गढा है और हम इस को मानने वाले नही। (३८) (पैंगम्बर ने) कहा कि ऐ परवरदिगार ! उन्हों ने मुझे झूठा समझा है, तू मेरी मदद कर। (३९) फरमाया कि ये थोडे ही अर्से मे शर्मिंदा हो कर रह जाएगे। (४०) तो उन को बरहक (वायदे के मुताबिक) ज़ोर की आवाज़ ने आ पकड़ा, तो हम ने उन को कूडा कर डाला, पस ज़ालिम लोगों पर लानत है। (४१) फिर उन के बाद हम ने और जमाअते पैदा की। (४२) कोई जमाअत अपने वक्त से न आगे जा सकती है, न पीछे रह सकती है। (४३) फिर हम एक के बाद एक अपने पैगम्बर भेजते रहे। जब किसी उम्मत के पास उस का पैगम्बर आता था, वे उसे झुठला देते थे, तो हम भी कुछ को कुछ के पीछे (हलाक करते और उन पर अज़ाब) लाते रहे और उन के अफसाने बनाते रहे। पस जो लोग ईमान नही लाते, उन पर लानत। (४४) फिर हम ने मूसा और उन के भाई हारून को अपनी निशानियां और ज़ाहिरी दलील दे कर भेजा। (४५) (यानी) फ़िर्औन और उस की जमाअत की तरफ, तो उन्हो ने घमड किया और वे सरकश लोग थे। (४६) कहने लगे कि क्या हम उन अपने दो आदमियो पर ईमान ले आए और उन की कौम के लोग हमारे खिदमतगार है। (४७) तो उन लोगो ने उन को झुठलाया, सो (आखिर) हलाक कर दिए गए। (४८) और हम ने मूसा को किताब दी थी, ताकि वे लोग हिदायत पाएं। (४९) और हम ने मरयम के बेटे (ईसा) और उन की मां को (अपनी) निशानी बनाया था और उन को एक ऊची जगह पर, जो रहने के लायक थी और जहा (निथरा हुआ) पानी जारी था पनाह दी थी। (५०)★

ऐ पैंगम्बरो ! पाकीजा चीजे खाओ और नेक अमल करो। जो अमल तुम करते हो, मैं उन को जानता हूं। (५१) और यह तुम्हारी जमाअत (हकीकत मे) एक ही जमाअत है और मैं तुम्हारा

★रु ३/३ आ १८

फ़-त-क़त्तअू अम् - रहुम् बैनहुम् ज़ुबुरन् ᐩ कुल्लु हिज़्बिम् - बिमा लदैहिम् फ़रिहून (५३) फ़-ज़र्हुम् फ़ी ग़म्-रतिहिम् हत्ता ह़ीन (५४) अ-यह्सबू-न अन्नमा नुमिद्दुहुम् बिही मिम्मालिव्-व बनीन ᐩ (५५) नुसारिअु लहुम् फ़िल्-ख़ैराति ᐩ बल् ला यश्अुरून (५६) इन्नल्लज़ी-न हुम् मिन् ख़श्यति रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून ᐩ (५७) वल्लज़ी-न हुम् बिआयाति रब्बिहिम् युअ्मिनून ᐩ (५८) वल्लज़ी - न हुम् बिरब्बिहिम् ला युश्रिकून ᐩ (५९) वल्लज़ी - न युअ्तू-न मा आतव्-व्व क़ुलूबुहुम् वजि-लतुन् अन्नहुम् इला रब्बिहिम् राजिअून ᐩ (६०) उलाइ-क युसारिअू-न फ़िल्-ख़ैराति व हुम् लहा साबिक़ून (६१) व ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस् - अ़हा ᐩ व लदैना किताबुंय्यन्तिक़ु बिल्ह़क़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून (६२) बल् क़ुलूबुहुम् फ़ी ग़म्-रतिम्-मिन् हाज़ा व लहुम् अअ्-मालुम्-मिन् दूनि ज़ालि-क हुम् लहा आमिलून (६३) हत्ता इज़ा अ-ख़ज़्ना मुत्-र-फ़ीहिम् बिल्अ़ज़ाबि इज़ा हुम् यज्-अरून ᐩ (६४) ला तज्-अरुल्-यौ-म इन्नकुम् मिन्ना ला तुन्सरून (६५) क़द् कानत् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् अ़ला अअ्-क़ाबिकुम् तन्किसून (६६) मुस्तक्बिरी-न बिही सामिरन् तह्जुरून (६७) अ-फ़ लम् यद्दब्बरुल्-क़ौ-ल अम् जा-अहुम् मा लम् यअ्ति आबा-अ-हुमुल्-अव्वलीन ᐩ (६८) अम् लम् यअ्-रिफ़ू रसूलहुम् फ़हुम् लहू मुन्किरून ᐩ (६९) अम् यक़ूलू-न बिही जिन्नतुन् ᐩ बल् जा-अहुम् बिल्ह़क़्क़ि व अक्सरुहुम् लिल्ह़क़्क़ि कारिहून (७०) व लवित्त-ब-अल्-ह़क़्क़ु अह्वा-अहुम् ल-फ़-स-दतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्-न ᐩ बल् आतैनाहुम् बिज़िक्रिहिम् फ़हुम् अ़न् ज़िक्रिहिम् मुअ्-रिज़ू-न ᐩ (७१) अम् तस्-अलुहुम् ख़र्जन् फ़-ख़राजु रब्बि-क ख़ैरुंव्-व हु - व ख़ैरुर् राज़िक़ीन (७२)

المؤمنون ٢٣ — ٧٤٩ — قد افلح ١٨

واحدة وانا ربكم فاتقون ۝ فتقطعوا امرهم بينهم زبرا كل
حزب بما لديهم فرحون ۝ فذرهم في غمرتهم حتى حين ۝
ايحسبون انما نمدهم به من مال وبنين ۝ نسارع لهم في
الخيرت بل لا يشعرون ۝ ان الذين هم من خشية ربهم
مشفقون ۝ والذين هم بايت ربهم يؤمنون ۝ والذين هم بربهم
لا يشركون ۝ والذين يؤتون ما اتوا وقلوبهم وجلة انهم الى
ربهم رجعون ۝ اولئك يسرعون في الخيرت وهم لها سبقون ۝ و
لا نكلف نفسا الا وسعها ولدينا كتب ينطق بالحق وهم لا يظلمون ۝
بل قلوبهم في غمرة من هذا ولهم اعمال من دون ذلك هم لها
عملون ۝ حتى اذا اخذنا مترفيهم بالعذاب اذا هم يجرون ۝
لا تجروا اليوم انكم منا لا تنصرون ۝ قد كانت ايتي تتلى عليكم
فكنتم على اعقابكم تنكصون ۝ مستكبرين به سمرا تهجرون ۝
افلم يدبروا القول ام جاءهم ما لم يات اباءهم الاولين ۝ ام
لم يعرفوا رسولهم فهم له منكرون ۝ ام يقولون به جنة بل
جاءهم بالحق واكثرهم للحق كرهون ۝ ولو اتبع الحق اهواءهم
لفسدت السموت والارض ومن فيهن بل اتينهم بذكرهم
فهم عن ذكرهم معرضون ۝ ام تسئلهم خرجا فخراج ربك

परवरदिगार हू, तो मुझ से डरो। (५२) फिर उन्हो ने आपस मे अपने काम को मुतफ़र्रिक कर के जुदा-जुदा कर दिया। जो चीज जिस फ़िर्के के पास है, वह इस से खुश हो रहा है। (५३) तो उन को एक मुद्दत तक उन की गफलत ही मे रहने दो। (५४) क्या ये लोग यह ख्याल करते है कि हम जो दुनिया में उन को माल और बेटो से मदद देते है, (५५) (तो इस मे) उन की भलाई मे जल्दी कर रहे है, (नही,) बल्कि ये समझते ही नही। (५६) जो लोग अपने परवरदिगार के खौफ मे डरते है, (५७) और जो अपने परवरदिगार की आयतो पर ईमान रखते हैं, (५८) और जो अपने परवर-दिगार के साथ शरीक नही करते, (५९) और जो दे सकते है, देते है और उन के दिल इस बात मे डरते है कि उन को अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है, (६०) यही लोग नेकियो मे जल्दी करते और यही उन के लिए आगे निकल जाते है। (६१) और हम किसी शख्स को उस की ताकत से ज्यादा तक्लीफ नही देते और हमारे पास किताब है, जो सच-सच कह देती है और उन (लोगो) पर जुल्म नही किया जाएगा। (६२) मगर उन के दिल इन (बातो) की तरफ से गफलत मे (पडे हुए) है, और इन के सिवा और आमाल भी है जो ये करते रहते है। (६३) यहा तक कि जब हम ने उन मे से खाते-पीते लोगो को पकड लिया, तो वे उस वक्त तिलमिला उठेंगे। (६४) आज मत तिलमिलाओ, तुम को हम से कुछ मदद नही मिलेगी। (६५) मेरी आयतें तुम को पढ-पढ कर सुनायी जाती थी और तुम उल्टे पाव फिर-फिर जाते थे। (६६) उस मे सरकशी करते, कहानियो मे लगे रहते और बेहूदा बकवास करते थे। (६७) क्या उन्हो ने इस कलाम मे गौर नही किया, या उन के पास कोई ऐसी चीज़ आयी है जो उन के अगले बाप-दादा के पास नही आयी थी। (६८) या ये अपने पैगम्बर को जानते-पहचानते नही, इस वजह से उनको नही मानते ? (६९) क्या ये कहते हैं कि इसे सौदा है (नही,) बल्कि वह उन के पास हक को ले कर आए हैं और उन मे अक्सर हक को ना-पसन्द करते है। (७०) और अगर (खुदा-ए-बर-) हक उन की ख्वाहिशो पर चले तो आसमान और ज़मीन, और जो उन मे है, सब टूट-फूट जाए, बल्कि हम ने उन के पास उन की नसीहत (की किताब) पहुचा दी है और वे अपनी (किताब) नसीहत से मुह फेर रहे है। (७१) क्या तुम उन से (तब्लीग के बदले मे) कुछ माल मागते हो, तो तुम्हारे परवरदिगार का माल बहुत अच्छा है और वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (७२) और तुम तो उन को सीधे रास्ते की

व इन्न-क ल-तद्अूहुम् इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ●(७३) व इन्नल्लजी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति अनिस्सिराति लनाकिबून (७४) व लौ रहिम्नाहुम् व क-शफ़्ना मा बिहिम् मिन् जुर्रिल्-ल-लज्जू फी तुग़्यानिहिम् यअ्-महून (७५) व ल-कद् अ-ख़ज्नाहुम् बिल्अज़ाबि फ़-मस्तकानू लिरब्बिहिम् व मा य-त-जर्रअून (७६) हत्ता इज़ा फ़-तह्ना अलैहिम् बाबन् जा अज़ाबिन् शदीदिन् इज़ाहुम् फीहि मुब्लिसून ★(७७) व हुवल्लज़ी अन्-श-अ लकुमुस्सम्-अ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ - द - त ᵇ कलीलम्मा तश्कुरून (७८) व हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्-शरून (७९) व हुवल्लज़ी युह्यी व युमीतु व लहुख़्तिलाफुल्-लैलि वन्नहारि ᵇ अ-फला तअ्-किलून (८०) बल् कालू मिस्-ल मा कालल्-अव्वलून (८१) क़ालू अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव-व अिज़ामन् अ इन्ना ल-मब्अूसून (८२)

خَيْرُ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾
وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَوْ
رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَ
لَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾
حَتّٰى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾
وَهُوَ الَّذِيْ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾
وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ
وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوْا
مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ
اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ
السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ
وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ فَاَنّٰى
تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ
مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ

ल-क़द् वुअिद्ना नह्नु व आबाउना हाज़ा मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (८३) कुल् लिमनिल् - अर्ज़ु व मन् फ़ीहा इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (८४) स-यक़ूलू-न लिल्लाहि ᵇ क़ुल् अ-फ़ला त-ज़क्करून (८५) कुल् मर्रब्बुस्-समावातिस्-सब्अि व रब्बुल्-अर्शिल्-अज़ीम (८६) स-यक़ूलू-न लिल्लाहि ᵇ कुल् अ-फ़ला तत्तकून (८७) क़ुल् मम् - बियदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व हु-व युजीरु व ला युजारु अलैहि इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (८८) स-यकूलू-न लिल्लाहि ᵇ कुल् फ-अन्ना तुस्-हरून (८९) बल् अतैनाहुम् बिल्हक्कि व इन्नहुम् ल-काज़िबून (९०) मत्त-ख़-ज़ल्लाहु मिंव्व-लदिंव्-व मा का-न म-अहू मिन् इलाहिन् इज़ल्-ल-ज़-ह-ब कुल्लु इलाहिम्-बिमा ख़-ल-क़ व ल-अला बअ्-ज़ुहुम् अला बअ्-ज़िन् ᵇ सुब्हानल्लाहि अम्मा यसिफ़ून ᵇ (९१)

● रुबुअ़ १/४ ★रु. ४/४ आ २७

तरफ बुलाते हो●(७३) और जो लोग आख़िरत पर ईमान नही लाते, वे रास्ते से अलग हो रहे है। (७४) और अगर हम उन पर रहम करे और जो तक्लीफें उन को पहुच रही है, वे दूर करें, तो अपनी सरकशी पर अड़े रहे (और) भटकते (फिरे)। (७५) और हम ने उन को अज़ाब मे भी पकड़ा, तो उन्हो ने ख़ुदा के आगे आजिज़ी न की और वे आजिज़ी करते ही नही, (७६) यहा तक कि जब हम ने उन पर तेज़ अज़ाब का दरवाजा खोल दिया, तो उस वक्त वहा ना-उम्मीद हो गये। (७७)★

और वही तो है जिस ने तुम्हारे कान और आखें और दिल बनाए (लेकिन) तुम कम शुक्र-गुजारी करते हो। (७८) और वही तो है जिस ने तुम को जमीन मे पैदा किया और उसी की तरफ तुम जमा हो कर जाओगे। (७९) और वही है जो जिंदगी बख़्शता है और मौत देता है और रात और दिन का बदलते रहना उसी का तसर्रुफ है, क्या तुम समझते नही ? (८०) बात यह है कि जो बात अगले (काफ़िर) कहते थे, उसी तरह की (बात) ये कहते है। (८१) कहते है कि जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएगे और (सडी-गली) हड्डियो (के सिवा कुछ न रहेगा) तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे ? (८२) यह वायदा हम से और हम से पहले हमारे बाप-दादा से भी होता चला आया है, (अजी) यह तो सिर्फ अगले लोगो की कहानिया है। (८३) कहो कि अगर तुम जानते हो तो (बताओ कि) ज़मीन और जो कुछ जमीन मे है (सब) किस का माल है ? (८४) झट बोल उठेगे कि खुदा का। कहो कि फिर तुम सोचते क्यों नही ? (८५) (उन से) पूछो कि सात आसमानो का कौन मालिक है और बडे अर्श का (कौन) मालिक (है) ? (८६) बे-साख़्ता कह देगे कि (ये चीज़े) ख़ुदा ही की है। कहो कि फिर डरते क्यो नही ? (८७) कहो कि अगर तुम जानते हो तो (बताओ कि) वह कौन है जिस के हाथ मे हर चीज़ की बादशाही है और वह पनाह देता है और उसके मुकाबले मे कोई किसी को पनाह नही दे सकता। (८८) फौरन कह देंगे कि (ऐसी बादशाही तो) खुदा ही की है। कहो कि फिर तुम पर जादू कहा से पड जाता है ? (८९) बात यह है कि हमने उनके पास हक पहुचा दिया है और ये (जो बुतपरस्ती किए जाते है) बेशक झूठे हैं। (९०) ख़ुदा ने न तो किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उस के साथ कोई और माबूद है, ऐसा होता तो हर माबूद अपनी-अपनी मख़्लूकात को लेकर चल देता और एक दूसरे पर गालिब आ जाता। ये लोग जो कुछ (ख़ुदा के बारे में) बयान करतें है, ख़ुदा उस से पाक है। (९१) वह पोशीदा और

●रुबुअ् १/४ ★रु ४/४ आ २७

आलिमिल्-गैबि वश्शहादति फ़-तआला अम्मा युश्रिकून ★ (९२) कुर्रब्बि इम्मा तुरियन्नी मा यूअदून لا (९३) रब्बि फला तज - अल्नी फिल्-कौमिज़्ज़ालिमीन (९४) व इन्ना अला अन् नुरि-य-क मा नअिदुहुम् ल-क़ादिरून (९५) इद्-फअ् बिल्लती हि-य अह्सनुस्-सय्यि-अ-त ط नह्नु अअ्-लमु बिमा यसिफून (९६) व कुर्रब्बि अअूज़ु बि-क मिन् ह-म-ज़ातिश् - शयातीन لا (९७) व अअूज़ु बि-क रब्बि अय्यह्जुरून (९८) हत्ता इज़ा जा-अ अ-ह-दहुमुल्-मौतु का-ल रब्बिर्जिअून لا (९९) ल-अल्ली अअ्-मलु सालिहन् फ़ीमा त-रक्तु कल्ला ط इन्नहा कलिमतुन् हु - व काइलुहा ط व मिव्वरा - इहिम् बर्ज़खुन् इला यौमि युब्-असून (१००) फ़-इज़ा नुफि-ख फ़िस्सूरि फला अन्सा-ब बैनहुन् यौमइज़िव्-व ला य-त-सा-अलून (१०१) फ-मन् सकुलत् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (१०२)

قد افلح ١٨ ٤٢٨ المؤمنون ٢٣

وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٩١﴾ عَالِمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَبِّ إِمَّا تُرِيَنِّي مَا
يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾ وَإِنَّا عَلَىٰ أَنْ
نُرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَادِرُونَ ﴿٩٥﴾ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةَ
نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾ وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ ﴿٩٧﴾
وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ﴿٩٨﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ ۚ كَلَّا ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ
هُوَ قَائِلُهَا ۖ وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾ فَإِذَا نُفِخَ فِي
الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿١٠١﴾ فَمَنْ
ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ
فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ
وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ﴿١٠٤﴾ أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ
بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾
رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا
تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا
فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا
حَتَّىٰ أَنْسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ

व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ - कल्लज़ी - न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् फी जहन्न-म ख़ालिदून ج (१०३) तल्फ़हु वुजूह-हुमुन्नारु व हुम् फीहा कालिहून (१०४) अ-लम् तकुन् आयाती तुत्ला अलैकुम् फकुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (१०५) क़ालू रब्बना ग-ल-बत् अलैना शिक्वतुना व कुन्ना कौमन् ज़ाल्लीन (१०६) रब्बना अख़्रिज्ना मिन्हा फ-इन् अुद्ना फइन्ना ज़ालिमून (१०७) कालख़्सऊ फीहा व ला तुकल्लिमून (१०८) इन्नहू का-न फरीकुम्मिन् अिबादी यकूलू-न रब्बना आमन्ना फग़्फ़िर्-लना वर्हम्ना व अन-त ख़ैरुर् - राहिमीन صلے (१०९) फत्त - ख़ज़्तुमू - हुम् सिख़्रिय्यन् हत्ता अन्सौकुम् ज़िक्री व कुन्तुम् मिन्हुम् तज़्-हकून (११०) इन्नी जज़ैतु - हुमुल् - यौ-म बिमा स-बरू لا अन्नहुम् हुमुल् - फ़ाइज़ून (१११)

★रु ५/५ आ १५

ज़ाहिर को जानता है और (मुश्रिक) जो उस के साथ शरीक करते है, (उस की शान) उस मे बुलंद है। (९२)★

(ऐ मुहम्मद !) कहो कि ऐ परवरदिगार ! जिस अज़ाब का इन (कुफ्फार) से वायदा हुआ है, अगर तू मेरी ज़िंदगी मे उन पर नाजिल कर के मुझे भी दिखाये, (९३) तो ऐ परवरदिगार ! मुझे (उस से महफूज़ रखियो और) इन जालिमो मे शामिल न कीजियो। (९४) और जो वायदा हम उन से कर रहे है, हम तुम को दिखा कर उन पर नाजिल करने की कुदरत रखते है। (९५) और बुरी वात के जवाब मे ऐसी बात कहो जो बहुत अच्छी हो और ये जो कुछ बयान करते है, हमे खूब मालूम है। (९६) और कहो कि ऐ परवरदिगार ! मै शैतानो के वस्वसो से तेरी पनाह मागता हू। (९७) और ऐ परवरदिगार ! इस से भी तेरी पनाह मागता हू कि वह मेरे पास आ मौजूद हो। (९८) (ये लोग इसी तरह गफलत मे रहेगे) यहा तक कि जब उन मे से किसी के पास मौत आ जाएगी तो कहेगा कि ऐ परवरदिगार ! मुझे फिर दुनिया मे वापस भेज दे, (९९) ताकि मैं उसमे जिसे छोड़ आया हू, नेक काम किया करूं, हरगिज नही यह एक (ऐसी) बात है कि वह उसे ज़ुबान से कह रहा होगा (और उस के साथ अमल नही होगा) और उस के पीछे बरज़ख है, (जहा वे) उस दिन तक कि (दोबारा) उठाए जाएगे, (रहेगे)। (१००) फिर जब सूर फूका जाएगा, तो न तो उन मे रिश्तेदारियां रहेगी और न एक-दूसरे को पूछेंगे। (१०१) तो जिन के (अमलो के) बोझ

★रु. ५/ ५ आ १५

क़ा-ल कम् लबिस्तुम् फ़िल्‌अर्ज़ि अ-द-द सिनीन (११२) क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन् फ़स-अलिल्-आद्दीन (११३) क़ा-ल इल्लबिस्तुम् इल्ला कलीलल्लौ अन्नकुम् कुन्तुम् तअ्-लमून (११४) अ-फ़-हसिब्तुम् अन्नमा ख-लक़्ना-कुम् अ-ब-संव्-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जअून (११५) फ़-त-आलल्-लाहुल्-मलिकुल् - हक़्कु ला इला - ह इल्ला हु-व रब्बुल् - अ़र्शिल् - करीम (११६) व मंय्यद्‌अु म-अ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र ला बुर्हा - न लहू बिही फ़-इन्नमा हि़साबुहू अिन् - द रब्बिही इन्नहू ला युफ़्लिहुल्-काफ़िरून (११७) व कुर्-रब्बिग़्फ़िर् वर्‌हम् व अन् - त ख़ैरुर् - राहिमीन ★ (११८)

بما صبروا انهم هم الفائزون ۝ قل كم لبثتم في الارض عدد
سنين ۝ قالوا لبثنا يوما او بعض يوم فسئل العادين ۝ قل ان
لبثتم الا قليلا لو انكم كنتم تعلمون ۝ افحسبتم انما خلقنكم
عبثا وانكم الينا لا ترجعون ۝ فتعلى الله الملك الحق لا اله
الا هو رب العرش الكريم ۝ ومن يدع مع الله الها اخر لا
برهان له به فانما حسابه عند ربه انه لا يفلح الكفرون ۝
وقل رب اغفر وارحم وانت خير الرحمين ۝

سورة النور مدنية وهي اربع وستون اية وتسع ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

سورة انزلنها وفرضنها وانزلنا فيها ايت بينت لعلكم
تذكرون ۝ الزانية والزاني فاجلدوا كل واحد منهما مائة
جلدة ولا تاخذكم بهما رافة في دين الله ان كنتم تؤمنون
بالله واليوم الاخر وليشهد عذابهما طائفة من المؤمنين ۝
الزاني لا ينكح الا زانية او مشركة والزانية لا ينكحها الا زان او
مشرك وحرم ذلك على المؤمنين ۝ والذين يرمون المحصنت
ثم لم ياتوا باربعة شهداء فاجلدوهم ثمنين جلدة ولا تقبلوا
لهم شهادة ابدا واولئك هم الفسقون ۝ الا الذين تابوا

२४ सूरतुन्-नूरि १०२

(मदनी) इस सूर में अरबी के ६४१ अक्षर, १४२ शब्द, ६४ आयतें और ९ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

सूरतुन् अन्जल्नाहा व फ-रज़्नाहा व अन्जल्ना फीहा आयातिम् - बय्यिनातिल्-ल-अ़ल्लकुम् त-जक्करून (१) अज्ज़ानियतु वज्जानी फ़ज्लिदू कुल्-ल वाहिदिम्-मिन्हुमा मि-अ-त जल्दतिंव्-व ला तअ्‌खुज्-कुम् बिहिमा रअ्-फतुन् फ़ी दीनिल्लाहि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल् - यौमिल् - आख़िरि वल्-यश-हद् अ़ज़ाबहुमा ता़इ-फ़तुम्-मिनल्-मुअ्मिनीन (२) अज्ज़ानी ला यन्किहु इल्ला ज़ानि-य-तन् औ मुश्रिक-तंव्-व वज्ज़ानियतु ला यन्किहुहा इल्ला ज़ानिन् औ मुश्रिकुन् व हुर्रि-म ज़ालि-क अ़-लल्-मुअ्मिनीन (३) वल्लज़ी-न यर्मूनल् - मुह़् - सनाति सुम्-म लम् यअ्तू बि - अर्-ब - अति शु - हदा - अ फज्लिदूहुम् समानी - न जल्दतंव् - व ला तक़्बलू लहुम् शहाद - तन् अ - ब - दन् व उलाइ - क हुमुल् - फ़ासिकून (४)

★रु. ६/६ आ २६
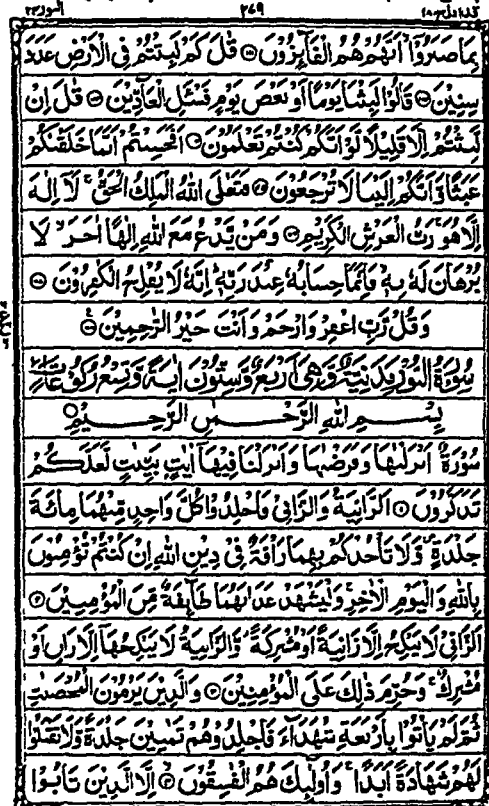
भारी होगे, वे कामियाबी पाने वाले हैं। (१०२) और जिन के बोझ हल्के होगे, वे वह लोग है, जिन्होने अपने आपको घाटे मे डाला, हमेशा दोजख मे रहेगे। (१०३) आग उन के मुहो को झुलसा देगी और वे उस मे त्यौरी चढाये हुए होगे। (१०४) क्या तुम को मेरी आयतें पढ कर सुनायी जाती थी, (नही,) तुम उन को (सुनते थे और) झूठलाते थे। (१०५) ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर हमारी कम-बख्ती गालिब हो गयी और हम रास्ते से भटक गये। (१०६) ऐ परवरदिगार! हम को इस मे से निकाल दे। अगर हम फिर (ऐसे काम) करे तो ज़ालिम होंगे। (१०७) (खुदा) फरमाएगा कि इसी मे जिल्लत के साथ पड़े रहो और मुझ से वात न करो। (१०८) मेरे बन्दो मे एक गिरोह था, जो दुआ किया करता था कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान लाए, तो तू हम को बख्श दे और हम पर रहम कर और तू सवसे वेहतर रहम करने वाला है। (१०९) तो तुम उनसे मज़ाक करते रहे, यहा तक कि उन के पीछे मेरी याद भी भूल गये और तुम (हमेशा) उनसे हसी किया करते थे। (११०) आज मैं ने उनको उनके सब्र का वदला दिया कि वे कामियाव हो गये। (१११) (खुदा) पूछेगा कि तुम ज़मीन मे कितने वर्ष रहे? (११२) वे कहेगे कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम रहे थे, गिनती करने वालो से पूछ लीजिए। (११३) (खुदा) फरमाएगा कि (वहा) तुम (वहुत ही) कम रहे। काश! तुम जानते होते। (११४) क्या तुम यह ख्याल करते हो कि हमने तुम को वे-फायदा पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ लौट कर नही आओगे? (११५) तो खुदा जो सच्चा बादशाह है (उस की शान इस से) ऊची है। उस के सिवा कोई मावूद नही। (वही) बुजुर्ग अर्श का मालिक है। (११६) और जो आदमी खुदा के साथ और मावूद को पुकारता है, जिस की उस के पास कुछ सनद नही, तो उसका हिसाब खुदा ही के यहा होगा। कुछ शक नही कि काफिर कामियाबी नही पाएंगे। (११७) और खुदा से दुआ करो कि मेरे परवरदिगार मुझे बख्श दे और (मुझ पर) रहम कर और तू सब से वेहतर रहम करने वाला है। (११८)★

२४ सूरः नूर १०२

सूर. नूर मदनी है और इस मे चौसठ आयते और नौ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो वडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

यह (एक) सूर. है जिस को हमने नाजिल किया और उस (के हुक्मो) को फ़र्ज़ कर दिया और उसमे खुले मतलब वाली आयते नाजिल की, ताकि तुम याद रखो। (१) बद-कारी करने वाली औरत और बद-कारी करने वाला मर्द (जब उन की बद-कारी साबित हो जाए तो) दोनो मे से हर एक को सौ दुर्रे मारो और अगर तुम खुदा और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो, तो खुदा की शरअ (के हुक्म) में तुम्हे उन पर हर गिज़ तरस न आए और चाहिए कि उन की सजा के वक्त मुसलमानों की एक जमाअत भी मौजूद हो। (२) बद-कार मर्द तो बद-कार या मुश्रिक औरत के सिवा निकाह नही करता और बद-कार औरत को भी बद-कार या मुश्रिक मर्द के सिवा और कोई निकाह में नही लाता।[1] और यह (यानी बद-कार औरत से निकाह करना) मोमिनो पर हराम है। (३) और जो लोग परहेज़गार औरतो को बद-कारी का ऐब लगाए और उस पर चार गवाह न लाए तो उन को अस्सी दुर्रे मारो और कभी उनकी गवाही क़ुबूल न करो और यही बदकिरदार

---

१ यानी वह भी बद-कार या मुश्रिक मर्द के सिवा किसी से मिया-बीवी का ताल्लुक पैदा नही करती।

★रु. ६/६ आ २६

इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्-बअ्-दि ज़ालि-क व अस्लहू ج फ़इन्नल्ला-ह गफ़ूरुर्-
रहीम (५) वल्लज़ी-न यर्मू-न अज़्वाजहुम् व लम् यकुल्लहुम् शुहदाउ
इल्ला अन्फ़ुसुहुम् फ-शहादतु अ-हदिहिम् अर्बअु शहादातिम् - बिल्लाहि لا
इन्नहू लमिनस्-सादिक़ीन (६) वल्-ख़ामिसतु अन्-न लअ्-न-तल्लाहि अलैहि
इन् का-न मिनल्-काज़िबीन (७) व
यद्रऊ अन्हल्-अज़ा-ब अन् तश्ह-द अर्-ब-अ
शहादातिम् - बिल्लाहि لا इन्नहू लमिनल् -
काज़िबीन لا (८) वल्-ख़ामि-स-तु अन्-न
ग-ज़-बल्लाहि अलैहा इन् का-न मिनस्-
सादिक़ीन (९) व लौला फ़ज़्लुल्लाहि
अलैकुम् व रह्मतुहू व अन्नल्ला-ह तव्वाबुन्
हकीम ★ (१०) इन्नल्लज़ी - न जाऊ
बिल् - इफ्कि अुस्बतुम् - मिन्कुम् ط ला
तह्सबूहु शर्रल्लकुम् ط बल् हु-व ख़ैरुल्लकुम् ط
लिकुल्लिम्रिइम्-मिन्हुम् मक-त-स-ब मिनल्-
इस्मि ج वल्लज़ी त-वल्ला किब्रहू मिन्हुम्
लहू अज़ाबुन् अज़ीम (११) लौला इज् समिअ्-तुमूहु ज़न्नल्-मुअ्मिनू-न
वल् - मुअ्मिनातु बिअन्फ़ुसिहिम् ख़ैरव لا - व क़ालू हाज़ा इफ्कुम् -
मुबीन (१२) लौला जाऊ अलैहि बि-अर-ब - अति शुहदा-अ ج फ़इज्
लम् यअ्तू बिश्शु-ह-दाइ फउलाइ-क अिन्दल्लाहि हुमुल्काज़िबून (१३) व
लौला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू फिद्दुन्या वल्आख़िरति ल-मस्सकुम्
फी मा अ-फ़ज़्तुम् फ़ीहि अज़ाबुन् अज़ीम قلے (१४) इज्
त-लक़्क़ौनहू बिअल्सिनतिकुम् व तक़ूलू-न बिअफ़्वाहिकुम् मा लै-स लकुम्
बिही अिल्मुंव-व तह्सबूनहू हय्यिनंव-व हु-व अिन्दल्लाहि अज़ीम (१५)
व लौला इज् समिअ् - तुमूहु क़ुल्तुम् मा यकूनु लना अन्
न-त-कल्ल-म बिहाज़ा قلے सुब्हा-न - क हाज़ा बुह्तानुन् अज़ीम (१६)

مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ
أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ
أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ بِاللّٰهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ
اللّٰهِ عَلَيْهِ إِن كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَيَدْرَأُ عَنْهَا الْعَذَابَ أَن
تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللّٰهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَالْخَامِسَةَ
أَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَا إِن كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا
بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ
لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُم مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ
مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ لَّوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَ
الْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هٰذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ۝ لَّوْلَا
جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولٰئِكَ
عِندَ اللّٰهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِذْ
تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ
هَيِّنًا وَهُوَ عِندَ اللّٰهِ عَظِيمٌ ۝ وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُم مَّا يَكُونُ
لَنَا أَن نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا سُبْحَانَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ۝ يَعِظُكُمُ

★रु० १/७ आ १०

है। (४) हा, जो इस के बाद तौबा कर ले और (अपनी हालत) सवार लें तो खुदा (भी) बख्शने वाला मेहरबान है।(५)औरजोलोग अपनी औरतो पर बदकारी की तोहमत लगाए और खुद उन के सिवा उनके गवाह न हो तो हर एक की गवाही यह है कि पहले तो चार बार खुदा की कसम खाए कि बेशक सच्चा है। (६) और पाचवी (बार) यह (कहे) कि अगर वह झूठा हो तो उस पर खुदा की लानत। (७) और औरत से सजा को यह बात टाल सकती है कि वह पहले चार बार खुदा की कसम खाए कि बेशक यह झूठा है। (८) और पाचवी (बार) यो (कहे) कि अगर यह सच्चा हो तो मुझ पर खुदा का गज़ब (नाजिल) हो। (९) और अगर तुम पर खुदा का फज्ल और उसकी मेहरबानी न होती (तो बहुत-सी) खराबिया पैदा हो जाती (मगर वह आम करम वाला है) और यह कि खुदा तौबा कुबूल करने वाला (और) हकीम है। (१०)★

जिन लोगो ने बोहतान बाधा है, तुम ही मे से वह एक जमाअत है, उस को अपने हक मे बुरा न समझना, बल्कि वह तुम्हारे लिए अच्छा है। उन मे से जिस शख्स ने गुनाह का जितना हिस्सा लिया उसके लिए उतना वबाल है और जिसने उनमे से उस बोहतान का बडा बोझ उठाया है, उस को बडा अजाब होगा। (११) जब तुम ने वह बात सुनी थी, तो मोमिन मर्दो और औरतो ने क्यो अपने दिलो मे नेक गुमान न किया और (क्यो न) कहा कि यह खुला तूफान है। (१२) ये (झूठ गढ़ने वाले) अपनी बात (की तस्दीक) के (लिए) चार गवाह क्यो न लाए, तो जब ये गवाह नही ला सके, तो खुदा के नजदीक यही झूठे हैं। (१३) और अगर दुनिया और आखिरत मे तुम पर खुदा का फज्ल और उस की रहमत न होती तो जिस काम मे तुम लगे हुए थे, उसकी वजह से तुम पर बड़ा (सख्त) अजाब नाजिल होता। (१४) जब तुम अपनी जुबानो से इसका एक दूसरे से ज़िक्र करते थे और अपने मुह से ऐसी बात कहते थे, जिसका तुम को कुछ भी इल्म न था और तुम उसे एक हल्की बात समझते थे और खुदा के नजदीक वह बडी (भारी) बात थी। (१५) और जब तुम ने उसे सुना था तो क्यो न कह दिया कि हमे मुनासिब नही कि ऐसी बात जुबान पर लाए। (परवरदिगार !) तू पाक है, यह तो (बहुत) बडा बोहतान है। (१६)

★रु. १/७ आ १०

यअिज़ुकुमुल्लाहु अन् तअूदू लिमिस्लिही अ-ब-दन् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१७)
व युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति वल्लाहु अलीमुन् हकीम (१८)
इन्नल्लज़ी-न युहिब्बू-न अन् तशीअल्-फाहिशतु फिल्लज़ी-न आमनू लहुम् अज़ाबुन्
अलीमुन् फिद्दुन्या वल्आखिरति वल्लाहु यअ्-लमु व अन्तुम् ला तअ्-लमून (१९)

الله أن تعودوا لمثله أبدا إن كنتم مؤمنين ۝ ويبين الله لكم
الآيات والله عليم حكيم ۝ إن الذين يحبون أن تشيع الفاحشة
في الذين آمنوا لهم عذاب أليم في الدنيا والآخرة والله يعلم وأنتم
لا تعلمون ۝ ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله رءوف
رحيم ۝ يا أيها الذين آمنوا لا تتبعوا خطوات الشيطان ومن
يتبع خطوات الشيطان فإنه يأمر بالفحشاء والمنكر ولولا فضل
الله عليكم ورحمته ما زكى منكم من أحد أبدا ولكن الله يزكي
من يشاء والله سميع عليم ۝ ولا يأتل أولو الفضل منكم و
السعة أن يؤتوا أولي القربى والمساكين والمهاجرين في سبيل
الله وليعفوا وليصفحوا ألا تحبون أن يغفر الله لكم والله غفور
رحيم ۝ إن الذين يرمون المحصنات الغافلات المؤمنات لعنوا في
الدنيا والآخرة ولهم عذاب عظيم ۝ يوم تشهد عليهم ألسنتهم
وأيديهم وأرجلهم بما كانوا يعملون ۝ يومئذ يوفيهم الله دينهم
الحق ويعلمون أن الله هو الحق المبين ۝ الخبيثات للخبيثين
والخبيثون للخبيثات والطيبات للطيبين والطيبون للطيبات
أولئك مبرءون مما يقولون لهم مغفرة ورزق كريم ۝ يا أيها
الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى تستأنسوا وتسلموا

व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू व अन्नल्ला-ह रऊफ़ुर्-रहीम ★ (२०)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तबिअू खुतुवातिश्शैतानि व मय्यत्तबिअ् खुतुवातिश्-शैतानि फ़इन्नहू यअ्मुरु बिलफ़ह्शा-इ वलमुन्करि व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू मा ज़का मिन्कुम् मिन् अ-हदिन् अ-ब-दंव्-व लाकिन्नल्ला-ह युज़क्की मंय्यशाउ वल्लाहु समीअुन् अलीम (२१)
व ला यअ्तलि उलुल्फ़ज़्लि मिन्कुम् वस्स-अति अंय्युअ्तू उलिल्क़ुर्बा वलमसाकी-न वलमुहाजिरी-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्-यअ्-फू वल्यस्फ़हू अला तुहिब्बू-न अंय्यग्फ़िरल्लाहु लकुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (२२)
इन्नल्लज़ी-न यर्मूनल्-मुह-सनातिल्-ग़ाफ़िलातिल्-मुअ्मिनाति लुअिनू फ़िद्दुन्या वल्-आखिरति व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम (२३)
यौ-म तश्हदु अलैहिम् अल्सि-न-तुहुम् व ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् बिमा कानू यअ्-मलून (२४) यौमइज़िय्युवफ़्फ़ीहिमुल्-लाहु दीनहुमुल्-हक़-क़ व यअ्-लमू-न अन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ुल्-मुबीन (२५) अलख़बीसातु लिलख़बीसी-न वल्-ख़बीसू-न लिलख़बीसाति वत्तय्यिबातु लित्तय्यिबी-न वत्तय्यिबू-न लित्तय्यिबाति उलाइ-क मुबर्रऊ-न, मिम्मा यक़ूलू-न लहुम् मग्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम ★ (२६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्खुलू बुयूतन् गै-र बुयूतिकुम् हत्ता तस्तअ्निसू व तुसल्लिमू अला अह्लिहा ज़ालिकुम् खैरुल्लकुम् ल-अल्लकुम् त-ज़क्करून (२७)

★रु २/८ आ १० नि १/२ ★रु ३/९ आ ६

खुदा तुम्हे नसीहत करता है कि अगर मोमिन हो तो फिर कभी ऐसा (काम) न करना। (१७) और खुदा तुम्हारे (समझाने के) लिए अपनी आयते खोल-खोल कर बयान फरमाता है और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१८) जो लोग इस बात को पसन्द करते हैं कि मोमिनो मे बे-हयाई (यानी बद-कारी की तोहमत की खबर) फैले, उन को दुनिया और आखिरत मे दुख देने वाला अजाब होगा और खुदा जानता है और तुम नही जानते। (१९) और अगर तुम पर खुदा का फ़ज्ल और उस की रहमत न होती, (तो क्या कुछ न होता, मगर वह करीम है) और यह कि खुदा निहायत मेहरबान और रहीम है।[1] (२०)

मोमिनो! शैतान के कदमो पर न चलना और जा शख्स शैतान के कदमो पर चलेगा, तो शैतान तो बे-हयाई (की बाते) और बुरे काम ही बताएगा और अगर तुम पर खुदा का फ़ज्ल और उसकी मेहरबानी न होती, तो एक शख्स भी तुम मे पाक न हो सकता, मगर खुदा जिस को चाहता है, पाक कर देता है और खुदा सुनने वाला (और) जानने वाला है। (२१) और जो लोग तुम मे फ़ज्ल वाले और वुस्अत वाले है, वे इस बात की कसम न खाएं कि रिश्तेदारो और मुहताजो और वतन छोड जाने वालो को कुछ खर्च-पात न देगे, उन को चाहिए कि माफ कर दे और दरगुज़र करे। क्या तुम पसन्द नही करते कि खुदा तुम को बख्श दे और खुदा तो बख्शने वाला मेहरबान है? (२२) जो लोग परहेजगार (और) बुरे कामो से बे-खबर (और) ईमानदार औरतो पर बद-कारी की तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया और आखिरत (दोनो) मे लानत है और उनको सख्त अज़ाब होगा। (२३) (यानी कियामत के दिन) जिस दिन उन की ज़ुबाने और हाथ और पाव सब उनके कामो की गवाही देंगे। (२४) उस दिन खुदा उन को (उन के आमाल का) पूरा-पूरा (और) ठीक बदला देगा और उनको मालूम हो जाएगा कि खुदा बर-हक (और हक को) ज़ाहिर करने वाला है। (२५) ना-पाक औरते ना-पाक मर्दो के लिए हैं और ना-पाक मर्द ना-पाक औरतो के लिए और पाक औरते पाक मर्दो के लिए है और पाक मर्द पाक औरतो के लिए। ये (पाक लोग) इन (झूठो) की बातो से बरी है (और) उनके लिए बख्शिश और नेक रोजी है। (२६)

मोमिनो! अपने घरो के सिवा दूसरे (लोगो के) घरो मे घर वालो से इजाज़त लिए और उन को सलाम किए बगैर दाखिल न हुआ करो, यह तुम्हारे हक मे बेहतर है (और हम यह नसीहत इस

---

१. आयत 'इन्नल्लज़ी-न जाऊ बिल इफ्कि' से ले कर यहा तक दस आयतें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि-यल्लाहु अन्हा की शान मे नाजिल हुई हैं। इन मे अल्लाह तआला ने उन को इस तोहमत से पाक ज़ाहिर फ़रमाया है, जो मुनाफिको ने उन के बारे मे गढ रखा था और जिस को ज़्यादातर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल, मुनाफिको के सरदार ने मशहूर किया था और जिस का ज़िक्र मुसलमानो मे भी हुआ। इस वाकिए की तफ्सील इस तरह है—

हज़रत आइशा रजि० खुद फरमाती हैं कि प्यारे नबी सल्ल० की आदत थी कि जब आप किसी सफ़र को तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाते, तो अपनी बीवियो मे कुरआ डालते। जिस बीवी के नाम का कुरआ निकलता उस को आप अपने साथ ले जाते। एक लडाई मे मेरे नाम का कुरआ निकला और मैं आप के साथ गयी और यह सफ़र परदे के हुक्म के नाजिल होने के बाद का था। मैं ऊट पर सवारी करती और हौदज यानी कजावे में बैठती थी। जब आप लडाई से फारिग हो चुके और लौटते हुए मदीने के करीब पहुचे तो एक रात कूच का एलान किया गया। मैं उस वक्त (ज़रूरत पूरी करने) चली गयी, यहा तक कि फौज आगे बढ गयी। जब डेरे के पास आयी तो देखा

(शेष पृष्ठ ५६१ पर)

फ़-इल्लम् तजिदू फीहा अ-ह-दन् फला तद्खुलूहा हत्ता युअ्-ज-न लकुम् व इन् क़ी-ल लकुमुर्जिअू फ़र्जिअू हु-व अज्का लकुम् वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न अ़लीम (२८) लै-स अलैकुम् जुनाहुन् अन् तद-खुलू बुयूतन् गै-र मस्कूनतिन् फीहा मताअुल्लकुम् वल्लाहु यअ्-लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून (२९) कुल् लिल्-मुअ्मिनी-न यगुज्जू मिन् अब्सारिहिम् व यह्-फज़ू फुरू-जहुम् ज़ालि-क अज्का लहुम् इन्नल्ला - ह खबीरुम् - बिमा यस्-नअून (३०) व क़ुल्लिल्-मुअ्मिनाति यग्-जुज्-न मिन् अब्सारिहिन-न व यह-फज्-न फुरूजहुन-न व ला युब्दी-न जी-न-तहुन्-न इल्ला मा ज - ह-र मिन्हा वल् - यज्रिब - न बिखुमुरि-हिन्-न अला जुयूबिहिन-न व ला युब्दी-न जी-न-तहुन-न इल्ला लिबुअूलति-हिन्-न औ आबाइहिन्-न औ आबाइ बुअूलति-हिन्-न औ अब्नाइ - हिन् - न औ अब्नाइ बुअूलति-हिन्-न औ इख्वानिहिन्-न औ बनी इख्वानिहिन्-न औ बनी अ-ख़-वातिहिन्-न औ निसाइहिन्-न औ मा म-ल-कत् ऐमानु-हुन्-न अवित्ताबिअी-न गैरि उलिल्इर्बति मिनर्रिजालि अवित्-तिफ्लिल्-लज़ी-न लम् यज़्-हरू अ़ला औरातिन्निसाइ व ला यज्रिब्-न बि-अर्जुलि-हिन-न लियुअ्-ल-म मा युख़्फी-न मिन् जीनतिहिन्-न व तूबू इलल्लाहि जमीअन् अय्युहल्-मुअ्मिनू-न ल-अ़ल्लकुम् तुफ्लिहून (३१) व अन्किहुल्-अयामा मिन्कुम् वस्सालिही-न मिन् अिबादिकुम् व इमा - इकुम् इ य्यकूनू फ़ु - क-रा - अ युग़्निहिमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (३२)

عَلَىٰ أَهْلِهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا
أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِن قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا
هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ لَّيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن
تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ
وَمَا تَكْتُمُونَ ۝ قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا
فُرُوجَهُمْ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝ وَقُل
لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا
يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ
جُيُوبِهِنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ
بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ
أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ
أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَاتِ
النِّسَاءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن زِينَتِهِنَّ وَ
تُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَأَنكِحُوا
الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ إِن يَكُونُوا
فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَلْيَسْتَعْفِفِ
الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَالَّذِينَ

लिए करते है कि) शायद तुम याद रखो। (२७) अगर तुम घर मे किसी को मौजूद न पाओ तो जब तक तुम को इजाजत न दी जाए उसमे मत दाखिल हो और अगर (यह) कहा जाए कि (इस वक्त) लौट जाओ तो लौट जाया करो। यह तुम्हारे लिए बडी पाकीज़गी की बात है और जो काम तुम करते हो, खुदा सब जानता है। (२८) (हा) अगर तुम किसी ऐसे मकान मे जाओ, जिस मे कोई न बसता हो और उस मे तुम्हारा सामान (रखा) हो तो तुम पर कुछ गुनाह नही और जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो छिपाते हो, खुदा को सब मालूम है। (२९) मोमिन मर्दों से कह दो कि अपनी नज़रे नीची रखा करे और अपनी शर्मगाहो की हिफाज़त किया करे। यह उन के लिए बडी पाकीजगी की बात है (और) जो काम ये करते है, खुदा उन से खबरदार है। (३०) और मोमिन औरतो से भी कह दो कि वे भी अपनी निगाहे नीची रखा करे और अपनी शर्मगाहो की हिफाज़त किया करे और अपनी जीनत (यानी ज़ेवर की जगहो) को ज़ाहिर न होने दिया करे, मगर जो उस मे से खुला रहता हो और अपने सीनो पर ओढनिया ओढ़े रहा करें और अपने खाविंद और बाप और ससुर और बेटे और खाविंद के बेटो और भाइयो और भतीजो और भांजो और अपनी (ही किस्म की) औरतो और लौडी-गुलाम के सिवा, और उन खादिमो के, जो औरतो की ख्वाहिश न रखे या ऐसे लडको के, जो औरतो के परदे की चीज़ो को न जानते हो, (गरज इन लोगो के सिवा) किसी पर जीनत (और सिंगार की जगहो) को ज़ाहिर न होने दे और अपने पाव (ऐसे तौर से ज़मीन पर) न मारे कि (झंकार कानो मे पहुचे और) उन का छिपा जेवर मालूम हो जाए और मोमिनो! सब खुदा के आगे तौबा करो ताकि कामियाब रहो। (३१) और अपनी कौम की बेवा औरतो के निकाह कर दिया करो और अपने गुलामो और लौडियो के भी जो नेक हो (निकाह कर दिया करो) और वे गरीब होगे तो खुदा उन को अपने फ़ज्ल से खुशहाल कर देगा

(पृष्ठ ५५९ का शेष)

कि मेरा मनको का हार कही रास्ते में टूट कर गिर गया है। मैं हार खोजने लौट गयी और उस को खोजते-खोजते मुझे देर हो गयी। इतने मे वे लोग आ गये जो मेरे हौदज को कसा करते थे और उन्हो ने मेरे हौदज को उठा लिया और उस को मेरे ऊट पर कस दिया। चूकि औरते उस ज़माने मे दुब्ली-पतली होती थी और उन के सवार होने से हौदज कुछ भारी नही हो जाता था, इस लिए उन्हो ने हौदज के हल्केपन का कुछ ख्याल न किया और यह न समझा कि मैं उस मे नही हू, गरज़ वे ऊट को ले कर चल दिए। मुझ को अपना हार उस वक्त मिला, जब लश्कर गुज़र गया। मैं लश्कर के पडाव मे आयी, हालाकि वहा कोई नही था, फिर अपनी मज़िल को, जहा उतरी हुई थी, चली गयी, इस ख्याल से कि जब लोग मुझे गुम पाएगे, तो आ कर ले जाएगे। इसी बीच मुझे नीद आ गयी और मैं वही सो गयी।

उधर सफ्वान बिन मुअत्तल जो रात के आखिरी हिस्से मे लश्कर के पीछे, आराम लेने के लिए उतर पडा था, सुबह के करीब चला। जब मेरी मज़िल के करीब पहुचा, तो मेरे बारे मे ख्याल किया कि कोई आदमी सो रहा है। वह मेरे पास आया और मुझे देख कर पहचान लिया, क्योकि परदे के हुक्म से पहले वह मुझे देख चुका था। मैं ने चादर से घूघट निकाल लिया और मैं कसम खा कर कहती हू कि न तो उस ने मुझ से कोई बात की, न मैं ने उस से कोई बात सुनी, अलावा 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना अलैहि राजिऊन' के, जो उस ने सवारी से उतारते वक्त

(शेष पृष्ठ ६०३ पर)

वल्-यस्तअ्-फिफिल्-लज़ी-न ला यजिदू-न निकाह़न् ह़त्ता युग्नि-य-हुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही ᐟ वल्लज़ी - न यब्तग़ूनल् - किता - ब मिम्मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् फ़क़ातिबूहुम् इन् अलिम्तुम् फ़ीहिम् ख़ैरव - व आतूहुम् मिम् - मालिल्लाहिल्लज़ी आताकुम् ᐟ व ला तुक्रिहू फ़-त-यातिकुम् अ-लल्बिग़ा-इ इन् अ-रद्-न त-ह़स्सुनल्-लि-तब्तग़ू अ-र-जल्-ह़यातिद्दुन्या ᐟ व मय्युक्रिह् - हुन - न फ़-इन्नल्ला-ह मिम्बअ्-दि इक्राहिहिन-न ग़फ़ूरुर्-रहीम (३३) व ल - क़द् अन-ज़ल्ना इलैकुम् आयातिम्-मुबय्यिनातिव्-व म-स-लम्-मिनल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब-लिकुम् व मौअि-ज़-तल्-लिल्मुत्तक़ीन ✶ (३४) अल्लाहु नूरुस्समावाति वल्अर्ज़ि ᐟ म - सलु नूरिही कमिश्कातिन् फ़ीहा मिस्बाहुन् ᐟ अल-मिस्बाहु फ़ी ज़ुजाजतिन् ᐟ अज्ज़ुजाजतु क - अन्नहा कौकबुन् दुर्रिय्युं य्यूक़दु मिन् श-ज-रतिम्-मुबा-र-कतिन् ज़ैतूनतिल्ला शर्क़िय्यतिंव्-व ला ग़र्बिय्यतिंय्-यकादु ज़ैतुहा युज़ीउ व लौ लम् तम्सस्हु नारुन् ᐟ नूरुन् अ़ला नूरिन् ᐟ यह्दिल्लाहु लिनूरिही मय्यशाउ ᐟ व यज़्रिबुल्लाहुल्-अम्सा-ल लिन्नासि ᐟ वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीम ᐟᐟ (३५) फ़ी बुयूतिन् अज़िनल्लाहु अन्तुर्फ़-अ व युज़्क-र फ़ीहस्मुहू ᐟᐟ युसब्बिहु लहू फ़ीहा बिल्ग़ुदुव्वि वल्आसाल ᐟᐟ (३६) रिजालुल्ला तुल्हीहिम् तिजा - र-तुंव्-व ला बैअुन् अन् ज़िक्रिल्लाहि व इक़ामिस्सलाति व ईताइज़्ज़काति यख़ाफ़ू-न यौमन् त-त-क़ल्लबु फ़ीहिल्क़ुलूबु वल्-अब्सार (३७) लियज्ज़ि-य-हुमुल्लाहु अह्-स-न मा अमिलू व यज़ीदहुम् मिन् फ़ज़्लिही ᐟ वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मय्यशाउ बिग़ैरि हिसाब (३८) वल्लज़ी-न क-फ़रू अअ्मालुहुम् क-सराबिम्-बिक़ीअ़तिंय्यह्सबुहुज़्-ज़म्-आनु माअन् ᐟ ह़त्ता इज़ा जा-अहू लम् यजिद्हु शैअव्-व व-ज-दल्ला-ह अ़िन्दहू फ़-वफ़्फ़ाहु हिसाबहू ᐟ वल्लाहु सरीअुल्-हिसाब ᐟᐟ (३९)

قد افلح ١٨ ٢٨٣ النور ٢٤

يبتغون الكتب مما ملكت ايمانكم فكاتبوهم ان علمتم فيهم
خيرا وآتوهم من مال الله الذي آتكم ولا تكرهوا فتيتكم على
البغاء ان اردن تحصنا لتبتغوا عرض الحيوة الدنيا ومن يكرههن
فان الله من بعد اكراههن غفور رحيم ۝ ولقد انزلنا اليكم ايت
مبينت ومثلا من الذين خلوا من قبلكم وموعظة للمتقين ۝
الله نور السموت والارض مثل نوره كمشكوة فيها مصباح المصباح
في زجاجة الزجاجة كانها كوكب دري يوقد من شجرة مبركة
زيتونة لا شرقية ولا غربية يكاد زيتها يضيء ولو لم تمسسه
نار نور على نور يهدي الله لنوره من يشاء ويضرب الله
الامثال للناس والله بكل شيء عليم ۝ في بيوت اذن الله ان
ترفع ويذكر فيها اسمه يسبح له فيها بالغدو والاصال ۝ رجال
لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله واقام الصلوة وايتاء
الزكوة يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والابصار ۝ ليجزيهم
الله احسن ما عملوا ويزيدهم من فضله والله يرزق من يشاء
بغير حساب ۝ والذين كفروا اعمالهم كسراب بقيعة يحسبه
الظمان ماء حتى اذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفه
حسابه والله سريع الحساب ۝ او كظلمت في بحر لجي يغشه موج

✶रु. ४/१० आ ८

और खुदा (बहुत) वुस्अत वाला और (सब कुछ) जानने वाला है ।' (३२) और जिस को ब्याह की ताकत न हो, वे पाकदामनी को अख्तियार किए रहे, यहा तक कि खुदा उन को अपने फज्ल से गनी कर दे और जो गुलाम तुम मे मुकातबत चाहे, अगर तुम उन मे (सलाहियत और) नेकी पाओ तो उन से मुकातबत कर लो और खुदा ने जो माल तुम को बख्शा है, उस मे से उन को भी दो और अपनी लौडियो को अगर वे पाकदामन रहना चाहे, तो (बे-शर्मी से) दुनिया की जिंदगी के फायदे हासिल करने के लिए बद-कारी पर मजबूर न करना और जो उन को मजबूर करेगा, तो उन (बेचारियों) के मजबूर किए जाने के बाद खुदा उन को बख्शने वाला मेहरबान है। (३३) और हमने तुम्हारी तरफ रोशन आयते नाजिल की है और जो लोग तुम से पहले गुज़र चुके है, उन की खबरे और परहेजगारो के लिए नसीहत। (३४)★

खुदा आसमानो और जमीन का नूर है। उस के नूर की मिसाल ऐसी है कि गोया एक ताक है, जिस मे चिराग है और चिराग एक कदील मे है और कदील (ऐसी साफ-शफ्फाफ है कि) गोया मोती का सा चमकता हुआ तारा है। इस मे एक मुबारक पेड का तेल जलाया जाता है, (यानी) ज़ैतून कि न पूरब की तरफ है, न पच्छिम की तरफ। (ऐसा मालूम होता है कि) उस का तेल, चाहे आग उसे न भी छूए, जलने को तैयार है, (बडी) रोशनी पर रोशनी (हो रही है)। खुदा अपने नूर से जिस को चाहता है, सीधी राह दिखाता है और खुदा (जो) मिसाले बयान फरमाता है (तो) लोगो के (समझाने के) लिए और खुदा हर चीज जानता है। (३५) (वह कदील) उन घरो मे (है) जिनके बारे मे खुदा ने इर्शाद फरमाया है कि बुलन्द किए जाए और वहा खुदा के नाम का जिक्र किया जाए (और) उन मे सुबह व शाम उस की तस्बीह करते रहे। (३६) (यानी ऐसे) लोग, जिन को खुदा के जिक्र और नमाज पढने और जकात देने से न सौदागरी गाफिल करती है, न खरीदना-बेचना, वह उस दिन से जब दिल (खौफ और घबराहट की वजह से) उलट जाएगे और आखे (ऊपर चढ जाएगी), डरते है। (३७) ताकि खुदा उन को उन के अमलो का बहुत अच्छा बदला दे और अपने फज्ल से ज्यादा भी अता करे और खुदा जिस को चाहता है, बे-शुमार रोजी देता है। (३८) और जिन लोगो ने कुफ्र किया, उन के आमाल (की मिसाल ऐसी है) जैसे मैदान मे रेत कि प्यासा उसे पानी समझे, यहा तक कि जब उस के पास आए तो उसे कुछ भी न पाए और खुदा ही को अपने पास देखे, तो वह उसे उस का हिसाब पूरा-पूरा चुका दे और

१ हजरत ने फरमाया, ऐ अली ! तीन कामो मे देर न करना—फर्ज़ नमाज़ का जब वक्त आवे, दूसरे जनाज़ा जब मौजूद हो, तीसरे राड औरत जब उस की ज़ात का मर्द मिले। जो कोई दूसरा ख़ाविंद करने को ऐब जाने उस का ईमान सलामत नही और जो लौंडी-गुलाम नेक हो यानी ब्याह देने से घमड मे न पड जाए कि तुम्हारा काम छोड दे।

औ क - ज़ुलुमातिन् फ़ी बह़्रिल् - लुज्जियिय्यग्शाहु मौजुम्-मिन् फ़ौक़िही मौजुम्मिन् फ़ौक़िही सह़ाबुन् ط ज़ुलुमातुम् - बअ्-ज़ुहा फ़ौ-क़ बअ्-ज़िन् ط इज़ा अख़्-र-ज य-दहू लम् य-कद् यराहा ط व मल्लम् यज-अ़लिल्लाहु लहू नूरन् फ़मा लहू मिन्नूर ★ (४०) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह युसब्बिहु लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वत्तैरु साफ़्फ़ातिन् ط कुल्लुन् क़द् अ़लि-म सलातहू व तस्बी-ह़हू ط वल्लाहु अ़लीमुम्-बिमा यफ़्-अ़लून (४१) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ج व इलल्लाहिल्-मसीर (४२) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह युज़्जी सह़ाबन् सुम्-म युअल्लिफ़ु बैनहू सुम्-म यज्-अ़लुहू रुकामन् फ़-त-रल्-वद् - क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही ج व युनज्जिलु मिनस्समाइ मिन् जिबालिन् फ़ीहा मिम्-ब-रदिन् फ़युसीबु बिही मय्यशाउ व यस्रिफ़ुहू अ़म् - मंय्यशाउ ط यकादु सना बर्क़िही यज़्हबु बिलअब्सार ط (४३) युक़ल्लिबुल्लाहुल्लै-ल वन्नहा-र ط, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अिब-र-तुल-लिउलिल् - अब्सार (४४) वल्लाहु ख़-ल-क़ कुल्-ल दाब्बतिम्-मिम्माइन् ج फ़मिन्हुम् मय्यम्शी अ़ला बत़्निही ج व मिन्हुम् मय्यम्शी अ़ला रिज्लैनि ج व मिन्हुम् मय्यम्शी अ़ला अर् - बअिन् ط यख़्लुक़ुल्ला-हु मा यशाउ ط इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (४५) ल - क़द् अन्जल्ना आयातिम् - मुबय्यिनातिन् ط वल्लाहु यह्दी मय्यशाउ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (४६) व यक़ूलू-न आमन्ना बिल्लाहि व बिर्रसूलि व अ-तअ्-ना सुम्-म य-त-वल्ला फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् मिम्बअ्-दि ज़ालि-क ط व मा उलाइ-क बिल्-मुअ्मिनीन (४७) व इज़ा दुअू इलल्लाहि व रसूलिही लि - यह़्कु - म बैनहुम् इज़ा फ़रीक़ुम् - मिन्हुम् मुअ्-रिज़ून (४८) व इ य्यकुल् - लहुमुल्-ह़क़्क़ु यअ्तू इलैहि मुज़्अिनीन ط (४९) अफ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुन् अमिर्ताबू अम् यख़ाफ़ू-न अंय्यह़ीफ़ल्लाहु अ़लैहिम् व रसूलुहू ط बल् उलाइ - क हुमुज़्ज़ालिमून ★ ● (५०)

مِن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِن فَوْقِهِ سَحَابٌ ظُلُمَاتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ
يَدَهُ لَمْ يَكَدْ يَرَاهَا وَمَن لَمْ يَجْعَلِ اللهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُورٍ ۝ أَلَمْ
تَرَ أَنَّ اللهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَن فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ كُلٌّ
قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ وَاللهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللهِ الْمَصِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ يُزْجِي سَحَابًا
ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهِ
وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِن جِبَالٍ فِيهَا مِن بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ
وَيَصْرِفُهُ عَن مَن يَشَاءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۝ يُقَلِّبُ
اللهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ وَاللهُ خَلَقَ
كُلَّ دَابَّةٍ مِن مَاءٍ فَمِنْهُم مَن يَمْشِي عَلَى بَطْنِهِ وَمِنْهُم مَن يَمْشِي
عَلَى رِجْلَيْنِ وَمِنْهُم مَن يَمْشِي عَلَى أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللهُ مَا يَشَاءُ إِنَّ
اللهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ لَقَدْ أَنزَلْنَا آيٰتٍ مُبَيِّنٰتٍ وَاللهُ يَهْدِي
مَن يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللهِ وَبِالرَّسُولِ وَ
أَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ مِنْهُم مِن بَعْدِ ذٰلِكَ وَمَا أُولٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝
وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُم مُعْرِضُونَ ۝
وَإِن يَكُن لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝ أَفِي قُلُوبِهِم مَرَضٌ
أَمِ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ اللهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ بَلْ أُولٰئِكَ

★ रु॰ ५/११ आ ६ ★ रु॰ ६/१२ आ १० ● सु ३/४

खुदा जल्द हिसाब करने वाला है। (३९) या (उन के आमाल की मिसाल ऐसी है) जैसे गहरे दरिया मे अधेरे, जिस पर लहर चढी आती हो (और) उस के ऊपर और लहर (आ रही हो और) उस के ऊपर बादल हो, गरज़ अधेरे ही अधेरे हो, एक पर एक (छाया हुआ), जब अपना हाथ निकाले तो कुछ न देख सके और जिस को खुदा रोशनी न दे उस को (कही भी) रोशनी नही (मिल सकती)। (४०)★

क्या तुम ने नही देखा कि जो लोग आसमानो और जमीन मे है, खुदा की तस्बीह् करते रहते है और पर फैलाए हुए जानवर भी और सब अपनी नमाज और तस्बीह् (के तरीके) जानते है और जो कुछ वे करते है (सब) खुदा को मालूम है। (४१) और आसमान और ज़मीन की बादशाही खुदा ही के लिए है और खुदा ही की तरफ लौट कर जाना है। (४२) क्या तुम ने नही देखा कि खुदा ही बादलो को चलाता है, फिर उन को आपस मे मिला देता है, फिर उन को तह्-ब-तह् कर देता है, फिर तुम देखते हो कि बादल मे से मेह् निकल (कर बरस) रहा है और आसमान मे जो (ओलो के) पहाड है, उन से ओले नाजिल करता है, तो जिस पर चाहता है, उस को बरसा देता है और जिस से चाहता है, हटा रखता है, और बादल मे जो बिजली होती है, उस की चमक आखो को (चकाचौध कर के आखो की रोशनी को) उचके लिए जाती है। (४३) खुदा ही रात और दिन को बदलता रहता है। रोशनी वालो के लिए इनमे बडी इब्रत है। (४४) और खुदा ही ने हर चलने-फिरने वाले जानदार को पानी से पैदा किया तो उन मे से कुछ ऐसे है कि पेट के बल चलते है और कुछ ऐसे है जो दो पाव पर चलते है और कुछ ऐसे है जो चार पाव पर चलते है। खुदा जो चाहता है, पैदा करता है, बेशक खुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (४५) हम ही ने रोशन आयते नाजिल की है और खुदा जिस को चाहता है, सीधे रास्ते की तरफ हिदायत करता है। (४६) और (कुछ लोग) कहते है कि हम खुदा पर और रसूल पर ईमान लाए और (उन का) हुक्म मान लिया, फिर उस के बाद उन मे से एक फिर्का फिर जाता है और ये लोग ईमान वाले ही नही है। (४७) और जब उन को खुदा और उस के रसूल की तरफ बुलाया जाता है, ताकि (अल्लाह के रसूल) उन का झगडा चुका दे, तो उन मे से एक फिर्का मुह फेर लेता है। (४८) और अगर (मामला) हक (हो और) उन को (पहुचता) हो तो उनकी तरफ फरमाबरदार हो कर चले आते है। (४९) क्या उन के दिलो मे बीमारी है या (ये) शक मे है या उन को यह डर है कि खुदा और उस का रसूल उन पर जुल्म करेंगे? (नही), बल्कि ये खुद जालिम है। (५०)★●

★रु ५/११ आ ६ ★रु ६/१२ आ १० ●सु ३/४

इन्नमा का-न कौलल्-मुअ्मिनी-न इजा दुअू इलल्लाहि व रसूलिही लि-यह्कु-म बैनहुम् अय्यकूलू समिअ्-ना व अ-तअ्-ना ط व उलाइ-क हुमुल्-मुफ्लिहून (५१) व मय्युतिअिल्ला-ह व रसू-लहू व यरुशल्ला-ह व यत्तक-हि फउलाइ-क हुमुल्फाइजून (५२) व अक्समू बिल्लाहि जह् - द ऐमानिहिम् ल - इन् अ-मर्तहुम् ल-यख्रुजुन्-न ط कुल् ला तुक्सिमू ج ता-अतुम् मअ्-रूफ़तुन् ط इन्नल्ला - ह खबीरुम् - बिमा तअ्-मलून (५३) कुल् अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल ج फ़-इन् त - वल्लौ फ-इन्नमा अलैहि मा हुम्मि-ल व अलैकुम् मा हुम्मिल्तुम् ط व इन् तुतीअूहु तह्तदू ط व मा अ-लर्रसूलि इल्लल्-बलागुल्-मुबीन (५४) व-अ-दल्-लाहुल्-लजी-न आमनू मिन्कुम् व अमिलुस्-सालिहाति ल-यस्-तख्-लिफन्-न-हुम् फिल्अर्जि क-मस्-तख्-ल-फल्-लजी-न मिन् कब्लिहिम् व लयुमक्किनन्-न लहुम् दीनहुमुल्लजिर्-तज़ा लहुम् व लयुबद्दिलन्नहुम् मिम्बअ्-दि खौफिहिम् अम्-नन् ط यअ्-बुदूननी ला युश्रिकू-न बी शैअन् ط व मन् क-फ-र बअ्-द ज़ालि-क फउलाइ-क हुमुल्-फासिकून (५५) व अकीमुस्सला-त व आतुज्जका-त व अतीअुर्रसू-ल ल-अल्लकुम् तुर्-हमून (५६) ला तह्-सबन्नल्लजी-न क-फरू मुअ्-जिजी-न फिल्अर्जि ج व मअ्-वा-हुमुन्नारु ط व ल-बिअ्सल्-मसीर ★ (५७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-यस्तअ्-ज़िन्-कुमुल्लज़ी-न म-ल-कत् ऐमानुकुम् वल्लज़ी-न लम् यब्लुगुल्-हुलु-म मिन्कुम् सला - स मर्रातिन् ط मिन् कब्लि सलातिल्-फज्रि व ही-न त-ज-अू-न सियाबकुम् मिनज्जहीरति व मिम्बअ्-दि सलातिल् अिशाइ ط सलासु औरातिल्लकुम् ط लै-स अलैकुम् व ला अलैहिम् जुनाहुम्-बअ्-दहुन्-न ط तव्वाफू-न अलैकुम् बअ् - जुकुम् अला बअ्-जिन् ط कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल् - आयाति ط वल्लाहु अलीमुन् हकीम (५८)

قد افلح ١٨ — ٣٨٥ — النور ٢٤

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝
وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ
طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ
وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ وَعَدَ
اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا
اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى
ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ
بِىْ شَيْئًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ لَا
تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَ
لَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ
صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ
صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۫ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ

★रु ७/१३ आ ७

मोमिनो की तो यह बात है कि जब खुदा और उस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाए ताकि वे उन मे फ़ैसला करे, तो कहे कि हमने (हुक्म) सुन लिया और मान लिया और यही लोग फ़लाह (कामियाबी) पाने वाले है। (५१) और जो शख्स खुदा और उस के रसूल की फ़रमाबरदारी करेगा और उस से डरेगा, तो ऐसे ही लोग मुराद को पहुचने वाले है। (५२) और (ये) खुदा की सख्त-सख्त कस्मे खाते है कि अगर तुम उन को हुक्म दो तो (सब घरो से) निकल खड़े हो, कह दो कि कस्मे मत खाओ, पसदीदा फरमाबरदारी (चाहिए)। बेशक खुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है। (५३) कह दो कि खुदा की फरमाबरदारी करो और (खुदा के) रसूल के हुक्म पर चलो। अगर मुह मोडोगे तो रसूल पर (उस चीज का अदा करना) है जो उन के जिम्मे है और तुम पर (उस चीज का अदा करना) है जो तुम्हारे जिम्मे है और अगर तुम उन के फरमान पर चलोगे तो सीधा रास्ता पा लोगे और रसूल के जिम्मे तो साफ़-साफ़ (खुदा के अह्काम का) पहुचा देना है। (५४) जो लोग तुम मे से ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन से खुदा का वायदा है कि उनको मुल्क का हाकिम बना देगा, जैसा उनसे पहले लोगो को हाकिम बनाया था और उन के दीन को उनके लिए पसन्द किया है मजबूत व पायदार करेगा और खौफ के बाद उनको अम्न बख्शेगा। वे मेरी इबादत करेगे और मेरे साथ किसी चीज को शरीक न बनाएगे और जो इस के बाद कुफ्र करे तो ऐसे लोग बद-किरदार है। (५५) और नमाज पढते रहो और जकात देते रहो और (खुदा के) पैगम्बर के फरमान पर चलते रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (५६) (और) ऐसा ख्याल न करना कि काफिर लोग (हम को) जमीन मे मग्लूब कर देगे, (ये जा ही कहा सकते है) इन का ठिकाना दोजख है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (५७)★

मोमिनो! तुम्हारे गुलाम-लौडिया और जो बच्चे तुम मे से बुलूग को नही पहुचे, (बालिग नही हुए), तीन बार (यानी तीन वक्तो मे) तुम से इजाजत लिया करे। (एक तो) सुबह की नमाज से पहले और (दूसरे गर्मी की) दोपहर को, जब तुम कपडे उतार देते हो और (तीसरे) इशा की नमाज़ के बाद। (ये) तीन (वक्त) तुम्हारे पर्दे (के) है। इन के (आगे-) पीछे (यानी दूसरे वक्तो मे) न तुम पर कुछ गुनाह है और न उन पर कि (काम-काज के लिए) एक-दूसरे के पास आते-रहते हो। इस तरह खुदा अपनी आयते खोल-खोल कर बयान फरमाता है और खुदा बड़ा इल्म वाला (और) बड़ा हिक्मत वाला है। (५८) और जब तुम्हारे लड़के बालिग हो जाए तो उन

★रु ७/१३ आ ७

व इज़ा ब-ल-गल्-अत्फालु मिन्कुमुल्-हुलु-म फ़ल्-यस्तअ्ज़िनू क-मस्-तअ्-ज़-नल्-लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ط कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ط वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (५९) वल्कवाअ़िदु मिनन्निसाइल्लाती ला यर्जू-न निकाहन् फलै-स अलैहिन्-न जुनाहुन् अय्य-जअ्-न सियाबहुन्-न ग़ै-र मुतबर्रिजातिम्-बिज़ीनतिन् ط व अय्यस्तअ्-फिफ्-न ख़ैरुल्लहुन्-न ط वल्लाहु समीअुन् अलीम (६०) लै-स अ़लल्-अअ्-मा ह-र-जु व्-व ला अ़लल्-अअ्-रजि ह-र-जु व्-व ला अ़लल्-मरीज़ि ह-र-जु व्-व ला अ़ला अन्फुसिकुम् अन् तअ्कुलू मिम्-बुयूतिकुम् औ बुयूति आबाइकुम् औ बुयूति उम्महातिकुम् औ बुयूति इख़्वानिकुम् औ बुयूति अ-ख़-वातिकुम् औ बुयूति अअ्-मामिकुम् औ बुयूति अम्मातिकुम् औ बुयूति अख़्-वालिकुम् औ बुयूति ख़ालातिकुम् औ मा म-लक्तुम् मफाति-हहू औ सदीकिकुम् ط लै-स अलैकुम् जुनाहुन् अन् तअ्कुलू जमीअन् औ अश्ताततन् ط फ-इज़ा द-ख़ल्तुम् बुयूतन् फ़-सल्लिमू अ़ला अन्फुसिकुम् तहिय्य-तम्-मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुबा-र-क-तन् तय्यि-ब-तन् ط कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति ल-अल्लकुम् तअ्-क़िलून ★ (६१) इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रसूलिही व इज़ा कानू म-अहू अला अम्रिन् जामिअिल्लम् यज़्हबू हत्ता यस्तअ्ज़िनूहु ط इन्नल्लज़ी-न यस्तअ्ज़िनू-न-क उलाइकल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्लाहि व रसूलिही ج फइज़स्तअ्-ज़-नू-क लिबअ्-ज़ि शअ्निहिम् फ़अ्-ज़ल्लि-मन् शिअ्-त मिन्हुम् वस्तग्फ़िर् लहुमुल्ला-ह ط इन्नल्ला-ह गफूरुर्-रहीम (६२)

بعدهن طوافون عليكم بعضكم على بعض كذلك يبين الله
لكم الايت والله عليم حكيم ﴿٥٨﴾ واذا بلغ الاطفال منكم الحلم
فليستاذنوا كما استاذن الذين من قبلهم كذلك يبين الله لكم
ايته والله عليم حكيم ﴿٥٩﴾ والقواعد من النساء التي لا يرجون
نكاحا فليس عليهن جناح ان يضعن ثيابهن غير متبرجت
بزينة وان يستعففن خير لهن والله سميع عليم ﴿٦٠﴾ ليس
على الاعمى حرج ولا على الاعرج حرج ولا على المريض حرج
ولا على انفسكم ان تاكلوا من بيوتكم او بيوت ابائكم او بيوت
امهتكم او بيوت اخوانكم او بيوت اخوتكم او بيوت اعمامكم او
بيوت عمتكم او بيوت اخوالكم او بيوت خلتكم او ما ملكتم مفاتحه
او صديقكم ليس عليكم جناح ان تاكلوا جميعا او اشتاتا فاذا
دخلتم بيوتا فسلموا على انفسكم تحية من عند الله مبركة
طيبة كذلك يبين الله لكم الايت لعلكم تعقلون ﴿٦١﴾ انما
المؤمنون الذين امنوا بالله ورسوله واذا كانوا معه على امر
جامع لم يذهبوا حتى يستاذنوه ان الذين يستاذنونك اولئك
الذين يؤمنون بالله ورسوله فاذا استاذنوك لبعض شانهم
فاذن لمن شئت منهم واستغفر لهم الله ان الله غفور

★रु ८/१४ आ ४

को भी इसी तरह इजाज़त लेनी चाहिए, जिस तरह उन से अगले (यानी बडे आदमी) इजाजत हासिल करते रहे है, इस तरह ख़ुदा तुम से अपनी आयते खोल-खोल कर बयान फरमाता है और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (५६) और बडी उम्र की औरते, जिन को निकाह की उम्मीद नही रही और वे कपडे उतार (कर सर नगा कर) लिया करे, तो उन पर कुछ गुनाह नही बशर्ते कि अपनी जीनत की चीजे न ज़ाहिर करे और अगर इस से भी बचे तो (यह) उन के हक मे बेहतर है और ख़ुदा सुनता-जानता है। (६०) न तो अधे पर कुछ गुनाह है और न लगडे पर और न बीमार पर और न ख़ुद तुम पर कि अपने घरो से खाना खाओ या अपने बापो के घरो से या अपनी मांओ के घरो से या भाइयो के घरो से या अपनी बहनो के घरो से या अपने चचाओ के घरो से या अपनी फूफियो के घरो से या अपने मामुओ के घरो से या अपनी खालाओ के घरो से या उस घर से, जिस की कुजिया तुम्हारे हाथ मे हो या अपने दोस्तो के घरो से (और इस का भी) तुम पर कुछ गुनाह नही कि सब मिल कर खाना खाओ या अलग-अलग। और जब घरो मे जाया करो तो अपने (घर वालो) को सलाम किया करो। (यह) ख़ुदा की तरफ़ से मुबारक और पाकीजा तोहफा है। इस तरह ख़ुदा अपनी आयते खोल-खोल कर बयान फरमाता है, ताकि तुम ममझो। (६१)★

मोमिन तो वे है जो ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाए और जब कभी ऐसे काम के लिए, जो जमा हो कर करने का हो, पैगम्बरे ख़ुदा के पास जमा हो, तो उन से इजाजत लिए बगैर चले नही जाते। ऐ पैगम्बर! जो लोग तुम से इजाजत हासिल करते है, वही ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान रखते है, सो जब ये लोग तुम से किसी काम के लिए इजाजत मागा करे, तो उन मे मे जिसे चाहा करो, इजाजत दे दिया करो और उन के लिए ख़ुदा से बख्शिश मागा करो। कुछ शक नही कि खदा बख्शने वाला मेहरबान है। (६२) मोमिनो! पैगम्बर के बुलाने को ऐमा ख्याल न

★रु ८/१४ आ ४

ला तज्अ़लू दुआ़अर्रसूलि बैनकुम् कदुआ़इ बअ़्-जिकुम् बअ़्-जन् ط क़द् यअ़्-लमुल्लाहुल्लज़ी-न य-त-सल्ललू-न मिन्कुम् लिवाज़न् ج फ़ल्-यह़्-ज़रिल्-लज़ी-न युख़ालिफ़ू-न अ़न् अम्रिही अन् तुसीबहुम् फ़ित्-नतुन् औ युसीबहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (६३) अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط क़द् यअ़्-लमु मा अन्तुम् अ़लैहि ط व यौ-म युर्जअ़ू-न इलैहि फ़युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू ط वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ★(६४)

رَّحِيْمٌ ۝ لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ
يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ
عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اَلَآ اِنَّ
لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ
يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝
سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ۝
الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۝ وَاتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ
لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكُ اِفْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ
اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۚ وَقَالُوْۤا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا
فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا
الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْلَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ

२५ सूरतुल्-फ़ुर्क़ानि ४२

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३९११ अक्षर, ९०६ शब्द, ७७ आयते और ६ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

तबारकल्लज़ी नज्ज-लल्-फ़ुर्क़ा-न अ़ला अ़ब्दिही लि-यकू-न लिल्आ़लमी-न नज़ीरा ला (१) अल्लज़ी लहू मुल्कुस्-समावाति वल्अर्ज़ि व लम् यत्तख़िज़् व-ल-दव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व ख़-ल-क कुल्-ल शैइन् फ़-कद्-द-रहू तक़्दीरा (२) वत्तख़ज़ू मिन् दूनिही आलिहतल्ला यख़्लुक़ू-न शैअव्-व हुम् युख़-लक़ू-न व ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् ज़र्रव्-व ला नफ़्-अ़व्-व ला यम्लिकू-न मौतंव-व ला ह़यातंव-व ला नुशूरा (३) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला इफ़्कुनिफ़्तराहु व अ-आनहू अ़लैहि क़ौमुन् आख़रू-न ج फ़-कद् जाऊ ज़ुल्मव्वज़ूरा ج (४) व क़ालू असातीरुल्-अव्वलीनक्-त-त-बहा फ़हि-य तुम्ला अ़लैहि बुक-र-तव्-व असीला (५) कुल् अन्-ज-लहुल्लज़ी यअ़्-लमुस्सिर-र फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط इन्नहू का-न ग़फ़ूरर्-रह़ीमा (६) व क़ालू मालिहाज़र्रसूलि यअ्-कुलुत्तआ़-म व यम्शी फ़िल्अस्वाक़ि ط लौला उन्ज़ि-ल इलैहि म-ल-कुन् फ़-यकू-न म-अ़हू नज़ीरा ला (७)

★रु ९/१५ आ ३;•मु. अ़ि मु त क़. १०

करना जैसा तुम आपस मे एक दूसरे को बुलाते हो। बेशक खुदा को वे लोग मालूम है, जो तुम मे से आख बचा कर चल देते है तो जो लोग उन के हुक्म की मुखालफत करते हैं, उन को डरना चाहिए कि (ऐसा न हो कि) उन पर कोई आफत पड़ जाए या तक्लीफ देने वाला अजाब नाज़िल हो। (६३) देखो जो कुछ आसमानो और ज़मीन मे है, सब खुदा ही का है। जिस (ढग) पर तुम हो, वह उसे जानता है और जिस दिन लोग उस की तरफ लौटाए जाएगे तो जो अमल वे करते रहे, वह उन को बता देगा और खुदा हर चीज को जानता है। (६४)★

२५ सूरः फ़ुर्क़ान ४२

सूर. फुर्कान मक्की है और इस मे ७७ आयते और छ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (खुदा-ए-अज्ज़ व जल्ल) बहुत ही बरकत वाला है, जिस ने अपने बन्दे पर कुरआन नाजिल फरमाया, ताकि दुनिया वालो को हिदायत करे। (१) वही कि आसमानो और ज़मीन की बादशाही उसी की है और जिस ने (किसी को) बेटा नही बनाया और जिस का बादशाही मे कोई शरीक नही और जिस ने हर चीज़ को पैदा किया, फिर उस का एक अन्दाजा ठहराया। (२) और (लोगो ने) उस के सिवा और माबूद बना लिए है, जो कोई चीज़ भी पैदा नही कर सकते और खुद पैदा किए गये है और न अपने नुक्सान और नफा का कुछ अख्तियार रखते है और न मरना उन के अख्तियार मे है और न जीना और न (मर कर) उठ खडे होना। (३) और काफिर कहते है कि यह (कुरआन) मनगढत बाते है, जो इस (रिसालत के दावेदार) ने बना ली है और लोगो ने इस में उस की मदद की है। ये लोग (ऐसा कहने से) जुल्म और झूठ पर (उतर) आए है। ∴(४) और कहते है कि यह पहले लोगो की कहानिया है, जिन को उस ने जमा कर रखा है। और वह सुबह व शाम उस को पढ-पढ कर सुनायी जाती है। (५) कह दो कि उस को उस ने उतारा है जो आसमानो और ज़मीन की छिपी बातो को जानता है। बेशक वह बख्शने वाला मेहरबान है। (६) और कहते है, यह कैसा पैगम्बर है कि खाना खाता है और बाज़ारो मे चलता-फिरता है, इस पर कोई फरिश्ता क्यो नाजिल नही किया गया कि इस के साथ हिदायत करने को रहता। (७) या

★रु ६/१५ आ ३ ∴ म अि म त क १०

औ युल्क़ा इलैहि कन्ज़ुन् औ तकूनु लहू जन्नतुय्यअ्कुलु मिन्हा, ط व
कालज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम्-मस्हूरा (८) उन्ज़ुर्
कै-फ़ ज़-रबू ल-कल्-अम्सा-ल फ़ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअू-न सबीला ★(९)
तबारकल्लज़ी इन् शा-अ ज-अ-ल ल-क ख़ैरम्मिन् ज़ालि-क जन्नातिन् तज्री मिन्
तह़्तिहल्-अन्हारु لا व यज्-अल् ल-क
कुसूरा (१०) बल् कज़्ज़बू बिस्साअ़ति
व अअ्-तद्-ना लिमन् कज़्ज़-ब बिस्साअ़ति
सअ़ीरा ج (११) इज़ा र-अत्हुम् मिम्-
मकानिम्-बअ़ीदिन् समिअू लहा त-ग़य्युज़ंव्-व
ज़फ़ीरा (१२) व इज़ा उल्कू मिन्हा मकानन्
ज़य्यिकम्-मुक़र्रनी-न दऔ हुनालि-क सुबूरा ط
(१३) ला तद्अुल्-यौ-म सुबूरंव्वाहिदंव्वद्अू
सुबूरन् कसीरा (१४) कुल्
अ ज़ालि-क ख़ैरुन् अम् जन्नतुल्-ख़ुल्दिल्-
लती वुअिदल्-मुत्तक़ू-न ط कानत् लहुम्
जज़ाअंव्-व मसीरा (१५) लहुम् फ़ीहा
मा यशाऊ-न ख़ालिदी-न ط का-न अला
रब्बि-क वअ्-दम्-मस्ऊला (१६) व यौ-म यह्शुरुहुम् व मा यअ्-बुदू-न मिन्
दूनिल्लाहि फ़-यकूलु अ अन्तुम् अज़्-लल्तुम् अिबादी हाउला-इ अम् हुम्
ज़ल्लुस्सबील ط (१७) क़ालू सुब्हान-क मा का-न यम्बग़ी लना अन् नत्तख़ि-ज़
मिन् दूनि-क मिन् औलिया-अ व लाकिम्-मत्तअ्-तहुम् व आबा-अहुम् हत्ता
नसुज़्ज़िक्-र ج व कानू क़ौमम्बूरा (१८) फ़-क़द् कज़्ज़बूकुम् बिमा तक़ूलू-न لا
फ़मा तस्ततीअू-न सर्फंव्-व ला नस्रन् ج व मय्यज़्लिम् मिन्कुम् नुज़िक़्हु अज़ाबन्
कबीरा (१९) व मा अर्सलना क़ब्ल-क मिनल्-मुर्सली-न इल्ला इन्नहुम्
ल-यअ्कुलूनत्-तआ-म व यम्शू-न फ़िल्अस्वाक़ि ط व ज-अल्ना बअ्-ज़कुम्
लिबअ्-ज़िन फ़ित्-न-तन् ط अ-तस्बिरू-न ج व का-न रब्बु-क बसीरा ★(२०)

قد افلح ١٨ — ٣٨٨ — الفرقان ٢٥

فيكون معه نذيرا ۝ او يلقى اليه كنز او تكون له جنة يأكل منها و
قال الظلمون ان تتبعون الا رجلا مسحورا ۝ انظر كيف ضربوا لك
الامثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا ۝ تبرك الذي ان شاء
جعل لك خيرا من ذلك جنت تجري من تحتها الانهر ويجعل
لك قصورا ۝ بل كذبوا بالساعة واعتدنا لمن كذب بالساعة سعيرا ۝
اذا رأتهم من مكان بعيد سمعوا لها تغيظا وزفيرا ۝ واذا القوا منها
مكانا ضيقا مقرنين دعوا هنالك ثبورا ۝ لا تدعوا اليوم ثبورا
واحدا وادعوا ثبورا كثيرا ۝ قل اذلك خير ام جنة الخلد التي
وعد المتقون كانت لهم جزاء ومصيرا ۝ لهم فيها ما يشاءون
خلدين كان على ربك وعدا مسئولا ۝ ويوم يحشرهم وما يعبدون
من دون الله فيقول ءانتم اضللتم عبادي هؤلاء ام هم ضلوا
السبيل ۝ قالوا سبحنك ما كان ينبغي لنا ان نتخذ من دونك
من اولياء ولكن متعتهم واباءهم حتى نسوا الذكر وكانوا
قوما بورا ۝ فقد كذبوكم بما تقولون فما تستطيعون صرفا
ولا نصرا ومن يظلم منكم نذقه عذابا كبيرا ۝ وما ارسلنا
قبلك من المرسلين الا انهم ليأكلون الطعام ويمشون في الاسواق
وجعلنا بعضكم لبعض فتنة اتصبرون وكان ربك بصيرا ۝

★रु १/१६ आ ९ ★रु २/१७ आ ११

उस की तरफ (आसमान से) खजाना उतारा जाता या उस का कोई बाग होता कि उसमे से खाया करता और ज़ालिम कहते है कि तुम तो एक जादू किए हुए शख्स की पैरवी करते हो। (८) (ऐ पैगम्बर!) देखो तो ये तुम्हारे बारे मे किस-किस तरह की वाते करते है, सो गुमराह हो गये और रास्ता नही पा सकते ★ (९) वह (खुदा) बहुत बरकत वाला है, जो अगर चाहे, तो तुम्हारे लिए इस से बेहतर (चीजे) बना दे, (यानी) बाग, जिन के नीचे नहरे बह रही हो, और तुम्हारे लिए महल बना दे। (१०) बल्कि ये तो कियामत ही को झुठलाते है और हमने कियामत के झुठलाने वालो के लिए दोजख तैयार कर रखी है। (११) जिस वक्त वह उन को दूर से देखेगी, तो (गजबनाक हो रही होगी और ये) उस के जोशे (गजब) और चीखने-चिल्लाने को सुनेगे। (१२) और जब ये दोजख की किसी तंग जगह मे (जजीरो मे) जकड कर डाले जाएगे तो वहा मौत को पुकारेंगे। (१३) आज एक ही मौत को न पुकारो, बहुत-सी मौतो को पुकारो। (१४) पूछो कि यह बेहतर है या हमेशा की जन्नत, जिस का परहेज़गारो से वायदा है। यह उन (के अमलो का) बदला और रहने का ठिकाना होगा। (१५) वहा जो चाहेंगे, उन के लिए (मयस्सर) होगा, हमेशा उस मे रहेगे। यह वायदा खुदा को (पूरा करना) जरूरी है और इस लायक है कि माग लिया जाए। (१६) और जिस दिन (खुदा) इन को और उन को जिन्हे ये खुदा के सिवा पूजते है, जमा करेगा, तो फरमाएगा, क्या तुम ने मेरे इन बन्दो को गुमराह किया था या ये खुद गुमराह हो गये थे। (१७) वे कहेगे, तू पाक है, हमे यह बात मुनासिब न थी कि तेरे सिवा औरो को दोस्त बनाते, लेकिन तू ने ही उन को और उन के बाप-दादा को बरतने की नेमते दी, यहा तक कि वे तेरी याद को भूल गये और ये हलाक होने वाले लोग थे। (१८) तो (काफिरो!) उन्हो ने तो तुम को तुम्हारी बात मे झुठला दिया पस (अब) तुम (अजाब को) न फेर सकते हो। न (किसी से) मदद ले सकते हो। और जो शख्स तुम मे से जुल्म करेगा, हम उस को बडे अजाब का मजा चखाएंगे। (१९) और हमने तुम से पहले जितने पैगम्बर भेजे है, सब खाना खाते थे और बाज़ारो मे चलते-फिरते थे और हम ने तुम्हे एक-दूसरे के लिए आज़माइश बनाया। क्या तुम सब्र करोगे और तुम्हारा परवरदिगार तो देखने वाला है। (२०) ★

★रु १/१६ आ ९ ★रु २/१७ आ ११

उन्नीसवां पारः व क़ालल्लज़ी-न

सूरतुल्-फ़ुर्क़ानि आयात २१ से ७७

व क़ालल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना लौ ला उन्ज़ि-ल अलैनल्-मलाइकतु औ नरा रब्बना ط ल-क़दिस्तक्बरू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् व अतौ अुतुव्वन् कबीरा (२१) यौ-म यरौनल्-मलाइ-क-त ला बुश्रा यौमइज़िल्-लिल्मुज्रिमी-न व यक़ूलू-न हिज्रम्-मह्जूरा (२२) व क़दिम्ना इला मा अमिलू मिन् अ-मलिन् फ़-ज-अल्नाहु हबा-अम्-मन्सूरा (२३) अस-हाबुल्-जन्नति यौमइज़िन् खैरुम्-मुस्त-क़र्-रव्-व अह्सनु मक़ीला (२४) व यौ-म त-शक़्क़क़ुस्समाउ बिल्ग़मामि व नुज़्ज़िलल्-मलाइकतु तन्ज़ीला (२५) अल्मुल्कु यौमइज़ि-निल्-हक़्क़ु लिर्रह्मानि ط व का-न यौमन् अ-लल्-काफ़िरी-न असीरा (२६) व यौ-म य-अज़्ज़ुज़्ज़ालिमु अला यदैहि यक़ूलु यालैतनित्तख़ज़्तु म-अर्रसूलि सबीला (२७) या वैलता लै-तनी लम् अत्तख़िज़् फ़ुलानन् ख़लीला (२८) ल-क़द् अ-ज़ल्लनी अनिज़्ज़िक्रि बअ्-द इज़् जा-अनी ط व कानश्शैतानु लिल्इन्सानि ख़ज़ूला (२९) व क़ालर्रसूलु या रब्बि इन्-न क़ौमित्त-ख़ज़ू हाज़ल्-क़ुर्आ-न मह्जूरा (३०) व कज़ालि-क ज-अल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अदुव्वम्मिनल्-मुज्रिमी-न ط व कफ़ा बिरब्बि-क हादियव्-व नसीरा (३१) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला नुज़्ज़ि-ल अलैहिल्-क़ुर्आनु जुम-ल-तव्वाहि-द-तन् ج कज़ालि-क ج लिनुसब्बि-त बिही फ़ुआद-क व रत्तल्नाहु तर्तीला (३२) व ला यअ्तून-क बिम-सलिन् इल्ला जिअ्ना-क बिल्हक़्क़ि व अह्-स-न तफ़्सीरा ط (३३) अल्लज़ी-न युह्शरू-न अला वुजूहिहिम् इला जहन्न-म ل उलाइ-क शर्रुम्-मकानव्-व अ-ज़ल्लु सबीला ★ (३४) व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब व ज-अल्ना म-अहू अख़ाहु हारू-न वज़ीरा ج (३५) फ़क़ुल्नज़्हबा इलल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना ط फ़-दम्मर्नाहुम् तद्मीरा ط (३६)

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰئِكَةُ أَوْ
نَرٰى رَبَّنَا لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا ۝ يَوْمَ
يَرَوْنَ الْمَلٰئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجْرًا
مَحْجُورًا ۝ وَقَدِمْنَا إِلٰى مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَاءً مَنْثُورًا ۝
أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ۝ وَيَوْمَ
تَشَقَّقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰئِكَةُ تَنْزِيلًا ۝ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ
لِلرَّحْمٰنِ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِينَ عَسِيرًا ۝ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ
عَلٰى يَدَيْهِ يَقُولُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۝ يٰوَيْلَتٰى
لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ۝ لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ
جَاءَنِي وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ۝ وَقَالَ الرَّسُولُ يٰرَبِّ
إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هٰذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ
نَبِيٍّ عَدُوًّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝ وَقَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً كَذٰلِكَ لِنُثَبِّتَ
بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيلًا ۝ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ
وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ۝ الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلٰى وُجُوهِهِمْ إِلٰى جَهَنَّمَ
أُولٰئِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ وَ
جَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هٰرُونَ وَزِيرًا ۝ فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ

∴मु अि मु ता ख़ १२ ★रु ३/१ आ १४

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नही रखते, कहते हैं कि हम पर फरिश्ते क्यो न नाजिल किये गये या हम आख से अपने परवरदिगार को देख ले। ये अपने ख्याल मे बडाई रखते है और (इसी वजह से) बडे सरकश हो रहे है। (२१) जिस दिन ये फरिश्तो को देखेंगे, उस दिन गुनाहगारो के लिए कोई खुशी की बात नही होगी और कहेगे (खुदा करे तुम) रोक लिए (और वद कर दिए) जाओ।[1] (२२) और जो उन्हो ने अमल किए होगे, हम उन की तरफ मुतवज्जह होंगे तो उनको उडती खाक कर देगे।(२३) उस दिन जन्नत वालो का ठिकाना भी वेहतर होगा और आराम की जगह भी खूब होगी। (२४) और जिस दिन आसमान वादल के साथ फट जाएगा[2] और फरिश्ते नाज़िल किए जाएगे। (२५) उस दिन सच्ची वादशाही खुदा ही की होगी और वह दिन काफिरो पर (सख्त) मुश्किल होगा। (२६) और जिस दिन (अजाम से बे-ख़बर) जालिम अपने हाथ काट-काट खाएगा (और) कहेगा कि ऐ काश ! मैं ने पैगम्बर के साथ राम्ता अपनाया होता। (२७) हाय शामत ! काश ! मैं ने फ्ला शख्स को दोस्त न बनाया होता। (२८) उस ने मुझ को नसीहत (की किताव) के मेरे पास आने के वाद बहका दिया और शैतान इसान को वक्त पर दगा देने वाला है। (२९) और पैगम्बर कहेगे कि ऐ परवरदिगार ! मेरी कौम ने इस कुरआन को छोड रखा था।[3] (३०) और इसी तरह हमने गुनाहगारो मे से हर पैगम्बर का दुश्मन बना दिया और तुम्हारा परवरदिगार हिदायत देने और मदद करने को काफी है। (३१) और काफिर कहते है कि इस पर कुरआन एक ही बार क्यो नही उतारा गया,∵इस तरह∴(धीरे-धीरे) इसलिए (उतारा गया) कि इस से तुम्हारे दिल को कायम रखे और (इसी वास्ते) हम उस को ठहर-ठहर कर पढते रहे है। (३२) और ये लोग तुम्हारे पास जो (एतराज की) बात लाते है, हम तुम्हारे पास सही और खूब बेहतर जवाब भेज देते है। (३३) जो लोग अपने मुहो के बल दोजख़ की तरफ जमा किए जाएगे, उन का ठिकाना भी वुरा है और वे रास्ते से भी बहके हुए है। (३४)★

और हमने मूसा को किताब दी और उन के भाई हारून को मददगार बना कर उन के साथ मिला दिया। (३५) और कहा कि दोनो उन लोगो के पास जाओ, जिन्हो ने हमारी आयतो को झुठलाया। (जव झुठलाने पर अडे रहे) तो हमने उन को हलाक कर डाला। (३६) और नूह की

---

१ यानी खुदा तुम से पनाह मे रखे। अरवो की आदत है कि जव उन मे से किसी पर कोई सख्ती और आफत व बला नाज़िल होती है, तो कहते है 'हिज-रम मह्जूरा' जैसे हम कहते है कि ख़ुदा की पनाह।

२ यानी आसमान के फटने के साथ वह वदली भी फट जाएगी, जो आसमान और लोगो के दर्मियान है। कुछ लोगो ने कहा कि आसमान फट जाएगा, इस हाल मे कि उस पर वादल होगा। कुछ लोगो ने कहा कि आसमान वादल की वजह से फट जाएगा यानी वदली ज़ाहिर होगी और उस की वजह से आसमान फट जाएगा।

३ प्यारे नवी सल्ल० कियामत के दिन खुदा से शिकायत करेंगे कि मेरे परवरदिगार ! मेरी कौम ने कुरआन को छोड दिया। छोड देने की कई शक्लें हैं—इस को न मानना और इस पर ईमान न लाना भी छोड देना है। इस मे गौर न करना और सोच-समझ कर न पढना भी छोड देना है। इस के हुक्मो का न मानना और इस की मना की हुई चीज़ो से न रुकना भी छोड देना है। कुरआन की परवाह न कर के दूसरी चीज़ो जैसे बेहूदा नावेलो दीवानो, लग्व वातो, खेल-तमाशो, राग व रग मे लगा रहना भी छोड देना है। अफसोस है कि आजकल के मुसल-मान कुरआन की तरफ से निहायत गाफिल हो रहे है। उस के पढने-सोचने-समझने और हिदायतो से फायदा उठाने की तरफ तवज्जोह नही करते और यह खुल्लम-खुल्ला कुरआन मजीद का छोडना है। अल्लाह तआला उन

(शेष पृष्ठ ५७७ पर)

∵मु. अ़ि मु त क. ७ ★रु ३/१ आ १४

व क़ौ-म नूहिल्लम्मा कज़्ज़बुर्रुसु-ल अग्-रक़्नाहुम् व ज-अ़ल्नाहुम् लिन्नासि आ-य-तन्ط व अअ्-तद्ना लिज़्ज़ालिमी-न अ़ज़ाबन् अलीमा ج (३७) व आ़दव्-व समू-द व अस्हाबर्रस्सि व कुरूनम्-बै-न ज़ालि-क कसीरा (३८) व कुल्लन् ज-रब्ना लहुल्-अम्सा-ल ز व कुल्लन् तब्बर्ना तत्बीरा (३९) व ल-क़द् अतौ अ-लल्-क़र्यतिल्लती उम्ति-रत् म-त-रस्सौइ ط अ-फ-लम् यकूनू यरौनहा ج बल् कानू ला यरजू-न नुशूरा (४०) व इज़ा रऔ-क इंय्यत्तख़िज़ू-न-क इल्ला हुज़ुवा ط अहाज़ल्लज़ी ब-अ़-सल्लाहु रसूला (४१) इन् का-द लयुज़िल्लुना अ़न् आलिहतिना लौला अन् स़-बर्ना अ़लैहा ط व सौ-फ़ यअ्लमू-न ही-न यरौनल्-अ़ज़ा-ब मन् अ-ज़ल्लु सबीला (४२) अ-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इलाहहू हवाहु ط अ-फ-अन्-त तकूनु अ़लैहि वकीला ला (४३) अम् तह्सबु अन्-न अक्स-रहुम् यस्मअू-न औ यअ्-क़िलू-न ط इन् हुम् इल्ला कल्-अन्आमि बल् हुम् अ-ज़ल्लु सबीला ★ (४४) अ-लम् त-र इला रब्बि-क कै-फ मद्दज़्ज़िल्-ल ج व लौ शा-अ ल-ज-अ-लहू साकिनन् ج सुम्-म ज-अ़ल्नश्शम्-स अ़लैहि दलीला ला (४५) सुम्-म क़-बज़्नाहु इलैना क़ब्ज़ंय्यसीरा (४६) व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल लिबासंव्वन्नौ-म सुबातंव्-व ज-अ़-लन्-नहा-र नुशूरा (४७) व हुवल्लज़ी अर्स-लर्रिया-ह़ बुश्रम्-बै-न यदै रह़्मतिही ج व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ माअन् तहूरल्- ला (४८) -लिनुह़्यि-य बिही बल्द-तम्-मैतंव्-व नुस्क़ि-यहू मिम्मा ख़-लक़्ना अन्आमंव्-व अनासिय्-य कसीरा (४९) व ल-क़द् स़र्रफ़्नाहु बैनहुम् लियज़्ज़क्करू صلے फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा (५०) व लौ शिअ्ना ल-ब-अ़स्ना फ़ी कुल्लि क़र-यतिन् नज़ीरा صلے (५१) फ़ला तुतिअ़िल्-काफ़िरी-न व जाहिद्हुम् बिही जिहादन् कबीरा (५२)

وقال الذين ١٩ — ٤٩٠ — الفرقان ٢٥

كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ۝ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ
اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ وَّ
عَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝ وَكُلًّا ضَرَبْنَا
لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ
مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝ وَاِذَا
رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝ اِنْ
كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ
حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ
هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۝ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ
اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۭ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلٰى
رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَاۗءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ
دَلِيْلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ
الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ
اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً
طَهُوْرًا ۝ لِّنُحْيِيَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ
كَثِيْرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۡ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا
كُفُوْرًا ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَ

★रु ४/२ आ १०

क़ौम ने भी जब पैग़म्बरों को झुठलाया, तो हमने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए निशानी बना दिया और ज़ालिमों के लिए हमने दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (३७) और आद और समूद और कुएं वालों और उनके दर्मियान और बहुत सी जमाअतों को भी (हलाक कर दिया)। (३८) और सब के (समझाने के) लिए हम ने मिसालें बयान कीं और न (मानने पर) सब का तहस-नहस कर दिया। (३९) और ये (काफ़िर) उस बस्ती पर भी गुज़र चुके हैं, जिस पर बुरी तरह का मेंह बरसाया गया था, वे इस को देखते न होंगे, बल्कि उन को तो (मरने के बाद) जी उठने की उम्मीद ही नहीं। (४०) और ये लोग जब तुम को देखते हैं, तो तुम्हारी हंसी उड़ाते हैं कि क्या यही शख़्स है, जिस को ख़ुदा ने पैग़म्बर बना कर भेजा है। (४१) अगर हम अपने माबूदों के बारे में साबित क़दम न रहते, तो यह ज़रूर हम को बहका देता (और) उन से (फेर देता) और ये बहुत जल्द मालूम कर लेंगे, जब अज़ाब देखेंगे कि सीधे रास्ते से कौन भटका हुआ है। (४२) क्या तुम ने उस शख़्स को देखा, जिस ने नफ़्स की ख़्वाहिश को माबूद बना रखा है, तो क्या तुम उस पर निगहबान हो सकते हो ? (४३) या तुम यह ख़्याल करते हो कि इन में अक्सर सुनते या समझते हैं ? (नहीं) ये तो चौपायों की तरह के हैं बल्कि उन से भी ज़्यादा गुमराह हैं★(४४) भला तुम ने अपने परवरदिगार (की क़ुदरत) को नहीं देखा कि वह साए को किस तरह लंबा कर (के फैला) देता है और अगर वह चाहता तो उस को (बे-हरकत) ठहरा रखता, फिर सूरज को उस का रहनुमा बना देता है। (४५) फिर हम उस को धीरे-धीरे अपनी तरफ़ समेट लेते हैं। (४६) और वही तो है, जिस ने रात को तुम्हारे लिए पर्दा और नींद को आराम बनाया और दिन को उठ खड़े होने का वक़्त ठहराया। (४७) और वही तो है, जो अपनी रहमत के मेंह के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है और हम आसमान से पाक (और निथरा हुआ) पानी बरसाते हैं। (४८) ताकि इस से मुर्दा शहर (यानी बंजर ज़मीन) को ज़िंदा कर दें और फिर हम उसे बहुत से चौपायों और आदमियों को, जो हमने पैदा किए हैं, पिलाते हैं। (४९) और हमने इस (क़ुरआन की आयतों) को तरह-तरह से लोगों में बयान किया ताकि नसीहत पकड़ें, मगर बहुत से लोगों ने इंकार के सिवा क़ुबूल न किया। (५०) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में डराने वाला भेज देते। (५१) तो तुम काफ़िरों का कहा न मानो और उनसे इस क़ुरआन के हुक्म

(पृष्ठ ५७५ का शेष)

को इस तरफ़ तवज्जोह देने और उन की तिलावत में लगे रहने की तौफ़ीक़ बख़्शे ताकि वे उन पर अमल करें और उन को दोनों दुनिया की कामियाबी हासिल हो।

★रु ४/२ आ १०

व हुवल्लज़ी म-र-जल्-बह्‌रैनि हाज़ा अज़्बुन् फ़ुरातुव्-व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन्‌व्-व ज-अ-ल बैनहुमा बर्ज़खव्-व हिज्‌रम्-मह्‌जूरा (५३) व हुवल्लज़ी ख़-ल-क मिनल्माइ ब-श-रन् फ़-ज-अ-लहू न-स-बंव्-व सिह्‌रन्, व का-न रब्बु-क क़दीरा (५४) व यअ्‌बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुहुम् व ला यज़ुर्रुहुम्, व कानल्काफ़िरु अला रब्बिही ज़हीरा (५५) व मा अर्‌सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा (५६) क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्‌रिन् इल्ला मन् शा-अ अंय्यत्तख़ि-ज़ इला रब्बिही सबीला (५७) व त-वक्कल् अ-लल्-हय्यिल्लज़ी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही, व कफ़ा बिही बिज़ुनूबि अिबादिही ख़बीरा ॠ ला (५८) अल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ-लल्अर्शि ॠ अर्रह्‌मानु फ़स्-अल् बिही ख़बीरा (५९) व इज़ा क़ी-ल लहुमुस्जुदू लिर्रह्‌मानि क़ालू व मर्रह्‌मानु ق अ-नस्जुदु लिमा तअ्‌मुरुना व ज़ादहुम् नुफ़ूरा ★ □ (६०) तबार-कल्लज़ी ज-अ-ल फ़िस्समाइ बुरूजव्-व ज-अ-ल फ़ीहा सिराजव्-व क-म-रम्-मुनीरा (६१) व हुवल्लज़ी ज-अ-लल्लै-ल वन्नहा-र ख़िल्फ़तल्लिमन् अरा-द अंय्यज़्ज़क्क-र औ अरा-द शुकूरा (६२) व अिबादुर्रह्‌मानिल्लज़ी-न यम्शू-न अ़लल्अर्ज़ि हौनव्-व इज़ा ख़ा-त़-बहुमुल्-जाहिलू-न क़ालू सलामा (६३) वल्लज़ी-न यबीतू-न लिरब्बिहिम् सुज्जदव्-व क़ियामा (६४) वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्ब-नस्रिफ़ अन्ना अज़ा-ब जहन्न-म ق इन्-न अज़ाबहा का-न ग़रामा ق (६५) इन्नहा सा-अत् मुस्तक़र्‌रव्-व मुक़ामा (६६) वल्लज़ी-न इज़ा अन्फ़क़ू लम् युस्रिफ़ू व लम् यक़्तुरू व का-न बै-न ज़ालि-क क़वामा (६७)

الفرقان ٢٥ ٧٩١ وقال الذين ١٩

جاهدهم به جهادا كبيرا ۝ وهو الذي مرج البحرين هذا عذب
فرات وهذا ملح اجاج وجعل بينهما برزخا وحجرا محجورا ۝ و
هو الذي خلق من الماء بشرا فجعله نسبا وصهرا وكان ربك قديرا ۝
ويعبدون من دون الله ما لا ينفعهم ولا يضرهم وكان الكافر على
ربه ظهيرا ۝ وما ارسلنك الا مبشرا ونذيرا ۝ قل ما اسئلكم عليه
من اجر الا من شاء ان يتخذ الى ربه سبيلا ۝ وتوكل على
الحي الذي لا يموت وسبح بحمده وكفى به بذنوب عباده خبيرا ۝
الذي خلق السموت والارض وما بينهما في ستة ايام ثم استوى
على العرش الرحمن فسئل به خبيرا ۝ واذا قيل لهم اسجدوا
للرحمن قالوا وما الرحمن انسجد لما تامرنا وزادهم نفورا ۝
تبرك الذي جعل في السماء بروجا وجعل فيها سرجا وقمرا منيرا ۝
وهو الذي جعل اليل والنهار خلفة لمن اراد ان يذكر او اراد
شكورا ۝ وعباد الرحمن الذين يمشون على الارض هونا و
اذا خاطبهم الجهلون قالوا سلما ۝ والذين يبيتون لربهم
سجدا وقياما ۝ والذين يقولون ربنا اصرف عنا عذاب جهنم
ان عذابها كان غراما ۝ انها ساءت مستقرا ومقاما ۝ و
الذين اذا انفقوا لم يسرفوا ولم يقتروا وكان بين ذلك قواما ۝

•मु अि मु त क़. ८ ★रु. ५/३ आ १६ □सज्‌दः ७

के मुताविक बडे जोर मे लडो। (५२) और वही तो है जिस ने दो नदियो को मिला दिया, एक का पानी मीठा है, प्यास बुझाने वाला और दूसरे का खारी है छाती जलाने वाला और दोनो के दर्मियान एक आड और मजबूत ओट बना दी। (५३) और वही तो है, जिस ने पानी मे आदमी पैदा किया, फिर उस को नसब वाला और दामादी रिश्ते वाला[1] बनाया और तुम्हारा परवरदिगार (हर तरह की) कुदरत रखता है। (५४) और ये लोग खुदा को छोड कर ऐसी चीज की पूजा करते है कि जो न उन को फायदा पहुचा सके और न नुक्सान और काफिर अपने परवरदिगार की मुखालफत मे बडा ज़ोर मारता है। (५५) और हमने (ऐ मुहम्मद!) तुम को सिर्फ खुशी और अजाब की खबर सुनाने को भेजा है। (५६) कह दो कि मै तुम से इस (काम) का मुआवजा नही मागता। हा, जो शख्स चाहे अपने परवरदिगार की तरफ (जाने का) रास्ता अख्तियार कर ले। (५७) और उस (खुदा-ए-) जिंदा पर भरोसा रखो जो (कभी) नही मरेगा और उस की तारीफ के साथ तस्बीह करते रहो और वह अपने बन्दो के गुनाहो से खबर रखने को काफी है। (५८) जिस ने आसमानो और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनो के दर्मियान है, छ दिन मे पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठहरा, (वह जिसका नाम रहमान यानी) बडा मेहरबान (है), तो उसका हाल किसी बा-खबर से मालूम कर लो, (५९) और जब इन (काफिरो) से कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते है कि रहमान क्या? क्या जिसके लिए तुम हम से कहते हो, हम उस के आगे सज्दा करे? और उस से बिदकते है। (६०)★□

(और खुदा) बडी बरकत वाला है, जिस ने आसमानो मे बुर्ज बनाए और उन मे (सूरज का निहायत रोशन) चिराग और चमकता हुआ चाद भी बनाया। (६१) और वही तो है जिस ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने-(जाने) वाला बनाया। (ये बाते) उस शख्स के लिए, जो गौर करना चाहे या शुक्र-गुजारी का इरादा करे (सोचने और समझने की है)। (६२) और खुदा के बन्दे तो वे है जो जमीन पर आहिस्तगी से चलते है और जब जाहिल लोग उन से (जाहिलाना) बात-चीत करते हैं तो सलाम कहते है। (६३) और वे जो अपने परवरदिगार के आगे सज्दे कर के और (इज्जत व अदब से) खडे रह कर राते बसर करते है। (६४) और वे जो दुआ मागते रहते है कि ऐ परवरदिगार! दोजख के अजाब को हम से दूर रखियो कि उस का अजाब बडी तक्लीफ की चीज है। (६५) और दोजख ठहरने और रहने की बहुत बुरी जगह है। (६६) और वे कि जब खर्च करते है तो न बे-जा उडाते है और न तगी को काम मे लाते है, बल्कि एतदाल के साथ, न

१ किसी का बाप, किसी का बेटा, किसी का ससुर, किसी का दामाद बना दिया।

२ जानशी के यह मानी कि वह जाती है, तो यह आता है और यह जाता है तो वह आती है।

वल्लज़ी-न ला यद्ऊ-न म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र व ला यक़्तुलूनन्-नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि व ला यज़्नू-न ८ व मय्यफ़्-अल् ज़ालि-क यल्-क़ असामय- ॥ (६८) युज़ाअफ् लहुल्अज़ाबु यौमल्क़ियामति व यख़्लुद् फ़ीहि मुहाना (६९) इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अमि-ल अ-म-लन् सालिहन् फ़-उलाइ - क युबद्दिलुल्लाहु सय्यिआतिहिम् ह़-स-नातिन् ь व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (७०) व मन् ता-ब व अमि-ल सालिहन् फ़-इन्नहू यतूबु इलल्लाहि मताबा (७१) वल्लज़ी-न ला यश्हदूनज़्-ज़ू-र ॥ व इज़ा मर्रू बिल्लग्वि मर्रू किरामा (७२) वल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिआयाति रब्बिहिम् लम् यख़िर्रू अलैहा सुम्मव्-व अुम्याना (७३) वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना हब्-लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र - त अअ्-युनिंव्वज्अल्ना लिल्मुत्तक़ी-न इमामा (७४) उलाइ-क युज्ज़ौनल्-ग़ुर्-फ़-त बिमा स-बरू व युलक़्क़ौ-न फ़ीहा तहिय्यतुंव् - व सलामा ॥ (७५) ख़ालिदी-न फ़ीहा ь ह़सुनत् मुस्तक़र्रव्-व मुक़ामा (७६) क़ुल् मा यअ्-बउ बिकुम् रब्बी लौला दुआउकुम् ८ फ़-क़द् कज़्ज़ब्तुम् फ़सौ-फ़ यकूनु लिज़ामा ★● (७७)

الشعراء ٢٦ ٢٩٢ وقال الذين ١٩

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ
اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُضَاعَفْ
لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ
وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ
غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ
مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾
وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِينَ
يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا
لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾ أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا
تَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿٧٥﴾ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٧٦﴾ قُلْ مَا
يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾
سُورَةُ الشُّعَرَاءِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَتَانِ وَسَبْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَأَحَدَ عَشَرَ رُكُوعًا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
طسم ﴿١﴾ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا
مُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ إِنْ نَشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ
لَهَا خَاضِعِينَ ﴿٤﴾ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا
عَنْهُ مُعْرِضِينَ ﴿٥﴾ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ

منزل

२६ सूरतुश्-शु-अराइ ४७

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ५६८९ अक्षर, १३४७ शब्द, २२७ आयतें और ११ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

ता-सीम्-मीम् (१) तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-मुबीन (२) ल-अल्ल-क बाख़िअुन् नफ़्स-क अल्ला यकूनू मुअ्मिनीन (३) इन् न-शअ् नुनज़्ज़िल् अलैहिम् मिनस्समाइ आ-य-तन् फ़-ज़ल्लत् अअ्-नाक़ुहुम् लहा ख़ाज़िईन (४) व मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम्-मिनर्रह्मानि मुह्-दसिन् इल्ला कानू अन्हु मुअ्-रिज़ीन (५) फ़-क़द् कज़्ज़बू फ़-स-यअ्तीहिम् अम्बाउ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (६)

★रु ६/४ आ १७ ●रुकूअ १/४

जरूरत से ज्यादा, न कम। (६७) और वे जो खुदा के साथ किसी और माबूद को नही पुकारते और जिस जानदार को मार डालना खुदा ने हराम किया है, उस को कत्ल नही करते, मगर जायज़ तरीके (यानी शरीअत के हुक्म) से और बद-कारी नही करते और जो यह काम करेगा, सख्त गुनाह मे पडा होगा। (६८) कियामत के दिन उस को दूना अजाब होगा और ज़िल्लत व ख्वारी से हमेशा उस मे रहेगा। (६९) मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे काम किये तो ऐसे लोगों के गुनाहो को खुदा नेकियो से बदल देगा और खुदा तो बख्शने वाला मेहरबान है। (७०) और जो तौबा करता और नेक अमल करता है, तो बेशक वह खुदा की तरफ रुजूअ करता है। (७१) और वे जो झूठी गवाही नही देते और जब उन को बेहूदा चीजो के पास से गुजरने का इत्तिफाक हो तो बुजुर्गो जैसे अन्दाज से गुजरते है। (७२) और वे कि जब उन को परवरदिगार की बाते समझायी जाती है तो उन पर अधे और बहरे हो कर नही गिरते, (बल्कि गौर व फिक्र मे सुनते है)। (७३) और वे जो (खुदा से) दुआ मागते है कि ऐ परवरदिगार! हम को हमारी बीवियो की तरफ से (दिल का चैन) और औलाद की तरफ से आख की ठडक अता फरमा और हमे परहेजगारो का इमाम बना। (७४) इन (खूबियो के) लोगो को उन के सब्र के बदले ऊचे-ऊचे महल दिए जाएगे और वहा फरिश्ते उन से दुआ व सलाम के साथ मुलाकात करेगे। (७५) उसमे वे हमेशा रहेगे और वह ठहरने और रहने की बहुत ही उम्दा जगह है। (७६) कह दो कि अगर तुम (खुदा को) नही पुकारते तो मेरा परवरदिगार भी तुम्हारी कुछ परवाह नही करता। तुम ने झुठलाया है, सो उस की सजा (तुम्हारे लिए) लाजिम (ज़रूरी) होगी। (७७) ★ □

२६ सूरः शुअरा ४७

सूर शुअरा मक्की है और इस मे दो सौ सत्ताईस आयते और ग्यारह रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा-सीम्-मीम्। (१) ये रोशन किताब की आयते है। (२) (ऐ पैगम्बर!) शायद तुम इस (रज) से कि ये लोग ईमान नही लाते, अपने आप को हलाक कर दोगे। (३) अगर हम चाहे तो इन पर आसमान से निशानी उतार दें, फिर इन की गरदने उस के आगे झुक जाए (४) और इन के पास (खुदा-ए-) रहमान की तरफ से कोई नयी नसीहत नही आती, मगर उस से मुह फेर लेते है (५) सो ये तो झुठला चुके, अब इन को उस चीज की हकीकत मालूम होगी, जिस की हसी उडाते

★रु ६/४ आ १७ ● रुकूअ १/४

अ-व-लम् यरौ इलल्अर्ज़ि कम् अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम (७) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (८) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्रहीम ★ (९) व इज् नादा रब्बु-क मूसा अनिअ्तिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमीन (१०) क़ौ-म फ़िर्औ-न अला यत्तक़ू-न (११) क़ा-ल रब्बि इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युकज़्ज़िबून (१२) व यज़ीक़ु सद्री व ला यन्तलिक़ु लिसानी फ़-अर्सिल् इला हारून (१३) व लहुम् अ-लय्-य ज़म्बुन् फ़-अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून (१४) का-ल कल्ला फ़ज़्-हबा बिआयातिना इन्ना म-अकुम् मुस्तमिऊन (१५) फ़अ्तिया फ़िर्औ-न फ़क़ूला इन्ना रसूलु रब्बिल्-आलमीन (१६) अन् अर्सिल् म-अना बनी इस्राईल (१७) क़ा-ल अ-लम् नुरब्बि-क फ़ीना वलीदव्-व लबिस्-त फ़ीना मिन् अुमुरि-क सिनीन (१८) व फ़-अल्-त फ़अ्-ल-त-कल्लती फ़-अल्-त व अन्-त मिनल्काफ़िरीन (१९) क़ा-ल फ़-अल्तुहा इज़व्-व अ-न मिनज़्ज़ाल्लीन (२०) फ़-फ़रर्तु मिन्कुम् लम्मा ख़िफ़्तुकुम् फ़-व-ह-ब ली रब्बी हुक्मव्-व ज-अ-लनी मिनल्-मुर्सलीन (२१) व तिल्-क निअ्-मतुन् तमुन्नुहा अ-लय्-य अन् अब्बत्-त बनी इस्राईल (२२) क़ा-ल फ़िर्औनु व मा रब्बुल्-आलमीन (२३) क़ा-ल रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा इन् कुन्तुम् मूक़िनीन (२४) क़ा-ल लिमन् हौलहू अला तस्तमिऊन (२५) क़ा-ल रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-अव्वलीन (२६) का-ल इन्-न रसूलकुमुल्लज़ी उर्सि-ल इलैकुम् ल-मज्नून (२७) का-ल रब्बुल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि व मा बैनहुमा इन् कुन्तुम् तअ्-क़िलून (२८)

يَسْتَهْزِءُونَ ۞ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ
زَوْجٍ كَرِيمٍ ۞ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۞ وَ
إِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۞ وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ
الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۞ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ۞ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ
أَنْ يُكَذِّبُونِ ۞ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ
إِلَىٰ هَارُونَ ۞ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۞ قَالَ
كَلَّا ۖ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ ۞ فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ
فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۞ أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ۞
قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ۞ وَ
فَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۞ قَالَ فَعَلْتُهَا
إِذًا وَأَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ۞ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي
رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۞ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ
أَنْ عَبَّدْتَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۞ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۞ قَالَ
رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۞
قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ۞ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ
الْأَوَّلِينَ ۞ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمُ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۞
قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۞

★ रु १/५ आ ९

थे। (६) क्या उन्हो ने जमीन की तरफ नही देखा कि हम ने उस मे हर किस्म की कितनी उम्दा चीजे उगायी है। (७) कुछ शक नही कि इस मे (खुदा की कुदरत की) निशानी है, मगर ये अक्सर ईमान लाने वाले नही (८) और तुम्हारा परवरदिगार गालिब (और) मेहरबान है। (९)★

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने मूसा को पुकारा कि जालिम लोगो के पास जाओ। (१०) (यानी) फिऔंन की कौम के पास, क्या यह डरते नही? (११) उन्हो ने कहा कि मेरे परवरदिगार मैं डरता हू कि ये झूठा समझे। (१२) और मेरा दिल तग होता है और मेरी जुबान रुकती है, तो हारून को हुक्म भेज (कि मेरे साथ चले)। (१३) और उन लोगो का मुझ पर एक गुनाह (यानी किब्ती के खून का दावा) भी है, सो मुझे यह भी डर है कि मुझ को मार ही डाले (१४) फर्माया, हरगिज नही! तुम दोनो हमारी निशानिया ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले है। (१५) तो दोनो फिऔंन के पास जाओ और कहो कि हम तमाम जहान के मालिक के भेजे हुए है। (१६) (और इसलिए आए है) कि आप बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इजाजत दे। (१७) (फिऔंन ने मूसा से) कहा, क्या हम ने तुम को कि अभी बच्चे थे, परवरिश नही किया और तुम ने वर्षो हमारे यहा उम्र बसर (नही) की ? (१८) और तुम ने एक और काम किया था, जो किया, तुम ना-शुक्रे मालूम होते हो (१९) (मूसा ने) कहा कि (हा,) वह हरकत मुझ से अचानक हो गयी थी, और मैं खताकारो मे था। (२०) तो जब मुझे तुम से डर लगा तो तुम मे से भाग गया, फिर खुदा ने मुझ को नुबूवत व इल्म बख्शा और मुझे पैगम्बरो मे से किया। (२१) और (क्या) यही एहसान है जो आप मुझ पर रखते है कि आप ने बनी इस्राईल को गुलाम बना रखा है' (२२) फिऔंन ने कहा कि तमाम जहान का मालिक क्या ? (२३) कहा कि आसमानो और ज़मीन और जो कुछ इन दोनो मे है, सब का मालिक, बशर्ते कि तुम लोगो को यकीन हो। (२४) फिऔंन ने अपने अहाली-मवाली से कहा कि क्या तुम सुनते नही ? (२५) (मूसा ने) कहा कि तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप-दादा का मालिक। (२६) (फिऔंन ने) कहा कि (यह) पैगम्बर, जो तुम्हारी तरफ भेजा गया है, बावला है। (२७) (मूसा ने) कहा कि पूरब और पच्छिम और जो कुछ इन दोनो मे है, सब का मालिक, बशर्ते कि तुम को समझ हो।(२८) (फिऔंन ने) कहा कि अगर तुम ने

---

१ यानी मूसा अलैहिस्सलाम के साथ फिऔंन ने सुलूक किया और उन की अच्छी तरह और एक मुद्दत तक परवरिश (शेष पृष्ठ ५८५ पर)

★रु १/५ आ ९

क़ा-ल ल-इनित्त-खज़्-त इलाहन् ग़ैरी ल-अज्अलन्न-क मिनल्-मस्जूनीन (२९) क़ा-ल अ-वलौ जिअ्तु-क बिशैइम्-मुबीन ॐ (३०) का-ल फ़अ्ति बिही इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (३१) फ़-अल्का अ़साहु फ-इज़ा हि-य सुअ्-बानुम्-मुबीनु व-ﷺ (३२) व न-ज-अ़ य-दहू फ़इज़ा हि-य बैज़ाउ लिन्नाज़िरीन ★ (३३) का-ल लिल-म-लइ हौलहू इन्-न हाज़ा ल-साहिरुन् अ़लीम // (३४) युरीदु अय्युख़्रि-जकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्रिरही ﷺ फ माज़ा तअ्मुरून (३५) क़ालू अर्जिह व अख़ाहु वब्-अस् फ़िलमदाइनि हाशिरीन // (३६) यअ्तू-क बिकुल्लि सह्हारिन् अ़लीम (३७) फजुमिअ़स्स-ह्-रतु लिमीक़ाति यौमिम्-मअ्लूम // (३८) व की-ल लिन्नासि हल् अन्तुम् मुज्तमिअ़ून // (३९) ल-अल्लना नत्तबिअुस्स-ह्-र-त इन् कानू हुमुल्-ग़ालिबीन (४०) फ़-लम्मा जाअस्स-ह्-रतु क़ालू लिफ़िर्औ-न अ-इन्-न लना ल-अज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल्-ग़ालिबीन (४१) का-ल न-अम् व इन्नकुम् इज़ल्लमिनल्-मुक़र्रबीन (४२) का-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्कून (४३) फ़-अल्क़ौ हिबालहुम् व अ़िसिय्यहुम् व क़ालू बिअ़िज़्ज़ति फ़िर्औ-न इन्ना ल-नह्नुल्-ग़ालिबून (४४) फ-अल्क़ा मूसा अ़साहु फ-इज़ा हि-य तल्क़फु मा यअ्फिकून ﷺ (४५) फ-उल्क़ियस्स-ह्-रतु साजिदीन // (४६) क़ालू आमन्ना बिरब्बिल्-आ़लमीन // (४७) रब्बि मूसा व हारून (४८) का-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आ-ज-न लकुम् ॐ इन्नहू लकबीरुकुमुल्लज़ी अ़ल्ल-मकुमुस्-सिह्-र ॐ फ़-ल-सौ-फ तअ्-लमू-न ⅄ लउक़त्तिअ़न्-न ऐदि-यकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िव-व लउसल्लिबन-न-कुम् अज्मईन ॐ (४९) क़ालू ला ज़ै-र ॳ इन्ना इला रब्बिना मुन्कलिबून ॐ (५०)

قال لئن اتخذت الها غيري لاجعلنك من المسجونين ۝
قال اولو جئتك بشيء مبين ۝ قال فأت به ان كنت من
الصدقين ۝ فالقى عصاه فاذا هي ثعبان مبين ۝ ونزع
يده فاذا هي بيضاء للنظرين ۝ قال للملا حوله ان هذا
لسحر عليم ۝ يريد ان يخرجكم من ارضكم بسحره فماذا
تامرون ۝ قالوا ارجه واخاه وابعث في المدائن حشرين ۝
يأتوك بكل سحار عليم ۝ فجمع السحرة لميقات يوم معلوم ۝
وقيل للناس هل انتم مجتمعون ۝ لعلنا نتبع السحرة ان
كانوا هم الغلبين ۝ فلما جاء السحرة قالوا لفرعون ائن
لنا لاجرا ان كنا نحن الغلبين ۝ قال نعم وانكم
اذا لمن المقربين ۝ قال لهم موسى القوا ما انتم ملقون ۝
فالقوا حبالهم وعصيهم وقالوا بعزة فرعون انا لنحن الغلبون ۝
فالقى موسى عصاه فاذا هي تلقف ما يافكون ۝ فالقي السحرة
سجدين ۝ قالوا امنا برب العلمين ۝ رب موسى وهرون ۝
قال امنتم له قبل ان اذن لكم انه لكبيركم الذي علمكم
السحر فلسوف تعلمون لاقطعن ايديكم وارجلكم من خلاف
ولاصلبنكم اجمعين ۝ قالوا لا ضير انا الى ربنا

★रु० २/६ आ २४

मेरे सिवा किसी और को माबूद बनाया, तो मै तुम्हे कैद कर दूगा। (२९) (मूसा ने) कहा, चाहे मै आप के पास रोशन चीज लाऊ (यानी मोजजा ?)। (३०) (फिर्औन ने) कहा, अगर सच्चे हो तो उसे लाओ (दिखाओ)। (३१) पस उन्हो ने अपनी लाठी डाल दी, तो वह उसी वक्त खुला अज़्दहा बन गयी। (३२) और अपना हाथ जो निकाला, तो उसी दम देखने वालो के लिए सफेद (बर्राक) नज़र आने लगा।(३३) ★

फिर्औन ने अपने पास के सरदारो से कहा कि यह तो फन मे कामिल जादूगर है।(३४) चाहता है कि तुम को अपने जादू (के जोर) से अपने मुल्क से निकाल दे, तो तुम्हारी क्या राय है ? (३५) उन्हो ने कहा कि उस के और उस के भाई (के बारे मे) कुछ ठहरिए और शहरो मे नकीब भेज दीजिए, (३६) कि सब माहिर जादूगरो को (जमा कर के) आप के पास ले आए। (३७) तो जादूगर एक मुकर्रर दिन की मीयाद पर जमा हो गए (३८) और लोगो से कह दिया गया कि तुम (सब) को इकट्ठे हो जाना चाहिए, (३९) ताकि अगर जादूगर गालिब रहे तो हम उन की पैरवी करने वाले हो जाए। (४०) जब जादूगर आये, तो फिर्औन से कहने लगे कि अगर हम गालिब रहे, तो हमे इनाम भी मिलेगा ? (४१) फिर्औन ने कहा, हा, और तुम मुकर्रिबो मे दाखिल हो जाओगे। (४२) मूसा ने उन से कहा कि जो चीज डालनी चाहते हो, डालो। (४३) तो उन्हो ने अपनी रस्सिया और लाठिया डाली और कहने लगे कि फिर्औन के इकबाल की कसम ! हम जरूर गालिब रहेगे। (४४) फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो वह उन चीज़ो को, जो जादूगरो ने बनायी थी, निगलने लगी। (४५) तब जादूगर सज्दे मे गिर पड़े। (४६) (और) कहने लगे कि हम तमाम जहान के मालिक पर ईमान लाए, (४७) जो मूसा और हारून का मालिक है। (४८) फिर्औन ने कहा, क्या इस से पहले कि मैं तुम को इजाजत दू, तुम उस पर ईमान ले आए ? बेशक यह तुम्हारा बडा है, जिस ने तुम को जादू सिखाया है। सो बहुत जल्द तुम (इस का अजाम) मालूम कर लोगे कि मै तुम्हारे हाथ और पाव मुखालिफ तरफ से काट दूगा और तुम सब को सूली पर चढ़ा दूगा। (४९) उन्हो ने कहा, कुछ नुक्सान (की बात) नही। हम अपने परवरदिगार की

(पृष्ठ ५८३ का शेष)

की, मगर मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने बारे मे अपनी कौम का ज्यादा ख्याल किया, जिसे इस ज़ालिम ने निहायत ज़िल्लत की हालत मे रखा था और ऊचे ख्याल वाले नेक दिल लोग अपनी जात के बारे मे हमेशा अपनी कौम की भलाई को अहम समझा करते हैं, इस लिए उन्हो ने फिर्औन का एहसान सुन कर यह जवाब दिया कि भला आप का मुझ पर यही एहसान है कि आप ने मेरी कौम को गुलाम बना रखा और ज़िल्लत और मुसीबत मे फसा रखा है। एहसान तो तब था जब मेरी कौम के साथ भी सुलूक किया जाता।

★रु २/६ आ २४

इन्ना नत्मअ़ु अंय्यग़्फ़ि-र लना रब्बुना ख़तायाना अन् कुन्ना अव्वलल्-मुअ्मिनीन ط ★ (५१) व औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअ़िबादी इन्नकुम् मुत्तबअ़ून (५२) फ़-अर्स-ल फ़िर्औनु फ़िलमदाइनि हाशिरीन ج (५३) इन्-न हाउलाइ ल-शिर्ज़ि - म-तुन् क़लीलून لا (५४) व इन्नहुम् लना लग़ाइज़ून لا (५५) व इन्ना ल-जमीअ़ुन् हाज़िरून ط (५६) फ़-अख़्रज्-नाहुम् मिन् जन्नातिंव्-व अ़ुयूनिंव- لا (५७) व कुनूज़िंव्-व मक़ामिन् करीम لا (५८) कज़ालि-क ط व औरस्नाहा बनी इस्राईल ط (५९) फ़-अत्बअ़ूहुम् मुश्रिक़ीन (६०) फ़-लम्मा तरा-अल् - जम्आ़नि का-ल अस्हाबु मूसा इन्ना ल-मुद्रकून ج (६१) का-ल कल्ला ج इन्-न मअ़ि-य रब्बी स-यह्दीन (६२) फ़-औहैना इला मूसा अनिज्रिब् बिअ़साकल् - बह्-र ط फ़न्फ़-ल-क फ़-का-न कुल्लु फ़िर्किन् कत्तौदिल्-अ़ज़ीम ج (६३) व अज्-लफ़्ना सम्मल्-आख़रीन ج (६४) व अन्जैना मूसा व मम्-म-अहू अज्मअ़ीन ج (६५) सुम् - म अग़-रक़्नल्-आख़रीन ط (६६) इन् - न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् ط व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (६७) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अ़ज़ीज़ुर्-रहीम ★ (६८) वत्लु अ़लैहिम् न - ब - अ इब्राहीम ﴿ (६९) इज़् का - ल लिअबीहि व क़ौमिही मा तअ्-बुदून (७०) क़ालू नअ्-बुदु अस्-नामन् फ़-न-ज़ल्लु लहा आ़किफ़ीन (७१) का-ल हल् यस्मअ़ूनकुम् इज़् तद्अ़ून لا (७२) औ यन्फ़अ़ू-न कुम् औ यज़ुर्रून (७३) क़ालू बल् व-जद्ना आबा-अना कज़ालि-क यफ़-अ़लून (७४) का-ल अ-फ़-रऐतुम् मा कुन्तुम् तअ्-बुदून لا (७५) अन्तुम् व आबाउकुमुल्-अक़्दमून صلے (७६) फ़इन्नहुम् अ़दुव्वुल्ली इल्ला रब्बल् - आ़लमीन لا (७७) अल्लज़ी ख़-ल-क़नी फ़हु-व यह्दीन لا (७८) वल्लज़ी हु-व युत्अ़िमुनी व यस्क़ीन لا (७९) व इज़ा मरिज़्तु फ़हु - व यश्फ़ीन ۝ (८०)

الشعراء ٢٦ ٢٩٥ وقال الذين ١٩

منقلبون ۝ انا نطمع ان يغفر لنا ربنا خطيانا ان كنا اول
المؤمنين ۝ واوحينا الى موسى ان اسر بعبادي انكم متبعون ۝
فارسل فرعون في المدائن حشرين ۝ ان هؤلاء لشرذمة
قليلون ۝ وانهم لنا لغائظون ۝ وانا لجميع حذرون ۝
فاخرجنهم من جنت وعيون ۝ وكنوز ومقام كريم ۝ كذلك
واورثنها بني اسراءيل ۝ فاتبعوهم مشرقين ۝ فلما تراء الجمعن
قال اصحب موسى انا لمدركون ۝ قال كلا ان معي ربي
سيهدين ۝ فاوحينا الى موسى ان اضرب بعصاك البحر فانفلق
فكان كل فرق كالطود العظيم ۝ وازلفنا ثم الاخرين ۝ وانجينا
موسى ومن معه اجمعين ۝ ثم اغرقنا الاخرين ۝ ان في ذلك
لاية وما كان اكثرهم مؤمنين ۝ وان ربك لهو العزيز الرحيم ۝
واتل عليهم نبا ابرهيم ۝ اذ قال لابيه وقومه ما تعبدون ۝
قالوا نعبد اصناما فنظل لها عكفين ۝ قال هل يسمعونكم
اذ تدعون ۝ او ينفعونكم او يضرون ۝ قالوا بل وجدنا اباءنا
كذلك يفعلون ۝ قال افرءيتم ما كنتم تعبدون ۝ انتم واباؤكم
الاقدمون ۝ فانهم عدو لي الا رب العلمين ۝ الذي خلقني
فهو يهدين ۝ والذي هو يطعمني ويسقين ۝ واذا مرضت

★रु ३/७ आ १८ ★रु ४/८ आ १७ ﴿ व. लाज़िम

तरफ लौट जाने वाले है। (५०) हमे उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार हमारे गुनाह वख़्श देगा, इस लिए कि हम पहले ईमान लाने वालो मे है। (५१)★

और हम ने मूसा की तरफ वह्य भेजी कि हमारे वन्दो को रात को ले निकलो कि (फ़िर्औं नियो की तरफ से) तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (५२) तो फ़िर्औं नियो ने शहरो मे नकीव (एलानची) रवाना किए। (५३) (और कहा) कि ये लोग थोड़ी सी जमाअत है। (५४) और ये हमे गुस्सा दिला रहे है। (५५) और हम सब साज और सामान के साथ है। (५६) तो हम ने उन को बागो और चश्मो से निकाल दिया, (५७) और ख़जानो और उम्दा मकानो से। (५८) (उन के साथ हम ने) इस तरह (किया) और इन चीजो का वारिस बनी इस्राईल को कर दिया। (५९) तो उन्हो ने सूरज निकलते (यानी सुवह को) उन का पीछा किया। (६०) जब दोनो जमाअते आमने-सामने हुई, तो मूसा के साथी कहने लगे कि हम तो पकड लिए गये। (६१) मूसा ने कहा, हर गिज़ नही, मेरा परवरदिगार मेरे साथ है, वह मुझे रास्ता बताएगा। (६२) उस वक्त हम ने मूसा की तरफ वह्य भेजी कि अपनी लाठी दरिया पर मारो तो दरिया फट गया और हर एक टुकडा (यो) हो गया (कि) गोया वडा पहाड (है)। (६३) और दूसरो को वहा हमने करीव कर दिया। (६४) और मूसा और उन के साथ वालो को (तो) बचा लिया। (६५) फिर दूसरो को डुबो दिया'। (६६) बेशक इस (किस्से) मे निशानी है, लेकिन ये अक्सर ईमान लाने वाले नही। (६७) और तुम्हारा परवरदिगार तो गालिव और मेहरबान है। (६८)★

और उन को इब्राहीम का हाल पढ़ कर सुना दो, (६९) जब उन्हो ने अपने बाप और अपनी कौम के लोगो से कहा कि तुम किस चीज को पूजते हो ? (७०) वे कहने लगे कि हम वुतो को पूजते है और उन (की पूजा) पर कायम है। (७१) (इब्राहीम ने) कहा कि जब तुम उन को पुकारते हो, तो क्या वे तुम्हारी (आवाज) सुनते है ? (७२) या तुम्हे फायदा दे सकते या नुक्सान पहुंचा सकते है ? (७३) उन्हो ने कहा, (नही), बल्कि हम ने अपने बाप-दादा को इसी तरह करते देखा है। (७४) (इब्राहीम ने) कहा, क्या तुम ने देखा कि जिन को तुम पूजते रहे हो, (७५) तुम भी और तुम्हारे अगले बाप-दादा भी, (७६) वे मेरे दुश्मन है, मगर (अल्लाह) रब्बुल आलमीन (मेरा दोस्त है), (७७) जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मुझे रास्ता दिखाता है। (७८) और वह जो मुझे खिलाता और पिलाता है। (७९) और जब मैं वीमार पडता हू, तो मुझे शिफा वख़्शता

१ दूसरो से मुराद फ़िर्औन और उस की पैरवी करने वाले है।

★रु ३/७ आ १८ ★रु. ४/८ आ १७ व लाजिम

वल्लज़ी युमीतुनी सुम्-म युह्यीन // (८१) वल्लज़ी अत्मअ़ु अय्यग़्फ़ि-र ली ख़तीअती यौमद्दीन ط (८२) रब्बि हब् ली हुक्मव-व अल्हिक़्नी बिस्सालिहीन // (८३) वज्अ़ल्ली लिसा-न सिद्क़िन् फ़िल्आख़िरीन // (८४) वज्अ़ल्नी मिव्व-र-सति जन्नतिन्नअ़ीम // (८५) वग़्फ़िर लिअबी इन्नहू का-न मिनज़्ज़ाल्लीन // (८६) व ला तुख़्ज़िनी यौ-म युब्-अ़सून // (८७) यौ-म ला यन्फ़अ़ु मालु व्-व ला बनून // (८८) इल्ला मन् अ-तल्ला-ह बिक़ल्बिन् सलीम ط (८९) व उज़्लि-फ़तिल्-जन्नतु लिलमुत्तक़ीन // (९०) व बुर्रिज़तिल्-जहीमु लिलग़ावीन // (९१) व क़ी-ल लहुम् ऐनमा कुन्तुम् तअ्-बुदून // (९२) मिन् दूनिल्लाहि ط हल् यन्सुरूनकुम् औ यन्तसिरून ط (९३) फ़कुब्किबू फ़ीहा हुम् वल्ग़ावून // (९४) व जुनूदु इब्ली-स अज्मअ़ून ط (९५) क़ालू व हुम् फ़ीहा यख़्तसिमून // (९६) तल्लाहि इन् कुन्ना लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन // (९७) इज़् नुसव्वीकुम् बिरब्बिल्-आ़लमीन (९८) व मा अज़ल्लना इल्लल्-मुज्रिमून (९९) फ़मा लना मिन् शाफ़िईन // (१००) व ला सदीक़िन् हमीम (१०१) फ़लौ अन्-न लना कर्रतन् फ़-नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (१०२) इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-य-तन् ط व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१०३) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्-रहीम ★ (१०४) कज़्ज़बत् क़ौमु नूहि-निल्-मुर्सलीन ع (१०५) इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् नूहुन् अला तत्तक़ून ج (१०६) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन // (१०७) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून ج (१०८) व मा अस्-अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् ج इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन ج (१०९) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून ط (११०) क़ालू अ-नुअ्मिनु ल-क वत्तब-अ़-कल्-अर्ज़लून ط (१११) क़ा-ल व मा अ़िल्मी बिमा कानू यअ्-मलून ج (११२)

فهو يشفين ۝ والذي يميتني ثم يحيين ۝ والذي أطمع أن يغفر لي
خطيئتي يوم الدين ۝ رب هب لي حكما وألحقني بالصالحين ۝
واجعل لي لسان صدق في الآخرين ۝ واجعلني من ورثة جنة
النعيم ۝ واغفر لأبي إنه كان من الضالين ۝ ولا تخزني يوم
يبعثون ۝ يوم لا ينفع مال ولا بنون ۝ إلا من أتى الله بقلب
سليم ۝ وأزلفت الجنة للمتقين ۝ وبرزت الجحيم للغاوين ۝
وقيل لهم أين ما كنتم تعبدون ۝ من دون الله هل ينصرونكم أو
ينتصرون ۝ فكبكبوا فيها هم والغاوون ۝ وجنود إبليس أجمعون ۝
قالوا وهم فيها يختصمون ۝ تالله إن كنا لفي ضلال مبين ۝ إذ
نسويكم برب العلمين ۝ وما أضلنا إلا المجرمون ۝ فما لنا من
شافعين ۝ ولا صديق حميم ۝ فلو أن لنا كرة فنكون من
المؤمنين ۝ إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ۝ و
إن ربك لهو العزيز الرحيم ۝ كذبت قوم نوح المرسلين ۝
إذ قال لهم أخوهم نوح ألا تتقون ۝ إني لكم رسول أمين ۝
فاتقوا الله وأطيعون ۝ وما أسألكم عليه من أجر إن أجري
إلا على رب العلمين ۝ فاتقوا الله وأطيعون ۝ قالوا أنؤمن لك
واتبعك الأرذلون ۝ قال وما علمي بما كانوا يعملون ۝ إن

★रु ५/९ आ ३६

हैं। (८०) और वह जो मुझे मारेगा (और) फिर ज़िंदा करेगा। (८१) और वह जिस से मैं उम्मीद रखता हू कि कियामत के दिन मेरे गुनाह बख़्शेगा। (८२) ऐ परवरदिगार ! मुझे इल्म और सूझ-बूझ अता फरमा और नेको मे शामिल कर। (८३) और पिछले लोगो मे मेरा ज़िक्र (जारी) कर। (८४) और मुझे नेमत की बहिश्त के वारिसो मे कर। (८५) और मेरे बाप को बख़्श दे कि वह गुमराहो मे से है। (८६) और जिस दिन लोग उठा खड़े किए जाएंगे, मुझे रुसवा न कीजियो। (८७) जिस दिन न माल ही कुछ फायदा दे सकेगा और न बेटे। (८८) हा, जो शख़्स ख़ुदा के पास पाक दिल ले कर आया, (वह बच जाएगा), (८९) और बहिश्त परहेजगारो के करीब कर दी जाएगी। (९०) और दोजख़ गुमराहो के सामने लायी जाएगी। (९१) और उन से कहा जाएगा कि जिन को तुम पूजते थे, वे कहा है ? (९२) (यानी जिन को) ख़ुदा के सिवा (पूजते थे) क्या वे तुम्हारी मदद कर सकते है या ख़ुद बदला ले सकते है ? (९३) तो वे गुमराह (यानी बुत और बुतपरस्त) औंधे मुंह दोजख़ मे डाल दिए जाएंगे। (९४) और शैतान के लश्कर सब के सब (जहन्नम मे दाखिल होगे)। (९५) वहा वे आपस मे झगड़ेगे और कहेगे, (९६) कि ख़ुदा की कसम ! हम तो खुली गुमराही में थे। (९७) जब कि तुम्हे (ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के बराबर ठहराते थे, (९८) और हम को इन गुनाहगारो ही ने गुमराह किया था, (९९) तो (आज) न कोई हमारा सिफारिश करने वाला है, (१००) और न गर्मजोश दोस्त। (१०१) काश, हमे (दुनिया मे) फिर जाना हो, तो हम मोमिनो मे हो जाए। (१०२) बेशक इस मे निशानी है और इन मे अक्सर ईमान लाने वाले नही। (१०३) और तुम्हार परवरदिगार तो ग़ालिब और मेहरबान है। (१०४)★

नूह की कौम ने भी पैग़म्बरो को झुठलाया, (१०५) जब उन से उन के भाई नूह ने कहा कि तुम डरते क्यो नही ? (१०६) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं। (१०७) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१०८) और मैं इस काम का तुम से बदला नही मागता। मेरा बदला तो ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही पर है। (१०९) तो ख़ुदा से डरो और मेरे कहने पर चलो। (११०) वे बोले कि क्या हम तुम को मान ले और तुम्हारी पैरवी करने वाले तो नीच लोग हुए है। (१११) (नूह ने)

★रु ५/९ आ ३६

इन् हि़साबुहुम् इल्ला अला रब्बी लौ तश्अुरून ج (११३) व मा अ-न बितारिदिल् - मुअ्मिनीन ج (११४) इन् अ-न इल्ला नज़ीरुम् - मुबीन ط (११५) कालू ल-इल्लम् तन्तहि यानूहु ल-तकूनन्-न मिनल्-मर्जूमीन ط (११६) का-ल रब्बि इन्-न कौमी कज्ज़बून صلے ● (११७) फफ्-तह़् बैनी व बैनहुम् फत्हव्-व नज्जिनी व मम्मअि-य मिनल्-मुअ्मिनीन (११८) फ-अन्जैनाहु व मम्म-अहू फिल्फुल्किल्-मश्हून ج (११९) सुम् - म अग्-रक्-ना बअ्-दुल्-बाकीन ط (१२०) इन्-न फी ज़ालि-क ल-आ-य-तन् ط व मा का-न अक्सरुहुम्-मुअ्मिनीन (१२१) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर् - रहीम ★ (१२२) कज़्ज़-बत् आदु-निल् - मुर्सलीन صلے (१२३) इज् का-ल लहुम् अख़ूहुम् हूदुन् अला तत्तकून ج (१२४) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन لا (१२५) फत्तकुल्ला - ह व अतीअून ج (१२६) व मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिन् ج इन् अज्रि - य इल्ला अला रब्बिल् - आलमीन ط (१२७)

الشعراء ٢٦ — ٢٩٧ — وقال الذين ١٩

حسابهم الا على ربي لو تشعرون ۝ وما انا بطارد المؤمنين ۝
ان انا الا نذير مبين ۝ قالوا لئن لم تنته ينوح لتكونن من
المرجومين ۝ قال رب ان قومي كذبون ۝ فافتح بيني وبينهم
فتحا ونجني ومن معي من المؤمنين ۝ فانجينه ومن معه
في الفلك المشحون ۝ ثم اغرقنا بعد الباقين ۝ ان في ذلك لاية
وما كان اكثرهم مؤمنين ۝ وان ربك لهو العزيز الرحيم ۝
كذبت عاد المرسلين ۝ اذ قال لهم اخوهم هود الا تتقون ۝
اني لكم رسول امين ۝ فاتقوا الله واطيعون ۝ وما اسئلكم
عليه من اجر ان اجري الا على رب العلمين ۝ اتبنون بكل
ريع اية تعبثون ۝ وتتخذون مصانع لعلكم تخلدون ۝ واذا
بطشتم بطشتم جبارين ۝ فاتقوا الله واطيعون ۝ واتقوا الذي
امدكم بما تعلمون ۝ امدكم بانعام وبنين ۝ وجنت وعيون ۝
اني اخاف عليكم عذاب يوم عظيم ۝ قالوا سواء علينا اوعظت
ام لم تكن من الوعظين ۝ ان هذا الا خلق الاولين ۝
وما نحن بمعذبين ۝ فكذبوه فاهلكنهم ان في ذلك لاية وما
كان اكثرهم مؤمنين ۝ وان ربك لهو العزيز الرحيم ۝ كذبت ثمود
المرسلين ۝ اذ قال لهم اخوهم صلح الا تتقون ۝ اني لكم

अ-तब्नू-न बिकुल्लि रीअिन् आ-य-तन् तअ्-बसून لا (१२८) व तत्तख़िज़ू-न मसानि-अ ल-अल्लकुम् तख़्लुदून ج (१२९) व इज़ा ब-तश्तुम् ब-तश्तुम् जब्बारीन ج (१३०) फत्तकुल्ला-ह व अतीअून ج (१३१) वत्तकुल्लज़ी अ-म-द्दकुम् बिमा तअ्-लमून ج (१३२) अ-मद्दकुम् बि-अन्आमिव्-व बनीन ج (१३३) व जन्नातिव्-व अुयूनिन् ج (१३४) इन्नी अख़ाफु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम ط (१३५) कालू सवाउन् अलैना अ व-अज़्-त अम् लम् तकुम्-मिनल् - वाअिज़ीन لا (१३६) इन् हाज़ा इल्ला ख़ुलुकुल् - अव्वलीन لا (१३७) व मा नह़्नु बिमुअज्ज़बीन ج (१३८) फकज़्ज़बूहु फअह्लक्नाहुम् ط इन्-न फी ज़ालि-क लआ-य-तन् ط व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१३९) व इन्-न रब्ब - क लहुवल् - अज़ीज़ुर् - रहीम ★(१४०) कज़्-ज़ - बत् समूदुल् - मुर्सलीन صلے (१४१) इज़् का - ल लहुम् अख़ूहुम् सालिहुन् अला तत्तकून ج (१४२) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन لا (१४३)

● नि १/२ ★रु ६/१० आ १८ ★रु ७/११ आ १८

कहा कि मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते है। (११२) उन का हिसाबे (आमाल) मेरे परवरदिगार के ज़िम्मे है, काश ! तुम समझो।(११३) और मै मोमिनो को निकाल देने वाला नही हू।(११४) मैं तो सिर्फ खोल-खोल कर नसीहत करने वाला हू।(११५) उन्हो ने कहा कि नूह अगर तुम मानोगे नही तो पत्थर मार-मार कर हलाक कर दिए जाओगे। (११६) (नूह ने) कहा कि परवरदिगार मेरी कौम ने तो मुझ को झुठला दिया ● (११७) सो तू मेरे और उन के दर्मियान एक खुला फैसला कर दे और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ है, उन को बचा ले। (११८) पस हम ने उन को और उन के साथ भरी हुई कश्ती मे (सवार थे) उन को बचा लिया। (११९) फिर इस के बाद बाकी लोगो को डुबो दिया। (१२०) बेशक इस मे निशानी है और इन मे अक्सर ईमान लाने वाले नही थे। (१२१) और तुम्हारा परवरदिगार तो गालिब (और) मेहरबान है।(१२२) ★

आद ने भी पैगम्बरो को झुठलाया, (१२३) जब उन से उन के भाई हूद ने कहा, क्या तुम डरते नही ? (१२४) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हू। (१२५) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१२६) और मैं इस का तुम से कुछ बदला नही मागता। मेरा बदला (खुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के जिम्मे है। (१२७) भला तुम हर ऊची जगह पर बेकार निशान तामीर करते हो। (१२८) और महल बनाते हो, शायद तुम हमेशा रहोगे।[1] (१२९) और जब (किसी को) पकडते हो, तो ज़ालिमाना पकडते हो। (१३०) तो खुदा से डरो और मेरी इताअत करो। (१३१) और उस से, जिस ने तुम को उन चीजो से मदद दी, जिन को तुम जानते हो, डरो। (१३२) उस ने तुम्हे चारपायो और बेटो से मदद दी, (१३३) और बागो और चश्मो से, (१३४) मुझ को तुम्हारे बारे मे बडे (सख्त) दिन के अज़ाब का डर है। (१३५) वे कहने लगे, हमे नसीहत करो या न करो, हमारे लिए बराबर है। (१३६) ये तो अगलो के ही तरीके है।[2] (१३७) और हम पर कोई अजाब नही आएगा, (१३८) तो उन्हो ने हूद को झुठलाया, सो हम ने उन को हलाक कर डाला। बेशक इस मे निशानी है और इन मे अक्सर ईमान लाने वाले नही थे। (१३९) और तुम्हारा परवरदिगार तो गालिब (और) मेहरबान है। (१४०) ★

(और) समूद (कौम) ने भी पैगम्बरो को झुठलाया, (१४१) जब उन से उन के भाई सालेह ने कहा कि तुम डरते क्यो नही ? (१४२) मे तो तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूं, (१४३) तो खुदा

---

१ इन लोगो को बडा शौक था ऊचे मज़बूत मीनारे बनाने का, जिस मे कुछ काम न निकले, मगर नाम और रहने की इमारतें बडे तकल्लुफ से माल खराब करते हो। बागे इरम इन्ही का मशहूर है।

२ यानी अगले लोग भी इसी तरह बहिश्त की नेमतो की तारीफें किया करते थे और दोज़ख के अज़ाब से डराया करते थे।

● नि १/२ ★रु ६/१० आ १८ ★रु ७/११ आ १८

फत्तकुल्ला-ह व अती़अून ८(१४४) व मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिन्८ इन् अज्रि-य इल्ला अला रब्बिल् - आलमीन ७ (१४५) अतुत्रकू-न फी मा हाहुना आमिनीन ॥ (१४६) फी जन्नातिंव-व अुयूनिंव-॥ (१४७) व जुरूअिंव-व नख़्लिन् त़ल्अुहा हज़ीम ८ (१४८) व तन्हितू-न मिनल्जिबालि बुयूतन् फारिहीन ८ (१४९) फत्तकुल्ला-ह व अती़अून ८ (१५०) व ला तुती़अू अम्-रल्-मुस्रिफीन ॥ (१५१) अ्ल्लजी - न युफ़्सिदू-न फिल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून (१५२) कालू इन्नमा अन्-त मिनल् - मुसह्-ह़रीन८ (१५३) मा अन्-त इल्ला व-श-रुम्-मिस्लुना ८ फअ्ति बिआ - यतिन् इन् कुन्-त मिनस्सादिकीन (१५४) का-ल हाजिही ना-कतुल्लहा शिर्बु व्-व लकुम् शिर्बु यौमिम्-मअ्लूम ८ (१५५) व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ-यअ्खु - जकुम् अजाबु यौमिन् अज़ीम (१५६) फ-अ-करूहा फ-अस्बहू नादिमीन॥ (१५७) फ-अ-ख़-ज - हुमुल्-अ़जाबु ७ इन्-न फी जालि-क ल-आ-यतन्७ व मा का-न अक्सरुहुम्-मुअ्मिनीन (१५८) व

الشعراء ٢٦ ٢٩٨ وقال الذين ١٩

رسول امين ۝ فاتقوا الله واطيعون ۝ وما اسئلكم عليه من اجر
ان اجري الا على رب العلمين ۝ اتتركون في ما ههنا امنين ۝ في
جنت وعيون ۝ وزروع ونخل طلعها هضيم ۝ وتنحتون من
الجبال بيوتا فرهين ۝ فاتقوا الله واطيعون ۝ ولا تطيعوا امر
المسرفين ۝ الذين يفسدون في الارض ولا يصلحون ۝ قالوا
انما انت من المسحرين ۝ ما انت الا بشر مثلنا فات باية ان كنت
من الصدقين ۝ قال هذه ناقة لها شرب ولكم شرب يوم معلوم ۝
ولا تمسوها بسوء فياخذكم عذاب يوم عظيم ۝ فعقروها فاصبحوا
ندمين ۝ فاخذهم العذاب ان في ذلك لاية وما كان اكثرهم
مؤمنين ۝ وان ربك لهو العزيز الرحيم ۝ كذبت قوم لوط المرسلين ۝
اذ قال لهم اخوهم لوط الا تتقون ۝ اني لكم رسول امين ۝
فاتقوا الله واطيعون ۝ وما اسئلكم عليه من اجر ان اجري
الا على رب العلمين ۝ اتاتون الذكران من العلمين ۝ وتذرون
ما خلق لكم ربكم من ازواجكم بل انتم قوم عدون ۝ قالوا لئن
لم تنته يلوط لتكونن من المخرجين ۝ قال اني لعملكم من
القالين ۝ رب نجني واهلي مما يعملون ۝ فنجينه واهله اجمعين ۝
الا عجوزا في الغبرين ۝ ثم دمرنا الاخرين ۝ وامطرنا عليهم مطرا

इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अजीजुर्-रह़ीम ★ (१५९) कज्जबत् कौमु लूति-निल्-मुर्सलीन ८(१६०) इज् का - ल लहुम् अखूहुम् लूतुन् अला तत्तकून८ (१६१) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन॥(१६२) फत्तकुल्ला-ह व अती़अूनि८ (१६३) व मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिन्८इन् अज्रि-य इल्ला अ्ला रब्बिल्-आलमीन ७ (१६४) अ-तअ्-तूनज्जुक्रा - न मिनल्-आलमीन ॥ (१६५) व त-ज-रू-न मा ख़-ल-क लकुम् रब्बुकुम् मिन् अज्वाजिकुम्७बल् अन्तुम् क़ौमुन् आदून (१६६) कालू ल-इल्लम् तन्तहि यालूतु ल-त-कूनन्-न मिनल्-मुख़-रजीन (१६७) क़ा-ल इन्नी लि-अ-मलिकुम् मिनल्कालीन७(१६८) रब्बि नज्जिनी व अह-ली मिम्मा यअ्-मलून (१६९) फ-नज्जैनाहु व अह-लहू अज्मअीन॥(१७०) इल्ला अ़जूजन् फिल्ग़ाबिरीन८ (१७१) सुम्-म दम्मर्नल्-आखरीन ८ (१७२) व अम्तर्ना अलैहिम् म-त़-रन् ८ फसा-अ म-त़-रुल् - मुन्जरीन (१७३)

★रु. ८/१२ आ १९

से डरो और मेरा कहा मानो, (१४४) और मैं इस का तुम से बदला नहीं मागता। मेरा बदला (ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (१४५) क्या जो चीज़े (तुम्हे) यहा (मिलती) हैं, उन मे तुम बे-खौफ छोड दिए जाओगे ! (१४६) (यानी) बाग और चश्मे, (१४७) और खेतिया और खजूरे जिन के खोशे लतीफ और नाजुक होते है। (१४८) और तकल्लुफ से पहाडो को काट-काट कर घर बनाते हो, (१४९) तो खुदा से डरो और मेरे कहे पर चलो। (१५०) और हद से आगे बढ जाने वालो की बात न मानो, (१५१) जो मुल्क मे फ़साद करते है और सुधार नही करते। (१५२) वे कहने लगे कि तुम पर तो जादू की मार है। (१५३) तुम और कुछ नही, हमारी ही तरह के आदमी हो। अगर सच्चे हो तो कोई निशानी पेश करो। (१५४) (सालेह ने) कहा, (देखो) यह ऊटनी है, (एक दिन) इस की पानी पीने की बारी है और एक तै दिन तुम्हारी बारी। (१५५) और इस को कोई तक्लीफ न देना, (नही तो) तुम को सख्त अजाब आ पकडेगा। (१५६) तो उन्हो ने उस की कूचे काट डाली, फिर शर्मिन्दा हुए। (१५७) सो उन को अजाव ने आ पकडा। बेशक इस मे निशानी है और इन मे अक्सर ईमान लाने वाले नही। (१५८) और तुम्हारा परवरदिगार तो गालिब (और) मेहरवान है। (१५९)★

(और) लूत की कौम ने भी पैगम्बरो को झुठलाया, (१६०) जब उन से उन के भाई लूत ने कहा कि तुम क्यो नही डरते ? (१६१) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हू, (१६२) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो, (१६३) और मैं तुम से इस (काम) का बदला नही मागता। मेरा बदला (ख़ुदा-ए-) रब्बुल-आलमीन के जिम्मे है। (१६४) क्या तुम अह्ले आलम (दुनिया वालो) मे से लड़को पर मायल होते हो ? (१६५) और तुम्हारे परवरदिगार ने जो तुम्हारे लिए तुम्हारी बीविया पैदा की है, उन को छोड देते हो। सच तो यह है कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो। (१६६) वे कहने लगे कि लूत ! अगर तुम मानोगे नही, तो देश-निकाला दे दिए जाओगे। (१६७) (लूत ने) कहा कि मैं तुम्हारे काम से सख्त बेजार हूं। (१६८) ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझ को और मेरे घर वालो को इन के कामो (के ववाल से) निजात दे। (१६९) सो हमने उन को और उन के घर वालो को, सब को निजात दी। (१७०) मगर एक बुढिया कि पीछे रह गयी। (१७१) फिर हमने औरो को हलाक कर दिया। (१७२) और उन पर मेह बरसाया, सो जो मेह उन (लोगो) पर बरसा, जो

★रु ८/१२ आ १९

इन्-न फी जालि-क ल-आ-य-तन् ◌ व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१७४) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् - अ़ज़ीजुर्-रहीम ★ (१७५) कज्ज-व अस्हावुल्-ऐकतिल्-मुर्सलीन (१७६) इज् का - ल लहुम् शुअैबुन् अला तत्तकून (१७७) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (१७८) फत्तकुल्ला-ह व अतीअूनि (१७९) व मा अस्अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अला रब्बिल्-आलमीन (१८०) औफुल्कै-ल व ला तकूनू मिनल्-मुख्सिरीन (१८१) व जिनू बिल्-किस्तासिल्-मुस्तक़ीम (१८२) व ला तब्खसुन्ना-स अश-या-अहुम् व ला तअ्-सौ फिल्अर्जि मुफ्सिदीन (१८३) वत्तकुल्लजी ख़-ल-ककुम् वल् - जिबिल्ल-तल् - अव्वलीन (१८४) कालू इन्नमा अन्-त मिनल्-मुसह्-हरीन (१८५) व मा अन्-त इल्ला ब-श-रुम्-मिस्लुना व इन् नजुन्नु-क लमिनल्-काजिबीन (१८६) फ-अस्कित् अलैना कि-स-फम् - मिनस्समाइ इन् कुन् - त मिनस्सादिकीन (१८७) का-ल रब्बी अअ्-लमु बिमा तअ्-मलून (१८८) फ-कज्जबूहु फ-अ-ख-जहुम् अज़ाबु यौमिज़्ज़ुल्लति इन्नहू का-न अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम (१८९) इन्-न फी जालि-क ल-आय-तन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१९०) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अजीजुर्-रहीम ★ (१९१) व इन्नहू ल-तन्जीलु रब्बिल्-आलमीन (१९२) न-ज-ल बिहिर्रूहुल्-अमीन (१९३) अला कल्बि-क लितकू-न मिनल्-मुन्जिरीन (१९४) बिलिसानिन् अ-रबिय्यिम् - मुबीन (१९५) व इन्नहू लफी जुबुरिल्-अव्वलीन (१९६) अ-व-लम् यकुल्लहुम् आय-तन् अय्यअ्-ल-महू अुलमाउ बनी इस्राई-ल (१९७) व लौ नज्जल्नाहु अला बअ्-ज़िल्-अअ्-जमीन (१९८) फ-क-र-अहू अलैहिम् मा कानू बिही मुअ्मिनीन (१९९) कजालि-क स - लक्नाहु फी कुलूबिल् - मुज्रिमीन (२००) ला युअ्मिनू - न बिही हत्ता य-र - वुल् - अज़ाबल् - अलीम (२०१)

الشعراء ٢٦ ٧٩٩ وقال الذين ١٩

فساء مطر المنذرين ۝ إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم
مؤمنين ۝ وإن ربك لهو العزيز الرحيم ۝ كذب أصحب لئيكة
المرسلين ۝ إذ قال لهم شعيب ألا تتقون ۝ إني لكم رسول
أمين ۝ فاتقوا الله وأطيعون ۝ وما أسئلكم عليه من أجر إن
أجري إلا على رب العلمين ۝ أوفوا الكيل ولا تكونوا من المخسرين ۝
وزنوا بالقسطاس المستقيم ۝ ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا
تعثوا في الأرض مفسدين ۝ واتقوا الذي خلقكم والجبلة الأولين ۝
قالوا إنما أنت من المسحرين ۝ وما أنت إلا بشر مثلنا وإن نظنك
لمن الكذبين ۝ فأسقط علينا كسفا من السماء إن كنت من
الصدقين ۝ قال ربي أعلم بما تعملون ۝ فكذبوه فأخذهم
عذاب يوم الظلة إنه كان عذاب يوم عظيم ۝ إن في ذلك لآية
وما كان أكثرهم مؤمنين ۝ وإن ربك لهو العزيز الرحيم ۝
وإنه لتنزيل رب العلمين ۝ نزل به الروح الأمين ۝ على قلبك
لتكون من المنذرين ۝ بلسان عربي مبين ۝ وإنه لفي زبر
الأولين ۝ أولم يكن لهم آية أن يعلمه علمؤا بني إسرائيل ۝
ولو نزلنه على بعض الأعجمين ۝ فقرأه عليهم ما كانوا به مؤمنين ۝
كذلك سلكنه في قلوب المجرمين ۝ لا يؤمنون به حتى يروا

★रु० ९/१३ आ १६ ★रु १०/१४ आ १६

डराये गये थे, वह बुरा था। (१७३) बेशक इस मे निशानी है और उन मे अक्सर ईमान लाने वाले नही थे। (१७४) और तुम्हारा परवरदिगार तो गालिब (और) मेहरबान है। (१७५)★

और बन के रहने वालो ने भी पैगम्बरो को झुठलाया, (१७६) जब उन मे शुऐब ने कहा कि तुम डरते क्यो नही, (१७७) मै तो तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हू, (१७८) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१७९) और मै इस (काम) का तुम से कुछ बदला नही मागता। मेरा बदला तो (खुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (१८०) (देखो) पैमाना पूरा भरा करो और नुक्सान न किया करो। (१८१) और तराजू सीधी रख कर तौला करो। (१८२) लोगो को उन की चीजे कम न दिया करो और मुल्क में फसाद न करते फिरो। (१८३) और उस से डरो, जिसने तुम को और पहली खल्कत को पैदा किया। (१८४) वे कहने लगे कि तुम पर जादू हो गया है। (१८५) और तुम और कुछ नही, हम ही जैसे आदमी हो और हमारा ख्याल है कि तुम झूठे हो। (१८६) अगर सच्चे हो तो हम पर आसमान मे एक टुकडा ला गिराओ। (१८७) (शुऐब ने) कहा कि जो काम तुम करते हो, मेरा परवरदिगार उसे खूब जानता है। (१८८) तो उन लोगो ने उन को झुठलाया, पस सायबान के अजाब ने उन को आ पकडा। बेशक वह बडे (सख्त) दिन का अज़ाब था। (१८९) इसमे यकीनन निशानी है और इनमे अक्सर ईमान लाने वाले नही थे। (१९०) और तुम्हारा परवर-दिगार तो गालिब (और) मेहरबान है। (१९१)★

और यह (कुरआन खुदा-ए-) रब्बुल आलमीन का उतारा हुआ है। (१९२) इस को अमानत-दार फरिश्ता लेकर उतरा है। (१९३) (यानी उस ने) तुम्हारे दिल पर (इल्का किया है, यानी डाल दिया है) ताकि (लोगो को) नसीहत करते रहो। (१९४) (और इल्का भी) खुली (जोर-दार) अरबी ज़ुबान मे (किया है) (१९५) और इसकी खबर पहले पैगम्बरो की किताबो मे (लिखी हुई) है। (१९६) क्या उनके लिए यह सनद नही है कि बनी इस्राईल के उलेमा इस (बात) को जानते है। (१९७) और अगर हम इस को किसी गैर ज़ुबान वाले पर उतारते। (१९८) और वह उसे उन (लोगो) को पढ कर सुनाता, तो ये उसे (कभी) न मानते। (१९९) इसी तरह हमने इकार को गुनाहगारो के दिलो मे दाखिल कर दिया। (२००) वे जब तक दर्द देने वाला अज़ाब न

★रु ९/१३ आ १६ ★रु १०/१४ आ १६

फ-यअ्ति-यहुम् बग-त-तुव-व हुम् ला यश-अुरून॥ (२०२) फ-यकूलू हल् नह्नु मुन्ज़रून ط (२०३) अ-फ-बिअ़ज़ाबिना यस्तअ़्-जिलून (२०४) अ-फ़-रऐ-त इम्-मत्तअ्-नाहुम् सिनीन॥ (२०५) सुम्-म जा-अहुम् मा कानू यूअदून॥ (२०६) मा अग्ना अन्हुम् मा कानू युमत्तअ़ून ط (२०७) व मा अह-लक्ना मिन् कर्-यतिन् इल्ला लहा मुन्ज़िरून (२०८) ज़िक्रा क़िफ़ व मा कुन्ना ज़ालिमीन (२०९) व मा त-नज्ज-लत् बिहिश्शयातीन (२१०) व मा यम्बगी लहुम् व मा यस्तती़अ़ून ط (२११) इन्नहुम् अ़निस्सम्अि़ ल-मअ्-ज़ूलून ط (२१२) फला तद्अु म-अ़ल्लाहि इलाहन् आख-र फ-तकू-न मिनल्-मुअ़ज़्ज़बीन ج (२१३) व अन्ज़िर् अ़शी-र-त-कल्-अक़्रबीन॥ (२१४) वख़्फ़िज़् जना-ह्-क लिमनित्त-ब-अ-क मिनल्-मुअ्मिनीन ج (२१५) फ-इन् अ़सौ-क फकुल् इन्नी बरीउम्-मिम्मा तअ-मलून ج (२१६) व त-व-क्कल् अ़लल्-अजीज़िर्रहीम॥ (२१७) अ़ल्लज़ी यरा-क ह़ी-न तकूम॥ (२१८) व तकल्लु-ब-क फिस्-साजिदीन (२१९) इन्नहू हुवस्समीअुल्-अ़लीम (२२०) हल् उनब्बिउकुम् अ़ला मन् त-नज्जलुश्-शयातीन ط (२२१) त-नज्जलु अ़ला कुल्लि अफ्फाकिन् असीमिय-॥ (२२२) युल्क़ूनस्सम्-अ व अक्सरुहुम् काज़िबून ط (२२३) वश्शु-अ़रा-उ यत्तबिअुहुमुल्-गावून ط (२२४) अ-लम् त-र अन्नहुम् फी कुल्लि वादिय्यहीमून॥ (२२५) व अन्नहुम् यकूलू-न मा ला यफ्-अ़लून॥ (२२६) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व ज़-क-रुल्ला-ह कसीरव्वन्-त-स़रू मिम्बअ़्-दि मा ज़ुलिमू ط व स-यअ्-लमुल्लज़ी-न ज़-लमू अय्-य मुन्क़लबिय्यन्कलिबून★ (२२७)

الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ فَيَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ
مُنْظَرُونَ ۝ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝ أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ۝
ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ۝ وَ
مَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ۝ ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ وَمَا
تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ۝ وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۝ إِنَّهُمْ عَنِ
السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ۝ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ۝
وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۝ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَى
الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ۝ وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ۝
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ۝ تَنَزَّلُ
عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ۝ وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ
الْغَاوُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ۝ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا
يَفْعَلُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا
مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ۝
سُورَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
طس تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُبِينٍ ۝ هُدًى وَبُشْرَىٰ

२७ सूरतुन्-नम्लि ४८

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ४८७९ अक्षर, ११६७ शब्द, ९३ आयते और ७ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

ता-सीन् क़िफ़ तिल्-क आयातुल्-कुर्आनि व किताबिम्-मुबीन॥ (१)

∴ मु अि मु ता ख ६ ★रु ११/१५ आ ३६
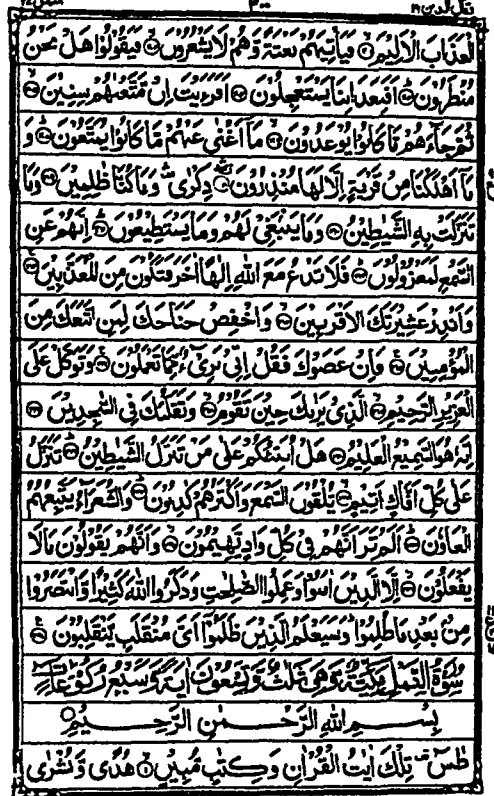
देख ले, उसको नही मानेंगे। (२०१) वह उन पर अचानक आ पड़ेगा और उन्हे खबर भी न होगी। (२०२) उस वक्त कहेंगे, क्या हमे मोहलत मिलेगी ? (२०३) तो क्या ये हमारे अजाब को जल्दी तलब कर रहे है ? (२०४) भला देखो तो, अगर हम उन को वर्षो फायदे देते रहे, (२०५) फिर उन पर वह (अजाब) आ वाकेअ हो, जिसका उनसे वायदा किया जाता है, (२०६) तो जो फायदे ये उठाते रहे, उन के किस काम आएगे ? (२०७) और हमने कोई वस्ती हलाक नही की, मगर उस के लिए नसीहत करने वाले (पहले भेज देते) थे। ·(२०८) (ताकि) नसीहत (कर दे)·और हम ज़ालिम नही है। (२०९) और इस (कुरआन) को शैतान लेकर नाजिल नही हुए। (२१०) यह काम न तो उन को मुनासिब है और न वे इसकी ताकत रखते हैं। (२११) वे (आसमानी बातो के) सुनने (की जगहो) से अलग कर दिए गए है। (२१२) तो खुदा के सिवा किसी और माबूद को मत पुकारना, वरना तुम को अज़ाब दिया जाएगा। (२१३) और अपने क़रीब के रिश्तेदारो को डर सुना दो। (२१४) और जो मोमिन तुम्हारे पैरो हो गये है, उन से नर्मी से पेश आओ। (२१५) फिर अगर लोग तुम्हारी नाफरमानी करें तो कह दो कि मैं तुम्हारे आमाल से बे-ताल्लुक हू। (२१६) और (खुदा-ए-) गालिब (और) मेहरबान पर भरोसा रखो, (२१७) जो तुम को जब तुम (तहज्जुद के वक्त) उठते हो, देखता है,[1] (२१८) और नमाजियो मे तुम्हारे फिरने को भी। (२१९) बेशक वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (२२०) (अच्छा,) मैं तुम्हे बताऊं कि शैतान किस पर उतरते हैं ? (२२१) हर झूठे गुनाहगार पर उतरते है, (२२२) जो सुनी हुई बात (उसके कान मे) डालते है और वे अक्सर झूठे हैं। (२२३) और शायरो की पैरवी गुमराह लोग किया करते है। (२२४) क्या तुमने नही देखा कि वे हर वादी मे सर मारते फिरते हैं। (२२५) और कहते वह है जो करते नही,[2] (२२६) मगर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये और खुदा को बहुत याद करते रहे और अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद[3] बदला लिया और जालिम बहुत जल्द जान लेंगे कि कौन-सी जगह लौट कर जाते है। (२२७)★

२७ सूरः नम्ल ४८

सूर. नम्ल मक्की है और इसमे तिरानवे आयतें और सात रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा-सीन। ये कुरआन और रोशन किताब की आयतें है। (१) मोमिनो के लिए हिदायत और

---

१ यानी कियाम से रुकूअ मे जाने और रुकूअ से सज्दे मे जाने को भी देखता है।

२ इन आयतो मे शायरो की बुराई बयान फरमायी गयी है, लेकिन बुराई के काबिल शायर वही हैं जो बुरे और ना-पाक शेर कहते हैं और जो ऐसे शेर कहे जिन मे खुदा की तारीफ हो या जिन से उस के दीन की मदद हो, वह तारीफ के काबिल और सवाब के हकदार हैं।

३ यानी अगर किसी ने उस की हिज्व (शेर मे बुरे नाम से याद करना) कही हो और वह भी उस की हिज्व कर के उस से बदला ले तो यह जायज है।

हुदव-व बुश्रा लिल्-मुअ्मिनीन ۙ(२) अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्-तूनज्ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् यूक़िनून (३) इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति ज़य्यन्ना लहुम् अअ्-मालहुम् फहुम् यअ-महून ط(४) उलाइ-कल्लज़ी-न लहुम् सूउल्-अज़ाबि व हुम् फिल्आख़िरति हुमुल् अख्सरून (५) व इन्न-क ल-तु-लक़्क़ल् - कुर्आ-न मिल्लदुन् हकीमिन् अलीम ●(६) इज़् का - ल मूसा लिअह्लिही इन्नी आनस्तु नारन् ط स-आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ आतीकुम् बिशिहाबिन् क-ब-सिल्-ल-अल्लकुम् तस्तलून (७) फ-लम्मा जाअहा नूदि-य अम्बूरि-क मन् फिन्नारि व मन् हौलहा ط व सुब्हानल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (८) या मूसा इन्नहू अनल्लाहुल्-अज़ीज़ुल् - हकीम ۙ (९) व अल्कि असा-क ط फ-लम्मा र-आहा तह्तज्ज़ु क-अन्नहा जान्नुंव्वल्ला मुद्बिरव्-व लम् युअक़्क़िब् ط या मूसा ला त-ख़फ़् قف इन्नी ला यख़ाफु ल-दय्यल् - मुर्सलून ۗ (१०) इल्ला मन् ज़-ल-म सुम्-म बद्-द-ल हुस्-नम्-बअ्-द सूइन् फइन्नी गफ़ूरुर्-रहीम (११) व अद्ख़िल् य-द-क फी जैबि-क तख़्रुज् बैज़ा - अ मिन् गैरि सूइन् قف फी तिस्इ आयातिन् इला फ़िर्औ - न व क़ौमिही ط इन्नहुम् कानू क़ौमन् फासिक़ीन (१२) फ-लम्मा जाअत्हुम् आयातुना मुब्सि-र-तन् क़ालू हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन ج(१३) व ज-हदू बिहा वस्तै-क़-नत्हा अन्फुसुहुम् ज़ुल्मव्-व अुलुव्वन् ط फन्ज़ुर् कै-फ का-न आक़िबतुल् - मुफ्सिदीन ★(१४) व ल-क़द् आतैना दावू-द व सुलैमा - न अिल्मन् ج व क़ालल् - हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी फज़्-ज-लना अला कसीरिम्मिन् अिबादिहिल्-मुअ्मिनीन (१५)

وقال الذين ١٩ — ٣١ — النمل ٢٧

للمؤمنين ۝ الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكوة وهم
بالاخرة هم يوقنون ۝ ان الذين لا يؤمنون بالاخرة زينا لهم
اعمالهم فهم يعمهون ۝ اولئك الذين لهم سوء العذاب وهم
في الاخرة هم الاخسرون ۝ وانك لتلقى القران من لدن
حكيم عليم ۝ اذ قال موسى لاهله اني انست نارا ساتيكم
منها بخبر او اتيكم بشهاب قبس لعلكم تصطلون ۝ فلما
جاءها نودي ان بورك من في النار ومن حولها وسبحن
الله رب العلمين ۝ يموسى انه انا الله العزيز الحكيم ۝
والق عصاك فلما راها تهتز كانها جان ولى مدبرا ولم يعقب
يموسى لا تخف اني لا يخاف لدي المرسلون ۝ الا من ظلم
ثم بدل حسنا بعد سوء فاني غفور رحيم ۝ وادخل يدك
في جيبك تخرج بيضاء من غير سوء في تسع ايت الى فرعون
وقومه انهم كانوا قوما فسقين ۝ فلما جاءتهم ايتنا مبصرة
قالوا هذا سحر مبين ۝ وجحدوا بها واستيقنتها انفسهم ظلما
وعلوا فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ۝ ولقد اتينا داود
وسليمن علما وقالا الحمد لله الذي فضلنا على كثير من
عباده المؤمنين ۝ وورث سليمن داود وقال يايها الناس علمنا

खुशखबरी है। (२) वे, जो नमाज पढते और जकात देते और आखिरत का यकीन रखते हैं। (३) जो लोग आखिरत पर ईमान नही रखते, हमने उन के आमाल उन के लिए सजा दिए हैं, तो वे परेशान भटक रहे है। (४) यही लोग है, जिन के लिए बडा अजाब है और वे आख़िरत मे भी बहुत नुक्सान उठाने वाले है। (५) और तुम को कुरआन हकीम व अलीम (खुदा) की तरफ से अता किया जाता है● (६) जब मूसा ने अपने घर वालो से कहा कि मैं ने आग देखी है। मैं वहा से (रास्ते का) पता लाता हू या सुलगता हुआ अगारा तुम्हारे पास लाता हू, ताकि तुम तापो। (७) जब मूसा उस के पास आए तो निदा (आवाज) आयी कि वह जो आग मे (तजल्ली दिखाता) है, बरकत वाला है और वह जो आग के आस-पास है और खुदा जो पूरी दुनिया का परवरदिगार है, (८) ऐ मूसा! मै ही खुदा-ए-गालिब व हकीम हू। (९) और अपनी लाठी डाल दो। जब उसे देखा तो (इस तरह) हिल रही थी गोया साप है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड कर न देखा। (हुक्म हुआ कि) मूसा डरो मत, हमारे पास पैगम्बर डरा नही करते। (१०) हा, जिस ने जुल्म किया, फिर बुराई के बाद उसे नेकी से बदल दिया, तो मैं बख्शने वाला मेहरबान हू। (११) और अपना हाथ अपने गरेबान मे डालो, बे-ऐब सफेद निकलेगा। (इन दो मोजज़ो के साथ जो) नौ मोजज़ो मे (दाखिल है) फिर्औन और उसकी कौम के पास (जाओ) कि वे बद-किरदार लोग है। (१२) जब उनके पास हमारी रोशन निशानिया पहुंची, कहने लगे, यह खुला जादू है। (१३) और बे-इंसाफी और घमड से उन से इकार किया, लेकिन उन के दिल उन को मान चुके थे, सो देख लो कि फसाद करने वालो का अजाम कैसा हुआ। (१४)★

और हमने दाऊद और सुलेमान को इल्म बख्शा और उन्होने कहा कि खुदा का शुक्र है, जिस ने हमे अपने बहुत-से-मोमिन बन्दो पर बडाई दी। (१५) और सुलेमान दाऊद के जानशीन हुए और

●सु ३/४ ★रु १/१६ आ १४

व वरि-स सुलैमानु दावू-द व का-ल या अय्युहन्नासु अुल्लिम्ना मन्तिक़त्तैरि व ऊतीना मिन् कुल्लि शैइन् इन्-न हाज़ा ल-हुवल्-फ़ज़्लुल्-मुबीन (१६) व हुशि-र लिसुलैमा-न जुनूदुहू मिनल्जिन्नि वल्इन्सि वत्तैरि फ़हुम् यू-ज़-अून (१७) हत्ता इज़ा अतौ अला वादिन्नम्लि कालत् नम्लतुय्या अय्युहन् - नम्लुद्ख़ुलू मसाकि-नकुम् ला यह्तिमन्नकुम् सुलैमानु व जुनूदुहू व हुम् ला यश्अुरून (१८) फ़-त-बस्स-म ज़ाहिकम्मिन् क़ौलिहा व क़ा-ल रब्बि औज़िअ्-नी अन् अश्कु-र निअ्-म-त-कल्लती अन्अम्-त अ़लय्-य व अ़ला वालिदय्-य व अन् अअ्-म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अद्ख़िल्नी बिरह्मति-क फ़ी अिबादिकस्-सालिहीन (१९) व त-फ़क्क-दत्तै-र फ़क़ा-ल मा लि-य ला अरल्हुद्हु - द अम् का - न मिनल् - ग़ाइबीन (२०) ल-उअ़ज़्ज़िबन्नहू अ़ज़ाबन् शदीदन् औ ल-अज़्-बहन्नहू औ ल-यअ्तियन्नी बिसुल्तानिम्-मुबीन (२१) फ़-म-क-स ग़ै-र बअ़ीदिन् फ़क़ा-ल अहत्तु बिमा लम् तुहित् बिही व जिअ्तु - क मिन् स-ब-इम्-बिन-बइय्यक़ीन (२२) इन्नी व-जत्तुम्-र-अ-तन् तम्लिकुहुम् व ऊतियत् मिन् कुल्लि शैइव्-व लहा अ़र्शुन् अ़ज़ीम (२३) व-जत्तुहा व क़ौमहा यस्जुदू-न लिश्शम्सि मिन् दूनिल्लाहि व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्-मालहुम् फ़-सद्दहुम् अ़निस्सबीलि फ़हुम् ला यह्-तदून (२४) अल्ला यस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी युख़्रिजुल्-ख़ब्-अ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्-लमु मा तुख़्फ़ू-न व मा तुअ्-लिनून (२५) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल्-अ़र्शिल्-अ़ज़ीम □ (२६) का - ल सनन्ज़ुरु अ-स-दक्-त अम् कुन्-त मिनल्काज़िबीन (२७) इज़्हब् बिकिताबी हाज़ा फ़-अल्किह् इलैहिम् सुम्-म तवल्-ल अ़न्हुम् फ़न्ज़ुर् मा ज़ा यर्जिअून (२८) कालत् या अय्युहल्म-लउ इन्नी उल्कि-य इलय्-य किताबुन् करीम (२९) इन्नहू मिन् सुलैमा - न व इन्नहू बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम (३०)

مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾
وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾
حَتّٰى إِذَا أَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يٰأَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسٰكِنَكُمْ
لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا
مِنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ
وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي
عِبَادِكَ الصّٰلِحِينَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ
كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿٢٠﴾ لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَاذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِّي
بِسُلْطٰنٍ مُبِينٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ وَ
جِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ﴿٢٢﴾ إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ
مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ
فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾ أَلَّا يَسْجُدُوا لِلّٰهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيمِ ۩ ﴿٢٦﴾ قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِينَ ﴿٢٧﴾ اذْهَبْ بِكِتٰبِي
هٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يٰأَيُّهَا
الْمَلَؤُا إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيمٌ ﴿٢٩﴾ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللّٰهِ

□ सज्दः ८

कहने लगे कि लोगो ! हमे (खुदा की तरफ से) जानवरो की बोली सिखायी गयी है और हर चीज़ इनायत फरमायी गयी है। बेशक यह (उस की) खुली मेहरबानी है। (१६) और सुलेमान के लिए जिन्नो और इंसानो और परिंदो के लश्कर जमा किए गये और वे किस्मवार किए गए थे। (१७) यहा तक कि जब चीटियो के मैदान मे पहुचे तो एक चीटी ने कहा कि चीटियो ! अपने अपने बिलो मे दाखिल हो जाओ, ऐसा न हो कि सुलेमान और उसके लश्कर तुमको कुचल डालें और उन को खबर भी न हो। (१८) तो वह उस की बात से हंस पडे और कहने लगे कि ऐ परवरदिगार ! मुझे तौफीक दे कि जो एहसान तूने मुझ पर और मेरे मां-बाप पर किए है, उनका शुक्र करू और ऐसे नेक काम करू कि तू उन से खुश हो जाए और मुझे अपनी रहमत से अपने बन्दो मे दाखिल फरमा। (१६) और जब उन्होने जानवरो का जायज़ा लिया, तो कहने लगे, क्या वजह है कि हुदहुद नजर नही आता, क्या कहीं गायब हो गया है ? (२०) मैं उसे सख्त सज़ा दूगा या ज़िब्ह कर डालूगा या मेरे सामने (अपनी बे-कसूरी की) खुली दलील पेश करे। (२१) अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि हुदहुद आ मौजूद हुआ और कहने लगा कि मुझे एक ऐसी चीज़ मालूम हुई है, जिस की आप को ख़बर नहीं और मैं आपके पास (शहर) सबा से एक यकीनी खबर लेकर आया हूं। (२२) मैं ने एक औरत देखा कि इन लोगो पर बादशाहत करती है और हर चीज उसे मिली हुई है और उसका एक बडा तख़्त है। (२३) मैं ने देखा कि वह और उसकी कौम (के लोग) खुदा को छोड कर सूरज को सज्दा करते है और शैतान ने उन के आमाल उन्हे सजा कर दिखाए है और उनको रास्ते से रोक रखा है, पस वे रास्ते पर नही आते। (२४) (और नही समझते) कि खुदा को जो आसमानो और ज़मीन मे छिपी चीजो को जाहिर कर देता और तुम्हारे छिपे और ज़ाहिर आमाल को जानता है, क्यो सज्दा न करे ? (२५) ख़ुदा के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वही बडे अर्श का मालिक है □(२६) (सुलेमान ने) कहा, (अच्छा) हम देखेंगे, तू ने सच कहा है या तू झूठा है। (२७) यह मेरा ख़त ले जा और इसे उनकी तरफ डाल दे, फिर उनके पास से फिर आ और देख कि वे क्या जवाब देते है ? (२८) मलका (रानी) ने कहा कि दरबार वालो ! मेरी तरफ एक नामा (पत्र) डाला गया है। (२६) वह सुलेमान की तरफ से है और (मज्मून यह है) कि शुरू खुदा का नाम ले

□ सज्दः ८

अल्ला तअ-लू अलय्-य वअ्तूनी मुस्लिमीन ★ (३१) कालत् या अय्युहल्-म-लउ अफ्तूनी फी अम्री🞍मा कुन्तु काति-अ-तन् अम्-रन् हत्ता तश-हदून (३२) कालू नह्नु उलू कुव्वतिंव-व उलू बअ्सिन् शदीदिंव-वल्-अम्रु इलैकि फन्ज़ुरी माज़ा तअ्-मुरीन (३३) कालत् इन्नल्मुलू-क इज़ा द-ख़लू कर-य-तन् अफ्सदूहा व ज-अलू अअिज्ज-त अह्लिहा अज़िल्ल-तन् 🞍 व कज़ालि-क यफ्-अलून (३४) व इन्नी मुर्सि-लतुन् इलैहिम् बिहदिय्यतिन् फनाज़ि-र-तुम् बि-म यर्जिअुल्-मुर्सलून (३५) फ-लम्मा जा-अ सुलैमा-न का-ल अतुमिद्दूननि बिमालिन् फमा आतानि-यल्लाहु खैरुम्मिम्मा आताकुम् 🞍 बल् अन्तुम् बिहदिय्यतिकुम् तफ्-रहून (३६) इर्जिअ् इलैहिम् फ-ल-नअ्तियन्नहुम् बिजुनूदिल्ला कि-ब-ल लहुम् बिहा व लनुख़्रिजन्नहुम् मिन्हा अज़िल्ल-तंव्-व हुम् साग़िरून (३७) का-ल या अय्युहल्म-लउ अय्युकुम् यअ्तीनी बिअर्शिहा कब्-ल अय्यअ्तूनी मुस्लिमी-न (३८) का-ल अिफ्रीतुम्-मिनल्जिन्नि अ-न आती-क बिही कब्-ल अन् तकू-म मिम्मकामि-क 🞍 व इन्नी अलैहि लकविय्युन् अमीन (३९) कालल्लज़ी अिन्दहू अिल्मुम्मिनल्-किताबि अ-न आती-क बिही कब्-ल अय्यर-तद्-द इलै-क तर्फु-क ⌐ फ-लम्मा रआहु मुस्तकिर्रन् अिन्दहू का-ल हाज़ा मिन् फज़्लि रब्बी लियब्लु-वनी अ-अश्कुरु अम् अक्फुरु ⌐ व मन् श-क-र फ-इन्नमा यश्कुरु लिनफ्सिही 🞍 व मन् क-फ-र फ-इन्न रब्बी ग़निय्युन् करीम (४०) का-ल नक्किरू लहा अर्-शहा नन्ज़ुर् अ-तह-तदी अम् तकूनु मिनल्लज़ी-न ला यह-तदून (४१) फ-लम्मा जा-अत् की-ल अहाकज़ा अर्शुकि ⌐ कालत् क-अन्नहू हु-व 🞍 व ऊतीनल्-अिल्-म मिन् कब्लिहा व कुन्ना मुस्लिमीन (४२) व सद्दहा मा कानत् तअ्-बुदु मिन्दूनिल्लाहि ⌐ इन्नहा कानत् मिन् कौमिन् काफिरीन (४३)

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۟ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا
اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ۟ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا
قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ۟ قَالَتْ
اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ
يَفْعَلُوْنَ ۟ وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ۟
فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۫ فَمَاۤ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ
بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ۟ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ
لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۟ قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا
اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۟ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ
الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ۟
قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ
طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۫ لِيَبْلُوَنِيْۤ
ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ
غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ۟ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْۤ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ
الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ۟ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ
وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ۟ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۟ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ

★रु २/१७ आ १७

कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। (३०) (बाद इस के यह) कि मुझ से सर-कशी न करो और इताअत गुज़ार हो कर मेरे पास चले आओ। (३१)★

(ख़त सुना कर) कहने लगी कि ऐ दरबारियो! मेरे इस मामले में मुझे मश्विरा दो, जब तक तुम हाज़िर न हो (और सलाह न दो), मैं किसी काम का फ़ैसला करने वाली नहीं। (३२) वे बोले कि हम बड़े ज़ोरावर और सख़्त लड़ाकू हैं और हुक्म आपके अख़्तियार में है, तो जो हुक्म दीजिएगा, (उसके नतीजे पर) नज़र कर लीजिएगा। (३३) उसने कहा कि बादशाह जब किसी शहर में दाख़िल होते हैं, तो उसको तबाह कर देते हैं और वहां के इज़्ज़त वालों को ज़लील कर दिया करते हैं और इसी तरह यह भी करेंगे। (३४) और मैं उनकी तरफ़ कुछ तोहफ़ा भेजती हूं और देखती हूं कि क़ासिद क्या जवाब लाते हैं। (३५) जब (क़ासिद) सुलेमान के पास पहुंचा, तो (सुलेमान ने) कहा, क्या तुम मुझे माल से मदद देना चाहते हो, जो कुछ ख़ुदा ने मुझे अता फ़रमाया है, वह उस से बेहतर है, जो तुम्हें दिया है। सच तो यह है कि अपने तोहफ़े से तुम ही ख़ुश होते होगे। (३६) उनके पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसे लश्कर लेकर हमला करेंगे, जिन के मुक़ाबले की उन में ताक़त न होगी और उनको वहां से बे-इज़्ज़त करके निकाल देंगे और वे ज़लील होंगे। (३७) (सुलेमान ने) कहा कि ऐ दरबार वालो! कोई तुम में ऐसा है कि इससे पहले कि वे लोग फ़रमाबरदार हो कर हमारे पास आएं, मलका का तख़्त मेरे पास ले आए। (३८) जिन्नों में से एक क़वी हैकल जिन्न ने कहा कि इस से पहले कि आप अपनी जगह से उठें, मैं उस को आप के पास ला हाज़िर करता हूं और मुझे इस पर क़ुदरत (भी) हासिल है (और) अमानतदार (भी) हूं। (३९) एक शख़्स जिसको (ख़ुदा की) किताब का इल्म था, कहने लगा कि मैं आप की आंख के झपकने से पहले-पहले उसे आप के पास हाज़िर किए देता हूं। जब (सुलेमान ने) तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा, तो कहा कि यह मेरे परवरदिगार का फ़ज़्ल है, ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या नेमत की ना-शुक्री करता हूं और जो शुक्र करता है तो अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्र करता है और जो ना-शुक्री करता है, तो मेरा परवरदिगार बे-परवाह (और) करम वाला है। (४०) (सुलेमान ने) कहा कि मलका के (अक़्ल के इम्तिहान के) लिए उस के तख़्त की सूरत बदल दो, देखें कि वह सूझ रखती है या उन लोगों में से है, जो सूझ नहीं रखते। (४१) जब वह आ पहुंची, तो पूछा गया कि क्या आप का तख़्त भी इसी तरह का है? उस ने कहा कि यह तो गोया बिल्कुल उसी जैसा है और हमको इससे पहले ही (सुलेमान की बड़ाई और शान का) इल्म हो गया था और हम फ़रमाबरदार हैं। (४२) और वह जो ख़ुदा के सिवा (और की) पूजा करती थी, (सुलेमान ने) उस को उस से मना किया (इस से पहले तो) वह काफ़िरों में से थी। (४३) (फिर) उस से कहा

★रु २/१७ आ १७

की-ल ल-हुद-ख़ुलिस्सर्-ह् फ-लम्मा र-अत्हु ह़सि-बत-हु लुज्जतव्-व क-श-फत् अन् साक़ैहा का-ल इन्नहू सर्-हुम् - मुमर्रदुम् - मिन् कवारी-र क़ालत् रब्बि इन्नी ज़-लम्तु नफ़्सी व अस्-लम्तु म-अ सुलैमा-न लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन★ (४४) व ल-कद् अर्सल्ना इला समू-द अख़ाहुम् सालिह़न् अनिअ्-बुदुल्ला-ह फ़-इज़ा-हुम् फरीक़ानि यख़्तसिमून (४५) क़ा-ल या कौमि लि-म तस्तअ्-जिलू-न बिस्सय्यिअति कब्-लल्-ह-स-नति लौ ला तस्तग् - फ़िरूनल्ला-ह ल-अल्लकुम् तुर-ह़मून (४६) कालुत्तय्यर्ना वि-क व बिमम्म-अ्-क का-ल ताइरुकुम् अिन्दल्लाहि बल् अन्तुम् कौमुन् तुफ़्तनून (४७) व का-न फिलमदीनति तिस्अतु रह्तिंय्युफ़्सिदू-न फिल्अर्जि व ला युस्लिहून (४८) क़ालू तकासमू बिल्लाहि लनुबय्यितन्नहू व अह्-लहू सुम्-म लनकूलन्-न लिवलिय्यिही मा शहिद्-ना मह्-लि-क अह्लिही व इन्ना ल-सादिकून (४९) व म-करू मक-रव्-व म-कर्ना मक्-रव्वहुम् ला यश्अुरून (५०) फन्ज़ुर् कै-फ का-न आकिबतु मक्रिहिम् अन्ना दम्मर्नाहुम् व कौमहुम् अज्मअीन (५१) फ-तिल-क बुयूतुहुम् ख़ावि-य-तम्-बिमा ज़-लमू इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल्-लिक़ौमिय्यअ्-लमून (५२) व अन्जैनल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तकून (५३) व लूतन् इज् का-ल लिकौमिही अ-तअ्-तूनल्-फाहि-श-त व अन्तुम् तुब्सिरून (५४) अ-इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्-रिजा-ल शह्-व-तम् - मिन् दूनिन्निसाइ बल् अन्तुम् क़ौमुन् तज्-हलून (५५) फमा का-न जवा-ब कौमिही इल्ला अन् कालू अख़्रिजू आ - ल लूतिम् - मिन् कर्यतिकुम् इन्नहुम् उनासुंय्य-त-तह्-हरून (५६) फ-अन्जैनाहु व अह्-लहू इल्लम्र-अ-तहू कद्दर्नाहा मिनल्‌गाबिरीन (५७) व अम्तर्ना अलैहिम् म-त्-रन् फर्मा-अ म-त-रुल्-मुन्जरीन ★ (५८) कुलिल्-हम्दु लिल्लाहि व सलामुन् अला अिबादिहिल्-लज़ीनस् - तफ़ा आल्लाहु ख़ैरुन् अम्मा युश्रिकून (५९)

حسبته لجة وكشفت عن ساقيها قال إنه صرح ممرد من قوارير
قالت رب إني ظلمت نفسي وأسلمت مع سليمان لله رب العالمين ۝ و
لقد أرسلنا إلى ثمود أخاهم صالحا أن اعبدوا الله فإذا هم فريقان
يختصمون ۝ قال يا قوم لم تستعجلون بالسيئة قبل الحسنة لولا
تستغفرون الله لعلكم ترحمون ۝ قالوا اطيرنا بك وبمن معك قال
طائركم عند الله بل أنتم قوم تفتنون ۝ وكان في المدينة تسعة
رهط يفسدون في الأرض ولا يصلحون ۝ قالوا تقاسموا بالله لنبيتنه
وأهله ثم لنقولن لوليه ما شهدنا مهلك أهله وإنا لصادقون ۝
ومكروا مكرا ومكرنا مكرا وهم لا يشعرون ۝ فانظر كيف كان
عاقبة مكرهم أنا دمرناهم وقومهم أجمعين ۝ فتلك بيوتهم خاوية بما
ظلموا إن في ذلك لآية لقوم يعلمون ۝ وأنجينا الذين آمنوا و
كانوا يتقون ۝ ولوطا إذ قال لقومه أتأتون الفاحشة وأنتم تبصرون ۝
أئنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء بل أنتم قوم تجهلون ۝
فما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوا آل لوط من قريتكم
إنهم أناس يتطهرون ۝ فأنجيناه وأهله إلا امرأته قدرناها من
الغابرين ۝ وأمطرنا عليهم مطرا فساء مطر المنذرين ۝ قل
الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى آلله خير أما يشركون ۝

★रु. ३/१८ आ १३ ★रु. ४/१९ आ १४

गया कि महल मे चलिए। जब उस ने उस (के फ़र्श) को देखा, तो उसे पानी का हौज़ समझा और (कपडा उठा कर) अपनी पिंडुलिया खोल दी। (सुलेमान ने) कहा, यह ऐसा महल है, जिसके (नीचे भी) शीशे जडे हुए है। वह बोल उठी कि परवरदिगार! मैं अपने आप पर ज़ुल्म करती रही थी और (अब) मैं सुलेमान के हाथ पर[1] खुदा-ए-रब्बुल आलमीन पर ईमान लाती हू। (४४)☆

और हम ने समूद की तरफ उन के भाई सालेह को भेजा कि खुदा की इबादत करो, तो वे दो फरीक हो कर आपस मे झगडने लगे। (४५) (सालेह ने) कहा कि ऐ कौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यो जल्दी करते हो (और) खुदा से बख्शिश क्यो नही मागते, ताकि तुम पर रहम किया जाए।[2] (४६) वे कहने लगे कि तुम और तुम्हारे साथी हमारे लिए बुरे शगून है (सालेह ने) कहा कि तुम्हारी बद-शगूनी खुदा की तरफ से है, बल्कि तुम ऐसे लोग हो जिन की आज़माइश की जाती है। (४७) और शहर मे नौ शख्स थे, जो मुल्क मे फसाद किया करते थे और इस्लाह मे काम नही लेते थे। (४८) कहने लगे कि खुदा की कसम खाओ कि हम रात को उस पर और उस के घर वालो पर छापा मारेंगे, फिर उस के वारिसो से कह देगे कि हम तो घर वालो की हलाकत की जगह पर गये ही नही और हम सच कहते हैं। (४९) और वे एक चाल चले और हम भी एक चाल चले और उनको कुछ खबर न हुई। (५०) तो देख लो कि उन की चाल का अंजाम कैसा हुआ। हम ने उन को और उन की कौम, सब को हलाक कर डाला। (५१) अब ये उन के घर उन के ज़ुल्म की वजह से खाली पडे हैं। जो लोग समझ रखते है, उनके लिए इसमे निशानी है। (५२) और जो लोग ईमान लाए और डरते थे, उनको हम ने निजात दी। (५३) और लूत को (याद करो), जब उन्हो ने अपनी कौम से कहा कि तुम बे-हयाई (के काम) क्यो करते हो और तुम देखते हो। (५४) क्या तुम औरतो को छोड कर लज्जत (हासिल करने) के लिए मर्दो की तरफ मायल होते हो। सच तो यह है कि तुम जाहिल लोग हो। (५५) तो उन की कौम के लोग (बोले, तो) यह बोले और इस के सिवा उन का कुछ जवाब न था कि लूत के घर वालो को अपने शहर से निकाल दो। ये लोग पाक बनाना चाहते है। (५६) तो हम ने उन को और उन के घर वालो को निजात दी, मगर उन की बीवी, कि उस के बारे मे मुकर्रर कर रखा था (कि वह) पीछे रह जाने वालो मे होगी। (५७) और हम ने उन पर मेह बरसाया सो (जो) मेह उन लोगो पर (बरसा), जिन को मुतनब्बह कर दिया गया था, बुरा था। (५८)★

कह दो कि सब तारीफ खुदा ही को (मुनासिब) है और उस के बन्दो पर सलाम है, जिन को उस ने चुन लिया। भला खुदा बेहतर है या वे, जिन को ये (उस का) शरीक बनाते हैं। (५९)

---

१ लफ्ज़ो का तर्जुमा है 'सुलेमान के साथ' मगर यहा मुराद है 'सुलेमान के हाथ पर', इस लिए हम ने यही तर्जुमा किया है।

२ हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम उन लोगो को खुदा पर ईमान लाने के लिए कहते थे कि ईमान लाओगे तो तुम्हारा भला होगा, वरना तुम पर अज़ाब नाज़िल होगा। वे लोग न ईमान लाते थे, न भलाई के लिए कोशिश करते थे, बल्कि यह कहते थे कि वह अज़ाब, जिस से तुम हम को डराते हो, जल्दी नाज़िल कराओ। सालेह अलैहिस्सलाम ने कहा, तुम अज़ाब के लिए क्यो जल्दी मचाते हो। खुदा से बख्शिश मांगो, ताकि बजाए अज़ाब के तुम पर खुदा की रहमत नाज़िल हो।

बीसवां पारः अम्मन ख़-ल-क़स्समावाति

सूरतुन् नम्लि आयात ६० से ९३

अम्मन् ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज व अन्ज-ल लकुम् मिनस्समाइ मा-अन् फ-अम्बत्ना बिही हदाइ-क ज़ा-त बह्जतिन् मा का-न लकुम् अन् तुम्बितू श-ज-रहा अ इलाहुम्-म - अ़ल्लाहि बल् हुम् क़ौमुय्यअ्-दिलून (६०) अम्मन् ज-अ-लल्अर-ज क़रारव-व ज-अ-ल ख़िलालहा अन्हारंव्-व ज-अ-ल लहा रवासि-य व ज-अ-ल बैनल्-बह्रैनि हाजिजन् अ इलाहुम्-म-अल्लाहि बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून (६१) अम्मय्युजीबुल्-मुज़्तर्-र इज़ा दआहु व यक्शिफुस्सू-अ व यज्-अलुकुम् खु-ल-फा-अल् - अर्ज़ि अ इलाहुम्-म-अल्लाहि क़लीलम्मा त - ज़क्करून (६२) अम्मय्यह्दीकुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि व मय्युर्सिलुर-रिया-ह बुश्रम्बै - न यदै रह्-मतिही अ इलाहुम् - म - अल्लाहि तआलल्लाहु अम्मा युश्रिकून (६३) अम्मय्यब्दउल्-ख़ल-क़ सुम्-म युईदुहू व मय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि अ इलाहुम्-म अल्लाहि कुल् हातू बुर्हानकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (६४) क़ुल् ला यअ्-लमु मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़िलग़ै-ब इल्लल्लाहु व मा यश्अुरू-न अय्या-न युब-अ़सून (६५) बलिद्दा-र-क अिल्मुहुम् फ़िल्आख़िरति बल् हुम् फ़ी शक्किम् - मिन्हा बल् हुम् मिन्हा अमून ★(६६) व क़ालल्लज़ी-न क-फरू अ इज़ा कुन्ना तुराबंव्-व आबाउना अ-इन्ना ल-मुख़्रजून (६७) ल - क़द् वुअिद्ना हाज़ा नह्नु व आबाउना मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (६८) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फन्ज़ुरू कै-फ का-न आक़िबतुल्-मुज्रिमीन (६९) व ला तह्-ज़न् अलैहिम् व ला तकुन् फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्कुरून (७०)

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَأَنْۢبَتْنَا
بِهٖ حَدَاۤئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ءَإِلٰهٌ مَّعَ
اللّٰهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۝ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّ
جَعَلَ خِلٰلَهَاۤ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ
حَاجِزًا ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ أَمَّنْ يُّجِيْبُ
الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْۤءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاۤءَ الْأَرْضِ
ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝ أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ
الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ءَإِلٰهٌ
مَّعَ اللّٰهِ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ وَالْأَرْضِ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قُلْ هَاتُوْا
بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللّٰهُ وَمَا يَشْعُرُوْنَ أَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝ بَلِ
ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا بَلْ هُمْ مِّنْهَا
عَمُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ءَإِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَاۤؤُنَاۤ أَئِنَّا
لَمُخْرَجُوْنَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَاۤؤُنَا مِنْ قَبْلُ إِنْ
هٰذَاۤ إِلَّاۤ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ

★रु. ५/१ आ ८

भला किस ने आसमानो और जमीन को पैदा किया और (किस ने) तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया ? (हम ने।) फिर हम ने उस से हरे-भरे बाग उगाए। तुम्हारा काम तो न था कि तुम उन के पेड़ो को उगाते, तो क्या खुदा के साथ कोई और भी माबूद है ? (हरगिज़ नही,) बल्कि ये लोग रास्ते से अलग हो रहे है। (६०) भला किस ने ज़मीन को करारगाह बनाया और उस के बीच नहरे बनायी और उस के लिए पहाड बनाए और (किस ने) दो दरियाओ के बीच ओट बनायी। (यह सब कुछ खुदा ने ही बनाया।) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज़ नही,) बल्कि उन मे अक्सर समझ नही रखते। (६१) भला कौन बे-करार की इल्तिजा कुबूल करता है, जब वह उस से दुआ करता है। और (कौन उस की) तक्लीफ को दूर करता है और (कौन) तुम को ज़मीन मे (अगलो का) जानशीन बनाता है ? (यह सब कुछ खुदा करता है) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज नही, मगर) तुम बहुत कम गौर करते हो ? (६२) भला कौन तुम को जगल और दरिया के अंधेरो मे रास्ता बताता और (कौन) हवाओ को अपनी रहमत के आगे खुशखबरी बना कर भेजता है ? (यह सब कुछ खुदा करता है,) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज नही,) ये लोग जो शिर्क करते है, खुदा (की शान) उस से बुलन्द है। (६३) भला कौन खल्कत को पहली बार पैदा करता, फिर उस को बार-बार पैदा करता रहता है और (कौन) तुम को आसमान और जमीन से रोजी देता है ? (यह सब कुछ खुदा करता है,) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज़ नही।) कह दो कि (मुश्रिको !) अगर तुम सच्चे हो, तो दलील पेश करो। (६४) कह दो कि जो लोग आसमानो और ज़मीन मे है, खुदा के सिवा गैब की बाते नही जानते और न यह जानते है कि (जिंदा कर के) उठाए जाएगे। (६५) बल्कि आखिरत (के बारे) मे उन का इल्म 'मुन्तही' (खत्म) हो चुका है।[1] बल्कि वे इस मे शक मे है, बल्कि इस से अधे हो रहे है। (६६)★

और जो लोग काफिर है, कहते है कि जब हम और हमारे बाप-दादा मिट्टी हो जाएगे, तो क्या हम फिर (कब्रो) से निकाले जाएगे। (६७) यह वायदा हम से और हमारे बाप-दादा से पहले से होता चला आया है। (कहा का उठना और कैसी कियामत !) यह तो सिर्फ पहले लोगो की कहानिया है। (६८) कह दो कि मुल्क मे चलो-फिरो, फिर देखो कि गुनाहगारो का अजाम क्या हुआ है ? (६९) और उन (के हाल) पर गम न करना और न उन चालो से, जो ये कर रहे है,

१ यानी आखिरत के बारे मे उन का इल्म कुछ भी नही है और उस का खात्मा हो गया है।

★रु ५/१ आ ८

व यकूलू-न मता हाज़लवअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (७१) कुल् असा अय्यकू-न रदि-फ लकुम् बअ्-ज़ुल्लज़ी तस्तअ्-जिलून (७२) व इन्-न रब्ब-क लज़ू फ़ज़्लिन् अलन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून (७३) व इन्-न रब्ब-क ल-यअ्-लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ्-लिनून (७४) व मा मिन् ग़ाइबतिन् फ़िस्समाइ वल्अर्ज़ि इल्ला फ़ी किताबिम् - मुबीन (७५) इन्-न हाज़ल्कुर्आ-न यकुस्सु अ़ला बनी इस्राई-ल अक्स-रल्लज़ी हुम् फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (७६) व इन्नहू ल-हुदंव्-व रह्-मतुल्-लिल्मुअ्मिनीन (७७) इन्-न रब्ब - क यक़्ज़ी बै-नहुम् बिहुक्मिही ج व हुवल्अज़ीज़ुल् - अलीम ۚ (७८) फ - त - वक्कल् अ-लल्लाहि ط इन्न - क अलल् - हक़्क़िल्-मुबीन (७९) इन्न-क ला तुस्मिअुल्मौता व ला तुस्मिअुस्-सुम्मद्दुआ-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन (८०) व मा अन् - त बिहादिल् - अुम्यि अन् ज़लालतिहिम् ط इन् तुस्मिअु इल्ला मय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून (८१) व इज़ा व-क-अल्कौलु अ़लैहिम् अख़्-रज्-ना लहुम् दाब्बतम् मिनल्अर्ज़ि तुकल्लिमुहुम् ۙ अन्नन्ना-स कानू बिआयातिना ला यूक़िनून ★(८२) व यौ-म नह्शुरु मिन् कुल्लि उम्मतिन् फ़ौजम्मिम्-मय्युकज़्ज़िबु बिआयातिना फ़हुम् यूज़अून (८३) हत्ता इज़ा जाऊ का-ल अ-कज़्ज़ब्तुम् बिआयाती व लम् तुहीतू बिहा अिल्मन् अम्माज़ा कुन्तुम् तअ्-मलून (८४) व व-क-अल्कौलु अ़लैहिम् बिमा ज़-लमू फ़हुम् ला यन्तिकून (८५) अ-लम् यरौ अन्ना ज-अल-नल्लै-ल लियस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिय्युअ्मिनून (८६)

فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝ قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ الَّذِي
تَسْتَعْجِلُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَشْكُرُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا
يُعْلِنُونَ ۝ وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ
مُّبِينٍ ۝ إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ
الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝
إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ فَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ
الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝ وَمَا أَنتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَن
ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ۝ وَإِذَا
وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ
أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ
فَوْجًا مِّمَّن يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ
أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنطِقُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا
أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ

★रु ६/२ आ १६

तंगदिल होना। (७०) और कहते है कि अगर तुम सच्चे हो, तो यह वायदा कब पूरा होगा ? (७१) कह दो कि जिस (अज़ाब) के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, शायद उस मे से कुछ तुम्हारे नजदीक आ पहुचा हो। (७२) और तुम्हारा परवरदिगार तो लोगो पर फ़ज्ल करने वाला है, लेकिन उन मे से अक्सर शुक्र नही करते। (७३) और जो बाते उन के सीनो मे छिपी होती हैं और जो काम वे ज़ाहिर करते है, तुम्हारा परवरदिगार उन (सब) को जानता है। (७४) और आसमानो और जमीन मे कोई छिपी चीज नही है, मगर (वह) रोशन किताब मे (लिखी हुई) है। (७५) बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल के सामने अक्सर बाते, जिन मे वे इख्तिलाफ करते है, बयान कर देता है। (७६) और बेशक यह मोमिनो के लिए हिदायत और रहमत है। (७७) तुम्हारा परवरदिगार (कियामत के दिन) उन मे अपने हुक्म से फैसला कर देगा और वह गालिब (और) इल्म वाला है। (७८) तो खुदा पर भरोसा रखो, तुम तो खुले हक पर हो। (७९) कुछ शक नही कि तुम मुर्दो को (बात) नही सुना सकते और न बहरो को, जब कि वे पीठ फेर कर फिर जाए, आवाज सुना सकते हो। (८०) और न अधो को गुमराही से (निकाल कर) रास्ता दिखा सकते हो। तुम तो उन्ही को सुना सकते हो, जो हमारी आयतो पर ईमान लाते है और वे फरमाबरदार हो जाते हैं। (८१) और जब उन के बारे मे (अजाब का) वायदा पूरा होगा, तो हम उन के लिए जमीन मे से एक जानवर निकालेगे, जो उन से बयान कर देगा, इस लिए कि लोग हमारी आयतो पर ईमान नही लाते थे। (८२)★

और जिस दिन हम हर उम्मत मे से उस गिरोह को जमा करेगे, जो हमारी आयतो को झुठलाते थे, तो उन की जमाअतबदी कर दी जाएगी। (८३) यहा तक कि जब (सब) आ जाएगे तो (खुदा) फरमाएगा कि क्या तुम ने मेरी आयतो को झुठला दिया था और तुम ने (अपने) इल्म से उन पर एहाता तो किया ही न था। भला तुम क्या करते थे ? (८४) और उन के जुल्म की वजह से उन के हक मे (अजाब) का वायदा पूरा हो कर रहेगा, तो वे बोल भी न सकेगे। (८५) क्या उन्होने नही देखा कि हम ने रात को (इस लिए) बनाया है कि इस मे आराम करे और दिन को रोशन (बनाया है कि इस मे काम करे)। बेशक इस मे मोमिन लोगो के लिए निशानिया है। (८६) और जिस दिन

★रु ६/२ आ १६

व यौ-म युन्फ़खु फ़िस्सूरि फ़-फ़जि-अ़ मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल् अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु ♭ व कुल्लुन् अतौहु दाख़िरीन (८७) व त-रल्‌जिबा-ल तह्‌सबुहा जामि-द-तुंव्-व हि-य तमुर्रु मर्रस्सहाबि ♭ सुन्-अल्लाहिल्लज़ी अत्-क-न कुल्-ल शैइन् ♭ इन्नहू ख़बीरुम् - बिमा तफ्-अलून (८८) मन् जा - अ बिल्-ह-स-नति फ़-लहू ख़ैरुम्-मिन्हा ϑ व हुम् मिन् फ-ज़्इ य्यौमइज़िन् आमिनून (८९) व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़-कुब्बत् वुजूहुहुम् फ़िन्नारि ♭ हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्-मलून (९०) इन्नमा उमिर्‌तु अन् अअ्-बु-द रब् - ब हाज़िहिल्-बल्दतिल्लज़ी हर्र-महा व लहू कुल्लु शैइंव्-व उमिर्‌तु अन् अकू - न मिनल्मुस्लिमीन ♭ (९१) व अन् अत-लुवल्-क़ुर्आ-न ϑ फ-मनिह्तदा फ-इन्नमा यह-तदी लिनफ़्सिही ϑ व मन् ज़ल्-ल फ-क़ुल् इन्नमा अ-न मिनल्-मुन्ज़िरीन (९२) व क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि सयुरीकुम् आयातिही फ-तअ्-रिफ़ूनहा ♭ व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून ★ (९३)

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ۚ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ۝
وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ
اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ۝ مَنْ جَآءَ
بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ۝ وَ
مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ
الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۖ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝
وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ
مَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ
اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝
سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
طٰسٓمٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ
مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا
فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ
يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

२८ सूरतुल् क़-ससि ४९

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ६०११ अक्षर, १४५४ शब्द, ८८ आयते और ९ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीम •

ता-सीम्-मीम् (१) तिल्-क आयातुल् - किताबिल् - मुबीन (२) नत्लू अ़लै - क मिन् न - बइ मूसा व फ़िर्‌औ - न बिल्‌हक़्क़ि लिक़ौमिय्युअ्मिनून (३) इन्-न फ़िर्‌औ-न अ़ला फ़िल्‌अर्ज़ि व ज-अ-ल अह्-लहा शि-य - अंय्यस्तज़्‌अिफु ता़इ-फ़ - तम् - मिन्हुम् युज़ब्बिहु अब - ना - अहुम् व यस्तह्यी निसा - अहुम् ♭ इन्नहू का-न मिनल् - मुफ्सिदीन (४)

★रु ७/३ आ ११

सूर फूका जाएगा, तो जो लोग आसमानो और जो ज़मीन मे है, सब घबरा उठेंगे, मगर वह जिसे खुदा चाहे और सब उस के पास आजिज़ हो कर चले आएंगे। (८७) और तुम पहाडो को देखते हो, तो ख्याल करते हो कि (अपनी जगह पर) खड़े है, मगर वे (उस दिन) इस तरह उडते फिरेंगे जैसे बादल। (यह) खुदा की कारीगरी है, जिस ने हर चीज़ को मज़बूत बनाया। बेशक वह तुम्हारे कामो की खबर रखता है। (८८) जो शख्स नेकी ले कर आएगा, तो उस के लिए उस से बेहतर (बदला तैयार) है और ऐसे लोग (उस दिन) घबराहट से बे-ख़ौफ होगे। (८९) और जो बुराई ले कर आएगा, तो ऐसे लोग औंधे मुह दोज़ख मे डाल दिए जाएगे। तुम को तो उन ही आमाल का बदला मिलेगा, जो तुम करते रहे हो। (९०) (कह दो,) मुझ को यही इर्शाद हुआ है कि इस शहर मक्का के मालिक की इबादत करूं, जिस ने इस को मोहतरम (और अदब की जगह) बनाया है और सब चीज़ उस की है और यह भी हुक्म हुआ है कि उस का हुक्मबरदार रहू। (९१) और यह भी कि कुरआन पढा करूं, तो जो शख्स सीधा रास्ता अपनाता है तो अपने ही फायदे के लिए अपनाता है और जो गुमराह रहता है तो कह दो कि मैं तो सिर्फ नसीहत करने वाला हू। (९२) और कहो कि खुदा का शुक्र है, वह तुम को बहुत जल्द अपनी निशानिया दिखाएगा, तो तुम उन को पहचान लोगे और जो काम तुम करते हो, तुम्हारा परवरदिगार उन से बे-खबर नही है। (९३)★

२८ सूरः क़सस़ ४९

सूर कसस़ मक्की है और इस मे ८८ आयतें और ९ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तॉ-सीम-मीम। (१) ये रोशन किताब की आयतें है। (२) (ऐ मुहम्मद!) हम तुम्हें मूसा और फ़िऔंन के कुछ हालात मोमिन लोगो (के सुनाने) के लिए सही-सही सुनाते हैं, (३) कि फ़िऔंन ने मुल्क मे सर उठा रखा था और वहां के रहने वालो को गिरोह-गिरोह बना रखा था, उन मे से एक गिरोह को (यहां तक) कमज़ोर कर दिया था कि उन बेटो को ज़िब्ह कर डालता और उन की लडकियों को ज़िदा रहने देता। बेशक वह फसाद फैलाने वालो मे था। (४) और हम चाहते

★रु ७/३ आ ११

व नुरीदु अन् नमुन्-न अ-लल्लजीनस्-तुज्-अिफू फिल्अर्जि व नज-अ-लहुम् अ-इम्मतव्-व नज्-अ-ल-हुमुल्-वारिसीन ॥ (५) व नुमक्कि-न लहुम् फिल्अर्जि व नुरि-य फिर्औ-न व हामा-न व जुनूदहुमा मिन्हुम् मा कानू यह्जरून (६) व औहैना इला उम्मि मूसा अन् अर्जिअीहि ८ फ-इजा खिफति अलैहि फअल्कीहि फिल्यम्मि व ला तखाफी व ला तह्जनी ८ इन्ना राद्दूहु इलैकि व जाअिलूहु मिनल् - मुर्सलीन (७) फ़ल्-त-क-तहू आलु फिर्औ-न लि-यकू-न लहुम् अदुव्वव्-व ह्-ज-नन् ॥ इन्-न फिर्औ-न व हामा-न व जुनूदहुमा कानू खातिईन (८) व कालतिम् - र-अतु फ़िर्औ-न क़ुर्रतु औनिल्ली व ल - क ला तक्तुलूहु असा अय्यन्-फ - अना औ नत्तखि - जहू व-ल-दव्-व हुम् ला यश्अुरून (९) व अस्-ब-ह फुआदु उम्मि मूसा फ़ारिगन् ॥ इन् कादत् लतुब्दी बिही लौला अर् - बत्ना अला कल्बिहा लितकू - न मिनल् - मुअ्मिनीन (१०) व कालत् लिउख्तिही कुस्सीहि ॥ फ - बसुरत् बिही अन् जुनुबिव्-व हुम् ला यश-अुरून ॥ (११) व हर्रम्ना अलैहिल् - मराजि-अ मिन् कब्लु फ - क़ालत् हल् अदुल्लुकुम् अला अह - लि बैतिय्यक्फुलूनहू लकुम् व हुम् लहू नासिहून (१२) फ-र-दद्नाहु इला उम्मिही कै त-कर्-र अैनुहा व ला तह्-ज-न व लि-तअ्-ल-म अन्-न वअ-दल्लाहि हक्कुव्-व लाकिन्-न अक्स-र-हुम् ला यअ्-लमून ★● (१३) व लम्मा ब-ल-ग अशुद्दहू वस्तवा आतैनाहु हुक्मव्-व अिल्मन् ॥ व कजालि-क नज्जिल्-मुह्सिनीन (१४)

وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ
أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ۝ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ
فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُم مَّا كَانُوا يَحْذَرُونَ ۝ وَ
أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ
فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۖ إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ
مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَ
حَزَنًا ۗ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ ۝ وَقَالَتِ
امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّي وَلَكَ ۖ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا
أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ
فَارِغًا ۖ إِن كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ لَوْلَا أَن رَّبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصُرَتْ بِهِ عَن
جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِن قَبْلُ
فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ
نَاصِحُونَ ۝ فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ
أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا
بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ۝ وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينِ غَفْلَةٍ مِّنْ

★रु १/४ आ १३ ● रुबुअ १/४

थे कि जो लोग मुल्क में कमजोर कर दिए गए हैं, उन पर एहसान करें और उन को पेशवा बनाए और उन्हें (मुल्क का) वारिस करें। (५) और मुल्क में उन को कुदरत दें और फ़िऔन और हामान और उन की फौज को वह चीज दिखा दें, जिस से वे डरते थे। (६) और हम ने मूसा की मां की तरफ वह्य भेजी कि उस को दूध पिलाओ, जब तुम को इस के बारे में कुछ डर पैदा हो तो उसे दरिया में डाल देना और न तो ख़ौफ करना और न रंज करना। हम उस को तुम्हारे पास वापस पहुंचा देंगे और (फिर) उसे पैगम्बर बना देंगे। (७) तो फ़िऔन के लोगों ने उस को उठा लिया, इस लिए कि (नतीजा यह होना था कि) वह उन का दुश्मन और (उन के लिए) गम (की वजह) हो। बेशक फ़िऔन और हामान और उन के लश्कर चूक गये। (८) और फ़िऔन की बीवी ने कहा कि (यह) मेरी और तुम्हारी (दोनों की) आंखों की ठंडक है, इस को क़त्ल न करना, शायद यह हमें फायदा पहुंचाए, या हम इसे बेटा बना लें और वे (अंजाम) से बे-ख़बर थे। (९) और मूसा की मां का दिल बे-करार हो गया। अगर हम उन के दिल को मजबूत न कर देते, तो करीब था कि वह उस (गुस्से) को ज़ाहिर कर दें। गरज यह थी कि वे मोमिनों में रहें। (१०) और उस की बहन ने कहा कि उस के पीछे-पीछे चली जा, तो वह उसे दूर से देखती रही और उन (लोगों) को कुछ ख़बर न थी। (११) और हम ने पहले ही से उस पर (दाइयों के) दूध हराम कर दिए थे, तो मूसा की बहन ने कहा कि मैं तुम्हें ऐसे घर वाले बताऊं कि तुम्हारे लिए इस (बच्चे) को पालें और उस की खैरख्वाही (से परवरिश) करें। (१२) तो हम ने (इस तरीके से) उन को उन की मां के पास वापस पहुंचा दिया, ताकि उन की आंखें ठंडी हों और वह गम न खाएं और मालूम करें कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है, लेकिन ये अक्सर नहीं जानते। (१३) ★ ●

और जब मूसा जवानी को पहुंचे और भरपूर (जवान) हो गये, तो हम ने उन को हिक्मत और इल्म इनायत किया और हम नेकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१४) और वह ऐसे वक़्त

★रु १/४ आ १३ ● रुबुअ् १/४

व द-ख़-लल्-मदी-न-त अला ह़ीनि गफ्-लतिम्-मिन् अह-लिहा फ-व-ज-द फीहा रजु-
लैनि यक़्ततिलानि ﺯ हाज़ा मिन् शीअतिही व हाज़ा मिन् अदुव्विही
फस्तगा-सहुल्लज़ी मिन् शीअतिही अलल्लज़ी मिन् अदुव्विही ﻻ फ-व-क - जहू
मूसा फ - क़ज़ा अ़लैहि ﺯ का - ल हाज़ा मिन् अ - मलिश्शैतानि ط इन्नहू
अदुव्वुम्-मुज़िल्लुम्-मुबीन (१५) क़ा - ल
रब्बि इन्नी ज़-लम्तु नफ़्सी फग-फिर् ली
फ - ग - फ - र लहू ط इन्नहू हुवल्-
गफ़ूरुर्रहीम (१६) का-ल रब्बि बिमा
अन-अ़म्-त अ-लय्-य फ-लन् अकू-न ज़हीरल्-
लिलमुज्रिमीन (१७) फ-अस्-ब-ह फिलमदीनति
ख़ाइफय्य - त - रक्क़बु फ-इज़ल्लज़िस्तन्सरहू
बिल - अम् - सि यस्तस्रिख़ुहू ط का - ल
लहू मूसा इन्न-क ल-गविय्युम् - मुबीन
(१८) फ-लम्मा अन् अरा-द अंय्यब्ति-श
बिल्लज़ी हु-व अदुव्वुल् - लहुमा ﻻ का - ल
या मूसा अतुरीदु अन् तक़्तु-लनी कमा
क-तल् - त नफ् - सम् - बिल्अम्सि ﺻﻠﮯ

أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِنْ شِيعَتِهِ وَهَٰذَا مِنْ
عَدُوِّهِ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ
فَوَكَزَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ
عَدُوٌّ مُضِلٌّ مُبِينٌ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي
فَغَفَرَ لَهُ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ
فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ۝ فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا
يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ قَالَ لَهُ
مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُبِينٌ ۝ فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي
هُوَ عَدُوٌّ لَهُمَا قَالَ يَا مُوسَىٰ أَتُرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ
نَفْسًا بِالْأَمْسِ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَ
مَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَقْصَى
الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ
فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ۝ فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ
قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ
قَالَ عَسَىٰ رَبِّي أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ
مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِنَ النَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِنْ
دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا قَالَتَا لَا نَسْقِي

इन् तुरीदु इल्ला अन् तकू-न जब्बारन् फिल्अर्जि व मा तुरीदु अन् तकू-न
मिनल्-मुस्लिहीन (१९) व जा - अ रजुलुम् - मिन् अक्स़ल् - मदीनति
यस-आ ﺯ का-ल या मूसा इन्नल्-म-ल-अ यअ्-तमिरू-न बि-क लि-यक़्तुलू-क
फख़्रुज् इन्नी ल-क मिनन्नासिहीन (२०) फ-ख़-र-ज मिन्हा ख़ाइफय्य-त-रक्क़बु ﺯ
क़ा-ल रब्बि नज्जिनी मिनल्क़ौमिज़्-ज़ालिमीन☆(२१) व लम्मा त-वज्ज-ह
तिल्क़ा-अ मद्-य-न का-ल असा रब्बी अंय्यहू-दि-यनी सवा-अस्सबील (२२) व
लम्मा व-र-द मा-अ मद्-य-न व-ज-द अ़लैहि उम्म-तम्-मिनन्नासि यस्कू-न ﺯ
व व-ज-द मिन् दूनिहिमुम्-र-अतैनि तज़ूदानि ﺯ का-ल मा ख़त्बुकुमा ط क़ालता
ला नस्क़ी हत्ता युस्दिरर् - रिआउ ﺳﮑﺘﮧ व अबूना शैख़ुन् कबीर (२३)

☆रु २/५ आ ८

शहर मे दाखिल हुए कि वहा के रहने वाले बे-खबर हो रहे थे, तो देखा कि वहा दो शख्स लड़ रहे थे, एक तो मूसा की कौम का है और दूसरे उन के दुश्मनो मे से। तो जो शख्स उन की कौम मे से था, उस ने दूसरे शख्स के मुकाबले मे, जो मूसा के दुश्मनो मे से था, मदद तलब की, तो उन्हो ने उस को मुक्का मारा और उस का काम तमाम कर दिया।[1] कहने लगे कि यह काम तो शैतान (के बहकावे) से हुआ। बेशक वह (इन्सान का) दुश्मन और खुला बहकाने वाला है। (१५) बोले कि ऐ परवरदिगार! मैं ने अपने आप पर जुल्म किया, तो मुझे बख्श दे, तो खुदा ने उन को बख्श दिया। बेशक वह बख्शने वाला मेहरबान है। (१६) कहने लगे कि ऐ परवरदिगार! तूने जो मुझ पर मेहरबानी फरमायी है, मैं (आगे) कभी गुनाहगारो का मददगार न बनू। (१७) गरज़ यह कि सुबह के वक्त शहर मे डरते-डरते दाखिल हुए कि देखे (क्या होता है), तो यकायक वही शख्स जिस ने कल उन से मदद मागी थी, फिर उन को पुकार रहा है। (मूसा ने) उस से कहा कि तू तो खुली गुमराही मे है। (१८) जब मूसा ने इरादा किया कि उस शख्स को, जो उन दोनो का दुश्मन था, पकड ले, तो वह (यानी मूसा की कौम का आदमी) बोल उठा कि जिस तरह तुम ने कल एक शख्स को मार डाला था, (उसी तरह) चाहते हो कि मुझे भी मार डालो। तुम तो यही चाहते हो कि मुल्क मे जुल्म व सितम करते फिरो और यह नही चाहते कि नेको मे हो। (१९) और एक शख्स शहर के परली तरफ से दौडता हुआ आया (और बोला कि मूसा शहर के) रईस तुम्हारे बारे मे मश्विरे करते है कि तुम को मार डाले, सो तुम यहा से निकल जाओ। मैं तुम्हारा खैरख्वाह हू। (२०) मूसा वहां से डरते-डरते निकल खडे हुए कि देखे (क्या होता है और) दुआ करने लगे कि ऐ परवर-दिगार! मुझे जालिम लोगो से निजात दे। (२१)★

और जब मदयन की तरफ रुख किया तो कहने लगे, उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे सीधा रास्ता बताए। (२२) और जब मदयन के पानी (की जगह) पर पहुचे तो देखा कि वहा लोग जमा हो रहे (और अपने चारपायो को) पानी पिला रहे है और उन के एक तरफ दो औरते (अपनी बकरियो को) रोके खडी है। मूसा ने (उन से) कहा, तुम्हारा क्या काम है? वे बोली कि जब तक चरवाहे (अपने चारपायो को) ले न जाए, हम पानी नही पिला सकते और हमारे वालिद बड़े उम्र

---

१ कहते हैं कि जिस शख्स को हजरत मूसा ने मुक्का मारा था, वह फिऔन का बावर्ची था और [illegible] मूसा की कौम के शख्स को बेगार के लिए मजबूर कर रहा था। जब उस ने मूसा अलैहिस्सलाम को देखा तो उन से मदद चाही। मूसा अलैहिस्सलाम ने उस मज़्लूम को ज़ालिम के हाथ से बचाने की नीयत से उस किब्ती को मुक्का मारा और वह मर कर रह गया। यह कत्ल अगरचे जान-बूझ कर न था, बल्कि इत्तिफ़ाक़ की बात थी, फिर भी मूसा अलैहिस्सलाम इस काम पर बहुत शर्मिन्दा हुए और अपनी शान के लिहाज़ से उस को गुनाह ख़्याल कर के खुदा से माफी चाही।

★रु. २/५ आ ८

फ-सका लहुमा सुम्-म त-वल्ला इलज़्ज़िलिल फ-का-ल रब्बि इन्नी लिमा अन्ज़ल्-त इलय्-य मिन् खैरिन् फकीर (२४) फजा-अत्हु इह्दाहुमा तम्शी अ-लस्तिह्याइन् ✓ कालत् इन्-न अबी यद्अू - क लियज्ज़ि-य-क अज् - र मा सकै-त लना ط फ-लम्मा जा-अहू व कस्-स अलैहिल्क-स-स ۷ का-ल ला त - खफ् وقف नजौ - त मिनल् - कौमिज़्ज़ालिमीन (२५) कालत् इह्दा-हुमा या अ-बतिस्तअ्-जिहु ✓ इन्-न खै-र मनिस्तअ्-जर्तल् - कविय्युल् अमीन (२६) का-ल इन्नी उरीदु अन् उन्कि - ह-क इह्-दब्-न-तय्-य हातैनि अला अन् तअ्जु-रनी समानि-य हिजजिन् ج फ-इन् अतमम् - त अश्-रन् फमिन् अिन्दि-क ج व मा उरीदु अन् अशुक्-क अलै - क ط स - तजिदुनी इन्शाअल्लाहु मिनस्सालिहीन (२७) का-ल ज़ालि-क बैनी व बै-न - क ط अय्य-मल् - अ-जलैनि कज़ैतु फला अुद्वा-न अ-लय्-य ط वल्लाहु अला मा नकूलु वकील★(२८)

حتى يصدر الرعاء وابونا شيخ كبير ﴿٢٣﴾ فسقى لهما ثم تولى
الى الظل فقال رب انى لما انزلت الى من خير فقير ﴿٢٤﴾ فجاءته
احدىهما تمشى على استحياء قالت ان ابى يدعوك ليجزيك
اجر ما سقيت لنا فلما جاءه وقص عليه القصص قال
لا تخف نجوت من القوم الظلمين ﴿٢٥﴾ قالت احدىهما يابت
استاجره ان خير من استاجرت القوى الامين ﴿٢٦﴾ قال انى
اريد ان انكحك احدى ابنتى هتين على ان تاجرنى ثمنى
حجج فان اتممت عشرا فمن عندك وما اريد ان اشق
عليك ستجدنى ان شاء الله من الصلحين ﴿٢٧﴾ قال ذلك بينى
وبينك ايما الاجلين قضيت فلا عدوان على والله على
ما نقول وكيل ﴿٢٨﴾ فلما قضى موسى الاجل وسار باهله انس
من جانب الطور نارا قال لاهله امكثوا انى انست نارا
لعلى اتيكم منها بخبر او جذوة من النار لعلكم تصطلون ﴿٢٩﴾
فلما اتىها نودى من شاطئ الواد الايمن فى البقعة المبركة
من الشجرة ان يموسى انى انا الله رب العلمين ﴿٣٠﴾ وان الق
عصاك فلما راها تهتز كانها جان ولى مدبرا ولم يعقب
يموسى اقبل ولا تخف انك من الامنين ﴿٣١﴾ اسلك يدك

फ-लम्मा कज़ा मूसल्-अ-ज-ल व सा-र बि-अह्लिही आ-न-स मिन् जानिबित्तूरि नारन् ج का-ल लि-अह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु ना-रल्ल - अल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-ख-बरिन् औ जज़्-वतिम्-मिनन्नारि ल-अल्लकुम् तस्तलून (२९) फ-लम्मा अताहा नूदि-य मिन् शातिइल् - वादिल् - ऐमनि फिल्बुक्अतिल्-मुबा-र-कति मिनश्श-ज-रति अय्यामूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुल् - आलमीन ۷ (३०) व अन् अल्कि असा - क ط फ - लम्मा र - आहा तह्तज़्ज़ु क - अन्नहा जान्नुव्वल्ला मुद् - बिरव - व लम् यु - अक्किब् ط या मूसा अक्बिल् व ला त - खफ् قف इन्न - क मिनल् - आमिनीन (३१)

★रु ३/६ आ ७

के बूढे है। (२३) तो मूसा ने उन के लिए (बकरियो को) पानी पिला दिया, फिर साए की तरफ चले गये और कहने लगे कि परवरदिगार! मैं इस का मुहताज हू कि तू मुझ पर अपनी नेमत नाजिल फरमाए। (२४) (थोडी देर के वाद) उन मे से एक औरत जो शर्माती और लजाती चली आती थी, मूसा के पास आयी (और) कहने लगी कि तुम को मेरे वालिद बुलाते है कि तुम ने जो हमारे लिए पानी पिलाया था, उस का तुम को बदला दे। जब वह उन के पास आए और उन से (अपना) माजरा बयान किया, तो उन्हो ने कहा कि कुछ खौफ न करो। तुम जालिम लोगो से बच आए हो। (२५) एक लड़की बोली कि अब्बा! इन को नौकर रख लीजिए, क्योकि बेहतर नौकर जो आप रखे, वह है (जो) मजबूत और अमानतदार (हो)। (२६) (मूसा से) कहा कि मै चाहता हू, अपनी इन दो बेटियो मे से एक को तुम से ब्याह दू, इस (वायदे) पर कि तुम आठ वर्ष मेरी खिदमत करो और अगर दस साल पूरे कर दो, तो वह तुम्हारी तरफ से (एहसान) है और मै तुम पर तक्लीफ डालनी नही चाहता, तुम मुझे इन्शाअल्लाह् नेक लोगो मे पाओगे। (२७) मूसा ने कहा कि मुझ मे और आप मे यह (पक्का वायदा हुआ), मै जो-भी मुद्दत (चाहू) पूरी कर दू, फिर मुझ पर कोई ज्यादती न हो और हम जो समझौता करते है, खुदा उस का गवाह है। (२८)★

जब मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और अपने घर के लोगो को ले कर चले, तो तूर की तरफ से आग दिखाई दी, तो अपने घर वालो से कहने लगे कि (तुम यहा) ठहरो। मुझे आग नजर आयी है, शायद मै वहा से (रास्ते का) कुछ पता लाऊ या आग का अगारा ले आऊ, ताकि तुम तापो। (२९) जब उस के पास पहुचे तो मैदान के दाए किनारे से एक मुबारक जगह् मे, एक पेड़ मे से आवाज आयी कि मूसा! मै तो खुदा-ए-रब्बुल आलमीन हू। (३०) और यह कि अपनी लाठी डाल दो। जब देखा कि वह हरकत कर रही है, गोया साप है, तो पीठ फेर कर चल दिए और पीछे मुड़ कर भी न देखा। (हम ने कहा कि) मूसा आगे आओ और डरो मत, तुम अम्न पाने वालो मे हो। (३१)

★रु ३/६ आ ७

उस-लुक् य-द-क फी जैबि-क तख़्-रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइंव्-वज़्मुम् इलै-क जना-ह्-क मिनर्रह्बि फ-ज़ानि-क बुर्हानानि मिर्रब्बि-क इला फिर्औ-न व मल-इही ɓ इन्नहुम् कानू कौमन् फासिक़ीन (३२) क़ा-ल रब्बि इन्नी क-तल्तु मिन्हुम् नफ़्सन् फ-अख़ाफु अय्यक़्तुलून (३३) व अख़ी

हारूनु हु-व अफ़्सहु मिन्नी लिसानन् फ-अर्सिल्हु मअि-य रिद्अंय्युसद्दिकुनी इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युकज़्ज़िबून (३४) का-ल स-नशुद्दु अज़ु-द-क बि-अख़ी-क व नज्अलु लकुमा सुल्तानन् फ ला यसिलू-न इलैकुमा ℭ ⁚ बिआयातिना ℭ अन्तुमा व मनित्त-ब-अ़-कुमल्-ग़ालिबून (३५) फ़-लम्मा जा-अहुम् मूसा बिआयातिना बय्यिनातिन् कालू मा हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुफ़्तरंव्-व मा समिअ्-ना बिहाज़ा फी आबाइनल्-अव्वलीन (३६) व का-ल मूसा रब्बी अअ-लमु बिमन् जा-अ बिल्हुदा मिन् अिन्दिही व मन् तकूनु लहू आक़िबतुद्दारि ɓ

القصص ٢٨ ٣١١ امن خلق ٢٠

فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ وَاضْمُمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ
مِنَ الرَّهْبِ فَذَانِكَ بُرْهَانَانِ مِنْ رَبِّكَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهِ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا
فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝ وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا
فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝
قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ
إِلَيْكُمَا بِآيَاتِنَا أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ
مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرًى وَمَا
سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَى رَبِّي أَعْلَمُ
بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَى مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ
إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ
لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرِي فَأَوْقِدْ لِي يَا هَامَانُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ
لِي صَرْحًا لَعَلِّي أَطَّلِعُ إِلَى إِلَهِ مُوسَى وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ
الْكَاذِبِينَ ۝ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَظَنُّوا أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ۝ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ
فِي الْيَمِّ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَجَعَلْنَاهُمْ أَئِمَّةً
يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنْصَرُونَ ۝ وَأَتْبَعْنَاهُمْ

इन्नहू ला युफ्लिहुज़्ज़ालिमून (३७) व का-ल फिर्औनु या अय्युहल्म-ल-उ मा अ़लिम्तु लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरी ℭ फ औकिद् ली या हामानु अलत्तीनि फ़ज्-अ़ल्ली सर-हल्-ल-अ़ल्ली अत्तलिअु इला इलाहि मूसा व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू मिनलकाज़िबीन (३८) वस्तक्-ब-र हु-व व जुनूदुहू फिल्अर्जि बिग़ैरिल्हक़्क़ि व ज़न्नू अन्नहुम् इलैना ला युर्जअून (३९) फ-अ-ख़ज़्नाहु व जुनूदहू फ़-न-बज़्नाहुम् फिल्यम्मि ℭ फन्ज़ुर् कै-फ का-न आ़क़िबतुज़्-ज़ालिमीन (४०) व ज-अ़ल्नाहुम् अ-इम्मतंय्यद्अू-न इलन्नारि ℭ व यौमल्क़ियामति ला युन्सरून (४१)

•• मु अ़ि मु ता ख ११

अपना हाथ गरेबान मे डालो तो बगैर किसी ऐब के सफेद निकल आएगा और डर दूर होने (की वजह) से अपने बाजू को अपनी तरफ सुकेड लो। ये दो दलीलें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से है। (उन के साथ) फ़िऔन और उस के दरबारियो के पास (जाओ) कि वे नाफरमान लोग है। (३२) (मूसा ने) कहा, ऐ परवरदिगार! उन मे का एक शख्स मेरे हाथ से कत्ल हो चुका है, सो मुझे डर है कि वे (कही) मुझ को न मार डाले। (३३) और हारून (जो) मेरा भाई (है) उस की जुबान मुझ से ज्यादा साफ़ है तो उस को मेरे साथ मददगार बना कर भेज कि मेरी तस्दीक करे, मुझे डर है कि वे लोग मुझे झुठला देगे।[1] (३४) (खुदा ने) फरमाया, हम तुम्हारे भाई से तुम्हारे बाजू को मजबूत करेगे और तुम दोनो को गलबा देगे, तो हमारी निशानियो की वजह से वे तुम तक पहुच न सकेंगे (और) तुम और जिन्हो ने तुम्हारी पैरवी की, गालिब रहोगे। (३५) और जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानिया ले कर आये, तो वे कहने लगे कि यह तो जादू है, जो इस ने बना खडा किया है और ये (बाते) हम ने अपने अगले बाप-दादा मे तो (कभी) सुनी नही। (३६) और मूसा ने कहा कि मेरा परवरदिगार उस शख्स को खूब जानता है, जो उस की तरफ से हक ले कर आया है और जिस के लिए आकिबत का घर (यानी बहिश्त) है। बेशक ज़ालिम निजात नही पाएगे। (३७) और फ़िऔन ने कहा कि ऐ दरबारियो! मै तुम्हारा, अपने सिवा, किसी को खुदा नही जानता, तो हामान मेरे लिए गारे को आग लगा (कर ईंटे पका) दो, फिर एक (ऊचा) महल बना दो, ताकि मैं मूसा के खुदा की तरफ चढ जाऊ और मैं तो उसे झूठा समझता हू। (३८) और वह और उस के लश्कर मुल्क मे ना-हक घमड मे चूर हो रहे थे और ख्याल करते थे कि वे हमारी तरफ लौट कर नही आएगे। (३९) तो हम ने उन को और उन के लश्करो को पकड लिया और दरिया मे डाल दिया, सो देख लो कि जालिमो का कैसा अजाम हुआ। (४०) और हम ने उन को पेशवा बनाया था। वे (लोगो को) दोज़ख की तरफ बुलाते थे और कियामत के दिन उन की मदद

---

१ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की जुबान मे लुक्नत थी और उन को ख्याल था कि वे लुक्नत की वजह से तकरीर साफ न कर सकेंगे, इस लिए खुदा से इल्तिजा की कि मेरे भाई हारून को, जिन की जुबान साफ है, मेरे साथ मददगार बना कर भेज, ताकि उन दलीलो को, जो जुबान की लुक्नत की वजह से अच्छी तरह बयान न कर सकू, वह अपनी साफ जुबान होने की वजह से अच्छी तरह बयान कर सकें और उन लोगो के ज़ेहन मे बिठा दें।

व अत्बअ्-नाहुम् फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ्-न-तन् व यौमल्-क़ियामति हुम् मिनल्-मक़्बूहीन ★ (४२) व ल-क़द् आतैना मूसल्किता-ब मिम्बअ्-दि मा अह्-लक-नल्-कुरूनल्-ऊला बसाइ-र लिन्नासि व हुदव्-व रह्-म-तल्-ल-अल्ल-हुम् य-त-ज़क्करून (४३) व मा कुन्-त बिजानिबिल्-ग़र्बिय्यि इज् क़ज़ैना इला मूसल्-अम्-र व मा कुन्-त मिनश्शाहिदीन (४४) व लाकिन्ना अन्शअ्-ना कुरूनन् फ़-त - ताव-ल अलैहिमुल् - अुमुरु व मा कुन्-त सावियन् फ़ी अह्लि मद्-य-न तत्लू अलैहिम् आयातिना व लाकिन्ना कुन्ना मुर्सिलीन (४५) व मा कुन्-त बिजानिबित्तूरि इज् नादैना व लाकिर्रह्-म-तम्-मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि - र क़ौमम्मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम् मिन् क़ब्लि - क ल - अल्लहुम् य-त-ज़क्करून (४६) व लौ ला अन् तुसीबहुम् मुसीबतुम्-बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् फ़-यक़ूलू रब्बना लौ ला अर्सल-त इलैना रसूलन् फ़-नत्तबि-अ आयाति-क व नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (४७) फ़-लम्मा जा-अ-हुमुल्हक़्क़ु मिन् अिन्-दिना क़ालू लौ ला ऊति-य मिस्-ल मा ऊति-य मूसा अ - व-लम् यक्फ़ुरू बिमा ऊति - य मूसा मिन् क़ब्लु क़ालू सिह्रानि तज़ाहरा क़फ़्फ़ व क़ालू इन्ना बिकुल्लिन् काफ़िरून (४८) क़ुल् फ़अ्तू बिकिताबिम् - मिन् अिन्दिल्लाहि हु - व अह् - दा मिन्हुमा अत्तबिअ्-हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४९) फ़-इल्लम् यस्तजीबू ल-क फ़अ्-लम् अन्नमा यत्तबिअू-न अह्-वा-अहुम् व मन् अज़ल्लु मिम्मनित्त-ब-अ हवाहु बिग़ैरि हुदम्मिनल्लाहि इन्नल्ला - ह ला यह्दिल् - क़ौमज़् - ज़ालिमीन ★ (५०)

فی هذه الدنیا لعنة ویوم القیمة هم من المقبوحین ۝ و
لقد اتینا موسی الکتب من بعد ما اهلکنا القرون الاولی
بصائر للناس وهدی ورحمة لعلهم یتذکرون ۝ وما
کنت بجانب الغربی اذ قضینا الی موسی الامر وما کنت
من الشهدین ۝ ولکنا انشانا قرونا فتطاول علیهم العمر
وما کنت ثاویا فی اهل مدین تتلوا علیهم ایتنا ولکنا
کنا مرسلین ۝ وما کنت بجانب الطور اذ نادینا ولکن
رحمة من ربک لتنذر قوما ما اتهم من نذیر من قبلک
لعلهم یتذکرون ۝ ولولا ان تصیبهم مصیبة بما قدمت
ایدیهم فیقولوا ربنا لولا ارسلت الینا رسولا فنتبع ایتک
ونکون من المؤمنین ۝ فلما جاءهم الحق من عندنا
قالوا لولا اوتی مثل ما اوتی موسی اولم یکفروا بما اوتی
موسی من قبل قالوا سحرن تظهرا وقالوا انا بکل
کفرون ۝ قل فاتوا بکتب من عند الله هو اهدی منهما
اتبعه ان کنتم صدقین ۝ فان لم یستجیبوا لک فاعلم
انما یتبعون اهواءهم ومن اضل ممن اتبع هوىه بغیر
هدی من الله ان الله لا یهدی القوم الظلمین ۝ ولقد

नही की जाएगी। (४१) और इस दुनिया में हम ने उन के पीछे लानत लगा दी और वे कियामत के दिन भी वद-हालो मे होगे। (४२)★

और हम ने पहली उम्मतो के हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी, जो लोगो के लिए बसीरत और हिदायत और रहमत है, ताकि वे नसीहत पकडे। (४३) और जब हम ने मूसा की तरफ हुक्म भेजा, तो तुम (तूर के) पश्चिम की तरफ नही थे और न इस वाकिए के देखने वालो मे थे। (४४) लेकिन हम ने (मूसा के बाद) कई उम्मतो को पैदा किया, फिर उन पर मुद्दत लम्बी बीत गयी और न तुम मदयन वालो मे रहने वाले थे कि उन को हमारी आयते पढ-पढ कर सुनाते थे। हा, हम ही तो पैगम्बर भेजने वाले थे। (४५) और न तुम उस वक्त, जब कि हम ने (मूसा को) आवाज दी, तूर के किनारे थे, वल्कि (तुम्हारा भेजा जाना) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है, ताकि तुम उन लोगो को जिन के पास तुम से पहले कोई हिदायत करने वाला नही आया, हिदायत करो ताकि वे नसीहत पकडे। (४६) और (ऐ पैगम्बर! हम ने तुम को इस लिए भेजा है कि) ऐसा न हो कि अगर इन (आमाल) की वजह से जो उन के हाथ आगे भेज चुके है, उन पर कोई मुसीबत वाकेअ हो, तो ये कहने लगे कि ऐ परवरदिगार! तू ने हमारी तरफ कोई पैगम्बर क्यो न भेजा कि हम तेरी आयतो की पैरवी करते और ईमान लाने वालो मे होते। (४७) फिर जब उन के पास हमारी तरफ से हक आ पहुचा, तो कहने लगे कि जैसी (निशानिया) मूसा को मिली थी, वैसी इस को क्यो नही मिली ? क्या जो (निशानिया) पहले मूसा को दी गयी थी, उन्हो ने उन मे कुफ्र नही किया ? कहने लगे कि दोनो जादूगर है एक दूसरे के मुवाफिक और बोले कि हम सब से मुकिर है। (४८) कह दो कि अगर सच्चे हो, तो तुम खुदा के पास से कोई और किताब ले आओ, जो इन दोनो (किताबो) से बढ कर हिदायत करने वाली हो, ताकि मैं भी उसी की पैरवी करू। (४९) फिर अगर ये तुम्हारी बात कुबूल न करे, तो जान लो कि ये सिर्फ अपनी ख्वाहिशो की पैरवी करते है और उस से ज्यादा कौन गुमराह होगा जो खुदा की हिदायत को छोड कर अपनी ख्वाहिश के पीछे चले। बेशक खुदा ज़ालिम लोगो को हिदायत नही देता। (५०)★

★रु ४/७ आ १४ ★रु ५/८ आ ८

व ल-क़द् वस्सलना लहुमुल्कौ-ल ल-अल्लहुम् य-त-जक्करून (५१) अल्लजी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिही हुम् बिही युअ्मिनून ●(५२) व इज़ा युत्ला अलैहिम् कालू आमन्ना बिही इन्नहुल् - हक़्क़ु मिर्रब्बिना इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लिही मुस्-लिमीन (५३) उलाइ-क युअ्तौ-न अज्-रहुम् मर्रतैनि बिमा स-बरू व यद - रऊ-न बिल्-ह़-स-नतिस्-सय्यि-अ-त व मिम्मा र-ज़क्नाहुम् युन्फ़िक़ून (५४) व इज़ा समिअुल्-लग्-व अअ् - रज़ू अन्हु व कालू लना अअ् - मालुना व लकुम् अअ् - मालुकुम् सलामुन् अलैकुम् ला नब्तग़िल् - जाहिलीन (५५) इन्न-क ला तह्दी मन् अह्-बब्-त व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मय्यशाउ व हु-व अअ्-लमु बिल्मुह्-तदीन (५६) व कालू इन् नत्तबिअिल्-हुदा म - अ - क नु-त-ख़त्तफ़् मिन् अर्जिना अ-व लम् नुमक्किल्-लहुम् ह़-र-मन् आमिनंय्युज्बा इलैहि स-मरातु कुल्लि शैइर्रिज़्-कम् - मिल्लदुन्ना व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (५७) व कम् अह्-लक्ना मिन् क़र्यतिम्-बति-रत् मअी-श-तहा फ़तिल्-क मसाकिनुहुम् लम् तुस्कम् - मिम्बअ्-दिहिम् इल्ला क़लीलन् व कुन्ना नह्नुल्-वारिसीन (५८) व मा का-न रब्बु-क मुह्लिकल् - क़ुरा हत्ता यब् - अ - स फ़ी उम्मिहा रसूलय्यत्लू अलैहिम् आयातिना व मा कुन्ना मुह्लिकिल्क़ुरा इल्ला व अह्लुहा ज़ालिमून (५९) व मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़ - मताअुल् - ह़यातिद्दुन्या व ज़ीनतुहा व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुंव-व अब्क़ा अ - फ़ला तअ् - क़िलून ★(६०) अ-फ़-मव्व-अद्नाहु वअ्-दन् ह़-स-नन् फ़हु-व लाक़ीहि क-मम्-मत्तअ्-नाहु मताअल्-हयातिद्दुन्या सुम्-म हु-व यौमल् - क़ियामति मिनल्-मुह्-ज़रीन (६१)

القصص ٢٨   ٣١٣   امن خلق ٢٠

وصلنا لهم القول لعلهم يتذكرون ۝ الذين اتينهم الكتب
من قبله هم به يؤمنون ۝ واذا يتلى عليهم قالوا امنا به
انه الحق من ربنا انا كنا من قبله مسلمين ۝ اولئك يؤتون
اجرهم مرتين بما صبروا ويدرءون بالحسنة السيئة و
مما رزقنهم ينفقون ۝ واذا سمعوا اللغو اعرضوا عنه و
قالوا لنا اعمالنا ولكم اعمالكم سلم عليكم لا نبتغي
الجهلين ۝ انك لا تهدي من احببت ولكن الله يهدي
من يشاء وهو اعلم بالمهتدين ۝ وقالوا ان نتبع الهدى
معك نتخطف من ارضنا اولم نمكن لهم حرما امنا يجبى
اليه ثمرت كل شيء رزقا من لدنا ولكن اكثرهم لا يعلمون ۝
وكم اهلكنا من قرية بطرت معيشتها فتلك مسكنهم
لم تسكن من بعدهم الا قليلا وكنا نحن الورثين ۝
وما كان ربك مهلك القرى حتى يبعث في امها رسولا يتلوا
عليهم ايتنا وما كنا مهلكي القرى الا واهلها ظلمون ۝ و
ما اوتيتم من شيء فمتاع الحيوة الدنيا وزينتها وما عند
الله خير وابقى افلا تعقلون ۝ افمن وعدنه وعدا حسنا
فهو لاقيه كمن متعنه متاع الحيوة الدنيا ثم هو يوم القيمة

● नि १/२ ★रु ६/६ आ १०

और हम (एक के बाद एक) लगातार उन लोगो के पास (हिदायत की) बाते भेजते रहे है, ताकि नसीहत पकडे।[1] (५१) जिन लोगो को हम ने इस से पहले किताब दी थी, वे इस पर ईमान ले आते है● (५२) और जब (कुरआन) उन को पढ कर सुनाया जाता है, तो कहते है कि हम इस पर ईमान ले आए। बेशक वह हमारे परवरदिगार की तरफ से बर-हक है (और) हम तो इस से पहले के हुक्मबरदार हैं। (५३) इन लोगो को दोगुना बदला दिया जाएगा, क्योकि सब्र करते रहे है और भलाई के साथ बुराई को दूर करते है और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस मे से खर्च करते हैं। (५४) और जब बेहूदा बात सुनते है, तो उस से मुह फेर लेते है और कहते हैं कि हम को हमारे आमाल और तुम को तुम्हारे आमाल, तुम को सलाम। हम जाहिलो के ख्वास्तगार (चाहने वाले) नही है। (५५) (ऐ मुहम्मद !) तुम जिस को दोस्त रखते हो, उसे हिदायत नही कर सकते, बल्कि खुदा ही जिस को चाहता है, हिदायत करता है और वह हिदायत पाने वालो को खूब जानता है। (५६) और कहते है कि अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करे, तो अपने मुल्क से उचक लिए जाए। क्या हम ने उन को हरम मे, जो अम्न की जगह है, जगह नही दी, जहा हर किस्म के मेवे पहुचाए जाते है (और यह) रिज्क हमारी तरफ से है, लेकिन उनमे से अक्सर नही जानते। (५७) और हम ने बहुत-सी बस्तियो को हलाक कर डाला, जो अपनी दौलत (की ज्यादती) मे इतरा रहे थे, सो ये उन के मकान है, जो उन के बाद आबाद नही हुए, मगर बहुत कम और उन के पीछे हम ही उन के वारिस हुए। (५८) और तुम्हारा परवरदिगार बस्तियो को हलाक नही किया करता, जब तक उन के बडे शहर मे पैगम्बर न भेज ले, जो उन को हमारी आयते पढ-पढ कर सुनाये, और हम बस्तियों को हलाक नही किया करते, मगर इस हालत मे कि वहा के बाशिंदे जालिम हो। (५९) और जो चीज तुम को दी गयी है, वह दुनिया की जिंदगी का फायदा और उस की जीनत है और जो खुदा के पास है, वह बेहतर और बाकी रहने वाली है। क्या तुम समझते नही ? (६०)★

भला जिस शख्स से हम ने नेक वायदा किया और उस ने उसे हासिल कर लिया तो क्या वह उस शख्स का-सा है, जिस को हम ने दुनिया की ज़िंदगी के फायदे से नवाजा। फिर वह कियामत के दिन उन लोगो मे हो, जो (हमारे रू-ब-रू) हाजिर किए जाएगे। (६१) और जिस (दिन) (खुदा)

---

१ बातें 'कौल' का तर्जुमा है और इस से मुराद कुरआन मजीद की आयतें हैं, जो एक दूसरे के बाद आती रही।

व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रका-इयल्लजी-न कुन्तुम् तज्-अुमून (६२) कालल्लजी-न हक्-क अलैहिमुल् - क़ौलु रब्बना हाउलाइकल्लजी-न अग्वैना अग्वैनाहुम् कमा गवैना तबर्रअ् - ना इलै - क मा कानू इय्याना यअ्-बुदून (६३) व कीलद्अू शु-र-का-अकुम् फ-दऔहुम् फ-लम् यस्तजीबू लहुम् व र-अ-वुल्-अज़ा-ब लौ अन्नहुम् कानू यह्-तदून (६४) व यौ-म युनादीहिम् फ यक़ूलु माज़ा अ-जब्तुमुल् - मुर्सलीन (६५) फ-अमि-यत् अलैहिमुल् - अम्बाउ यौमइज़िन् फहुम् ला य-त-साअलून (६६) फ-अम्मा मन् ता-ब व आ-म-न व अमि-ल सालिहन् फ-असा अय्यकू-न मिनल्मुफ्लिहीन (६७) व रब्बु-क यख़्-लुकु मा यशाउ व यख़्तारु मा का - न लहुमुल् - ख़ि - य - रतु सुब्हानल्लाहि व तआला अम्मा युश्रिकून (६८) व रब्बु-क यअ्-लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ्-लिनून (६९)

أمن خلق ٢٠ — ٣١٤ — القصص ٢٨

مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ
كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِيَّانَا
يَعْبُدُونَ ۝ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا
لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ
فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ
فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ۝ فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ
أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ۝ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا
كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَرَبُّكَ
يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا
هُوَ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ أَفَلَا
تُبْصِرُونَ ۝ وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَيَوْمَ

व हुवल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व लहुल्-हम्दु फिल्ऊला वल्-आख़िरति व लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्जअून (७०) कुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ-लल्लाहु अलैकुमुल्लै-ल सर्मदन् इला यौमिल्कियामति मन् इलाहुन् गैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिज़ियाइन् अ-फला तस्-मअून (७१) कुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ-लल्लाहु अलैकुमुन्नहा-र सर्मदन् इला यौमिल्कियामति मन् इलाहुन् गैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिलैलिन् तस्कुनू - न फीहि अ-फ-ला तुब्सिरून (७२) व मिर्रह्मतिही ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल वन्नहा - र लितस्कुनू फीहि व लि - तब्तग़ू मिन् फज़्लिही व ल - अ़ल्लकुम् तश्कुरून (७३)

उन को पुकारेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक कहा है, जिन का तुम्हे दावा था ? (६२) (तो) जिन लोगो पर (अजाब का) हुक्म साबित हो चुका होगा, वे कहेगे कि हमारे परवरदिगार ! ये वह लोग है, जिन को हम ने गुमराह किया था और जिस तरह हम खुद गुमराह हुए थे, उमी तरह उन को गुमराह किया था, (अब) हम तेरी तरफ (मुतवज्जह हो कर) उन से बे-जार होते है। ये हमे नही पूजते थे। (६३) और कहा जाएगा कि अपने शरीको को बुलाओ, तो वे उन को पुकारेंगे और वे उन को जवाब न दे सकेंगे और (जब) अजाब को देख लेंगे (तो तमन्ना करेंगे कि) काश ! वे हिदायत पाये हुए होते। (६४) और जिस दिन (ख़ुदा) उन को पुकारेगा और कहेगा कि तुम ने पैगम्बरों को क्या जवाब दिया ? (६५) तो वे उस दिन खबरों से अंधे हो जाएगे[1] और आपस मे कुछ भी पूछ न सकेंगे। (६६) लेकिन जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किए, तो उम्मीद है कि वह निजात पाने वालो मे हो। (६७) और तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है, पैदा करता है और (जिसे चाहता है) चुन लेता है। उन को (इस का) अख्तियार नही है, ये जो शिर्क करते है, ख़ुदा उस मे पाक व ऊंचा है। (६८) और उन के सीने, जो कुछ छिपाते है और जो ये जाहिर करते है, तुम्हारा परवरदिगार उस को जानता है। (६९) और वही ख़ुदा है, उस के सिवा कोई मावूद नही, दुनिया और आखिरत मे उसी की तारीफ है और उसी का हुक्म और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (७०) कहो, भला, देखो तो अगर ख़ुदा तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक रात (का अंधेरा) किए रहे, तो ख़ुदा के सिवा कौन मावूद है, जो तुम को रोशनी ला दे, तो क्या तुम सुनते नही ? (७१) कहो, तो भला देखो तो अगर ख़ुदा तुम पर हमेशा कियामत तक दिन किए रहे, तो ख़ुदा के सिवा कौन मावूद है कि तुम को रात ला दे, जिस मे तुम आराम करो, तो क्या तुम देखते नही ? (७२) और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात को और दिन को बनाया, ताकि तुम उसमे आराम करो और (उस मे) उसका फ़ज्ल तलाश करो और ताकि शुक्र करो। (७३)

---

१ लफ़्ज़ो का तर्जुमा तो यह है कि उस दिन उन पर खबरें अंधी हो जाएगी लेकिन उर्दू मुहावरे को ध्यान मे रखते हुए उस का तर्जुमा इस तरह किया गया।

व यौ-म युनादीहिम् फ-यकूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अुमून (७४) व न-ज़अ्-ना मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् फ-कुलना हातू बुर्हानकुम् फ़-अ़लिमू अन्नल्हक-क़ लिल्लाहि व जल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून★(७५) इन्-न कारू-न का-न मिन् कौमि मूसा फ-बग़ा अलैहिम् ص व आतैनाहु मिनल्कुनूज़ि मा इन-न मफाति-हहू ल-तनूउ बिल्अुस्बति उलिल् - कुव्वति ق इज् क़ा - ल लहू कौमुहू ला तफ़्रह इन्नल्ला-ह ला युहि़ब्बुल्-फरिहीन (७६) वब्तगि फीमा आताकल्लाहुद्-दारल्-आख़ि-र-त़ व ला तन्-स नसी-ब-क मिनद्दुन्या व अह्सिन् कमा अह्-स-नल्लाहु इलै-क व ला तब्गिल्-फसा-द फिल्अर्ज़ि ط इन्नल्ला - ह ला युहि़ब्बुल्-मुफ़्सिदीन (७७) का-ल इन्नमा ऊतीतुहू अला अ़िल्मिन् अिन्दी ط अ-व लम् यअ्-लम् अन्नल्ला-ह क़द् अह्-ल-क मिन् कब्लिही मिनल्-कुरूनि मन् हु-व अशद्दु मिन्हु कुव्वतव-

يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝ وَنَزَعْنَا
مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ
لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ
مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۖ وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ
بِالْعُصْبَةِ اُولِي الْقُوَّةِ ۚ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ۝ وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا
تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَ
لَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْاَرْضِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰي عِلْمٍ عِنْدِيْ ۭ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ
اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ
جَمْعًا ۭ وَلَا يُسْــَٔـلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ فَخَرَجَ عَلٰي
قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ
لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝ وَقَالَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ۝ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ
فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۤ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُنْتَصِرِيْنَ ۝ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ

व अक्सरु जम्-अ़न् ط व ला युस्अलु अ़न् ज़ुनूबिहिमुल्-मुज्रिमून (७८) फ़-ख़-र-ज अ़ला क़ौमिही फ़ी ज़ीनतिही ط कालल्लज़ी-न युरीदूनल्-ह़यातद्दुन्या यालै-त लना मिस्-ल मा ऊति-य कारूनु ل इन्नहू ल-ज़ू ह़ज्ज़िन् अ़ज़ीम (७९) व कालल्लज़ी-न ऊतुल्अि़ल्-म वैलकुम् सवाबुल्लाहि ख़ैरुल्लिमन् आम-न व अमि-ल सालिह़न् ج व ला युलक़्क़ाहा इल्लस्साबिरून (८०) फ ख़ - सफ़्ना बिही व बिदारिहिल्-अर्-ज क़फ़ फ़मा का-न लहू मिन् फि - अतिंय्यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि ق व मा का - न मिनल् - मुन्तसिरीन (८१)

★रु ७/१० आ १५

और जिस दिन वह उन को पुकारेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक, जिन का तुम्हे दावा था, कहा है ? (७४) और हम हर एक उम्मत मे से गवाह निकाल लेंगे, फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो, तो वे जान लेगे कि सच बात खुदा की है और जो कुछ वे झूठ गढा करते थे, उन से जाता रहेगा । (७५)★

कारून मूसा की कौम मे से था और उन पर सरकशी करता था और हमने उस को इतने खजाने दिए थे कि उन की कुंजिया एक ताकतवर जमाअत को उठानी मुश्किल होती । जब उस से उस की कौम ने कहा कि इतराइये मत कि खुदा इतराने वालो को पसन्द नही करता । (७६) और (माल) तुम को खुदा ने अता फरमाया है, उस से आखिरत (की भलाई) तलब कीजिए और दुनिया से अपना हिस्सा न भुलाइए[1] और जैसी खुदा ने तुम से भलाई की है (वैसी) तुम भी (लोगो से) भलाई करो और मुल्क मे फसाद न चाहो, क्योकि खुदा फसाद करने वालो को दोस्त नही रखता । (७७) बोला कि यह (माल) मुझे इल्म (के ज़ोर) से मिला है । क्या उस को मालूम नही कि खुदा ने उस से पहले बहुत सी उम्मते, जो उस से ताकत मे बढ कर और जमइयत मे ज्यादा थी, हलाक कर डाली है और गुनाहगारो से उन के गुनाहो के बारे मे पूछा नही जाएगा ।[2] (७८) तो (एक दिन) कारून (बडी) सजावट (और ठाठ) से अपनी कौम के सामने निकला । जो लोग दुनिया की जिंदगी के तलबगार थे, कहने लगे कि जैसा (माल व मता) कारून को मिला है, काश ! (ऐसा ही) हमे भी मिले । वह तो बडा ही किस्मत वाला है । (७९) और जिन लोगो को इल्म दिया गया था, वे कहने लगे कि तुम पर अफसोस, मोमिनो और नेक लोगो के लिए, (जो) सवाब खुदा (के यहा तैयार है, वह) कही बेहतर है । और वह सिर्फ सब्र करने वालो ही को मिलेगा । (८०) पस हमने कारून को और उस के घर को ज़मीन मे धसा दिया, तो खुदा के सिवा कोई जमाअत उस की मददगार न हो सकी और न वह बदला ले सका । (८१) और वे लोग जो

---

१ यानी दुनिया मे नेक अमल कीजिए कि आखिरत मे यही साथ जाएगे ।

२. यानी गुनाहगारो से पूछ कर उन को सज़ा नही दी जाएगी, बल्कि जब उन को अज़ाब का होना ज़रूर है, तो न पूछने की ज़रूरत है, न उन को चून व चरा करने की ताकत ।

★रु ७/१० आ १५

व अस्बहल्लजी-न तमन्नौ मकानहू बिल्अम्सि यकूलू-न वै-क-अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज्-क लिमंय्यशाउ मिन् अिबादिही व यक्दिरु ᓚ लौ ला अम्मन्नल्लाहु अलैना ल-ख़ - स - फ बिना ᓗ वै - क-अन्नहू ला युफ़्लिहुल् - काफ़िरून ★(८२) तिल्कद्दारुल्-आख़िरतु नज-अलुहा लिल्लज़ी-न ला युरीदू-न अुलुव्वन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़सादन् ᓗ वल् - आकिबतु लिल्मुत्तक़ीन (८३) मन् जा-अ बिल-ह़-स-नति फ़ - लहू ख़ैरुम्मिन्हा ᓚ व मन् जा - अ बिस्सय्यिअति फला युज्ज़लल्जी - न अमिलुस्सय्यिआति इल्ला मा कानू यअ्-मलून (८४) इन्नल्लज़ी फ-र-ज अलैकल्-क़ुर्आ-न ल - राद्दु - क इला मआदिन् ᓗ क़ुर्रब्बी अअ्-लमु मन् जा-अ बिल्हुदा व मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (८५) व मा कुन्-त तर्जू अय्युल्का इलैकल् - किताबु इल्ला रह़-म-तम्-मिर्रब्बि-क फला तकूनन्-न ज़हीरल्-लिल्काफ़िरीन ᓘ(८६) व ला यसुद्दुन्न-क अन् आयातिल्लाहि बअ्-द इज् उन्जिलत् इलै-क वद्अु इला रब्बि-क व ला तकूनन्-न मिनल्-मुश्रिकीन ᓚ (८७) व ला तद्अु म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र▒ला इला-ह इल्ला हु-व कुल्लु शैइन् हालिकुन् इल्ला वज् - हहू ᓗ लहुल्हुक्मु व इलैहि तुर्जअून ★●(८८)

٣١٦

ويكأن الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر لولا
أن من الله علينا لخسف بنا ويكأنه لا يفلح الكافرون ﴿٨٢﴾
تلك الدار الآخرة نجعلها للذين لا يريدون علوا في الأرض
ولا فسادا والعاقبة للمتقين ﴿٨٣﴾ من جاء بالحسنة فله خير
منها ومن جاء بالسيئة فلا يجزى الذين عملوا السيئات
إلا ما كانوا يعملون ﴿٨٤﴾ إن الذي فرض عليك القرآن
لرادك إلى معاد قل ربي أعلم من جاء بالهدى ومن هو
في ضلال مبين ﴿٨٥﴾ وما كنت ترجو أن يلقى إليك الكتاب إلا
رحمة من ربك فلا تكونن ظهيرا للكافرين ﴿٨٦﴾ ولا يصدنك
عن آيات الله بعد إذ أنزلت إليك وادع إلى ربك ولا تكونن
من المشركين ﴿٨٧﴾ ولا تدع مع الله إلها آخر لا إله إلا هو
كل شيء هالك إلا وجهه له الحكم وإليه ترجعون ﴿٨٨﴾

سورة العنكبوت مكية وهي تسع وستون آية وسبع ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

الم ﴿١﴾ أحسب الناس أن يتركوا أن يقولوا آمنا وهم لا
يفتنون ﴿٢﴾ ولقد فتنا الذين من قبلهم فليعلمن الله
الذين صدقوا وليعلمن الكاذبين ﴿٣﴾ أم حسب الذين

२९ सूरतुल्-अन्कबूति ८५

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ४४१० अक्षर, ९९० शब्द, ६९ आयते और ७ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अलिफ़् - लाम् - मीम् ᓚ (१) अ-हसिबन्नासु अय्युत्रकू अय्यकूलू आमन्ना व हुम् ला युफ़्तनून (२) व ल-कद् फ़-त-न्नल्लज़ी-न मिन् कब्लिहिम् फ़ ल-यअ्-ल-मन्नल्लाहुल्-लज़ी-न स़-दकू व ल-यअ्-ल-मन्नल् काज़िबीन (३)

कल उस के रुत्बे की तमन्ना करते थे, सुबह को कहने लगे, हाय शामत ! खुदा ही तो अपने बन्दो मे से जिस के लिए चाहता है, रोजी फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है। अगर खुदा हम पर एहसान न करता तो हमे भी धसा देता। हाय खराबी ! काफिर निजात नही पा सकते। (८२)★

वह (जो) आखिरत का घर (है) हमने उसे उन लोगो के लिए (तैयार) कर रखा है जो मुल्क मे जुल्म और फसाद का इरादा नही रखते और (नेक) अजाम तो परहेजगारो ही का है। (८३) जो शख्स नेकी ले कर आएगा, उस के लिए इस से बेहतर (बदला मौजूद) है और जो बुराई लाएगा तो जिन लोगो ने बुरे काम किए, उन को बदला भी उसी तरह का मिलेगा, जिस तरह के वे काम करते थे। (८४) (ऐ पैगम्बर !) जिस (खुदा) ने तुम पर कुरआन (के हुक्मो को) फ़र्ज़ किया है, वह तुम्हे बाज गश्त[1] की जगह लौटा देगा। कह दो कि मेरा परवरदिगार उस शख्स को भी खूब जानता है, जो हिदायत ले कर आया और (उस को भी), जो खुली गुमराही मे है। (८५) और तुम्हे उम्मीद न थी कि तुम पर यह किताब नाजिल की जाएगी, मगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से (नाजिल हुई), तो तुम हरगिज काफिरो के मददगार न होना। (८६) और वे तुम्हे खुदा की आयतो (की तब्लीग) से, बाद इस के कि वह तुम पर नाजिल हो चुकी है, रोक न दे और अपने परवरदिगार को पुकारते रहो और मुश्रिको मे हरगिज़ न होजियो। (८७) और खुदा के साथ किसी और को माबूद (समझ कर) न पुकारना॥ उस के सिवा कोई माबूद नही। उस की ज़ात (पाक) के सिवा हर चीज फना होने वाली है। उसी का हुक्म है और उसी की तरफ तुम लौट कर जाओगे। (८८)★●

२९ सूरः अंकबूत ८५

सूर अकबूत मक्की है और इस मे उनहत्तर आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ्-लाम्-मीम्, (१) क्या ये लोग यह ख्याल किए हुए है कि (सिर्फ) यह कहने से कि हम ईमान ले आए, छोड दिए जाएगे और उन की आजमाइश नही की जाएगी। (२) और जो लोग इन से पहले हो चुके है, हमने उन को भी आजमाया था (और उन को भी आज़माएंगे), सो खुदा उन को जरूर मालूम करेगा, जो (अपने ईमान मे) सच्चे है और उन को भी, जो झूठे है। (३)

---

१ बाज़ गश्त की जगह से या तो कियामत मुराद है या बहिश्त।

★रु ८/११ आ ७ ॥ व लाजिम ★रु ९/१२ आ ६ ●सु ३/४

अम् हसिबल्लजी-न यअ्-मलूनस्-सय्यिआति अय्यस्बिकूना साॅ-अ मा यह्कुमून (४) मन् का-न यर्जू लिकाअल्लाहि फइन्-न अ-ज-लल्लाहि लआतिन् व हुवस्समीअुल्-अ़लीम (५) व मन् जाह-द फ-इन्नमा युजाहिदु लिनफ़्सिही इन्नल्ला-ह लगनिय्युन् अ़निल्-आलमीन (६) वल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति ल-नुकफ़्फ़िरन्-न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-नज्जियन्नहुम् अह्-स-नल्लजी कानू यअ्-मलून (७) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि हुस्-नन् व इन् जाहदा-क लितुश्रि-क बी मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन् फला तुतिअ्-हुमा इलय्-य मर्जिअुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (८) वल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति ल-नुद्खिलन्नहुम् फ़िस्सालिहीन (९) व मिनन्नासि मय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि फ़इज़ा ऊजि-य फ़िल्लाहि ज-अ-ल फ़ित्नतन्नासि क-अ़ज़ाबिल्लाहि व लइन् जा-अ नस्रुम्-मिर्रब्बि-क ल-यकूलुन्-न इन्ना कुन्ना म-अकुम् अ-व लैसल्लाहु बिअअ्-लम बिमा फी सुदूरिल्-आलमीन (१०) व ल-यअ-लमन्नल्लाहुल्लजी-न आमनू व ल-यअ्-ल-मन्नल्-मुनाफ़िक़ीन (११) व कालल्लजी-न क-फ़रू लिल्लजी-न आमनुत्तबिअू सबीलना वल-नह्-मिल् ख़तायाकुम् व मा हुम् बिहामिली-न मिन् ख़तायाहुम् मिन् शैइन् इन्नहुम् ल-काज़िबून (१२) व ल-यह्मिलुन्-न अस्कालहुम् व अस्क़ालम्-म-अ अस्कालिहिम् व ल-युस्अलुन्-न यौमल्-क़ियामति अम्मा कानू यफ़्तरून ★ (१३) व ल-कद् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़-लबि-स फीहिम् अल-फ स-नतिन् इल्ला खम्सी-न आमन् फ-अ-ख़-ज-हुमुत्तूफ़ानु व हुम् जालिमून (१४)

يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ مَنْ كَانَ
يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝
وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ
لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ
بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ
فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَ
مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ
النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا
كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَ
لَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا
هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ وَ
لَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ؗ وَلَيُسْئَلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ
فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَ

★रु १/१३ आ १३

क्या वे लोग, जो बुरे काम करते है, यह समझे हुए हैं कि ये हमारे काबू से निकल जाएगे। जो ख्याल ये करते है, बुरा है। (४) जो शख्स खुदा की मुलाकात की उम्मीद रखता हो, तो खुदा का (मुकर्रर किया हुआ) वक्त जरूर आने वाला है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है।(५) और जो शख्स मेहनत करता है, तो अपने ही फायदे के लिए मेहनत करता है (और) खुदा तो सारी दुनिया से बे-परवा है। (६) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, हम उन के गुनाहो को उन से दूर कर देंगे और उन को उन के आमाल का बहुत अच्छा बदला देंगे। (७) और इसान को अपने मां-बाप के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म दिया है। (ऐ मुखातब !) अगर तेरे मा-बाप तेरे पीछे पड़े कि तू मेरे साथ किसी को शरीक बनाए, जिस की हकीकत तुझे नही मालूम, तो उन का कहना न मानियो। तुम सब को मेरी तरफ लौट कर आना है। फिर जो कुछ तुम करते थे, मैं तुम को जता दूगा। (८) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को हम नेक लोगो मे दाखिल करेंगे। (९) और कुछ लोग ऐसे है, जो कहते हैं कि हम खुदा पर ईमान लाए। जब उन को खुदा (के रास्ते) मे कोई तक्लीफ पहुचती है, तो लोगो की तक्लीफ को (यो) समझते है, जैसे खुदा का अजाब और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से मदद पहुचे, तो कहते है कि हम तो तुम्हारे साथ थे। क्या जो दुनिया वालो के सीनो मे है, खुदा उसे नही जानता ? (१०) और खुदा उन को ज़रूर मालूम करेगा जो (सच्चे) मोमिन है और मुनाफिको को भी मालूम कर के रहेगा। (११) और जो काफिर है, वे मोमिनो से कहते है कि हमारे तरीके की पैरवी करो, हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालाकि वे उन के गुनाहो का कुछ भी बोझ उठाने वाले नही। कुछ शक नही कि ये झूठे है। (१२) और ये अपने बोझ भी उठाएगे और अपने बोझो के साथ और (लोगो के) बोझ भी और जो बोहतान ये बाधते रहे, कियामत के दिन उन की उन से जरूर पूछ-ताछ होगी। (१३) ★

और हमने नूह को उन की कौम की तरफ भेजा, तो वह उन मे पचास वर्ष कम हज़ार वर्ष रहे, फिर उन को तूफान (के अजाब) ने आ पकडा और वह जालिम थे। (१४) फिर हमने नूह

★रु १/१३ आ १३

फ़-अन्जैनाहु व अस्हाबस्-सफ़ीनति व ज-अल्नाहा आयतल् - लिल्आलमीन (१५) व इब्राही-म इज़् क़ा-ल लिक़ौमिहिअ्-बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु ᐟ ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (१६) इन्नमा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि औसानंव्-व तख़्लुक़ू-न इफ़्कन् ᐟ इन्नल्लज़ी-न तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यम्लिकू-न लकुम् रिज़-क़न् फ़ब्तग़ू अिन्दल्लाहिर्-रिज़्-क़ व अ्-बुदूहु वश्कुरू लहू ᐟ इलैहि तुर्जअून (१७) व इन् तुकज़्ज़िबू फ़-क़द् कज़्ज़-ब उ-ममुम्-मिन् क़ब्लिकुम् ᐟ व मा अलर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (१८) अ-व लम् यरौ कै-फ़ युब्दिउल्लाहुल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअीदुहू ᐟ इन्-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीर (१९) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ ब-द-अल्-ख़ल्-क़ सुम्मल्लाहु युन्शिउन् - नश्-अ-तल् - आख़ि-र-त ᐟ इन्-नल्ला - ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर ᐣ (२०) युअ़ज़्ज़िबु मय्यशाउ व यर्हमु मय्यशाउ ᐣ व इलैहि तुक़्लबून (२१)

امن خلق ٢٠　　٣١٨　　العنكبوت ٢٩

هم ظلمون ﴿١٤﴾ فانجينه واصحب السفينة وجعلنها اية للعلمين ﴿١٥﴾
وابرهيم اذ قال لقومه اعبدوا الله واتقوه ذلكم خير لكم
ان كنتم تعلمون ﴿١٦﴾ انما تعبدون من دون الله اوثانا و
تخلقون افكا ان الذين تعبدون من دون الله لا يملكون
لكم رزقا فابتغوا عند الله الرزق واعبدوه واشكروا له
اليه ترجعون ﴿١٧﴾ وان تكذبوا فقد كذب امم من قبلكم وما
على الرسول الا البلغ المبين ﴿١٨﴾ اولم يروا كيف يبدئ الله
الخلق ثم يعيده ان ذلك على الله يسير ﴿١٩﴾ قل سيروا في
الارض فانظروا كيف بدا الخلق ثم الله ينشئ النشاة
الاخرة ان الله على كل شيء قدير ﴿٢٠﴾ يعذب من يشاء
ويرحم من يشاء واليه تقلبون ﴿٢١﴾ وما انتم بمعجزين
في الارض ولا في السماء وما لكم من دون الله من ولي
ولا نصير ﴿٢٢﴾ والذين كفروا بايت الله ولقائه اولئك يئسوا
من رحمتي واولئك لهم عذاب اليم ﴿٢٣﴾ فما كان جواب قومه
الا ان قالوا اقتلوه او حرقوه فانجيه الله من النار ان في
ذلك لايت لقوم يؤمنون ﴿٢٤﴾ وقال انما اتخذتم من دون
الله اوثانا مودة بينكم في الحيوة الدنيا ثم يوم القيمة

व मा अन्तुम् बिमुअजिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ ᐟ व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर ★ (२२) वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि व लिक़ाइही उलाइ-क यइसू मिर्रह्मती व उलाइ - क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (२३) फ़-मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुक़्तुलूहु औ हर्रिक़ूहु फ़-अन्जाहुल्लाहु मिनन्नारि ᐟ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिय्युअ्मिनून (२४) व क़ा-ल इन्नमत्तख़ज़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि औसानम् ᐟ म-वद्-द-त बैनिकुम् फ़िल् - ह़यातिद्दुन्या ᐣ सुम् - म यौमल्-क़ियामति यक्फ़ुरु बअ्-ज़ुकुम् बिबअ्-ज़िंव्-व यल्अनु बअ्-ज़ुकुम् बअ्-ज़ंव् - व मअ् - वाकुमुन्नारु ᐟ व मा लकुम् मिन् नासिरीन ᐣ (२५)

★ रु २/१४ आ ६

को और कश्ती वालो को निजात दी और कश्ती को दुनिया वालो के लिए निशानी बना दिया। (१५) और इब्राहीम को, (याद करो) जब उन्हो ने अपनी कौम से कहा कि खुदा की इबादत करो और उस से डरो। अगर तुम समझ रखते हो, तो यह तुम्हारे हक मे बेहतर है। (१६) तुम तो खुदा को छोड कर बुतो को पूजते और तूफान बाधते हो, तो जिन लोगो को तुम खुदा के सिवा पूजते हो, वे तुम को रोज़ी देने का अख्तियार नही रखते, पास खुदा ही के यहा से रोजी तलब करो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र करो, उसी की तरफ तुम लौट कर जाओगे। (१७) और अगर तुम (मुझे) झुठलाओ तो तुम से पहले भी उम्मते (अपने पैगम्बरो को) झुठला चुकी है और पैगम्बर के जिम्मे खोल कर सुना देने के सिवा और कुछ नही। (१८) क्या उन्हो ने नही देखा कि खुदा किस तरह खल्कत को पहली बार पैदा करता है, फिर (किस तरह) उस को बार-बार पैदा करता रहता है, यह खुदा को आसान है। (१९) कह दो कि मुल्क मे चलो-फिरो और देखो कि उस ने किस तरह खल्कत को पहली बार पैदा किया है, फिर खुदा ही पिछली पैदाइश पैदा करेगा। बेशक खुदा हर चीज पर कादिर है। (२०) वह जिसे चाहे अजाब दे और जिस पर चाहे रहम करे और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (२१) और तुम (उस को) न जमीन मे आजिज़ कर सकते हो, न आसमान मे और खुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार। (२२)★

और जिन लोगो ने खुदा की आयतो से और उस के मिलने से इन्कार किया, वे मेरी रहमत से ना-उम्मीद हो गये है और उन को दर्द देने वाला अजाब होगा। (२३) तो उन की कौम के लोग जवाब मे बोले, तो यह बोले, कि उसे मार डालो या जला दो, मगर खुदा ने उन को आग (की जलन) मे बचा लिया। जो लोग ईमान रखते है, उन के लिए उस मे निशानिया हैं। (२४) और इब्राहीम ने कहा कि तुम जो खुदा को छोड कर बुतो को ले बैठे हो, तो दुनिया की ज़िदगी मे आपसी दोस्ती के लिए, (मगर) फिर कियामत के दिन एक दूसरे (की दोस्ती) से इकार कर दोगे और एक दूसरे पर लानत भेजोगे और तुम्हारा ठिकाना दोजख होगा और कोई तुम्हारा मददगार न

★रु २/१४ आ ९

फ़आ-म-न लहू लूतुन् ▩ व का-ल इन्नी मुहाजिरुन् इला रब्बी इन्नहू हुवल्अज़ीजुल्-हकीम (२६) व व-हब्ना लहू इस्हा-क व यअ्-कू-ब व ज-अल्ना फी ज़ुर्रिय्यतिहिन्-नुबुव्व-त वल्किता-ब व आतैनाहु अज्-रहू फिद्दुन्या व इन्नहू फिल्-आख़िरति लमिनस्सालिहीन (२७) व लूतन् इज् का-ल लिकौमिही इन्नकुम् ल-तअ्तूनल्-फाहि-श-त मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन् अ-हदिम्-मिनल्-आलमीन (२८) अ-इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्-रिजा-ल व तक्तअूनस्सबी-ल व तअ्तू-न फ़ी नादीकुमुल्-मुन्क-र फ मा का-न जवा-ब कौमिही इल्ला अन् कालुअ्तिना बिअ़जाबिल्-लाहि इन् कुन्-त मिनस्सादिकीन (२९) का-ल रब्बिन्सुर्नी अ-लल्कौमिल्-मुफ्सिदीन ★ (३०) व लम्मा जा-अत् रुसुलुना इब्-राही-म बिल्बुशरा क़ालू इन्ना मुह्लिकू अह्लि हाजिहिल्-क़र्यति इन्-न अह्-लहा कानू ज़ालिमीन (३१) का-ल इन्-न फ़ीहा लूतन् कालू नह्नु अअ्-लमु बिमन् फीहा ल-नुनज्जियन्नहू व अह्-लहू इल्लम्-र-अ-तहू कानत् मिनल्गाबिरीन (३२) व लम्मा अन् जा-अत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व जा-क बिहिम् जर्अव-व कालू ला त-ख़फ् व ला तह्-जन् इन्ना मुनज्जू-क व अह्-ल-क इल्लम्-र-अ-त-क कानत् मिनलगाबिरीन (३३) इन्ना मुन्जिलू-न अला अह्लि हाजिहिल्-करयति रिज्-जम्-मिनस्समाइ बिमा कानू यफ्सुकून (३४)

امن خلق ٢٠ — ٣١٩ — العنكبوت ٢٩

يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا وَّمَأْوٰىكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ
اِلٰى رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَ
يَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ
فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَلُوْطًا اِذْ
قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۫ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ
اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ
السَّبِيْلَ ۙ۬ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾
وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا
اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ
فِيْهَا لُوْطًا ؕ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۟ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ
اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّآ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا
لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا
تَحْزَنْ ۫ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ

▩ व लाजिम ★ रु ३/१५ आ ८

होगा। (२५) पस उन पर (एक) लूत ईमान लाए और (इब्राहीम) कहने लगे कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ हिजरत करने वाला हूं। बेशक वह गालिब हिक्मत वाला है। (२६) और हम ने उनको इस्हाक और याकूब बख्शे और उन की औलाद मे पैगम्बरी और किताब (मुकर्रर) कर दी और उन को दुनिया मे भी उन का बदला दिया और वे आखिरत मे भी नेक लोगो मे होगे, (२७) और लूत (को याद करो,) जब उन्हो ने अपनी कौम से कहा कि तुम (अजब) बे-हयाई अपनाते हो, तुम से पहले दुनिया वालो मे से किसी ने ऐसा काम नही किया। (२८) क्या तुम (लज्जत के इरादे से) लौडो की तरफ मायल होते और (मुसाफिरो की) लूट-मार करते हो और अपनी मज्लिसो मे ना-पसन्दीदा काम करते हो, तो उन की कौम के लोग जवाब मे बोले तो यह बोले कि अगर तुम सच्चे हो, तो हम पर अजाब ले आओ। (२९) (लूत ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! इन फसादी लोगो के मुकाबले मे मुझे नुसरत इनायत फरमा। (३०)★

और जब हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास खुशी की खबर ले कर आए, तो कहने लगे कि हम इस बस्ती के लोगो को हलाक कर देने वाले है कि यहां के रहने वाले ना-फरमान है। (३१) (इब्राहीम ने) कहा कि इस मे तो लूत भी हैं। वे कहने लगे कि जो लोग (यहा) रहते हैं, हमे सब मालूम है। हम उन को और उन के घर वालो को बचा लेंगे, अलावा उन की बीवी के, कि वह पीछे रहने वालों मे होगी। (३२) और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास आए तो वह उन (की वजह से) ना-खुश और तंग-दिल हुए। फरिश्तो ने कहा, कुछ खौफ न कीजिए और न रज कीजिए। हम आप को और आप के घर वालो को बचा लेंगे, मगर आप की बीवी कि पीछे रहने वालो मे होगी। (३३) हम इस बस्ती के रहने वालो पर, इस वजह से कि ये बद-किरदारी करते रहे हैं,

व ल-कत्त-रकना मिन्हा आ-य-तम्-बय्यिनतल्-लिकौमिय्यअ-किलून (३५) व इला मद्-य-न अख़ाहुम् शुअैबन् ॥ फ़का-ल या कौमिअ-बुदुल्ला-ह वर्जुल्-यौमल्-आख़ि-र व ला तअ-सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (३६) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुर्-रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन ✓ (३७) व आदंव्-व समू-द व क़त्तबय्य-न लकुम् मिम्-मसाकिनिहिम् (قف) व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्-मालहुम् फ़-सद्दहुम् अनिस्सबीलि व कानू मुस्तब्सिरीन ॥ (३८) व कारू-न व फ़िर्औ-न व हामा-न (قف) व ल-कद् जा-अहुम् मूसा बिल्बय्यिनाति फ़स्तक-बरू फ़िल्अर्ज़ि व मा कानू साबिकीन ج (صلے) (३९) फ़ कुल्लन् अ-ख़ज़्ना बिज़म्बिही ج फ़ मिन्हुम् मन् अर्सल्ना अलैहि हासिबन् ج व मिन्हुम् मन् अ-ख़-ज़त्हुस्-सैहतु ج व मिन्हुम् मन् ख़-सफ़्ना बिहिल्अर्-ज़ ج व मिन्हुम् मन् अग्-रक़्ना ج व मा कानल्लाहु लि-यज़्लिमहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (४०) म-स-लुल्लज़ीनत्त-ख़-ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ क-म-सलिल्-अन्कबूति ج (صلے) इत्त-ख़-ज़त् बैतन् ط व इन्-न औहनल्-बुयूति लबैतुल्-अन्कबूति ∴ लौ कानू यअ-लमून (४१) इन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा यद्अू-न मिन् दूनिही मिन् शैइन् ط व हुवल्-अज़ीज़ुल्-हकीम (४२) व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि ج व मा यअ्-किलुहा इल्लल्-आलिमून (४३) ख़-ल-कल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल् - लिल्मुअ्मिनीन ★ (४४)

السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةً بَيِّنَةً
لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝
فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝
وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ۝
وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۫ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ
فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ۝ فَكُلًّا اَخَذْنَا
بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ
مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ۝ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ
الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۗ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ
الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ
نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ۝ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

∴ व लाज़िम ★रु ४/१६ आ १४

आसमान से अजाब नाजिल करने वाले है। (३४) और हमने समझने वाले लोगो के लिए इस बस्ती से एक खुली निशानी छोड दी। (३५) और मदयन की तरफ उनके भाई शुऐब को भेजा, तो उन्हो ने कहा, ऐ कौम ! खुदा की इबादत करो और पिछले दिन (के आने) की उम्मीद रखो और मुल्क मे फसाद न मचाओ। (३६) मगर उन्होने उनको झूठा समझा, सो उनको ज़लजले (के अजाब) ने आ पकडा और वे अपने घरो मे औंधे पडे रह गये। (३७) और आद और समूद को भी (हम ने हलाक कर दिया), चुनाचे उन के (वीरान) घर तुम्हारी आखो के सामने है और शैतान ने उन के आमाल उन को सजा दिए और उन को (सीधे) रास्ते से रोक दिया, हालाकि वे देखने वाले (लोग) थे। (३८) और क़ारून और फिऔन और हामान को भी (हलाक कर दिया)। और उन के पास मूसा खुली निशानिया ले कर आए, तो वे मुल्क मे घमड करने लगे और वे (हमारे) काबू से निकल जाने वाले न थे। (३९) तो हमने सब को उन के गुनाहो की वजह से पकड लिया, सो उन मे कुछ तो ऐसे थे जिन पर हमने पत्थरो का मेह बरसाया और कुछ ऐसे थे जिन को चिघाड ने आ पकडा और कुछ ऐसे थे, जिन को हम ने ज़मीन मे धसा दिया और कुछ ऐसे थे जिन को डुबा दिया और खुदा ऐसा न था कि उन पर जुल्म करता, लेकिन वही अपने आप पर जुल्म करते थे। (४०) जिन लोगो ने खुदा के सिवा (औरो को) कारसाज़ बना रखा है, उन की मिसाल मकडी की-सी है कि वह भी एक (तरह का) घर बनाती है और कुछ शक नही कि तमाम घरो से कमजोर मकडी का घर है▨काश ! ये (इस बात को) जानते। (४१) ये जिस चीज़ को खुदा के सिवा पुकारते है (चाहे) वह कुछ ही हो, खुदा उसे जानता है और वह ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (४२) और ये मिसाले हम लोगो के (समझाने के) लिए बयान करते है और इसे तो इल्म वाले ही समझते है। (४३) खुदा ने आसमानो और जमीन को हिक्मत के साथ पैदा किया है। कुछ शक नही कि ईमान वालों के लिए इस मे निशानी है। (४४) ★

▨ व. लाज़िम ★रु ४/१६ आ १४

(ऐ मुहम्मद !) यह किताब जो तुम्हारी तरफ़ वह्य की गयी है, उस को पढ़ा करो और नमाज के पाबन्द रहो। कुछ शक नही कि नमाज़ बेहयाई और बुरी बातो से रोकती है और ख़ुदा का ज़िक्र बड़ा (अच्छा काम) है और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उसे जानता है। (४५) और अह्ले किताब से झगडा न करो, मगर ऐसे तरीके से, कि निहायत अच्छा हो, हा जो उन मे से बे-इंसाफी करे, (उन के साथ इसी तरह झगडा करो) और कह दो कि जो (किताब) हम पर उतरी और जो (किताबें) तुम पर उतरी, हम सब पर ईमान रखते है और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फ़रमाबरदार है। (४६) और इसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी है, तो जिन लोगो को हम ने किताबे दी थी, वे उस पर ईमान ले आते है और कुछ उन (मुश्रिक) लोगो मे से भी इस पर ईमान ले आते है और हमारी आयतो से वही इन्कार करते है जो काफिर (शुरू ही से) है। (४७) और तुम इस से पहले कोई किताब नही पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिख ही सकते थे, ऐसा होता तो बातिल वाले जरूर शक करते। (४८) बल्कि ये रोशन आयते है। जिन लोगो को इल्म दिया गया है, उन के सीनो मे (महफ़ूज) और हमारी आयतो से वही लोग इन्कार करते हैं, जो बे-इन्साफ है। (४९) और (काफिर) कहते है कि इस पर उस के परवरदिगार की तरफ से निशानिया क्यो नाजिल नही हुयी। कह दो कि निशानिया तो ख़ुदा ही के पास हैं और मैं तो खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हू। (५०) क्या इन लोगो के लिए यह काफी नही कि हम ने तुम पर किताब नाजिल की जो उन को पढ कर सुनायी जाती है। कुछ शक नही कि मोमिन लोगो के लिए इस मे रह्मत और नसीहत है। (५१) ★

कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा ही गवाह काफी है। जो चीज़ आसमानो मे और ज़मीन मे है, वह सब को जानता है और जिन लोगो ने बातिल को माना और ख़ुदा से इन्कार किया, वही नुक्सान उठाने वाले है। (५२) और ये लोग तुम से अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं। अगर एक वक्त मुकर्रर न (हो चुका) होता तो उन पर अज़ाब आ भी गया होता और वह (किसी वक्त मे) उन पर ज़रूर आ कर रहेगा और उन को मालूम भी न होगा। (५३) ये तुम मे अज़ाब के

★रु ५/१ आ ७

यस्तअ-जिलून-क बिल्अजाबि ↄ व इन्-न ज-हन्न-म लमुही-न-तुम्-बिल्काफिरीन ↄ (५४) यौ-म यग़शाहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् फौकिहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम् व यकूलु ज़ूकू मा कुन्तुम् तअ्-मलून (५५) याअिबादि-यल्-लज़ी-न आमनू इन्-न अर्-ज़ी वासि-अ-तुन् फइय्या-य फ़अ्-बुदून (५६) कुल्लु नफ्सिन् ज़ाइकतुल्मौति قف सुम्-म इलैना तुर्जअून (५७) वल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति लनुबव्वि-अन्नहुम् मिनल्जन्नति ग़ु-र-फन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फीहा ↄ निअ्-म अज्रुल्-आमिलीन صلے (५८) अ्ल्लज़ी-न स-बरू व अ्ला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (५९) व-क-अय्यिम्-मिन् दाब्बतिल्ला तह्मिलु रिज्-कहा صلے अल्लाहु यर्जुक़ुहा व इय्याकुम् صلے व हुवस्समीअुल्-अलीम (६०) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख-ल-कस्समावाति वल्-अर्-ज़ व सख्ख़-रश्शम्-स वल्क-म-र ल-यकूलुन्नल्लाहु ↄ फ-अन्ना युअ्-फकून (६१) अल्लाहु यब्सुतुर्रिज्-क लिमय्यशाउ मिन् अिबादिही व यक्दिरु लहू ↄ इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अलीम (६२) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् नज्ज-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ-अह्या बिहिल्अर्-ज़ मिम्बअ-दि मौतिहा ल-यकूलुन्नल्लाहु ↄ कुलिल्हम्दु लिल्लाहि ↄ बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-किलून ★ (६३) व मा हाज़िहिल्-हयातुद्दुन्या इल्ला लह्-वुं व्-व लअिबुन् ↄ व इन्नद्दारल्-आख़ि-र-त लहि-यल्-ह-य-वानु ⁂ लौ कानू यअ्-लमून (६४) फइज़ा रकिबू फिल्फुल्कि द-अ-वुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न ↄ फ-लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि इज़ा हुम् युश्रिकून ॥ (६५) लि-यक्फुरू बिमा आतैनाहुम् ↄ व लि-य-त-मत्तअू صلے फसौ-फ यअ्-लमून (६६)

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ
يَوْمَ يَغْشَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ
ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي
وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ
إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ
مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعْمَ
أَجْرُ الْعَامِلِينَ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ وَ
كَأَيِّنْ مِنْ دَابَّةٍ لَا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ وَ
هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ
اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ إِنَّ اللَّهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ وَمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهْوٌ
وَلَعِبٌ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ
فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ
إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوا

★रु ६/२ आ १२ ⁂ व लाजिम

लिए जल्दी कर रहे है और दोजख तो काफिरो को घेर लेने वाली है। (५४) जिस दिन अज़ाब उन को उन के ऊपर से नीचे ढाक लेगा और (खुदा) फरमाएगा कि जो काम तुम किया करते थे, (अब) उन का मजा चखो। (५५) ऐ मेरे बन्दो ! जो ईमान लाए हो, मेरी जमीन फैली हुई है, तो मेरी ही इबादत करो। (५६) हर नफ्स मौत का मजा चखने वाला है, फिर तुम हमारी ही तरफ लौट कर आओगे। (५७) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को हम बहिश्त के ऊंचे-ऊचे महलो मे जगह देगे, जिन के नीचे नहरे बह रही है। हमेशा उन मे रहेगे। (नेक) अमल करने वालो का (यह) खूब बदला है, (५८) जो सब्र करते और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते है। (५९) और बहुत से जानवर है, जो अपनी रोजी उठाए नही फिरते। खुदा ही उन को रोजी देता है और तुम को भी और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (६०) और अगर उन से पूछो कि आसमानो और जमीन को किस ने पैदा किया और सूरज और चाद को किस ने (तुम्हारे) हुक्म के ताबेअ किया, तो कह देंगे, खुदा ने, तो फिर ये कहा उल्टे जा रहे है ? (६१) खुदा ही अपने बन्दो मे से जिस के लिए चाहता है रोजी फैला देता है और जिस के लिए चाहता है, तग कर देता है। बेशक खुदा हर चीज को जानता है। (६२) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमान से पानी किस ने बरसाया, फिर उस से जमीन को उस के मरने के बाद (किस ने) ज़िदा किया, तो कह देंगे कि खुदा ने। कह दो कि खुदा का शुक्र है, लेकिन इन मे अक्सर नही समझते। (६३) ★

और यह दुनिया की जिंदगी तो सिर्फ खेल और तमाशा है और (हमेशा की) जिंदगी की (जगह) तो आखिरत का घर है▨ काश ये (लोग) समझते ! (६४) फिर जब ये कश्ती मे सवार होते है तो खुदा को पुकारते (और) खालिस उसी की इबादत करते है, लेकिन जब वह उन को निजात देकर खुश्की पर पहुचा देता है, तो झट शिर्क करने लग जाते है। (६५) ताकि जो हम ने उन को बख्शा है, उस की ना-शुक्री करे और फायदा उठाए, (सो खैर,) बहुत जल्द उन को मालूम

★रु ६/२ आ १२ ▨ व लाजिम

अ-व लम् यरौ अन्ना ज-अल्ना ह-र-मन् आमिनंव-व यु-त-खत्तफुन्नासु मिन् हौलिहिम्ط अ-फ बिल्बातिलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि यक्फुरून (६७) व मन् अज़-लमु मिम्मनिफ्तरा अ्-लल्लाहि कजिबन् औ कज्ज-ब बिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहू ط अलै-स फी जहन्न-म मस-वल्-लिल्काफ़िरीन (६८) वल्लज़ी - न जाहदू फीना ल-नह्दियन्नहुम् सुबुलनाط व इन्नल्ला-ह ल - मअल् - मुह्सिनीन ★ (६९)

३० सूरतुरूमि ८४

(मक्की) इस सूर· मे अरबी के ३५४७ अक्षर, ८२७ शब्द, ६० आयतें और ६ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ् - लाम् - मीम् ج (१) गुलिबतिर्रूमु (२) फी अद - नल्अर्जि व हुम् मिम्बअ्-दि ग-लबिहिम् स-यग्लिबून (३) फी बिज्अि सिनी-न ط लिल्लाहिल्-अम्रु मिन् कब्लु व मिम्बअ् - दु ط व यौमइजिंय्यफ़् - रहुल् मुअ्मिनून (४) बिनस् - रिल्लाहि ط यन्सुरु मंय्यशाउ ط व हुवल्-अज़ीज़ुर्रहीम (५) वअ् - दल्लाहि ط

فسوف يعلمون أولم يروا أنا جعلنا حرما آمنا ويتخطف
الناس من حولهم أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله يكفرون
ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بالحق لما
جاءه أليس في جهنم مثوى للكافرين والذين جاهدوا
فينا لنهدينهم سبلنا وإن الله لمع المحسنين
سورة الروم مكية وهي ستون آية وست ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
الم غلبت الروم في أدنى الأرض وهم من بعد غلبهم
سيغلبون في بضع سنين لله الأمر من قبل ومن بعد
ويومئذ يفرح المؤمنون بنصر الله ينصر من يشاء وهو
العزيز الرحيم وعد الله لا يخلف الله وعده ولكن أكثر
الناس لا يعلمون يعلمون ظاهرا من الحياة الدنيا وهم
عن الآخرة هم غافلون أولم يتفكروا في أنفسهم ما
خلق الله السماوات والأرض وما بينهما إلا بالحق وأجل
مسمى وإن كثيرا من الناس بلقاء ربهم لكافرون أولم
يسيروا في الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم
كانوا أشد منهم قوة وأثاروا الأرض وعمروها أكثر مما

ला युख्लिफ़ुल्लाहु वअ-दहू व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ्-लमून (६) यअ्-लमू-न ज़ाहिरम् - मिनल् - हयातिद्दुन्या ج व हुम् अनिल् - आख़िरति हुम् ग़ाफिलून (७) अ-व लम् य-त-फक्करू फ़ी अन्फुसिहिम् मा ख-ल-क़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन्ط व इन-न कसीरम्-मिनन्नासि बिलिकाइ रब्बिहिम् लकाफिरून (८) अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ-यन्ज़ुरू कै-फ का-न आ़क़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्ط कानू अशद-द मिन्हुम् क़ुव्वतव्-व अ-सारुल्अर्-ज व अ्-म-रूहा अक्स-र मिम्मा अ् - म - रूहा व जा-अत्-हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति ط फमा कानल्लाहु लि - यज़्लिमहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून ط (९)

★रु० ७/३ आ ६

हो जाएगा। (६६) क्या उन्हो ने नही देखा कि हम ने हरम को अम्न की जगह बनाया है, और लोग उन के गिर्द व नवाह (पास के इलाके) से उचक लिए जाते है। क्या ये लोग वातिल पर एतकाद रखते है और खुदा की नेमतो की ना-शुक्री करते है। (६७) और उस से जालिम कौन, जो खुदा पर झूठ बोहतान बाधे या जब हक वात उस के पास आए तो उसे झुठलाए ? क्या काफिरो का ठिकाना जहन्नम मे नही है ? (६८) और जिन लोगो ने हमारे लिए कोशिश की, हम उन को जरूर अपने रास्ते दिखा देगे और खुदा तो नेको के साथ है। (६९)★

३० सूरः रूम ८४

सूर रूम मक्की है और इस मे साठ आयते और छ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत करम वाला है।

अलिफ्-लाम्-मीम्, (१) रूम (वाले) मग्लूब हो गए, (२) नजदीक के मुल्क मे और वे मग्लूब होने के वाद वहुत जल्द गालिव आ जाएगे,[1] (३) कुछ ही साल मे, पहले भी और अव पीछे भी खुदा ही का हुक्म है और उस दिन मोमिन खुश हो जाएगे। (४) (यानी) खुदा की मदद से, वह जिसे चाहता है, मदद देना है और वह गालिब (और) मेहरबान है। (५) (यह) खुदा का वायदा (है)। खुदा अपने वायदे के खिलाफ नही करता, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (६) ये तो दुनिया की ज़ाहिरी ज़िदगी को जानते है और आखिरत (की तरफ) से गाफिल है। (७) क्या इन्हो ने अपने दिल मे गौर नही किया कि खुदा ने आसमानो और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनो के दर्मियान है, उन को हिक्मत से और एक मुकर्रर वक्त तक के लिए पैदा किया है और वहुत-से-लोग अपने परवरदिगार से मिलने के कायल ही नही। (८) क्या इन लोगो ने मुल्क मे सैर नही की, (सैर करते) तो देख लेते कि जो लोग इन से पहले थे, उन का अजाम कैसा हुआ। वे इन से जोर व ताकत मे कही ज्यादा थे और उन्हो ने ज़मीन को जोता और उस को इस से ज्यादा आवाद किया था, जो इन्हो ने आवाद किया और उन के पास उन के पैगम्बर निशानिया ले कर आते रहे, तो खुदा ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, वल्कि अपने आप पर जुल्म करते थे। (९) फिर जिन लोगो ने बुराई की,

---

१ इन आयतो मे रूमियो के गालिव होने की पेशीनगोई की, जो वाकेअ आ चुकी। वाकिया यह हुआ कि रूम और फारस वालो मे जग हो गयी और फारस वाले गालिव आए। चूकि रूमी अह्ले किताव यानी नसारा थे और फारस वाले मुश्रिक, इस लिए कि मक्का के मुश्रिक मोमिनो से कहते थे कि जिस तरह फारस वाले जो हमारी तरह मुश्रिक है रूमियो पर, जो तुम्हारी तरह अह्ले किताव है, गालिव हो गये हैं, इसी तरह जब हम मे तुम मे जग होगी तो हम भी तुम पर गालिव होगे। कुफ्फार की इस बात से मोमिनो को रज हुआ, तव ये आयतें नाज़िल हुयी। इन मे कुछ साल मे रूमियो के गालिब हो जाने की खवर दी गयी थी और वह बिल्कुल सही निकली। आयत मे 'बिज़-अ सिनीन' का लफ्ज़ आया है 'बिज़-अ' कहते है, तीन नवेसे तक को। सातवे साल फिर रूम और फारस मे लडाई हुई तो रूमी फारस वालो पर गालिव आए। अल्लाह तआला की कुदरत को देखिए कि इधर बद्र की लडाई मे मुसलमान मक्के के काफिरो पर गालिव आए, इस से मुसलमानो को दोहरी खुशी हुई, क्योंकि खुदा का वायदा सच्चा निकला और वह 'अस्दकुस्सादिकीन' जो वायदा करता है, उस को सच कर दिखाता है।

★रु ७/३ आ ६

सुम्-म का-न आ़क़िबतल्लजी-न असाउस्सू-आ अन् कज्जबू बिआयातिल्लाहि व कानू बिहा यस्तह-ज़िऊन ★ (१०) अल्लाहु यब्दउल्ख़ल्-क़ सुम्-म युई़दुहू सुम्-म इलैहि तुर्जअ़ून (११) व यौ-म तक़ूमुस्साअ़तु युब्लिसुल्-मुज्रिमून (१२) व लम् यकुल्लहुम् मिन् शुरका-इहिम् शु-फ़आ़उ व कानू बिशु-र-काइहिम् काफ़िरीन (१३) व यौ-म तक़ूमुस्साअ़तु यौमइज़िंय्य-त-फ़र्रकून (१४) फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति फ़हुम् फ़ी रौज़तिंय्युह्-बरून (१५) व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू व कज्ज़बू बिआयातिना व लिक़ा-इल्-आख़िरति फ़-उलाइ-क फ़िल्अ़ज़ाबि मुह्ज़रून (१६) फ़-सुब्हानल्लाहि ही़-न तुम्सू-न व ही़-न तुस्बिहून (१७) व लहुल्ह़म्दु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व अ़शिय्यव्-व ही़-न तुज़्हिरून (१८) युख़्रिजुल्-हय्-य मिनल् - मय्यिति व युख़्रिजुल् - मय्यि-त मिनल्-हय्यि व युह़्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा ♭ व कज़ालि - क तुख़्रजून ★ (१९) व मिन् आयातिही अन् ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म इज़ा अन्तुम् ब-शरुन् तन्तशिरून (२०) व मिन् आयातिही अन् ख़-ल-क़ लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्-वाजल्-लितस्कुनू इलैहा व ज-अ़-ल बैनकुम् म-वद्-द-तंव-व रह़्-म-तन् ♭ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् - लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (२१) व मिन् आयातिही ख़ल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्-तिलाफ़ु अल-सिनतिकुम् व अल्वानिकुम् ♭ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् - लिल्आ़लमीन (२२) व मिन् आयातिही मनामुकुम् बिल्लैलि वन्नहारि वब - तिग़ाउकुम् मिन् फ़ज़्लिही ♭ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् - लिक़ौमिंय्यस्-मअ़ून (२३)

عمروها وجاءتهم رسلهم بالبينت فما كان الله ليظلمهم ولكن
كانوا انفسهم يظلمون ۝ ثم كان عاقبة الذين اساءوا السوأى
ان كذبوا بايت الله وكانوا بها يستهزءون ۝ الله يبدؤا الخلق ثم
يعيده ثم اليه ترجعون ۝ ويوم تقوم الساعة يبلس المجرمون ۝
ولم يكن لهم من شركائهم شفعؤا وكانوا بشركائهم كفرين ۝
ويوم تقوم الساعة يومئذ يتفرقون ۝ فاما الذين امنوا وعملوا
الصلحت فهم في روضة يحبرون ۝ واما الذين كفروا وكذبوا
بايتنا ولقائ الاخرة فاولئك في العذاب محضرون ۝ فسبحن
الله حين تمسون وحين تصبحون ۝ وله الحمد في السموت و
الارض وعشيا وحين تظهرون ۝ يخرج الحي من الميت و
يخرج الميت من الحي ويحي الارض بعد موتها وكذلك
تخرجون ۝ ومن ايته ان خلقكم من تراب ثم اذا انتم بشر
تنتشرون ۝ ومن ايته ان خلق لكم من انفسكم ازواجا لتسكنوا
اليها وجعل بينكم مودة ورحمة ان في ذلك لايت لقوم
يتفكرون ۝ ومن ايته خلق السموت والارض واختلاف
السنتكم والوانكم ان في ذلك لايت للعلمين ۝ ومن ايته
منامكم بالليل والنهار وابتغاؤكم من فضله ان في ذلك

★रु १/४ आ १० ★रु २/५ आ ९

उन का अंजाम भी बुरा हुआ, इसलिए कि खुदा की आयतो को झुठलाते और उन की हसी उडाते रहे थे। (१०) ★

खुदा ही खल्कत को पहली बार पैदा करता है, वही उस को फिर पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ लौट जाओगे। (११) और जिस दिन कियामत बरपा होगी, गुनाहगार ना-उम्मीद हो हो जाएगे। (१२) और उन के (बनाए हुए) शरीको मे से कोई उन का सिफारिशी न होगा और वे अपने शरीको से इन्कारी हो जाएंगे। (१३) और जिस दिन कियामत बरपा होगी, उस दिन वे अलग-अलग फिर्के हो जाएगे। (१४) तो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे (बहिश्त के) बाग मे खुशहाल होगे। (१५) और जिन्हो ने कुफ़ किया और हमारी आयतो और आखिरत के आने को झुठलाया, वे अज़ाब मे डाले जाएगे। (१६) तो जिस वक्त तुम को शाम हो और जिस वक्त सुबह हो, खुदा की तस्बीह करो, (यानी नमाज पढो), (१७) और आसमानो और जमीन मे उसी की तारीफ है और तीसरे पहर भी और जब दोपहर हो, (उस वक्त भी नमाज पढा करो), (१८) वही ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता और (वही) मुर्दे को जिन्दा से निकालता है और (वही) ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है और इसी तरह तुम (दोबारा जमीन मे से) निकाले जाओगे। (१९) ★

और उसी की निशानियो (और तसर्रुफात) मे से है कि उस ने तुम्हे मिट्टी से पैदा किया। फिर अब तुम इन्सान हो कर जगह-जगह फैल रहे हो। (२०) और उसी की निशानियो (और तसर्रुफात) मे से है कि उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स की औरते पैदा की, ताकि उन की तरफ (मायल हो कर) आराम हासिल करो और तुम मे मुहब्बत और मेहरबानी पैदा कर दी। जो लोग गौर करते है, उन के लिए इन बातो मे (बहुत-सी) निशानिया है। (२१) और उसी की निशानियो (और तसर्रुफ़ात) मे से है आसमानो और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़ुबानो और रगो का जुदा-जुदा होना, अक्ल वालो के लिए इन बातो मे (बहुत सी) निशानिया है। (२२) और उसी की निशानियो (और तसर्रुफ़ात) मे से है तुम्हारा रात और दिन मे सोना और उस के फज्ल का तलाश करना, जो लोग सुनते है उन के लिए इन (बातो) मे (बहुत-सी) निशानिया है। (२३) और उसी

★रु १/४ आ १० ★रु २/५ आ ९

की निशानियो (और तसर्रुफात) मे से है कि तुम को ख़ौफ और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और आसमान से मेंह बरसाता है, फिर जमीन को उस के मर जाने के बाद ज़िंदा (व हरा-भरा) कर देता है। अक्ल वालो के लिए इन (बातो) मे बहुत-सी निशानिया है। (२४) और उसी की निशानियो (और तसर्रुफात) में से है कि आसमान और जमीन उस के हुक्म से कायम है। फिर जब वह तुम को ज़मीन में से (निकालने के लिए) आवाज देगा, तो तुम झट निकल पडोगे। (२५) और आसमानो और ज़मीन मे जितने (फरिश्ते और इन्सान वग़ैरह) हैं, उसी के (मम्लूक) है (और) तमाम उस के फरमाबरदार है। (२६) और वही तो है जो खल्कत को पहली बार पैदा करता है, फिर उसे दोबारा पैदा करेगा और यह उस को बहुत आसान है और आसमानो और ज़मीन मे उस की शान बहुत बुलद है और वह गालिब हिक्मत वाला है। (२७)★ ●

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे ही हाल की एक मिसाल बयान फरमाता है कि भला जिन (लौंडी-गुलामो) के तुम मालिक हो, वह उस (माल) मे जो हम ने तुम को अता फरमाया है, तुम्हारे शरीक है ? और (क्या). तुम उस मे (उन को अपने) बराबर (मालिक) समझते हो (और क्या) तुम उन से इस तरह डरते हो, जिस तरह अपनो से डरते हो ? इस तरह हम अक्ल वालो के लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं, (२८) मगर जो जालिम है. बे-समझे अपनी ख्वाहिशो के पीछे चलते है, तो जिस को खुदा गुमराह करे, उसे कौन हिदायत कर सकता है ? और उन का कोई मददगार नही। (२९) तो तुम एक तरफ के हो कर दीन (खुदा के रास्ते) पर सीधा मुंह किए चले जाओ (और) खुदा की फितरत को, जिस पर उस ने लोगो को पैदा किया है, (अख्तियार किए रहो)।[1] खुदा की बनायी हुई (फितरत) मे तब्दीली नही हो सकती। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (३०) (मोमिनो !) उमी (खुदा) की तरफ रुजूअ किए रहो और उस से डरते रहो और नमाज पढते रहो और मुश्रिकों मे न होना। (३१) (और न) उन लोगो मे होना, जिन्हो ने अपने दीन को टुकड़े-टुकडे कर दिया और (खुद) फिर्के-फिर्के हो गये। सब फिर्के उसी से खुश है, जो उन के पास है। (३२) और जब लोगो को तक्लीफ पहुचती है तो अपने परवरदिगार को पुकारते और उसी की तरफ रुजूअ होते है। फिर जब-जब वह उन को अपनी रहमत का मजा चखाता है, तो एक फिर्का उन मे से अपने परवरदिगार से शिर्क करने लगता

---

१ फितरत से मुराद अल्लाह तआला की तौहीद है यानी उस को एक-एक कर के समझना और उस के साथ किसी को शरीक न बनाना, यह तौहीद ही खुदा का दीन है और इसी तौहीद को खुदा ने इन्सान की फितरत मे दाख़िल किया है। अगर किसी शख्स को पैदा होते ही उस की हालत पर छोड दिया जाए और शिर्क करने वाले उस के दिल मे मुश्रिकाना ख्यालात न डालें, तो वह कभी शिर्क नही करेगा। वह तौहीद पर पैदा हुआ है। न यहूदी होगा, न ईसाई, न आग का पुजारी, न सूरज का पुजारी, न बुतो का पुजारी, बल्कि खालिस तौहीद परस्त होगा और तौहीद के सिवा कुछ न जानेगा। चूंकि तौहीद खुदा की तरफ से इन्सानी फितरत मे दाखिल की गयी है, इस लिए उस को अल्लाह की फितरत से ताबीर फरमाया है और हुक्म दिया है कि तौहीद को, जो अल्लाह तआला का सीधा दीन है, अख्तियार किये रहो, इस मे हरगिज तब्दीली न होने पाए।

★रु ३/६ आ ८　●रुकूअ १/४

लियक्फुरू बिमा आतैनाहुम् ط फ-त-मत्तअू ﻗﻔ फ़-सौ-फ़ तअ् - लमून (३४) अम् अन्जलना अलैहिम् सुल्तानन् फ़-हु-व य-त-कल्लमु बिमा कानू बिही युश्रिकून (३५) व इजा अ-जक्नन्ना-स रह-म-तन् फ़रिहू बिहा ط व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुम्-बिमा कद्-द-मत् ऐदीहिम् इजा हुम् यक्-नतून (३६) अ-व लम् यरौ अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज्-क लिमंय्यशाउ व यक्दिरु ط इन् - न फ़ी जालि - क ल-आयातिल्-लिकौमिय्युअ्-मिनून (३७) फ-आति जल्कुर्बा हक्कहू वल्मिस्की - न वब्नस्सबीलि ط जालि-क खैरुल् - लिल्लजी-न युरीदू - न वज्हल्लाहि ز व उलाइ - क हुमुल्-मुफ़्लिहून (३८) व मा आतैतुम् मिर्रिबल् - लि-यर्बु-व फ़ी अम्वालिन्नासि फ़ला यर्बू अिन्दल्लाहि ج व मा आतैतुम् मिन् जकातिन् तुरीदू-न वज् - हल्लाहि फ-उलाइ-क हुमुल् - मुज्अिफ़ून (३९) अल्लाहुल्लजी ख-ल-ककुम् सुम्-म र-ज़-ककुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् ط हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यफ्-अलु मिन् जालिकुम् मिन् शैइन् ط सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून ★ (४०) ज-ह-रल्फसादु फिल्बर्रि वल्बह्रि बिमा क-स-बत् ऐदिन्नासि लियुजीकहुम् बअ्-जल्लजी अमिलू ल-अल्लहुम् यर्जिअून (४१) कुल् सीरू फ़िल्अर्जि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लु ط का-न अक्सरुहुम् मुश्रिकीन (४२) फ-अकिम् वज् - ह - क लिद्दीनल् - कय्यिमि मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला म - रद्-द लहू मिनल्लाहि यौमइजिंय्यस्सद्-दअून (४३) मन् क-फ़-र फ - अलैहि कुफ् - रुहू ج व मन् अमि - ल सालिहन् फ - लिअन्फुसि - हिम् यम्हदून ۙ (४४)

يشركون ۝ ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون ۝ أم
أنزلنا عليهم سلطانا فهو يتكلم بما كانوا به يشركون ۝ وإذا
أذقنا الناس رحمة فرحوا بها وإن تصبهم سيئة بما قدمت
أيديهم إذا هم يقنطون ۝ أولم يروا أن الله يبسط الرزق لمن
يشاء ويقدر إن في ذلك لآيات لقوم يؤمنون ۝ فآت ذا
القربى حقه والمسكين وابن السبيل ذلك خير للذين
يريدون وجه الله وأولئك هم المفلحون ۝ وما آتيتم من
ربا ليربو في أموال الناس فلا يربو عند الله وما آتيتم من
زكاة تريدون وجه الله فأولئك هم المضعفون ۝ الله الذي
خلقكم ثم رزقكم ثم يميتكم ثم يحييكم هل من شركائكم
من يفعل من ذلكم من شيء سبحانه وتعالى عما يشركون ۝ ظهر
الفساد في البر والبحر بما كسبت أيدي الناس ليذيقهم بعض
الذي عملوا لعلهم يرجعون ۝ قل سيروا في الأرض فانظروا
كيف كان عاقبة الذين من قبل كان أكثرهم مشركين ۝
فأقم وجهك للدين القيم من قبل أن يأتي يوم لا مرد له من
الله يومئذ يصدعون ۝ من كفر فعليه كفره ومن عمل
صالحا فلأنفسهم يمهدون ۝ ليجزي الذين آمنوا وعملوا

★रु ४/७ आ १३

है, (३३) ताकि जो हम ने उस को बख्शा है उस की ना-शुक्री करें, सो (खैर) फायदे उठा लो। बहुत जल्द तुम को (इस का अजाम) मालूम हो जाएगा। (३४) क्या हम ने उन पर कोई ऐसी दलील उतारी है कि उन को खुदा के साथ शिर्क करना बताती है। (३५) और जब हम लोगो को अपनी रहमत का मजा चखाते है, तो उस से खुश हो जाते है और अगर उन के अमलो की वजह मे जो उन के हाथो ने आगे भेजे है, कोई तक्लीफ पहुचे, तो ना-उम्मीद हो कर रह जाते है। (३६) क्या उन्हो ने नही देखा कि खुदा ही जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तग करता है। बेशक इस मे ईमान लाने वालो के लिए निशानिया हैं। (३७) तो रिश्तेदारो और मुहताजो और मुसाफिरो को उन का हक देते रहो। जो लोग खुदा की खुश्नूदी की तलब मे है, यह उन के हक मे बेहतर है और यही लोग निजात हासिल करने वाले है। (३८) और जो तुम सूद देते हो कि लोगो के माल मे बढती हो, तो खुदा के नज़दीक उस मे बढती नही होती और जो तुम ज़कात देते हो और उस से खुदा की रज़ामदी तलब करते हो, तो (वह बरकत की वजह है. और) ऐसे ही लोग (अपने माल को) दो-गुना तीन-गुना करने वाले है। (३९) खुदा ही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया, फिर तुम को रोज़ी दी, फिर तुम्हे मारेगा, फिर ज़िदा करेगा। भला तुम्हारे (बनाए हुए) शरीको मे भी कोई ऐसा है जो इन कामो मे से कुछ कर सके। वह पाक है और (उस की शान) उन के शरीको से बुलद है। (४०) ★

खुश्की और तरी मे लोगो के आमाल की वजह से फसाद फैल गया है, ताकि खुदा उन को उनके कुछ आमाल का मज़ा चखाये, अजब नही कि वे रुक जाए। (४१) कह दो कि मुल्क मे चलो-फिरो और देखो कि जो लोग (तुम से) पहले हुए है, उनका कैसा अजाम हुआ है। उनमे ज्यादातर मुश्रिक ही थे। (४२) तो उस दिन से पहले, जो खुदा की तरफ से आ कर रहेगा और रुक नही सकेगा, दीन (के रास्ते) पर सीधा मुह किए चलो। उस दिन (सब) लोग बिखरे हुए हो जाएगे। (४३) जिस शख्स ने कुफ्र किया, तो उस के कुफ्र का नुक्सान उसी को है और जिस ने नेक अमल किए, तो ऐसे

★रु ४/७ आ १३

लि-यज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति मिन् फ़ज़्लिही ط इन्नहू ला युहिब्बुल्-काफ़िरीन (४५) व मिन् आयातिही अंय्युर्सिलर् - रिया - ह मुबश्शिरातिव्-व लियुज़ी-ककुम् मिर्रह्मतिही व लि-तज्रि-यल्-फ़ुल्कु बिअम्रिही व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (४६) व ल-क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्-लि-क रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़न्-त - क़म्ना मिनल्लज़ी-न अज्-रमू ط व का-न हक़्क़न् अ़लैना नस्रुल् - मुअ् - मिनीन (४७) अल्लाहुल्लज़ी युर्सिलुर् - रिया-ह फ़-तुसीरु स-हाबन् फ़-यब्सुतुहू फ़िस्समाइ कै-फ़ यशाउ व यज्-अ़लुहू कि-स-फ़न् फ़-त-रल्-वद्-क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही ج फ़इज़ा असा-ब बिही मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून ج (४८) व इन् कानू मिन् क़ब्लि अंय्युनज़्ज़-ल अ़लैहिम् मिन् क़ब्लिही ल-मुब्लिसीन (४९) फ़न्ज़ुर् इला आसारि रह्मतिल्लाहि कै-फ़ युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा ط इन् - न ज़ालि-क लमुह्यिल्मौता ج व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (५०) व लइन् अर्सल्ना रीहन् फ़-रऔहु मुस्-फ़र्रल्-ल-ज़ल्लू मिम्बअ्-दिही यक्फ़ुरून (५१) फ़-इन्न-क ला तुस्मिअुल्-मौता व ला तुस्मिअुस्-सुम्मद्दुआ-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन (५२) व मा अन्-त बिहादिल् - अुम्यि अ़न् ज़लालतिहिम् ط इन् तुस्मिअु इल्ला मय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून ★ (५३) अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् ज़ुअ् - फ़िन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्बअ् - दि ज़ुअ्-फ़िन् क़ुव्वतन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्बअ्-दि क़ुव्वतिन् ज़ुअ्-फ़व्-व शै-बतन् ط यख़्लुक़ु मा यशाउ ج व हुवल्-अ़लीमुल्क़दीर (५४) व यौ-म तक़ूमुस्साअ़तु युक़्सिमुल्-मुज्रिमू-न ق मा लबिसू ग़ै-र साअ़तिन् ط कज़ालि-क कानू युअ्फ़कून (५५)

الروم ٣٢٨ اتل ما اوحي ٢١

الصّٰلحٰت من فضله انّه لا يحبّ الكٰفرين ۝ ومن اٰيٰته ان يّرسل
الرّياح مبشّرٰت وّليذيقكم مّن رّحمته ولتجري الفلك بامره و
لتبتغوا من فضله ولعلّكم تشكرون ۝ ولقد ارسلنا من قبلك
رسلا الٰى قومهم فجاءوهم بالبيّنٰت فانتقمنا من الّذين اجرموا
وكان حقّا علينا نصر المؤمنين ۝ اللّٰه الّذي يرسل الرّيٰح فتثير
سحابا فيبسطه في السّماء كيف يشاء ويجعله كسفا فترى الودق
يخرج من خلٰله فاذا اصاب به من يّشاء من عباده اذا هم
يستبشرون ۝ وان كانوا من قبل ان يّنزّل عليهم مّن قبله
لمبلسين ۝ فانظر الٰى اٰثٰر رحمت اللّٰه كيف يحي الارض بعد
موتها انّ ذٰلك لمحي الموتٰى وهو علٰى كلّ شيء قدير ۝ ولئن
ارسلنا ريحا فراوه مصفرّا لّظلّوا من بعده يكفرون ۝ فانّك لا
تسمع الموتٰى ولا تسمع الصّمّ الدّعاء اذا ولّوا مدبرين ۝ وما انت
بهٰد العمي عن ضللتهم ان تسمع الّا من يّؤمن باٰيٰتنا فهم
مّسلمون ۝ اللّٰه الّذي خلقكم مّن ضعف ثمّ جعل من بعد
ضعف قوّة ثمّ جعل من بعد قوّة ضعفا وّشيبة يخلق ما يشاء
وهو العليم القدير ۝ ويوم تقوم السّاعة يقسم المجرمون ما لبثوا
غير ساعة كذٰلك كانوا يؤفكون ۝ وقال الّذين اوتوا العلم و

★रु. ५/८ आ १३

लोग अपने ही लिए आरामगाह दुरुस्त करते है। (४४) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उनको खुदा अपने फज्ल से बदला देगा। बेशक वह काफिरो को दोस्त नही रखता। (४५) और उसी की निशानियो मे से है कि हवाओ को भेजता है कि खुशखबरी देती है, ताकि तुम को अपनी रहमत के मजे चखाए और ताकि उस के हुक्म से कश्तिया चले और ताकि तुम उस के फ़ज्ल से (रोज़ी) तलब करो, अजब नही कि तुम शुक्र करो। (४६) और हमने तुम से पहले भी पैगम्बर भेजे, तो वे उनके पास निशानिया ले कर आए, सो जो लोग नाफरमानी करते थे, हम ने उन से बदला ले कर छोडा और मोमिनो की मदद हम पर जरूरी थी। (४७) खुदा ही तो है, जो हवाओ को चलाता है, तो वे बादल को उभारती है, फिर खुदा उस को जिस तरह चाहता है, आसमान मे फैला देता और तह-ब-तह कर देता है, फिर तुम देखते हो कि उस के बीच मे से मेह निकलने लगता है। फिर जब वह अपने बन्दो मे से जिन पर चाहता है, उसे बरसा देता है, तो वे खुश हो जाते है। (४८) और पहले तो वे मेह उतरने से पहले ना-उम्मीद हो रहे थे। (४९) तो (ऐ देखने वाले !) खुदा की रहमत की निशानियो की तरफ देख कि वह किस तरह जमीन को उस के मरने के बाद जिंदा करता है। बेशक वह मुर्दो को ज़िंदा करने वाला है और वह हर चीज़ पर कादिर है। (५०) और अगर हम ऐसी हवा भेजे कि वे (उस की वजह से) खेती को देखे (कि) पीली (हो गयी है), तो इस के बाद वे ना-शुक्री करने लग जाए। (५१) तो तुम मुर्दो को (बात) नही सुना सकते और न बहरो को कि जब वे पीठ फेर कर फिर जाएं, आवाज़ सुना सकते हो। (५२) और न अंधो को उनकी गुमराही से (निकाल कर) सीधे रास्ते पर ला सकते हो। तुम तो उन ही लोगो को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते है, सो वही फरमाबरदार है★ (५३)

खुदा ही तो है, जिसने तुम को (शुरू मे) कमज़ोर हालत में पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त इनायत की, फिर ताकत के बाद कमजोरी और बुढापा दिया। वह जो चाहता है, पैदा करता है और वह इल्म वाला (और) क़ुदरत वाला है। (५४) और जिस दिन कियामत बरपा होगी, गुनाहगार कस्मे खाएंगे कि वे (दुनिया मे) एक घडी से ज़्यादा नही रहे थे। इसी तरह वे

★रु. ५/८ आ १३

व कालल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्-म वल्-ईमा-न ल-क़द् लबिस्तुम् फ़ी किताबिल्लाहि इला यौमिल्-बअ्-सि ✓फ हाज़ा यौमुल्-बअ्-सि व लाकिन्नकुम् कुन्तुम् ला तअ्-लमून (५६) फ़यौमइज़िल्-ला यन्फ़अुल्लज़ी-न ज़-लमू मअ्-ज़ि-र-तुहुम् व ला हुम् युस्तअ्-तबून (५७) व ल-क़द् ज़-रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन् ♭ व लइन् जिअ्-तहुम् बिआयतिल्-ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् अन्तुम् इल्ला मुब्तिलून (५८) कज़ालि-क यत-बअुल्लाहु अला क़ुलूबिल्लज़ी-न ला यअ्-लमून (५९) फ़स्बिर् इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुव्-व ला यस्तखिफ़्फ़न्नकल्-लज़ी-न ला यूक़िनून ★ (६०)

३१ सूरतु लुक़्मा-न ५७

(मक्की) इस सूर मे अरबी के २२१७ अक्षर, ५५४ शब्द, ३४ आयते और ४ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् ८ (१) तिल्-क आयातुल् - किताबिल्-हकीम ॥ (२) हुदव्-व रह्मतल् - लिल्मुह्सिनीन ॥ (३)

والايمان لقد لبثتم في كتب الله الى يوم البعث فهذا يوم البعث
ولكنكم كنتم لا تعلمون ﴿٥٦﴾ فيومئذ لا ينفع الذين ظلموا
معذرتهم ولا هم يستعتبون ﴿٥٧﴾ ولقد ضربنا للناس في هذا القرءان
من كل مثل ولئن جئتهم باية ليقولن الذين كفروا ان انتم
الا مبطلون ﴿٥٨﴾ كذلك يطبع الله على قلوب الذين لا يعلمون ﴿٥٩﴾
فاصبر ان وعد الله حق ولا يستخفنك الذين لا يوقنون ﴿٦٠﴾
سورة لقمان مكية وهي اربع وثلثون اية واربع ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
الم ﴿١﴾ تلك ايت الكتب الحكيم ﴿٢﴾ هدى ورحمة للمحسنين ﴿٣﴾
الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكوة وهم بالاخرة هم
يوقنون ﴿٤﴾ اولئك على هدى من ربهم واولئك هم المفلحون ﴿٥﴾
ومن الناس من يشتري لهو الحديث ليضل عن سبيل الله
بغير علم ويتخذها هزوا اولئك لهم عذاب مهين ﴿٦﴾ واذا
تتلى عليه ايتنا ولى مستكبرا كان لم يسمعها كان في اذنيه
وقرا فبشره بعذاب اليم ﴿٧﴾ ان الذين امنوا وعملوا الصلحت
لهم جنت النعيم ﴿٨﴾ خلدين فيها وعد الله حقا وهو العزيز
الحكيم ﴿٩﴾ خلق السموت بغير عمد ترونها والقى في الارض

अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज्ज़का-त व हुम् बिल्आख़िरति हुम् यूक़िनून♭ (४) उलाइ-क अला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्मुफ़्लिहून (५) व मिनन्नासि मय्यश्तरी लह्-वल्-हदीसि लियुज़िल्-ल अन् सबीलिल्लाहि बिग़ैरि अिल्मिव्-व यत्तख़ि-ज़हा हुज़ुवन्♭ उलाइ-क लहुम् अज़ाबुम्-मुहीन (६) व इज़ा तुत्ला अलैहि आयातुना वल्ला मुस्तक्बिरन् क-अल्लम् यस्मअ्-हा क-अन्-न फ़ी उज़ुनैहि वक्-रन्८ फ़-बश्शिर्हु बि-अज़ाबिन् अलीम (७) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन्नअीम ॥ (८) ख़ालिदी-न फ़ीहा♭ वअ्-दल्लाहि हक़्क़न्♭ व हुवल्-अज़ीज़ुल्-हकीम (९)

★रु. ६/६ आ ७

(रास्ते से) उलटे जाते थे। (५५) और जिन लोगो को इल्म और ईमान दिया गया था, वे कहेंगे कि खुदा की किताब के मुताबिक तुम कियामत तक रहे हो और यह कियामत ही का दिन है, लेकिन तुम को इसका यकीन ही न था। (५६) तो उस दिन ज़ालिम लोगो को उनका उज्र कुछ फायदा न देगा और न उन से तौब्रा कुबूल की जाएगी। (५७) और हम ने लोगो के (समझाने के) लिए इस कुरआन मे हर तरह की मिसाल बयान कर दी है और अगर तुम उनके सामने कोई निशानी पेश करो, तो ये काफिर कह देगे कि तुम तो झूठे हो। (५८) इसी तरह खुदा उन लोगो के दिलो पर, जो समझ नही रखते, मुहर लगा देता है। (५९) पस तुम सब्र करो। बेशक खुदा का वायदा सच्चा है और (देखो) जो लोग यकीन नही रखते, वे तुम्हे ओछा न बना दे। (६०)★

३१ सूरः लुक़मान ५७

सूर लुक्मान मक्की है और इसमे चौतीस आयते और चार रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ् लाम्-मीम्, (१) यह हिक्मत की (भरी हुई) किताब की आयते है। (२) मुह्सिनो के लिए हिदायत और रहमत, (३) जो नमाज़ की पाबन्दी करते और जकात देते और आखिरत का यकीन रखते है। (४) यही अपने परवरदिगार की (तरफ) से हिदायत पर हे और यही निजात पाने वाले हैं। (५) और लोगो मे कोई ऐसा है, जो बेहूदा ह्किायतें खरीदता है, ताकि (लोगो को) बे-समझे खुदा के रास्ते से गुमराह करे और उसका मज़ाक उडाए। यही लोग है, जिनको जलील करने वाला अजाब होगा। (६) और जब उस को हमारी आयते सुनायी जाती है, तो अकड कर मुह फेर लेता है, गोया उनको सुना ही नही जैसे उन के कानो मे बोझ है, तो उस को दर्द देने वाले अजाब की खुशखबरी सुना दो। (७) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन के लिए नेमत के बाग है, (८) हमेशा उन मे रहेगे। खुदा का वायदा सच्चा है और वह गालिब हिक्मत

★रु ६/९ आ ७

ख़-ल-क़स्समावाति बिग़ैरि अ-मदिन् तरौनहा व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि र-वासि-य अन् तमी-द बिकुम् व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ मा-अन् फ़-अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम (१०) हाज़ा ख़ल्-कुल्लाहि फ़-अरूनी माज़ा ख़-ल-क़ल्लज़ी-न मिन् दूनिही वलिज़्ज़ालिमू-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन ★ (११) व ल-क़द् आतैना लुक़्मानल्-हिक्म-त अनिश्कुर् लिल्लाहि व मंय्यश्कुर् फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन् क-फ़-र फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद (१२) व इज़् का-ल लुक़्मानु लिब्निही व हु-व यअिज़ुहू याबुनय्-य ला तुश्रिक् बिल्लाहि ▨ इन्नश्शिर्-क ल-ज़ुल्मुन् अज़ीम (१३) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि ह-म-लत्हु उम्मुहू वह्नन् अला वह्निंव्-व फ़िसालुहू फ़ी आमैनि अनिश्कुर् ली व लिवालिदै-क इलय्यल्-मसीर ● (१४) व इन् जाहदा-क अला अन् तुश्रि-क बी मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन् फ़ ला तुतिअ्-हुमा व साहिब्हुमा फ़िद्दुन्या मअ्-रूफ़ंव्-वत्तबिअ् सबी-ल मन् अना-ब इलय्-य सुम्-म इलय्-य मर्जिअुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१५) या बुनय्-य इन्नहा इन् तकु मिस्क़ा-ल हब्बतिम्मिन् ख़र्दलिन् फ़-तकुन् फ़ी सख़्-रतिन् औ फ़िस्समावाति औ फ़िल्अर्ज़ि यअ्ति बिहल्लाहु इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर (१६) या बुनय्-य अक़िमिस्सला-त वअ्मुर् बिल्मअ्-रूफ़ि वन्-ह अनिल्मुन्करि वस्बिर् अला मा असाब-क इन्-न ज़ालि-क मिन् अज़्मिल्-उमूर (१७) व ला तुसअ्-अिर् ख़द्-द-क लिन्नासि व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-र-हन् इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूर (१८) वक़्सिद् फ़ी मश्यि-क वग़्ज़ुज़् मिन् सौति-क इन्-न अन्करल्-अस्वाति ल-सौतुल्-हमीर ★ (१९)

٣٢٩

رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً فَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ هَٰذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا
خَلَقَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَ
لَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ لِلَّهِ وَمَن يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ
وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ
يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۝ وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ
بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِصَالُهُ فِي عَامَيْنِ أَنِ
اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ إِلَيَّ الْمَصِيرُ ۝ وَإِن جَاهَدَاكَ عَلَىٰ أَن تُشْرِكَ
بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا
وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ يَا بُنَيَّ إِنَّهَا إِن تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُن فِي
صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَاوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ
خَبِيرٌ ۝ يَا بُنَيَّ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنكَرِ
وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ إِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝ وَلَا تُصَعِّرْ
خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ
مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِن صَوْتِكَ
إِنَّ أَنكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝ أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم

★रु १/१० आ ११ ▨ व न बी स. ● नि १/२ ★रु. २/११ आ ८

वाला है। (९) उसी ने आसमानों को स्तूनों के बगैर पैदा किया, जैसा कि तुम देखते हो और ज़मीन पर पहाड़ (बना कर) रख दिए, ताकि तुम को हिला-हिला न दे और उस मे हर तरह के जानवर फैला दिए और हम ही ने आसमान से पानी उतारा, फिर (उस से) उस मे हर किस्म की नफीस चीज़े उगायी। (१०) यह तो खुदा की पैदाइश है, तो मुझे दिखाओ कि खुदा के सिवा जो लोग है, उन्होने क्या पैदा किया है ? सच तो यह है कि ये ज़ालिम खुली गुमराही मे है। (११)★

और हमने लुक्मान को हिक्मत बख्शी कि खुदा का शुक्र करो और जो शख्स शुक्र करता है, तो अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्र करता है और जो ना-शुक्री करता है, तो खुदा भी बे-परवाह (और) हम्द (व तारीफ़) के लायक है। (१२) और (उस वक्त को याद करो,) जब लुक्मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा खुदा के साथ शिर्क न करना▨शिर्क तो बडा (भारी) ज़ुल्म है। (१३) और हम ने इंसान को, जिसे उस की मा तक्लीफ पर तक्लीफ सह कर पेट मे उठाए रखती है (फिर उस को दूध पिलाती है) और (आखिरकार मे) दो वर्ष मे उस का दूध छुडाना होता है, (अपने, साथ ही) उसके मा-बाप के बारे मे ताकीद की है कि मेरा भी शुक्र करता रह और अपने मा-बाप का भी (कि तुम को) मेरी ही तरफ लौट कर आना है●(१४) और वे तेरे पीछे पडे हो कि तू मेरे साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक करे, जिस का तुझे कुछ भी इल्म नही, तो उन का कहना न मानना। हा, दुनिया के कामो मे उन का अच्छी तरह साथ देना और जो शख्स मेरी तरफ रुजूअ लाये, उस के रास्ते पर चलना, फिर तुम को मेरी तरफ लौट कर आना है। तो जो काम तुम करते रहे, मै सब से तुम को आगाह करूगा। (१५) (लुक्मान ने यह भी कहा कि) बेटा! अगर कोई अमल (मान लो) राई के दाने के बराबर भी (छोटा) हो और हो भी किसी पत्थर के अन्दर या आसमानो मे (छिपा हुआ हो) या ज़मीन मे, खुदा उस को कियामत के दिन ला मौजूद करेगा। कुछ शक नही कि खुदा लतीफ (और) खबरदार है। (१६) बेटा! नमाज़ की पाबन्दी रखना और (लोगो को) अच्छे कामो के करने का हुक्म और बुरी बातो मे मना करते रहना और जो मुसीबत तुझ पर आए, उस पर सब्र करना। बेशक ये बडी हिम्मत के काम है। (१७) और (घमड मे आ कर) लोगो से गाल न फुलाना और ज़मीन मे अकड कर न चलना कि खुदा किसी इतराने वाले खुद-पसंद को पसद नही करता। (१८) और अपनी चाल मे दर्मियानी रास्ता अपनाए रहना और (बोलते वक्त) आवाज नीची रखना, क्योकि (ऊंची आवाज़ गधो की-सी है और कुछ शक नही कि)

★रु १/१० आ ११ ▨व न बी स. ●नि १/२

अ-लम् तरौ अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फिल्अर्ज़ि व अस्ब-ग अलैकुम् नि-अ-महू आहि-र-तव्-व वाति-न-तन् ط व मिनन्नासि मय्युजादिलु फिल्लाहि बिगैरि अिल्मिव-व ला हुदव्-व ला किताबिम्-मुनीर (२०) व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअू मा अन्ज-लल्लाहु क़ालू बल् नत्तविअु मा व-जद्ना अलैहि आबा-अना ط अ - व लौ कानश्शैतानु यद्अूहुम् इला अज़ाबिस्सअीर (२१) व मय्युस्लिम् वज-हहू इलल्लाहि व हु - व मुह्सिनुन् फ़-कदिस्तम्-स-क बिल्-अुर्-वतिल्-वुस्का ط व इलल्लाहि आकिवतुल्-उमूर (२२) व मन् क-फ-र फला यह्ज़ुन्-क कुफ्रुहू ط इलैना मर्जिअुहुम् फनुनब्बिउहुम् विमा अ़मिलू ط इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (२३) नुमत्तिअुहुम् कलीलन् सुम्-म नज्तर्रुहुम् इला अ़ज़ाबिन् गलीज़ (२४) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-कस्समावाति वल्अर-ज ल - यक़ूलुन्नल्लाहु ط क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि ط वल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून (२५)

مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ
بَاطِنَةً ؕ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ
مُّنِيْرٍ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا
عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝
وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ
الْوُثْقٰى ؕ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ
اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝
نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝
وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ
سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ مَا خَلْقُكُمْ وَ
لَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ
يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ
بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ

लिल्लाहि मा फिस्समावाति वल्अर्जि ط इन्नल्ला-ह हुवल् - गनिय्युल् - हमीद (२६) व लौ अन्-न मा फिल्अर्जि मिन् श-ज-रतिन् अक-लामुंव्वल्बह्रु यमुद्-दुहू मिम्बअ्-दिही सब-अतु अब्हुरिम्-मा नफिदत् कलिमातुल्लाहि ط इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम (२७) मा खल्कुकुम् व ला बअ् - सुकुम् इल्ला क-नफ्सिव्वाहिदतिन् ط इन्नल्ला-ह समीअुम् - बसीर (२८) अ-लम् त - र अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फिन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फिल्लैलि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क-म-र ؗ कुल्लुय्यज्री इला अ-जलिम्-मुसम्मव्-व अन्नल्ला-ह बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर (२९) ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह हुवल्-हक्कु व अन्-न मा यद्अू-न मिन्दूनिहिल् - बातिलु ل व अन्नल्ला - ह हुवल् - अलिय्युल्कबीर ★(३०)

★रु ३/१२ आ ११

सब से बुरी आवाज गधो की है☆(१९) क्या तुम ने नही देखा कि जो कुछ आसमानो मे और जो कुछ जमीन मे है, सब को खुदा ने तुम्हारे काबू मे कर दिया है और तुम पर अपनी जाहिरी और भीतरी नेमते पूरी कर दी है और कुछ लोग ऐसे है कि खुदा के बारे मे झगडते हैं, न इल्म रखते हैं और न हिदायत और न रोशन किताब। (२०) और जब उन से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने नाजिल फरमायी है, उसी की पैरवी करो, तो कहते है कि हम तो उसी की पैरवी करेंगे, जिस पर अपने बाप-दादा को पाया। भला अगरचे शैतान उन को दोजख के अजाब की तरफ बुलाता है, (तब भी ?) (२१) और जो शख्स अपने आप को खुदा का फरमाबरदार कर दे और भला भी हो तो उस ने मजबूत दस्तावेज हाथ मे ले ली और (सब) कामो का अजाम खुदा ही की तरफ है। (२२) और जो कुफ्र करे तो उस का कुफ्र तुम्हे गमनाक न कर दे। उन को हमारी तरफ लौट कर आना है, फिर जो काम वे किया करते थे, हम उन को बता देंगे। बेशक खुदा दिलो की बातो को जानता है। (२३) हम उन को थोडा-सा फायदा पहुचाएगे, फिर सख्त अजाब की तरफ मजबूर कर के ले जाएगे। (२४) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानो और जमीन को किस ने पैदा किया, तो बोल उठेंगे कि खुदा ने, कह दो कि खुदा का शुक्र है, लेकिन उन मे अक्सर समझ नही रखते। (२५) जो कुछ आसमानो और जमीन मे है (सब) खुदा ही का है। बेशक खुदा बे-परवाह (और) हम्द (व तारीफ) के लायक़ है। (२६) और अगर यो हो कि जमीन मे जितने पेड हैं (सब के सब) कलम हो और समुन्दर (का तमाम पानी) स्याही हो (और) इस के बाद सात समुन्दर और (स्याही हो जाए) तो खुदा की बाते (यानी उस की सिफते) खत्म न हो। बेशक खुदा गालिब हिक्मत वाला है। (२७) (खुदा को) तुम्हारा पैदा करना और जिला उठाना एक शख्स (के पैदा करने और जिला उठाने) की तरह है, बेशक खुदा सुनने वाला, देखने वाला है। (२८) क्या तुम ने नही देखा कि खुदा ही रात को दिन मे दाखिल करता है और उसी ने सूरज और उसी ने चाद को (तुम्हारे) फरमान के तहत कर रखा है। हर-एक एक मुकर्रर वक्त तक चल रहा है और यह कि खुदा तुम्हारे सब अमल से खबरदार है। (२९) यह इस लिए कि खुदा की जात बर-हक है और जिन को ये लोग खुदा के सिवा पुकारते है, वे बेकार है और यह कि खुदा ही ऊचे मर्तबे वाला और बड़ा है। (३०) ☆

★रु २/११ आ ८ ☆रु ३/१२ आ ११

अ-लम् त-र अन्नल्फुल-क तज्री फिल्बह्रि बिनिअ्-मतिल्लाहि लियुरि-यकुम् मिन् आयातिही इन्-न फी जालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (३१) व इज़ा गशि-यहुम् मौजुन् कज़्ज़ुलु - ललि द-अवुल्ला-ह मुख्लिसी - न लहुद्-दी - न फ - लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि फमिन्हुम् मुक्तसिदुन् व मा यज्हदु बिआयातिना इल्ला कुल्लु ख़त्तारिन् कफूर (३२) या अय्युहन्नासुत्तकू रब्बकुम् वख़्शौ यौमल्ला यज् - ज़ी वालिदुन् अ व्व-लदिही व ला मौलूदुन् हु-व जाज़िन् अ व्वालिदिही शैअन् इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्कुन् फ-ला तग़ुर्रन्नकुमुल् - हयातुद्दुन्या व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर (३३) इन्नल्ला - ह अिन्दहू अिल्मुस्साअति व युनज्ज़िलुल् - ग़ै - स व यअ् - लमु मा फिल्अर्हामि व मा तद्री नफ्सुम्-माज़ा तक्सिबु ग़ - दन् व मा तद्री नफ्सुम् - बि - अय्यि अर्ज़िन् तमूतु इन्नल्ला - ह अलीमुन् ख़बीर ★ (३४)

مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ
كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ
مُّقْتَصِدٌ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۞ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا
رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ
عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا
يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۞ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَمَا
تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۞
سُوْرَةُ السَّجْدَةِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الۗمّۗ ۞ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ
مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۞ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَي الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ
مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۞ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ
السَّمَاۗءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ
سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۞ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۞

३२ सूरतुस्-सज्दति ७५

(मक्की) इस सूर मे अरबी के १५७७ अक्षर, २७४ शब्द, ३० आयते और ३ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ् - लाम् - मीम् (१) तन्ज़ीलुल्किताबि ला रै-ब फीहि मिर्रब्बिल् - आलमीन (२) अम् यकूलूनफ्तराहु बल् हुवल्हक्कु मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि-र कौमम्-मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम्-मिन् कब्लि-क ल-अल्लहुम् यह्तदून (३) अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-कस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि मा लकुम् मिन् दूनिही मिव्वलिय्यिंव्वला शफीअिन् अ-फ़-ला त-त - ज़क्करून (४) युदब्बिरुल्-अम्-र मिनस्समाइ इलल्अर्ज़ि सुम्-म यअ्-रुजु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न मिक़्दारुहू अल्-फ स-नतिम्मिम्मा त-अुद्दून (५) ज़ालि-क आलिमुल्-ग़ैबि वश्शहादतिल्-अज़ीज़ुर्रहीम (६)

★रु ४/१३ आ ४

क्या तुम ने नही देखा कि खुदा ही की मेहरबानी से कश्तिया दरिया मे चलती हैं, ताकि वह तुम को अपनी कुछ निशानिया दिखाए। बेशक इस मे हर सब्र करने वाले (और) शुक्र करने वाले के लिए निशानियां है। (३१) और जब उन पर (दरिया की) लहरे सायबानो की तरह छा जाती है, तो खुदा को पुकारने (और) खालिस उस की इबादत करने लगते है, फिर जब वह उन को निजात दे कर खुश्की पर पहुचा देता है, तो कुछ ही इसाफ पर कायम रहते है और हमारी निशानियो से वही इन्कार करते है, जो वायदा तोडने वाले (और) ना-शुक्रे है। (३२) लोगो ! अपने परवरदिगार से डरो और उस दिन का खौफ करो कि न तो बाप अपने बेटे के कुछ काम आए और न बेटा बाप के कुछ काम आ सके। बेशक खुदा का वायदा सच्चा है, पस दुनिया की जिंदगी तुम को धोखे मे न डाल दे और न धोखा देने वाला (शैतान) तुम्हे खुदा के बारे मे किसी तरह का फरेब दे।[1] (३३) खुदा ही को कियामत का इल्म है और वही मेह बरसाता है और वही (हामिला के) पेट की चीज़ो को जानता है (कि नर है या मादा) और कोई शख्स नही जानता कि वह कल क्या करेगा। और कोई नफ्स नही जानता कि किस जमीन मे उसे मौत आएगी। बेशक खुदा ही जानने वाला (और) खबरदार है। (३४)★

३२ सूरः सज्दा ७५

सूर सज्दा मक्की है और इस मे तीस आयते और तीन रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ्-लाम्-मीम्, (१) इस मे कुछ शक नही कि इस किताब का नाजिल किया जाना तमाम दुनिया के परवरदिगार की तरफ से है। (२) क्या ये लोग यह कहते है कि पैगम्बर ने इस को खुद से बना लिया है ? (नही,) बल्कि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बर-हक है, ताकि तुम उन लोगो को हिदायत करो, जिन के पास तुम से पहले कोई हिदायत करने वाला नही आया, ताकि ये रास्ते पर चले। (३) खुदा ही तो है, जिस ने आसमानो और जमीन को और जो चीजे इन दोनो मे है, सब को छ दिन मे पैदा किया, फिर अर्श पर कायम हुआ। उस के सिवा तुम्हारा न कोई दोस्त है और न सिफारिश करने वाला। क्या तुम नसीहत नही पकडते ? (४) वही आसमान से जमीन तक (के) हर काम का इन्तिजाम करता है। फिर वह एक दिन जिस की मिक्दार तुम्हारी गिनती के मुताबिक हज़ार वर्ष की होगी, उस की तरफ चढाई (और रुजूअ) करेगा। (५) वही तो छिपे और जाहिर का जानने वाला (और) गालिब (और) रहम वाला (खुदा) है। (६) जिस ने हर चीज

---

१ यानी शैतान धोखा दे कि अल्लाह गफूर और रहीम है और दुनिया का जीना बहका दे कि जिस को यहा भला है, उस को वहा भी भला है।

अल्लज़ी अह्-स-न कुल्-ल शैइन् ख-ल्-क़हू व ब-द-अ ख़ल्क़ल् - इन्सानि मिन् तीन (७) सुम्-म ज-अ़-ल नस्-लहू मिन् सुलालतिम्-मिम्-मा-इम्-महीन (८) 'सुम् - म सव्वाहु व न-फ-ख फ़ीहि मिर्-रूहिही व ज-अ़-ल लकुमुस्सम्-अ वल्-अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त क़लीलम्-मा तश्कुरून (९) व

कालू अ-इज़ा ज़-लल्ना फ़िल्अर्ज़ि अ इन्ना लफ़ी ख़ल्किन् जदीदिन् बल् हुम् बिलिक़ाइ रब्बिहिम् काफ़िरून (१०) कुल् य-त-वफ़्फ़ाकुम् म-लकुल् - मौतिल्लज़ी वुक्कि-ल बिकुम् सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जअून ★ (११) व लौ तरा इज़िल्-मुज्रिमू-न नाकिसू रुऊसिहिम् अिन् - द रब्बिहिम् रब्बना अब्-सर्ना व समिअ्-ना फ़र्जिअ्-ना नअ्-मल् सालिहन् इन्ना मूकिनून (१२) व लौ शिअ्ना लआतैना कुल्-ल नफ़्सिन् हुदाहा व लाकिन् हक़्क़ल्-कौलु मिन्नी ल-अम्-ल-अन्-न ज-हन्न-म मिनल्जिन्नति वन्नासि अज्मअीन (१३) फ़ज़ूकू बिमा नसीतुम् लिक़ा - अ यौमिकुम् हाज़ा

الذي احسن كل شيء خلقه وبدأ خلق الانسان من طين
ثم جعل نسله من سلالة من ماء مهين ثم سواه ونفخ فيه
من روحه وجعل لكم السمع والابصار والافئدة قليلا ما
تشكرون وقالوا ءاذا ضللنا في الارض ءانا لفي خلق جديد
بل هم بلقاء ربهم كافرون قل يتوفاكم ملك الموت الذي
وكل بكم ثم الى ربكم ترجعون ولو ترى اذ المجرمون ناكسوا
رءوسهم عند ربهم ربنا ابصرنا وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا
انا موقنون ولو شئنا لاتينا كل نفس هداها ولكن حق القول
مني لاملان جهنم من الجنة والناس اجمعين فذوقوا بما
نسيتم لقاء يومكم هذا انا نسيناكم وذوقوا عذاب الخلد بما كنتم
تعملون انما يؤمن بايتنا الذين اذا ذكروا بها خروا سجدا و
سبحوا بحمد ربهم وهم لا يستكبرون تتجافى جنوبهم عن
المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا ومما رزقناهم ينفقون
فلا تعلم نفس ما اخفي لهم من قرة اعين جزاء بما كانوا
يعملون افمن كان مؤمنا كمن كان فاسقا لا يستوون اما
الذين امنوا وعملوا الصالحات فلهم جنات المأوى نزلا بما كانوا
يعملون واما الذين فسقوا فمأواهم النار كلما ارادوا ان

इन्ना नसीनाकुम् व ज़ूक़ू अज़ाबल्-ख़ुल्दि बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१४) इन्नमा युअ्मिनु बिआयातिनल्-लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिहा ख़र्रू सुज्जदव्-व सब्बहू बिहम्दि रब्बिहिम् व हुम् ला यस्तक्बिरून □ (१५) त-त - जाफ़ा जुनूबुहुम् अनिल्मज़ाजिअि यद्अू-न रब्बहुम् ख़ौफ़व्-व त-म-अ़व्-व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (१६) फ़ ला तअ्-लमु नफ़्सुम्मा उख़्फ़ि-य लहुम् मिन् कुर्रति अअ्-युनिन् जज़ा-अम्-बिमा कानू यअ्-मलून (१७) अ-फ़-मन् का-न मुअ्मिनन् क-मन् का-न फ़ासिक़न् ▒ ला यस्तवून ▒ (१८) अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् जन्नातुल् - मअ्वा नुज़ुलम् - बिमा कानू यअ् - मलून (१९) व अम्मल्लज़ी-न फ़-सक़ू फ़-मअ्-वाहुमुन्नारु कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा उओदू फ़ीहा व की - ल लहुम् ज़ूक़ू अज़ाबन्नारिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (२०)

★ रु १/१४ आ ११ □ सज्द ६ ▒ व गुफ़्रान ▒ व. गुफ़्रान

को बहुत अच्छी तरह बनाया (यानी) उस को पैदा किया और इन्सान की पैदाइश को मिट्टी से शुरू किया। (७) फिर उस की नस्ल खुलासे से (यानी) हकीर पानी से पैदा की, (८) फिर उस को दुरुस्त किया, फिर उस मे अपनी (तरफ से) रूह फूकी और तुम्हारे कान और आखे और दिल बनाये (मगर) तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (९) और कहने लगे कि जब हम जमीन मे मलिया-मेट हो जाएगे, तो क्या नये सिरे से पैदा होगे। सच तो यह है कि ये लोग अपने परवरदिगार के सामने जाने ही के कायल नही। (१०) कह दो कि मौत का फरिश्ता, जो तुम पर मुकर्रर किया गया है, तुम्हारी रूहे कब्ज कर लेता है, फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ लौटाये जाओगे। (११)★

(और तुम ताज्जुब करो), जब देखो कि गुनाहगार अपने परवरदिगार के सामने सर झुकाए होगे (और कहेगे कि) ऐ हमारे परवरदिगार! हम ने देख लिया और सुन लिया, तो हम को (दुनिया मे) वापस भेज दे कि नेक अमल करे। बेशक हम यकीन करने वाले है। (१२) और अगर हम चाहते, तो हर शख़्स को हिदायत कर देते, लेकिन मेरी तरफ से यह बात करार पा चुकी है कि मैं दोज़ख को जिन्नो और इन्सानो, सब से भर दूगा। (१३) सो (अब आग के) मज़े चखो, इस लिए कि तुमने उस दिन के आने को भुला रखा था, (आज) हम भी तुम्हे भुला देगे और जो काम तुम करते थे, उनकी सज़ा मे हमेशा के अजाब के मजे चखते रहो। (१४) हमारी आयतो पर तो वही लोग ईमान लाते है कि जब उन को उन से नसीहत की जाती है, तो सज्दे मे गिर पडते और अपने परवरदिगार की तारीफ के साथ तस्बीह करते है और घमड नही करते □ (१५) उन के पहलू बिछौनो से अलग रहते हैं (और) वह अपने परवरदिगार को खौफ और उम्मीद से पुकारते और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस मे से खर्च करते है। (१६) कोई नफ्स नही जानता कि उन के लिए कैसी आखो की ठंडक छिपा कर रखी गयी है, यह उन के आमाल का बदला है, जो वे करते थे। (१७) भला जो मोमिन हो, वह उस शख़्स की तरह हो सकता है जो नाफरमान हो? दोनो बराबर नही हो सकते (१८) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के (रहने के) लिए बाग़ है। यह मेहमानी उन कामो का बदला है, जो वे करते थे। (१९) और जिन्हो ने ना-फरमानी की, उन के (रहने के) लिए दोज़ख है। जब चाहेगे कि उस मे से निकल जाएं, तो उसमे लौटा दिए जाएंगे और उन से कहा जाएगा कि जिस दोज़ख के अज़ाब को तुम झूठ समझते थे, उन के

★रु १/१४ आ ११ □सज्द ९ व गुफ्रान व गुफ्रान

व ल-नुजीकन्नहुम् मिनल् - अजाबिल् - अद्ना दूनल् - अजाबिल् - अक्बरि ल-अल्लहुम् यर्जिऊन (२१) व मन् अज़्-लमु मिम्मन् जुक्कि-र बिआयाति रब्बिही सुम्-म अअ्-र-ज अन्हा ط इन्ना मिनल् - मुज्रिमी-न मुन्तकिमून ★(२२) व ल-कद् आतैना मूसल्किता-ब फ ला तकुन् फी मिर्यतिम्-मिल्-लिका-इही व

ज-अल्नाहु हुदल्लिबनी इस्राईल ج (२३) व ज - अल्ना मिन्हुम् अइम्मतय्यह्दू - न बिअम्रिना लम्मा स - बरू قف व कानू बि-आयातिना यूकिनून (२४) इन्-न रब्ब-क हु-व यफ्सिलु बैनहुम् यौमल्कियामति फीमा कानू फीहि यख्-तलिफून (२५) अ-व लम् यह्दि लहुम् कम् अह्-लक्-ना मिन् कब्-लिहिम् मिनल्कुरूनि यम्शू-न फी मसाकिनिहिम् ط इन्-न फी जालि-क लआयातिन् ط अ-फला यस्-मअ़ून (२६) अ-व लम् यरौ अन्ना नसूकुलमा-अ इलल्-अर्जिल्-जुरुजि फ-नुख्रिजु बिही जर-अन् तअ्-कुलु मिन्हु अन्आमुहुम् व अन्फुसुहुम् ط अ-फ ला युब्सिरून ●(२७)

يرجعوا منها أعيدوا فيها وقيل لهم ذوقوا عذاب النار الذي كنتم
به تكذبون ۝ ولنذيقنهم من العذاب الأدنى دون العذاب
الأكبر لعلهم يرجعون ۝ ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه ثم أعرض
عنها إنا من المجرمين منتقمون ۝ ولقد آتينا موسى الكتاب
فلا تكن في مرية من لقائه وجعلناه هدى لبني إسرائيل ۝
وجعلنا منهم أئمة يهدون بأمرنا لما صبروا وكانوا بآياتنا
يوقنون ۝ إن ربك هو يفصل بينهم يوم القيامة فيما كانوا
فيه يختلفون ۝ أولم يهد لهم كم أهلكنا من قبلهم من
القرون يمشون في مساكنهم إن في ذلك لآيات أفلا يسمعون ۝
أولم يروا أنا نسوق الماء إلى الأرض الجرز فنخرج به زرعا تأكل
منه أنعامهم وأنفسهم أفلا يبصرون ۝ ويقولون متى هذا
الفتح إن كنتم صادقين ۝ قل يوم الفتح لا ينفع الذين كفروا إيمانهم
ولا هم ينظرون ۝ فأعرض عنهم وانتظر إنهم منتظرون ۝
سورة الأحزاب مدنية
بسم الله الرحمن الرحيم
يا أيها النبي اتق الله ولا تطع الكافرين والمنافقين إن الله
كان عليما حكيما ۝ واتبع ما يوحى إليك من ربك إن الله كان

व यकूलू - न मता हाजलफत्हु इन् कुन्तुम् सादिकीन (२८) कुल् यौमल्फत्हि ला यन्फउल्लजी-न क-फरू ईमानुहुम् व ला हुम् युन्ज़रून (२९) फ-अअ् - रिज् अन्हुम् वन्तजिर् इन्नहुम् मुन्तज़िरून ★(३०)

३३ सूरतुल् अह्ज़ाबि ९०

(मदनी) इस सूर मे अरबी के ५९०९ अक्षर, १२१० शब्द, ७३ आयतें और ९ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन् - नबिय्युत्-तकिल्-ला-ह व ला तुतिअिल् - काफिरी-न वल्मुनाफिकी-न ط इन्नल्ला-ह का-न अलीमन्-हकीमा لا (१) वत्तबिअ मा यूहा इलै-क मिर्रब्बि-क ط इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्-मलू-न खबीरा لا (२)

मजे चखो। (२०) और हम उन को (कियामत के) बड़े अज़ाब के सिवा दुनिया के अजाब का भी मजा चखाएगे, शायद (हमारी तरफ) लौट आए। (२१) और उस शख्स से बढकर ज़ालिम कौन, जिस को उस के परवरदिगार की आयतो से नसीहत की जाए, तो वह उन से मुह फेर ले। हम गुनाह-गारो से जरूर बदला लेने वाले है। (२२)☆

और हम ने मूसा को किताब दी, तो तुम उनके मिलने से शक मे न होना[1] और हमने उस (किताब) को (या मूसा को) बनी इस्राईल के लिए हिदायत (का जरिया) बनाया। (२३) और उन में से हम ने पेशवा बनाये थे, जो हमारे हुक्म से हिदायत किया करते थे, जब वे सब्र करते थे और वे हमारी आयतो पर यकीन रखते थे। (२४) बेशक तुम्हारा परवरदिगार उन मे जिन बातो मे वे इख्तिलाफ करते थे, कियामत के दिन फैसला कर देगा। (२५) क्या उनको इन (बातो) से हिदायत न हुई कि हम ने इन से पहले बहुत-सी उम्मतो को, जिन के बसने की जगहो मे ये चलते-फिरते है, हलाक कर दिया। बेशक इस मे निशानिया है, तो ये सुनते क्यो नही? (२६) क्या इन्होने नही देखा कि हम इस बजर जमीन की तरफ पानी चलाते है, फिर इससे खेती पैदा करते है, जिस मे से इन के चौपाए भी खाते है और वे भी (खाते है), तो ये देखते क्यो नही?● (२७) और कहते है अगर तुम सच्चे हो, तो यह फैसला कब होगा? (२८) कह दो कि फैसले के दिन काफिरो को उनका ईमान लाना कुछ भी फायदे का न होगा और न उन को मुहलत दी जाएगी। (२९) तो उनसे मुह फेर लो और इन्तिजार करो, ये भी इन्तिजार कर रहे है। (३०)☆

३३ सूरः अह्ज़ाब ९०

सूर अह्जाब मदनी है और इस मे तिहत्तर आयते और नौ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैगम्बर! खुदा से डरते रहना और काफिरो और मुनाफिकों का कहा न मानना। बेशक ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१) और जो (किताब) तुम को तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से वह्य की जाती है, उसी की पैरवी किए जाना। बेशक खुदा तुम्हारे सब अमलो से

---

१ यानी तुम मूसा से जरूर मिलोगे। चुनाचे आप मेराज की रात आसमान पर हज़रत मूसा अलै० से मिले, जैसा कि हदीस मे है।

व त-वक्कल् अ-लल्लाहि ط व कफा बिल्लाहि वकीला (३) मा ज-अ-लल्लाहु लिरजुलिम्-मिन् क़ल्बैनि फी जौफिही ج व मा ज-अ-ल अज़्वा-ज-कुमुल्लाई तुज़ाहिरू-न मिन्हुन्-न उम्महातिकुम् ج व मा ज-अ-ल अद्-अिया-अ - कुम् अब्-ना - अकुम् ط ज़ालिकुम् क़ौलुकुम् बि - अफ्वाहिकुम् ط वल्लाहु यकूलुल् हक्-क़ व हु-व यह्दिस्सबील (४) उद्अू-हुम् लिआबाइहिम् हु - व अक़्सतु अिन्दल्लाहि ج फ़-इल्लम् तअ्-लमू आबा-अहुम् फ-इख़्वानुकुम् फिद्दीनि व मवालीकुम् ط व लै-स अलैकुम् जुनाहुन् फीमा अख़्तअ्-तुम् बिही لا व लाकिम्मा त - अम्म - दत् कुलूबुकुम् ط व कानल्लाहु गफूरर् - रहीमा (५) अन्नबिय्यु औला बिल्मुअ्मिनी-न मिन् अन्फुसिहिम् व अज़्वाजुहू उम्महातुहुम् ط व उलुल्-अर्हामि बअ्-ज़ुहुम् औला बिबअ्-ज़िन् फी किताबिल्लाहि मिनल् - मुअ्मिनी - न वल्मुहाजिरी-न इल्ला अन् तफ्-अलू इला औलिया-इकुम् मअ्-रूफन् ط का-न ज़ालि-क फिल्किताबि मस्तूरा (६) व इज़् अ-ख़ज़्ना मिनन्नबिय्यी-न मीसाक़हुम् व मिन-क व मिन् नूहिंव्-व इब्राही-म व मूसा व ईसब्नि मर्-य-म صلے व अ-ख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ल لا - (७) लियस् - अलस् - सादिक़ी-न अन् सिद्क़िहिम् ج व अ-अद्-द लिल्काफिरी-न अज़ाबन् अलीमा ★ (८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम् इज़् जाअत्कुम् जुनूदुन् फ-अर्सल्ना अलैहिम् रीहंव्व जुनूदल्लम् तरौहा ط व कानल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीरा صلے (९) इज़् जाऊकुम् मिन् फौक़िकुम् व मिन् अस् - फ-ल मिन्कुम् व इज़् ज़ाग़तिल्-अब्सारु व ब-ल-ग़तिल्-कुलूबुल्-हनाजि-र व तज़ुन्नू-न बिल्लाहिज़्ज़ुनूना (१०) हुनालिकब्तुलियल्-मुअ्मिनू-न व ज़ुल्ज़िलू ज़िल्ज़ालन् शदीदा (११)

بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيلًا ۝ مَا
جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِي جَوْفِهِ ۚ وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمُ الّٰٓئِي
تُظٰهِرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَآءَكُمْ أَبْنَآءَكُمْ ۚ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ
بِأَفْوَاهِكُمْ ۖ وَاللّٰهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ۝ اُدْعُوهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ
هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَإِنْ لَّمْ تَعْلَمُوٓا اٰبَآءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَ
مَوَالِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَآ أَخْطَأْتُمْ بِهٖ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ
قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ اَلنَّبِيُّ أَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ
أَنْفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهٗٓ أُمَّهٰتُهُمْ ۗ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلٰى بِبَعْضٍ
فِي كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهٰجِرِينَ إِلَّآ أَنْ تَفْعَلُوٓا إِلٰٓى
أَوْلِيَآئِكُمْ مَّعْرُوفًا ۚ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُورًا ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا
مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوحٍ وَّإِبْرٰهِيمَ وَمُوسٰى وَعِيسَى
ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۝ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِينَ عَنْ
صِدْقِهِمْ ۚ وَأَعَدَّ لِلْكٰفِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا
نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَّجُنُودًا
لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ إِذْ جَآءُوكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ
وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ
وَتَظُنُّونَ بِاللّٰهِ الظُّنُونَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا

★रु. १/१७ आ ८

ख़बरदार है। (२) और ख़ुदा पर भरोसा रखना और ख़ुदा ही कार-साज़ काफी है। (३) ख़ुदा ने किसी आदमी के पहलू मे दो दिल नही बनाये और न तुम्हारी औरतो को, जिन को तुम मा कह बैठते हो, तुम्हारी मा बनाया और न तुम्हारे लय-पालको को, तुम्हारे बेटे बनाया।[1] ये सब तुम्हारे मुह की बाते है और ख़ुदा तो सच्ची बात फरमाता है और वही सीधा रास्ता दिखाता है। (४) मोमिनो! लय-पालको को उन के (असली) बापो के नाम से पुकारा करो कि ख़ुदा के नजदीक यही बात दुरुस्त है। अगर तुम को उन के बापो के नाम मालूम न हो, तो दीन मे वे तुम्हारे भाई और दोस्त है और जो बात तुम से गलती से हो गयी हो, उस मे तुम पर कुछ गुनाह नही, लेकिन जो दिली इरादे से करो (उस पर पकड है) और ख़ुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (५) पैगम्बर मोमिनो पर उनकी जानो से भी ज्यादा हक रखते है और पैगम्बर की बीबिया उनकी माए है और रिश्तेदार आपस मे अल्लाह की किताब के मुताबिक मुसलमानो और मुहाजिरो से एक दूसरे (के तर्के) के ज्यादा हक़दार है, मगर यह कि तुम अपने दोस्तो मे एहसान करना चाहो। यह हुक्म किताब (यानी कुरआन) मे लिख दिया गया है। (६) और जब हमने पैगम्बरो से अह्द लिया और तुम से और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरयम के बेटे ईसा से और अह्द भी उन से पक्का लिया, (७) ताकि सच कहने वालो मे उन की सच्चाई के बारे मे मालूम करे और उसने काफिरो के लिए दुख देने वाला अजाब तैयार कर रखा है। (८) ★

मोमिनो! ख़ुदा की उस मेहरबानी को याद करो, जो (उस ने) तुम पर (उस वक्त) की, जब फौजे तुम पर (हमला करने को) आयी, तो हमने उन पर हवा भेजी और ऐसे लश्कर (नाजिल किए), जिन को तुम देख नही सकते थे और जो काम तुम करते हो, ख़ुदा उन को देख रहा है। (९) जब वे तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ से तुम पर (चढ) आए और जब आखे फिर गयी और दिल (मारे दहशत के) गलो तक पहुच गये और तुम ख़ुदा के बारे मे तरह-तरह के गुमान करने लगे। (१०) वहा मोमिन आजमाए गए और सख्त तौर पर हिलाए गए। (११) और जब मुनाफिक

१ यानी न बीवी मा कह देने से मा हो जाती है, न लयपालक असली बेटे के हुक्म मे होता है।

व इज़् यकूलुल्-मुनाफ़िकू-न वल्लज़ी-न फ़ी कुलूबिहिम् म-र-ज़ुम्मा व-अ-द-नल्लाहु व रसूलुहू इल्ला ग़ुरूरा (१२) व इज़् कालत्ताइ-फ़-तुम् - मिन्हुम् या अह्-ल यस्रि-ब ला मुका-म लकुम् फ़र्जिअू व यस्तअ्ज़िनु फ़रीकुम्-मिन्हुमुन्-नबिय-य यकूलू - न इन्-न बुयूतना औरतुन् व मा हि-य बिऔरतिन्

इ य्युरीदू-न इल्ला फ़िरारा (१३) व लौ दुख़िलत् अलैहिम् मिन् अक़्तारिहा सुम्-म सुइलुल्-फ़ित्-न-त लआतौहा व मा त-लब्बसू बिहा इल्ला यसीरा (१४) व ल-क़द् कानू आहदुल्ला-ह मिन् क़ब्लु ला युवल्लूनल्-अद्बा-र व का-न अह्दुल्लाहि मस्ऊला (१५) कुल्लय्यन्फ़-अ़ - कुमुल्-फ़िरारु इन् फ़रर्तुम् मिनल्मौति अविल्क़त्लि व इज़ल्ला तुमत्तअू-न इल्ला क़लीला (१६) कुल् मन् ज़ल्लज़ी यअ्-सिमुकुम् मिनल्लाहि इन् अरा-द बिकुम् सूअन् औ अरा-द बिकुम् रह्-म-तन् व ला यजिदू-न लहुम् - मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यव्-व ला नसीरा (१७)

زلزالا شديدا ۝ وإذ يقول المنفقون والذين في قلوبهم مرض
ما وعدنا الله ورسوله إلا غرورا ۝ وإذ قالت طائفة منهم يأهل
يثرب لا مقام لكم فارجعوا ويستأذن فريق منهم النبي يقولون
إن بيوتنا عورة وما هي بعورة إن يريدون إلا فرارا ۝ و
لو دخلت عليهم من أقطارها ثم سئلوا الفتنة لآتوها وما
تلبثوا بها إلا يسيرا ۝ ولقد كانوا عاهدوا الله من قبل لا يولون
الأدبار وكان عهد الله مسئولا ۝ قل لن ينفعكم الفرار
إن فررتم من الموت أو القتل وإذا لا تمتعون إلا قليلا ۝
قل من ذا الذي يعصمكم من الله إن أراد بكم سوءا
أو أراد بكم رحمة ولا يجدون لهم من دون الله وليا و
لا نصيرا ۝ قد يعلم الله المعوقين منكم والقائلين لإخوانهم
هلم إلينا ولا يأتون البأس إلا قليلا ۝ أشحة عليكم فإذا
جاء الخوف رأيتهم ينظرون إليك تدور أعينهم كالذي
يغشى عليه من الموت فإذا ذهب الخوف سلقوكم بألسنة حداد
أشحة على الخير أولئك لم يؤمنوا فأحبط الله أعمالهم وكان
ذلك على الله يسيرا ۝ يحسبون الأحزاب لم يذهبوا وإن يأت
الأحزاب يودوا لو أنهم بادون في الأعراب يسألون عن أنبائكم و

क़द् यअ्-लमुल्लाहुल्-मुअव्विक़ी-न मिन्कुम् वल्क़ाइली-न लिइख़्वानिहिम् हलुम्-म इलैना व ला यअ्तूनल्-बअ्-स इल्ला क़लीला (१८) अशिह्-ह - तन् अलैकुम् फ़-इज़ा जा-अल्ख़ौफ़ु रऐ - तहुम् यन्ज़ुरू - न इलै - क तदूरु अअ्-युनुहुम् कल्लज़ी युग़्शा अलैहि मिनल्मौति फ़-इज़ा ज-ह - बल्ख़ौफ़ु स-लक़ूकुम् बि-अल्सिनतिन् हिदादिन् अशिह्-ह-तन् अलल्ख़ैरि उलाइ-क लम् युअ्मिनू फ़-अह्-ब-तल्लाहु अअ्-मालहुम् व का-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीरा (१९) यह्-सबूनल्-अह्ज़ा-ब लम् यज़्-हबू व इ य्यअ्तिल्-अह्ज़ाबु यवद्दू लौ अन्नहुम् बादू-न फ़िल्-अअ्-राबि यस्-अलू-न अन् अम्बा-इकुम् व लौ कानू फ़ीकुम् मा क़ातलू इल्ला क़लीला ★ (२०)

मु अि मु ता ख़ १० ★ रु २/१८ आ १२

और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है, कहने लगे कि खुदा और उसके रसूल ने तो हम से सिर्फ धोखे का वायदा किया था। (१२) और जब उन मे से एक जमाअत कहती थी कि ऐ मदीना वालो! (यहा) तुम्हारे (ठहरने की) जगह नहीं, तो लौट चलो और एक गिरोह उन मे से पैगम्बर से इजाज़त मागने और कहने लगा कि हमारे घर खुले पडे हैं, ˙˙हालाकि वे खुले नही थे, ˙˙वे तो सिर्फ भागना चाहते थे। (१३) और अगर फौजे मदीने के चारो तरफ से उन पर आ दाखिल हो, फिर उन से खाना जगी के लिए कहा जाए, तो (फौरन) करने लगे और इसके लिए बहुत कम ठहरे। (१४) हालाकि पहले खुदा से इकरार कर चुके थे कि पीठ नही फेरेगे और खुदा से (जो) इक़रार (किया जाता है, उस) की जरूर पूछ-ताछ होगी। (१५) कह दो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो, तो भागना तुम को फायदा नही देगा और उस वक्त तुम बहुत ही कम फायदा उठाओगे। (१६) कह दो कि अगर खुदा तुम्हारे साथ बुराई का इरादा करे, तो कौन तुम को उससे बचा सकता है या अगर तुम पर मेहरबानी करनी चाहे, (तो कौन उसको हटा सकना है ?) और ये लोग खुदा के सिवा किसी को न अपना दोस्त पाएगे और न मददगार। (१७) खुदा तुम मे से उन लोगो को भी जानता है, जो (लोगो को) मना करते है और अपने भाइयो से कहते है कि हमारे पास चले आओ और लडाई मे नही आते, मगर कम। (१८) (यह इस लिए कि) तुम्हारे बारे मे बुख्ल करते हैं। फिर जब डर (का वक्त) आए तो तुम उन को देखो कि तुम्हारी तरफ देख रहे है (और) उनकी आखे (उसी तरह) फिर रही है, जैसे किसी को मौत से गशी आ रही हो। फिर जब डर जाता रहे, तो तेज जुबानो के साथ तुम्हारे बारे में जुबानदराजी करे और माल मे बुख्ल करे। ये लोग (हकीकत मे) ईमान लाए ही न थे, तो खुदा ने उन के आमाल बर्बाद कर दिए और यह खुदा को आसान था। (१९) (डर की वजह से) ख्याल करते है कि फौजे नही गयी और अगर लश्कर आ जाए तो तमन्ना करें कि (काश !) गवारो मे जा रहे (और) तुम्हारी खबर पूछा करे और अगर तुम्हारे दर्मियान हो, तो लड़ाई न करे, मगर कम। (२०) ★

˙मु अि़ मु ता ख १० ★रु २/१८ आ १२

ल-कद् का-न लकुम् फी रसूलिल्लाहि उस्-वतुन् ह़-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्-यौमल्-आख़ि-र व ज-क-रल्ला-ह कसीरा (२१) व लम्मा र-अल्-मुअ्मिनूनल्-अह्ज़ा - ब क़ालू हाज़ा मा व - अ - द-नल्लाहु व रसूलुहू व स-द-कल्लाहु व रसूलुहू व मा जादहुम् इल्ला ईमानव्-व तस्लीमा (२२) मिनल् - मुअ्मिनी-न रिजालुन् स-दकू मा आहदुल्ला-ह अलैहि फमिन्हुम् मन् कज़ा नह् - बहू व मिन्हुम् मंय्यन्तज़िरु व मा बद्दलू तब्दीलल् - (२३) -लियज्ज़ियल्लाहुस् - सादिकी-न बिसिद्किहिम् व युअज़्ज़िबल्-मुनाफिकी-न इन् शा-अ औ यतू-ब अलैहिम् इन्नल्ला - ह का - न गफूर्रहीमा (२४) व रद्-दल्लाहुल्-लज़ी-न क - फरू बिग़ैज़िहिम् लम् यनालू ख़ैरन् व क-फ़ल्लाहुल् - मुअ्मिनीनल् - किता - ल व कानल्लाहु कविय्यन् अज़ीज़ा (२५) व अन्ज-लल्लज़ी-न ज़ा-हरूहुम् मिन् अह्लिल्-किताबि मिन् सयासीहिम् व क़-ज-फ फी कुलूबिहिमुर्-रुअ्-ब फरीकन् तक्तुलू-न व तअ्सिरू-न फरीका (२६) व औ-र-सकुम् अर्ज़हुम् व दियारहुम् व अम्वा-लहुम् व अर्ज़ल्लम् त-त़-ऊहा व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् कदीरा ★ (२७) या अय्युहन्नबिय्यु कुल् लिअज़्वाजि-क इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्-हयातद्दुन्या व ज़ी-न-तहा फ-तआलै-न उमत्तिअ्-कुन्-न व उसर्रिह्कुन्-न सराहन् जमीला (२८) व इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्ला-ह व रसूलहू वद्दारल्-आख़ि-र-त फ-इन्नल्ला-ह अ-अद्-द लिल्मुह्सिनाति मिन्कुन्-न अज-रन् अ़ज़ीमा (२९) या निसाअन्नबिय्यि मंय्यअ्ति मिन्कुन्-न बिफाहिशतिम्-मुबय्यिनतिय्-युज़ाअफ् ल-हल्-अज़ाबु ज़िअ्-फैनि व का-न ज़ालि-क अ़-लल्लाहि यसीरा (३०)

لو كانوا فيكم ما قاتلوا الا قليلا لقد كان لكم في رسول الله
اسوة حسنة لمن كان يرجوا الله واليوم الاخر وذكر الله كثيرا
ولما را المؤمنون الاحزاب قالوا هذا ما وعدنا الله ورسوله وصدق
الله ورسوله وما زادهم الا ايمانا وتسليما من المؤمنين
رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه فمنهم من قضى نحبه ومنهم
من ينتظر وما بدلوا تبديلا ليجزي الله الصدقين بصدقهم
ويعذب المنفقين ان شاء او يتوب عليهم ان الله كان غفورا
رحيما ورد الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا وكفى
الله المؤمنين القتال وكان الله قويا عزيزا وانزل الذين
ظاهروهم من اهل الكتب من صياصيهم وقذف في قلوبهم الرعب
فريقا تقتلون وتاسرون فريقا واورثكم ارضهم وديارهم
واموالهم وارضا لم تطوها وكان الله على كل شيء قديرا
يايها النبي قل لازواجك ان كنتن تردن الحيوة الدنيا
وزينتها فتعالين امتعكن واسرحكن سراحا جميلا وان كنتن
تردن الله ورسوله والدار الاخرة فان الله اعد للمحسنت منكن
اجرا عظيما ينساء النبي من يات منكن بفاحشة مبينة
يضعف لها العذاب ضعفين وكان ذلك على الله يسيرا

★रु ३/१९ आ ७

तुमको खुदा के पैगम्बर की पैरवी (करनी) बेहतर है, (यानी) उस शख्स की जिसे खुदा (से मिलने) और कियामत के दिन (के आने) की उम्मीद हो और वह खुदा का जिक्र ज्यादा से ज्यादा करता हो। (२१) और जब मोमिनो ने (काफिरो के) लश्कर को देखा, तो कहने लगे, यह वही है, जिस का खुदा और उस के पैगम्बर ने हम से वायदा किया था और खुदा और उस के पैगम्बर ने सच कहा था और इससे उनका ईमान और इताअत और ज्यादा हो गयी। (२२) मोमिनो मे कितने ही ऐसे शख्स है कि जो इकरार उन्होने खुदा से किया था, उस को सच कर दिखाया, तो उन मे कुछ ऐसे है, जो अपने नज़्र से फारिग हो गये और कुछ ऐसे है कि इन्तिज़ार कर रहे है और उन्होने (अपने कौल को) जरा भी नही बदला, (२३) ताकि खुदा सच्चो को उन की सच्चाई का बदला दे और मुनाफिको को चाहे तो अजाब दे या (चाहे) तो उन पर मेहरबानी करे। बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (२४) और जो काफिर थे, उनको खुदा ने फेर दिया। वे अपने गुस्से मे (भरे हुए थे), कुछ भलाई हासिल न कर सके और खुदा मोमिनो को लडाई के बारे मे काफी हुआ और खुदा ताकतवर और ज़बरदस्त है। (२५) और अह्ले किताब मे से, जिन्होने उन की मदद की थी, उन को उनके किलो से उतार दिया, और उन के दिलो मे दहशत डाल दी, तो कितनो को तुम कत्ल कर देते थे और कितनो को कैद कर लेते थे। (२६) और उन की जमीन और उनके घरो और उन के माल का और उस ज़मीन का, जिसमे तुमने पाव भी नही रखा था, तुम को वारिस बना दिया और खुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (२७) ★

ऐ पैगम्बर ! अपनी बीवियो से कह दो, अगर तुम दुनिया की जिंदगी और उसकी जीनत व आराइश चाहती हो, तो आओ, मैं तुम्हे माल दू और अच्छी तरह से रुख्सत कर दू, (२८) और अगर तुम खुदा और उसके पैगम्बर और आकिबत के घर (यानी बहिश्त) की तलब रखती हो, तो तुम मे जो, नेकी करने वाली है, उनके लिए खुदा ने बडा बदला तैयार कर रखा है। (२९) ऐ पैगम्बर की बीवियो ! तुम मे से जो कोई खुली ना-शाइस्ता हरकत करेगी, उस को दोगुनी सजा दी

★रु ३/१९ आ ७

बाईसवां पारः व मंय्यक़्नुत

सूरतुल्-अह्ज़ाबि आयात ३१ से ७३

व मय्यक्-नुत् मिन्कुन्-न लिल्लाहि व रसूलिही व तअ्-मल् सालिहन् नुअ्-तिहा अज्-रहा मर्रतैनि॥ व अअ्-तद्ना लहा रिज्-कन् करीमा (३१) यानिसा-अन्नबिय्यि लस्तुन्-न क-अ-ह्दिम्-मिनन्निसाइ इनित्तकैतुन्-न फ ला तख़-ज़अ्-न बिल्कौलि फ़-यत्म-अल्लज़ी फी कल्-बिही म-र-जु व्-व कुल्-न कौलम्-मअ्-रूफा ६ (३२) व कर्-न फी बुयूतिकुन्-न व ला त-बर्रज्-न त-बर्रुजल्-जाहिलिय्यतिल्-ऊला व अकिम्-नस्सला-त व आतीनज्जका-त व अतिअ्-नल्ला-ह व रसूलहू॥ इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज्-हि-ब अन्कुमुर्रिज-स अह-लल्-बैति व युतह-हि-रकुम् तत्-हीरा६ (३३) वज्कुर्-न मा युत्ला फी बुयूतिकुन्-न मिन् आयातिल्लाहि वल् - हिक्मति॥ इन्नल्ला-ह का-न लतीफन् खबीरा★(३४) इन्नल् - मुस्लिमी - न वल्मुस् - लिमाति वल्मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति वल्कानिती-न वल्कानिताति वस्सादिकी - न वस्सादिकाति वस्साबिरी-न वस्साबिराति वल्-खाशिअी-न वल्-खाशिआति वल्-मु-त-सद्दिक़ी-न वल् - मु-त-सद्दिकाति वस्सा-इमी-न वस्सा-इमाति वल्-हाफिज़ी-न फुरू-जहुम् वल्-हाफिज़ाति वज्जाकिरीनल्ला - ह कसीरव्वज्जाकिराति॥ अ-अद् - दल्लाहु लहुम् मग्-फि-र-तव्-व अज्-रन् अज़ीमा (३५) व मा का-न लिमुअ्मिनिव्-व ला मुअ्मिनतिन् इज़ा क-ज़ल्लाहु व रसूलुहू अम्-रन् अय्यकू-न लहुमुल्-ख़ि-य-रतु मिन् अम्रिहिम्॥ व मय्यअ्-सिल्ला-ह व रसूलहू फ-कद् जल्-ल जलालम्-मुबीना॥ (३६)

ومن يقنت منكن لله ورسوله وتعمل صالحا نؤتها أجرها
مرتين وأعتدنا لها رزقا كريما ۝ يا نساء النبي لستن كأحد
من النساء إن اتقيتن فلا تخضعن بالقول فيطمع الذي في
قلبه مرض وقلن قولا معروفا ۝ وقرن في بيوتكن ولا
تبرجن تبرج الجاهلية الأولى وأقمن الصلاة وآتين
الزكاة وأطعن الله ورسوله إنما يريد الله ليذهب عنكم
الرجس أهل البيت ويطهركم تطهيرا ۝ واذكرن ما يتلى
في بيوتكن من آيات الله والحكمة إن الله كان لطيفا
خبيرا ۝ إن المسلمين والمسلمات والمؤمنين والمؤمنات
والقانتين والقانتات والصادقين والصادقات والصابرين والصابرات
والخاشعين والخاشعات والمتصدقين والمتصدقات والصائمين
والصائمات والحافظين فروجهم والحافظات والذاكرين الله
كثيرا والذاكرات أعد الله لهم مغفرة وأجرا عظيما ۝ وما
كان لمؤمن ولا مؤمنة إذا قضى الله ورسوله أمرا أن
يكون لهم الخيرة من أمرهم ومن يعص الله ورسوله فقد
ضل ضلالا مبينا ۝ وإذ تقول للذي أنعم الله عليه وأنعمت
عليه أمسك عليك زوجك واتق الله وتخفي في نفسك ما الله

★रु ४/१ आ ७

जाएगी और यह (बात) खुदा को आसान है। (३०) और जो तुम मे से खुदा और उस के रसूल की फरमावरदार रहेगी और नेक अमल करेगी, उस को हम दोगुना सवाब देगे और उसके लिए हम ने इज्जत की रोजी तैयार कर रखी है। (३१) ऐ पैगम्बर की बीवियो ! तुम और औरतो की तरह नही हो, अगर तुम परहेजगार रहना चाहती हो तो (किसी अजनबी शख्स से) नर्म-नर्म बाते न किया करो, ताकि वह शख्स जिसके दिल मे किसी तरह का मर्ज है, कोई उम्मीद (न) पैदा कर ले और (उन में) दस्तूर के मुताबिक बात किया करो। (३२) और अपने घरो मे ठहरी रहो और जिस तरह (पहले) जाहिलियत (के दिनों) मे इज्हारे जमाल करती थी, उस तरह जीनत न दिखाओ और नमाज पढती रहो और जकात देती रहो और खुदा और उस के रसूल की फरमावरदारी करती रहो। ऐ (पैगम्बर के) अह्ले बैत ! खुदा चाहता है कि तुम से ना पाकी (का मैल-कुचैल) दूर कर दे और तुम्हे बिल्कुल पाक-साफ कर दे। (३३) और तुम्हारे घरो मे जो खुदा की आयते पढी जाती है और हिक्मत (की बाते सुनायी जाती है) उन को याद रखो। बेशक खुदा लतीफ और बा-खबर है। (३४) ★

(जो लोग खुदा के आगे इताअत का सर झुकाने वाले हैं, यानी) मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और मोमिन मर्द और मोमिन औरते और फ़रमाबरदार मर्द और फरमाबरदार औरते और रास्तबाज़ (सच्चे) मर्द और रास्तबाज औरते और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरते और खुशूअ करने वाले मर्द और खुशूअ करने वाली औरते और खैरात करने वाले मर्द और खैरात करने वाली औरते और रोज़े रखने वाले मर्द और रोजे रखने वाली औरते और अपनी शर्मगाहो की हिफाजत करने वाले मर्द और हिफाजत करने वाली औरते और खुदा को ज्यादा से ज्यादा याद करने वाले मर्द और ज्यादा से ज़्यादा याद करने वाली औरते, कुछ शक नही कि उनके लिए खुदा ने बख्शिश और बडा बदला तैयार कर रखा है। (३५) और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत को हक नही है कि जब खुदा और उस का रसूल कोई अम्र मुकर्रर कर दें, तो वे इस काम मे अपना भी कुछ अख्तियार समझे और जो कोई खुदा और उस के रसूल की ना-फरमानी करे, वह खुला गुमराह

★रु ४/१ आ ७

व इज् तकूलु लिल्लजी अन्-अ-मल्लाहु अलैहि व अन्अम्-त अलैहि अम्सिक् अलै-क जौज-क वत्तकिल्ला-ह व तुख्फी फी नफ्सि-क मल्लाहु मुब्दीहि व तख्शन्ना-स ج वल्लाहु अ-हक्कु अन् तख्शाहु ط फ-लम्मा कजा जैदुम् - मिन्हा व-त्-रन् जव्वज्ना-क-हा लिकैला यकू-न अलल् - मुअ्मिनी-न ह-र-जुन् फी अज्वाजि अद्अियाइहिम् इजा कजौ मिन्हुन्-न व-त्-रन् व का-न अम्रुल्लाहि मफ्अूला (३७) मा का-न अ-लन्नबिय्यि मिन् ह-रजिन् फीमा फ-र-जल्लाहु लहू ط सुन्नतल्लाहि फिल्लजी-न खलौ मिन् कब्लु ط व का-न अम्-रुल्लाहि क-द्-रम् - मक्दू-र لا नि-(३८)-ल्लजी-न युबल्लिगू-न रिसालातिल्लाहि व यख्शौनहू व ला यख्शौ-न अ-ह-दन् इल्लल्ला - ह ط व कफा बिल्लाहि हसीबा (३९) मा का-न मुहम्मदुन् अबा अ-ह-दिम्-मिर्रिजालिकुम् व लाकिर्रसूलल्लाहि व खातमन्नबिय्यी-न ط व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीमा ★ (४०) या अय्युहल्लजी-न आमनुज्कुरुल्ला-ह जिक्रन् कसीरव- لا (४१) व सब्बिहूहु बुक्रतंव्-व असीला (४२) हुवल्लजी युसल्ली अलैकुम् व मलाइकतुहू लियुख्रि-जकुम् मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि ط व का-न बिलमुअ्मिनी-न रहीमा (४३) तहिय्यतुहुम् यौ-म यल्कौनहू सलामुन् ج व अ-अद्-द लहुम् अज्रन् करीमा (४४) या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदव्-व मुबश्शिरव्-व नजीरा لا (४५) व दाअियन् इलल्लाहि बिइज्निही व सिराजम्-मुनीरा (४६) व बश्शिरिल्-मुअ्मिनी-न बिअन्-न लहुम् मिनल्लाहि फज्-लन् कबीरा (४७) व ला तुतिअिल्-काफिरी-न वल्-मुनाफिकी-न व दअ् अजाहुम् व त-वक्कल् अलल्लाहि ط व कफा बिल्लाहि वकीला (४८) या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा न-कह्तुमुल्-मुअ्मिनाति सुम्-म तल्लक्तुमू-हुन्-न मिन् कब्लि अन् तमस्सूहुन्-न फमा लकुम् अलैहिन्-न मिन् इद्दतिन् तअ्-तद्दूनहा ج फमत्तिअूहुन्-न व सर्रिहूहुन्-न सराहन् जमीला (४९)

مبديه وتخشى الناس والله أحق أن تخشاه فلما قضى زيد
منها وطرا زوجناكها لكي لا يكون على المؤمنين حرج في أزواج
أدعيائهم إذا قضوا منهن وطرا وكان أمر الله مفعولا ﴿٣٧﴾ ما كان
على النبي من حرج فيما فرض الله له سنة الله في الذين
خلوا من قبل وكان أمر الله قدرا مقدورا ﴿٣٨﴾ الذين يبلغون
رسالات الله ويخشونه ولا يخشون أحدا إلا الله وكفى بالله
حسيبا ﴿٣٩﴾ ما كان محمد أبا أحد من رجالكم ولكن رسول الله و
خاتم النبيين وكان الله بكل شيء عليما ﴿٤٠﴾ يا أيها الذين آمنوا
اذكروا الله ذكرا كثيرا ﴿٤١﴾ وسبحوه بكرة وأصيلا ﴿٤٢﴾ هو الذي
يصلي عليكم وملائكته ليخرجكم من الظلمات إلى النور وكان
بالمؤمنين رحيما ﴿٤٣﴾ تحيتهم يوم يلقونه سلام وأعد لهم
أجرا كريما ﴿٤٤﴾ يا أيها النبي إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا و
نذيرا ﴿٤٥﴾ وداعيا إلى الله بإذنه وسراجا منيرا ﴿٤٦﴾ وبشر المؤمنين
بأن لهم من الله فضلا كبيرا ﴿٤٧﴾ ولا تطع الكافرين والمنافقين
ودع أذاهم وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ﴿٤٨﴾ يا أيها الذين
آمنوا إذا نكحتم المؤمنات ثم طلقتموهن من قبل أن تمسوهن
فما لكم عليهن من عدة تعتدونها فمتعوهن وسرحوهن سراحا

★रु ५/२ आ ६

हो गया।[1] (३६) और जब तुम उस शख्स से जिस पर खुदा ने एहसान किया और तुमने भी एहसान किया, यह कहते थे कि अपनी बीवी को अपने पास रहने दो और खुदा से डरो और तुम अपने दिल मे, वह बात छिपाते थे, जिस को खुदा जाहिर करने वाला था और तुम लोगो से डरते थे, हालाकि खुदा ही इसका ज्यादा हकदार है कि उस से डरो। फिर जब ज़ैद ने उस से (कोई) हाजत (मुताल्लिक) न रखी (यानी उसको तलाक दे दी), तो हम ने तुम से उस का निकाह कर दिया, ताकि मोमिनो के लिए उन के मुह बोले बेटो की बीवियो (के साथ निकाह करने के बारे) मे जब वह उन से (अपनी) हाजत (मुताल्लिक) न रखे, (यानी तलाक दे दे), कुछ तगी न रहे और खुदा का हुक्म वाकेअ हो कर रहने वाला था। (३७) पैगम्बर पर इस काम मे कुछ तंगी नही, जो खुदा ने उन के लिए मुकर्रर कर दिया, और जो लोग पहले गुजर चुके हैं, उनमे भी खुदा का यही दस्तूर रहा है और खुदा का हुक्म ठहर चुका था, (३८) और जो खुदा के पैगाम (ज्यो के त्यो) पहुचाते और उस से डरते और खुदा के सिवा किसी से नही डरते थे और खुदा ही हिसाब करने को काफी है। (३९) मुहम्मद तुम्हारे मर्दो मे से किसी के वालिद नही है, बल्कि खुदा के पैगम्बर और नबियो (की नुबूवत) की मुहर (यानी उस को खत्म कर देने वाले है) और खुदा हर चीज़ को जानता है। (४०)☆

ऐ ईमान वालो! खुदा का बहुत जिक्र किया करो। (४१) और सुबह और शाम उसकी पाकी बयान करते रहो। (४२) वही तो है, जो तुम पर रहमत भेजता है और उस के फरिश्ते भी, ताकि तुम को अधेरो से निकाल कर रोशनी की तरफ ले जाए और खुदा मोमिनो पर मेहरबान है। (४३) जिस दिन वह उन से मिलेगे उन का तोहफा (खुदा की तरफ से) सलाम होगा और उस ने उनके लिए बडा सवाब तैयार कर रखा है। (४४) ऐ पैगम्बर! हमने तुम को गवाही देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, (४५) और खुदा की तरफ बुलाने वाला और रोशन चिराग। (४६) और मोमिनो को खुशखबरी सुना दो कि उन के लिए खुदा की तरफ से बडा फज्ल है। (४७) और काफिरो और मुनाफिको का कहा न मानना और न उनके तक्लीफ देने पर नजर करना और खुदा पर भरोसा रखना और खुदा ही कारसाज काफी है। (४८) मोमिनो! जब तुम मोमिन औरतो से निकाह कर के उन को हाथ लगाने (यानी उन के पास जाने) से पहले तलाक दे दो, तो तुम को कुछ अख्तियार नही कि उन से इद्दत पूरी कराओ। उन को कुछ फायदा (यानी खर्च) दे कर अच्छी

---

१ इस आयत मे, जिन मिया-बीवी का ज़िक्र है, वह ज़ैद और ज़ैनब रज़ि० है, चुनाचे ज़ैद रज़ि० के नाम का अगली आयत मे खुले तौर पर भी ज़िक्र आया है। दोनो आयतो मे जिस वाकिए की तरफ इशारा है, वह इस तरह पर है कि ज़ैनब जनाबे रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी की बेटी थी और ज़ाहिर है कि एक ऊचे खानदान की लडकी थी। ज़ैद भी एक शरीफ अरब थे जो बचपन मे पकडे गये थे और जवानी के करीब, गुलामी की हालत मे मक्के मे आ कर बेचे गये। आहज़रत ने उन को खरीद लिया और आज़ाद कर के अपने यहा रखा। ज़ैद रज़ि० मे, इस के अलावा कि उन पर गुलाम आज़ाद का लफ़्ज़ बोला जाता हो और कोई बुराई न थी और वह आहज़रत सल्ल० की निगाह मे बहुत इज्जत रखते थे, यहा तक कि आप ने उन को लयपालक बना लिया। आप जानते थे कि गुलाम हो कर बेचे जाने से असली शराफत मे फर्क नही आ सकता—

हज़ार बार जो यूसुफ बिके गुलाम नही।

तो आप ने इरादा फरमाया कि उन का ज़ैनब के साथ निकाह कर दें, ताकि आप के खानदान मे उन की इज्जत ज्यादा हो, साथ ही यह भी मक्सूद था कि गुलाम आज़ाद इस्लाम मज़हब मे छोटे न समझे जाए और उन की

(शेष पृष्ठ ५८५ पर)

★रु ५/२ आ ६

या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अह्लल्ना ल-क अज़्वा-ज-कल्लाती आतै-त उजूरहुन्-न व मा म-ल-कत् यमीनु-क मिम्मा अफ़ा-अल्लाहु अलै-क व बनाति अम्मि-क व बनाति अम्माति-क व बनाति ख़ालि-क व बनाति ख़ालातिकल्लाती हाजर्-न म-अ-क व्मर्-र-अतम् - मुअ्मि-न-तन् इ व्व-ह-बत् नफ़्सहा लिन्नबिय्यि इन् अरादन्नबिय्यु अय्यस्तन्कि-हहा ق ख़ालि-स-तल्ल - क मिन् दूनिल् - मुअ्मिनी-न ط कद् अ़लिम्ना मा फ़-रज्ना अलैहिम् फ़ी अज़्वाजिहिम् व मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् लिकैला यकू-न अलै-क ह-र-जुन् ط व कानल्लाहु ग़फ़ूरर् - रहीमा (५०) तुर्जी मन् तशाउ मिन्हुन्-न व तुअ्वी इलै-क मन् तशाउ ط व मनिब्तग़ै-त मिम्मन् अ-ज़ल-त फ़ला जुना-ह अलै-क ط ज़ालि-क अद्ना अन्तकर्-र अअ्-युनु-हुन्-न व ला यह्ज़न्-न व यर्ज़ै-न बिमा आतैतहुन्-न कुल्लुहुन्-न ط वल्लाहु यअ् - लमु मा फ़ी कुलूबिकुम् ط व कानल्लाहु अ़लीमन् हलीमा (५१) ला यहिल्लु ल-कन्निसाउ मिम्बअ्-दु व ला अन् त-बद्-द-ल बिहिन्-न मिन् अज़्-वाजिव्-व लौ अअ्-ज-ब-क हुस्नुहुन्-न इल्ला मा म-ल-कत् यमीनु-क ط व कानल्-लाहु अला कुल्लि शैइर्-रकीबा ★ (५२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्ख़ुलू बुयूतन्नबिय्यि इल्ला अंय्युअ्-ज़-न लकुम् इला तआमिन् ग़ै-र नाज़िरी-न इनाहु ला व लाकिन् इज़ा दुईतुम् फ़द्-ख़ुलू फ़इज़ा तअिम्तुम् फ़न्तशिरू व ला मुस्तअ्-निसी-न लि-हदीसिन् ط इन्-न ज़ालिकुम् का-न युअ्ज़िन्नबिय्-य फ़-यस्तह्यी मिन्कुम् वल्लाहु ला यस्तह्यी मिनल् - हक़्कि ط व इज़ा स-अल्तुमूहुन्-न मताअन् फ़स्अलू - हुन् - न मिंव्वराइ हिजाबिन् ط ज़ालिकुम् अत्हरु लिकुलूबि - कुम् व कुलूबिहिन्-न ط व मा का-न लकुम् अन् तुअ्ज़ू रसूलल्लाहि व ला अन् तन्किहू अज़्वाजहू मिम्बअ्-दिही अ-ब-दन् ط इन्-न ज़ालिकुम् का-न अिन्दल्लाहि अज़ीमा (५३)

٣٣٩

جميلا ۝ يايها النبي انا احللنا لك ازواجك التي اتيت اجورهن
وما ملكت يمينك مما افاء الله عليك وبنت عمك وبنت
عمتك وبنت خالك وبنت خلتك التي هاجرن معك وامراة
مؤمنة ان وهبت نفسها للنبي ان اراد النبي ان يستنكحها
خالصة لك من دون المؤمنين قد علمنا ما فرضنا عليهم
في ازواجهم وما ملكت ايمانهم لكيلا يكون عليك حرج
وكان الله غفورا رحيما ۝ ترجي من تشاء منهن وتؤي اليك
من تشاء ومن ابتغيت ممن عزلت فلا جناح عليك ذلك
ادنى ان تقر اعينهن ولا يحزن ويرضين بما اتيتهن
كلهن والله يعلم ما في قلوبكم وكان الله عليما حليما ۝
لا يحل لك النساء من بعد ولا ان تبدل بهن من ازواج
ولو اعجبك حسنهن الا ما ملكت يمينك وكان الله على
كل شيء رقيبا ۝ يايها الذين امنوا لا تدخلوا بيوت النبي
الا ان يؤذن لكم الى طعام غير نظرين انه ولكن اذا دعيتم
فادخلوا فاذا طعمتم فانتشروا ولا مستانسين لحديث ان ذلكم
كان يؤذي النبي فيستحي منكم والله لا يستحي من الحق واذا
سالتموهن متاعا فسئلوهن من وراء حجاب ذلكم اطهر

★रु ६/३ आ १२

तरह से रुख्सत कर दो। (४६) ऐ पैगम्बर ! हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीविया, जिन को तुम ने उन के मह्र दे दिए है, हलाल कर दी है और तुम्हारी लौंडिया, जो खुदा ने तुम को (काफिरो से गनीमत के माल के तौर पर) दिलवायी है और तुम्हारे चचा की वेटिया और 'तुम्हारी फूफियो की वेटिया और तुम्हारे मामुओ की बेटिया और तुम्हारी खालाओ की बेटिया, जो तुम्हारे साथ वतन छोड कर आयी है, सब हलाल है और कोई मोमिन औरत अगर अपने आप पैगम्बर को बख्श दे (यानी मह्र लेने के बगैर निकाह मे आना चाहे) बशर्ते कि पैगम्बर भी उस से निकाह करना चाहे, (वह भी हलाल है, लेकिन यह इजाजत) (ऐ मुहम्मद !) खास तुम ही को है, सब मुसलमानो को नही, हम ने उन की बीवियो और लौडियो के बारे मे जो (मह्र, अदा करने के लिए जरूरी) मुकर्रर कर दिया है, हम को मालूम है (यह) इस लिए (किया गया है) कि तुम पर किसी तरह की तगी न रहे और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (५०) (और तुम को यह भी अख्तियार है कि) जिस बीवी को चाहो, अलग रखो और जिमे चाहो अपने पास रखो और जिसको तुम ने अलाहिदा कर दिया हो, अगर उस को फिर अपने पास तलब कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नही। यह (इजाजत) इस लिए है कि उन की आखे ठडी रहे और वे गमनाक न हो और जो कुछ तुम उनको दो, उसे लेकर सब खुश रहे और जो कुछ तुम्हारे दिलो मे है, खुदा उसे जानता है और खुदा जानने वाला (और) बुर्दबार (हलीम) है। (५१) (ऐ पैगम्बर !) इन के सिवा और औरते तुम को जायज नही और न यह कि इन बीवियो को छोड कर और बीविया कर लो, चाहे उन का हुस्न तुम को (कैसा ही) अच्छा लगे, मगर वह, जो तुम्हारे हाथ का माल है, (यानी लौडियो के बारे मे) तुम को अख्तियार है और खुदा हर चीज पर निगाह रखता है। (५२) ☆

मोमिनो ! पैगम्बर के घरो मे न जाया करो, मगर इस सूरत मे कि तुम को खाने के लिए इजाजत दी जाए और उस के पकने का इन्तिज़ार भी न करना पडे, लेकिन जब तुम्हारी दावत की जाए तो जाओ और जब खाना खा चुको, तो चल दो और बातो मे जी लगा कर न बैठ रहो। यह बात पैगम्बर को तक्लीफ देती थी और वह तुम मे शर्म करते थे, (और कहते नही थे), लेकिन खुदा सच्ची बात के कहने मे शर्म नही करता और जब पैगम्बर की बीवियो से कोई सामान मागो, तो पर्दे के बाहर मागो। ये तुम्हारे और उन के दोनो के दिलो के लिए बहुत पाकीज़गी की बात है और तुम को यह मुनासिब नही कि पैगम्बरे खुदा को तक्लीफ दो और न यह कि उन की बीवियो से कभी उनके बाद निकाह करो। बेशक यह खुदा के नजदीक बडा (गुनाह का काम) है। (५३) अगर तुम

(पृष्ठ ६७३ का शेष)

इज्ज़त भी आज़ादो की तरह ही की जाए यानी आज़ाद और गुलाम मे जो अरब वाले फर्क करते है, वह मुसलमानो मे न हो, चुनाचे इन ही मामलो को सामने रख कर आप ने ज़ैद का निकाह ज़ैनब से कर दिया। ज़ैनब आखिर औरत थी और पुराने ख्याल उन के दिल मे बैठे हुए थे, उन्हो ने हमेशा ज़ैद से अपने को अफ्ज़ल समझा और उन को अपने से कमतर समझा। ये बातें ऐसी थी कि मिया-बीवी मे मुवफकत पैदा नही होने देती थी। आखिर ज़ैद इस बात पर मजबूर हो गये कि ज़ैनब को तलाक दे दें। यह हालत देख कर आहजरत को बहुत फिक्र हो गया। आप दिल से तो यही बात चाहते थे कि ज़ैनब रज़ि० ज़ैद रज़ि० ही की बीवी रहे और जिस रिश्ते से एक बड़ी इस्लाह मक्सूद थी, वह बाकी रहे। इसी लिए आप ज़ैद को समझाते थे कि मिया खुदा का खौफ करो और ज़ैनब को तलाक देने से बाज रहो, लेकिन आप को यह भी डर था कि लोग कहेंगे, कैसा बे-जोड रिश्ता करा दिया था

(शेष पृष्ठ ६७७ पर)

इन् तुब्दू शैअन् औ तुख्फ़ूहु फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिकुल्लि शैइन् अलीमा (५४) ला जुना-ह अ़लैहिन्-न फ़ी आबाइहिन्-न व ला अब्नाइहिन्-न व ला इख्वानिहिन्-न व ला अब्नाइ इख्वानिहिन्-न व ला अब्नाइ अ-ख़ - वातिहिन्-न व ला निसाइहिन्-न व ला मा म-लकत् ऐमानुहुन्-न ७ वत्तक़ीनल्ला - ह ♭ इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा (५५) इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू युसल्लू-न अ़लन्नबिय्यि ♭ या अय्युहल्लज़ी-न आमनू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमा (५६) इन्नल्लज़ी - न युअ्ज़ूनल्ला-ह व रसूलहू ल-अ-नहुमुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल् - आख़िरति व अ-अद्-द लहुम् अ़ज़ाबम्-मुहीना (५७) वल्लज़ी-न युअ्ज़ूनल् - मुअ्मिनी-न वल् - मुअ्मिनाति बिग़ैरि मक्त-सबू फ़-क़दिह्-त-मलू बुह्तानव् - व इस्मम् - मुबीना ★ (५८) या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लि-अज़्वाजि-क व बनाति-क व निसाइल्-मुअ्मिनी-न युद्नी-न अ़लैहिन-न मिन् जलाबीबिहिन-न ♭ ज़ालि-क अद्ना अंय्युअ्-रफ़-न फ़ला युअ्ज़ै-न ♭ व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा (५९) लइल्लम् यन्तहिल् - मुनाफ़िक़ू - न वल्लज़ी - न फ़ी क़ुलूबिहिम् म - र - जुंव्वल्-मुर्जिफ़ू-न फ़िल्मदीनति ल-नुग़्रियन्न-क बिहिम् सुम्-म ला युजावि-रू-न-क फ़ीहा इल्ला क़लीलम्- (६०) मल्अूनी - न ७ ∴ ऐनमा सुक़िफ़ू उख़िज़ू व क़ुत्तिलू तक़्तीला (६१) सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी - न ख़लौ मिन् क़ब्लु ७ व लन् तजि - द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला ● (६२)

मंज़िल ५

★रु ७/४ आ ६ ● रुब्अ़ १/४ ∴ मु अि मु ता रा.१२

किसी चीज़ को जाहिर करो या उसको छिपाए रखो, तो (याद रखो कि) ख़ुदा हर चीज़ से बा-ख़बर है। (५४) औरतो पर अपने बापो से (पर्दा न करने मे) कुछ गुनाह नही और न अपने बेटो से और न अपने भाइयो से और न अपने भतीजो से और न अपने भाजो से, न अपनी (किस्म की) औरतो से और न लौडियो से और (ऐ औरतो !) ख़ुदा से डरती रहो। बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (५५) ख़ुदा और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर पर दरूद भेजते है। मोमिनो ! तुम भी पैग़म्बर पर दरूद और सलाम भेजा करो। (५६) जो लोग ख़ुदा और उस के पैग़म्बर को रंज पहुंचाते हैं, उन पर ख़ुदा दुनिया और आख़िरत मे लानत करता है और उन के लिए उस ने ज़लील करने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (५७) और जो लोग मोमिन मर्दो और मोमिन औरतो को ऐसे काम (की तोहमत) से जो उन्होने न किया हो, तक्लीफ़ दे, तो उन्होने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने सर पर रखा। (५८)★

ऐ पैग़म्बर ! अपनी बीवियो और बेटियो और मुसलमानो की औरतो से कह दो कि (बाहर निकला करें तो) अपने (मुहो) पर चादर लटका (कर घूघट निकाल) लिया करे। यह बात उनके लिए पहचान (और फ़र्क़ की) वजह होगी तो कोई उन को तक्लीफ़ न देगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५९) अगर मुनाफ़िक़ और वे लोग, जिन के दिलो मे मर्ज़ है और जो मदीने (के शहर) में बुरी-बुरी ख़बरे उड़ाया करते हैं, (अपने किरदार से) रुकेंगे नही, तो हम तुम को उनके पीछे लगा देगे, फिर वहा तुम्हारे पडोस मे न रह सकेंगे, मगर थोडे दिन। (६०)∴(वह भी फिटकारे हुए)∴जहा पाये गये, पकडे गये और जान से मार डाले गये। (६१) जो लोग पहले गुज़र चुके हैं, उन के बारे मे भी ख़ुदा की यही आदत रही है, और तुम ख़ुदा की आदत मे तब्दीली न

(पृष्ठ ६७५ का शेष)

जो कायम न रह सका। ख़ुदा ने फ़रमाया कि इस मामले मे लोगो के डरने की क्या ज़रूरत थी, डर तो सिर्फ़ हम से चाहिए। लोगों का दस्तूर है कि सुधार के मामलो मे ही तरह-तरह की बातें किया करते हैं, इस के अलावा आप को यह फ़िक्र लग गया कि अगर इन मिया-बीवी मे अलहिदगी वाक़ेअ हुई, तो ज़ैनब रज़ि० के बारे मे बडी मुश्किल पेश आएगी कि ज़ैद की बीवी बनी रहने की वजह से लोग ज़ैनब के एहतराम व अदब मे कमी करेंगे और यह बात आप को मंज़ूर न थी और हो सकती भी न थी। जब आप ज़ैद रज़ि० की इज़्ज़त करते और लोगो से करानी चाहते थे, तो ज़ैनब रज़ि० की तह्क़ीर क्योकर गवारा कर सकते। आख़िर मे ज़ैद और ज़ैनब रज़ि० का ताल्लुक ख़त्म हो कर रहा।

इस मौके पर ख़ुदा को तीन और सुधार करने थे—एक यह कि इस्लाम मे लयपालक का वह हक न समझा जाए, जो अपने बेटे का है और दोनो किस्म के ताल्लुकात मे जो फ़र्क़ है, वह ज़ाहिर कर दिया जाए। दूसरे यह कि मुह बोले लडको की औरतें सगे लडको की औरतो की तरह हराम न समझी जाए। चुनाचे ख़ुदा के हुक्म से आंहज़रत सल्ल० खुद हज़रत ज़ैनब रज़ि० से निकाह कर लिया।

लयपालक बनाना एक पुरानी रस्म है और इस्लाम ने इस को जायज़ रखा है, लेकिन लयपालक बेटो को सगे बेटो के-से हुक़ूक़ नही दिए और न उन की औरतो से निकाह करना सगे बेटो की औरतो के साथ निकाह करने के बराबर समझा, तीसरे यह कि गुलामो की तलाक दी हुई औरतो की हैसियत, जिन को शरीफ़ अरब वाले अपनी बीवी बनाने से झिझकते थे, वही करार दी जाए जो आज़ादो की तलाक दी हुई औरतो का है, यानी उन से बे-झिझक निकाह कर लिया जाए और ये तीनो सुधार आंहज़रत सल्ल० ही की बरकतो वाली ज़ात से शुरू हुआ।

★रु ७/४ आ ६∴मु अ़ि मु त क १२

यस्अलुकन्नासु अनिस्साअति कुल् इन्नमा अिल्मुहा अिन्दल्लाहि व मा युद्‌री-क ल-अल्लस्सा-अ-त तकूनु करीबा (६३) इन्नल्ला-ह ल-अ-नल्-काफिरी-न व अ-अद्-द लहुम् सअीरा (६४) खालिदी-न फीहा अ-ब-दन् ला यजिदू-न वलिय्यव्-व ला नसीरा (६५) यौ-म तुकल्लबु वुजूहुहुम् फिन्नारि यकूलू-न यालैतना अतअ्-नल्ला-ह व अतअ्-नर्रसूला (६६) व कालू रब्बना इन्ना अतअ्-ना सा-द-तना व कु-बरा-अना फ-अ-जल्लूनस्-सबीला (६७) रब्बना आतिहिम् ज़िअ-फ़ैनि मिनल्-अजाबि वल्-अन्-हुम् लअ् - नन् कबीरा ★ (६८) या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तकूनू कल्लजी-न आजौ मूसा फ-बर्र-अ-हुल्लाहु मिम्मा कालू व का - न अिन्दल्लाहि वजीहा (६९) या अय्युहल्लजी - न आमनुत्तकुल्ला-ह व कूलू कौलन् सदीदय्-(७०) -युस्लिह लकुम् अअ् - मालकुम् व यग्फिर् लकुम् जुनूबकुम् व मय्युतिअिल्ला-ह व रसूलहू फ-कद् फा-ज फौजन् अजीमा (७१) इन्ना अ-रज्नल् अमान-त अलस्समावाति वल्अर्जि वल्जिबालि फ-अबै-न अय्यह्मिलनहा व अश्फक्-न मिन्हा व ह-म-ल-हल्-इन्सानु इन्नहू का-न जलूमन् जहूलल्-(७२) -लि - युअज्जिबल्लाहुल् - मुनाफिकी - न वल्-मुनाफिकाति वल् - मुश्रिकी-न वल् - मुश्रिकाति व यतूबल्लाहु अलल्-मुअ्मिनी-न वल् - मुअ्मिनाति व कानल्लाहु गफूरर् - रहीमा ★ (७३)

يسئلك الناس عن الساعة قل انما علمها عند الله وما
يدريك لعل الساعة تكون قريبا ۝ ان الله لعن الكفرين
واعد لهم سعيرا ۝ خلدين فيها ابدا لا يجدون وليا و
لا نصيرا ۝ يوم تقلب وجوههم في النار يقولون يليتنا اطعنا
الله واطعنا الرسولا ۝ وقالوا ربنا انا اطعنا سادتنا وكبراءنا
فاضلونا السبيلا ۝ ربنا اتهم ضعفين من العذاب والعنهم
لعنا كبيرا ۝ يايها الذين امنوا لا تكونوا كالذين اذوا موسى
فبراه الله مما قالوا وكان عند الله وجيها ۝ يايها الذين
امنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا ۝ يصلح لكم اعمالكم
ويغفر لكم ذنوبكم ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا
عظيما ۝ انا عرضنا الامانة على السموت والارض والجبال فابين ان
يحملنها واشفقن منها وحملها الانسان انه كان ظلوما جهولا ۝
ليعذب الله المنفقين والمنفقت والمشركين والمشركت ويتوب
الله على المؤمنين والمؤمنت وكان الله غفورا رحيما ۝
سورة سبا مكية وهي اربع وخمسون اية وست ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
الحمد لله الذي له ما في السموت وما في الارض وله الحمد

३४ सूरतु स-बइन् ५८

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३६३६ अक्षर, ८९६ शब्द, ५४ आयते और ६ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी लहू मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि व लहुल्हम्दु फिल्आखिरति व हुवल्-हकीमुल् - खबीर (१)

★रु ८/५ आ १० ★रु. ९/६ आ ५

पाओगे●(६२) लोग तुम से कियामत के वारे में पूछते है (कि कव आएगी ?) कह दो कि इसका इल्म खुदा ही को है और तुम्हे क्या मालूम है, शायद कियामत करीव ही आ गयी हो। (६३) वेशक खुदा ने काफिरो पर लानत की है और उनके लिए (जहन्नम की) आग तैयार कर रखी है। (६४) उस मे हमेशा-हमेशा रहेगे, न किसी को दोस्त पाएगे और न मददगार। (६५) जिस दिन उन के मुह आग मे उलटाए जाए, कहेगे, ऐ काश! हम खुदा की फरमावरदारी करते और (अल्लाह के) रसूल का हुक्म मानते। (६६) और कहेगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमने अपने सरदारो और बडे लोगो का कहा माना, तो उन्होने हमको रास्ते से गुमराह कर दिया। (६७) ऐ हमारे परवरदिगार! उनको दोगुना अजाव दे और उन पर वडी लानत कर। (६८)★

मोमिनो! तुम उन लोगो जैसे न होना, जिन्होने मूसा को (ऐब लगा कर) रज पहुचाया, तो खुदा ने उन को वे-ऐब सावित किया और वह खुदा के नजदीक आबरू वाले थे। (६९) मोमिनो! खुदा से डरा करो और बात सीधी कहा करो। (७०) वह तुम्हारे सब अमाल दुरुस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और जो शख्स खुदा और उसके रसूल की फरमाबरदारी करेगा, तो बेशक बडी मुराद पाएगा। (७१) हमने अमानत (के बोझ) को आसमानो और ज़मीन पर पेश किया तो उन्होंने उस के उठाने से इन्कार किया और उस से डर गये और इसान ने उसको उठा लिया। बेशक वह ज़ालिम[1] और जाहिल था।[1] (७२) ताकि खुदा मुनाफिक मर्दो और मुनाफिक औरतो और मुश्रिक मर्दो और मुश्रिक औरतो को अजाव दे और खुदा मोमिन मर्दो और मोमिन औरतो पर मेहरबानी करे और खुदा तो बख्शने वाला मेहरबान है। (७३)★

३४ सूरः सबा ५८

सूर. सवा मक्की है और इस मे चौवन आयते और छ रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ खुदा ही को (मुनासिब) है, (जो सब चीजो का मालिक है, यानी) वह कि जो कुछ आसमानो मे है और जो कुछ ज़मीन मे है, सव उसी का है और आख़िरत मे भी उसी की तारीफ

---

१ अमानत से मुराद अल्लाह् तआला के अह्काम और फराइज है, जिन के उठाने मे आसमान ने भी अपनी बे-बसी ज़ाहिर की और ज़मीन और पहाडो ने भी, मगर इन्सान ने अपनी ताकत तो देखी नही, कहा कि मैं उस बोझ को उठाऊगा, नादानी से उस को उठा तो लिया, लेकिन उठाते ही खुदा के हुक्म के ख़िलाफ अमल करने लगा और अल्लाह् तआला की तरफ से गुस्से का शिकार हुआ। जब समझा कि मैं ने वडी नादानी की और अपने हक मे वडा ज़ुल्म किया और लगा खुदा से माफी मागने। इस मुट्ठी भर खाक को देखो और उस की ताकत को देखो और उस की हिम्मत को देखो। खुदा की अमानत को कुबूला तो ज़ाहिर हो गया 'इन्नहू का-न जलूमन जहूला'

● रुकूअ् १/४ ★रु ८/५ आ १० ★रु ९/६ आ ५

यअ्-लमु मा यलिजु फ़िल्अर्जि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअ्-रुजु फ़ीहा ط व हुवर्-रहीमुल्-ग़फ़ूर (२) व क़ालल्लजी-न क-फ़रू ला तअ् - तीनस्साअतु ط कुल् बला व रब्बी ल - तअ्तियन्नकुम् لا आलिमिल्-ग़ैबि ج ला यअ् - ज़ुबु अन्हु मिस्कालु ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्जि व ला अस्ग़रु मिन् ज़ालि-क व ला अक्बरु इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीनिल्- لا (३) -लि-यज्ज़ियल् - लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ط उलाइ - क लहुम् मग़-फ़ि-रतु व-व रिज़्कुन् करीम (४) वल्लज़ी-न सऔ फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न उलाइ - क लहुम् अज़ाबुम् - मिर्रिज्ज़िन् अलीम (५) व य-रल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्मल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क हुवल्-हक़्-क़ لا व यह्दी इला सिरातिल्-अज़ीज़िल्-हमीद (६) व कालल्लज़ी-न क-फ़रू हल् नदुल्लुकुम् अला रजुलिंय्युनब्बिउकुम् इज़ा मुज़्ज़िक़्तुम् कुल् - ल मुमज़्ज़किन् لا इन्नकुम् लफ़ी ख़ल् - क़िन् जदीद ج (७) अफ़्तरा अलल्लाहि कज़िबन् अम् बिही जिन्नतुन् ط बलिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति फ़िल् - अज़ाबि वज़्ज़लालिल्-बअीद (८) अ-फ़-लम् यरौ इला मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि ط इन् न - शअ् नख़्सिफ़् बिहिमुल्अर् - ज औ नुस्क़ित् अलैहिम् कि-स-फ़म्-मिनस्समाइ ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल्-लिकुल्लि अ़ब्दिम् - मुनीब ★ (९) व ल-क़द् आतैना दावू - द मिन्ना फ़ज़्-लन् ط या जिबालु अव्विबी म-अहू वत्तै-र ج व अलन्ना लहुल्-हदीद لا (१०)

ومن یقنت ٢٢ — ٤٣٢ — سبأ ٣٤

فِي الْآخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا
يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ
الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ
بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَالِمِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ
فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ
إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ
أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا
مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزٍ أَلِيمٌ ۝ وَيَرَى الَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقَّ وَيَهْدِي إِلَىٰ
صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ
رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ
جَدِيدٍ ۝ أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ۝ أَفَلَمْ يَرَوْا
إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنْ
نَشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا ع
فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ۝ أَنِ

منزل

★रु १/७ आ ९

है और वह हिक्मत वाला (और) खबरदार है। (१) जो कुछ जमीन मे दाखिल होता है और जो उसमें से निकलता है और जो आसमान से उतरता है और जो उस पर चढता है, सब उसको मालूम है और वह मेहरबान (और) बख्शने वाला है। (२) और काफिर कहते है कि (कियामत की) घडी हम पर नही आएगी। कह दो, क्यो नही (आएगी), मेरे परवरदिगार की कसम ! वह तुम पर जरूर आ कर रहेगी, (वह परवरदिगार) गैब का जानने वाला (है), जर्रा भर चीज़ भी उस से छिपी नही, (न) आसमानो मे और न जमीन मे और कोई चीज़ उस से छोटी या बड़ी नही, मगर रोशन किताब मे (लिखी हुई) है। (३) इस लिए कि जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को बदला दे। यही है, जिन के लिए बख्शिश और इज्जत की रोजी है। (४) और जिन्होने हमारी आयतो मे कोशिश की कि हमे हरा दें, उन के लिए सख्त दर्द देने वाले अज़ाब की सज़ा है। (५) और जिन लोगो को इल्म दिया गया है, वे जानते हैं कि जो (कुरआन) तुम्हारे परवर-दिगार की तरफ से तुम पर नाजिल हुआ है, वह हक है और गालिब (और) तारीफ के काबिल (खुदा) का रास्ता बताता है। (६) और काफिर कहते है कि भला हम तुम्हे ऐसा आदमी बताए, जो तुम्हे खबर देता है कि जब तुम (मर कर) बिल्कुल पारा-पारा हो जाओगे, तो नए सिरे से पैदा होगे। (७) या तो उस ने खुदा पर झूठ बाध लिया है, या उसे जुनून है। बात यह है कि जो लोग आखिरत पर ईमान नही रखते, वह आफत और परले दर्जे की गुमराही मे (पडे) हैं। (८) क्या उन्होने उस को नही देखा, जो उन के आगे और पीछे है यानी आसमान और ज़मीन। अगर हम चाहे, तो उनको ज़मीन मे धंसा दे या उन पर आसमान के टुकडे गिरा दे। इस मे हर बन्दे के लिए, जो रुजूअ करने वाला है, एक निशानी है। (९) ★

और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बरतरी बख्शी थी। ऐ पहाडो ! इन के साथ तस्बीह करो और परिंदो को (उन के वश मे कर दिया) और उनके लिए हमने लोहे को नर्म कर दिया (१०)

★रु १/७ आ ९

अनिअ-मल् साबिगातिव्-व कद्दिर् फ़िस्सर्दि वअ्-मलू सालिहन् ॥ इन्नी बिमा तअ्-मलू-न बसीर (११) व लि-सुलैमानर्-री-ह़ गुदुव्वुहा शह्रुव्-व रवाहुहा शह्रुन् ॥ व अ-सल्ना लहू अै नल्क़ित्रि ॥ व मिनल्जिन्नि मय्यअ्-मलु बै-न यदैहि बिइज्नि रब्बिही ॥ व मय्यजिग् मिन्हुम् अन् अम्रिना नुजिक्हु मिन् अज़ाबिस्सओर (१२) यअ्-मलू-न लहू मा यशाउ मिम्-महारी-ब व तमासी-ल व जिफ़ानिन् कल्जवाबि व कुदूरिर्-रासियातिन् ॥ इअ्-मलू आ-ल दावू-द शुक्-रन् ॥ व कलीलुम्-मिन् अिबादि-यश-शकूर (१३) फ-लम्मा कज़ैना अलैहिल्-मौ-त मा दल्लहुम् अला मौतिही इल्ला दाब्बतुल्-अर्जि तअ्कुलु मिन्स-अ-तहू ॥ फ-लम्मा ख़र्-र त-बय्यनतिल्-जिन्नु अल्लौ कानू यअ्-लमूनल्-गै-ब मा लबिसू फ़िल्-अज़ाबिल्-मुहीन ॥ (१४) ल-कद् का-न लि-स-बइन् फी मस्कनिहिम् आयतुन् ॥ जन्नतानि अय्यमीनिव-व शिमालिन् ॥ कुलू मिर्रिज्कि रब्बिकुम् वश्कुरू लहू ॥ बल्दतुन् तय्यिबतुव्-व रब्बुन् गफूर (१५) फ-अअ्-रजू फ अर्सल्ना अलैहिम् सैलल्-अरिमि व बद्दल्नाहुम् बिजन्नतैहिम् जन्नतैनि ज़वातै उकुलिन् ख़म्-तिव्-व अस्लिव-व शैइम्मिन् सिद्रिन् कलील (१६) ज़ालि-क जज़ैना-हुम् बिमा क-फरू ॥ व हल् नुजाज़ी इल्लल्-कफूर (१७) व ज-अल्ना बैनहुम् व बैनल्-कुरल्लती बारक्ना फीहा कुरन् ज़ाहिरतव्-व कद्दर्ना फीहस्सै-र सीरू फीहा लयालि-य व अय्यामन् आमिनीन (१८) फ कालू रब्बना बाअिद् बै-न अस्फारिना व ज़-लमू अन्फुसहुम् फ-ज-अल्नाहुम् अहादी-स व मज्जक़्ना-हुम् कुल्-ल मुमज्जकिन् ॥ इन्-न फी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (१९)

ومن يقنت ٢٢ — ٦٤٣ — سبأ ٣٤

اعمل سابغات وقدر في السرد واعملوا صالحا إني بما تعملون
بصير ۝ ولسليمان الريح غدوها شهر ورواحها شهر وأسلنا
له عين القطر ومن الجن من يعمل بين يديه بإذن ربه
ومن يزغ منهم عن أمرنا نذقه من عذاب السعير ۝ يعملون
له ما يشاء من محاريب وتماثيل وجفان كالجواب وقدور
راسيات اعملوا آل داود شكرا وقليل من عبادي الشكور ۝
فلما قضينا عليه الموت ما دلهم على موته إلا دابة الأرض
تأكل منسأته فلما خر تبينت الجن أن لو كانوا يعلمون
الغيب ما لبثوا في العذاب المهين ۝ لقد كان لسبإ في
مسكنهم آية جنتان عن يمين وشمال كلوا من رزق ربكم
واشكروا له بلدة طيبة ورب غفور ۝ فأعرضوا فأرسلنا
عليهم سيل العرم وبدلناهم بجنتيهم جنتين ذواتي أكل
خمط وأثل وشيء من سدر قليل ۝ ذلك جزيناهم بما
كفروا وهل نجازي إلا الكفور ۝ وجعلنا بينهم وبين القرى
التي باركنا فيها قرى ظاهرة وقدرنا فيها السير سيروا فيها
ليالي وأياما آمنين ۝ فقالوا ربنا باعد بين أسفارنا وظلموا
أنفسهم فجعلناهم أحاديث ومزقناهم كل ممزق إن في

कि कुशादा जिरहे बनाओ और कड़ियो को अन्दाजे से जोडो और नेक अमल करो, जो अमल तुम करते हो, मैं उन को देखने वाला हू। (११) और हवा को (हम) ने सुलेमान का तावेअ कर दिया था, उस की सुबह की मंज़िल एक महीने की राह होती और शाम की मजिल भी महीने भर की होती और उन के लिए हम ने ताबे का चश्मा बहा दिया था और जिन्नो मे से ऐसे थे, जो उनके परवरदिगार के हुक्म से उनके आगे काम करते थे और जो कोई उनमें से हमारे हुक्म से फिरेगा, उस को हम (जहन्नम की) आग का मजा चखाएगे। (१२) वे जो चाहते, ये उन के लिए बनाते यानी किले और मुजस्समे[1] और (बडे-बडे) लगन जैसे तलाव और देगे, जो एक ही जगह रखी रहे। ऐ दाऊद की औलाद ! (मेरा) शुक्र करो और मेरे बदो मे शुक्रगुजार थोड़े है। (१३) फिर जब हम ने उनके लिए मौत का हुक्म दिया, तो किसी चीज़ से उनका मरना मालूम न हुआ, मगर घुन के कीडे से, जो उनकी लाठी को खाता रहा। जब लाठी गिर पडी, तब जिन्नो को मालूम हुआ (और कहने लगे) कि अगर वे गैब जानते होते तो ज़िल्लत की तक्लीफ मे न रहते। (१४) सबा (वालो) के लिए उन के रहने-सहने की जगह मे एक निशानी थी (यानी) दो बाग, (एक) दाहिनी तरफ और (एक) बायी तरफ। अपने परवरदिगार का दिया खाओ और उसका शुक्र करो। (यहा तुम्हारे रहने को यह) पाकीजा शहर है और (वहा बख्शने को) खुदा-ए-गफ्फार। (१५) तो उन्होने (शुक्रगुज़ारी से) मुह फेर लिया, पस हम ने उन पर जोर का सैलाब (बाढ) छोड दिया और उन्हे उन के बागो के बदले दो ऐसे बाग दिए, जिन के मेवे बद-मजा थे और जिन मे कुछ तो झाऊ था और थोडी-सी बेरिया। (१६) यह हमने उन की ना-शुक्री की उन को सजा दी और हम सजा ना-शुक्रे ही को दिया करते है। (१७) और हमने उन के और (शाम मे) उन की बस्तियो के दर्मियान, जिन मे हमने बरकत दी थी, (एक दूसरे से मिले हुए) दीहात बनाए थे, जो सामने नज़र आते थे और उन मे आने-जाने का अन्दाज़ा मुकर्रर कर दिया था कि रात-दिन बे-खौफ व खतर चलते रहो, (१८) तो उन्होने दुआ की कि ऐ परवरदिगार ! हमारे सफ़रो मे दूरी (और लबाई पैदा) कर दे और (इस से उन्होने अपने हक मे जुल्म किया, तो हम ने (उन्हे बर्बाद कर के) उनके अफसाने बना दिए और उन्हे बिल्कुल बिखेर दिया। इसमें हर सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले के लिए निशानिया

---

१ हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की शरीअत मे मुजस्समे यानी मूर्तिया बनाना जायज था। ये मूर्तिया नबियो और नेक लोगो और आलिमो और फरिश्तो की होती थी, जो मस्जिदो और इबादतगाहो मे रखी जाती थी, और मक्सूद इस से यह होता था कि उन को देख कर लोगो के दिलो मे खुदा की इबादत का ज्यादा शौक हो और वह उस मे ज्यादा लगा हुआ हो। अरब वालो ने गज़ब कर दिया कि मूर्तियो को पूजने लगे यानी उन को (अल्लाह की पनाह) खुदा समझने लगे, इन्सान के लिए जो सब से शानदार मख्लूक है, बे-इन्तिहा जिल्लत और अल्लाह तआला के हक मे निहायत जुल्म है। मुहम्मदी शरीअत मे जानदार की मूर्ति बनाना मना कर दिया गया ताकि बुतपरस्ती की जड कट जाए।

व ल-क़द् सद्-द-क अलैहिम् इब्लीसु जन्नहू फ़त्त-ब-अूहु इल्ला फ़रीक़म्-मिनल्-मुअ्मिनी-न (२०) व मा का-न लहू अलैहिम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला लिनअ्-ल-म मंय्युअ्मिनु बिल्आख़िरति मिम्मन् हु-व मिन्हा फ़ी शक्किन् ط व रब्बु-क अला कुल्लि शैइन् हफ़ीज़ ★ (२१) कुलिद्अुल्लज़ी - न ज़-अम्तुम् मिन् दूनिल्लाहि ج ला यम्लिकू - न मिस्क़ा - ल ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व मा लहुम् फ़ीहिमा मिन् शिर्किव्-व मा लहू मिन्हुम् मिन् ज़हीर (२२) व ला तन्फ़अुश - शफ़ाअतु अिन्दहू इल्ला लिमन् अज़ि-न लहू ط हत्ता इज़ा फ़ुज़्ज़ि-अ अन् कुलूबिहिम् क़ालू माज़ा لا क़ा - ल रब्बुकुम् ط क़ालुल्हक़् - क ج व हुवल् - अलिय्युल्-कबीर (२३) कुल् मय्यर्ज़ुकुकुम् मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि ط कुलिल्लाहु لا व इन्ना औ इय्याकुम् ल-अला हुदन् औ फ़ी ज़लालिम् - मुबीन (२४) कुल् ला तुस-अलू-न अम्मा अज्-रम्ना व ला नुस्अलु अम्मा तअ्-मलून (२५) क़ुल् यज्-मअु बैनना रब्बुना सुम्-म यफ़्तहु बैनना बिल्हक़्क़ि ط व हुवल् - फ़त्ताहुल् अलीम (२६) कुल् अरूनियल्लज़ी - न अल्हक़्तुम् बिही शुरका-अ कल्ला ط बल् हुवल्लाहुल्-अज़ीज़ुल्-हकीम (२७) व मा अर्सल्ना-क इल्ला काफ़्फ़तल्-लिन्नासि बशीरव्-व नज़ीरंव-व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ्-लमून (२८) व यक़ूलू-न मता हाज़लवअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (२९) कुल् लकुम् मीआदु यौमिल्ला तस्-तअ्-ख़िरू-न अन्हु साअ-तंव्-व ला तस्तक़-दिमून ★● (३०) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लन्नुअ्मि-न बिहाज़ल्-कुर्आनि व ला बिल्लज़ी बै-न यदैहि ط व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न मौक़ूफ़ू-न अिन् - द रब्बिहिम् ج यर्जिअु बअ्-ज़ुहुम् इला बअ्-ज़ि-निल् - क़ौ-ल ج यक़ूलुल्-लज़ीनस्तुज्-अिफ़ू लिल्लज़ीनस्तक्बरू लौला अन्तुम् लकुन्ना मुअ्मिनीन (३१)

سبا ٣٤ — ومن يقنت ٢٢

ذلك لايت لكل صبار شكور ۝ ولقد صدق عليهم ابليس
ظنه فاتبعوه الا فريقا من المؤمنين ۝ وما كان له عليهم
من سلطن الا لنعلم من يؤمن بالاخرة ممن هو منها في
شك وربك على كل شيء حفيظ ۝ قل ادعوا الذين زعمتم
من دون الله لا يملكون مثقال ذرة في السموت ولا في
الارض وما لهم فيهما من شرك وما له منهم من ظهير ۝
ولا تنفع الشفاعة عنده الا لمن اذن له حتى اذا فزع عن
قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم قالوا الحق وهو العلي الكبير ۝
قل من يرزقكم من السموت والارض قل الله وانا او اياكم
لعلى هدى او في ضلل مبين ۝ قل لا تسئلون عما اجرمنا
ولا نسئل عما تعملون ۝ قل يجمع بيننا ربنا ثم يفتح بيننا
بالحق وهو الفتاح العليم ۝ قل اروني الذين الحقتم به شركاء
كلا بل هو الله العزيز الحكيم ۝ وما ارسلنك الا كافة للناس
بشيرا ونذيرا ولكن اكثر الناس لا يعلمون ۝ ويقولون متى
هذا الوعد ان كنتم صدقين ۝ قل لكم ميعاد يوم لا تستاخرون
عنه ساعة ولا تستقدمون ۝ وقال الذين كفروا لن نؤمن
بهذا القران ولا بالذي بين يديه ولو ترى اذ الظلمون

है। (१६) और शैतान ने उन के बारे मे अपना ख्याल सच कर दिखाया कि मोमिनो की एक जमाअत के सिवा वे उसके पीछे चल पडे। (२०) और उसका उन पर कुछ जोर न था, मगर (हमारा) मक्सूद यह था कि जो लोग आखिरत मे शक रखते है, उन से उन लोगो को, जो उस पर ईमान रखते है अलग कर दे और तुम्हारा परवरदिगार हर चीज पर निगहवान है। (२१)★

कह दो कि जिन को तुम खुदा के सिवा (माबूद) ख्याल करते हो, उन को बुलाओ, वह आसमानो और ज़मीन मे ज़र्रा भर चीज के भी मालिक नही है और न उन मे उन की शिर्कत है और न उन मे से कोई खुदा का मददगार है। (२२) और खुदा के यहा (किसी के लिए) सिफारिश फायदा न देगी, मगर उस के लिए, जिस के बारे मे वह इजाजत बख्शे, यहा तक कि जब उन के दिलो से बेचैनी दूर कर दी जाएगी, तो कहेगे कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या फरमाया है ? फ़रिश्ते कहेंगे कि हक (फ़रमाया है) और वह ऊचे मर्तबे वाला (और) बहुत बडा है। (२३) पूछो कि तुम को आसमानो और ज़मीन से कौन रोजी देता है ? कहो कि खुदा और हम या तुम (या तो) सीधे रास्ते पर है या खुली गुमराही मे (२४) कह दो कि न हमारे गुनाहो की तुम मे पूछ-गछ होगी और न तुम्हारे आमाल की हम से पूछ-गछ होगी। (२५) कह दो कि हमारा परवरदिगार हम को जमा करेगा, फिर हमारे दर्मियान इसाफ के साथ फैसला कर देगा और वह खूब फैसला करने वाला (और) इल्म वाला है। (२६) कहो कि मुझे वे लोग तो दिखाओ जिन को तुम ने (खुदा का) शरीक बना कर उस के साथ मिला रखा है। कोई नही, बल्कि वही (अकेला) खुदा गालिब (और) हिक्मत वाला है। (२७) और (ऐ मुहम्मद !) हमने तुम को तमाम लोगो के लिए खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (२८) और कहते है, अगर तुम सच कहते हो, तो यह (कियामत का) वायदा कब पूरा होगा ? (२६) कह दो कि तुम से एक दिन का वायदा है, जिस से न एक घडी पीछे रहोगे, न आगे बढोगे। (३०)★●

और जो काफिर है, वे कहते है कि हम न तो इस कुरआन को मानेगे और न उन (किताबो) को, जो उन से पहले की है और काश ! (इन) ज़ालिमो को तुम उस वक्त देखो, जब ये अपने परवरदिगार के सामने खडे होगे और एक दूसरे से रद्द व कद्द कर रहे होगे। जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे, वे बडे लोगो से कहेगे कि अगर तुम न होते, तो हम ज़रूर मोमिन हो जाते। (३१)

★रु. २/८ आ १२ ★रु. ३/६ आ ६ ●नि १/२

कालल्लजीनस-तक्बरू लिल्लजीनस-तुज्अिफू अ-नह्नु स-दद् - नाकुम् अनिल्हुदा बअ्-द इज् जा-अकुम् बल् कुन्तुम् मुज्रिमीन (३२) व कालल्लजीनस-तुज्अिफू लिल्लजीनस-तक्बरू बल् मक-रुल्लैलि वन्नहारि इज् तअ्-मुरूनना अन् नक्फु-र बिल्लाहि व नज्-अ-ल लहू अन्दादन्, व असर्रुन्नदाम-त लम्मा र-अवुल्-अज़ा-ब, व ज-अल - नल् - अग्ला-ल फ़ी अअ्-नाक़िल्लजी-न क-फ़रू, हल् युज्जौ-न इल्ला मा कानू यअ्-मलून (३३) व मा अर्सल्ना फी कर्यतिम्-मिन् नजीरिन् इल्ला का-ल मुत-रफूहा, इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफिरून (३४) व कालू नह्नु अक्सरु अम - वालव्-व औलादव्-व मा नह्नु बिमु-आज्जबीन (३५) कुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर - रिज्-क लिमय्यशाउ व यक्दिरु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून ★(३६) व मा अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् बिल्लती तुक़र्रिबुकुम् अिन्दना ज़ुल्फा इल्ला मन् आम - न व अमि - ल सालिहन्, फ-उलाइ-क लहुम् जज़ाउज्-जिअ्-फि बिमा अमिलू व हुम् फिल्गुरुफाति आमिनून (३७) वल्लज़ी - न यस्औ-न फी आयातिना मुआजिज़ी-न उलाइ-क फिल्-अज़ाबि मुह्-ज़रून (३८) कुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर्रिज्-क़ लि-मय्यशाउ मिन् अिबादिही व यक्दिरु लहू, व मा अन्फक्तुम् मिन् शैइन् फहु-व युख्लिफुहू व हु-व ख़ैरुर-राजिकीन (३९) व यौ-म यह्शुरुहुम् जमीअन् सुम्-म यकूलु लिल्मलाइकति अ-हाउलाइ इय्याकुम् कानू यअ् - बुदून (४०)

سپاره ٢٢ — ٣٤٥ — ومن يقنت ٢٢

موقوفون عند ربهم يرجع بعضهم الى بعض القول يقول
الذين استضعفوا للذين استكبروا لولا انتم لكنا مؤمنين ۝
قال الذين استكبروا للذين استضعفوا انحن صددنكم عن
الهدى بعد اذ جاءكم بل كنتم مجرمين ۝ وقال الذين
استضعفوا للذين استكبروا بل مكر الیل والنهار اذ تامروننا
ان نكفر بالله ونجعل له اندادا واسروا الندامة لما راوا
العذاب وجعلنا الاغلل في اعناق الذين كفروا هل يجزون
الا ما كانوا يعملون ۝ وما ارسلنا في قرية من نذير الا
قال مترفوها انا بما ارسلتم به كفرون ۝ وقالوا نحن اكثر
اموالا واولادا وما نحن بمعذبين ۝ قل ان ربي يبسط
الرزق لمن يشاء ويقدر ولكن اكثر الناس لا يعلمون ۝ وما
اموالكم ولا اولادكم بالتي تقربكم عندنا زلفى الا من امن
وعمل صالحا فاولئك لهم جزاء الضعف بما عملوا وهم في
الغرفت امنون ۝ والذين يسعون في ايتنا معجزين اولئك
في العذاب محضرون ۝ قل ان ربي يبسط الرزق لمن يشاء
من عباده ويقدر له وما انفقتم من شيء فهو يخلفه و
هو خير الرزقين ۝ ويوم يحشرهم جميعا ثم يقول للملئكة

★रु ४/१० आ ६

बड़े लोग कमजोरो से कहेगे कि भला हमने तुम को हिदायत से, जब वह तुम्हारे पास आ चुकी थी, रोका था, (नही) बल्कि तुम ही गुनाहगार थे। (३२) और कमजोर लोग बडे लोगो से कहेंगे, (नही) बल्कि (तुम्हारी) रात-दिन की चालो ने (हमे रोक रखा था), जब तुम हम से कहते थे कि हम खुदा से कुफ्र करे और उस का शरीक बनाए और जब वे अजाब को देखेंगे, तो दिल मे शर्मिन्दा होगे और हम काफिरो की गर्दनो मे तौक डाल देगे। बस, जो अमल करते थे, उन्ही का उन को बदला मिलेगा। (३३) और हमने किसी बस्ती मे कोई डराने वाला नही भेजा, मगर वहा के खुशहाल लोगो ने कहा कि जो चीज तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस के कायल नही। (३४) और (यह भी) कहने लगे कि हम बहुत सा माल और आल-औलाद रखते है और हम को अजाब नही होगा। (३५) कह दो कि मेरा रब जिस के लिए चाहता है, रोजी फैला सकता है और (जिस के लिए चाहता है) तग कर देता है लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (३६)☆

और तुम्हारा माल और औलाद ऐसी चीज नही कि तुम को हमारा मुकर्रब बना दे, हा (हमारा मुकर्रब वह है) जो ईमान लाया और नेक अमल करता रहा, ऐसे ही लोगो को उन के आमाल की वजह से दोगुना बदला मिलेगा और वे सुकून से कोठो मे बैठे होगे, (३७) जो लोग हमारी आयतो मे कोशिश करते है कि हमे हरा दे, वे अजाब मे हाजिर किए जाएगे। (३८) कह दो कि मेरा परवरदिगार अपने बन्दो मे से, जिस के लिए चाहता है, रोजी कुशादा करता है और (जिसके लिए चाहता है) तग कर देता है और तुम जो चीज खर्च करोगे, वह उसका (तुम्हे) बदला देगा। वह सब से बेहतर रोजी देने वाला है। (३९) और जिस दिन वह इन सब को जमा करेगा फिर फरिश्तो से फरमाएगा, क्या ये लोग तुम को पूजा करते थे ? (४०) वे कहेंगे, तू पाक है तू ही

★रु ४/१० आ ६

कालू सुब्-हान-क अन्-त वलिय्युना मिन् दूनिहिम् ८ बल् कानू यअ्-बुदूनल्-जिन्-न८ अक्सरुहुम् बिहिम् मुअ्मिनून (४१) फल्-यौ-म ला यम्लिकु बअ्-जुकुम् लिबअ्-जिन् नफ़-अ़ व्-व ला ज़र्रन् ७ व नक़ूलु लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अजाबन्नारिल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (४२) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् कालू मा हाज़ा इल्ला रजुलुंय्युरीदु अंय्यसुद्दकुम् अम्मा का-न यअ्-बुदु आबाउकुम् ८ व क़ालू मा हाज़ा इल्ला इफ़्कुम्-मुफ्तरन् ७ व कालल्लज़ी - न क - फरू लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् ॥ इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (४३) व मा आतैनाहुम् मिन् कुतुबिंय्यद्रुसूनहा व मा अर्सल्ना इलैहिम् कब्-ल-क मिन् नज़ीर ७ (४४) व कज्ज़बल्लज़ी-न मिन् कब्लिहिम् ॥ व मा ब-लग़ू मिअ्-शा-र मा आतैनाहुम् फ़-कज़्ज़बू रुसुली क़फ़ फकै-फ का-न नकीर ★ (४५) कुल् इन्नमा अ - अ़िज़ुकुम् बिवाहिदतिन् ८ अन् तक़ूमू लिल्लाहि मस्ना व फुरादा सुम्-म त-त - फक्करू क़फ़ मा बिसाहिबिकुम् मिन् जिन्नतिन् ७ इन् हु - व इल्ला नज़ीरुल्लकुम् बै-न यदै अज़ाबिन् शदीद (४६) कुल् मा स - अल्तुकुम् मिन् अज्रिन् फहु - व लकुम् ७ इन् अज्रि - य इल्ला अ़लल्लाहि ८ व हु - व अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (४७) क़ुल् इन्-न रब्बी यक्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि ८ अ़ल्लामुल्-ग़ुयूब (४८) कुल् जा-अल्हक़्क़ु व मा युब्दिउल्-बातिलु व मा युअ़ीद (४९) कुल् इन् ज़ - लल्तु फ़-इन्नमा अज़िल्लु अ़ला नफ्सी ८ व इनिह्तदैतु फबिमा यूही इलय्-य रब्बी ७ इन्नहू समीअ़ुन् करीब (५०) व लौ तरा इज़् फज़िअ़ू फ़ला फ़ौ - त व उख़िज़ू मिम्मकानिन् क़रीब ॥ (५१)

أهؤلاء إياكم كانوا يعبدون ۝ قالوا سبحنك أنت ولينا من
دونهم بل كانوا يعبدون الجن أكثرهم بهم مؤمنون ۝ فاليوم
لا يملك بعضكم لبعض نفعا ولا ضرا ونقول للذين ظلموا
ذوقوا عذاب النار التي كنتم بها تكذبون ۝ وإذا تتلى عليهم
آياتنا بينت قالوا ما هذا إلا رجل يريد أن يصدكم عما كان
يعبد آباؤكم وقالوا ما هذا إلا إفك مفترى وقال الذين
كفروا للحق لما جاءهم إن هذا إلا سحر مبين ۝ وما آتينهم
من كتب يدرسونها وما أرسلنا إليهم قبلك من نذير ۝ وكذب
الذين من قبلهم وما بلغوا معشار ما آتينهم فكذبوا رسلي فكيف
كان نكير ۝ قل إنما أعظكم بواحدة أن تقوموا لله مثنى و
فرادى ثم تتفكروا ما بصاحبكم من جنة إن هو إلا نذير
لكم بين يدي عذاب شديد ۝ قل ما سألتكم من أجر فهو
لكم إن أجري إلا على الله وهو على كل شيء شهيد ۝ قل
إن ربي يقذف بالحق علام الغيوب ۝ قل جاء الحق وما يبدئ
الباطل وما يعيد ۝ قل إن ضللت فإنما أضل على نفسي
وإن اهتديت فبما يوحي إلي ربي إنه سميع قريب ۝ ولو
ترى إذ فزعوا فلا فوت وأخذوا من مكان قريب ۝ وقالوا آمنا

★ रु ५/११ आ ९

हमारा दोस्त है, न ये, बल्कि ये जिन्नो को पूजा करते थे और अक्सर उन ही को मानते थे। (४१) तो आज तुम मे से कोई किसी को नफा और नुक्सान पहुचाने का अख्तियार नही रखता और हम जालिमो से कहेगे कि दोजख के अजाब का, जिस को तुम झूठ समझते थे, मज़ा चखो। (४२) और जब उन को हमारी रोशन आयते पढ कर सुनायी जाती हैं, तो कहते है, यह एक (ऐसा) शख्स है, जो चाहता है कि जिन चीजो की तुम्हारे बाप-दादा पूजा किया करते थे, उन से तुम को रोक दे और (यह भी) कहते हैं कि यह (कुरआन) सिर्फ झूठ है, जो (अपनी तरफ से) वना लिया गया है और काफिरो के पास जब हक आया तो उस के बारे में कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (४३) और हमने न तो उन (मुश्रिको) को किताबें दी, जिन को ये पढते हैं और न तुम से पहले उन की तरफ कोई डराने वाला भेजा, (मगर उन्हो ने झुठला दिया)। (४४) और जो लोग उन से पहले थे, उन्हो ने झुठलाया था और जो कुछ हमने उन को दिया था, ये उस के दसवें हिस्से को भी नही पहुचे।[1] तो उन्होने तेरे पैगम्बरो को झुठलाया, सो मेरा अज़ाब कैसा हुआ? (४५)★

कह दो कि मैं तुम्हे एक नसीहत करता हू कि तुम खुदा के लिए दो-दो और अकेले-अकेले खडे हो जाओ, फिर गौर करो। तुम्हारे साथी को बिल्कुल सौदा नही, वह तो तुम को सख्त अज़ाव (के आने) से पहले सिर्फ डराने वाले है। (४६) कह दो कि मैं ने तुम से कुछ बदला मागा हो, तो वह तुम्हारा। मेरा बदला खुदा ही के जिम्मे है और वह हर चीज़ से ख़बरदार है। (४७) कह दो कि मेरा परवरदिगार ऊपर से हक उतारता है (और वह) गैब की बातो का जानने वाला है। (४८) कह दो कि हक आ चुका और बातिल (माबूद) न तो पहली बार पैदा कर सकता है और न दोबारा पैदा करेगा। (४९) कह दो कि अगर मैं गुमराह हूं तो मेरी गुमराही का नुक्सान मुझी को है और और अगर हिदायत पर हूं, तो यह उसीकी तुफैल है, जो मेरा परवरदिगार मेरी तरफ़ वह्य भेजता है, बेशक वह सुनने वाला (और) नज़दीक है। (५०) और काश तुम देखो, जब ये घबरा जाएगे तो (अजाब से) बच नही सकेंगे और नज़दीक ही से पकड लिए जाएगे, (५१)

---

१ यानी जो माल और दौलत पहले काफिर रखते थे, उस का दसवा हिस्सा भी इन अरब के काफ़िरो के पास नही, मगर हम ने उन को भी तबाह व बर्बाद कर दिया और यह तो कुछ ऐसी हकीकत नही रखते, इन को मिटा देना क्या मुश्किल है?

व कालू आमन्ना बिही ۚ व अन्ना लहुमुत् - तनावुशु मिम् - मकानिम् - बअ़ीदिव् - ۚ (५२) -व कद् क-फरू बिही मिन् क़ब्लु ۚ व यक़्ज़िफ़ू-न बिल्ग़ैबि मिम्-मकानिम्-बअ़ीद (५३) व ह़ी-ल बैनहुम् व बै-न मा यश्तहू-न कमा फुअि-ल बिअश्याअि-हिम् मिन् क़ब्लु ۭ इन्नहुम् कानू फ़ी शक्किम्-मुरीब★ (५४)

३५ सूरतु फ़ातिरिन् ४३

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३२८९ अक्षर, ७९२ शब्द, ४५ आयते और ५ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अल-ह़म्दु लिल्लाहि फातिरिस्समावाति वल्अर्जि जाअिलिल् - मलाइकति रुसुलन् उली अज्नि-ह़तिम्-मस्ना व सुला-स व रुबा - अ ۭ यजीदु फिल्ख़ल्कि मा यशाउ ۭ इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् कदीर (१) मा यफ्तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रह़्-मतिन् फ़ला मुम्सि - क लहा ۚ व मा युम्सिक् ۙ फ़ला मुर्सि-ल लहू मिम्बअ़्-दिही ۭ व हुवल्-अज़ीजुल्-हकीम (२) या अय्युहन्नासुज़्कुरू निअ़्-म-तल्लाहि अ़लैकुम् ۭ हल् मिन् खालिक़िन् ग़ैरुल्लाहि यर्ज़ुकुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्जि ۭ ला इला-ह इल्ला हु-व ۡ फ-अन्ना तुअ्-फकून (३) व इ य्युकज्जिबू-क फ-क़द् कुज़्-ज़िबत् रुसुलुम्-मिन् क़ब्लि-क ۭ व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर (४) या अय्युहन्नासु इन्-न वअ्-दल्लाहि ह़क़्कुन् फला तग़ुर्रन्नकुमुल्-हयातुद्दुन्या ۥ व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल् - ग़रूर (५) इन्नश्शैता - न लकुम् अदुव्वुन् फत्तख़िज़ूहु अदुव्वन् ۭ इन्नमा यद्अ़ू हिज़्बहू लियकूनू मिन् अस्ह़ाबिस्सओर ۭ (६) अल्लजी-न क - फरू लहुम् अज़ाबुन् शदी - दुन् ۭ वल्लज़ी - न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग्फि-र-तुंव-व अज्रुन् कबीर★ (७)

بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ۚ وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ
قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ۞ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ
وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ
كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ۞

سُوْرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا
اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۞ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا
مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۞ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ
خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ڮ
فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۞ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۭ
وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۞ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا
تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۥ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۞ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۭ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ
السَّعِيْرِ ۞ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۥ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

★रु. ६/१२ आ ९ ★रु. १/१३ आ ७

और कहेंगे कि हम इस पर ईमान ले आए और (अब) इतनी दूर से उन का हाथ ईमान के लेने को कैसे पहुच सकता है ? (५२) और पहले तो इस से इंकार करते रहे और बिन देखे दूर ही से (अटकल के) तीर चलाते रहे। (५३) और उन में और उन की ख्वाहिश की चीज़ों में पर्दा रोक बना दिया गया, जैसा कि पहले उन के हमजिसों (उन्ही जैसे लोगों) से किया गया, वह भी उलझन में डालने वाले शक में पड़े हुए थे। (५४)★

४३ सूरः फ़ातिर ३५

सूरः फातिर मक्की है और इस में ४५ आयतें और पांच रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ खुदा ही के लिए है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (और) फरिश्तों को कासिद बनाने वाला है, जिन के दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर हैं, वह (अपनी) मख्लूक में जो चाहता है, बढ़ाता है। बेशक खुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (१) खुदा जो अपनी रहमत (का दरवाज़ा) खोल दे तो कोई उस को बन्द करने वाला नहीं और जो बंद कर दे तो उस के बाद कोई उस को खोलने वाला नहीं और वह गालिब हिक्मत वाला है। (२) लोगो! खुदा के जो तुम पर एहसान हैं, उन को याद करो। क्या खुदा के सिवा कोई और पैदा करने वाला (और रोज़ी देने वाला) है, जो तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी दे? उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम कहा बहके फिरते हो ? (३) और (ऐ पैग़म्बर!) अगर ये लोग तुम को झुठलाएं, तो तुम से पहले भी पैगम्बर झुठलाए गए हैं और (सब) काम खुदा ही की तरफ लौटाए जाएंगे। (४) लोगो! खुदा का वायदा सच्चा है, तो तुम को दुनिया की जिंदगी धोखे में न डाल दे और न (शैतान) धोखा देने वाला तुम्हें धोखा दे। (५) शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तुम भी उसे दुश्मन ही समझो। वह अपने (पैरुओं के) गिरोह को बुलाता है ताकि वह दोज़ख वालों में हों, (६) जिन्हों ने कुफ़्र किया। उन के लिए सख्त अज़ाब है और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बख्शिश और बड़ा सवाब है। (७)★

★रु ६/१२ आ ६ ★रु. १/१३ आ ७

अ-फ़-मन् जुय्यि-न लहू सूउ अ-मलिही फ़-रआहु ह़-स-नन् ط फ-इन्नल्ला-ह युज़िल्लु मंय्यशाउ व यह्दी मय्यशाउ ج फ़ला तज़्-हब् नफ्सु-क अ़लैहिम् ह़-स-रातिन् ط इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बिमा यस्-नअून (८) वल्लाहुल्लज़ी अर्स-लर् - रिया-ह़ फ-तुसीरु सह़ाबन् फ़-सुक्नाहु इला ब-लदिम्-मय्यितिन् फ़-अह़्यैना बिहिल्अर-ज़ बअ़्-द मौतिहा ط कज़ालिकन् - नुशूर (९) मन् का-न युरीदुल्-अिज़्ज़-त फलिल्लाहिल्-अिज़्ज़तु जमीअन् ط इलैहि यस् - अदुल् - कलिमुत्तय्यिबु वल्-अ़-म-लुस्सालिहु यर्फ़अुहू ط वल्लज़ी-न यम्कुरूनस - सय्यिआति लहुम् अज़ाबुन् शदीदुन् ط व मक्रु उलाइ - क हु-व यबूर (१०) वल्लाहु ख़-ल-ककुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म ज-अ़-लकुम् अज़्वाजन् ط व मा तह़्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़-अु इल्ला बिअिल्मिही ط व मा यु-अ़म्मरु मिम्-मु-अ़म्मरिंव्-व ला युन्कसु मिन् अ़ुमुरिही इल्ला फी किताबिन् ط इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (११)

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ
فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا
تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝
وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ
الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ
الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ
وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا
يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ
وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ
حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ
لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ۝
اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ وَيَوْمَ

व मा यस्तविल् - बह़्रानि ج हाज़ा अज़्बुन् फ़ुरातुन् सा - इगुन् शराबुहू व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन् ط व मिन् कुल्लिन् तअ्-कुलू-न लह़् - मन् त़रिय्यंव-व तस्तख़्रिजू-न ह़िल् - य-तन् तल्बसूनहा ج व तरल्फुल - क फ़ीहि मवाख़ि-र लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (१२) यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फिल्लैलि ط व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र ج कुल्लुं य्यज्री लि - अ-जलिम् - मुसम्मन् ط ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ط वल्लज़ी - न तद्अू - न मिन् दूनिही मा यम्लिकू - न मिन् कित़्मीर ط (१३)

भला जिस शख़्स को उस के बुरे आमाल सजा कर के दिखाए जाए और वह उन को उम्दा समझने लगे, तो (क्या वह भला आदमी जैसा हो सकता है) ? बेशक ख़ुदा जिस को चाहता है, गुमराह करता है और जिस को चाहता है, हिदायत देता है, तो उन लोगो पर अफ़सोस कर के तुम्हारा दम न निकल जाए। ये जो कुछ करते है, ख़ुदा उसे जानता है। (८) और ख़ुदा ही तो है, जो हवाए चलाता है और वे बादल को उभारती हैं, फिर हम उस को एक बे-जान शहर की तरफ़ चलाते हैं, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा कर देते है। इसी तरह मुर्दों को जी उठना होगा। (९) जो शख़्स इज्ज़त की तलब मे है, तो इज्ज़त तो सब ख़ुदा ही की है। उसी की तरफ़ पाकीज़ा कलिमे चढते हैं और नेक अमल उन को बुलंद करते है और जो लोग बुरे-बुरे मक्र करते है, उन के लिए सख़्त अज़ाब है और उन का मक्र नाबूद हो जाएगा। (१०) और ख़ुदा ही ने तुम को मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम को जोड़ा-जोडा बना दिया और कोई औरत न हामिला होती है, और न जानती है, मगर उस के इल्म से और न किसी बडी उम्र वाले को उम्र ज्यादा दी जाती है और न उस की उम्र कम की जाती है, मगर (सब कुछ) किताब मे (लिखा हुआ है)। बेशक यह ख़ुदा को आसान है। (११) और दोनो दरिया (मिल कर) एक जैसे नहीं हो जाते, यह तो मीठा है, प्यास बुझाने वाला, जिस का पानी ख़ुशगवार है और यह खारी है, कडआ और सब से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो और जेवर निकालते हो, जिसे पहनते हो। और तुम दरिया मे कश्तियो को देखते हो कि (पानी को) फाडती चली आती है, ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) खोजो और ताकि शुक्र करो। (१२) वही रात को दिन मे दाखिल करता और (वही) दिन को रात मे दाखिल करता है और उसी ने सूरज-चाद को काम मे लगा दिया है। हर-एक एक मुक़र्रर वक़्त तक चल रहा है। यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है, उसी की बादशाही है और जिन लोगों को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वे खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी तो (किसी चीज़ के)

इन् तद्अूहुम् ला यस्मअू दुआ-अकुम् ج व लौ समिअू मस्तजाबू लकुम् ط व यौमल्क़ियामति यक्फ़ुरू-न बिशिर्किकुम् ط व ला युनब्बिउ-क मिस्लु ख़बीर ★● (१४) या अय्युहन्नासु अन्तुमुल्-फ़ु-क़राउ इलल्लाहि ج वल्लाहु हुवल्-ग़निय्युल्-हमीद (१५) इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्किन् जदीद ج (१६) व मा ज़ालि-क अ-लल्लाहि बिअज़ीज़ (१७) व ला तज़िरु वाज़ि-रतुं विज़्-र उख़्रा ط व इन् तद्अु मुस्क़-लतुन् इला हिम्लिहा ला युह्मल् मिन्हु शैउं-व लौ का-न ज़ाक़ुर्बा ط इन्नमा तुन्ज़िरुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व अक़ामुस्सला-त ط व मन् त-ज़क्का फ़-इन्नमा य-त-ज़क्का लि-नफ़्सिही ط व इलल्लाहिल्-मसीर (१८) व मा यस्तविल्-अअ्-मा वल्बसीर لا (१९) व लज़्ज़ुलुमातु व लन्नूर لا (२०) व लज़्ज़िल्लु व लल्हरूर ج (२१) व मा यस्तविल्-अह्याउ व लल्अम्वातु ط इन्नल्ला-ह युस्मिअु मंय्यशाउ ج व मा अन्-त बिमुस्मिअिम्-मन् फ़िल्क़ुबूर (२२) इन् अन्-त इल्ला नज़ीर (२३) इन्ना अर्सल्ना-क बिल्हक़्क़ि बशीरंव्-व नज़ीरन् ط व इम्मिन् उम्मतिन् इल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीर (२४) व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ج जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व बिज़्ज़ुबुरि व बिल्-किताबिल्-मुनीर (२५) सुम्-म अ-ख़ज़्तुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-कै-फ़ का-न नकीर ★ (२६) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समाइ मा-अन् ج फ़-अख़्-रज्ना बिही स-मरा-तिम्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहा ط व मिनल्-जिबालि जु-ददुम्-बीज़ुंव्-व हुम्रुम्-मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहा व ग़राबीबु सूद (२७) व मिनन्नासि वद्दवाब्बि वल्-अन्आमि मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू कज़ालि-क ط इन्नमा यख़्शल्ला-ह मिन् अिबादिहिल्-अुलमाउ ط इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् ग़फ़ूर (२८)

القيمة يكفرون بشرككم ولا ينبئك مثل خبير ۞ يايها الناس
انتم الفقراء الى الله والله هو الغني الحميد ۞ ان يشا يذهبكم
ويات بخلق جديد ۞ وما ذلك على الله بعزيز ۞ ولا تزر وازرة
وزر اخرى وان تدع مثقلة الى حملها لا يحمل منه شيء ولو كان
ذا قربى انما تنذر الذين يخشون ربهم بالغيب واقاموا الصلوة
ومن تزكى فانما يتزكى لنفسه والى الله المصير ۞ وما يستوي
الاعمى والبصير ۞ ولا الظلمت ولا النور ۞ ولا الظل ولا
الحرور ۞ وما يستوي الاحياء ولا الاموات ان الله يسمع من
يشاء وما انت بمسمع من في القبور ۞ ان انت الا نذير ۞ انا
ارسلنك بالحق بشيرا ونذيرا وان من امة الا خلا فيها نذير ۞
وان يكذبوك فقد كذب الذين من قبلهم جاءتهم رسلهم
بالبينت وبالزبر وبالكتب المنير ۞ ثم اخذت الذين
كفروا فكيف كان نكير ۞ الم تر ان الله انزل من السماء ماء
فاخرجنا به ثمرت مختلفا الوانها ومن الجبال جدد بيض
وحمر مختلف الوانها وغرابيب سود ۞ ومن الناس والدواب
والانعام مختلف الوانه كذلك انما يخشى الله من عباده
العلمؤا ان الله عزيز غفور ۞ ان الذين يتلون كتب الله و

मालिक नही। (१३) अगर तुम उन को पुकारो, तो वे तुम्हारी पुकार न सुने और अगर सुन भी ले, तो तुम्हारी बात को कुबूल न कर सके और कियामत के दिन तुम्हारे शिर्क से इकार कर देंगे और बा-खबर (खुदा) की तरह तुम को कोई खबर नही देगा। (१४)★●

लोगो ! तुम (सब) खुदा के मुहताज हो और खुदा बे-परवा, हम्द (व सना) के लायक है।(१५) अगर चाहे तो तुम को नाबूद कर दे और नयी मख्लूक ला आबाद करे। (१६) और यह खुदा को कुछ मुश्किल नही। (१७) और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा और कोई बोझ मे दबा हुआ अपना बटाने को किसी को बुलाए, तो कोई उस मे से कुछ न उठाएगा, चाहे रिश्तेदार ही हो। (ऐ पैगम्बर !) तुम उन ही लोगो को नसीहत कर सकते हो, जो बिन-देखे अपने परवरदिगार से डरते और नमाज़ एहतिमाम से पढते है और जो शख्स पाक होता है, अपने ही लिए पाक होता है और (सब को) खुदा ही की तरफ लौट कर जाना है। (१८) और अधा और आख वाला बराबर नही। (१९) और न अधेरा और रोशनी, (२०) और न साया और धूप, (२१) और न जिंदे और मुर्दे बराबर हो सकते हैं। खुदा जिस को चाहता है, सुना देता है और तुम उन को जो कब्रो मे (दफ्न) है, सुना नही सकते। (२२) तुम तो सिर्फ हिदायत करने वाले हो। (२३) हमने तुम को हक के साथ खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला भेजा है और कोई उम्मत नही, मगर इस मे हिदायत करने वाला गुजर चुका है। (२४) और अगर ये तुम्हे झुठलाएं, तो जो लोग उन से पहले थे, वे भी झुठला चुके है, उन के पास उन के पैगम्बर निशानिया और सहीफे और रोशन किताबें ले-ले कर आते रहे। (२५) फिर मैं ने काफिरो को पकड लिया, सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा हुआ। (२६)★

क्या तुम ने नही देखा कि खुदा ने आसमान से मेह बरसाया तो हम ने उस मे तरह-तरह के रंगो के मेवे पैदा किए और पहाडो मे सफेद और लाल रंगो के क़तए (टुकडे) और (कुछ) काले-स्याह है। (२७) इसानो और जानवरो और चौपायो के भी कई तरह के रग है। खुदा से तो उस के बन्दो मे से वही डरते है, जो इल्म वाले है। बेशक खुदा गालिब (और) बख्शने वाला है। (२८)

इन्नल्लज़ी-न यत्लू-न किताबल्लाहि व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़क़ू मिम्मा र-ज़क़्-नाहुम् सिर्रंव्-व अलानि-य-तंय्यर्जू-न तिजारतल्लन् तबूर लا (२९) लियुवफ़्फ़ि-यहुम् उजूरहुम् व यज़ीदहुम् मिन् फ़ज़्लिही ط इन्नहू ग़फ़ूरुन् शकूर (३०) वल्लज़ी औहैना इलै - क मिनल्किताबि हुवल्हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि ط इन्नल्ला - ह बिअिबादिही ल - ख़बीरुम्-बसीर (३१) सुम् - म औरस्नल् - किताबल् - लज़ीनस्तफ़ैना मिन् अिबादिना ج फ़मिन्हुम् ज़ालिमुल् - लिनफ़्सिही ج व मिन्हुम् मुक़्तसिदुन् ج व मिन्हुम् साबिक़ुम्-बिल्-ख़ैराति बिइज़्निल्लाहि ط ज़ालि-क हुवल्-फ़ज़्लुल्-कबीर ط (३२) जन्नातु अद्निंय्यद्ख़ुलूनहा युहल्-लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-ह-बिव्-व लुअ्लुअन् ج व लिबासुहुम् फ़ीहा हरीरु (३३) व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्-ह-ब अन्नल् - ह-ज़-न ط इन्-न रब्बना ल-ग़फ़ूरुन् शकूरु-नि- لا (३४) -ल्लज़ी अ-हल्लना दारल् - मुक़ामति मिन् फ़ज़्लिही ج ला यमस्सुना फ़ीहा न-स-बुंव्-व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब (३५) वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् नारु ज-हन्न-म ج ला युक़्ज़ा अलैहिम् फ़-यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुम् मिन् अज़ाबिहा ط कज़ालि-क नज्ज़ी कुल्-ल कफ़ूर ج (३६) व हुम् यस्तरिख़ू-न फ़ीहा ج रब्बना अख़्रिज्ना नअ्-मल् सालिहन् ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ् - मलु ط अ-व लम् नुअम्मिर्-कुम् मा य-त - ज़क्करु फ़ीहि मन् त-ज़क्क-र व जा-अकुमुन्नज़ीरु ط फ़ - ज़ूक़ू फ़मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर ★ (३७) इन्नल्ला-ह आलिमु ग़ैबिस्समावाति वल्अर्ज़ि ط इन्नहू अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (३८) हुवल्लज़ी ज-अ - लकुम् ख़लाइ-फ़ फ़िल्अर्ज़ि ط फ़-मन् क-फ-र फ़ - अलैहि कुफ़्रुहू ط व ला यज़ीदुल् - काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् इल्ला मक़्तन् ج व ला यज़ीदुल् - काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् इल्ला ख़सारा (३९)

ومن يقنت ٢٢ — ٣٥٠ — فاطر ٣٥

أَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً
لَنْ تَبُورَ ۝ لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ
شَكُورٌ ۝ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝ ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ
الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ ۚ
وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرٰتِ بِإِذْنِ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ جَنّٰتُ
عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۚ وَ
لِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۚ
إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝ الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ
لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ
جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا ۚ
كَذٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۝ وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا ۚ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَا يَتَذَكَّرُ فِيهِ
مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۝ إِنَّ
اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ هُوَ
الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ
الْكٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ

★रु० ४/१६ आ ११

जो लोग ख़ुदा की किताब पढते और नमाज़ की पाबन्दी करते है और जो कुछ हमने उन को दिया है, उस में से छिपे और ज़ाहिर खर्च करते है, वे उस तिजारत (के फ़ायदे) के उम्मीदवार है, जो कभी तबाह नही होगी, (२९) क्योकि ख़ुदा उन को पूरा-पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज़्यादा भी देगा। वह तो बख़्शने वाला (और) क़द्रदां है। (३०) और यह किताब जो हमने तुम्हारी तरफ़ भेजी है, बर-हक़ है और उन (किताबो) की तस्दीक़ करती है, जो इस से पहले की है। बेशक ख़ुदा अपने बन्दो से ख़बरदार (और उन को) देखने वाला है। (३१) फिर हमने उन लोगो को किताब का वारिस ठहराया, जिन को अपने बन्दो मे से चुना, तो कुछ तो उन मे से अपने आप पर ज़ुल्म करते है और कुछ बीच के रास्ते पर है और कुछ ख़ुदा के हुक्म से नेकियो मे आगे निकल जाने वाले है। यही बडा फ़ज़्ल है, (३२) (उन लोगो के लिए) हमेशा की जन्नतें (हैं) जिन मे वे दाख़िल होगे। वहा उन को सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और उन का लिबास रेशमी होगा। (३३) वे कहेगे कि ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने हम से ग़म दूर किया। बेशक हमारा परवरदिगार बख़्शने वाला (और) क़द्रदां है, (३४) जिस ने हम को अपने फ़ज़्ल से हमेशा के रहने के घर मे उतारा। यहा न तो हम को रंज पहुचेगा और न हमे थकन ही होगी। (३५) और जिन लोगो ने कुफ़्र किया, उन के लिए दोज़ख़ की आग है, न उन्हे मौत आएगी कि मर जाए और न उस का अज़ाब ही उन से हल्का किया जाएगा। हम हर एक ना-शुक्रे को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (३६) वे उस मे चिल्लाएंगे कि ऐ परवररिगार ! हम को निकाल ले, (अब) हम नेक अमल किया करेगे, न वह जो (पहले) करते थे। क्या हमने तुम को इतनी उम्र नही दी थी कि उस मे जो सोचना चाहता, सोच लेता और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया, तो अब मज़े चखो, ज़ालिमो का कोई मददगार नही। (३७) ★

बेशक ख़ुदा ही आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों का जानने वाला है। वह तो दिल के भेदो तक को जानता है। (३८) वही तो है, जिस ने तुम को ज़मीन मे (पहलो का) जानशीं बनाया, तो जिस ने कुफ़्र किया, उस के कुफ़्र का नुक्सान उसी को है और काफ़िरों के हक़ मे उन के कुफ़्र से परवरदिगार के यहां ना-ख़ुशी ही बढती है और काफ़िरो को उन का कुफ़्र नुक्सान ही

★रु ४/१६ आ ११

क़ुल् अ-र-ऐ-तुम् शु-रका-अ-कुमुल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि ط अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति ج अम् आतैनाहुम् किताबन् फहुम् अ़ला बय्यिनतिम्-मिन्हु ج बल् इ य्यअिदुज़्-ज़ालिमू-न बअ्-ज़ुहुम् बअ्-ज़न् इल्ला गुरूरा (४०) इन्नल्ला - ह युम्सिकुस - समावाति वल्अर् - ज अन् तज़ूला ق व लइन् ज़ालता इन् अम-स-कहुमा मिन् अ-हदिम् - मिम्बअ्-दिही ط इन्नहू का-न हलीमन् ग़फ़ूरा (४१) व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् लइन् जा-अहुम् नज़ीरुल्-ल-य-कूनन्-न अह्दा मिन् इह्दल् - उममि ج फ-लम्मा जा - अहुम् नज़ीरुम्मा ज़ादहुम् इल्ला नुफ़ू-र-नि- لا (४२) स्तिक्बारन् फिल्अर्जि व मक्रस्सय्यिइ ط व ला यहीक़ुल् - मक्रुस्सय्यिउ इल्ला बिअह्लिही ط फ - हल् यन्ज़ुरू - न इल्ला सुन्नतल् - अव्वली-न ج फ - लन् तजि - द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला ق व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तह्वीला (४३) अ-व लम् यसीरू फिल्अर्जि फयन्ज़ुरू कै-फ़ का-न

إِلَّا غُرُورًا ۝ قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ ٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ
أَرُونِى مَاذَا خَلَقُوا۟ مِنَ ٱلْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ أَمْ ءَاتَيْنَٰهُمْ
كِتَٰبًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِن يَعِدُ ٱلظَّٰلِمُونَ بَعْضُهُم بَعْضًا إِلَّا
غُرُورًا ۝ إِنَّ ٱللَّهَ يُمْسِكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ أَن تَزُولَا ۚ وَلَئِن زَالَتَآ إِنْ
أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنۢ بَعْدِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَأَقْسَمُوا۟
بِٱللَّهِ جَهْدَ أَيْمَٰنِهِمْ لَئِن جَآءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى ٱلْأُمَمِ ۖ
فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝ ٱسْتِكْبَارًا فِى ٱلْأَرْضِ وَمَكْرَ
ٱلسَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ ٱلْمَكْرُ ٱلسَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِۦ ۚ فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا
سُنَّتَ ٱلْأَوَّلِينَ ۚ فَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ ٱللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ
ٱللَّهِ تَحْوِيلًا ۝ أَوَلَمْ يَسِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَيَنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ
ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوٓا۟ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُعْجِزَهُۥ مِن
شَىْءٍ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ
ٱللَّهُ ٱلنَّاسَ بِمَا كَسَبُوا۟ مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن دَآبَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ
إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِۦ بَصِيرًۢا ۝
سُورَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثٌ وَّثَمَانُونَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
يسٓ ۝ وَٱلْقُرْءَانِ ٱلْحَكِيمِ ۝ إِنَّكَ لَمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ۝ عَلَىٰ

आ़क़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व कानू अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वतन् ط व मा कानल्-लाहु लियुअ्-जिज़हू मिन् शैइन् फिस्समावाति व ला फिल्अर्ज़ि ط इन्नहू का-न अ़लीमन् क़दीरा (४४) व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्-ना-स बिमा क-सबू मा त-र-क अ़ला ज़ह्रिहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्युअख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन् ج फ़-इज़ा जा-अ अ-ज-लुहुम् फ-इन्नल्ला-ह का-न बिअिबादिही बसीरा ★ (४५)

३६ सूरतु यासीन् ४१

(मक्की) इस सूर. मे अरबी के ३०६० अक्षर, ७३६ शब्द, ८३ आयते और ५ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

यासीन् ج (१) वल्क़ुर्आनिल्-हकीम لا (२) इन्न-क लमिनल्-मुर्सलीन لا (३)

★रु. ५/१७ आ ८
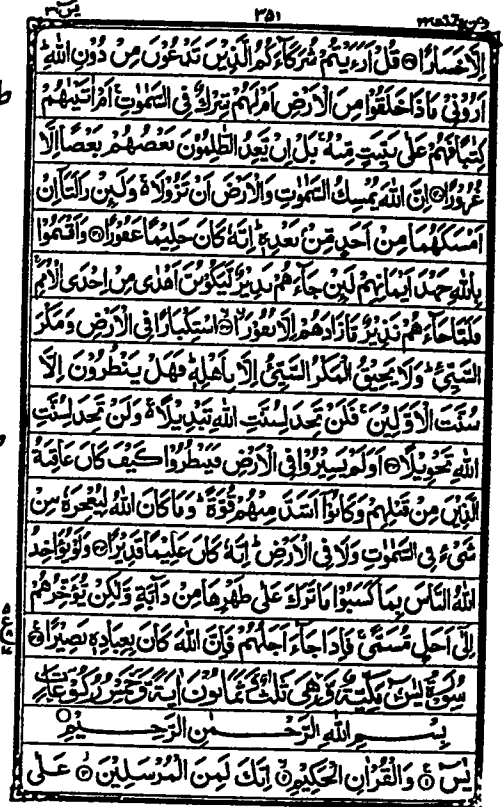
ज्यादा करता है। (३९) भला तुम ने अपने शरीको को देखा, जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्हो ने जमीन से कौन सी चीज़ पैदा की है, या (बताओ कि) आसमानो मे उन की शिर्कत है या हम ने उन को किताब दी है, तो वे उस की सनद रखते है ? (इन मे से कोई बात भी नही), बल्कि ज़ालिम जो एक दूसरे को वायदा देते है, सिर्फ धोखा है। (४०) खुदा ही आसमानो और ज़मीन को थामे रखता है कि टल न जाए अगर वे टल जाए तो खुदा के सिवा कोई ऐसा नही जो उनको थाम सके। बेशक वह बुर्दबार (और) बख्शने वाला है। (४१) और ये खुदा की सख्त-सख्त कस्मे खाते हैं कि अगर उन के पास कोई हिदायत करने वाला आए, तो ये हर एक उम्मत से बढकर हिदायत पर हो, मगर जब उन के पास हिदायत करने वाला आया तो उस से उन को नफरत ही बढी। (४२) यानी (उन्हो ने) मुल्क मे घमड करना और बुरी चाल चलना (अख्तियार किया) और बुरी चाल का बवाल उस के चलने वाले ही पर पडता है। ये अगले लोगो के रवैए के सिवा और किसी चीज के इतिज़ार मे नही,[1] सो तुम खुदा की इबादत मे हरगिज़ तब्दीली न पाओगे और खुदा के तरीके मे कभी तब्दीली न देखोगे। (४३) क्या उन्हो ने ज़मीन मे सैर नही की, ताकि देखते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अजाम क्या हुआ, हालाकि वे इन से ताकत मे बहुत ज्यादा थे। और खुदा ऐसा नही कि आसमानो और जमीन मे कोई चीज़ उस को आजिज कर सके। वह इल्म वाला (और) कुदरत वाला है। (४४) और अगर खुदा लोगो को उनके आमाल की वजह से पकडने लगता तो रू-ए-जमीन पर एक भी चलने-फिरने वाले को न छोडता, लेकिन वह उन को मुकर्रर वक्त तक मोहलत दिए जाता है। सो जब उन का वक्त आ जाएगा, तो (उन के आमाल का बदला देगा), खुदा तो अपने बन्दो को देख रहा है। (४५) ★

३६ सूरः यासीन ४१

सूर यासीन मक्की है और इस मे तिरासी आयतें और पांच रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

यासीन, (१) कसम है कुरआन की, जो हिक्मत से भरा हुआ है। (२) (ऐ मुहम्मद !)

---

१ यानी अल्लाह तआला के उस तरीके का, जो अगले लोगो के साथ बरता जाता था, इन्तिज़ार करते है और वह यह कि उन के कुफ्र की वजह से उन पर अज़ाब नाज़िल किया जाता था, ये भी अज़ाब ही के इन्तिज़ार मे है।

★रु ५/१७ आ ८

अ़ला सिरातिम् - मुस्तक़ीम ط (४) तन्ज़ीलल् - अ़ज़ीज़िर् - रहीम لا (५) लितुन्ज़ि-र क़ौमम्मा उन्ज़ि-र आबाउहुम् फ़हुम् ग़ाफ़िलून (६) ल-क़द् हक़्क़ल्-क़ौलु अ़ला अक्सरिहिम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (७) इन्ना ज-अ़ल्ना फ़ी अअ्-नाक़िहिम् अग़्लालन् फ़हि-य इलल्-अज़्क़ानि फ़हुम् मुक़्महून (८) व ज-अ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्-व मिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ़-अग़्शैनाहुम् फ़हुम् ला युब्सिरून (९) व सवाउन् अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्-हुम् ला युअ्मिनून (१०) इन्नमा तुन्ज़िरु मनित्त-ब-अ़ज़् - ज़िक्-र व ख़शि-यर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि ج फ़बश्शिर्हु बिमग़्फ़ि - र-तिंव्-व अज्रिन् करीम (११) इन्ना नह्नु नुह्यिल्-मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व आसारहुम् ▨ व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु फ़ी इमामिम्-मुबीन ★ (१२) वज़्रिब् लहुम् म-स-लन् अस् - हाबल् क़र्यति ▨ इज़् जा-अ-हल् - मुर्सलून ج (१३) इज़् अर्सल्ना इलैहिमुस्नैनि फ़ - कज़्ज़बू - हुमा फ़-अ़ज़्ज़ज़्ना बिसालिसिन् फ़-क़ालू इन्ना इलैकुम् मुर्सलून (१४) क़ालू मा अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना لا व मा अन्ज़लर्-रह्मानु मिन् शैइन् لا इन् अन्तुम् इल्ला तक्ज़िबून (१५) क़ालू रब्बुना यअ् - लमु इन्ना इलैकुम् लमुर्सलून (१६) व मा अ़लैना इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (१७) क़ालू इन्ना त-तय्यर्ना बिकुम् ج ल-इल्लम् तन्तहू ल-नर्जुमन्नकुम् व ल-य-मस्सन्नकुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन् अलीम (१८) क़ालू ताइरुकुम् म-अ़कुम् ط अइन् ज़ुक्किर्तुम् ط बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून (१९) व जा-अ मिन् अक़्सल्-मदीनति रजुलुंय्यस्आ क़ा-ल या क़ौमित्तबिअुल्-मुर्सलीन لا (२०) - त्तबिअू मल्ला यस्अलुकुम् अज्रंव्-व हुम् मुह्तदून (२१)

يس ٣٦ — ٣٥٢ — وما لي ٢٢

صراط مستقيم ۝ تنزيل العزيز الرحيم ۝ لتنذر قوما ما
أنذر آباؤهم فهم غافلون ۝ لقد حق القول على أكثرهم فهم
لا يؤمنون ۝ إنا جعلنا في أعناقهم أغلالا فهي إلى الأذقان فهم
مقمحون ۝ وجعلنا من بين أيديهم سدا ومن خلفهم
سدا فأغشيناهم فهم لا يبصرون ۝ وسواء عليهم أأنذرتهم
أم لم تنذرهم لا يؤمنون ۝ إنما تنذر من اتبع الذكر وخشي
الرحمن بالغيب فبشره بمغفرة وأجر كريم ۝ إنا نحن نحيي
الموتى ونكتب ما قدموا وآثارهم وكل شيء أحصيناه في إمام
مبين ۝ واضرب لهم مثلا أصحاب القرية إذ جاءها
المرسلون ۝ إذ أرسلنا إليهم اثنين فكذبوهما فعززنا بثالث
فقالوا إنا إليكم مرسلون ۝ قالوا ما أنتم إلا بشر مثلنا و
ما أنزل الرحمن من شيء إن أنتم إلا تكذبون ۝ قالوا ربنا
يعلم إنا إليكم لمرسلون ۝ وما علينا إلا البلاغ المبين ۝
قالوا إنا تطيرنا بكم لئن لم تنتهوا لنرجمنكم وليمسنكم
منا عذاب أليم ۝ قالوا طائركم معكم أئن ذكرتم بل أنتم
قوم مسرفون ۝ وجاء من أقصا المدينة رجل يسعى قال يا قوم
اتبعوا المرسلين ۝ اتبعوا من لا يسألكم أجرا وهم مهتدون ۝

▨ व गुफ़रान ★रु. १/१८ आ १२ ▨ व लाज़िम

बेशक तुम पैंगम्बरो में से हो, (३) सीधे रास्ते पर। (४) (यह खुदा-ए) गालिब (और) मेहरबान ने नाज़िल किया है, (५) ताकि तुम उन लोगो को, जिन के बाप-दादा की तंबीह नही की गयी थी, तंबीह कर दो। वे गफ्लत मे पडे हुए है। (६) उन मे से अक्सर पर (खुदा की) बात पूरी हो चुकी है, सो वे ईमान नही लाएगे। (७) हमने उन की गरदनो मे तौक़ डाल रखे हैं और वे ठोडियो तक (फसे हुए) है, तो उन के सर उलल रहे हैं। (८) और हमने उन के आगे भी दीवार बना दी और उन के पीछे भी, फिर उन पर पर्दा डाल दिया, तो ये देख नही सकते। (९) और तुम उन को नसीहत करो या न करो, उन के लिए बराबर है, वे ईमान नही लाने के। (१०) तुम तो सिर्फ उस शख्स को नसीहत कर सकते हो, जो नसीहत की पैरवी करे और खुदा से गायबाना डरे सो उस को मग्फिरत और बडे सवाब की खुशखबरी सुना दो। (११) बेशक हम मुर्दो को ज़िंदा करेंगे और जो कुछ वे आगे भेज चुके और (जो) उन के निशान पीछे रह गये, हम उन को लिख देते हैं और हर चीज़ को हमने रोशन किताब (यानी लौहे महफ़ूज़) मे लिख रखा है। (१२)★

और उन से गाव वालो का किस्सा बयान करो, जब उन के पास पैंगम्बर आये।[1] (१३) (यानी) जब हमने उन की तरफ दो (पैंगम्बर) भेजे, तो उन्हो ने उन को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से ताकत पहुचायी, तो उन्हो ने कहा कि हम तुम्हारी तरफ पैंगम्बर हो कर आए है।[2] (१४) वे बोले कि तुम (और कुछ) नही, मगर हमारी तरह के आदमी (हो) और खुदा ने कोई चीज़ भी नाज़िल नही की, तुम सिर्फ झूठ बोलते हो। (१५) उन्हो ने कहा कि हमारा परवरदिगार जानता है कि हम तुम्हारी तरफ (पैंगाम) दे कर भेजे गये है। (१६) और हमारे जिम्मे तो साफ-साफ पहुंचा देना है और बस। (१७) वे बोले कि हम तुम को ना-मुबारक देखते है। अगर तुम मानोगे नही, तो हम तुम्हे संगसार कर देंगे और तुम को हम से दुख देने वाला अज़ाब पहुचेगा। (१८) उन्होने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है।[3] क्या इसलिए कि तुम को नसीहत की गयी, बल्कि ऐसे लोग हो जो हम से आगे निकल गये हो।[4] (१९) और शहर के परले किनारे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया।[5] कहने लगा कि ऐ मेरी कौम! पैंगम्बरो के पीछे चलो, (२०) ऐसो के जो तुम से बदला नही मागते और वे सीधे रास्ते पर है। (२१) और मुझे क्या है कि मैं उस की

---

१ मुल्क रूम मे अन्ताकिया एक गाव था, यह वहा के लोगो का किस्सा है।

२ कहते हैं, ये लोग हज़रत ईसा अलै० के हवारियो मे से थे, जिन को अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा के बाद पैंगम्बरी अता फरमायी थी। पहले दो पैंगम्बरो का नाम यूहन्ना और शमऊन था और तीसरे का शुलूम।

३ यानी नहूसत जो तुम्हारे बुरे आमाल की वजह से है, तुम जहा भी होगे, वह तुम्हारे साथ होगी।

४ यानी जो नसीहत तुम को की गयी, क्या वह तुम्हारे लिए नहूसत की वजह साबित हुई? यह हरगिज़ नही है, बल्कि तुम्हारी शामते आमाल तुम्हारे लिए वबाल की वजह हो रही है।

५ यह शख्स शहर के करीब एक गार मे इबादत करता था। जब उस ने पैंगम्बरो के आने का हाल सुना, तो शहर मे दौडता हुआ आया और वहा के लोगो से कहने लगा कि पैंगम्बरो की इताअत करो और उनकी हिदायत पर चलो, उस का नाम हबीब था।

तेईसवां पारः व मा लि-य

सूरतु यासीन आयात २२ से ८३

व मा लि-य ला अअ्-बुदुल्लज़ी फ़-त-रनी व इलैहि तुर्जअून (२२) अ अत्तख़िज़ु मिन् दूनिही आलि-ह-तन् इ य्युरिद्निर्-रह्मानु बिज़ुर्रिल्-ला तुग़्नि अन्नी शफ़ाअतुहुम् शैअव्-व ला युन्क़िज़ून (२३) इन्नी इज़ल्लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन (२४) इन्नी आमन्तु बिरब्बिकुम् फ़स्मअून (२५) क़ीलद्ख़ुलिल्जन्न-त का-ल यालै-त क़ौमी यअ्-लमून (२६) बिमा ग़-फ़-र ली रब्बी व ज-अ-लनी मिनल्-मुक्रमीन (२७) व मा अन्ज़ल्ना अ़ला क़ौमिही मिम्बअ-दिही मिन् जुन्दिम् - मिनस्समाइ व मा कुन्ना मुन्ज़िलीन (२८) इन् कानत् इल्ला सैह़-तंव्वाहि-द-तन् फ़-इज़ा हुम् ख़ामिदून (२९) या ह़स-र-तन् अ़लल्-अ़िबादि मा यअ्तीहिम् मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (३०) अ-लम् यरौ कम् अह्-लक्ना क़ब्-लहुम् मिनल्क़ुरूनि अन्नहुम् इलैहिम् ला यर्जिअून (३१) व इन् कुल्लुल्लम्मा जमीअुल्लदैना मुह्ज़रून ★ (३२) व आयतुल्-लहुमुल्-अर्ज़ुल्मैततु अह्यै-नाहा व अख़-रज्ना मिन्हा ह़ब्बन् फ़मिन्हु यअ्-कुलून (३३) व ज-अ़ल्ना फ़ीहा जन्नातिम्मिन् नख़ीलिंव्-व अअ्-नाबिंव्-व फ़ज्जर्ना फ़ीहा मिनल्-अुयून (३४) लि-यअ्कुलू मिन् स-मरिही व मा अ़मि-लत्हु ऐदीहिम् अ-फ़-ला यश्कुरून (३५) सुब्हानल्लज़ी ख़-ल-क़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा मिम्मा तुम्बितुल्-अर्ज़ु व मिन् अन्फ़ुसिहिम् व मिम्मा ला यअ्-लमून (३६) व आयतुल् लहुमुल्लैलु नस् - लख़ु मिन्हुन्नहा - र फ़-इज़ा हुम् मुज़्लिमून (३७) वश्शम्सु तज्री लिमुस्तक़र्रिल्-लहा ज़ालि-क तक़्दीरुल्-अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (३८) वल्-क़-म-र क़द्दर्नाहु मनाज़ि-ल हत्ता आ-द कल्-अुर्जूनिल्-क़दीम (३९)

يٰسٓ ٣٦ ٣٥٢ ومالى ٢٣

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ ءَأَتَّخِذُ
مِن دُونِهِ آلِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ
شَيْئًا وَلَا يُنقِذُونِ ۝ إِنِّي إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ إِنِّي آمَنتُ
بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ۝ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۝
بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ۝ وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ
قَوْمِهِ مِن بَعْدِهِ مِن جُندٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ ۝
إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ ۝ يَا حَسْرَةً عَلَى
الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا
كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ وَإِن كُلٌّ
لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝ وَآيَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَ
أَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَ
أَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۝ لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ
أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا
تُنبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَآيَةٌ لَّهُمُ اللَّيْلُ
نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُم مُّظْلِمُونَ ۝ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا
ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ
كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنبَغِي لَهَا أَن تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا

व. ग़ुफ़रान ★रु २/१ आ २०

इबादत न करूं, जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ तुम को लौट कर जाना है। (२२) क्या मैं उन को छोड कर औरो को माबूद बनाऊं ? अगर खुदा मेरे हक मे नुक्सान करना चाहे, तो उन की सिफ़ारिश मुझे कुछ भी फायदा न दे सके और न वे मुझे छुडा ही सके। (२३) तब तो मैं खुली गुमराही मे पड़ गया। (२४) मैं तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान लाया हू, सो मेरी बात सुन रखो। (२५) हुक्म हुआ कि बहिश्त मे दाखिल हो जा। बोला, काश ! मेरी कौम को खबर हो, (२६) कि खुदा ने मुझे बख्श दिया और इज्ज़त वालो मे किया। (२७) और हमने उस के बाद उस की क़ौम पर कोई लश्कर नही उतारा और न हम उतारने वाले थे ही। (२८) वह तो सिर्फ एक चिघाड की (आग थी,) सो वे (इस से) यकायक बुझ कर रह गये। (२९) बन्दो पर अफसोस है कि उन के पास कोई पैगम्बर नही आता, मगर उस का मज़ाक उडाते है। (३०) क्या उन्हो ने नही देखा कि हमने उन से बहुत से लोगो को हलाक कर दिया था। अब वे उन की तरफ लौट कर नही आएंगे। (३१) और सब के सब हमारे सामने हाज़िर किए जाएगे। (३२)★

और एक निशानी उन के लिए मुर्दा ज़मीन है कि हम ने उस को ज़िंदा किया और उसमे से अनाज उगाया, फिर ये उस मे से खाते है। (३३) और उस मे खजूरो और अंगूरो के बाग पैदा किए और उस मे चश्मे जारी किए, (३४) ताकि ये उन के फल खाए और उन के हाथो ने तो उन को नही बनाया, तो फिर क्या ये शुक्र नही करते ? (३५) वह खुदा पाक है, जिस ने ज़मीन के, पेड-पौधो के और खुद उन के और जिन चीज़ो की उन को खबर नही, सब के जोड़े बनाए। (३६) और एक निशानी उन के लिए रात है कि उस मे से हम दिन को खीच लेते है, तो उस वक्त उन पर अंधेरा छा जाता है। (३७) और सूरज अपने मुकर्रर रास्ते पर चलता रहता है। यह (खुदा-ए-) गालिब (और) दाना का (मुकर्रर किया हुआ) अन्दाज़ा है। (३८) और चाद की भी हम ने मंज़िले मुकर्रर कर दी, यहा तक कि (घटते-घटते) खजूर की पुरानी शाख की तरह हो जाता है। (३९)

व. गुफ़रान ★रु २/१ आ २०

लश्शम्सु यम्बग़ी लहा अन् तुद्‌रिकल्-क-म-र व लल्लैलु साबिक़ुन्नहारि॰ व कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्यस्बहून (४०) व आयतुल्लहुम् अन्ना ह-मल्ना जुर्रिय्य-त-हुम् फिल्-फ़ुल्किल्-मश्हून ॥ (४१) व ख़-लक़्ना लहुम् मिम्-मिस्लिही मा यर्कबून॰ (४२) व इन्-नशअ् नुग़्रिक़्-हुम् फ़ला सरी-ख़ लहुम् व ला हुम् युन्क़जून ॥ (४३) इल्ला रह्-म-तम्-मिन्ना व मताअन् इला ही-न् (४४) व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तक़ू मा बै-न ऐदीकुम् व मा ख़ल्फ़कुम् ल-अ़ल्लकुम् तुर्हमून (४५) व मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम्मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ-रिज़ीन (४६) व इज़ा क़ी-ल लहुम् अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज - क़कुमुल्लाहु ॥ क़ालल्लज़ी - न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अ-नुत्‌अिमु मल्लौ यशाउल्लाहु अत - अ़ - महू ۖ इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिम् - मुबीन (४७) व यक़ूलू-न मता हाज़लवअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४८) मा यन्ज़ुरू-न इल्ला सैह़तंव्वाहि-द-तन् तअ्-ख़ुज़ुहुम् व हुम् यख़िस्सिमून (४९) फ़ला यस्ततीअू-न तौसि-य-तव-व ला इला अह्‌लिहिम् यर्जिअून ★ (५०) व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-इज़ा हुम् मिनल्-अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून (५१) क़ालू यावैलना मम्ब-अ-स्ना मिम्-मर्क़दिना ▨ हाज़ा मा व-अ-दर्रह्‌मानु व स-द-क़ल्-मुर्सलून (५२) इन् कानत् इल्ला सैह़तंव्वाहि-द-तन् फ़इज़ा हुम् जमीअुल्लदैना मुह़्ज़रून (५३) फ़ल्यौ-म ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअंव्-व ला तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्-मलून (५४) इन्-न अस्हाबल्-जन्नतिल्-यौ-म फ़ी शुग़ुलिन् फ़ाकिहून ۖ (५५) हुम् व अज़्वाजुहुम् फ़ी ज़िलालिन् अ़-लल्-अराइकि मुत्तकिऊन (५६) लहुम् फ़ीहा फ़ाकिहतुंव्-व लहुम् मा यद्दअून ۖ (५७) सलामुन् ۚ क़ौलम् - मिर्रब्बिर्-रहीम (५८) वम्ताज़ुल् यौ-म अय्युहल् - मुज्रिमून (५९)

٣٥٣

الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَآيَةٌ لَّهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا
ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُم مِّن مِّثْلِهِ مَا
يَرْكَبُونَ ۝ وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنقَذُونَ ۝ إِلَّا
رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ
أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ
مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا
مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ
اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا
الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً
تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ
أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ
يَنسِلُونَ ۝ قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ
الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ۝ إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ
جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ
إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ۝
هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ
وَلَهُم مَّا يَدَّعُونَ ۝ سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ ۝ وَامْتَازُوا

★ रु ३/२ आ १८ ▨ व लाज़िम, व ग़ुफ़रान, व. मंज़िल

न तो सूरज ही से हो सकता है कि चाद को जा पकडे और न रात ही दिन से पहले आ सकती है और सब अपने दायरे मे तैर रहे है। (४०) और एक निशानी उन के लिए यह है कि हम ने उन की औलाद को भरी हुई कश्ती मे सवार किया। (४१) और उन के लिए वैसी ही और चीज़े पैदा की, जिन पर वे सवार होते है। (४२) और अगर हम चाहे, तो उन को डुबा दे, फिर न तो उन की कोई फरियाद सुनने वाला हो और न उन को रिहाई मिले, (४३) मगर यह हमारी रहमत और एक मुद्दत तक के फायदे है। (४४) और जब उन से कहा जाता है कि जो तुम्हारे आगे और जो तुम्हारे पीछे है, उस से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (४५) और उन के पास उन के परवरदिगार की तरफ से कोई निशानी नही आयी, मगर उन से मुह फेर लेते है। (४६) और जब उन से कहा जाता है कि जो रोजी खुदा ने तुम को दी है, उस मे से खर्च करो, तो काफिर मोमिनो से कहते है कि भला हम उन लोगो को खाना खिलाए, जिन को अगर खुदा चाहता, तो खुद खिला देता, तुम तो खुली गलती मे हो। (४७) और कहते है कि अगर तुम सच कहते हो, तो यह वायदा कव (पूरा) होगा? (४८) ये तो चिंघाड के इन्तिजार मे है, जो उन को इस हाल मे कि आपस मे झगड रहे होगे, आ पकडेगी। (४९) फिर न तो वसीयत कर सकेगे और न अपने घर वालो मे वापस जा सकेंगे। (५०)★

और (जिस वक्त) सूर[1] फूका जाएगा, यह कब्रो से (निकल कर) अपने परवरदिगार की तरफ दौड पडेगे। (५१) कहेगे, (ऐ हे!) हमे हमारी ख्वाबगाहो से किस ने (जगा) उठाया ▨ यह वही तो है जिस का खुदा ने वायदा किया था और पैगम्बरो ने सच कहा था। (५२) सिर्फ एक जोर की आवाज़ का होना होगा कि सब के सब हमारे सामने आ हाज़िर होगे। (५३) उस दिन किसी शख्स पर कुछ भी जुल्म नही किया जाएगा और तुम को बदला वैसा ही मिलेगा, जैसे तुम काम करते थे। (५४) जन्नत वाले उस दिन ऐश व निशात के मश्गले मे होगे, (५५) वे भी और उन की बीविया भी, सायो मे तख्तो पर तकिए लगाए बैठे होगे। (५६) वहा उन के लिए मेवे और जो चाहेगे, (मौजूद होगा)। (५७) परवरदिगार मेहरबान की तरफ से सलाम (कहा जाएगा)। (५८)

---

१ सूर दो वार फूका जाएगा। पहली वार के वाद सव लोग वेहोश हो जाएगे और उन पर नीद की हालत छा जाएगी। दूसरी वार के वाद सव ज़िदा हो जाएगे। चूकि पहले सूर के वाद उन की हालत यह होगी कि गोया सो रहे हैं, इस लिए दूसरे सूर के वाद यह ख्याल करेगे कि नीद से जागे है, तव कहेगे कि ऐ हे! हम को किस ने जगा दिया।

★रु ३/२ आ १८ ▨ व लाज़िम व. गुफ्रान व. मंज़िल

अ-लम् अअ्-हद् इलैकुम् या बनी आद-म अल्ला तअ्-बुदुश्शैता-न इन्नहू लकुम् अदुव्वुम् मुबीनुंव-(६०)-व अनिअ्-बुदूनी हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (६१) व ल-क़द् अज़ल्-ल मिन्कुम् जिबिल्लन् कसीरन् अ-फ़-लम् तकूनू तअ्-क़िलून (६२) हाज़िही जहन्नमुल्लती कुन्तुम् तूअदून (६३) इस्लौहल्-यौ-म बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (६४) अल्यौ-म नख़्तिमु अला अफ़्वाहिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम् व तश्हदु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून (६५) व लौ नशाउ ल-त-मस्ना अला अअ्-युनिहिम् फ़स्त-बकुस्-सिरा-त फ़-अन्ना युब्सिरून (६६) व लौ नशाउ ल-म-सख़्नाहुम् अला मकानतिहिम् फ़मस्तताअू मुज़िय्यव्-व ला यर्जिअून ★(६७) व मन् नुअम्मिर्हु नुनक्किस्हु फ़िल्ख़ल्कि अ-फ़ला यअ्-क़िलून (६८) व मा अल्लम्नाहुश्-शिअ्-र व मा यम्बग़ी लहू इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुंव्-व क़ुर्आनुम्-मुबीनुल्-(६९) लियुन्ज़ि-र मन् का-न हय्यव्-व यहिक़्क़ल्-क़ौलु अलल्-काफ़िरीन (७०) अ-व लम् यरौ अन्ना ख़-लक़्ना लहुम् मिम्मा अमिलत् ऐदीना अन्आमन् फ़हुम् लहा मालिकून (७१) व ज़ल्लल्नाहा लहुम् फ़मिन्हा रकूबुहुम् व मिन्हा यअ्कुलून (७२) व लहुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व मशारिबु अ-फ़ला यश्कुरून (७३) वत्तख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-ह-तल्-लअल्लहुम् युन्सरून (७४) ला यस्ततीअू-न नस्रहुम् व हुम् लहुम् जुन्दुम्-मुह्ज़रून (७५) फ़ला यह्ज़ुन्-क क़ौलुहुम् इन्ना नअ्-लमु मा युसिर्रून व मा युअ्-लिनून (७६) अ-व लम् यरल्-इन्सानु अन्ना ख़-लक़्नाहु मिन् नुत्फ़तिन् फ़इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (७७) व ज़-र-ब लना म-स-लंव्-व नसि-य ख़ल्क़हू का-ल मंय्युह्यिल्-अिज़ा-म व हि-य रमीम (७८)

يس ٣٦ ٣٥٥ ومالي ٢٣

اليوم ايها المجرمون ۝ الم اعهد اليكم يبني ادم ان لا تعبدوا
الشيطن انه لكم عدو مبين ۝ وان اعبدوني هذا صراط
مستقيم ۝ ولقد اضل منكم جبلا كثيرا افلم تكونوا تعقلون ۝
هذه جهنم التي كنتم توعدون ۝ اصلوها اليوم بما كنتم تكفرون ۝
اليوم نختم على افواههم وتكلمنا ايديهم وتشهد ارجلهم بما
كانوا يكسبون ۝ ولو نشاء لطمسنا على اعينهم فاستبقوا الصراط
فانى يبصرون ۝ ولو نشاء لمسخنهم على مكانتهم فما استطاعوا
مضيا ولا يرجعون ۝ ومن نعمره ننكسه في الخلق افلا
يعقلون ۝ وما علمنه الشعر وما ينبغي له ان هو الا ذكر وقران
مبين ۝ لينذر من كان حيا ويحق القول على الكفرين ۝ او
لم يروا انا خلقنا لهم مما عملت ايدينا انعاما فهم لها ملكون ۝
وذللنها لهم فمنها ركوبهم ومنها ياكلون ۝ ولهم فيها منافع
ومشارب افلا يشكرون ۝ واتخذوا من دون الله الهة لعلهم
ينصرون ۝ لا يستطيعون نصرهم وهم لهم جند محضرون ۝
فلا يحزنك قولهم انا نعلم ما يسرون وما يعلنون ۝ اولم ير
الانسان انا خلقنه من نطفة فاذا هو خصيم مبين ۝ وضرب
لنا مثلا ونسي خلقه قال من يحي العظام وهي رميم ۝ قل

व॰ ग़ुफ़रान ★रु॰ ४/३ आ १७ व लाज़िम

और गुनाहगारो ! तुम आज अलग हो जाओ। (५९) ऐ आदम की औलाद ! हम ने तुम से कह नही दिया था कि शैतान को न पूजना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (६०) और यह कि मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। (६१) और उस ने तुम मे से बहुत-सी खल्कत को गुमराह कर दिया था, तो क्या तुम समझते नही थे ? (६२) यही वह जहन्नम है, जिस की तुम्हे खबर दी जाती थी। (६३) (सो,) जो तुम कुफ़्र करते रहे, उस के बदले आज इस मे दाखिल हो जाओ। (६४) आज हम उन के मुहो पर मुहर लगा देंगे और जो कुछ ये करते रहे थे, उन के हाथ हम से बयान कर देंगे और उन के पाव (उस की) गवाही देंगे। (६५) और अगर हम चाहे तो उन की आखो को मिटा (कर अधा कर) दे, फिर ये रास्ते को दौडे, तो कहा देख सकेंगे ? (६६) और हम चाहे तो उन की जगह उन की शक्ले बदल दे, फिर वहा से न आगे जा सकें, न पीछे लौट सके। (६७)★

और जिस को हम बडी उम्र देते है, तो उसे खल्कत मे औधा कर देते है,[1] तो क्या ये समझते नही ?[2] (६८) और हम ने उन (पैगम्बर) को शेर कहना नही सिखाया और न वह उन को मुनासिव है। यह तो सिर्फ नसीहत और साफ-साफ कुरआन (हिक्मत से भरा हुआ) है, (६९) ताकि उस शख्स को जो जिंदा हो, हिदायत का रास्ता दिखाए और काफिरो पर बात पूरी हो जाए। (७०) क्या उन्होने नही देखा कि जो चीज़े हमने अपने हाथो से बनायी हम ने उन मे से उन के लिए चारपाए पैदा कर दिए और ये उन के मालिक है। (७१) और उन को उन के काबू मे कर दिया, तो कोई तो उन मे से उन की सवारी है और किसी को ये खाते है। (७२) और उन मे उन के लिए (और) फायदे और पीने की चीजे है, तो क्या ये शुक्र नही करते ? (७३) और उन्हो ने खुदा के सिवा (और) माबूद बना लिए है कि शायद (उन से) उन को मदद पहुचे। (७४) (मगर) वे उन की मदद की (हरगिज) ताकत नही रखते और वे उन की फौज हो कर हाजिर किए जाएंगे।[3] (७५) तो उन की बाते तुम्हे गमनाक न कर दे यह जो कुछ छिपाते है और जो कुछ जाहिर करते है, हमे सब मालूम है। (७६) क्या इसान ने नही देखा कि हम ने उस को नुत्फे से पैदा किया, फिर वह तडाक-पडाक झगडने लगा। (७७) और हमारे बारे मे मिसाले बयान करने लगा और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कि (जब) हड्डिया सड-गल जाएगी, तो इन को कौन ज़िदा करेगा ? (७८) कह दो कि उन को वह ज़िदा

---

१ यानी बच्चे से जवान करते हैं, फिर जवान से बूढा कर देते हैं।

२ जो खुदा इन्सान की बनावट को इस तरह बदल देता है, वह इस पर भी कुदरत रखता है कि मुर्दो को ज़िला उठाए।

३ यानी कियामत के दिन, जहा से बुतपरस्त खुदा के सामने हाजिर किए जाएगे, वहा यह बुत भी, जो बुतपरस्तो का लश्कर होगा, जवाबदेही के लिए हाज़िर किया जाएगा। कुछ ने यही मतलब निकाले हैं कि वह यानी बुत खुद अपनी मदद तो कर सकते ही नही और बुतपरस्त उन की हिफाज़त के लिए एक लश्कर बन कर उन के सामने मौजूद रहते है। ऐसे बे-अख्तियार और बे-बस उन की क्या मदद करेंगे ?

कुल् युह्-यीहल्लजी अन्श-अहा अव्व-ल मर्रतिन् ط व हु-व बिकुल्लि खल्क़िन् अलीमु-नि-لا (७९) ल्लजी ज-अ-ल लकुम् मिनश्-श-जरिल्-अख्-ज़रि नारन् फ़इजा अन्तुम् मिन्हु तूकिदून (८०) अ-व लैसल्लजी ख-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिक़ादिरिन् अला अय्यख़्लु-क मिस्लहुम् ط ※ बला ج व हुवल्ख़ल्लाकुल्-अलीम (८१) इन्नमा अम्रुहू इजा अरा-द शैअन् अय्यक़ू-ल लहू कुन् फ-यकून (८२) फ-सुब्हानल्लजी बियदिही म-लकूतु कुल्लि शैइ व-व इलैहि तुर्जअून ★ (८३)

३७ सूरतुस्साफ़्फ़ाति ५६

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३९५१ अक्षर, ८७३ शब्द, १८२ आयते और ५ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वस्साफ्फाति सफ़्फ़न् لا (१) फ़ज्जाजिराति जज्रन् لا (२) फत्तालियाति जिक्रन् لا (३) इन् - न इलाहकुम् ल-वाहिद ط (४) रब्बुस्समावाति वल्अर्जि व मा बैनहुमा व रब्बुल्-मशारिक़ ط (५) इन्ना ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बिजीनति-निल्-कवाकिब لا (६) व हिफ़्ज़म्-मिन् कुल्लि शैतानिम्-मारिद ج (७) ला यस्सम्मअू-न इलल्-म-ल-इल्-अअ-ला व युक़्जफ़ू-न मिन् कुल्लि जानिब ق (८) दुहूरव्-व लहुम् अज़ाबुव्वासिब لا (९) इल्ला मन् ख़तिफल्-ख़त्फ़-तु फ-अत्ब-अहू शिहाबुन् साकिब (१०) फ़स्तफ़्तिहिम् अहुम् अशद्दु खल्क़न् अम्मन् ख-लक्ना ط इन्ना ख-लक़्नाहुम् मिन् तीनिल्-लाजिब (११) बल् अजिब-त व यस्ख़रून ق (१२) व इजा जुक्किरू ला यज्कुरून ق (१३) व इजा रऔ आयतुय्यस्तस्खिरून ق (१४) व कालू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन ق (१५) अ-इजा मित्ना व कुन्ना तुराबव्-व अिज़ामन् अ इन्ना ल-मब्अूसून لا (१६) अ-व आबाउनल्-अव्वलून ط (१७) कुल् न-अम् व अन्तुम् दाखिरून ج (१८)

الصافات ٣٧ — ٣٥٦ — ومالي ٢٣

يحييها الذي انشاها اول مرة وهو بكل خلق عليم ﴿٧٩﴾ الذي
جعل لكم من الشجر الاخضر نارا فاذا انتم منه توقدون ﴿٨٠﴾
اوليس الذي خلق السموت والارض بقدر على ان يخلق مثلهم
بلى وهو الخلق العليم ﴿٨١﴾ انما امره اذا اراد شيئا ان يقول له كن
فيكون ﴿٨٢﴾ فسبحن الذي بيده ملكوت كل شيء واليه ترجعون ﴿٨٣﴾
سورة الصفت مكية وهي مائة واثنان وثمانون اية وخمس ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
والصفت صفا ﴿١﴾ فالزجرت زجرا ﴿٢﴾ فالتليت ذكرا ﴿٣﴾ ان الهكم
لواحد ﴿٤﴾ رب السموت والارض وما بينهما ورب المشارق ﴿٥﴾
انا زينا السماء الدنيا بزينة الكواكب ﴿٦﴾ وحفظا من كل شيطن
مارد ﴿٧﴾ لا يسمعون الى الملا الاعلى ويقذفون من كل جانب ﴿٨﴾
دحورا ولهم عذاب واصب ﴿٩﴾ الا من خطف الخطفة فاتبعه
شهاب ثاقب ﴿١٠﴾ فاستفتهم اهم اشد خلقا ام من خلقنا انا خلقنهم
من طين لازب ﴿١١﴾ بل عجبت ويسخرون ﴿١٢﴾ واذا ذكروا لا
يذكرون ﴿١٣﴾ واذا راوا اية يستسخرون ﴿١٤﴾ وقالوا ان هذا الا
سحر مبين ﴿١٥﴾ ءاذا متنا وكنا ترابا وعظاما ءانا لمبعوثون ﴿١٦﴾
اوءاباؤنا الاولون ﴿١٧﴾ قل نعم وانتم دخرون ﴿١٨﴾ فانما هي

※ व-ग़ुफ़्रान ★ रु ५/४ आ १६

करेगा, जिस ने उन को पहली बार पैदा किया था और वह सब किस्म का पैदा करना जानता है। (७९) (वही) जिस ने तुम्हारे लिए हरे पेड मे आग पैदा की, फिर तुम उस (की टहनियो को रगड कर उन) से आग निकालते हो।[1] (८०) भला जिस ने आसमानो और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर क़ुदरत नही रखता कि (उन को फिर) वैसे ही पैदा कर दें ▨ क्यो नही, और वह तो बड़ा पैदा करने वाला (और) इल्म वाला है। (८१) उस की शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उस से फरमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (८२) वह (जात) पाक है, जिस के हाथ में हर चीज़ की बादशाही है और उस की तरफ तुम को लौट कर जाना है। (८३)★

३७ सूरः साफ़्फ़ात ५६

सूरः साफ्फात मक्की है, इस मे एक सौ बयासी आयते और पाच रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम सफ बाधने वालो की, परा जमा कर,[2] (१) फिर डांटने वालो की, झिडक कर,[3] (२) फिर जिक्र (यानी कुरआन) पढ़ने वालो की,[4] (गौर कर-कर)[5], (३) कि तुम्हारा माबूद एक ही है, (४) जो आसमानो और जमीन और जो चीजें इन मे है, सब का मालिक है और सूरज के निकलने की जगहो का भी मालिक है। (५) बेशक हम ही ने दुनिया के आसमान को सितारो की जीनत से सजाया। (६) और हर शैतान सरकश मे उस की हिफाज़त की, (७) कि ऊपर की मज्लिस की तरफ कान न लगा सके और हर तरफ से (उन पर अगारे) फेंके जाते है। (८) (यानी वहा से) निकाल देने को और उन के लिए हमेशा का अजाब है। (९) हा, जो कोई (फरिश्तो की किसी बात को) चोरी से झपट लेना चाहता है, तो जलता हुआ अंगारा उस के पीछे लगता है। (१०) तो उन से पूछो कि उन का बनाना मुश्किल है या जितनी खल्कत हमने बनायी है उन का ? उन्हे हमने चिपकते गारे से बनाया है। (११) हा, तो तुम ताज्जुब करते हो और ये मजाक उडाते है। (१२) और जब उन को नसीहत दी जाती है, तो नसीहत कुबूल नही करते। (१३) और जब कोई निशानी देखते है, तो ठट्ठे करते है। (१४) और कहते हैं कि यह तो खुला जादू है, (१५) भला जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डिया हो गये, तो क्या फिर उठाए जाएंगे ? (१६) और क्या हमारे बाप-दादा भी (जो) पहले (हो गुज़रे हैं) ? (१७)

---

१ कहते हैं कि बास या कुछ और पेड ऐसे हैं कि रहते तो हरे है, लेकिन अगर उन की शाखो को रगडा जाए, तो उन मे से आग निकलती है और यह खुदा की बहुत बडी कुदरत की दलील है।

२ सफ बाधने वालो से मुराद या तो मुजाहिद है, जो लडाई के बाद मे सफ बाध कर खडे होते हैं या नमाज़ी या फरिश्ते कि वे भी सफ मे मिल कर और पैर जमा कर खडे होते है।

३ डाटने वालो से या तो गाज़ी मुराद हैं, जो अपने घोडो को दूर से डाट कर हमला करते हैं या रब्बानी इल्म रखने वाले मुराद हैं, जो लोगो को गुनाह करने पर गुनाह में रोकने के लिए डाटते हैं।

४ फरिश्ते खडे होते है कतार हो कर अल्लाह का हुक्म सुनने को, फिर झिडकते हैं शैतानो को, जो सुनने को जा लगते है, फिर जब उतर चुका, उस को जा लगते हैं, फिर जब उतर चुका, उन को पढ़ते हैं एक दूसरे को बताने को।

५ कुरआन पढने वालो से या तो वे लोग मुराद है, जो लडाई से फारिग हो कर कुरआन की तिलावत में लग जाते

(शेष पृष्ठ ७११ पर)

▨ व गुफ्रान ★रु ५/४ आ १६

फ-इन्नमा हि-य जज्रतुंव्वाहि-द-तुन् फइज़ा हुम् यन्ज़ुरून (१९) व कालू या वैलना हाज़ा यौमुद्दीन (२०) हाज़ा यौमुल्-फ़स्लिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (२१) उह्शुरुल्लज़ी-न ज़-लमू व अज़्वाजहुम् व मा कानू यअ्-बुदून (२२) मिन् दूनिल्-लाहि फ़ह्दूहुम् इला सिरातिल् जहीम ● (२३) व किफ़ूहुम् इन्नहुम् मस्ऊलून (२४) मा लकुम् ला तनासरून (२५) बल् हुमुल्यौ-म मुस्तस्लिमून (२६) व अक़्ब-ल बअ्-ज़ुहुम् अला बअ्-ज़िंय्य-त-सा-अलून (२७) क़ालू इन्नकुम् कुन्तुम् तअ्-तूनना अनिल्यमीन (२८) कालू बल् लम् तकूनू मुअ्मिनीन (२९) व मा का-न लना अलैकुम् मिन् सुल्तानिन् बल् कुन्तुम् कौमन् तागीन (३०) फ-हक़्-क़ अलैना क़ौलु रब्बिना इन्ना ल-ज़ाइ-कून (३१) फ़-अग्वैनाकुम् इन्ना कुन्ना गावीन (३२) फ़-इन्नहुम् यौमइज़िन् फ़िल्अज़ाबि मुश्तरिकून (३३) इन्ना कज़ालि-क नफ़्अलु बिल्-मुज्रिमीन (३४) इन्नहुम् कानू इज़ा की-ल लहुम् ला इला-ह इल्लल्लाहु यस्तक्बिरून (३५) व यकूलू-न अ-इन्ना ल-तारिकू आलिहतिना लिशाअिरिम्-मज्नून (३६) बल् जा-अ बिल्हक़्क़ि व सद्-द-कल्-मुर्सलीन (३७) इन्नकुम् लज़ाइकुल्-अज़ाबिल्-अलीम (३८) व मा तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्-मलून (३९) इल्ला अिबादल्लाहिल्-मुख्-लसीन (४०) उलाइ-क लहुम् रिज़्कुम्-मअ्-लूम (४१) फवाकिहु व हुम् मुक्रमून (४२) फी जन्नातिन्नअीम् (४३) अला सुरुरिम्-मु-त-काबिलीन (४४) युताफु अलैहिम् बिकअ्-सिम्-मिम्मअीनिम- (४५) बैज़ा-अ लज़्ज़तिल्-लिश्शारिबीन (४६) ला फ़ीहा गौलुंव्-व ला हुम् अन्हा युन्ज़फ़ून (४७) व अिन्दहुम् कासिरातुत्तर्फि अीनुन् (४८)

وَمَالِيَ ٢٣ ٣٥٨ الصّٰفّٰت ٣٧

زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۝ وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ
الدِّينِ ۝ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ احْشُرُوا
الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝ مِنْ دُونِ اللَّهِ
فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۝ وَقِفُوهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ۝ مَا
لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ۝ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۝ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ
عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ۝
قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ
بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ۝ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا إِنَّا لَذَائِقُونَ ۝
فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ۝ فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ
مُشْتَرِكُونَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا
قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُوا
آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَجْنُونٍ ۝ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِنَّكُمْ
لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ۝ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَعْلُومٌ ۝ فَوَاكِهُ
وَهُمْ مُكْرَمُونَ ۝ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ۝
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ۝ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ۝
لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ۝ وَعِنْدَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ

★ रु १/५ आ २१ ● रुबुअ १/४

कह दो कि हा, और तुम जलील होगे। (१८) वह तो एक ज़ोर की आवाज़ होगी और ये उस वक्त देखने लगेगे। (१६) और कहेगे, हाय शामत! यही बदले का दिन है। (२०) (कहा जाएगा कि हा,) फ़ैसले का दिन, जिस को तुम झूठ समझते थे, यही है। (२१)★

जो लोग ज़ुल्म करते थे, उन को और उन के हमजिंसो को और जिन की वे पूजा करते थे, (सब को) जमा कर लो। (२२) (यानी जिन को) खुदा के सिवा (पूजा करते थे) फिर उन को जहन्नम के रास्ते पर चला दो●(२३) और उन को ठहराए रखो कि उन से (कुछ) पूछना है। (२४) तुम को क्या हुआ कि एक दूसरे की मदद नही करते, (२५) बल्कि आज तो वे फरमांबरदार है। (२६) और एक दूसरे की तरफ रुख कर के सवाल (व जवाब) करेगे। (२७) कहेगे, क्या तुम ही हमारे पास दाए (और बाए) से आते थे। (२८) वे कहेगे, बल्कि तुम ही ईमान लाने वाले न थे। (२६) और हमारा तुम पर कुछ ज़ोर न था, बल्कि तुम सर-कश लोग थे। (३०) सो हमारे बारे मे हमारे परवरदिगार की बात पूरी हो गयी, अब हम मज़े चखेगे। (३१) हमने तुम को भी गुमराह किया (और) हम खुद भी गुमराह थे। (३२) पस वे उस दिन अजाब मे एक दूसरे के शरीक होगे। (३३) हम गुमराहो के साथ ऐसा ही किया करते हैं। (३४) उन का यह हाल था कि जब उन से कहा जाता था, कि खुदा के सिवा कोई माबूद नही, तो घमड करते थे। (३५) और कहते थे कि भला हम एक दीवाने शायर के कहने से कही अपने माबूदो को छोड देने वाले है। (३६) (नही) बल्कि वे हक ले कर आए है और (पहले) पैगम्बरो को सच्चा कहते है। (३७) बेशक तुम तक्लीफ देने वाले अज़ाब का मजा चखने वाले हो। (३८) और तुम को बदला वैसा ही मिलेगा, जैसे तुम काम करते थे, (३६) मगर जो खुदा के खास बन्दे हैं। (४०) यही लोग है, जिन के लिए रोज़ी मुकर्रर है। (४१) (यानी) मेवे और उन का एज़ाज़ किया जाएगा। (४२) नेमत के बागो मे, (४३) एक दूसरे के सामने तख्तो पर (बैठे होगे), (४४) शराबे लतीफ के जाम का उन मे दौर चल रहा होगा, (४५) जो रग की सफेद और पीने वालो के लिए (सरासर) लज्ज़त होगी, (४६) न उस से सर-दर्द हो और न वे उस मे मतवाले हो, (४७) और उन के पास औरते होगी, जो निगाहे नीची रखती होगी और आखें बडी-बडी, (४८) गोया

(पृष्ठ ७०६ का शेष)

हैं या आम कुरआन पढने वाले। चूकि अल्लाह तआला ने इन खूबियो के लोगो की कस्में खायी है, इन से समझना चाहिए कि उस के नज़दीक उन की बडी बडाई है। 'गौर कर-कर' लफ्ज़ जो तर्जुमे मे बढाया गया है, इस से एक तो इबारत फाफिएदार हो गयी है, दूसरे यह ज़ाहिर करना मक्सूद है कि कुरआन का पढना इसी शक्ल मे मुफीद हो सकता है और इस के पढने से जो गरज़ है, वह तभी पूरी हो सकती है, जब गौर व फिक्र कर के पढा जाए। कुरआन मजीद का नाज़िल करने वाला फरमाता है, ऐ मुहम्मद! यह कुरआन एक बरकत वाली किताब है, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है। मक्सूद यह है कि लोग उस की आयतो पर गौर करें और अक्ल वाले उस से नसीहत पकडें।

★रु १/५ आ २१ ●रुबुअ १/४

क-अन्नहुन्-न बैजुम्-मक्नून (४९) फ-अक्ब-ल बअ्-जुहुम् अ़ला बअ्-जिय्य-तसा-अलून (५०) क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् इन्नी का-न ली क़रीनुंय्- (५१) - यक़ूलु अइन्न-क लमिनल्-मुसद्दिक़ीन (५२) अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव-व अ़िज़ा-मन् अ-इन्ना ल-मदीनून (५३) क़ा-ल हल् अन्तुम् मुत्तलिअून (५४) फत्त-ल-अ फ-र-आहु फी सवाइल्-जहीम (५५) क़ा-ल तल्लाहि इन् कित्-त ल-तुर्दीनि (५६) व लौ ला निअ्-मतु रब्बी लकुन्तु मिनल्-मुह्ज़रीन (५७) अ-फमा नह्नु बिमय्यितीन (५८) इल्ला मौत-त-नल्-ऊला व मा नह्नु बिमुअज़्ज़बीन (५९) इन्-न हाज़ा लहुवल् - फौज़ुल्-अ़ज़ीम (६०) लिमिस्लि हाज़ा फल्यअ्-मलिल्-आ़मिलून (६१) अ ज़ालि-क ख़ैरुन् नुज़ुलन् अम् श-ज-रतुज़्-ज़क़्क़ूम (६२) इन्ना ज-अ़ल्नाहा फित्-न-तल्-लिज़्ज़ालिमीन (६३) इन्नहा श-ज-रतुन् तख़्रुजु फी अस्लिल्-जहीमि (६४) तल्अुहा क-अन्नहू रुऊसुश्-शयातीन (६५) फ-इन्नहुम् ल-आकिलू-न मिन्हा फमालिऊ-न मिन्हल्-बुतून (६६) सुम्-म इन्-न लहुम् अ़लैहा लशौबम्-मिन् हमीम (६७) सुम्-म इन्-न मर्जि-अहुम् ल-इलल्-जहीम (६८) इन्नहुम् अल्फौ आबा-अहुम् ज़ाल्लीन (६९) फहुम् अ़ला आसा-रिहिम् युह्-रअून (७०) व ल-क़द् ज़ल्-ल क़ब्-लहुम् अक्सरुल्-अव्वलीन (७१) व ल-क़द् अर्सल्ना फ़ीहिम् मुन्ज़िरीन (७२) फन्ज़ुर् कै-फ का-न आक़िबतुल्-मुन्ज़रीन (७३) इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्-लसीन★(७४) व ल-क़द् नादाना नूहुन् फ़-लनिअ्-मल्-मुजीबून (७५) व नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल्-कर्बिल्-अ़ज़ीम (७६) व ज-अ़ल्ना ज़ुर्रिय्य-तहू हुमुल्-बाक़ीन (७७) व त-रक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन (७८) सलामुन् अ़ला नूहिन् फिल् - आ़लमीन (७९)

وما لي ٢٣ ٣٥٨ الصّٰفّٰت ٣٧

عِينٌ ۝ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ۝ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ
يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝ يَقُولُ أَإِنَّكَ
لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ۝
قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ۝ فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ قَالَ
تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ۝ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ
الْمُحْضَرِينَ ۝ أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ۝ إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ
بِمُعَذَّبِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ
الْعَامِلُونَ ۝ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً
لِّلظَّالِمِينَ ۝ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ۝ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ
رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ۝ فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۝
ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ۝ ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى
الْجَحِيمِ ۝ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ۝ فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ۝
وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِم
مُّنذِرِينَ ۝ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ
الْمُخْلَصِينَ ۝ وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ۝ وَنَجَّيْنَاهُ
وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ۝
وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ۝

★रु २/६ आ ५३

वह महफ़ूज अडे है, (४९) फिर वे एक दूसरे की तरफ रुख करके सवाल (व जवाव) करेंगे।(५०) एक कहने वाला उन मे से कहेगा कि मेरा एक साथी था, (५१) (जो) कहता था कि भला तुम भी (ऐसी बातो के) मान लेने वालो मे हो, (५२) भला जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डिया हो गये तो क्या हम को बदला मिलेगा ? (५३) (फिर) कहेगा कि भला तुम (उमे) झाक कर देखना चाहते हो ? (५४) (इतने मे) वह (ख़ुद) झाकेगा, तो उस को दोज़ख़ के बीच मे देखेगा। (५५) कहेगा, कि ख़ुदा की कसम ! तू तो मुझे हलाक ही कर चुका था। (५६) और अगर मेरे परवरदिगार की मेहरबानी न होती तो मैं भी उन मे होता जो (अज़ाब मे) हाजिर किए गए है। (५७) क्या (यह नही कि) हम (आगे कभी) मरने के नही। (५८) हा, (जो) पहली बार मरना (था, सो मर चुके) और हमे अजाब भी नही होने का, (५९) वेशक यह वडी कामियाबी है। (६०) ऐसी ही (नेमतो) के लिए अमल करने वालो को अमल करने चाहिए। (६१) भला यह मेहमानी अच्छी है या थूहर का पेड ? (६२) हमने उसको ज़ालिमों के लिए अज़ाब बना रखा है। (६३) वह एक पेड है कि जहन्नम के निचले हिस्से मे उगेगा। (६४) उसके ख़ोशे ऐसे होंगे, जैसे शैतानों के सर, (६५) सो वे उसी मे से खाएगे और उसी से पेट भरेंगे। (६६) फिर उस (खाने) के साथ उनको गर्म पानी मिला कर दिया जाएगा। (६७) फिर उनको दोजख़ की तरफ लौटाया जाएगा। (६८) उन्होंने अपने वाप-दादा को गुमराह ही पाया। (६९) सो वे उन्ही के पीछे दौडे चले जाते हैं। (७०) और उनसे पहले बहुत से पहले लोग भी गुमराह हो गये थे, (७१) और हमने उन मे तवीह करने वाले भेजे। (७२) सो देख लो, जिन को तबीह की गयी थी, उन का अजाम कैसा हुआ ? (७३) हा ख़ुदा के ख़ास बन्दो (का अजाम बहुत अच्छा हुआ)। (७४)★

और हम को नूह ने पुकारा, सो (देख लो कि) हम (दुआ को कैसे) अच्छे कुबूल करने वाले है। (७५) और हम ने उन को और उन के घर वालो को वडी मुसीवत से निजात दी। (७६) और उन की औलाद को ऐसा किया कि वही बाकी रह गये। (७७) और पीछे आने वालो मे उन का (अच्छा) जिक्र (वाकी) छोड दिया। (७८) (यानी) तमाम जहान मे (कि) नूह पर

★रु २/६ आ ५३

इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (८०) इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (८१) सुम्-म अग्-रक-नल्-आख़रीन (८२) व इन्-न मिन् शी-अतिही ल-इब्राहीम (८३) इज़् जा-अ रब्बहू बिक़ल-बिन् सलीम (८४) इज़् क़ा-ल लिअबीहि व क़ौमिही माज़ा तअ्-बुदून (८५) अ-इफ़्कन् आलि-ह-तन् दूनल्लाहि तुरीदून (८६) फ़ मा ज़न्नुकुम् बिरब्बिल्-आलमीन (८७) फ़-न-ज़-र नज़्-र-तन् फ़िन्नुजूमि (८८) फ़ क़ा-ल इन्नी सक़ीम (८९) फ़-त-वल्लौ अन्हु मुद्बिरीन (९०) फ़रा-ग़ इला आलिहतिहिम् फ़-क़ा-ल अला तअ्-कुलून (९१) मा लकुम् ला तन्तिक़ून (९२) फ़रा-ग़ अलैहिम् ज़र्बम्-बिल्यमीन (९३) फ़-अक़्बलू इलैहि यज़िफ़्फ़ून (९४) क़ा-ल अ-तअ्-बुदू-न मा तन्हितून (९५) वल्लाहु ख़-ल-ककुम् व मा तअ्-मलून (९६) क़ालुब्नू लहू बुन्-यानन् फ़-अल्क़ूहु फ़िल्जहीम (९७) फ़-अरादू बिही कैदन् फ़-ज-अल्ना-हुमुल्-अस्-फ़लीन (९८) व क़ा-ल इन्नी ज़ाहिबुन् इला रब्बी स-यह्दीन (९९) रब्बि हब् ली मिनस्सालिहीन (१००) फ़-बश्शर्नाहु बिग़ुलामिन् हलीम (१०१) फ़-लम्मा ब-ल-ग़ म-अहुस्सअ्-य क़ा-ल या बुनय्-य इन्नी अरा फ़िल्मनामि अन्नी अज़्बहु-क फ़न्ज़ुर् माज़ा तरा क़ा-ल या अ-बतिफ़्-अल् मा तुअ्-मरु स-तजिदुनी इन् शाअल्लाहु मिनस्-साबिरीन (१०२) फ़-लम्मा अस्-लमा व तल्लहू लिल्जबीन (१०३) व नादैनाहु अंय्या इब्राहीम (१०४) क़द् सद्-दक़्तर्-रुअ्या इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सि-नीन (१०५) इन्-न हाज़ा ल-हुवल्-बलाउल्-मुबीन (१०६) व फ़दैनाहु बिज़िब्हिन् अज़ीम (१०७) व त-रक्ना अलैहि फ़िल्-आख़िरीन (१०८) सलामुन् अला इब्राहीम (१०९) कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (११०) इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (१११)

وما لي ٢٣ ٣٥٩ الصّٰفّٰت ٣٧

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝
ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝ وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ جَاءَ
رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ۝
أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ۝ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ۝ فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۝
فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۝ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ۝ فَرَاغَ
عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ۝ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ۝ قَالَ أَتَعْبُدُونَ
مَا تَنْحِتُونَ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ۝ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا
فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ۝ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ۝
وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ۝
فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ۝ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي
أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ
مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ۝ فَلَمَّا أَسْلَمَا
وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ۝ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ۝ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا ۚ
إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝
وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ
إِبْرَاهِيمَ ۝ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا

व लाज़िम

सलाम। (७९) भले लोगो को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (८०) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दो मे से थे। (८१) फिर हमने दूसरो को डुबो दिया। (८२) और उन्ही की पैरवी करने वालो मे इब्राहीम थे ▨ (८३) जब वह अपने परवरदिगार के पास (ऐब से) पाक दिल लेकर आए। (८४) जब उन्हो ने अपने बाप से और अपनी कौम से कहा कि तुम किन चीज़ो को पूजते हो? (८५) क्यो झूठ (बनाकर) खुदा के सिवा और माबूदो की तलब मे हो? (८६) भला दुनिया के परवरदिगार के बारे मे तुम्हारा क्या ख्याल है ?[1] (८७) जब उन्हो ने सितारो की तरफ एक नज़र की। (८८) और कहा मैं तो बीमार हूं। (८९) तब वे उन से पीठ फेर कर लौट गये। (९०) फिर (इब्राहीम) उन के माबूद की तरफ मुतवज्जह हुए और कहने लगे कि तुम खाते क्यो नही ? (९१) तुम्हे क्या हुआ है, तुम बोलते नही ? (९२) फिर उन को दाहिने हाथ से मारना (और तोडना) शुरू किया।[2] (९३) तो वे लोग उन के पास दौडे हुए आए। (९४) उन्हो ने कहा कि तुम ऐसी चीजो को क्यो पूजते हो, जिन को खुद तराशते हो, (९५) हालाकि तुम को और जो तुम बनाते हो, उस को खुदा ही ने पैदा किया है। (९६) वे कहने लगे कि इस के लिए इमारत बनाओ, फिर उस को आग के ढेर मे डाल दो। (९७) गरज़ उन्हो ने उन के साथ एक चाल चलनी चाही और हमने उन्ही को जेर (पसपा) कर दिया। (९८) और इब्राहीम बोले कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ जाने वाला हू, वह मुझे रास्ता दिखाएगा। (९९) ऐ परवरदिगार ! मुझे (औलाद) अता फर्मा (जो) सआदतमंदों मे से (हो) (१००) तो हमने उन को एक नर्मदिल लडके की खुशखबरी दी, (१०१) जब वह उन को साथ दौडने (की उम्र) को पहुचा, तो इब्राहीम ने कहा कि बेटा ! मैं सपना देखता हू कि (गोया) तुम को ज़िब्ह कर रहा हू, तो तुम सोचो कि तुम्हारा क्या ख्याल है ?[3] उन्हो ने कहा कि अब्बा, जो आप को हुक्म हुआ है, वही कीजिए। खुदा ने चाहा, तो आप मुझे सब्र करने वालों मे पाइएगा। (१०२) जब दोनो ने हुक्म मान लिया, और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटा दिया, (१०३) तो हमने उन को पुकारा कि ऐ इब्राहीम ! (१०४) तुम ने सपने को सच्चा कर दिखाया, हम मुह्सिनों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१०५) बेशक यह खुली आज़माइश थी। (१०६) और हमने एक बडी कुर्बानी को उन का फिद्या दिया।[4] (१०७) और पीछे आने वालो मे इब्राहीम का (अच्छा) ज़िक्र (बाकी) छोड़ दिया, (१०८) कि इब्राहीम पर सलाम हो। (१०९) मुह्सिनो को हम ऐसा ही बदला दिया करते है। (११०) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दो मे से थे। (१११) और हमने उन को इस्हाक

---

१ क्या वह तुम को शिर्क करने पर पकडेगा नही और यो ही छोड देगा ?

२ फिर वे लोग मेले मे जाने लगे, तो हज़रत इब्राहीम अलै० से कहने लगे कि हमारे साथ मेले मे चलिए। चूंकि वे लोग इस बात पर एतकाद रखते थे कि दुनिया का कारखाना सितारो की गर्दिश से चल रहा है, इस लिए हज़रत इब्राहीम ने सितारो पर एक नज़र की ताकि वे समझे कि जो हालत आप पर गुजरे, वह सितारो की गर्दिश से होगी, तो आप ने कहा कि मैं तो बीमार हू। यह उज़्र सुन कर वे चल दिए। इधर उन का जाना था, उधर आप ने उन के बुतो की तरफ तवज्जोह की और उन को तोड डाला।

३ इस मे इख्तिलाफ है कि बेटे से इस्माईल मुराद है या इस्हाक। अक्सर तफ्सीर लिखने वालों के नज़्दीक इस्माईल मुराद है और यही सही है।

४ कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम ने हज़रत इस्माईल को ज़िब्ह करने के लिए बडी कोशिश की, मगर छुरी ने ज़िब्ह

(शेष पृष्ठ ७१७ पर)

▨ व लाज़िम

व बश्शर्-नाहु बिइस्हा-क नबिय्यम्-मिनस्सालिहीन (११२) व बारक्ना अलैहि व अला इस्हा-क़ व मिन् जुर्रिय्यतिहिमा मुह्सिनु व्-व ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही मुबीन ★ (११३) व ल-क़द् म-नन्ना अला मूसा व हारून (११४) व नज्जैनाहुमा व क़ौमहुमा मिनल्-कर्बिल्-अज़ीम (११५) व न-सर्-नाहुम् फ़-कानू हुमुल्-ग़ालिबीन (११६) व आतैनाहुमल्-किताबल्-मुस्तबीन (११७) व हदैना हुमस्सिरातल्-मुस्तक़ीम (११८) व त-रक्ना अलैहिमा फ़िल्-आखिरीन (११९) सलामुन् अला मूसा व हारून (१२०) इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्-सिनीन (१२१) इन्नहुमा मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (१२२) व इन्-न इल्या-स लमिनल्-मुर्सलीन (१२३) इज् का-ल लिक़ौमिही अला तत्तक़ून (१२४) अ-तद्अू-न बअ्-लव्-व त-ज़रू-न अह्-स-नल् ख़ालिक़ीन (१२५) अल्ला-ह रब्बकुम् व रब्-ब आबाइकुमुल्-अव्वलीन (१२६) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-इन्नहुम् ल-मुह्ज़रून (१२७) इल्ला अिबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (१२८) व त-रक्ना अलैहि फ़िल्-आखिरीन (१२९) सलामुन् अला इल्यासीन (१३०) इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (१३१) इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (१३२) व इन्-न लूतल्-लमिनल्-मुर्सलीन (१३३) इज् नज्जैनाहु व अह्-लहू अज्मईन (१३४) इल्ला अजूज़न् फ़िल्-ग़ाबिरीन (१३५) सुम्-म दम्मर्नल्-आख़रीन (१३६) व इन्नकुम् ल-तमुर्-रू-न अलैहिम् मुस्बिहीन (१३७) व बिल्लैलि अ-फ़ला तअ्-क़िलून ★ (१३८) व इन्-न यूनु-स लमिनल्-मुर्सलीन (१३९) इज् अ-ब-क़ इलल्फ़ुल्किल्-मश्हूनि (१४०) फ़ सा-ह-म फ़का-न मिनल्-मुद्-हज़ीन (१४१) फ़ल्त-क़-महुल्-हूतु व हु-व मुलीम (१४२) फ़लौला अन्नहू का-न मिनल्-मुसब्बिहीन (१४३)

وما لی — الصّفّت ٣٧

الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَبَارَكْنَا
عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِنَفْسِهِ مُبِينٌ ۝
وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝ وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيمِ ۝ وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۝ وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ
الْمُسْتَبِينَ ۝ وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي
الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ
الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ۝ أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَ
تَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۝ اللَّهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝
فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ وَتَرَكْنَا
عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ إِلْ يَاسِينَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ
الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ۝
ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ۝ وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ۝ وَ
بِاللَّيْلِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ أَبَقَ إِلَى
الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۝ فَالْتَقَمَهُ
الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ۝ لَلَبِثَ

★रु ३/७ आ ३९ ★रु ४/८ आ २५

की खुशखबरी भी दी (कि वह) नबी और नेको मे से (होगे)। (११२) और हमने उन पर और इस्हाक पर बरकते नाज़िल की थी और उन दोनो की औलाद में से मुह्सिन भी है और अपने आप पर खुला जुल्म करने वाले (यानी गुनाहगार) भी है। (११३)☆

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किए, (११४) और उन को और उन की कौम को बड़ी मुसीबत से निजात बख्शी। (११५) और उन की मदद की, तो वे गालिब हो गये। (११६) और उन दोनो को किताब साफ (मतलब वाली) इनायत की, (११७) और उन को सीधा रास्ता दिखाया, (११८) और पीछे आने वालो मे उन का (अच्छा) ज़िक्र (बाकी) छोड दिया, (११९) कि मूसा और हारून पर सलाम। (१२०) बेशक हम नेको को ऐसा ही बदला दिया करते है। (१२१) वे दोनो हमारे मोमिन बन्दो मे से थे। (१२२) और इल्यास भी पैगम्बरो मे से थे। (१२३) जब उन्होने अपनी कौम से कहा कि तुम डरते क्यो नही ? (१२४) क्या तुम बअल[1] को पुकारते (और उसे पूजते हो) और सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड देते हो। (१२५) (यानी) खुदा को, जो तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप-दादा का परवरदिगार है। (१२६) तो उन लोगो ने उन को झुठला दिया, सो वे (दोजख मे) हाजिर किए जाएगे। (१२७) हा, खुदा के खास बन्दे (अज़ाब मे नही डाले जाएगे।) (१२८) और उन का (अच्छा) ज़िक्र पिछलो मे (बाकी) छोड दिया, (१२९) कि इल्यासीन पर सलाम।[2] (१३०) हम नेक लोगो को ऐसा ही बदला देते है। (१३१) बेशक वे हमारे मोमिन बन्दो मे से थे। (१३२) और लूत भी पैगम्बरो मे से थे, (१३३) जब हमने उनको और उनके घर वालो को, सब को (अजाब से) निजात दी, (१३४) मगर एक बुढिया कि पीछे रह जाने वालो मे थी। (१३५) फिर हम ने औरो को हलाक कर दिया। (१३६) और तुम दिन को भी उन (की बस्तियो) के पास से गुज़रते रहते हो, (१३७) और रात को भी, तो क्या तुम अक्ल नहीरखते ? (१३८)☆

और यूनुस भी पैगम्बरो मे से थे, (१३९) जब भाग कर भरी हुई कश्ती मे पहुचे। (१४०) उस वक्त कुरआ डाला, तो उन्हो ने जक उठायी। (१४१) फिर मछली ने उन को निगल लिया और वह मलामत (के काबिल काम) करने वाले थे। (१४२) फिर अगर वह (खुदा की) पाकी

(पृष्ठ ७१५ का शेष)
को बार-बार तेज़ करते रहे, कुछ काम न दिया। आखिर ज़ोर से चलाते-चलाते एक बार ऐसी आवाज़ आयी कि गोया कोई चीज़ कट गयी है, खून बहने लगा है। तब आप ने अपनी आखो पर से पट्टी खोल दी, जो ज़िब्ह करने वक्त इस लिए बाध ली थी कि कही बाप की मुहब्बत जोश मे न आए और अल्लाह तआला के हुक्म की तामील मे पाव डगमगा न जाए। देखा तो एक दुबा ज़िब्ह किया हुआ पडा है और हजरत इस्माईल पास ही सही-सालिम खडे है, उसी दुबे के बारे मे खुदा ने फ़रमाया कि एक बडी कुर्बानी को हम ने उन का फ़िद्या किया।

१ अल्लाह तआला ने हज़रत इल्यास को नबी बना कर बालबक की तरफ भेजा था। यहा के लोग एक बुत की पूजा करते थे, जिस का नाम बाल था।

२ हज़रत इल्यास को इल्यासीन भी कहते हैं, जैसे तूरे सीना और तूरे सीनीन और आले-यासीन भी पढा है किसी ने, तो यासीन उन के बाप का नाम है।

★रु ३/७ आ ३९ ★रु ४/८ आ २५

ल-लबि-स फी बत्-निही इला यौमि युब्-असून ● (१४४) फ़-न-बज्नाहु बिल्-अराइ व हु-व सकीम (१४५) वअम्बत्ना अ़लैहि श-ज-र-तम्-मिय्यक़्तीन (१४६) व अर्सल्नाहु इला मि-अति अल्फिन् औ यज़ीदून (१४७) फ-आमनू फ़-मत्तअ्-नाहुम् इलाहीन (१४८) फ़स्तफ़्तिहिम् अ-लिरब्बिकल्-बनातु व लहुमुल्-बनून (१४९) अम् ख़-लक्-नल्-मलाइक-त इनासंव-व हुम् शाहिदून (१५०) अला इन्नहुम् मिन् इफ़्किहिम् ल-यक़ूलून (१५१) व-ल-दल्लाहु व इन्नहुम् ल-काज़िबून (१५२) अस्त-फ़ल्-बनाति अ़लल्-बनीन (१५३) मा लकुम् कै-फ तह्कुमून (१५४) अ-फला त-ज़क्करून (१५५) अम् लकुम् सुल्तानुम्-मुबीन (१५६) फ़अ्तू बि-किताबिकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१५७) व ज-अलू बैनहू व बैनल्जिन्नति न-स-बन्, व ल-क़द् अ़लि-मतिल्-जिन्नतु इन्नहुम् लमुह्ज़रून (१५८) सुब्-हानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून (१५९) इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्-लसीन (१६०) फ़-इन्नकुम् व मा तअ्-बुदून (१६१) मा अन्तुम् अ़लैहि बिफ़ातिनीन (१६२) इल्ला मन् हु-व सालिल्-जहीम (१६३) व मा मिन्ना इल्ला लहू मक़ामुम्-मअ्-लूमुंव- (१६४) व इन्ना ल-नह्नुस्-साफ़्फ़ून (१६५) व इन्ना ल-नह्नुल्-मुसब्बिहून (१६६) व इन् कानू ल-यक़ूलून (१६७) लौ अन्-न अ़िन्दना ज़िक्-रम-मिनल्-अव्वलीन (१६८) लकुन्ना अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्-लसीन (१६९) फ-क-फरू बिही फ़सौ-फ यअ्-लमून (१७०) व ल-क़द् स-ब-क़त् कलिमतुना लिअ़िबादिनल्-मुर्सलीन (१७१) इन्नहुम् लहुमुल्-मन्सूरून (१७२) व इन्-न जुन्दना लहुमुल्-ग़ालिबून (१७३) फ-त-वल्-ल अ़न्हुम् हत्ता हीनिंव- (१७४) - व अब्सिर्हुम् फ़सौ-फ युब्सिरून (१७५) अ-फ बि-अ़ज़ाबिना यस्तअ्-जिलून (१७६) फ-इज़ा न-ज़-ल बिसाहतिहिम् फसा-अ सबा-हुल्-मुन्ज़रीन (१७७) व त-वल्-ल अ़न्हुम् हत्ता हीनिंव- (१७८)

فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۝ وَ
أَنبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّن يَقْطِينٍ ۝ وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۝
فَآمَنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ
الْبَنُونَ ۝ أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ۝ أَلَا إِنَّهُم مِّنْ
إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ۝ وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ أَصْطَفَى الْبَنَاتِ
عَلَى الْبَنِينَ ۝ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ أَمْ
لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ ۝ فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ وَجَعَلُوا
بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ۝
سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ فَإِنَّكُمْ
وَمَا تَعْبُدُونَ ۝ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ۝ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ
الْجَحِيمِ ۝ وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ۝ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ ۝
وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ۝ وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ۝ لَوْ أَنَّ عِندَنَا
ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ فَكَفَرُوا بِهِ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۝ إِنَّهُمْ
لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ۝ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ
حِينٍ ۝ وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ۝ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝ فَإِذَا
نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ ۝ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝

बयान न करते, (१४३) तो उस दिन तक कि लोग दोबारा ज़िंदा किए जाएंगे, उसी के पेट मे रहते● (१४४) फिर हमने उन को, जबकि वह बीमार थे, खुले मैदान मे डाल दिया। (१४५) और उन पर कद्दू का पेड लगाया। (१४६) और उन को लाख या उस से ज्यादा (लोगो) की तरफ (पैगम्बर बना कर) भेजा। (१४७) तो वे ईमान ले आए, सो हम भी उन को (दुनिया मे) एक (मुकर्रर) वक्त तक फायदे देते रहे। (१४८) इन से पूछो तो कि भला तुम्हारे परवरदिगार के लिए तो बेटिया और उन के लिए बेटे, (१४९) या हमने फरिश्तों को औरतें बनाया और वे (उस वक्त) मौजूद थे? (१५०) देखो, ये अपनी झूठ बनायी हुई (बात) कहते हैं, (१५१) कि खुदा के औलाद है, कुछ शक नही कि ये झूठे है। (१५२) क्या उस ने बेटो के मुकाबले मे बेटियो को पसन्द किया है ? (१५३) तुम कैसे लोग हो ? किस तरह का फैसला करते हो ? (१५४) भला तुम गौर (क्यो) नही करते ? (१५५) या तुम्हारे पास कोई खुली दलील है, (१५६) अगर तुम सच्चे हो, तो अपनी किताब पेश करो। (१५७) और उन्हो ने खुदा मे और जिन्नो मे रिश्ता मुकर्रर किया, हालाकि जिन्नात जानते थे कि वे (खुदा के सामने) हाज़िर किए जाएगे। (१५८) यह जो कुछ बयान करते है, खुदा उस से पाक है। (१५९) मगर खुदा के खालिस बन्दे (अज़ाब मे नही डाले जाएंगे), (१६०) सो तुम और जिन को तुम पूजते हो, (१६१) खुदा के खिलाफ बहका नही सकते, (१६२) मगर उस को, जो जहन्नम मे जाने वाला है। (१६३) और (फरिश्ते कहते है कि) हम मे से हर एक का एक मकाम मुकर्रर है। (१६४) और हम सफ बाधे रहते है। (१६५) और (खुदा-ए-) पाक (ज़ात का) ज़िक्र करते रहते है, (१६६) और ये लोग कहा करते थे, (१६७) कि अगर हमारे पास अगलो की कोई नसीहत (की किताब) होती, (१६८) तो हम खुदा के खालिस बन्दे होते, (१६९) लेकिन (अब) इस से कुफ्र करते हैं, सो बहुत जल्द उन को (इस का नतीजा) मालूम हो जाएगा। (१७०) और अपने पैगाम पहुंचाने वाले बन्दो ने हमारा वायदा हो चुका है, (१७१) कि वही (गालिब व) मंसूर (मदद किए हुए) हैं, (१७२) और हमारा लश्कर गालिब रहेगा, (१७३) तो एक वक्त तक उन से एराज किए रहो, (१७४) और उन्हे देखते रहो। ये भी बहुत जल्द (कुफ् का अंजाम) देख लेंगे। (१७५) क्या ये हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे है, (१७६) मगर जब वह उन के मैदान मे आ उतरेगा, तो जिन को डर सुनाया गया था, उन के लिए बुरा दिन होगा। (१७७) और एक वक्त तक उन से मुह फेरे

● नि. १२

व अब्सिर् फसौ-फ युब्सिरून (१७९) सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल्-अिज्जति अम्मा यसिफून ★ (१८०) व सलामुन् अलल्-मुर्सलीन (१८१) वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (१८२)

३८ सूरतु साद ३८

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३१०७ अक्षर, ७३८ शब्द, ८८ आयते और ५ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

साद् वल्कुर्आनि जिज्जिक्र (१) बलिल्लजी-न क-फ़रू फी अिज्जतिंव-व शिकाक (२) कम् अह-लक्ना मिन् कब्लिहिम् मिन् क़र्निन् फ़नादव्-व ला-त-ही-न मनास (३) व अजिबू अन् जा-अहुम् मुन्जिरुम्-मिन्हुम् व कालल्-काफिरू-न हाजा साहिरुन कज्जाब (४) अ-ज-अ-लल् आलि-ह-त इलाहव्वाहिदन् इन्-न हाजा लशैउन् अुजाब (५) वन्त-ल-कल् म-ल-उ मिन्हुम् अनिम्शू वस्बिरू अला आलिहतिकुम् इन्-न हाजा लशैउं य्युराद (६) मा समिअ्-ना बिहाजा फिल्-मिल्लतिल्-आखिरति इन् हाजा इल्लख्तिलाक (७) अ उन्जि-ल अलैहिज्जिक्रु मिम्बैनिना बल् हुम् फी शक्किम्-मिन् जिक्री बल् लम्मा यजूकू अजाब (८) अम् अिन्दहुम् खजाइनु रह्मति रब्बिकल्-अजीजिल्-वह्हाब (९) अम् लहुम् मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि व मा बैनहुमा फल्यर्तकू फिल्अस्बाब (१०) जुन्दुम्मा हुनालि-क मह्जूमुम्-मिनल्-अह्जाब (११) कज्ज-बत् कब्-लहुम् कौमु नूहिव्-व आदुव्-व फिर्औनु जुल्औताद (१२) व समूदु व कौमु लूतिव्-व अस्हाबुल्-ऐकति उलाइकल्-अह्जाब (१३) इन् कुल्लुन् इल्ला कज्जबर्-रुसु-ल फ हक्-क अिक़ाब ★ (१४) व मा यन्जुरु हाउलाइ इल्ला सैह-तंव्वाहि-द-तम्-मा लहा मिन् फवाक (१५) व कालू रब्बना अज्जिल् लना क़ित्तना क़ब्-ल यौमिल्-हिसाब (१६)

ص ٣٨ ٣٦٢ ومالي ٢٣

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ۝ سُبْحَٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝
وَسَلَٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ۝ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ۝
سورة ص مكية وهي ثمان وثمانون آية وخمس ركوعات
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
صٓ وَالْقُرْءَانِ ذِي الذِّكْرِ ۝ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ۝ كَمْ أَهْلَكْنَا
مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ فَنَادَوا وَّلَاتَ حِينَ مَنَاصٍ ۝ وَعَجِبُوا أَن جَاءَهُم
مُّنذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكَٰفِرُونَ هَٰذَا سَٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝ أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا
وَٰحِدًا إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝ وَانطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَ
اصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ۝ مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي الْمِلَّةِ
الْآخِرَةِ إِنْ هَٰذَا إِلَّا اخْتِلَٰقٌ ۝ أَءُنزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِن بَيْنِنَا
بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّن ذِكْرِي بَل لَّمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ ۝ أَمْ عِندَهُمْ
خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝ أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَٰبِ ۝ جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ
الْأَحْزَابِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۝
وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَٰبُ لْـَٔيْكَةِ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ۝ إِن كُلٌّ إِلَّا
كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝ وَمَا يَنظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً مَّا لَهَا
مِن فَوَاقٍ ۝ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۝ اصْبِرْ عَلَىٰ مَا

★रु ५/६ आ ४४ ★रु १/१० आ १४

रहो। (१७८) और देखते रहो, ये भी बहुत जल्द (नतीजा) देख लेगे। (१७९) यह जो कुछ बयान करते है, तुम्हारा परवरदिगार, जो इज्ज़त वाला है (इस से) पाक है। (१८०) और पैगम्बरो पर सलाम। (१८१) सब तरह की तारीफ खुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही के लिए है। (१८२)★

३८ सूरः साद ३८

सूर स्वाद मक्की है और इस मे अठासी आयते और पाच रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

स्वाद, कसम है कुरआन की, जो नसीहत देने वाला है (कि तुम हक पर हो), (१) मगर जो लोग काफिर हैं, वे घमड और मुखालफत मे हैं। (२) हम ने उन से पहले बहुत-सी उम्मतो को हलाक कर दिया, तो वे (अजाब के वक्त) लगे फरियाद करने और वह रिहाई का वक्त नही था। (३) और उन्हो ने ताज्जुब किया कि उन के पास उन ही मे से हिदायत करने वाला आया, और काफिर कहने लगे कि यह तो जादूगर है झूठा। (४) क्या उस ने इतने माबूदो की जगह एक ही माबूद बना दिया? यह तो बडी अजीब बात है। (५) तो उन मे जो मुअज्ज़ज थे, वे चल खड़े हुए (और बोले) कि चलो और अपने माबूदो (की पूजा) पर कायम रहो। बेशक यह ऐसी बात है, जिस से (तुम पर बुजुर्गी और बडाई) मक्सूद है। (६) यह पिछले मजहब मे हम ने कभी सुनी ही नही। यह बिल्कुल बनायी हुई बात है। (७) क्या हम सब मे से इसी पर नसीहत (की किताब) उतरी है? (नही) बल्कि ये मेरी नसीहत की किताब से शक मे है, बल्कि उन्हो ने अभी मेरे अज़ाब का मज़ा नही चखा। (८) क्या उन के पास तुम्हारे परवरदिगार की रहमत के खजाने है, जो गालिब (और) बहुत अता करने वाला है। (९) या आसमानो और जमीन और जो कुछ उन मे है उन (सब) पर उन ही की हुकूमत है, तो चाहिए कि रस्सिया तान कर (आसमानो पर) चढ जाए। (१०) यहा हारे हुए गिरोहो मे से यह भी एक लश्कर है। (११) इन से पहले नूह की कौम और आद और मेखो वाला फिर्औन (और उस की कौम के लोग) भी, झुठला चुके हैं। (१२) और समूद और लूत की कौम और बन के रहने वाले भी यही वे गिरोह हैं। (१३) (इन) सब ने पैगम्बरो को झुठलाया, तो मेरा अज़ाब (उन पर) आ वाकेअ हुआ। (१४)★

और ये लोग तो सिर्फ जोर की आवाज़ का, जिस मे (शुरू हुए पीछे) कुछ वक्फा नही होगा, इन्तिजार करते हैं। (१५) और कहते है कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम को हमारा हिस्सा हिसाब

★रु ५/९ आ ४४ ★रु १/१० आ १४

इस्बिर् अला मा यक़ूलू-न वज़्कुर् अब्दना दावू-द ज़ल्ऐदि ͨइन्नहू अव्वाब (१७)
इन्ना सख़्ख़र्नल्-जिबा-ल म-अहू युसब्बिह्-न बिल्-अशिय्यि वल्-इश्राक़ ᵞ (१८)
वत्तै-र मह्शूरतन् ᵇ कुल्लुल्लहू अव्वाब (१६) व श-दद्ना मुल्कहू व आतैनाहुल्-
हिक्म-त व फ़स्-लल्-ख़िताब (२०)व हल् अता-क न-ब-उल्-ख़स्मि ▨ इज् तसव्व-
रुल्-मिह्राब ᵞ(२१) इज् द-ख़लू अला दावू-द फ़-फ़ज़ि-अ मिन्हुम् क़ालू ला त-ख़फ़् ͨ ख़स्मानि बग़ा बअ्-ज़ुना अला बअ्-ज़िन् फ़ह्कुम् बैनना बिल्हक़्क़ि व ला तुश्तित् वह्दिना इला सवा-इस्सिरात (२२) इन्-न हाज़ा अख़ी लहू तिस्अु व्-व तिस्अू-न नअ्-ज-तव्-व लि-य नअ्-जतु व्वाहिदतुन् फ़क़ा-ल अक्फ़िल्नीहा व अ़ज़्ज़नी फ़िल्ख़िताब (२३) क़ा-ल ल-क़द् ज़-ल-म-क बिसुआलि नअ्-जति-क इला निआजिही ᵇ व इन्-न कसीरम्-मिनल्-ख़ु-लताइ ल-यब्ग़ी बअ्-ज़ुहुम् अला बअ्-ज़िन् इल्लल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व क़लीलुम्मा-हुम् ᵇव ज़न्-न दावूदु अन्नमा फ़-तन्नाहु फ़स्तग़्फ़-र रब्बहू व ख़र्-र

राकिअ् व्-व अनाब☐(२४) फ़-ग़-फ़र्ना लहू ज़ालि-क ᵇव इन्-न लहू अिन्दना लज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब (२५) या दावूदु इन्ना ज-अ़ल्ना-क ख़लीफ़तन् फ़िल्अर्ज़ि फ़ह्-कुम् बैनन्नासि बिल्हक़्क़ि व ला तत्तबिअिल्हवा फ़युज़िल्ल-क अन् सबीलिल्लाहि ᵇइन्नल्-लज़ी-न यज़िल्लू-न अन् सबीलिल्लाहि लहुम् अज़ाबुन् शदीदुम्-बिमा नसू यौमल्-हिसाब★(२६) व मा ख़-लक़्नस्समा-अ वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा बातिलन् ᵇज़ालि-क ज़न्नुल्लज़ी-न क-फ़रू ͨफ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिनन्नार ᵇ(२७) अम् नज्अ-लुल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति कल्मुफ़्सिदी-न फ़िल्अर्ज़ि ᵇअम् नज्अलुल्-मुत्तक़ी-न कल्-फ़ुज्जार (२८) किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क मुबारकुल् - लियद्-दब्बरू आयातिही व लि - य-त - ज़क्क-र उलुल्-अल्बाब (२६) व व - हब्ना लिदावू-द सुलैमा-न ᵇ निअ् - मल्अ़ब्दु ᵇ इन्नहू अव्वाब (३०)

▨ व लाज़िम ☐ सजूद १० ★रु २/११ आ १२

के दिन से पहले ही दे दे। (१६) (ऐ पैगम्बर !) ये जो कुछ कहते हैं, उस पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो, जो ताकत वाले थे (और) बेशक वे रुजूअ करने वाले थे। (१७) हम ने पहाड़ो को उन के फरमान के तहत कर दिया था कि सुबह व शाम उन के साथ (ख़ुदा-ए-) पाक (का) ज़िक्र करते थे। (१८) और परिंदो को भी कि जमा रहते थे, सब उन के फरमाबरदार थे। (१९) और हम ने उन की बादशाही को मजबूत किया और उन को हिक्मत अता फरमायी और (लडाई की) बात का फैसला (सिखाया)। (२०) भला तुम्हारे पास उन झगडने वालो की भी खबर आयी है, जब वे दीवार फाद कर अन्दर दाखिल हुए। (२१) जिस वक्त वे दाऊद के पास आए, तो वे उन से घबरा गये। उन्हो ने कहा, कि खौफ न कीजिए। हम दोनो का एक मुकदमा है कि हम मे से एक ने दूसरे से ज्यादती की है, तो आप हम मे इसाफ मे फैसला कर दीजिए और बे-इसाफी न कीजिएगा और हम को सीधा रास्ता दिखा दीजिए। (२२) (हाल यह है कि) यह मेरा भाई है, इस के (यहा) निन्यान्वे दुबिया है और मेरे (पास) एक दुबी है। यह कहता है कि यह भी मेरे हवाले कर दे और बातो मे मुझ पर जबरदस्ती करता है। (२३) उन्हो ने कहा कि यह जो तेरी दुबी मागता है कि अपनी दुबियो मे मिला ले, बेशक तुम पर जुल्म करता है और अक्सर शरीक एक-दूसरे पर ज्यादती ही किया करते है। हा, जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और ऐसे लोग बहुत कम है और दाऊद ने ख्याल किया कि (इस वाकिए मे) हम ने उन को आजमाया है, तो उन्हो ने अपने परवरदिगार से मग्फिरत मागी और झुक कर गिर पडे और (ख़ुदा की तरफ़) रुजूअ किया ☐ (२४) तो हम ने उन को बख्श दिया और बेशक उन के लिए हमारे यहा कुर्ब और उम्दा जगह है। (२५) ऐ दाऊद ! हम ने तुम को ज़मीन मे बादशाह बनाया है, तो लोगो मे इसाफ के फैसले किया करो और ख़्वाहिश की पैरवी न करना कि वह तुम्हे खुदा के रास्ते मे भटका देगी जो लोग ख़ुदा के रास्ते से भटकते है, उन के लिए सख्त अजाब (तैयार) है कि उन्हो ने हिसाब के दिन को भुला दिया। (२६) ★

और हम ने आसमान और ज़मीन को और जो (कायनात) उन मे है, उस को मस्लहत से ख़ाली नही पैदा किया। यह उन का गुमान है, जो काफिर है, सो काफिरो के लिए दोजख़ का अजाब है। (२७) जो लोग ईमान लाए और अमल करते रहे, क्या उन को हम उन की तरह कर देंगे, जो मुल्क मे फसाद करते है या परहेज़गारो को बद-कारो की तरह कर देंगे। (२८) (यह) किताब, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है, बरकत वाली है, ताकि लोग इस की आयतो मे गौर करे और ताकि अक्ल वाले नसीहत पकडे। (२९) और हम ने दाऊद को सुलेमान अता किए। बहुत खूब बन्दे (थे और) वे (ख़ुदा की तरफ़) रुजूअ करने वाले थे। (३०) जब उन के सामने शाम को ख़ासे के घोडे

▨ व लाज़िम ☐ सज्दः १० ★ रु २/११ आ १२

इज् अुरि-ज अलैहि बिल्अशिय्यिस्-साफ़िनातुल-जियाद (३१) फ़का-ल इन्नी अह-बब्तु हुब्बल्-खैरि अन् जिक्रि रब्बी हत्ता त-वारत बिल्-हिजाब (३२) रुद्दूहा अलय्-य फ-तफ़ि-क मस्हम्-बिस्सूकि वल्-अअ्-नाक (३३) व ल-कद् फ-तन्ना सुलैमा-न व अल्क़ैना अला कुर्सिय्यिही ज-स-दन् सुम्-म अनाब (३४) का-ल रब्बिग़्फ़िर् ली व हब् ली मुल्कल्ला यम्बगी लि-अ-हदिम्-मिम्बअ्-दी इन्न-क अन्तल्-वह्हाब (३५) फ-सख़्ख़र्ना लहुर्-री-ह तज्री बिअम्रिही रुख़ाअन् हैसु असाब (३६) वश्शयाती-न कुल्-ल बन्नाइ व्-व गव्वास (३७) व आख़री-न मुक़र्रनी-न फिल्-अस्फ़ाद (३८) हाज़ा अता-उना फम्नुन् औ अम्सिक् बिगैरि हिसाब (३९) व इन्-न लहू अिन्दना लजुल्फा व हुस्-न मआब (४०) वज्कुर् अब्दना अय्यू-ब इज् नादा रब्बहू अन्-नी मस्सनियश्-शैतानु बिनुस्-बिव्-व अ़जाब (४१) उर्कुज् बिरिज्लि-क हाज़ा मुग-त-सलुम्-बारिदु व्-व शराब (४२) व व-हब्ना लहू अह्-लहू व मिस्लहुम् म-अहुम् रह-म-तम्-मिन्ना व जिक्रा लिउलिल्-अल्बाब (४३) व ख़ुज् बियदि-क ज़िग्-सन् फज़्रिब् बिही व ला तह-नस् इन्ना व-जद्नाहु साबिरन् निअ्-मल् अब्दु इन्नहू अव्वाब (४४) वज्कुर् अिबादना इब्राही-म व इस्हा-क़ व यअ्-कू-ब उलिल्-ऐदी वल्-अब्सार (४५) इन्ना अख़्-लस्नाहुम् बिख़ालि-स़तिन् जिक-रद्दार (४६) व इन्नहुम् अिन्दना लमिनल्-मुस्तफ़ैनल्-अख़्यार (४७) वज्कुर् इस्माई-ल वल-य-स-अ व ज़ल्किफ़्लि व कुल्लुम्-मिनल्-अख़्यार (४८) हाज़ा जिक्रुन् व इन्-न लिल्मुत्तकी-न लहुस्-न मआब (४९) जन्नाति अद्निम्-मुफत्त-ह-तल्-लहुमुल्-अब्वाब (५०) मुत्तकिई-न फीहा यद्अू-न फ़ीहा बिफाकिहतिन् कसीरतिंव्-व शराब (५१) व अिन्दहुम् क़ासिरातुत - तर्फि अत्राब (५२)

ص ٣٨ ٣٦٤ ومالی ٢٣

نعم العبد انه اواب ۝ اذ عرض عليه بالعشي الصفنت الجياد ۝
فقال اني احببت حب الخير عن ذكر ربي حتى توارت بالحجاب ۝
ردوها علي فطفق مسحا بالسوق والاعناق ۝ ولقد فتنا سليمن
والقينا على كرسيه جسدا ثم اناب ۝ قال رب اغفر لي وهب لي
ملكا لا ينبغي لاحد من بعدي انك انت الوهاب ۝ فسخرنا له
الريح تجري بامره رخاء حيث اصاب ۝ والشيطين كل بناء و
غواص ۝ واخرين مقرنين في الاصفاد ۝ هذا عطاؤنا فامنن
او امسك بغير حساب ۝ وان له عندنا لزلفى وحسن ماب ۝ واذكر
عبدنا ايوب اذ نادى ربه اني مسني الشيطن بنصب وعذاب ۝
اركض برجلك هذا مغتسل بارد وشراب ۝ ووهبنا له اهله و
مثلهم معهم رحمة منا وذكرى لاولي الالباب ۝ وخذ بيدك ضغثا
فاضرب به ولا تحنث انا وجدنه صابرا نعم العبد انه اواب ۝ واذكر
عبدنا ابرهيم واسحق ويعقوب اولي الايدي والابصار ۝ انا اخلصنهم
بخالصة ذكرى الدار ۝ وانهم عندنا لمن المصطفين الاخيار ۝
واذكر اسمعيل واليسع وذا الكفل وكل من الاخيار ۝ هذا ذكر و
ان للمتقين لحسن ماب ۝ جنت عدن مفتحة لهم الابواب ۝ متكين
فيها يدعون فيها بفاكهة كثيرة وشراب ۝ وعندهم قصرت الطرف

★रु ३/१२ आ १४ ▨ व लाज़िम

पेश किये गये, (३१) तो कहने लगे कि मैं ने परवरदिगार की याद से (गाफिल हो कर) माल की मुहब्बत अख्तियार की, यहा तक कि (सूरज) पर्दे मे छिप गया। (३२) (बोले कि) उन को मेरे पास वापस लाओ, फिर उन की टागो और गर्दनो पर हाथ फेरने लगे। (३३) हम ने सुलैमान की आजमाइश की और उन के तख्त पर एक धड डाल दिया, फिर उन्हो ने (खुदा की तरफ) रुजूअ किया। (३४) (और) दुआ की कि ऐ परवरदिगार! मुझे मग्फिरत कर, मुझ को ऐसी बादशाही अता कर कि मेरे बाद किसी को मुनासिब न हो। बेशक तू बडा अता फरमाने वाला है। (३५) फिर हम ने हवा को उन के फरमान के तहत कर दिया कि जहा वह पहुचना चाहते, उन के हुक्म से नर्म-नर्म चलने लगती। (३६) और देवो को भी (उन के फरमान के तहत किया), यह सब इमारतें बनाने वाले और गोता मारने वाले थे। (३७) और औरो को भी, जो जजीरो मे जकडे हुए थे। (३८) (हम ने कहा) यह हमारी बख्शिश है, (चाहो तो) एहसान करो या (चाहो तो) रख छोडो, (तुम से) कुछ हिसाब नही है। (३९) और बेशक उन के लिए हमारे यहा कुर्ब और अच्छी जगह है। (४०) ★

और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो▨जब उन्हो ने अपने रब को पुकारा कि (ऐ खुदा!) शैतान ने मुझ को तक्लीफ दे रखी है। (४१) (हम ने कहा कि जमीन पर) लात मारो, (देखो) यह (चश्मा निकल आया), नहाने को ठडा और पीने को (मीठा)। (४२) और हम ने उन को बीवी (-बच्चे) और उन के साथ उन के बराबर और बख्शे।[1] (यह) हमारी तरफ से रहमत और अक्ल वालो के लिए नसीहत थी, (४३) और अपने हाथ मे झाडू लो और उस से मारो और कसम न तोडो।[2] बेशक हम ने उन को साबित कदम पाया बहुत खूब बन्दे थे, बेशक वह रुजूअ करने वाले थे। (४४) और हमारे बन्दो इब्राहीम और इस्हाक और याकूब को याद करो, जो ताकत वाले और नजर वाले थे। (४५) हम ने उन को एक खास (सिफत) (आखिरत के) घर की याद से मुम्ताज किया था। (४६) और वे हमारे नजदीक चुने हुए और नेक लोगो मे से थे। (४७) और इस्माईल और अल्-यसअ् और जुलकिफ्ल को याद करो। वे सब नेक लोगो मे से थे। (४८) यह नसीहत और परहेजगारो के लिए तो उम्दा जगह है, (४९) हमेशा रहने के बाग, जिन के दरवाजे उन के लिए खुले होगे। (५०) उन मे तकिए लगाए बैठे होगे और (खाने-पीने के लिए) बहुत से मेवे और शराब मागते रहेगे। (५१) और उन के पास नीची निगाह रखने वाली (और) हम-उम्र

---

१ यानी जितने बाल-बच्चे पहले थे, वह भी दिए और उतने ही और अता किए।

२ कहते हैं कि हजरत अय्यूब की बीवी ने कोई ऐसी हरकत की या आप से कोई ऐसी बात कही [illegible] ना-गवार हुई, तो आप ने कसम खा ली कि मैं तुझ को सौ छडिया मारूगा, तो आप को [illegible] मीको की झाडू ले कर उस से बीवी को मारो, कसम सच्ची हो जाएगी।

★रु ३/१२ आ १४ ▨व लाजिम

हाजा मा तूअदू-न लियौमिल्-हिसाब ●(५३) इन्-न हाजा ल-रिज्कुना मा लहू मिन् नफ़ाद (५४) हाजा व इन्-न लित्ताग़ी-न ल-शर्-र म-आब (५५) जहन्न-म यस्लौनहा फ़बिअ्सल्-मिहाद (५६) हाजा फल्यजूकूहु हमीमुं व-व ग़स्साक (५७) व आखरु मिन् शक्लिही अज्वाज (५८) हाजा फौजुम्-मुक्तहिमुम् म-अकुम् ला मर्हबम्-बिहिम् इन्नहुम् सालुन्नार (५९) क़ालू बल् अन्तुम् ला मर्हबम्-बिकुम् अन्तुम् क़द्दम्तुमूहु लना फबिअ्सल्-करार (६०) कालू रब्बना मन् कद्-द-म लना हाजा फ़जिद्हु अ़ज़ाबन् ज़िअ्-फ़न् फिन्नार (६१) व क़ालू मा लना ला नरा रिजालन् कुन्ना नअुद्दुहुम् मिनल्-अश्रार (६२) अत्त-खज्नाहुम् सिख्रिय्यन् अम् ज़ागत् अन्हुमुल्-अब्सार (६३) इन्-न जालि-क ल-हक्कुन् तखासुमु अह्लिन्नार (६४) ★ कुल् इन्नमा अ-न मुन्जिरुंव-व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहुल-वाहिदुल-कह्हार (६५) रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमल-अजीजुल-ग़फ़्फ़ार (६६) क़ुल् हु-व न-ब-उन् अ़ज़ीम (६७) अन्तुम्-अन्हु मुअ्रिजून (६८) मा का-न लि-य मिन् अ़िलमिम्-बिलमल-इल-अअ्-ला इज् यख़्तसिमून (६९) इं य्यूहा इलय्-य इल्ला अन्नमा अ-न नजीरुम्-मुबीन (७०) इज् क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइकति इन्नी खालिकुम्-ब-श-रम् मिन् तीन (७१) फ़-इज़ा सव्वैतुहू व न-फख्तु फीहि मिर्रूही फ़-क़अू लहू साजिदीन (७२) फ-स-ज-दल-मलाइकतु कुल्लुहुम् अज्मअून (७३) इल्ला इब्ली-स इस्तक्ब-र व का-न मिनल्काफिरीन (७४) का-ल या इब्लीसु मा म-न-अ्-क अन् तस्जु-द लिमा ख-लक्तु बि-य-दय-य अस्तक्बर-त अम् कुन-त मिनल-आलीन (७५) का-ल अ-न खैरुम्-मिन्हु ख-लक्तनी मिन् नारिंव्-व ख-लक्तहू मिन् तीन (७६) का-ल फ़ख्रुज् मिन्हा फ़-इन्न-क रजीम (७७) व इन्-न अलै-क लअ्-नती इला यौमिद्दीन (७८) का-ल रब्बि फ़-अन्जिर्नी इला यौमि युब्-असून (७९) का-ल फ़-इन्न-क मिनल-मुन्ज़रीन (८०) इला यौमिल-वक्तिल-मअ्-लूम (८१)

أَتْرَابٌ ۝ هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ۝
هَٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطَّاغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ۝ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ هَٰذَا
فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۝ وَآخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ۝ هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ
مَّعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُو النَّارِ ۝ قَالُوا بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ
أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا
ضِعْفًا فِي النَّارِ ۝ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ۝ أَتَّخَذْنَاهُمْ
سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ۝ إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ۝ قُلْ
إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝ قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ۝ أَنتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۝
مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝ إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا
أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن طِينٍ ۝
فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ
كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝ إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ
مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْعَالِينَ ۝
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي
إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ۝ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۝

●सु· ३/४ ★रु ४/१३ आ २४

(औरते) होगी। (५२) ये वह चीजे है, जिन का हिसाब के दिन के लिए, तुम से वायदा किया जाता था● (५३) यह हमारी रोजी है, जो कभी खत्म नही होगी। (५४) ये (नेमतें तो फर्मा-बरदारो के लिए है) और सर-कशो के लिए बुरा ठिकाना है। (५५) (यानी) दोजख, जिस मे वे दाखिल होगे और वह बुरी आरामगाह है। (५६) यह खौलता हुआ गर्म पानी और पीप (है), अब उस के मजे चखे। (५७) और इसी तरह के और बहुत से (अज़ाब होगे), (५८) यह एक फौज है, जो तुम्हारे साथ दाखिल होगी, इन को खुशी न हो, ये दोजख मे जाने वाले है, (५९) कहेगे, बल्कि तुम ही को खुशी न हो, तुम ही तो यह (बला) हमारे सामने लाए हो, सो (यह) बुरा ठिकाना है। (६०) वे कहेगे, ऐ परवरदिगार! जो इस को हमारे सामने लाया है, उस को दोजख मे दूना अज़ाब दे, (६१) और कहेगे, क्या वजह है कि (यहा) हम उन शख्सो को नही देखते, जिन को बुरो मे गिना करते थे। (६२) क्या हम ने उन से ठट्ठा किया है या (हमारी) आखे उन (की तरफ) से फिर गयी है? (६३) बेशक यह दोज़खियो का झगडना ना बर-हक है। (६४)★

कह दो कि मैं तो सिर्फ हिदायत करने वाला हू और खुदा-ए-यक्ता (और) गालिब के सिवा कोई माबूद नही। (६५) जो आसमानो और जमीन और जो (मख्लूक) उन मे है, सब का मालिक है, गालिब (और) बख्शने वाला। (६६) कह दो कि यह एक बडी (हौलनाक चीज की) खबर है। (६७) जिस को तुम ध्यान मे नही लाते, (६८) मुझ को ऊपर की मज्लिस (वालो) का जब वे झगडते थे, कुछ भी इल्म न था। (६९) मेरी तरफ तो यही वह्य की जाती है कि मैं खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हू। (७०) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तो से कहा कि मैं मिट्टी से इंसान बनाने वाला हू। (७१) जब उस को दुरुस्त कर लू और उस मे अपनी रूह फूक दू तो उस के आगे सज्दे मे गिर पडना। (७२) तो तमाम फरिश्तो ने सज्दा किया, (७३) मगर शैतान अकड बैठा और काफिरो मे हो गया। (७४) (खुदा ने) फरमाया कि ऐ इब्लीस जिस शख्स को मैं ने अपने हाथो से बनाया, उस के आगे सज्दा करने मे तुझे किस चीज ने मना किया। क्या तू घमड मे आ गया या ऊंचे दर्जे वालो मे था? (७५) बोला कि मैं इस से बेहतर हू (कि) तू ने मुझ को आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से बनाया। (७६) कहा, यहा से निकल जा, तू मर्दूद है। (७७) और तुझ पर कियामत के दिन तक मेरी लानत (पडती) रहेगी। (७८) कहने लगा कि मेरे परवरदिगार मुझे उस दिन तक कि लोग उठाए जाएं, मुहलत दे। (७९) कहा, तुझ को मुहलत दी जाती है। (८०) उस दिन तक, जिस का वक्त मुकर्रर है। (८१) कहने लगा कि मुझे तेरी इज्जत की

● सु ३/४ ★रु ४/१३ आ २४

का-ल फ़बिअिज़्ज़ति-क ल-उग्वियन्नहुम् अज्-मअीन ////(८२) इल्ला अिबाद-क मिन्-हुमुल-मुख्-लसीन (८३) का-ल फल्हक्कु ⁄ वल्हक्-क अकूल ८(८४) ल-अम्-ल-अन्-न जहन्न-म मिन-क व मिम्मन् तबि-अ्-क मिन्हुम् अज्-मअीन (८५) कुल् मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिव्-व मा अ-न मिनल्-मु-त-कल्लिफीन (८६) इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल-लिल्आलमीन (८७) व ल-तअ्-लमुन-न न-ब-अहू बअ्-द हीन★(८८)

३९ सूरतुज़्ज़ु-मरि ५९

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ४९६५ अक्षर, ११८४ शब्द, ७५ आयते और ८ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

तन्ज़ीलुल-किताबि मिनल्लाहिल-अज़ी-ज़िल-हकीम (१) इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल-किता-ब बिल्हक्कि फअ्-बुदिल्ला-ह मुख्लिसल-लहुद्दीन ♭(२) अला लिल्लाहिद-दीनुल-ख़ालिसु ♭ वल्लज़ीनत्त-ख़-ज़ू मिन्दूनिही औलिया-अ//// मा नअ्-बुदुहुम् इल्ला लियुक़र्रिबूना इलल्लाहि ज़ुल्फा ♭ इन्नल्ला-ह यह्कुमु बैनहुम् फीमा हुम् फीहि यख़्तलिफ़ू-न ♭ इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व काज़िबुन् कफ्फार (३) लौ अरादल्लाहु

الزمر ٣٩ — ٣٦٦ — ومالي ٢٣

قال فبعزتك لاغوينهم اجمعين ۝ الا عبادك منهم المخلصين ۝ قال
فالحق والحق اقول ۝ لاملئن جهنم منك وممن تبعك منهم اجمعين ۝
قل ما اسئلكم عليه من اجر وما انا من المتكلفين ۝ ان هو الا ذكر
للعلمين ۝ ولتعلمن نباه بعد حين ۝
سورة الزمر مكية ... بسم الله الرحمن الرحيم ...
تنزيل الكتب من الله العزيز الحكيم ۝ انا انزلنا اليك الكتب بالحق
فاعبد الله مخلصا له الدين ۝ الا لله الدين الخالص ۚ والذين
اتخذوا من دونه اولياء ما نعبدهم الا ليقربونا الى الله زلفى ان
الله يحكم بينهم في ما هم فيه يختلفون ۗ ان الله لا يهدي من هو كذب
كفار ۝ لو اراد الله ان يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء سبحنه
هو الله الواحد القهار ۝ خلق السموت والارض بالحق يكور اليل على
النهار ويكور النهار على اليل وسخر الشمس والقمر ۖ كل يجري لاجل
مسمى ۗ الا هو العزيز الغفار ۝ خلقكم من نفس واحدة ثم جعل منها
زوجها وانزل لكم من الانعام ثمنية ازواج ۚ يخلقكم في بطون امهتكم
خلقا من بعد خلق في ظلمت ثلث ۚ ذلكم الله ربكم له الملك لا اله الا
هو ۖ فانى تصرفون ۝ ان تكفروا فان الله غني عنكم ۖ ولا يرضى لعباده الكفر
وان تشكروا يرضه لكم ۗ ولا تزر وازرة وزر اخرى ۗ ثم الى ربكم مرجعكم

अय्यत्तख़ि-ज व-ल-दल्लस्तफा मिम्मा यख़्लुक़ु मा यशाउ ////सुब्-हानहू ♭ हुवल्लाहुल-वाहि-दुल-कह्हार (४) ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि ⁄ युकव्विरुल्लै-ल अलन्नहारि व युकव्विरुन्-नहा-र अलल्लैलि व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र ♭ कुल्लु य्यज्री लि-अ-जलिम-मुसम्मन् ♭ अला हुवल - अज़ीज़ुल - गफ्फार (५) ख़-ल क़कुम् मिन् नफ़्सिव्वाहिदतिन् सुम्-म ज-अ-ल मिन्हा ज़ौजहा व अन्ज-ल लकुम् मिनल-अन्आमि समानि-य-त अज़्वाजिन् ♭ यख़्लुक़ुकुम् फी बुतूनि उम्महातिकुम् ख़ल्कम-मिम्बअ्-दि ख़ल्किन् फी ज़ुलुमातिन् सलासिन् ♭ ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ♭ ला इला-ह इल्ला हु-व ८ फ-अन्ना तुस्रफून (६) इन् तक्फुरू फ-इन्नल्ला-ह गनिय्युन् अन्कुम् व ला यर्ज़ा लिअिबादिहिल - कुफ्-र ८ व इन् तश्कुरू यर्ज़हु लकुम् ♭ व ला तज़िरु वाज़िरतुव्विज़्-र उख़्रा ♭ सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअुकुम् फ-युनब्बि-उकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलू-न ♭ इन्नहू अलीमुम् - बिज़ातिस्सुदूर (७)

★रु ५/१४ आ २४ ////व लाज़िम

कसम ! मैं उन सब को बहकाता रहूंगा। (८२) सिवा उन के, जो तेरे खालिस बन्दे है। (८३) कहा, सच (है) और मैं भी सच कहता हू। (८४) कि मैं तुझ से और जो उन मे से तेरी पैरवी करेगे, सब से जहन्नम को भर दूगा। (८५) (ऐ पैगम्बर !) कह दो कि मैं तुम से इस का वदला नही मागता और न मैं बनावट करने वालो मे हू। (८६) यह (कुरआन) तो दुनिया वालो के लिए नसीहत है। (८७) और तुम को इस का हाल एक वक्त के वाद मालूम हो जाएगा। (८८)★

३९ सूरः ज़ुमर ५९

सूर जुमर मक्की है। इस मे पचहत्तर आयते और आठ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

इस किताब का उतारा जाना खुदा-ए-गालिब (और) हिक्मत वाले की तरफ से है। (१) (ऐ पैगम्बर !) हम ने यह किताब तुम्हारी तरफ सच्चाई के साथ नाजिल की है, तो खुदा की इवादत करो (यानी) उस की इवादत को (शिर्क से) खालिस कर के। (२) देखो खालिस इबादत खुदा ही के लिए है और जिन लोगो ने उस के सिवा और दोस्त बनाये है▨(वे कहते है कि) हम इन को इस लिए पूजते है कि हम को खुदा का मुकर्रब बना दे, तो जिन बातो मे ये इख्तिलाफ करते है, खुदा उन मे इन का फैसला कर देगा। वेशक खुदा उस शख्स को, जो झूठा, ना-शुक्रा है, हिदायत नही देता। (३) अगर खुदा किसी को अपना वेटा वनाना चाहता, तो अपनी मख्लूक मे से जिस को चाहता, चुन लेता। वह पाक है, वही तो खुदा अकेला (और) गालिब है। (४) उसी ने आसमानो और ज़मीन को तद्बीर के साथ पैदा किया है (और) वही रात को दिन पर लपेटता और दिन को रात पर लपेटता है और उसी ने सूरज और चाद को वस मे कर रखा है। सब एक मुकर्रर वक्त तक चलते रहेगे। देखो वही गालिब (और) बख़्शने वाला है। (५) उसी ने तुम को एक शख़्स से पैदा किया, फिर उस से उस का जोड़ा बनाया और उसी ने तुम्हारे लिए चारपायो मे से आठ जोडे बनाए। वही तुम को तुम्हारी माओ के पेट मे (पहले) एक तरह, फिर दूसरी तरह तीन अधेरो मे बनाता है। यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है, उसी की बादशाही है। उस के सिवा कोई माबूद नही, फिर तुम कहा फिर जाते हो ? (६) अगर ना-शुक्री करोगे, तो खुदा तुम से बे-परवा है और वह अपने बन्दो के लिए ना-शुक्री नही पसन्द करता।[1] और अगर शुक्र करोगे, तो वह इस को तुम्हारे लिए पसन्द करेगा और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नही उठाएगा, फिर तुम को अपने परवरदिगार की तरफ लौटना है। फिर जो कुछ तुम करते रहे, वह तुम को बताएगा, वह तो दिलो की

१ यानी इस बात को पसद नही करता कि उस के वन्दे हो कर उस की ना-शुक्री करो।

★रु ५/१४ आ २४ ▨व लाजिम

व इज़ा मस्सल-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआ रब्बहू मुनीबन् इलैहि सुम्-म इज़ा ख़व्व-लहू निअ्-म-तम्-मिन्हु नसि-य मा का-न यद्अू इलैहि मिन् क़ब्लु व ज-अ-ल लिल्लाहि अन्दादल-लियुज़िल्-ल अन् सबीलिही कुल् तमत्तअ्-बिकुफ्रि-क क़लीलन् इन्न-क मिन् अस्हाबिन्नार (८) अम्मन् हु-व क़ानितुन् आनाअल्लैलि साजिदव्-व क़ाइमय्यह्ज़रुल-आख़ि-र-त व यर्जू रह्-म-त रब्बिही कुल् हल् यस्तविल्लज़ी-न यअ्-लमू-न वल्लज़ी-न ला यअ्-लमू-न इन्नमा य-त-ज़क्करु उलुल्अल्बाब ★ (९) कुल् या अिबादिल्लज़ी-न आमनुत्तक़ू रब्बकुम् लिल्लज़ी-न अह्सनू फी हाज़िहिद्दुन्या ह्-स-नतुन् व अर्-ज़ुल्लाहि वासि-अतुन् इन्नमा युवफ्फस्साबिरू-न अज्-रहुम् बिग़ैरि हिसाब (१०) कुल् इन्नी उमिर्तु अन् अअ्-बुदल्ला-ह मुख़्लिसल्लहुद्दीन (११) व उमिर्तु लि-अन् अकू-न अव्वलल-मुस्लिमीन (१२) कुल् इन्नी अख़ाफु इन् अ़सैतु रब्बी अज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (१३) कुलिल्ला-ह अअ्-बुदु मुख़्लिसल्लहू दीनी (१४) फ़अ्-बुदू मा शिअ्तुम् मिन् दूनिही क़ुल् इन्नल-ख़ासिरीनल-लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामति अला ज़ालि-क हुवल-ख़ुस्रानुल-मुबीन (१५) लहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् ज़ु-ल-लुम-मिनन्नारि व मिन् तह्तिहिम् ज़ु-ल-लुन् ज़ालि-क युख़व्वि-फ़ुल्लाहु बिही अिबादहू याअिबादि फत्तक़ून (१६) वल्लज़ीनज्-त-नबुत्ताग़ू-त अय्यअ्-बुदूहा व अनाबू इलल्लाहि लहुमुल्बुश्रा फ़बश्शिर् अिबाद (१७) अल्लज़ी-न यस्तमिअूनल्-कौ-ल फ़यत्तबिअू-न अह्-स-नहू उलाइकल्लज़ी-न हदाहुमुल्लाहु व उलाइ-क हुम् उलुल्अल्बाब (१८) अ-फ-मन् हक़्-क अ़लैहि कलिमतुल् अ़ज़ाबि अ-फ़ अन्-त तुन्क़िज़ु मन् फ़िन्नार (१९)

الزمر ٣٩ — ٣٦٧ — ومالي ٢٣

فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ وَإِذَا مَسَّ
الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ
يَدْعُو إِلَيْهِ مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ قُلْ
تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۝ أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ
سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ
يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝ قُلْ يَا عِبَادِ الَّذِينَ
آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَأَرْضُ اللَّهِ
وَاسِعَةٌ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ
أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّينَ ۝ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۝
قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قُلِ اللَّهَ أَعْبُدُ
مُخْلِصًا لَّهُ دِينِي ۝ فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُم مِّن دُونِهِ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ
خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝
لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ
بِهِ عِبَادَهُ يَا عِبَادِ فَاتَّقُونِ ۝ وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَن يَعْبُدُوهَا وَ
أَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ
فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝
أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنتَ تُنقِذُ مَن فِي النَّارِ ۝ لَٰكِنِ الَّذِينَ

★रु १/१५ आ ९

छिपी बाते तक जानता है। (७) और जब इन्सान को तक्लीफ पहुचती है, तो अपने परवरदिगार को पुकारता है (और) उस की तरफ दिल से रुजूअ करता है। फिर जब वह उस को अपनी तरफ से कोई नेमत देता है, तो जिस काम के लिए पहले उस को पुकारता है, उसे भूल जाता है और ख़ुदा का शरीक बनाने लगता है, ताकि (लोगो को) उस के रास्ते से गुमराह करे। कह दो कि (ऐ काफ़िरे नेमत) अपनी ना-शुक्री से थोडा-सा फायदा उठा ले, फिर तो तू दोज़खियो मे होगा। (८) (भला मुश्रिक अच्छा है) या वह जो रात के वक्तो मे जमीन पर पेशानी रख कर और खडे हो कर इबादत करता और आख़िरत से डरता और अपने परवरदिगार की रहमत की उम्मीद रखता है। कहो, भला जो लोग इल्म रखते है और जो नही रखते, दोनो बराबर हो सकते है, (और) नसीहत तो वही पकडते है, जो अक्लमंद है। (९)★

कह दो कि ऐ मेरे बन्दो ! जो ईमान लाए हो, अपने परवरदिगार से डरो, जिन्हो ने इस दुनिया मे नेकी की, उन के लिए भलाई है और ख़ुदा की ज़मीन कुशादा है, जो सब्र करने वाले है, उन को बे-शुमार सवाब मिलेगा। (१०) कह दो कि मुझ से इर्शाद हुआ है कि ख़ुदा की इबादत को ख़ालिस कर के उस की बन्दगी करू। (११) और यह भी इर्शाद हुआ है कि मैं सब से अव्वल मुसलमान बनू। (१२) कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार का हुक्म न मानू तो मुझे बडे दिन के अजाब से डर लगता है। (१३) कह दो कि मैं अपने दीन को (शिर्क से) ख़ालिस कर के उस की इबादत करता हू। (१४) तो तुम उस के सिवा, जिस की चाहो, पूजा करो। कह दो कि नुक्सान उठाने वाले वही लोग है, जिन्हो ने कियामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालो को नुक्सान मे डाला। देखो यही खुला नुक्सान है। (१५) उन के ऊपर तो आग के सायबान होंगे और नीचे (उसके) फर्श होगे। यह वह (अज़ाब) है, जिस से ख़ुदा अपने बन्दो को डराता है, तो ऐ मेरे बन्दो ! मुझ से डरते रहो। (१६) और जो इस से बचा कि बुतो को पूजे और ख़ुदा की तरफ रुजूअ किया, उन के लिए ख़ुशख़बरी है, तो मेरे बंदो को ख़ुशख़बरी सुना दो, (१७) जो बात को सुनते और अच्छी बातों[1] की पैरवी करते हैं। यही वे लोग हैं जिन को ख़ुदा ने हिदायत दी और यही अक्ल वाले है। (१८) भला जिस शख़्स पर अजाब का हुक्म हो चुका, तो क्या तुम (ऐसे) दोज़ख़ी को मुख़्लसी

१ यानी जिन बातो के करने का उन को हुक्म दिया गया, वे करते हैं और जिन से मना किया गया है, वह नहीं करते। ये दोनो अच्छी बातें है।

★रु १/१५ आ ९

लाकिनिल-लजीनत्तकौ रब्बहुम् लहुम् गु-रफुम्-मिन् फ़ौकिहा गु-रफुम्-मब्नियतुन् तज्री मिन् तह्तिहल-अन्हारु व अ-दल्लाहि ला युख्लिफुल्लाहुल-मीआद (२०) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ स-ल-कहू यनाबी-अ फिल्अर्जि सुम्-म युख्रिजु बिही जर-अम्-मुख्तलिफन् अल्वानुहू सुम्-म यहीजु फ-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यज्-अलुहू हुतामन् इन्-न फी जालि-क लजिक्रा लिउलिल-अल्बाब ✶(२१) अ-फ मन् श-र-हल्लाहु सद्-रहू लिल्इस्लामि फ़ हु-व अला नूरिम्-मिर्रब्बिही फवैलुल-लिल्कासियति कुलूबुहुम् मिन् जिक्रिल्लाहि उलाइ-क फी जलालिम्-मुबीन (२२) अल्लाहु नज्ज-ल अह्-स-नल-हदीसि किताबम्-मु-त-शाबिहम्-मसानि-य तक्शअिर्रु मिन्हु जुलूदुल्लजी-न यख्शौ-न रब्बहुम् सुम्-म तलीनु जुलूदुहुम् व कुलूबुहुम् इला जिक्रिल्लाहि जालि-क हुदल्लाहि यह्दी बिही मय्यशाउ व मय्युज्लि-लिल्लाहु फमा लहू मिन् हाद (२३) अ-फ़ मय्यत्तकी बिवज्हिही सू-अल्-अजाबि यौमल्-कियामति व की-ल लिज़्ज़ालिमी-न ज़ूकू मा कुन्तुम् तक्सिबून (२४) कज्ज-बल्-लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ-अताहुमुल-अज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून (२५) फ-अज़ा-क-हुमुल्लाहुल-ख़िज्-य फ़िल-हयातिद्दुन्या व ल-अज़ाबुल्-आखिरति अक्बरु लौ कानू यअ्-लमून (२६) व ल-कद् ज-रब्ना लिन्नासि फी हाजल्-कुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिल्-ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़क्करून (२७) कुर्आनन् अ-रबिय्यन् गै-र ज़ी अिव-जिल्-ल-अल्लहुम् यत्तकून (२८) ज-र-बल्लाहु म-स-लर्-रजुलन् फीहि शु-रकाउ मु-तशाकिसू-न व रजुलन् स-ल-मल्-लिरजुलिन् हल् यस्तवियानि म-स-लन् अल्हम्दु लिल्लाहि बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून (२९) इन्न-क मय्यितु व्-व इन्नहुम् मय्यितू-न (३०) सुम्-म इन्नकुम् यौमल्कियामति अिन्-द रब्बिकुम् तख्तसिमून ✶(३१)

اتقوا ربهم لهم غرف من فوقها غرف مبنية تجري من تحتها الانهر
وعد الله لا يخلف الله الميعاد ۝ الم تر ان الله انزل من السماء ماء
فسلكه ينابيع في الارض ثم يخرج به زرعا مختلفا الوانه ثم يهيج
فتراه مصفرا ثم يجعله حطاما ان في ذلك لذكرى لاولي
الالباب ۝ افمن شرح الله صدره للاسلام فهو على نور من ربه
فويل للقسية قلوبهم من ذكر الله اولئك في ضلل مبين ۝ الله
نزل احسن الحديث كتبا متشابها مثاني تقشعر منه جلود الذين
يخشون ربهم ثم تلين جلودهم وقلوبهم الى ذكر الله ذلك هدى
الله يهدي به من يشاء ومن يضلل الله فما له من هاد ۝ افمن
يتقي بوجهه سوء العذاب يوم القيمة وقيل للظلمين ذوقوا ما كنتم
تكسبون ۝ كذب الذين من قبلهم فاتهم العذاب من حيث لا
يشعرون ۝ فاذاقهم الله الخزي في الحيوة الدنيا ولعذاب الاخرة
اكبر لو كانوا يعلمون ۝ ولقد ضربنا للناس في هذا القران من
كل مثل لعلهم يتذكرون ۝ قرانا عربيا غير ذي عوج لعلهم
يتقون ۝ ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشكسون ورجلا سلما
لرجل هل يستوين مثلا الحمد لله بل اكثرهم لا يعلمون ۝ انك
ميت وانهم ميتون ۝ ثم انكم يوم القيمة عند ربكم تختصمون ۝

✶रु २/१६ आ १२ व लाजिम ✶रु ३/१७ आ १०

दे सकोगे ? (१९) लेकिन जो लोग अपने परवरदिगार से डरते है, उन के लिए ऊचे-ऊचे महल हैं, जिन के अन्दर कोठे बने हुए है (और) उन के नीचे नहरें बह रही है। (यह) खुदा का वायदा है। खुदा वायदे के खिलाफ नही करता। (२०) क्या तुम ने नही देखा कि खुदा आसमान से पानी नाजिल करता, फिर उस को जमीन मे चश्मे बना कर जारी करता, फिर उस से खेती उगाता है, जिस के तरह-तरह के रग होते है, फिर वह खुश्क हो जाती है, तो तुम उस को देखते हो (कि) पीली (हो गयी है) फिर उसे चूरा-चूरा कर देता है। बेशक इस मे अक्ल वालो के लिए नसीहत है। (२१)★

भला जिस शख्स का सीना खुदा ने इस्लाम के लिए खोल दिया हो और वह अपने परवरदिगार की तरफ से रोशनी पर हो, (तो क्या वह सख्त-दिल काफिर की तरह हो सकता है ?) पस उन पर अफसोस है, जिनके दिल खुदा की याद से सख्त हो रहे है और यही लोग खुली गुमराही मे है। (२२) खुदा ने निहायत अच्छी बाते नाजिल फ़रमायी है (यानी) किताब (जिस की आयते आपस मे) मिलती-जुलती (है) और दोहरायी जाती (हैं,) जो लोग अपने परवरदिगार से डरते है, उन के वदन के (उस से) रौगटे खडे हो जाते है, फिर उन के वदन और नर्म (हो कर) खुदा की याद की तरफ (मुतवज्जह) हो जाते है। यही खुदा की हिदायत है, वह इस से जिस को चाहता है, हिदायत देता है और जिस को खुदा गुमराह करे, उस को कोई हिदायत देने वाला नही। (२३) भला जो आदमी कियामत के दिन अपने मुह से बुरे अजाब को रोकता हो, (क्या वह वैसा हो सकता है, जो चैन मे हो) और जालिमो से कहा जाएगा कि जो कुछ तुम करते रहे थे, उस के मजे चखो। (२४) जो लोग इन से पहले थे, उन्हो ने भी झुठलाया था, तो उन पर अजाब ऐसी जगह से आ गया कि उन को खबर ही न थी। (२५) फिर उन को खुदा ने दुनिया की जिंदगी मे रुसवाई का मज़ा चखा दिया और आखिरत का अजाब तो बहुत बडा है काश ये समझ रखते (२६) और हम ने लोगो के (समझाने के लिए) इस कुरआन मे हर तरह की मिसाले बयान की है, ताकि वे नसीहत पकडे। (२७) यह कुरआन अरबी (है), जिस मे कोई ऐब (और इख्तिलाफ) नही, ताकि वे डर माने। (२८) खुदा एक मिसाल बयान करता है कि एक शख्स है, जिस मे कई (आदमी) शरीक है, (अलग-अलग मिज़ाज) और बुरी आदतो वाले और एक आदमी खास एक शख्स का (गुलाम है।) भला दोनो की हालत बराबर है ? (नही) अल्हम्दुलिल्लाह ! बल्कि यह अक्सर लोग नही जानते। (२९) (ऐ पैगम्बर !) तुम भी मर जाओगे और ये भी मर जाएंगे।[1] (३०) फिर तुम सब कियामत के दिन अपने परवरदिगार के सामने झगडोगे, और झगडे का फैसला कर दिया जाएगा। (३१) ★

---

१ काफिर इस बात की तमन्ना मे थे और इन्तिज़ार कर रहे थे कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिंदगी खत्म हो जाए। अल्लाह तआला ने हज़रत सल्ल० से फरमाया कि हमेशा की जिंदगी तुम्हारे लिए भी नही है और इन लोगो के लिए भी नही है, मौत तुम को भी आएगी और इन को भी कब्रस्तान मे ले जाएगी, फिर उन का तुम्हारी मौत की तमन्ना और इन्तिज़ार करना सिर्फ हिमाकत और नादानी की बात है। रिवायत है कि जब हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तिकाल हुआ, तो हज़रत उमर को यकीन न हुआ, तो उन्हो ने कहा कि जो कोई कहेगा कि आप वफात पा गये हैं, उस का सर तलवार से (जो नगी हाथ मे लिए हुए थे) उडा दूगा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह सुना तो हज़रत उमर रज़ि० से कहा कि तलवार को म्यान मे कीजिए और मिंबर पर चढ कर यह आयत पढी, तब सब को यकीन हुआ कि आप इन्तिकाल फरमा गये।

चौबीसवां पारः फ़-मन अज़्लमु

सूरतुज़्ज़ु-मरि आयात ३२ से ७५

फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् क-ज-ब अलल्लाहि व कज़्ज-ब बिस्सिद्क़ि इज़् जा-अहू अलै-स फी जहन्न-म मस्-वल्-लिल्काफिरीन (३२) वल्लज़ी जा-अ बिस्सिद्क़ि व सद्-द-क बिही उलाइ-क हुमुल्मुत्तकून (३३) लहुम् मा यशाऊ-न अिन्-द रब्बिहिम् ज़ालि-क जज़ाउल्-मुह्-सिनीन (३४) लियुकफ़्फ़िरल्लाहु अन्हुम् अस्-व-अल्लज़ी अमिलू व यज्जि-यहुम् अज्-रहुम् बिअह्सनिल्लज़ी कानू यअ्-मलून (३५) अलैसल्लाहु बिकाफिन् अब्दहू व युख़व्विफू-न-क बिल्लज़ी-न मिन् दूनिही व मय्युज़्लिलिल्लाहु फमा लहू मिन् हाद (३६) व मय्यह्दिल्लाहु फमा लहू मिम्मुज़िलिन् अलै-सल्लाहु बिअज़ीज़िन् ज़िन्तिक़ाम (३७) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-कस्समावाति वल्-अर्-ज ल-यक़ूलुन्नल्लाहु कुल् अ-फ-रऐतुम् मा तद्‌अू-न मिन् दूनिल्लाहि इन् अरादनियल्लाहु बिज़ुर्रिन् हल् हुन्-न काशिफातु ज़ुर्रिही औ अरादनी बिरह्मतिन् हल् हुन्-न मुम्सिकातु रह्मतिही कुल् हस्बियल्लाहु अलैहि य-त-वक्क-लुल्-मु-त-वक्किलून (३८) कुल् याकौमिअ्-मलू अला मकानतिकुम् इन्नी आमिलुन् फ़सौ-फ तअ्-लमून (३९) मय्यअ्तीहि अज़ाबुंय्यख़्-ज़ीहि व यहिल्लु अलैहि अज़ा-बुम्-मुक़ीम (४०) इन्ना अन्ज़लना अलैकल्-क़िता-ब लिन्नासि बिल्हक़्क़ि फ़-मनिह्-तदा फलिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अलैहा व मा अन्-त अलैहिम् बिवकील ★ (४१) अल्लाहु य-त-वफ़्फ़ल्-अन्फु-स ही-न मौतिहा वल्लती लम् तमुत् फी मनामिहा फ़-युम्सिकुल्लती क़ज़ा अलैहल्मौ-त व युर्सिलुल्-उख़्रा इला अ-जलिम्-मुसम्मन् इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्य-त-फक्करून (४२)

الزمر ٣٩ ٣٤٩ فمن اظلم ٢٤

فمن اظلم ممن كذب على الله وكذب بالصدق
اذ جاءه اليس في جهنم مثوى للكفرين ۝ والذي
جاء بالصدق وصدق به اولئك هم المتقون ۝ لهم
ما يشاءون عند ربهم ذلك جزؤا المحسنين ۝ ليكفر
الله عنهم اسوا الذي عملوا ويجزيهم اجرهم باحسن
الذي كانوا يعملون ۝ اليس الله بكاف عبده ويخوفونك
بالذين من دونه ومن يضلل الله فما له من هاد ۝ و
من يهد الله فما له من مضل اليس الله بعزيز ذي انتقام ۝
ولئن سالتهم من خلق السموت والارض ليقولن الله
قل افرءيتم ما تدعون من دون الله ان ارادني الله بضر
هل هن كشفت ضره او ارادني برحمة هل هن ممسكت
رحمته قل حسبي الله عليه يتوكل المتوكلون ۝ قل
يقوم اعملوا على مكانتكم اني عامل فسوف تعلمون ۝
من ياتيه عذاب يخزيه ويحل عليه عذاب مقيم ۝ انا انزلنا
عليك الكتب للناس بالحق فمن اهتدى فلنفسه ومن
ضل فانما يضل عليها وما انت عليهم بوكيل ۝ الله
يتوفى الانفس حين موتها والتي لم تمت في منامها فيمسك

★रु ४/१ आ१०

तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन, जो खुदा पर झूठ बोले और सच्ची वात, जव उस के पास पहुच जाए तो उसे झुठलाए ? क्या जहन्नम मे काफिरो का ठिकाना नही है ? (३२) और जो शख़्स सच्ची वात ले कर आया और जिस ने उस की तस्दीक की, वही लोग मुत्तकी है। (३३) वे जो चाहेगे, उन के लिए उन के परवरदिगार के पास (मौजूद है) मुह्सिनो का यही वदला है, (३४) ताकि खुदा उन से बुराइयो को जो उन्हो ने की, दूर कर दे और नेक कामो का जो वे करते रहे, उन को वदला दे। (३५) क्या खुदा अपने बन्दे को काफी नही ? और यह तुम को उन लोगो से, जो इस के सिवा है, (यानी गैर-खुदा से) डराते हैं और जिस को खुदा गुमराह करे, उसे कोई हिदायत देने वाला नही। (३६) और जिस को खुदा हिदायत दे, उस को कोई गुमराह करने वाला नही। क्या खुदा गालिब (और) बदला लेने वाला नही है ? (३७) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानो और जमीन को किस ने पैदा किया, तो कह दें कि खुदा ने। कहो कि भला देखो तो जिनको तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, अगर खुदा मुझ को कोई तक्लीफ पहुचानी चाहे, तो क्या वे उम तक्लीफ को दूर कर सकते है या अगर मुझ पर मेहरबानी करना चाहे, तो वे उसकी मेहरबानी को रोक सकते है ? कह दो कि मुझे खुदा ही काफ़ी है, भरोसा रखने वाले उसी पर भरोसा रखते हैं। (३८) कह दो कि ऐ कौम ! तुम अपनी जगह अमल किए जाओ, मैं (अपनी जगह) अमल किए जाता हू। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा, (३९) कि किस पर अजाब आता है जो उसे रुसवा करेगा और किस पर हमेशा का अजाब नाजिल होता है ? (४०) हम ने तुम पर किताब लोगो (की हिदायत) के लिए सच्चाई के साथ नाजिल की है, तो जो शख़्स हिदायत पाता है, तो अपने (भले के) लिए और जो गुमराह होता है तो गुमराही से अपना ही नुक्सान करता है और (ऐ पैगम्बर !) तुम उन के जिम्मेदार नही हो। (४१)★

खुदा लोगो के मरने के वक़्त उन की रूहे कब्ज़ कर लेता है और जो मरे नही (उन की रूहे) सोते मे (कब्ज़ कर लेता है) फिर जिन पर मौत का हुक्म कर चुकता है, उन को रोक रखता है और बाकी रूहो को एक मुकर्रर वक़्त तक के लिए छोड़ देता है। जो लोग सोच-विचार करते हैं उन के

★रु ४/१ आ १०

अमित्त-ख़-ज़ू मिन् दूनिल्लाहि शुफ़-आ-अ कुल् अ-वलौ कानू ला यम्लिकू-न शैअव्-व ला यअ्-किलून (४३) कुल् लिल्लाहिश्शफ़ाअतु जमीअन् लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि सुम्-म इलैहि तुर्जअून (४४) व इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वह्-दहुश्-म-अज़्ज़त् कुलूबुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति व इज़ा ज़ुकि-रल्लज़ी-न मिन् दूनिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून (४५) कुलिल्लाहुम्-म फ़ातिरस्-समावाति वल्अर्जि आ़लिमल्-ग़ैबि वश्शहादति अन्-त तह़्कुमु बै-न अ़िबादि-क फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (४६) व लौ अन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू मा फ़िल्अर्जि जमीअंव्-व मिस्-लहू म-अहू लफ़्तदौ बिही मिन् सूइल्-अ़ज़ाबि यौमल्क़ियामति व बदा लहुम् मिनल्-लाहि मा लम् यकूनू यह़्-तसिबून (४७) व बदा लहुम् सय्यिआतु मा क-स-बू व हा-क बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (४८) फ़इज़ा मस्सल्-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआना सुम्-म इज़ा ख़व्वल्नाहु निअ्-म-तम्-मिन्ना क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू अला अ़िल्मिन् बल् हि-य फ़ित-नतुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (४९) क़द् क़ाल-हल्लज़ी - न मिन् क़ब्लिहिम् फ़मा अग़्ना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून (५०) फ - असाबहुम् सय्यिआतु मा क-सबू वल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् हाउला-इ सयुसीबुहुम् सय्यिआतु मा क-सबू व मा हुम् बिमुअ्-जिज़ीन (५१) अ-व लम् यअ् - लमू अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमय्यशाउ व यक़्दिरु इन्-न फ़ी ज़ालि - क लआयातिल् - लिक़ौमिय्युअ्मिनून ★ (५२)

الَّتِي قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرٰى إِلٰى أَجَلٍ مُسَمًّى
إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۞ أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ
شُفَعَاءَ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ۞ قُلْ لِلّٰهِ
الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۞
وَإِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۞ قُلِ اللّٰهُمَّ
فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۞ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۞ وَ
بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۞
فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ
إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلٰى عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۞ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنٰى عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۞ فَأَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ
هٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۞ أَوَلَمْ
يَعْلَمُوا أَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذٰلِكَ

★रु ५/२ आ ११

लिए इस मे निशानिया है । (४२) क्या उन्हो ने खुदा के सिवा और सिफ़ारिशी वना लिए है । कहो कि चाहे वे किसी चीज का भी अख्तियार न रखते हो और न (कुछ) समझते ही हो ? (४३) कह दो कि सिफारिश तो सब खुदा ही के अख्तियार मे है। उसी के लिए आसमानो और जमीन की बादशाही है, फिर तुम उसी की तरफ लौट कर जाओगे। (४४) और जब तहा जिक्र किया जाता है. तो जो लोग आखिरत पर ईमान नही रखते, उन के दिल भीच उठते हैं और जब इस के मिवा औरो का ज़िक्र किया जाता है, तो खुश हो जाते है। (४५) कहो कि ऐ खुदा ! (ऐ) आसमानो और जमीन के पैदा करने वाले (और) छिपे और खुले के जानने वाले ! तू ही अपने हर बन्दो मे इन वातो का, जिन मे वे इख्तिलाफ करते रहे है, फैसला करेगा। (४६) और अगर जालिमो के पास वह सब (माल व मताअ) हो जो जमीन मे है और उस के साथ उसी कदर और हो तो क़ियामत के दिन वुरे अजाब (से मुल्लसी) पानी के बदले मे दे ढे और उन पर ग्वुदा की तरफ से वह वात ज़ाहिर हो जाएगी, जिम का उन को ख्याल भी न था। (४७) और उन के आमाल की वुराइया उन पर जाहिर हो जाएगी और जिस (अजाब) की वे हसी उडाते थे, वह उन को आ घेरेगा। (४८) जव इसान को तक्लीफ़ पहुचती है, तो हमे पुकारने लगता है, फिर जब हम उस को अपनी तरफ मे नेमत बख्शते है, तो कहता है कि यह तो मुझे (मेरे) इल्म (व सूझ-बूझ) की वजह से मिली है। (नही,) वल्कि वह आजमाइश है, मगर उन मे से अक्सर नही जानते। (४९) जो लोग इन मे पहले थे, वे भी यही कहा करते थे, जो कुछ वे किया करते थे, उन के कुछ काम भी न आया। (५०) उन पर उन के आमाल के वबाल पड गये और जो लोग उन मे से ज़ुल्म करते रहे है, उन पर उन के अमलो के ववाल वहुत जल्द पडेगे और वे (खुदा को) आजिज़ नही कर सकते। (५१) क्या उन को मालूम नही कि खुदा ही, जिस के लिए रोजी को फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) नग कर देता है। जो ईमान लाते है, उन के लिए इस मे (वहुत-सी) निशानिया हैं। (५२) ★

★रु. ५/२ आ ११

कुल् या अिबादि-यल्लज़ी-न अस्-रफू अला अन्फुसिहिम् ला तक्-नतू मिर्रह्मतिल्लाहि इन्नल्ला-ह यग़्फिरुज़्ज़ुनू-ब जमीअन् इन्नहू हुवल्-ग़फूरुर्रहीम (५३) व अनीबू इला रब्बिकुम् व अस्लिमू लहू मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अज़ाबु सुम्-म ला तुन्सरून (५४) वत्तबिअू अह्-स-न मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अज़ाबु बग़्-त-तव-व अन्तुम् ला तश्अुरून (५५) अन् तकू-ल नफ़्सुंय्या-हस्-रता अला मा फ़र्रत्तु फी जम्बिल्लाहि व इन् कुन्तु ल-मिनस्-साख़िरीन (५६) औ तकू-ल लौ अन्नल्ला-ह हदानी लकुन्तु मिनल्-मुत्तक़ीन (५७) औ तकू-ल ही-न तरल्अज़ा-ब लौ अन्-न ली कर्-रतन् फ-अकू-न मिनल्-मुह्सिनीन (५८) बला क़द् जा-अत्-क आयाती फ-कज़्ज़ब्-त बिहा वस्तक्बर-त व कुन्-त मिनल्काफ़िरीन (५९) व यौमल्क़ियामति त-रल्लज़ी-न क-ज़बू अलल्लाहि वुजूहुहुम् मुस्-वद-दतुन् अलै-स फी जहन्न-म मस्वल्-लिल्मु-त-कब्बिरीन (६०) व युनज्जिल्लाहुल्-लज़ीनत्तकौ बि-मफ़ा-ज़ति-हिम् ला यमस्सुहुमुस्सूउ व ला हुम् यह्-ज़नून (६१) अल्लाहु ख़ालिकु कुल्लि शैइंव्-व हु-व अला कुल्लि शैइंव्वकील (६२) लहू मक़ालीदुस्-समावाति वल्अर्ज़ि वल्लज़ी - न क-फरू बिआयातिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून★ (६३) क़ुल् अ-फ़-ग़ैरल्लाहि तअ्मुरून्नी अअ् - बुदु अय्युहल्-जाहिलून (६४) व ल-क़द् ऊहि-य इलै-क व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लि-क लइन् अश्रक्-त ल - यह्बतन्-न अ-मलु-क व ल-तकूनन् - न मिनल्ख़ासिरीन (६५) बलिल्ला-ह फअ्-बुद् व कुम्-मिनश्शाकिरीन (६६)

الزمر ٣٩ ٧٧١ فمن اظلم ٢٤

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۞ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۞ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ
يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۞ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ
مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا
تَشْعُرُوْنَ ۞ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰي مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ
اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۞ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ
مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۞ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً
فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۞ بَلٰى قَدْ جَاۗءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَ
اسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۞ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ
كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۞
وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۡ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْۗءُ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ۞ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۡ وَّهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۞
لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۞ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْۗنِّىْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۞
وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَىِٕنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ
عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۞ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ

★रु. ६/३ आ ११

(ऐ पैगम्बर ! मेरी तरफ से लोगो को) कह दो कि ऐ मेरे बन्दो ! जिन्हो ने अपनी जानो पर ज्यादती की है, खुदा की रहमत से ना-उम्मीद न होना। खुदा तो सब गुनाहो को बख्श देता है (और) वह तो बख्शने वाला मेहरबान है। (५३) और इस से पहले कि तुम पर अजाब आ वाकेअ हो, अपने परवरदिगार की तरफ रुजूअ करो और उस के फरमाबरदार हो जाओ, फिर तुम को मदद नहीं मिलेगी। (५४) और इस से पहले कि तुम पर अचानक अजाब आ जाए और तुम को खबर भी न हो, इस निहायत अच्छी (किताब) की, जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाजिल हुई है पैरवी करो, (५५) कि (शायद उस वक्त) कोई नफ़्स कहने लगे कि (हाय ! हाय !!) उस गलती पर अफसोस है, जो मैं ने खुदा के हक मे की और मैं तो हसी ही करता रहा, (५६) या यह कहने लगे कि अगर खुदा मुझ को हिदायत देता तो मैं भी परहेजगारो मे होता। (५७) या जब अजाब देख ले तो कहने लगे कि अगर मुझे फिर एक बार दुनिया मे जाना हो तो मैं नेक लोगो मे हो जाऊ। (५८) (खुदा फरमाएगा,) क्यो नही, मेरी आयते तेरे पास पहुच गयी है, मगर तू ने उन को झुठलाया और शेखी मे आ गया और तू काफिर बन गया। (५९) और जिन लोगो ने खुदा पर झूठ बोला, तुम कियामत के दिन देखोगे कि उन के मुह काले हो रहे होगे। क्या घमड करने वालो का ठिकाना दोजख मे नही है ? (६०) और जो परहेजगार है, उन की (सआदत और) कामियाबी की वजह से खुदा उन को निजात देगा, न तो उन को कोई सख्ती पहुचेगी और न गमनाक होगे। (६१) खुदा ही हर चीज का पैदा करने वाला है और वही हर चीज का निगरा है। (६२) उसी के पास आसमानो और ज़मीन की कुजिया है और जिन्हो ने खुदा की आयतो से कुफ्र किया, वही नुक्सान उठाने वाले है। (६३) ★

कह दो कि ऐ नादानो ! तुम मुझ से यह कहते हो मैं गैर-खुदा की पूजा करने लगू। (६४) और (ऐ मुहम्मद !) तुम्हारी तरफ और उन (पैगम्बरो) की तरफ, जो तुम से पहले हो चुके है, यही वह्य भेजी गयी है कि अगर तुम ने शिर्क किया, तो तुम्हारे अमल बर्बाद हो जाएगे और तुम नुक्सान उठाने वालो मे हो जाओगे, (६५) बल्कि खुदा ही की इबादत करो और शुक्रगुजारो मे

★रु. ६/३ आ ११

व मा क-द-रुल्ला-ह हक़्-क क़द्‌रिही वल्‌अर्‌ज़ु जमीअन् क़ब्ज़तुहू यौमल्‌क़ियामति वस्समावातु मत्‌विय्यातुम्-बियमीनिही सुब्हानहू व तआ़ला अम्मा युश्‌रिकून (६७) व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-सअ़ि-क मन् फ़िस्-समावाति व मन् फ़िल्‌अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु सुम्-म नुफ़ि-ख़ फ़ीहि उख़्रा फ़-इज़ाहुम् क़ियामुय्यन्ज़ुरून (६८) व अश्-र-क़तिल्-अर्‌ज़ु बिनूरि रब्बिहा व वुज़िअ़ल्-किताबु व-जी-अ बिन्नबिय्यी-न वश्शु-ह-दाइ व कुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून (६९) व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम्मा अ़मिलत् व हु-व अअ़्‌लमु बिमा यफ़्‌अलून★(७०) व सीक़ल्लज़ी-न क-फ़रू इला जहन्न-म ज़ु-म-रन् हत्ता इज़ा जाऊहा फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व का-ल लहुम् ख़-ज़-नतुहा अ-लम् यअ्‌तिकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यत्लू-न अ़लैकुम् आयाति रब्बिकुम् व युन्ज़िरूनकुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा क़ालू बला व लाकिन् हक़्क़त् कलिमतुल्-अ़ज़ाबि अ़-लल्काफ़िरीन (७१) क़ीलद्‌ख़ुलू अब्वा-ब ज-हन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा फ़बिअ्-स मस्-वल्-मु-त-कब्बिरीन (७२) वसीक़ल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् इलल्जन्नति ज़ुम-रन् हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व का-ल लहुम् ख़-ज़-नतुहा सलामुन् अ़लैकुम् तिब्तुम् फ़द्‌ख़ुलूहा ख़ालिदीन (७३) व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी स-द-क़ना वअ्-दहू व औ-र-स-नल्-अर्-ज़ न-त-बव्वउ मिनल्जन्नति हैसु नशाउ फ़निअ्-म अज्रुल्-आमिलीन (७४) व-त-रल्-मलाइ-क-त हाफ़्फ़ी-न मिन् हौलिल्-अ़र्शि युसब्बिहू-न बिहम्दि रब्बिहिम् व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व क़ीलल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन★(७५) ●

الشّٰكِرِيْنَ ۞ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِيْنِهٖ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۞
وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا
مَنْ شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۞ وَ
اَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْۗءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَاۗءِ
وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۞ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ
مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۞ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ
خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَ
يُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۞ قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۞ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۭ
حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ
طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ۞ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا
وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاۗءُ ۚ فَنِعْمَ
اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۞ وَتَرَى الْمَلٰۗىِٕكَةَ حَاۗفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ
يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ

हो। (६६) और उन्हो ने खुदा की कद्रशनासी जैसी करनी चाहिए थी, नही की और कियामत के दिन तमाम जमीन उस की मुट्ठी मे होगी और आसमान उस के दाहिने हाथ मे लिपटे होंगे (और) वह इन लोगो के शिर्क से पाक और आली शान है। (६७) और जब सूर फूका जाएगा, तो जो लोग आसमान मे है और जो ज़मीन मे है, सब बेहोश हो कर गिर पडेगे, मगर वह जिस को खुदा चाहे, फिर दूसरी वार सूर फूका जाएगा, तो फौरन सब खडे हो कर देखने लगेगे। (६८) और जमीन अपने परवरदिगार के नूर से चमक उठेगी और (आमाल की) किताब (खोल कर) रख दी जाएगी और पैगम्बर और (और) गवाह हाज़िर किए जाएगे और उन मे इसाफ के साथ फैसला किया जाएगा और बे-इसाफी नही की जाएगी। (६९) और जिस शख्स ने जो अमल किया होगा, उस को उस का पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा और जो कुछ ये करते है, उस को सब की खबर है। (७०)★

और काफिरो को गिरोह-गिरोह बना कर जहन्नम की तरफ ले जाएगे, यहा तक कि जब वे उस के पास पहुच जाएगे, तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएगे, तो उस के दारोगा उन से कहेगे कि क्या तुम्हारे पास तुम ही मे से पैगम्बर नही आए थे, जो तुम को तुम्हारे परवरदिगार की आयते पढ-पढ कर सुनाते और उस दिन के पेश आने से डराते थे, कहेगे, क्यो नही, लेकिन काफिरो के हक मे अज़ाब का हुक्म तह्कीक हो चुका था। (७१) कहा जाएगा कि दोज़ख के दरवाज़ो मे दाखिल हो जाओ, हमेशा उस मे रहोगे, तकब्बुर करने वालो का बुरा ठिकाना है। (७२) और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन को गिरोह-गिरोह बना कर वहिश्त की तरफ ले जाएगे, यहा तक कि जब उस के पास पहुच जाएंगे और उस के दरवाजे खोल दिए जाएंगे, तो उस के दारोगा उन से कहेगे कि तुम पर सलाम! तुम बहुत अच्छे रहे। अब इस मे हमेशा के लिए दाखिल हो जाओ। (७३) वे कहेगे कि खुदा का शुक्र है, जिस ने अपने वायदे को हम से सच्चा कर दिया और हम को उस ज़मीन का वारिस बना दिया, हम वहिश्त मे जिस मकान मे चाहे रहें, तो (अच्छे) अमल करने वालो का बदला भी कैसा खूब है। (७४) तुम फरिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द घेरा बाधे हुए हैं (और) अपने परवरदिगार की तारीफ के साथ तस्बीह कर रहे है और उन मे इन्साफ़ के साथ फैसला किया जाएगा और कहा जाएगा कि हर तरह की तारीफ अल्लाह ही के लिए है, जो सारे जहान का मालिक है। (७५)★●

★रु ७/४ आ ७ ★रु ८/५ आ ५ ●रुबुअ् १/४

४० सूरतुल् मुअ्मिनि ६०

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ५२१३ अक्षर, १२४२ शब्द, ८५ आयते और ९ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

हा-मीम् (१) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् - अज़ीज़िल् - अलीम (२) ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल्-अिक़ाबि ज़ित्तौलि ला इला - ह इल्ला हु - व इलैहिल्-मसीर (३) मा युजादिलु फ़ी आयातिल्लाहि इल्लल्लज़ी - न क-फ़रू फ़ला यग़रुर्-क त-क़ल्लुबुहुम् फ़िल्-बिलाद (४) कज़्ज़-बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्वल्-अह्ज़ाबु मिम्बअ्-दिहिम् व हम्मत् कुल्लु उम्मतिम्-बिरसूलिहिम् लियअ्ख़ुज़ूहु व जादलू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक़्-क फ़-अ-ख़ज़्तुहुम् फ़कै-फ़ का-न अिक़ाब (५) व कज़ालि-क हक़्क़त् कलिमतु रब्बि-क अ-लल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नहुम् अस्हाबुन्नार (६) अल्लज़ी-न यह्मिलूनल्अर्-श व मन् हौलहू युसब्बिहू-न बिहम्दि रब्बिहिम् व युअ्मिनू-न बिही व यस्तग़फ़िरू-न लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना वसिअ्-त कुल्-ल शैइर्रह्मतंव्-व अिल्मन् फ़ग़्फ़िर् लिल्लज़ी-न ताबू वत्त-ब-अू सबील-क व क़िहिम् अज़ाबल्-जहीम (७) रब्बना व अद्ख़िल्हुम् जन्नाति अद्निनिल्लती व-अत्तहुम् व मन् स-ल-ह मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् इन्न-क अन्तल् - अज़ीज़ुल्-हकीम (८) व क़िहिमुस्सय्यि-आति व मन् तक़िस्सय्यिआति यौमइज़िन् फ़-क़द् रहिम्तहू व ज़ालि-क हुवल्फ़ौज़ुल्-अज़ीम★(९) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू युनादौ-न ल-मक्तुल्लाहि अक्बरु मिम्मक़्तिकुम् अन्फ़ुसकुम् इज़् तुद्औ - न इलल्ईमानि फ़ - तक्फ़ुरून (१०)

لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْبِ وَ
قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝
مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي
الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ
كُلُّ اُمَّةٍ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ
الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ
وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَ
اتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ
الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ
فَقَدْ رَحِمْتَهٗ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ
لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ

▨ व. लाज़िम व. न बी स. ★रु १/६ आ ९

४० सूरः मुअ्मिन् ६०

सूरः मुअ्मिन मक्की है, इस मे पचासी आयतें और नौ रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) इस किताब का उतारा जाना खुदा-ए-गालिब व दाना की तरफ से है, (२) जो गुनाह बख्शने वाला है और तौबा कुबूल करने वाला (और) सख्त अज़ाब देने वाला (और) करम वाला है। उसके सिवा कोई माबूद नही, उसी की तरफ फिर कर जाना है। (३) खुदा की आयतो मे वही लोग झगडते हैं, जो काफिर है, तो उन लोगो का शहरो मे चलना-फिरना तुम्हे धोखे मे न डाल दे। (४) उन से पहले नूह की कौम और उनके बाद और उम्मतों ने (पैगम्बरो को) झुठलाया, और हर उम्मत ने अपने पैगम्बर के बारे मे यही इरादा किया कि उसको पकड लें और बेहूदा (शुबहो से) झगड़ते रहे कि उस से हक को खत्म कर दें, तो मैं ने उनको पकड़ लिया, सो (देख लो) मेरा अजाब कैसा हुआ? (५) और इसी तरह काफिरो के बारे मे भी तुम्हारे परवरदिगार की बात पूरी हो चुकी है कि वे दोजखी हैं ▨(६) जो लोग अर्श को उठाए हुए और जो उसके चारो तरफ (हल्का बांधे हुए) है (यानी फरिश्ते,) वे अपने परवरदिगार की तारीफ के साथ तस्बीह करते रहते है और उसके साथ ईमान रखते है और मोमिनो के लिए बख्शिश मांगते रहते है कि ऐ हमारे परवर-दिगार! तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज को एहाता किए हुए है, तो जिन लोगों ने तौबा की और तेरे रास्ते पर चले, उन को बख्श दे और दोजख के अज़ाब से बचा ले। (७) ऐ हमारे परवर-दिगार! उनको हमेशा रहने की बहिश्तो मे दाखिल कर, जिन का तूने उनसे वायदा किया है और जो उन के बाप-दादा और उन की बीवियो और उनकी औलाद मे से नेक हों, उनको भी। बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (८) और उनको अज़ाबो से बचाए रख और जिस को तू उस दिन अजाबो से बचा लेगा, तो बेशक उस पर मेहरबानी हुई और यही बडी कामियाबी है। (९) ★

जिन लोगो ने कुफ्र किया उन से पुकार कर कह दिया जाएगा कि जब तुम (दुनिया मे) ईमान की तरफ बुलाए जाते थे और मानते नही थे तो खुदा इस से कही ज्यादा बेज़ार होता था, जितने कि

▨व लाज़िम　व न बी स　★रु. १/६ आ ९

कालू रब्बना अ-मत्त-नस्नतैनि व अह्यैत-नस्नतैनि फअ्-त-रफ़्ना बिज़ुनूबिना फ-हल् इला ख़ुरूजिम् - मिन् सबील (११) ज़ालिकुम् बिअन्नहू इज़ा दुअि-यल्लाहु वह्दहू क-फ़र्तुम् व इंय्युश्-रक् बिही तुअ्मिनू फ़ल्हुक्मु लिल्लाहिल्-अलिय्यिल् - कबीर (१२) हुवल्लज़ी युरीकुम् आयातिही व युनज़्ज़िलु लकुम् मिनस्समाइ रिज़्क़न् व मा य-त-ज़क्करु इल्ला मंय्युनीब (१३) फद्अुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न व लौ करिहल्-काफ़िरून (१४) रफ़ीअुद्-द-रजाति ज़ुल्अर्शि युल्किर्रू-ह मिन् अम्रिही अ़ला मंय्यशाउ मिन् अिबादिही लि-युन्ज़ि-र यौमत्तलाक़ (१५) यौ-म हुम् बारिज़ू-न ला यख़्फ़ा अ़लल्लाहि मिन्हुम् शैउन् लि-मनिल्-मुल्कुल्यौ-म लिल्लाहिल्-वाहिदिल्-क़ह्हार (१६) अल्यौ-म तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्-सिम्-बिमा क-स-बत् ला ज़ुल्मल्-यौ-म इन्नल्ला-ह सरीअुल्-हिसाब (१७) व अन्ज़िर्-हुम् यौमल्-आज़िफ़ति इज़िल्कुलूबु ल-दल्हनाजिरि काज़िमी-न मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् हमीमिंव्-व ला शफ़ीअिंय्युता-अ़ (१८) यअ्-लमु ख़ाइन-तल् - अअ् - युनि व मा तुख़्फ़िस्सुदूर (१९) वल्लाहु यक़्ज़ी बिल्हक़्क़ि वल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिही ला यक़्ज़ू-न बिशैइन् इन्नल्ला-ह हुवस्समीअुल् - बसीर ★ (२०) अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्लज़ी-न कानू मिन् क़ब्लिहिम् कानू हुम् अशद् - द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़-अ-ख़-ज़-हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम् व मा का-न लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (२१) ज़ालि - क बि - अन्नहुम् कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-क-फ़रू फ़-अ-ख़-ज़-हुमुल्लाहु इन्नहू क़विय्युन् शदीदुल्-अिक़ाब (२२)

تكفرون ﴿١٠﴾ قالوا ربنا امتنا اثنتين واحييتنا اثنتين فاعترفنا
بذنوبنا فهل الى خروج من سبيل ﴿١١﴾ ذلكم بانه اذا دعي الله
وحده كفرتم وان يشرك به تؤمنوا فالحكم لله العلي الكبير ﴿١٢﴾
هو الذي يريكم ايته وينزل لكم من السماء رزقا وما يتذكر الا
من ينيب ﴿١٣﴾ فادعوا الله مخلصين له الدين ولو كره الكفرون ﴿١٤﴾
رفيع الدرجت ذو العرش يلقي الروح من امره على من يشاء من
عباده لينذر يوم التلاق ﴿١٥﴾ يوم هم برزون لا يخفى على الله منهم
شيء لمن الملك اليوم لله الواحد القهار ﴿١٦﴾ اليوم تجزى كل
نفس بما كسبت لا ظلم اليوم ان الله سريع الحساب ﴿١٧﴾ وانذرهم
يوم الازفة اذ القلوب لدى الحناجر كظمين ما للظلمين من
حميم ولا شفيع يطاع ﴿١٨﴾ يعلم خائنة الاعين وما تخفي
الصدور ﴿١٩﴾ والله يقضي بالحق والذين يدعون من دونه لا
يقضون بشيء ان الله هو السميع البصير ﴿٢٠﴾ اولم يسيروا في
الارض فينظروا كيف كان عاقبة الذين كانوا من قبلهم كانوا
هم اشد منهم قوة واثارا في الارض فاخذهم الله بذنوبهم و
ما كان لهم من الله من واق ﴿٢١﴾ ذلك بانهم كانت تاتيهم رسلهم
بالبينت فكفروا فاخذهم الله انه قوي شديد العقاب ﴿٢٢﴾ و

★रु. २/७ आ ११

तुम अपने आप से वेजार हो रहे हो। (१०) वे कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! तू ने हमको दो बार बे-जान किया और दो बार जान बख्शी। हम को अपने गुनाहो का इकरार है, तो क्या निकलने का कोई रास्ता है? (११) यह इसलिए कि जब तन्हा खुदा को पुकारा जाता था, तो तुम इन्कार कर देते थे और अगर उस के साथ शरीक मुकर्रर किया जाता था, तो मान लेते थे, तो हुक्म तो खुदा ही का है, जो (सब से) ऊपर (और सब से) बडा है, (१२) वही तो है, जो तुम को अपनी निशानिया दिखाता है और तुम पर आसमान से रोजी उतारता है और नसीहत तो वही पकडता है, जो (उस की तरफ) रुजूअ करता है। (१३) तो खुदा की इबादत को खालिस कर-कर उसी को पुकारो, अगरचे काफिर बुरा ही माने। (१४) वह मालिक ऊचे दर्जे (और) अर्श वाला है। अपने बन्दो मे से, जिस को चाहता है, अपने हुक्म से वह्य भेजता है, ताकि मुलाकात के दिन से डराए, (१५) जिस दिन वे निकल पड़ेंगे, उन की कोई चीज़ खुदा से छिपी न रहेगी, आज किस की बादशाही है? खुदा की जो अकेला (और) गालिब है। (१६) आज के दिन हर शख्स को उसके आमाल का बदला दिया जाएगा। आज (किसी के हक मे) बे-इंसाफी नही होगी। बेशक खुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (१७) और उन को क़रीब आने वाले दिन से डराओ, जब कि दिल गम से भरकर गलो तक आ रहे होगे (और) ज़ालिमों का कोई दोस्त नही होगा, और न कोई सिफारिशी, जिस की बात कुबूल की जाए। (१८) वह आखो की खियानत को जानता है और जो (बाते) सीनो मे छिपी है (उनको भी) (१९) और खुदा सच्चाई के साथ हुक्म फरमाता है और जिनको ये लोग पुकारते है, वे कुछ भी हुक्म नही दे सकते। बेशक खुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है। (२०)★

क्या उन्होंने ज़मीन मे सैर नही की, ताकि देख लेते कि जो लोग उन से पहले थे, उनका अंजाम कैसा हुआ, वह उनसे ज़ोर और ज़मीन मे निशान (बनाने) के लिहाज़ से कही बढ कर थे, तो खुदा ने उनको उनके गुनाहो की वजह से पकड़ लिया और उनको खुदा (के अज़ाब) से कोई भी बचाने वाला न था। (२१) यह इसलिए कि उनके पास पैगम्बर खुली दलीले लाते थे, तो ये कुफ्र करते थे सो खुदा ने उनको पकड लिया, बेशक वह ताकत वाला (और) सख्त अज़ाब देने वाला है। (२२)

★रु २/७ आ ११

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन (२३) इला फ़िर्औ-न व हामा-न व क़ारू-न फ़क़ालू साहिरुन् कज़्ज़ाब (२४) फ़-लम्मा जा-अहुम् बिल्-हक़्क़ि मिन् अिन्दिना क़ालुक़्तुलू अब्ना-अल्लज़ी-न आमनू म-अहू वस्तह्यू निसा-अहुम् व मा कैदुल्काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल (२५) व क़ा-ल फ़िर्औनु ज़रूनी अक़्तुल् मूसा वल्यद्अु रब्बहू इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युबद्दि-ल दी-नकुम् औ अंय्युज़्हि-र फ़िल्अर्ज़िल्-फ़साद (२६) व क़ा-ल मूसा इन्नी अुज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् मिन् कुल्लि मु-त-कब्बिरिल्ला युअ्मिनु बियौमिल्-हिसाब ★(२७) व क़ा-ल रजुलुम्-मुअ्मिनुम्-मिन् आलि फ़िर्औ-न यक्तुमु ईमानहू अ-तक़्तुलू-न रजुलन् अंय्यक़ू-ल रब्बियल्लाहु व क़द् जा-अकुम् बिल्बय्यिनाति मिर्रब्बिकुम् व इंय्यकु काज़िबन् फ़-अलैहि कज़िबुहू व इंय्यकु सादिक़य्युसिब्-कुम् बअ्-ज़ुल्लज़ी यअिदुकुम् इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व मुस्रिफ़ुन् कज़्ज़ाब (२८) या क़ौमि लकुमुल्-मुल्कुल्-यौ-म ज़ाहिरी-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-मंय्यन्सुरुना मिम्बअ्सिल्लाहि इन् जा-अना क़ा-ल फ़िर्औनु मा उरीकुम् इल्ला मा-अरा व मा अह्दीकुम् इल्ला सबीलर्-रशाद (२९) व क़ालल्लज़ी आ-म-न या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् मिस्-ल यौमिल् - अह्ज़ाब (३०) मिस् - ल दअ्बि क़ौमि नूहिंव्-व आदिंव्-व समू-द वल्लज़ी-न मिम्बअ् - दिहिम् व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल् - लिल्अिबाद (३१) व या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् यौमत्तनाद (३२) यौ-म तुवल्लू-न मुद्बिरी-न मा लकुम् मिनल्लाहि मिन् आसिमिन् व मंय्युज़्लि-लिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (३३)

لَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ
وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا
قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ
الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ
رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۝
وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ
بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ
إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُم بِالْبَيِّنَاتِ
مِن رَّبِّكُمْ ۖ وَإِن يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِن يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم
بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝
يَا قَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ فِي الْأَرْضِ فَمَن يَنصُرُنَا مِن
بَأْسِ اللَّهِ إِن جَاءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ
إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُم
مِّثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۝ مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَ
الَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝ وَيَا قَوْمِ إِنِّي
أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝ يَوْمَ تُوَلُّونَ مُدْبِرِينَ مَا لَكُم مِّنَ
اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ

★रु. ३/८ आ ७

और हमने मूसा को अपनी निशानिया और रोशन दलील देकर भेजा, (२३) (यानी) फिर्औन और हामान और कारून की तरफ, तो उन्होने कहा कि यह तो जादूगर है झूठा। (२४) गरज़ जब वह उनके पास हमारी तरफ से हक ले कर पहुचे, तो कहने लगे कि जो लोग उसके साथ (खुदा पर) ईमान लाए है, उन के बेटो को कत्ल कर दो और बेटियो को रहने दो और काफिरो की तद्बीरे बे-ठिकाने होती हैं। (२५) और फिर्औन बोला कि मुझे छोडो कि मूसा को कत्ल कर दू और वह अपने परवरदिगार को बुला ले। मुझे डर है कि वह (कही) तुम्हारे दीन को (न) बदल दे या मुल्क मे फसाद (न) पैदा कर दे। (२६) मूसा ने कहा कि मैं हर घमंडी से, जो हिसाब के दिन (यानी कियामत) पर ईमान नही लाता, अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह ले चुका हू। (२७)★

और फिर्औन के लोगो मे से एक मोमिन शख्स जो अपने ईमान को छिपाए रखता था, कहने लगा, क्या तुम ऐसे शख्स को कत्ल करना चाहते हो, जो कहता है कि मेरा परवरदिगार खुदा है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार (की तरफ) से निशानिया भी लेकर आया है और अगर वह झूठा होगा, तो उसके झूठ का नुक्सान उसी को होगा और अगर सच्चा होगा, तो कोई-सा अजाब, जिसका वह तुम से वायदा करता है, तुम पर वाकेअ हो कर रहेगा। बेशक खुदा उस शख्स को हिदायत नही देता, जो बे-लिहाज़ झूठा है। (२८) ऐ कौम! आज तुम्हारी ही बादशाही है और तुम ही मुल्क मे गालिब हो, (लेकिन) अगर हम पर खुदा का अज़ाब आ गया, तो (उस के दूर करने के लिए) हमारी मदद कौन करेगा! फिर्औन ने कहा कि मैं तुम्हे वही बात सुनाता हू, जो मुझे सूझी है और वही राह बताता हूं, जिसमे भलाई है। (२९) तो जो मोमिन था, वह कहने लगा कि ऐ कौम! मुझे तुम्हारे बारे मे डर है कि (शायद) तुम पर और उम्मतो की तरह के दिन का अजाब आ जाए। (३०) (यानी) नूह की कौम और आद और समूद और जो लोग उनके पीछे हुए हैं, उनके हाल ही तरह (तुम्हारा हाल न हो जाए) और खुदा तो बन्दो पर जुल्म करना नही चाहता। (३१) और ऐ कौम! मुझे तुम्हारे बारे मे पुकार के दिन (यानी कियामत) का डर है, (३२) जिस दिन तुम पीठ फेर कर (कियामत के मैदान से) भागोगे, (उस दिन) तुम को कोई (अज़ाबे) खुदा से बचाने वाला न होगा और जिस शख्स को खुदा गुमराह करे, उसको कोई हिदायत देने वाला

★रु. ३/८ आ ७

व ल-क़द् जा-अकुम् यूसुफ़ु मिन् क़ब्लु बिल्बय्यिनाति फ़मा ज़िल्तुम् फ़ी शक्किम्-मिम्मा जा-अकुम् बिही ᐟ हत्ता इज़ा ह-ल-क क़ुल्तुम् लंय्यब्-असल्लाहु मिम्बअ्-दिही रसूलन् ᐟ कज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहु मन् हु-व मुस्रिफ़ुम्-मुर्ताबु नि- (३४) -ल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम् ᐟ कबु-र मक़्तन् अिन्दल्-लाहि व अिन्दल्लज़ी-न आमनू ᐟ कज़ालि-क यत्-बअुल्लाहु अ़ला कुल्लि क़ल्बि मु-त-कब्बिरिन् जब्बार (३५) व का-ल फ़िर्औनु या हामानुब्नि ली स़र्हल्-ल-अ़ल्ली अब्लुग़ुल्-अस्बाब (३६) अस्बाबस्समावाति फ़-अत्तलि-अ इला इलाहि मूसा व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू काज़िबन् ᐟ व कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिफ़िर्औ-न सूउ अ-म-लिही व सुद-द अनिस्सबीलि ᐟ व मा कैदु फ़िर्औ-न इल्ला फ़ी तबाब ★ (३७) व का-लल्लज़ी आम-न या क़ौमित्तबिअूनि अह्-दिकुम् सबीलर्रशाद (३८) या क़ौमि इन्नमा हाज़िहिल् - हयातुद्दुन्या मताअुंव्-व इन्नल्-आख़ि-र-त हि-य दारुल्क़रार (३९) मन् अ़मि-ल सय्यि-अ-तन् फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व मन् अ़मि-ल सालिहम्-मिन् ज़-क-रिन् औ अुन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त युर्ज़क़ू-न फ़ीहा बिग़ैरि हिसाब (४०) व या क़ौमि मा ली अद्अूकुम् इलन्नजाति व तद्अूननी इलन्नार ᐟ ● (४१) तद्अूननी लि-अक्फ़ु-र बिल्लाहि व उश्रि-क बिही मा लै-स ली बिही अिल्मुंव्-व अ-न अद्अूकुम् इलल्-अ़ज़ीज़िल्-ग़फ़्फ़ार (४२) ला ज-र-म अन्नमा तद्अूननी इलैहि लै-स लहू दअ्-वतुन् फ़िद्दुन्या व ला फ़िल्आख़िरति व अन्-न म-रद्दना इलल्लाहि व अन्नल्-मुस्रिफ़ी-न हुम् अस्हाबुन्नार (४३) फ़-स-तज़्कुरू-न मा अक़ूलु लकुम् ᐟ व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाहि ᐟ इन्नल्ला-ह बसीरुम् - बिल्अिबाद (४४)

فمن اظلم ٢٤ — المؤمن ٤٠

يوسف من قبل بالبينت فما زلتم في شك مما جاءكم به
حتى اذا هلك قلتم لن يبعث الله من بعده رسولا كذلك
يضل الله من هو مسرف مرتاب ۝ الذين يجادلون في ايت
الله بغير سلطن اتىهم كبر مقتا عند الله وعند الذين امنوا
كذلك يطبع الله على كل قلب متكبر جبار ۝ وقال فرعون
يهامن ابن لي صرحا لعلي ابلغ الاسباب ۝ اسباب السموت
فاطلع الى اله موسى واني لاظنه كاذبا وكذلك زين لفرعون
سوء عمله وصد عن السبيل وما كيد فرعون الا في تباب ۝
وقال الذي امن يقوم اتبعون اهدكم سبيل الرشاد ۝ يقوم
انما هذه الحيوة الدنيا متاع وان الاخرة هي دار القرار ۝ من
عمل سيئة فلا يجزى الا مثلها ومن عمل صالحا من ذكر او
انثى وهو مؤمن فاولئك يدخلون الجنة يرزقون فيها بغير
حساب ۝ ويقوم ما لي ادعوكم الى النجوة وتدعونني الى النار ۝
تدعونني لاكفر بالله واشرك به ما ليس لي به علم وانا ادعوكم
الى العزيز الغفار ۝ لا جرم انما تدعونني اليه ليس له دعوة في
الدنيا ولا في الاخرة وان مردنا الى الله وان المسرفين هم
اصحب النار ۝ فستذكرون ما اقول لكم وافوض امري الى

★ ४/६ आ १० ● नि. १/२

नही। (३३) और पहले यूसुफ भी तुम्हारे पास निशानिया ले कर आए थे, तो जो वह लाए थे, उस से तुम हमेशा शक ही मे रहे, यहा तक कि जब वह फौत हो गये, तो तुम कहने लगे कि खुदा उसके बाद कभी कोई पैगम्बर नही भेजेगा। इसी तरह खुदा उस शख्स को गुमराह कर देता है, जो हद मे निकल जाने वाला (और) शक करने वाला हो। (३४) जो लोग बगैर इसके कि उन के पास कोई दलील आयी हो, खुदा की आयतो मे झगडते है, खुदा के नज़दीक और मोमिनो के नजदीक झगडा सख्त ना-पसन्द है। इसी तरह खुदा हर घमडी-सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है। (३५) और फिऔंन ने कहा कि हामान मेरे लिए एक महल बनाओ ताकि मैं उस पर चढ कर रास्तो पर पहुच जाऊ। (३६) (यानी) आसमानो के रास्तो पर, फिर मूसा के खुदा को देख लू और मैं तो उसे झूठा समझता हू और इसी तरह फिऔंन को उस के बुरे आमाल अच्छे मालूम होते थे और वह रास्ते से रोक दिया गया था और फिऔंन की तद्बीर तो बेकार थी। (३७)★

और वह शख्स जो मोमिन था, उसने कहा कि भाइयो! मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हे भलाई का रास्ता दिखाऊगा। (३८) भाइयो! यह दुनिया की जिंदगी (कुछ दिन) फायदा उठाने की चीज़ है और जो आखिरत है, वही हमेशा रहने का घर है। (३९) जो बुरे काम करेगा, उसको बदला भी वैसा ही मिलेगा और जो नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत और वह ईमान वाला भी होगा, तो ऐसे लोग बहिश्त मे दाखिल होगे, वहा उनको बे-हिसाब रोजी मिलेगी। (४०) और ऐ कौम! मेरा क्या (हाल) है कि मैं तो तुम को निजात की तरफ बुलाता हू और तुम मुझे (दोज़ख की) आग की तरफ बुलाते हो●(४१) तुम मुझे इस लिए बुलाते हो कि खुदा के साथ कुफ्र करू और उस चीज को उसका शरीक मुकर्रर करू, जिस का मुझे कुछ भी इल्म नही और मैं तुम को (खुदा-ए-) गालिब (और) बख्शने वाले की तरफ बुलाता हू। (४२) सच तो यह है कि जिस चीज की तरफ तुम मुझे बुलाते हो, उसको दुनिया और आखिरत मे बुलाने (यानी दुआ कुबूल करने) की कुदरत नही और हम को खुदा की तरफ लौटना है और हद से निकल जाने वाले दोजखी है। (४३) जो बात मैं तम से कहता हू, तुम उसे (आगे चल कर) याद करोगे और मैं अपना काम खुदा के सुपुर्द करता

★रु ४/६ आ १० ●नि. १/२

फ़-वक़ाहुल्लाहु सय्यिआति मा म-करू व हा-क़ बि आलि फ़िर्औ़-न सूउल्अज़ाब ज (४५) अन्नारु युअ्-र-ज़ू-न अलैहा ग़ुदुव्वंव्-व अ़शिय्यन् व यौ-म तक़ूमुस्साअ़तु वक़्फ़ अद्ख़िलू आ-ल फ़िर्औ़-न अशद-दल्-अज़ाब (४६) व इज़् य-तहाज्जू-न फ़िन्नारि फ़-यक़ूलुज़्-ज़ु-अफ़ाउ लिल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-ब-अ़न् फ़-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अ़न्ना नसीबम्-मिनन्नार (४७) कालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुल्लुन् फ़ीहा इन्-नल्ला-ह क़द् ह़-क-म बैनल्अिबाद (४८) व कालल्लज़ी-न फ़िन्नारि लि-ख़-ज़-नति ज-हन्नमद्अ़ू रब्बकुम् युख़फ़्फ़िफ़् अ़न्ना यौमम्मिनल्-अज़ाब (४९) कालू अ-व लम् तकु तअ्-तीकुम् रुसुलुकुम् बिल्बय्यिनाति ط कालू बला ط कालू फ़द्अ़ू ج व मा दुआ़उल्-काफ़िरी-न इल्ला फी ज़लाल ★ (५०) इन्ना ल - नन्सुरु रुसु-लना वल्लज़ी - न आमनू फ़िल्हयातिद्दुन्या व यौ-म यक़ूमुल्-अश्हाद ۙ (५१) यौ-म ला यन्फ़अुज़्ज़ालिमी-न व मअ्-ज़ि-रतुहुम् व लहुमुल्लअ्-नतु व लहुम् सूउद्दार (५२) व ल-क़द् आतैना मूसल्हुदा व औरस्ना बनी इस्राईलल् - किताब ۙ (५३) हुदंव्-व ज़िक्रा लिउलिल्-अल्बाब (५४) फ़स्बिर् इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुंव्वस्तग़-फ़िर् लिज़म्बि - क व सब्बिह़ बिहम्दि रब्बि-क बिल्अ़शिय्यि वल्इब्कार (५५) इन्नल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम् ۙ इन् फ़ी सुदूरिहिम् इल्ला किब्रुम्-मा हुम् बिबालिग़ीहि ج फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि ط इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-बसीर (५६) ल-ख़ल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि अक्बरु मिन् ख़ल्क़िन्नासि व लाकिन-न अक्सरन्नासि ला यअ़्लमून (५७)

الله ان الله بصير بالعباد ○ فوقه الله سيات ما مكروا و
حاق بال فرعون سوء العذاب ○ النار يعرضون عليها غدوا و
عشيا ويوم تقوم الساعة ادخلوا ال فرعون اشد العذاب ○
واذ يتحاجون في النار فيقول الضعفؤا للذين استكبروا انا كنا
لكم تبعا فهل انتم مغنون عنا نصيبا من النار ○ قال الذين
استكبروا انا كل فيها ان الله قد حكم بين العباد ○ وقال
الذين في النار لخزنة جهنم ادعوا ربكم يخفف عنا يوما من
العذاب ○ قالوا اولم تك تاتيكم رسلكم بالبينت قالوا بلى
قالوا فادعوا وما دعؤا الكفرين الا في ضلل ○ انا لننصر
رسلنا والذين امنوا في الحيوة الدنيا ويوم يقوم الاشهاد ○
يوم لا ينفع الظلمين معذرتهم ولهم اللعنة ولهم سوء الدار ○
ولقد اتينا موسى الهدى واورثنا بني اسراءيل الكتب ○
هدى وذكرى لاولي الالباب ○ فاصبر ان وعد الله حق و
استغفر لذنبك وسبح بحمد ربك بالعشي والابكار ○ ان
الذين يجادلون في ايت الله بغير سلطن اتهم ان في صدورهم
الا كبر ما هم ببالغيه فاستعذ بالله انه هو السميع البصير ○
لخلق السموت والارض اكبر من خلق الناس ولكن اكثر

★रु ५/१०आ १३

हू । बेशक ख़ुदा बन्दो को देखने वाला है। (४४) गरज़ ख़ुदा ने (मूसा को) उन लोगो की तद्बीरो की बुराइयो से बचाए रखा और फ़िऔंन वालों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा, (४५) (यानी जहन्नम की) आग कि सुबह व शाम उसके सामने पेश किए जाते हैं और जिस दिन कियामत बरपा होगी, (हुक्म होगा कि) फ़िऔंन वालों को सख्त अज़ाब मे दाखिल करो।[१] (४६) और जब वे दोज़ख मे झगड़ेंगे, तो छोटे दर्जे के लोग बड़े आदमियो से कहेगे कि हम तो तुम्हारे तावेअ थे, तो क्या तुम दोज़ख़ (के अजाब) का कुछ हिस्सा हम से दूर कर सकते हो ? (४७) बडे आदमी कहेगे कि तुम (भी और) हम (भी) सब दोज़ख मे हैं, ख़ुदा बन्दो में फ़ैसला कर चुका है। (४८) और जो लोग आग में (जल रहे) होगे, वे दोज़ख के दारोगाओ से कहेगे कि अपने परवरदिगार से दुआ करो कि एक दिन तो हम से अज़ाब हल्का कर दे। (४९) वे कहेगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैगम्बर निशानिया लेकर नही आए थे ? वे कहेगे, क्यो नही, तो वे कहेगे कि तुम ही दुआ करो और काफिरो की दुआ (उस दिन) बेकार होगी। (५०)★

हम अपने पैगम्बरो की और जो लोग ईमान लाए हैं उनकी, दुनिया की ज़िंदगी मे भी मदद करते हैं और जिस दिन गवाह खडे होगे, (यानी कियामत को भी,) (५१) जिस दिन ज़ालिमो को उनको माज़रत कुछ फायदा न देगी और उन के लिए लानत और बुरा घर है। (५२) और हमने मूसा को हिदायत (की किताब) दी और बनी इस्राईल को उस किताब का वारिस बनाया। (५३) अक्ल वालो के लिए हिदायत और नसीहत है। (५४) तो सब्र करो, बेशक ख़ुदा का वायदा सच्चा है और अपने गुनाहो की माफी मागो और सुबह व शाम अपने परवरदिगार की तारीफ के साथ तस्बीह करते रहो। (५५) जो लोग बगैर किसी दलील के, जो उनके पास आयी हो, ख़ुदा की आयतो मे झगडते है, उन के दिलो मे और कुछ नही बड़ाई (का इरादा) है और वह उसको पहुचने वाले नही,[२] तो ख़ुदा की पनाह मागो। बेशक वह सुनने वाला (और) देखने वाला है। (५६) आसमानो और जमीन का पैदा करना लोगो के पैदा करने के मुकाबले मे बडा (काम) है, लेकिन

---

१ यह कब्र की दुनिया का हाल है। काफिर को इस का ठिकाना दिखाया जाता है और कियामत को उस मे बैठेगा और मोमिन को बहिश्त।

२ यानी ये कुफ्फार जो अल्लाह तआला की आयतो मे बे-दलील झगडते और उन को झुठलाते हैं, तो उन का मक्सद यह होता है कि पैगम्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर कभी गालिब नही हो सकें।

★रु ५/१० आ १३

व मा यस्तविल्-अअ्-मा वल्बसीरु ۙ वल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व लल्मुसीउ ط कलीलम्-मा त-त-ज़क्करून (५८) इन्नस्सा-अ-त लआति-यतुल्ला रै-ब फ़ीहा व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (५९) व क़ा-ल रब्बुकुमुद्अूनी अस्तजिब् लकुम् ط इन्नल्लज़ी-न यस्तक्बिरू-न अन् अिबादती स-यद्खुलू-न ज-हन्न-म दाख़िरीन ★ (६०) अल्ला-हुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन् ط इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ-लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (६१) ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् ▨ ला इला-ह इल्ला हु-व ۙ फ-अन्ना तुअ्-फकून (६२) कज़ालि-क युअ्फकुल्लज़ी-न कानू बिआयातिल्लाहि यज्हदून (६३) अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्अर-ज़ करा-रव्वस्समा - अ बिनाअव्-व सव्व - रकुम् फ-अह्-स-न सु-व-रकुम् व र-ज़-ककुम् मिनत्तय्यिबाति ط ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ۚ फ-त-बारकल्लाहु रब्बुल् - आलमीन (६४) हुवल्हय्यु ला इला-ह इल्ला हु-व फ़द्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न ط अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् - आलमीन (६५) क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्-बुदल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्-लाहि लम्मा जा-अनियल्-बय्यिनातु मिर्रब्बी ۙ व उमिरतु अन् उस्लि - म लिरब्बिल्-आलमीन (६६) हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फतिन् सुम्-म मिन् अ-ल-कतिन् सुम्-म युख़्रिजुकुम् तिफ् - लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्-दकुम् सुम्-म लितकूनू शुयूख़न् ۚ व मिन्कुम् मंय्यु-त-वफ्फा मिन् क़ब्लु व लितब्लुग़ू अ-ज-लम्-मुसम्मंव्-व ल-अल्लकुम् तअ् - क़िलून (६७)

المؤمن ٤٠ — ٣٧٨ — فمن اظلم ٢٤

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝
اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِىْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِىْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝ اَللّٰهُ
الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ
لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ ذٰلِكُمُ
اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۡ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝
كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِىْ
جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ
صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ښ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ
رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ هُوَ الْحَىُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّىْ نُهِيْتُ اَنْ
اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِىَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ
رَّبِّىْ ۡ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ
مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا
ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ

★रु ६/११ आ १० ▨ व लाज़िम

अक्सर लोग नही जानते। (५७) और अंधा और आंख वाला बराबर नही और न ईमान वाले नेक और बद-कार बराबर है। (सच तो यह है कि) तुम बहुत कम गौर करते हो। (५८) कियामत तो आने वाली है, इसमे कुछ शक नही, लेकिन अक्सर लोग ईमान नही रखते। (५९) और तुम्हारे परवरदिगार ने कहा है कि तुम मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी (दुआ) कुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से घमंड के तौर पर कतराते है, बहुत जल्द जहन्नम मे जलील हो कर दाखिल होंगे★(६०)

खुदा ही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए रात बनायी कि इस मे आराम करो और दिन को रोशन बनाया (कि इस मे काम करो।) बेशक खुदा लोगो पर फज्ल करने वाला है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नही करते। (६१) यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है, जो हर चीज का पैदा करने वाला है,▨ उस के सिवा कोई माबूद नही, फिर तुम कहा भटक रहे हो ? (६२) इसी तरह वे लोग भटक रहे थे, जो खुदा की आयतो से इकार करते थे। (६३) खुदा ही तो है, जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया और तुम्हारी शक्ले बनायी और शक्ले भी अच्छी बनायी और तुम्हे पाकीज़ा चीजे खाने को दी। यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है। पस अल्लाह रब्बुल आलमीन बहुत ही बरकत वाला है। (६४) वह ज़िंदा है, (जिसे मौत नही,) उस के सिवा कोई इबादत के लायक नही, तो उस की इबादत को खालिस कर-कर उसी को पुकारो। हर तरह की तारीफ खुदा ही के लिए है जो तमाम जहान का परवरदिगार है। (६५) (ऐ मुहम्मद !) इनसे कह दो कि मुझे इस बात से मना किया गया है कि जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, उन की इबादत करू (और मैं उन की कैसे इबादत करू,) जबकि मेरे पास मेरे परवरदिगार (की तरफ) से खुली दलीले आ चुकी है और मुझ को यह हुक्म हुआ है कि सारे जहान के परवरदिगार ही के फरमान के ताबेअ हू। (६६) वही तो है, जिस ने तुम को (पहले) मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फा बना कर, फिर लोथडा बना कर, फिर तुम को निकालता है (कि तुम) बच्चे (होते हो,) फिर तुम अपनी जवानी को पहुचते हो, फिर बूढे हो जाते हो और कोई तुम मे से पहले ही मर जाता है और तुम (मौत के) मुकर्रर वक्त तक पहुच जाते हो, और ताकि तुम समझो।[1] (६७) वही तो है,

---

१ यानी इस बात को सोचो कि जिस खुदा ने तुम को पहली बार पैदा किया और तुम पर बचपन और जवानी और बुढापे की हालते पैदा कर के फिर तुम को मौत दी, वह इस बात पर भी कुदरत रखता है कि तुम को कियामत के दिन फिर ज़िंदा करे और जो लोग इन बातो पर गौर करते है, उन को इस बात के मानने मे झिझक नही हो सकती कि उसी तरह कियामत को ज़िंदा किए जाएगे।

★रु ६/११ आ १०　▨व लाज़िम

हुवल्लज़ी युह़्यी व युमीतु ۚ फ़-इज़ा क़ज़ा अम्-रन् फ-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फयकून ★(६८) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि ۭ अन्ना युस्-रफून ۚ(६९) अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिल्किताबि व बिमा अर्सल्ना बिही रुसुलना ۛ फ़-सौ-फ यअ्-लमून ۙ(७०) इज़िल्-अग्-लालु फ़ी अअ्-नाक़िहिम् वस्सलासिलु ۭ युस्-ह़बू-न ۙ(७१) फ़िल्ह़मीमि ۙ सुम्-म फ़िन्नारि युस्जरून ۚ(७२) सुम्-म क़ी-ल लहुम् ऐनमा कुन्तुम् तुश्रिकू-न ۙ(७३) मिन् दूनिल्लाहि ۭ क़ालू ज़ल्लू अन्ना बल् लम् नकुन् नद्अू मिन् क़ब्लु शैअन् ۭ कज़ालि-क युज़िल्-लुल्लाहुल्-काफ़िरीन (७४) ज़ालिकुम् बिमा कुन्तुम् तफ़्रहू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-ह़क़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तम्-रहून ۚ(७५) उद्ख़ुलू अब्-वा-ब ज-हन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा ۚ फ़बिअ्-स मस्-वल्-मु-त-कब्बिरीन (७६) फ़स्-बिर् इन्-न वअ्-दल्लाहि ह़क़्क़ुन् ۚ फ-इम्मा नुरि-यन्न-क बअ्-ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-त-वफ़्फ़यन्न-क फ-इलैना युर्जअून (७७) व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम्-मिन् क़ब्लि-क मिन्हुम् मन् क़-सस्ना अलै-क व मिन्हुम् मल्लम् नक़्सुस् अलै-क ۭ व मा का-न लिरसूलिन् अय्यअ्ति-य बिआयतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ۚ फ़इज़ा जा-अ अम्रुल्लाहि क़ुज़ि-य बिल्ह़क़्क़ि व ख़सि-र हुनालिकल्-मुब्तिलून ★(७८) अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्-अन्आ-म लितर्कबू मिन्हा व मिन्हा तअ्-कुलून ۡ(७९) व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व लितब्-लुग़ू अलैहा ह़ा-ज-तन् फ़ी सुदूरिकुम् व अलैहा व अलल्फ़ुल्कि तुह्-मलून ۭ(८०)

يُتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ هُوَ
الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝
اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ۝ فِي الْحَمِيْمِ ۙ
ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ۝ ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ۭ
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ۝ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ۝ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ
فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ
قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۭ وَمَا كَانَ
لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَمْرُ اللّٰهِ
قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ
لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا
مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى

जो जिलाता और मारता है, फिर जब वह कोई काम करना (और किसी को पैदा करना) चाहता है, तो उस से कह देता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (६८)★

क्या तुमने उन लोगो को नही देखा, जो खुदा की आयतो में झगडते है। ये कहा भटक रहे है? (६९) जिन लोगो ने (खुदा की) किताब को और जो कुछ हमने अपने पैगम्बरो को दे कर भेजा, उस को झुठलाया, वे बहुत जल्द मालूम कर लेगे, (७०) जबकि उन की गरदनो मे तौक और जजीरे होगी (और) घसीटे जाएगे। (७१) (यानी) खौलते हुए पानी मे, फिर आग मे झोक दिए जाएगे। (७२) फिर उन से कहा जाएगा कि वे कहा है, जिन को तुम (खुदा के) शरीक बनाते थे, (७३) (यानी) गैरेखुदा कहेगे, वे तो हम से जाते रहे, बल्कि हम तो पहले किसी चीज को पुकारते ही नही थे, इसी तरह खुदा काफिरो को गुमराह करता है। (७४) यह इस का बदला है कि तुम जमीन मे हक के बगैर (यानी इस के खिलाफ) खुश हुआ करते थे और उस की (सजा है) कि इतराया करते थे। (७५) (अब) जहन्नम के दरवाज़ो मे दाखिल हो जाओ, हमेशा उसी मे रहोगे। घमड करने वालो का क्या बुरा ठिकाना है। (७६) तो (ऐ पैगम्बर!) सब्र करो, खुदा का वायदा सच्चा है। अगर हम तुम को कुछ उस मे से दिखा दे, जिस का हम तुम से वायदा करते है (यानी काफिरो पर अजाब नाज़िल करें) या तुम्हारी ज़िदगी की मुद्दत पूरी कर दें, तो उन को हमारी ही तरफ लौट कर आना है।[1] (७७) और हमने तुम से पहले (बहुत से) पैगम्बर भेजे, उन मे कुछ तो ऐसे है, जिन के हालात तुम से बयान कर दिए है और कुछ ऐसे है, जिन के हालात बयान नही किए और किसी पैगम्बर की ताकत न थी कि खुदा के हुक्म के बगैर कोई निशानी लाए, फिर जब खुदा का हुक्म आ पहुचा, तो इसाफ के साथ फैसला कर दिया गया और बातिल वाले नुक्सान मे पड़ गये। (७८) ★

खुदा ही तो है, जिसने तुम्हारे लिए चारपाए बनाए, ताकि उनमे से कुछ पर सवार हो और कुछ को तुम खाते हो। (७९) और तुम्हारे लिए उन मे (और भी) फायदे हैं और इसलिए भी कि (कही जाने की) तुम्हारे दिलो मे जो जरूरत हो, उन पर (चढ कर वहा) पहुच जाओ और उन

---

१ यानी अगर तुम्हारी ज़िदगी मे उन पर अजाब नाज़िल न किया जाए, तो तुम्हारी वफात के बाद उन को हमारे ही पास लौट कर आना है, उस वक्त खुदा का वायदा पूरा हो जाएगा और ये दर्दनाक अजाब मे पड़े होंगे।

★रु ७/१२ आ ८:मु ज़ि मु त क. १३ ★रु. ८/१३ आ १०

व युरीकुम् आयातिही फ - अय्-य आयातिल्लाहि तुन्किरून (८१) अ-फ़-लम् यसीरू फिल्अर्जि फ-यन्जुरू कै-फ का-न आक़िबतुल्लजी-न मिन् क़ब्लिहिम् ط कानू अक्स-र मिन्हुम् व अशद्-द कुव्वतंव्-व आसारन् फिल्अर्जि फमा अग़्ना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून (८२) फ़-लम्मा जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फरिहू बिमा अिन्दहुम् मिनल्अिल्मि व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्जिऊन (८३) फ-लम्मा रऔ बअ्-सना कालू आमन्ना बिल्लाहि वह्-दहू व क-फ़र्ना बिमा कुन्ना बिही मुश्रिकीन (८४) फ-लम् यकु यन्फ़अुहुम् ईमानुहुम् लम्मा रऔ बअ्-सना ط सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख-लत् फ़ी अिबादिही व ख़सि-र हुनालिकल्-काफिरून ★ (८५)

الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنكِرُونَ ۝
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي
الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَلَمَّا
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِندَهُم مِّنَ الْعِلْمِ
وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا
قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ۝
فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي
قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ ۝

سُورَةُ حم السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حم ۝ تَنزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝ كِتَابٌ فُصِّلَتْ آيَاتُهُ
قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِي أَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ
وَفِي آذَانِنَا وَقْرٌ وَمِن بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ إِنَّنَا عَامِلُونَ ۝
قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ
فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوهُ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ۝ الَّذِينَ لَا

४१ सूरतु हामीम्-अस्सज्दति ६१

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३४०६ अक्षर, ८०६ शब्द, ५४ आयते और ६ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

हामीम् (१) तन्जीलुम्-मिनर्रह्मानिर्रहीम (२) किताबुन् फुस्सिलत् आयातुहू कुर्आनन् अ-रबिय्यल्-लिक़ौमिय्यअ्-लमून (३) बशी-रंव्-व नज़ीरन् फ़-अअ्-र-ज अक्सरुहुम् फहुम् ला यस्-मअून (४) व कालू कुलूबुना फी अकिन्नतिम्-मिम्मा तद्अूना इलैहि व फी आज़ानिना वक्रुंव्-व मिम्बैनिना व बैनि-क हिजाबुन् फअ्-मल् इन्नना आमिलून ● (५) कुल् इन्नमा अ-न ब-श-रुम्-मिस्लुकुम् यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फस्तक़ीमू इलैहि वस्तग़्फिरूहु ط व वैलुल्-लिल्-मुश्रिकीन (६)

★रु ६/१४ आ ७ ●सु ३/४
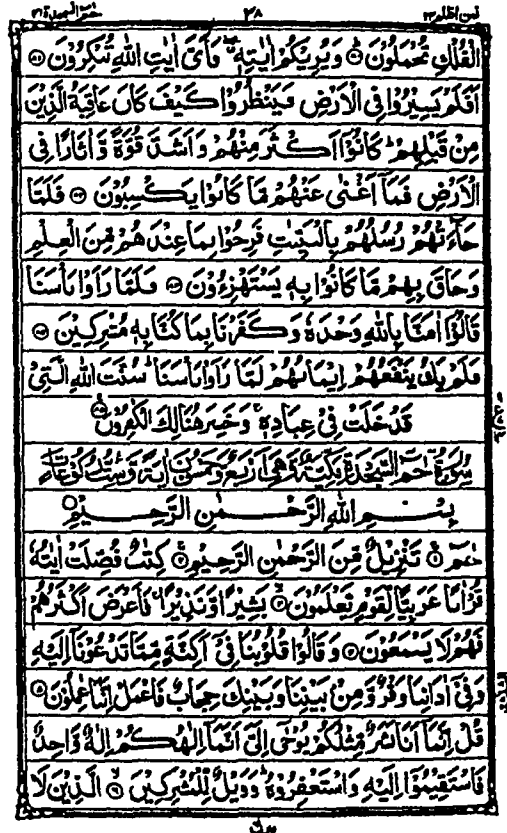
पर और कश्तियो पर सवार होते हो। (८०) और वह तुम्हे अपनी निशानिया दिखाता है तो तुम खुदा की किन-किन निशानियो को न मानोगे ? (८१) क्या इन लोगो ने जमीन मे सैर नही की, ताकि देखते कि जो लोग इन से पहले थे, उन का अजाम कैसा हुआ, (हालाकि) वह उनमे कही ज़्यादा और ताकतवर और ज़मीन मे निशान (बनाने) के एतबार से बहुत बढकर थे, तो जो कुछवे करते थे वह उनके कुछ काम न आया। (८२) और जब उनके पैगम्बर उनके पास खुली निशानिया लेकर आए तो जो इल्म (अपने ख़्याल मे) उनके पास था, उस पर इतराने लगे और जिस चीज का मज़ाक उड़ाया करते थे, उस ने उन को आ घेरा। (८३) फिर जब उन्हो ने हमारा अजाब देख लिया, तो कहने लगे कि हम खुदा-ए-वाहिद पर ईमान लाए और जिस चीज को उस के साथ शरीक बनाते थे, उस मे इकारी हुए। (८४) लेकिन जब वह हमारा अजाब देख चुके (उस वक्त) उन के ईमान ने उन को कुछ भी फायदा न दिया। (यह) खुदा की आदत (है) जो उस के बन्दो (के बारे मे) चली जाती है और वहां काफिर घाटे मे पड कर रह गये। (८५)★

४१ सूरः हामीम अस्-सज्दा ६१

सूर हामीम अस-सज्दा मक्की है, इस मे चौवन आयते और छे रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१) यह किताब (खुदा-ए-) रहमान व रहीम (की तरफ) से उतरी है। (२) (ऐसी) किताब जिस की आयते खुले (मतलब वाली) है, (यानी) कुरआने अरबी उन लोगो के लिए है, जो समझ रखते है। (३) जो खुशखबरी भी सुनाता है और खौफ भी दिलाता है लेकिन उन मे से अक्सरो ने मुह फेरे और वे सुनते ही नही। (४) और कहने लगे कि जिस चीज़ की तरफ तुम हमे बुलाते हो, उस से हमारे दिल पर्दो मे है और हमारे कानो मे बोझ (यानी बहरापन) है और हमारे और तुम्हारे दर्मियान पर्दा है, तो तुम (अपना) काम करो, हम (अपना) काम करते है● (५) कह दो कि मैं भी आदमी हू, जैसे तुम, (हा,) मुझ पर यह वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद एक खुदा है, तो सीधे उसी की तरफ मुतवज्जह रहो और उसी से मग्फिरत मागो और

★रु ६/१४ आ ७ ●सु ३/४

अल्लज़ी-न ला युअ्तूनज्ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् काफ़िरून★ (७) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (८) क़ुल् अ-इन्नकुम् ल-तक्फ़ुरू-न बिल्लज़ी ख़-ल-क़ल्-अर्-ज़ फ़ी यौमैनि व तज्-अलू-न लहू अन्दादन्ط ज़ालि-क रब्बुल्-आलमीन (९) व ज-अ-ल फ़ीहा रवासि-य मिन फ़ौक़िहा व बार-क फ़ीहा व क़द्-द-र फ़ीहा अक़्वा-तहा फ़ी अर्ब-अति अय्यामिन्ط सवा-अल् लिस्साइलीन (१०) सुम्मस्तवा इलस्समा-इ व हि-य दुख़ानुन् फ़क़ा-ल लहा व लिल्-अर्ज़िअ्तिया तौअन् औ कर्हन्ط क़ालता अतैना ताइ-ईन (११) फ-क़ज़ाहुन्-न सब्-अ समावातिन् फ़ी यौमैनि व औहा फ़ी कुल्लि समा-इन् अम्-रहाط व ज़य्यन्नस्समाअद्दुन्या बिमसाबी-ह व हिफ़्ज़न्ط ज़ालि-क तक़्दीरुल्-अज़ीज़िल्-अलीम (१२) फ-इन् अअ्-रज़ू फ़क़ुल् अन्ज़र्तुकुम् साअि-क-तम्-मिस्-ल साअि-क़ति आदिंव-व समूदط (१३) इज़् जा-अत्हुमुर्रुसुलु मिम्-बैनि ऐदीहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला तअ्-बुदू इल्लल्ला-हط क़ालू लौशा-अ रब्बुना ल-अन्ज-ल मलाइक-तन् फ-इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (१४) फ़-अम्मा आदुन् फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व क़ालू मन् अशद्दु मिन्ना कुव्वतन्ط अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-ल-क़हुम् हु-व अशद्दु मिन्हुम् कुव्वतन्ط व कानू बिआयातिना यज्-हदून (१५) फ-अर्सल्ना अलैहिम् रीहन् सर्-स-रन् फ़ी अय्यामिन् नहिसातिल्-लिनुज़ीक़हुम् अज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्-हयातिद्-दुन्याط व ल-अज़ाबुल्-आख़िरति अख़्ज़ा व हुम् ला युन्सरून (१६)

يُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝ قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ
الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا
فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَ
هِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا قَالَتَآ اَتَيْنَا
طَآئِعِيْنَ ۝ فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ
سَمَآءٍ اَمْرَهَا وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَحِفْظًا ذٰلِكَ
تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً
مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ۝ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ
اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا
لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا
فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ
اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ
عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَ
هُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى

★रु १/१५ आ ८

मुश्‍रिको पर अफसोस है, (६) जो जकात नही देते और आखिरत के भी कायल नही। (७) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए (ऐसा) सवाब है, जो खत्म ही न हो★(८) कह दो, क्या तुम उस से इंकार करते हो, जिस ने जमीन को दो दिन मे पैदा किया और (बुतो को) उस के मुकाबले का ठहराते हो ? वही तो सारे जहान का मालिक है। (९) और उसी ने जमीन में उस के ऊपर पहाड़ बनाए और जमीन मे बरकत रखी और उस मे रोज़ी का सामान मुकर्रर किया, (सब) चार दिन मे (और तमाम) तलब रखने वालो के लिए बराबर। (१०) फिर आसमान की तरफ मुतवज्जह हुआ और वह धुवा था तो उसने उससे और जमीन से फरमाया कि दोनो आओ (चाहे) खुशी से चाहे ना-खुशी से, उन्होने कहा कि हम खुशी से आते है। (११) फिर दो दिन मे सात आसमान बनाये और हर आसमान मे उस (के काम) का हुक्म भेजा और हमने दुनिया के आसमान को चिरागो (यानी सितारो) से सजा दिया और (शैतानो से) बचाए रखा। ये जबरदस्त (और खबरदार के (मुकर्रर किए हुए) अदाजे है। (१२) फिर अगर ये मुह फेर ले, तो कह दो कि मै तुम को (ऐसी) चिंघाड (के अजाब) से डराता हू, जैसे आद और समूद पर चिंघाड (का अजाब आया था)। (१३) जब उन के पास पैगम्बर उन के आगे और पीछे से आए कि खुदा के सिवा (किसी की) इबादत न करो, कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार चाहता तो फरिश्ते उतार देता, सो जो तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस को नही मानते। (१४) जो आद थे, वे ना-हक मुल्क मे घमड करने लगे कि हम से बढ कर ताकत मे कौन है ? क्या उन्हो ने नही देखा कि खुदा जिसने उन को पैदा किया, वह उन से ताकत मे बहुत बढ कर है और वे हमारी आयतो से इंकार करते रहे। (१५) तो हमने उन पर नहूसत के दिनो मे जोर की हवा चलायी ताकि उन को दुनिया की जिंदगी मे जिल्लत के अजाब का मजा चखा दे और आखिरत का अजाब तो बहुत जलील करने वाला है और (उस दिन) उन को मदद भी न मिलेगी। (१६) और समूद थे, उन को हमने सीधा

★रु १ /१५ आ ८

व अम्मा समूदु फ-हदैनाहुम् फ़स्त-हब्बुल्-अ़मा अ़लल्-हुदा फ-अ-ख़-जत्हुम् साअि़-कतुल्-अ़ज़ाबिल्-हूनि बिमा कानू यक्सिबून (१७) व नज्जैनल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तकून ★ (१८) व यौ-म युह्शरु अअ्-दाउल्लाहि इलन्नारि फहुम् यूज़अून (१९) हत्ता इज़ा मा जा-ऊहा शहि-द अ़लैहिम् सम्अुहुम् व अब्सारुहुम् व जुलूदुहुम् बिमा कानू यअ्-मलून (२०) व क़ालू लिजुलूदिहिम् लि-म शहित्तुम् अ़लैना क़ालू अन्-त़-क-नल्-लाहुल्लज़ी अन्-त-क कुल्-ल शैइंव्-व हु-व ख़-ल-क़कुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व इलैहि तुर्-जअून (२१) व माकुन्तुम् तस्ततिरू-न अंय्यश्-ह-द अ़लैकुम् सम्-अुकुम् व ला अब्सारुकुम् व ला जुलूदुकुम् व लाकिन् ज़-नन्तुम् अन्नल्ला-ह ला यअ्-लमु कसीरम्-मिम्मा तअ्-मलून (२२) व ज़ालिकुम् ज़न्नुकुमुल्लज़ी ज़-नन्तुम् बिरब्बिकुम् अर्दाकुम् फ़-अस्बह्तुम् मिनल्ख़ासिरीन (२३) फ़इंय्यस्बिरू

الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ وَيَوْمَ يُحْشَرُ
اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ
عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ
اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ
وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَ
لَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ
كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ
بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ
مَثْوًى لَّهُمْ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ وَ
قَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ
الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ
فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ
اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ

फन्नारु मस्-वल्-लहुम् व इंय्यस्तअ्-तिबू फ़मा हुम् मिनल्-मुअ्-तबीन (२४) व क़य्यज़्ना लहुम् क़ु-र-ना-अ फ़-ज़य्यनू लहुम् मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व हक़्-क़ अ़लैहिमुल्-क़ौलु फी उ-ममिन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्जिन्नि वल्-इन्सि इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन ★ (२५) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू ला तस्-मअू लिहाज़ल्क़ुर्आनि वल्ग़ौ फ़ीहि ल-अ़ल्लकुम् तग़्लि-बून (२६) फ़-लनुज़ीक़न्नल्लज़ी-न क-फ़रू अ़ज़ाबन् शदीदंव्-व ल-नज्ज़ियन्नहुम् अस्-व-अल्लज़ी कानू यअ्-मलून (२७)

रास्ता दिखा दिया था, मगर उन्हो ने हिदायत के मुक़ाबले मे अधा रहना पसन्द किया, तो उन के आमाल की सजा मे कडक ने उन को आ पकडा और वह ज़िल्लत का अजाब था। (१७) और जो ईमान लाए और परहेजगारी करते रहे, उन को हमने बचा लिया। (१८)★

और जिस दिन ख़ुदा के दुश्मन दोजख की तरफ चलाए जाएगे, तो तर्तीबवार कर लिए जाएगे, (१९) यहा तक कि जब उम के पास पहुच जाएगे, तो उन के कान और आखे और चमडे (यानी दूसरे अंग,) उन के खिलाफ उन के आमाल की गवाही देगे। (२०) और वे अपने चमडो (यानी अग) से कहेगे कि तुमने हमारे खिलाफ क्यो गवाही दी ? वे कहेगे कि जिस खुदा ने सब चीजो को जुबान दी, उसी ने हम को भी बोलने की ताकत दी और उसी ने तुम को पहली बार पैदा किया था और उसी की तरफ तुम को लौट कर जाना है। (२१) और तुम इस (बात के डर) मे तो पर्दा नही करते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आखे और चमडे तुम्हारे खिलाफ गवाही देगे, बल्कि तुम यह ख्याल करते थे कि खुदा को तुम्हारे बहुत से अमलो की खबर ही नही। (२२) और इसी ख्याल ने, जो तुम अपने परवरदिगार के बारे मे रखते थे, तुम को हलाक कर दिया और तुम घाटा पाने वालो मे हो गये। (२३) अब अगर ये सब्र करेंगे, तो उन का ठिकाना दोजख ही है और अगर तौबा करेंगे, तो उन की तौबा कुबूल नही की जाएगी। (२४) और हमने (शैतानो को) उन का हमनशीन मुकर्रर कर दिया था, तो उन्हो ने उन के अगले और पिछले आमाल उन को उम्दा कर दिखाए थे और इसानो की जमाअते जो उन से पहले गुजर चुकी, उन पर भी खुदा (के अज़ाब) का वायदा पूरा हो गया। बेशक ये नुक्सान उठाने वाले है। (२५)★ और काफिर कहने लगे कि इस कुरआन को सुना ही न करो और (जब पढने लगें तो) शोर मचा दिया करो, ताकि गालिब रहो। (२६) सो हम भी काफिरो को सख्त अज़ाब के मज़े चखाएगे और बुरे अमल की जो

★रु २/१६ आ १० ★रु ३/१७ आ ७

जालि - क जज़ा - उ अअ् - दा - इल्लाहिन्नारु ج लहुम् फ़ीहा दारुल्खुल्दि ط जज़ा - अम् - बिमा कानू बिआयातिना यज् - हदून (२८) व कालल्लज़ी - न क-फ़रू रब्बना अरिनल्लज़ैनि अ - ज़ल्लाना मिनल्जिन्नि वल्इन्सि नज्-अल्हुमा तह्-त अक्दामिना लि-यकूना मिनल्-अस्फ़लीन (२९)

इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्-तक़ामू त-त-नज़्ज़लु अलैहिमुल् - मला-इकतु अल्ला तख़ाफ़ू व ला तह्ज़नू व अब्शिरू बिल्-जन्नतिल्लती कुन्तुम् तूअदून (३०) नह्नु औलियाउकुम् फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्आख़िरति ج व लकुम् फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम् व लकुम् फ़ीहा मा तद्-दअून ط (३१) नुज़ुलम्-मिन् ग़फ़ूरिर्रहीम ★(३२) व मन् अह्सनु कौलम् - मिम्मन् दआ इलल्लाहि व अ़मि-ल सालिहव्-व का-ल इन्ननी मिनल्मुस्लिमीन (३३) व ला तस्तविल्-ह-स-नतु व लस्सय्यिअतु ط इद्फ़अ्-बिल्लती हि - य अह्सनु फ - इज़ल्लज़ी बै-न - क व बैनहू अदावतुन् क - अन्नहू वलिय्युन् हमीम (३४) व मा युलक़्क़ाहा इल्लल्लज़ी-न स - बरू ج व मा युलक़्क़ाहा इल्ला ज़ू हज़्ज़िन् अज़ीम (३५) व इम्मा यन्-ज-गन्न-क मिनश्शैतानि नज़्गुन् फ़स्तअिज़् बिल्लाहि ط इन्नहू हुवस्समीअुल् - अलीम (३६) व मिन् आयातिहिल्लैलु वन्नहारु वश्-शम्सु वल्क - मरु ط ला तस्जुदू लिश्शम्सि व ला लिल्क़-मरि वस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-कहुन्-न इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ् - बुदून (३७)

النَّارُ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَآءً بِمَا كَانُوا بِاٰيٰتِنَا
يَجْحَدُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَآ أَرِنَا الَّذَيْنِ
أَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا
مِنَ الْأَسْفَلِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا
تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا
بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝ نَحْنُ أَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِيٓ أَنْفُسُكُمْ
وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ۝ وَ
مَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ إِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ
إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ
اِدْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ
كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ۝ وَمَا يُلَقّٰىهَآ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَ
مَا يُلَقّٰىهَآ إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۝ وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ
الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝
وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا
لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلّٰهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِنْ
كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ

★रु ४/१८ आ ७

वे करते थे, सजा देंगे (२७) यह खुदा के दुश्मनो का बदला है (यानी) दोजख। उन के लिए इसी मे हमेशा का घर है। यह इस की सज़ा है कि हमारी आयतो से इकार करते थे। (२८) और काफिर कहेगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! जिन्नो और इसानो मे से जिन लोगो ने हम को गुमराह किया था, उन को हमे दिखा कि हम उन को अपने पावो के तले (रौद) डाले, ताकि वे निहायत जलील हो। (२९) जिन लोगो ने कहा कि हमारा परवरदिगार खुदा है, फिर वे (उस पर) कायम रहे, उन पर फरिश्ते उतरेंगे (और कहेगे) कि खौफ करो और न गमनाक हो और बहिश्त की, जिस का तुम से वायदा किया जाता है, खुशी मनाओ। (३०) हम दुनिया की ज़िंदगी मे भी तुम्हारे दोस्त थे और आख़िरत मे भी (तुम्हारे साथी है) और वहा जिस (नेमत) को तुम्हारा जी चाहेगा, तुम को मिलेगी और जो चीज तलब करोगे, तुम्हारे लिए मौजूद होगी। (३१) (यह) बख्शने वाले मेहरबान की तरफ से मेहमानी है। (३२)★

और उस शख्स से बात का अच्छा कौन हो सकता है, जो खुदा की तरफ बुलाए और नेक अमल करे और कहे कि मैं मुसलमान हूं। (३३) और भलाई और बुराई बराबर नही हो सकती, तो (सख्त बातो का) ऐसे तरीके से जवाब दो, जो बहुत अच्छा हो, (ऐसा करने से तुम देखोगे) कि जिस मे और तुम मे दुश्मनी थी, वह तुम्हारा गर्म-जोश दोस्त है। (३४) और यह बात उन ही लोगो को हासिल होती है, जो बर्दाश्त करने वाले है और उन ही को नसीब होती है, जो बड़ी किस्मत वाले है। (३५) और अगर तुम्हे शैतान की तरफ से कोई वस्वसा पैदा हो, तो खुदा की पनाह माग लिया करो। बेशक वह सुनता जानता है। (३६) और रात और दिन, सूरज और चाद उस की निशानियो मे से है। तुम लोग न तो सूरज को सज्दा करो और न चांद को, बल्कि खुदा ही को सज्दा करो, जिस ने इन चीज़ो को पैदा किया है, अगर तुम को उस की इबादत मंजूर है। (३७)

★रु ४/१८ आ ७

फइनिस्तक्बरू फल्लजी-न अिन्-द रब्बि-क युसब्बिहू-न लहू बिल्लैलि वन्नहारि व हुम् ला यस्-अमून □ (३८) व मिन् आयातिही अन्न-क त-रल्अर-ज ख़ाशि-अ-तन् फ-इज़ा अन्ज़ल्ना अलैहल्-मा-अह्तज्जत् व र-बत् ط इन्नल्लज़ी अह्-याहा लमुह्यिल्मौता ط इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (३९) इन्नल्लज़ी-न युल्हिदू-न फ़ी आयातिना ला यख़्फ़ौ-न अ़लैना ط अ-फ-मंय्युल्क़ा फ़िन्नारि ख़ैरुन् अम्मय्यअ्ती आमिनय्यौमल् - क़ियामति ط इअ्‌ - मलू मा शिअ्तुम् इन्नहू बिमा तअ्-मलू-न बसीर (४०) इन्नल्लज़ी - न क - फ़रू बिज़्ज़िक्रि लम्मा जा - अहुम् व इन्नहू लकिताबुन् अ़ज़ीज़ुल्- (४१) ला यअ्तीहिल्-बातिलु मिम्बैनि यदैहि व ला मिन् ख़ल्फ़िही ط तन्ज़ीलुम्-मिन् हकीमिन् हमीद (४२) मा युक़ालु ल-क इल्ला मा क़द् क़ी-ल लिर्रुसुलि मिन् क़ब्लि-क ط इन्-न रब्ब-क लज़ू मग्फ़ि-रतिव्-व ज़ू अ़िक़ाबिन् अलीम (४३) व लौ ज-अ़ल्नाहु कुर्आनन् अअ्-जमिय्यल्लक़ालू लौला फ़ुस्सिलत् आयातुहू ط अ-अअ्-जमिय्युव् - व अ़रबिय्युन् ط क़ुल् हु-व लिल्लज़ी - न आमनू हुदंव - व शिफ़ा-उन् ط वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न फ़ी आज़ानिहिम् वक़-रुव्-व हु-व अ़लैहिम् अ़-मन् ط उलाइ-क युनादौ-न मिम् - मकानिम् - बअ़ीद ★ (४४) व ल - क़द् आतैना मूसल्किता - ब फ़ख़्तुलि-फ फ़ीहि ط व लौला कलि - मतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् ط व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु मुरीब (४५) मन् अ़मि - ल सालिहन् फ़लि-नफ़्सिही व मन् असा - अ फ़-अ़लैहा ط व मा रब्बु - क बिज़ल्लामिल् - लिल्अ़बीद (४६)

٣٨٤

ربك يسبحون له باليل والنهار وهم لا يسئمون ۩ و
من ايته انك ترى الارض خاشعة فاذا انزلنا عليها
الماء اهتزت وربت ان الذي احياها لمحي الموتى انه
على كل شيء قدير ۝ ان الذين يلحدون في ايتنا لا
يخفون علينا افمن يلقى في النار خير ام من ياتي امنا
يوم القيمة اعملوا ما شئتم انه بما تعملون بصير ۝
ان الذين كفروا بالذكر لما جاءهم وانه لكتب عزيز ۝
لا ياتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه تنزيل
من حكيم حميد ۝ ما يقال لك الا ما قد قيل للرسل
من قبلك ان ربك لذو مغفرة وذو عقاب اليم ۝ و
لو جعلنه قرانا اعجميا لقالوا لولا فصلت ايته ءاعجمي
وعربي قل هو للذين امنوا هدى وشفاء والذين
لا يؤمنون في اذانهم وقر وهو عليهم عمى اولئك
ينادون من مكان بعيد ۝ ولقد اتينا موسى الكتب
فاختلف فيه ولولا كلمة سبقت من ربك لقضي
بينهم وانهم لفي شك منه مريب ۝ من عمل صالحا
فلنفسه ومن اساء فعليها وما ربك بظلام للعبيد ۝

□ सज्द. ११ ★ रु ५/१९ आ १२

अगर ये लोग सर-कशी करें, तो (खुदा को भी इन की परवाह नही) जो (फरिश्ते) तुम्हारे परवरदिगार के पास है, वे रात दिन उस की तस्बीह करते रहते है और (कभी) थकते ही नही □(३८) और (ऐ बन्दे ! ये) उसी (की कुदरत) के नमूने है कि जमीन को दबी हुई (यानी सूखी) देखता है। जब हम उस पर पानी बरसा देते है, तो हरी-भरी हो जाती और फूलने लगती है, तो जिस ने जमीन को जिदा किया, वही मुर्दो को जिंदा करने वाला है। बेशक वह हर चीज पर कुदरत रखता है। (३९) जो लोग हमारी आयतो मे कजराही करते है,[1] वे हम से छिपे नही है। भला जो शख्स दोजख में डाला जाए, वह बेहतर है या वह जो कियामत के दिन अम्न व अमान मे आए ? (तो खैर) जो चाहो सो कर लो। जो कुछ तुम करते हो, वह उस को देख रहा है। (४०) जिन लोगो ने नसीहत को न माना, जब वह उन के पास आयी और यह तो एक बुलद मर्तबा किताब है। (४१) उस पर झूठ का दख्ल न आगे से हो सकता है, न पीछे से (और) दाना (और) खूबियो वाले (खुदा) की उतारी हुई है। (४२) तुम से वही बाते कही जाती है, जो तुम मे पहले और पैगम्बरो से कही गयी थी। बेशक तुम्हारा परवरदिगार बख्श देने वाला भी है और दर्दनाक अज़ाब देने वाला भी है। (४३) और अगर हम इस कुरआन को गैर जुबाने अरब मे (नाजिल) करते, तो ये लोग कहते कि इस की आयते (हमारी जुबान मे) क्यो खोल कर बयान नही की गयी? क्या (खूब, कि कुरआन तो) गैर-अरबी और (मुखातब) अरबी। कह दो कि जो ईमान लाते है, उन के लिए (यह) हिदायत और शिफा है और जो ईमान नही लाते, उन को कानो मे बोझ (यानी बहरापन) है और यह उन के हक मे अधेपन (की वजह) है। बोझ की वजह से उन को (गोया) दूर जगह से आवाज दी जाती है। (४४) ★

और हमने मूसा को किताब दी, तो इस मे इख्तिलाफ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक बात पहले ठहर चुकी होती, तो उन मे फैसला कर दिया जाता और ये इस (कुरआन) से शक मे उलझ रहे है। (४५) जो नेक काम करेगा तो अपने लिए और जो बुरे करेगा, तो उन का नुक्सान उसी को होगा और तुम्हारा परवरदिगार बन्दों पर जुल्म करने वाला

---

१ कजराही करने का मतलब यह है कि आयतो का मतलब बदल देते है। साफ और सही और खुला मतलब है, उस को छोड कर और मतलब निकालते है। यह बहुत गदी हरकत है और इस पर जहन्नम की धमकी है। खुदा इस से पनाह मे रखे।

□ सज्द. ११ ★ रु ५/१९ आ १२

पच्चीसवां पारः इलैहि युरद्दु

सूरतु हामीम-अस्सज्दति आयात ४७ से ५४

इलैहि युरद्दु अिल्मुस्साअति व मा तख़्रुजु मिन् स-मरातिम्-मिन् अक्मामिहा व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व ला त-जअु इल्ला बिअिल्मिही व यौ-म युनादीहिम् ऐ-न शु-रकाई कालू आजन्ना-क मा मिन्ना मिन् शहीद (४७) व जल् - ल अन्हुम् मा कानू यद्अू - न मिन् क़ब्लु व ज़न्नू मा लहुम् मिम्-महीस़ (४८) ला यस्-अमुल्-इन्सानु मिन् दुआइल्ख़ैरि व इम्-मस्सहुश्-शर्रु फ-यऊसुन् क़नूत (४९) व ल-इन् अ-ज़क़्नाहु रह्-म-तम्-मिन्ना मिम्बअ्-दि जर्-रा-अ मस्सत्हु ल-यक़ूलन्-न हाजा ली व मा अज़ुन्नुस्सा-अ-त काइ-म-तव्-व लइर्रुजिअ्-तु इला रब्बी इन्-न ली अिन्दहू लल्हुस्ना फ़-ल नुनब्बिअन्नल्लज़ी-न क-फरू बिमा अमिलू व ल-नुज़ीक़न्नहुम् मिन् अज़ाबिन् ग़लीज़ (५०) व इज़ा अन्-अम्ना अ-लल्इन्सानि अअ्-र-ज़ व नआ बिजानिबिही व इज़ा मस्सहुश्शर्रु फ़ज़ू दुआइन् अ़रीज (५१) कुल् अ-र-ऐतुम् इन् का-न मिन् अिन्दिल्लाहि सुम्-म क-फर्तुम् बिही मन् अज़ल्लु मिम्मन् हु-व फी शिक़ाक़िम्-बअीद (५२) सनुरीहिम् आयातिनाफिलआफाकि व फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हत्ता य-त-बय्य-न लहुम् अन्नहुल्-हक़्कु अ-व लम् यक्फि बिरब्बि-क अन्नहू अला कुल्लि शैइन् शहीद (५३) अला इन्नहुम् फी मिर्-यतिम्-मिल्लिक़ाइ रब्बिहिम् अला इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-मुहीत ★(५४)

الشورى ٤٢ ٢٨٥ اليه يرد ٢٥

اليه يرد علم الساعة وما تخرج من ثمرت من اكمامها و
ما تحمل من انثى ولا تضع الا بعلمه ويوم يناديهم اين شركاءى
قالوا اذنك ما منا من شهيد ۝ وضل عنهم ما كانوا يدعون
من قبل وظنوا ما لهم من محيص ۝ لا يسئم الانسان من دعاء
الخير وان مسه الشر فيئوس قنوط ۝ ولئن اذقنه رحمة منا
من بعد ضراء مسته ليقولن هذا لى وما اظن الساعة قائمة
ولئن رجعت الى ربى ان لى عنده للحسنى فلننبئن الذين
كفروا بما عملوا ولنذيقنهم من عذاب غليظ ۝ واذا انعمنا
على الانسان اعرض ونا بجانبه واذا مسه الشر فذو دعاء
عريض ۝ قل ارءيتم ان كان من عند الله ثم كفرتم به من
اضل ممن هو فى شقاق بعيد ۝ سنريهم ايتنا فى الافاق و
فى انفسهم حتى يتبين لهم انه الحق اولم يكف بربك
انه على كل شىء شهيد ۝ الا انهم فى مرية من لقاء
ربهم الا انه بكل شىء محيط ۝

سورة الشورى مكية وهى ثلث وخمسون اية وخمس ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

حم ۝ عسق ۝ كذلك يوحى اليك والى الذين من قبلك

४२ सूरतुश्शूरा ६२

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३५८५ अक्षर, ८६९ शब्द, ५३ आयते और ५ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हामीम् (१) अ़ैन्-सीन्-क़ाफ़् (२) क-ज़ालि-क यूही इलै - क व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लि - क- -ल्लाहुल् - अ़ज़ीज़ुल् - ह़कीम (३)

★रु ६/१ आ १०

नही। (४६) कियामत के इल्म का हवाला उसी की तरफ दिया जाता है (यानी कियामत का इल्म उसी को है) और न तो फल गाभो से निकलते है और न कोई मादा हामिला होती और न जनती है, मगर उस के इल्म से और जिस दिन वह उन को पुकारेगा (और कहेगा) कि मेरे शरीक कहा है, तो वे कहेंगे कि हम तुझ से अर्ज़ करते है कि हम मे से किसी को (उन की) ख़बर ही नही। (४७) और जिन को पहले वे (ख़ुदा के सिवा) पुकारा करते थे, (सब) उन से गायब हो जाएगे और वे यकीन कर लेगे कि उन के लिए मुख्लिसी नही। (४८) इसान भलाई की दुआएं करता-करता तो थकता नही और अगर तक्लीफ पहुच जाती है, तो ना-उम्मीद हो जाता और आस तोड बैठता है। (४९) और अगर तक्लीफ पहुचने के बाद हम उस को अपनी रहमत का मज़ा चखाते है तो कहता है कि यह तो मेरा हक था और मै नही ख्याल करता कि कियामत बरपा हो और अगर (क़ियामत सचमुच भी हो और) मै अपने परवरदिगार की तरफ लौटाया भी जाऊ, तो मेरे लिए उस के यहा भी ख़ुशहाली है, पस काफिर जो अमल किया करते है, वे हम जरूर उन को जताएंगे और उन को सख्त अजाब का मज़ा चखाएगे। (५०) और जब हम इंसान पर करम करते है, तो मुह मोड लेता और पहलू फेर कर चल देता है और जब उस को तक्लीफ पहुचती है, तो लबी-लबी[1] दुआएं करने लगता है। (५१) कहो कि भला देखो अगर यह (कुरआन) ख़ुदा की तरफ से हो, फिर तुम इस से इकार करो, तो उस से बढ कर कौन गुमराह है जो (हक की) परले दर्जे की मुखालफत मे हो। (५२) हम बहुत जल्द उन को (दुनिया के) हर तरफ मे भी और खुद उन की जात मे भी अपनी निशानिया दिखाएंगे, यहा तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि (कुरआन) हक है। क्या तुम को यह काफी नही कि तुम्हारा परवरदिगार हर चीज़ से खबरदार है। (५३) देखो, ये अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होने से शक मे है। सुन रखो कि वह हर चीज़ पर एहाता किए हुए है। (५४) ★

४२ सूरः शूरा ६२

सूर शूरा मक्की है और इस मे ५३ आयतें और पाच रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) ऐन्-सीन्-काफ्, (२) ख़ुदा-ए-गालिब व दाना इसी तरह तुम्हारी तरफ (मज्मून और साफ दलीलें) भेजता है, (जिस तरह) तुम से पहले लोगो की तरफ वह्य भेजता

---

१ यहा अरबी लफ्ज़ 'अरीज़' है, जिसे मुहावरे मे लम्बी-लम्बी दुआए कहते है, न चौडी-चौडी, इस लिए तर्जुमे मे 'लम्बी-लम्बी दुआए' लिखा गया।

★रु ६/१ आ १०

लहू मा फ़िस्समावाति व मा फिल्अर्ज़ि ط व हुवल्-अलिय्युल्-अ़ज़ीम (४) तकादुस्-समावातु य-त-फत्तर्-न मिन् फौकिहिन्-न वल्मलाइकतु युसब्बिहू-न बिहम्दि रब्बिहिम् व यस्तग़्फ़िरू-न लिमन् फिल्अर्ज़ि ط अला इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़फूरुर्रहीम (५) वल्लज़ी-नत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अल्लाहु ह़फ़ीज़ुन् अ़लैहिम् ج व मा अन-त अ़लैहिम् बिवकील (६) व कज़ालि-क औहैना इलै-क कुर्आनन् अ़-रबिय्यल्-लितुन्ज़ि-र उम्मल्कुरा व मन् ह़ौलहा व तुन्ज़ि-र यौमल्-जम्अि ला रै-ब फ़ीहि ط फरीक़ुन् फिल्जन्नति व फरीक़ुन् फिस्सअ़ीर (७) व लौ शाअल्लाहु ल-ज-अ-लहुम् उम्मतंव्वाहि़द-तव्-व लाकिय्युद्ख़िलु मय्यशाउ फी रह़्मतिही ط वज़्ज़ालिमू-न मा लहुम् मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (८) अमित्त-ख़-ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अ ج फल्लाहु हुवल्वलिय्यु व हु-व युह़्यिल्मौता ج व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् कदीर ★ (९) व मख़्तलफ़्तुम् फीहि मिन् शैइन् फ़हुक्मुहू इलल्लाहि ط ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बी अ़लैहि तवक्कल्तु ج व इलैहि उनीब (१०) फ़ातिरुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط ज-अ़-ल लकुम् मिन् अन्फुसिकुम् अज़्-वाजव्-व मिनल्-अन्आमि अज़्वाजन् ج यज़्-रऊकुम् फीहि ط लै-स कमिस्लिही शैउन् ج व हुवस्समीअुल् बसीर (११) लहू मकालीदुस्समावाति वल्अर्ज़ि ج यब्सुतुर्रिज़्-क लिमय्यशाउ व यक़्दिरु ط इन्नहू बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (१२) श-र-अ़ लकुम् मिनद्दीनि मा वस्सा बिही नूहंव्वल्लज़ी औहैना इलै-क व मा वस्सैना बिही इब्राही-म व मूसा व अ़ीसा अन् अक़ीमुद्दी-न व ला त-त-फर्रक़ू फीहि ط क़बु-र अ़लल्मुश्रिकी-न मा तद्अूहुम् इलैहि ط अल्लाहु यज्तबी इलैहि मंय्यशाउ व यह्दी इलैहि मंय्युनीब (१३)

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيْمُ ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ
بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ
وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا
لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ
فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا
لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ فَاللّٰهُ
هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا
اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝ فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ
مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ لَيْسَ
كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ
شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ
وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَ

★रु. १/२ आ ६

रहा है। (३) जो कुछ आसमानों मे और जो कुछ जमीन मे है, सब उसी का है, और वह बुलन्द मर्तबा (और) अज़ीम है। (४) करीब है कि आसमान ऊपर से फट पडे और फ़रिश्ते अपने परवरदिगार की तारीफ के साथ उस की तस्बीह करते रहते और जो लोग ज़मीन मे है, उन के लिए माफी मागते रहते है।¹ सुन रखो कि खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (५) और जिन लोगो ने उस के सिवा कारसाज़ बना रखे है, वे खुदा को याद है और तुम उन पर दारोगा नही हो। (६) और इसी तरह तुम्हारे पास अरबी कुरआन भेजा है, ताकि तुम बडे गाव (यानी मक्के) के रहने वालो को और जो लोग उस के इर्द-गिर्द रहते है, उन को रास्ता दिखाओ और उन्हे कियामत के दिन का भी, जिस मे कुछ शक नही, डर दिलाओ। उस दिन एक फरीक बहिश्त मे होगा और एक फरीक दोजख मे। (७) और अगर खुदा चाहता, तो उन को एक ही जमाअत कर देता, लेकिन वह जिस को चाहता है, अपनी रहमत मे दाखिल कर लेता है और ज़ालिमो का न कोई यार है और न मददगार। (८) क्या उन्हो ने उस के सिवा कारसाज बनाए हैं? कारसाज़ तो खुदा ही है और वही मुर्दो को ज़िंदा करेगा और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (९) ★

और तुम जिस बात मे इख्तिलाफ करते हो, उस का फैसला खुदा की तरफ (से होगा)। यही खुदा मेरा परवरदिगार है, मैं उसी पर भरोसा रखता हू और उसी की तरफ रुजूअ करता हू। (१०) आसमानो और जमीन का पैदा करने वाला (वही है।) उसी ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिंस के जोडे बनाए और चारपायो के भी जोडे (बनाए और) इसी तरीके पर तुम को फैलाता रहता है। उस जैसी कोई चीज़ नही और वह सुनता-देखता है। (११) आसमानो और जमीन की कुंजिया उसी के हाथ मे है। वह जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तग कर देता है। बेशक वह हर चीज को जानता है। (१२) उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुकर्रर किया, जिस (के अपनाने) का नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मुहम्मद!) हम ने तुम्हारी तरफ वह्य भेजी है और जिस का इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था, (वह यह) कि दीन को कायम रखना और उस मे फूट न डालना। जिस चीज़ की तरफ तुम मुश्रिको को बुलाते हो, वह उन को मुश्किल गुजरती है। अल्लाह जिस को चाहता है, अपनी बारगाह का चुना हुआ कर लेता है और जो उस की तरफ रुजूअ करे, उसे अपनी तरफ रास्ता दिखा देता है। (१३)

---

१ जो लोग ज़मीन पर है, इस मे मोमिन और काफिर सब शामिल है। काफिरो के हक़ में फरिश्ते इस लिए दुआ करते हैं कि उन को उम्मीद होती है कि शायद वे ईमान ले आएगे। कुछ ने कहा, बख्शिश की दुआ से रोज़ी की दुआ मुराद है, यानी तमाम फ़रिश्ते जमीन वालो के लिए रोज़ी मागते रहते हैं, चाहे मोमिन हो, चाहे काफिर। अगर यही मानी मुराद लिए जाए तो फरिश्तो की दुआ का असर ज़ाहिर है।

★रु १/२ आ ९

व मा त-फ़र्रक़ू इल्ला मिम्बअ्-दि माजा-अ हुमुल्अिल्मु बग्-यम्-बैनहुम् ط व लौला कलि - मतुन् स - ब - क़त् मिर्रब्बि - क इला अ-जलिम् - मुसम्मल् - लक़ुज़ि-य बैनहुम् ط व इन्नल्लजी-न ऊरिसुल्किता-ब मिम्बअ्-दिहिम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु मुरीब (१४) फ़लिजालि - क फ़द्अु ج वस्तक़िम् कमा उमिर्-त ج व ला तत्तबिअ्-अह्वा-अहुम् ج व क़ुल् आमन्तु बिमा अन्ज-लल्लाहु मिन् किताबिन् ج व उमिर्तु लिअअ्-दि-ल बैनकुम् ط अल्लाहु रब्बुना व रब्बुकुम् ط लना अअ्-मालुना व लकुम् अअ्-मालुकुम् ط ला हुज्ज-त बैनना व बैनकुम् ط अल्लाहु यज्मअु बैनना ج व इलैहिल्-मसीर ط (१५) वल्लजी-न युहाज्जू-न फ़िल्लाहि मिम्बअ्-दि मस्तुजी-ब लहू हुज्जतुहुम् दाहि-ज़तुन् अिन्-द रब्बिहिम् व अलैहिम् ग़-ज-बु व्-व लहुम् अज़ाबुन् शदीद (१६) अल्लाहुल्लजी अन्ज-लल्किता-ब बिल्हक़्क़ि वल्मीज़ा-न ط व मा युद्री-क ल-अल्लस्सा-अ-त क़रीब (१७) यस्तअ्-जिलु बिहल्लजी-न ला युअ्मिनू-न बिहा ج वल्लजी-न आमनू मुश्फ़िक़ू-न मिन्हा ل व यअ्-लमू-न अन्नहल्हक़्क़ु ط अला इन्नल्लज़ी-न युमारू-न फ़िस्साअति लफ़ी ज़लालिम्-बओद (१८) अल्लाहु लतीफ़ुम्-बिअिबादिही यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ ج व हुवल्क़विय्युल्-अज़ीज़★(१९) मन् का-न युरीदु हर्-सल्-आख़िरति नज़िद् लहू फ़ी हर्सिही ج व मन् का-न युरीदु हर्सद्-दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन् नसीब (२०) अम् लहुम् शु-रकाउ श-रअू लहुम् मिनद्दीनि मा लम् यअ्-ज़म्-बिहिल्लाहु ط व लौला कलि-मतुल्-फ़स्लि लक़ुज़ि-य बैनहुम् ط व इन्नज़्ज़ालिमी-न लहुम् अज़ाबुन् अलीम (२१)

لَا تَفَرَّقُوا فِيهِ ۚ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ ۚ اللَّهُ يَجْتَبِي
إِلَيْهِ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَن يُنِيبُ ﴿١٣﴾ وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِن
بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ مِن
بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١٤﴾ فَلِذَٰلِكَ فَادْعُ ۖ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۖ وَقُلْ آمَنتُ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِن كِتَابٍ ۖ وَأُمِرْتُ
لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۖ لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ لَا
حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾ وَالَّذِينَ
يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِندَ
رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿١٦﴾ اللَّهُ الَّذِي أَنزَلَ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ﴿١٧﴾
يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ
مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۗ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ
لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿١٨﴾ اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ ۖ وَهُوَ
الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿١٩﴾ مَن كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۖ
وَمَن كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِن
نَّصِيبٍ ﴿٢٠﴾ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُم مِّنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَن بِهِ

★रु. २/३ आ १०

और ये लोग जो अलग-अलग हुए है, तो इल्मे (हक) आ चुकने के बाद आपस की ज़िद मे (हुए हैं) और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक मुकर्रर वक्त तक के लिए बात न ठहर चुकी होती तो उन मे फैसला कर दिया जाता और जो लोग उन के बाद (खुदा की) किताब के वारिस हुए, वे उस (की तरफ) से शुबहे की उलझन मे (फसे हुए) है। (१४) तो (ऐ मुहम्मद !) उसी (दीन की) तरफ (लोगो को) बुलाते रहना और जैसा तुम को हुक्म हुआ है, (उसी पर) कायम रहना और उन की ख्वाहिशो की पैरवी न करना और कह दो कि जो किताब खुदा ने नाज़िल फरमायी, मैं उस पर ईमान रखता हू और मुझे हुक्म हुआ है कि तुम मे इंसाफ करूं। खुदा ही हमारा और तुम्हारा परवरदिगार है, हम को हमारे आमाल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे आमाल (का,) हम मे और तुम मे कुछ बहस व तकरार नही। खुदा हम (सब) को इकट्ठा करेगा और उसी की तरफ लौट कर जाना है। (१५) और जो लोग खुदा (के बारे) मे इस के बाद कि उसे (मोमिनो ने) मान लिया हो, झगडते है, उन के परवरदिगार के नज़दीक उन का झगडा बेकार है और उन पर (खुदा का) गजब और उन के लिए सख्त अज़ाब है। (१६) खुदा ही तो है, जिस ने सच्चाई के साथ किताब नाज़िल की और (अद्ल व इसाफ की) तराज़ू और तुम को क्या मालूम शायद कियामत करीब ही आ पहुची हो।[1] (१७) जो लोग इस पर ईमान नही रखते, वे इस के लिए जल्दी कर रहे है और जो मोमिन हैं, वह इस से डरते है और जानते हैं कि वह बर-हक है। देखो जो लोग कियामत मे झगडते है, वे परले दर्जे की गुमराही मे हैं। (१८) खुदा अपने बन्दों पर मेहरबान है, वह जिस को चाहता है, रोज़ी देता है और वह ज़ोर वाला (और) ज़बरदस्त है। (१९)★

जो शख्स आखिरत की खेती का तालिब हो, उस के लिए हम उस की खेती में बढ़ाएंगे और जो दुनिया की खेती की ख्वाहिश रखता हो, उस को हम उसमे से देंगे और उस का आखिरत मे कुछ हिस्सा न होगा। (२०) क्या उन के वे शरीक है, जिन्हो ने उन के लिए ऐसा दीन मुकर्रर किया है, जिस का खुदा ने हुक्म नही दिया और अगर फैसले (के दिन) का वायदा न होता, तो उन मे फैसला कर दिया जाता और जो ज़ालिम है उन के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है। (२१) तुम देखोगे कि

---

१ तराज़ू फरमाया दीने हक को जिस मे बात पूरी है, न कम, न ज़्यादा।

★रु २/३ आ १०

त-रज़्ज़ालिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा क-सबू व हु-व वाक़िअुम्-बिहिम् ط वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी रौज़ातिल्-जन्नाति ج लहुम् मा यशाऊ-न अ़िन्-द रब्बिहिम् ط ज़ालि-क हुवल्-फ़ज़्लुल्-कबीर (२२) ज़ालिकल्लज़ी युबश्शिरुल्लाहु अ़िबादहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ط क़ुल् ला अस्-अलुकुम् अ़लैहि अज्-रन् इल्लल्म-वद्-द-त फ़िल्क़ुर्बा ط व मंय्यक़्तरिफ़् ह-स-न-तन् नज़िद् लहू फ़ीहा हुस्-नन् ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् शकूर (२३) अम् यक़ूलूनफ़्तरा अ़-लल्लाहि कज़िबन् ج फ़इंय्यश-इल्लाहु यख़्तिम् अ़ला क़ल्बि-क ط व यम्हुल्लाहुल्-बाति-ल व युहिक़्क़ुल्-हक़्-क़ बिकलिमातिही ط इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (२४) व हुवल्लज़ी यक़्बलुत्तौ-ब-त अ़न् अ़िबादिही व यअ़्-फ़ू अ़निस्सय्यिआति व यअ़्-लमु मा तफ़्-अ़लून لا (२५) व यस्तजीबुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही ط वल्काफ़िरू-न लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद (२६) व लौ ब-स-तल्लाहुर्रिज़्-क़ लिअ़िबादिही ल-बग़ौ फ़िल्अर्ज़ि व लाकिंय्युनज़्ज़िलु बिक़-दरिम्-मा यशाउ ط इन्नहू बिअ़िबादिही ख़बीरुम् - बसीर (२७) व हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलुल्-ग़ै-स मिम्बअ़्-दि मा क़-नतू व यन्शुरु रह्म-तहू ط व हुवल् - वलिय्युल्-हमीद (२८) व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बस्-स फ़ीहिमा मिन् दाब्बतिन् ط व हु-व अ़ला जम्अ़िहिम् इज़ा यशाउ क़दीर ★● (२९) व मा असाबकुम् मिम् - मुसीबतिन् फ़बिमा क - स - बत् ऐदीकुम् व यअ़् - फ़ू अ़न् कसीर ط (३०)

اللّٰهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيْمٌ ۝ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌ
بِهِمْ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَا
يَشَاءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝ ذٰلِكَ الَّذِيْ
يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۗ قُلْ لَّا أَسْأَلُكُمْ
عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۗ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ
فِيْهَا حُسْنًا ۗ إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝ أَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا ۚ فَإِنْ يَّشَإِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ۗ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ
الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهِ ۗ إِنَّهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ
التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝
وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۗ
وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ
لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۗ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيْرٌ
بَصِيْرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ
رَحْمَتَهُ ۗ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهِ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ۗ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيْرٌ ۝
وَمَا أَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا

★रु ३/४ आ १० ● रुबुअ १/४

ज़ालिम अपने आमाल (के वबाल) से डर रहे होंगे और वह उन पर पड कर रहेगा और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे बहिश्त के बागो मे होंगे। वे जो कुछ चाहेंगे, उन के परवरदिगार के पास (मौजूद) होगा। यही बडा फज्ल है। (२२) यही वह (इनाम है,) जिस की खुदा अपने उन बन्दो को जो ईमान और नेक अमल करते है, खुशखबरी देता है। कह दो कि मै उस का तुम से बदला नही मागता, मगर (तुम को) रिश्तेदारी की मुहब्बत (तो चाहिए[1]) और जो कोई नेकी करेगा, हम उस के लिए उस मे सवाब बढाएगे। बेशक खुदा बख्शने वाला कद्रदान है। (२३) क्या ये लोग कहते है कि पैगम्बर ने खुदा पर झूठ बाध लिया है? अगर खुदा चाहे तो (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे[2] और खुदा झूठ को मिटाता और अपनी बातो से हक को साबित करता है। बेशक वह सीने तक की बातो को जानता है। (२४) और वही तो है, जो अपने बन्दो की तौबा कुबूल करता और (उन के) कुसूर माफ फरमाता है और जो तुम करते हो (सब) जानता है। (२५) और जो ईमान लाए और नेक अमल किए, उन की (दुआ) कुबूल फरमाता और उन को अपने फज्ल से बढाता है और जो काफिर हैं, उन के लिए सख्त अजाब है। (२६) और अगर खुदा अपने बन्दो के लिए रोजी मे फैलाव कर देता तो जमीन मे फसाद करने लगते, लेकिन वह जिस कदर चाहता है, अन्दाजे के साथ नाजिल करता है। बेशक वह अपने बदो को जानता (और) देखता है। (२७) और वही तो है जो लोगो के ना-उम्मीद हो जाने के बाद मेह बरसाता और अपनी रहमत (यानी बारिश की बरकत) को फैला देता है और वह कारसाज़ (और) तारीफ के लायक है। (२८) और उन निशानियो मे मे है आसमानो और जमीन का पैदा करना और उन जानवरो का जो उस ने उन मे फैला रखे है और वह जब चाहे, उन के जमा कर लेने की कुदरत रखता है। (२९)★●

और जो मुसीबत तुम पर वाकेअ होती है, सो तुम्हारे अपने फेलो मे और वह बहुत मे गुनाह

---

१ यानी अगर तुम मुझ पर ईमान नही लाते, तो रिश्तेदारी का पास तो करना चाहिए और मुझे तक्लीफ नही देना चाहिए। कुछ ने यह मतलब बताए है कि खुदा का कुर्ब हासिल करने के लिए उन मे मुहब्बत रखो।

२ ताकि तुम कुरआन के मज्मून न बयान कर सको और काफिरो को यह कहने का मौका न मिले कि तुम खुदा पर झूठ गढते हो, मगर खुदा को कुफ्फार के बकने की क्या परवा है? वह उन की बातो को झुठलाता है और अपने पैगम्बर पर कुरआन नाजिल कर के हक साबित करता है।

★रु ३/४ आ १० ● रुबुअ् १/४

व मा अन्तुम् बिमुअ्-जिजी-न फ़िल्अर्ज़ि व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (३१) व मिन् आयातिहिल्-जवारि फ़िल्बह्रि कल्अअ्-लाम (३२) इ य्य-शअ् युस्किनिर्री-ह् फ़-यज़्-लल्-न रवाकि-द अ़ला ज़ह्रिही इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (३३) औ यूबिक्हुन-न बिमा क-सबू व यअ्-फु अन् कसीर (३४) व यअ्-ल-मल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिना मा लहुम् मिम्-महीस़ (३५) फ़मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़-मताअुल्-हयातिद्दुन्या व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुंव्-व अब्क़ा लिल्लज़ी-न आमनू व अ़ला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (३६) वल्लज़ी-न यज्तनिबू-न कबाइरल्-इस्मि वल्फ़वाहि-श व इज़ा मा ग़ज़िबू हुम् यग़्फ़िरून (३७) वल्-लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त व अम्रुहुम् शूरा बैनहुम् व मिम्मा र-ज़क्ना-हुम् युन्-फ़िक़ून (३८) वल्लज़ी-न इज़ा

عن كثير ۝ وما انتم بمعجزين في الارض ۚ وما لكم من
دون الله من ولي ولا نصير ۝ ومن ايته الجوار في البحر
كالاعلام ۝ ان يشا يسكن الريح فيظللن رواكد على ظهره ۚ
ان في ذلك لايت لكل صبار شكور ۝ او يوبقهن بما كسبوا و
يعف عن كثير ۝ ويعلم الذين يجادلون في ايتنا ما لهم من
محيص ۝ فما اوتيتم من شيء فمتاع الحيوة الدنيا وما عند
الله خير وابقى للذين امنوا وعلى ربهم يتوكلون ۝ و
الذين يجتنبون كبئر الاثم والفواحش واذا ما غضبوا هم
يغفرون ۝ والذين استجابوا لربهم واقاموا الصلوة و
امرهم شورى بينهم ومما رزقنهم ينفقون ۝ والذين اذا
اصابهم البغي هم ينتصرون ۝ وجزؤا سيئة سيئة مثلها
فمن عفا واصلح فاجره على الله انه لا يحب الظلمين ۝
ولمن انتصر بعد ظلمه فاولئك ما عليهم من سبيل ۝ انما
السبيل على الذين يظلمون الناس ويبغون في الارض بغير
الحق اولئك لهم عذاب اليم ۝ ولمن صبر وغفر ان ذلك
لمن عزم الامور ۝ ومن يضلل الله فما له من ولي من
بعده وترى الظلمين لما راوا العذاب يقولون هل الى مرد

असाबहुमुल्-बग़्यु हुम् यन्तसिरून (३९) व जज़ाउ सय्यि-अतिन् सय्यि-अतुम्-मिस्-लुहा फ-मन् अफा व अस्-ल-ह फ-अज्रुहू अ़लल्लाहि इन्नहू ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (४०) व ल-मनिन्त-स-र बअ्-द ज़ुल्मिही फ-उलाइ-क मा अ़लैहिम् मिन् सबील (४१) इन्नमस्सबीलु अ़-लल्लज़ी-न यज़्लिमूनन्ना-स व यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्हक़्क़ि उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (४२) व ल-मन् स़-ब-र व ग़-फ़-र इन्-न ज़ालि-क लमिन् अ़ज़्मिल्-उमूर ★(४३) व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फमा लहू मिंव्वलिय्यिम्-मिम्बअ्-दिही व त-रज़्ज़ालिमी-न लम्मा र-अवुल्-अ़ज़ा-ब यक़ूलू-न हल् इला म-रद्दिम्-मिन् सबील (४४)

★रु ४/५ आ १४

तो माफ कर देता है। (३०) और तुम जमीन मे (खुदा को) आजिज नही कर सकते और खुदा के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार।(३१)और उसी की निशानियो मे से समुद्र के जहाज़ है (जो) गोया पहाड (है।) (३२) अगर खुदा चाहे तो हवा को ठहरा दे और जहाज उस की सतह पर खडे रह जाएं। तमाम सब्र और शुक्र करने वालो के लिए इन (बातो)मे खुदा की कुदरत के नमूने है। (३३) या उस के आमाल की वजह से उन को तबाह कर दे और बहुत-से कुसूर माफ कर दे। (३४) और (बदला इस लिए लिया जाए कि) जो लोग हमारी आयतो मे झगडते है वे जान ले कि उन के लिए खलासी नही। (३५) (लोगो!) जो (माल व मताअ) तुम को दिया गया है, वह दुनिया की ज़िंदगी का (ना-पायदार) फायदा है और जो कुछ खुदा के यहा है, बेहतर और कायम रहने वाला है (यानी) उन लोगो के लिए जो ईमान लाए और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते है, (३६) और जो बडे-बडे गुनाहो और बे-हयाई के कामो से परहेज़ करते हैं और जब गुस्सा आता है, तो माफ कर देते है, (३७) और जो अपने परवरदिगार का फरमान कुबूल करते है और नमाज पढते है और अपने काम आपस के मश्विरे से करते है और जो (माल) हम ने उन को अता फरमाया है, उस मे से खर्च करते है। (३८) और जो ऐसे है कि जब उन पर जुल्म हो तो (मुनासिब तरीके से) बदला लेते है। (३९) और बुराई का बदला तो उसी तरह की बुराई है, मगर जो दर-गुजर करे और (मामले को) दुरुस्त कर दे तो इस का बदला खुदा के जिम्मे है। इस मे शक नही कि वह जुल्म करने वालो को पसन्द नही करता।(४०) और जिस पर जुल्म हुआ हो, अगर वह इस के बाद बदला ले, तो ऐसे लोगो पर कुछ इल्जाम नही। (४१) इल्ज़ाम तो उन लोगो पर है, जो लोगो पर जुल्म करते है और मुल्क मे ना-हक फसाद फैलाते है यही लोग हैं, जिन को तक्लीफ देने वाला अजाब होगा। (४२) और जो सब्र करे और क [illegible] हिम्मत के काम है। (४३)✶

और जिस शख्स को खुदा गुमराह करे, तो इस के बाद उस का कोई दोस्त नहीं और तुम जालिमो को देखोगे कि जब वे (दोजख का) अजाब देखेंगे, तो कहेंगे, क्या (दुनिया मे) वापस जाने

✶रु ४/५ आ १४

व तराहुम् युअ्-रजू-न अ़लैहा ख़ाशिअ़ी-न मिनज़्जुल्लि यन्जुरू-न मिन् तर्फ़िन् ख़फ़िय्यिन्ط व क़ालल्लज़ी - न आमनू इन्नल् - ख़ासिरीनल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामतिط अला इन्नज़्ज़ालिमी-न फ़ी अ़ज़ाबिम्-मुक़ीम (४५) व मा का-न लहुम् मिन् औलिया - अ यन्सुरूनहुम् मिन् दूनिल्लाहिط व मंय्युज़्-लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् सबीलط (४६) इस्तजीबू लि-रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला म-रद्-द लहू मिनल्लाहिط मा लकुम् मिम्-मल्जइंय्यौमइज़िंव्-व मा लकुम् मिन् नकीर (४७) फ़-इन् अअ्-रज़ू फ़मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् हफ़ीज़न्ط इन् अ़लै-क इल्लल्बलाग़ुط व इन्ना इज़ा अ-ज़क्-नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्-म-तन् फ़रि-ह बिहाج व इन् तुसिब्-हुम् सय्यि-तुम् बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् फ़-इन्नल्-इन्सा-न कफ़ूर (४८) लिल्लाहि मुल्कुस्-समावाति वल्अर्ज़िط यख़्लुक़ु मा यशाउط य-हबु लिमय्यशाउ इनासंव्-व य-हबु लिमंय्यशाउज़्-ज़ुकूरۙ (४९) औ युज़व्विजुहुम् ज़ुक-रानंव्-व इनासन्ج व यज्अ़लु मंय्यशाउ अ़क़ीमन्ط इन्नहू अ़लीमुन् क़दीर (५०) व मा का-न लि-ब-शरिन् अंय्युकल्लिमहुल्लाहु इल्ला वह्-यन् औ मिंव्वरा-इ हिजाबिन् औ युर्सि-ल रसूलन् फ़यूहि-य बिइज़्निही मा यशाउط इन्नहू अ़लिय्युन् हकीम (५१) व कज़ालि-क औहैना इलै-क रूहम्मिन् अम्रिनाط मा कुन्-त तद्री मल्किताबु व लल् ईमानु व लाकिन् ज-अ़ल्नाहु नूरन् नह्दी बिही मन् नशाउ मिन् अ़िबादिना ط व इन्न-क ल-तह्दी इला सिरातिम् - मुस्तक़ीमۙ (५२) सिरातिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط अला इलल्लाहि तसीरुल् - उमूर ★ (५३)

الشورى ٤٢ | ٣٩ | اليه يرد ٢٥

مِّنْ سَبِيلٍ ۝ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خٰشِعِينَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُونَ
مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ وَقَالَ الَّذِينَ اٰمَنُوٓا اِنَّ الْخٰسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا
اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ۝
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُونَهُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيلٍ ۝ اِسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ
لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيرٍ ۝
فَاِنْ اَعْرَضُوا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۗ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ
وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُورٌ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۗ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۗ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ
الذُّكُورَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيمًا ۗ اِنَّهٗ
عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ
حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ۗ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝
وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ اَمْرِنَا ۗ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتٰبُ
وَلَا الْاِيمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُورًا نَّهْدِي بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ۗ
وَاِنَّكَ لَتَهْدِيٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِي لَهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيرُ الْاُمُورُ ۝

★रु. ५/६ आ १०

का कोई रास्ता है ? (४४) और तुम उन को देखोगे कि दोजख के सामने लाए जाएगे, ज़िल्लत मे आजिजी करते हुए, छिपी (और नीची) निगाह से देख रहे होगे और मोमिन लोग कहेगे कि घाटा उठाने वाले तो वे है, जिन्हो ने कियामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालो को घाटे मे डाला। देखो कि बे-इसाफ लोग हमेशा के दुख मे (पडे) रहेगे। (४५)और ख़ुदा के सिवा उनके कोई दोस्त न होगे कि खुदा के सिवा उन को मदद दे सके और जिस को खुदा गुमराह करे, उन के लिए (हिदायत का) कोई रास्ता नही। (४६) (उन से कह दो कि) इस से पहले कि वह दिन, जो टलेगा नही, खुदा की तरफ से आ मौजूद हो, अपने परवरदिगार का हुक्म कुबूल करो। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई पनाह लेने की जगह होगी और न तुम से गुनाहो का इन्कार ही बन पडेगा। (४७) फिर अगर ये मुह फेर ले, तो हम ने तुम को उन पर निगहबान बना कर नही भेजा, तुम्हारा काम तो सिर्फ (हुक्म का) पहुचा देना है और जब हम इसान को अपनी रहमत का मजा चखाते है, तो उस से खुश हो जाता है· और अगर उन को उन्ही के आमाल की वजह से कोई सख्ती पहुचती है तो (सब एहसानो को भूल जाता है) बेशक इसान बडा ना-शुक्रा है। (४८) (तमाम) बादशाही ख़ुदा ही की है, आसमानो की भी और जमीन की भी। वह जो चाहता है, पैदा करता है, जिसे चाहता है, बेटिया अता करता है और जिसे चाहता है, बेटे बख्शता है, (४९) या उन को बेटे और बेटिया दोनो को इनायत फरमाता है और जिस को चाहता है, बे-औलाद रखता है। वह तो जानने वाला (और) कुदरत वाला है। (५०) और किसी आदमी के लिए मुम्किन नही कि ख़ुदा उस से बात करे, मगर इल्हाम (के ज़रिए) से या पर्दे के पीछे से या कोई फरिश्ता भेज दे, तो वह ख़ुदा के हुक्म से जो ख़ुदा चाहे इल्का करे। बेशक वह बुलद मर्तबा (और) हिक्मत वाला है। (५१) और इसी तरह हम ने अपने हुक्म से तुम्हारी तरफ रूहुल कुद्स के ज़रिए से (कुरआन) भेजा है। तुम न तो किताब को जानते थे और न ईमान को, लेकिन हम ने उस को नूर बनाया है कि इस मे हम अपने बन्दो मे से, जिस को चाहते है, हिदायत करते है और बेशक, (ऐ मुहम्मद !) तुम सीधा रास्ता दिखाते हो। (५२) (यानी) ख़ुदा का रास्ता, जो आसमानों और ज़मीन की सब चीजो का मालिक है। देखो, सब काम ख़ुदा की तरफ रुजूअ होंगे (और वही इन मे फैसला करेगा।) (५३) ★

★रु ५/६ आ १०

४३ सूरतुज़्ज़ुख़रुफ़ि ६३

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३६५६ अक्षर, ८४८ शब्द, ८९ आयते और ७ रुकूअ् है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हामीम् (१) वल्किताबिल्मुबीन (२) इन्ना ज-अल्नाहु कुर्आनन् अ-रबिय्यल् - ल-अल्लकुम् तअ-क़िलून (३) व इन्नहू फ़ी उम्मिल्किताबि लदैना ल - अलिय्युन् हकीम (४) अ - फ़ नज़्रिबु अन्कुमुज़्ज़िक-र सफ़्-हन् अन् कुन्तुम् कौमम्-मुस्रिफ़ीन (५) व कम् अर्सल्-ना मिन् नबिय्यिन् फ़िल्अव्वलीन (६) व मा यअ्तीहिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (७) फ़-अह्-लक्ना अशद्-द मिन्हुम् बत-शव्-व मजा म-स-लुल्-अव्वलीन (८) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़स्समा-वाति वल्अर्-ज ल-यकूलुन्-न ख़-ल-क़हुन्नल्-अज़ीज़ुल्-अलीम (९) अल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्अर्-ज महदव्-व ज-अ-ल लकुम् फ़ीहा सुबुलल्-ल-अल्लकुम् तह्-तदून (१०) वल्लज़ी नज़्ज़-ल मिनस्समाइ माअम्-बि-क-दरिन् फ़-अन्शर्ना बिही बल्द-तम्-मैतन् कज़ालि-क तुख़-रजू-न् (११) वल्लज़ी ख़-ल-क़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा व ज-अ-ल लकुम् मिनल्-फ़ुल्कि वल्-अन्आमि मा तर्कबून (१२) लितस्तवू अला ज़ुहूरिही सुम्-म तज़्कुरू निअ्-म-त रब्बिकुम् इज़स्तवैतुम् अलैहि व तकूलू सुब्हा-नल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व माकुन्ना लहू मुक्रिनीन (१३) व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून (१४) व ज-अलू लहू मिन् अिबादिही जुज्-अन् इन्नल् - इन्सा-न ल-कफ़ूरुम् - मुबीन ★ (१५) अमित्त-ख़-ज मिम्मा यख़्लुकु बनातिव्-व अस्फ़ाकुम् बिल्बनी-न (१६) व इज़ा बुश्शि-र अ-हदुहुम् बिमा ज़-र-ब लिर्रह्मानि म-स-लन् ज़ल्-ल वज्-हुहू मुस्-वद्दव्-व हु-व कज़ीम (१७) अ-व मय्युनश्शउ फ़िल्-हिल्यति व हु-व फ़िल्ख़िसामि ग़ैरु मुबीन (१८)

سُورَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَثَمَانُونَ آيَةً وَسَبْعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حم ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝
وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝ أَفَنَضْرِبُ عَنكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا
أَن كُنتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝ وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِن نَّبِيٍّ فِي الْأَوَّلِينَ ۝ وَ
مَا يَأْتِيهِم مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُم
بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ
مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَالَّذِي نَزَّلَ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝
وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا
تَرْكَبُونَ ۝ لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ
عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ۝
وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ۝ وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنسَانَ
لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۝ أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُم بِالْبَنِينَ ۝
وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَ
هُوَ كَظِيمٌ ۝ أَوَمَن يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝

∴ मु अि मु ता ख़ ११ ★रु १/७आ १५

४३ सूरः ज़ुख़रुफ़ ६३

सूर ज़ुख़रुफ मक्की है और इस मे नवासी आयते और सात रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो वडा मेहरवान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१)-रोशन किताब की कसम,[1] (२) कि हम ने इस को अरवी कुरआन वनाया है, ताकि तुम समझो। (३) और यह वडी किताब (यानी लौहे महफूज) मे हमारे पास (लिखी हुई और) वडी फजीलत और हिक्मत वाली है। (४) भला इस लिए कि तुम हद से निकले हुए लोग हो, हम तुम को नसीहत करने से वाज रहेगे। (५) और हम ने पहले लोगो मे भी वहुत से पैगम्बर भेजे थे, (६) और कोई पैगम्बर उन के पास नही आता था, मगर वे उस का मजाक उडाते थे। (७) तो जो उन मे सख़्त ज़ोर वाले थे, उन को हम ने हलाक कर दिया और अगले लोगो की हालत गुजर गयी। (८) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानो और जमीन को किस ने पैदा किया है, तो कह देगे कि उन को गालिब (और) इल्म वाले (ख़ुदा) ने पैदा किया है, (९) जिस ने तुम्हारे लिए जमीन को विछौना बनाया और उस मे तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह मालूम करो। (१०) और जिस ने एक अन्दाजे के साथ आसमान से पानी उतारा, फिर हम ने उस मे मुर्दा शहर को जिदा किया, इसी तरह तुम (जमीन मे) निकाले जाओगे। (११) और जिस ने तमाम किस्म के जानवर पैदा किए और तुम्हारे लिए कश्तिया और चारपाए बनाए, जिन पर तुम सवार होते हो, (१२) ताकि तुम उन की पीठ पर चढ बैठो और जब उस पर बैठ जाओ, फिर अपने परवरदिगार के एहसान को याद करो और कहो कि वह (जात) पाक है, जिस ने उस को हमारे फरमान के मातहत कर दिया और हम मे ताकत न थी कि उस को बस मे कर लेते। (१३) और हम अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाने वाले है। (१४) और उन्हो ने उस के बन्दो मे से उस के लिए औलाद मुकर्रर की। वेशक इसान खुला ना-शुक्रा है। (१५)★

क्या उस ने अपनी मख़्लूक मे से खुद तो वेटिया ली और तुम को चुन कर वेटे दिए? (१६) हालाकि जब उन मे से किसी को उस की चीज़ की खुशख़बरी दी जाती है, जो उन्हो ने ख़ुदा के लिए बयान की है, तो उस का मुह काला हो जाता और वह गम से भर जाता है। (१७) क्या वह जो जेवर मे परवरिश पाए और झगडे के वक्त बात न कर सके, (ख़ुदा की बेटी हो सकती है?)(१८)

---

१ रोशन का मतलब है साफ़ और खुले मतलब का, जिस मे ख़ुदा के हुक्म साफ़-साफ़ बग़ैर किसी पेचीदगी के लिखे हुए है।

व ज-अलुल् - मलाइ-क-तल्लजी-न हुम् अिबादुर्रह्मानि इनासन् ط अ - शहिदू ख़ल्क़हुम् ط स-तुक्तबु शहादतुहुम् व युस्-अलून (१९) व क़ालू लौ शा-अर्रह्मानु मा अ-बद्नाहुम् ط मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अिल्मिन् ق इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून ط (२०) अम् आतैनाहुम् किताबम्-मिन् कब्लिही फहुम् बिही मुस्तम्सिकून (२१) बल् कालू इन्ना व-जद्ना आबा-अना अला उम्मतिव्-व इन्ना अला आसारिहिम् मुह-तदून (२२) व कज़ालि-क मा अर्सल्ना मिन् कब्लि-क फी कर्यतिम्-मिन् नज़ीरिन् इल्ला क़ा-ल मुत्-रफूहा ۙ इन्ना व-जद्ना आबा-अना अ़ला उम्मतिव्-व इन्ना अ़ला आसारिहिम् मुक़्तदून (२३) का-ल अ-वलौ जिअ्तुकुम् बि-अह्-दा मिम्मा व-जत्तुम् अ़लैहि आबा-अकुम् ط कालू इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफिरून (२४) फ़न्त-कम्ना मिन्हुम् फ़न्ज़ुर् कै-फ का-न आकिबतुल्-मुकज़्ज़िबीन ●✶ (२५) व इज् का-ल इब्राहीमु लिअबीहि व कौमिही

وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ
سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ
مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿۲۰﴾ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا
مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿۲۱﴾ بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ
وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ
قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ
وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿۲۳﴾ قُلْ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا
وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۲۴﴾ فَانْتَقَمْنَا
مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۲۵﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ
وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۶﴾ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ
سَيَهْدِيْنِ ﴿۲۷﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۸﴾
بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲۹﴾
وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ
هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿۳۱﴾ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ
رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ
مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ

इन्ननी बराउम् मिम्मा तअ्-बुदून ۙ (२६) इल्लल्लज़ी फ-त-रनी फ-इन्नहू स-यह्दीन (२७) व ज-अ-लहा कलि-म-तम्-बाक़ि-य-तन् फी अकिबिही ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअून (२८) बल् मत्तअ्-तु हाउला-इ व आबा-अ-हुम् हत्ता जा-अ-हुमुल्-हक़्क़ु व रसूलुम्-मुबीन (२९) व लम्मा जा-अ-हुमुल्-हक़्क़ु कालू हाज़ा सिह्रुंव-व इन्ना बिही काफिरून (३०) व क़ालू लौला नुज्ज़ि-ल हाज़ल्कुर्आनु अला रजुलिम्-मिनल्-कर्यतैनि अ़ज़ीम (३१) अहुम् यक़्सिमू-न रह-म-त रब्बि-क ط नह्नु क-सम्ना बैनहुम् मअी-श - तहुम् फिल् - हयातिद्दुन्या वरफअ्ना बअ् - ज़हुम् फौ-क बअ् - ज़िन् द-र-जातिल् - लि-यत्तख़ि - ज बअ् - ज़ुहुम् बअ् - ज़न् सुख़्रिय्यन् ط व रह्मतु रब्बि-क ख़ैरुम् - मिम् - मा यज्मअून (३२)

★रु २/८ आ १० ●नि १/२

और उन्हो ने फरिश्तो को, कि वे भी खुदा के बदे है, (खुदा की) बेटिया मुकर्रर किया। क्या ये उन की पैदाइश के वक्त हाजिर थे, बहुत जल्द उन की गवाही लिख ली जाएगी और उन से पूछ-गछ की जाएगी। (१९) और कहते है, अगर खुदा चाहता, तो हम उन को न पूजते। उन को इस का कुछ इल्म नही। वह तो सिर्फ अटकले दौड़ा रहे है। (२०) या हम ने उन को इस से पहले कोई किताब दी थी, तो ये उन मे सनद पकडते है। (२१) बल्कि कहने लगे कि हम ने अपने बाप-दादा को एक रास्ते पर पाया है और हम उन ही के कदम-ब-कदम चल रहे है। (२२) और इसी तरह हम ने तुम से पहले किसी बस्ती मे कोई हिदायत करने वाला नही भेजा, मगर वहा के खुशहाल लोगो ने कहा कि हम ने अपने बाप-दादा को एक राह पर पाया है और हम कदम-ब-कदम उन ही के पीछे चलते है। (२३) पैगम्बर ने कहा, अगरचे मै तुम्हारे पास ऐसा (दीन) लाऊ कि जिस (रास्ते) पर तुम ने अपने बाप-दादा को पाया, वह उस से कही सीधा रास्ता दिखाता हो, कहने लगे कि जो (दीन) तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस को नही मानते। (२४) तो हम ने उन से बदला लिया, सो देख लो कि झुठलाने वालो का अजाम कैसा हुआ। (२५)★●

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी कौम के लोगो से कहा कि जिन चीज़ो को तुम पूजते हो, मै उन से बेज़ार हूं। (२६) हा, जिस ने मुझ को पैदा किया, वही मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा। (२७) और यही बात अपनी औलाद मे पीछे छोड गये, ताकि वे (खुदा की तरफ रुजूअ) रहे। (२८) बात यह है कि मैं इन कुफ्फार को और उन के बाप-दादा को नवाज़ता रहा, यहा तक कि उन के पास हक और साफ-साफ बयान करने वाला पैगम्बर आ पहुचा। (२९) और जब उन के पास हक (यानी कुरआन) आया तो कहने लगे कि यह तो जादू है और हम इस को नही मानते। (३०) और (यह भी) कहने लगे कि यह कुरआन इन दोनो बस्तियो (यानी मक्के और ताइफ) मे से किसी बड़े आदमी पर क्यो नाज़िल न किया गया ? (३१) क्या ये लोग तुम्हारे परवरदिगार की रहमत को बाटते है ? हम ने उन मे उन की मईशत (रोज़ी) को दुनिया की जिंदगी मे तक्सीम कर दिया और एक दूसरे पर दर्जे बुलंद किए, ताकि एक दूसरे से खिद्मत ले और जो कुछ ये जमा करते है, तुम्हारे परवरदिगार की रहमत उस से कही बेहतर है। (३२) और अगर यह

★रु २/८ आ १० ● नि १/२

व लौला अंय्यकूनन्नासु उम्मतंव्वाहि-द-तुल्-ल-ज-अ़ल्ना लिमंय्यक्फुरु बिर्रह़्मानि लि-बुयूतिहिम् सुकुफ़म्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव-व मआ़रि-ज अ़लैहा यज़्-हरून (३३) व लिबुयूतिहिम् अब्-वाबंव्-व सुरुरन् अ़लैहा यत्तकिऊन (३४) व ज़ुख़्-रुफ़न् व इन् कुल्लु ज़ालि-क लम्मा मताअ़ुल्-ह़यातिद्दुन्या वल्-आख़िरतु अ़िन्-द रब्बि-क लिल्-मुत्तक़ीन ★ (३५) व मंय्यअ़्-शु अ़न् ज़िक्रिर्-रह़्मानि नुक़य्यिज़् लहू शैतानन् फ़हु-व लहू करीन (३६) व इन्नहुम् ल-य-सुद्दूनहुम् अ़निस्सबीलि व यह़्-सबू-न अन्नहुम् मुह़्-तदून (३७) ह़त्ता इज़ा जा-अना क़ा-ल यालै-त बैनी व बैन-क बुअ़्-दल् मश्रिक़ैनि फ़बिअ्सल्-करीन (३८) व लंय्यन्फ़-अ़-कुमुल्-यौ-म इज़्-ज़लम्तुम् अन्नकुम् फ़िल्अ़ज़ाबि मुश्तरिकून (३९) अ-फ़-अन्-त तुस्मिअ़ुस्सुम्-म औ तह्दिल्-अ़ुम्-य व मन् का-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (४०) फ़-इम्मा नज़्-ह-बन्-न बि-क फ़-इन्ना मिन्हुम् मुन्तक़िमून (४१) औ नुरि-यन्न-कल्लज़ी व-अ़द्नाहुम् फ़-इन्ना अ़लैहिम् मुक़्तदि-रून (४२) फ़स्तम्-सिक् बिल्लज़ी ऊह़ि-य इलै-क इन्न-क अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (४३) व इन्नहू ल-ज़िक्रुल्लल-क व लिक़ौमि-क व सौ-फ़ तुस्-अलून (४४) वस्-अल् मन् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रुसुलिना अ-ज-अ़ल्ना मिन् दूनिर्रह़्मानि आलिहतंय्युअ़्-बदून ★ (४५) व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना इला फ़िर्औ-न व म-ल-इ-ही फ़-का-ल इन्नी रसूलु रब्बिल्-आलमीन (४६) फ़-लम्मा जा-अ-हुम् बिआयातिना इज़ा हुम् मिन्हा यज़्-ह़कून (४७) व मा नुरीहिम् मिन् आयतिन् इल्ला हि-य अक्बरु मिन् उख़्-तिहा व अ-ख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (४८) व क़ालू या अय्युहस्-साहिरुद्अु लना रब्ब-क बिमा अ़हि-द अ़िन्-द-क इन्नना ल-मुह्-तदून (४९) फ़-लम्मा क-शफ़्ना अ़न्हुमुल्-अ़ज़ा-ब इज़ा हुम् यन्कुसून (५०)

٣٩٣

يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ومعارج عليها يظهرون ۝
ولبيوتهم ابوابا وسررا عليها يتكئون ۝ وزخرفا وان كل ذلك لما
متاع الحيوة الدنيا والاخرة عند ربك للمتقين ۝ ومن يعش
عن ذكر الرحمن نقيض له شيطنا فهو له قرين ۝ وانهم
ليصدونهم عن السبيل ويحسبون انهم مهتدون ۝ حتى اذا
جاءنا قال يليت بيني وبينك بعد المشرقين فبئس القرين ۝
ولن ينفعكم اليوم اذ ظلمتم انكم في العذاب مشتركون ۝ افانت
تسمع الصم او تهدي العمي ومن كان في ضلل مبين ۝ فاما
نذهبن بك فانا منهم منتقمون ۝ او نرينك الذي وعدنهم فانا عليهم
مقتدرون ۝ فاستمسك بالذي اوحي اليك انك على صراط مستقيم ۝
وانه لذكر لك ولقومك وسوف تسئلون ۝ وسئل من ارسلنا
من قبلك من رسلنا اجعلنا من دون الرحمن الهة يعبدون ۝
ولقد ارسلنا موسى بايتنا الى فرعون وملايه فقال اني رسول
رب العلمين ۝ فلما جاءهم بايتنا اذا هم منها يضحكون ۝ وما
نريهم من اية الا هي اكبر من اختها واخذنهم بالعذاب لعلهم
يرجعون ۝ وقالوا يايه السحر ادع لنا ربك بما عهد عندك اننا
لمهتدون ۝ فلما كشفنا عنهم العذاب اذا هم ينكثون ۝ ونادى

★रु ३/६ आ १० ★रु ४/१० आ १०

(ख्याल) न होता कि सब लोग एक ही जमाअत हो जाएंगे, तो जो लोग ख़ुदा से इंकार करते है, हम उन के घरो को छते चादी की बना देते और सीढिया (भी,) जिन पर वे चढते। (३३) और उनके घरो के दरवाज़े भी और तख्त भी, जिन पर तकिया लगाते है। (३४) और (ख़ूब) तजम्मुल (सजावट व आराइश कर देते) और यह सब दुनिया की जिंदगी का थोडा-सा सामान है और आख़िरत तुम्हारे परवरदिगार के यहा परहेज़गारो के लिए है। (३५)☆

और जो कोई ख़ुदा की याद से आखे बन्द कर ले, (यानी जानी-बूझी गफलत से) हम उस पर एक शैतान मुकर्रर कर देते है, तो वह उस का साथी हो जाता है। (३६) और ये (शैतान) उन को रास्ते से रोकते रहते है और वे समझते है कि सीधे रास्ते पर है, (३७) यहा तक कि जब हमारे पास आएगा तो कहेगा कि ऐ काश ! मुझ मे और तुझ मे पूरब और पच्छिम का फासला होता, तू बुरा साथी है। (३८) और जब तुम जुल्म करते रहे, तो आज तुम्हे यह बात फायदा नही दे सकती कि तुम (सब) अज़ाब मे शरीक हो। (३९) क्या तुम बहरे को सुना सकते हो या अधे को रास्ता दिखा सकते हो और जो खुली गुमराही मे हो, उसे (राह पर ला सकते हो) ? (४०) अगर हम तुम को (वफात देकर) उठा ले तो उन लोगो मे हम बदला ले कर रहेगे, (४१) या (तुम्हारी जिंदगी ही मे) तुम्हे वह (अज़ाब) दिखाएंगे, जिन का हम ने उन से वायदा किया है, हम उन पर काबू रखते है। (४२) पस तुम्हारी तरफ जो वह्य की गयी है, उस को मजबूत पकडे रहो, बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो। (४३) और यह (कुरआन) तुम्हारे लिए और तुम्हारी कौम के लिए नसीहत है और (लोगो !) तुम से बहुत जल्द पूछ-ताछ होगी। (४४) और (ऐ मुहम्मद !) जो अपने पैगम्बर हम ने तुम से पहले भेजे है, उन के हाल मालूम कर लो। क्या हम ने (ख़ुदा-ए-) रहमान के सिवा और माबूद बनाए थे कि उन की इबादत की जाए ? (४५) ★

और हम ने मूसा को अपनी निशानिया दे कर फ़िऔन और उस के दरबारियो की तरफ भेजा, तो उन्हो ने कहा कि मैं अपने परवरदिगारे आलम का भेजा हुआ हू। (४६) जब वे उन के पास हमारी निशानिया ले कर आए तो वे निशानियो से हसी करने लगे। (४७) और जो निशानी हम उन को दिखाते है, वह दूसरो से बडी होती थी और हम ने उन को अज़ाब मे पकड लिया, ताकि बाज आ जाएं। (४८) और कहने लगे कि ऐ जादूगर ! उस अह्द के मुताबिक, जो तेरे परवरदिगार ने तुझ से कर रखा है, उस से दुआ कर, बेशक हम हिदायत पाए हुए होगे। (४९) सो जब हम ने उन से अज़ाब को दूर कर दिया, तो वह अह्द को तोडने लगा। (५०) फ़िऔन ने अपनी

★रु ३/९ आ १० ★रु ४/१० आ १०

व नादा फ़िर्औनु फ़ी क़ौमिही का-ल याक़ौमि अलै-स ली मुल्कु मिस्-र व हाज़ि-
हिल्-अन्हारु तज्री मिन् तह़्तीج अ-फला तुब्सिरूनط (५१) अम् अ-न ख़ैरुम्मिन्
हाजल्लजी हु-व महीनुंلا व्-व ला यकादु युबीन (५२) फ़-लौला उल्कि-य अलैहि
अस-वि-रतुम्-मिन् ज-ह-बिन् औ जा-अ म-अहुल्-मला-इकतु मुक्तरिनीन (५३)

فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يٰقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْأَنْهٰرُ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِي أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِنْ هٰذَا الَّذِي هُوَ
مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ۝ فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ
مَعَهُ الْمَلٰئِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ۝ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا فٰسِقِينَ ۝ فَلَمَّا آسَفُونَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنٰهُمْ أَجْمَعِينَ ۝
فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِلْآخِرِينَ ۝ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا
قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ۝ وَقَالُوا أَآلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا
جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ
مَثَلًا لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلٰئِكَةً فِي الْأَرْضِ
يَخْلُفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ هٰذَا صِرَاطٌ
مُسْتَقِيمٌ ۝ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ وَلَمَّا
جَاءَ عِيسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ
الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ۝ إِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ
لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ
تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ
عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ۝ يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ

फ़स्तख़फ़्-फ क़ौमहू फ-अताऊहुط इन्नहुम् कानू
क़ौमन् फ़ासिक़ी-न (५४) फ-लम्मा आसफू-
नन्-त-क़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़रक़्ना-हुम् अज्मईनلا
(५५) फ़-ज-अल्नाहुम् स-ल-फव्-व म-स-लल्-
लिल्आख़िरीन ★ (५६) व लम्मा जुरिबब्नु
मर्य-म म-स-लन् इजा क़ौमु-क मिन्हु यसिद्दून
(५७) व क़ालू-अ आलिहतुना ख़ैरुन् अम्
हु-वط मा ज़-रबूहु ल-क इल्ला ज-द-लन्ط बल्
हुम् क़ौमुन् ख़सिमून (५८) इन् हु-व इल्ला
अब्दुन् अन-अम्ना अलैहि व ज-अल्नाहु म-स-
लल्-लि-बनी इस्राई-लط (५९) व लौ नशाउ
ल-ज-अल्ना मिन्कुम् मलाइ-क-तन् फ़िल्अर्ज़ि
यख़्-लुफून (६०) व इन्नहू ल-इल्मुल्-
लिस्साअ़ति फ-ला तम्तरुन्-न बिहा वत्तबिऊनिط हाजा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (६१) व
ला यसुद्दन्नकुमुश्-शैतानुج इन्नहू लकुम् अदुव्वुम्-मुबीन (६२) व लम्मा जा-अ
ईसा बिल्बय्यिनाति का-ल कद् जिअ्तुकुम् बिल्हिक्मति व लिउबय्यि-न लकुम्
बअ-ज़ल्लज़ी तख़-तलिफ़ू-न फ़ीहिج फ़त्तकुल्ला-ह व अतीऊन (६३) इन्नल्ला-ह हु-व
रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्-बुदूहुط हाजा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (६४) फ़ख़्त-ल-फल्-अह़्ज़ाबु
मिम्-बैनिहिम्ج फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् अ़ज़ाबि यौमिन् अलीम (६५) हल्
यन्ज़ुरू-न इल्लस्सा-अ़-त अन् तअ्ति-य-हुम् बग्-त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (६६) अल्-
अख़िल्लाउ यौमइज़िम्-बअ़-ज़ुहुम् लिबअ्-ज़िन् अदुव्वुन् इल्लल्-मुत्तक़ीनط ★ (६७) या-
अिबादि ला ख़ौफ़ुन् अलैकुमुल्-यौ-म व ला अन्तुम् तह़-ज़नून ج (६८)

★रु ५/११ आ ११ ★रु. ६/१२ आ ११

कौम से पुकार कर कहा कि ऐ कौम ! क्या मिस्र की हुकूमत मेरे हाथ मे नही है और ये नहरे जो मेरे (महलो के) नीचे बह रही है (मेरी नही है), क्या तुम देखते नही । (५१) बेशक मैं उस शख्स से, जो कुछ इज्जत नही रखता और साफ बात-चीत भी नही कर सकता, कही बेहतर हू । (५२) तो उस पर सोने के कगन क्यो न उतारे गये या (यह होता कि) फरिश्ते जमा हो कर उस के साथ आते ? (५३) गरज उस ने अपनी कौम की अक्ल मार दी और उन्हो ने उस की मान ली, बेशक वे ना-फरमान लोग थे । (५४) जब उन्हो ने हम को खफा किया, तो हम ने उन से बदला ले कर और उन सब को डुबो कर छोडा । (५५) और उन को गये-गुजरे कर दिया और पिछलो के लिए इबरत (सबक) बना दिया । (५६) ★

और जब मरयम के बेटे (ईसा) का हाल बयान किया गया, तो तुम्हारी कौम के लोग उस से चिल्ला उठे । (५७) और कहने लगे कि भला हमारे माबूद अच्छे है या वह (ईसा) ? उन्हो ने जो उस (ईसा) की मिसाल तुम से बयान की है, तो सिर्फ झगडे को । सच तो यह है कि ये लोग हैं ही झगडालू । (५८) वह तो हमारे ऐसे बन्दे थे, जिन पर हम ने फज्ल किया और बनी इस्राईल के लिए उन को (अपनी कुदरत का) नमूना बना दिया । (५९) और अगर हम चाहते तो तुम मे से फरिश्ते बना देते, जो तुम्हारी जगह जमीन मे रहते । (६०) और वह (ईसा) कियामत की निशानी है । तो (कह दो कि लोगो !) इस मे शक न करो और मेरे पीछे चलो । यही सीधा रास्ता है । (६१) और (कही) शैतान तुम को (इससे) रोक न दे । वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है । (६२) और जब ईसा निशानिया ले कर आए, तो कहने लगे कि मैं तुम्हारे पास दानाई (की किताब) ले कर आया हू । इस लिए कि कुछ बाते, जिन मे तुम इख्तिलाफ करते हो, तुम को समझा दू, तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो । (६३) कुछ शक नही कि खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, पस उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है । (६४) फिर कितने फिर्के उन मे से फट गये, सो जो लोग जालिम है, उन की, दर्द देने वाले दिन के अजाब से खराबी है । (६५) ये सिर्फ इस बात के इन्तिजार मे है कि कियामत उन पर यकायक आ मौजूद हो और उन को खबर तक न हो । (६६) जो आपस मे दोस्त (है,) उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होगे, मगर परहेजगार (कि) कियामत मे दोस्त ही रहेगे ।[1] (६७) ★

मेरे बन्दो ! आज तुम्हे न कुछ खौफ है और न तुम गमनाक होगे, (६८) जो लोग हमारी

---

१ उस दिन दोस्त से दोस्त भागेगा कि इस की वजह से मैं पकडा न जाऊ ।

अल्लज़ी-न आमनू बिआयातिना व कानू मुस्लिमीन (६९) उद्ख़ुलुल्-जन्न-त अन्तुम् व अज़्वाजुकुम् तुह़्-बरून (७०) युताफु अलैहिम् बिसिहाफिम्-मिन् ज़-हबिंव्-व अक-वाबिन् व फ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फुसु व त-लज़्ज़ुल्-अअ्-युनु व अन्तुम् फ़ीहा ख़ालिदून (७१) व तिल्कल्-जन्नतुल्लती ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (७२) लकुम् फ़ीहा फाकि-ह-तुन् कसी-रतुम्-मिन्हा तअ्-कुलून (७३) इन्नल्-मुज्रिमी-न फी अज़ाबि ज-हन्न-म ख़ालिदून (७४) ला युफत्तरु अन्हुम् व हुम् फीहि मुब्लिसून (७५) व मा ज़-लम्नाहुम् व लाकिन् कानू हुमुज़्-ज़ालिमीन (७६) व नादौ या मालिकु लि-यक़्ज़ि अलैना रब्बु-क का-ल इन्नकुम् माकि-सून (७७) ल-क़द् जिअ्-नाकुम् बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रकुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून (७८) अम् अब्-रमू अम्-रन् फ़-इन्ना मुब्रिमून (७९) अम् यह़्-सबू-न अन्ना ला नस्मअु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् बला व रुसुलुना लदैहिम् यक्तुबून (८०) क़ुल् इन् का-न लिर्रह़्मानि व-लदुन् फ़-अ-न अव्वलुल्-आबिदीन (८१) सुब्हा-न रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बिल्-अर्शि अम्मा यसिफ़ून (८२) फ़-ज़र्हुम् यख़ूज़ू व यल्-अबू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यू-अदून (८३) व हुवल्लज़ी फ़िस्समाइ इलाहुंव-व फ़िल्अर्ज़ि इलाहुन् व हुवल्-ह़कीमुल्-अलीम (८४) व तबा-र-कल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व अिन्दहू अिल्मुस्साअ़ति व इलैहि तुर्जअून (८५) व ला यम्लिकुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिहिश्शफ़ा-अ-त इल्ला मन् शहि-द बिल्हक़्क़ि व हुम् यअ्-लमून (८६) व लइन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़हुम् ल-यक़ूलुन्नल्लाहु फ़-अन्ना युअ्फ़कून (८७) व क़ीलिही या रब्बि इन्-न हाउला-इ क़ौमुल्ला युअ्मिनून (८८) फ़स्-फ़ह अन्हुम् व क़ुल् सलामुन् फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (८९) ★

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ۝ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ
تُحْبَرُونَ ۝ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ
الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي
أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝
إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ
مُبْلِسُونَ ۝ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ۝ وَنَادَوْا يَا مَالِكُ
لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ مَاكِثُونَ ۝ لَقَدْ جِئْنَاكُمْ بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ۝ أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ۝ أَمْ يَحْسَبُونَ
أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ۝ قُلْ إِنْ
كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ۝ سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَ
هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝ وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ
مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ
مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝ وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

व लाज़िम ★रु ७/१३ आ २२

आयतो पर ईमान लाए और फरमाबरदार हो गये, (६९) (उन से कहा जाएगा) कि तुम और तुम्हारी बीविया इज्जत (व एहतराम) के साथ बहिश्त मे दाखिल हो जाओ। (७०) उन पर सोने की पिरचो और प्यालो का दौर चलेगा और वहा जो जी चाहे और जो आखो को अच्छा लगे (मौजूद होगा) और (ऐ जन्नत वालो !)तुम इसमे हमेशा रहोगे। (७१)और यह जन्नत जिसके तुम मालिक कर दिए गये हो, तुम्हारे आमाल का बदला है। (७२) वहा तुम्हारे लिए बहुत-से मेवे है, जिन को तुम खाओगे, (७३) (और कुफ्फार) गुनाहगार हमेशा दोजख के अजाब मे रहेगे, (७४) जो उन से हल्का न किया जाएगा और वे इस मे ना-उम्मीद हो कर पडे रहेगे। (७५) और हम ने उन पर जुल्म नही किया, बल्कि वही (अपने आप पर) जुल्म करते थे। (७६) और पुकारेगे कि ऐ मालिक! तुम्हारा परवरदिगार हमे मौत दे दे। वह कहेगा कि तुम हमेशा (इसी हालत मे) रहोगे। (७७) हम तुम्हारे पास हक ले कर पहुचे, लेकिन तुम मे अक्सर हक से ना-खुश होते रहे। (७८) क्या उन्होंने कोई बात ठहरा रखी है, तो हम भी कुछ ठहराने वाले है।[1] (७९) क्या ये लोग यह ख्याल करते है कि हम उन की छिपी बातो और सरगोशियो को सुनते नही ? हा, हा, (सब सुनते हैं) और हमारे फरिश्ते उन के पास (उन की) सब बाते लिख लेते हैं। (८०) कह दो कि अगर खुदा के औलाद हो, तो मैं (सब से) पहले (उस की) इबादत करने वाला हू। (८१) ये जो कुछ बयान करते है, आसमानो और जमीन का मालिक (और) अर्श का मालिक उस से पाक है, (८२) तो उन को बक-बक करने और खेलने दो, यहा तक कि जिस दिन का उन से वायदा किया जाता है, उस को देख लें। (८३) और वही (एक) आसमानो मे माबूद है और (वही) जमीन मे माबूद है और वह हिक्मत वाला (और) इल्म वाला है। (८४) और वह बहुत बरकत वाला है, जिस के लिए आसमानो और जमीन और जो कुछ उन दोनो मे है, सब की बादशाही है और उसी को कियामत का इल्म है और उसी की तरफ तुम लौट कर जाओगे। (८५) और जिन को ये लोग खुदा के सिवा पुकारते हैं, वे सिफारिश का कुछ अख्तियार नही रखते, हा, जो इल्म व यकीन के साथ हक की गवाही दे, (वे सिफारिश कर सकते है।[2]) (८६) और अगर तुम उन से पूछो कि उन को किस ने पैदा किया है, तो कह देगे कि खुदा ने, तो फिर ये कहा बहके फिरते हैं ? (८७) और (कभी-कभी) पैगम्बर कहा करते है कि ऐ परवरदिगार ! ये ऐसे लोग है कि ईमान नही लाते (८८) तो उन से मुह फेर लो और सलाम कह दो, उन को बहुत जल्द (अजाम) मालूम हो जाएगा। (८९) ★

---

१ काफिरो ने तो आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कत्ल और मक्का से उन के निकाले जाने की स्कीम सोची थी और खुदा ने यह इरादा फरमाया था कि वह आप को कुफ्फार पर गालिब करेगा। चुनाचे आप मक्के से हिजरत कर के मदीना तश्रीफ ले गये, तो अल्लाह तआला ने आप की मदद फरमायी और आप ने मक्का फत्ह कर लिया और काफिर मग्लूब हो कर रह गये।

२ यानी बुत, जिन की ये कुफ्फार पूजा करते थे, उन की सिफ़ारिश नही कर सकेंगे। सिफारिश करने का हक तो खुदा के उन नेक बदो को होगा, जिन को खुदा के एक होने का यकीन है और वह उन के एक होने और अकेला माबूद होने की गवाही देते हैं और वही सिफारिश कर सकते हैं।

व लाज़िम ★रु ७/१३ आ २२

४४ सूरतुद्दुख़ानि ६४

(मक्की) इस सूर मे अरबी के १४६५ अक्षर, ३४६ शब्द, ५६ आयतें और ३ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

ह़ामीम् (१) वल्किताबिल्मुबीन (२) इन्ना अन्जल्नाहु फी लैलतिम्-मुबा-र-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन (३) फीहा युफ़्रक़ु कुल्लु अम्रिन् ह़कीम (४) अम्-रम्-मिन् अिन्दिना इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन (५) रह़-म-तम्-मिर्रब्बि-क इन्नहू हुवस्समीअुल्-अलीम (६) रब्बिस्समावाति वल्अर्जि व मा बैनहुमा इन् कुन्तुम् मूकिनीन (७) ला इला-ह इल्ला हु-व युह़्यी व युमीतु रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-अव्वली-न (८) बल् हुम् फ़ी शक्किंय्यल्-अबून (९) फ़र्तकिब् यौ-म तअ्तिस्समाउ बि दुख़ानिम्-मुबीनिंय- (१०) यग्-शन्ना-स हाज़ा अज़ाबुन् अलीम (११) रब्ब-नक्शिफ् अन्नल्-अज़ा-ब इन्ना मुअ्मिनून (१२) अन्ना लहुमुज़्ज़िक-रा व क़द् जा-अहुम् रसूलुम्-मुबीन (१३) सुम्-म त-वल्लौ अन्हु व क़ालू मु-अ़ल्लमुम्-मज्नून (१४) इन्ना काशिफुल्-अज़ाबि क़लीलन् इन्नकुम् आ-इदून (१५) यौ-म नब्तिशुल् - बत्-श-तल् - कुब्रा इन्ना मुन्तकिमून (१६) व ल-क़द् फ़-तन्ना क़ब्-लहुम् क़ौ-म फ़िर्औ-न व जा-अहुम् रसूलुन् करीम (१७) अन् अद्दू इलय्-य अिबादल्लाहि इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीनुंव्- (१८) -व अल्ला तअ्-लू अलल्लाहि इन्नी आतीकुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन (१९) व इन्नी ऊ़ज्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् अन् तर्जुमून (२०) व इल्लम् तुअ्मिनू ली फअ्-तज़िलून (२१) फ़-दआ रब्बहू अन-न हाउला-इ कौमुम्-मुज्रिमून ● (२२) फ़-अस्रि बिअिबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त - बअून (२३) वत-रुकिल्-बह्-र रह्-वन् इन्नहुम् जुन्दुम्-मुग-रकून (२४) कम् त-रकू मिन् जन्ना-तिंव्-व अुयूनिंव- (२५) व ज़ुरूअिंव-व मक़ामिन् करीमिंव- (२६)

سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۚ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا
مُنْذِرِيْنَ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۙ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۗ اِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِيْنَ ۚ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۗ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۙ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۗ
رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ فَارْتَقِبْ
يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۙ يَّغْشَى النَّاسَ ۗ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ
رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ
رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۙ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۘ اِنَّا كَاشِفُوا
الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ۘ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ
اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ
كَرِيْمٌ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۗ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۙ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا
عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۚ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ
تَرْجُمُوْنِ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ
قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۙ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ
رَهْوًا ۗ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ وَّزُرُوْعٍ

∴मु. जि मु. ता ख १२ ⩘ व. लाज़िम ●सु ३/४

४४ सूरः दुख़ान ६४

सूर दुखान मक्की है, इस मे ५६ आयते और तीन रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) इस रोशन किताब की कसम ! (२) कि हम ने उस को मुबारक रात मे नाज़िल फरमाया, हम तो रास्ता दिखाने वाले है, (३) उसी रात मे तमाम हिक्मत के काम फैसले किए जाते है, (४) (यानी) हमारे यहा से हुक्म हो कर, बेशक हम ही (पैगम्बर को) भेजते है। (५) (यह) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है। वह तो सुनने वाला, जानने वाला है। (६) आसमानो और जमीन और जो कुछ इन दोनो मे है, सब का मालिक, बशर्ते कि तुम लोग यकीन करने वाले हो। (७) उस के सिवा कोई माबूद नही, (वही) जिलाता है और (वही) मारता है, (वही) तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप-दादा का परवरदिगार है। (८) लेकिन ये लोग शक मे खेल रहे है। (९) तो उस दिन का इन्तिजार करो कि आसमान से साफ धुआँ निकलेगा, (१०) जो लोगो पर छा जाएगा। यह दर्द देने वाला अज़ाब है। (११) ऐ परवरदिगार ! हम से इस अजाब को दूर कर, हम ईमान लाते है। (१२) (उस वक्त) उन को नसीहत कहा मुफीद होगी, जबकि उन के पास पैगम्बर आ चुके, जो खोल-खोल कर बयान कर देते थे। (१३) फिर उन्हो ने उन से मुह फेर लिया और कहने लगे, (यह तो) पढ़ाया हुआ (और) दीवाना है। (१४) हम तो थोडे दिनो अजाब टाल देते है, (मगर) तुम फिर कुफ्र करने लगते हो। (१५) जिस दिन हम बडी सख्त पकड पकडेंगे, तो बेशक बदला ले कर छोडेंगे। (१६) और उन से पहले हम ने फिऔन की कौम की आजमाइश की और उन के पास एक बुलद मर्तबा पैगम्बर आए, (१७) (जिन्हो ने) यह (कहा) कि खुदा के बन्दो (यानी बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हू, (१८) और खुदा के सामने सर-कशी न करो, मैं तुम्हारे पास खुली दलील ले कर आया हू। (१९) और इस (बात) से कि तुम मुझे पत्थर मार-मार कर हलाक कर दो, अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह मागता हू। (२०) और अगर मुझ पर ईमान नही लाते, तो मुझ से अलग हो जाओ। (२१) तब (मूसा ने) अपने परवरदिगार से दुआ की कि ये ना-फरमान लोग हैं। (२२) (खुदा ने फरमाया कि) मेरे बन्दो को रातो-रात ले कर चले जाओ और (फिऔनी) जरूर तुम्हारा पीछा करेंगे, (२३) और दरिया से (कि) सूखा (हो रहा होगा) पार हो जाओ। (तुम्हारे बाद) उन का तमाम लश्कर डुबो दिया जाएगा। (२४) वे लोग बहुत-से बाग और चश्मे छोड गये, (२५) और खेतिया और नफीस मकान, (२६) और

∴मु. अि़ मु त क़. १२ व लाज़िम व लाज़िम व लाजिम सु ३/४

व नअ्-मतिन् कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन (२७) कजालि-क व औरस्-नाहा कौमन् आख़रीन (२८) फ़ मा ब-कत् अलैहिमुस्समाउ वल्अर्ज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन ★ (२९) व ल-क़द् नज्जैना बनी इस्राई-ल मिनल्-अज़ाबिल्-मुहीन (३०) मिन् फ़िर्औ-न इन्नहू का-न आलियम्-मिनल्-मुस्रिफ़ीन (३१) व ल-क़दिख़्तर्-नाहुम् अला अिल्मिन् अ-लल्-आलमीन (३२) व आतैनाहुम् मिनलआयाति मा फ़ीहि बलाउम्-मुबीन (३३) इन्-न हाउला-इ ल-यक़ूलून (३४) इन् हि-य इल्ला मौततुनल्-ऊला व मा नह़्नु बिमुन्शरीन (३५) फ़अ्तू बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३६) अहुम् ख़ैरुन् अम् क़ौमु तुब्बअिंव्-वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् अह्-लक-नाहुम् इन्नहुम् कानू मुज्रिमीन (३७) व मा ख़-लक़्नस्समावाति वल्-अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन (३८) मा ख़-लक़्नाहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (३९) इन्-न यौमलफ़स्लि मीक़ातुहुम् अज्-मअीन (४०) यौ-म ला युग़्नी मौलन् अम्मौलन् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून (४१) इल्ला मर्रहिमल्लाहु इन्नहू हुवल्-अज़ीज़ुर्रहीम (४२) ★ इन्-न श-ज-र-तज़्ज़क़्क़ूम (४३) तआमुल्-असीम (४४) कल्मुह्लि यग़्ली फ़िल्-बुतून (४५) क-ग़ल्यिल् ह़मीम (४६) ख़ुज़ूहु फ़अ्-तिलूहु इला सवाइल्-जह़ीम (४७) सुम्-म सुब्बू फौ-क़ रअ्सिही मिन् अज़ाबिल्-ह़मीम (४८) ज़ुक़् इन्न-क अन्तल्-अज़ीज़ुल्-करीम (४९) इन्-न हाज़ा मा कुन्तुम् बिही तम्तरून (५०) इन्नल्मुत्तक़ी-न फ़ी मक़ामिन् अमीन (५१) फ़ी जन्नातिंव्-व अुयूनिय- (५२) यल्बसू-न मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रक़िम्-मु-त-क़ाबिलीन (५३) कज़ालि-क व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अीन (५४) यद्अू-न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकिहतिन् आमिनीन (५५)

وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۙ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۙ كَذٰلِكَ ۣ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ۧ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ۙ مِنْ فِرْعَوْنَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا
مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰي عِلْمٍ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ۚ وَاٰتَيْنٰهُمْ
مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰۗـؤٌا مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۙ اِنْ هِىَ اِلَّا
مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ۝ فَاْتُوْا بِاٰبَاۗىِٕنَآ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ اَهْلَكْنٰهُمْ ۡ اِنَّهُمْ
كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝ مَا
خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ
مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـــًٔا وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ۙ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۧ اِنَّ شَجَرَتَ
الزَّقُّوْمِ ۙ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ۚ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ۙ كَغَلْيِ
الْحَمِيْمِ ۭ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَاۗءِ الْجَحِيْمِ ۚ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ
مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ۭ ذُقْ ڌ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ۝ اِنَّ هٰذَا مَا
كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ۙ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ
عُيُوْنٍ ۚ يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۚ كَذٰلِكَ ۣ وَ
زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۭ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ۙ لَا

★रु० १/१४ आ २९ ★रु २/१५ आ १३ .˙. मु अि मु ता ख़ १४

आराम की चीजे, जिन मे ऐसा किया करते थे, (२७) इसी तरह (हुआ) और हम ने दूसरे लोगो को उन का मालिक बना दिया। (२८) फिर उन पर न तो आसमान और जमीन को रोना आया और न उन को मोहलत ही दी गयी। (२९)★

और हम ने बनी इस्राईल को जिल्लत के अजाब से निजात दी। (३०) (यानी) फ़िऔन से, बेशक वह सर-कश (और) हद से निकला हुआ था। (३१) और हम ने बनी इस्राईल को दुनिया वालो मे समझ-बूझ कर चुना था। (३२) और उन को ऐसी निशानिया दी थी, जिन मे खुली आजमाइश थी। (३३) ये लोग यह कहते है, (३४) कि हमे सिर्फ पहली बार (यानी एक बार) मरना है और (फिर) उठना नही, (३५) पस अगर तुम सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादा को (जिंदा कर) लाओ। (३६) भला ये अच्छे है या तुब्बअ् की कौम![1] और वे लोग जो तुम से पहले हो चुके है, हम ने उन (सब) को हलाक कर दिया। बेशक वे गुनाहगार थे। (३७) और हम ने आसमानो और जमीन को और जो कुछ उन मे है, उन को खेलते हुए नही बनाया। (३८) उन को हम ने तद्बीर से पैदा किया है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (३९) कुछ शक नही कि फैसले का दिन उन सब (के उठने का) वक्त है, (४०) जिस दिन कोई दोस्त, किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन को मदद मिलेगी, (४१) मगर जिस पर खुदा मेहरबानी करे, वह तो गालिब (और) मेहरबान है। (४२)★

बेशक थूहर का पेड, (४३) गुनाहगार का खाना है;∴(४४) जैसे पिघला हुआ ताबा,·· पेटो मे (इस तरह) खौलेगा, (४५) जिस तरह गर्म पानी खौलता है। (४६) (हुक्म दिया जाएगा कि) इस को पकड लो और खीचते हुए दोज़ख के बीचो-बीच ले जाओ। (४७) फिर उस के सर पर खौलता हुआ पानी उडेल दो (कि अज़ाब पर) अजाब (हो,) (४८) (अब) मजा चख, तू बडी इज्जत वाला (और) सरदार है। (४९) यह वही (दोजख) है, जिस मे तुम लोग शक किया करते थे। (५०) बेशक परहेजगार लोग अम्न की जगह मे होगे। (५१) (यानी) बागो और चश्मो मे, (५२) हरीर का बारीक और दबीज़ (भारी) लिबास पहन कर एक-दूसरे के सामने बैठे होंगे। (५३) (वहा) इस तरह (का हाल होगा) और हम बडी-बडी आखो वाली सफेद रग की औरतो से उन के जोडे लगाएगे। (५४) वहा अम्न-सुकून से हर किस्म के मेवे मगाएगे (और

---

१ तुब्बअ यमन का बादशाह था, कहते हैं कि वह तो ईमान वाला था और उस की कौम बुतपरस्त थी, जो हलाक कर दी गयी।

ला यजूक़ू-न फ़ीहल्मौ-त इल्लल्मौत - तुल् - ऊला व वक़ाहुम् अज़ावल्-जहीम (५६) फज़् - लम् - मिरंब्बि - क आलि - क हुवल् - फ़ौज़ुल्-अज़ीम (५७) फ़-इन्नमा यस्सर-नाहु बिलिसानि-क ल-अ़ल्लहुम् य - त - जक्करून (५८) फर्तकिब् इन्नहुम् मुर्तकिबून ★ (५९)

४५ सूरतुल् जासियति ६५

(मक्की) इस सूर. मे अरबी के २१३१ अक्षर, ४९२ शब्द, ३७ आयते और ४ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हामीम् (१) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल्-अज़ीज़िल्-हकीम (२) इन-न फिस्समावाति वल्अर्जि लआयातिल्-लिल्मुअ्मिनीन (३) व फ़ी ख़ल्क़िकुम् व मा यबुस्सु मिन् दाब्बतिन् आयातुल्-लिक़ौमिय्यूक़िनून (४) वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा अन्ज-लल्लाहु मिनस्समाइ मिर्रिज़्क़िन् फ़-अह्या बिहिल्अर-ज बअ-द मौतिहा व तस्रीफिर-रियाहि आयातुल्-लिक़ौमिय्यअ्-क़िलून (५) तिल-क आयातुल्-लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि फ़बिअय्यि हदीसिम् बअ-दल्लाहि व आयातिही युअ्मिनून (६) वैलुल्-लिकुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीमिय-(७) -यस्-मअु आयातिल्लाहि तुत्ला अ़लैहि सुम्-म युसिर्रु मुस्तक-बिरन् क-अल्लम् यस्-मअ्-हा फ़बश्शिरहु बिअ़ज़ाबिन् अलीम (८) व इज़ा अ़लि-म मिन् आयातिना शै-अ-नित्त-ख़-ज़हा हुज़ुवन् उलाइ-क लहुम् अज़ाबुम्-मुहीन (९) मिव्वराइहिम् जहन्नमु व ला युग़नी अन्हुम् मा क-सबू शैअव्-व ला मत्त-ख़-ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (१०) हाज़ा हुदन् वल्लज़ी-न क-फरू बिआयाति रब्बिहिम् लहुम् अ़ज़ाबुम्-मिर्रिज्ज़िन् अलीम ★(११) अल्लाहुल्लज़ी सख़्ख़-र लकुमुल् - बह्-र लितज्रि-यल् - फ़ुल्कु फीहि बिअम्रिही व लि - तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल - अ़ल्लकुम् तश्कुरून (१२)

يذوقون فيها الموت الا الموتة الاولى ووقهم عذاب الجحيم
فضلا من ربك ذلك هو الفوز العظيم فانما يسرنه بلسانك
لعلهم يتذكرون فارتقب انهم مرتقبون
سورة الجاثية مكية وهي سبع وثلثون اية واربع ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
حم تنزيل الكتب من الله العزيز الحكيم ان في السموت و
الارض لايت للمؤمنين وفي خلقكم وما يبث من دابة ايت
لقوم يوقنون واختلاف اليل والنهار وما انزل الله من السماء
من رزق فاحيا به الارض بعد موتها وتصريف الريح ايت لقوم
يعقلون تلك ايت الله نتلوها عليك بالحق فباي حديث بعد
الله وايته يؤمنون ويل لكل افاك اثيم يسمع ايت الله تتلى
عليه ثم يصر مستكبرا كان لم يسمعها فبشره بعذاب اليم واذا
علم من ايتنا شيئا اتخذها هزوا اولئك لهم عذاب مهين من
ورائهم جهنم ولا يغني عنهم ما كسبوا شيئا ولا ما اتخذوا من دون
الله اولياء ولهم عذاب عظيم هذا هدى والذين كفروا بايت ربهم
لهم عذاب من رجز اليم الله الذي سخر لكم البحر لتجري
الفلك فيه بامره ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون وسخر لكم

★रु. ३/१६ आ १७ ★रु. १/१७ आ ११

खाएगे।) (५५) (और) पहली बार के मरने के सिवा (कि मर चुके थे) मौत का मजा नही चखेंगे और खुदा उन को दोजख के अजाब से बचा लेगा। (५६) यह तुम्हारे परवरदिगार का फज्ल है। यही तो बडी कामियाबी है। (५७) हम ने इस (कुरआन) को तुम्हारी जुबान मे आसान कर दिया है, ताकि ये लोग नसीहत पकडे। (५८) पस तुम भी इन्तिजार करो, ये भी इन्तिजार कर रहे है। (५९)★

४५ सूरः जासिया ६५

सूर. जासिया मक्की है। इस मे ३७ आयते और चार रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) इस किताब का उतारा जाना खुदा-ए-गालिब (और) हकीम (की तरफ) से है। (२) बेशक आसमानो और जमीन मे ईमान वालो के लिए (खुदा की कुदरत की) निशानिया है। (३) और तुम्हारी पैदाइश मे भी और जानवरो मे भी, जिन को वह फैलाता है, यकीन करने वालो के लिए निशानिया है। (४) और रात और दिन के आगे-पीछे आने-जाने मे और वह जो खुदा ने आसमान से रोजी (का ज़रिया) नाज़िल फरमाया, फिर इस से जमीन को उस के मर जाने के बाद ज़िंदा किया, उस मे और हवाओ के बदलने मे अक्ल वालो के लिए निशानिया है। (५) ये खुदा की आयते है, जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ कर सुनाते है, तो यह खुदा और उस की आयतो के बाद किस बात पर ईमान लाएगे ? (६) हर झूठे गुनाहगार पर अफसोस है, (७) (कि) खुदा की आयतें उस को पढ कर सुनायी जाती है तो उन को सुन तो लेता है (मगर) फिर घमड मे आ कर ज़िद करता है कि गोया उन को सुना ही नही, सो ऐसे शख्स को दुख देने वाले अज़ाब की खुशखबरी सुना दो। (८) और जब हमारी कुछ आयतें उसे मालूम होती हैं, तो उन की हसी उडाता है, ऐसे लोगो के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (९) इन के सामने दोजख है और जो काम वे करते रहे, कुछ भी उन के काम न आएगे और न वही (काम आएगे) जिन को उन्हो ने खुदा के सिवा माबूद बना रखा था और उन के लिए बडा अज़ाब है। (१०)

यह हिदायत (की किताब) है और जो लोग अपने परवरदिगार की आयतो से इन्कार करते है, उन को सख्त किस्म का दर्द देने वाला अजाब होगा। (११)★ खुदा ही तो है, जिस ने दरिया को तुम्हारे काबू मे कर दिया, ताकि उस के हुक्म से उस मे कश्तिया चले और ताकि तुम उस के फज्ल

★रु ३/१६ आ १७ ★रु १/१७ आ ११

व सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िलअर्जि जमीअम्-मिन्हु ۗ इन्-न फी जालि-क ल-आयातिल्-लिक़ौमिय्य-त-फक्करून (१३) कुल् लिल्लज़ी-न आमनू यग़्फ़िरू लिल्लज़ी-न ला यर्जू-न अय्यामल्लाहि लि-यज्जि-य कौमम्-बिमा कानू यक्सिबून (१४) मन् अ़मि-ल सालिहन् फलिनफ़्सिही ۚ व मन् असा-अ फ़-अलैहा ۖ सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जअून (१५) व ल-क़द् आतैना बनी इस्राईलल्-किता-ब वल्-हुक्-म वन्नुबुव्व-त व र-ज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति व फ़ज़्ज़ल्-नाहुम् अलल्-आ़लमीन ۚ (१६) व आतैनाहुम् बय्यिनातिम्-मिनलअम्रि ۚ फ़-मख़्त-लफ़ू इल्ला मिम्बअ्-दि मा जा-अ-हुमुल्-अ़िल्मु ۙ बग्-यम्-बैनहुम् ۗ इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल्-कियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफून (१७) सुम्-म ज-अ़ल्ना-क अ़ला शरीअ़तिम्-मिनल्-अम्रि फत्तबिअ्-हा व ला तत्तबिअ्-अह्वा-अल्लज़ी-न ला यअ्-लमून (१८) इन्नहुम् लय्युग्नू अ़न्-क मिनल्लाहि शैअन् ۗ व इन्नज़्ज़ालि-मी-न बअ्-ज़ुहुम् औलियाउ बअ्-ज़िन् ۚ वल्लाहु वलिय्युल्-मुत्तक़ीन (१९) हाज़ा बसाइरु लिन्-नासि व हुदव-व रह्-मतुल्-लिक़ौमिंय्यूकिनून (२०) अम् हसिबल्लज़ीनज्-त-रहुस्-सय्यिआति अन् नज्-अ़-लहुम् कल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ۙ सवा-अम्मह्याहुम् व ममातुहुम् ۗ सा-अ मा यह्-कुमून ★ (२१) व ख़-ल-क़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर-ज बिल्-हक़्क़ि व लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-स-बत् व हुम् ला युज़्-लमून (२२) अ-फ-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इलाहहू हवाहु व अ-ज़ल्लहुल्लाहु अ़ला अ़िल्-मिंव्-व ख़-त-म अ़ला सम्अ़िही व क़ल्बिही व ज-अ़-ल अ़ला ब-सरिही गिशा-व-तन् ۗ फ़मंय्यह्दीहि मिम्बअ्-दिल्लाहि ۗ अ-फ़ला त-ज़क्करून (२३) व क़ालू मा हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा युह्लिकुना इल्लद्-दह्-रु ۚ व मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अ़िल्मिन् ۚ इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून (२४)

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝
قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَاۤءَ فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ
اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ
وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمْ
بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۤءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا
بَيْنَهُمْ ۗ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝
ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۤءَ الَّذِيْنَ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۗ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَاۤءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ هٰذَا بَصَاۤىِٕرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّ
رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ
كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَاۤءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۗ سَاۤءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝
وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ
عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ۗ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ۗ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ
اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى

★रु २/१८ आ १०

से (रोजी) तलाश करो और ताकि शुक्र करो। (१२) और जो कुछ आसमानो मे है और जो कुछ जमीन मे है. सब को अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम मे लगा दिया, जो लोग गौर करते हैं, उन के लिए उस मे (खुदा की कुदरत की) निशानिया है। (१३) मोमिनो से कह दो कि जो लोग खुदा के दिनो की (जो आमाल के बदले के लिए मुकर्रर है), उम्मीद नही रखते, उन से दरगुजर करे, ताकि वह उन लोगो को उन के आमाल का बदला दे। (१४) जो कोई नेक अमल करेगा, तो अपने लिए और जो बुरे काम करेगा, तो उन का नुक्सान उसी का होगा, फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाओगे। (१५) और हम ने बनी इस्राईल को किताबे (हिदायत) और हुकूमत और नुबूवत बख्शी और पाकीज़ा चीजे अता फरमायी और दुनिया वालो पर फजीलत दी। (१६) और उन को दीन के बारे मे दलीले अता की, तो उन्हो ने जो इख्तिलाफ किया, तो इल्म आ चुकने के बाद आपस की जिद से किया। बेशक तुम्हारा परवरदिगार कियामत के दिन उन मे उन बातो का, जिन मे. वे इख्तिलाफ करते थे, फैसला करेगा। (१७) फिर हम ने तुमको दीन के खुले रास्ते पर (कायम) कर दिया, तो उसी (रास्ते) पर चले चलो और नादानो की ख्वाहिशो के पीछे न चलना। (१८) ये खुदा के सामने तुम्हारे किसी काम नही आएगे और जालिम लोग एक दूसरे के दोस्त होते है और खुदा परहेज़गारो का दोस्त है। (१९) यह (कुरआन) लोगो के लिए दानाई (हिक्मत) की बाते हैं और जो यकीन रखते है, उन के लिए हिदायत और रहमत है। (२०) जो लोग बुरे काम करते हैं. क्या वह यह ख्याल करते हैं कि हम उन को उन लोगो जैसा कर देगे, जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे (और) उनकी जिंदगी और मौत बराबर होगी। ये जो दावे करते है, बुरे है। (२१) ☆

और खुदा ने आसमानो और जमीन को हिक्मत से पैदा किया है और ताकि हर शख्स अपने आमाल का बदला पाए और उन पर जुल्म नही किया जाएगा। (२२) भला तुम ने उस शख्स को देखा, जिस ने अपनी ख्वाहिश को माबूद बना रखा है और बावजूद जानने-बूझने के (गुमराह हो रहा है तो) खुदा ने (भी) उस को गुमराह कर दिया और उस के कानो और दिल पर मुहर लगा दी और उस की आखो पर पर्दा डाल दिया। अब खुदा के सिवा उस को कौन राह पर ला सकता है, तो क्या तुम नसीहत नही पकडते ? (२३) और कहते है कि हमारी जिंदगी तो सिर्फ दुनिया ही की है कि (यही) मरते और जीते है और हमे तो जमाना मार देता है और उन को इस का कुछ इल्म नही,

★रु २/१८ आ १०

व इजा तुत्ला अलैहिम् आयातुना बय्यिनातिम्-मा का-न हुज्जतहुम् इल्ला अन् कालुअ्तू बिआबाइना इन् कुन्तुम् सादिकीन (२५) कुलिल्लाहु युह-यीकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म यज्मअुकुम् इला यौमिल्-कियामति ला रै-ब फीहि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून ✶ (२६) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि ᵇ व यौ-म तकूमुस्साअतु यौमइजिंय्यख-सरुल्-मुब्तिलून (२७) व तरा कुल्-ल उम्मतिन् जासि-य-तन् कुल्लु उम्मतिन् तुद्आ इला किताबिहा ᵇ अल्यौ-म तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्-मलून (२८) हाजा किताबुना यन्तिकु अलैकुम् बिल्हक्कि ᵇ इन्ना कुन्ना नस्तन्सिखु मा कुन्तुम् तअ्-मलून (२९) फ-अम्मल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ-युद्खिलुहुम् रब्बुहुम् फी रह्मतिही ᵇ जालि-क हुवल्-फौजुल्-मुबीन (३०) व अम्मल्लजी-न क-फ़रू अ-फ लम् तकुन् आयाती तुत्ला अलैकुम् फ़स्तक्बर्तुम् व कुन्तुम् क़ौमम्-मुज्रिमीन (३१) व इजा की-ल इन् - न वअ् - दल्लाहि हक़्कुंव्वस्साअतु ला रै-ब फीहा कुल्तुम् मा नद्री मस्साअतु ˡ इन् नजुन्नु इल्ला ज़न्-नंव्-व मा नह्नु बिमुस्तैकिनीन (३२) व बदा-लहुम् सय्यिआतु मा अमिलू व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह-ज़िऊन (३३) व कीलल्यौ-म नन्साकुम् कमा नसीतुम् लिका-अ यौमिकुम् हाजा व मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् नासिरीन (३४) जालिकुम् बि अन्नकुमुत्तखज्तुम् आयातिल्लाहि हुज़ुवंव्-व गर्रत-कुमुल्-हयातुद्दुन्या ᶜ फल्यौ-म ला युख़्-रजू-न मिन्हा व ला हुम् युस्तअ-तबून (३५) फलिल्लाहिल्-हम्दु रब्बिस्समावाति व रब्बिल्-अर्जि रब्बिल्-आलमीन (३६) व लहुल्-किब्रियाउ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ᶜ व हुवल्-अजीजुल्-हकीम ✶ (३७)

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ۝
وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۣ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ۭ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّا كُنَّا
نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا ۣ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا
مُّجْرِمِيْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا
قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۝
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ وَ
قِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ
مَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝ فَلِلّٰهِ
الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَاۗءُ
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۠ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

★रु ३/१९ आ ५ ★रु. ४/२० आ ११

सिर्फ अटकल से काम लेते है। (२४) और जब उन के सामने हमारी खुली-खुली आयते पढी जाती है, तो उन की यही हुज्जत होती है कि अगर सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादा को (ज़िंदा कर) लाओ। (२५) कह दो कि खुदा ही तुम को जान बख्शता है, फिर (वही) तुम को मौत देता है, फिर तुम को कियामत के दिन, जिस (के आने) मे कुछ शक नही, तुम को जमा करेगा, लेकिन बहुत से लोग नही जानते। (२६)★

और आसमानो और जमीन की बादशाही खुदा ही की है और जिस दिन कियामत बरपा होगी, उस दिन अह्ले बातिल घाटे मे पड जाएगे। (२७) और तुम एक फिर्के को देखोगे कि घुटनो के बल बैठा होगा (और) हर एक जमाअत अपने (आमाल की) किताब की तरफ बुलायी जाएगी। जो कुछ तुम करते रहे हो, आज तुम को उस का बदला दिया जाएगा। (२८) यह हमारी किताब तुम्हारे बारे मे सच-सच बयान कर देगी, जो कुछ तुम किया करते थे, हम लिखवाते जाते थे। (२९) तो जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन का परवरदिगार उन्हे अपनी रहमत (के बाग) मे दाखिल करेगा। यही खुली कामियाबी है। (३०) और जिन्हो ने कुफ्र किया, (उन से कहा जाएगा कि) भला हमारी आयते तुम को पढ कर सुनायी नही जाती थी ? मगर तुम ने तकब्बुर किया और तुम ना-फरमान लोग थे। (३१) और जब कहा जाता था कि खुदा का वायदा सच्चा है और कियामत मे कुछ शक नही, तो तुम कहते थे, हम नही जानते कि कियामत क्या है। हम उस का सिर्फ अटकल का ख्याल करते हैं और हमे यकीन नही आता। (३२) और उन के आमाल की बुराइया उन पर जाहिर हो जाएगी और जिस (अजाब) की वे हसी उडाते थे वह उन को आ घेरेगा। (३३) और कहा जाएगा कि जिस तरह तुम ने इस दिन के आने को भुला रखा था, उसी तरह आज हम तुम्हे भुला देंगे[1] और तुम्हारा ठिकाना दोजख है और कोई तुम्हारा मददगार नही।' (३४) यह इस लिए कि तुम ने खुदा की आयतो को मज़ाक बना रखा था और दुनिया की ज़िंदगी ने तुम को धोखे मे डाल रखा था, सो आज ये लोग न दोजख से निकाले जाएगे और न उनकी तौबा कुबूल की जाएगी ? (३५) पस खुदा ही के लिए हर तरह की तारीफ है, जो आसमानो का मालिक और तमाम ज़मीन का मालिक और तमाम जहान का परवरदिगार है। (३६) और आसमानो और जमीन मे उसी के लिए बडाई है और वह गालिब (और) हकीम है। (३७)★

१ अल्लाह तआला भुलावेंगे यानी तुम पर मेहरबानी न करेंगे।

★रु ३/१९ आ ५ ★रु ४/२० आ ११

छब्बीसवां पारः हामीम

४६ सूरतुल-अह्क़ाफ़ ६६

(मक्की) इस सूर मे अरबी के २७०९ अक्षर, ७५० शब्द, ३५ आयत और ४ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

سورة الاحقاف مكية وهي خمس وثلثون اية واربع ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

حمٓ ۞ تنزيل الكتب من الله العزيز الحكيم ۞ ما خلقنا السموت
والارض وما بينهما الا بالحق واجل مسمى والذين كفروا
عما انذروا معرضون ۞ قل ارءيتم ما تدعون من دون الله
اروني ماذا خلقوا من الارض ام لهم شرك في السموت ائتوني
بكتب من قبل هذا او اثرة من علم ان كنتم صدقين ۞
ومن اضل ممن يدعوا من دون الله من لا يستجيب له الى
يوم القيمة وهم عن دعائهم غفلون ۞ واذا حشر الناس كانوا
لهم اعداء وكانوا بعبادتهم كفرين ۞ واذا تتلى عليهم ايتنا
بينت قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هذا سحر مبين ۞
ام يقولون افترىه قل ان افتريته فلا تملكون لي من الله
شيئا هو اعلم بما تفيضون فيه كفى به شهيدا بيني وبينكم
وهو الغفور الرحيم ۞ قل ما كنت بدعا من الرسل وما ادري
ما يفعل بي ولا بكم ان اتبع الا ما يوحى الي وما انا الا نذير
مبين ۞ قل ارءيتم ان كان من عند الله وكفرتم به و
شهد شاهد من بني اسراءيل على مثله فامن واستكبرتم

हामीम्॰(१) तन्जीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल्-अजीजिल्-हकीम (२) मा ख़-लक्नस्समावाति वल्अर्-ज व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक्कि व अ-जलिम्-मुसम्मन्ᵇ वल्लजी-न क-फ़रू अम्मा उन्जिरू मुअ्-रिजून (३) कुल् अ-रऐतुम् मा तद्ऊ-न मिन् दूनिल्लाहि अरूनी माजा ख़-लकू मिनल्अर्जि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावातिᵇ ईतूनी बिकिताबिम्-मिन् क़ब्लि हाजा औ असारतिम्मिन् अिल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४) व मन् अजल्लु मिम्मय्यद्ऊ मिन् दूनिल्लाहि मल्ला यस्तजीबु लहू इला यौमिल्-क़ियामति व हुम् अन् दुआइहिम् ग़ाफ़िलून (५) व इजा हुशि-रन्नासु कानू लहुम् अअ्-दा-अव्-व कानू बिअिबादति-हिम् काफ़िरीन (६) व इजा तुत्ला अलैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लजी-न क-फ़रू लिल्हक्कि लम्मा जा-अहुम्ᵇ हाजा सिह्रुम्-मुबीनᵇ (७) अम् यकूलूनफ्तराहुᵇ कुल् इनिफ्-तरैतुहू फ़ला तम्लिकू-न ली मिनल्लाहि शैअन्ᵇ हु-व अअ्-लमु बिमा तुफ़ीजू-न फ़ीहिᵇ कफ़ा बिही शहीदम्-बैनी व बैनकुम्ᵇ व हुवल्-गफूरुर्रहीम (८) कुल् मा कुन्तु बिद्-अम्-मिनर्रुसुलि व मा अद्री मा युफ्अलु बी व ला बिकुम्ᵇ इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्-य व मा अ-न इल्ला नजीरुम्-मुबीन (९) कुल् अरऐतुम् इन् का-न मिन् अिन्दिल्लाहि व क-फ़र्तुम् बिही व शहि-द शाहिदुम्-मिम्बनी इस्-राई-ल अला मिस्लिही फ़-आ-म-न वस्तक्बर्तुम्ᵇ इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन ★(१०)

★रु० १/१ आ १०

४६ सूरः अह्‌क़ाफ़ ६६

सूर अह्‌काफ मक्की है और इस मे पैंतीस आयते और चार रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) (यह) किताब खुदा-ए-गालिब (और) हिक्मत वाले की तरफ से नाज़िल हुई है। (२) हमने आसमानो और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनो मे है, हिक्मत के साथ और एक मुकर्रर वक्त तक के लिए पैदा किया है और काफिरो को जिस चीज की नसीहत की जाती है, उससे मुंह फेर लेते है। (३) कहो कि भला तुम ने उन चीज़ो को देखा है, जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो। (ज़रा) मुझे भी तो दिखाओ कि उन्हो ने ज़मीन मे कौन-सी चीज पैदा की है या आसमानो में उन की शिर्कत है। अगर सच्चे हो तो इस से पहले की कोई किताब मेरे पास लाओ या (नबियो के) इल्म (मे) से कुछ लिखा चला आता हो, (तो उसे पेश करो।) (४) और उस शख्स से बढ कर कौन गुमराह हो सकता है, जो ऐसे को पुकारे, जो कियामत तक उसे जवाब न दे सके और उन को उन के पुकारने ही की खबर न हो। (५) और जब लोग जमा किए जाए, तो वे उन के दुश्मन होंगे और उन की इबादत से इकार करेंगे। (६) और जब उन के सामने हमारी खुली आयते पढी जाती है, तो काफिर हक के बारे मे, जब उन के पास आ चुका, कहते है कि यह तो खुला जादू है। (७) क्या ये कहते हैं कि उस ने इस को खुद से बना लिया है? कह दो कि अगर मैं ने इस को अपनी तरफ़ से बनाया हो, तो तुम खुदा के सामने मेरे (बचाव के) लिए कुछ अख्तियार नही रखते। वह उस बात-चीत को खूब जानता है, जो तुम उस के बारे मे करते हो, वही मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह काफी है और वह बख्शने वाला मेहरबान है। (८) कह दो कि मै कोई नया पैगम्बर नही आया और मैं नही जानता कि मेरे साथ क्या सुलूक किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या (किया जाएगा।) मैं तो उसी की पैरवी करता हू, जो मुझ पर वह्‌य आती है और मेरा काम तो एलानिया हिदायत करना है। (९) कहो कि भला देखो तो अगर यह (कुरआन) खुदा की तरफ से हो और तुम ने उस से इंकार किया और बनी इस्राईल मे से एक गवाह इसी तरह की एक (किताब) की गवाही दे चुका और ईमान ले आया और तुम ने सरकशी की (तो तुम्हारे जालिम होने में क्या शक है) बेशक खुदा जालिम लोगो को हिदायत नही देता। (१०)★

★र १/१ आ १०

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू लौ का-न ख़ैरम्मा स-बक़ूना इलैहि व इज़् लम् यह्-तदू बिही फ़-स-यक़ूलू-न हाज़ा इफ़्कुन् क़दीम (११) व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामव्-व रह्-म-तन् व हाज़ा किताबुम्-मुसद्-दिक़ुल्-लिसानन् अ-रबिय्यल्-लियुन्ज़ि-रल्लज़ी-न ज़-लमू व बुश्रा लिलमुह्-सिनीन (१२)

इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्तक़ामू फ़ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्-ज़नून (१३) उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा जज़ा-अम्-बिमा कानू यअ्-मलून (१४) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि इह्सानन् ह-म-लत्हु उम्मुहू कुर्-हंव्-व व-ज़-अत्हु कुर्-हन् व हम्-लुहू व फ़िसा-लुहू सलासू-न शह्-रन् हत्ता इज़ा ब-ल-ग अशुद्-दहू व ब-ल-ग अर्बओ-न स-न-तन् का-ल रब्बि औज़िअ्-नी अन् अश्कु-र निअ्-म-त-कल्लती अन्-अम्-त अ-लय्-य व अला वालिदय्-य व अन् अअ्-म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अस्लिह ली फ़ी ज़ुर्रिय्यती इन्नी तुब्तु इलै-क व इन्नी मिनल्-मुस्लिमीन (१५) उलाइ-कल्लज़ी-न न-त-क़ब्बलु अन्हुम् अह्-स-न मा अमिलू व न-त-जावज़ु अन् सय्यिआतिहिम् फ़ी अस्-हाबिल्-जन्नति वअ्-दस्-सिद्क़िल्लज़ी कानू यूअ़दून (१६) वल्लज़ी का-ल लिवालिदैहि उफ़्फ़िल्लकुमा अ-तअिदानिनी अन् उख़्-र-ज व क़द् ख़-लतिल्-क़ुरूनु मिन् क़ब्ली व हुमा यस्तग़ीसानिल्ला-ह वै-ल-क आमिन् इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़-यक़ूलु मा हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (१७) उलाइ-कल्लज़ी-न हक़्-क़ अलैहिमुल्क़ौलु फ़ी उममिन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्जिन्नि वल्इन्सि इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन (१८)

إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ
آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ
هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ۝ وَمِنْ قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا
كِتَابٌ مُصَدِّقٌ لِسَانًا عَرَبِيًّا لِيُنْذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ
لِلْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا
حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا
حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي
أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي
مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا
وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي
كَانُوا يُوعَدُونَ ۝ وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ
أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ
آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ

और काफ़िर मोमिनो से कहते है कि अगर यह (दीन) कुछ बेहतर होता, तो ये लोग उस की तरफ हम से पहले न दौड पडते और जब वे इस से हिदायत न पा सके, तो अब कहेगे कि यह पुराना झूठ है। (११) और इस से पहले मूसा की किताब थी (लोगो के लिए) रहनुमा और रहमत और यह किताब अरबी जुबान मे है उसी की तस्दीक करने वाली, ताकि जालिमो को डराए और नेकी करने वालो को खुशखबरी सुनाए। (१२) जिन लोगो ने कहा कि हमारा परवरदिगार खुदा है, फिर वे उस पर कायम रहे, तो उन को न कुछ खौफ होगा और न वे गमनाक होगे। (१३) यही जन्नत वाले है कि हमेशा इस मे रहेगे। (यह) उस का बदला है, जो वे किया करते थे। (१४) और हमने इंसान को अपने मा-बाप के साथ भलाई करने का हुक्म दिया। उस की मा ने उस को तक्लीफ से पेट में रखा और तक्लीफ ही से जना और उस का पेट मे रहना और दूध छोडना ढाई वर्ष मे होता है, यहा तक कि जब खूब जवान होता और चालीस वर्ष को पहुंच जाता है, तो कहता है कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे तौफीक दे कि तूने जो एहसान मुझ पर और मेरे मा-बाप पर किए है, उन का शुक्रगुज़ार हू और यह कि नेक अमल करू, जिन को तू पसन्द करे और मेरे लिए मेरी औलाद मे इस्लाम (व तक्वा) दे। मैं तेरी तरफ रुजूअ करता हू और मैं फरमाबरदारो मे हू। (१५) यही लोग हैं, जिन के नेक अमल हम कुबूल करेगे और उन के गुनाहो से दरगुजर फरमाएगे, (और यही) जन्नत वालो मे (होंगे) (यह) सच्चा वायदा (है) जो उन से किया जाता था। (१६) और जिस शख्स ने अपने मां-बाप से कहा कि उफ ! उफ !! तुम मुझे यह बताते हो कि मैं (जमीन से) निकाला जाऊगा, हालाकि बहुत से लोग मुझ से पहले गुज़र चुके है और वे दोनो खुदा की जनाब में फरियाद करते (हुए कहते) थे कि कमबख्त ईमान ला। खुदा का वायदा सच्चा है, तो कहने लगा, यह तो पहले लोगो की कहानिया है।[1] (१७) यही वे लोग है, जिन के बारे मे जिन्नो और इसानो की (दूसरी) उम्मतो मे से, जो इन से पहले गुज़र चुकी, अज़ाब का वायदा तह्कीक हो गया। बेशक

---

१ यह उस का हाल है जो काफिर है और मा-बाप समझाते हैं ईमान की बात, नही समझता।

व लिकुल्लिन् द-र-जातुम्-मिम्मा अमिलू व लियुवफ्फि-यहुम् अअ्-मालहुम् व हुम् ला युज़्-लमून (१९) व यौ-म युअ्-रज़ुल्लजी-न क-फ़रू अ़लन्नारि अज़्-हब्तुम् तय्यिबातिकुम् फी ह़यातिकुमुद्दुन्या वस्तम्तअ्-तुम् बिहा फल्यौ-म तुज्ज़ौ-न अज़ाबल्-हूनि बिमा कुन्तुम् तस्तक्बिरू-न फिल्अर्ज़ि बिगैरिल्-ह़क्कि व बिमा कुन्तुम् तफ्सुकून ★ (२०) वज़्कुर् अख़ा आ़दिन् इज़् अन्ज़-र कौमहू बिल्-अह्काफ़ि व क़द् ख़-लतिन्नुज़ुरु मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही अल्ला तअ्-बुदू इल्लल्ला-ह इन्नी अख़ाफु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (२१) क़ालू अजिअ्-तना लितअ्-फिकना अ़न् आलिहतिना फअ्-तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन (२२) का-ल इन्नमल्-अिल्मु अिन्दल्लाहि व उबल्लिग़ुकुम् मा उर्सिल्तु बिही व लाकिन्नी अराकुम् कौमन् तज्-हलून (२३) फ-लम्मा रऔहु आ़रिज़म्-मुस्तक़्बि-ल औदियतिहिम् क़ालू हाज़ा आ़रिज़ुम्-मुम्तिरुना बल् हु-व मस्तअ्-जल्तुम् बिही रीहुन् फीहा अ़ज़ाबुन् अलीम (२४) तुदम्मिरु कुल्-ल शैइम्-बिअम्रि रब्बिहा फ़-अस्बहू ला युरा इल्ला मसाकिनुहुम् कज़ालि-क नज्ज़िल्-कौमल्-मुज्रिमीन (२५) व ल-क़द् मक्कन्नाहुम् फीमा इम्मक्कन्ना-कुम् फ़ीहि व ज-अ़ल्ना लहुम् सम्-अ़ंव्-व अब्सारंव्-व अफ्इ-द-तन् फमा अग्ना अ़न्हुम् सम्अुहुम् व ला अब्सारुहुम् व ला अफ्इदतुहुम् मिन् शैइन् इज़् कानू यज्-हदू-न बिआयातिल्लाहि व हा-क बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (२६) व ल-क़द् अह्-लक्ना मा हौलकुम् मिनल्कुरा व सर्रफ़्नल् - आयाति ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (२७) फलौला न-स़-रहुमुल् - लज़ीनत्त - ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि कुर्बानन् आलि-ह-तन् बल् ज़ल्लू अ़न्हुम् व ज़ालि - क इफ़्कुहुम् व मा कानू यफ़्तरून (२८)

مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خٰسِرِينَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوا
وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا
عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ
تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ۝ وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ
وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللّٰهَ
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ
آلِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ
عِنْدَ اللّٰهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلٰكِنِّي أَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ۝
فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هٰذَا عَارِضٌ مُمْطِرُنَا
بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ
بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرٰى إِلَّا مَسٰكِنُهُمْ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِينَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيمَا إِنْ مَكَّنّٰكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ
سَمْعًا وَأَبْصٰرًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصٰرُهُمْ وَلَا
أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا
الْآيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ

★रु २/२ आ १० ★रु ३/३ आ ६

वे नुक्सान उठाने वाले थे। (१८) और लोगो ने जैसे काम किए होगे, उन के मुताबिक दर्जे होंगे, (गरज यह है) कि उन को उन के आमाल का पूरा बदला दे और उन का नुक्सान न किया जाए। (१९) और जिस दिन काफिर दोज़ख के सामने किए जाएगे, (तो कहा जाएगा कि) तुम अपनी दुनिया की जिंदगी मे लज्ज़ते हासिल कर चुके और उन से फायदा उठा चुके, सो आज तुम को ज़िल्लत का अज़ाब है, (यह) इस की सजा (है) कि तुम ज़मीन मे ना-हक घमड किया करते थे और इस की कि बद-किरदारी करते थे। (२०)★

और (कौमे) आद के भाई (हूद) को याद करो, कि जब उन्हो ने अपनी कौम को अह्काफ की सर-ज़मीन मे हिदायत की और उन से पहले और पीछे भी हिदायत करने वाले गुजर चुके थे कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करो। मुझे तुम्हारे बारे मे बडे दिन के अजाब का डर लगता है। (२१) कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम को हमारे माबूदो से फेर दो। अगर सच्चे हो, तो जिस चीज से हमे डराते हो, उसे हम पर ले आओ। (२२) उन्हो ने कहा कि (इस का) इल्म तो खुदा ही को है और मैं तो जो (हुक्म) दे कर भेजा गया हू, वह तुम्हे पहुचा रहा हू, लेकिन मैं देखता हू कि तुम लोग नादानी मे फस रहे हो। (२३) फिर जब उन्हो ने उस (अजाब) को देखा कि बादल (की सूरत मे) उन के मैदानो की तरफ आ रहा है, तो कहने लगे, यह तो बादल है, जो हम पर बरस कर रहेगा, (नही,) बल्कि (यह) वह चीज है, जिस के लिए तुम जल्दी करते थे यानी आधी, जिस मे दर्द देने वाला अजाब भरा हुआ है, (२४) हर चीज़ को अपने परवरदिगार के हुक्म से तबाह किए देती है, तो वे ऐसे हो गये कि उन के घरो के सिवा कुछ नजर ही न आता था। गुनाहगार लोगो को हम इसी तरह सजा दिया करते है। (२५) और उनको हम ने ऐसी कुदरते दे दी थी, जो तुम लोगो को नही दी और उन्हे कान और आखे और दिल दिए थे, तो जब कि वे खुदा की आयतो से इकार करते थे, तो न तो उन के कान ही उन के कुछ काम आ सके और न आखे और न दिल और जिस चीज का मज़ाक उडाया करते थे, उस ने उन को आ घेरा। (२६)★

और तुम्हारे आस-पास की बस्तियो को हमने हलाक कर दिया और बार-बार (अपनी) निशानिया ज़ाहिर कर दी, ताकि वे रुजूअ करे। (२७) तो जिन को उन लोगो ने (खुदा की) नज़दीकी के लिए खुदा के सिवा माबूद बनाया था, उन्हो ने उन की क्यो मदद न की? बल्कि वे उन (के सामने) से गुम हो गये और यह उन का झूठ था और यही वे झूठ गढा करते थे। (२८)

★रु २/२ आ १० ★रु ३/३ आ ६

व इज् स़-रफ़्ना इलै-क न-फ-रम्-मिनल्-जिन्नि यस्तमिअूनल्-क़ुर्आ-न फ-लम्मा ह-ज़रूहु क़ालू अन्सितू फ-लम्मा कुजि-य वल्लौ इला कौमिहिम् मुन्जिरीन (२६) कालू या कौमना इन्ना समिअ-ना किताबन् उन्जि-ल मिम्बअ्-दि मूसा मुसद्-दि-कल्लिमा बै-न यदैहि यह्दी इलल्हक्कि व इला तरीक़िम्-मुस्तक़ीम (३०) या कौमना अजीबू दाअि-यल्लाहि व आमिनू बिही यग्फिर-लकुम् मिन् जुनूबिकुम् व युजिर्कुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (३१) व मल्ला युजिब् दाअि-यल्लाहि फलै-स बिमुअ्-जिज़िन् फिल्अर्जि व लै-स लहू मिन् दूनिही औलियाउ उलाइ-क फ़ी जलालिम्-मुबीन (३२) अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लजी ख़-ल-कस्समा-वाति वलअर्-ज व लम् यअ्-य बिखल्किहिन-न बिक़ादिरिन् अला अय्युह्यि-यल्-मौता बला इन्नहू अला कुल्लि शैइन् कदीर (३३) व यौ-म युअ्-रज़ुल्लज़ी-न क-फ़रू अलन्नारि अलै-स हाज़ा बिल्हक़्क़ि कालू बला व रब्बिना क़ा-ल फज़ूक़ुल्-अज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फुरून (३४) फ़स्बिर् कमा स़-ब-र उलुल्-अ़ज़्मि मिनर्रुसुलि व ला तस्तअ-जिल् लहुम् क-अन्नहुम् यौ-म यरौ-न मा यूअदू-न लम् यल्बसू इल्ला साअ़तम्-मिन् नहारिन् बलागुन् फ-हल् युह्लकु इल्लल् - कौमुल् - फ़ासिकून ★ ●(३५)

اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝
وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا
اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا
سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ
اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا
بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَنْ لَّا
يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ
اَوْلِيَاۗءُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۭ
بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَي
النَّارِ ۭ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا
تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ۭ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً
مِّنْ نَّهَارٍ ۭ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝
سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ

४७ सूरतु मुहम्मदिन् ६५

(मदनी) इस सूर मे अ़रबी के २४७५ अक्षर, ५५८ शब्द, ३८ आयतें और ४ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अल्लजी-न क-फरू व स़द्दू अ़न् सबीलिल्लाहि अ-ज़ल्-ल अअ्-मालहुम् (१)

★रु ४/४ आ ६ ●रुकूअ़ १/४

और जब हमने जिन्नो मे से कई शख्स तुम्हारी तरफ मुतवज्जह किये कि कुरआन सुने, जब वे उस के पास आए, तो (आपस मे) कहने लगे कि खामोश रहो। जब (पढना) तमाम हुआ तो अपनी बिरादरी के लोगो मे वापस गये कि (उन को) नसीहत करे। (२९) कहने लगे कि ऐ कौम! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है, जो (किताबे) इस से पहले (नाज़िल हुई) है, उन की तस्दीक करती है (और) सच्चा (दीन) और सीधा रास्ता बताती है। (३०) ऐ क़ौम! खुदा की तरफ बुलाने वाले की बात को कुबूल करो और उस पर ईमान लाओ। खुदा तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और तुम्हे दुख देने वाले अज़ाब से पनाह मे रखेगा। (३१) और जो शख्स खुदा की तरफ बुलाने वाले की बात कुबूल न करेगा, तो वह ज़मीन मे (खुदा को) आजिज नही कर सकेगा और न उस के सिवा उस के हिमायती होगे। ये लोग खुली गुमराही मे है। (३२) क्या उन्हो ने नही समझा कि जिस खुदा ने आसमानो और जमीन को पैदा किया और उन के पैदा करने से थका नही, वह इस (बात) पर भी कुदरत रखता है कि मुर्दो को ज़िदा कर दे हा, (हा,) वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (३३) और जिस दिन इकार करने वाले आग के सामने किए जाएगे, क्या यह हक नही? तो कहेगे, क्यो नही, हमारे परवरदिगार की कसम (हक है।) हुक्म होगा कि तुम जो (दुनिया मे) इकार किया करते थे, (अब) अजाब के मज़े चखो। (३४) पस (ऐ मुहम्मद!) जिस तरह और बुलद हिम्मत पैगम्बर सब्र करते रहे है, उसी तरह तुम भी सब्र करो और उन के लिए (अजाब) जल्दी न मागो। जिस दिन ये उस चीज को देखेगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, तो (ख्याल करेगे कि) गोया (दुनिया मे) रहे ही न थे, मगर घडी भर दिन। यह (कुरआन) पैगाम है, सो (अब) वही हलाक होगे जो नाफरमान थे। (३५) ★ ●

४७ सूरः मुहम्मद ९५

सूर. मुहम्मद मदनी है और इस मे ३८ आयते और चार रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जिन लोगो ने कुफ्र किया और (औरो को) खुदा के रास्ते से रोका, खुदा ने उन के आमाल

★रु. ४/४ आ ९ ● रुकूअ १/४

वल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व आमनू बिमा नुज्जि-ल अ़ला मुहम्मदिंव-व हुवल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् कफ्फ-र अन्हुम् सय्यिआतिहिम् व अस्-ल-ह बालहुम् (२) जालि-क बि-अन्नल्लजी-न क-फ़रुत्त-बअुल्-बाति-ल व अन्नल्लजी-न आमनुत्त-बअुल्-हक़्-क मिर्-रब्बिहिम् b कजालि-क यज्रिबुल्लाहु लिन्नासि अम्सालहुम् (३) फ-इजा

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ
كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا
الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝ فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتّٰٓى اِذَآ
اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ
الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۚ ذٰلِكَ ۭ وَلَوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا
بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝
سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۡ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۝
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝ اِنَّ
اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ
مَثْوًى لَّهُمْ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ
اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ

लकीतुमुल्लजी-न क-फ़रू फ-जर्-बर्रिकाबि हत्ता इजा अस्खन्तुमूहुम् फशुद्दुल्-वसा-क़ फ़-इम्मा मन्नम्बअ्-दु व इम्मा फिदा-अन् हत्ता त-ज-अल्-हर्बु औजारहा जालि-क b व लौ यशा-उल्लाहु लन्त-स-र मिन्हुम् व लाकिल्लियब्लु-व बअ्-जकुम् बिबअ्-जिन् b वल्लजी-न कुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि फलय्युज़िल-ल अअ्-मालहुम् (४) स-यह्दीहिम् व युस्लिहु बालहुम् (५) व युद्खिलुहुमुल्-जन्न-त अर्र-फ़हा लहुम् (६) या अय्युहल्लजी-न आमनू इन् तन्सुरुल्ला-ह यन्सुर्-कुम् व युसब्बित् अक्दामकुम् (७) वल्लजी-न क-फरू फ़-तअ्-सल्लहुम् व अ-जल्-ल अअ्-मालहुम् (८) जालि-क बिअन्नहुम् करिहू मा अन्ज-लल्लाहु फ-अह्-ब-त अअ्-मा-ल-हुम् (९) अ-फ-लम् यसीरू फिल्अर्जि फ़यन्ज़ुरू कै-फ का-न आक़िबतुल्लजी-न मिन् कब्लिहिम् b दम्म-रल्लाहु अलैहिम् व लिल्काफिरी-न अम्सालुहा (१०) जालि-क बि-अन्नल्ला-ह मौलल्लजी-न आमनू व अन्नल्-काफ़िरी-न ला मौला लहुम् ★ (११) इन्नल्ला-ह युद्-खिलुल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु b वल्लजी-न क-फ़रू य-त-मत्तअू-न व यअ्कुलू-न कमा तअ्कुलुल्-अन्आमु वन्नारु मस्वल्-लहुम् (१२) व क-अय्यिम्-मिन् कर्-यतिन् हि-य अशद्दु क़ुव्वतम्-मिन् कर्यति-कल्लती अख़्-र-जत्-क अह्-लक्नाहुम् फ़ला नासि-र लहुम् (१३) अ-फ़ मन् का-न अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बिही क-मन् जुय्यि-न लहू सूउ अ-मलिही वत्त-ब-अू अह्-वा-अहुम् (१४)

बर्बाद कर दिए। (१) और जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे और जो (किताब) मुहम्मद पर नाजिल हुई, उसे मानते रहे और वह उन के परवरदिगार की तरफ से बर-हक है, उन से उन के गुनाह दूर कर दिए और उन की हालत सवार दी। (२) यह (अमल की बर्बादी और इस्लाहे हाल) इसलिए है कि जिन लोगो ने कुफ्र किया, उन्हो ने झूठी बात की पैरवी की और जो ईमान लाए, वे अपने परवरदिगार की तरफ मे (दीने) हक के पीछे चले। इसी तरह खुदा लोगो मे उन के हालात बयान फरमाता है। (३) जब तुम काफिरो से भिड जाओ, तो उन की गरदनें उडा दो, यहा तक कि जब उन को खूब कत्ल कर चुको तो (जो जिंदा पकडे जाए, उन को) मज़बूती से कैद कर लो, फिर इस के बाद या तो एहसान रख कर छोड देना चाहिए या कुछ माल ले कर, यहा तक कि (मुख़ालिफ फरीक) लडाई (के) हथियार (हाथ से) रख दे। यह (हुक्म याद रखो) और अगर खुदा चाहता तो (और तरह) उन से बदले ले लेता, लेकिन उस ने चाहा कि तुम्हारी आज़माइश एक (को) दूसरे मे (लडवा कर) करे और जो लोग खुदा की राह मे मारे गये, उन के अमलों को हरगिज़ बर्बाद नही करेगा। (४) (बल्कि) उनको सीधे रास्ते पर चलाएगा और उनकी हालत दुरुस्त कर देगा। (५) और उन को बहिश्त मे, जिस से उन को पहचनवा रखा है, दाखिल करेगा। (६) ऐ अह्ले ईमान! अगर तुम खुदा की मदद करोगे, तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा और तुम को साबित कदम रखेगा। (७) और जो काफिर है, उन के लिए हलाकत है और वह उन के आमाल को बर्बाद कर देगा। (८) यह इसलिए कि खुदा ने जो चीज नाजिल फरमायी, उन्हो ने उस को नापसन्द किया, तो खुदा ने उन के आमाल अकारथ कर दिए। (९) क्या उन्हो ने मुल्क मे सैर नही की, ताकि देखते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अजाम कैसा हुआ? खुदा ने उन पर तबाही डाल दी और इसी तरह का (अजाब) उन काफिरो को होगा। (१०) यह इसलिए कि जो मोमिन है, उन का खुदा कारसाज है और काफिरो का कोई कारसाज नही। (११)★

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को खुदा बहिश्तो मे, जिन के नीचे नहरें बह रही है, दाखिल फरमाएगा। और जो काफिर है, वे फायदे उठाते है और (इस तरह) खाते है, जैसे हैवान खाते है और उन का ठिकाना दोजख है। (१२) और बहुत-सी बस्तिया तुम्हारी बस्ती मे जिस (के बाशिदो) ने तुम्हे (वहा से) निकाल दिया, जोर व ताकत मे कही बढ कर थी। हमने उन का सत्यानाश कर दिया और उन का कोई मददगार न हुआ। (१३) भला जो शख्स अपने परवरदिगार (की मेहरबानी) से खुले रास्ते पर (चल रहा) हो, वह उन की तरह (हो सकता) है जिन के बुरे आमाल उन्हे अच्छे कर के दिखाए जाए और जो अपनी ख्वाहिशो की पैरवी करें। (१४)

∴मु अ़ि मु ता ख़ १३ ★रु १/५ आ ११

म-सलुल्-जन्नतिल्लती वुअिदल्-मुत्तक़ू-न फ़ीहा अन्हारुम्-मिम्-मा-इन् ग़ैरि आसिनिन् व अन्हारुम्-मिल्-ल-बनिल्-लम् य-त-गय्यर् तअ्-मुहू व अन्हारुम्-मिन् ख़म्रिल्-लज्ज तिल्-लिश्शारिबीन व अन्हारुम्-मिन् अ-सलिम्-मुसफ्फ़न् व लहुम् फ़ीहा मिन् कुल्लिस्स-मराति व मग्फि-रतुम्-मिर्रब्बिहिम् क-मन् हु-व ख़ालिदुन् फ़िन्नारि व सूक़ू मा-अन् हमीमन् फ़-क़त्त-अ अम्आ-अहुम् (१५) व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअु इलै-क हत्ता इज़ा ख़-रजू मिन् अिन्दि-क क़ालू लिल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्-म माज़ा क़ा-ल आनिफ़न् उलाइ-कल्लज़ी-न त-ब-अल्लाहु अला क़ुलूबिहिम् वत्त-बअू अह्वा-अहुम् (१६) वल्लज़ीनह-तदौ ज़ा-दहुम् हुदव्-व आताहुम् तक़्-वाहुम् (१७) फ़-हल् यन्ज़ुरू-न इल्लस्सा-अ-त अन् तअ्-ति-यहुम् बग़-त-तन् फ़-क़द् जा-अ अश-रातुहा फ़-अन्ना लहुम् इज़ा जा-अत्हुम् ज़िक्राहुम् (१८) फ़अ्-लम् अन्नहू ला इला-ह इल्लल्-लाहु वस्तग्फ़िर् लिज़म्बि-क व लिल्मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति वल्लाहु यअ्-लमु मु-त-क़ल्ल-बकुम् व मस्वाकुम् ★ (१९) व यक़ूलुल्-लज़ी-न आमनू लौला नुज़्ज़िलत् सू-रतुन् फ़-इज़ा उन्ज़िलत् सूरतुम्-मुह्-क-मतु व्-व ज़ुकि-र फ़ीहल्क़ितालु रऐतल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुंय्यन्ज़ुरू-न इलै-क न-ज़-रल्-मग़्शिय्यि अलैहि मिनल्मौति फ़-औला लहुम् (२०) ता-अतुंव्-व क़ौलुम्-मअ्-रूफ़ुन् फ़-इज़ा अ-ज़-मल्-अम्रु फ़लौ स-दक़ुल्ला-ह लका-न ख़ैरल्लहुम् (२१) फ़-हल् असैतुम् इन् त-वल्लैतुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व तुक़त्तिअू अर्-हामकुम् (२२) उलाइकल्लज़ी-न ल-अ-नहुमुल्लाहु फ़-असम्महुम् व अअ्-मा अब्सा-रहुम् (२३) अ फ़-ला य-त-दब्बरूनल् - क़ुर्आ-न अम् अला क़ुलूबिन् अक़्-फ़ालुहा (२४)

كمن زين له سوء عمله واتبعوا أهواءهم ۝ مثل الجنة التي وعد
المتقون فيها أنهار من ماء غير آسن وأنهار من لبن لم يتغير طعمه
وأنهار من خمر لذة للشاربين وأنهار من عسل مصفى ولهم
فيها من كل الثمرات ومغفرة من ربهم كمن هو خالد في النار و
سقوا ماء حميما فقطع أمعاءهم ۝ ومنهم من يستمع إليك حتى إذا
خرجوا من عندك قالوا للذين أوتوا العلم ماذا قال آنفا أولئك
الذين طبع الله على قلوبهم واتبعوا أهواءهم ۝ والذين اهتدوا زادهم
هدى وآتاهم تقواهم ۝ فهل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة
فقد جاء أشراطها فأنى لهم إذا جاءتهم ذكراهم ۝ فاعلم أنه لا إله
إلا الله واستغفر لذنبك وللمؤمنين والمؤمنات والله يعلم متقلبكم
ومثواكم ۝ ويقول الذين آمنوا لولا نزلت سورة فإذا أنزلت سورة
محكمة وذكر فيها القتال رأيت الذين في قلوبهم مرض ينظرون
إليك نظر المغشي عليه من الموت فأولى لهم ۝ طاعة وقول
معروف فإذا عزم الأمر فلو صدقوا الله لكان خيرا لهم ۝ فهل
عسيتم إن توليتم أن تفسدوا في الأرض وتقطعوا أرحامكم ۝
أولئك الذين لعنهم الله فأصمهم وأعمى أبصارهم ۝ أفلا يتدبرون
القرآن أم على قلوب أقفالها ۝ إن الذين ارتدوا على أدبارهم

★रु २/६ आ ८

जन्नत जिस का परहेजगारो से वायदा किया जाता है, उस की खूबी यह है कि इस मे पानी की नहरे है, जो बू नही करेगा और दूध की नहरे है, जिस का मजा नही बदलेगा और शराब की नहरे है, जो पीने वालो के लिए (सरासर) लज्जत है और शहदे मुसफ्फा की नहरे है (जो मिठास ही मिठास है) और (वहा) उन के लिए हर किस्म के मेवे है और उन के परवरदिगार की तरफ से मग्फिरत है। (क्या ये परहेजगार) उन की तरह (हो सकते) हैं जो हमेशा दोजख मे रहेगे और जिन को खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, तो उन की अतडियो को काट डालेगा। (१५) और उन मे कुछ ऐसे भी है, जो तुम्हारी तरफ कान लगाए रहते है, यहा तक कि (सब कुछ सुनते है, लेकिन) जब तुम्हारे पास से निकल कर चले जाते है, तो जिन लोगो को इल्म (दीन) दिया गया है, उन से कहते हैं कि (भला) अभी उन्हो ने क्या कहा था ? यही लोग है, जिन के दिलो पर खुदा ने मुहर लगा रखी है और वे अपनी ख्वाहिशो के पीछे चल रहे है। (१६) और जो लोग हिदायत पाए हुए है, वह उन को और हिदायत बख्शता है और परहेजगारी देता है। (१७) अब तो ये लोग कियामत ही को देखते है कि यकायक उन पर आ वाकेअ हो, सो उस की निशानिया (वकूअ मे आ चुकी हैं।) फिर जब उन पर आ नाजिल होगी, उस वक्त उन्हे नसीहत कहा (मुफीद हो सकेगी ?) (१८) पस जान रखो कि खुदा के सिवा कोई माबूद नही और अपने गुनाहो की माफी मागो और (और) मोमिन मर्दो और मोमिन औरतों के लिए भी और खुदा तुम लोगो के चलने-फिरने और ठहरने को जानता है। (१६)✱

और मोमिन लोग कहते है कि (जिहाद की) कोई सूर क्यो नाजिल नही होती ? लेकिन जब कोई साफ मानी की सूर नाजिल हो और उस मे जिहाद का बयान हो, तो जिन लोगो के दिलो मे (निफाक का) मर्ज है, तुम उन को देखो कि तुम्हारी तरफ इस तरह देखने लगे, जिस तरह किसी पर मौत की बेहोशी (छा) रही हो, सो उन के लिए खराबी है। (२०) (खूब काम तो) फरमांबरदारी और पसदीदा बात कहना (है,) फिर जब (जिहाद की) बात हो गयी, तो अगर ये लोग खुदा से सच्चे रहना चाहते तो उन के लिए बहुत अच्छा होता। (२१) (ऐ मुनाफिको !) तुम से अजब नही कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो मुल्क मे खराबी करने लगो और अपने रिश्तो को तोड़ डालो। (२२) यही लोग है, जिन पर खुदा ने लानत की है और उन (के कानो) को बहरा और (उन की) आखो को अंधा कर दिया है। (२३) भला ये लोग कुरआन मे गौर नही करते या

★रु २/६ आ ८

इन्नल्लज़ीनर्तद्दू अला अद्बारिहिम् मिम्बअ्-दि मा त-बय्य-न लहुमुल्हुदश्शैतानु सव्व-ल लहुम् व अम्ला लहुम् (२५) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लिल्लज़ी-न करिहू मा नज़्ज़-लल्लाहु सनुतीअुकुम् फ़ी बअ्-ज़िल्-अम्रि व ल्लाहु यअ्-लमु इसरा-रहुम् (२६) फ़कै-फ इज़ा त-वफ़्फ़त्-हुमुल्-मलाइकतु यज़्रिबू-न वुजू-हहुम् व अद्बारहुम् (२७) ज़ालि-क बिअन्नहुमुत्त-ब-अू मा अस्ख़-तल्ला-ह व करिहू रिज़्-वानहू फ़-अह्-ब-त अअ्-मालहुम् ★ (२८) अम् हसिबल्-लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् अल्-लय्युख़्रि-जल्लाहु अज़्-ग़ानहुम् (२९) व लौ नशाउ ल-अरैनाकहुम् फ़-ल-अरफ़्-त-हुम् बिसीमाहुम् व ल-तअ्-रिफ़न्नहुम् फ़ी लह्निल्-क़ौलि वल्लाहु यअ्-लमु अअ्-मालकुम् (३०) व ल-नब्लुवन्-नकुम् हत्ता नअ्-ल-मल्-मुजाहिदी-न मिन्कुम् वस्साबिरी-न व नब्लु-व अख़्बारकुम् (३१) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि व शाक़्क़ुर्रसू-ल मिम्बअ्-दि मा त-बय्य-न लहुमुल्हुदा लय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन् व सयुह्बितु अअ्-मालहुम् (३२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व अतीअुर-रसू-ल व ला तुब्तिलू अअ्-मालकुम् (३३) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि सुम्-म मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़लंय्यग-फ़ि-रल्लाहु लहुम् (३४) फ़ला तहिनू व तद्अू इलस्सल्मि व अन्तुमुल्-अअ्-लौ-न वल्लाहु म-अकुम् व लय्यति-रकुम् अअ्-मालकुम् (३५) इन्नमल्-हयातुद्दुन्या लअिबु व्-व लह्वुन् व इन् तुअ्मिनू व तत्तक़ू युअ्तिकुम् उजूरकुम् व ला यस्अलकुम् अम्वालकुम् (३६) इ य्यस्अलकुमूहा फ़-युह्फ़िकुम् तब्ख़लू व युख़्रिज् अज्ग़ानकुम् (३७) हाअन्तुम् हाउलाइ तुद्औ-न लितुन्-फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़मिन्कुम् मय्यब्ख़लु व मय्यब्ख़ल् फ़-इन्नमा यब्ख़लु अन् नफ़्सिही वल्लाहुल्-ग़निय्यु व अन्तुमुल्-फ़ु-क़राउ व इन् त-त-वल्लौ यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ैरकुम् सुम्-म ला यकूनू अम्सालकुम् ★ (३८)

مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ وَاَمْلٰى لَهُمْ ۝
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ۝ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ
وَاَدْبَارَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ
اَعْمَالَهُمْ ۝ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ
اَضْغَانَهُمْ ۝ وَلَوْ نَشَاۗءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ
لَحْنِ الْقَوْلِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ
مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ وَنَبْلُوَا اَخْبَارَكُمْ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَاۗقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى لَنْ
يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۝ فَلَا تَهِنُوْا
وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ
اَعْمَالَكُمْ ۝ اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ
اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝ اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَ
يُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ۝ هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۗءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ

★रु ३/७ आ ९ ★रु ४/८ आ १०

(उन के) दिलो पर ताले लग रहे है। (२४) जो लोग हिदायत की राह जाहिर होने के बाद पीठ दे कर फिर गये, शैतान ने (यह काम) उन को मजा कर दिखाया और उन्हे लम्बी (उम्र का वायदा) दिया। (२५) यह इस लिए कि जो लोग खुदा की उतारी हुई (किताब) से वेजार है, यह उन से कहते है कि कुछ कामो मे हम तुम्हारी बात भी मानेंगे और खुदा उन के छिपे मश्विरो को जानता है। (२६) तो उस वक्त (उन का) कैसा (हाल) होगा, जब फरिश्ते उन की जान निकालेंगे (और) उन के मुहो और पीठो पर मारते जाएगे। (२७) यह इस लिए कि जिस चीज से खुदा ना-खुश है, ये उस के पीछे चले और उस की खुश्नूदी को अच्छा न समझे, तो उस ने भी उन के अमलो को वर्बाद कर दिया। (२८)★

क्या वे लोग जिन के दिलो मे बीमारी है, यह ख्याल किए हुए है कि खुदा उन के कीनो को जाहिर नही करेगा? (२९) और अगर हम चाहते तो वे लोग तुम को दिखा भी देते और तुम उन को उन के चेहरो ही मे पहचान लेते और तुम उन्हे (उन के) बात-चीत के अन्दाज ही से पहचान लोगे और खुदा तुम्हारे आमाल को जानता है। (३०) और हम तुम लोगो को आजमाएगे, ताकि जो तुम मे लडाई करने वाले और साबित कदम रहने वाले है, उन को मालूम करे और तुम्हारे हालात जाच ले। (३१) जिन लोगो को सीधा रास्ता मालूम हो गया (और) फिर उन्होने कुफ्र किया और (लोगो को) खुदा की राह मे रोका और पैगम्बर की मुखालफत की, वे खुदा का कुछ भी बिगाड नही सकेंगे और खुदा उन का सब किया-कराया अकारथ कर देगा। (३२) मोमिनो! खुदा का इर्शाद मानो और पैगम्बर की फरमाबरदारी करो और अपने अमलो को वर्बाद न होने दो। (३३) जो लोग काफिर हुए और खुदा के रास्ते से रोकते रहे, फिर काफिर ही मर गये, खुदा उन को हरगिज नही बख्शेगा। (३४) तो तुम हिम्मत न हारो और (दुश्मन को) सुलह की तरफ न बुलाओ और तुम तो गालिब हो और खुदा तुम्हारे साथ है। वह हरगिज तुम्हारे आमाल को कम (और गुम) नही करेगा। (३५) दुनिया की जिंदगी तो सिर्फ खेल और तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओगे और परहेजगारी करोगे, तो वह तुम को तुम्हारा बदला देगा और तुम से तुम्हारा माल तलब नही करेगा। (३६) अगर वह तुम से माल तलब करे और तुम्हे तग करे तो तुम बुख्ल (कजूसी) करने लगो और वह (बुख्ल) तुम्हारी बद-नीयती जाहिर कर के रहे। (३७) देखो, तुम वे लोग हो कि खुदा की राह मे खर्च करने के लिए बुलाए जाते हो तो तुम मे ऐसे शख्स भी है, जो बुख्ल करने लगते है और जो बुख्ल करता है अपने आप से बुख्ल करता है और खुदा वे-नियाज है और तुम मुहताज। और अगर तुम मुह फेरोगे, तो वह तुम्हारी जगह और लोगो को ले आएगा और वे तुम्हारी तरह के नही होगे। (३८)★

★रु ३/७ आ ९ ★रु ४/८ आ १०

४८ सूरतुल-फ़त्हि १११

(मदनी) इस सूर. मे अरबी के २५५५ अक्षर, ५६८ शब्द, २९ आयतें और ४ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इन्ना फ़-तह्ना ल-क फ़त्हम्-मुबीनल-॥ (१) -लि-यग्फ़ि-र ल-कल्लाहु मा त-कद्-द-म मिन् जम्बि-क व मा त-अख़्ख़-र व युतिम्-म निअ्-म-तहू अलै-क व यह्दि-य-क सिरातम्-मुस्तकीमंव्-॥ (२) -व यन्सु-र-कल्लाहु नस्रन् अज़ीज़ा (३) हुवल्लज़ी अन्ज-लस्सकी-न-त फी क़ुलूबिल्-मुअ्मिनी-न लि-यज्दादू ईमानम्-म-अ ईमानि-हिम्ᵇ व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़िᵇ व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा॥ (४) लियुद्ख़ि-लल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व युकफ़्फ़ि-र अन्हुम् सय्यिआतिहिम्ᵇ व का-न ज़ालि-क अिन्दल्लाहि फौज़न् अज़ीमंव-॥ (५) -व युअज़्ज़ि-बल्-मुनाफिकी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल्मुश्रिकी-न वल्-मुश्रिकातिज़्-ज़ान्नी-न बिल्-लाहि ज़न्नस्सौइᵇ अलैहिम् दा-इरतुस्सौइᶜ व ग़ज़िबल्लाहु अलैहिम् व ल-अ-नहुम् व अ-अद्-द लहुम् ज-हन्न-मᵇ व सा-अत् मसीरा (६) व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़िᵇ व कानल्लाहु अज़ीज़न् हकीमा (७) इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदव् - व मुबश्शिरंव - व नज़ीरल-॥ (८) -लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही व तुअज़्ज़िरूहु व तुवक़्क़िरूहुᵇ व तुसब्बिहूहु बुक-र - तंव-व असीला (९) इन्नल्लज़ी-न युबायिअू-न-क इन्नमा युबायिअूनल्ला-हᵇ यदुल्लाहि फौ-क ऐदी-हिम्ᶜ फ़-मन् न-क-स फ़-इन्नमा यन्कुसु अला नफ़्सिहीᶜ व मन् औफ़ा बिमा आह - द अलैहुल्ला - ह फ़ - स - युअ्तीहि अज्रन् अज़ीमा ★(१०)

وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ۝

سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۙ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ
وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا
عَزِيْزًا ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا
اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۗ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا
حَكِيْمًا ۙ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا
عَظِيْمًا ۙ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ
الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۗ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ
وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۗ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا
وَّنَذِيْرًا ۙ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ۗ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً
وَّاَصِيْلًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ۗ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ
فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ
فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ

★रु १/६ आ १०

४८ सूरः फ़त्ह् १११

सूर फत्ह् मदनी है, इस मे २६ आयतें और चार रुकूअ है ।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो वडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम को फत्ह् दी, फत्ह् भी साफ और खुली हुई ।[1] (१) ताकि खुदा तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह बख़्श दे और तुम पर अपनी नेमत पूरी करदे और तुम को सीधे रास्ते चलाए। (२) और खुदा तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे। (३) वही तो है, जिसने मोमिनो के दिलो पर तसल्ली फरमायी, ताकि उनके ईमान के साथ और ईमान बढे और आसमानो और जमीन के लश्कर (सब) खुदा ही के हैं और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (४) (यह) इस लिए कि वह मोमिन मर्दो और औरतो को बहिश्तो मे, जिन के नीचे नहरे वह रही है, दाखिल करे। वे उस मे हमेशा रहेगे और उन मे उन के गुनाहो को दूर कर दे और यह खुदा के नजदीक बडी कामियाबी हैं। (५) और (इस लिए कि) मुनाफिक मर्दो और मुनाफिक औरतो और मुश्रिक मर्दो और मुश्रिक औरतो को, जो खुदा के हक मे बुरे-बुरे ख्याल रखते हैं, अज़ाब दे। उन्ही पर बुरे हादसे वाकेअ हो और खुदा उन पर गुस्से हुआ और उन पर लानत की और उन के लिए दोज़ख़ तैयार की और वह बुरी जगह है। (६) और आसमानो और जमीन के लश्कर खुदा ही के है और खुदा गालिब (और) हिक्मत वाला है। (७) (और) हम ने (ऐ मुहम्मद !) तुम को हक जाहिर करने वाला और खुशखबरी सुनने वाला और खौफ दिलाने वाला (बना कर) भेजा है। (८) ताकि (मुसलमानो !) तुम लोग खुदा पर और उस के पैगम्बर पर ईमान लाओ और उस की मदद करो और उस को बुजुर्ग समझो और सुबह व शाम उस की तस्बीह करते रहो। (९) जो लोग तुम से बैअत करते है, वे खुदा से बैअत करते है। खुदा का हाथ उन के हाथो पर है। फिर जो अह्द को तोडे, तो अह्द तोडने का नुक्सान उसी को है और जो उस बात को, जिस का उस ने खुदा से अह्द किया है, पूरा करे, तो वह उसे बहुत जल्द बडा बदला देगा। (१०) ★

---

१ फत्ह् के बारे मे इख्तिलाफ है कि इस से क्या मुराद है। अक्सर का कौल यह है कि इस से मुराद हुदैबिया का समझौता है, क्योंकि कभी समझौते का नाम जीत भी रख लेते हैं। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि तुम तो मक्के की फत्ह् को फत्ह् ख्याल करते हो और हम हुदैबिया के समझौते को फत्ह् समझते हैं। बुखारी मे हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि तुम लोग मक्का की फत्ह् को फत्ह् गिनते हो और हम बैअ-तुर्रिज्वान को, जो हुदैबिया के दिन हुई, फत्ह् समझते है। इस समझौते के वाकिआत इस तरह हैं कि जनाबे रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सन् ०६ हि० मे हुदैबिया जाने से पहले ख्वाब देखा कि गोया आप ने और आप के अस्हाब ने सर मुडवाया और बाल कटवाए। यह ख्वाब आप ने अस्हाब को सुनाया तो यह ख्याल कर के खुश हुए कि इसी साल मक्के मे दाखिल होगे, तो आप बैतुल्लाह् की ज़ियारत और उमरे की नीयत से मक्के को रवाना हुए। जब अस्फान मे पहुचे तो आप को बशीर बिन सुफियान ने खबर दी कि आप की रवानगी का हाल सुन कर कुरैश बडी फौज के साथ निकले है और उन्हो ने अह्द किया है कि ऐसा हरगिज़ न होने पाए कि आप उन पर गालिब हो कर मक्के मे दाखिल हो और खालिद बिन वलीद भी उन के सवारो मे हैं जो कुराअे गमीम की तरफ आगे भेजा गया है तो आप ने फरमाया कि अब दो ही शक्ले है, या तो जिहाद कर के कामियाबी और

(शेष पृष्ठ ६७६ पर)

★रु १/६ आ १०

स-यक़ूलु ल-कल्-मुख़ल्लफ़ू-न मिनल्-अअ्-राबि श-ग़-लत्ना अम्-वालुना व अह्लूना फ़स्तग़्फ़िर् लना यक़ूलू-न बि-अल्सिनतिहिम् मा लै-स फ़ी कुलूबिहिम् कुल् फ़-मंय्यम्लिकु लकुम् मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द बिकुम् ज़र्रन् औ अरा-द बिकुम् नफ़्-अन् बल् कानल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा (११) बल् ज़-नन्तुम् अल्लय्यन्क़लिबर्-रसूलु वल्-मुअ्मिनू-न इला अह्लीहिम् अ-ब-दव्-व ज़ुय्यि-न ज़ालि-क फ़ी कुलूबिकुम् व ज़-नन्तुम् ज़न्नस्सौइ व कुन्तुम् क़ौमम्-बूरा (१२) व मल्लम् युअ्मिम्-बिल्लाहि व रसूलिही फ़-इन्ना अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न सअ़ीरा (१३) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि यग़्फ़िरु लिमंय्यशाउ व युअज़्ज़िबु मय्यशाउ व कानल्लाहु ग़फ़ूरर-रहीमा (१४) स-यक़ूलुल्-मुख़ल्लफ़ू-न इज़न्त-लक़्तुम् इला मग़ानि-म लितअ्ख़ुज़ूहा ज़रूना नत्तबिअ्-कुम् युरीदू-न अय्युबद्-दि-लू कलामल्लाहि क़ुल्लन् तत्तबिअूना कज़ालिकुम् क़ालल्लाहु मिन् क़ब्लु फ़-स-यक़ूलू-न बल् तह्सु-दूनना बल् कानू ला यफ़्क़हू-न इल्ला क़लीला (१५) क़ुल् लिल्-मुख़ल्लफ़ी-न मिनल्-अअ्-राबि स-तुद्अ़ौ-न इला क़ौमिन् उली बअ्सिन् शदीदिन् तुक़ातिलूनहुम् औ युस्लिमू-न फ़-इन् तुतीअ़ू युअ्तिकुमुल्लाहु अज-रन् ह-स-नन् व इन् त-त-वल्लौ कमा त-वल्लैतुम् मिन् क़ब्लु यु-अज़्ज़िब्कुम् अज़ाबन् अलीमा (१६) लै-स अ-लल्-अअ्-मा ह-र-जुंव्-व ला अ-लल्-अअ्-रजि ह-र-जुंव्-व ला अ-लल्मरीज़ि ह-रजुन् व मय्युति-अिल्ला-ह व रसूलहू युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व मंय्य-त-वल्-ल युअज़्ज़िब्हु अज़ाबन् अलीमा★●(१७) ल-क़द् रज़ियल्लाहु अनिल्-मुअ्मिनी-न इज् युबायिअ़ू-न-क तह्-तश्श-ज-रति फ़-अलि-म मा फ़ी कुलूबिहिम् फ़-अन्ज़-लस्-सकी-न-त अलैहिम् व असाबहुम् फ़त्-हन् क़रीबा (१८)

حٰمٓ ٢٦ — الفتح ٤٨

شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ
اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۗ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ
لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُوْرًا ﴿١٢﴾ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿١٣﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿١٤﴾ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا
ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۗ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ
قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۗ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ
اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥﴾ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ
بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا
حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦﴾
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۗ
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَ
مَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ
يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ

★रु २/१० आ ७ ● नि १/२

जो गवार पीछे रह गये, वे तुम से कहेगे कि हमको हमारे माल और बाल-बच्चो ने रोके रखा। आप हमारे लिए (खुदा से) बख्शिश मागे। ये लोग अपनी ज़ुबान से वह बात कहते है, जो उन के दिल मे नही है। कह दो कि अगर खुदा तुम (लोगो) को नुक्सान पहुचाना चाहे या तुम्हे फायदा पहुचाने का इरादा फरमाए, तो कौन है जो उस के सामने तुम्हारे लिए किमी बात का कुछ अख्तियार रखे ? (कोई नही,) बल्कि जो कुछ तुम करते हो, खुदा उसे जानता है। (११) बात यह है कि तुम लोग यह समझ बैठे थे कि पैगम्बर और मोमिन अपने बाल-बच्चो मे कभी लौट कर आने ही के नही और यही बात तुम्हारे दिलो को अच्छी मालूम हुई और (इसी वजह से) तुम ने बुरे-बुरे ख़्याल किए और (आखिरकार) तुम हलाकत मे पड गए। (१२) और जो शख्स खुदा पर और उस के पैगम्बर पर ईमान न लाए, तो हम ने (ऐसे) काफिरो के लिए आग तैयार कर रखी है। (१३) और आसमानों और ज़मीन की बादशाही खुदा ही की है। वह जिसे चाहे बख्शे और जिसे चाहे सजा दे और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (१४) जब तुम लोग गनीमत लेने चलोगे तो जो लोग पीछे रह गए थे, वे कहेंगे हमें भी इजाज़त दीजिए कि आप के साथ चले। ये चाहते है कि खुदा के कौल को बदल दें। कह दो कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नही चल सकते। इसी तरह खुदा नें पहले मे फरमा दिया है। फिर कहेंगे, (नही) तुम तो हम मे हसद रखते हो। बात यह है कि ये लोग समझते ही नही, मगर बहुत कम।' (१५) जो गवार पीछे रह गए थे, उन से कह दो कि तुम जल्द एक सख्त लडाकू कौम (से लडाई के) लिए बुलाए जाओगे। उन से तुम (या तो) जंग करते रहोगे या वे इस्लाम ले आएंगे, और अगर तुम हुक्म मानोगे तो खुदा तुम को अच्छा बदला देगा और अगर मुह फेर लोगे जैसे पहली बार फेरा था, तो वह तुम को बुरी तक्लीफ की सजा देगा। (१६) न तो अधे पर गुनाह है (कि लडाई के सफर से पीछे रह जाए) और न लगडे पर गुनाह है और न बीमार पर गुनाह है और जो शख्स खुदा और उस के पैगम्बर के फरमान पर चलेगा, खुदा उस को बहिश्त मे दाखिल करेगा जिनके तले नहरे बह रही है और जो मुह मोडेगा, उसे बुरे दुख की सजा देगा ★(१७) ●

(ऐ पैगम्बर!) जब मोमिन तुम से पेड के नीचे बैअत कर रहे थे, तो बहुत खुश हुआ और जो सच्चाई और खुलूस उन के दिलो मे था, वह उस ने मालूम कर लिया तो उन पर तसल्ली नाजिल

---

१ जब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत के छठे साल हुदैबिया मे लौट कर मदीना तशरीफ लाए, तो खुदा ने आप को फत्हे खैबर का वायदा दिया और वहा की गनीमतो के लिए उन्ही लोगो को खास फरमाया जो हुदैबिया मे आप के साथ थे, जब आप खैबर की तरफ तशरीफ ले चले, तो जो लोग हुदैबिया मे नही गये थे, उन्हो ने गनीमत के लालच से दर्ख्वास्त की कि हम को भी साथ ले चलिए। जवाब मिला कि तुम हमारे साथ चलो ही मत, क्योकि खैबर की गनीमत मे तुम लोगो का कुछ हिस्सा नही और खुदा का यही इर्शाद है। तो वे लोग कहने लगे कि खुदा ने तो ऐसा नही कहा होगा। यो कहो कि तुम को हम से हसद है और सारी हसद यह कि तुम हमें ग़नीमत मे शरीक नही करना चाहते। खुदा ने फरमाया कि ये अहमक लोग हैं, उन को इन बातो के समझने की अक्ल ही नही।

व मगानि-म कसी-र-तंय्यअ्-ख़ुज़ूनहा ط व कानल्लाहु अ़ज़ीजन् हकीमा (१९) व-अ़-दकुमुल्लाहु मगानि-म कसी-र-तन् तअ्-ख़ुज़ूनहा फ़-अ़ज्ज-ल लकुम् हाज़िही व कफ़्-फ़ ऐदि-यन्नासि अन्कुम् ج व लि-तकू-न आयतल्-लिलमुअ्मिनी-न व यह्दि-यकुम् सिरातम्-मुस्तक़ीमा ۙ (२०) व उख़्रा लम् तक़्दिरू अ़लैहा कद् अहात़ल्लाहु बिहा ط व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् कदीरा (२१) व लौ क़ा-त-लकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ल-वल्लवुल्-अद्बा-र सुम्-म ला यजिदू-न वलिय्यंव्-व ला नसीरा (२२) सुन्नत़ल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लु ج व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला (२३) व हुवल्लज़ी कफ़्-फ़ ऐदि-यहुम् अ़न्कुम् व ऐदि-यकुम् अ़न्हुम् बि-बत़्नि मक्क-त मिम्बअ्-दि अन् अज़्-फ-रकुम् अ़लैहिम् ط व कानल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीरा (२४) हुमुल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दूकुम् अ़निल्-मस्जिदिल्-ह़रामि वल-हद्-य मअ्-कूफ़न् अंय्यब्-लु-ग महिल्लहू ط व लौला रिजालुम्-मुअ्मिनू-न व निसाउम्-मुअ्मिनातुल्-लम् तअ्-लमूहुम् अन् त-त़-ऊहुम् फ़-तुसीबकुम् मिन्हुम् म-अर्रतुम्-बिगैरि अ़िल्मिन् ج लि-युद्ख़िलल्लाहु फ़ी रह्मतिही मंय्यशाउ ج लौ त-ज़य्यलू ल-अ़ज्ज़ब्-नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (२५) इज् ज-अ-लल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी कुलूबिहिमुल्-हमिय्य-त़ हमिय्य-तल्-जाहिलिय्यति फ-अन्ज़-लल्लाहु सकी-न-तहू अ़ला रसूलिही व अ़-लल्-मुअ्मिनी-न व अल्ज़-महुम् कलि-म-तत्तक़्वा व कानू अ-ह़क्-क़ बिहा व अह्-लहा ط व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा ★ (२६) ल-कद् स़-द-क़ल्लाहु रसूलहुर्रुअ्-या बिल्ह़क़्क़ि ج ल - तद्ख़ुलुन्नल् - मस्जिदल् - हरा-म इन्शाअल्लाहु आमिनी-न ۙ मुह़ल्लिक़ी-न रुऊसकुम् व मुक़स्सिरी-न ۙ ला तख़ाफू-न ط फ-अ़लि-म मा लम् तअ्-लमू फ़-ज-अ़-ल मिन् दूनि ज़ालि-क फ़त्-हन् क़रीबा (२७)

الفتح ٤٨ ٥١٠ حٰمٓ ٢٦

وَّاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا
حَكِيْمًا ۝ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ
وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ
صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَ
كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا
الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ
عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ
وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ
وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ
لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ

★रु ३/११ आ ९

फरमाई और उन्हे जल्द फत्ह इनायत की।' (१८) और बहुत सी गनीमते, जो उन्हो ने हासिल की और खुदा गालिब हिक्मत वाला हो। (१९) खुदा ने तुम से बहुत सी गनीमनो का वायदा फरमाया है कि तुम उन को हासिल करोगे, सो उस ने गनीमत की तुम्हारे लिए जल्दी फरमायी और लोगो के हाथ तुम से रोक दिए। गरज यह थी कि यह मोमिनो के लिए (खुदा की) कुदरत का नमूना है और वह तुम को सीधे रास्ते पर चलाए। (२०) और और (गनीमते दी), जिन पर तुम कुदरत नही रखते थे (और) वह खुदा ही की कुदरत मे थी और खुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (२१) और अगर तुम मे काफिर लड़ते तो पीठ फेर कर भाग जाते, फिर किसी को दोस्त न पाते, और न मददगार। (२२) (यही) खुदा की आदत है जो पहले से चली आती है और तुम खुदा की आदत कभी बदलती न देखोगे। (२३) और वही तो है, जिस ने तुम को उन (काफिरो) पर फत्हयाब करने के बाद मक्का की सरहद मे उन के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिए और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को देख रहा है। (२४) ये वही लोग है, जिन्हो ने कुफ्र किया और मस्जिदे हराम से रोक दिया और कुर्बानियो को भी कि अपनी जगह पहुचने से रुकी रही। और अगर ऐसे मुसलमान मर्द और मुसलमान औरते न होती, जिन को तुम जानते न थे कि अगर तुम उन को पा-माल कर देते तो तुम को उन की तरफ से बे-खबरी मे नुक्सान पहुच जाता (तो भी तुम्हारे हाथ फत्ह हो जाती मगर देर) इस लिए (हुई) कि खुदा अपनी रहमत मे जिस को चाहे दाखिल कर ले और अगर (दोनों फरीक) अलग-अलग हो जाते, तो जो उन मे काफिर थे, उन को हम दुख देने वाला अजाब देते।² (२५) जब काफिरो ने अपने दिलो मे जिद की और ज़िद भी जाहिलियत की तो खुदा ने अपने पैगम्बर और मोमिनो पर अपनी तरफ से तस्कीन नाजिल फरमायी और उन को परहेज़गारी की बात पर कायम रखा और वे इसी के हकदार और अह्ल थे और खुदा हर चीज से खबरदार है। (२६) ★

बेशक खुदा ने अपने पैगम्बर को सच्चा (और) सही ख्वाब दिखाया कि तुम, खुदा ने चाहा तो मस्जिदे हराम मे अपने सर मुडवा कर और अपने बाल कतरवा कर अम्न व अमान से दाखिल होंगे और किसी तरह का खौफ न करोगे। जो बात तुम नही जानते थे, उस को मालूम थी, सो उस ने

---

१ चूकि इस बैअत की वजह से खुदा मोमिनो से खुश हुआ था, इस लिए इस को बैअतुर्रिज्वान कहते है। यह बैअत इस बात पर ली गयी थी कि मुसलमान कुरैश से लड़ाई करेंगे और मरते दम तक नही भागेंगे, इसके बदले मे खुदा ने मोमिनो के दिलो मे तसल्ली पैदा की और जल्द खैबर की फत्ह नसीब की जिस मे बहुत-सी गनीमतें हाथ आयी। बैअत के वक्त जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अक्सर लोगो के कौल के मुताबिक केकर के पेड़ और कुछ के मुताबिक बेरी के तले तश्रीफ रखते थे। चूकि लोग बैअत की वजह से इस पेड की इज्जत के लिए उसके पास आने लगे थे, तो हज़रत उमर रज़ि० ने इस ख्याल से कि इज्जत इबादत की हद तक न पहुच जाए, उस को कटवा डाला।

२ इस आयत मे मक्का फत्ह होने मे देर की वजह बयान फरमायी गयी, वह यह कि मक्के मे इस तरह की औरतें और मर्द मुसलमान भी थे कि जान के अंदेशे से अपना ईमान कुफ्फार से छिपाए रखते थे और खुदा के सिवा इन का हाल किसी को मालूम न था, तो अगर खुदा मुसलमानो को मक्के पर चढाई का हुक्म दे देता तो जो सुलूक काफिरो के साथ होता, वही अनजाने मे भी उन के साथ होता और खुदा को यह मंजूर न था और अगर वे लोग इन मे न होते तो मक्का की फत्ह मे देर न होती।

हुवल्लजी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-ह़क़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़-लद्-दीनि कुल्लिही व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा (२८) मुह़म्मदुर-रसूलुल्लाहि वल्लज़ी-न म-अ़हू अशिद्दाउ अ़-लल्-कुफ़्फ़ारि रु-ह़-माउ बैनहुम् तराहुम् रुक्क-अन् सुज्ज-दय्यब्तग़ू-न फ़ज़्-लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानन् सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहिम् मिन् अ-सरिस्सुजूदि ज़ालि-क म-सलुहुम् फ़ित्तौराति व म-सलुहुम् फिल्इन्जीलि क-ज़र्अ़िन् अख़्-र-ज शत्-अहू फ़आ-ज़-रहू फ़स्तग़्-ल-ज़ फ़स्-तवा अ़ला सूक़िही युअ़्-जिबुज़्-ज़ुर-रा-अ़ लि-यग़ी-ज़ बिहिमुल्-कुफ़्फ़ा-र व-अ़-दल्लाहुल्-लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिन्हुम् मग़्-फ़ि-र-तंव्-व अज्रन् अ़ज़ीमा ★ (२९)

४९ सूरतुल हुजुराति १०६

(मदनी) इस सूर. मे अरबी के १५७३ अक्षर, ३५० शब्द, १८ आयतें और २ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुक़द्दिमू बै-न य-दयिल्लाहि व रसूलिही वत्तक़ुल्ला-ह इन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम (१) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तर-फ़ऊ अस्-वातकुम् फ़ौ-क़ सौतिन्नबिय्यि व ला तज्-हरू लहू बिल्क़ौलि क-जह्रि बअ़्-ज़िकुम् लि-बअ़्-ज़िन् अन् तह़्-ब-त अअ़्-मालुकुम् व अन्तुम् ला तश्अ़ुरून (२) इन्नल्लज़ी-न यग़ुज़्ज़ू-न अस्वातहुम् अ़िन्-द रसूलिल्लाहि उलाइ-कल्-लज़ीनम-त-ह़-नल्लाहु क़ुलूबहुम् लित्तक़्वा लहुम् मग़्फ़ि-र-तुंव्-व अज्रुन् अ़ज़ीम (३) इन्नल्लज़ी-न युना-दून-क मिंव्वराइल्-हुजुराति अक्सरुहुम् ला यअ़्-क़िलून (४) व लौ अन्नहुम् स-बरू ह़त्ता तख़्रु-ज इलैहिम् लका-न ख़ैरल्लहुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (५)

حم ٢٦ — الحجرات ٤٩

لَا تَخَافُونَ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝ هُوَ
الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَ
كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى
الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ
وَرِضْوَانًا سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي
التَّوْرَاةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ
وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝
سُورَةُ الْحُجُرَاتِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ
صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَنْ
تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ
عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ
الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ

★रु. ४/१२ आ ३ ∴ मु. अ़ि मु. ता क १५

उस से पहले ही जल्द फत्ह करा दी।[1] (२७) वही तो है, जिस ने अपने पैगम्बर को हिदायत (की किताब) और सच्चा दीन दे कर भेजा, ताकि उस को तमाम दीनो पर गालिब करे और हक जाहिर करने के लिए खुदा ही काफी है। (२८) मुहम्मद खुदा के पैगम्बर हैं, और जो लोग उन के साथ है, वे काफिरो के हक में तो सख्त हैं और आपस मे रहम दिल। (ऐ देखने वाले!) तू उन को देखता है कि (खुदा के आगे) झुके हुए, सर सज्दे मे रखे हुए है और खुदा का फ़ज़्ल और उसकी खुश्नूदी तलब कर रहे है। सज्दो (की ज़्यादती) के असर से उन की पेशानियो पर निशान पडे हुए हैं। उन की यही सिफते तौरात मे (दर्ज) है और यही सिफतें इंजील मे हैं।" (वे) गोया एक खेती है, जिस ने (पहले ज़मीन से) अपनी सूई निकाली, फिर उस को मज़बूत किया, फिर मोटी हुई और फिर अपनी नाल पर सीधी खड़ी हो गयी और लगी खेती वालो को खुश करने ताकि काफिरो का जी जलाए। जो लोग उन मे से ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन से खुदा ने गुनाहो की बख्शिश और बड़े अज्र का वायदा किया है। (२९)★

४९ सूरः हुजुरात १०६

सूर. हुजुरात मदनी है और इस मे अठारह आयत और दो रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

मोमिनो! (किसी बात के जवाब मे) खुदा और उस के रसूल से पहले न बोल उठा करो और खुदा से डरते रहो। बेशक खुदा सुनता-जानता है। (१) ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ें पैगम्बर की आवाज़ से ऊंची न करो और जिस तरह आपस मे एक दूसरे से ज़ोर से बोलते हो (उस तरह) उनके सामने जोर से न बोला करो। (ऐसा न हो) कि तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएं और तुम को खबर भी न हो। (२) जो लोग खुदा के पैगम्बर के सामने दबी आवाज़ से बोलते हैं, खुदा ने उन के दिल तक्वे के लिए आज़मा लिए है। उन के लिए बख्शिश और बडा बदला है। (३) जो लोग तुम को हुजरो के बाहर से आवाज देते है, उन मे अक्सर बे-अक्ल है। (४) और अगर वे सब्र किए रहते, यहा तक कि तुम खुद निकल कर उन के पास आते, तो यह उन के लिए बेहतर था और खुदा तो

---

१ जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ीकादा सन् ०६ हि० मे हुदैबिया से मदीने को वापस तश्रीफ ले गये। ज़िलहिज्जा और मुहर्रम वहा ठहरे। सफ़र के महीने मे खैबर पर चढाई कर के उस को फत्ह किया और फिर मदीने को लौट गये। ज़ीकादा ०७ हि० आप और हुदैबिया वाले उमरा करने के लिए मक्का को रवाना हुए तो आप ने जुल हुलैफा से एहराम बाधा और कुर्बानियो के जानवरो को साथ लिया। ग़रज़ आप मक्के मे बिला किसी डर के दाखिल हुए और जो बातें आप ने ख्वाब मे देखी थी, वे इस साल पूरी हुयी। इसी ख्वाब के सच होने का इस आयत मे ज़िक्र है।

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् जा-अकुम् फ़ासिकुम्-बि-न-बइन् फ-त-बय्यनू अन्
तुसीबू कौमम्-बिजहालतिन् फ़तुस्बिहू अ़ला मा फ-अ़ल्तुम् नादिमीन (६) वअ्-लमू
अन्-न फ़ीकुम् रसूलल्लाहि ط लौ युतीअुकुम् फ़ी कसीरिम्-मिनल्-अम्रि ल-अनित्तुम्
व लाकिन्नल्ला-ह हब्ब-ब इलैकुमुल्-ईमा-न व ज़य्य-नहू फ़ी कुलूबिकुम् व कर्र-ह
इलै-कुमुल्-कुफ़्-र वल्फुसू-क वल् - अिस्या-न ط
उलाइ-क हुमुर-राशिदून ۙ (७) फज्-लम्-
मिनल्लाहि व निअ्-म-तन् ط वल्लाहु अ़लीमुन्
हकीम (८) व इन् ता - इफ़तानि
मिनल् - मुअ्मिनीनक्-त - तलू फ़ - अस्लिहू
बैनहुमा ج फ-इम् - ब-गत् इह्दाहुमा
अ-लल्-उख़्रा फकातिलुल्लती तब्गी हत्ता
तफ़ी-अ इला अम्रिल्लाहि ج फ-इन्
फ़ा-अत् फ-अस्लिहू बैनहुमा बिल्अद्लि व
अक़्सितू ط इन्नल्ला - ह युहिब्बुल् -
मुक़्सितीन (९) इन्नमल् - मुअ्मिनू-न
इख़्वतुन् फ-अस्लिहू बै-न अ-ख़वैकुम् वत्तकुल्ला-ह
ल-अ़ल्लकुम् तुर्-हमून ★● (१०) या अय्युहल्लज़ी--न आमनू ला यस्ख़र्
कौमुम्-मिन् क़ौमिन् अ़सा अय्यकूनू ख़ैरम्-मिन्हुम् व ला निसाउम्-मिन् निसाइन्
असा अंय्यकुन् - न ख़ैरम्मिन्हुन - न ج व ला तल्मिज़ू अन्फुसकुम् व ला
तनाबज़ू बिल्-अल्काबि ط बिअ्-स-लिस्मुल् - फुसूकु बअ्-दल्-ईमानि ج व मल्लम्
यतुब् फ-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (११) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज्तनिबू
कसीरम्-मिनज़्ज़न्नि ز इन्-न बअ्-ज़ज़्ज़न्नि इस्मु व्-व ला त-जस्ससू व ला
यग्-तब् बअ्-ज़ुकुम् बअ्-ज़न् ط अ-युहिब्बु अ-हदुकुम् अंय्यअ्-कु-ल लह्-म अख़ीहि
मै-तन् फ-करिह - तुमूहु ط वत्तकुल्ला-ह ط इन्नल्ला - ह तव्वाबुर्रहीम (१२)

لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ○ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ
فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ
نَادِمِينَ ○ وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ ۚ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ
مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي
قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ
الرَّاشِدُونَ ○ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ○ وَ
إِن طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۖ فَإِن بَغَتْ
إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۚ
فَإِن فَاءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِينَ ○ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا
اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ○ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ
عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ
خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ وَلَا تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ بِئْسَ
الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ
وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ
لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ○

★रु १/१३ आ १० ●सु. ३/४

बख्शने वाला मेहरबान है। (५) मोमिनो ! अगर कोई बद-किरदार तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए, तो खूब तहकीक कर लिया करो, (शायद) कि किसी कौम को ना-दानी से नुक्सान पहुचा दो, फिर तुम को अपने किए पर शर्मिन्दा होना पडे। (६) और जान रखो कि तुम मे खुदा के पैगम्बर हैं। अगर बहुत-सी बातो मे वह तुम्हारा कहा मान लिया करे तो तुम मुश्किल मे पड जाओ, लेकिन खुदा ने तुम को ईमान अजीज बना दिया और उस को तुम्हारे दिलो मे सजा दिया और कुफ्र और गुनाह और ना-फरमानी से तुम को बेजार कर दिया, यही लोग हिदायत के रास्ते पर है। (७) (यानी) खुदा के फज्ल और एहसान से और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (८) और अगर मोमिनो मे से कोई दो फरीक आपस मे लड पडे, तो उन मे सुलह करा दो। और अगर एक फरीक दूसरे पर ज्यादती करे तो ज्यादती करने वाले से लडो, यहा तक कि वह खुदा के हुक्म की तरफ रुजूअ लाए। पस जब वह रुजूअ लाए तो दोनो फरीक मे बराबरी के साथ सुलह करा दो और इंसाफ से काम लो कि खुदा इंसाफ करने वालो को पसन्द करता है। (९) मोमिन तो आपस में भाई-भाई है, तो अपने दो भाइयो मे सुलह करा दिया करो। और खुदा से डरते रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (१०)★●

मोमिनो ! कोई कौम किसी कौम का मजाक न उडाये। मुम्किन है कि वे लोग उन से बेहतर हो और न औरते औरतो का (मजाक उडाए) मुम्किन है कि वे उन से अच्छी हो और अपने (मोमिन भाई) को ऐब न लगाओ और न एक-दूसरे का बुरा नाम रखो। ईमान लाने के बाद बुरा नाम (रखना) गुनाह है।[1] और जो तौबा न करे, वे जालिम है ! (११) ऐ ईमान वालो ! बहुत गुमान करने से बचो कि कुछ गुमान गुनाह है और एक-दूसरे के हाल की टोह मे न रहा करो और न कोई किसी की गीबत करे। क्या तुम मे से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाये ? इस से तो तुम जरूर नफरत करोगे, (तो गीबत न करो) और खुदा का डर रखो।

---

१ यानी जब कोई ईमान ले आए, तो उस को यहूदी या ईसाई या मजूसी वगैरह कह कर नही पुकारना चाहिए ऐसे नामो से पुकारना गुनाह है। अगर कोई यहूदी था तो इस्लाम लाने से पहले था। इसी तरह ईसाई और मजूसी वगैरह, ये नाम इस्लाम से पहले थे, लेकिन इस्लाम लाने के बाद न यहूदी यहूदी रहा, न ईसाई ईसाई, न मजूसी मजूसी, इन जाहिलियत के नामो से मुसलमानो को क्यो पुकारा जाए और उन को रंज क्यो पहुचाया जाए या यह कि ईमान लाने के बाद फासिक कहना बुरा नाम (रखना) है और बुरा नाम रखना बुरा है। जो गुनाह किसी से इस्लाम लाने से पहले हुआ हो, अब जब कि उस से तौबा कर लिया है, तो वह उस से मन्सूब क्यो किया जाए और उसे बुरे नाम से क्यो ताना दिया जाए या यह कि ईमान लाने के बाद नाम रखना यानी (फिस्क से मन्सूब करना) बुरा है। बहरहाल ऐब लगाने, ताने देने, बुरा नाम रखने, बुरे लकब से पुकारने से मना किया गया है।

या अय्युहन्नासु इन्ना ख़-लक़्नाकुम् मिन् ज़-करिंव-व उन्सा व ज-अ़ल्नाकुम् शुअूबंव्-व क़बाइ-ल लि-त-आ़रफ़ू इन्-न अक-र-मकुम् अि़न्दल्लाहि अत्-क़ाकुम् इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् ख़बीर (१३) क़ालतिल्-अअ्-राबु आमन्ना क़ुल् लम् तुअ्मिनू व लाकिन् क़ूलू अस्-लम्ना व लम्मा यद्ख़ुलिल्-ईमानु फ़ी क़ुलूबिकुम् व इन् तुती़अुल्ला-ह व रसूलहू ला यलित्कुम् मिन् अअ्-मालिकुम् शैअन् इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रही़म (१४) इन्न-मल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रसूलिही सुम्-म लम् यर्ताबू व जाहदू बिअम्वा-लिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून (१५) क़ुल् अ-तुअ़ल्लिमूनल्ला-ह बिदीनिकुम् वल्लाहु यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (१६) यमुन्नू-न अ़लै-क अन् अस्लमू क़ुल् ला तमुन्नू अ़-लय्-य इस्लामकुम् बलिल्लाहु यमुन्नु अ़लैकुम् अन् हदाकुम् लिलईमानि इन् कुन्तुम् सादिक़ी-न (१७) इन्नल्ला-ह यअ्-लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्लाहु बसीरुम् - बिमा तअ्-मलून ★ (१८)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ
قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝
قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ
الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ
اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ يَمُنُّوْنَ
عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ
اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝
سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قٓ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۝ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ
فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا
ذٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيْدٌ ۝ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا
كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْ اَمْرٍ

५० सूरतु क़ाफ़ ३४

(मक्की) इस सूर: में अ़रबी के १५२५ अक्षर, ३७६ शब्द, ४५ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रही़म •

क़ाफ़् वल्क़ुर्आनिल् - मजीद (१) बल् अ़जिबू अन् जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् फ़-क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा शैउन् अ़जीब (२) अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबन् ज़ालि-क रज्अुम्-बअ़ीद (३) क़द् अ़लिम्ना मा तन्क़ुसुल्-अर्ज़ु मिन्हुम् व अि़न्दना किताबुन् ह़फ़ीज़ (४) बल् कज़्ज़बू बिल्ह़क़्क़ि लम्मा जा-अहुम् फ़हुम् फ़ी अम्रिम्-मरीज (५)

★रु. २/१४ आ ८

बेशक खुदा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है। (१२) लोगो! हम ने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी कौमें और कबीले बनाये, ताकि एक-दूसरे की पहचान करो (और) खुदा के नज़दीक तुम में ज्यादा इज़्ज़त वाला वह है, जो ज्यादा परहेजगार है। बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला (और) सब से खबरदार है। (१३) देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आए। कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए (बल्कि यों) कहो कि हम इस्लाम लाए हैं और ईमान तो अब भी तुम्हारे दिलों में दाखिल ही नहीं हुआ और अगर तुम खुदा और उस के रसूल की फरमाबरदारी करोगे तो खुदा तुम्हारे आमाल में से कुछ कम नहीं करेगा। बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (१४) मोमिन तो वे हैं जो खुदा और उस के रसूल पर ईमान लाए, फिर शक में न पडे और खुदा की राह में जान और माल से लडे। यही लोग (ईमान के) सच्चे हैं। (१५) उन से कहो, क्या तुम खुदा को अपनी दीनदारी जतलाते हो और खुदा तो आसमानों और जमीन की सब चीज़ों को जानता है और खुदा हर चीज़ को जानता है। (१६) ये लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि मुसलमान हो गये हैं। कह दो कि अपने मुसलमान होने का मुझ पर एहसान न रखो, बल्कि खुदा तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें ईमान का रास्ता दिखाया, बशर्ते कि तुम सच्चे मुसलमान हो। (१७) बेशक खुदा आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है और जो कुछ तुम करते हो, उसे देखता है। (१८)★

५० सूरः क़ाफ़ ३४

सूर: काफ मक्की है और इस मे पैतालीस आयतें और तीन रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

काफ़, कुरआन मजीद की कसम (कि मुहम्मद खुदा के पैगम्बर है,) (१) लेकिन इन लोगो ने ताज्जुब किया कि उन्ही मे से एक हिदायत करने वाला उन के पास आया, तो काफिर कहने लगे कि यह बात तो (बडी) अजीब है। (२) भला जब हम मर गये और मिट्टी हो गये (तो फिर ज़िंदा होंगे?) यह जिंदा होना (अक्ल से) दूर है। (३) उन के जिस्मो को जमीन जितना (खा-खा कर) कम करती जाती है, हमको मालूम है और हमारे पास लिखी याद-दाश्त भी है। (४) बल्कि (अजीब बात यह है कि) जब उन के पास (दीन) हक आ पहुचा तो उन्हो ने उस को झूठ समझा, सो यह एक

★र २/१४ आ ८

अ-फ़-लम् यन्ज़ुरू इलस्समा-इ फ़ौक़हुम् कै-फ बनैनाहा व ज़य्यन्नाहा व मा लहा मिन् फ़ुरूज (६) वल्अर्-ज़ म-दद्नाहा व अल्कैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज ॥ (७) तब्सि-र-तव्-व ज़िक्रा लिकुल्लि अब्दिम्-मुनीब (८) व नज़्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम्-मुबा-र-कन् फ़-अम्बत्ना बिही जन्नातिव्-व हब्बल्-हसीद ॥ (९) वन्नख़्-ल बासिक़ातिल्लहा तल्अुन् नज़ीद ॥ (१०) रिज़्क़ल्-लिल्अिबादि ॥ व अह्यैना बिही बल्द-तम्-मै-तन् ♭ कज़ालिकल्-ख़ुरूज (११) कज़्ज़-बत् क़ब्-लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व अस्हाबुर्रस्सि व समूद ॥ (१२) व आदुंव्-व फ़िर्औनु व इख़्वानु लूत ॥ (१३) व अस्हाबुल्-ऐकति व क़ौमु तुब्बअिन् ♭ कुल्लुन् कज़्ज़-बर्रुसु-ल फ़-हक़्-क़ वअीद (१४) अ-फ़-अयीना बिल्ख़ल्क़िल्-अव्वलि ♭ बल् हुम् फ़ी लब्सिम्-मिन् ख़ल्क़िन् जदीद ★ (१५) व ल-क़द् ख़-लक़्नल् - इन्सा - न व नअ्-लमु मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुहू ﺻﻠﮯ व नह्नु अक़्-रबु इलैहि मिन् हब्लिल्-वरीद (१६) इज़् य-त-लक़्क़ल्-मु-त-लक़्क़ियानि अनिल्यमीनि व अनिश्शिमालि क़अीद (१७) मा यल्फ़िज़ु मिन् क़ौलिन् इल्ला लदैहि रक़ीबुन् अतीद (१८) व जा-अत् सक्-रतुल्-मौति बिल्हक़्क़ि ♭ ज़ालि-क मा कुन्-त मिन्हु तहीद (१९) व नुफ़ि - ख़ फ़िस्सूरि ♭ ज़ालि-क यौमुल् - वअीद (२०) व जा-अत् कुल्लु नफ़्सिम्-म-अहा साइक़ुंव्-व शहीद (२१) ल-क़द् कुन्-त फ़ी ग़फ़्-लतिम्-मिन् हाज़ा फ़-क-शफ़्ना अन्-क ग़िता-अ-क फ़-ब-सरुकल्-यौ-म हदीद (२२) व का-ल क़रीनुहू हाज़ा मा ल-दय्-य अतीद ♭ (२३) अल्क़िया फ़ी ज-हन्न-म कुल्-ल कफ़्फ़ारिन् अनीद ॥ (२४)

مَرِيجٍ ۝ أَفَلَمْ يَنظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا
لَهَا مِن فُرُوجٍ ۝ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا
فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۝ تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝
وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ۝
وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ ۝ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ وَأَحْيَيْنَا بِهِ
بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَٰلِكَ الْخُرُوجُ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَ
أَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۝ وَ
أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۝
أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ وَنَحْنُ
أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ
وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۝ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ
عَتِيدٌ ۝ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنْهُ
تَحِيدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ۝ وَجَاءَتْ كُلُّ
نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ۝ لَّقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا
فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۝ وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا
مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ۝ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مَّنَّاعٍ

★रु १/१५ आ १५

उलझी हुई बात मे (पड रहे) है। (५) क्या उन्हो ने ऊपर आसमान की तरफ निगाह नही की कि हम ने उस को कैसे बनाया और (कैसे) सजाया और इस मे कही दराड तक नही। (६) और जमीन को (देखो, उसे) हम ने फैलाया और उस मे पहाड रख दिए और इस मे हर तरह की खुशनुमा चीजे उगाई, (७) ताकि रुजूअ लाने वाले बंदे हिदायत और नसीहत हासिल करें। (८) और आसमान से बरकत वाला पानी उतारा और उस से बाग-बगीचे उगाए और खेती का अनाज, (९) और लम्बी-लम्बी खजूरे जिन का गाभा तह-ब-तह होता है। (१०) (यह सब कुछ) बन्दो को रोजी देने के लिए (किया है) और उस (पानी) से हम ने मुर्दा शहर (यानी बजर जमीन) को जिंदा किया, (बस) इसी तरह (कियामत के दिन) निकल पडना है। (११) उन से पहले नूह की कौम और कुएं वाले और समूद झुठला चुके है, (१२) और आद और फिऔन और लूत के भाई, (१३) और बन के रहने वाले और तुब्बअ् की कौम। (गरज) इन सब ने पैगम्बरो को झुठलाया, तो हमारी धमकी भी पूरी हो कर रही। (१४) क्या हम पहली बार पैदा कर के थक गये है ? (नही,) बल्कि यह फिर से पैदा करने के बारे मे (पडे हुए) है। (१५) ★

और हम ही ने इंसान को पैदा किया है और जो ख्याल उस के दिल मे गुजरते है, हम उन को जानते है और हम उस की रगे जान से भी उस से ज्यादा करीब है। (१६) जब (वह कोई काम करता है तो) दो लिखने वाले जो दाए-बाए बैठते है, लिख लेते है। (१७) कोई बात उसकी जुबान पर नही आती, मगर एक निगहबान उस के पास तैयार रहता है, (१८) और मौत की बेहोशी हकीकत खोलने को छा गयी। (ऐ इसान!) यही (वह हालत है) जिस से तू भागता था। (१९) और सूर फूका जाएगा। यही (अजाब की) धमकी का दिन है। (२०) और हर शख्स (हमारे सामने) आएगा। एक (फरिश्ता) उस के साथ चिल्लाने वाला होगा और एक (उस के अमलो की) गवाही देने वाला। (२१) (यह वह दिन है कि) इस से तू गाफिल हो रहा था। अब हम ने तुझ पर से पर्दा उठा दिया, तो आज तेरी निगाह तेज है। (२२) और उसका हमनशी (फरिश्ता) कहेगा कि यह (आमालनामा) मेरे पास हाजिर है। (२३) (हुक्म होगा कि) हर सरकश ना-शुक्रे को

★रु १/१५ आ १५

मन्नाअिल्-लिल्ख़ैरि मुअ्-तदिम्-मुरीबि-नि- (२५) -ल्लज़ी ज-अ्-ल म-अ्ल्लाहि इलाहन् आख़-र फ-अल्कियाहु फ़िल्-अ़ज़ाबिश्शदीद (२६) क़ा-ल करीनुहू रब्बना मा अत्ग़ैतुहू व लाकिन् का-न फी ज़लालिम्-बअ़ीद (२७) का-ल ला तख़्तसिमू ल-दय्-य व क़द् क़द्दम्तु इलैकुम् बिल्वअ़ीद (२८) मा युबद-दलुल्-कौलु ल-दय्-य व मा अ-न बिज़ल्लामिल्-लिल्अ़बीद ★(२९) यौ-म नकूलु लिज-हन्न-म हलिम्त-लअ्ति व तकूलु हल् मिम्-मज़ीद (३०) व उज़्लि-फतिल्-जन्नतु लिल्-मुत्तकी-न ग़ै-र बअ़ीद (३१) हाज़ा मा तू-अ़दू-न लिकुल्लि अव्वाबिन् हफ़ीज़ (३२) मन् ख़शियर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि व जा-अ बिकल्बिम्-मुनीबि-नि- (३३) -द्ख़ुलूहा बि-सलामिन् ज़ालि-क यौमुल्ख़ुलूद (३४) लहुम् मा यशाऊ-न फीहा व लदैना मज़ीद (३५) व कम् अह्-लक्ना क़ब्-लहुम्-मिन् क़र्निन् हुम् अशद्दु मिन्हुम् बत्-शन् फ-नक़्क़बू फिल्बिलादि हल् मिम्-महीस़ (३६) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लिमन् का-न लहू कल्बुन् औ अल्-कस्सम्-अ़ व हु-व शहीद (३७) व ल-क़द् ख़-लक्-नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिंव्-व मा मस्सना मिल्-लुगूब (३८) फस्बिर् अ़ला मा यकूलू-न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क कब्-ल तुलूअ़िश्शम्सि व क़ब्-लल्-ग़ुरूब (३९) व मिनल्लैलि फसब्बिह्हु व अद्-बारस्सुजूद (४०) वस्तमिअ़्-यौ-म युनादिल्मुनादि मिम्-मकानिन् क़रीब (४१) यौ-म यस्मअ़ूनस्-सै-ह्-त बिल्हक़्क़ि ज़ालि-क यौमुल्-ख़ुरूज (४२) इन्ना नह्नु नुह्यी व नुमीतु व इलैनल् मसीर (४३) यौ-म त-शक़्क़कुल्अर्ज़ु अन्-हुम् सिराअ़न् ज़ालि-क हश्रुन् अ़लैना यसीर (४४) नह्नु अअ्-लमु बिमा यकूलू-न व मा अन्-त अ़लैहिम् बिजब्बारिन् फ-ज़क्किर् बिल्कुरआनि मंय्यख़ाफु वअ़ीद ★ (४५)

٥١٥

لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ﴿٢٥﴾ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي
الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن كَانَ فِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم
بِالْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ
نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴿٣٠﴾ وَأُزْلِفَتِ
الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾ هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾
مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ﴿٣٣﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ
ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا
قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن
مَّحِيصٍ ﴿٣٦﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ
شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا
مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ
طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾
وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ
بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾
يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا
يَقُولُونَ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾

★रु. २/१६ आ १४ ★रु. ३/१७ आ १६

दोज़ख मे डाल दो। (२४) जो माल मे बुख्ल करने वाला, हद से बढने वाला, शुब्हे निकालने वाला था, (२५) जिस ने खुदा के साथ और माबूद मुकररर कर रखे थे, तो उस को सख्त अज़ाब मे डाल दो। (२६) उस का साथी (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे परवरदिगार ! मैं ने उस को गुमराह नही किया था, बल्कि यह आप ही रास्ते से दूर भटका हुआ था। (२७) (खुदा) कहेगा कि हमारे हुज़ूर मे रद्द व कद्द न करो। हम तुम्हारे पास पहले ही (अज़ाब की) धमकी भेज चुके थे। (२८) हमारे यहा बात बदला नही करती और हम बन्दो पर जुल्म नही किया करते। (२९)★

उस दिन हम दोज़ख से पूछेंगे कि क्या तू भर गयी ? वह कहेगी कि कुछ और भी है ? (३०) और बहिश्त परहेज़गारो के करीब कर दी जाएगी (कि बिल्कुल) दूर न होगी। (३१) यही वह चीज़ है, जिस का तुम से वायदा किया जाता था (यानी) हर रुजूअ लाने वाले, हिफाज़त करने वाले से (३२) जो खुदा से बिन देखे डरता रहा और रुजूअ लाने वाला दिल ले कर आया (३३) उस मे सलामती के साथ दाखिल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन है। (३४) वहा वह जो चाहेंगे, उन के लिए हाज़िर है और हमारे यहा और भी (बहुत कुछ) है। (३५) और हमने उन से पहले कई उम्मतें हलाक कर डाली, वह इन से ताकत मे कही बढ कर थे, वह शहरों मे गश्त करने लगे, क्या कही भागने की जगह है ? (३६) जो शख्स दिल (आगाह) रखता है या दिल से मुतवज्जह हो कर सुनता है, उस के लिए इस मे नसीहत है। (३७) और हमने आसमानो और ज़मीन को और जो (मख्लूकात) उन मे हैं, सब को छ दिनो मे बना दिया और हम को ज़रा भी थकान नही हुई। (३८) तो जो कुछ ये (कुफ्फार) बकते है, इस पर सब्र करो और सूरज के निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले अपने परवरदिगार की तारीफ के साथ तस्बीह करते रहो। (३९) और रात के कुछ वक्तो मे भी और नमाज़ के बाद भी उस (के नाम) की पाकी बयान करो। (४०) और सुनो जिस दिन पुकारने वाला नज़दीक की जगह से पुकारेगा, (४१) जिस दिन लोग चीख यकीनी तौर पर सुन लेगे। वही निकल पडने का दिन है। (४२) हम ही तो ज़िंदा करते हैं और हम ही मारते हैं और हमारे ही पास लौट कर आना है। (४३) उस दिन ज़मीन उन पर से फट जाएगी और वे झट-पट निकल खडे होंगे। यह जमा करना हमें आसान है। (४४) ये लोग जो कुछ कहते है, हमें खूब मालूम है और तुम उन पर ज़बरदस्ती करने वाले नही हो। पस जो हमारे (अज़ाब की) धमकी से डरे, उस को कुरआन से नसीहत करते रहो। (४५)★

★रु २/१६ आ १४ ★रु ३/१७ आ १६

५१ सूरतुज्-ज़ारियाति ६७

(मक्की) इस सूर में अरबी के १५५६ अक्षर, ३६० शब्द, ६० आयतें और ३ रुकूअ् हैं।

विस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वज्ज़ारियाति ज़र्वन् ﻻ (१) फ़ल्हामिलाति विक्रन् ﻻ (२) फ़ल्जारियाति युस्रन् ﻻ (३) फ़ल्मुकस्सिमाति अम्रन् ﻻ (४) इन्नमा तूअ़दू-न लसादिकु व- ﻻ (५) व इन्नद्दी-न ल-वाक़ि-अ़् ط (६) वस्समा-इ ज़ातिल्-हुबुकि ﻻ (७) इन्नकुम् लफ़ी क़ौलिम्-मुख़्तलिफ़िय्-ﻻ (८) युअ्फ़कु अ़न्हु मन् उफ़िक ط (९) कुतिलल्-ख़र्रासून ﻻ (१०) अ़ल्लज़ी-न हुम् फ़ी ग़म्रतिन् साहून ﻻ (११) यस्-अलू-न अय्या-न यौमुद्दीन ط (१२) यौ-म हुम् अ़लन्नारि युफ़्तनून (१३) ज़ूकू फ़ित-न-तकुम् ط हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तस्तअ्-जिलून (१४) इन्नल्मुत्तकी-न फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयूनिन् ﻻ (१५) आख़िज़ी-न मा आताहुम् रब्बुहुम् ط इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुह्सि-नीन ط (१६) कानू क़लीलम्-मिनल्लैलि मा यह्-जऊन (१७) व बिल्-अस्हारि हुम् यस्-तग्फ़िरून (१८) व फ़ी अम्वालिहिम् हक्कुल्-लिस्साइलि वल्-मह़्रूम (१९) व फ़िल्अर्ज़ि आयातुल्-लिल्मूक़िनीन ﻻ (२०) व फ़ी अन्फ़ुसि-कुम् ط अ-फ़-ला तुब्सिरून (२१) व फ़िस्समाइ रिज़्कुकुम् व मा तूअ़दून (२२) फ़-व-रब्बिस्-समाइ वल्अर्ज़ि इन्नहू ल-हक्कुम्-मिस्-ल मा अन्नकुम् तन्तिकून ★ (२३) हल् अता-क ह़दीसु ज़ैफ़ि इब्राहीमल्-मुक्रमीन ⫽ (२४) इज़् द-ख़-लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन् ط का-ल सलामुन् ج क़ौमुम् मुन्करून ج (२५) फ़रा-ग़ इला अह्लिही फ़जा-अ बिअ़िज्लिन् समीन ﻻ (२६) फ़-क़र्रबहू इलैहिम् का-ल अला तअ्-कुलून ز (२७) फ़-औज-स मिन्हुम् ख़ी-फ़-तन् ط क़ालू ला त-ख़फ़् ط व बश्शरूहु बिग़ुलामिन् अ़लीम (२८) फ़-अक़्-ब-लतिम-र-अतुहू फ़ी सर्रतिन् फ़-सक्कत् वज्हहा व कालत् अ़जूज़ुन् अ़क़ीम (२९) क़ालू कज़ालिकि ﻻ का-ल रब्बुकि ط इन्नहू हुवल्-हकीमुल्-अ़लीम (३०)

الذريت ٥١ — ٥١٦ — حم

سورة الذريت مكية بسم الله الرحمن الرحيم ستون آية وثلث ركوعات
والذريت ذروا ۙ فالحملت وقرا ۙ فالجريت يسرا ۙ فالمقسمت
امرا ۙ انما توعدون لصادق ۙ وان الدين لواقع ۙ والسماء
ذات الحبك ۙ انكم لفي قول مختلف ۙ يؤفك عنه من افك ۙ
قتل الخرصون ۙ الذين هم في غمرة ساهون ۙ يسـٔلون ايان
يوم الدين ۙ يوم هم على النار يفتنون ۙ ذوقوا فتنتكم هذا
الذي كنتم به تستعجلون ۙ ان المتقين في جنت وعيون ۙ
اخذين ما اتىهم ربهم انهم كانوا قبل ذلك محسنين ۙ كانوا
قليلا من الیل ما يهجعون ۙ وبالاسحار هم يستغفرون ۙ وفي
اموالهم حق للسائل والمحروم ۙ وفي الارض ايت للموقنين ۙ
وفي انفسكم افلا تبصرون ۙ وفي السماء رزقكم وما توعدون ۙ
فورب السماء والارض انه لحق مثل ما انكم تنطقون ۙ هل اتىك
حديث ضيف ابرهيم المكرمين ۙ اذ دخلوا عليه فقالوا سلما قال
سلم قوم منكرون ۙ فراغ الى اهله فجاء بعجل سمين ۙ فقربه اليهم
قال الا تاكلون ۙ فاوجس منهم خيفة قالوا لا تخف وبشروه
بغلم عليم ۙ فاقبلت امراته في صرة فصكت وجهها وقالت عجوز
عقيم ۙ قالوا كذلك قال ربك انه هو الحكيم العليم ۙ

★रु १/१८ आ २३ ⫽ व. लाजिम

५१ सूरः जारियात ६७

सूर: जारियात मक्की है और इस मे साठ आयते और तीन रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बिखेरने वालियो की कसम! जो उड़ा कर बिखेर देती है, (१) फिर (पानी का) बोझ उठाती है, (२) फिर धीरे-धीरे चलती है, (३) फिर चीजे तक्सीम करती है,[1] (४) कि जिस का तुम से वादा किया जाता है, वह सच्चा है। (५) और इसाफ (का दिन) ज़रूर वाकेअ होगा। (६) और आसमान की कसम! जिसमे रास्ते है, (७) कि (ऐ मक्का वालो!) तुम एक झगडे की बात मे (पड़े हुए) हो।[2] (८) उस से वही फिरता है, जो (खुदा की तरफ से) फेरा जाए। (९) अटकल दौड़ाने वाले हलाक हो, (१०) जो बे-ख़बरी मे भूले हुए है। (११) पूछते है कि बदले का दिन कब होगा? (१२) उस दिन (होगा) जब उन को आग मे अजाब दिया जाएगा। (१३) अब अपनी शरारत का मज़ा चखो। यह वही है, जिस के लिए तुम जल्दी मचाया करते थे। (१४) बेशक परहेज़गार बहिश्तो और चश्मो मे (ऐश कर रहे) होगे। (१५) (और) जो-जो (नेमते) उन का परवरदिगार उन्हे देता होगा, उन को ले रहे होगे। बेशक वे उस से पहले नेकिया करते थे, (१६) रात के थोड़े से हिस्से मे सोते थे, (१७) और सुबह के वक्तो मे बख्शिश मांगा करते थे। (१८) और उन के माल मे मांगने वाले और न मांगने वाले (दोनो) का हक होता है। (१९) और यकीन करने वालो के लिए जमीन मे (बहुत-सी) निशानियां है। (२०) और खुद तुम्हारे नफ्सो मे, तो क्या तुम देखते नही? (२१) और तुम्हारी रोज़ी और जिस चीज का तुम से वायदा किया जाता है आसमान मे है। (२२) तो आसमानो और ज़मीन के मालिक की कसम! यह (उसी तरह) यकीन के काबिल है जिस तरह तुम बात करते हो। (२३)★

भला तुम्हारे पास इब्राहीम के मुअज्जज मेहमानो की ख़बर पहुची है?⁂(२४) जब वे उनके पास आए, तो सलाम कहा। उन्हो ने भी (जवाब मे) सलाम कहा, (देखा तो) ऐसे लोग कि न जान न पहचान। (२५) तो अपने घर जा कर एक (भुना हुआ) मोटा बछड़ा लाए। (२६) (और खाने के लिए) उन के आगे रख दिया। कहने लगे कि आप खाते क्यो नही? (२७) और दिल मे उन से ख़ौफ मालूम किया। उन्हो ने कहा कि ख़ौफ न कीजिए और उन को एक दानिशमंद (सूझ-बूझ वाले) लड़के की खुशखबरी भी सुनायी। (२८) तो इब्राहीम की बीवी चिल्लाती आयी और अपना मुंह पीट कर कहने लगी कि (ऐ है, एक तो) बुढ़िया और (दूसरे) बांझ? (२९) उन्हो ने कहा, (हा) तुम्हारे परवरदिगार ने यो ही फरमाया है। वह बेशक हिक्मत वाला (और)

---

१ कारीनों ने इन चार आयतो मे एक ही चीज़ भी मुराद ली गयी है यानी हवा और चार मुख्तलिफ चीज़े भी मुराद ली गयी है यानी 'जारियाति जर्वन' से तो हवाए कि धूल वगैरह को उड़ा कर बिखेर देती है और 'हामिलाति विक्रन' से बदलिया, जो मेह का बोझ उठाती है और 'जारियाति युस्रन' से किश्तिया जो दरिया मे सहज-सहज चलती है और 'मुकस्सिमाति अम्रन' से फरिश्ते, जो बारिश और रोज़ी और सूखे और सस्ताई और चीज़ो को तक्सीम करते है। कुछ तफ्सीर लिखने वालो ने इन चीज़ो के अलावा और चीज़े भी मुराद ली है, मगर उन का ज़िक्र गैर ज़रूरी है।

२ झगड़े की बात यानी बे-जोड़ बात यानी रसूले खुदा सल्ल० की शान मे कोई तो कहता है कि शायर है, कोई (शेष पृष्ठ ८३१ पर)

★रु १/१८ आ २३ ⁂व लाजिम

सत्ताईसवां पारः क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम्

सूरतुज्जारियाति आयात ३१ से ६०

क़ा-ल फमा ख़त्बुकुम् अय्युहल् मुर्सलून (३१) क़ालू इन्ना उर्सिलना इला कौमिम्-मुज्रिमीन (३२) लिनुर्सि-ल अ़लैहिम् हिजा-र-तम्-मिन्तीन (३३) मुसव्व-म-तन् अिन्-द रब्बि-क लिल्मुस्रिफीन (३४) फ़-अख़्-रज्ना मन् का-न फीहा मिनल्-मुअ्मिनीन (३५) फ़-मा व-जद्ना फीहा ग़ै-र बैतिम्-मिनल्-मुस्लिमीन (३६) व त-रक्ना फीहा आयतल्-लिल्लजी-न यख़ाफ़ूनल्-अ़ज़ाबल्-अलीम (३७) व फी मूसा इज् अर्सल्नाहु इला फ़िर्औ-न बिसुल्तानिम्-मुबीन (३८) फ-त-वल्ला बिरुक्निही व क़ा-ल साहिरुन् औ मज्नून (३९) फ-अ-ख़ज़्नाहु व जुनूदहू फ-न-बज़्नाहुम् फिल्-यम्मि व हु-व मुलीम (४०) व फी आदिन् इज् अर्सल्ना अ़लैहिमुर-रीहल्-अकीम (४१) मा त-ज़रु मिन् शैइन् अ-तत् अ़लैहि इल्ला ज-अ-लत्हु कर्रमीम (४२) व फ़ी समू-द इज् की-ल लहुम् त-मत्तअू हत्ता हीन (४३) फ़-अतौ अन् अम्रि रब्बिहिम् फ़-अ-ख़-जत्-हुमुस्साअिकतु व हुम् यन्ज़ुरून (४४) फ़-मस्तताअू मिन् कियामिव्-व मा कानू मुन्तसिरीन (४५) व कौ-म नूहिम्मिन् क़ब्लु इन्नहुम् कानू कौमन् फासिक़ीन★ (४६) वस्समा-अ बनैनाहा बिऐदिंव्-व इन्ना लमूसिअून (४७) वल्अर्-ज फ-रश्नाहा फ़निअ्-मल्-माहिदून (४८) व मिन् कुल्लि शैइन् ख़-लक़्ना जौजैनि ल-अ़ल्लकुम् त-ज़क्करून (४९) फफ़िर्रू इलल्लाहि इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (५०) व ला तज्-अ़लू म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (५१) कज़ालि-क मा अ-तल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिर्रसूलिन् इल्ला क़ालू साहिरुन् औ मज्नून (५२) अ-त-वासौ बिही बल् हुम् कौमुन् तागून (५३) फ-त-वल्-ल अ़न्हुम् फमा अन्-त बिमलूमिंव्- (५४) व ज़क्किर् फ़-इन्नज्ज़िकरा तन्फ़अुल्-मुअ्मिनीन (५५) व मा ख़-लक़्तुल्जिन्-न वल्इन्-स इल्ला लि-यअ्बुदून (५६)

قال فما خطبكم ايها المرسلون ۝ قالوا انا ارسلنا الى قوم
مجرمين ۝ لنرسل عليهم حجارة من طين ۝ مسومة عند
ربك للمسرفين ۝ فاخرجنا من كان فيها من المؤمنين ۝ فما
وجدنا فيها غير بيت من المسلمين ۝ وتركنا فيها اية للذين
يخافون العذاب الاليم ۝ وفي موسى اذ ارسلناه الى فرعون
بسلطن مبين ۝ فتولى بركنه وقال سحر او مجنون ۝ فاخذنه
وجنوده فنبذنهم في اليم وهو مليم ۝ وفي عاد اذ ارسلنا عليهم
الريح العقيم ۝ ما تذر من شيء اتت عليه الا جعلته كالرميم ۝
وفي ثمود اذ قيل لهم تمتعوا حتى حين ۝ فعتوا عن امر ربهم
فاخذتهم الصعقة وهم ينظرون ۝ فما استطاعوا من قيام وما كانوا
منتصرين ۝ وقوم نوح من قبل انهم كانوا قوما فسقين ۝ والسماء
بنينها بايد وانا لموسعون ۝ والارض فرشنها فنعم المهدون ۝
ومن كل شيء خلقنا زوجين لعلكم تذكرون ۝ ففروا الى الله اني
لكم منه نذير مبين ۝ ولا تجعلوا مع الله الها اخر اني لكم منه نذير
مبين ۝ كذلك ما اتى الذين من قبلهم من رسول الا قالوا ساحر او
مجنون ۝ اتواصوا به بل هم قوم طاغون ۝ فتول عنهم فما انت بملوم ۝
وذكر فان الذكرى تنفع المؤمنين ۝ وما خلقت الجن والانس

★रु २/१ आ २३

मा उरीदु मिन्हुम् मिर्रिज़्क़िव्-व मा उरीदु अय्युत्अिमून (५७) इन्नल्ला-ह हुवर्रज़्ज़ाक़ु ज़ुल्क़ुव्वतिल्-मतीन (५८) फ-इन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़नूबम्-मिस्-ल ज़नूबि अस्-हाबिहिम् फ ला यस्तअ्-जिलून (५९) फवैलुल् - लिल्लज़ी - न क - फरू मिंय्यौमिहिमुल्लज़ी यूअदून ★ (६०)

إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝ مَا أُرِيدُ مِنْهُم مِّن رِّزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَن يُطْعِمُونِ ۝ إِنَّ
اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۝ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ
ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن
يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝

५२ सूरतुत्तूरि ७६

(मक्की) इस सूर मे अरबी के १३३४ अक्षर, ३१९ शब्द, ४९ आयते और २ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

बِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالطُّورِ ۝ وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ ۝ فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ ۝ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝ وَ
السَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۝ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۝ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝ مَّا لَهُ
مِن دَافِعٍ ۝ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۝ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝ فَوَيْلٌ
يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝ يَوْمَ يُدَعُّونَ
إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝ هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ أَفَسِحْرٌ
هَٰذَا أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝ اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ
عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَ
نَعِيمٍ ۝ فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝
كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ
وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ
أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ كُلُّ
امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۝ وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝

वत्तूर (१) व किताबिम्-मस्तूरिन् (२) फी रक़्क़िम्-मन्शूरिंव- (३) वल्बैतिल्-मअ्-मूर (४) वस्सक़्फिल्-मर्फूअि (५) वल्बह़्रिल्-मस्जूर (६) इन-न अज़ा-ब रब्बि-क लवाक़िअुम्- (७) मा लहू मिन् दाफिअिय्- (८) यौ-म तमूरुस्समाउ मौरंव- (९) व तसीरुल्-जिबालु सैरा (१०) फवैलुंय्यौमइज़िल्-लिल्मुकज़्ज़िबीन (११) अल्लज़ी-न हुम् फ़ी ख़ौज़िय्यल्-अबून ▨ (१२) यौ-म युदअ़्-अू-न इला नारि ज-हन्न-म दअ़्-आ (१३) हाज़िहिन्-नारुल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (१४) अ-फ-सिह़्रुन् हाज़ा अम् अन्तुम् ला तुब्-सिरून (१५) इस्लौहा फस्बिरू औ ला तस्बिरू सवाउन् अलैकुम् इन्नमा तुज्-ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्-मलून (१६) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फी जन्नातिंव्-व नअ़ीम (१७) फाकिही-न बिमा आताहुम् रब्बुहुम् व वक़ाहुम् रब्बुहुम् अ़ज़ाबल्-जहीम (१८) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१९) मुत्तकिई-न अला सुरुरिम्-मस्फूफतिन् व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् ओ़ीन (२०) वल्लज़ी-न आमनू वत्त-ब-अ़त्हुम् ज़ुर्रिय्यतुहुम् बिईमानिन् अल्-ह़क़्ना बिहिम् ज़ुर्रिय्य-तहुम् व मा अ-लत्नाहुम् मिन् अ-मलिहिम् मिन् शैइन् कुल्लुम्रिइम्-बिमा क-स-ब रहीन (२१) व अम्दद्नाहुम् बिफाकिहतिंव्-व लह़्मिम्-मिम्मा यश्तहून (२२)

★ रु ३/२ आ १४ ▨ व लाज़िम
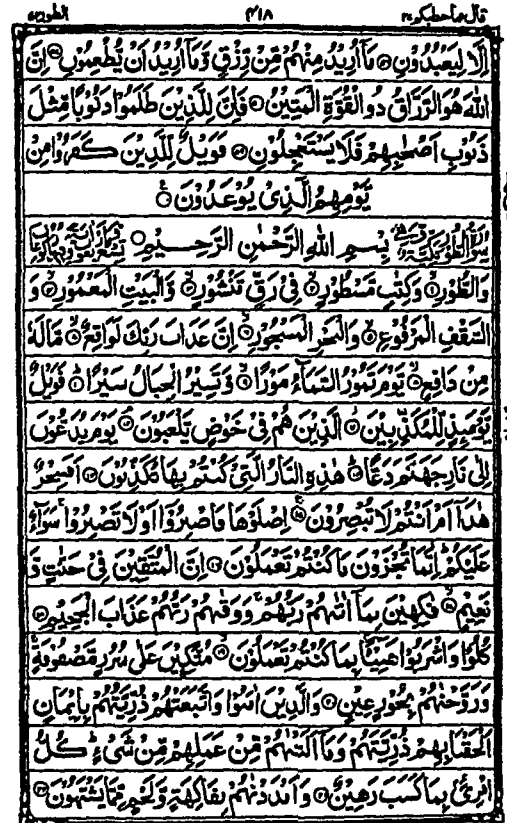
कि मेरी इबादत करें। (५६) मै उन से रोज़ी नही चाहता और न यह चाहता हू कि मुझे (खाना) खिलाए। (५७) खुदा ही तो रोज़ी देने वाला, ज़ोरावर (और) मज़बूत है। (५८) कुछ शक नही कि इन ज़ालिमों के लिए भी (अज़ाब की) नौबत मुक़र्रर है, जिस तरह उन के साथियो की नौबत थी, तो उन को मुझ से (अज़ाब) जल्दी नही तलब करना चाहिए। (५९) जिस दिन का इन काफ़िरों से वादा किया जाता है, उस से उन के लिए ख़राबी है। (६०) ★

५२ सूरः तूर ७६

सूरः तूर मक्की है, इस मे ४९ आयते और दो रुकूअ है।
शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तूर (पहाड़) की क़सम! (१) और किताब की जो लिखी हुई है¹ (२) कुशादा पन्नो (वरको) मे, (३) और आबाद घर की! (४) और ऊंची छत की! (५) और उबलते हुए दरिया की! (६) कि तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब वाकेअ हो कर रहेगा। (७) (और) उस को कोई रोक नही सकेगा, (८) जिस दिन आसमान लरज़ने लगे कपकपा कर, (९) और पहाड़ उड़ने लगे ऊन हो कर, (१०) उस दिन झुठलाने वालो के लिए खराबी है। (११) जो (बातिल मे) पड़े (खुराफ़ात) मे खेल रहे है।%(१२) जिस दिन उन को जहन्नम की आग की तरफ धकेल-धकेल कर ले जाएंगे। (१३) यही वह जहन्नम है जिस को तुम झूठ समझते थे। (१४) तो क्या यह जादू है या तुम को नज़र ही नही आता। (१५) इस मे दाखिल हो जाओ और सब्र करो या न करो, तुम्हारे लिए बराबर है, जो काम तुम किया करते थे, (यह) उन ही का तुम को बदला मिल रहा है। (१६) जो परहेज़गार है, वे बागो और नेमतो मे होंगे। (१७) जो कुछ उन के परवरदिगार ने उन को बख्शा, उस (की वजह) से खुशहाल, और उन के परवरदिगार ने उन को दोज़ख के अज़ाब से बचा लिया, (१८) अपने आमाल के बदले मे, मज़े से खाओ और पियो, (१९) तख्तो पर जो बराबर-बराबर बिछे हुए, तकिया लगाए हुए और बड़ी-बड़ी आखो वाली हूरो को हम उनका साथी बना देंगे। (२०) और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी ईमान (की राह) मे उन के पीछे चली, हम उन की औलाद को भी उन (के दर्जे) तक पहुंचा देंगे और उन के आमाल मे से कुछ कम न करेंगे। हर शख्स अपने आमाल मे फंसा हुआ है। (२१) और जिस तरह के मेवे और गोश्त को उन का जी चाहेगा, हम उन को अता करेंगे। (२२) वहा वे एक दूसरे से जामे-

1 किताब के बारे मे कई कौल है। किसी ने कहा, दूसरी आसमानी किताबें। किसी ने कहा, नामा-ए-आमाल।

य-त-नाजअ़ू-न फ़ीहा कअ्-सल्ला लग्वुन् फ़ीहा व ला तअ्-सीम (२३) व यतूफु अलैहिम् गिल्मानुल्-लहुम् क-अन्नहुम् लुअ्लुउम्-मक्नून (२४) व अक़्ब-ल बअ्-ज़ुहुम् अला बअ्-ज़िय्य-त-सा-अलून (२५) क़ालू इन्ना कुन्ना क़ब्लु फी अह्लिना मुश्फ़िक़ीन (२६) फ-मन्नल्लाहु अलैना व वक़ाना अज़ाबस्समूम (२७) इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लु नद्‌अ़ूहु इन्नहू हुवल्बर्रुर-रहीम ★ (२८) फ-ज़क्किर् फमा अन्-त बिनिअ्-मति रब्बि-क बिकाहिनिंव्-व ला मज्नून (२९) अम् यक़ूलू-न शाअिरुन् न-त-रब्बसु बिही रैबल्-मनून (३०) क़ुल् त-रब्बसू फइन्नी म-अकुम् मिनल्-मु-त-रब्बिसीन (३१) अम् तअ्मुरुहुम् अह्लामु-हुम् बिहाज़ा अम् हुम् क़ौमुन् तागून (३२) अम् यक़ूलू-न त-क़व्व-लहू बल् ला युअ्मिनून (३३) फ़ल-यअ्-तू बिहदीसिम्-मिस्लिही इन् कानू सादिक़ीन (३४) अम् ख़ुलिक़ू मिन् ग़ैरि शैइन् अम् हुमुल-ख़ालिक़ून (३५) अम् ख़-लक़ुस्-समावाति वल्अर्-ज़ बल् ला यूक़िनून (३६) अम् अिन्दहुम् ख़ज़ाइनु रब्बि-क अम् हुमुल्-मुसैतिरून (३७) अम् लहुम् सुल्लमुंय्यस्तमिअ़ू-न फ़ीहि फल्-यअ्ति मुस्तमिअ़ुहुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन (३८) अम् लहुल्बनातु व लकुमुल्बनून (३९) अम् तस्-अलुहुम् अज्रन् फ़हुम् मिम्-मग्-रमिम्-मुस्कलून (४०) अम् अिन्दहुमुल्-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (४१) अम् युरीदू-न कैदन् फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू हुमुल्-मकीदून (४२) अम् लहुम् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून (४३) व इंय्यरौ किस्फम्-मिनस्समाइ साकितय्यक़ूलू सहाबुम्-मर्क़ूम (४४) फ-ज़र्हुम् हत्ता युलाक़ू यौ-महुमुल्लज़ी फीहि युस्-अक़ून (४५) यौ-म ला युग्नी अन्हुम् कैदुहुम् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून (४६) व इन-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू अज़ाबन् दू-न ज़ालि-क व लाकिन-न अक्सरहुम् ला यअ्-लमून (४७)

يتنازعون فيها كأسا لا لغو فيها ولا تأثيم ﴿٢٣﴾ ويطوف عليهم غلمان
لهم كأنهم لؤلؤ مكنون ﴿٢٤﴾ وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ﴿٢٥﴾
قالوا إنا كنا قبل في أهلنا مشفقين ﴿٢٦﴾ فمن الله علينا ووقانا عذاب
السموم ﴿٢٧﴾ إنا كنا من قبل ندعوه إنه هو البر الرحيم ﴿٢٨﴾ فذكر فما أنت
بنعمت ربك بكاهن ولا مجنون ﴿٢٩﴾ أم يقولون شاعر نتربص به ريب
المنون ﴿٣٠﴾ قل تربصوا فإني معكم من المتربصين ﴿٣١﴾ أم تأمرهم
أحلامهم بهذا أم هم قوم طاغون ﴿٣٢﴾ أم يقولون تقوله بل لا
يؤمنون ﴿٣٣﴾ فليأتوا بحديث مثله إن كانوا صادقين ﴿٣٤﴾ أم خلقوا من
غير شيء أم هم الخالقون ﴿٣٥﴾ أم خلقوا السماوات والأرض بل لا
يوقنون ﴿٣٦﴾ أم عندهم خزائن ربك أم هم المصيطرون ﴿٣٧﴾ أم لهم سلم
يستمعون فيه فليأت مستمعهم بسلطان مبين ﴿٣٨﴾ أم له البنات و
لكم البنون ﴿٣٩﴾ أم تسألهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ﴿٤٠﴾ أم عندهم
الغيب فهم يكتبون ﴿٤١﴾ أم يريدون كيدا فالذين كفروا هم
المكيدون ﴿٤٢﴾ أم لهم إله غير الله سبحان الله عما يشركون ﴿٤٣﴾ و
إن يروا كسفا من السماء ساقطا يقولوا سحاب مركوم ﴿٤٤﴾ فذرهم
حتى يلاقوا يومهم الذي فيه يصعقون ﴿٤٥﴾ يوم لا يغني عنهم كيدهم
شيئا ولا هم ينصرون ﴿٤٦﴾ وإن للذين ظلموا عذابا دون ذلك و

★रु १/३ आ २८

शराब के जाम लिया करेंगे, जिस (के पीने) से न बक-बक होगी, न कोई गुनाह की बात। (२३) और नौजवान ख़िदमतगार, (जो ऐसे होंगे,) जैसे छिपाए हुए मोती, उन के आस-पास फिरेंगे (२४) और एक दूसरे की तरफ़ रुख़ कर के आपस मे बात-चीत करेंगे। (२५) कहेंगे कि इस से पहले हम अपने घर मे (ख़ुदा से) डरते रहते थे, (२६) तो ख़ुदा ने हम पर एहसान फ़रमाया और हमें लू के अज़ाब से बचा लिया। (२७) उस से पहले हम उस से दुआए किया करते थे। बेशक वह एहसान करने वाला मेहरबान है। (२८)★

तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम नसीहत करते रहो, तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल से न तो काहिन हो और न दीवाने। (२९) क्या काफ़िर कहते है कि यह शायर है (और) हम उस के हक़ मे ज़माने के हादिसों का इन्तिज़ार कर रहे है। (३०) कह दो कि इन्तिज़ार किए जाओ, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हू। (३१) क्या उन की अक्लें उन को यही सिखाती हैं, बल्कि ये लोग है ही शरीर। (३२) क्या (काफ़िर) कहते है कि इन पैग़म्बर ने क़ुरआन ख़ुद से बना लिया है? बात यह है कि ये (ख़ुदा पर) ईमान नहीं रखते। (३३) अगर ये सच्चे हैं तो ऐसा कलाम बना तो लाए। (३४) क्या ये किसी के पैदा किए बग़ैर ही पैदा हो गये है या ये ख़ुद (अपने आप) पैदा करने वाले है? (३५) या इन्होने आसमानो और ज़मीन को पैदा किया है? (नही) बल्कि ये यक़ीन ही नही रखते। (३६) क्या इन के पास तुम्हारे परवरदिगार के ख़ज़ाने है या ये (कही के) दारोग़ा है? (३७) या उन के पास कोई सीढ़ी है जिस पर (चढ़ कर आसमान से बातें) सुन आते है, तो जो सुन आता है, वह खुली सनद दिखाए। (३८) क्या ख़ुदा की तो बेटिया और तुम्हारे बेटे? (३९) ऐ पैग़म्बर! क्या तुम उन से बदला मागते हो कि उन पर जुर्माने का बोझ पड रहा है? (४०) या उन के पास ग़ैब (का इल्म) है कि वे उसे लिख लेते है? (४१) क्या ये कोई दाव करना चाहते है, तो काफ़िर तो ख़ुद दाव मे आने वाले है? (४२) क्या ख़ुदा के सिवा उन का कोई और माबूद है? ख़ुदा उन के शरीक बनाने से पाक है? (४३) और अगर ये आसमान (से अज़ाब) का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो कहें कि यह गाढ़ा बादल है, (४४) पस उन को छोड दो, यहा तक कि वह दिन, जिस मे वे बे-होश कर दिए जाएंगे, सामने आ जाए। (४५) जिस दिन उन का कोई दाव कुछ भी काम न आए और न उन को (कहीं से) मदद ही मिले। (४६) और ज़ालिमो के लिए उन के सिवा और अज़ाब भी है, लेकिन उन मे के अक्सर नही जानते। (४७) और तुम अपने परवरदिगार के हुक्म के इन्तिज़ार मे सब्र करो, तुम तो हमारी आखो के सामने हो और जब उठा करो, तो अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह किया करो। (४८) और रात के कुछ

★रु १/३ आ २८

वस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क फइन्न-क बिअअ्-युनिना व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क ह़ी-न तक़ूम ॥ (४८) व मिनल्लैलि फसब्बिह्हु व इद्बारन्नुजूम ★(४९)

५३ सूरतुन्नज्मि २३

(मक्की) इस सूर मे अरबी के १४५० अक्षर, ३६५ शब्द, ६२ आयते और ३ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वन्नज्मि इज़ा हवा ॥(१) मा ज़ल्-ल साहि़बुकुम् व मा ग़वा ॥(२) व मा यन्तिक़ु अ़निल्हवा ॥(३) इन् हु-व इल्ला वह़्युं य्यूहा ॥ (४) अ़ल्ल-महू शदीदुल्क़ुवा ॥(५) ज़ू मिर्रतिन् ॥ फ़स्तवा ॥(६) व हु-व बिल्-उफ़ुक़िल्-अअ्-ला ॥ (७) सुम्-म दना फ-त-दल्ला ॥(८) फ़का-न का-ब क़ौसैनि औ अद्ना ॥(९) फऔहा इला अ़ब्दिही मा औहा ॥ (१०) मा क-ज-बल्-फ़ुआदु मा रआ (११) अ-फ-तुमारूनहू अ़ला मा यरा (१२) व ल-क़द् रआहु नज्-ल-तन् उख़्रा ॥(१३) अ़िन्-द सिद्रतिल्-मुन्तहा (१४) अ़िन्दहा जन्नतुल्-मअ्वा ॥(१५) इज़् यग़्शस-सिद-र-त मा यग़्शा ॥ (१६) मा ज़ागल्-ब-सरु व मा तग़ा (१७) ल-क़द् रआ मिन् आयाति रब्बिहिल्-कुब्रा (१८) अ-फ रऐतुमुल्ला-त वल्अ़ुज़्ज़ा ॥(१९) व मनातस-सालि-स-तल्-उख़्रा (२०) अ लकुमुज़्-ज़-करु व लहुल्-उन्सा (२१) तिल्-क इज़न् क़िस्मतुन् ज़ीज़ा (२२) इन् हि-य इल्ला अस्माउन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़-लल्लाहु बिहा मिन् सुल-तानिन् ॥ इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न-न व मा तह्वल्-अन्फ़ुसु व ल-क़द् जा-अहुम् मिर्रब्बि-हिमुल्-हुदा ॥(२३) अम् लिल्-इन्सानि मा तमन्ना ॥(२४) फ़-लिल्लाहिल्-आख़िरतु वल्-ऊला ★(२५) व कम् मिम्म-लकिन् फ़िस्समावाति ला तुग़्नी शफ़ाअ़तुहुम् शैअन् इल्ला मिम्बअ्-दि अंय्यअ्-ज़-नल्लाहु लिमंय्यशाउ व यर्ज़ा (२६) इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति लयुसम्मूनल्-मलाइक-त तस्मि-य-तल्-उन्सा (२७)

قال فما خطبكم ٢٧ — ٤٢٠ — النجم ٥٣

لكن أكثرهم لا يعلمون ۝ واصبر لحكم ربك فإنك بأعيننا وسبح
بحمد ربك حين تقوم ۝ ومن الليل فسبحه وإدبار النجوم ۝
سورة النجم مكية وهي ... بسم الله الرحمن الرحيم ...
والنجم إذا هوى ۝ ما ضل صاحبكم وما غوى ۝ وما ينطق عن الهوى ۝
إن هو إلا وحي يوحى ۝ علمه شديد القوى ۝ ذو مرة فاستوى ۝
وهو بالأفق الأعلى ۝ ثم دنا فتدلى ۝ فكان قاب قوسين أو
أدنى ۝ فأوحى إلى عبده ما أوحى ۝ ما كذب الفؤاد ما رأى ۝ أفتمارونه
على ما يرى ۝ ولقد رآه نزلة أخرى ۝ عند سدرة المنتهى ۝
عندها جنة المأوى ۝ إذ يغشى السدرة ما يغشى ۝ ما زاغ
البصر وما طغى ۝ لقد رأى من آيات ربه الكبرى ۝ أفرأيتم اللات
والعزى ۝ ومناة الثالثة الأخرى ۝ ألكم الذكر وله الأنثى ۝
تلك إذا قسمة ضيزى ۝ إن هي إلا أسماء سميتموها أنتم و
آباؤكم ما أنزل الله بها من سلطان إن يتبعون إلا الظن وما
تهوى الأنفس ولقد جاءهم من ربهم الهدى ۝ أم للإنسان ما
تمنى ۝ فلله الآخرة والأولى ۝ وكم من ملك في السماوات لا تغني
شفاعتهم شيئا إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشاء ويرضى ۝ إن
الذين لا يؤمنون بالآخرة ليسمون الملائكة تسمية الأنثى ۝ وما

★रु २/४ आ २१ ★रु १/५ आ २५

[illegible] भी उस की पाकी बयान किया करो। (४९)★

५३ सूरः नज्म २३

[illegible] और तीन रुकूअ है।

[illegible] निहायत रहम वाला है।

[illegible] (१) कि तुम्हारे साहिब (मुहम्मद) न रास्ता भूले हैं, [illegible] से बात निकालते हैं। (३) यह (कुरआन) तो [illegible] भेजा जाता है, (४) उन को बहुत ताकत वाले ने [illegible] फिर वह पूरे नज़र आये, (६) और वह (आसमान [illegible] (८) तो वह कमान के फासले पर या [illegible] की तरफ जो भेजा, सो भेजा, (१०) जो कुछ [illegible] (११) क्या जो कुछ वे देखते हैं, तुम इस में [illegible] (१२) [illegible] बार भी देखा है। (१३) परली हद [illegible] (१५) जबकि उस बेरी पर छा रहा था, [illegible] (१६) [illegible] और तरफ मायल हुई और न (हद से) आगे [illegible] (१७) [illegible] परवरदिगार (की कुदरत) की कितनी ही बड़ी-बड़ी निशानियां [illegible] (१८) [illegible] देखा, (१९) और तीसरे मनात को (कि ये [illegible] (२०) मुश्रिको! क्या तुम्हारे लिए तो बेटे और खुदा के लिए [illegible] (२१) [illegible] बहुत बे-इन्साफी की है। (२२) वे तो सिर्फ नाम ही नाम है, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने गढ़ लिए है, खुदा ने तो उन की कोई सनद नहीं उतारी। ये लोग सिर्फ (ज़न) गुमान और नफ्स की ख्वाहिशों के पीछे चल रहे हैं, हालांकि उन के परवरदिगार की तरफ से उन के पास हिदायत आ चुकी है। (२३) क्या जिस चीज़ की इंसान आरज़ू करता है [illegible] मिलती है? (२४) आखिरत और दुनिया तो खुदा ही के हाथ में है, (२५)★

और आसमानों में बहुत से फरिश्ते हैं, जिनकी सिफारिश कुछ भी फायदा नहीं देती, मगर उस वक्त कि खुदा जिस के लिए चाहे, इजाज़त बख्शे और (सिफारिश) पसन्द करे। (२६) जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते, वे फरिश्तों को (खुदा की) लड़कियों के नाम से मौसूम करते

★र २/८ आ २१ ★र १/५ आ २५

व मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिन् इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न-न व इन्नज़्ज़न-न ला युग़नी मिनल्-हक़्क़ि शैअन् (२८) फ़-अअ्-रिज् अ़म्मन् त-वल्ला अ़न् ज़िक्रिना व लम् युरिद् इल्लल्-हयातद्दुन्या (२९) ज़ालि-क मब्-लग़ुहुम् मिनल्अ़िल्मि इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व अअ्-लमु बि-मनिह्तदा

● (३०) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लि-यज्ज़ि-यल्लज़ी-न असाऊ बिमा अ़मिलू व यज्ज़ि-यल्लज़ी-न अह्-सनू बिल्हुस्ना (३१) अल्लज़ी-न यज्-तनिबू-न कबाइरल्-इस्मि वल्-फवाहि-श इल्ललल-मम इन्-न रब्ब-क वासिअ़ुल्-मग़्फ़ि-रति हु-व अअ्-लमु बिकुम् इज् अन्-श-अकुम् मिनल्अर्ज़ि व इज् अन्तुम् अजिन्-नतुन् फ़ी बुतूनि उम्महातिकुम् फला तुज़क्कू अन्फुसकुम् हु-व अअ्-लमु बिमनित्तक़ा★(३२) अ-फ़-रऐतल्लज़ी त-वल्ला (३३) व अअ्-ता क़लीलव्-व अक्दा (३४) अ-अ़िन्दहू अ़िल्मुल्-ग़ैबि फ़-हु-व यरा (३५) अम् लम् युनब्बअ् बिमा फ़ी सुहुफि मूसा (३६) व इब्राही-

لَهُم بِهِ مِن عِلمٍ اِن يَّتَّبِعُونَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغنِي مِنَ الحَقِّ
شَيئًا ۝ فَاَعرِض عَن مَّن تَوَلّٰى عَن ذِكرِنَا وَلَم يُرِد اِلَّا الحَيٰوةَ الدُّنيَا ۝
ذٰلِكَ مَبلَغُهُم مِّنَ العِلمِ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ
وَهُوَ اَعلَمُ بِمَنِ اهتَدٰى ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الاَرضِ
لِيَجزِيَ الَّذِينَ اَسَآءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجزِيَ الَّذِينَ اَحسَنُوا بِالحُسنٰى ۝
اَلَّذِينَ يَجتَنِبُونَ كَبٰٓئِرَ الاِثمِ وَالفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ
المَغفِرَةِ هُوَ اَعلَمُ بِكُم اِذ اَنشَاَكُم مِّنَ الاَرضِ وَاِذ اَنتُم اَجِنَّةٌ
فِي بُطُونِ اُمَّهٰتِكُم فَلَا تُزَكُّوا اَنفُسَكُم هُوَ اَعلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝
اَفَرَءَيتَ الَّذِي تَوَلّٰى ۝ وَاَعطٰى قَلِيلًا وَّاَكدٰى ۝ اَعِندَهُ عِلمُ
الغَيبِ فَهُوَ يَرٰى ۝ اَم لَم يُنَبَّا بِمَا فِي صُحُفِ مُوسٰى ۝ وَاِبرٰهِيمَ الَّذِي
وَفّٰى ۝ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزرَ اُخرٰى ۝ وَاَن لَّيسَ لِلاِنسَانِ اِلَّا
مَا سَعٰى ۝ وَاَنَّ سَعيَهُ سَوفَ يُرٰى ۝ ثُمَّ يُجزٰىهُ الجَزَآءَ الاَوفٰى ۝ وَ
اَنَّ اِلٰى رَبِّكَ المُنتَهٰى ۝ وَاَنَّهُ هُوَ اَضحَكَ وَاَبكٰى ۝ وَاَنَّهُ هُوَ اَمَاتَ
وَاَحيَا ۝ وَاَنَّهُ خَلَقَ الزَّوجَينِ الذَّكَرَ وَالاُنثٰى ۝ مِن نُّطفَةٍ اِذَا
تُمنٰى ۝ وَاَنَّ عَلَيهِ النَّشاَةَ الاُخرٰى ۝ وَاَنَّهُ هُوَ اَغنٰى وَاَقنٰى ۝
وَاَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعرٰى ۝ وَاَنَّهُ اَهلَكَ عَادَا الاُولٰى ۝ وَثَمُودَا فَمَا
اَبقٰى ۝ وَقَومَ نُوحٍ مِّن قَبلُ اِنَّهُم كَانُوا هُم اَظلَمَ وَاَطغٰى ۝ وَ

मल्लज़ी वफ़्फ़ा (३७) अल्ला तज़िरु वाज़िरतुव्विज़्-र उख़्रा (३८) व अल्लै-स लिल्-इन्सानि इल्ला मा सआ़ (३९) व अन्-न सअ्-यहू सौ-फ़ युरा (४०) सुम्-म युज्ज़ाहुल्-जज़ा-अल्-औफ़ा (४१) व अन्-न इला रब्बिकल्-मुन्तहा (४२) व अन्नहू हु-व अज़्-ह-क व अब्का (४३) व अन्नहू हु-व अमा-त व अह्या (४४) व अन्नहू ख़-ल-क़ज़्-ज़ौजैनिज़्-ज़-क-र वल्-उन्सा (४५) मिन् नुत्-फतिन् इज़ा तुम्ना (४६) व अन्-न अ़लैहिन्नश-अतल्-उख़्रा (४७) व अन्नहू हु-व अग़्ना व अक़्ना (४८) व अन्नहू हु-व रब्बुश्शिअ्-रा (४९) व अन्नहू अह्-ल-क आ़द-निल्-ऊला (५०) व समू-द फ़मा अब्क़ा (५१) व क़ौ-म नूहिम् - मिन् क़ब्लु इन्नहुम् कानू हुम् अज़्-ल-म व अत़्ग़ा (५२)

● रुब्अ़ १/४ ★रु २/६ आ ७

वल्-मुअ्-तफ़ि-क-त अह्वा॥ (५३) फ-ग़श्शाहा मा ग़श्शा॥ (५४) फ़बि-अय्यि आलाइ रब्बि-क त-त-मारा (५५) हाज़ा नज़ीरुम्-मिनन्नुज़ुरिल्-ऊला (५६) अज़ि-फ़तिल्-आज़िफतु॥ (५७) लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि काशिफः॥ (५८) अ-फमिन् हाज़ल्-ह़दीसि तअ्-जबून॥ (५९) व तज्-हकू-न व ला तब्कून॥ (६०) व अन्तुम् सामिदून (६१) फस्जुदू लिल्लाहि वअ् - बुदू □ ★ (६२)

५४ सूरतुल्-क़-मरि ३७

(मक्की) इस सूर में अ़रबी के १४८२ अक्षर, ३४८ शब्द, ५५ आयतें और ३ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

इक़्त-र-बतिस-साअतु वन्शक़्क़ल्-क-मर (१) व इंय्यरौ आयतंय्युअ्-रिज़ू व यक़ूलू सिह्रुम्-मुस्तमिर्र (२) व कज़्ज़बू वत्त-बअू अह्-वा-अहुम् व कुल्लु अम्रिम्-मुस्तक़िर्र (३) व ल-क़द् जा-अहुम् मिनल्-अम्बाइ मा फीहि मुज़्दजर॥ (४) हिक-मतुम्-बालि-ग़तुन् फ़मा तुग्निन्नुज़ुर॥ (५) फ-त-वल्-ल अन्हुम्▨यौ-म यद्अुद्दाअि इला शैइन् नुकुर॥ (६) ख़ुश्श-अन् अब्-सारु-हुम् यख़्-रुजू-न मिनल्-अज्दासि क-अन्नहुम् जरादुम्-मुन्तशिर॥ (७) मुह्तिअी-न इलद्दाअि॥ यक़ूलुल्-काफिरू-न हाज़ा यौमुन् अ़सिर (८) कज़्ज़-बत् क़ब्-लहुम् कौमु नूहिन् फ़-कज़्ज़बू अ़ब्-दना व कालू मज्नूनुं व्वज़्दुजिर (९) फ-दआ रब्बहू अन्नी मग़्लूबुन् फन्तसिर (१०) फ-फ-तह्ना अब्वाबस-समाइ बिमाइम्-मुन-हमिरिंव्-(११) व फ़ज्जर-नल्-अर्-ज़ अुयूनन् फल्त-क़ल्-माउ अ़ला अम्रिन् क़द् क़ुदिर॥ (१२) व ह़-मल्-नाहु अ़ला ज़ाति अल-वाहिंव-व दुसुरिन्॥ (१३) तज्री बि-अअ्-युनिना जज़ा-अल्-लिमन् का-न कुफ़ि-र (१४) व ल-क़त्-त-रक्नाहा आ-य-तन् फ़-हल् मिम्मुद्दकिर (१५) फ-कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (१६) व ल-कद् यस्सर्नल-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ-हल् मिम्मुद्दकिर (१७) कज़्ज़-बत् आदुन् फ-कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (१८)

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ۝ فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ ۝
هَٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ ۝ أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ۝ لَيْسَ لَهَا مِن
دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۝ أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۝ وَتَضْحَكُونَ وَ
لَا تَبْكُونَ ۝ وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ۝ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۝
سُورَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانشَقَّ الْقَمَرُ ۝ وَإِن يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا
سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝ وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝
وَلَقَدْ جَاءَهُم مِّنَ الْأَنبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۝ حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ ۖ فَمَا
تُغْنِ النُّذُرُ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝
خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ۝
مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ ۖ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ
قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝ فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي
مَغْلُوبٌ فَانتَصِرْ ۝ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝ وَفَجَّرْنَا
الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝ وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ
أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ۝ تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ ۝ وَلَقَد تَّرَكْنَاهَا
آيَةً فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي

★रु ३/७ आ ३० □ सज्दः १२ ▨ व लाज़िम

दे। (५२) और उसी ने उल्टी हुई बस्तियो को दे पटका। (५३) फिर उन पर छाया, जो छाया। (५४) तो (ऐ इसान !) तू अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत पर झगडेगा? (५५) यह (मुहम्मद) भी अगले डर सुनाने वालो मे से एक डर सुनाने वाले है। (५६) आने वाली (यानी कियामत) करीब आ पहुची। (५७) उस (दिन की तकलीफो) को खुदा के सिवा कोई दूर नही कर सकेगा। (५८) (ऐ खुदा के इकारियो !) क्या तुम इस कलाम से ताज्जुब करते हो? (५९) और हसते हो और रोते नही, (६०) और तुम गफलत मे पड रहे हो, (६१) तो खुदा के आगे सज्दा करो और (उसी की) इबादत करो। (६२)★□

५४ सूरः क़मर ३७

सूर कमर मक्की है, इस मे पचपन आयते और तीन रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ियामत करीब आ पहुची और चाद शक हो (फट) गया। (१) और अगर काफिर कोई निशानी देखते है, तो मुह फेर लेते है और कहते है कि यह एक हमेशा का जादू है। (२) और उन्हो ने झुठलाया और अपनी ख्वाहिशो की पैरवी की और हर काम का वक्त मुकर्रर है। (३) और उन को गैब (पिछले) हालात पहुच चुके है, जिन मे इबरत है। (४) और पूरी दानाई (हिक्मत) (की किताब भी,) लेकिन डराना उन को कुछ फायदा नही देता, (५) तो तुम भी उन की कुछ परवाह न करो। जिस दिन बुलाने वाला उन को एक नाखुश चीज़ की तरफ बुलाएगा, (६) तो आखे नीची किए हुए कब्रो से निकल पडेगे गोया बिखरी हुई टिड्डिया है। (७) उस बुलाने वाले की तरफ दौडते जाते होगे। काफिर कहेगे यह दिन बडा सख्त है। (८) इन से पहले नूह की कौम ने भी झुठलाया था, तो उन्हो ने हमारे बन्दे को झुठलाया और कहा कि दीवाना है और उन्हे डाटा भी। (९) तो उन्होने अपने परवरदिगार से दुआ की कि (ऐ अल्लाह !) मैं (उन के मुकाबले मे) कमज़ोर हू, तो (उन से) बदला ले। (१०) पस हमने जोर के मेह से आसमान के मुहाने खोल दिए। (११) और ज़मीन मे चश्मे जारी कर दिए, तो पानी एक काम के लिए, जो मुकद्दर हो चुका था, जमा हो गया। (१२) और हमने नूह को एक कश्ती पर जो तख्तो और मेखो से तैयार की गयी थी, सवार कर लिया। (१३) वह हमारी आखो के सामने चलती थी। (यह सब कुछ) उस शख्स से बदला लेने के लिए किया गया, जिस को काफिर मानते न थे। (१४) और हम ने उस को एक इबरत बना छोडा, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (१५) सो (देख लो कि) मेरा अजाब और डराना कैसा हुआ ? (१६) और हम ने कुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (१७) आद ने भी झुठलाया था, सो (देख लो) कि मेरा अजाब और डराना

★रु ३/७ आ ३० □सजूदः १२ ▨ व लाज़िम

इन्ना अर्सल्ना अलैहिम् रीहन् सर-स-रन् फी यौमि नह्सिम्-मुस्तमिर्र- (१९) तन्जिअुन्ना-स क-अन्नहुम् अअ्-जाजु नख्लिम्-मुन्कअिर (२०) फ-कै-फ का-न अज़ाबी व नुज़ुर (२१) व ल-कद् यस्सर्नल्-कुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर ★ (२२) कज्ज-बत् समूदु बिन्नुज़ुर (२३) फ़-कालू अ-ब-श-रम्-मिन्ना वाहिदन् नत्तबिअुहू इन्ना इज़ल्लफी ज़लालिव्-व सुअुर (२४) अ उल्कि-यज्-ज़िक्रु अलैहि मिम्बैनिना बल् हु-व कज़्ज़ाबुन् अशिर (२५) स-यअ्-लमू-न गदम्मनिल्-कज़्ज़ाबुल्-अशिर (२६) इन्ना मुर्सिलुन्नाकति फित्-न-तुल्-लहुम् फर्तक़ि-व्हुम् वस्तबिर् (२७) व नब्बिअ्हुम् अन्नलमा-अ किस्मतुम्-बैनहुम् कुल्लु शिर्बिम्-मुह्-त-जर (२८) फनादौ साहि-बहुम् फ-तआता फ-अ-क़र (२९) फकै-फ का-न अज़ाबी व नुज़ुर (३०) इन्ना अर्सल्ना अलैहिम् सै-हतंव्-वाहि-द-तन् फ़-कानू क-हशीमिल्-मुह्तज़िर (३१) व ल-क़द् यस्सर्नल्-कुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (३२) कज़्ज़बत् कौमु लूतिम्-बिन्नुज़ुर (३३) इन्ना अर्सल्ना अलैहिम् हासिबन् इल्ला आ-ल लूतिन् नज्जैनाहुम् बि-स-हरिन् (३४) निअ्-म-तम्-मिन् अिन्दिना कज़ालि-क नज्ज़ी मन् श-कर (३५) व ल-क़द् अन्ज़-रहुम् बत्श-तना फ़-तमारौ बिन्नुज़ुर (३६) व ल-क़द् रावदूहु अन् ज़ैफ़िही फ-त-मस्ना अअ्-युनहुम् फ़ज़ूक़ू अज़ाबी व नुज़ुर (३७) व ल-क़द् सब्ब-हहुम् बुक-र-तन् अज़ाबुम्-मुस्तक़िर (३८) फ़-ज़ूक़ू अज़ाबी व नुज़ुर (३९) व ल-कद् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्मुद्दकिर ★ (४०) व ल-कद् जा-अ आ-ल फ़िर्औनन्नुज़ुर (४१) कज़्ज़बू बिआयातिना कुल्लिहा फ-अ-ख़ज़्नाहुम् अख़्-ज़ अज़ीज़िम्-मुक्तदिर (४२) अकुफ़्फ़ारुकुम् ख़ैरुम्मिन् उलाइकुम् अम् लकुम् बरा-अतुन् फ़िज़्ज़ुबुर (४३) अम् यकूलू-न नह्नु जमीअुम्-मुन्तसिर (४४)

وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُسْتَمِرٍّ ۝
تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُنْقَعِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝
فَقَالُوا أَبَشَرًا مِنَّا وَاحِدًا نَتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ أَأُلْقِيَ
الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ۝ سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَنِ الْكَذَّابُ
الْأَشِرُ ۝ إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝ وَ
نَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُحْتَضَرٌ ۝ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ
فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ
لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ۝ نِعْمَةً مِنْ عِنْدِنَا كَذَٰلِكَ نَجْزِي
مَنْ شَكَرَ ۝ وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ
عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ
بُكْرَةً عَذَابٌ مُسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ
لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝ وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُقْتَدِرٍ ۝ أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِنْ أُولَٰئِكُمْ
أَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُنْتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ

★रु. १/८ आ २२ ★रु. २/९ आ १८

कैसा हुआ ? (१८) हमने उन पर सख्त मनहूस दिन मे आधी चलायी। (१९) वह लोगो को (इस तरह) उखेडे डालती थी, गोया उखडी हुई खजूरो के तने है, (२०) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ ? (२१) और हमने कुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (२२) ★

समूद ने भी हिदायत करने वालो को झुठलाया। (२३) और कहा कि भला एक आदमी, जो हम ही मे से है हम उस की पैरवी करे ? यो हो तो हम गुमराही और दीवानगी मे पड़ गये। (२४) क्या हम सब मे से उसी पर वह्य नाजिल हुई है ? (नही) बल्कि यह झूठा खुदपसन्द है। (२५) उन को कल ही मालूम हो जाएगा कि कौन झूठा खुदपसन्द है। (२६) (ऐ सालेह !) हम उन की आजमाइश के लिए ऊंटनी भेजने वाले हैं तो तुम उन को देखते रहो और सब्र करो। (२७) और उन को आगाह कर दो कि उन मे पानी की बारी मुकर्रर कर दी गयी है। हर (बारी वाले को अपनी) बारी पर आना चाहिए। (२८) तो उन लोगो ने अपने साहिब को बुला लिया और उसने (ऊंटनी को) पकड कर उस की कूचे काट डाली। (२९) सो (देख लो कि) मेरा अजाब और डराना कैसा हुआ. (३०) हम ने उन पर (अजाब के लिए) एक चीख भेजी, तो वे ऐसे हो गये, जैसे बाड़ वाले की सूखी और टूटी हुई बाड, (३१) और हमने कुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया. तो कोई है कि सोचे-समझे ? (३२) लूत की कौम ने भी डर सुनाने वालो को झुठलाया था. (३३) तो हमने उन पर कंकड भरी हवा चलायी, मगर लूत के घर वाले कि हमने उन को पिछली रात ही मे बचा लिया, (३४) अपने फज्ल से शुक्र करने वाले को हम ऐसा ही बदला दिया करते है, (३५) और (लूत ने) उन को हमारी पकड से डरा भी दिया था, मगर उन्हो ने डराने मे शक किया। (३६) और उन से उन के मेहमानो को ले लेना चाहा, तो हमने उन की आखे मिटा दी, सो (अब) मेरे अजाब और डराने के मजे चखो। (३७) और उन पर सुबह-सवेरे ही अटल अजाब आ नाजिल हुआ। (३८) तो अब मेरे अज़ाब और डराने के मज़े चखो। (३९) और हमने कुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (४०) ★

और फ़िऔन की कौम के पास भी डर सुनाने वाले आए, (४१) उन्हो ने हमारी तमाम निशानियो को झुठलाया, तो हमने उन को इस तरह पकड लिया, जिस तरह एक ताकतवर और गालिब शख्स पकड लेता है। (४२) (ऐ अरब वालो ?) क्या तुम्हारे काफिर उन लोगो से बेहतर है या तुम्हारे लिए (पहली) किताबो मे कोई फारिग खती लिख दी गयी है ? (४३) क्या ये लोग कहते हैं कि हमारी जमाअत बडी मजबूत है ? (४४) बहुत जल्द यह जमाअत हार खाएगी और

★रु १/८ आ २२ ★रु २/९ आ १८

सयुह्-ज़मुल्-जम्अ़ु व युवल्लूनद्दुबुर (४५) वलिस्साअ़तु मौअ़िदुहुम् वस्साअ़तु अद्हा व अमर्र (४६) इन्नल्-मुज्रिमी-न फ़ी ज़लालिंव-व सुअ़ुर (४७) यौ-म युस्हबू-न फ़िन्नारि अ़ला वुजूहिहिम् जूक़ू मस-स स-क़र (४८) इन्ना कुल-ल शैइन् ख़-लक़्-नाहु बि-क़-दर (४९) व मा अम्रुना इल्ला वाहि-दतुन् क-लम्हिम्-बिल्ब-सर (५०) व ल-क़द् अह-लक्ना अश्याअ़कुम् फ़-हल् मिम्मुद्दकिर (५१) व कुल्लु शैइन् फ़-अ़लूहु फ़िज्ज़ुबुर (५२) व कुल्लु सग़ीरिंव-व कबीरिम्-मुस्ततर (५३) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव-व न-हरिन् (५४) फ़ी मक़्-अ़दि सिद्क़िन् अ़िन्-द मलीकिम्-मुक़्तदिर★(५५)

५५ सूरतुर्-रह्मानि ६७

(मदनी) इस सूर में अरबी के १६८३ अक्षर, ३५१ शब्द, ७८ आयते और ३ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अर्रह्मानु (१) अ़ल्ल-मल्-क़ुरआन (२) ख़-ल-क़ल्-इन्सा-न (३) अ़ल्ल-महुल्-बयान (४) अश्शम्सु वल्क-मरु बिहुस्बानिंव्- (५) वन्नज्मु वश्श-जरु यस्जुदान (६) वस्समा-अ र-फ़-अ़हा व व-ज़-अ़ल्-मीज़ान (७) अल्ला तत्ग़ौ फ़िल्मीज़ान (८) व अक़ीमुल्-वज़्-न बिल्क़िस्ति व ला तुख़्सिरुल्-मीज़ान (९) वलअर्-ज़ व-ज़-अ़हा लिल-अनामि (१०) फ़ीहा फ़ाकि-हतुं व-वन्नख़्लु ज़ातुल्-अक्मामि (११) वल्हब्बु ज़ुल्-अ़स्फ़ि वर्-रैहान (१२) फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (१३) ख़-ल-क़ल-इन्सा-न मिन् सल्सालिन् कल्फ़ख़्ख़ारि (१४) व ख़-ल-क़ल्-जान्-न मिम्-मारिजिम्-मिन्नार (१५) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (१६) रब्बुल-मश्रिकैनि व रब्बुल-मग़्रिबैनि (१७) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्-ज़िबान (१८) म-र-जल-बह्रैनि यल्तक़ियानि (१९) बैनहुमा बर्ज़ख़ुल-ला यब्-ग़ियान (२०) फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (२१)

الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۝ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ
وَأَمَرُّ ۝ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ
عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ۝ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ۝
وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۝ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ
فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ۝ وَكُلُّ صَغِيرٍ
وَكَبِيرٍ مُسْتَطَرٌ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۝ فِي مَقْعَدِ
صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيكٍ مُقْتَدِرٍ ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الرَّحْمَٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝
الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝ وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ۝ وَالسَّمَاءَ
رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۝ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۝ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ
بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۝ وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ۝ فِيهَا
فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۝ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ
وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ نَارٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ رَبُّ
الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ
يَلْتَقِيَانِ ۝ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

व. लाज़िम ★रु ३/१० आ १५

ये लोग पीठ फेर-फेर कर भाग जाएगे। (४५) उन के वायदे का वक्त तो कियामत है और कियामत बडी सख्त और बहुत कडवी है। (४६) बेशक गुनाहगार लोग गुमराही और दीवानगी मे (पडे हुए) है।(४७) उस दिन मुह के बल दोजख मे घसीटे जाएगे। अब आग का मजा चखो। (४८) हमने हर चीज मुकर्रर अन्दाजे के साथ पैदा की है। (४९) और हमारा हुक्म तो आग के लपकने की तरह एक बात होती है। (५०) और हम तुम्हारे हम-मजहबो को हलाक कर चुके है, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (५१) और जो कुछ उन्हो ने किया (उन के) आमालनामो मे (दर्ज) है। (५२) (यानी) हर छोटा और बडा काम लिख दिया गया है। (५३) जो परहेजगार है, वे बागो और नहरो मे होगे, (५४) (यानी) पाक मकाम मे हर तरह की कुदरत रखने वाले बादशाह की बारगाह मे। (५५)✶

५५ सूरः रह्मान ९७

सूर रह्मान मक्की है, उस मे अठहत्तर आयते और तीन रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(खुदा, जो) निहायत मेहरबान, (१) उसी ने कुरआन की तालीम फरमायी, (२) उसी ने इन्सान को पैदा किया। (३) उसी ने उस को बोलना सिखाया, (४) सूरज और चाद एक मुकर्रर हिसाब से चल रहे है, (५) और बूटिया और पेड सज्दा कर रहे है। (६) और उसी ने आसमान को बुलंद किया और तराजू कायम की, (७) कि तराजू (से तौलने) मे हद से आगे न बढो। (८) और इन्साफ के साथ ठीक तोलो और तौल कम मत करो (९) और उसी ने खल्कत के लिए जमीन बिछायी, (१०) उस मे मेवे और खजूर के पेड है, जिन के खोशो पर गिलाफ होते है। (११) और अनाज, जिस के साथ भुस होता है और खुश्बूदार फूल, (१२) तो (ऐ जिन्नो और इसानो के गिरोह !) तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमतो को झुठलाओगे ?[1] (१३) उसी ने इन्सान को ठीकरे की तरह खनखनाती मिट्टी से बनाया, (१४) और जिन्नो को आग के शोले से पैदा किया, (१५) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (१६) वही दोनो मश्रिको और दोनो मग्रिबो का मालिक (है,) (१७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (१८) उसी ने दो दरिया जारी किए जो आपस मे मिलते है। (१९) दोनो मे एक आड है कि (उस से) आगे नही बढ सकते। (२०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२१) दोनो दरियाओ से मोती और मूगे निकलते

---

१ इस आयत मे खिताब दो जमाअतो की तरफ है और इस से मुराद इन्सान और जिन्न है, चुनाचे इक्तीसवें आयत मे 'सकुलान' का लफ्ज़ है, जिसके मानी है दो गिरोह और उनसे जैसा कि हदीसे सही मे आया है, जिन्न और इन्सान मुराद है और तेतीसवी आयत मे तो साफ जिन्न व इन्स का नाम ले कर उन से खिताब किया गया है। इसी वजह से हम ने इस आयत के तर्जुमे मे, ऐ जिन्न व इन्स के गिरोहो ! के लफ्ज़ बढा दिए है।

▨ व लाज़िम ★रु ३/१० आ १५

यख़्रुजु मिन्हुमल्-लुअ्लुउ वल्-मर्जानु (२२) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्-जिबान (२३) व लहुल्-जवारिल्-मुन्श-आतु फिलबह्रि कल-अअ्-लामि (२४) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्जिबान (२५) कुल्लु मन् अलैहा फानिव्- (२६) व यब्क़ा वज्हु रब्बि-क ज़ुलजलालि वल-इक्रामि (२७) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्जिबान (२८) यस्-अलुहू मन् फ़िस्समावाति वलअर्जि कुल-ल यौमिन् हु-व फी शअ्निन् (२९) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्जिबान (३०) स-नफ्-रुग़ु लकुम् अय्यु-हस्स-कलानि (३१) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्-जिबान (३२) यामअ्-श-रल्-जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त-तअ्-तुम् अन् तन्फुज़ू मिन् अक़्तारिस्समावाति वलअर्जि फन्फुज़ू ला तन्फ़ुज़ू-न इल्ला बिसुल्तान (३३) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्जिबान (३४) युर्सलु अलैकुमा शुवाज़ुम्-मिन्नारिंव-व नुहासुन् फला तन्तसिरानि (३५) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बि-कुमा तुकज्जिबान (३६) फ़-इज़न-शक़्क़तिस्-समाउ फ-कानत् वर्द-तन् कद्दिहानि (३७) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्-जिबान (३८) फयौमइजिल्ला युस-अलु अन् जम्बिही इन्सु व्-व ला जान्नुत् (३९) फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्-जिबान (४०) युअ्-रफुल्-मुज्रिमू-न बिसीमाहुम् फ़युअ्-ख़जु बिन्नवासी वल-अक़्दामि (४१) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्जिबान (४२) हाज़िही ज-हन्नमुल्लती युकज्-जिबु बिहल-मुज्रिमून (४३) यतूफू-न बैनहा व बै-न हमीमिन् आन (४४) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्जिबान ★ (४५) व लि-मन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही जन्नतानि (४६) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्-जिबान (४७) ज़वाता अफ़्नानिन् (४८) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्-जिबान (४९) फीहिमा अ़ैनानि तज्रियानि (५०) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्-जिबान (५१) फ़ीहिमा मिन् कुल्लि फाकिहतिन् ज़ौजानि (५२) फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज्-जिबान (५३)

قال فما خطبكم ٨٢٥ الرحمٰن

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ وَلَهُ
الْجَوَارِ الْمُنْشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۚ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۚ
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلَّ
يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ
الثَّقَلَانِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ
اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا ۚ لَا
تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا
شُوَاظٌ مِنْ نَارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ۚ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي
وَالْأَقْدَامِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ
بِهَا الْمُجْرِمُونَ ۘ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ۚ فَبِأَيِّ

منزل ٧

★रु १/११ आ २५ ● नि. १/२ ▨व. लाज़िम ★रु २/१२ आ २०

है। (२२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२३) और जहाज भी उसी के है जो नदी मे पहाड़ों की तरह ऊचे खडे होते है, (२४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२५)★●

जो (मख्लूक़) जमीन पर है, सब को फना होना है। (२६) और तुम्हारे परवरदिगार ही की जात (बरकत वाली,) जो जलाल व अज्मत वाली है, बाकी रहेगी, (२७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२८) आसमान व जमीन मे जितने लोग हैं, सब उसी से मागते है, वह हर दिन काम मे लगा रहता है।[1] (२९) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३०) ऐ दोनो जमाअतो ! हम बहुत जल्द तुम्हारी तरफ मुतवज्जह होते है। (३१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३२) ऐ जिन्न व इन्सान के गिरोह ! अगर तुम्हे कुदरत हो कि आसमान और जमीन के किनारो से निकल जाओ, तो निकल जाओ और जोर के सिवा तो तुम निकल सकने ही के नही।[2] (३३) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३४) तुम पर आग के शोले और धुवा छोड़ दिया जाएगा तो फिर तुम मुकाबला न कर सकोगे। (३५) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३६) फिर जब आसमान फट कर तेल की तलछट की तरह गुलाबी हो जाएगा, (तो वह कैसा हौलनाक दिन होगा ?) (३७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३८) उस दिन न तो किसी इसान से उस के गुनाहो के बारे मे पूछ-ताछ की जाएगी और न किसी जिन्न से। (३९) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४०) गुनाहगार अपने चेहरे ही से पहचान लिए जाएगे, तो पेशानी के बालो और पावो से पकड लिए जाएगे। (४१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४२) यही वह जहन्नम है, जिसे गुनाहगार लोग झुठलाते थे। (४३) वे दोजख और खौलते हुए गर्म पानी के दर्मियान घूमते फिरेंगे। (४४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४५)★

और जो शख्स अपने परवरदिगार के सामने खडे होने से डरा, उस के लिए दो बाग है। (४६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४७) उन दोनो मे बहुत-सी शाखे (यानी किस्म-किस्म के मेवो के पेड़ हैं,) (४८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४९) इन मे दो चश्मे बह रहे है, (५०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५१) उन मे सब मेवे दो-दो किस्म के है, (५२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५३) (जन्नत वाले) ऐसे बिछौनो

१ मतलब यह है कि जितने तसर्रुफात इस दुनिया मे हो रहे हैं, उन सब का मस्दर वही रब्बुल आलमीन है।

२ और जोर तुम मे है नही, तो तुम भाग कर निकल सकते भी नही।

मुत्तकिईन अ़ला फ़ुरुशिम्-बत़ाइनुहा मिन् इस्तब्रक़िन् व ज-नल्-जन्नतैनि दान (५४) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५५) फ़ीहिन-न क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम् यत़्मिस-हुन्-न इन्सुन् क़ब्-लहुम् व ला जान्न (५६) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५७) क-अन्नहुन्नल-याक़ूतु वलमर्जान (५८) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५९) हल् जज़ाउल-इह़्सानि इल्लल-इह़्सानु (६०) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६१) व मिन् दूनिहिमा जन्नतानि (६२) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६३) मुद-हाम्मतानि (६४) फबिअय्यि आला-इ रब्बि-कुमा तुकज़्ज़िबान (६५) फीहिमा अ़ैनानि नज़्ज़ाखतानि (६६) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६७) फीहिमा फाकि-हतुंव्-व नख़्लुंव्-व रुम्मान (६८) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६९) फी-हिन्-न ख़ैरातुन् ह़िसान (७०) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (७१)

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى فُرُشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ
وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ
الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾
هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَ
مِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾
حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِى الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾
لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾
مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾
سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ سِتٌّ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً
اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾
اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ﴿٦﴾
وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾ وَاَصْحٰبُ

हूरुम्-मक़्सूरातुन् फिल - खियामि (७२) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (७३) लम् यत़्मिस-हुन्-न इन्सुन् क़ब्-लहुम् व ला जान्न (७४) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (७५) मुत्तकिईन अ़ला रफ़्रफ़िन् खुज़्रिंव्-व अ़ब्क़रिय्यिन् ह़िसान (७६) फबिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (७७) तबा-र - कस्मु रब्बि-क ज़िल-जलालि वल् - इक्राम ★ (७८)

५६ सूरतुल् वाक़िअ़ति ४६

(मक्की) इस सूर मे अरबी के १७६८ अक्षर, ३८४ शब्द, ९६ आयतें और ३ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

इज़ा व-क़-अ़तिल-वाक़िअ़तु (१) लै-स लिवक़्-अ़तिहा काज़िबतुन् ※ (२) ख़ाफ़ि-ज़तुर-राफ़िअ़तुन् (३) इज़ा रुज्जतिलअर्ज़ु रज्जंव- (४) व बुस्सतिल-जिबालु बस्सन् (५) फ-कानत् हबा-अम्-मुम्बस्सव- (६) व कुन्तुम् अज़्वाजन् सला-सः (७) फ़-अस्ह़ाबुल-मैमनति मा अस्ह़ाबुल्-मैमन. (८)

★रु ३/१३ आ ३३ ※व लाज़िम

पर जिन के अस्तर अतलस के है, तकिया लगाये हुए होंगे और दोनो बागो के मेवे करीब (झुक रहे) है। (५४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५५) इन मे नीची निगाह वाली औरते है जिन को जन्नत वालों से पहले न किसी इन्सान ने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने (५६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५७) गोया वे याकूत और मर्जान है। (५८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५९) नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ नही है, (६०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (६१) और इन बागो के अलावा दो बाग और है, (६२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (६३) दोनो खूब गहरे हरे. (६४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे। (६५) इन मे दो चश्मे उबल रहे है. (६६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (६७) इन मे मेवे और खजूरे और अनार है। (६८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (६९) इन मे नेक सीरत (और) खूबसूरत औरते है, (७०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (७१) (वे) हूरे (है, जो) खेमो मे छिपी (है), (७२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (७३) इन को (जन्नत वालो से) न किसी इंसान ने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने. (७४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (७५) हरी कालीनो और उम्दा मस्नदों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। (७६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (७७) (ऐ मुहम्मद !) तुम्हारा परवरदिगार, जो जलाल व अज्मत का मालिक है, उस का नाम बड़ा बरकत वाला है। (७८) ★

५६ सूर: वाक़िअ: ४६

सूर. वाकिअ. मक्की है, इस मे ९६ आयते और तीन रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब वाकेअ होने वाली वाकेअ हो जाए, (१) उस के वाकेअ होने मे कुछ झूठ नही, (२) किसी को पस्त करे, किसी को बुलंद, (३) जब जमीन भूचाल से कापने लगे, (४) और पहाड टूट-टूट कर रेजा-रेजा हो जाएं, (५) फिर गुबार हो कर उडने लगे, (६) और तुम लोग तीन क़िस्म हो जाओ, (७) तो दाहिने हाथ वाले, (सुब्हानल्लाह !) दाहिने हाथ वाले क्या (ही चैन मे) है, (८)

★रु २/१३ आ ३३ ▨व लाज़िम

व अस्हाबुल-मश्-अ-मति मा अस्-हाबुल-मश्-अ-म (९) वस्साबिकूनस्-साबिकून (१०) उला-इकल्-मुकर्रबून (११) फी जन्नातिन्नअीम (१२) सुल्लतुम्-मिनल-अव्वलीन (१३) व क़लीलुम्-मिनल-आखिरीन (१४) अला सुरुरिम्-मौज़ूनतिम्- (१५) -मुत्तकिई-न अलैहा मु-त-काबिलीन (१६) यतूफु अलैहिम् विल्दानुम्-मु-खल्लदून (१७) बि-अक्वाबिंव्-व अबारी-क़ व कअ्सिम्-मिम्-मअीनिल- (१८) ला युसद्-दअू-न अन्हा व ला युन्जिफून (१९) व फाकिहतिम्-मिम्मा य-त-खय्यरून (२०) व लह्मि तैरिम्-मिम्मा यश्तहून (२१) व हूरुन् अीनुन् (२२) क-अम्सालिल-लुअ्लुइल-मक्नून (२३) जज़ा-अम्-बिमा कानू यअ्-मलून (२४) ला यस्-मअू-न फीहा लग्वव-व ला तअ्सीमा (२५) इल्ला कीलन् सलामन् सलामा (२६) व अस्हाबुल-यमीनि मा अस्हाबुल-यमीन (२७) फी सिद्रिम्-मख्जूदिंव- (२८) व तल्हिम्-मन्जूदिंव- (२९) व ज़िल्लिम्-मम्दूदिंव्- (३०) व माइम्-मस्कूबिंव्- (३१) व फ़ाकिहतिन् कसीरतिल- (३२) ला मक्तूअतिंव-व ला मम्नूअतिंव्- (३३) व फुरुशिम्-मर्फूअः (३४) इन्ना अन्शअ्नाहुन्-न इन्शा-अन् (३५) फ-ज-अल्नाहुन-न अब्कारन् (३६) अुरुबन् अतराबल- (३७) लि-अस्हाबिल-यमीन ★ (३८) सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन (३९) व सुल्लतुम्-मिनल-आख़िरीन (४०) व अस-हाबुश्शिमालि मा अस्हाबुश्शिमाल (४१) फी समूमिंव्-व हमीमिंव्- (४२) व ज़िल्लिम्-मिंय्यह्मूमिल्- (४३) ला बारिदिंव-व ला करीम (४४) इन्नहुम् कानू कब्-ल जालि-क मुत-रफीन (४५) व कानू युसिर्रू-न अ-लल्-हिन्सिल-अज़ीम (४६) व कानू यकूलू-न अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अिज़ामन् अ इन्ना ल-मब्अूसून (४७) अ-व आबाउनल्-अव्वलून (४८) कुल् इन्नल-अव्वली-न वलआख़िरी-न (४९)

الْمَشْئَمَةِ ۝ مَا أَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝ وَالسّٰبِقُونَ السّٰبِقُونَ ۝ أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۝
فِي جَنّٰتِ النَّعِيمِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝
عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۝ مُّتَّكِـِٔينَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِينَ ۝ يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ
مُّخَلَّدُونَ ۝ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُونَ
عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ۝ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۝ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا
يَشْتَهُونَ ۝ وَحُورٌ عِينٌ ۝ كَأَمْثٰلِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝ جَزَآءًۢ بِمَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۝ إِلَّا قِيلًا
سَلٰمًا سَلٰمًا ۝ وَأَصْحٰبُ الْيَمِينِ ۙ مَآ أَصْحٰبُ الْيَمِينِ ۝ فِي سِدْرٍ
مَّخْضُودٍ ۝ وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ۝ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ۝ وَمَآءٍ مَّسْكُوبٍ ۝ وَ
فَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۝ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ۝ وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ۝
إِنَّآ أَنشَأْنٰهُنَّ إِنشَآءً ۝ فَجَعَلْنٰهُنَّ أَبْكَارًا ۝ عُرُبًا أَتْرَابًا ۝
لِّأَصْحٰبِ الْيَمِينِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝
وَأَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ أَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۝ فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝
وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ۝ لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ
ذٰلِكَ مُتْرَفِينَ ۝ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ۝ وَكَانُوا
يَقُولُونَ ۙ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظٰمًا أَئِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝ أَوَ
ءَابَآؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝ لَمَجْمُوعُونَ ۝

★रु १/१४ आ ३८

और बाए हाथ वाले (अफसोस !) बाए हाथ वाले क्या (अज़ाब मे गिरफ्तार) है, (९) और जो आगे बढने वाले है, (उन का क्या कहना) वे आगे ही बढने वाले है, (१०) वही (ख़ुदा के) मुकर्रब है, (११) नेमत की बहिश्त मे, (१२) वे बहुत से तो अगले लोगो मे से होगे, (१३) और थोडे से पिछलो मे से, (१४) (लाल व याकूत वगैरह से) जडे हुए तख़्तो पर, (१५) आमने-सामने तकिया लगाये हुए, (१६) नवजवान ख़िद्मतगुज़ार, जो हमेशा (एक ही हालत मे) रहेगे, उन के आस-पास फिरेगे। (१७) यानी आबख़ोरे और आफ़तावे और साफ़ शराब के गिलास ले ले कर, (१८) इस से न तो सर मे दर्द होगा और न उन की अक्ले मारी जाएगी। (१९) और मेवे, जिस तरह के उन को पसन्द हो, (२०) और परिंदो का गोश्त, जिस किस्म का उन का जी चाहे, (२१) और बडी-बडी आखो वाली हूरे, (२२) जैसे (हिफ़ाज़त से) तह किए हुए (आबदार) मोती। (२३) यह उन के आमाल का बदला है, जो वे करते थे। (२४) वहा न बेहूदा बात सुनेंगे और न गाली-गलौज, (२५) हा, उन का कलाम सलाम-सलाम (होगा,) (२६) और दाहिने हाथ वाले ! (सुब्हानल्लाह !) दाहिने हाथ वाले क्या (ही ऐश मे) है ? (२७) (यानी) बे-काटे की बेरियो, (२८) और तह-ब-तह केलो, (२९) और लम्बे-लम्बे सायो, (३०) और पानी के झरनो, (३१) और ज्यादा से ज्यादा मेवो (के बागो) मे, (३२) जो न कभी खत्म हो और न उन से कोई रोके,[1] (३३) और ऊचे-ऊचे फर्शो मे, (३४) हम ने इन (हूरो) को पैदा किया, (३५) तो उन को कुवारिया बनाया, (३६) (और शौहरो की) प्यारिया और हम-उम्र, (३७) (यानी) दाहिने हाथ वालो के लिए, (३८)★

(ये) बहुत से तो अगले लोगो मे से है, (३९) और बहुत से पिछलो मे से। (४०) और बाए हाथ वाले (अफसोस !) बाए हाथ वाले क्या (ही अजाब मे) है। (४१) (यानी दोज़ख की) लपट और खौलते हुए पानी मे, (४२) और स्याह धुए के साए मे, (४३) (जो) न ठडा (है,) न ख़ुशनुमा, (४४) ये लोग इस से पहले नेमतो के ऐश मे पडे हुए थे, (४५) और बड़े गुनाह पर अडे हुए थे, (४६) और कहा करते थे कि भला जब हम मर गये और मिट्टी हो गये और हड्डिया (ही हड्डिया रह गये) तो क्या हमे फिर उठाना होगा ? (४७) और क्या हमारे बाप-दादा को भी ? (४८) कह दो कि बेशक पहले और पिछले, (४९) (सब) एक मुकर्रर दिन के वक्त पर जमा

---

१ यानी इस मे से कुछ टूट नही चुका।

★रु १/१४ आ ३८

ल-मज्मूअ़ू-न ✱ इला मीकाति यौमिम्-मअ्-लूम (५०) सुम्-म इन्नकुम् अय्युहज़्ज़ा-ल्लूनल-मुकज़्ज़िबून ✱ (५१) ल-आकिलू-न मिन् श-जरिम्-मिन् ज़क्कूम ✱ (५२) फ़मालिऊ-न मिन्हल-बुतून ✱ (५३) फ़-शारिबू-न अ़लैहि मिनल् हमीमि ✱ (५४) फ़-शारिबू-न शुर्बल्-हीम् ✱ (५५) हाज़ा नुज़ुलुहुम् यौमद्दीन ✱ (५६) नह्नु ख़-लक़्ना-कुम् फ़लौला तुसद्दिकून (५७) अ-फ़-रएैतुम् मा तुम्नून ✱ (५८) अ अन्तुम् तख़्लुकूनहू अम् नह्नुल-ख़ालिकून (५९) नह्नु कद्-दर्ना बैनकुमुलमौ-त व मा नह्नु बिमस्बूकीन ✱ (६०) अला अन् नुबद्-दि-ल अम्-सा-लकुम् व नुन्शि-अकुम् फ़ी मा ला तअ्-लमून (६१) व ल-कद् अलिम्तुमुन्-नश्-अ-तुल-ऊला फ़लौला त-ज़क्करून (६२) अ-फ़-रएैतुम् मा तह्रुसून ✱ (६३) अ अन्तुम् तज़्-रअ़ूनहू अम् नह्नुज़्ज़ारिअ़ून (६४) लौ नशाउ ल-ज-अल्नाहु हुतामन् फ़-ज़ल्तुम् त-फक्कहून (६५) इन्ना ल-मुग्रमून ✱ (६६) बल् नह्नु मह्रूमून (६७) अ-फ़-रएैतुमुल्-मा-अल्लज़ी तश्-रबून ✱ (६८) अ अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिनल्मुज़्नि अम् नह्नुल-मुन्ज़िलून (६९) लौ नशाउ ज-अल्नाहु उजाजन् फ़लौला तश्कुरून (७०) अ-फ़-रएैतुमुन्-नारल्लती तूरून ✱ (७१) अ अन्तुम् अन-शअ्-तुम् श-ज-र-तहा अम् नह्नुल-मुन्शिऊन (७२) नह्नु ज-अल्नाहा तज़्-कि-र-तव्-व मताअल्-लिल्मुक्वीन ✱ (७३) फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल-अ़ज़ीम ★● (७४) फ़ला उक़्सिमु बि-मवाकिअिन्नुजूम ✱ (७५) व इन्नहू ल-क-समुल्-लौ तअ्-लमू-न अ़ज़ीम ✱ (७६) इन्नहू लकुर्आनुन् करीम ✱ (७७) फ़ी किताबिम्-मक्नूनिल- ✱ (७८) -ला यमस्सुहू इल्लल-मुतह-हरून ✱ (७९) तन्ज़ीलुम्-मिर्रब्बिल - आ़-लमीन (८०) अ-फ़बिहाज़ल - हदीसि अन्तुम् मुद्हिनून ✱ (८१) व तज्-अलू-न , रिज् - ककुम् अन्नकुम् तुकज़्ज़िबून (८२)

قال فما خطبكم ٢٧ — الواقعة ٥٦

إلى ميقات يوم معلوم ۝ ثم إنكم أيها الضالون المكذبون ۝
لآكلون من شجر من زقوم ۝ فمالئون منها البطون ۝
فشاربون عليه من الحميم ۝ فشاربون شرب الهيم ۝ هذا
نزلهم يوم الدين ۝ نحن خلقناكم فلولا تصدقون ۝
أفرأيتم ما تمنون ۝ أأنتم تخلقونه أم نحن الخالقون ۝ نحن
قدرنا بينكم الموت وما نحن بمسبوقين ۝ على أن نبدل أمثالكم
وننشئكم في ما لا تعلمون ۝ ولقد علمتم النشأة الأولى فلولا
تذكرون ۝ أفرأيتم ما تحرثون ۝ أأنتم تزرعونه أم نحن
الزارعون ۝ لو نشاء لجعلناه حطاما فظلتم تفكهون ۝ إنا
لمغرمون ۝ بل نحن محرومون ۝ أفرأيتم الماء الذي تشربون ۝
أأنتم أنزلتموه من المزن أم نحن المنزلون ۝ لو نشاء جعلناه
أجاجا فلولا تشكرون ۝ أفرأيتم النار التي تورون ۝ أأنتم
أنشأتم شجرتها أم نحن المنشئون ۝ نحن جعلناها تذكرة ومتاعا
للمقوين ۝ فسبح باسم ربك العظيم ۝ فلا أقسم بمواقع النجوم ۝
وإنه لقسم لو تعلمون عظيم ۝ إنه لقرآن كريم ۝ في كتاب
مكنون ۝ لا يمسه إلا المطهرون ۝ تنزيل من رب العالمين ۝
أفبهذا الحديث أنتم مدهنون ۝ وتجعلون رزقكم أنكم تكذبون ۝

★रु. २/१५ आ ३६ ●सु. ३/४

किए जाएगे। (५०) फिर तुम ऐ झुठलाने वाले गुमराहो ! (५१) थूहर के पेड खाओगे, (५२) और इसी से पेट भरोगे, (५३) और इस पर खौलता हुआ पानी पियोगे, (५४) और पियोगे भी तो इस तरह जैसे प्यासे ऊंट पीते है, (५५) बदले के दिन यह उन की मेहमानी होगी। (५६) हम ने तुम को (पहली बार भी तो) पैदा किया है, तो तुम (दोबारा उठने को) क्यो सच नही समझते ? (५७) देखो तो कि जिस (नुत्फे) को तुम (औरतो के रहम मे) डालते हो, (५८) क्या तुम इस (से इन्सान) को बनाते हो या हम बनाते हैं ? (५९) हम ने तुम मे मरना ठहरा दिया है और हम इस (बात) से आजिज़ नही, (६०) कि तुम्हारी तरह के और लोग तुम्हारी जगह ले आए और तुम को ऐसे जहान मे जिस को तुम नही जानते, पैदा कर दे। (६१) और तुम ने पहली पैदाइश तो जान ही ली है, फिर तुम सोचते क्यो नही ? (६२) भला देखो तो कि जो कुछ तुम बोते हो, (६३) तो क्या तुम उसे उगाते हो या हम उगाते है ? (६४) अगर हम चाहे तो उसे चूरा-चूर कर दे और तुम बाते बनाते रह जाओ। (६५) (कि हाय !) हम तो मुफ्त जुर्माने मे फस गये (६६) बल्कि हम है ही बे-नसीब। (६७) भला देखो तो कि जो पानी तुम पीते हो, (६८) क्या तुम ने उस को बादल मे नाजिल किया है या हम नाजिल करते हैं ? (६९) अगर हम चाहे तो हम उसे खारी कर दे, फिर तुम शुक्र क्यो नही करते ? (७०) भला देखो तो, जो आग तुम पेड से निकालते हो, (७१) क्या तुम ने उस पेड को पैदा किया है या हम पैदा करते है ? (७२) हम ने उसे याद दिलाने और मुसाफिरो के बरतने को बनाया है। (७३) तो तुम अपने परवरदिगार बुजुर्ग के नाम की तस्बीह करो। (७४)★●

हमे तारो की मंजिलो की कसम ! (७५) और अगर तुम समझो तो यह बडी कसम है, (७६) कि यह बड़े रुत्बे का कुरआन है, (७७) (जो) किताबे महफूज़ मे (लिखा हुआ है।) (७८) इस को वही हाथ लगाते है, जो पाक हैं। (७९) परवरदिगारे आलम की तरफ से उतारा गया है। (८०) क्या तुम उस कलाम से इंकार करते हो ? (८१) और अपना वजीफा यह बनाते हो कि (इसे)

★रु. २/१५ आ ३६ ●पु ३/४

फ़लौला इज़ा ब-ल-गतिल-हुल्क़ूम॥(८३) व अन्तुम् ह़ीनइजिन् तन्ज़ुरून॥(८४) व नह़्नु अक्-रबु इलैहि मिन्कुम् व लाकिल्ला तुब्सिरून (८५) फ़लौला इन् कुन्तुम् ग़ै-र मदीनीन॥(८६) तर्जिअूनहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (८७) फ़-अम्मा इन् का-न मिनल-मुक़र्रबीन॥(८८) फ़रौहुं व्-व रैह़ानुंव्-व जन्नतु नअीम (८९) व अम्मा इन् का-न मिन् अस्ह़ाबिल-यमीन॥(९०) फ़-सलामुल्ल - क मिन् अस्ह़ाबिल - यमीन*ط*(९१) व अम्मा इन् का-न मिनल-मुकज्जिबीनज़्-ज़ाल्लीन॥ (९२) फनुज़ुलुम्-मिन् ह़मीमिंव्-॥ (९३) व तस्लि-यतु जहीम (९४) इन्-न हाज़ा लहु - व हक़्क़ुल - यक़ीन*ج* (९५) फ़सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल - अ़ज़ीम ★ (९६)

५७ सूरतुल् ह़दीदि ९४

(मदनी) इस सूर मे अरबी के २५९९ अक्षर, ५८६ शब्द, २९ आयते और ४ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

सब्ब-ह़ लिल्लाहि मा फिस्समावाति वल्अर्ज़ि*ج* व हुवल-अजीजुल-ह़कीम (१) लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि युह़्यी व युमीतु*ج* व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (२) हुवल - अव्वलु वल्-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्बातिनु*ج* व हु-व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (३) हुवल्लज़ी ख़-ल - क़स्समावाति वल्अर्-ज फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़-लल्अर्शि*ط* यअ़्-लमु मा यलिजु फ़िल्अर्जि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअ़्-रुजु फीहा*ط* व हु-व म-अ़कुम् ऐनमा कुन्तुम्*ط* वल्लाहु बिमा तअ़् - मलू-न बसीर (४) लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि*ط* व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल - उमूर (५) यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि*ط* व हु-व अ़लीमुम् - बिज़ातिस़ - सुदूर (६)

قال فما خطبكم ٢٧ — ٨٢٩ — الحديد ٥٧

فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ۝ وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ۝ وَنَحْنُ أَقْرَبُ
إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ۝ فَلَوْلَآ إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝
تَرْجِعُونَهَآ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝ فَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝
فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝ وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنْ أَصْحَٰبِ الْيَمِينِ ۝
فَسَلَٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَٰبِ الْيَمِينِ ۝ وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ
الضَّآلِّينَ ۝ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ۝ وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ۝ إِنَّ هَٰذَا
لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝
سورة الحديد مدنية — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَهُ مُلْكُ
السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ هُوَ
الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّٰهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ هُوَ
الَّذِي خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى
الْعَرْشِ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنزِلُ
مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ لَّهُ مُلْكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ
الْأُمُورُ ۝ يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَهُوَ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُم مُّسْتَخْلَفِينَ

منزل

★रु ३/१६ आ २२

झुठलाते हो, (८२) भला जब रूह गले मे आ पहुचती है, (८३) और तुम उस वक्त (की हालत को) देखा करते हो, (८४) और हम उस (मरने वाले) से तुम से भी ज्यादा नजदीक होते है, लेकिन तुम को नजर नही आते। (८५) पस अगर तुम किसी के बस मे नही हो, (८६) तो अगर सच्चे हो तो रूह को फेर क्यो नही लेते ? (८७) फिर अगर वह (खुदा के) मुकर्रिबो मे से है, (८८) तो (उस के लिए) आराम और खुश्बूदार फल और नेमत के बाग है, (८९) और अगर वह दाए हाथ वालों मे से है, (९०) तो (कहा जाएगा कि) तुझ पर दाहिने हाथ वालो की तरफ से सलाम, (९१) और अगर वह झुठलाने वाले गुमराहो मे से है, (९२) तो (उस के लिए) खौलते पानी की मेहमानी है, (९३) और जहन्नम मे दाखिल किया जाना। (९४) यह (दाखिल किया जाना यकीनन सही यानी) हक्कुल यकीन है। (९५) तुम अपने परवरदिगार बुजुर्ग के नाम की तस्बीह करते रहो। (९६) ★

५७ सूरः हदीद ९४

सूर हदीद मदनी है, उस मे २९ आयतें और चार रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो मख्लूक आसमानो और जमीन मे है, खुदा की तस्बीह करती है और वह गालिब (और) हिक्मत वाला है। (१) आसमानो और जमीन की बादशाही उसी की है, (वही) जिंदा करता और मारता है और वह हर चीज पर कुदरत रखता है। (२) वह (सब से) पहला और (सब से) पिछला और (अपनी कुदरतो मे सब पर) जाहिर और (अपनी जात से) पोशीदा है और वह तमाम चीजो को जानता है। (३) वही है जिस ने आसमानो और जमीन को छ दिन मे पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठहरा। जो चीज जमीन मे दाखिल होती और जो उस से निकलती है और आसमान मे उतरती और जो उस की तरफ चढती है, सब मालूम है और तुम जहा कही हो, वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को देख रहा है। (४) आसमानो और जमीन की बादशाही उसी की है और सब मामले उसी की तरफ रुजूअ होते है। (५) (वही) रात को दिन मे दाखिल करता और दिन को रात मे दाखिल करता है और वह दिलो के भेदो

★रु ३/१६ आ २२

आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही व अन्फिक़ू मिम्मा ज-अ-लकुम् मुस्तख-लफी-न फ़ीहि फ़ल्लजी-न आमनू मिन्कुम् व अन्फक़ू लहुम् अज्-रुन् कबीर (७) व मा लकुम् ला तुअ्मिनू-न बिल्लाहि ᶜ वर्रसूलु यद्अूकुम् लितुअ्मिनू बिरब्बिकुम् व कद् अ-ख़-ज मीसाककुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (८) हुवल्लजी युनज्जिलु अला अब्दिही आयातिम्-बय्यिनातिल-लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि ᵇ व इन्नल्ला-ह बिकुम् ल-रऊफुर्रहीम (९) व मा लकुम् अल्ला तुन्फिक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व लिल्लाहि मीरा सुस्समावाति वल्अर्ज़ि ᵇ ला यस्तवी मिन्कुम् मन् अन्फ-क मिन् क़ब्लिल-फतहि व कात-ल ᵇ उलाइ-क अअ्-ज़मु द-र-ज-तम्-मिनल्लजी-न अन्फ़क़ू मिम्-बअ्-दु व कातलू ᵇ व कुल्लव्व-अ-दल्लाहुल्-हुस्ना ᵇ वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर ★ (१०) मन् जल्लजी युक्रिजुल्ला-ह कर्-जन् ह्-स-नन् फ-युजाअि-फहू लहू व लहू अज्रुन् करीम ᶜ (११) यौ-म त-रल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति यस्आ नूरुहुम् बै-न ऐदीहिम् व बिऐमानिहिम् बुश्रा-कुमुल्यौ-म जन्नातुन् तज्री मिन् तह्ति-हल-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ᵇ जालि-क हुवल-फौजुल-अज़ीम ᶜ (१२) यौ-म यक़ूलुल-मुनाफिक़ू-न वल्मुनाफिकातु लिल्लजी-न आमनुन्ज़ुरूना नक़्तबिस् मिन् नूरिकुम् ᶜ क़ीलर्जिअू वरा-अकुम् फ़ल्तमिसू नूरन् ᵇ फजुरि-ब बैनहुम् बिसू-रिल्लहू बाबुन् ᵇ बातिनुहू फीहिर्रह-मतु व जाहिरुहू मिन कि-बलिहिल-अज़ाब ᵇ (१३) युनादूनहुम् अ-लम् नकुम्-म-अकुम् ᵇ कालू बला व लाकिन्नकुम् फ़-तन्तुम् अन्फ़ुसकुम् व तरब्बस्तुम् वर्तब्तुम् व गर्रतकुमुल - अमानिय्यु हत्ता जा-अ अम्रुल्लाहि व गर्रकुम् बिल्लाहिल - गरूर (१४)

قال فما خطبكم ٢٧ — الحديد ٥٧

فِيهِ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَأَنفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ
مِيثَاقَكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ
بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝
وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ أَنفَقَ مِن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ
دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا مِن بَعْدُ وَقَاتَلُوا وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ
الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُم بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِم بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝ يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا
نَقْتَبِسْ مِن نُّورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ
بَيْنَهُم بِسُورٍ لَّهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِن قِبَلِهِ
الْعَذَابُ ۝ يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنَّكُمْ فَتَنتُمْ
أَنفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ
أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ

★रु १/१७ आ १०

तक को जानता है। (६) (तो) खुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और जिस (माल) मे उन ने तुम को (अपना) नायब बनाया है, उस मे से खर्च करो। जो लोग तुम मे से ईमान लाए और (माल) खर्च करते रहे, उन के लिए बडा सवाब है। (७) और तुम कैसे लोग हो कि खुदा पर ईमान नही लाते, हालाकि (उस के) पैगम्बर तुम्हे बुला रहे है कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ और अगर तुम को बावर हो, तो वह तुम से (इस का) अह्द भी ले चुका है। (८) वही तो है जो अपने बन्दे पर खुले (मतलब वाली) आयते नाजिल करता है, ताकि तुम को अंधेरे मे से निकाल कर रोशनी मे लाए। बेशक खुदा तुम पर निहायत शफ्कत करने वाला (और) मेहरबान है। (९) और तुम को क्या हुआ है कि खुदा के रास्ते मे खर्च नही करते, हालाकि आसमानो और जमीन की विरासत खुदा ही की है, जिस शख्स ने तुम मे से (मक्का की) फत्ह से पहले खर्च किया और लडाई की, वे (और जिस ने ये काम पीछे किए, वे) बराबर नही। उन का दर्जा उन लोगो से बढ कर है, जिन्हो ने बाद मे (माल का) खर्च और (कुफ्फार से) जिहाद व किताल किया और खुदा ने सब से नेक (सवाब) (का) वायदा तो किया है और जो काम तुम करते हो, खुदा उन्हे जानता है। (१०)☆

कौन है जो खुदा को नेक (नीयत और खुलूस से) कर्ज दे, तो वह उस को उस से दोगुना अदा करे और वह उस के लिए इज्जत का बदला (यानी) जन्नत है। (११) जिस दिन तुम मोमिन मर्दो और मोमिन औरतो को देखोगे कि उन (के ईमान) का नूर उन के आगे-आगे और दाहिनी तरफ चल रहा है, (तो उन से कहा जाएगा कि) तुम को बशारत हो (कि आज तुम्हारे लिए) बाग है, जिन के तले नहरे बह रही है, उन मे हमेशा रहोगे। यही बडी कामियाबी है। (१२) उस दिन मुनाफिक मर्द और मुनाफिक औरते मोमिनो से कहेगे कि हमारी तरफ (शफ्कत की) नजर कीजिए कि हम भी तुम्हारे नूर से रोशनी हासिल करे तो उनसे कहा जाएगा कि पीछे को लौट जाओ, (वहा) और नूर तलाश करो, फिर उन के बीच मे एक दीवार खडी कर दी जाएगी, जिस मे एक दरवाजा होगा, जो उस के अन्दरूनी जानिब है, उस मे तो रहमत है और जो बाहरी जानिब है, उस तरफ अजाब (व तक्लीफ) (१३) तो मुनाफिक लोग मोमिनो से कहेगे कि क्या हम (दुनिया मे) तुम्हारे साथ न थे, वे कहेगे, क्यो नही थे ? लेकिन तुम ने खुद अपने आप को बला मे डाला और (हमारे हक मे हादसे के) इंतिजार मे रहे और (इस्लाम मे) शक किया और (लम्बी-चौडी) आरजूओ ने तुम को धोखा दिया, यहा तक कि खुदा का हुक्म आ पहुचा और खुदा के बारे मे तुम को (शैतान)

☆रु १/१७ आ १०

फ़ल्यौ-म ला युअ्-ख़ज़ु मिन्कुम् फ़िद्-य-तुव्-व ला मिनल्लज़ी-न क-फ़रू मअ्वाकुमुन्नारु हि-य मौलाकुम् व बिअ्-सल्मसीर (१५) अ-लम् यअ्नि लिल्लज़ी-न आमनू अन् तख़्श-अ कुलूबुहुम् लिज़िक्रिल्लाहि व मा न-ज़-ल मिनल्हक़्क़ि व ला यकूनू कल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब मिन् क़ब्लु फ़-ता-ल अलैहिमुल-अ-मदु फ़-क़-सत् कुलूबुहुम् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिकून (१६) इअ्-लमू अन्नल्ला-ह युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा क़द् बय्यन्ना लकुमुल-आयाति ल-अल्लकुम् तअ्-क़िलून (१७) इन्नल-मुस्सद्दिक़ी-न वल्मुस्सद्दिक़ाति व अक्-र-ज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-स-नंय्युज़ाअफ़ु लहुम् व लहुम् अज्रुन् करीम (१८) वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क हुमुस्सिद्दीक़ू-न वश्शु-ह-दाउ अिन्-द रब्बिहिम् लहुम् अज्-रुहुम् व नूरुहुम् वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि-आयातिना उलाइ-क अस्हाबुल-जहीम★ (१९) इअ्-लमू अन्नमल् हयातुद्दुन्या लअिबुव्-व लह्वुंव्-व ज़ीनतुंव्-व तफ़ाख़ुरुम्-बैनकुम् व तकासुरुन् फ़िल-अम्वालि वल-औलादि क-म-सलि ग़ैसिन् अअ्-ज-बल-कुफ़्फ़ा-र नबातुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यकूनु हुतामन् व फ़िल्आख़िरति अज़ाबुन् शदीदुंव्-व मग़्फ़ि-र-तुम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानुन् व मल-हयातुद्दुन्या इल्ला मताअुल-ग़ुरूर (२०) साबिक़ू इला मग़्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अर्-ज़ुहा क-अर्ज़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि उअिद्दत् लिल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुलफ़ज़्लिल-अज़ीम (२१) मा असा-ब मिम्-मुसीबतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़ी अन्फ़ुसिकुम् इल्ला फ़ी किताबिम्-मिन् क़ब्लि अन् नब्-र-अहा इन्-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीरुल (२२)

قال فما خطبكم ٢٧ — ٨٣١ — الحديد ٥٧

وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مَأْوٰىكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلٰىكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ
أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ اٰمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ
الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ
الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فٰسِقُونَ اعْلَمُوا أَنَّ اللّٰهَ
يُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ
إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَأَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضٰعَفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ أُولٰٓئِكَ هُمُ
الصِّدِّيقُونَ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَحِيمِ اعْلَمُوا
أَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ
فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطٰمًا وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَ
مَغْفِرَةٌ مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ
سَابِقُوا إِلٰى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ اٰمَنُوا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ
يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ مَا أَصَابَ مِنْ
مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتٰبٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ

★रु २/१८ आ ६

दगाबाज दगा देता रहा। (१४) तो आज तुम से मुआवजा नही लिया जाएगा और न (वह) काफिरो ही से (कुबूल किया जाएगा)। तुम सब का ठिकाना दोज़ख है (कि) वही तुम्हारे लायक है और वह बुरी जगह है। (१५) क्या अभी मोमिनो के लिए इस का वक्त नही आया कि खुदा की याद करने के वक्त और (कुरआन) जो (खुदा-ए-बर-) हक (की तरफ) से नाजिल हुआ है, उस के सुनने के वक्त उन के दिल नर्म हो जाए और वे उन लोगो की तरह न हो जाएं, जिन को (उन से) पहले किताबें दी गयी थी, फिर उन पर लम्बा ज़माना गुज़र गया, तो उन के दिल सख्त हो गए और उन मे से अक्सर ना-फरमान हैं। (१६) जान रखो कि खुदा ही जमीन को उस के मरने के बाद जिंदा करता है। हम ने अपनी निशानिया तुम से खोल-खोल कर बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो। (१७) जो लोग खैरात करने वाले है मर्द भी और औरते भी और खुदा को नेक (नीयत और खुलूस से) कर्ज़ देते हैं, उन को दोगुना अदा किया जाएगा और उन के लिए इज्जत का बदला है। (१८) और जो लोग खुदा और उस के पैगम्बरो पर ईमान लाए, यही अपने परवरदिगार के नजदीक सिद्दीक और शहीद हैं। उन के लिए उन (के आमाल) का बदला होगा और उन (के ईमान) की रोशनी और जिन लोगो ने कुफ्र किया और हमारी आयतो को झुठलाया, वही दोजखी है। (१९)★

जान रखो कि दुनिया की ज़िंदगी सिर्फ खेल और तमाशा और ज़ीनत (व आराइश) और तुम्हारे आपस मे घमंड (व तारीफ) और माल व औलाद की एक दूसरे से ज्यादा तलब (व ख्वाहिश) है।[1] (इस की मिसाल ऐसी है) जैसे बारिश, कि (इस से खेती उगती और) किसानो को खेती भली लगती है, फिर वह खूब जोर पर आती है, फिर (ऐ देखने वाले!) तू उस को देखता है कि (पक कर) पीली पड़ जाती है, फिर चूरा-चूरा हो जाती है और आखिरत मे (काफिरो के लिए) तेज़ अज़ाब और (मोमिनो के लिए) खुदा की तरफ से बख्शिश और खुश्नूदी है और दुनिया की ज़िंदगी तो धोखे का माल है। (२०) (बन्दो) अपने परवरदिगार की बख्शिश की तरफ और जन्नत की (तरफ) जिस का अर्ज़ आसमान और जमीन के अर्ज का-सा है और जो उन लोगो के लिए तैयार की गयी है जो खुदा पर और उस के पैगम्बरो पर जो ईमान लाए है, लपको। यह खुदा का फज्ल है, जिसे चाहे अता फरमाए और खुदा बडे फज्ल का मालिक है। (२१) कोई मुसीबत मुल्क पर और खुद तुम पर नही पडती, मगर इस से पहले कि हम उस को पैदा करें, एक किताब मे (लिखी हुई) है, (और) यह (काम) खुदा को आसान है। (२२) ताकि जो (मतलब) तुम से

१ हजरत रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मस्जिद मे तशरीफ लाए तो देखा कि कुछ लोग मस्जिद मे हस रहे हैं। आप ने फरमाया, क्या तुम लोगो को खौफ नही रहा? साफ ही यह आयत पढी, तो उन लोगो ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! उस का कफ्फारा क्या है? आप ने फरमाया, जितना हसे हो, उतना ही रोओ।

लिकैला तअ्सौ अ़ला मा फ़ातकुम् व ला तफ़्रहू बिमा आताकुम्, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन् फख़ूरि-नि- (२३) -ल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरू-नन्ना-स बिल्बुख़्लि, व मय्य-त-वल्-ल फ-इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़निय्युल्-हमीद (२४) ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलना बिल्बय्यिनाति व अन्ज़ल्ना म-अहुमुल-किता-ब वल्मीज़ा-न लियकूमन्नासु बिल्क़िस्ति व अन्ज़ल्नल-हदी-द फ़ीहि बअ्सुन् शदीदुंव्-व मनाफ़िअ़ु लिन्नासि व लियअ्-ल-मल्लाहु मय्यन्सुरुहू व रुसुलहू बिल्ग़ैबि, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़ ★ (२५) व ल-क़द् अर्सल्ना नूहंव्-व इब्राही-म व ज-अ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यति-हिमन्-नुबुव्व-त वल्किता-ब फमिन्हुम् मुह्-तदिन् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिकून (२६) सुम्-म क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिरुसुलिना व क़फ़्फ़ैना बिअ़ीसब्नि मर्य-म व आतैना-हुल-इन्जी-ल व ज-अ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल्-लज़ीनत्त-ब-अ़ूहु रअ्-फ-तंव्-व रह्-म-तन्, व रह्बानिय्य-त-निब्-त-दअ़ूहा मा क-तब्नाहा अ़लैहिम् इल्लब्तिग़ा-अ रिज़्वानिल्लाहि फमा रऔ़हा हक़्-क रिआ़यतिहा फ़आतैनल्लज़ी-न आमनू मिन्हुम् अज्-रहुम् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिकून (२७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व आमिनू बिरसूलिही युअ्तिकुम् किफ़्लैनि मिर्रह्मतिही व यज्-अ़ल्लकुम् नूरन् तम्शू-न बिही व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीमुल- (२८) लि-अल्ला यअ्-ल-म अह्लुल-किताबि अल्ला यक़्दिरू-न अ़ला शैइम्-मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व अन्नल्फ़ज़्-ल बियदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल-अ़ज़ीम ★ (२९)

تبرأها ان ذلك على الله يسير ۝ لكيلا تأسوا على ما فاتكم ولا
تفرحوا بما اتىكم والله لا يحب كل مختال فخور ۝ الذين
يبخلون ويأمرون الناس بالبخل ومن يتول فان الله هو الغني
الحميد ۝ لقد ارسلنا رسلنا بالبينت وانزلنا معهم الكتب
والميزان ليقوم الناس بالقسط وانزلنا الحديد فيه بأس
شديد ومنافع للناس وليعلم الله من ينصره ورسله بالغيب
ان الله قوي عزيز ۝ ولقد ارسلنا نوحا وابرهيم وجعلنا في
ذريتهما النبوة والكتب فمنهم مهتد وكثير منهم فسقون ۝
ثم قفينا على اثارهم برسلنا وقفينا بعيسى ابن مريم واتينه
الانجيل وجعلنا في قلوب الذين اتبعوه رأفة ورحمة
ورهبانية ابتدعوها ما كتبنها عليهم الا ابتغاء رضوان
الله فما رعوها حق رعايتها فاتينا الذين امنوا منهم اجرهم
وكثير منهم فسقون ۝ يايها الذين امنوا اتقوا الله وامنوا
برسوله يؤتكم كفلين من رحمته ويجعل لكم نورا
تمشون به ويغفر لكم والله غفور رحيم ۝ لئلا يعلم
اهل الكتب الا يقدرون على شيء من فضل الله وان
الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم ۝

★रु. ३/१६ आ ६ ★रु. ४/२० आ ४

फौत हो गया हो, उस का गम न खाया करो और जो तुम ने उस को दिया हो, उस पर इतराया न करो और खुदा किसी इतराने और शेखी बघारने वाले को दोस्त नही रखता, (२३) जो खुद भी बुख्ल करे और लोगो को भी बुख्ल सिखाए और जो शख्स मुह फेर ले, तो खुदा भी बे-परवा है (और) वही हम्द (व सना) के लायक है। (२४) हमने अपने पैगम्बरो को खुली निशानिया दे कर भेजा और उन पर किताबे नाज़िल की और तराजू (यानी इन्साफ के कायदे,) ताकि लोग इसाफ पर कायम रहे और लोहा पैदा किया। उस मे (लडाई के हथियार के लिहाज से) खतरा भी तेज है और लोगो के फायदे भी है और इस लिए कि जो लोग बिन-देखे खुदा और उस के पैगम्बरो की मदद करते है खुदा उन को मालूम करे। बेशक खुदा ताकतवर और गालिब है। (२५) ☆

और हम ने नूह और इब्राहीम को (पैगम्बर बना कर) भेजा और उन की औलाद मे पैगम्बरी और किताब (के सिलसिले) को (वक्त-वक़्त पर) जारी रखा, तो कुछ तो उन मे से हिदायत पर है और अक्सर उन मे से इताअत से बाहर है। (२६) फिर उन के पीछे उन्ही के कदमो पर (और) पैगम्बर भेजे और उन के पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उन को इजील इनायत की और जिन लोगो ने उन की पैरवी की, उन के दिलो मे शफकत और मेहरबानी डाल दी और लज्जतो से किनारा-कशी की, तो उन्हो ने खुद एक नयी बात निकाल ली। हम ने उन को इस का हुक्म नही दिया था, मगर (उन्हो ने अपने ख्याल मे) खुदा की खुश्नूदी हासिल करने के लिए (आप ही ऐसा कर लिया था) फिर जैसा उस को बनाना चाहिए था, निबाह भी न सके। पस जो लोग उन मे से ईमान लाए उन को हम ने उन का बदला दिया और उन मे से बहुत से ना-फरमान है। (२७) मोमिनो! खुदा से डरो और उस के पैगम्बर पर ईमान लाओ, वह तुम्हे अपनी रहमत से दोगुना बदला अता फरमाएगा और तुम्हारे लिए रोशनी कर देगा, जिस मे चलोगे और तुम को बख्श देगा और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (२८) (ये बातें) इस लिए (बयान की गयी है) कि अह्ले किताब जान ले कि वे खुदा के फज्ल पर कुछ भी कुदरत नही रखते और यह कि फज्ल खुदा के ही हाथ है, जिस को चाहता है देता है और खुदा बडे फज्ल का मालिक है। (२९) ★

★रु. ३/१६ आ ६ ★रु ४/२० आ ४

अट्ठाईसवां पारः क़द् समि-अ़ल्लाहु

५८ सूरतुल्-मुजादलति़ १०५

(मदनी) इस सूर मे अरवी के २१०३ अक्षर, ४७९ शब्द, २२ आयते और ३ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

कद् समिअल्लाहु कौलल्लती तुजादिलु-क फी जौजिहा व तश्तकी इलल्लाहि ۖ वल्लाहु यस् - मअु तहावु-र-कुमा ط इन्नल्ला-ह समीअुम् - वसीर (१) अल्लजी-न युज़ाहिरू-न मिन्कुम् मिन् निसाइहिम् मा हुन्-न उम्महातिहिम् ط इन् उम्महातुहुम् इल्लल्लाई व - लद्नहुम् ط व इन्नहुम् ल-यकूलू-न मुन्करम्-मिनल्कौलि वजूरन् ط व इन्नल्ला-ह ल-अफुव्वुन् गफूर (२) वल्लजी-न युज़ाहिरू-न मिन् निसाइहिम् सुम्-म यअूदू-न लिमा कालू फ़-तह़्रीरु र-क-बतिम्मिन् कब्लि अंय्य-त-मास्सा ط जालिकुम् तू-अज़ू-न बिही ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न खबीर (३) फ - मल्लम् यजिद् फसि़यामु शह्रैनि मु-त-ताबिअ़ैनि मिन् कब्लि अय्य-त-मास्सा ج फ-मल्लम् यस्ततिअ़् - फ़इत्आमु सित्ती-न मिस्कीनन् ط जालि-क लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही ط व तिल्-क हुदूदुल्लाहि ط व लिल्काफिरी-न अ़जाबुन् अलीम (४) इन्नल्लजी-न युहाद्दूनल्ला-ह व रसूलहू कुबितू कमा कुबितल्लजी-न मिन् कब्लिहिम् व कद् अन्ज़ल्ना आयातिम्-बय्यिनातिन् ط व लिल्काफ़िरी-न अजाबुम्-मुहीन ۚ (५) यौ-म यब्अ़सु - हुमुल्लाहु जमीअन् फ-युनब्बिउहुम् बिमा अमिलू ط अह्साहुल्लाहु व नसूहु ط वल्लाहु अ़ला कुलिल शैइन् शहीद ★ (६)

المجادلة ٥٨ — ٣٣٣ — قد سمع الله ٢٨

سُورَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَانِ وَعِشْرُونَ آيَةً وَثَلٰثُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى
اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ اَلَّذِيْنَ
يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ
اِلَّا الّٰۗـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ ثُمَّ
يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ ذٰلِكُمْ
تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ
فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَ
تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
يُحَاۗدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ يَوْمَ
يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۭ
وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ

★र १/१ आ ६

५८ सूरः मुजादला १०५

सूर मुजादला मदनी है, इस मे बाईस आयते और तीन रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैगम्बर !) जो औरत तुम मे अपने शौहर के बारे मे झगडती और खुदा से शिकायत (रंज व मलाल) करती थी। खुदा ने उसकी इल्तिजा सुन ली और खुदा तुम दोनो की बात-चीत सुन रहा था। कुछ शक नही कि खुदा सुनता-देखता है।(१) जो लोग तुममे से अपनी औरतो को मा कह देते हैं वह उन की माए नही (हो जाती)। उन की माए तो वही हैं, जिन के पेट से वह पैदा हुए। बेशक वे ना-माकूल और झूठी बात कहते है और खुदा बडा माफ करने वाला (और) बख्शने वाला है। (२) और जो लोग अपनी बीवियो को मा कह बैठे, फिर अपने कौल से रुजूअ कर ले, तो (उन को) हम-बिस्तर होने के पहले एक गुलाम आजाद करना (जरूर) है। (मोमिनो !) इस (हुक्म) से तुम को नसीहत की जाती है और जो कुछ करते हो, खुदा उस से खबरदार है। (३) जिस को गुलाम न मिले, वह हम-बिस्तरी से पहले लगातार दो महीने के रोज़े रखे, जिस को इस की भी कुदरत न हो, (उसे) साठ मुहताजो को खाना खिलाना (चाहिए)। यह (हुक्म) इस लिए (है) कि तुम खुदा और रसूल के फरमाबरदार हो जाओ और ये खुदा की हदे हैं और न मानने वालो के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है।[1] (४) जो लोग खुदा और उस के रसूल की मुखालफत करते है, वे (इसी तरह) जलील किए जाएगे, जिस तरह उन से पहले जलील किए गये थे और हम ने साफ और खुली आयते नाज़िल कर दी है। जो नही मानते उन को जिल्लत का अजाब होगा। (५) जिस दिन खुदा उन सब को जिला उठाएगा, तो जो काम वे करते रहे, उन को जताएगा। खुदा को वे सब (काम) याद है और यह उन को भूल गये है और खुदा हर चीज़ की जानता है, (६)★

---

१ ये आयते खौला बिन्त मालबा के हक मे नाजिल हुई है। उस का शौहर औस बिन सामित गुस्से की हालत मे उस ने ज़िहार कर बैठा और यो भी अरब मे ज़िहार का रिवाज था। ज़िहार इस को कहते है कि मिया अपनी बीवी से इस तरह के लफ्ज़ कह दे, तू मेरी मा की जगह है या तेरी पीठ मेरी पीठ की जगह है। इस तरह कह-देना जाहिलियत मे तलाक समझा जाता था, तो खौला इस बारे मे हुक्म मालूम करने के लिए हज़रत सल्ल० की खिदमत मे हाज़िर हुई। आप ने फरमाया कि तू अपने शौहर पर हराम हो गयी। उस ने कहा कि उस ने तलाक तो नही दी। गरज आप तो यह फरमाते कि तू उस पर हराम हो चुकी और वह कहती कि उस ने तलाक का नाम नही लिया। इसी बात-चीत को खुदा ने 'झगडा' कहा है। फिर वह खुदा से कहती कि रब्बुल आलमीन मेरी बेबसी का हाल तुझ को मालूम है। मेरे नन्हे-नन्हे बच्चे हैं। अगर मैं उन को अपने शौहर के हवाले कर दू, तो अच्छी तरह परवरिश न होने की वजह से खराब हो जाएगे और अगर अपने पास रखू तो भूखे मरेंगे और आसमान की तरफ सर उठा कर कहती कि ऐ अल्लाह ! मेरी शिकायत तुझी से है। खुदा ने उस की इज्ज़ व ज़ारी को कुबूल फरमाया और ज़िहार को तलाक नही, बल्कि एक ना-माकूल बात करार दे कर उस का कफ्फारा मुकर्रर फरमाया।

★रु १/१ आ ६

अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह यअ़्-लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िलअर्जि ط मा यकूनु मिन् नज्वा सलासतिन् इल्ला हु-व राबिअ़ुहुम् व ला ख़म्सतिन् इल्ला हु-व सादिसुहुम् व ला अद्‌ना मिन् जालि-क व ला अक्स-र इल्ला हु-व म-अ़हुम् ऐ-न मा कानू ج सुम् - म युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू यौमल - क़ियामति ط इन्नल्ला-ह

المجادلة ٥٨ — ٣٣٤ — قد سمع الله ٢٨

رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِن ذَٰلِكَ وَلَا
أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۖ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ
نُهُوا عَنِ النَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَاجَوْنَ بِالْإِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ
يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا
نَقُولُ ۚ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَ
مَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي
إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا النَّجْوَىٰ مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ
آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي
الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ انشُزُوا فَانشُزُوا
يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۚ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ
الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَةً ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ
لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

منزل

बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (७) अ-लम् त-र इलल्लजी-न नुहू अनिन्नज्वा सुम्-म यअ़ूदू-न लिमा नुहू अ़न्हु व य-त-नाजौ-न बिल्इस्मि वल्अ़ुद्‌वानि व मअ़्-सियतिर्रसूलि صلے व इजा जाऊ-क हय्यौ-क बिमा लम् युहय्यि-क बिहिल्लाहु لا व यकूलू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् लौला युअ़ज्जिबुनल्लाहु बिमा नकूलु ط हस्बुहुम् जहन्नमु ج यस्लौनहा ج फ़बिअ्सल मसीर (८) या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा तनाजैतुम् फ़ला त-त-नाजौ बिल्इस्मि वल्अ़ुद्‌वानि व मअ़्-सि-यतिर्-रसूलि व तनाजौ बिल्बिर्रि वत्तक़्वा ط वत्तक़ुल्लाहल्लजी इलैहि तुह्‌शरून (९) इन्नमन्नज्वा मिनश्शैता़नि लियह्‌ज़ु - नल्लजी - न आमनू व लै - स बिज़ार्रिहिम् शैअन् इल्ला बिइज्निल्लाहि ط व अ़-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल - मुअ्मिनून (१०) या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा की-ल लकुम् तफ़स्सहू फ़िलमजालिसि फ़फ़्सहू यफ़्सहि़ल्लाहु लकुम् ج व इजा क़ीलन्शुज़ू फ़न्शुज़ू यर्फ़अ़िल्लाहुल - लजी-न आमनू मिन्कुम् لا वल्लजी - न ऊतुल्अ़िल-म द-र - जातिन् ط वल्लाहु बिमा तअ़्-मलू-न ख़बीर (११) या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा नाजैतुमुर्रसू-ल फ़-क़द्दिमू बै - न यदै नज्वाकुम् स़-द - क़ - तन् ط जालि-क ख़ैरुल्लकुम् व अत़्‌हरु ط फ़इल्लम् तजिदू फ़इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर - रह़ीम (१२)

क्या तुम को मालूम नही कि जो कुछ आसमानो मे है और जो कुछ जमीन मे है, खुदा को सब मालूम है। (किसी जगह) तीन (शख्सो) का (मज्मा और) कानो मे सलाह व मश्विरा नही होता, मगर वह उन में चौथा होता है और न कही पाच का, मगर वह उन मे छठा होता है और न उस से कम या ज्यादा, मगर वह उन के साथ होता है, चाहे वे कही हो। फिर जो-जो काम ये करते रहे है, कियामत के दिन वह (एक-एक) उन को बताएगा। बेशक खुदा हर चीज को जानता है। (७) क्या तुम ने उन लोगो को नही देखा जिन को कानाफूसिया करने से मना किया गया था। फिर जिस (काम) से मना किया गया था, वही फिर करने लगे और यह तो गुनाह और जुल्म और (खुदा के) रसूल की ना-फरमानी की कानाफूसिया करते है और जब तुम्हारे पास आते है तो जिस (कलिमे) से खुदा ने तुम को दुआ नही दी, उस मे तुम्हे दुआ देते है और अपने दिल मे कहते है कि (अगर यह वाकई पैगम्बर है तो) जो कुछ कहते है, खुदा हमे उस की सजा क्यो नही देता (ऐ पैग़म्बर !) उन को दोजख (ही की सजा) काफी है, ये उसी मे दाखिल होंगे और वह बुरी जगह है।[1] (८) मोमिनो ! जब तुम आपस मे कानाफूसिया करने लगो तो गुनाह और ज़्यादती और पैगम्बर की ना-फरमानी की बाते न करना बल्कि नेकी और परहेजगारी की बाते करना और खुदा से जिस के सामने जमा किए जाओगे, डरते रहना। (९) (काफिरो की) कानाफूसिया तो शैतान (की हरकतो) मे है, (जो) इस लिए (की जाती है) कि मोमिन (उन से) गमनाक हो, मगर खुदा के हुक्म के सिवा उन से उन्हे कुछ नुक्सान नही पहुच सकता, तो मोमिनो को चाहिए कि खुदा ही पर भरोसा रखे। (१०) मोमिनो ! जब तुम से कहा जाए कि मज्लिस मे खुल कर बैठो तो खुल कर बैठा करो। खुदा तुम को कुशादगी बख्शेगा और जब कहा जाए कि उठ खडे हो तो उठ खडे हुआ करो। जो लोग तुम मे से ईमान लाए है और जिन को इल्म अता किया गया है, खुदा उन के दर्जे बुलद करेगा और खुदा तुम्हारे सब कामो को जानता है। (११) मोमिनो ! जब तुम पैगम्बर के कान मे कोई बात कहो तो बात कहने से पहले (मिस्कीनो को) कुछ खैरात दे दिया करो। यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर और पाकीजगी की बात है और अगर खैरात तुम को मयस्सर न आए, तो खुदा बख्शने

---

१ हदीसो मे है कि यहूदी हज़रत के पास आते, तो बजाए 'अस्सलामु अलै-क' के 'अस्सामु अलै-क' कहते। साम मौत को कहते है, तो वे जाहिर मे तो नेक दुआ देते और हकीकत मे मौत मुराद लेते और बद-दुआ देते। आप उस के जवाब मे सिर्फ 'व अलैकुम' फरमाते जिस का मतलब यह होता कि मौत तुम ही पर वाकेअ हो। वे लोग अपने दिल मे कहते कि अगर मुहम्मद सच्चे पैगम्बर होते तो हमारे इस कलिमे के कहने से ज़रूर हम पर अज़ाब नाजिल होता। कुछ ने यह मानी किए है कि अगर यह नबी होते तो उन की बद-दुआ हमारे हक़ मे जरूर कुबूल होती और हम पर मौत वाकेअ हो कर रहती। इन बातो के जवाब मे खुदा ने फरमाया कि उन लोगो को दोजख ही का अजाब काफी है।

अ अश्फ़क्तुम् अन् तुक़द्दिमू बैं-न यदै नज्वाकुम् स़-द-क़ातिन् ؕ फ़इज़् लम् तफ़्अ़लू व ताबल्लाहु अ़लैकुम् फ-अक़ीमुस्स़ला-त व आतुज्ज़का - त व अत़ीअ़ुल्ला-ह व रसूलहू ؕ वल्लाहु ख़बीरुम् - बिमा तअ़्-मलून ✶ (१३) अ-लम् त-र इलल्लज़ी - न त - वल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् ؕ मा हुम् मिन्कुम् व ला मिन्हुम् ۙ व यह़्लिफ़ू-न अ़लल्कज़िबि व हुम् यअ़्-लमून (१४) अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् ؕ इन्नहुम् सा - अ मा कानू यअ़्-मलून (१५) इत्त-ख़ज़ू ऐमानहुम् जुन्नतन् फ़-स़द्दू अ़न् सबीलिल्लाहि फ-लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (१६) लन् तुग्नि-य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् ؕ उलाइ - क अस्ह़ाबुन्नारि ؕ हुम् फीहा ख़ालिदून (१७) यौ-म यब्-अ़सुहुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़-यह़्लिफ़ू-न लहू कमा यह़्लिफ़ू-न लकुम् व यह़्सबू-न अन्नहुम् अ़ला शैइन् ؕ अला इन्नहुम् हुमुल - काज़िबून (१८) इस्तह़्-व-ज अ़लैहिमुश्-शैत़ानु फ़ - अन्साहुम् ज़िक्रल्लाहि ؕ उलाइ - क हिज़्बुश्शैत़ानि ؕ अला इन्-न हिज़्बश्शैत़ानि हुमुल-ख़ासिरून (१९) इन्नल्लज़ी-न युहाद्दूनल्ला-ह व रसूलहू उलाइ-क फ़िल्अज़ल्लीन (२०) क - त - बल्लाहु ल-अग़्लि-बन् - न अ-न व रुसुली ؕ इन्नल्ला - ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़ (२१)

قد سمع الله ٢٨ — ٤٣٥ — المجادلة ٥٨

ءَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَاتٍ ۚ فَإِذْ
لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٣﴾ أَلَمْ تَرَ
إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا
مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ
عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾ اتَّخَذُوا
أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٦﴾
لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا
فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ ۖ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ
أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٨﴾ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنْسَاهُمْ
ذِكْرَ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ
الْخَاسِرُونَ ﴿١٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي
الْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾ كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ
عَزِيزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ
مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ
إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ

★रु २/२ आ ७

वाला मेहरबान है। (१२) क्या तुम इस से कि पैगम्बर के कान मे कोई बात कहने से पहले ख़ैरात दिया करो, डर गये ? फिर जब तुम ने (ऐसा) न किया और खुदा ने तुम्हे माफ कर दिया तो नमाज़ पढते और जकात देते रहो और खुदा और उस के रसूल की फरमाबरदारी करते रहो और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस से खबरदार है। (१३)★

भला तुम ने उन लोगो को नही देखा, जो ऐसो से दोस्ती करते है, जिन पर खुदा का गजब हुआ. वह न तुम मे है, न उन मे और जान-बूझ कर झूठी बातो पर कस्मे खाते है। (१४) खुदा ने उन के लिए सख्त अजाब तैयार कर रखा है। ये जो कुछ करते है, यकीनन बुरा है। (१५) उन्हो ने अपनी कस्मो को ढाल बना लिया और (लोगो को) खुदा के रास्ते से रोक दिया है, सो उन के लिए जिल्लत का अज़ाब है। (१६) खुदा के (अजाब के) सामने न तो उन का माल ही कुछ काम आएगा और न औलाद ही (कुछ फायदा देगी) ये लोग दोजखी है, इस मे हमेशा (जलते) रहेगे। (१७) जिस दिन खुदा उन सब को जिला उठाएगा, तो जिस तरह तुम्हारे सामने कस्मे खाते है (उसी तरह) खुदा के सामने कस्मे खाएंगे और ख्याल करेगे कि (ऐसा करने से) काम ले निकले है देखो ये झूठे (और गलती पर) है। (१८) शैतान ने उन को काबू मे कर लिया है और खुदा की याद उन को भुला दी है। यह (जमाअत) शैतान का लश्कर है और सुन रखो कि शैतान का लश्कर नुक्सान उठाने वाला है। (१९) जो लोग खुदा और उस के रसूल की मुखालफत करते है, वे बहुत जलील होंगे। (२०) खुदा का हुक्म नातिक है कि मैं और मेरे पैगम्बर ज़रूर गालिब रहेगे, बेशक खुदा ज़ोरावर (और) ज़बरदस्त है। (२१) जो लोग खुदा पर और कियामत के दिन पर ईमान

★रु २/२ आ ७

ला तजिदु कौमय्युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल-यौमिल-आख़िरि युवाद्दू-न मन् हाद्दल्ला-ह व रसूलहू व लौ कानू आबा-अहुम् औ अब्ना-अहुम् औ इख़-वानहुम् औ अशी-र-तहुम् ؕ उलाइ-क क-त-ब फी कुलूबिहिमुल-ईमा-न व अय्य-दहुम् बिरुहिम् - मिन्हु ؕ व युद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल - अन्हारु ख़ालिदी - न फ़ीहा ؕ रज़ियल्लाहु अन्हुम् व रज़ू अन्हु ؕ उलाइ - क हिज़्बुल्लाहि ؕ अला इन - न हिज़्बल्लाहि हुमुल - मुफ़्लिहून ★ (२२)

५९ सूरतुल्-ह़श्रि १०१

(मदनी) इस सूर मे अरबी के २०१६ अक्षर, ४५५ शब्द, २४ आयते और ३ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

सब्ब-ह़ लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि ۚ व हुवल-अजीजुल-ह़कीम (१) हुवल्लजी अख़्-र-जल्लजी-न क-फरू मिन् अह्लिल-किताबि मिन् दियारिहिम् लि-अव्वलिल-ह़श्रि ▨ मा ज-नन्तुम् अय्यख़-रुजू व जन्नू अन्नहुम् मानि-अतुहुम् हुसूनुहुम् मिनल्लाहि फ अताहुमुल्लाहु मिन् हैसु लम्

قد سمع الله ٢٨ ٤٣٦ الحشر ٥٩

وأيدهم بروح منه ويدخلهم جنت تجري من تحتها
الأنهر خلدين فيها رضي الله عنهم ورضوا عنه أولئك
حزب الله ألا إن حزب الله هم المفلحون ٢٢
سورة الحشر مدنية وهي أربع وعشرون آية وثلث ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
سبح لله ما في السموت وما في الأرض وهو العزيز الحكيم ١
هو الذي أخرج الذين كفروا من أهل الكتب من
ديرهم لأول الحشر ما ظننتم أن يخرجوا وظنوا أنهم
مانعتهم حصونهم من الله فأتىهم الله من حيث لم يحتسبوا
وقذف في قلوبهم الرعب يخربون بيوتهم بأيديهم وأيدي
المؤمنين فاعتبروا يأولي الأبصر ٢ ولولا أن كتب الله
عليهم الجلاء لعذبهم في الدنيا ولهم في الآخرة عذاب
النار ٣ ذلك بأنهم شاقوا الله ورسوله ومن يشاق الله
فإن الله شديد العقاب ٤ ما قطعتم من لينة أو تركتموها
قائمة على أصولها فبإذن الله وليخزي الفسقين ٥ وما
أفاء الله على رسوله منهم فما أوجفتم عليه من خيل و
لا ركاب ولكن الله يسلط رسله على من يشاء والله على

منزل ٧

यह्-तसिबू ۚ व क़-ज-फ फी कुलूबिहिमुर्रुअ्-ब युख़्रिबू-न बुयूतहुम् बिऐदीहिम् व ऐदिल-मुअ्मिनी-न ۚ फअ-तबिरू या उलिल-अब्सार (२) व लौला अन् क-त-बल्लाहु अलैहिमुल-जला-अ ल-अज्ज-बहुम् फिद्दुन्या ؕ व लहुम् फ़िल-आख़िरति अ़ज़ाबुन्नार (३) जालि-क बिअन्नहुम् शा-क़्कुल्ला-ह व रसूलहू ۚ व मय्युशा-क़्किल्ला-ह फ-इन्नल्-ला-ह शदीदुल-अ़िकाब (४) मा क़-तअ-तुम् मिल्लीनतिन् औ त-रक्तुमूहा क़ा-इ-म-तन् अ़ला उसूलिहा फ़बिइज़्निल्लाहि व लियुख़्ज़ि-यल-फासिकीन (५) व मा अफा - अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन्हुम् फ़मा औजफ्तुम् अलैहि मिन् ख़ैलिव - व ला रिकाबिव् - व लाकिन्नल्ला - ह युसल्लितु रुसुलहू अ़ला मंय्यशाउ ؕ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् कदीर (६)

★रु. ३/३ आ ८ ▨व न वी स

रखते हैं तो उन को खुदा और उस के रसूल के दुश्मनों से दोस्ती करते हुए न देखोगे, चाहे वे उन के बाप या बेटे या भाई या खानदान ही के लोग हों। ये वह लोग हैं, जिन के दिलों में खुदा ने ईमान (पत्थर पर लकीर की तरह) लिख दिया है और गैबी फैज से उन की मदद की है और वह उन को बहिश्तों में, जिन के तले नहरें बह रही हैं, दाखिल करेगा, हमेशा उन में रहेंगे। खुदा उन से खुश और वे खुदा से खुश। यही गिरोह खुदा का लश्कर है। (और) सुन रखो कि खुदा ही का लश्कर मुराद हासिल करने वाला है। (२२)★

५९ सूरः हश्र १०१

सूर हश्र मदनी है, इस में चौबीस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीजें आसमान में हैं और जो चीजें जमीन में हैं, (सब) खुदा की तस्बीह करती हैं और वह गालिब हिक्मत वाला है। (१) वही तो है जिस ने कुफ्फार अह्ले किताब को पहले हश्र के वक्त उन के घरों से निकाल दिया ▨ तुम्हारे ख्याल में भी न था कि वे निकल जाएंगे और वे लोग यह समझे हुए थे कि उन के क़िले उन को खुदा (के अजाब) से बचा लेंगे, मगर खुदा ने उन को वहां से आ लिया, जहां से उन को गुमान भी न था और उन के दिलों में दहशत डाल दी कि अपने घरों को खुद अपने हाथों और मोमिनों के हाथों से उजाड़ने लगे, तो ऐ (बसीरत की) आंखें रखने वालो! इबरत (सबक) पकड़ो। (२) और अगर खुदा ने उन के बारे में वतन से निकालना न लिख रखा होता, तो उन को दुनिया में भी अजाब दे देता और आखिरत में तो उन के लिए आग का अजाब (तैयार) है। (३) यह इस लिए कि उन्हों ने खुदा और उस के रसूल की मुखालफत की और जो शख्स खुदा की मुखालफत करे, तो खुदा सख्त अजाब देने वाला है। (४) (मोमिनो!) खजूर के जो पेड़ तुम ने काट डाले या उन को अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया, सो खुदा के हुक्म से था और मक्सूद यह था कि वह ना-फरमानों को रुस्वा करे।[1] (५) और जो (माल) खुदा ने अपने पैगम्बर को उन लोगों से (लड़ाई-भिड़ाई के बगैर) दिलवाया है, उस में तुम्हारा कुछ हक नहीं, क्योंकि इसके लिए न तुम ने घोड़े दौड़ाए, न ऊंट, लेकिन खुदा अपने पैगम्बरों को जिन पर चाहता है, मुसल्लत

---

१ हज़रत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जब बनू नजीर अपने मकानों से निकाल दिए गए और उन की खजूरों के काट डालने का हुक्म हुआ तो मुसलमानों ने कुछ खजूरें तो काट दीं और कुछ रहने दीं, मगर उन को इस बारे में शुब्हा हुआ कि क्या उन को काटने पर सवाब होगा और न काटने पर गुनाह, तो उन्हों ने यह बात जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम करने का इरादा किया, इस पर खुदा ने फरमाया कि खजूरों के काटने, न काटने से मक्सूद यह है कि मुसलमान अपने गलबा पाने से खुश हों और ना-फरमान लोगों को यह देख कर कि उन के मालों में मुसलमान अपनी मर्जी के मुताबिक इस्तेमाल कर रहे हैं, रंज और जिल्लत हासिल हो।

★रु. ३/३ आ ९ ▨ व न वी स

मा अफ़ा-अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन् अह्लिल-कुरा फ़लिल्लाहि व लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुर्बा वल - यतामा वल-मसाकीनि वब्निस्सबीलि ﻻ कैला यकू-न दूल-तम् - बैनल - अग्नियाइ मिन्कुम् ط व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु ق व मा नहाकुम् अ़न्हु फ़न्तहू ج वत्तक़ुल्ला - ह ط इन्नल्ला-ह शदीदुल - अिक़ाब ▨ (७) लिल्फ़ु-क़-राइल - मुहाजिरीनल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अम्वालिहिम् यब्तग़ू-न फ़ज़्लम् - मिनल्लाहि व रिज़्-वानंव् - व यन्सुरूनल्ला - ह व रसूलहू ط उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून ج (८) वल्लज़ी-न त-बव्वउद्दा-र वल्ईमा-न मिन् क़ब्लिहिम् युहिब्बू-न मन् हाज-र इलैहिम् व ला यजिदू-न फ़ी सुदूरिहिम् ह़ा-ज-तम्-मिम्मा ऊतू व युअ्सिरू - न अ़ला अन्फुसिहिम् व लौ का - न बिहिम् ख़सासतुन् ط व मय्यू-क़ शुह् - ह नफ़्सिही फ़-उलाइ - क हुमुल - मुफ़्लिहून ج (९) वल्लज़ी - न जाऊ मिम्बअ्-दिहिम् यक़ूलू-न रब्बनग्फ़िर् लना व लि-इख़्वानि-नल्लज़ी-न स-ब-क़ूना बिल - ईमानि व ला तज् - अ़ल् फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लल-लिल्लज़ी -न आमनू रब्बना इन्न - क रऊफ़ुर्रहीम ★● (१०) अ-लम् त - र इलल्लज़ी - न नाफ़क़ू यक़ूलू - न लिइख़्वानि - हिमुल्लज़ी - न क - फ़रू मिन् अह्लिल - किताबि ल - इन् उख़्रिज्तुम् ल - नख़्रुजन्-न म - अ़कुम् व ला नुतीअ़ु फ़ीकुम् अ - ह़ - दन् अ - ब - दंव्-व इन् क़ूतिल्तुम् ल - नन्सुरन्नकुम् ط वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून (११)

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَآ أَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ أَهْلِ الْقُرٰى
فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ
السَّبِيْلِ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَآ اٰتٰىكُمُ
الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۖ
إِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ
أُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ
رِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ أُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُو الدَّارَ وَالْإِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ
إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ أُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ
عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ
فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْإِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ
فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ أَلَمْ تَرَ
إِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ
أَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ
أَحَدًا أَبَدًا ۙ وَّإِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ۝ لَئِنْ أُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا

▨ व लाज़िम ★ रु. १/४ आ १० ● रुब्अ़ १/४

कर देता है और ख़ुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (६) जो माल ख़ुदा ने अपने पैगम्बर को देहात वालो ने दिलवाया है, वह ख़ुदा के और पैगम्बर के और (पैगम्बर के) करीबी रिश्ते वालो के और यतीमो के और जरूरतमदो के और मुसाफिरो के लिए है, ताकि जो लोग तुम मे दौलतमद है, उन्ही के हाथो मे न फिरता रहे, सो जो चीज तुम को पैगम्बर दे, वह ले लो और जिस से मना करें, (उस से) रुके रहो और ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा सख़्त अजाब देने वाला है।[1] (७) और उन गरीब वतन छोडने वालो के लिए भी जो अपने घरो और मालो से खारिज (और अलग) कर दिए गए है (और) ख़ुदा के फज्ल और उस की ख़ुश्नूदी की तलब रखने वाले और ख़ुदा और उस के पैगम्बर के मददगार है। यही लोग सच्चे (ईमानदार) है। (८) और (उन लोगो के लिए भी) जो मुहाजिरो ने पहले (हिजरत के) घर (यानी मदीने) मे ठहरे रहे और ईमान मे (मुस्तकिल) रहे (और) जो लोग हिजरत कर के उन के पास आते है, उन से मुहब्बत करते हैं और जो कुछ उन को मिला, उस मे अपने दिल मे कुछ ख्वाहिश (और बेचैनी) नही पाते और उन को अपनी जानो पर तर्जीह देते है, चाहे उन को ख़ुद जरूरत ही हो। और जो शख़्स नफ्स के लोभ से बचा दिया गया तो ऐसे ही लोग मुराद पाने वाले है। (९) और (उन के लिए भी) जो उन (मुहाजिरो) के बाद आए (और) दुआ करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हमारे और हमारे भाइयो के जो हम से पहले ईमान लाए है गुनाह माफ करना और मोमिनो की तरफ से हमारे दिल मे कीना (व हसद) न पैदा होने दे, ऐ हमारे परवरदिगार! तू बडा शफ्कत करने वाला मेहरबान है। (१०)★●

क्या तुम ने उन मुनाफिको को नही देखा, जो अपने काफिर भाइयो से जो अह्ले किताब है, कहा करते हैं कि अगर तुम देश निकाला पा गये, तो हम भी तुम्हारे साथ निकल चलेंगे और तुम्हारे बारे मे कभी किसी का कहा न मानेगे और अगर तुम से लडाई हुई, तो तुम्हारी मदद करेंगे, मगर

---

१ यानी फै पर कब्ज़ा रसूल का और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे सरदार का कि सरदार पर ये खर्च पडते हैं, अल्लाह सभी का मालिक है, मगर काबे का खर्च और मस्जिदो का भी इस मे आ गया और नाते वाले हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने उन के नाते वाले और पीछे भी वही लोग उन पर चाहिए।

व लाज़िम ★रु. १/४ आ १० ● रुकूअ १/४

हुवल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हु-व अलमलिकुल् - कुद्दूसुस्सलामुल्-मुअ्मिनुल् - मुहैमिनुल् - अज़ीज़ुल् - जब्बारुल् - मु - त - कब्बिरु सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून (२३) हुवल्लाहुल् - ख़ालिकुल् - बारिउल् - मुसव्विरु लहुल् - अस्माउल् - हुस्ना युसब्बिहु लहू मा फिस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् - अज़ीज़ुल् - हकीम ★ (२४)

६० सूरतुल्-मुम्तहिनति ६१

(मदनी) इस सूर में अ़रबी के १५६३ अक्षर, ३७० शब्द, १३ आयते और दो रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू अ़दुव्वी व अ़दुव्वकुम् औलिया-अ तुल्कू-न इलैहिम् बिलम-वद्-दति व कद् क-फरू बिमा जा-अकुम् मिनल्हक़्क़ि युख़्रिजूनर्रसू-ल व इय्याकुम् अन् तुअ्मिनू बिल्लाहि रब्बिकुम् इन् कुन्तुम् ख़-रज्तुम् जिहादन् फ़ी सबीली वब्तिग़ा-अ मर-ज़ाती तुसिर्रू-न इलैहिम् बिलम-वद्दति व अ-न अअ्-लमु बिमा अख़्-फैतुम् व मा अअ्-लन्तुम् व मय्यफ्-अल्-हु मिन्कुम् फ़-कद् ज़ल-ल सवा-अस्सबील (१) इ य्यस्कफूकुम् यकूनू लकुम् अअ्-दा-अंव्-व यब्सुतू इलैकुम् ऐदि-यहुम् व अलसि-न-तहुम् बिस्सूइ व वद्दू लौ तक्फुरून (२) लन् तन्फ़-अ्-कुम् अर्हामुकुम् व ला औलादुकुम् यौमल्-कियामति यफ्सिलु बैनकुम् वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीर (३) कद् कानत् लकुम् उस्-वतुन् ह-स-नतुन् फी इब्राही-म वल्लज़ी-न म-अहू इज् कालू लिकौमिहिम् इन्ना बु-रआउ मिन्कुम् व मिम्मा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि क-फर्ना बिकुम् व बदा बैनना व बैनकुमुल् अ़दावतु वल्बग़्ज़ाउ अ-ब-दन् हत्ता तुअ्मिनू बिल्लाहि वह्दहू इल्ला कौ-ल इब्राही-म लिअबीहि ल-अस्तग़्फ़िरन्-न ल-क व मा अम्लिकु ल-क मिनल्लाहि मिन् शैइन् रब्बना अ़लै-क त-वक्कल्ना व इलै-क अनब्ना व इलैकल्-मसीर (४)

هو الملك القدوس السلم المؤمن المهيمن العزيز الجبار
المتكبر سبحن الله عما يشركون ۝ هو الله الخالق البارئ
المصور له الاسماء الحسنى يسبح له ما في السموت و
الارض وهو العزيز الحكيم ۝
سورة الممتحنة مدنية وهي ثلث عشرة اية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمن الرحيم
يايها الذين امنوا لا تتخذوا عدوي وعدوكم اولياء تلقون
اليهم بالمودة وقد كفروا بما جاءكم من الحق يخرجون
الرسول واياكم ان تؤمنوا بالله ربكم ان كنتم خرجتم
جهادا في سبيلي وابتغاء مرضاتي تسرون اليهم بالمودة
وانا اعلم بما اخفيتم وما اعلنتم ومن يفعله منكم
فقد ضل سواء السبيل ۝ ان يثقفوكم يكونوا لكم اعداء و
يبسطوا اليكم ايديهم والسنتهم بالسوء وودوا لو تكفرون ۝
لن تنفعكم ارحامكم ولا اولادكم يوم القيمة يفصل
بينكم والله بما تعملون بصير ۝ قد كانت لكم اسوة
حسنة في ابرهيم والذين معه اذ قالوا لقومهم انا برءوا
منكم ومما تعبدون من دون الله كفرنا بكم وبدا بيننا

★रु ३/६ आ ७ ∴ मु. अि मु ता ख़. १६

बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। (२२) वही ख़ुदा है, जिस के सिवा कोई इबादत के लायक नही। बादशाह (हक़ीक़ी) पाक ज़ात (हर ऐब से) सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, गालिब, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला। ख़ुदा उन लोगो के शरीक मुकर्रर करने से पाक है। (२३) वही ख़ुदा (तमाम मख़्लूक का) पैदा करने वाला, ईजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उस के सब अच्छे नाम हैं। जितनी चीज़े आसमानो और जमीन मे है, सब उस की तस्बीह् करती है और वह गालिब हिक्मत वाला है। (२४) ★

६० सूरः मुम्तहिनः ६१

सूर मुम्तहिना मक्की[1] है, इस मे तेरह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

मोमिनो! अगर तुम मेरी राह मे लड़ने और मेरी ख़ुश्नूदी तलब करने के लिए (मक्के से) निकले हो तो मेरे और अपने दुश्मनो को दोस्त न बनाओ तुम तो उन को दोस्ती के पैग़ाम भेजते हो और वे (दीने) हक़ से जो तुम्हारे पास आया है, मुन्किर है और इस वजह से कि तुम अपने परवरदिगार ख़ुदा-ए-तआला पर ईमान लाए हो, पैगम्बर को और तुम को देश निकाला देते है, तुम उन की तरफ़ पोशीदा दोस्ती के पैगाम भेजते हो और जो कुछ तुम छिपे तौर पर और जो खुले तौर पर करते हो, वह मुझे मालूम है और जो कोई तुम मे से ऐसा करेगा, सीधे रास्ते से भटक गया। (१) अगर ये काफ़िर तुम पर कुदरत पा ले, तो तुम्हारे दुश्मन हो जाए और तक्लीफ़ पहुचाने के लिए तुम पर हाथ (भी) चलाए और ज़ुबाने (भी) और चाहते है कि तुम किसी तरह् काफ़िर हो जाओ। (२) क़ियामत के दिन न तुम्हारे रिश्ते-नाते काम आएगे और न औलाद। उस दिन वही तुम मे फ़ैसला करेगा, और जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा उस को देखता है। (३) तुम्हे इब्राहीम और उन के साथियो की नेक चाल चलनी (ज़रूर) है, जब उन्हो ने अपनी कौम के लोगो से कहा, कि हम तुम से और उन (बुतो) मे, जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, बे-ताल्लुक़ है (और) तुम्हारे (माबूदो के कभी) कायल नही (हो सकते) और जब तक तुम ख़ुदा-ए-वाहिद पर ईमान न लाओ, हम मे, तुम मे हमेशा खुल्लम-खुल्ला अदावत और दुश्मनी रहेगी। हा, इब्राहीम ने अपने बाप से यह (ज़रूर) कहा कि मैं आप के लिए मग्फ़िरत मागूगा और मैं ख़ुदा के सामने आप के बारे मे किसी चीज़ का कुछ अख़्तियार नही रखता। ऐ हमारे परवरदिगार! तुझी पर हमारा भरोसा है और तेरी ही तरफ़

१ यह सूर मक्की है या मदनी, इस मे इख़्तिलाफ़ है।

रब्बना ला तज्-अल्ना फ़ित्-न-तल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू वग़्फ़िर-लना रब्बना ج इन्न-क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल् - ह़कीम (५) ल - क़द् का - न लकुम् फ़ीहिम् उस्-व-तुन् ह़-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्-यौमल् आख़ि-र ط व मय्य-त-वल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़निय्युल्-ह़मीद ★ (६) अ़-सल्लाहु अय्यज्-अ़-ल बैनकुम् व बैनल्लज़ी-न आ़दैतुम् मिन्हुम् म-वद्-द-तन् ط वल्लाहु क़दीरुन् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर-रह़ीम (७) ला यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी-न लम् युक़ा-तिलूकुम् फ़िद्दीनि व लम् युख़्रिजूकुम् मिन् दियारिकुम् अन् तबर्रूहुम् व तुक़्सितू इलैहिम् ط इन्नल्ला - ह युह़िब्बुल्-मुक़्सितीन (८) इन्नमा यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी-न क़ा-त-लूकुम् फ़िद्दीनि व अख़्-र - जूकुम् मिन् दियारिकुम् व ज़ाहरू अ़ला इख़्-राजिकुम् अन् तवल्लौ - हुम् ج व मय्य-त - वल्लहुम् फ़-उलाइ - क हुमुज़्ज़ालिमून (९) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू इज़ा जा - अ - कुमुल्मुअ्मिनातु मुहाजिरातिन् फ़म्तहिनूहुन - न ط अल्लाहु अअ् - लमु बिईमानिहिन् - न ج फ़-इन् अ़लिम्तुमूहुन्-न मुअ्मिनातिन् फ़ला तर्जिअूहुन्-न इलल्कुफ़्फ़ारि ط ला हुन्-न ह़िल्लुल् - लहुम् व ला हुम् यह़िल्लू-न लहुन् - न ط व आतूहुम् मा अन्फ़क़ू ط व ला जुना-ह़ अ़लैकुम् अन् तन्किहू - हुन्-न इज़ा आतै-तुमूहुन्-न उजूरहुन्-न ط व ला तुम्सिकू बिअ़िसमिल्-कवाफ़िरि वस्अलू मा अन्फ़क़्तुम् वल्-यस्-अलू मा अन्फ़क़ू ط ज़ालिकुम् हुक्मुल्लाहि ط यह़्कुमु बैनकुम् ط वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (१०)

قد سمع الله ٢٨ — ٩٤٠ — الممتحنة

وبينكم العداوة والبغضاء ابدا حتى تؤمنوا بالله وحده
الا قول ابراهيم لابيه لاستغفرن لك وما املك لك من
الله من شيء ربنا عليك توكلنا واليك انبنا واليك المصير ۝
ربنا لا تجعلنا فتنة للذين كفروا واغفر لنا ربنا انك
انت العزيز الحكيم ۝ لقد كان لكم فيهم اسوة حسنة
لمن كان يرجوا الله واليوم الاخر ومن يتول فان الله
هو الغني الحميد ۝ عسى الله ان يجعل بينكم وبين الذين
عاديتم منهم مودة والله قدير والله غفور رحيم ۝
لا ينهكم الله عن الذين لم يقاتلوكم في الدين ولم يخرجوكم
من دياركم ان تبروهم وتقسطوا اليهم ان الله يحب
المقسطين ۝ انما ينهكم الله عن الذين قتلوكم في الدين
واخرجوكم من دياركم وظهروا على اخراجكم ان تولوهم
ومن يتولهم فاولئك هم الظلمون ۝ يايها الذين امنوا اذا
جاءكم المؤمنت مهجرت فامتحنوهن الله اعلم بايمانهن
فان علمتموهن مؤمنت فلا ترجعوهن الى الكفار
لا هن حل لهم ولا هم يحلون لهن واتوهم ما انفقوا
ولا جناح عليكم ان تنكحوهن اذا اتيتموهن اجورهن

★रु १/७ आ ६

हम रुजूअ करते हैं। और तेरे ही हुजूर मे (हमे) लौट कर आना है। (४) ऐ हमारे परवरदिगार ! हम को काफिरो के हाथ से अजाब न दिलाना और ऐ परवरदिगार हमारे ! हमे माफ फरमा, बेशक तू गालिब हिक्मत वाला है। (५) तुम (मुसलमानो) को यानी जो (खुदा के सामने जाने) और आखिरत के दिन (के आने) की उम्मीद रखता हो, उसे उन लोगो की नेक चाल चलनी (जरूर) है और जो मुह फेरे, तो खुदा भी बे-परवा और हम्द (व सना) के लायक है। (६) ★

अजब नही कि खुदा तुम मे और उन लोगो मे, जिन से तुम दुश्मनी रखते हो, दोस्ती पैदा कर दे और खुदा कुदरत वाला है और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (७) जिन लोगो ने तुम से दीन के बारे मे जग नही की और न तुम को तुम्हारे घरो से निकाला, उन के साथ भलाई और इन्साफ का सुलूक करने मे खुदा तुम को मना नही करता। खुदा तो इन्साफ करने वालो को दोस्त रखता है। (८) खुदा उन्ही लोगो के साथ तुम को दोस्ती करने से मना करता है, जिन्हो ने तुम से दीन के बारे मे लड़ाई की और तुम को तुम्हारे घरो से निकाला और तुम्हारे निकालने मे औरो की मदद की, तो जो लोग ऐसो मे दोस्ती करेंगे, वही जालिम है। (९) मोमिनो ! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें वतन छोड कर आए तो उन की आजमाइश कर लो (और) खुदा तो उन के ईमान को खूब जानता है, सो अगर तुम को मालूम हो कि मोमिन हैं, तो उन को कुफ्फार के पास वापस न भेजो कि न ये उन को हलाल हैं और न वे उन को जायज। और जो कुछ उन्हो ने (उन पर) खर्च किया हो, वह उन को दे दो और तुम पर कुछ गुनाह नही कि उन औरतो को मह्र दे कर उन से निकाह कर लो और काफिर औरतो की इज्जत को कब्जे मे न रखो (यानी कुफ्फार को वापस दे दो) और जो कुछ तुम ने उन पर खर्च किया हो, तुम उन से तलब कर लो और जो कुछ उन्होने (अपनी औरतो पर) खर्च किया हो, वह तुम से तलब कर ल, यह खुदा का हुक्म है जो तुम मे फैसला किए देता है और खुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (१०) और अगर तुम्हारी औरतो मे से कोई

★रु १/७ आ ६

व इन् फातकुम् शैउम्मिन् अज़्वाजिकुम् इलल् - कुफ़्फारि फ़ - आक़ब्तुम् फआतुल्लज़ी - न ज - ह - बत् अज़्वाजुहुम् मिस् - ल मा अन्फ़क़ू *b* वत्त-क़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (११) या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा जा - अकल् - मुअ्मिनातु युबायिअ् - न - क अ़ला अल्ला युश्रिक्-न बिल्लाहि शैअव्-व ला यस्रिक़् - न व ला यज़्नी-न व ला यक़्तुल्-न औलाद-हुन्-न व ला यअ्ती-न बिबुह्तानिंय्यफ़्-तरीनहू बैं-न ऐदीहिन्-न व अर्जुलिहिन्-न व ला यअ्सी-न-क फ़ी मअ् - रूफ़िन् फबायिअ् - हुन्-न वस्तग़्फ़िर् लहुन्नल्ला-ह *b* इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला त - त-वल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् क़द् यइसू मिनल् - आख़िरति कमा यइसल्-कुफ़्फ़ारु मिन् अस्हाबिल् - क़ुबूर ★ ● (१३)

الممتحنة ٦٠ ٨٧٨ قد سمع الله ٢٨

ولا تمسكوا بعصم الكوافر وسئلوا ما انفقتم وليسئلوا
ما انفقوا ذلكم حكم الله يحكم بينكم والله عليم حكيم ⑩
وان فاتكم شيء من ازواجكم الى الكفار فعاقبتم فاتوا
الذين ذهبت ازواجهم مثل ما انفقوا واتقوا الله الذي
انتم به مؤمنون ⑪ يايها النبي اذا جاءك المؤمنت يبايعنك
على ان لا يشركن بالله شيئا ولا يسرقن ولا يزنين ولا يقتلن
اولادهن ولا ياتين ببهتان يفترينه بين ايديهن وارجلهن
ولا يعصينك في معروف فبايعهن واستغفر لهن الله
ان الله غفور رحيم ⑫ يايها الذين امنوا لا تتولوا قوما
غضب الله عليهم قد يئسوا من الاخرة كما يئس
الكفار من اصحب القبور ⑬

سورة الصف مدنية وهي اربع عشرة اية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

سبح لله ما في السموت وما في الارض وهو العزيز الحكيم ①
يايها الذين امنوا لم تقولون ما لا تفعلون ② كبر مقتا عند
الله ان تقولوا ما لا تفعلون ③ ان الله يحب الذين يقاتلون
في سبيله صفا كانهم بنيان مرصوص ④ واذ قال موسى

منزل ٧

६१ सूरतुस्सफ़्फ़ १०९

(मदनी) इस सूरः मे अ़रबी के ९९१ अक्षर, २२३ शब्द, १४ आयते और २ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

सब्ब - ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्जि *ट* व हुवल् - अ़ज़ीज़ुल् - हकीम (१) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि - म तक़ूलू-न मा ला तफ़्-अ़लून (२) कबु-र मक़्तन् अिन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़्-अ़लून (३) इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्लज़ी-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न् क - अन्नहुम् बुन्यानुम् - मर् - सूस (४)

★रु २/८ आ ७ ● नि १/२

औरत तुम्हारे हाथ मे निकल कर काफिरो के पास चली जाए (और उस का मह्र वसूल न हुआ हो) फिर तुम उन से जग करो (और उन से तुम को गनीमत हाथ लगे) तो जिन की औरतें चली गयी हैं, उन को (उस माल मे से) उतना दे दो, जितना उन्हो ने खर्च किया था और खुदा से, जिस पर ईमान लाए हो, डरो। (११) ऐ पैगम्बर! जब तुम्हारे पास मोमिन औरते इस बात पर बैअत करने को आए कि खुदा के साथ न तो शिर्क करेगी, न चोरी करेगी, न बदकारी करेगी, न अपनी औलाद को कत्ल करेगी, न अपने हाथ-पाव मे कोई बोहतान बाध लाएगी, न नेक कामो मे तुम्हारी ना-फरमानी करेंगी, तो उन से बैअत ले लो और उन के लिए खुदा से बख्शिश मागो। बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (१२) मोमिनो! उन लोगो से, जिन पर खुदा गुस्से हुआ है, दोस्ती न करो (क्योकि) जिस तरह काफिरो को मुर्दो (के जी उठने) की उम्मीद नही, उसी तरह उन लोगो को भी आखिरत (के आने) की उम्मीद नही। (१३)★ ●

६१ सूरः सफ़्फ़ १०९

सूर सफ्फ मदनी है, इस मे चौदह आयतें और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानो मे है और जो ज़मीन मे है, सब खुदा की तस्बीह करती है और वह गालिब हिक्मत वाला है। (१) मोमिनो! तुम ऐसी बातें क्यो कहा करते हो, जो किया नही करते? (२) खुदा इस बात से सख्त बेज़ार है कि ऐसी बात कहो, जो करो नही। (३) जो लोग खुदा की राह मे (ऐसे तौर पर) पैर जमा कर लडते हैं कि गोया सीसा पिलाई हुई दीवार हैं, वह

व इज़् का-ल मूसा लिकौमिही याकौमि लि-म तुअ्ज़ू-ननी व क़त्तअ्-ल-मू-न अन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् ط फ़-लम्मा ज़ागू अज़ागल्लाहु कुलूबहुम् ط वल्लाहु ला यह्दिल् - क़ौमल् - फ़ासिक़ीन (५) व इज़् का - ल ई़सब्नु मर्-य-म या बनी इस्राई-ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न य - दय्-य मिनत्तौराति व मुबश्शिरम् - बिरसूलिंय्यअ्ती मिम्बअ् - दिस्मुहू अह्मदु ط फ़-लम्मा जा-अहुम् बिल्बय्यिनाति कालू हाज़ा सिह्रुम् - मुबीन (६) व मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अलल्लाहिल्-कज़ि-ब व हु - व युद्आ इलल् - इस्लामि ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़् - ज़ालिमीन (७) युरीदू - न लियुत़्फ़िऊ नूरल्लाहि बि-अफ़्वाहिहिम् वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल् - काफ़िरून (८) हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्हक़्क़ि लियुज़्हि - रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल्-मुश्रिकून ★ (९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू हल् अदुल्लुकुम् अ़ला तिजा-रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (१०) तुअ्मिनू - न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू - न फ़ी सबीलिल्लाहि बि - अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् ط ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून ۙ (११) यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम् व युद्ख़िल्कुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु व मसाकि-न तय्यि-ब-तन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन् ط ज़ालिकल् - फ़ौज़ुल् - अ़ज़ीम ۙ (१२) व उख़्रा तुहिब्बूनहा नस्रुम्-मिनल्लाहि व फ़त्हुन् क़रीबुन् ط व बश्शिरिल् - मुअ्मिनीन (१३)

الصف ٦١ ٤٤٢ قد سمع الله ٢٨

لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ
فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۞
وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ
يَّاْتِيْ مِنْ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۞ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۞
يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْكٰفِرُوْنَ ۞ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۞ تُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۞ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَ
يُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ
جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۞ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ
اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا
اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ

★रु १/६ आ ६

बेशक अल्लाह के महबूब है। (४) और (वह वक्त याद करने के लायक है) जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि भाइयो ! तुम मुझे क्या तक्लीफ देते हो, हालाकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे पास खुदा का भेजा हुआ आया हू तो जब उन लोगो ने टेढ अपनाया, खुदा ने भी उन के दिल टेढे कर दिए और खुदा ना-फरमानो को हिदायत नही देता। (५) और (वह वक्त भी याद करो) जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल ! मैं तुम्हारे पास खुदा का भेजा हुआ आया हू (और) जो (किताब) मुझ से पहले आ चुकी है (यानी) तौरात, उस की तस्दीक करता हू और एक पैगम्बर, जो मेरे बाद आएगे, जिन का नाम अहमद होगा, उन की खुशखबरी सुनाता हू, (फिर) जब वह उन लोगो के पास खुली निशानिया ले कर आए, तो कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (६) और उस से जालिम कौन कि बुलाया तो जाए इस्लाम की तरफ और वह खुदा पर झूठ बुहतान बाधे और खुदा जालिम लोगो को हिदायत नही दिया करता। (७) ये चाहते हैं कि खुदा (के चिराग) की रोशनी को मुह से (फूक मार कर) बुझा दे, हालाकि खुदा अपनी रोशनी को पूरा कर के रहेगा, चाहे काफिर ना-खुश ही हो। (८) वही तो है, जिस ने अपने पैगम्बर को हिदायत और दीने हक दे कर भेजा, ताकि उसे और सब दीनो पर गालिब करे, चाहे मुश्रिको को बुरा ही लगे। (९)★

मोमिनो ! मै तुम को ऐसी तिजारत बताऊ, जो तुम्हे दर्दनाक अज़ाब मे मुख्लिसी दे। (१०) (वह यह कि) खुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और खुदा की राह मे अपने माल और जान से जिहाद करो, अगर समझो तो यह तुम्हारे हक मे बेहतर है। (११) वह तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और तुम को जन्नत के बागो मे, जिन मे नहरे बह रही है और पाकीज़ा मकानो मे, जो हमेशा की बहिश्तो मे (तैयार) हैं, दाखिल करेगा। यह बडी कामियाबी है। (१२) और एक और चीज, जिस को तुम बहुत चाहते हो (यानी तुम्हे) खुदा की तरफ से मदद (नसीब होगी) और फत्ह (बहुत) जल्द (होगी) और मोमिनो को (इस की) खुशखबरी सुना दो। (१३) मोमिनो ! खुदा

★रु १/९ आ ९

या अय्युहल्लजी-न आमनू कूनू अन्सारल्लाहि कमा का-ल ओ़सब्नु मर्य-म लिल् - ह़वारिय्यी-न मन् अन्सारी इलल्लाहि ᵇ क़ालल् - ह़वारिय्यू-न नह़्नु अन्सारुल्लाहि फ-आ-म-नत् - त़ाइफ-तुम् - मिम्बनी इस्राई-ल व क-फ़-रत- त़ाइफ़ - तुन् ᶜ फ - अय्यद्नल्लजी - न आमनू अ़ला अदुव्विहिम् फ - अस्वहू ज़ाहिरीन ★ (१४)

إلى الله قال الحواريون نحن أنصار الله فآمنت طائفة من
بني إسرائيل وكفرت طائفة فأيدنا الذين آمنوا على
عدوهم فأصبحوا ظاهرين
سورة الجمعة مدنية وهي احدى عشرة آية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمن الرحيم
يسبح لله ما في السموت وما في الأرض الملك القدوس العزيز
الحكيم ◯ هو الذي بعث في الأميين رسولا منهم يتلوا عليهم
آيته ويزكيهم ويعلمهم الكتب والحكمة وإن كانوا من قبل
لفي ضلل مبين ◯ وآخرين منهم لما يلحقوا بهم وهو العزيز
الحكيم ◯ ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل
العظيم ◯ مثل الذين حملوا التورية ثم لم يحملوها كمثل
الحمار يحمل أسفارا بئس مثل القوم الذين كذبوا بآيت الله
والله لا يهدي القوم الظلمين ◯ قل يأيها الذين هادوا إن
زعمتم أنكم أولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت إن
كنتم صدقين ◯ ولا يتمنونه أبدا بما قدمت أيديهم والله
عليم بالظلمين ◯ قل إن الموت الذي تفرون منه فإنه
ملقيكم ثم تردون إلى علم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم

६२ सूरतुल्-जुमुअ़ति ११०

(मदनी) इस सूर· मे अ़रबी के ७८७ अक्षर, १७६ शब्द, ११ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्-अर्जिल्-मलिकिल् - कुद्दूसिल्-अ़जीजिल्-ह़कीम (१) हुवल्लजी ब-अ-स फ़िल्उम्मिय्यी - न रसूलम् - मिन्हुम् यत्लू अ़लैहिम् आयातिही व युजक्कीहिम् व युअल्लिमुहुमुल् - किता - ब वल्ह़िक-म - त़ᵛ व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफी जलालिम्-मुबीनिंव्-ᴸ (२) व आखरी-न मिन्हुम् लम्मा यल्ह़कू बिहिम् ᵇ व हुवल्-अजीजुल्-ह़कीम (३) ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मय्यशाउ ᵇ वल्लाहु ज़ुल्फज़्लिल्-अ़ज़ीम (४) म-सलुल्लजी-न ह़ुम्मिलुत्तौरा-त सुम्-म लम् यह़्मिलूहा क-म-सलिल्-ह़िमारि यह़्मिलु अस्फारन् ᵇ बिअ्-स म-सलुल्-क़ौमिल्लजी-न कज्जबू बिआयातिल्लाहि ᵇ वल्लाहु ला यह़्दिल्-कौमज़्-ज़ालिमीन (५) कुल् या अय्युहल्लजी-न हादू इन् ज़-अ़म्तुम् अन्नकुम् औलियाउ लिल्लाहि मिन् दूनिन्नासि फ़-त-मन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिकीन (६) व ला य-त-मन्नौनहू अ-ब-दम्-बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् ᵇ वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (७) कुल् इन्नल्-मौतल्लजी तफ़िर्रू-न मिन्हु फ-इन्नहू मुलाकीकुम् सुम्-म तुरद्दू-न इला आ़लि-मिल्-ग़ैबि वश्शहादति फयुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़् - मलून ★ (८)

★रु. २/१० आ ५ ★रु. १/११ आ ८

के मददगार हो जाओ जैसे ईसा बिन मरयम ने हवारियो से कहा कि (भला) कौन हैं जो ख़ुदा की तरफ़ (बुलाने मे) मेरे मददगार हो, हवारियो ने कहा कि हम ख़ुदा के मददगार हैं, तो बनी इस्राईल मे से एक गिरोह तो ईमान ले आया और एक गिरोह काफ़िर रहा। आख़िरकार हम ने ईमान लाने वालो को उन के दुश्मनो के मुकाबले मे मदद दी और वह गालिब हो गये।[1] (१४)☆

६२ सूरः जुमुअः ११०

सूर. जुमुअः मदनी है, इस मे ग्यारह आयतें और दो रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानो मे है और जो चीज़ जमीन मे है, सब ख़ुदा की तस्बीह करती है, जो हकीकी बादशाह, पाक ज़ात, ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (१) वही तो है, जिस ने अ-पढो मे उन्ही मे से (मुहम्मद को) पैग़म्बर (बना कर) भेजा, जो उस के सामने उस की आयते पढते और उन को पाक करते और (ख़ुदा की) किताब और हिक्मत सिखाते है और इस से पहले तो ये लोग खुली गुमराही मे थे।[2] (२) और उन मे से और लोगो की तरफ भी (उन को भेजा है) जो अभी उन (मुसलमानो) से नही मिले और वह गालिब हिक्मत वाला है। (३) यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है, अता करता है और ख़ुदा बडे फ़ज़्ल का मालिक है। (४) जिन लोगो (के सर) पर तौरात लदवायी गयी, फिर उन्हो ने उस (के पालन के बोझ) को न उठाया, उन की मिसाल गधे की-सी है, जिस पर बडी-बडी किताबें लदी हो। जो लोग ख़ुदा की आयतो को झुठलाते है, उन की मिसाल बुरी है और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नही देता। (५) कह दो कि ऐ यहूदियो! अगर तुम को यह दावा हो कि तुम ही ख़ुदा के दोस्त हो और लोग नही, तो अगर तुम सच्चे हो तो (ज़रा) मौत की आरज़ू तो करो। (६) और ये उन (आमाल) की वजह से, जो कर चुके है, हरगिज इस की आरज़ू नही करेंगे और ख़ुदा ज़ालिमो को ख़ूब जानता है। (७) कह दो कि मौत, जिस से तुम भागते हो, वह तो तुम्हारे सामने आ कर रहेगी, फिर तुम छिपे और ज़ाहिर के जानने वाले (ख़ुदा) की तरफ लौटाए जाओगे, फिर जो-जो कुछ तुम करते रहे हो, वह तुम्हे सब बताएगा। (८)★

---

१ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद उन के यारो ने बडी मेहनत की है, तब उन का दीन फैला। हमारे हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे भी खलीफो ने उस से ज्यादा किया।

२ अ-पढ अरब के लोग थे, जिन के पास नबी की किताब न थी।

या अय्युहल्लजी-न आमनू इज़ा नूदि-य लिस्सलाति मिय्यौमिल्-जुमुअति फस्औ इला जिक्रिल्लाहि व - जरुल्बै - अ ♭ जालिकुम् खैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (९) फ-इज़ा कुजियतिस - सलातु फन्तशिरू फिल्अर्जि वब्तगू मिन् फज्लिल्लाहि वज्कुरुल्ला-ह कसीरल्ल-अल्लकुम् तुफ्लिहून (१०) व इज़ा रऔ तिजा-र-तन् औ लह्व-निन्फज्जू इलैहा व त-र-कू-क क़ाइमन् ♭ कुल् मा अिन्दल्लाहि खैरुम् - मिनल्लह्वि व मिनत्तिजारति ♭ वल्लाहु खैरुर - राजिकीन ★ (११)

६३ सूरतुल्-मुनाफ़िक़ून १०४

(मदनी) इस सूर मे अरबी के ८२१ अक्षर, १८३ शब्द, ११ आयते और २ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इज़ा जा-अकल् - मुनाफिकू-न कालू नश्हदु इन्न-क ल - रसूलुल्लाह ▨ वल्लाहु यअ्-लमु इन्न-क ल-रसूलुहू ♭ वल्लाहु यश्हदु इन्नल् - मुनाफिकी - न लकाजिबून ♭ (१) इत्त - खज़ू ऐमानहुम् जुन्नतन् फ़-सद्दू अन् सबीलिल्लाहि ♭ इन्नहुम् सा - अ मा कानू यअ् - मलून (२) जालि-क बि-अन्नहुम् आमनू सुम्-म क-फ़रू फतुबि-अ़ अ़ला कुलूबिहिम् फहुम् ला यफ्कहून (३) व इज़ा रऐतहुम् तुअ् - जिबु - क अज्सामुहुम् ♭ व इंय्यकूलू तस्मअ् - लिक़ौलिहिम् ♭ क-अन्नहुम् खुशुबुम् - मुसन्नदतुन् ♭ यह्सबू - न कुल् - ल सैहतिन् अलैहिम् ♭ हुमुल् - अ़दुव्वु फह्-ज़र्हुम् ♭ का-त-लहुमुल्लाहु ✓ अन्ना युअ्-फकून (४) व इज़ा की - ल लहुम् तआलौ यस्तग़्फ़िर् लकुम् रसूलुल्लाहि लव्वौ रुऊसहुम् व रऐतहुम् यसुद्दू - न व हुम् मुस्तक्बिरून (५)

المنٰفقون ٦٣ — قد سمع الله ٢٨

تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ
فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا
مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْا
تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَاۗىِٕمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ
خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝
سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِذَا جَاۗءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْٓا
اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ
لَا يَفْقَهُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ۭ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا
تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۭ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۭ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ
عَلَيْهِمْ ۭ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۭ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۡ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ وَ
اِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَ
رَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝ سَوَاۗءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ

★रु० २/१२ आ ३ ▨ व लाज़िम

मोमिनो ! जब जुमा के दिन नमाज के लिए अजान दी जाए, तो खुदा की याद (यानी नमाज) के लिए जल्दी करो और (खरीदना व) बेचना छोड दो। अगर समझो तो यह तुम्हारे हक मे बेहतर है। (९) फिर जब नमाज़ हो चुके, तो अपनी-अपनी राह लो और खुदा का फज्ल खोजो और खुदा को बहुत-बहुत याद करते रहो, ताकि निजात पाओ। (१०) और जब ये लोग सौदा बिकता, या तमाशा होता देखते है तो उधर भाग जाते है और तुम्हे (खडे का) खडा छोड जाते है। कह दो कि जो चीज खुदा के यहा है, वह तमाशे और सौदे से कही बेहतर है और खुदा सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है।[1] (११)★

६३ सूरः मुनाफ़िक़ून १०४

सूरः मुनाफिकून मदनी है। इस मे ग्यारह आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) जब मुनाफिक लोग तुम्हारे पास आते है, तो (निफाक की वजह से) कहते है कि हम इकरार करते है कि आप बेशक खुदा के पैगम्बर है▨ और खुदा जानता है कि हकीकत मे तुम उस के पैगम्बर हो, लेकिन खुदा जाहिर किए देता है कि मुनाफिक (दिल से एतकाद न रखने के लिहाज मे) झूठे है।[2] (१) उन्हो ने अपनी कस्मो को ढाल बना रखा है और उन के जरिए से (लोगो को) खुदा के रास्ते मे रोक रहे है। कुछ शक नही कि जो काम ये करते है, बुरे है। (२) यह इस लिए कि ये (पहले तो) ईमान लाए, फिर काफिर हो गये, तो उन के दिलो पर मुहर लगा दी गयी, सो अब ये समझते ही नही। (३) और जब तुम उन (के अगो के मेल) को देखते हो तो उन के जिस्म तुम्हे (क्या ही) अच्छे मालूम होते है और जब वे बाते करते हैं, तो तुम उन के बोल को तवज्जोह मे सुनते हो, गोया लकडिया है, जो दीवारो से लगायी गयी है, (डरपोक ऐसे कि) हर ज़ोर की आवाज को समझे (कि) उन पर (बला आयी)। ये (तुम्हारे) दुश्मन है, इनसे बे-खौफ न रहना। खुदा उन को हलाक करे, ये कहा बहके फिरते है। (४) और जब उन से कहा जाए कि आओ खुदा के रसूल तुम्हारे लिए मग्फिरत मागे तो सर हिला देते है और तुम उन को देखो कि तकब्बुर

---

१ जनाब सरवरे कायनात सल्ल० जुमे का खुत्बा पढ रहे थे, इतने मे शाम का काफिला गल्ला ले कर आया। उन दिनो मदीने मे महगाई थी और लोगो को गल्ले की जरूरत थी। खुत्बा सुन रहे लोगो के कानो मे जो नक्कारे की आवाज़ आयी तो आहज़रत को खुत्बे मे खडा छोड कर सब उस के देखने को चले गये। मस्जिद मे सिर्फ बारह मर्द और सात औरतें रह गयी, तब यह आयत नाज़िल हुई।

२ यानी चूकि ये लोग दिल से तुम्हारी रिसालत के कायल नही और तुम्हारे सामने सिर्फ ज़ुबान से इकरार करते है, भीतर कुछ रखते है और बाहर कुछ, इस लिए झूठे है और उन के कहने का एतबार नही।

३ यानी मुह से तो ये कहते है कि हम ईमान लाए, मगर दिल मे कुफ्र है और इसी पर जमे हुए हैं, या यह कि मुसलमानो के पास आते हैं तो उन से मोमिन होने का इकरार करते है और जब काफिरो के पास जाते हैं, तो इस्लाम से इन्कार करते हैं।

★रु. २/१२ आ ३ ▨ व लाज़िम

सवाउन् अ़लैहिम् अस्तग्फर-त लहुम् अम् लम् तस्तग्फ़िर् लहुम्ط लय्यग़्फिरल्लाहु लहुम्ط इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् - क़ौमल् - फ़ासिक़ीन (६) हुमुल्लज़ी-न यक़ूलू-न ला तुन्फिक़ू अ़ला मन् अ़िन्-द रसूलिल्लाहि हत्ता यन्फ़ज़्ज़ूط व लिल्लाहि ख़ज़ाइनुस्समावाति वल्अर्ज़ि व लाकिन्नल् - मुनाफ़िक़ी - न ला यफ़्क़हून (७) यक़ूलू-न लइर्-र-जअ्-ना इ-लल्मदीनति लयुख़्रिजन्नल् - अ-अ़ज़्ज़ु मिन्हल् - अ-ज़ल्-लط व लिल्लाहिल्-अ़िज़्ज़तु व लिरसूलिही व व लिल्-मुअ्मिनी-न व लाकिन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न ला यअ्-लमून ★(८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहिج व मंय्यफ्-अ़ल् ज़ालि-क फ़उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (९) व अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य अ-ह्-दकुमुल्मौतु फ़-यक़ू-ल रब्बि लौ ला अख़्ख़र - तनी इला अ-जलिन् क़रीबिन् फ़-अस्सद्दक़ - क़ व अकुम् - मिनस्सालिहीन (१०) व लंय्यु-अख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन् इज़ा जा-अ अ-जलुहाط वल्लाहु ख़बीरुम् - बिमा तअ् - मलून ★(११)

لهم ام لم تستغفر لهم لن يغفر الله لهم ان الله لا يهدي
القوم الفسقين ۝ هم الذين يقولون لا تنفقوا على من
عند رسول الله حتى ينفضوا ولله خزائن السموت والارض
ولكن المنفقين لا يفقهون ۝ يقولون لئن رجعنا الى
المدينة ليخرجن الاعز منها الاذل ولله العزة ولرسوله
وللمؤمنين ولكن المنفقين لا يعلمون ۝ يايها الذين
امنوا لا تلهكم اموالكم ولا اولادكم عن ذكر الله ومن
يفعل ذلك فاولئك هم الخسرون ۝ وانفقوا من ما رزقنكم
من قبل ان ياتي احدكم الموت فيقول رب لولا اخرتني
الى اجل قريب فاصدق واكن من الصلحين ۝ ولن يؤخر
الله نفسا اذا جاء اجلها والله خبير بما تعملون ۝
سورة التغابن مدنية وهي ثمان عشرة اية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمن الرحيم
يسبح لله ما في السموت وما في الارض له الملك وله
الحمد وهو على كل شيء قدير ۝ هو الذي خلقكم فمنكم
كافر ومنكم مؤمن والله بما تعملون بصير ۝ خلق السموت
والارض بالحق وصوركم فاحسن صوركم واليه المصير ۝

६४ सूरतुत्तग़ाबुनि १०८

(मदनी) इस सूरः मे अरबी के ११२२ अक्षर, २४७ शब्द, १८ आयते और २ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़िج लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दुز व हु - व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (१) हुवल्लज़ी ख़ - ल - क़कुम् फ़मिन्कुम् काफ़िरुंव् - व मिन्कुम् मुअ्मिनुन्ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीर (२) ख़-ल - क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि व सव्व - रकुम् फ़-अह्-स-न सु-व - रकुम्ج व इलैहिल् - मसीर (३)

★रु १/१३ आ ८ ★रु. २/१४ आ ३

करते हुए मुह फेर लेते है। (५) तुम उन के लिए मग्फिरत मागो या न मागो, उन के हक मे बराबर है, खुदा उन को हर गिज़ न बख्शेगा। बेशक खुदा ना-फरमान लोगो को हिदायत नही दिया करता। (६) यही है जो कहते है कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास (रहते) है, उन पर (कुछ) खर्च न करो, यहा तक कि ये (खुद ही) भाग जाए हालाकि आसमानो और ज़मीन के खजाने खुदा ही के है, लेकिन मुनाफिक नही समझते। (७) कहते है कि अगर हम लौट कर मदीने पहुचे तो इज्जत वाले ज़लील लोगो को वहा से निकाल बाहर करेगे हालाकि इज्जत खुदा की है और उस के रसूल की और मोमिनो की, लेकिन मुनाफिक नही जानते। (८) ☆

मोमिनो ! तुम्हारा माल और औलाद तुम को खुदा की याद से गाफिल न कर दे और जो ऐसा करेगा, तो वे लोग घाटा उठाने वाले है। (९) और जो (माल) हम ने तुम को दिया है, उस मे मे उन (वक्त) से पहले खर्च कर लो कि तुम मे से किसी की मौत आ जाए तो (उस वक्त) कहने लगे कि मेरे परवरदिगार ! तू ने मुझे थोडी-सी और मोहलत क्यो न दी, ताकि मै खैरात कर लेता और नेक लोगो मे दाखिल हो जाता। (१०) और जब किसी की मौत आ जाती है, तो खुदा उस को हर-गिज़ मोहलत नही देता और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस से खबरदार है। (११) ☆

६४ सूरः तग़ाबुन १०८

सूर तगाबुन मदनी है, इस मे अठारह आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानो मे है और जो चीज ज़मीन मे है, (सब) खुदा की तस्बीह करती है, उसी की सच्ची बादशाही है और उसी की तारीफ (न खत्म होने वाली) है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (१) वही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया फिर कोई तुम मे काफिर है और कोई मोमिन और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को देखता है। (२) उसी ने आसमानो और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया और उसी ने तुम्हारी सूरते बनायी और सूरते भी पाकीज़ा बनायी

★रु १/१३ आ ८ ★रु २/१४ आ ३

यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्जि व यअ्-लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ्-लिनू-न ᵇ वल्लाहु अ़लीमुम् - बिज़ातिस्सुदूर (४) अ-लम् यअ्तिकुम् न-ब-उल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ब्लु ✓ फ़-ज़ाक़ू ववा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (५) ज़ालि-क बि-अन्नहू कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़ - क़ालू अ ब-शरुंय्यह्दूनना ✓ फ-क-फरू व त-वल्लौ-वस्तग़्नल्लाहु ᵇ वल्लाहु ग़निय्युन् ह़मीद (६) ज़-अ़-मल्लज़ी-न क-फरू अल्लंय्युब्अ़सू ᵇ क़ुल् बला व रब्बी ल-तुब् - अ़सुन्-न सुम्-म ल-तुनब्बउन्-न बिमा अ़मिल्तुम् ᵇ व ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (७) फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वन्नूरिल्लज़ी अन्ज़ल्ना ᵇ वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर (८) यौ-म यज्-मअ़ुकुम् लियौमिल्-जम्अि ज़ालि-क यौमुत्तग़ाबुनि ᵇ व मंय्युअ्मिम् - बिल्लाहि व यअ् - मल् सालिहंय्युकफ़्फ़िर् अन्हु सय्यिआतिही व युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ᵇ ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (९) वल्लज़ी-न क-फरू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्ह़ाबुन्नारि ख़ालिदी-न फ़ीहा ᵇ व बिअ्सल्-मसीर (१०)

● ★ मा असा-ब मिम्मुसीबतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ᵇ व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि यह्दि क़ल्बहू वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (११) व अतीअ़ुल्ला-ह व अतीअ़ुर्-रसू-ल ᶜ फ़-इन् त-वल्लैतुम् फ-इन्नमा अ़ला रसूलिनल्-बलाग़ुल्-मुबीन (१२) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व ᵇ व अ़-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल्-मुअ्मिनून (१३) या अय्यु-हल्लज़ी-न आमनू इन्-न मिन् अज़्वाजिकुम् व औलादिकुम् अ़दुव्वल्लकुम् फ़ह्ज़रूहुम् व इन् तअ्-फ़ू व तस्फ़हू व तग़्फ़िरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१४)

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ
كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا فَكَفَرُوْا
وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ
وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ
يَوْمُ التَّغَابُنِ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ
سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ مَآ اَصَابَ
مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ
وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ فَاِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ
اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا

★रु. १/१५ आ १० ● सु ३/४

और उसी की तरफ (तुम्हे) लौट कर जाना है। (३) जो कुछ आसमानो और जमीन मे है, वह सब जानता है और जो कुछ तुम छिपा कर करते हो और जो खुल्लम-खुल्ला करते हो, उस से भी आगाह है और खुदा दिल के भेदो को जानता है। (४) क्या तुम को उन लोगो के हाल की खबर नही पहुची, जो पहले काफिर हुए थे, तो उन्हो ने अपने कामो की सजा का मजा चख लिया और (अभी) दुख देने वाला अजाब (और) होना है। (५) यह इस लिए कि उन के पास पैगम्बर खुली निशानिया ले कर आते तो यह कहते कि क्या आदमी हमारे हादी बनते है? तो उन्हो ने (उन को) न माना और मुंह फेर लिया और खुदा ने भी बे-परवाई की और खुदा बे-परवा (और) तारीफ (व सना) के लायक है। (६) जो लोग काफिर है, उन का एतकाद है कि वे (दोबारा) हर गिज नही उठाए जाएंगे। कह दो कि हा, मेरे परवरदिगार की कसम! तुम जरूर उठाए जाओगे, फिर जो-जो काम तुम करते रहे हो, वे तुम्हे बताए जाएगे और यह (बात) खुदा को आसान है। (७) तो खुदा पर और उन के रसूल पर और नूर (कुरआन) पर जो हम ने नाजिल फरमाया है, ईमान लाओ और खुदा तुम्हारे सब आमाल से खबरदार है। (८) जिस दिन वह तुम को इकट्ठा होने (यानी कियामत) के दिन इकट्ठा करेगा वह नुक्सान उठाने का दिन है और जो शख्स खुदा पर ईमान लाए और नेक अमल करे वह उस से उस की बुराइया दूर कर देगा। और जन्नत के बागो मे, जिन के नीचे नहरे बह रही है, दाखिल करेगा, हमेशा उन मे रहेगे। यह बडी कामियाबी है। (९) और जिन्हो ने कुफ़ किया और हमारी आयतो को झुठलाया, वही दोजख वाले है, हमेशा उसी मे रहेगे और वह बुरी जगह है (१०)★●

कोई मुसीबत नाजिल नही होती मगर खुदा के हुक्म से और जो शख्स खुदा पर ईमान लाता है, वह उस के दिल को हिदायत देता है और खुदा हर चीज से बा-खबर है। (११) और खुदा की इताअत करो और उस के रसूल की इताअत करो। अगर तुम मुह फेर लोगे, तो हमारे पैगम्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ पैगाम का खोल-खोल कर पहुचा देना है। (१२) खुदा (जो सच्चा माबूद है, उस) के सिवा कोई इबादत के लायक नही, तो मोमिनो को चाहिए कि खुदा ही पर भरोसा रखे। (१३) मोमिनो! तुम्हारी औरतो और औलाद मे से कुछ तुम्हारे दुश्मन (भी) हैं, उन मे बचते रहो और अगर माफ कर दो और दरगुज़र करो और बख्श दो तो खुदा भी बख्शने वाला मेहरबान

★रु १/१५ आ १० ●सु ३/४

इन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्-नतुन् ط वल्लाहु अिन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम (१५) फ़त्तक़ुल्ला-ह मस्त-तअ्-तुम् वस्-मअू व अती़अू व अन्फ़िक़ू ख़ैरल्-लिअन्फ़ुसिकुम् ط व मंय्यू-क़ शुह्-ह नफ़्सिही फ़उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहू-न (१६) इन् तुक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्-ज़न् ह-स-नय्युज़ाअिफ़्हु लकुम् व यग्फिर् लकुम् ط वल्लाहु शकूरुन् हलीम لا (१७) आ़लिमुल्ग़ैबि वश्शहादतिल्-अ़ज़ीज़ुल्-ह़कीम ★ (१८)

قد سمع الله ٢٨ — ٩٤٧ — الطلاق ٦٥

وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ إِنَّمَآ أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ
وَاللّٰهُ عِنْدَهُۥٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا
وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُّوقَ شُحَّ نَفْسِهِۦ فَأُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ إِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيهَا رُكُوعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا
الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْۢ بُيُوتِهِنَّ وَلَا
يَخْرُجْنَ إِلَّآ أَنْ يَّأْتِينَ بِفٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ
اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُودَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُۥ ۚ لَا تَدْرِي
لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ أَمْرًا ۝ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَّأَشْهِدُوا ذَوَيْ
عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۚ ذٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِۦ مَنْ
كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهُۥ
مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ ۚ إِنَّ اللّٰهَ بٰلِغُ أَمْرِهِۦ ۚ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ

منزل

६५ सूरतुत्तलाक़ि

(मदनी) इस सूर मे अरवी के १२३७ अक्षर, २९८ शव्द, १२ आयते और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ०

या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा तल्लक़्तुमुन्नि-सा-अ फ़-तल्लिक़ू हुन्-न लिअिद्दतिहिन्-न व अह्सुल्-अिद्द-त ج वत्तक़ुल्ला-ह रब्बकुम् ج ला तुख़्रिजूहुन्-न मिम्-बुयूतिहिन्-न व ला यख़्रुज्-न इल्ला अंय्यअ्ती-न बिफ़ाहि़शतिम्-मुबय्यिनतिन् ط व तिल-क हुदूदुल्लाहि ط व मय्य-त-अद्-द हुदू-दल्लाहि फ़ - क़द् ज़ - ल - म नफ़्सहू ط ला तद्री ल-अ़ल्लल्ला-ह युह़्दिसु बअ़्-द ज़ालि-क अम्रा (१) फ़-इज़ा ब-लग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़-अम्सिकूहुन्-न बिमअ़्-रूफ़िन् औ फ़ारिक़ूहुन्-न बिमअ़्-रूफ़िव्-व अश्हिदू ज़वै अ़द्लिम् - मिन्कुम् व अक़ीमुश्शहाद-त लिल्लाहि ط ज़ालिकुम् यू - अ़ज़ु बिही मन् का - न युअ्मिनु बिल्लाहि वल् - यौमिल् - आख़िरि ط व मय्यत्तक़िल्ला-ह यज्-अ़ल् लहू मख़्-र-जंव् لا (२) व यर्ज़ुक़्हु मिन् हैसु ला यह़-तसिबु ط व मंय्य - त-वक्कल् अ़लल्लाहि फहु-व हस्बुहू ط इन्नल्ला-ह बालिग़ु अम्रिही ط क़द् ज-अ़-लल्लाहु लिकुल्लि शैइन् क़द्रा (३)

★रु २/१६ आ ८

है। (१४) तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तो आजमाइश है और खुदा के यहा बडा बदला है। (१५) सो जहा तक हो सके, खुदा से डरो और (उस के हुक्मो को) सुनो और उसके फरमा-बरदार (उस की राह मे) खर्च करो, (यह) तुम्हारे हक मे बेहतर है और जो शख्स तबीयत के बुख्ल से बचाया गया तो ऐसे ही लोग राह पाने वाले हैं। (१६) अगर तुम खुदा को (इख्लास और नीयत) नेक (से) कर्ज दोगे, तो वह तुम को उस का दो गुना देगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ कर देगा और खुदा कद्र शनास और बुर्दबार है। (१७) छिपे और खुले का जानने वाला गालिब (और) हिक्मत वाला। (१८)★

६५ सूरः तलाक़ ६६

सूर तलाक मदनी है। इस मे बारह आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैगम्बर! (मुसलमानो से कह दो कि) जब तुम औरतो को तलाक देने लगो, तो उन की इद्दत के शुरू म तलाक दो[1] और इद्दत को गिनते रहो और खुदा से, जो तुम्हारा परवरदिगार है, डरो। (न तो तुम ही) उन को (इद्दत के दिनो मे) उन के घरो से निकालो और न वे (खुद ही) निकले। हा अगर वे खुली बे-हयाई करे (तो निकाल देना चाहिए) और ये खुदा की हदे हैं। जो खुदा की हदो मे आगे बढेगा, वह अपने आप पर जुल्म करेगा। (ऐ तलाक देने वाले!) तुझे क्या मालूम, शायद खुदा इनके बाद कोई (रुजूअ होने का) रास्ता पैदा कर दे। (१) (फिर जब वह अपनी मीयाद (यानी इद्दत पूरी होने) के करीब पहुच जाए, तो या तो उन को अच्छी तरह से (जौजियत मे) रहने दो या अच्छी तरह से अलग कर दो और अपने मे से दो इन्साफपसन्द मर्दों को गवाह कर लो और (गवाहो!) खुदा के लिए ठीक गवाही देना। इन बातो से उस शख्स को नसीहत की जाती है, जो खुदा पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है और जो कोई खुदा से डरेगा, वह उस के लिए (रंज व गम मे) मुख्लिसी की शक्ल पैदा कर देगा। (२) और उस को ऐसी जगह से रोजी देगा, जहा से (वह्म व) गुमान भी न हो और जो खुदा पर भरोसा रखेगा, तो वह उस को किफायत करेगा। खुदा अपने काम को (जो वह करना चाहता है) पूरा कर देता है। खुदा ने हर चीज का

---

१ हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि उन्हो ने अपनी बीवी को तलाक दी और वह उस वक्त हैज़ से थी। हज़रत उमर रज़ि० ने जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत मे इस का ज़िक्र किया तो आप गुस्सा हुए और रुजूअ कर लेने का हुक्म दिया और फरमाया कि इसे रहने देना चाहिए, यहा तक कि पाक हो जाए, फिर हैज़ आए फिर पाक हो, फिर अगर तलाक देनी चाहे, तो हम-बिस्तर होने से पहले तलाक दो। यह वह इद्दत है, जिस को खुदा ने इर्शाद फरमाया है कि औरतो को उन की इद्दत के शुरू मे तलाक दो और यह आयत पढी—'या अय्युहन्नबीयु इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फतल्लिकूहुन-न लि इद्दतिहिन-न'।

★रु २/१६ आ ८

वल्लाई य-इस्-न मिनल्-महीजि मिन् निसाइकुम् इनिर्तब्तुम् फ़अिद्दतुहुन्-न सलासतु अश्हुरिंव्-वल्लाई लम् यहिज्-न ط व उलातुल्-अह्मालि अ-जलुहुन-न अंय्य-जअ्-न हम्ल-हुन्-न ط व मय्यत्तक़िल्ला-ह यज्-अ़ल् लहू मिन् अम्रिही युस्रा (४) जालि-क अम्रुल्लाहि अन्ज-लहू इलैकुम् ط व मय्यत्तकिल्ला-ह युकफ्फिर् अन्हु सय्यिआतिही व युअ्-ज़िम् लहू अ़ज्रा (५) अस्किनूहुन्-न मिन् हैसु स-कन्तुम् मिंव्वुजिदकुम् व ला तुज़ार्-रूहुन्-न लितुज़य्यिक़ू अ़लैहिन्-न ط व इन् कुन्-न उलाति हम्लिन् फ-अन्फिक़ू अ़लैहिन्-न हत्ता य-जअ्-न हम्-लहुन-न ج फ़-इन् अर्-जअ्-न लकुम् फआतूहुन्-न उजूरहुन्-न ج वअ्तमिरू बैनकुम् बिमअ्-रूफिन् ج व इन् त-आ़सर्तुम् फ़-स-तुर्जिअु लहू उख्रा ط (६) लियुन्फिक् जू स-अ़तिम्-मिन् स-अ़तिही ط व मन् कुदि-र अ़लैहि रिज़्कुहू फल्युन्फिक् मिम्मा आताहुल्लाहु ط ला युकल्लिफुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला मा आताहा ط सयज्-अलुल्लाहु बअ्-द अुस्रिंय्युस्रा ★ (७) व क-अय्यिम्-मिन् क़र्यतिन् अ़-तत् अ़न् अम्रि रब्बिहा व रुसुलिही फ-हासब्नाहा हिसाबन् शदीदंव्-व अ़ज्जब्नाहा अ़जाबन् नुक्रा (८) फ-ज़ाक़त् वबा-ल अम्रिहा व का-न आ़किबतु अम्रिहा ख़ुस्रा (९) अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् ۙ फत्तकुल्ला-ह या उलिल्-अल्बाबि-ج-ल्लजी-न आमनू قف कद् अन्ज़-लल्लाहु इलैकुम् ज़िक्रर्- ۙ (१०) रसूलय्यत्लू अ़लैकुम् आयातिल्लाहि मुबय्यिनातिल्-लियुख़्रिजल्-लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि ط व मय्युअ्मिम्-बिल्लाहि व यअ्-मल् सालिहय्युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط कद् अह्-स-नल्लाहु लहू रिज़्क़ा (११)

قد سمع الله ٢٨ — ٣٤٨ — الطلاق ٦٥

شَيْءٍ قَدْرًا ۝ وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ
ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ
اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ
يُسْرًا ۝ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ
سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ۝ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ
مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ؕ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ
حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ
لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ۝ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ
وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ
اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ؕ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝ وَ
كَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا
شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۝ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ
عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ۚۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛؕ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝
رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ

★रु १/१७ आ ७ ·.मु ञि मु त क १४

अन्दाजा मुकर्रर कर रखा है। (३) और तुम्हारी (तलाक पायी) औरते जो हैज़ से ना-उम्मीद हो चुकी हो, अगर तुम को (उन की इद्दत के बारे मे) शुब्हा हो, तो उन की इद्दत तीन महीने है और जिन को अभी हैज नही आने लगा, (उन की इद्दत भी यही है) और हमल वाली औरतो की इद्दत हमल होने (यानी बच्चा जनने) तक है। और जो खुदा से डरेगा, खुदा उस के काम मे आसानी पैदा कर देगा। (४) ये खुदा के हुक्म है जो खुदा ने तुम पर नाज़िल किए है और जो खुदा से डरेगा, वह उस से उस के गुनाह दूर कर देगा और उसे बडा बदला बख्शेगा। (५) (तलाक पायी) औरतो को (इद्दत के दिनो मे) अपने कुदरत के मुताबिक वही रखो, जहा खुद रहते हो और उन को तग करने के लिए तक्लीफ न दो और अगर हमल से हो, तो बच्चा जनने तक उन का खर्च देते रहो। फिर अगर वह वच्चे को तुम्हारे कहने से दूध पिलाए तो उन को उन की उज्रत दो और (बच्चे के बारे मे) पसन्दीदा तरीके से मुवाफकत रखो और अगर आपस में जिद (और ना-इत्तिफाकी) करोगे तो (बच्चे को) उस के (बाप के) कहने से कोई और औरत दूध पिलाएगी। (६) वुस्अत वाले को अपनी वुस्अत के मुताबिक खर्च करना चाहिए और जिस की रोजी मे तंगी हो, वह जितना खुदा ने उस को दिया है, उस के मुवाफिक खर्च करे। खुदा किसी को तक्लीफ नही देता, मगर उसी के मुताबिक जो उस को दिया है और खुदा बहुत जल्द तगी के बाद कुशादगी बख्शेगा। (७)★

और बहुत-सी वस्तियो (के रहने वालो) ने अपने परवरदिगार और उस के पैगम्बरो के हुक्मो से सरकशी की, तो हम ने उन को सख्त हिसाब मे पकड मे लिया और उन पर (ऐसा) अजाब नाजिल किया, जो न देखा था, न सुना। (८) सो उन्हो ने अपने कामो की सजा का मजा चख लिया और उन का अजाम नुक्सान ही तो था। (९) खुदा ने उन के लिए सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है, तो ऐ अक्ल वालो! जो ईमान लाए हो, खुदा से डरो। खुदा ने तुम्हारे पास नसीहत (की किताब) भेजी है। (१०) (और अपने) पैगम्बर (भी भेजे है) जो तुम्हारे सामने खुदा की खुली मतलब वाली आयतें पढते है, ताकि जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे है, उन को अंधेरे से निकाल कर रोशनी मे ले आए और जो शख्स ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, उन को बहिश्त के बागो में दाखिल करेगा, जिन के नीचे नहरें वह रही है, हमेशा-हमेशा उन मे रहेगे। उनको

★रु. १/१७ आ ७ मु अिं मु ता ख. १४

अल्लाहुल्लजी ख़-ल-क सब्-अ़ समावातिव्-व मिनल् - अर्जि मिस् - लहुन-न, य-त-नज़्ज़लुल्-अम्रु बैनहुन्-न लितअ़्-लमू अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुव्-व अन्नल्ला-ह क़द् अहा - त बिकुल्लि शैइन् अ़िल्मा★(१२)

صالحا يدخله جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها
ابدا قد احسن الله له رزقا ۝ الله الذي خلق سبع سموت و
من الارض مثلهن يتنزل الامر بينهن لتعلموا ان الله على كل
شيء قدير وان الله قد احاط بكل شيء علما ۝

سورة التحريم مدنية وهي اثنتا عشرة اية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

يايها النبي لم تحرم ما احل الله لك تبتغي مرضات ازواجك
والله غفور رحيم ۝ قد فرض الله لكم تحلة ايمانكم
والله مولىكم وهو العليم الحكيم ۝ واذ اسر النبي الى
بعض ازواجه حديثا فلما نبات به واظهره الله عليه
عرف بعضه واعرض عن بعض فلما نباها به قالت
من انباك هذا قال نباني العليم الخبير ۝ ان تتوبا الى
الله فقد صغت قلوبكما وان تظهرا عليه فان الله
هو مولىه وجبريل وصالح المؤمنين والملئكة بعد ذلك
ظهير ۝ عسى ربه ان طلقكن ان يبدله ازواجا خيرا
منكن مسلمت مؤمنت قنتت تئبت عبدت سئحت
ثيبت وابكارا ۝ يايها الذين امنوا قوا انفسكم واهليكم

६६ सूरतुत्तह़रीमि १०७

(मदनी) इस सूर मे अरबी के ११२४ अक्षर, २५३ शब्द, १२ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ०

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुह़र्रिमु मा अ - ह़ल्लल्लाहु ल-क ट तब्तग़ी मर्-जा-त अज़्वाजि - क ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर् - रहीम (१) क़द् फ़-र-जल्लाहु लकुम् तह़िल्ल-त ऐमानिकुम् ट वल्लाहु मौलाकुम् ट व हुवल्-अलीमुल् - ह़कीम (२) व इज् असर्रन्नबिय्यु इला बअ़् - ज़ि अज़्वाजिही ह़दीसन् ट फ़-लम्मा नब्ब - अत् बिही व अज़्-ह-रहुल्लाहु अ़लैहि अ़र्र-फ़ बअ़्-ज़हू व अअ़्-र-ज अ़म्-बअ़् - जिन् ट फ़-लम्मा नब्ब-अहा बिही क़ालत् मन् अम्ब-अ-क हाज़ा ط क़ा-ल नब्ब-अनि-यल्-अ़लीमुल्-ख़बीर (३) इन् ततूबा इलल्लाहि फ़-क़द् स़-ग़त् कुलूबुकुमा ट व इन् तज़ाहरा अ़लैहि फ़-इन्नल्ला-ह हु-व मौलाहु व जिब्रीलु व सालिहुल्-मुअ़्मिनी-न वल्मलाइकतु बअ़् - द ज़ालि - क ज़हीर (४) अ़सा रब्बुहू इन् त़ल्ल-क़कुन्-न अंय्युब्दि-लहू अज़्-वाजन् ख़ैरम्-मिन्कुन-न मुस्लिमातिम्-मुअ़्मिनातिन् क़ानितातिन् ता-इबातिन् आ़बिदातिन् साइहातिन् सय्यिबातिव्-व अब्कारा (५)

★रु २/१८ आ ५

ख़ुदा ने ख़ूब रोजी दी है। (११) ख़ुदा ही तो है, जिस ने सात आसमान पैदा किए और वैसी ही ज़मीनें, उन मे (ख़ुदा के) हुक्म उतरते रहते है, ताकि तुम लोग जान लो कि ख़ुदा हर चीज पर कुदरत रखता है और यह कि ख़ुदा अपने इल्म मे हर चीज पर एहाता किए हुए है।(१२)★

६६ सूरः तह्रीम १०७

सूरः तह्रीम मदनी है। इस मे बारह आयते और दो रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैगम्बर! जो चीज ख़ुदा ने तुम्हारे लिए जायज की है, तुम उस से किनाराकशी क्यो करते हो? (क्या इस से) अपनी बीवियो की ख़ुश्नूदी[1] चाहते हो? और ख़ुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (१) ख़ुदा ने तुम लोगो के लिए तुम्हारी कस्मो का कफ्फारा मुकर्रर कर दिया है[2] और ख़ुदा ही तुम्हारा कारसाज है और वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२) और (याद करो) जब पैगम्बर ने अपनी एक बीवी से एक भेद की बात कही, तो (उस ने दूसरी को बता दी) जब उस ने उस को खोल दिया और ख़ुदा ने उस (हाल) मे पैगम्बर को आगाह कर दिया, तो पैगम्बर ने (इन बीवी को वह बात) कुछ तो बतायी और कुछ न बतायी[3], तो जब वह उन को बतायी, तो पूछने लगी कि आप को यह किस ने बताया? उन्हो ने कहा कि मुझे उस ने बताया है, जो जानने वाला ख़बरदार है। (३) अगर तुम दोनो ख़ुदा के आगे तौबा करो, (तो बेहतर है, क्योकि) तुम्हारे दिल टेढे हो गये है और अगर पैगम्बर (की तक्लीफ) पर आपस मे मदद करोगी, तो ख़ुदा और जिब्रील और नेक मुसलमान उन के हामी और दोस्तदार है और इन के अलावा (और) फरिश्ते भी मददगार है। (४) और पैगम्बर तुम को तलाक दे दे तो अजब नही कि उन का परवरदिगार तुम्हारे बदले उन को तुम से बेहतर बीविया दे दे, मुसलमान, ईमान वालिया, फरमाबरदार, तौबा करने वालिया, इबादत गुज़ार, रोज़ा रखने वालिया, बिन शौहर और कुवारिया,[4] (५) मोमिनो! अपने आप को

---

१ कहते है आहज़रत ने अपनी बीवी उम्मुल मोमिनीन हज़रत जैनब के पास शहद पी लिया, जब आप हज़रत आइशा और हज़रत हफ्सा रज़ि० के पास आए तो उन दोनो ने जैसा कि पहले सलाह कर ली थी, आप से कहा कि आप के मुह से बू आती है। आप को बू से सख्त नफरत थी, तो आप ने फरमाया कि मैं आगे कभी शहद नही पियूगा। कुछ कहते है कि हज़रत हफ्सा को ख़ुश करने के लिए आप ने मारिया किब्तिया को, जो आप की हरम और आप के साहबज़ादे इब्राहीम की वालिदा थी, अपने ऊपर हराम कर लिया था, तब यह आयत उतरी।

२ हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लेना, गोया बुरी बात पर कसम खाना है, तो जो कफ्फारा कसम तोड डालने का है, वही हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर के फिर हलाल कर लेने का है और कसम तोडने का कफ्फारा सूरः माइदा मे ज़िक्र किया जा चुका है।

३. आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया तो हज़रत हफ्सा से फ़रमाया कि यह हाल किसी से बयान न करना। हफ्सा और आइशा रज़ि० मे बडा मेल था। उन्हो ने इस को हज़रत आइशा पर ज़ाहिर कर दिया। अल्लाह तआला ने इस हाल से आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुत्तला फरमाया।

४ सय्यिब (बिन शौहर) उस औरत को कहते हैं, जो ब्याह हो जाने के बाद बे-शौहर हो गयी हो।

★रु २/१८ आ ५

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू क़ू अन्फु-सकुम् व अह्लीकुम् नारंव्वक़ूदुहन्नासु वल्हि़जारतु अलैहा मलाइ-कतुन् ग़िलाज़ुन् शिदादुल्ला यअ्-सूनल्ला-ह मा अ-म-रहुम् व यफ्-अलू-न मा युअ्-मरून (६) या अय्युहल्लज़ी-न क-फ़रू ला तअ्-तज़िरुल्-यौ-म ط इन्नमा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्-मलून ★ (७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू तूबू इलल्लाहि तौब - तन् नसूह़न् ط अ़सा रब्बुकुम् अय्युकफ़्फ़ि-र अन्कुम् सय्यिआति-कुम् व युद्ख़ि-लकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल् - अन्हारु ﻻ यौ - म ला युख़्ज़िल्लाहुन्नबिय् - य वल्लज़ी-न आमनू म-अहू ج नूरुहुम् यस्आ बै - न ऐदीहिम् व बिऐमानिहिम् यक़ूलू-न रब्बना अत्मिम् लना नूरना वग़्फ़िर-लना ج इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (८) या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र वल्मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अ़लैहिम् ط व मअ् - वाहुम् जहन्नमु ط व बिअ्-सल्-मसीर (९) ज़-र-बल्लाहु म-स-लल्-लिल्लज़ी-न क-फ़-रुम्-र-अ-त नूहि़ंव्वम्-र-अ-त लूति़न् ط कानता तह्-त अ़ब्दैनि मिन् अ़िबादिना सा़लिहै़नि फ़-ख़ानताहुमा फ-लम् युग़्निया अन्हुमा मिनल्लाहि शैअंव्वक़ीलद्ख़ुलन्ना-र म-अ़द्दाख़िलीन (१०) व ज़-र-बल्लाहु म-स-लल्-लिल्लज़ी-न आमनुम् - र-अ-त फ़िर्औ-न ⁘ इज् क़ालत् रब्बिब्नि ली अ़िन्द-क बैतन् फ़िल्जन्नति व नज्जिनी मिन् फ़िर्औ़ - न व अ़मलिही व नज्जिनी मिनल् - क़ौमिज़् - ज़ालिमीन ﻻ (११) व मर्-य-मब्-न-त अ़िम्रानल्लती अह़्-स़-नत् फ़र्-जहा फ-न-फ़ख़्ना फ़ीहि मिर्रूहिना व सद्-द-क़त् बिकलि-माति रब्बिहा व कुतुबिही व कानत् मिनल् - क़ानितीन ★ (१२)

نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٦ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۭ عَسٰى رَبُّكُمْ
اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ
يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا
وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ
الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۭ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ
الْمَصِيْرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ
امْرَاَتَ لُوْطٍ ۭ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ
فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ
فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ
مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ ۙ وَمَرْيَمَ
ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢

★रु. १/१९ आ ७ ⁘ व. लाज़िम ★रु. २/२० आ ५

और अपने घर वालो को (जहन्नम की) आग से बचाओ, जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं और जिस पर तुन्दखू और सख्त मिजाज फरिश्ते (मुकर्रर) है जो इर्शाद खुदा उन को फरमाता है, उस की ना-फरमानी नही करते और जो हुक्म उन को मिलता है, उसे बजा लाते है। (६) काफिरो! आज बहाने मत बनाओ। जो अमल तुम किया करते हो, उन्ही का तुम को बदला दिया जाएगा। (७)★

मोमिनो! खुदा के आगे साफ दिल से तौबा करो, उम्मीद है कि वह तुम्हारे गुनाह तुमसे दूर कर देगा और तुम को बहिश्त के बागो मे, जिन के नीचे नहरे बह रही है, दाखिल करेगा, उस दिन खुदा पैग़म्बर को और उन लोगो को, जो उन के साथ ईमान लाए हैं, रुसवा नही करेगा, (बल्कि) उन का नूर (ईमान) उन के आगे और दाहिनी तरफ (रोशनी करता हुआ) चल रहा होगा और वे खुदा से इल्तिजा करेंगे कि ऐ परवरदिगार! हमारा नूर हमारे लिए पूरा कर और हमे माफ फरमा। बेशक खुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (८) ऐ पैगम्बर! काफिरो और मुनाफिको से लडो और उन पर सख्ती करो। उन का ठिकाना दोज़ख है और वह बहुत बुरी जगह है। (९) खुदा ने काफिरो के लिए नूह की बीवी और लूत की बीवी की मिसाल बयान फरमायी है▨ दोनो हमारे दो नेक बन्दो के घर मे थी और दोनो ने उन की खियानत की तो वे खुदा के मुकाबले मे उन औरतो के कुछ भी काम न आए और उन को हुक्म दिया गया कि और दाखिल होने वालो के साथ तुम भी दोज़ख मे दाखिल हो जाओ। (१०) और मोमिनो के लिए (एक) मिसाल (तो) फिऔन की बीवी की बयान फरमायी कि उस ने खुदा से इल्तिजा की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे लिए बहिश्त में अपने पास एक घर बना और मुझे और उस के आमाल से निजात बख्श और ज़ालिम लोगो के हाथ से मुझ को मुख्लिसी अता फरमा। (११) और (दूसरी) इम्रान की बेटी मरयम की, जिन्हो ने अपनी शर्मगाह को बचाए रखा तो हम ने उस मे अपनी रूह फूक दी और वह अपने परवरदिगार के कलाम और उस की किताबो को सच्चा समझती थी और फरमाबरदारो मे से थी। (१२)★

★रु. १/१९ आ ७ ▨ व लाज़िम ★रु. २/ २० आ ५

उन्तीसवां पारः तबा-र-कल्लजी

६७ सूरतुल्-मुल्कि ७७

(मक्की) इस सूर. मे अ्रबी के १३५९ अक्षर, ३३५ शब्द, ३० आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

तबा - र - कल्लजी वियदिहिल् - मुल्कु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर (१) अल्लजी ख़-ल-क़ल् - मौ-त वल्ह़या-त़ लि-यब्लु-व-कुम् अय्युकुम् अह्सनु अ्-म-लन् व हुवल्-अजीजुल्-गफ़ूर (२) अल्लजी ख़ - ल - क़ सब् - अ समावातिन् तिबाक़न् मा तरा फ़ी ख़ल्किर्रह्मानि मिन् तफ़ावुतिन् फ़र्जिअिल् - ब-स़-र हल् तरा मिन् फ़ुतूर (३) सुम्मर्जिअिल - ब-स़-र कर्रतैनि यन्क़लिब् इलैकल् - ब-सरु ख़ासिअंव्-व हु-व ह़सीर (४) व ल-क़द् जय्यन्नस्समाअद्-दुन्या बिमसाबी-ह् व ज-अल्नाहा रुजूमल्-लिश्शयातीनि व अअ्-तद्ना लहुम् अ़जाबस्सअीर (५) व लिल्लजी-न क-फ-रू बिरब्बिहिम् अ़जाबु जहन्न-म व बिअ्सल्-मसीर (६) इ-जा उल्क़ू फ़ीहा समिअू लहा शहीक़व्-व हि-य तफ़ूर (७) तकादु त-मय्यजु मिनल्गैज़ि कुल्लमा उल्कि-य फ़ीहा फ़ौजुन् स-अ-लहुम् ख़-ज़-नतुहा अ-लम् यअ्तिकुम् नजीर (८) क़ालू बला क़द् जा-अना नजीरुन् फ़-कज्जब्ना व क़ुल्ना मा नज्ज़-लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिन् कबीर (९) व क़ालू लौ कुन्ना नस्मअु औ नअ्-किलु मा कुन्ना फ़ी अस्हाबिस्सअीर (१०) फ़अ्-त-रफ़ू बिजम्बिहिम् फ़सुह्क़ल - लि-अस्हाबिस् - सअीर (११) इन्नल्लजी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि लहुम् मग्फ़ि-र-तुं व्-व अज्रुन् कबीर (१२) व असिरू क़ौलकुम् अविज-हरू बिही इन्नहू अ़लीमुम् - बिजातिस्सुदूर (१३)

تبارك الذي ٢٩ — ٧٥١ — الملك ٦٧

سورة الملك مكية وهي ثلثون اية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

تبرك الذي بيده الملك وهو على كل شيء قدير ۙ الذي
خلق الموت والحيوة ليبلوكم ايكم احسن عملا ۗ وهو العزيز
الغفور ۙ الذي خلق سبع سموت طباقا ۗ ما ترى في خلق
الرحمن من تفوت ۗ فارجع البصر ۙ هل ترى من فطور ۝ ثم
ارجع البصر كرتين ينقلب اليك البصر خاسئا وهو حسير ۝
ولقد زينا السماء الدنيا بمصابيح وجعلنها رجوما للشيطين
واعتدنا لهم عذاب السعير ۝ وللذين كفروا بربهم عذاب
جهنم ۗ وبئس المصير ۝ اذا القوا فيها سمعوا لها شهيقا و
هي تفور ۝ تكاد تميز من الغيظ ۗ كلما القي فيها فوج سالهم
خزنتها الم ياتكم نذير ۝ قالوا بلى قد جاءنا نذير ۙ
فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شيء ۖ ان انتم الا في ضلل
كبير ۝ وقالوا لو كنا نسمع او نعقل ما كنا في اصحب السعير ۝
فاعترفوا بذنبهم ۚ فسحقا لاصحب السعير ۝ ان الذين
يخشون ربهم بالغيب لهم مغفرة واجر كبير ۝ واسروا
قولكم او اجهروا به ۗ انه عليم بذات الصدور ۝ الا يعلم

६७ सूरः मुल्क ७७

सूरः मुल्क मक्की है, इस मे तीस आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (खुदा) जिस के हाथ मे बादशाही है, बडी बरकत वाला है और वह हर चीज पर कुदरत
रखता है। (१) उसी ने मौत और जिंदगी को पैदा किया, ताकि तुम्हारी आजमाइश करे कि तुम मे
कौन अच्छे काम करता है और वह जबरदस्त (और) बख्शने वाला है। (२) उस ने सात आसमान
ऊपर तले बनाए। (ऐ देखने वाले!) क्या तू (खुदा-ए-) रहमान की कायनात मे कुछ कमी देखता
है? जरा आंख उठा कर देख, भला तुझ को (आसमान मे) कोई दराड नजर आता है। (३) फिर
दोबारा (तीसरी बार) नजर कर, तो नजर (हर बार) तेरे पास नाकाम और थक कर लौट
आएगी। (४) और हम ने करीब के आसमान को (तारो के) चिरागो से जीनत दी और उन को
शैतान के मारने का आला बनाया और उनके लिए दहकती आग का अजाब तैयार कर रखा है।(५)
और जिन लोगो ने अपने परवरदिगार से इन्कार किया, उन के लिए जहन्नम का अजाब है और वह
बुरा ठिकाना है। (६) जब वे उस मे डाले जाएगे, तो उस का चीखना-चिल्लाना सुनेगे और वह
जोश मार रही होगी। (७) गोया मारे जोश के फट पडेगी। जब उस मे उन की जमाअत डाली
जाएगी, तो दोजख के दारोगा उन से पूछेगे, तुम्हारे पास कोई हिदायत करने वाला नही आया
था? (८) वे कहेगे, क्यो नही, जरूर हिदायत करने वाला आया था, लेकिन हम ने उस को
झुठला दिया और कहा कि खुदा ने तो कोई चीज नाजिल ही नही की। तुम तो बडी गलती मे (पडे
हुए) हो। (९) और कहेगे, अगर हम सुनते या समझते होते तो दोजखियो मे न होते, (१०) पस वे
अपने गुनाहो का इकरार कर लेगे, सो दोजखियो के लिए (खुदा की रहमत से) दूरी है। (११)
(और) जो लोग बिन देखे अपने परवरदिगार से डरते है, उन के लिए बख्शिश और बडा बदला
है। (१२) और तुम (लोग) बात छिपी कहो या जाहिर। वह दिल के भेदो तक को जानता

अला यअ्.लमु मन् ख़-लक़ व हुवल्लती़फुल् - ख़बीर★(१४) हुवल्लज़ी ज-अ.ल लकुमुलअर्-ज ज़लूलन् फ़म्शू फ़ी मनाकिबिहा व कुलू मिर्रिज़्क़िही व इलैहिन्नुशूर (१५) अ अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अय्यख़्सि-फ बिकुमुलअर-ज फ़-इज़ा हि-य तमूर (१६) अम् अमिन्तुम् मन् फिस्समा-इ अय्युर्सि-ल अलैकुम् हासि़बन् फ़-स-तअ्.लमू-न कै-फ़ नज़ीर (१७) व ल-क़द् क-ज़-ज़-बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-कै-फ़ का-न नकीर (१८) अ-व लम् यरौ इलत्तै़रि फ़ौक़हुम् सा़फ़्फ़ातिव्-व यक़्बिज़्-न ▨ मा युम्सिकुहुन्-न इल्लर्रह्मानु इन्नहू बिकुल्लि शैइम् बसी़र (१९) अम्मन् हाज़ल्लज़ी हु-व जुन्दुल्लकुम् यन्सुरुकुम् मिन्दूनिर्-रह्मानि इनिल्काफ़िरू-न इल्ला फ़ी गुरूर (२०) अम्मन् हाज़ल्लज़ी यर्ज़ुक़ुकुम् इन् अम्-स-क रिज़्क़हू बल् लज्जू फ़ी अतुव्विंव-व नुफ़ूर (२१) अ-फ़-मंय्यम्शी मुकिब्बन् अ़ला वज्हिही अह्-दा अम्मंय्यम्शी सविय्यन् अ़ला सि़रातिम्-मुस्तक़ीम (२२) कुलु हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् व ज-अ.ल लकुमुस्सम्-अ् वल्अब्सा़-र वल् - अफ़्इ-द-त क़लीलम्मा तश्कुरून (२३) क़ुल् हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फिल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून (२४) व यक़ूलू-न मता हाज़ल् - वअ-दु इन कुन्तुम् सा़दिक़ीन (२५) कुल् इन्नमल् - अि़ल्मु अि़न्दल्लाहि व इन्नमा अ-न नज़ीरुम् - मुबीन (२६) फ़-लम्मा रऔहु ज़ुल्-फ़-तन् सी-अत् वुजूहुल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ी-ल हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तद्-द-अ़ून (२७) क़ुल् अ-र-ऐतुम् इन् अह्-ल-कनियल्लाहु व मम्मअि़-य औ रहि़-मना फ़मंय्युजीरुल्-काफ़िरी-न मिन् अज़ाबिन् अलीम (२८)

٤٥٢ — الملك — تبارك الذي ٢٩

مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ
ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ۝
ءَأَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ
تَمُورُ ۝ أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ
فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيرِ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ
مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ۝ أَمَّنْ هَٰذَا
الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ
إِلَّا فِي غُرُورٍ ۝ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ
بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ۝ أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ
أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِي
أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝
قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ
هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا
أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ
هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَدَّعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَن
مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ

★रु १/१ आ १४ ▨ व लाज़िम् तलाफ़ी व. मं व. गु फ़्.

है। (१३) भला जिस ने पैदा किया, वह बे-ख़बर है? वह तो छिपी बातो का जानने वाला और (हर चीज से) आगाह है। (१४)★

वही तो है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को नर्म किया, तो उस की राहो में चलो-फिरो और ख़ुदा की (दी हुई) रोज़ी खाओ और (तुम को) उसी के पास (क़ब्रो से) निकल कर जाना है। (१५) क्या तुम उस से जो आसमान मे है, बे-ख़ौफ़ हो कि तुम को ज़मीन मे धंसा दे और वह उस वक़्त हरकत करने लगे। (१६) क्या तुम उस से जो आसमान मे है, निडर हो कि तुम पर ककड भरी हवा छोड़ दे, सो तुम बहुत जल्द जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है। (१७) और जो लोग उन से पहले थे, उन्हों ने झुठलाया था, सो (देख लो कि) मेरा कैसा अज़ाब हुआ? (१८) क्या उन्होंने अपने सरो पर उडते जानवरो को नही देखा जो परो को फैलाए रहते है और उन को सुकेड भी लेते है///ख़ुदा के सिवा उन्हे कोई थाम नही सकता। बेशक वह हर चीज को देख रहा है। (१९) भला ऐसा कौन है, जो तुम्हारी फौज हो कर ख़ुदा के सिवा तुम्हारी मदद कर सके। काफिर तो धोखे मे है। (२०) भला अगर वह अपनी रोजी बन्द कर ले, तो कौन है जो तुम को रोज़ी दे। लेकिन ये सरकशी और नफरत में फसे हुए है। (२१) भला जो शख़्स चलता हुआ मुह के बल गिर पडता है, वह सीधे रास्ते पर है या वह जो सीधे रास्ते पर बराबर चल रहा हो? (२२) वह ख़ुदा ही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया और तुम्हारे कान और आखे और दिल बनाए, (मगर) तुम कम एहसान मानते हो। (२३) कह दो कि वही है, जिस ने तुम को ज़मीन मे फैलाया और उसी के सामने तुम जमा किए जाओगे। (२४) और काफिर कहते है कि अगर तुम सच्चे हो तो यह धमकी कब (पूरी) होगी? (२५) कह दो कि इस का इल्म ख़ुदा ही को है और मैं तो खोल-खोल कर डर सुना देने वाला हूं। (२६) सो जब वे देख लेगे कि वह (वायदा) करीब आ गया, तो काफिरो के मुह बुरे हो जाएंगे और (उन से) कहा जाएगा कि यह वही है जिस की तुम ख़्वाहिश करते थे। (२७) कहो कि भला देखो तो अगर ख़ुदा मुझ को और मेरे साथियो को हलाक कर दे या हम पर मेहरबानी करे, तो कौन है जो काफिरो को दुख देने वाले अजाब से पनाह दे? (२८) कह दो

★रु १/१ आ १४ ///व लाज़िम् तलाफी व. म व. गु फ्.

क़ुल् हुवर्रह्-मानु आमन्ना बिही व अलैहि त-वक्कल्ना फ़-स-तअ्-ल-मू-न मन् हु-व फ़ी ज़लालिम् - मुबीन (२९) क़ुल् अ-र-ऐतुम् इन् अस्ब-ह मा-उकुम् गौरन् फ़-मंय्यअ्-तीकुम् बिमाइम् - मअीन ✱ (३०)

تبارك الذي ٢٩   ٣٥٣   القلم

امنا به وعليه توكلنا فستعلمون من هو في ضلل مبين ۝ قل
ارءيتم ان اصبح ماؤكم غورا فمن ياتيكم بماء معين ۝
سورة القلم مكية وهي اثنتان وخمسون اية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمن الرحيم
ن والقلم وما يسطرون ۝ ما انت بنعمة ربك بمجنون ۝ و
ان لك لاجرا غير ممنون ۝ وانك لعلى خلق عظيم ۝ فستبصر
ويبصرون ۝ بايكم المفتون ۝ ان ربك هو اعلم بمن ضل
عن سبيله وهو اعلم بالمهتدين ۝ فلا تطع المكذبين ۝
ودوا لو تدهن فيدهنون ۝ ولا تطع كل حلاف مهين ۝
هماز مشاء بنميم ۝ مناع للخير معتد اثيم ۝ عتل بعد
ذلك زنيم ۝ ان كان ذا مال وبنين ۝ اذا تتلى عليه ايتنا
قال اساطير الاولين ۝ سنسمه على الخرطوم ۝ انا بلونهم
كما بلونا اصحب الجنة اذ اقسموا ليصرمنها مصبحين ۝ و
لا يستثنون ۝ فطاف عليها طائف من ربك وهم نائمون ۝
فاصبحت كالصريم ۝ فتنادوا مصبحين ۝ ان اغدوا على
حرثكم ان كنتم صرمين ۝ فانطلقوا وهم يتخافتون ۝
ان لا يدخلنها اليوم عليكم مسكين ۝ وغدوا على حرد

६८ सूरतुल् - क़लमि २

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १२९५ अक्षर, ३०६ शब्द, ५२ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

नून् वल्क़-लमि व मा यस्तुरून (१) मा अन-त बिनिअ्-मति रब्बि-क बिमज्नून (२) व इन्-न ल-क ल-अज्रन् गै-र मम्नून (३) व इन्न-क ल-अला ख़ुलुक़िन् अज़ीम (४) फ़-स-तुब्सिरु व युब्सिरून (५) बि-अय्यिकुमुल्-मफ़्तून (६) इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिमन् ज़ल्-ल अन् सबीलिही व हु-व अअ्-लमु बिल्मुह-तदीन (७) फ़ला तुतिअिल्-मुकज्ज़िबीन (८) वद्दू लौ तुद्हिनु फ़युद्हिनून (९) वला तुतिअ् कुल्-ल हल्लाफ़िम् - महीन (१०) हम्माज़िम् - मश्शाइम् - बिनमीमिम्- (११) -मन्नाअिल् - लिल्ख़ैरि मुअ्-तदिन् असीम (१२) अुतुल्लिम्-बअ्-द ज़ालि-क ज़नीम (१३) अन् का-न ज़ा मालिव-व बनीन (१४) इज़ा तुत्ला अलैहि आयातुना क़ा-ल असातीरुल् - अव्वलीन (१५) स-नसिमुहू अलल् - ख़ुर्तूम (१६) इन्ना बलौनाहुम् कमा बलौना अस्हाबल् - जन्नति इज़् अक़्समू ल-यस्रिमुन्नहा मुस्बिहीन (१७) व ला यस्-तस्-नून (१८) फ़-ता-फ़ अलैहा ताइफ़ुम् - मिर्रब्बि-क व हुम् नाइमून (१९) फ-अस्-ब-हत् कस्सरीम (२०) फ़-तनादौ मुस्बिहीन (२१) अनिग्दू अला हर्सिकुम् इन् कुन्तुम् सारिमीन (२२) फ़न-त-लक़ू व हुम् य-त-ख़ाफ़तून (२३) अल्ला यद्ख़ुलन्नहल् - यौ-म अलैकुम् मिस्कीन (२४) व गदौ अला हर्दिन् क़ादिरीन (२५)
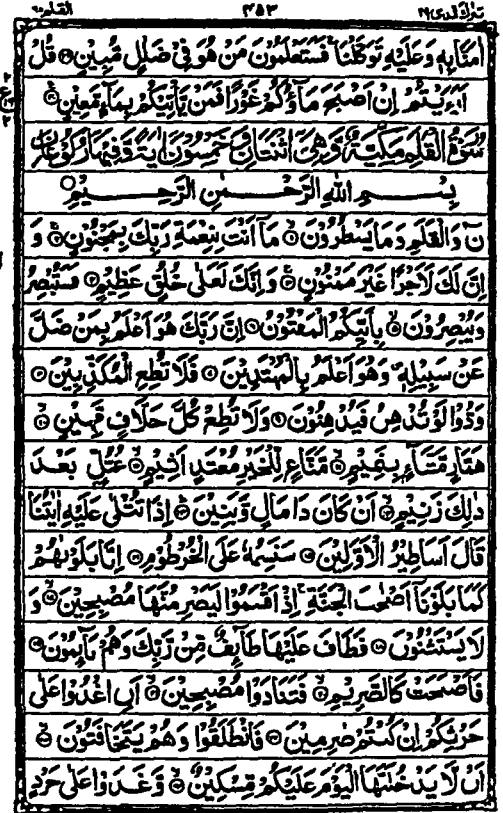
★रु २/२ आ १६

कि वह (जो ख़ुदा-ए-) रहमान (है) हम उसी पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा रखते है। तुम को जल्द मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही मे कौन पड रहा था। (२९) कहो कि भला देखो तो, अगर तुम्हारा पानी (जो तुम पीते हो और बरतते हो) खुश्क हो जाए तो (ख़ुदा के सिवा) कौन है जो तुम्हारे लिए मीठे पानी का चश्मा बहा लाए? (३०)★

६८ सूरः क़लम २

सूरः कलम मक्की है। इस मे ५२ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

नून कलम की और जो (कलम वाले) लिखते है, उन की कसम, (१) कि (ऐ मुहम्मद!) तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल से दीवाने नही हो, (२) और तुम्हारे लिए बे-इतिहा बदला है, (३) और तुम्हारे अख़्लाक बडे (बुलन्द) है, (४) सो बहुत जल्द तुम भी देख लोगे और ये (काफिर) भी देख लेंगे, (५) कि तुम मे से कौन दीवाना है। (६) तुम्हारा परवरदिगार उस को भी ख़ूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटक गया और उन को भी ख़ूब जानता है, जो सीधे रास्ते पर चल रहे है, (७) तो तुम झुठलाने वालो का कहा न मानना। (८) ये लोग चाहते है कि तुम नर्मी अख़्तियार करो, तो ये भी नर्म हो जाए, (९) और किसी ऐसे शख़्स के कहे मे न आ जाना, जो बहुत कस्मे खाने वाला, ज़लील औकात है, (१०) तानो भरे इशारे करने वाला, चुगलिया लिए फिरने वाला, (११) माल मे बुख़्ल करने वाला, हद से बढा हुआ बद-कार, (१२) सख़्त मिजाज और इस के अलावा बद-जात है, (१३) इस वजह से कि माल और बेटे रखता है, (१४) जब उस को हमारी आयते पढ कर सुनायी जाती है, तो कहता है कि ये अगले लोगो की कहानिया है, (१५) हम बहुत जल्द उस की नाक पर दाग लगाएगे। (१६) हम ने उन लोगो की इसी तरह आजमाइश की है, जिस तरह बाग वालो की आजमाइश की थी, जब उन्हो ने कस्मे खा-खा कर कहा कि सुबह होते-होते हम इस का मेवा तोड लेंगे। (१७) और इन्शाअल्लाह न कहा, (१८) सो वे अभी सो रहे थे कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (रातो-रात) उस पर एक आफत फिर गयी, (१९) तो वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती। (२०) जब सुबह हुई तो वे लोग एक दूसरे को पुकारने लगे, (२१) कि अगर तुम को काटना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही जा पहुचो, (२२) तो वे चल पडे और आपस मे चुपके-चुपके कहते जाते थे, (२३) कि आज यहा तुम्हारे पास कोई फकीर न आने पाये, (२४) और कोशिश के साथ सवेरे ही जा पहुचे (गोया खेती पर) कुदरत रखते (है) (२५) जब बाग को

★रु २/२ आ १६

फ़-लम्मा रऔहा क़ालू इन्ना लज़ाल्लून ॥ (२६) बल् नह़्नु मह़रूमून (२७) क़ा-ल औसतुहुम् अ-लम् अक़ुल् लकुम् लौला तुसब्बिहून (२८) क़ालू सुब्ह़ा-न रब्बिना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (२९) फ़-अक़्-ब-ल बअ़्-ज़ुहुम् अला बअ़्ज़िय्य-त-लावमून (३०) क़ालू यावैलना इन्ना कुन्ना ताग़ीन (३१) अ़सा रब्बुना अय्युब्दि - लना ख़ैरम्मिन्हा इन्ना इला रब्बिना राग़िबून (३२) कज़ालिकल् - अ़ज़ाबु ؕ व ल - अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अक्बरु ▨ लौ कानू यअ़्-लमून ★ (३३) इन्-न लिलमुत्तक़ी-न अ़िन्-द रब्बिहिम जन्नातिन्नअ़ीम (३४) अ-फ़-नज्अ़लुल् - मुस्-लिमी - न कल्मुज्रिमीन ؕ (३५) मा लकुम् ۛ وقفہ कै-फ़ तह़्कुमून ۚ (३६) अम लकुम् किताबुन् फ़ीहि तद्रुसून ॥ (३७) इन्-न लकुम् फ़ीहि लमा त-ख़य्यरून ۚ (३८) अम लकुम् ऐमानुन् अ़लैना बालि-ग़-तुन् इला यौमिल-क़ियामति ॥ इन् - न लकुम् लमा तह़्कुमून ۚ (३९) सल् - हुम अय्युहुम बिज़ालि - क ज़अ़ीम ۚ (४०) अम लहुम् शु - र-काउ ۚ फ़ल् - यअ्तू बि - शु-र-काइ - हिम इन् कानू सादिक़ीन (४१) यौ-म युक्शफ़ु अ़न साकिव्-व युद्औ - न इलस्सुजूदि फ़ला यस्ततीअ़ून ॥ (४२) ख़ाशि - अ़ - तन् अब्सारुहुम तर्हक़ुहुम ज़िल्लतुन ؕ व क़द कानू युद्औ-न इलस्सुजूदि व हुम सालिमून (४३) फ़ - ज़र्नी व मंय्युकज़्ज़िबु बिहाज़ल् - ह़दीसि ؕ स-नस्तद्रिजुहुम मिन हैसु ला यअ़्-लमून ॥ (४४) व उमली लहुम् ؕ इन्-न कैदी मतीन (४५) अम् तस्-अलुहुम् अज्-रन् फ़हुम् मिम् - मग़्-रमिम् - मुस्क़लून ۚ (४६) अम् अ़िन्द-हुमुल-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (४७) फ़स्-बिर लिहुक्मि रब्बि-क व ला तकुन् क-साहिबिल् - ह़ूति ▨ इज् नादा व हु - व मक्ज़ूम ؕ (४८)

تبارك الذي ٢٩ ٤٥٤ القلم ٦٨

قٰدرين ۝ فلما راوها قالوا انا لضالون ۝ بل نحن محرومون ۝
قال اوسطهم الم اقل لكم لولا تسبحون ۝ قالوا سبحن
ربنا انا كنا ظلمين ۝ فاقبل بعضهم على بعض يتلاومون ۝
قالوا يويلنا انا كنا طغين ۝ عسى ربنا ان يبدلنا خيرا
منها انا الى ربنا رغبون ۝ كذلك العذاب ولعذاب الاخرة
اكبر لو كانوا يعلمون ۝ ان للمتقين عند ربهم جنت
النعيم ۝ افنجعل المسلمين كالمجرمين ۝ ما لكم كيف
تحكمون ۝ ام لكم كتب فيه تدرسون ۝ ان لكم فيه لما
تخيرون ۝ ام لكم ايمان علينا بالغة الى يوم القيمة ان لكم
لما تحكمون ۝ سلهم ايهم بذلك زعيم ۝ ام لهم شركاء
فلياتوا بشركائهم ان كانوا صدقين ۝ يوم يكشف عن ساق
ويدعون الى السجود فلا يستطيعون ۝ خاشعة ابصارهم
ترهقهم ذلة وقد كانوا يدعون الى السجود وهم سلمون ۝
فذرني ومن يكذب بهذا الحديث سنستدرجهم من حيث
لا يعلمون ۝ واملي لهم ان كيدي متين ۝ ام تسـلهم
اجرا فهم من مغرم مثقلون ۝ ام عندهم الغيب فهم
يكتبون ۝ فاصبر لحكم ربك ولا تكن كصاحب الحوت اذ

▨ व. लाज़िम ★ रु. १/३ आ ३३ ∴ मु अ़ि मु ता ख़ १५ ▨ व. लाज़िम

देखा तो (वीरान.) कहने लगे कि हम रास्ता भूल गये हैं। (२६) नही, बल्कि हम (बिगडी किस्मत के) बे-नसीब है। (२७) एक जो उनमे से अक्लमद था, बोला, क्या मैं ने तुम से नही कहा था, कि तुम तस्बीह क्यो नही करते ? (२८) (तब) वे कहने कि हमारा परवरदिगार पाक है। बेशक हम ही कुसूरवार थे। (२९) फिर लगे एक दूसरे को आमने-सामने मलामत करने, (३०) कहने लगे, हाय शामत ! हम ही हद से बढ गये थे। (३१) उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार इस के बदले मे हमें उस से बेहतर बाग इनायत करे, हम अपने परवरदिगार की तरफ रुजूअ लाते हैं। (३२) देखो अजाब यो होता है और आखिरत का अजाब इस से कही बढ कर है काश ▨ ये लोग जानते होते। (३३) ★

परहेजगारो के लिए उन के परवरदिगार के यहा नेमत के बाग है। (३४) क्या हम फरमाबरदारो को नाफरमानो की तरह (नेमतो से महरूम) कर देगे ? (३५) तुम्हे क्या हो गया है, कैसी तज्वीज करते हो ? (३६) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस मे (यह) पढते हो, (३७) कि जो चीज तुम पसन्द करोगे, वह तुम को जरूर मिलेगी, (३८) या तुम ने हम से कस्मे ले रखी हैं, जो कियामत के दिन तक चली जाएगी कि जिस चीज का तुम हुक्म करोगे, वह तुम्हारे लिए हाजिर होगी, (३९) उन से पूछो कि इन मे से इस का कौन जिम्मा लेता है ? (४०) क्या (इस कौल मे) उन के और भी शरीक हैं? अगर ये सच्चे है, तो अपने शरीको को ला सामने करे, (४१) जिस दिन पिंडुली से कपड़ा उठा दिया जाएगा[1] और कुफ्फार सज्दे के लिए बुलाए जाएंगे, तो वे सज्दा न कर सकेंगे। (४२) उन की आखे झुकी हुई होगी और उन पर जिल्लत छा रही होगी, हालाकि पहले (उस वक्त) सज्दे के लिए बुलाए जाते थे, जब कि सही व सालिम थे। (४३) तो मुझ को इस कलाम के झुठलाने वालो से समझ लेने दो। हम उन को धीरे-धीरे ऐसे तरीके से पकडेगे कि उन को खबर भी न होगी। (४४) और मैं उन को मोहलत दिए जाता हूं, मेरी तद्बीर मज़बूत है। (४५) क्या तुम उन से कुछ अज्र मागते हो कि उन पर जुर्माने का बोझ पड रहा है, (४६) या उन के पास गैब की खबर है कि (उसे) लिखते जाते हैं, (४७) तो अपने परवरदिगार के हुक्म के इंतिज़ार मे सब्र किए रहो और मछली का (लुक्मा होने) वाले (यूनुस) की तरह न होना ▨ कि उन्हो ने (खुदा को) पुकारा और वह (गम व)

---

१ पिंडुली से कपडा उठा देने से मुराद उस वक्त की तक्लीफ है। इसी वास्ते हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक बडी कडी घडी होगी।

लौला अन् तदा-र-कहू निअ्-मतुम् - मिर्रब्बिही लनुबि-ज बिल्अ्राइ व हु-व मज्मूम (४९) फ़ज्तबाहु रब्बुहू फ़-ज-अ-लहू मिनस्सालिहीन (५०) व इंय्यकादुल्लजी-न क-फ़रू लयुज्लिकू-न-क बि-अब्सारिहिम लम्मा समिअुज्जिक्-र व यक़ूलू-न इन्नहू ल-मजनून ⁂ (५१) व मा हु-व इल्ला जिक्रुल-लिल्आलमीन ★ ● (५२)

نَادٰى وَهُوَ مَكْظُومٌ ۝ لَوْلَآ أَن تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ
بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ۝ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصّٰلِحِينَ ۝
وَإِن يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ
وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ۝ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِينَ ۝
سُورَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَانِ وَخَمْسُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
الْحَاقَّةُ ۝ مَا الْحَاقَّةُ ۝ وَمَآ أَدْرٰكَ مَا الْحَاقَّةُ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ
وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۝ فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ۝ وَأَمَّا عَادٌ
فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَ
ثَمٰنِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعٰى كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ
نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝ فَهَلْ تَرٰى لَهُم مِّن بَاقِيَةٍ ۝ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ
وَمَن قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝ فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ
فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ۝ إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي
الْجَارِيَةِ ۝ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَآ أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ۝ فَإِذَا
نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝ وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا
دَكَّةً وَاحِدَةً ۝ فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ وَانشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ
يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝ وَالْمَلَكُ عَلٰىٓ أَرْجَآئِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ

६९ सूरतुल्-हाक्क़ति ७८

(मक्की) इस सूरः मे अरबी के ११३४ अक्षर, २६० शब्द, ५२ आयतें और २ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अल्हाक्क़तु ॥ (१) मल्हाक्क़: (२) व मा अद्रा-क मल्हाक्क़. (३) कज्ज-बत् समूदु व आदुम्-बिल्क़ारिअ. (४) फ़-अम्मा समूदु फउह्लिकू बित्ताग़िय (५) व अम्मा आदुन् अउह्लिकू बिरीहिन् सर्सरिन् आतियतिन् ॥ (६) सख्ख-रहा अलैहिम् सब्-अ लयालिव्-व समानि-य-त अय्यामिन् हुसूमन् ॥ फ-त-रल्-कौ-म फ़ीहा सर्आ ॥ क-अन्नहुम् अअ्-जाजु नख्लिन् खाविय. (७) फ-हल् तरा लहुम् मिम् - बाकिय (८) व जा-अ फिर्औनु व मन् क़ब्-लहू वल् - मुअ्-तफ़िकातु बिल्खातिअ (९) फ-असौ रसू-ल रब्बिहिम् फ-अ-ख-ज-हुम् अख्-ज-तर्-राबिय. (१०) इन्ना लम्मा तग़ाल्माउ ह-मल्नाकुम् फिलजारिय ॥ (११) लिनज्-अ-लहा लकुम् तज्कि-र-तव्-व तअि-यहा उज़ुनुव्वाअिय. (१२) फ़इज़ा नुफ़ि - ख फिस्सूरि नफ्-खतुव्वाहिदतुव्-(१३) -व हुमि-लतिल - अर्ज़ु वल्जिबालु फ-दुक्कता दक्कतव्वाहि-द-तन् ॥ (१४) फ़यौमइज़िव्व-क़-अतिल - वाकिअ ॥ (१५) वन्-शक्कतिस् - समाउ फ़हि - य यौमइज़िव्वाहि - यतुव्-॥ (१६) -वल्म-लकु अला अर्जाइहा व यह्मिलु अर् - श रब्बि - क फ़ौकहुम् यौमइज़िन् समानिय (१७)

⁂ व लाज़िम ★रु. २/४ आ १६ ●रुब्अ १/४

गुस्से में भरे हुए थे। (४८) अगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी उन की यावरी न करती, तो वह चटयल मैदान मे डाल दिए जाते और उन का हाल बुरा हो जाता। (४९) फिर परवरदिगार ने उन को चुन कर भलो मे कर लिया। (५०) और काफिर जब (यह) नसीहत (की किताब) सुनते है तो यों लगते है कि तुम को अपनी निगाहो से फिसला देगे[1] और कहते है कि यह तो दीवाना है॥(५१) और (लोगो!) यह (कुरआन) दुनिया वालो के लिए नसीहत है। (५२)★ ○

६९ सूरः हाक़्क़ा ७८

सूर. हाक्का मक्की है। इस मे बावन आयते और दो रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सचमुच होने वाली, (१) वह सचमुच होने वाली क्या है? (२) और तुम को क्या मालूम है कि वह सचमुच होने वाली क्या है? (३) (वही) खडखड़ाने वाली, (जिस) को समूद और आद (दोनो) ने झुठलाया, (४) सो समूद तो कडक से हलाक कर दिए गए, (५) रहे आद, उन का निहायत तेज आधी मे सत्यानाश कर दिया गया, (६) खुदा ने उस को सात रात और आठ दिन उन पर लगातार रखा, तो (ऐ मुखातब!) तू लोगो को इस मे (इस तरह) ढहे (और मरे) पडे देखे, जैसे खजूरो के खोखले तने, (७) भला तू उन मे से किसी को भी बाकी देखता है? (८) और फ़िरऔन और जो लोग इस से पहले थे और वे जो उलटी बस्तियो मे रहते थे, सब गुनाह के काम करते थे। (९) उन्हो ने अपने परवरदिगार के पैगम्बर की ना-फरमानी की, तो खुदा ने भी उन को बड़ा सख्त पकडा। (१०) जब पानी बाढ पर आया, तो हम ने तुम (लोगो) को कश्ती मे सवार कर लिया, (११) ताकि उस को तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और याद रखने वाले कान उसे याद रखें, (१२) तो जब सूर मे एक (बार) फूंक मार दी जाएगी, (१३) और जमीन और पहाड दोनो उठा लिए जाएंगे, फिर एकबारगी तोड-फोड कर बराबर कर दिए जाएगे, (१४) तो उस दिन हो पडने वाली (यानी कियामत) हो पडेगी। (१५) और आसमान फट जाएगा तो वह उस दिन कमजोर होगा, (१६) और फरिश्ते उस के किनारो पर (उतर आएगे) और तुम्हारे परवरदिगार के अर्श को

---

१ यानी तुम को इस तरह घूर-घूर कर देखते है कि तुम डर कर फिसल जाओ, यहा यह मुराद है कि यह तुम्हे बुरी नजर लगाना चाहते हैं, जिस के असर से खुदा ने तुम को महफूज रखा है।

यौमइज़िन तुअ्-रज़ू-न ला तख़्फ़ा मिन्कुम ख़ाफ़िय. (१८) फ़-अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही फ़-यक़ूलु हाउमुक़्रऊ किताबियः (१९) इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन हिसाबियः (२०) फहु-व फ़ी ओ़शतिर्-राज़िय. (२१) फ़ी जन्नतिन आ़लिय. (२२) क़ुतूफ़ुहा दानियः (२३) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा अस्-लफ़्तुम फ़िल-अय्यामिल-ख़ालियः (२४) व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बिशिमालिही फ़-यक़ूलु यालैतनी लम् ऊ-त किताबियः (२५) व लम् अदरि मा हिसाबियः (२६) या लैतहा कानतिल-क़ाज़ियः (२७) मा अग़्ना अ़न्नी मालियः (२८) ह-ल-क अ़न्नी सुल्तानियः (२९) ख़ुज़ूहु फ़ग़ुल्लूहु (३०) सुम्मल्-जही-म सल्लूहु (३१) सुम-म फ़ी सिलसि-लतिन ज़र्अुहा सब्ऊ-न ज़िराअ़न् फ़स्लुकूहु (३२) इन्नहू का-न ला युअ्मिनु बिल्लाहिल-अज़ीम (३३) व ला यहुज़्ज़ु अ़ला तआमिल-मिस्कीन (३४) फ़-लै-स लहुल्यौ-म हाहुना हमीमुंव- (३५) -व ला तआमुन इल्ला मिन ग़िस्लीन (३६) ला यअ्कुलुहू इल्लल्-ख़ातिऊन ★ (३७) फ़ला उक़्सिमु बिमा तुब्सिरून (३८) व मा ला तुब्सिरून (३९) इन्नहू लक़ौलु रसूलिन करीम (४०) व मा हु-व बिक़ौलि शाअ़िरिन क़लीलम्मा तुअ्मिनून (४१) व ला बिक़ौलि काहिनिन क़लीलम्मा त-ज़क्करून (४२) तन्ज़ीलुम-मिर्रब्बिल-आ़लमीन (४३) व लौ त-क़व्व-ल अ़लैना बअ्-ज़ल्-अक़ावीलि (४४) ल-अ-ख़ज़्ना मिन्हु बिल्यमीन (४५) सुम्-म ल-क़-तअ्-ना मिन्हुल-वतीन (४६) फ़मा मिन्कुम् मिन् अ-हदिन् अ़न्हु हाजिज़ीन (४७) व इन्नहू ल-तज़्कि-र-तुल्-लिलमुत्तक़ीन (४८)

فوقهم يومئذ ثمنية ۝ يومئذ تعرضون لا تخفى منكم خافية ۝
فاما من اوتي كتبه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتبيه ۝
اني ظننت اني ملق حسابيه ۝ فهو في عيشة راضية ۝
في جنة عالية ۝ قطوفها دانية ۝ كلوا واشربوا هنيئا بما
اسلفتم في الايام الخالية ۝ واما من اوتي كتبه بشماله
فيقول يليتني لم اوت كتبيه ۝ ولم ادر ما حسابيه ۝
يليتها كانت القاضية ۝ ما اغنى عني ماليه ۝ هلك عني
سلطنيه ۝ خذوه فغلوه ۝ ثم الجحيم صلوه ۝ ثم في
سلسلة ذرعها سبعون ذراعا فاسلكوه ۝ انه كان لا
يؤمن بالله العظيم ۝ ولا يحض على طعام المسكين ۝
فليس له اليوم ههنا حميم ۝ ولا طعام الا من غسلين ۝
لا ياكله الا الخاطئون ۝ فلا اقسم بما تبصرون ۝ وما
لا تبصرون ۝ انه لقول رسول كريم ۝ وما هو بقول شاعر
قليلا ما تؤمنون ۝ ولا بقول كاهن قليلا ما تذكرون ۝
تنزيل من رب العلمين ۝ ولو تقول علينا بعض الاقاويل ۝
لاخذنا منه باليمين ۝ ثم لقطعنا منه الوتين ۝ فما منكم
من احد عنه حجزين ۝ وانه لتذكرة للمتقين ۝

★रु १/५ आ ३७

उस दिन आठ फरिश्ते उठाए होंगे। (१७) उस दिन तुम (सब लोगों के सामने) पेश किए जाओगे और तुम्हारी कोई पोशीदा बात छिपी न रहेगी। (१८) तो जिस का (आमाल-) नामा उस के दाहिने हाथ मे दिया जाएगा, वह (दूसरो से) कहेगा कि लीजिए मेरा नामा (-ए-आमाल) पढ़िए। (१९) मुझे यकीन था कि मुझ को मेरा हिसाब (-किताब) ज़रूर मिलेगा। (२०) पस वह (शख्स) मनमाने ऐश मे होगा, (२१) (यानी) ऊंचे (-ऊचे महलो के) बाग मे, (२२) जिन के मेवे झुके हुए होंगे, (२३) जो (अमल) तुम पिछले दिनो मे आगे भेज चुके हो, उस के बदले मे मज़े से खाओ और पियो। (२४) और जिस का नामा (-ए-आमाल) उस के बाए हाथ मे दिया जाएगा, वह कहेगा, ऐ काश! मुझ को मेरा (आमाल-) नामा न दिया जाता। (२५) और मुझे मालूम न होता कि मेरा हिसाब क्या है। (२६) ऐ काश! मौत (हमेशा-हमेशा के लिए मेरा काम) तमाम कर चुकी होती। (२७) (आज) मेरा माल मेरे कुछ भी काम न आया, (२८) (हाय!) मेरी सल्तनत खाक मे मिल गयी। (२९) (हुक्म होगा कि) इसे पकड लो और तौक पहना दो। (३०) फिर दोज़ख की आग मे झोक दो, (३१) फिर ज़जीर से जिस की नाप सत्तर गज़ है, जकड दो। (३२) यह न तो खुदा-ए-जल्लशानुहू पर ईमान लाता था, (३३) और न फकीर के खाना-खिलाने पर आमादा करता था, (३४) सो आज इस का भी यहा कोई दोस्तदार नही, (३५) और न पीप के सिवा (उस के लिए) खाना है, (३६) जिस को गुनाहगारो के सिवा कोई नही खाएगा, (३७) ★

तो हम को उन चीज़ो की कसम, जो तुमको नज़र आती हैं। (३८) और उनकी जो नज़र नही आती, (३९) कि यह कुरआन बुलंद मर्तबा फरिश्ते की ज़ुबान का पैगाम है, (४०) और यह किसी शायर का कलाम नही, मगर तुम लोग बहुत ही कम ईमान लाते हो, (४१) और न किसी काहिन की बाते है लेकिन तुम लोग बहुत ही कम फिक्र करते हो। (४२) (यह तो) दुनिया के परवरदिगार का उतारा (हुआ) है। (४३) अगर यह पैगम्बर हमारे बारे मे कोई बात झूठ बना लाते, (४४) तो हम उन का दाहिना हाथ पकड लेते, (४५) फिर उन की गर्दन की रग काट डालते, (४६) फिर तुम में से कोई (हमे) इस से रोकने वाला न होता। (४७) और यह (किताब) तो परहेज़-

★रु १/५ आ ३७

व इन्ना ल-नअ्-लमु अन् - न मिन्कुम मुकज़्ज़िबीन (४६) व इन्नहू ल - हस् - रतुन अलल् - काफ़िरीन (५०) व इन्नहू लहक़्क़ुल - यक़ीन (५१) फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल् - अज़ीम ★ (५२)

إِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنكُم مُّكَذِّبِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

سُورَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝ لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۝ مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۝ تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ۝ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۝ وَنَرَاهُ قَرِيبًا ۝ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ۝ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝ وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ۝ يُبَصَّرُونَهُمْ ۚ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ۝ وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ۝ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ۝ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنجِيهِ ۝ كَلَّا ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ۝ نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ۝ تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ۝ وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ۝ إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۝ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝ وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ۝ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝ وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ۝

७० सूरतुल्-मआरिजि ७६

(मक्की) इस सूरः मे अरबी के ६७७ अक्षर, २६० शब्द, ४४ आयते और २ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

स - अ - ल साइलुम-बिअज़ाबिव्वाक़िअिल्- (१) -लिल् - काफिरी-न लै - स लहू दाफिउम् - (२) -मिनल्लाहि ज़िलमआरिज (३) तअ् - रुजुल - मलाइ-कतु वरूहु इलैहि फ़ी यौमिऩ का-न मिक़्दारुहू ख़म्सी-न अल्-फ़ स-नतिन् (४) फसबिर सब्-रन् जमीला (५) इन्नहुम् यरौनहू बईदव् - (६) व नराहु करीबा (७) यौ - म तकूनुस् - समाउ कल्मुह्लि (८) व तकूनुल - जिबालु कल्अिह्नि (९) व ला यस् - अलु हमीमुन हमीमय - (१०) युबस्सरूनहुम् यवद्दुल् - मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन अज़ाबि यौमिइज़िम - बिबनीहि (११) व साहिबतिही व अख़ीहि (१२) व फ़सीलतिहिल्लती तुअ्वीहि (१३) व मन् फिलअर्जि जमीअन् सुम्-म युन्जीहि (१४) कल्ला इन्नहा लज़ा (१५) नज्जा - अ - तल् - लिश्शवा (१६) तद्ऊ मन् अद्-ब-र व त-वल्ला (१७) व ज-म-अ फ़औआ (१८) इन्नल् - इन्सा-न ख़ुलि-क हलूअन् (१९) इज़ा मस्सहुश्शर्रु जज़ूआ (२०) व इज़ा मस्सहुल् ख़ै-रु मनूआ (२१) इल्लल् - मुसल्लीन (२२) अल्लज़ी-न हुम् अला सलातिहिम् दाइमून (२३) वल्लज़ी - न फी अम्वालिहिम् हक़्क़ुम् - मअ् - लूमुल - (२४) लिस्साइलि वल्महरूम (२५) वल्लज़ी - न युसद्दिकू-न बियौमिद्दीनि (२६) वल्लज़ी - न हुम् मिन् अज़ाबि रब्बिहिम् मुश्फिकून (२७)

★रु २/६ आ १५

गारो के लिए नसीहत है। (४८) और हम जानते है कि तुम में से कुछ इस को झुठलाने वाले है। (४९) साथ ही यह काफिरो के लिए हसरत (की वजह) है। (५०) और कुछ शक नही कि यह सच बात यक़ीन के काबिल है। (५१) सो तुम अपने परवरदिगारे अज्ज़ व जल्ल के नाम की तस्बीह करते रहो। (५२) ★

७० सूरः मआरिज ७९

सूर मआरिज मक्की है, इस मे ४४ आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

एक तलब करने वाले ने अज़ाब तलब किया, जो नाजिल हो कर रहेगा, (१) (यानी) काफिरो पर (और) कोई उस को टाल न सकेगा। (२) (और वह) दर्जो के मालिक खुदा[1] की तरफ से (नाज़िल होगा)। (३) जिस की तरफ रूहुल अमीन और फरिश्ते चढते हैं (और) उस दिन (नाजिल होगा) जिस का अन्दाज़ा पचास हज़ार वर्ष का होगा। (४) (तो तुम काफिरो की बातो को) हौसले के साथ बर्दाश्त करते रहो।[2] (५) वह उन लोगो की निगाहो मे दूर है, (६) और हमारी नज़र मे करीब, (७) जिस दिन आसमान ऐसा हो जाएगा और पिघला हुआ तांबा, (८) और पहाड (ऐसे), जैसे (धुकी हुई) रंगीन ऊन। (९) और कोई दोस्त किसी दोस्त का पूछने वाला न होगा, (१०) (हालांकि) एक दूसरे को सामने देख रहे होगे, (उस दिन) गुनाहगार ख्वाहिश करेगा कि किसी तरह उस दिन के अजाब के बदले मे (सब कुछ) दे दे, (यानी) अपने बेटे, (११) और अपनी बीवी और अपने भाई, (१२) और अपना खानदान, जिस मे वह रहता था। (१३) और जितने आदमी जमीन पर है (गरज) सब (कुछ) दे दे और अपने आप को अज़ाब से छुडा ले। (१४) (लेकिन) ऐसा हरगिज नही होगा, वह भडकती हुई आग है, (१५) खाल उधेड डालने वाली, (१६) उन लोगो को अपनी तरफ बुलाएगी, जिन्हो ने (दीने हक से) एराज़ किया और मुह फेर लिया, (१७) और (माल) जमा किया और बन्द कर रखा। (१८) कुछ शक नही कि इसान कम हौसला पैदा हुआ है। (१९) जब उसे तक्लीफ पहुंचती है, तो घबरा उठता है। (२०) और जब आराम हासिल होता है, तो बखील बन जाता है, (२१) मगर नमाज गुज़ार, (२२) जो नमाज़ की पाबन्दी करते, (और बिला-नागा पढते) है, (२३) और जिन के माल मे हिस्सा मुकर्रर है, (२४) (यानी) मागने वाले का और न मागने वाले का, (२५) और जो बदले के दिन को सच समझते है, (२६) और जो अपने परवरदिगार के अजाब से खौफ रखते

---

१ दर्जो मे मुराद आसमान हैं, चूकि वे दर्जा-ब-दर्जा ऊपर तले हैं, इस लिए उन के दर्जे फरमाया।

२ सब्रे जमील उस सब्र को कहते है जिस मे चीखना-चिल्लाना, सर पटकना वगैरह न हो, इसी लिए इस का तर्जुमा हौसले के साथ किया है।

★रु २/६ आ १५

इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बिहिम् ग़ैरु मअ्मून (२८) वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून ॥ (२९) इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन ج (३०) फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़उलाइ-क हुमुल्आ़दून ج (३१) वल्लज़ी - न हुम् लि - अमानाति - हिम् व अ़ह्दिहिम् राऊन ج (३२) वल्लज़ी-न हुम् बि-शहादाति - हिम् क़ाइमून قلے (३३) वल्लज़ी-न हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून ط (३४) उलाइ - क फ़ी जन्नातिम् - मुक्रमून ط ★ (३५) फ़मालिल्लज़ी-न क-फ़रू कि-ब-ल-क मुह्तिअ़ीन ॥ (३६) अ़निल् - यमीनि व अ़निश्शिमालि अ़िज़ीन (३७) अ-यत्मअु कुल्लुम्रिइम् - मिन्हुम् अंय्युद्ख़-ल जन्न - त नअ़ीम ॥ (३८) कल्ला ط इन्ना ख़-लक़्नाहुम् मिम्मा यअ्-लमून (३९) फ़ला उक्सिमु बिरब्बिल् - मशारिक़ि वलमग़ारिबि इन्ना ल - क़ादिरून ॥ (४०) अ़ला अन् नुबद्दि - ल ख़ैरम् - मिन्हुम् ॥ व मा नह्नु बिमस्बूक़ीन (४१) फ़-ज़र्हुम् यख़ूज़ू व यल्अ़बू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यूअ़दून ॥ (४२) यौ - म यख़् - रुजू - न मिनल् - अज्दासि सिराअ़न् क-अन्नहुम् इला नुसुबिंय्यूफ़िज़ून ॥ (४३) ख़ाशि-अ-तन् अब् - सारुहुम् तर् - हक़ुहुम् ज़िल्लतुन् ط ज़ालिकल् - यौमुल्लज़ी कानू यू-अ़दून ★ (४४)

إن عذاب ربهم غير مأمون ۝ والذين هم لفروجهم حافظون ۝
إلا على أزواجهم أو ما ملكت أيمانهم فإنهم غير ملومين ۝
فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم العادون ۝ والذين هم
لأماناتهم وعهدهم راعون ۝ والذين هم بشهاداتهم قائمون ۝
والذين هم على صلاتهم يحافظون ۝ أولئك في جنات
مكرمون ۝ فمال الذين كفروا قبلك مهطعين ۝ عن اليمين
وعن الشمال عزين ۝ أيطمع كل امرئ منهم أن يدخل جنة
نعيم ۝ كلا إنا خلقناهم مما يعلمون ۝ فلا أقسم برب
المشارق والمغارب إنا لقادرون ۝ على أن نبدل خيرا منهم
وما نحن بمسبوقين ۝ فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا
يومهم الذي يوعدون ۝ يوم يخرجون من الأجداث سراعا
كأنهم إلى نصب يوفضون ۝ خاشعة أبصارهم ترهقهم
ذلة ذلك اليوم الذي كانوا يوعدون ۝

سورة نوح مكية وهي ثمان وعشرون آية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

إنا أرسلنا نوحا إلى قومه أن أنذر قومك من قبل أن
يأتيهم عذاب أليم ۝ قال يا قوم إني لكم نذير مبين ۝ أن

७१ सूरतु नूहिन् ७१

(मक्की) इस सूरः मे अ़रबी के ९७४ अक्षर, २३१ शब्द, २८ आयतें और २ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इन्ना अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही अन् अन्ज़िर् क़ौ-म-क मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति - यहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (१) क़ा-ल या क़ौमि इन्नी लकुम् नज़ीरुम् - मुबीन ॥ (२)

★रु १/७ आ ३५ ★रु २/८ आ ६

है। (२७) बेशक उन के परवरदिगार का अज़ाब है ही ऐसा कि उस से बे-खौफ न हुआ जाए, (२८) और जो अपनी शर्मगाहो की हिफाजत करते है, (२९) मगर अपनी बीवियो या लौंडियो से कि (उन के पास जाने पर) उन्हे कुछ मलामत नही, (३०) और जो लोग इन के सिवा और चाहते हो, वे हद से निकल जाने वाले है, (३१) और जो अपनी अमानतो और इकरारो का ध्यान करते है, (३२) और जो अपनी गवाहियो पर कायम रहते हैं, (३३) और जो अपनी नमाज की खबर रखते है, (३४) यही लोग बहिश्त के बागो में इज्ज़त व इकराम से होगे। (३५)★

तो उन काफिरो को क्या हुआ है कि तुम्हारी तरफ दौडे चले आते है, (३६) (और) दाए-बाए से गिरोह-गिरोह हो कर (जमा होते) जाते है। (३७) क्या उन मे से हर शख्स यह उम्मीद रखता है कि नेमत के बाग मे दाखिल किया जाएगा ? (३८) हरगिज़ नही ! हम ने उन को उस चीज़ से पैदा किया है, जिसे वे जानते है, (३९) हमे मश्रिको और मग्रिबो के मालिक की कसम ! कि हम ताकत रखते हैं। (४०) (यानी) इस बात (की कुदरत है) कि उन से बेहतर लोग बदल लाए और हम आजिज़ नही हैं। (४१) तो (ऐ पैगम्बर !) उन को बातिल मे पडे रहने और खेल लेने दो, यहा तक कि जिस दिन का उन से वायदा किया जाता है, वह उन के सामने आ मौजूद हो। (४२) उस दिन ये कब्रो से निकल कर (इस तरह) दौडेंगे जैसे (शिकारी) शिकार के जाल की तरफ दौडते हैं। (४३) उन की आखे झुक रही होगी और ज़िल्लत उन पर छा रही होगी। यही वह दिन है जिस का उन से वायदा किया जाता था। (४४)★

७१ सूर नूह ७१

सूर नूह मक्की है। इस मे २८ आयते और दो रुकूअ है।

शुरु खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने नूह को उन की कौम की तरफ भेजा कि इस से पहले कि उन पर दर्द देने वाला अज़ाब वाकेअ हो, अपनी कौम को हिदायत कर दो। (१) उन्हो ने कहा कि भाइयो ! मैं तुम को खुले तौर

★रु १/७ आ ३५ ★रु २/८ आ ९

अनिअ़् - बुदुल्ला - ह वत्तकूहु व अतीऊ़न (३) यग्फ़िर लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख्खि़र् - कुम् इला अ - जलिम् - मुसम्मन् इन् - न अ-ज-लल्लाहि इज़ा जा-अ ला यु-अख्खरु लौ कुन्तुम तअ्-लमून (४) क़ा-ल रब्बि इन्नी दऔतु क़ौमी लैलव्-व नहारन् (५) फ - लम् यजिद्हुम् दुआई इल्ला फ़िरारा (६) व इन्नी कुल्लमा दऔतुहुम् लि-तग्-फि-र लहुम् ज-अलू असाबि-अहुम् फ़ी आज़ानिहिम् वस्तग्शौ सिया-बहुम् व असर्रू वस्तक्बरुस्तिक्बारा (७) सुम्-म इन्नी दऔतुहुम् जिहारन् (८) सुम्-म इन्नी अअ्-लन्तु लहुम् व अस् - रर्तु लहुम् इस्-रारा (९) फ़कुल्तुस्तग्फिरू रब्बकुम् इन्नहू का - न गफ़्फारय् - (१०) -युर्सिलिस्समा - अ अलैकुम् मिद्रारव्- (११) -व युम्दिद्कुम् बि-अम्वालिव्-व बनी - न व यज्-अल् लकुम् जन्नातिव्-व यज्-अल् लकुम् अन्हारा (१२) मा लकुम् ला तर्जू-न लिल्लाहि वक़ारा (१३) व क़द् ख़-ल-ककुम् अत्वारा (१४) अ-लम् तरौ कै-फ़ ख़-ल-कल्लाहु सब्-अ समावातिन् तिबाक़ा (१५) व ज-अ-लल् - क़-म-र फ़ीहिन्-न नूरव्-व ज-अ-लश्शम्-स सिराजा (१६) वल्लाहु अम्ब-त-कुम् मिनल्अर्ज़ि नबाता (१७) सुम् - म युईदुकुम् फ़ीहा व युख्रिजुकुम् इख्राजा (१८) वल्लाहु ज-अ-ल लकुमुल्अर्-ज़ बिसाता (१९) लितस्लुकू मिन्हा सुबुलन् फिजाजा ★ (२०) का-ल नूहुर्रब्बि इन्नहुम् असौनी वत्त-बअू मल्लम् यजिद्हु मालुहू व व-ल-दुहू इल्ला ख़सारा (२१) व म-करू मक्रन् कुब्बारा (२२) व क़ालू ला त-ज़-रुन्-न आलि-ह-तकुम् व ला त-ज़-रुन्-न वद्दव्-व ला सुवाअंव् - व ला यगू - स व यऊ़ - क व नस्रा (२३) व क़द् अज़ल्लू कसीरन् व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी - न इल्ला ज़लाला (२४)

तبارك الذي ٢٩ ٧٥٩ سورة نوح ٧١

اعبدوا الله واتقوه واطيعون ۝ يغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم
الى اجل مسمى ان اجل الله اذا جاء لا يؤخر لو كنتم
تعلمون ۝ قال رب اني دعوت قومي ليلا ونهارا ۝ فلم يزدهم
دعاءي الا فرارا ۝ واني كلما دعوتهم لتغفر لهم جعلوا اصابعهم
في اذانهم واستغشوا ثيابهم واصروا واستكبروا استكبارا ۝
ثم اني دعوتهم جهارا ۝ ثم اني اعلنت لهم واسررت لهم
اسرارا ۝ فقلت استغفروا ربكم انه كان غفارا ۝ يرسل السماء
عليكم مدرارا ۝ ويمددكم باموال وبنين ويجعل لكم جنت و
يجعل لكم انهرا ۝ ما لكم لا ترجون لله وقارا ۝ وقد خلقكم
اطوارا ۝ الم تروا كيف خلق الله سبع سموت طباقا ۝ وجعل
القمر فيهن نورا وجعل الشمس سراجا ۝ والله انبتكم من
الارض نباتا ۝ ثم يعيدكم فيها ويخرجكم اخراجا ۝ والله
جعل لكم الارض بساطا ۝ لتسلكوا منها سبلا فجاجا ۝ قال
نوح رب انهم عصوني واتبعوا من لم يزده ماله وولده الا
خسارا ۝ ومكروا مكرا كبارا ۝ وقالوا لا تذرن الهتكم ولا
تذرن ودا ولا سواعا ولا يغوث ويعوق ونسرا ۝ وقد اضلوا
كثيرا ولا تزد الظلمين الا ضللا ۝ مما خطيئتهم اغرقوا

منزل

व लाज़िम ★रु १/१ आ २०

पर नसीहत करता हू, (२) कि खुदा की इबादत करो और उससे डरो और मेरा कहा मानो, (३) वह तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और (मौत के) मुकर्रर वक्त तक तुम को मोहलत अता करेगा। जब खुदा का मुकर्रर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो देर नही होती, काश तुम जानते होते। (४) जब लोगों ने न माना, तो (नूह ने) खुदा से अर्ज की कि परवरदिगार! मैं अपनी कौम को रात-दिन बुलाता रहा, (५) लेकिन मेरे बुलाने से वे और ज़्यादा भागते रहे। (६) जब-जब मैं ने उन को बुलाया कि (तौबा करें और) तू उन को माफ फरमाए, तो उन्हो ने अपने कानो मे उगलिया दे ली और कपडे ओढ लिए और अड गये और अकड बैठे। (७) फिर मैं उन को खुले तौर पर भी बुलाता रहा, (८) और खुले और छिपे हर तरह समझाता रहा, (९) और कहा कि अपने परवरदिगार से माफी मागो कि वह बडा माफ करने वाला है, (१०) वह तुम पर आसमान से मेह बरसाएगा, (११) और माल और बेटो मे तुम्हारी मदद फरमाएगा और तुम्हे बाग अता करेगा और (उन मे) तुम्हारे लिए नहरे बहा देगा। (१२) तुम को क्या हुआ है कि तुम खुदा की अज्मत का एतकाद नही रखते। (१३) हालाकि उसने तुमको तरह-तरह (की हालतो) का पैदा किया है। (१४) क्या तुमने नही देखा कि खुदा ने सात आसमान कैसे ऊपर-तले बनाए है, (१५) और चाद को उन मे (ज़मीन का) नूर बनाया है और सूरज को चिराग ठहराया है, (१६) और खुदा ही ने तुम को जमीन से पैदा किया है, (१७) फिर उसी मे तुम्हे लौटा देगा और (उसी से) तुम को निकाल खड़ा करेगा, (१८) और खुदा ही ने जमीन को तुम्हारे लिए फर्श बनाया, (१९) ताकि उस के बडे-बडे कुशादा रास्तो मे चलो-फिरो (२०)। ★

(इस के बाद) नूह ने अर्ज़ की कि मेरे परवरदिगार! ये लोग मेरे कहने पर नही चले और ऐसो के ताबेअ हुए हैं, जिन को उन के माल और औलाद ने नुक्सान के सिवा कुछ फायदा नही दिया। (२१) और वे बडी-बडी चाले चले, (२२) और कहने लगे कि अपने माबूदो को हरगिज न छोड़ना और वद्द और सुवाअ और यगूस और यअूक और नस्र[1] को कभी न छोडना। (२३) (परवरदिगार!) उन्होने बहुत लोगो को गुमराह कर दिया है, तो तू उन को और गुमराह कर

---

१ वद्द और सुवआ और यगूस और यअूक और नस्र बुतो के नाम हैं।

व लाज़िम ★रु १/९ आ २०

मिम्मा ख़तीआतिहिम उग़्रिक़ू फ़-उद्ख़िलू नारन् ॥ फ़-लम् यजिदू लहुम् मिन दूनिल्लाहि अन्सारा (२५) व क़ा-ल नूहुर्रब्बि ला त-ज़र् अ-लल्अर्ज़ि मिनल्-काफ़िरी-न दय्यारा (२६) इन्न-क इन् त-ज़र्हुम् युज़िल्लू अिबा-द-क व ला यलिदू इल्ला फ़ाजिरन् कफ़्फ़ारा (२७) रब्बिग़्फ़िर्ली व लिवालिदय्-य व लिमन् द-ख़-ल बैति-य मुअ्मिनंव्-व लिल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति ↄ व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला तबारा ★ (२८) ●

७२ सूरतुल्-जिन्नि ४०

(मक्की) इस सूर मे अ़रबी के ११२६ अक्षर, २८७ शब्द, २८ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

कुल ऊहि-य इलय्-य अन्नहुस्त-म-अ न-फ़रुम्-मिनल्-जिन्नि फ़-क़ालू इन्ना समिअ्ना क़ुर्-आनन् अ़-ज-बय्- ॥ (१) -यह्दी इलर्रुश्दि फ़-आमन्ना बिही ↄ व लन् नुश्-रि-क बिरब्बिना अ-ह्-दा ॥ (२) व अन्नहू तआ़ला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज़ साहि-ब-तंव्-व ला व-ल-दा ॥ (३) व अन्नहू का-न

فَادْخِلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ۝ وَقَالَ
نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۝ إِنَّكَ
إِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝ رَبِّ
اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝

سُورَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا
عَجَبًا ۝ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝ وَ
أَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ
سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَنْ لَنْ تَقُولَ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ
مِنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ
يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۝ وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا
شَدِيدًا وَشُهُبًا ۝ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ يَسْتَمِعِ
الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَصَدًا ۝ وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَنْ
فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا

यक़ूलु सफ़ीहुना अ़-लल्लाहि श-त़-ता ॥ (४) व अन्ना ज़-नन्ना अल्लन् तक़ूलल्-इन्सु वल्जिन्नु अ़-लल्लाहि कज़िबा ॥ (५) व अन्नहु का-न रिजालुम्-मिनल्-इन्सि य-ऊज़ू-न बिरिजालिम-मिनल्-जिन्नि फ़ज़ादू-हुम् र-ह-क़ा ॥ (६) व अन्नहुम् ज़न्नू कमा ज़-नन्तुम् अल्लय्यब्-अ-सल्लाहु अ-ह्-दा ॥ (७) व अन्ना ल-मस्-नस्समा-अ फ़-व-जद्नाहा मुलि-अत् ह-र-सन् शदीदंव्-व शुहुबा ॥ (८) व अन्ना कुन्ना नक्-अुदु मिन्हा मक़ाअि-द लिस्सम्अि ↄ फ़मय्यस्तमिअिल्-आ-न यजिद् लहू शिहाबर्-र-स-दा ॥ (९) व अन्ना ला नद्री अ-शर्रुन् उरी-द बिमन् फ़िल्अर्ज़ि अम् अरा-द बिहिम् रब्बुहुम् र-श-दा ॥ (१०) व अन्ना मिन्नस्सालिहू-न व मिन्ना दू-न ज़ालि-क कुन्ना तराइ-क क़ि-द-दा ॥ (११)

★रु २/१० आ ८ ● नि १/२

कर दे। (२४) (आखिर) वे अपने गुनाहो की वजह मे (पहले) डुबा दिए गए, फिर आग मे डाल दिये गये, तो उन्हो ने खुदा के सिवा किसी को अपना मददगार न पाया। (२५) और (फिर) नूह ने (यह) दुआ की कि मेरे परवरदिगार किसी काफिर को धरती पर बसता न रहने दे। (२६) अगर तू उन को रहने देगा, तो तेरे बन्दो को गुमराह करेंगे और उन से जो औलाद होगी, वह भी बद-कार और ना-शुक्रगुजार होगी। (२७) ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझ को और मेरे मा-बाप को और जो ईमान ला कर मेरे घर मे आए उस को और तमाम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतो को माफ फरमा और जालिम लोगो के लिए और ज्यादा तबाही बढा। (२८) ★ ●

७२ सूरः जिन्न ४०

सूर: जिन्न मक्की है, इस मे २८ आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैगम्बर ! लोगो से) कह दो कि मेरे पास वह्य आयी है कि जिन्नो की एक जमाअत ने (इस किताब को) सुना तो कहने लगे कि हम ने एक अजीब कुरआन सुना, (१) जो भलाई का रास्ता बताता है, सो हम उस पर ईमान ले आए और हम अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक नही बनाएंगे। (२) और यह कि हमारे परवरदिगार की (शान की) बडाई बहुत बडी है, वह न बीवी रखता है न औलाद, (३) और यह कि हममे से कुछ बेवकूफ खुदा के बारे मे झूठ गढते है, (४) और हमारा (यह) ख्याल था कि इन्सान और जिन्न खुदा के बारे मे झूठ नही बोलते, (५) और यह कि कुछ आदम की औलाद कुछ जिन्नो की पनाह पकडा करती थी (इस से) उन की सरकशी और बढ गयी थी। (६) और यह कि उन का भी यही एतकाद था, जिस तरह तुम्हारा था कि खुदा किसी को नही जिलाएगा। (७) और यह कि हमने आसमान को टटोला, तो उस को मजबूत चौकीदारो और अगारो से भरा हुआ पाया, (८) और यह कि पहले हम वहा बहुत सी जगहो मे (खबरे) सुनने के लिए बैठा करते थे। अब कोई सुनना चाहे तो अपने लिए अगारा तैयार पाए, (९) और यह कि हमे मालूम नही कि इस से जमीन वालो के हक मे बुराई मक्सूद है या उन के परवरदिगार ने उन की भलाई का इरादा फरमाया है। (१०) और यह कि हम मे कोई नेक है और

व अन्ना ज़-नन्ना अल्लन् नुअ्जिजल्ला-ह फिल्अर्जि व लन् नुअ्जि-जहू ह-र-बंव् ॥
(१२) व अन्ना लम्मा समिअ्-नल् - हुदा आमन्ना बिही ط फ़मंय्युअ्मिम् -
बिरब्बिही फ़ला यख़ाफ़ु बख़्संव् - व ला र - ह - क़ा ॥ (१३) व अन्ना मिन्नल् -
मुस्लिमू - न व मिन्नल - क़ासितून ط फ़-मन् अस्-ल-म फ़-उलाइ - क त-हर्रौ र-श-दा
(१४) व अम्मल् - क़ासितू-न फ-कानू लि-ज - हन्न - म ह-त-बंव् - ॥ (१५) -व अल्लविस्तक़ामू अ़लत्तरीक़ति ल - अस्क़ैनाहुम् माअन् ग-द-क़ल ॥ (१६) लिनफ़्ति-नहुम् फ़ीहि ط व मंय्युअ्-रिज् अ़न् जिक्रि रब्बिही यस्लुक्हु अ़ज़ाबन् स-अ-दंव् - (१७) व अन्नल् - मसाजि-द लिल्लाहि फला तद्अू म-अ़ल्लाहि अ-ह-दा ॥ (१८) व अन्नहू लम्मा का-म अ़ब्दुल्लाहि यद्अूहु कादू यकूनू-न अ़लैहि लि-ब-दा ط ★ (१९) कुल् इन्नमा अद्अू रब्बी व ला उश्रिकु बिही अ-ह-दा (२०) क़ुल इन्नी ला अम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व् ला र-श-दा (२१) क़ुल् इन्नी लंय्युजीरनी मिनल्लाहि अ-हदुव् ॥- व
लन् अजि-द मिन् दूनिही मुल्त-ह-दा ॥ (२२) इल्ला बलाग़म् - मिनल्लाहि
व रिसालातिही ط व मय्यअ्-सिल्ला-ह व रसूलहू फ-इन्-न लहू ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न
फ़ीहा अ-ब-दा ط (२३) हत्ता इज़ा रऔ मा यू-अदू-न फ-स-यअ्-लमू-न मन्
अज़्अफ़ु नासिरंव्-व अक़ल्लु अ-द-दा (२४) कुल् इन् अद्री अ-क़रीबुम्
मा तूअदू-न अम् यज्अलु लहू रब्बी अ-म-दा (२५) आलिमुल्-ग़ैबि फ़ला
युज़्हिरु अ़ला ग़ैबिही अ-ह-दन् ॥ (२६) इल्ला मनिर्तजा मिर्रसूलिन्
फइन्नहू यस्लुकु मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही र - स - दल्
(२७) लियअ्-ल-म अन् क़द् अब् - लग़ू रिसालाति रब्बिहिम् व
अहा-त बिमा लदैहिम् व अह्-सा कुल्-ल शैइन् अ-द-दा ★(२८

دون ذلك كنا طرائق قددا ۝ وانا ظننا ان لن نعجز الله في
الارض ولن نعجزه هربا ۝ وانا لما سمعنا الهدى امنا به فمن يؤمن
بربه فلا يخاف بخسا ولا رهقا ۝ وانا منا المسلمون ومنا
القسطون فمن اسلم فاولئك تحروا رشدا ۝ واما القسطون
فكانوا لجهنم حطبا ۝ وان لو استقاموا على الطريقة لاسقينهم
ماء غدقا ۝ لنفتنهم فيه ومن يعرض عن ذكر ربه يسلكه
عذابا صعدا ۝ وان المسجد لله فلا تدعوا مع الله احدا ۝ وانه
لما قام عبد الله يدعوه كادوا يكونون عليه لبدا ۝ قل انما
ادعوا ربي ولا اشرك به احدا ۝ قل اني لا املك لكم ضرا ولا
رشدا ۝ قل اني لن يجيرني من الله احد ولن اجد من
دونه ملتحدا ۝ الا بلغا من الله ورسلته ومن يعص الله
ورسوله فان له نار جهنم خلدين فيها ابدا ۝ حتى اذا راوا ما
يوعدون فسيعلمون من اضعف ناصرا واقل عددا ۝ قل ان
ادري اقريب ما توعدون ام يجعل له ربي امدا ۝ علم الغيب
فلا يظهر على غيبه احدا ۝ الا من ارتضى من رسول فانه
يسلك من بين يديه ومن خلفه رصدا ۝ ليعلم ان قد ابلغوا
رسلت ربهم واحاط بما لديهم واحصى كل شيء عددا ۝

कोई और तरह के, हमारे कई तरह के मजहब है। (११) और यह कि हमने यकीन कर लिया है कि हम जमीन मे (चाहे कही हो) खुदा को हरा नही सकते और न भाग कर उस को थका सकते हैं। (१२) और जब हमने हिदायत (की किताब) सुनी, उस पर ईमान ले आए तो जो शख्स अपने परवरदिगार पर ईमान लाता है, उस को न नुक्सान का डर है, न जुल्म का। (१३) और यह कि हम मे कुछ फरमाबरदार हैं और कुछ (ना-फरमान) गुनाहगार है, तो जो फरमाबरदार हुए, वे सीधे रास्ते पर चले। (१४) और जो गुनाहगार हुए, वे दोज़ख का ईंधन बने। (१५) और (ऐ पैगम्बर !) यह (भी उन से कह दो) कि अगर ये लोग सीधे रास्ते पर रहते तो हम उन के पीने को बहुत-सा पानी देते, (१६) ताकि इस से उन की आजमाइश करे और जो शख्स अपने परवरदिगार की याद से मुह फेरेगा, वह उस को सख्त अजाब मे दाखिल करेगा। (१७) और यह कि मस्जिदे (ख़ास) खुदा की हैं, तो खुदा के साथ किसी और की इबादत न करो। (१८) और जब खुदा के बन्दे (मुहम्मद) उस की इबादत को खडे हुए तो काफिर उन के चारो तरफ भीड कर लेने को थे। (१९) ★

कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार ही की इबादत करता हू और (२०) यह भी कह दो कि मैं तुम्हारे हक मे नुक्सान और नफे का कुछ अख्तियार नही रखता। (२१) यह भी कह दो कि खुदा (के अजाब) से मुझे कोई पनाह नही दे सकता और मैं उस के सिवा कही पनाह की जगह नहीं देखता। (२२) हा, खुदा की (तरफ से हुक्मो का) और उस के पैगामो का पहुचा देना (ही मेरे जिम्मे है) और जो शख्स खुदा और उस के पैगम्बर की ना-फरमानी करेगा तो ऐसो के लिए जहन्नम की आग है, हमेशा-हमेशा उस मे रहेंगे, (२३) यहा तक कि जब ये लोग वह (दिन) देख लेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, तब उन को मालूम हो जाएगा कि मददगार किस के कमजोर और तायदाद किन की थोडी है। (२४) कह दो कि जिस (दिन) का तुम से वायदा किया जाता है, मै नही जानता कि वह (बहुत) करीब (आने वाला) है या मेरे परवरदिगार ने उस की मुद्दत लम्बी कर दी है। (२५) (वही) गैब (की बात) जानने वाला है और किसी पर अपने गैब को जाहिर नही करता। (२६) हा, जिस पैगम्बर को पसन्द फरमाए तो उस (को गैब की बाते बता देता और उस) के आगे और पीछे निगहबान मुकर्रर कर देता है, (२७) ताकि मालूम फरमाए कि उन्हो ने अपने परवरदिगार के पैगाम पहुचा दिए हैं और (यो तो) उस ने उन की सब चीजो को हर तरफ से काबू कर रखा है और एक-एक चीज गिन रखी है। (२८) ★

★रु १/११ आ १९ ★रु. २/१२ आ ९

७३ सूरतुल्-मुज़्ज़म्मिलि ३

(मक्की) इस सूर मे अरवी के ८६४ अक्षर, २०० शब्द, २० आयते और २ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

या अय्युहल् - मुज्जम्मिलु (१) कुमिल्लै - ल इल्ला कलीलन् -(२) निस्फ़हू अविन्कुस़ मिन्हु कलीलन् (३) औ जिद् अलैहि व रत्तिलिल् - कुर्आ-न तर्तीला (४) इन्ना सनुल्की अलै-क क़ौलन् सकीला (५) इन्-न नाशि-अ-तल्लैलि हि-य अशद्दु वत्-अव्-व अक्वमु क़ीला (६) इन्-न ल-क फ़िन्नहारि सब् - हन् तवीला (७) वज्कुरिस्-म रब्बि-क व त-वत्तल् इलैहि तब्तीला (८) रब्बुल् - मश्रिकि वलमग्रिबि ला इला-ह इल्ला हु-व फत्तखिज्हु वकीला (९) वस्बिर अला मा यकूलू-न वह्जुर्हुम् हज्-रन् जमीला (१०) व ज़र्नी वल्-मुकज्जिबी-न उलिन्नअ्-मति व महिह्ल्हुम् क़लीला (११) इन्-न लदैना अन्कालव्-व जहीमंव् - (१२) व तआमन् जागुस्सतिंव्-व अज़ाबन् अलीमा (१३) यौ-म तर्जुफुल्अर्जु वल्जिबालु व कानतिल् - जिबालु कसीबम् - महीला (१४) इन्ना अर्सल्ना इलैकुम् रसूलन् शाहिदन् अलैकुम् कमा अर्सल्ना इला फिर्औ-न रसूला (१५) फ-अ़सा फ़िर्औनुर् - रसू-ल फ-अ-खज्नाहु अख्जव्वबीला (१६) फ़-कै-फ़ तत्तकू-न इन् क-फ़र्तुम् यौमंय्यज-अलुल् -विल्दा-न शी-ब-नि- (१७) -स्समाउ मुन्फतिरुम् - बिही का - न वअ्दुहू मफ्अूला (१८) इन्-न हाजिही तज्कि-रतुन् फ़-मन् शा-अत्त-ख़-ज इला रब्बिही सबीला ★ (१९)

تبارك الذي ٢٩ — المزمل

سورة المزمل مكية وهي عشرون آية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمن الرحيم
يا أيها المزمل ۝ قم الليل إلا قليلا ۝ نصفه أو انقص منه
قليلا ۝ أو زد عليه ورتل القرآن ترتيلا ۝ إنا سنلقي عليك قولا
ثقيلا ۝ إن ناشئة الليل هي أشد وطأ وأقوم قيلا ۝ إن لك في
النهار سبحا طويلا ۝ واذكر اسم ربك وتبتل إليه تبتيلا ۝ رب
المشرق والمغرب لا إله إلا هو فاتخذه وكيلا ۝ واصبر على ما
يقولون واهجرهم هجرا جميلا ۝ وذرني والمكذبين أولي النعمة
ومهلهم قليلا ۝ إن لدينا أنكالا وجحيما ۝ وطعاما ذا غصة
وعذابا أليما ۝ يوم ترجف الأرض والجبال وكانت الجبال
كثيبا مهيلا ۝ إنا أرسلنا إليكم رسولا شاهدا عليكم كما
أرسلنا إلى فرعون رسولا ۝ فعصى فرعون الرسول فأخذناه أخذا
وبيلا ۝ فكيف تتقون إن كفرتم يوما يجعل الولدان شيبا ۝
السماء منفطر به كان وعده مفعولا ۝ إن هذه تذكرة فمن
شاء اتخذ إلى ربه سبيلا ۝ إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى
من ثلثي الليل ونصفه وثلثه وطائفة من الذين معك
والله يقدر الليل والنهار علم أن لن تحصوه فتاب عليكم فاقرءوا

★रु १/१३ आ १९

७३ सूरः मुज़्ज़म्मिल ३

सूर. मुज्जम्मिल मक्की है, इस मे २० आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ (मुहम्मद !) जो कपडे मे लपट रहे हो, (१) रात को कियाम किया करो, मगर थोडी-सी रात[1] (२) यानी आधी रात या उस से कुछ कम, (३) या कुछ ज्यादा और कुरआन को ठहर-ठहर कर पढा करो। (४) हम बहुत जल्द तुम पर एक भारी फरमान नाजिल करेगे। (५) कुछ शक नही कि रात का उठना (हैवानी नफ्स को) सख्त पामाल करता है और उस वक्त ज़िक्र भी खूब दुरुस्त होता है। (६) दिन के वक्त तो तुम्हे और बहुत से शुग्ल (काम) होते हैं। (७) तो अपने परवरदिगार के नाम का ज़िक्र करो और हर तरफ से बे-ताल्लुक हो कर उसी की तरफ मुतवज्जह हो जाओ। (८) (वही) पूरब और पश्चिम का मालिक (है और) उस के सिवा कोई माबूद नही, तो उसी को अपना कारसाज़ बनाओ। (९) और जो-जो (दिल दुखाने वाली) बाते ये लोग कहते है, उन को सहते रहो और अच्छे तरीके से उन से किनारा अख्तियार कर लो। (१०) और मुझे उन झुठलाने वालो से जो दौलतमंद हैं, समझ लेने दो[2] और उन को थोडी-सी मोहलत दो। (११) कुछ शक नही कि हमारे पास बेडिया हैं और भडकती आग है, (१२) और गुलूगीर[3] खाना है और दर्द देने वाला अज़ाब है, (१३) जिस दिन जमीन और पहाड कापने लगे और पहाड (ऐसे भुरभुरे, गोया) रेत के टीले हो जाए। (१४) (ऐ मक्का वालो!) जिस तरह हम ने फ़िऔन के पास (मूसा को) पैगम्बर (बना कर) भेजा था, (उसी तरह) तुम्हारे पास भी (मुहम्मद) रसूल भेजे है, जो तुम्हारे मुकाबले मे गवाह होगे। (१५) सो फ़िऔन ने (हमारे) पैगम्बर का कहा न माना, तो हम ने उस को बड़े बवाल मे पकड लिया। (१६) अगर तुम भी (उन पैगम्बर को) न मानोगे तो उस दिन से कैसे बचोगे, जो बच्चो को बूढा कर देगा,[4] (१७) (और) जिस मे आसमान फट जाएगा। यह उस का वायदा (पूरा) हो कर रहेगा। (१८) यह (कुरआन) तो नसीहत है, सो जो चाहे अपने परवरदिगार तक (पहुचने का) रास्ता अख्तियार कर ले। (१९) ★

---

१ रात को खडा रह यानी नमाज़ पढो रात को अव्वल। दीन मे नमाज़ रात ही की फर्ज हुई, मगर किसी रात न हो तो माफ है।

२ लफ्ज़ो का मतलब तो यह है कि मुझे और इन झुठलाने वालो को जो दौलतमंद हैं छोड दो, मगर हम ने मुहावरे का ख्याल किया है।

३ हलक़ मे फसने वाला, जो न अन्दर जाए, न बाहर जाए।

४ इस आयत के यह मानी भी हैं कि अगर तुम उस दिन को न मानोगे जो बच्चो को बूढा कर देगा, तो कैसे बचोगे।

★रु १/१३ आ १९

इन्-न रब्ब-क यअ्-लमु अन्न-क तकूमु अद्ना मिन् सुलुसयिल्लैलि व निस-फ़हू व सुलु-सहू व ता-इफ़तुम्-मिनल्लज़ी-न म-अ्-क वल्लाहु युकद्दिरुल्लै-ल वन्नहा-र अलि-म अल्लन् तुह्सूहु फ़ता-ब अलैकुम् फ़क्-रऊ मा त-यस्स-र मिनल्-कुर्आनि अलि-म अन् स-यकूनु मिन्कुम् मर्-ज़ा व आखरू-न यज़्रिबू-न फ़िल्अर्ज़ि यब्तग़ू-न मिन् फ़ज़्-लिल्लाहि व आखरू-न युक़ातिलू-न फी सबी-लिल्लाहि फ़क्-रऊ मा त-यस्स-र मिन्हु व अक़ीमुस्सला-त व आतुज्जका-त व अक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्-ज़न् ह-स-नन् व मा तुकद्दिमू लि-अन्-फ़ुसि-कुम् मिन् खैरिन् तजिदूहु अिन्दल्लाहि हु-व खैरंव्-व अअ्-ज़-म अज्-रन् वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम ★ (२०)

مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ
فِي الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ
قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ
خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتٌّ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَاَنْذِرْ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ
وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ فَاِذَا نُقِرَ
فِي النَّاقُوْرِ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ
ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا وَّبَنِيْنَ
شُهُوْدًا وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ كَلَّا اِنَّهٗ كَانَ
لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ فَقُتِلَ كَيْفَ
قَدَّرَ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ثُمَّ نَظَرَ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ثُمَّ اَدْبَرَ
وَاسْتَكْبَرَ فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ
سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ
لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ وَمَا جَعَلْنَاۤ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا

७४ सूरतुल्-मुद्दस्सिरि ४

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ११४५ अक्षर, २५६ शब्द, ५६ आयते और २ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

या अय्युहल्-मुद्दस्सिरु (१) कुम् फ-अन्-ज़िर् (२) व रब्ब-क फ-कब्बिर (३) व सिया-ब-क फ-तह्हिर् (४) वर्रुज्-ज फ़ह्जुर् (५) व ला तम्-नुन् तस्तक्सिर (६) व लिरब्बि-क फ़स्बिर् (७) फ़इज़ा नुकि-र फ़िन्नाकूरि (८) फ़ज़ालि-क यौमइज़िय्यौमुन् असीरुन् (९) अलल्-काफ़िरी-न ग़ैरु यसीर (१०) ज़र्नी व मन् ख़-लक़्तु वहीदव- (११) व ज-अल्तु लहू मालम्-मम्दूदंव- (१२) व बनी-न शुहूदव- (१३) व मह्-हत्तु लहू तम्हीदा (१४) सुम्-म यत्मअु अन् अज़ी-द (१५) कल्ला इन्नहू का-न लिआयातिना अनीदा (१६) सउर्हिकुहू सअूदन् (१७) इन्नहू फ़क्क-र व क़द्-द-र (१८) फ़कुति-ल कै-फ कद्-द-र (१९) सुम्-म क़ुति-ल कै-फ़ कद्-द-र (२०) सुम्-म न-ज़-र (२१) सुम्-म अ-ब-स व ब-स-र (२२) सुम्-म अद्-ब-र वस्तक्-ब-र (२३) फ-क़ा-ल इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुंय्युअ्-सरु (२४) इन् हाज़ा इल्ला कौलुल्-ब-शर (२५) सउस्लीहि स-क़र (२६) व मा अद्-रा-क मा स-कर (२७) ला तुब्क़ी व ला त-ज़र (२८) लव्वाहतुल्-लिल-ब-शर (२९) अलैहा तिस्-अ-त अ-शर (३०)

★रु० २/१४ आ १

तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है कि तुम और तुम्हारे साथ के लोग (कभी) दो तिहाई रात के करीब और (कभी) आधी रात और (कभी) तिहाई रात कियाम किया करते हो और ख़ुदा तो रात और दिन का अन्दाजा रखता है। उस ने मालूम किया कि तुम उस को निबाह न सकोगे तो उस ने तुम पर मेहरबानी की, पस जितना आसानी से हो सके (उतना) कुरआन पढ लिया करो। उस ने जाना कि तुम में कुछ बीमार भी होते है, और कुछ खुदा के फज्ल (यानी रोजी) की खोज मे मुल्क मे सफर करते है और कुछ खुदा की राह मे लडते है, तो जितना आसानी से हो सके उतना पढ लिया करो और नमाज पढते रहो और जकात अदा करते रहो और खुदा को नेक (और नीयत के खुलूस से) कर्ज़ देते रहो और जो नेक अमल तुम अपने लिए आगे भेजोगे, उस को खुदा के यहा बेहतर और बदले मे बुजुर्गतर पाओगे और खुदा से बख्शिश मागते रहो। बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है। (२०)★

७४ सूरः मुद्दस्सिर ४

सूर. मुद्दस्सिर मक्की है। इस मे ५६ आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ (मुहम्मद [1]) जो कपडा लपेटे पडे हो', (१) उठो और हिदायत कर दो, (२) और अपने परवरदिगार की बडाई करो, (३) और अपने कपडो को पाक रखो, (४) और नापाकी से दूर रहो, (५) और (इस नीयत से) एहसान न करो कि इस से ज्यादा की तलब मे हो, (६) और अपने परवरदिगार के लिए सब्र करो। (७) जब सूर फूका जाएगा, (८) वह दिन मुश्किल का दिन होगा, (९) (यानी) काफिरो पर आसान होगा, (१०) हमे उस शख्स से समझ लेने दो, जिस को हम ने अकेला पैदा किया, (११) और ज्यादा माल दिया, (१२) और (हर वक्त उस के पास) हाजिर होने वाले बेटे (दिए,) (१३) और हर तरह के सामान मे वुस्अत दी। (१४) अभी ख्वाहिश रखता है कि और ज्यादा दे। (१५) ऐसा हरगिज नही होगा। यह हमारी आयतो का दुश्मन रहा है। (१६) हम उसे सऊद पर चढाएगे। (१७) उस ने फ़िक्र किया और तज्वीज़ की। (१८) यह मारा जाए, उस ने कैसी तज्वीज की, (१९) फिर यह मारा जाए, उस ने कैसी तज्वीज की, (२०) फिर ताम्मुल किया, (२१) फिर त्यौरी चढायी और मुह बिगाड लिया, (२२) फिर पीठ फेर कर चला और (हक कुबूल करने से) घमड किया, (२३) फिर कहने लगा कि यह तो जादू है, जो (अगलो से) बराबर होता चला आया है।[2] (२४) (फिर) बोला) यह (ख़ुदा का कलाम नही, बल्कि) इंसान का कलाम है। (२५) हम बहुत जल्द उस को सकर मे दाख़िल करेगे, (२६) और तुम क्या समझे कि सकर क्या है? (२७) (वह आग है कि) न बाकी रखेगी और न छोड़ेगी। (२८) और बदन को झुलसा कर काला कर देगी, (२९) उस पर उन्नीस दारोगा

---

१ यह सूर वह्य के शुरू के दिनो मे नाज़िल हुई थी। चूकि हज़रत सल्ल० वह्य के डर की वजह से कपडा ओढ लेते थे, इस लिए 'मुद्दस्सिर' से खिताब फरमाया।

२ ये आयतें वलीद बिन मुगीरह के हक मे नाज़िल हुई हैं। यह शख्स बडा मालदार और कुरैश मे नामी था। बेटे भी बहुत-से रखता था। गरज़ दुनिया मे जो बातें खुशकिस्मती की समझी जाती हैं, सब उस को हासिल थीं। (शेष पृष्ठ ९२५ पर)

व मा ज-अल्ना अस्‌-हाबन्नारि इल्ला मलाइ-क-तंव्-व मा ज-अल्ना अिद्-द-तहुम् इल्ला फ़ित्-न-तल्-लिल्लजी-न क-फ़रू लियस्तैक़िनल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब व यज्दा-दल्लजी-न आमनू ईमानंव्-वला यर्ताबल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब वल्मुअ्मिनू-न व लियकूलल्लजी-न फ़ी कुलूबिहिम् म-र-जुंव्वल्-काफ़िरू-न माजा अरादल्लाहु बिहाजा म-स-लन् कज़ालि-क युजिल्लुल्लाहु मय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ व मा यअ्-लमु जुनू-द रब्बि-क इल्ला हु-व व मा हि-य इल्ला ज़िक्‌रा लिल्ब-शर ★ (३१) कल्ला वल्क़मरि (३२) वल्लैलि इज् अद्-ब-र (३३) वस्सुब्हि इज़ा अस्-फ-र (३४) इन्नहा ल-इह्दल्-कुबरि (३५) नज़ीरल्-लिल्ब-शर (३६) लिमन् शा-अ मिन्कुम् अय्य-त-कद्-द-म औ य-त-अख़्ख़-र (३७) कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-स-बत् रहीनतुन् (३८) इल्ला अस्‌-हाबल्-यमीन (३९) फ़ी जन्नातिन् य-त-सा-अलून (४०) अनिल्-मुज्‌रिमीन (४१) मा स-ल-ककुम् फ़ी स-कर (४२) क़ालू लम् नकु मिनल्-मुसल्लीन (४३) व लम् नकु नुत्‌अिमुल्-मिस्कीन (४४) व कुन्ना नख़ूजु म-अल्-ख़ाइज़ीन (४५) व कुन्ना नुकज़्ज़िबु बियौमिद्दीन (४६) हत्ता अतानल्-यक़ीन (४७) फ़मा तन्फ़अुहुम् शफ़ा-अतुश्-शाफ़िअीन (४८) फ़मा ल-हुम् अनित्तज्-किरति मुअ्-रिज़ीन (४९) क-अन्नहुम् हुमुरुम्-मुस्तन्फ़िर (५०) फ़र्रत् मिन् क़स्-वर (५१) बल् युरीदु कुल्लुम्‌रिइम्-मिन्हुम् अय्युअ्ता सुहुफ़म्-मुनश्-श-र-तन् (५२) कल्ला बल् ला यख़ाफ़ूनल्-आख़िर (५३) कल्ला इन्नहू तज्‌कि-रतुन् (५४) फ़-मन् शा-अ ज-करह (५५) व मा यज्कुरू-न इल्ला अय्यशा-अल्लाहु हु-व अह्लुत्तक़्वा व अह्लुल्-मग्फ़िर ★ ● (५६)

مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ
اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَمَا
يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ۭ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۝ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝ وَ
الَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۝ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ۝ اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ۝ نَذِيْرًا
لِّلْبَشَرِ ۝ لِمَنْ شَاۗءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ۝ كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ
رَهِيْنَةٌ ۝ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ۝ فِيْ جَنّٰتٍ ۚ يَتَسَاۗءَلُوْنَ ۝ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝
مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ۝ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ
الْمِسْكِيْنَ ۝ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَاۗىِٕضِيْنَ ۝ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ
الدِّيْنِ ۝ حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ۝ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ۝
فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝
فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۝
كَلَّا ۭ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَنْ شَاۗءَ ذَكَرَهٗ ۝ وَ
مَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ ۭ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اٰيَاتُهَا ٤٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝ اَيَحْسَبُ

है, (३०) और हम ने दोजख के दारोगा फरिश्ते बनाए हैं और उन की तायदाद को काफिरो की आजमाइश के लिए मुकर्रर किया है (और) इस लिए कि किताब वाले यकीन करें और मोमिनो का ईमान और ज्यादा हो और अह्ले किताब और मोमिन शक न लाए और इस लिए कि जिन लोगो के दिलो मे (निफाक का) मर्ज है और (जो) काफिर (है) कहे कि इस मिसाल (के बयान करने) से खुदा का मक्सूद क्या है ? इसी तरह खुदा जिस को चाहता है, गुमराह करता है और जिस को चाहता है, हिदायत देता है और तुम्हारे परवरदिगार के लश्करो को उस के सिवा कोई नही जानता और यह तो आदम की औलाद के लिए नसीहत है। (३१)★

हा, (हा, हमे,) चाद की कसम ! (३२) और रात की, जब पीठ फेरने लगे, (३३) और सुबह की जब रोशन हो, (३४) कि वह (आग) एक बहुत बडी (आफत) है, (३५) (और) बशर के लिए खौफ की वजह, (३६) जो तुम मे से आगे बढना चाहे या पीछे रहना चाहे।' (३७) हर शख्स अपने आमाल के बदले रेहन है, (३८) मगर दाहिनी तरफ वाले (नेक लोग) (३९) ∴(कि) वे बहिश्त के बागो मे (होगे और) पूछते होगे, (४०) (यानी आग मे जलने वाले) गुनाह-गारो से, (४१) कि तुम दोजख मे क्यो पडे ? (४२) वे जवाब देगे कि हम नमाज नही पढते थे, (४३) और न फकीरो को खाना खिलाते थे, (४४) और बातिल वालो के साथ मिल कर (हक से) इकार करते थे, (४५) और बदले के दिन को झुठलाते थे, (४६) यहा तक कि हमे मौत आ गयी, (४७) तो (इस हाल मे) सिफारिश करने वालो की सिफारिश उन के हक मे कुछ फायदा न देगी (४८) उन को क्या हुआ है कि नसीहत से मुह फेर रहे है। (४९) गोया गधे है कि बिदक जाते है, (५०) (यानी) शेर से डर कर भाग जाते है। (५१) असल यह है कि उन मे से हर शख्स यह चाहता है कि उस के पास खुली हुई किताब आए। (५२) ऐसा हरगिज नही होगा। हकीकत यह है कि उन को आखिरत का खौफ ही नही। (५३) कुछ शक नही कि यह नसीहत है। (५४) तो जो चाहे याद रखे, (५५) और याद भी तभी रखेंगे जब खुदा चाहे। वही डरने के लायक और बख्शिश का मालिक है। (५६)★●

(पृष्ठ ९२३ का शेष)

एक बार जो हज़रत सल्ल० के पास आया तो आप ने उस को कुरआन सुनाया, ऐसा मीठा कलाम सुन कर फड़क उठा और बे-साख्ता तारीफ करने लगा। यह बात अबू जह्ल को मालूम हुई तो उस ने वलीद से आ कर कहा कि चचा ! तुम्हारी बिरादरी के लोग तुम्हारे लिए चन्दा जमा करना चाहते है। उस ने कहा किस लिए ? अबू जह्ल ने कहा कि तुम मुहम्मद के पास जा कर उन की बातें सुनते हो। उस ने कहा कि कुरैश को मालूम है कि मैं उन सब से ज्यादा दौलतमद हू, तो मुझे उन के चन्दे की क्या जरूरत है। अबू जह्ल ने कहा, अच्छा, तो ऐसी बात कहो, जिस से साबित हो कि तुम उन के कलाम को पसन्द नही करते। उस ने कहा कि मैं उन के हक मे क्या कहू। खुदा की कसम ! तुम मे कोई शख्स मुझ से ज्यादा अशआर व कसीदे का आलिम नही और मैं उन के कलाम को हरगिज शेर नही कह सकता। अबू जह्ल ने कहा, जब तक तुम उन के बारे मे कोई बात लोगो की ख्वाहिश के मुताबिक तज्वीज़ न करोगे, वे तुम से खुश नही होंगे। आखिर उस ने सोच कर कहा कि यह जादू है। सऊद दोजख मे एक पहाड है, जिस पर काफिर को चढा कर नीचे गिरा दिया करेंगे। कुछ ने कहा कि सऊद दोजख मे एक बहुत बडा पत्थर है, जिस पर काफिर को मुह के बल घसीटेंगे। किसी ने कहा कि सऊद जहन्नम मे एक चिकना पत्थर है, जिस पर काफिर को चढने के लिए मजबूर करेंगे।

७५ सूरतुल्-क़ियामति ३१

(मक्की) इस सूर मे अ़रबी के ६८२ अक्षर, १६४ शब्द, ४० आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

ला उक़्सिमु बियौमिल्-क़ियामति (१) व ला उक़्सिमु बिन्नफ़्सिल्-लव्वाम (२) अ-यह़्सबुल-इन्सानु अल्लन् नज्म-अ़ अ़िज़ामह (३) बला क़ादि-री-न अ़ला अन्नुसव्वि-य बनानह (४) बल् युरीदुल-इन्सानु लियफ़्जु-र अमामह (५) यस्अलु अय्या-न यौमुल-क़ियाम: (६) फ़इज़ा बरिकल-ब-सरु (७) व ख़-स-फल्-क़-मर (८) व जुमिअ़श्शम्सु वल्क़-मरु (९) यक़ूलुल-इन्सानु यौमइज़िन् ऐनल-म-फ़र्रु (१०) कल्ला ला व-ज़र (११) इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल-मुस्तक़र्रु (१२) युनब्बउल-इन्सानु यौमइज़िम्-बिमा क़द्-द-म व अख़्ख़-र (१३) बलिल-इन्सानु अ़ला नफ़्सिही बसीरतुंव- (१४) व लौ अल्क़ा मआ़ज़ीर· (१५) ला तुह़र्रिक् बिही लिसान-क लितअ़्-ज-ल बिही (१६) इन-न अ़लैना जम्-अ़हू व क़ुर्आनहू (१७) फइज़ा क़-रअ्नाहु फत्तबिअ़् क़ुर्आनः (१८) सुम-म इन-न अ़लैना बयान· (१९) कल्ला बल् तुहिब्बूनल-आजि-ल-त (२०) व त-ज़रूनल-आख़ि-र (२१) वुजूहुंय्यौमइज़िन् नाज़ि-र-तुन् (२२) इला रब्बिहा नाज़िर: (२३) व वुजूहुंय्यौमइज़िम्-बासि-रतुन् (२४) तज़ुन्नु अंय्युफ्-अ़-ल बिहा फाक़ि-र: (२५) कल्ला इज़ा ब-ल-ग़तित-तराक़ि-य (२६) व क़ी-ल मन् राक़िव (२७) -व ज़न-न अन्नहुल-फ़िराक़ु (२८) वल-तफ़्फ़तिस्साक़ु बिस्साक़ि (२९) इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल-मसाक़ ✶ (३०) फला सद्-द-क व ला सल्ला (३१) व लाकिन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (३२) सुम-म ज़-ह-ब इला अह़्लिही य-त-मत्ता (३३) औला ल-क फ-औला (३४) सुम-म औला ल-क फ़-औला (३५) अ-यह़्सबुल-इन्सानु अय्युत-र-क सुदा (३६) अ-लम् यकु नुत्फ़-तम्-मिम्-मनिय्यिंय्युम्ना (३७) सुम-म का-न अ़-ल-क़-तन् फ़-ख़-ल-क़ फ़-सव्वा (३८) फ़-ज-अ़-ल मिन्हुज़्-ज़ौजैनिज़्-ज़-क-र वल-उन्सा (३९) अलै-स ज़ालि-क बिक़ादिरिन् अ़ला अय्युह़्यि-यल मौता ✶ (४०)

القيامة ٧٥ ‏٣٨٥ تبارك الذي ٢٩

الإنسان ألن نجمع عظامه ۝ بلى قادرين على أن نسوي
بنانه ۝ بل يريد الإنسان ليفجر أمامه ۝ يسئل أيان يوم
القيمة ۝ فإذا برق البصر ۝ وخسف القمر ۝ وجمع الشمس و
القمر ۝ يقول الإنسان يومئذ أين المفر ۝ كلا لا وزر ۝ إلى
ربك يومئذ المستقر ۝ ينبؤا الإنسان يومئذ بما قدم وأخر ۝
بل الإنسان على نفسه بصيرة ۝ ولو ألقى معاذيره ۝ لا تحرك
به لسانك لتعجل به ۝ إن علينا جمعه وقرانه ۝ فإذا قرانه
فاتبع قرانه ۝ ثم إن علينا بيانه ۝ كلا بل تحبون العاجلة ۝
وتذرون الآخرة ۝ وجوه يومئذ ناضرة ۝ إلى ربها ناظرة ۝
ووجوه يومئذ باسرة ۝ تظن أن يفعل بها فاقرة ۝ كلا إذا
بلغت التراقي ۝ وقيل من راق ۝ وظن أنه الفراق ۝ و
التفت الساق بالساق ۝ إلى ربك يومئذ المساق ۝ فلا صدق
ولا صلى ۝ ولكن كذب وتولى ۝ ثم ذهب إلى أهله يتمطى ۝
أولى لك فأولى ۝ ثم أولى لك فأولى ۝ أيحسب الإنسان أن
يترك سدى ۝ ألم يك نطفة من مني يمنى ۝ ثم كان
علقة فخلق فسوى ۝ فجعل منه الزوجين الذكر والأنثى ۝
أليس ذلك بقادر على أن يحيى الموتى ۝

✶रु १/१७ आ ३० ✶रु २/१८ आ १०

७५ सूरः क़ियामः ३१

सूर कियाम. मक्की है, इस मे चालीस आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हम को कियामत के दिन की कसम, (१) और नफ्से लव्वामा[1] की (कि सब लोग उठा कर खड़े किए जाएगे,) (२) क्या इंसान यह ख्याल करता है कि हम उस की (बिखरी हुई) हड्डिया इकट्ठी नही करेंगे ? (३) जरूर करेंगे (और) हम इस बात पर कुदरत रखते हैं कि उसके पोर-पोर दुरुस्त कर दे, (४) मगर इसान चाहता है कि आगे को खुदसरी करता जाए। (५) पूछता है कि कियामत का दिन कब होगा ? (६) जब आखे चुधिया जाएं, (७) और चाद गहना जाए, (८) और सूरज और चाद जमा कर दिए जाए, (९) उस दिन इसान कहेगा कि (अब) कहा भाग जाऊ ? (१०) बेशक कही पनाह नही, (११) उस दिन परवरदिगार ही के पास ठिकाना है, (१२) उस दिन इंसान को जो (अमल) उस ने आगे भेजे और जो पीछे छोडे होगे, सब बता दिए जाएंगे, (१३) बल्कि इसान आप अपना गवाह है, (१४) अगरचे उज्र माजरत करता रहे (१५) और (ऐ मुहम्मद !) वह्य के पढने के लिए अपनी जुबान न चलाया करो कि उस को जल्द याद कर लो। (१६) उस का जमा करना और पढाना हमारे ज़िम्मे है। (१७) जब वह वह्य पढा करे, तो तुम (उस को सुना करो और) फिर उसी तरह पढा करो (१८) फिर उस (के मानी) का बयान भी हमारे जिम्मे है, (१९) मगर (लोगो !) तुम दुनिया को दोस्त रखते हो, (२०) और आखिरत को छोडे देते हो, (२१) उस दिन बहुत से मुह रौनकदार होंगे, (२२) (और) अपने परवरदिगार का दीदार कर रहे होगे, (२३) और बहुत-से मुह उस दिन उदास होगे, (२४) ख्याल करेंगे कि उन पर मुसीबत वाकेअ होने को है। (२५) देखो, जब जान गले तक पहुच जाए, (२६) और लोग कहने लगे, (इस वक्त) कौन झाड-फूक करने वाला है, (२७) और उस (जान गले तक पहुंचे हुए शख्स) ने समझा कि अब सब से जुदाई है, (२८) और पिंडली से पिंडली लिपट जाए, (२९) उस दिन तुझ को अपने परवरदिगार की तरफ चलना है, (३०) ★

तो उस (अंजाम से ना-समझ) ने न तो (खुदा के कलाम की) तस्दीक की, न नमाज पढी। (३१) बल्कि झुठलाया और मुह फेर लिया, (३२) फिर अपने घर वालो के पास अकडता हुआ चल दिया। (३३) अफसोस है तुझ पर, फिर अफसोस है, (३४) फिर अफसोस है तुझ पर फिर अफसोस है। (३५) क्या इसान ख्याल करता है कि यो ही छोड दिया जाएगा ? (३६) क्या वह मनी की, जो रहम मे डाली जाती है, एक बूद न था ? (३७) फिर लोथडा हुआ, फिर (खुदा ने) उस को बनाया, फिर (उस के अगो को) ठीक किया, (३८) फिर उस की दो किस्मे बनायी, (एक) मर्द और (एक) औरत। (३९) क्या उस को इस बात पर कुदरत नही कि मुर्दो को जिन्दा उठाये ? (४०) ★

---

१ इन्सान का जी तीन तरह का है, एक जो गुनाहो और बुरे कामो की तरफ मायल रहे, उस को नफ्से अम्मारा या अम्मारा बिस्सूइ कहते हैं, दूसरा जो बुराई और कुसूर के होने पर मलामत करे कि तू ने यह हरकत क्यो की, उस को नफ्से लव्वामा कहते है। तीसरा जो नेकियो मे दिलचस्पी बढाएं और बुराइयो से नफरत दिलाए, ऐसा जी बडे चैन मे रहता है और उस को नफ्से मुत्मइन्ना कहते हैं। यहा खुदा ने नफ्से लव्वामा की कसम खायी है।

★रु १/१७ आ ३० ★रु २/१८ आ १०

७६ सूरतुद्दह्र ९८

(मदनी) इस सूर. मे अ़रबी के १०६९ अक्षर, २४६ शब्द, ३१ आयते और २ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

हल् अता अ़-लल-इन्सानि ह़ीनुम्-मिनद-दह्रि लम् यकुन् शै-अम्-मज्कूरा (१) इन्ना ख़-लक़्नल-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् अम्शाजिन्-नब्तलीहि फ-ज-अल्नाहु समीअम्-बसीरा (२) इन्ना हदैनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकिरंव्-व इम्मा कफूरा (३) इन्ना अअ़्-तद्ना लिलकाफिरी-न सलासि-ल व अग्लालव्-व सअ़ीरा (४) इन्नल-अब्रा-र यश्-रबू-न मिन् कअ्सिन् का-न मिज़ा-जुहा काफूरा (५) अ़ैनंय्यश्-रबु बिहा अिबादुल्लाहि युफज्जिरू-नहा तफ्-जीरा (६) यूफू-न बिन्नज़्रि व यख़ाफू-न यौमन् का-न शर्रुहू मुस्ततीरा (७) व युत़्अिमूनत्त़आ-म अला हु़ब्बिही मिस्कीनव्-व यतीमव्-व असीरा (८) इन्नमा नुत़्अिमुकुम् लिवज्हिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअव्-व ला शुकूरा (९) इन्ना नख़ाफु मिर्रब्बिना यौमन् अबूसन् क़म्-तरीरा (१०) फ-वकाहुमुल्लाहु शर्-र ज़ालिकल-यौमि व लक्काहुम् नज्-रतव्-व सुरूरा (११) व जज़ाहुम् बिमा स-बरू जन्नतव्-व हरीरम्- (१२) मुत्तकिई-न फीहा अ़लल्-अराइकि ला यरौ-न फीहा शम्संव्-व ला जम्-हरी-रा (१३) व दानि-य-तन् अलैहिम् ज़िलालुहा व ज़ुल्लिलत् कुतूफुहा तज़्लीला (१४) व युताफु अ़लैहिम् बिआनि-यतिम्-मिन् फिज्जतिव्-व अक्वाबिन् कानत् कवारी-र (१५) कवारी-र मिन् फिज्ज़तिन् क़द्दरूहा तक़्दीरा (१६) व युस्कौ-न फीहा कअ्-सन् का-न मिज़ाजुहा जन्जबीला (१७) अ़ैनन् फीहा तुसम्मा सलसबीला (१८) व यतूफु अ़लैहिम् विल्दानुम्-मुख़ल्लदू-न इज़ा रऐतहुम् हसिब्-तहुम् लुअ्लुअम्-मन्सूरा (१९) व इज़ा रऐ-त सम्-म रऐ-त नअीमव्-व मुल्कन् कबीरा (२०)

سُورَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَى وَثَلٰثُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ۝ إِنَّا
خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝
إِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَّإِمَّا كَفُورًا ۝ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِينَ
سَلٰسِلَا۟ وَأَغْلٰلًا وَّسَعِيرًا ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ
مِزَاجُهَا كَافُورًا ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝ يُوفُونَ
بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝ وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ
عَلٰى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَّيَتِيمًا وَّأَسِيرًا ۝ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيدُ
مِنْكُمْ جَزَاءً وَّلَا شُكُورًا ۝ إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۝
فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُورًا ۝ وَجَزٰىهُمْ بِمَا
صَبَرُوا جَنَّةً وَّحَرِيرًا ۝ مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا
شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيرًا ۝ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ۝
وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا۟ ۝ قَوَارِيرَا۟ مِنْ
فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ۝ وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ۝
عَيْنًا فِيهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيلًا ۝ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا
رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُورًا ۝ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَّمُلْكًا

७६ सूरः दह्र ९८

सूर. दह्र मक्की है, इस मे इक्तीस आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रह्म वाला है।

बेशक इसान पर जमाने मे एक ऐसा वक्त भी आ चुका है कि वह कोई चीज जिक्र के काबिल न था। (१) हम ने इसान को मिले-जुले नुत्फे से पैदा किया[1], ताकि उसे आज़माए, तो हम ने उसे सुनता-देखता बनाया। (२) और उसे रास्ता भी दिखा दिया। (अब वह) चाहे शुक्रगुज़ार हो, चाहे ना-शुक्रा। (३) हम ने काफिरों के लिए जजीरे और तौक और दहकती आग तैयार कर रखी है। (४) जो नेकी वाले है, वह ऐसी शराब[2] पिएगे, जिस मे काफूर की मिलावट होगी। (५) यह एक चश्मा है, जिस मे से खुदा के बन्दे पिएगे और उस मे से (छोटी-छोटी) नहरे निकाल लेगे। (६) ये लोग नज्रे पूरी करते है और उस दिन से जिस की सख्ती फैल रही होगी, खौफ रखते हैं, (७) और इसके बावजूद कि उन को खुद खाने की ख्वाहिश (और जरूरत) है, फकीरो और यतीमो और कैदियो को खिलाते है। (८) (और कहते है कि) हम तुम को खालिस खुदा के लिए खिलाते हैं, न तुम से बदले की ख्वाहिश है, न शुक्रगुजारी के (तलबगार।) (९) हम को अपने परवरदिगार मे उस दिन का डर लगता है जो (चेहरो को) देखने मे बुरा और (दिलो को) सख्त (बेचैन कर देने वाला) है। (१०) तो खुदा उन को उस दिन की सख्ती से बचा लेगा और ताजगी और खुशदिली इनायत फरमाएगा। (११) और उन के सब्र के बदले उन को बहिश्त (के बाग) और रेशम (के कपडे) अता करेगा? (१२) उन मे वे तख्तो पर तकिए लगाए बैठे होगे, वहा न धूप (की गर्मी) देखेंगे, न सर्दी की तेजी, (१३) उन से (फलदार शाखे और) उन के साए करीब होगे और मेवो के गुच्छे झुके हुए लटक रहे होगे। (१४) (नौकर-चाकर) चादी के बासन लिए हुए उन के चारो तरफ फिरेगे और शीशे के (निहायत साफ-सुथरे) गिलास, (१५) और शीशे भी चादी के, जो ठीक अन्दाजे के मुताबिक बनाए गए है, (१६) और वहा उन को ऐसी शराब (भी) पिलायी गयी, जिस मे सोठ की मिलावट होगी। (१७) यह बहिश्त मे एक चश्मा है, जिस का नाम सलसबील है। (१८) और उन के पास लडके आते जाते होगे, जो हमेशा एक ही हालत पर आएगे। जब तुम उन पर निगाह डालो, तो ख्याल करो कि बिखरे हुए मोती है। (१९) और बहिश्त मे (जहा) आख उठाओगे, कसरत से नेमत और शानदार सल्तनत देखोगे। (२०) (उन (के बदनो) पर हरी दीबा

---

१ चूकि मर्द और औरत दोनो के नुत्फो के मिलने से बच्चा बनता है, इस लिए मिला-जुला नुत्फा फरमाया।

२ 'कास' शराब के सागर को भी कहते हैं और इसे शराब के लिए भी बोल सकते हैं, इस लिए यहा हम ने उस का तर्जुमा शराब किया।

आलि-यहुम् सियाबु सुन्दुसिन् खुज़्रुंव्-व इस्तब्रकुंव्-व हुल्लू असावि-र मिन् फ़िज्ज-तिन् व सक़ाहुम् रब्बुहुम् शराबन् तहूरा (२१) इन्-न हाजा का-न लकुम् जज़ा-अंव्-व का-न सअ्-युकुम् मश्कूरा ★ (२२) इन्ना नह़्नु नज्जलना अलैकल-क़ुर्आ-न तन्ज़ीला (२३) फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ्-मिन्हुम् आसिमन् औ कफ़ूरा (२४) वज्कुरिस्-म रब्बि-क बुक्-र-तंव्-व असीला (२५) व मिनल्लैलि फस्जुद् लहू व सब्बिह्हु लैलन् तवीला (२६) इन्-न हाउला-इ युहिब्बूनल्-आजि-ल-त व य-ज-रू-न वरा-अहुम् यौमन् सकीला (२७) नह़्नु ख-लक़्नाहुम् व शदद्ना अस्-रहुम् व इजा शिअ्ना बद्दल्ना अम्सालहुम् तब्दीला (२८) इन्-न हाजिही तज्कि-रतुन् फ़-मन् शाअत्त-ख-ज इला रब्बिही सबीला (२९) व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशाअल्लाहु इन्नल्ला-ह का-न अली-मन् ह़कीमंय- (३०) -युद्खिलु मय्यशाउ फी रह़्मतिही वज़्ज़ालिमी - न अ-अद्-द लहुम् अज़ाबन् अलीमा ★ (३१)

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۡ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۝ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ۝ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ۝ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ۝ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۝ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۝ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۝ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۝ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۝ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۝ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۝ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۝ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ۝ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ۝ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ

७७ सूरतुल्-मुर्सलाति ३३

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ८४६ अक्षर, १८१ शब्द, ५० आयते और २ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

वल्मुर्सलाति अुर्फ़न् (१) फ़ल - आसिफाति अस्फ़न् (२) वन्नाशिराति नश्रन् (३) फल्फारिकाति फर्क़न् (४) फल्मुल्कियाति जिक्रन् (५) अुज्रन् औ नुज्रन् (६) इन्नमा तू-अदू-न लवाकि-अ (७) फ़-इजन्नुजूमु तुमिसत् (८) व इजस्समाउ फुरिजत् (९) व इजल् - जिबालु नुसिफ़त् (१०) व इजर्रुसुलु उक्कितत्। (११) लिअय्यि यौमिन् उज्जिलत् (१२) लियौमिल् - फस्लि (१३) व मा अद्रा-क मा यौमुल् - फस्ल (१४)

★रु १/१९ आ २२ ★रु २/२० आ ६

और अतलस के कपडे होगे और उन्हे चादी के कगन पहनाए जाएगे और उन का परवरदिगार उन को निहायत पाकीजा शराब पिलाएगा। (२१) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी कोशिश (खुदा के यहा) मकबूल हुई। (२२) ☆

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम पर कुरआन धीरे-धीरे नाज़िल किया है, (२३) तो अपने परवर-दिगार के हुक्म के मुताबिक सब्र किए रहो और उन लोगो मे से किसी बद-अमल और ना-शुक्रे का कहा न मानो, (२४) और सुबह व शाम अपने परवरदिगार का नाम लेते रहो। (२५) और रात को बडी रात तक उस के आगे सज्दे करो और उस की पाकी बयान करते रहो। (२६) ये लोग दुनिया को दोस्त रखते है और (कियामत के) भारी दिन को पीठ पीछे छोड देते है। (२७) हम ने उन को पैदा किया और उन के जोडो को मजबूत बनाया और अगर हम चाहे तो उन के बदले उन्ही की तरह और लोग ले आए। (२८) यह तो नसीहत है, जो चाहे अपने परवरदिगार की तरफ पहुचने का रास्ता अख्तियार करे। (२९) और तुम कुछ भी नही चाह सकते, मगर जो खुदा को मजूर हो। बेशक खुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है, (३०) जिस को चाहता है, अपनी रहमत मे दाखिल कर लेता है और ज़ालिमो के लिए उस ने दुख देने वाला अजाब तैयार कर रखा है☆(३१)

७७ सूरः मुर्सलात ३३

सूर मुर्सलात मक्की है, उस मे पचास आयते और दो रुकूअ हे।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हवाओ की कसम जो नर्म-नर्म चलती है, (१) फिर जोर पकड कर झक्कड हो जाती है, (२) और (बादलो को) फाड कर फैला देती है, (३) फिर उन को फाड कर जुदा-जुदा कर देती है, (४) फिर फरिश्तो की कसम, जो वह्य लाते है, (५) ताकि उज्र (दूर) कर दिया जाए, (६) कि जिस का तुम से वायदा किया जाता है, वह हो कर रहेगा। (७) जब तारो की चमक जाती रहे, (८) और जब आसमान फट जाए, (९) और जब पहाड उडे-उडे फिरे, (१०) और जब पैगम्बर फराहम किए जाएं, (११) भला (इन मामलो मे) देर किस लिए की गयी ? (१२) फैसले के दिन के लिए, (१३) और तुम्हे क्या खबर कि फैसले का दिन क्या है, (१४) उस दिन झुठलाने वालो के

★रु १/१९ आ २२ ★रु २/२० आ ६

वैलुय्यौमइजिल् - लिल्मुकज्जिबीन (१५) अ-लम् नुह्लिकिल् - अव्वलीन (१६) सुम्-म नुत्बिअुहुमुल् - आख़िरीन (१७) कजालि-क नफ़्अलु बिल्-मुज्रिमीन (१८) वैलुय्यौमइजिल् - लिल्मुकज्जिबीन (१९) अ - लम् नख़्लुक्कुम् मिम् - माइम् - महीन (२०) फ-ज-अल्नाहु फ़ी करारिम्-मकीन (२१) इला क-दरिम्-मअ्-लूम (२२) फ़-क-दर्ना फ़निअ्-मल् - क़ादिरून (२३) वैलुय्यौमइजिल्-लिल्मुकज्जिबीन (२४) अ-लम् नज्अलिल्-अर्-ज किफातन् (२५) अह्याअव्-व अम्वातंव्- (२६) व जअल्ना फीहा रवासि-य शामिख़ातिव्-व अस्कैनाकुम् माअन् फ़ुराता (२७) वैलु य्यौमइजिल-लिल्मुकज्जिबीन (२८) इन्तलिक़ू इला मा कुन्तुम् बिही तुकज्जिबून (२९) इन्तलिक़ू इला जिल्लिन् जी सलासि शु-अबिल- (३०) ला ज़लीलिव्-व ला युग्नी मिनल्ल-हब (३१) इन्नहा तर्मी बि-श-ररिन् कल्-कस्रि (३२) क-अन्नहू जिमा-लतुन् सुफ़्र (३३) वैलु य्यौमइजिल-लिल-मुकज्जिबीन (३४) हाजा यौमु ला यन्तिकून (३५) व ला युअ्जनु लहुम् फ-यअ्-तजिरून (३६) वैलु य्-यौमइजिल-लिल्मुकज्जिबीन (३७) हाजा यौमुल-फस्लि ज-मअ्-नाकुम् वल्-अव्वलीन (३८) फइन् का-न लकुम् कैदुन् फकीदून (३९) वैलु य्यौमइजिल-लिल्मुकज्जि-बीन ★ (४०) इन्नल्-मुत्तकी-न फ़ी ज़िलालिव-व अुयून (४१) व फवाकि-ह मिम्मा यश-तहून (४२) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (४३) इन्ना कजालि-क नज्जिल-मुह्सिनीन (४४) वैलु य्यौमइजिल-लिल्मुकज्जिबीन (४५) कुलू व त-मत्तअू कलीलन् इन्नकुम् मुज्रिमून (४६) वैलु य्यौमइजिल-लिल्मुकज्जिबीन (४७) व इजा की-ल लहुमुर-कअू ला यर्-कअून (४८) वैलु य्यौमइजिल-लिल्मुकज्जिबीन (४९) फ़-बिअय्यि हदीसिम्-बअ्-दहू युअ्मिनून ★ (५०)

المرسلت ٣٩٨ تبرك الذي ٢٩

لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ۝ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ۝
كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ أَلَمْ نَخْلُقكُّم
مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝ فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۝ إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝
فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ أَلَمْ
نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ۝ وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ
شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُم مَّاءً فُرَاتًا ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝
انطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ انطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ
شُعَبٍ ۝ لَّا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ۝ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ
كَالْقَصْرِ ۝ كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝
هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنطِقُونَ ۝ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝ وَيْلٌ
يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۝
فَإِن كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ إِنَّ
الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ ۝ وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝ كُلُوا
وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجْرِمُونَ ۝
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۝
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝

लिए खराबी है। (१५) क्या हम ने पहले लोगो को हलाक नही कर डाला ? (१६) फिर इन पिछलो को भी उन के पीछे भेज देते है। (१७) हम गुनाहगारो के साथ ऐसा ही करते है। (१८) उस दिन झुठलाने वालो की खरावी है। (१९) क्या हम ने तुम को हकीर पानी मे नही पैदा किया ? (२०) (पहले) उस को एक महफूज जगह मे रखा, (२१) एक मालूम वक्त तक, (२२) फिर अन्दाजा मुकर्रर किया और हम क्या ही खूब अन्दाजा मुकर्रर करने वाले है। (२३) उस दिन झुठलाने वालो की खराबी है। (२४) क्या हम ने जमीन को समेटने वाली नही बनाया ? (२५) (यानी) ज़िंदो और मुर्दो को, (२६) और उस पर ऊचे-ऊचे पहाड रख दिए और तुम लोगो को मीठा पानी पिलाया, (२७) उस दिन झुठलाने वालो की खरावी है। (२८) जिस चीज़ को तुम झुठलाया करते थे, (अब) उस की तरफ चलो, (२९) (यानी) उस साए की तरफ चलो, जिस की तीन शाखे है, (३०) न ठडी छाव और न लपट से बचाव, (३१) उस मे आग की (इतनी-इतनी बडी) चिंगारिया उडती है, जैसे महल, (३२) गोया पीले रंग के ऊट है, (३३) उस दिन झुठलाने वालो की खराबी है। (३४) यह वह दिन है कि (लोग) लब तक न हिला सकेंगे, (३५) और न उन को इजाज़त दी जाएगी कि उज्र कर सके। (३६) उस दिन झुठलाने वालो की खरावी है। (३७) यही फैसले का दिन है, (जिस मे) हम ने तुम को और पहले के लोगो को जमा किया है। (३८) अगर तुम को कोई दाव आता हो तो मुझ से कर चलो। (३९) उस दिन झुठलाने वालो की खराबी है। (४०) ★

वेशक परहेजगार सायो और चश्मो मे होंगे। (४१) और मेवो मे जो उन को पसन्द हो, (४२) जो अमल तुम करते रहे थे, उन के वदले मे मज़े से खाओ और पियो। (४३) हम नेको को ऐसा ही बदला दिया करते है। (४४) उस दिन झुठलाने वालो की खरावी है। (४५) (ऐ झुठलाने वालो !) तुम किसी कदर खा लो और फायदे उठा लो, तुम वेशक गुनाहगार हो। (४६) उस दिन झुठलाने वालो की खराबी है। (४७) और जब उन से कहा जाता है कि (खुदा के आगे) झुको तो झुकते नही। (४८) उस दिन झुठलाने वालो की खरावी है। (४९) अब इस के बाद ये कौन-सी बात पर ईमान लाएगे ? (५०)★

★रु १/२१ आ ४० ★रु २/२२ आ १०

तीसवां पारः अम्-म य-त-सा-अलून

७८ सूरतुन्नबइ ८०

(मक्की) इस सूरः मे अरबी के ८०१ अक्षर, १७४ शब्द, ४० आयते और २ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ◉

अम्-म य-त-सा-अलून (१) अनिन्न-व-इल्-अज़ीम (२) अल्लज़ी हुम् फीहि मुख़्तलिफून (३) कल्ला स-यअ्-लमू-न (४) सुम्-म कल्ला स-यअ्-लमून (५) अ-लम् नज्अलिल्-अर्-ज मिहादव्- (६) वल्जिबा-ल औतादव्- (७) व ख़-लक्नाकुम् अज़्वाजव्- (८) व ज-अ़ल्ना नौमकुम् सुबातव्- (९) व ज-अल्-नल्लै-ल लिबासव्- (१०) व ज-अ़ल्नन्नहा-र मआ़शव्- (११) व बनैना फौ-क़कुम् सब्-अन् शिदादव्- (१२) व ज-अल्ना सिराजव्वह्हा-जव्- (१३) व अन्ज़ल्ना मिनल्-मुअ-सिराति मा-अन् सज्जाजल्- (१४) लि-नुख़्रि-ज बिही ह़ब्बव्-व नवातव- (१५) व जन्नातिन अल्-फाफा (१६) इन्-न यौमलफस्लि का-न मीकातय्- (१७) यौ-म युन्फख़ु फिस्सूरि फ़-तअ्-तू-न अफ़्वाजंव्- (१८) व फुतिह़तिस्-समाउ फ़-कानत अब्-वावव्- (१९) व सुय्यि-रतिल-जिबालु फ़-कानत सराबा (२०) इन्-न ज-हन्न-म कानत मिर्-सादल- (२१) लित्ता-गी-न म-आबल्- (२२) लाबिसी-न फ़ीहा अह्-क़ाबा (२३) ला यज़ूकू-न फीहा बर्दव्-व ला शराबन् (२४) इल्ला ह़मीमव्-व गस्सा-क़न् (२५) जज़ाअंव्विफाक़ा (२६) इन्नहुम् कानू ला यर्जू-न ह़िसाबव्- (२७) व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा (२८) व कुल-ल शैइन् अह़्सैनाहु कितावन् (२९) फ़ज़ूकू फ-लन् नजी-द-कुम् इल्ला अज़ावा ★ (३०) इन्-न लिल-मुत्तकी-न मफाज़न् (३१) ह़-दाइ-क़ व अअ़्-नावव्- (३२) व कवाअि-ब अत-राबव्- (३३) व कअ्-सन् दिहाक़ा (३४) ला यस्-मअू-न फीहा लग्वव्-व ला किज़्ज़ाबा (३५) जज़ाअम् - मिर्रब्बि-क अ़ताअन् ह़िसाबर्- (३६)

سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۝ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ
مُخْتَلِفُوْنَ ۝ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝ اَلَمْ نَجْعَلِ
الْاَرْضَ مِهٰدًا ۝ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۝ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۝ وَّجَعَلْنَا
نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۝ وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝ وَّ
بَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۝ وَّاَنْزَلْنَا
مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۝ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۝ وَّجَنّٰتٍ
اَلْفَافًا ۝ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۝ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ
اَفْوَاجًا ۝ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۝ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ
سَرَابًا ۝ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ۝ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ
اَحْقَابًا ۝ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ۝
جَزَآءً وِّفَاقًا ۝ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ۝ وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
كِذَّابًا ۝ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ۝ فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا
عَذَابًا ۝ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ۝ حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ۝ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ۝
وَّكَاْسًا دِهَاقًا ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ۝ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ
عَطَآءً حِسَابًا ۝ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا

★रु. १/१ आ ३०

७८ सूरः नबा ८०

सूर नबा मक्की है। इस में चालीस आयतें और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ये) लोग किस चीज के बारे मे पूछते है ? (१) (क्या) बडी खबर के बारे मे ? (२) जिस मे ये इख्तिलाफ कर रहे है। (३) देखो, ये बहुत जल्द जान लेगे। (४) फिर देखो, ये बहुत जल्द जान लेगे। (५) क्या हम ने जमीन को बिछौना नही बनाया ? (६) और पहाडो को (उस की) मेखे (नही ठहराया ?) (७) (बेशक बनाया) और तुम को जोडा-जोडा भी पैदा किया, (८) और नीद को तुम्हारे लिए आराम की (वजह) बनाया, (९) और रात को पर्दा मुक़र्रर किया, (१०) और दिन को रोजी (का वक्त) करार दिया, (११) और तुम्हारे ऊपर सात मजबूत (आसमान) बनाये, (१२) और (सूरज का) रोशन चिराग बनाया, (१३) और निचुडते बादलो से मूसलाधार मेह बरसाया, (१४) ताकि उस से अनाज और सब्जा पैदा करे, (१५) और घने-घने बाग। (१६) बेशक फैसले का दिन मुकर्रर है, (१७) जिस दिन सूर फूका जाएगा, तो तुम लोग गुट के गुट आ मौजूद होगे, (१८) और आसमान खोला जाएगा, तो (उस मे) दरवाजे हो जाएगे, (१९) और पहाड चलाए जाएगे, तो वे रेत हो कर रह जाएगे। (२०) बेशक दोजख घात मे है, (२१) (यानी) सर-कशो का वही ठिकाना है। (२२) उस मे मुद्दतो पडे रहेंगे। (२३) वहा न ठडक का मजा चखेगे, न (कुछ) पीना (नसीब होगा), (२४) मगर गर्म पानी और बहती पीप, (२५) (यह) बदला है पूरा-पूरा। (२६) ये लोग हिसाब (आखिरत) की उम्मीद नही रखते थे। (२७) और हमारी आयतो को झूठ समझ कर झुठलाते रहते थे। (२८) और हम ने हर चीज को लिख कर जब्त कर रखा है। (२९) सो (अब) मजा चखो। हम तुम पर अजाब ही बढाते जाएगे। (३०)★

बेशक परहेजगारो के लिए कामियाबी है। (३१) (यानी) बाग और अगूर, (३२) और हम-उम्र नव-जवान औरते, (३३) और शराब के छलकते हुए गिलास, (३४) वहां न बेहूदा बात सुनेगे, न झूठ (खुराफात)।[1] (३५) यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बदला है व इनाम, (३६)

---

१ कोई किसी से झगडता नही कि उस की बात झुठलावे।

★रु. १/१ आ ३०

रब्बिस्समावाति वल्अर्जि व मा बैनहुमर्रह्मानि ला यम्लिकू-न मिन्हु खिताबा ج (३७) यौ-म यकूमुर्रूहु वल्मला-इकतु सफ्फल्-ला य-त-कल्लमू-न इल्ला मन् अजि-न लहुर्रह्मानु व क़ा-ल सवाबा (३८) जालिकल-यौमुल्हक़्क़ु ج फ-मन् शा-अत्त-ख-ज इला रब्बिही मआबा (३९) इन्ना अन्जर्नाकुम् अजाबन् करीबंय्- صلے यौ-म यन्जुरुल्-मरउ मा क़द्-द-मत यदाहु व यकूलुल-काफिरु यालैतनी कुन्तु तुराबा ★ (४०)

७९ सूरतुन्-नाज़िआति ८१

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ७९१ अक्षर, १८१ शब्द, ४६ आयते और २ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वन्नाजिआति गर्कन्- لا (१) वन्नाशितति नश्तं-व्- لا (२) वस्साबिहाति सब्हन् لا (३) फ़स्साबिक़ाति सब्कन् لا (४) फ़ल्मुदब्बिराति अम्रा ▨ (५) यौ-म तर्जुफुर्राजिफतु لا (६) तत्बअुहर-रादिफ़ः ط (७) क़ुलूबु य्यौमइजिंव्वाजिफतुन् لا (८) अब्सारुहा खाशिअ ▨ (९) यकूलू-न अ इन्ना ल-मर्दूदू-न फिल्-हाफिर ط (१०) अ इजा कुन्ना अिजामन् नखिर ط (११) कालू तिल्-क इजन् कर्रतुन् खासिर. ▨ (१२) · फ़-इन्नमा हि-य जज्-रतु व्वाहिदतुन् لا (१३) फ-इजा हुम् बिस्साहिर. ط (१४) हल् अता-क हदीसु मूसा ▨ (१५) इज् नादाहु रब्बुहू बिल्वादिल-मुकद्दसि तुवा ج (१६) इज्हब् इला फ़िर्औ-न इन्नहू तगा صلے (१७) फकुल् हल् ल-क इला अन् त-जक्का لا (१८) व अह्दि-य-क इला रब्बि-क फ़-तख्शा ج (१९) फ-अराहुल-आ-य-तल-कुब्रा صلے (२०) फ-कज्ज-ब व असा صلے (२१) सुम्-म अद्-ब-र यस्आ صلے (२२) फ-ह-श-र फनादा صلے (२३) फका-ल अ-न रब्बुकुमुल-अअ्-ला صلے (२४) फ-अ-ख-जहुल्लाहु नकालल्-आखिरति वल्ऊला ط (२५) इन्-न फ़ी जालि-क ल-अिब्रतल-लिमय्यख्शा ط ★ (२६) अ अन्तुम् अशद्दु खल् - क़न् अमिस्समाउ ط बनाहा وقف (२७)

الٰزعٰت ٧٩ — ٣٠ — عمّ

يملكون منه خطابا ۝ يوم يقوم الروح والملٰئكة صفا لا
يتكلمون الا من اذن له الرحمٰن وقال صوابا ۝ ذٰلك اليوم
الحق فمن شاء اتخذ الى ربه مابا ۝ انا انذرنٰكم عذابا قريبا
يوم ينظر المرء ما قدمت يداه ويقول الكافر يٰليتني كنت ترابا ۝
سورة النّٰزعٰت مكية وهي ست واربعون اٰية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمٰن الرحيم
والنّٰزعٰت غرقا ۝ والنّٰشطٰت نشطا ۝ والسّٰبحٰت سبحا ۝ فالسّٰبقٰت
سبقا ۝ فالمدبرٰت امرا ۝ يوم ترجف الراجفة ۝ تتبعها الرادفة ۝
قلوب يومئذ واجفة ۝ ابصارها خاشعة ۝ يقولون ءانا
لمردودون في الحافرة ۝ ءاذا كنا عظاما نخرة ۝ قالوا تلك
اذا كرة خاسرة ۝ فانما هي زجرة واحدة ۝ فاذا هم بالساهرة ۝
هل اتٰىك حديث موسٰى ۝ اذ نادٰىه ربه بالواد المقدس
طوى ۝ اذهب الى فرعون انه طغٰى ۝ فقل هل لك الى
ان تزكّٰى ۝ واهديك الى ربك فتخشٰى ۝ فارٰىه الاٰية الكبرٰى ۝
فكذب وعصٰى ۝ ثم ادبر يسعٰى ۝ فحشر فنادٰى ۝ فقال انا
ربكم الاعلٰى ۝ فاخذه الله نكال الاٰخرة والاولٰى ۝ ان في
ذٰلك لعبرة لمن يخشٰى ۝ ءانتم اشد خلقا ام السماء

वह जो आसमानो और जमीन और जो उन दोनो मे है, सब का मालिक है, बडा मेहरबान, किसी को उस से बात करने का यारा न होगा। (३७) जिस दिन रूहुल अमीन और (और) फरिश्ते सफ बाध कर खडे हो, तो कोई बोल न सकेगा, मगर जिस को (खुदा-ए-) रहमान इजाजत बख्शे और उस ने बात भी दुरुस्त कही हो। (३८) यह दिन बर-हक है। पस जो शख्स चाहे अपने परवरदिगार के पास ठिकाना बना ले। (३९) हम ने तुम को अजाब से, जो बहुत जल्द आने वाला है, आगाह कर दिया है। जिस दिन हर शख्स उन (आमाल) को जो उन से आगे भेजे होगे, देख लेगा और काफिर कहेगा कि ऐ काश! मैं मिट्टी होता। (४०) ★

८१ सूरः नाज़िआत ७९

सूर नाजिआत मक्की है। इस मे छियालीस आयते और दो रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

उन (फरिश्तो) की कसम, जो डूब कर खीच लेते है, (१) और उन की जो आसानी से खोल देते है, (२) और उन की जो तैरते-फिरते है, (३) फिर लपक कर आगे बढते है, (४) फिर (दुनिया के) कामो का इन्तिजाम करते है ▨(५) (कि वह दिन आ कर रहेगा), जिस दिन जमीन को भोचाल आएगा, (६) फिर उस के पीछे और (भोचाल) आएगा, (७) उस दिन (लोगो के) दिल डर रहे होगे। (८) (और) आखे झुकी हुई▨ (९) काफिर कहते हैं, क्या हम उलटे पाव फिर लौटेगे? (१०) भला जब हम खोखली हड्डियां हो जाएंगे, (तो फिर जिंदा किए जाएगे)। (११) कहते हैं कि यह लौटना तो नुक्सान (की वजह) है▨(१२) वह तो सिर्फ एक डाट होगी। (१३) उस वक्त वे (सब हश्र के) मैदान मे जमा होगे। (१४) भला तुम को मूसा की हिकायत पहुची है, ▨(१५) जब उन के परवरदिगार ने उन को पाक मैदान (यानी) तुवा मे पुकारा, (१६) (और हुक्म दिया) कि फिऔन के पास जाओ, वह सरकश हो रहा है, (१७) और (उस मे) कहो, क्या तू चाहता है कि पाक हो जाए, (१८) और मै तुझे तेरे परवरदिगार का रास्ता बताऊ, ताकि तुझ को खौफ (पैदा) हो। (१९) गरज उन्हो ने उस को बडी निशानी दिखायी, (२०) मगर उस ने झुठलाया और न माना, (२१) फिर लौट गया और तद्बीरे करने लगा, (२२) और (लोगो को) इकट्ठा किया और पुकारा, (२३) कहने लगा कि तुम्हारा सब से बडा मालिक मै हू। (२४) तो खुदा ने उस को दुनिया और आखिरत (दोनो) के अजाब मे पकड लिया। (२५) जो शख्स (खुदा से) डर रखता है, उस के लिए इस (किस्से) मे इब्रत है। (२६)★

भला तुम्हारा बनाना मुश्किल है या आसमान का? उसी ने उस को बनाया, (२७) उस की

---

१ जिन चीज़ो की यह खूबिया बयान की गयी हैं, उन के बारे मे आम राय यही है कि वे फरिश्ते है इसी लिए तर्जुमे मे हम ने फरिश्तो का लफ्ज़ बढा दिया है। डूब कर खीचने से मुराद रूहो का खीचना है। किसी की रूह को मुश्किल से निकालते है और किसी की रूह को आसानी से गोया बन्द खोल देते है।

र-फ़-अ सम्कहा फ-सव्वाहा (२८) व अग्त-श लैलहा व अख़्र-ज जुहाहा (२९) वलअर्-ज बअ्-द जालि-क दहाहा (३०) अख़्-र-ज मिन्हा मा-अहा व मर्आहा (३१) वलजिबा-ल अर्साहा (३२) मताअल्-लकुम् व लि-अन्आमिकुम् (३३) फ़-इजा जा-अतित्-ताम्मतुल-कुब्रा (३४) यौ-म य-त-जक्करुल् इन्सानु मा सआ (३५) व बुर्रिजतिल-जहीमु लिमय्यरा (३६) फ़-अम्मा मन् तगा (३७) व आ-स-रल्-हयातद्दुन्या (३८) फ-इन्नल्-जही-म हियल्-मअ्वा (३९) व अम्मा मन् ख़ा-फ मका-म रब्बिही व नहन्नफ्-स अनिल्-हवा (४०) फ-इन्नल-जन्न-त हि-यल्-मअ्वा (४१) यस्-अलू-न-क अनिस्साअति अय्या-न मुर्साहा (४२) फ़ी-म अन्-त मिन् जिक्-राहा (४३) इला रब्बि-क मुन्तहाहा (४४) इन्नमा अन्-त मुन्जिरु मय्यख़्-शाहा (४५) क-अन्नहुम् यौ-म यरौनहा लम् यलबसू इल्ला अशिय्य-तन् औ जुहाहा★ (४६)

بنها ۞ رفع سمكها فسوىها ۞ واغطش ليلها واخرج ضحىها ۞
والارض بعد ذلك دحىها ۞ اخرج منها ماءها ومرعىها ۞ و
الجبال ارسىها ۞ متاعا لكم ولانعامكم ۞ فاذا جاءت الطامة
الكبرى ۞ يوم يتذكر الانسان ما سعى ۞ وبرزت الجحيم لمن
يرى ۞ فاما من طغى ۞ واثر الحيوة الدنيا ۞ فان الجحيم هي
الماوى ۞ واما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوى ۞
فان الجنة هي الماوى ۞ يسئلونك عن الساعة ايان مرسىها ۞ فيم
انت من ذكرىها ۞ الى ربك منتهىها ۞ انما انت منذر من يخشىها ۞
كانهم يوم يرونها لم يلبثوا الا عشية او ضحىها ۞
سورة عبس مكية وهي اثنتان واربعون اية وفيها ركوع واحد
بسم الله الرحمن الرحيم
عبس وتولى ۞ ان جاءه الاعمى ۞ وما يدريك لعله يزكى ۞ او
يذكر فتنفعه الذكرى ۞ اما من استغنى ۞ فانت له
تصدى ۞ وما عليك الا يزكى ۞ واما من جاءك يسعى ۞ و
هو يخشى ۞ فانت عنه تلهى ۞ كلا انها تذكرة ۞ فمن شاء
ذكره ۞ في صحف مكرمة ۞ مرفوعة مطهرة ۞ بايدي
سفرة ۞ كرام بررة ۞ قتل الانسان ما اكفره ۞ من اي

८० सूरतु अ़-ब-स २४

(मक्की) इस सूर मे अरवी के ५५३ अक्षर, ११३ शब्द, ४२ आयतें और १ रुकूअ है।

विस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अ-ब-स व त-वल्ला (१) अन् जा-अहुल-अअ्-मा (२) व मा युद्री-क ल-अल्लहू यज्ज़क्का (३) औ यज्जक्करु फ-तन्फ-अ्-हुज्जिकरा (४) अम्मा मनिस्तग्ना (५) फ-अन्-त लहू त-सद्दा (६) व मा अलै-क अल्ला य-ज्जक्का (७) व अम्मा मन् जा-अ-क यस-आ (८) व हु-व यख़्शा (९) फ-अन-त अन्हु त-लह्हा (१०) कल्ला इन्नहा तज्कि-रतुन् (११) फ़-मन् शा-अ ज-क-रः ▨ (१२) फी मुहुफ़िम्-मुकर्रमतिम् (१३) मर्फूअतिम्-मुतह्-ह्-रतिम् (१४) बिऐदी सफ्-रतिन् (१५) किरामिम् - ब-र-र (१६) क़ुतिलल-इन्सानु मा अक्फर (१७) मिन् अय्यि शैइन् ख़-ल-क़ः (१८)

★रु २/४ आ २० ▨ व लाजिम

छत को ऊंचा किया, फिर उसे बराबर कर दिया. (२८) और उसी ने रात अधेरी बनायी और (दिन को) धूप निकाली, (२६) और उस के बाद ज़मीन को फैला दिया, (३०) उसी ने इस मे से इस का पानी निकाला और चारा उगाया, (३१) और उस पर पहाडो का बोझ रख दिया। (३२) यह सब कुछ तुम्हारे और तुम्हारे चौपायो के फायदे के लिए (किया)। (३३) तो जब बडी आफत आएगी, (३४) उस दिन इंसान अपने कामो को याद करेगा, (३५) और दोजख देखने वाले के सामने निकाल कर रख दी जाएगी, (३६) तो जिस ने सरकशी की, (३७) और दुनिया की ज़िंदगी को मुकद्दम समझा, (३८) उस का ठिकाना दोज़ख है। (३६) और जो अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता और जी को ख्वाहिशो से रोकता रहा, (४०) उस का ठिकाना बहिश्त है। (४१) (ऐ पैगम्बर ! लोग) तुम से कियामत के बारे मे पूछते हैं कि वह कब वाकेअ होगी ? (४२) सो तुम उस के जिक्र से किस फिक्र मे हो ? (४३) उस का मुन्तहा (यानी वाकेअ होने का वक्त) तुम्हारे परवरदिगार ही को (मालूम है)[1] (४४) जो शख्स उस से डर रखता है, तुम तो उसी को डर सुनाने वाले हो। (४५) जब वे उस को देखेगे, (तो ऐसा ख्याल करेंगे) कि गोया (दुनिया मे सिर्फ) एक शाम या सुबह रहे थे। (४६)★

८० सूरः अ-ब-स २४

सूर अ-ब-स मक्की है। इस मे ४२ आयते और एक रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(मुहम्मद मुस्तफा) तुर्शरू हुए और मुह फेर बैठे, (१) कि उन के पास एक अधा आया. (२) और तुम को क्या खबर, शायद वह पाकी हासिल करता, (३) या सोचता तो समझाना उसे फायदा देता। (४) जो परवाह नही करता, (५) उस की तरफ तो तवज्जोह करते हो, (६) हालाकि अगर वह न संवरे, तो तुम पर कुछ (इल्जाम) नही, (७) और जो तुम्हारे पास दौडता हुआ आया, (८) और (खुदा से) डरता है, (६) उस से तुम बे-रुखी करते हो,[2] (१०) देखो यह (कुरआन) नसीहत है, (११) पस जो चाहे, उसे याद रखे▨ (१२) अदब के काबिल पन्नो मे (लिखा हुआ), (१३) जो बुलन्द मकाम पर रखे हुए (और) पाक है, (१४) (ऐसे) लिखने वालो के हाथो मे, (१५) जो सरदार और नेक है, (१६) इसान हलाक हो जाए, कैसा ना-शुक्रा है (१७) उसे

१ पूछते-पूछते इसी तक पहुचता है, बीच मे सब बे-खबर है।

२ हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते है कि जनाबे रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उत्बा बिन रबीआ और अबू जह्ल बिन हिशाम और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब से बडी तवज्जोह से बातें कर रहे थे क्योंकि आप दिल से चाहते थे कि वे इस्लाम ले आए। इतने मे अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम,जो आखो से मजबूर थे आए, और हज़रत से कहने लगे कि मुझ को कुरआन सुनाइए और जो कुछ खुदा ने आप को सिखाया है वह मुझे सिखाइए ? आप ने इस हालत मे उन की बात को पसन्द न फरमाया और पेशानी पर बल ला कर उन की तरफ से मुह फेर लिया। इस पर ये आयतें नाज़िल हुयी।

★रु २/४ आ २० ▨ व लाज़िम

मिन् नुत्-फ़तिन् ط ख-ल-क़हू फ़-क़द्-द-रहू ۚ (१६) सुम्मस्सबी-ल यस्स-रहू ۚ (२०) सुम्-म अमातहू फ़-अक़्ब-रहू ۚ (२१) सुम्-म इज़ा शा-अ अन्शरः ط (२२) कल्ला लम्मा यक़्ज़ि मा अ-म-रः ط (२३) फ़ल्-यन्ज़ुरिल-इन्सानु इला तआमिही ۚ (२४) अन्ना स-बब्नल-मा-अ सब्बन् ۚ (२५) सुम्-म श-क़क़्नल्अर्-ज शक़्क़न् ۚ (२६) फ़-अम्बत्ना फ़ीहा हब्बव्- ۚ (२७) व अि-न-बव्-व क़ज़्बव्- ۚ (२८) व ज़ैतूनव्-व नख़्लव्- (२९) व हदाइ-क़ ग़ुल्बव्- ۚ (३०) व फ़ाकिहतव्-व अब्बम्- ۚ (३१) मताअल्-लकुम् व लि-अन्आमिकुम् ط (३२) फ़-इज़ा जा-अतिस्साख़्ख़ ۚ (३३) यौ-म यफ़िर्रुल-मरउ मिन् अख़ीहि ۚ (३४) व उम्मिही व अबीहि ۚ (३५) व साहिबतिही व बनीह ط (३६) लि-कुल्लिम्-रिइम्-मिन्हुम् यौमइज़िन् शअ्नु य्युग्नीह ط (३७) वुजूहु य्यौमइज़िम्-मुस्फ़ि-र-तुन् ۚ (३८) ज़ाहि-कतुम्-मुस्तब्शि-रतुन् ۚ (३९) व वुजूहु य्यौमइज़िन् अलैहा ग़-ब-रतुन् ۚ (४०) तर्हक़ुहा क़-त-र ط (४१) उलाइ-क हुमुल्-क-फ़-रतुल्-फ़-ज-र ★ (४२)

عبس　　التكوير

شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝ مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ۝ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝
ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ ۝ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا
أَمَرَهُ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ۝ أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۝
ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۝ فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۝ وَعِنَبًا وَقَضْبًا ۝ وَ
زَيْتُونًا وَنَخْلًا ۝ وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۝ وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ۝ مَتَاعًا لَكُمْ
وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝ فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ۝ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝
وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ
شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُسْفِرَةٌ ۝ ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ ۝
وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝
سُورَةُ التَّكْوِيرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝
وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝ وَإِذَا الْبِحَارُ
سُجِّرَتْ ۝ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝ وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝ بِأَيِّ
ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝ وَ
إِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا
أَحْضَرَتْ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا

منزل

८१ सूरतुत्-तक्वीरि ७

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ४३६ अक्षर, १०४ शब्द, २९ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

इज़श्शम्सु कुव्विरत् ۚ (१) व इज़न्नुजूमुन्-क-द-रत् ۚ (२) व इज़ल-जिबा सुय्यिरत् ۚ (३) व इज़ल्अिशारु अुत्तिलत् ۚ (४) व इज़ल्वुहूशु हुशिरत् ۚ (५) इज़ल्बिहारु सुज्जिरत् ۚ (६) व इज़न्नुफ़ूसु ज़ुव्विजत् ۚ (७) व इज़ल्मौऊदतु सु लत् ۚ (८) बिअय्यि ज़म्बिन् क़ुतिलत् ط (९) व इज़स्सुहुफ़ु नुशिरत् ۚ (१०) इज़स्समाउ कुशितत् ۚ (११) व इज़ल - जहीमु सुअ्-अिरत् ۚ (१२ व इज़ल्जन्नतु उज़्लिफ़त ۚ (१३) अलिमत नफ़्सुम्मा अह् - ज - र (१४) फ़ला उक़्सिमु बिलख़ुन्नसिल्- ۚ (१५) जवारिल्-कुन्नस ۚ (१६

★रु. १/५ आ ४२

(खुदा ने) किस चीज़ से बनाया ? (१८) नुत्फ़े से बनाया, फिर उस का अन्दाज़ा मुकर्रर किया, (१६) फिर उस के लिए रास्ता आसान कर दिया, (२०) फिर उस को मौत दी, फिर क़ब्र मे दफ़्न कराया, (२१) फिर जब चाहेगा, उसे उठा खडा करेगा। (२२) कुछ शक नही कि ख़ुदा ने उसे जो हुक्म दिया, उस ने उस पर अमल न किया, (२३) तो इसान को चाहिए कि अपने खाने की तरफ नज़र करे। (२४) बेशक हम ही ने पानी बरसाया, (२५) फिर हम ही ने जमीन को चीरा-फाडा। (२६) फिर हम ही ने उसमे अनाज उगाया, (२७) और अगूर और तरकारी, (२८) और जैतून और खजूरे, (२६) और घने-घने बाग, (३०) और मेवे और चारा, (३१) (यह सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायो के लिए बनाया, (३२) तो जब (कियामत का) गुल मचेगा, (३३) उस दिन आदमी अपने भाई से दूर भागेगा, (३४) और अपनी मा और अपने बाप से, (३५) और अपनी बीवी और अपने बेटे से, (३६) हर आदमी उस दिन एक फ़िक्र में होगा, जो उसे (मसरूफियत के लिए) बस करेगा, (३७) और कितने मुह उस दिन चमक रहे होंगे, (३८) हसते और खिले हुए चेहरे (ये नेक लोग है), (३६) और कितने मुह होगे, जिन पर धूल पड रही होगी, (४०) (और) स्याही चढ रही होगी, (४१) ये कुफ्फार बद-किरदार है (४२) ★

८१ सूरः तक्वीर ७

सूर तक्वीर मक्की है और इस मे २६ आयते है। और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब सूरज लपेट लिया जाएगा, (१) और जब तारे बे-नूर हो जाएगे, (२) और जब पहाड चलाए जाएगे, (३) और जब ब्याने वाली ऊटनिया बेकार हो जाएंगी, (४) और जब वहशी जानवर जमा किए जाएगे, (५) और जब दरिया आग हो जाएगे, (६) और जब रूहे (बदनों से) मिला दी जाएंगी। (७) और जब उस लडकी से जो ज़िंदा दफ्न की गयी हो, पूछा जाएगा, (८) कि वह किस गुनाह पर मार दी गयी ? (६) और जब (अमलो के) दफ्तर खोले जाएगे, (१०) और जब आसमान की खाल खीच ली जाएगी, (११) और जब दोज़ख़ (की आग) भड़कायी जाएगी, (१२) और बहिश्त जब करीब लायी जाएगी, (१३) तब हर शख़्स मालूम कर लेगा कि वह क्या ले कर आया है। (१४) हम को उन सितारों की कसम जो पीछे हट जाते है, (१५) और

★रु १/५ आ ४२

वल्लैलि इजा अस्-अस (१७) वस्सुब्हि इजा त-नफ़्फ़स (१८) इन्नहू लकौलु रसूलिन् करीमिन् (१९) जी कुव्वतिन् अिन-द जिल्अर्शि मकीनिम्- (२०) मुताअिन् सम्-म अमीन (२१) व मा साहिबुकुम् बिमज्नून (२२) व ल-क़द् रआहु बिल्उफुकिल्-मुबीन (२३) व मा हु-व अलल्गैबि बिजनीन (२४) व मा हु-व बिकौलि शैतानिर्रजीम (२५) फ-ऐ-न तज्हबून (२६) इन् हु-व इल्ला जिक्रुल-लिल्आलमीन (२७) लिमन् शा-अ मिन्कुम् अय्यस्तकीम (२८) व मा तशाऊ-न इल्ला अय्यशाअल्लाहु रब्बुल-आलमीन ★ (२९.)

८२ सूरतुल्-इन्फ़ितारि ८२

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३३४ अक्षर, ८० शब्द, १९ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

इजस्समाउन्फ-त-रत (१) व इजल-कवाकिबुन्-त-स-रत् (२) व इजल्बिहारु फुज्जिरत् (३) व इजल्कुबूरु बुअ-सिरत् (४) अलिमत नफ्सुम्मा कद्-द-मत् व अख्ख-रत् (५) या अय्युहल-इन्सानु मा गर्-र-क बिरब्बिकल-करीम (६) अल्लजी ख-ल-क-क फ-सव्वा-क फ़-अ-द-लक (७) फी अय्यि सूरतिम्-मा शा-अ रक्क-बक (८) कल्ला बल् तुकज्जिबू-न बिद्दीनि (९) व इन्-न अलैकुम् लहाफिज़ीन (१०) किरामन् कातिबीन (११) यअ्-लमू-न मा तफ्-अलून (१२) इन्नल-अब्रा-र लफी नईम (१३) व इन्नलफ़ुज्जा-र लफी जहीमिंय् (१४)-यस्लौनहा यौमद्दीन (१५) व मा हुम् अन्हा बिगाइबीन (१६) व मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (१७) सुम्-म मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (१८) यौ-म ला तम्लिकु नफ्सुल-लिनफ्सिन् शैअन वल्अम्रु यौमइजिल-लिल्लाह ★ (१९) ●

عَسْعَسَ ﴿١٧﴾ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾
ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾ مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾ وَمَا
صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ﴿٢٣﴾ وَمَا هُوَ عَلَى
الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ﴿٢٥﴾ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ﴿٢٦﴾
إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٢٧﴾ لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا
تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

سُورَةُ الْانْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا الْبِحَارُ
فُجِّرَتْ ﴿٣﴾ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ وَ
أَخَّرَتْ ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ﴿٦﴾ الَّذِي خَلَقَكَ
فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾ كَلَّا بَلْ
تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ﴿٩﴾ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ﴿١٠﴾ كِرَامًا كَاتِبِينَ ﴿١١﴾
يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ﴿١٢﴾ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾ وَإِنَّ الْفُجَّارَ
لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾
وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٨﴾ يَوْمَ
لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ﴿١٩﴾

जो सैर करते और गायब हो जाते हैं, (१६) और रात की कसम, जब खत्म होने लगती है, (१७) और सुबह की कसम जब नमूदार होती है, (१८) कि बेशक यह (कुरआन) बुलंद दर्जा फरिश्ते की जुबान का पैगाम है, (१९) जो ताकत वाला, अर्श के मालिक के यहा ऊंचे दर्जे वाला, (२०) सरदार (और) अमानतदार है। (२१) और (मक्के वालो !) तुम्हारे रफीक (यानी मुहम्मद) दीवाने नही है। (२२) बेशक उन्होने इस (फरिश्ते) को (आसमान के) खुले (यानी पूर्वी) किनारे पर देखा है, (२३) और वह छिपी बातो (के जाहिर करने) मे बखील नही, (२४) और यह शैतान मर्दूद का कलाम नही। (२५) फिर तुम किधर जा रहे हो ? (२६) यह तो जहान के लोगो के लिए नसीहत है, (२७) (यानी) उस के लिए जो तुम मे से सीधी चाल चलना चाहे, (२८) और तुम कुछ भी नही चाह सकते, मगर वही जो खुदा-ए-रब्बुल आलमीन चाहे। (२९)☆

८२ सूरः इन्फ़ितार ८२

सूर इन्फितार मक्की है। इस मे १९ आयते है। और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा, (१) और जब तारे झड पडेंगे, (२) और जब दरिया बह (कर एक दूसरे से मिल) जाएगे, (३) और जब कब्रे उखेड दी जाएगी, (४) तब हर शख्स मालूम कर लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा था और पीछे क्या छोडा था ? (५) ऐ इंसान ! तुझ को अपने परवरदिगारे करीम के बारे मे किस चीज ने धोखा दिया ? (६) (वही तो है) जिस ने तुझे बनाया और (तेरे अंगो को) ठीक किया और (तेरी कामत को) एतदाल मे रखा, (७) और जिस सूरत मे चाहा, तुझे जोड दिया, (८) मगर हैरत (अफसोस !) तुम लोग बदले को झुठलाते हो (९) हालांकि तुम पर निगहबान मुकर्रर है, (१०) बुलंद मर्तबा, (तुम्हारी बातो के) लिखने वाले (११) जो तुम करते हो, वे उसे जानते है, (१२) बेशक नेक लोग नेमतो (की) बहिश्त मे होंगे। (१३) और बुरे दोजख में, (१४) (यानी) बदले के दिन उस मे दाखिल होंगे, (१५) और उस से छिप नही सकेंगे, (१६) और तुम्हे क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है ? (१७) फिर तुम्हे क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है ? (१८) जिस दिन कोई किसी का कुछ भला न कर सकेगा और हुक्म उस दिन खुदा ही का होगा। (१९) ★ ●

★रु १/६ आ २९ ★रु १/७ आ १९ ● रुकूअ १/४

८३ सूरतुल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन ८६

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ७५८ अक्षर, १७२ शब्द, ३६ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वैलुल् - लिलमुतफ्फिफीन (१) अल्लजी-न इजक्तालू अलन्नासि यस्तौफून (२) व इजा कालू-हुम् अव्व-जनूहुम् युख्सिरून (३) अला यजुन्नु उलाइ-क अन्नहुम् मब्अूसून (४) लियौमिन् अजीम (५) यौ-म यकूमुन्नासु लिरब्बिल्-आलमीन (६) कल्ला इन्-न किताबल्-फुज्जारि लफी सिज्जीन (७) व मा अद्रा-क मा सिज्जीन (८) किताबुम्-मर्कूम (९) वैलुय्यौ-म - इजिलिल्-मुकज्जिबीन (१०) अल्लजी-न युकज्जिबू-न बियौमिद्दीन (११) व मा युकज्जिबु बिही इल्ला कुल्लु मुअ्-तदिन् असीम (१२) इजा तुत्ला अलैहि आयातुना का-ल असातीरुल्-अव्वलीन (१३) कल्ला बल् रा-न अला कुलूबिहिम् मा कानू यक्सिबून (१४) कल्ला इन्नहुम् अर्रब्बिहिम् यौमइजिल्-ल-मह्जूबून (१५) सुम्-म इन्नहुम् लसालुल्-जहीम (१६) सुम्-म युकालु हाजल्लजी कुन्तुम् बिही तुकज्जिबून (१७) कल्ला इन्-न किताबल्-अब्रारि लफी अिल्लिय्यीन (१८) व मा अद्रा-क मा अिल्लिय्यून (१९) किताबुम् - मर्कूमुय् (२०) यश्हदुहुल् - मुकर्रबून (२१)

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَثَلَاثُونَ آيَةً
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَيْلٌ لِلْمُطَفِّفِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝ وَ
إِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝ أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُمْ
مَبْعُوثُونَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝ كِتَابٌ
مَرْقُومٌ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ
الدِّينِ ۝ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ
آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ مَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَحْجُوبُونَ ۝ ثُمَّ
إِنَّهُمْ لَصَالُو الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝
كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ۝
كِتَابٌ مَرْقُومٌ ۝ يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝
عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ۝ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝
يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْتُومٍ ۝ خِتَامُهُ مِسْكٌ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ
الْمُتَنَافِسُونَ ۝ وَمِزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ۝ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝ وَإِذَا مَرُّوا

इन्नल् - अब्रा-र लफ़ी नअीम (२२) अलल् - अराइकि यन्जुरून (२३) तअ् - रिफु फ़ी वुजूहिहिम् नज्-र-तन्नअीम (२४) युस्कौ-न मिर्रहीक़िम् - मख्तूम (२५) खितामुहू मिस्क व फ़ी जालि-क फल् - य-त-नाफसिल्-मु-त-नाफिसून (२६) व मिजाजुहू मिन् तस्नीम (२७) अैनय्यश्रबु बिहल् - मुकर्रबून (२८) इन्नल्लजी-न अज्रमू कानू मिनल्लजी-न आमनू यज्-हकून (२९)

८३ सूरः मुतफ़्फ़फ़ीन ८६

सूर तत्फ़ीफ मक्की है, इस मे ३६ आयते और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

नाप और तौल मे कमी करने वालो के लिए खराबी है, (१) जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा ले, (२) और जब उन को नाप कर या तौल कर दे तो कम दें, (३) क्या ये लोग नही जानते कि उठाए भी जाएगे, (४) (यानी) एक बडे (सख्त) दिन मे, (५) जिस दिन (तमाम) लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होगे। (६) सुन रखो कि बद-कारो के आमाल सिज्जीन मे है, (७) और तुम क्या जानते हो कि सिज्जीन क्या चीज़ है ? (८) एक दफ्तर है लिखा हुआ। (९) उस दिन झुठलाने वालो की खराबी है, (१०) (यानी) जो इसाफ के दिन को झुठलाते है, (११) और उस को झुठलाता वही है जो हद से निकल जाने वाला गुनाहगार है। (१२) जब उस को हमारी आयतें सुनाई जाती है, तो कहता है, यह तो अगले लोगो की कहानिया हैं। (१३) देखो, ये जो (बुरे आमाल) करते है, उन का उन के दिलो पर ज़ग बैठ गया है, (१४) बेशक ये लोग उस दिन अपने परवरदिगार (के दीदार) से ओट मे होगे, (१५) फिर दोजख मे जा दाखिल होंगे, (१६) फिर उन से कहा जाएगा कि यह वही चीज़ है जिस को तुम झुठलाते थे। (१७) (यह भी) सुन रखो कि नेकों के आमाल इल्लीयीन मे है, (१८) और तुम को क्या मालूम कि इल्लीयीन क्या चीज़ है ? (१९) एक दफ्तर है लिखा हुआ, (२०) जिस के पास मुकर्रब (फरिश्ते) हाजिर रहते हैं। (२१) बेशक नेक लोग चैन मे होगे, (२२) तख्तो पर बैठे हुए नज़ारे करेंगे, (२३) तुम उन के चेहरो ही से राहत की ताज़गी मालूम कर लोगे, (२४) उन को खालिस शराब मुहरबन्द पिलायी जाएगी, (२५) (२६) जिस की मुहर मुश्क की होगी, तो (नेमतो का) शौक रखने वालों को चाहिए कि उसी का चाव करें। (२६) और इस मे तस्नीम (के पानी) की मिलावट होगी। (२७) वह एक चश्मा है, जिस मे से (ख़ुदा के) मुकर्रब पिएंगे, (२८) जो गुनाहगार (यानी कुफ़्फ़ार) है, वे (दुनिया में) मोमिनो से हसी किया करते थे। (२९) और जब

व इजा मर्रू बिहिम् य-त-गा-मजून (३०) व इजन्क़लबू इला अह्लिहिमुन्क़-लबू फकिहीन (३१) व इजा रऔहुम् क़ालू इन्-न हाउलाइ लजाल्लून (३२) व मा उर्सिलू अलैहिम् हाफिज़ीन (३३) फल-यौमल्लजी-न आमनू मिनल्-कुफ़्फ़ारि यज्-हकून (३४) अ़लल् - अराइ-कि यन्जुरून (३५) हल् सुव्विबल्-कुफ्फारु मा कानू यफ्-अलून ★ (३६)

يتغامزون ۝ وإذا انقلبوا إلى أهلهم انقلبوا فكهين ۝ وإذا
رأوهم قالوا إن هؤلاء لضالون ۝ وما أرسلوا عليهم حافظين ۝
فاليوم الذين آمنوا من الكفار يضحكون ۝ على الأرائك ينظرون ۝
هل ثوب الكفار ما كانوا يفعلون ۝
سورة الانشقاق مكية وهي خمس وعشرون آية
بسم الله الرحمن الرحيم
إذا السماء انشقت ۝ وأذنت لربها وحقت ۝ وإذا الأرض
مدت ۝ وألقت ما فيها وتخلت ۝ وأذنت لربها وحقت ۝ يا أيها
الإنسان إنك كادح إلى ربك كدحا فملاقيه ۝ فأما من أوتي
كتابه بيمينه ۝ فسوف يحاسب حسابا يسيرا ۝ وينقلب إلى
أهله مسرورا ۝ وأما من أوتي كتابه وراء ظهره ۝ فسوف يدعوا
ثبورا ۝ ويصلى سعيرا ۝ إنه كان في أهله مسرورا ۝ إنه ظن
أن لن يحور ۝ بلى إن ربه كان به بصيرا ۝ فلا أقسم
بالشفق ۝ والليل وما وسق ۝ والقمر إذا اتسق ۝ لتركبن طبقا عن
طبق ۝ فما لهم لا يؤمنون ۝ وإذا قرئ عليهم القرآن لا يسجدون ۝
بل الذين كفروا يكذبون ۝ والله أعلم بما يوعون ۝ فبشرهم
بعذاب أليم ۝ إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون ۝

८४ सूरतुल्-इन्शिक़ाक़ि ८३

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ४४८ अक्षर, १०८ शब्द, २५ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इजस्समाउन्शक़्क़त् (१) व अजिनत लिरब्बिहा व हुक्क़त (२) व इज़ल्अर्ज़ु मुद्दत् (३) व अल्क़त मा फीहा व त-ख़ल्लत (४) व अजिनत लिरब्बिहा व हुक्क़त (५) या अय्युहल-इन्सानु इन्न-क कादिहुन् इला रब्बि-क कद्हन् फमुलाकीहि (६) फ-अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही (७) फसौ-फ युहासबु हिसाबंय्यसीरा (८) व यन्कलिबु इला अह्लिही मसरूरा (९) व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू वरा-अ ज़ह्रिही (१०) फ़सौ-फ यद्अू सुबूरा (११) व यस्ला सअीरा (१२) इन्नहू का-न फी अह्लिही मसरूरा (१३) इन्नहू ज़न्-न अल्लंय्यहू-र (१४) बला इन-न रब्बहू का-न बिही बसीरा (१५) फला उक्सिमु बिश्शफ़कि (१६) वल्-लैलि व मा व-स-क (१७) वल्क-मरि इजत्त-स-क (१८) ल-तर्कबुन्-न त-ब्कन् अन् त़-बक (१९) फमा लहुम् ला युअ्मिनून (२०) व इजा कुरि-अ अ़लैहिमुल-कुर्आनु ला यस्जुदून ☐ (२१) बलिल्लजी-न क-फरू युकज्जिबून (२२) वल्लाहु अअ्-लमु बिमा यूअून (२३) फ़-बश्शिर्हुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीम (२४) इल्-लल्लजी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून ★ (२५)

★रु १/८ आ ३६ ☐ सजूद १३ ★रु १/९ आ २५ ∴ मु अि मु ता ख. १७

उन के पास स गुजरते, तो हिकारत से इशारे करते, (३०) और जब अपने घर को लौटते तो इतराते हुए लौटते, (३१) और जब उन (मोमिनो) को देखते तो कहते कि ये तो गुमराह है, (३२) हालाकि वे उन पर निगरा बना कर नही भेजे गये थे। (३३) तो आज मोमिन काफिरो मे हसी करेंगे, (३४) (और) तख्तो पर (बैठे हुए उन का हाल) देख रहे होगे। (३५) तो काफिरो को उन के अमलो का (पूरा-पूरा) बदला मिल गया। (३६)★

८४ सूरः इन्शिक़ाक़ ८३

सूर इन्शिकाक मक्की है, इस मे पचीस आयते है। और १ रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा, (१) और अपने परवरदिगार का फरमान बजा लाएगा और उसे वाजिब भी यही है, (२) और जब जमीन हमवार कर दी जाएगी। (३) और जो कुछ इस मे है, उसे निकाल कर बाहर डाल देगी और (बिल्कुल) खाली हो जाएगी, (४) और अपने परवरदिगार के इर्शाद की तामील करेगी और उस को लाजिम भी यही है, (तो कियामत कायम हो जाएगी।) (५) ऐ इसान! तू अपने परवरदिगार की तरफ (पहुचने मे) खूब कोशिश करता है, सो उस से जा मिलेगा। (६) तो जिस का नामा (-ए-आमाल) उस के दाहिने हाथ मे दिया जाएगा, (७) उस से आसान हिसाब लिया जाएगा, (८) और वह अपने घर वालो मे खुश-खुश आएगा, (९) और जिस का नामा (-ए-आमाल) उस की पीठ के पीछे से दिया जाएगा, (१०) वह मौत को पुकारेगा, (११) और दोजख मे दाखिल होगा, (१२) यह अपने अहल (व अयाल) मे मस्त रहता था, (१३) और ख्याल करता था कि (खुदा की तरफ) फिर कर न जाएगा, (१४) हा, (हा,) उस का परवरदिगार उस को देख रहा था। (१५) हमे शाम की लाली की कसम! (१६) और रात की और जिन चीजो को वह इकट्ठा कर लेती है, उन की, (१७) और चाद की जब पूरा हो जाए, (१८) कि तुम दर्जा-दर्जा (ऊचे रुत्बे पर) चढोगे, (१९) तो उन लोगो को क्या हुआ है कि ईमान नही लाते, (२०) और जब उन के सामने कुरआन पढा जाता है तो सज्दा नही करते,□ (२१) बल्कि काफिर झुठलाते हैं, (२२) और खुदा उन बातो को, जो ये अपने दिलो मे छिपाते है, खूब जानता है, (२३) तो उन को दुख देने वाले अजाब की खबर सुना दो। (२४) हा, जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बे-इन्तिहा बदला है। (२५)★

★रु १/८ आ ३६ ∴ मु. अ़ि मु ता ख १७ □सजूद १३ ★रु १/६ आ २६

८५ सूरतुल्-बुरूजि २७

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ४७५ अंक्षर, १०९ शब्द, २२ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

वस्समाइ ज़ातिल्बुरूजि // (१) वल-यौमिल-मौअूदि // (२) व शाहिदिव्-व मश्हूद ᵇ (३) क़ुति-ल अस्ह़ाबुल-उख्दूदि- // (४) -न्नारि ज़ातिल्वकूदि // (५) इज् हुम् अ़लैहा कुअूदुं व्- // (६) व हुम् अ़ला मा यफ्-अ़लू-न बिल्-मुअ्मिनी-न शुहूद ᵇ (७) व मा न-कमू मिन्हुम् इल्ला अय्युअ्मिनू बिल्लाहिल-अ़ज़ीज़िल-ह़मीद // (८) अ्ल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि ᵇ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद ᵇ (९) इन्नल्लज़ी-न फ़-तनुल्-मुअ्मिनी-न वल-मुअ्मि-नाति सुम्-म लम् यतूबू फ-लहुम् अज़ाबु ज-हन्न-म व लहुम् अ़ज़ाबुल-ह़रीक ᵇ (१०) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह़्तिहल-अन्हारु ज़ालिकल-फ़ौज़ुल-कबीर ᵇ (११) इन्-न बत्-श रब्बि-क ल-शदीद ᵇ (१२) इन्नहू हु-व युब्दिउ व युईद ᵇ (१३) व हुवल-गफ़ूरुल-वदूद // (१४) ज़ुल्अर्शिल-मजीद // (१५) फ़अ्-आलुल-लिमा युरीद ᵇ (१६) हल् अता-क ह़दीसुल्-जुनूद // (१७) फ़िर्औ-न व समूद ᵇ (१८) बलिल्लज़ी-न क-फरू फी तक्ज़ीबिव - // (१९) वल्लाहु मिंव्वराइहिम् मुहीत ᵇ (२०) बल् हु-व कुर्आनुम् - मजीद // (२१) फी लौहिम् - मह़्फ़ूज़ ★ (२२)

سورة البروج مكية وهي اثنتان وعشرون آية

بسم الله الرحمن الرحيم

والسماء ذات البروج ۝ واليوم الموعود ۝ وشاهد ومشهود ۝
قتل أصحب الأخدود ۝ النار ذات الوقود ۝ إذ هم عليها قعود ۝
وهم على ما يفعلون بالمؤمنين شهود ۝ وما نقموا منهم إلا
أن يؤمنوا بالله العزيز الحميد ۝ الذي له ملك السموت و
الأرض والله على كل شيء شهيد ۝ إن الذين فتنوا المؤمنين
والمؤمنت ثم لم يتوبوا فلهم عذاب جهنم ولهم عذاب
الحريق ۝ إن الذين آمنوا وعملوا الصلحت لهم جنت تجري
من تحتها الأنهر ذلك الفوز الكبير ۝ إن بطش ربك لشديد ۝
إنه هو يبدئ ويعيد ۝ وهو الغفور الودود ۝ ذو العرش
المجيد ۝ فعال لما يريد ۝ هل أتىك حديث الجنود ۝
فرعون وثمود ۝ بل الذين كفروا في تكذيب ۝ والله من
ورائهم محيط ۝ بل هو قرآن مجيد ۝ في لوح محفوظ ۝

سورة الطارق مكية وهي سبع عشرة آية

بسم الله الرحمن الرحيم

والسماء والطارق ۝ وما أدرىك ما الطارق ۝ النجم الثاقب ۝

८६ सूरतुत्-तारिक़ि ३६

(मक्की) इस सूर मे अरबी के २५४ अक्षर, ६१ शब्द, १७ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

वस्समाइ वत्तारिक़ि // (१) व मा अद्रा - क मत्तारिकु - // (२) — न्नज्मुस्साक़िबु // (३)

ᵇᵇ आयतह़िम्सीय ★रु १/१० आ २२
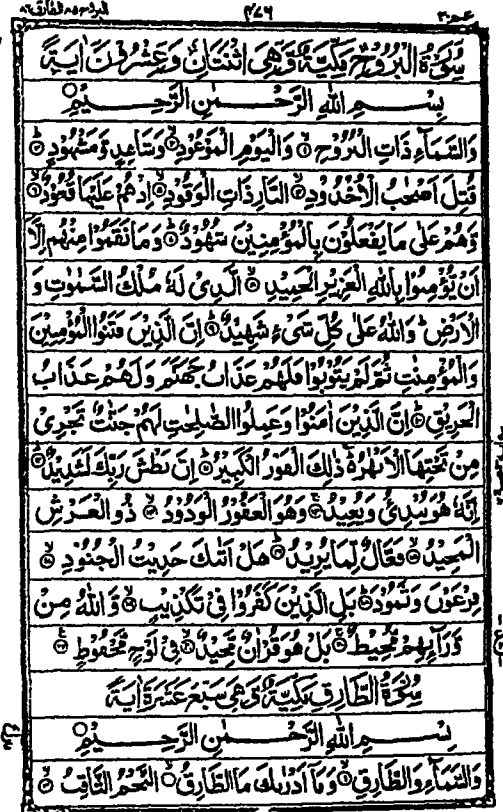
८५ सूरः बुरूज २७

सूर. बुरूज मक्की है, इस मे बाईस आयते है। और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

आसमान की कसम, जिस मे बुर्ज है,[1] (१) और उस दिन की, जिसका वायदा है, (२) और हाज़िर होने वाले की और जो उस के पास हाजिर किया जाए उस की, (३) कि खन्दको (के खोदने) वाले हलाक कर दिए गए, (४) (यानी) आग (की ख़न्दके) जिस मे ईधन (झोंक रखा था,) (५) जबकि वे उन (के किनारो) पर बैठे हुए थे, (६) और जो (सख्तिया) ईमान वालो पर कर रहे थे, उन को सामने देख रहे थे। (७) उन को मोमिनो की यही बात बुरी लगती थी कि वे खुदा पर ईमान लाए हुए थे, जो गालिब और तारीफ के काबिल है।[2] (८) जिस की आसमानो और जमीन मे बादशाही है और खुदा हर चीज को जानता है। (९) जिन लोगो ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतो को तक्लीफे दी और तौबा न की, उन को दोजख का (और) अजाब भी होगा और जलने का अजाब भी होगा। (१०) (और) जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन के लिए बाग है, जिन के नीचे नहरे बह रही है। यही बडी कामियाबी है ▨ (११) बेशक तुम्हारे परवरदिगार की पकड बहुत सख्त है। (१२) वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा (जिंदा) करेगा। (१३) और वह बख्शने वाला (और) मुहब्बत करने वाला है। (१४) अर्श का मालिक, बडी शान वाला, (१५) जो चाहता है, कर देता है, (१६) भला तुम को लश्करो का हाल मालूम हुआ है, (१७) (यानी) फिऔन और समूद का, (१८) लेकिन काफिर (जान-बूझ कर) झुठलाने मे (गिरफ्तार) है, (१९) और खुदा (भी) उन को गिर्दा-गिर्द मे घेरे हुए है। (२०) (वह किताब बकवास व झूठ नही,) बल्कि यह कुरआन अजीमुश्शान है, (२१) लौहे महफूज मे (लिखा हुआ।) (२२) ★

८६ सूरः तारिक़ ३६

सूर तारिक मक्की है, इस मे सत्तरह आयते और चार रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

आसमान और रात के वक्त आने वाले की कसम! (१) और तुम को क्या मालूम कि रात के वक़्त आने वाला क्या है? (२) वह तारा है, चमकने वाला, (३) कि कोई नफ्स नही, जिस पर

---

१ बुर्जो से मुराद तारे या उन की मजिले है। बुर्ज अरब मे महल को कहते है, तारो की मंजिलो का नाम [illegible] इस लिए रखा गया कि ये गोया उन के घर है।

२ कहते है अगले जमाने मे, जब कि दीन मे बहुत-सी खराबिया पड गयी और लोगो मे फित्ने और फसाद [illegible] हो गये, तो एक दीनदार और खुदा परस्त कौम ने अलग एक गाव आबाद किया और उस मे रहने-सहने [illegible] खुदा की इबादत करने लगे, यहा तक कि उस के काफिर ज़ालिम बादशाह को इस हाल से इत्तिला हुई तो उस ने उन लोगो को कहला भेजा कि जिन बुतो को हम पूजते है, तुम भी उन्ही को पूजो। उन्हो ने इन्कार किया और कहा कि हम खुदा के सिवा किसी की इबादत न करेंगे, क्योंकि वह हमारा माबूद है। बादशाह ने उन को धमकी दी कि अगर हमारे माबूदो को नही पूजोगे तो मैं तुम को कत्ल कर दूगा। उस का कुछ असर उन पे [illegible]।

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

▨ आयत हम्सीय ★रु १/१० आ २२

इन् कुल्लु नफ्सिल्-लम्मा अलैहा हाफ़िज़ ط (४) फ़ल्-यन्जुरिल-इन्सानु मिम्-म ख़ुलि-क ط (५) ख़ुलि-क़ मिम्माइन् दाफ़िक़िय्- لا (६) -यख़्रुजु मिम्बैनिस्सुल्बि वत्तराइब ط (७) इन्नहू अ़ला रज्अिही लकादिर ط (८) यौ-म तुब्-लस्सराइरु لا (९) फमा लहू मिन् कुव्वतिव्-व ला नासिर ط (१०) वस्समाइ जातिर्रज्अि لا (११) वल्अर्जि जातिस्सद्अि لا (१२) इन्नहू ल-क़ौलुन् फ़स्लु व्- لا (१३) व मा हु-व बिल्-हज़्लि ط (१४) इन्नहुम् यकीदू-न कैदंव्- لا (१५) व अकीदु कैदन् صلے (१६) फ़-मह-हिलिल-काफ़िरी-न अम्हिल्हुम् रुवैदा ★ (१७)

إن كل نفس لما عليها حافظ ۝ فلينظر الإنسان مم خلق ۝
خلق من ماء دافق ۝ يخرج من بين الصلب والترائب ۝
إنه على رجعه لقادر ۝ يوم تبلى السرائر ۝ فما له من قوة و
لا ناصر ۝ والسماء ذات الرجع ۝ والأرض ذات الصدع ۝
إنه لقول فصل ۝ وما هو بالهزل ۝ إنهم يكيدون كيدا ۝
وأكيد كيدا ۝ فمهل الكافرين أمهلهم رويدا ۝

८७ सूरतुल्-अअ्-ला ८

(मक्की) इस सूर: मे अरबी के २९९ अक्षर, ७२ शब्द, १९ आयते और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

सब्बिहिस-म रब्बिकल-अअ-ला لا (१) अल्लज़ी ख़-ल-क फ़-सव्वा صلے (२) वल्लज़ी कद्-द-र फ़-हदा صلے (३) वल्लज़ी अख़्-र-जल-मर्आ صلے (४) फ-ज-अ़-लहू गुसाअन् अह्वा ط (५) सनुक़्रिउ-क फ़ला तन्सा لا (६) इल्ला मा शा-अल्लाहु ط इन्नहू यअ्-लमुल-जह-र व मा यख़्फा ط (७) व नुयस्सिरु-क लिल्युस्रा صلے (८) फ़ज़क्किर् इन् न-फ-अतिज्जिक्रा ط (९) स-यज़्ज़क्करु मंय्यख़्शा لا (१०) व य-त-जन्नबुहल-अश्क़- لا (११) -ल्लज़ी यस्लन्नारल-कुब्रा ج (१२) सुम्-म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह़्या ط (१३) क़द् अफ्-ल-ह़ मन् त-ज़क्का لا (१४) व ज़-क-रस्-म रब्बिही फ़-सल्ला ط (१५) बल् तुअ्सिरूनल-ह़यातद्दुन्या صلے (१६) वल्आख़िरतु ख़ैरुंव् - व अब्क़ा ط (१७) इन् - न हाज़ा लफ़िस् - सुहुफिल्ऊला لا (१८) सुहुफ़ि इब्राही - म व मूसा ★ (१९)

سورة الأعلى مكية وهي تسع عشرة آية
بسم الله الرحمن الرحيم
سبح اسم ربك الأعلى ۝ الذي خلق فسوى ۝ والذي قدر
فهدى ۝ والذي أخرج المرعى ۝ فجعله غثاء أحوى ۝
سنقرئك فلا تنسى ۝ إلا ما شاء الله إنه يعلم الجهر وما
يخفى ۝ ونيسرك لليسرى ۝ فذكر إن نفعت الذكرى ۝
سيذكر من يخشى ۝ ويتجنبها الأشقى ۝ الذي يصلى
النار الكبرى ۝ ثم لا يموت فيها ولا يحيى ۝ قد أفلح
من تزكى ۝ وذكر اسم ربه فصلى ۝ بل تؤثرون الحياة
الدنيا ۝ والآخرة خير وأبقى ۝ إن هذا لفي الصحف
الأولى ۝ صحف إبراهيم وموسى ۝

★रु १/११ आ १७ ★रु १/१२ आ १९

निगहबान मुकर्रर नही। (४) तो इंसान को देखना चाहिए कि वह काहे मे पैदा हुआ है. (५) वह उछलते हुए पानी से पैदा हुआ है, (६) जो पीठ और, सीने के बीच मे मे निकलता है। (७) बेशक खुदा उस के इआदे (यानी फिर पैदा करने) पर कादिर है, (८) जिस दिन दिलो के भेद जांचे जाएगे,[1] (९) तो इसान की कुछ पेश न चल सकेगी और न कोई उस का मददगार होगा। (१०) आसमान की कसम, जो मेह बरसाता है, (११) और जमीन की कसम ! जो फट जाती है, (१२) कि यह कलाम (हक को बातिल से) जुदा करने वाला है, (१३) और बेहूदा बात नही, (१४) ये लोग तो अपनी तद्बीरो मे लग रहे है, (१५) और अपनी तद्वीर कर रहे है,(१६) तो तुम काफिरो को मोहलत दो, बस कुछ दिन ही मोहलत दो। (१७)☆

८७ सूरः अअ्ला ८

सूर अअ्ला मक्की है। इस मे उन्नीस आयते है। और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो वडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैगम्बर ! अपने परवरदिगार जलीलुश्शान के नाम की तस्बीह करो, (१) जिस ने (इसान को) वनाया, फिर (उस के अंगो को) ठीक किया, (२) और जिस ने (उस का) अन्दाजा ठहराया फिर उन को) रास्ता बताया, (३) और जिस ने चारा उगाया, (४) फिर उस को स्याह रग का कूडा कर दिया। (५) हम तुम्हे पढा देगे कि तुम भूलोगे नही, (६) मगर जो खुदा चाहे। वह खुली बात को भी जानता है और छिपी को भी। (७) हम तुम को आसान तरीके की तौफीक देगे, (८) सो जहा तक नसीहत (के) नफा देने (की उम्मीद) हो नसीहत करते रहो। (९) जो खौफ रखता है, वह तो नसीहत पकडेगा, (१०) और (बे-खौफ) बद-बख्त पहलू बचाएगा, (११) जो (कियामत को) वडी (तेज) आग मे दाखिल होगा, (१२) फिर वहा न मरेगा, न जिएगा। (१३) बेशक वह मुराद को पहुच गया, जो पाक हुआ (१४) और अपने परवरदिगार के नाम का जिक्र करता रहा और नमाज पढता रहा, (१५) मगर तुम लोग तो दुनिया की जिंदगी को अख्तियार करते हो (१६) हालाकि आखिरत वहुत वेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (१७) यही बात पहले सहीफो (किताबो) मे (लिखी हुई) है, (१८) (यानी) इब्राहीम और मूसा के सहीफो मे ✶ (१९)

(पृष्ठ ९४९ का शेष)

तव उस ने खन्दकें खुदवा कर उन मे आग जलवा दी और खुद उन के किनारे पर खडे हो कर उन मे कहने लगा कि या तो हमारे दीन को कुबूल करो या इस आग को अपनाओ, मगर उन्हो ने बुतो को पूजना मजूर न किया और आग मे पडना मजूर किया। यह हाल देख कर औरते और वच्चे चिल्ला उठे। दीनदार मर्द और बाल जो खुदा पर पूरा ईमान रखते थे, उन्हो ने तसल्ली दी कि उस को आग न समझो यह तुम्हारे लिए निजात है। चुनाचे सव के सव इस मे कूद पडे। कहते है कि आग के शोले अभी उन के जिस्मो तक पहुचने न पाए थे कि खुदा ने उन की रूहे कब्ज़ कर ली और आग भडक कर वादशाह और उन के दरबारियो मे जो किनारे पर खडे थे, जा लगी और सव को जला कर खाक कर दिया।

१ दिलो के भेद जानने से यह मुराद है कि ताल्लुकात और ख्यालात जाहिर कर दिए जाएगे और अच्छे-बुरे अलग कर दिए जाएगे।

८८ सूरतुल्-ग़ाशियति ६८

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ३८४ अक्षर, ९३ शब्द, २६ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम ●

हल् अता-क हदीसुल-ग़ाशिय· (१) वुजूहुंय्यौमइजिन् खाशि-अतुन् (२) आमि-लतुन् नासि-बतुन् (३) तस्ला नारन् हामि-य-तन् (४) तुस्क़ा मिन् अैनिन् आनिय. (५) लै-स लहुम् तआमुन् इल्ला मिन् जरीअिल्- (६) -ला युस्मिनु व ला युग्नी मिन् जू-अ (७) वुजूहुंय्यौमइजिन् नाअिमतुल- (८) लिसअ्-यिहा राजियतुन् (९) फ़ी जन्नतिन् आलि-यतिल- (१०) ला तस्मअु फ़ीहा लागिय. (११) फीहा अैनुन् जारिय. (१२) फ़ीहा सुरुरुम्-मर्फूअतुंव्- (१३) व अक्वा-बुम्-मौजूअतुंव्- (१४) व नमारिकु मस्फू-फ़तुंव- (१५) व ज़राबिय्यु मब्सूस (१६) अ-फला यन्ज़ुरू-न इलल् - इबिलि कै-फ खुलिकत् (१७) व इलस्समाइ कै-फ रुफ़ि-अत् (१८) व इलल्-जिबालि कै-फ नुसिबत् (१९) व इलल्अर्जि कै-फ सुतिहत् (२०) फ-जक्किर् इन्नमा अन् - त मुजक्किर (२१) लस - त अलैहिम् बिमुसैतिरिन् (२२) इल्ला मन् त-वल्ला व क-फ़र (२३) फयुअज्जिबुहुल्लाहुल-अज़ाबल अक्बर (२४) इन-न इलैना इयाबहुम् (२५) सुम्-म इन्-न अलैना हिसाबहुम् ★(२६) ●

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۞ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۞ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۞ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۞ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۞ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۞ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۞
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۞ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۞ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۞ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۞ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۞ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۞ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۞ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۞ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ۞ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۞ وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۞ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۞ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۞ فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ۞ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۞ اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۞ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ۞ اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ۞ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۞

سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالْفَجْرِ ۞ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۞ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۞ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۞ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ۞ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۞ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۞ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۞

८९ सूरतुल्-फ़ज्रि १०

(मक्की) इस सूर. मे अरबी के ५८५ अक्षर, १३७ शब्द, ३० आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम ●

वल्फ़ज्रि (१) व लयालिन् अश्रिव्- (२) वशशफ्अि वल्वत्रि (३) वल्लैलि इज़ा यस्रि (४) हल् फ़ी जालि-क क-समुल्लिजी हिज्र (५) अ-लम् त-र कै-फ फ-अ - ल रब्बु-क बिआदिन् (६) इर-म जातिल्अिमादि- (७) -ल्लती लम् युख-लक् मिस्लुहा फिल्बिलाद (८)

८८ सूरः ग़ाशियः ६८

सूर: गाशिय मक्की है, इस मे २६ आयते है और १ रुकूअ् है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

भला तुम को ढाप लेने वाली (यानी कियामत) का हाल मालूम हुआ है? (१) उस दिन बहुत से मुह (वाले) जलील होगे, (२) सख्त मेहनत करने वाले, थके-मादे, (३) दहकती आग मे दाखिल होगे, (४) एक खौलते हुए चश्मे का उन को पानी पिलाया जाएगा, (५) और कांटेदार झाड़ के सिवा उन के लिए कोई खाना नही (होगा,) (६) जो न मोटा बनाये, न भूख मे कुछ काम आए। (७) और बहुत से मुह (वाले) उस दिन खुश होगे, (८) अपने आमाल (के बदले) से खुश दिल, (९) ऊंची बहिश्त मे, (१०) वहा किसी तरह की बकवास नही सुनेगे, (११) उस मे चश्मे बह रहे होगे, (१२) वहा तख्त होगे ऊंचे बिछे हुए, (१३) और आबखोरे (करीने से) लगे हुए, (१४) और गाव तकिए कतार की कतार लगे हुए, (१५) और उम्दा मस्नदे बिछी हुई। (१६) ये लोग ऊटो की तरफ नही देखते कि कैसे (अजीब) पैदा किए गए है, (१७) और आसमान की तरफ कि कैसा बुलन्द किया गया है, (१८) और पहाडो की तरफ कि किस तरह खड़े किए गए है, (१९) और जमीन की तरफ कि किस तरह बिछायी गयी, (२०) तो तुम नसीहत करते रहो कि तुम नसीहत करने वाले ही हो, (२१) तुम उन पर दारोगा नही हो, (२२) हा, जिसने मुह फेरा और न माना, (२३) तो खुदा उस को बडा अजाब देगा। (२४) बेशक उन को हमारे पास लौट कर आना है, (२५) फिर हम ही को उन से हिसाब लेना है। (२६) ★ ○

८९ सूरः फ़ज्र १०

सूर फज्र मक्की है, इस मे तीस आयते है और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

फज्र की कसम, (१) और दस रातो की,[1] (२) और जुफ्त और ताक की, (३) और रात की जब जाने लगे, (४) (और) बेशक ये चीजे अक्लमन्दो के नजदीक कसम खाने के लायक है (कि काफिरो को जरूर अजाब होगा।) (५) क्या तुमने नही देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने आद[2] के साथ क्या किया? (६) (जो) इरम (कहलाते थे, इतने) लम्बे कद। (७) कि तमाम

---

१ दस रातो के तै करने मे अलग-अलग कौल हैं। कुछ लोग कहते है, उन से जिलहिज्जा का अशरा मुराद है, कुछ का कौल है रमजान का पहला अशरा मुराद है, मगर कोई दलील इस पर नहीं कि इन से क्या [illegible] मुराद है।

२ आद दो थे। पहले आद जिन को इरम कहते हैं, दूसरे आद समूद। इरम के आद हजरत हूद [illegible] की उम्मत के लोग थे। इरम उस के कबीले का नाम था।

व समूदल्लज़ी-न जाबुस्सख़्-र बिल्वादि (९) व फ़िर्औ-न ज़िल्औतादि- (१०) ल्लज़ी-न तग़ौ फ़िल्बिलादि (११) फ़-अक्सरू फ़ीहल्फ़साद (१२) फ़-सब्-ब अलैहिम् रब्बु-क सौ-त अज़ाब (१३) इन्-न रब्ब-क लबिल्-मिर्साद (१४) फ़-अम्मल-इन्सानु इज़ा मब्तलाहु रब्बुहू फ़-अक्-र-महू व नअ्-अ-महू फ़-यक़ूलु रब्बी अक्-र-मन (१५) व अम्मा इज़ा मब्तलाहु फ़-क-द-र अलैहि रिज़्क़हू फ़यक़ूलु रब्बी अहानन् (१६) कल्ला बल् ला तुक्रिमूनल्-यती-म (१७) व ला तहा-ज़्ज़ू-न अला तआमिल-मिस्कीन (१८) व तअ्कुलूनत्तुरा-स अक्-लल्-लम्मव्- (१९) व तुहिब्बूनल्-मा-ल हुब्बन् जम्मा (२०) कल्ला इज़ा दुक्कतिल-अर्ज़ु दक्कन् दक्कंव्- (२१) व जा-अ रब्बु-क वल-म-लकु सफ़्फ़न् सफ़्फ़ा (२२) व जी-अ यौमइज़िम्-बिज-हन्न-म यौमइज़िय्य-त-ज़क्करुल-इन्सानु व अन्ना लहुज़्ज़िक्रा (२३) यक़ूलु यालैतनी क़द्दम्तु लिहयाती (२४) फ़यौमइज़िल्ला युअज़्ज़िबु अज़ाबहू अ-हदुंव्- (२५) व ला यूसिक़ु व-साक़हू अ-हद (२६) या अय्यतुहन्नफ़्सुल-मुत्मइन्नतु- (२७) -र्जिई इला रब्बिकि राज़ि-य-तम्-मर्ज़िय्यतन् (२८) फ़द्ख़ुली फ़ी अिबादी (२९) वद्ख़ुली जन्नती ★ (३०)

وثمود الذين جابوا الصخر بالواد ۝ وفرعون ذي الأوتاد ۝
الذين طغوا في البلاد ۝ فأكثروا فيها الفساد ۝ فصب عليهم
ربك سوط عذاب ۝ إن ربك لبالمرصاد ۝ فأما الإنسان إذا
ما ابتلاه ربه فأكرمه ونعمه فيقول ربي أكرمن ۝ وأما
إذا ما ابتلاه فقدر عليه رزقه فيقول ربي أهانن ۝ كلا
بل لا تكرمون اليتيم ۝ ولا تحاضون على طعام المسكين ۝
وتأكلون التراث أكلا لما ۝ وتحبون المال حبا جما ۝ كلا إذا
دكت الأرض دكا دكا ۝ وجاء ربك والملك صفا صفا ۝ و
جيء يومئذ بجهنم يومئذ يتذكر الإنسان وأنى له
الذكرى ۝ يقول يا ليتني قدمت لحياتي ۝ فيومئذ لا يعذب
عذابه أحد ۝ ولا يوثق وثاقه أحد ۝ يا أيتها النفس
المطمئنة ۝ ارجعي إلى ربك راضية مرضية ۝ فادخلي
في عبادي ۝ وادخلي جنتي ۝

سورة البلد مكية وهي عشرون آية

بسم الله الرحمن الرحيم

لا أقسم بهذا البلد ۝ وأنت حل بهذا البلد ۝ ووالد وما
ولد ۝ لقد خلقنا الإنسان في كبد ۝ أيحسب أن لن يقدر عليه

९० सूरतुल्-ब-लदि ३५

(मक्की) इस सूर: मे अरबी के ३४७ अक्षर, ८२ शब्द, २० आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

ला उक़्सिमु बिहाज़ल्ब-लदि (१) व अन्-त हिल्लुम्-बिहाज़ल-ब-लदि (२) व वालिदिंव्-व मा व-लद (३) ल-क़द् ख़-लक़्नल-इन्सा-न फ़ी क-बद (४) अ-यह्सबु अल्लंय्यक़्दि-र अलैहि अ-हद ※ (५)

★रु १/१४ आ ३० ※ व लाज़िम

मुल्क मे ऐसे पैदा नही हुए थे, (८) और समूद के साथ (क्या किया) जो (कुरा की) वादी मे पत्थर तराशते और (घर बनाते) थे ?[१] (९) और फ़िऔन के साथ (क्या किया) जो ख़ेमे और मेख़े रखता था ? (१०) ये लोग मुल्को मे सरकश हो रहे थे, (११) और उन मे बहुत-सी खराबिया करते थे, (१२) तो तुम्हारे परवरदिगार ने उन पर अज़ाब का कोडा नाज़िल किया, (१३) बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताक मे है, (१४) मगर इसान (अजीब मख्लूक है कि) जब उस का परवरदिगार उस को आज़माता है कि उसे इज्ज़त देता और नेमत बख़्शता है, तो कहता है कि (आ हा) मेरे परवरदिगार ने मुझे इज्ज़त बख़्शी। (१५) और जब (दूसरी तरह) आज़माता है कि उस पर रोज़ी तग कर देता है, तो कहता है कि (हाय) मेरे परवरदिगार ने मुझे ज़लील किया। (१६) नही, बल्कि तुम लोग यतीम की खातिर नही करते, (१७) और न मिस्कीन को खाना खिलाने का चाव पैदा करते हो, (१८) और मीरास के माल को समेट कर खा जाते हो, (१९) और माल को बहुत ही अज़ीज़ रखते हो, (२०) तो जब ज़मीन की बुलदी कूट-कूट कर पस्त कर दी जाएगी, (२१) और तुम्हारा परवरदिगार (जलवा फरमा होगा) और फ़रिश्ते लाइन बना-बना कर आ मौजूद होगे, (२२) और दोज़ख उस दिन हाज़िर की जाएगी, तो इसान उस दिन चेतेगा, मगर (अब) चेतने (से) उसे (फायदा) कहा (मिल सकेगा ?) (२३) कहेगा, काश ! मैं ने अपनी (हमेशा की) ज़िदगी के लिए कुछ आगे भेजा होता, (२४) तो उस दिन न कोई ख़ुदा के अज़ाब की तरह का (किसी को) अज़ाब देगा। (२५) और न कोई वैसा जकडना जकडेगा। (२६) ऐ इत्मीनान पाने वाली रूह ! (२७) अपने परवरदिगार की तरफ लौट चल, तू उस से राज़ी, वह तुझ से राज़ी, (२८) तू मेरे (मुम्ताज) बन्दो मे शामिल हो जा, (२९) और मेरी बहिश्त मे दाखिल हो जा, (३०) ★

९० सूरः ब-लद ३५

सूर. ब-लद मक्की है, इस मे बीस आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हमें इस शहर (मक्का) की कसम, (१) और तुम इसी शहर मे तो रहते हो, (२) और बाप (यानी आदम) और उस की औलाद की कसम, (३) कि हमने इसान को तक्लीफ़ (की हालत) मे (रहने वाला) बनाया है, (४) क्या वह ख्याल रखता है कि उस पर कोई काबू न पाएगा ▨ (५)

---

१. समूद हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की कौम का नाम है। ये लोग ऐसे कारीगर थे कि पहाडो मे पत्थर काट-काट कर घर बनाते थे और उस मे रहते-सहते थे।

★रु १/१४ आ ३० ▨ व लाज़िम

यकूलु अह्-लक्तु माल-लु-ब-दा ط (६) अ-यह्सबु अल्लम् य-रहू अ-हद ط (७) अ-लम् नज्-अल् लहू अ़ैनैनि لا (८) व लिसानंव्-व श-फतैनि لا (९) व हदैनाहुन्-नज्दैनि ج (१०) फ़-लक़्त-ह्-मल्-अ-क-ब-त صلے (११) व मा अद्‌रा-क मल्-अ-क़-ब: ط (१२) फ़क्कु र-क-बतिन् لا (१३) औ इत्-आमुन् फ़ी यौमिन् ज़ी मस्ग-बतिय- لا (१४) यतीमन् ज़ा मक़्-र-बतिन् لا (१५) औ मिस्कीनन् ज़ा मत्-र-ब: ط (१६) सुम्-म का-न मिनल्लज़ी-न आमनू व त-वासौ बिस्स़-ब्रि व त-वासौ बिलमर्-ह्-म: ط (१७) उलाइ-क अस्‌हाबुल् - मै-म-न: ط (१८) वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिना हुम् अस्‌हाबुल्-मश्-अ-म: ط (१९) अलैहिम् नारुम्-मुअ्-स-द ★ (२०)

الشمس ۹۱ الليل ۹۲ ۴۸۰

أَحَدٌ ۝ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝ أَيَحْسَبُ أَن لَّمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۝
أَلَمْ نَجْعَل لَّهُ عَيْنَيْنِ ۝ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۝
فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝ فَكُّ رَقَبَةٍ ۝ أَوْ
إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۝ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝ أَوْ مِسْكِينًا ذَا
مَتْرَبَةٍ ۝ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا
بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۝ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝
سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ هِيَ خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً
وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ۝ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا ۝ وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّاهَا ۝
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ۝ وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ۝ وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ۝
وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۝ فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۝ قَدْ أَفْلَحَ مَن
زَكَّاهَا ۝ وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّاهَا ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۝ إِذِ
انبَعَثَ أَشْقَاهَا ۝ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۝
فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُم بِذَنبِهِمْ
فَسَوَّاهَا ۝ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۝
سُورَةُ اللَّيْلِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ إِحْدَىٰ وَعِشْرُونَ آيَةً
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ۝ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ۝ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝

९१ सूरतुश्शम्‌सि २६

(मक्की) इस सूर मे अरबी के २५४ अक्षर, ५६ शब्द, १५ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वश्शम्‌सि व जुहाहा صلے (१) वल्क-मरि इज़ा तलाहा صلے (२) वन्नहारि इज़ा जल्लाहा (३) वल्लैलि इज़ा यग्‌शाहा صلے (४) वस्समाइ व मा बनाहा صلے (५) वल्‌अर्जि व मा तहाहा (६) व नफ्‌सिंव् - व मा सव्वाहा صلے (७) फ-अल्-ह-महा फुजूरहा व तक्-वाहा صلے (८) क़द् अफ्-ल-ह मन् ज़क्काहा صلے (९) व क़द् ख़ा-ब मन् दस्साहा ط (१०) कज़्ज़-बत् समूदु बितग्‌वाहा صلے (११) इज़िम्ब-अ-स अश्‌काहा صلے (१२) फ़-क़ा-ल लहुम् रसुलुल्लाहि ना-क-तल्लाहि व सुक्‌याहा ط (१३) फ-कज़्ज़बूहु फ़-अ़-करूहा صلے फ-दम्द-म अलैहिम् रब्बुहुम् बिज़म्बिहिम् फ-सव्वाहा صلے (१४) व ला यख़ाफु अुक्बाहा ★ (१५)

९२ सूरतुल्लैलि ९

(मक्की) इस सूर मे अ़रबी के ३१४ अक्षर, ७१ शब्द, २१ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वल्लैलि इज़ा यग्‌शा لا (१) वन्नहारि इज़ा त-जल्ला لا (२) व मा ख़-ल-क़ज़्ज़-क-र वल्‌उन्सा لا (३)

★रु १/१५ आ २० ★रु १/१६ आ १५

कहता है कि मैं ने बहुत-सा माल बर्बाद कर दिया। (६) क्या उसे यह गुमान है कि उस को किसी ने देखा नही ? (७) भला हमने उस को दो आखें नही दी ? (८) और ज़ुबान और दो होंट (नही दिए ?) (९) (ये चीज़े भी दी) और उस को (भलाई-बुराई के) दोनो रास्ते भी दिखा दिए, (१०) मगर वह घाटी पर से हो कर न गुज़रा, (११) और तुम क्या समझे कि घाटी क्या है ? (१२) किसी (की) गरदन का छुडाना, (१३) या भूख के दिन खाना खिलाना, (१४) यतीम रिश्तेदार को,[1] (१५) या फ़क़ीर ख़ाकसार को, (१६) फिर उन लोगो मे भी (दाख़िल) हुआ, जो ईमान लाए और सब्र की नसीहत और (लोगो पर) शफ्कत करने की वसीयत करते रहे। (१७) यही लोग सआदत वाले हैं, (१८) और जिन्हो ने हमारी आयतो को न माना, वे बद-बख्त हैं, (१९) ये लोग आग मे बन्द कर दिए जाएगे। (२०) ☆

९१ सूरः शम्स २६

सूरः शम्स मक्की है। इस मे पन्द्रह आयते और १ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सूरज की कसम और उस की रोशनी की, (१) और चाद की, जब उस के पीछे निकले, (२) और दिन की जब उसे चमका दे, (३) और रात की जब उसे छिपा ले, (४) और आसमान की और उस ज़ात की, जिस ने उसे बनाया, (५) और ज़मीन की और उस की, जिस ने उसे फैलाया, (६) और इंसान की और उस की जिस ने उस के अंगो को बराबर किया, (७) फिर उस को बद-कारी (से बचने) और परहेजगारी करने की समझ दी, (८) कि जिस ने (अपने) नफ्स (यानी रूह) को पाक रखा, वह मुराद को पहुचा, (९) और जिस ने उसे ख़ाक मे मिलाया, वह घाटे मे रहा, (१०) समूद (कौम) ने अपनी सरकशी की वजह से (पैगम्बर को) झुठलाया। (११) जब उन मे से एक निहायत बदबख़्त उठा, (१२) तो ख़ुदा के पैग़म्बर (सालेह) ने उन ने कहा कि ख़ुदा की ऊटनी और उस के पानी पीने की बारी से बचो, (१३) मगर उन्होने पैगम्बर को झुठलाया और ऊटनी की कूचे काट दी, तो ख़ुदा ने उन के गुनाह की वजह से उन पर अज़ाब नाज़िल किया और सब को (हलाक कर के) बराबर किया,[2] (१४) और उस को उन के बदला लेने का कुछ भी डर नही। (१५) ★

९२ सूरः लैल ९

सूर लैल मक्की है, इस मे २१ आयतेऔर १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

रात की कसम, जब (दिन को) छिपा ले, (१) और दिन की कसम, जब चमक उठे (२) और उस (जात) की कसम, जिस ने नर और मादा पैदा किए, (३) कि तुम लोगो की कोशिश

---

१ यतीम का एक हक, नातेदार का एक हक, जो दोनो हुए तो दो हक।

२ ख़ुदा ने हज़रत सालेह को एक ऊटनी मोजजे के तौर पर दी थी, जो एक बडे भारी पत्थर मे से निकाली गई थी। सालेह अलैहिस्सलाम ने उन लोगो से कहा कि यह ऊटनी ख़ुदा की है। उस को बुरी तरह हाथ न लगाना और जो दिन उस के पानी पीने का हो, उस मे छेडखानी न करना। उन्हो ने यह बात न मानी और एक निहायत बद-बख़्त शख़्स ने जिस का नाम किदार बिन सालिफ़ था, ऊटनी के पाव काट दिए। इस तरह से उन पर अज़ाब नाज़िल हुआ।

इन्-न सअ्-यकुम् लशत्ता ط (४) फ़-अम्मा मन् अअ्-ता वत्तका ۙ (५) व सद्-द-क बिल्हुस्ना ۙ (६) फ़-स-नुयस्सिरुहू लिल्-युस्रा ط (७) व अम्मा मम्-बख़ि-ल वस्तग्ना ۙ (८) व कज़्ज़-ब बिल-हुस्ना ۙ (९) फ़-सनुयस्सिरुहू लिल-उुस्रा ط (१०) व मा युग्नी अन्हु मालुहू इज़ा त-रद्दा ط (११) इन्-न अलैना लल्हुदा ۖ (१२) व इन्-न लना लल्-आख़ि-र-त वल्ऊला (१३) फ़-अन्ज़र्तुकुम् नारन् त-लज़्ज़ा ج (१४) ला यस-लाहा इल्लल-अश्क- ۙ (१५) -ल्लज़ी कज़्ज़-ब व त-वल्ला ط (१६) व सयुजन्नबुहल-अत्क- ۙ (१७) -ल्लज़ी युअ्ती मा-लहू य-त-ज़क्का ج (१८) व मा लि-अ-ह्-दिन् अिन्दहू मिन् निअ्-मतिन् तुज्ज़ा ۙ (१९) इल्लब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिल-अअ्-ला ج (२०) व लसौ-फ़ यर्ज़ा★(२१)

९३ सूरतुज़्ज़ुहा ११

(मक्की) इस सूर. मे अरबी के १६६ अक्षर, ४० शब्द, ११ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वज़्ज़ुहा ۙ (१) वल्लैलि इज़ा सजा ۙ (२) मा वद्-द-अ-क रब्बु-क व मा कला ط (३) व ललआख़िरतु ख़ैरुल्ल-क मिनल्ऊला ط (४) व लसौ-फ युअ्-ती-क रब्बु-क फ़-तर्ज़ा ط (५) अ-लम् यजिद्-क यतीमन् फ-आवा ص (६) व व-ज-द-क ज़ाल्लन् फ-हदा ص (७) व व-ज-द-क आइलन् फ-अग़ना ط (८) फ-अम्मल्-यती-म फला तक़्-हर् ط (९) व अम्मस्साइ-ल फला तन्हर् ط (१०) व अम्मा बिनिअ्-मति रब्बि-क फ-हद्दिस् (११) ★

९४ सूरतु अ-लम् नश्रह् १२

(मक्की) इस सूर. मे अरबी के १०३ अक्षर, २७ शब्द, ८ आयने और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अ-लम् नश्रह ल-क सद्-र-क ۙ (१) व व-जअ्-ना अन्-क विज्-र-क- ۙ (२) -ल्लज़ी अन्क-ज़ ज़ह्-र-क ۙ (३)

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۝ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۝
فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ۝ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۝ وَكَذَّبَ
بِالْحُسْنَىٰ ۝ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَىٰ ۝ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا
تَرَدَّىٰ ۝ إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ۝ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۝
فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ۝ لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ
وَتَوَلَّىٰ ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۝
وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۝ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ
الْأَعْلَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۝

سُورَةُ الضُّحَىٰ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالضُّحَىٰ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ۝ وَلَلْآخِرَةُ
خَيْرٌ لَكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ۝ أَلَمْ
يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ
عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ۝ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝
وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

سُورَةُ أَلَمْ نَشْرَحْ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِي

★रु. १/१७ आ २१ ★र १/१८ आ ११

तरह-तरह की है, (४) तो जिस ने (खुदा के रास्ते मे माल) दिया और परहेजगारी की, (५) और नेक वात को सच जाना, (६) उस को हम आसान तरीके की तौफीक देंगे, (७) और जिस ने कंजूसी की और बे-परवाह बना रहा, (८) और नेक वात को झूठ समझा, (९) उसे सख्ती मे पहुचाएंगे, (१०) और जब वह (दोजख के गढे मे) गिरेगा, तो उस का माल उस के कुछ भी काम न आएगा। (११) हमे तो राह दिखाना है, (१२) और आखिरत और दुनिया हमारी ही चीजें हैं, (१३) सो मैं ने तुम को भडकती आग से डरा दिया। (१४) उस मे वही दाखिल होगा, जो बड़ा बद-बख्त है, (१५) जिस ने झुठलाया और मुह फेरा, (१६) और जो बडा परहेजगार है, वह (उस से) बचा लिया जाएगा, (१७) जो माल देता है ताकि पाक हो, (१८) और (इस लिए) नही (देता कि) उस पर किसी का एहसान (है,) जिस का वह बदला उतारता है, (१९) बल्कि अपने खुदावंदे आला की रजामदी हासिल करने के लिए देता है, (२०) और वह बहुत जल्द खुश हो जाएगा। (२१) ★

९३ सूरः ज़ुहा ११

सूर. ज़ुहा मक्की है और इस मे ग्यारह आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सूरज की रोशनी की कसम, (१) और रात (की अंधियारी) की जब छा जाए, (२) (ऐ मुहम्मद !) तुम्हारे परवरदिगार ने न तो तुम को छोडा और न (तुम से) नाराज हुआ, (३) और आखिरत तुम्हारे लिए पहली (हालत यानी दुनिया) से कही बेहतर है, (४) और तुम्हे परवरदिगार बहुत जल्द वह कुछ अता फ़रमाएगा कि तुम खुश हो जाओगे। (५) भला उस ने तुम्हे यतीम पाकर जगह नही दी, (बेशक दी) (६) और रास्ते से अनजान देखा तो सीधा रास्ता दिखाया, (७) और तगदस्त पाया तो गनी कर दिया (८) तो तुम भी यतीम पर सितम न करना, (९) और मांगने वाले को झिडकी न देना, (१०) और अपने परवरदिगार की नेमतो का बयान करते रहना ★ (११)

९४ सूरः इन्शिराह़ १२

सूर इन्शिराह मक्की है और इस मे आठ आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) क्या हमने तुम्हारा सीना खोल नही दिया ? (बेशक खोल दिया।) (१) और तुम पर से बोझ भी उतार दिया, (२) जिस ने तुम्हारी पीठ तोड रखी थी. (३) और तुम्हारा

★रु. १/१७ आ २१ ★रु १/१८ आ ११

व र-फ़अ्-ना ल-क ज़िक्-रक (४) फ़-इन्-न म-अल्-अुस्रि युस्रन् (५) इन्-न म-अल्-अुस्रि युस्रा (६) फ़इज़ा फ-रग्-त फ़न्सब् (७) व इला रब्बि-क फ़र्ग़ब् ★(८)

९५ सूरतुत्तीनि २८

(मक्की) इस सूर मे अरबी के १६५ अक्षर, ३४ शब्द, ८ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

वत्तीनि वज्जैतूनि (१) वतूरि सीनी-न (२) व हाज़ल् - ब-लदिल्-अमीन (३) ल-क़द् ख़-लक्-नल्-इन्सा-न फ़ी अह्सनि तक़्वीम (४) सुम्-म र-दद्नाहु अस्फ - ल साफिलीन (५) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (६) फमा युकज़्ज़िबु-क बअ् - दु बिद्दीन (७) अलैसल्लाहु बि-अह्कमिल्-हाकिमीन ★(८)

९६ सूरतुल्-अ़-लक़ि १

(मक्की) इस सूर. मे अरबी के २६० अक्षर, ७२ शब्द, १९ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

इक़-रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़-लक़ (१) ख़-ल-क़ल् - इन्सा-न मिन् अ़-लक़ (२) इक़्रअ् व रब्बुकल्-अक्रमु- (३) ल्लज़ी अ़ल्ल-म बिल्-क-लमि (४) अ़ल्ल-मल्-इन्सा-न मा लम् यअ्-लम् (५) कल्ला इन्नल्-इन्सा-न ल-यत़्ग़ा (६) अर्-र - आहुस्तग़्ना (७) इन्-न इला रब्बिकर्-रुज्आ (८) अ-र-ऐ-तल्लज़ी यन्हा (९) अब्-दन् इज़ा सल्ला (१०) अ-र-ऐ-त इन् का-न अ़लल्-हुदा (११) औ अ-म-र बित्तक़्वा (१२) अ-र-ऐ-त इन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (१३) अ-लम् यअ्-लम् बिअन्नल्ला-ह यरा (१४) कल्ला लइल्लम् यन्तहि ल-नस्फ़-अ़म् - बिन्नासियति (१५) नासियतिन् काज़िबतिन् ख़ातिअ- (१६) -फ़ल् - यद्अु नादियः (१७)

التين ٩٥ العلق ٩٦   ٤٨٢   عم ٣٠

أَنقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ إِنَّ
مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَب ۝

سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۝ وَطُورِ سِينِينَ ۝ وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝
لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ
سَافِلِينَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ
مَمْنُونٍ ۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ۝ أَلَيْسَ اللَّهُ
بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ۝

سُورَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ هِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝
اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ۝ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝ عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا
لَمْ يَعْلَمْ ۝ كَلَّا إِنَّ الْإِنسَانَ لَيَطْغَىٰ ۝ أَن رَّآهُ اسْتَغْنَىٰ ۝ إِنَّ
إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ۝ أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۝ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۝
أَرَأَيْتَ إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ۝ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۝ أَرَأَيْتَ إِن
كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۝ كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ
لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝

★रु १/१९ आ ८   ★रु १/२० आ ८

ज़िक्र बुलंद किया, (४) हा, (हा) मुश्किल के साथ आसानी भी है। (५) (और) बेशक मुश्किल के साथ आसानी भी है, (६) तो जब फ़ारिग हुआ करो, तो (इबादत मे) मेहनत किया करो, (७) और अपने परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जह हो जाया करो। (८) ✱

६५ सूर: तीन २८

सूर तीन मक्की है और इस मे आठ आयतें और १ रुकूअ है

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

इंजीर की कसम और जैतून की, (१) और तूरे सीनीन की, (२) और इस अम्न वाले शहर की, (३) कि हमने इंसान को बहुत अच्छी सूरत मे पैदा किया है। (४) फिर (धीरे-धीरे) उस (की हालत) को (बदल कर) पस्त से पस्त कर दिया। (५) मगर जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बे-इन्तिहा बदला है, (६) तो (ऐ आदम की औलाद!) फिर तू बदले के दिन को क्यों झुठलाता है? (७) क्या खुदा सब से बड़ा हाकिम नही है? (८) ☆

६६ सूर: अलक़ १

सूर अलक मक्की है और इसमे १९ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद!) अपने परवरदिगार का नाम ले कर पढो, जिस ने (दुनिया को) पैदा किया, (१) जिस ने इसान को खून की फुटकी से बनाया, (२) पढो और तुम्हारा परवरदिगार बडा करम वाला है, (३) जिस ने कलम के जरिए से इल्म सिखाया, (४) और इसान को वे बाते सिखाई, जिन का उस को इल्म न था,[1] (५) मगर इंसान सरकश हो जाता है, (६) जबकि अपने आप को गनी देखता है, (७) कुछ शक नही कि (उस को) तुम्हारे परवरदिगार ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (८) भला तुम ने उस शख्स को देखा, जो मना करता है। (९) (यानी) एक बन्दे को जब वह नमाज पढने लगता है। (१०) भला देखो तो अगर यह सीधे रास्ते पर हो, (११) या परहेजगारी का हुक्म करे (तो मना करना कैसा![2]) (१२) और देख तो अगर उस ने दीने हक को झुठलाया और उस से मुह मोडा, (तो क्या हुआ?) (१३) क्या उस को मालूम नही कि खुदा देख रहा है। (१४) देखो, अगर वह बाज न आएगा तो हम (उस की) पेशानी के बाल पकड कर घसीटेंगे। (१५) यानी उस झूठे खताकार की पेशानी के बाल। (१६) तो वह अपने यारो को

१ हजरत सल्ल० पर जो वह्य सब से पहले नाज़िल हुई, वही इस सूर की पहली पाच आयते है। ये आयते हिरा के गार मे नाज़िल हुयी, जहा आप तशरीफ ले जा कर तहाई मे इबादत किया करते थे। आप फरमाते हैं कि जब फरिश्ते ने आ कर मुझ से कहा कि पढो तो मैं ने कहा कि मैं पढा हुआ नही हूं तो उन ने मुझे पकड़ कर दबाया, यहा तक कि मैं थक गया, फिर छोड दिया और कहा कि पढो, मैं ने कहा कि मुझे पढना नहीं आता फिर दोबारा मुझ को दबोचा, यहा तक कि मैं थक गया, फिर छोड दिया और कहा कि पढो। मैं ने कहा मैं पढना नही जानता। फिर तीसरी बार दबाया, यहा तक कि मैं थक कर चूर हो गया, फिर छोड दिया और कहा इक्रअ बिस्मि रब्बिकल्लज़ी खलक' और 'मालम्‌यअलम' तक पहुचा। इन के बाद आप डर की वजह से कांपते हुए हजरत खदीजा के पास आए और कहा कि मुझे लिहाफ उढाओ। जब खौफ दूर हुआ तो आप ने सारा हाल बयान

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

स-नदअुज़्ज़बानिय· ج (१८) क़ल्ला ط ला तुतिअ्-हु वस्जुद् वक़्तरिब् ★□ (१९)

९७ सूरतुल्-क़द्रि २५

(मक्की) इस सूर. मे अ़रबी के ११५ अक्षर, ३० शव्द, ५ आयते और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

इन्ना अन्जलनाहु फ़ी लैलतिल-कद्रि صلى (१) व मा अद्रा-क मा लैलतुल-कद्र ط (२) लैलतुल-कद्रि ج खैरुम्-मिन् अलिफ शह्र ط ▨ (३) त-नज़्ज़लुल-मलाइकतु वर्रूहु फ़ीहा बिइज़्नि रब्बिहिम् ج मिन् कुलि अम्रिन् (४) सलामुन् قف हि-य ह़त्ता मत़्-लअिल्-फ़ज्रि★● (५)

९८ सूरतुल्-बय्यिनति १००

(मदनी) इस सूर मे अ़रबी के ४१३ अक्षर, ९५ शव्द, ८ आयते और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

लम् यकुनिल्लजी-न क-फ़रू मिन् अह्लिलल्-किताबि वल्मुश्रिकी-न मुन्फक्की-न ह़त्ता तअ्ति-यहुमुल-बय्यिन· ج (१) रसूलुम्-मिनल्लाहि यत्लू मुहुफम्-मुत़ह्-ह-र-तन् ج (२) फ़ीहा कुतुबुन् कय्यिमः ط (३) व मा त-फ़र्रकल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब इल्ला मिम्बअ्-दि मा जाअतहुमुल-बय्यिन. ط (४) व मा उमिरू इल्ला लियअ्-बुदुल्ला-ह मुख्लिसी-न लहुद्दी-न ج हु-नफ़ा-अ व युक़ीमुस्सला-त व युअ्तुज़्ज़का-त व ज़ालि-क दीनुल-कय्यिम. ط (५) इन्नल्लजी-न क-फ़रू मिन् अह्लिलल्किताबि वल्मुश्रिकी-न फ़ी नारि ज-हन्न-म खालिदी-न फ़ीहा ط उलाइ-क हुम् शर्रुल-बरिय्य· ط (६) इन्नल्लजी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ج उलाइ-क हुम् खैरुल-बरिय्यः ط (७) जज़ाउहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह़्ति-हल्-अन्हारु खालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु ط ज़ालि-क लिमन् खशि-य रब्बः ★(८)

عم ٣٠ — ٤٨٣ — القدر ٩٧ البينة ٩٨

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۞ كَلَّا ۚ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩

سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۞ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۞ لَيْلَةُ

الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۞ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۞ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۞

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ

حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۞ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۞

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۞ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ

بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۞ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ

لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ

دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ

فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۞ اِنَّ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۞

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

मु. जि मु ता ख़. १८

★रु १/२१ आ १९ □ सजदः १४ ▨ व न वी स· ★रु १/२२ आ ५ ●सु ३/४ ★रु १/२३ आ ८

मज्लिस को बुला ले। (१७) हम भी अपने दोजख के मुवक्किलो को बुलाएगे। (१८) देखो, उस का कहा न मानना और सज्दा करना और (खुदा का) कुर्ब हासिल करते रहना। (१९) ★ □

९७ सूरः क़द्र २५

सूर कद्र मक्की है और इस मे पाच आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हम ने इस (कुरआन) को शबे कद्र मे नाजिल (करना शुरू) किया. (१) और तुम्हे क्या मालूम कि शबे कद्र क्या है ? (२) शबे कद्र हज़ार महीने से बेहतर है। (३) इस मे रूहुल अमीन और फरिश्ते हर काम के (इन्तिजाम के) लिए, अपने परवरदिगार के हुक्म से उतरते है। (४) यह (रात) सुबह के होने तक (अमान और) सलामती है। (५) ✱ ●

९८ सूरः बय्यिनः १००

सूर बय्यिन मदनी है और इस मे आठ आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो लोग काफिर है यानी अह्ले किताब और मुश्रिक वे (कुफ्र मे) बाज़ रहने वाले न थे, जब तक कि उन के पास खुली दलील न आती, (१) (यानी) खुदा के पैगम्बर जो पाक पन्ने पढते है, (२) जिन मे मजबूत (आयते) लिखी हुई है, (३) और अह्ले किताब जो अलग-अलग (और मुख्तलिफ) हुए है तो खुली दलील के आने के बाद (हुए है) (४) और उन को हुक्म तो यही हुआ था कि अमल के इख्लास के साथ खुदा की इबादत करे (और यक्सू हो कर) और नमाज़ पढे और जकात दे और यही सच्चा दीन है। (५) जो लोग काफिर है (यानी) अह्ले किताब और मुश्रिक, वे दोजख की आग मे (पड़ेगे और) हमेशा उस मे रहेगे। ये लोग सब मख्लूक मे बद-तर है। (६) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे तमाम खल्कत मे बेहतर है। (७) उन का बदला उन के परवरदिगार के यहा हमेशा रहने के बाग है, जिन के नीचे नहरे बह रही है। हमेशा-हमेशा उन मे रहेगे। खुदा उन से खुश और वे उस से खुश। यह (बदला) उन के लिए है जो अपने परवरदिगार से डरता है। (८) ★

---

१ कुरआन मजीद एक ही बार नाजिल नही हुआ, बल्कि पारा-पारा नाज़िल हुआ है। पहले-पहल [illegible] नाजिल हुआ। इस आयत से मालूम होता है कि शबेकद्र रमज़ान के महीने मे है, जैसा कि दूसरी जगह [illegible] — 'शह्रु र-म-ज़ानल्लज़ी उन्ज़ि-ल फीहिल कुरआन' यह मालूम नही कि यह रात किस तारीख को होती है [illegible] सही हदीसो से इतना साबित है कि हज़रत रमज़ान की आखिरी दहाई मे एतिकाफ फरमाया करते थे और [illegible] एहतिमाम इस दहाई मे फरमाते और मे न फरमाते। ज्यादातर तफ्सीर लिखने वालो का ख्याल है कि [illegible] अमल हज़ार महीने के अमल से अफ्ज़ल है।

९९ सूरतुज़्-ज़िल्ज़ालि ९३

(मदनी) इस सूर मे अरबी के १५८ अक्षर, ३७ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इज़ा ज़ुल्ज़ि-लतिलअर्ज़ु ज़िल्ज़ालहा (१) व अख़्-र-जतिलअर्ज़ु अस्कालहा (२) व क़ालल-इन्सानु मा लहा (३) यौमइज़िन् तुहद्दिसु अख़्-बारहा (४) बि-अन्-न रब्ब-क औहा लहा (५) यौमइज़िय्यस्दुरुन्नासु अश्तातल-लियुरौ अअ्-मालहुम् (६) फमय्यअ्-मल् मिस्का-ल ज़र्रतिन् ख़ैरय्यरः (७) व मय्यअ-मल् मिस्का-ल ज़र्रतिन् शर्रय्यरः (८) ★

الزلزال ٩٩ العديت ١٠٠ القارعة ١٠١   ٣٨٣   عمّ ٣٠

فِيهَآ أَبَدًا ۖ رَّضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُۥ ۝

سُورَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

إِذَا زُلْزِلَتِ ٱلْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَأَخْرَجَتِ ٱلْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝ وَ

قَالَ ٱلْإِنسَٰنُ مَا لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝ بِأَنَّ رَبَّكَ

أَوْحَىٰ لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ ٱلنَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا۟ أَعْمَٰلَهُمْ ۝ فَمَن

يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُۥ ۝ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُۥ ۝

سُورَةُ العٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ وَهِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً

وَٱلْعَٰدِيَٰتِ ضَبْحًا ۝ فَٱلْمُورِيَٰتِ قَدْحًا ۝ فَٱلْمُغِيرَٰتِ صُبْحًا ۝ فَأَثَرْنَ

بِهِۦ نَقْعًا ۝ فَوَسَطْنَ بِهِۦ جَمْعًا ۝ إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لِرَبِّهِۦ لَكَنُودٌ ۝ وَ

إِنَّهُۥ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝ وَإِنَّهُۥ لِحُبِّ ٱلْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝ أَفَلَا

يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِى ٱلْقُبُورِ ۝ وَحُصِّلَ مَا فِى ٱلصُّدُورِ ۝

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌۢ ۝

سُورَةُ القَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

ٱلْقَارِعَةُ ۝ مَا ٱلْقَارِعَةُ ۝ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْقَارِعَةُ ۝ يَوْمَ يَكُونُ

ٱلنَّاسُ كَٱلْفَرَاشِ ٱلْمَبْثُوثِ ۝ وَتَكُونُ ٱلْجِبَالُ كَٱلْعِهْنِ ٱلْمَنفُوشِ ۝

१०० सूरतुल्-आदियाति १४

(मक्की) इस सूर मे अरबी के १७० अक्षर, ४० शब्द, ११ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वल्आदियाति ज़ब्हन् (१) फल्मूरियाति क़द्हन् (२) फल्मुग़ीराति सुब्हन् (३) फ-अ-सर्-न बिही नक्-अन् (४) फ-व-सत्-न बिही जम्-अन् (५) इन्नल-इन्सा-न लि-रब्बिही ल-कनूद (६) व इन्नहू अ़ला ज़ालि-क ल-शहीद (७) व इन्नहू लिहुब्बिल-ख़ैरि ल-शदीद (८) अ-फला यअ्-लमु इज़ा बुअ्-सि-र मा फिल्कुबूरि (९) व हुस्सि-ल मा फिस्सुदूरि (१०) इन्-न रब्बहुम् बिहिम् यौमइज़िल्-ल-ख़बीर ★ (११)

१०१ सूरतुल्-क़ारिअ़ति ३०

(मक्की) इस सूर में अरबी के १६० अक्षर, ३५ शब्द, ११ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अल्क़ारिअ़तु (१) मल्क़ारिअ़: (२) व मा अद्-रा-क मल्क़ारिअ़ (३) यौ-म यकूनुन्नासु कल्फराशिल-मब्सूसि (४) व तकूनुल्जिबालु कल्‌अिह्निल-मन्फूश (५)

★रु १/२४ आ ८ ★रु॰ १/२५ आ ११

९९ सूरः ज़िल्ज़ाल ९३

सूर ज़िलजाल मदनी है और इस मे आठ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब ज़मीन भोंचाल से हिला दी जाएगी, (१) और ज़मीन अपने (अन्दर के) बोझ निकाल डालेगी, (२) और इन्सान कहेगा कि इस को क्या हुआ है ? (३) उस दिन वह अपने हालात बयान कर देगी, (४) क्योंकि तुम्हारे परवरदिगार ने उस को हुक्म भेजा (होगा।) (५) उस दिन लोग गिरोह-गिरोह हो कर आएगे, ताकि उन को उन के आमाल दिखा दिए जाए। (६) तो जिस ने ज़र्रा भर नेकी की होगी, वह उस को देख लेगा, (७) और जिस ने ज़र्रा भर बुराई की होगी, वह उसे देख लेगा। (८) ★

१०० सूरः आ़दियात १४

सूर आदियात मक्की है और इस मे ग्यारह आयते और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

उन सरपट दौडने वाले घोडो की कसम, जो हाप उठते है, (१) फिर पत्थरो पर (नाल) मार कर आग निकालते है, (२) फिर सुबह को छापा मारते है, (३) फिर उस मे गर्द उठाते है (४) फिर उस वक्त (दुश्मन की) फौज मे जा घुसते है, (५) कि इसान अपने परवरदिगार का नाशुक्रा है, (६) और वह इस से आगाह भी है। (७) वह तो माल की सख्त मुहब्बत करने वाला है। (८) क्या वह उस वक्त को नही जानता कि जो (मुर्दे) कब्रो मे है, वे बाहर निकाल लिए जाएगे (९) और जो (भेद) दिलो मे है, वे जाहिर कर दिए जाएगे। (१०) बेशक उन का परवरदिगार उस दिन को ख़ूब जानता होगा। (११) ★

१०१ सूरः क़ारिअ़: ३०

सूर कारिअ मक्की है, और इस मे ग्यारह आयते और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

खडखडाने वाली, (१) खडखडाने वाली क्या है ? (२) और तुम क्या जानो कि खडखडाने वाली क्या है ? (३) (वह कियामत है,) जिस दिन लोग ऐसे होगे जैसे बिखरे हुए पतंगे (४) और पहाड ऐसे हो जाएंगे जैसे धुकी हुई रग-बिरग की ऊन, (५) तो जिस के (आमाल के) वज़न भारी

फ-अम्मा मन् सकुलत् मवाजीनुहू ॥ (६) फ़हु-व फ़ी ओशतिर्-राजिय ﻁ (७) व अम्मा मन् खफ़फ़त् मवाजीनुहू ॥ (८) फ़-उम्मुहू हाविय. ﻁ (९) व मा अद्रा-क मा हिय ﻁ(१०) नारुन् हामियः ★ (११)

१०२ सूरतुत्तकासुरि १६

(मक्की) इस सूरः मे अरबी के १२३ अक्षर, २८ शब्द, ८ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

अल्हाकुमुत्तकासुरु ॥ (१) हत्ता जुर्तुमुल्-मकाबिर ﻁ (२) कल्ला सौ-फ तअ्-लमून ॥ (३) सुम्-म कल्ला सौ-फ तअ्-लमून ﻁ (४) कल्ला लौ तअ्-लमू-न अ़िल्मल्-यक़ीन ﻁ (५) ल-त - रवुन्नल्-जहीम ॥ (६) सुम्-म ल-त-र-वुन्नहा अ़ैनल्-यकीन ॥ (७) सुम्-म लतुस - अलुन्-न यौमइजिन् अनिन्नअीम ★ (८)

وَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ وَاَمَّا مَنْ
خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۝ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝
ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝ لَتَرَوُنَّ
الْجَحِيْمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝ ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ
عَنِ النَّعِيْمِ ۝

سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَّهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ

وَالْعَصْرِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝ يَحْسَبُ
اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۝ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ
مَا الْحُطَمَةُ ۝ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝ الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْئِدَةِ ۝
اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝

منزل ٧

१०३ सूरतुल्-अस्रि १३

(मक्की) इस सूरः मे अरबी के ७४ अक्षर, १४ शब्द, ३ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

वल्अस्रि ॥ (१) इन्नल्-इन्सा-न लफी खुस्र ॥ (२) इल्लल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व त-वासौ बिल्हक्कि ॥ व त-वासौ बिस्सब्रि ★ (३)

१०४ सूरतुल्-हु-मज़ति ३२

(मक्की) इस सूरः मे अरबी के १३५ अक्षर, ३३ शब्द, ९ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

वैलुल्लिकुल्लि हु-म-जतिल्-लु-मज ॥ (१) अल्लजी ज-म-अ मालव्-व अद्-द-दहू ॥ (२) यह्सबु अन्-न मा लहू अख्-ल-दः ﻁ (३) कल्ला लयुम्बजन्-न फिल्-हु-तमति ॥ (४) व मा अद्रा-क मल्हु-त-म ﻁ (५) नारुल्लाहिल्-मूक-दतु-॥ (६) -ल्लती तत्तलिअु अलल्-अफ्-इद ﻁ (७) इन्नहा अलैहिम् मुअ्-स-दतुन् ॥ (८) फी अ-मदिम्-मुमद्-द-द. ★ (९)

★रु १/२६ आ ११ ★रु १/२७ आ ८ १/२८ आ ३ ★रु. १/२९ आ ९
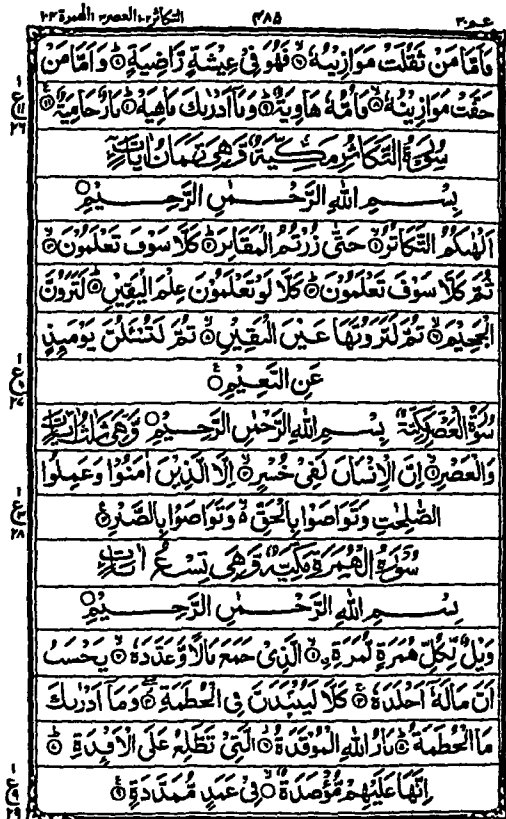
निकलेंगे, (६) वह दिल पसन्द ऐश मे होगा, (७) और जिस के वजन हल्के निकलेंगे, (८) उन के लौटने की जगह हाविया है, (९) और तुम क्या समझे कि हाविया क्या चीज है ? (१०) (वह) दहकती हुई आग है। (११) ★

१०२ सूरः तकासुर १६

सूर तकासुर मक्की है और इस मे आठ आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(लोगो !) तुम को (माल की) बहुत सी तलब ने गाफिल कर दिया, (१) यहा तक कि तुम ने कब्रे जा देखी। (२) देखो, तुम्हे बहुत जल्द मालूम हो जाएगा, (३) फिर देखो, तुम्हे बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (४) देखो अगर तुम जानते (यानी) यकीन का इल्म (रखते, तो गफलत न करते,) (५) तुम जरूर दोजख को देखोगे। (६) फिर उस को (ऐसा) देखोगे (कि) ऐनुल् यकीन (यकीन की आख) (आ जाएगा), (७) फिर उस दिन तुम से नेमत के (शुक्र के) बारे मे पूछ-गछ होगी। (८) ★

१०३ सूरः अस्र १३

सूर अस्र मक्की है और इस मे तीन आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अस्र की कसम, (१) कि इसान नुक्सान मे है, (२) मगर वे लोग, जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और आपस मे हक (बात) की तल्कीन और सब्र की ताकीद करते रहे। (३) ★

१०४ सूरः हु-म-ज़: ३२

सूर हु-म-ज मक्की है और इस मे नौ आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हर तानो भरे इशारे करने वाले चुगलखोर की खराबी है, (१) जो माल जमा करता और उस को गिन-गिन कर रखता है, (२) और ख्याल करता है कि उस का माल उस को हमेशा की जिंदगी की वजह होगा। (३) हरगिज नही, वह जरूर हुतमा मे डाला जाएगा। (४) और तुम क्या समझे कि हुतमा क्या है ? (५) वह खुदा की भडकायी हुई आग है (६) जो दिलो पर जा लपटेगी, (७) (और) वे उस मे बन्द कर दिए जाएगे, (८) यानी (आग के) लम्बे-लम्बे स्तूनो में। (९) ★

१०५ सूरतुल्-फ़ीलि १९

(मक्की) इस सूर. मे अ़रबी के ९४ अक्षर, २४ शब्द, ५ आयतें और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

अ-लम् त-र कै-फ़ फ़-अ़-ल रब्बु-क बि-अस्हाबिलफ़ील ط (१) अ-लम् यज्-अ़ल् कैदहुम् फ़ी तज़्लीलिंव- ۙ (२) व अर्स-ल अ़लैहिम् तैरन् अबाबील ۙ (३) तर्मीहिम् बिह़िजा-रतिम्-मिन् सिज्जीलिन् ۙ ص (४) फ़-ज-अ़-लहुम् क-अ़स्फ़िम-मअ्-कूल ★ (५)

१०६ सूरतु क़ुरैशिन् २९

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ७९ अक्षर, १७ शब्द, ४ आयते और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

लि - ईलाफ़ि क़ुरैशिन् ۙ (१) ईलाफिहिम् रिह्-ल-तश् - शिताइ वस्सैफ़ (२) फ़ल्यअ्-बुदू रब्-ब हाज़लबैति- ۙ (३) ल्लजी अत् - अ़ - महुम् मिन् जूअिंव् ۙ व अ-म - नहुम् मिन् खौफ़ ★ (४)

१०७ सूरतुल्-माऊनि १७

(मक्की) इस सूर मे अ़रबी के ११५ अक्षर, २५ शब्द, ७ आयते और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

अ-र-ऐ-तल्लजी युकज्जिबु बिद्दीन ط (१) फ-जालिकल्लजी यदुअ़-उल्-यतीम ۙ (२) व ला यहुज़्ज़ु अ़ला तअ़ामिल् - मिस्कीन ط (३) फ़वैलुल्-लिलमुसल्लीन ۙ (४) अ्ल्लजी-न हुम् अन् स़लातिहिम् साहून ۙ (५) अ्ल्लजी-न हुम् युराऊ-न ۙ (६) व यम्-ऊनल्-माऊन ★ (७)

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ
فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝ تَرْمِيْهِمْ
بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝
سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ اَرْبَعُ اٰيٰتٍ
لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝
فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِيْۤ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّ
اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝
سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعُ اٰيٰتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝
وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ
هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝ وَ
يَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝
سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ ثَلٰثُ اٰيٰتٍ
اِنَّاۤ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ اِنَّ

१०८ सूरतुल्-कौ-सरि १५

(मक्की) इस सूर. मे अरबी के ३७ अक्षर, १० शब्द, ३ आयते और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

इन्ना अअ्-तैनाकल्-कौ-सर ط (१) फ़-सल्लि लिरब्बि-क वन्हर् ط (२)

१०५ सूरः फ़ील १९

सूर फील मक्की है और इस मे पाच आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो वडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुम ने नही देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने हाथी वालो के साथ क्या किया ? (१) क्या उन का दांव गलत नही किया ? (किया।) (२) और उन पर झिल्लड के झिल्लड जानवर भेजे, (३) जो उन पर कंकर की पत्थरिया फेंकते थे, (४) तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाया हुआ भुस। (५) ★

१०६ सूरः क़ुरैश २९

सूर कुरश मक्की है और इस मे चार आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो वडा मेहरवान, निहायत रहम वाला है।

क़ुरैश के मानूस करने की वजह से, (१) (यानी) उन को जाडे और गर्मी के सफर मे मानूस करने की वजह से, (२) (लोगो को) चाहिए कि (इस नेमत के शुक्र मे) इस घर के मालिक की इबादत करे, (३) जिस ने उन को भूख मे खाना खिलाया और खौफ से अम्न बख्शा।[1] (४) ★

१०७ सूरः माऊन १७

सूर माऊन मक्की है और इस मे सात आयते आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

भला तुम ने उस शख्स को देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है। (१) यह वही (बद-बख्त) है जो यतीम को धक्के देता है, (२) और फकीर को खाना खिलाने के लिए (लोगो को) तर्गीब नही देता। (३) तो ऐसे नमाज़ियो की खराबी है, (४) जो नमाज़ की तरफ से गाफिल रहते है। (५) जो दिखावे का काम करते है, (६) और बरतने की चीजे (उधार) नही देते। (७) ★

१०८ सूरः कौसर १५

सूर कौसर मक्की है और इस मे तीन आयते आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम को कौसर अता फरमायी है।[1] (१) तो अपने परवरदिगार के

---

१ हज़रत की वारहवी पीढी मे एक आदमी नज़्र बिन कनाना था। उन की औलाद कुरैश [illegible] खादिम थे और लोग उन का बहुत अदब और एहतराम करते थे। इस सूर मे [illegible] बताता है कि वह जाडे और गर्मी मे तिजारत के लिए सफर करते है और कोई उन को टोकता नही [illegible] पीते और अम्न से रहते-सहते है तो उन को चाहिए कि तौहीद अपनाए और बुतो की पूजा को छो[illegible] के मालिक यानी एक खुदा की इबादत करे। कुछ तफ्सीर लिखने वालो ने लिखा है कि यह सूर [illegible] मुताल्लिक है और उन के नज़दीक इस के मानी यह है कि हम ने जो मक्के मे हाथियो और हाथी वालो [illegible]
[illegible]

इन्-न शानि-अ-क हुवल्-अब्तर ★ (३)

१०९ सूरतुल्-काफ़िरून १८

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ९९ अक्षर, २६ शब्द, ६ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

कुल् या अय्युहल्-काफ़िरून (१) ला अअ्-बुदु मा तअ्-बुदून (२) व ला अन्तुम् आबिदू-न मा अअ्-बुद (३) व ला अ-न आबिदुम्-मा अबत्तुम् (४) व ला अन्तुम् आबिदू-न मा अअ्-बुद (५) लकुम् दीनुकुम् वलि-य दीन ★ (६)

११० सूरतुन्नस्रि ११४

(मदनी) इस सूरः मे अरबी के ८१ अक्षर, १९ शब्द, ३ आयते और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल्फत्हु (१) व रऐ-तन्ना-स यद्ख़ुलू-न फी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा (२) फसब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क वस्तग्फिर्हु इन्नहू का-न तव्वाबा ★ (३)

१११ सूरतुल्-ल-हबि ६

(मक्की) इस सूर मे अरबी के ८१ अक्षर, २४ शब्द, ५ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

तब्बत् यदा अबी ल-हबिव्-व तब्-ब (१) मा अग़्ना अन्हु मा लुहू व मा क-सब् (२) स-यस्ला नारन् ज़ा-त ल-हबिव्- (३) वम्-र-अतुहू हम्मालतल्-ह-तबि (४) फ़ी जीदिहा हब्लुम्-मिम्-म-सद् ★ (५)

ٱلكفرون ١٠٩ النصر ١١٠ اللهب ١١١ الاخلاص ١١٢

شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝
سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَاۤ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَاۤ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝
سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ
اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝
سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝
سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝
فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝
سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ
قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝

११२ सूरतुल् इख़्लासि २२

(मक्की) इस सूरः मे अरबी के ४९ अक्षर, १७ शब्द, ४ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

कुल् हुवल्लाहु अ-हद (१) अल्लाहुस्स़-मद (२) लम् यलिद् व लम् यूलद् (३)

के लिए नमाज पढा करो और कुर्बानी किया करो। (२) कुछ शक नही कि तुम्हारा दुश्मन ही बे-औलाद रहेगा।[1] (३) ✶

१०९ सूरः काफ़िरून १८

सूर काफिरून मक्की है और इस मे छ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैगम्बर! इस्लाम के इन मुन्किरो से) कह दो कि ऐ काफिरो! (१) जिन (बुतो) को तुम पूजते हो, उन को मैं नही पूजता, (२) और जिस (खुदा) की मैं इबादत करता हू, उस की तुम इबादत नही करते, (३) और (मैं फिर कहता हू कि) जिन की तुम पूजा करते हो, उन की मैं पूजा करने वाला नही हू। (४) और न तुम उस की बन्दगी करने वाले (मालूम होते) हो, जिस की मैं बन्दगी करता हू। (५) तुम अपने दीन पर, मैं अपने दीन पर। (६) ✶

११० सूरः नस्र ११४

सूर नस्र मदनी है और इस मे तीन आयते और २ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब खुदा की मदद आ पहुची और फत्ह (हासिल हो गयी,) (१) और तुम ने देख लिया कि लोग झुड के झुड खुदा के दीन मे दाखिल हो रहे है, (२) तो अपने परवरदिगार की तारीफ के साथ तस्बीह करो और उस से मग्फिरत मागो। बेशक वह माफ करने वाला है। (३) ✶

१११ सूरः ल-हब ६

सूर ल-हब मक्की है और इस मे पाच आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अबू लहब के हाथ टूटें और वह हलाक हो, (१) न तो उस का माल ही उस के कुछ काम आया हो और न वह जो उस ने कमाया। (२) वह जल्द भडकती हुई आग मे दाखिल होगा। (३) और उस की जोरू भी जो ईंधन सर पर उठाए फिरती है, (४) उस के गले मे मूंज की रस्सी होगी।[2] (५) ★

११२ सूरः इख़्लास़ २२

सूर इख्लास मक्की है और इस मे चार आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि वह (जात पाक जिस का नाम) अल्लाह (है) एक है (१) (वह) माबूदे बरहक बे-नियाज है। (२) न किसी का बाप है और न किसी का बेटा, (३) और कोई उस का हमसर

---

१ अब्तर उस को कहते हैं जिस के मर्द औलाद मे से कोई न रहे। जब हजरत के बेटो का [illegible] तो कुछ काफिर कहने लगे कि मुहम्मद अब्तर हो गया, इस के बाद कोई इस का नाम लेने वाला [illegible]। [illegible] ने आप से फरमाया कि तुम्हारा बुरा चाहने वाले ही की नस्ल कट जाएगी और आप का नाम [illegible] जरिए से हमेशा के लिए बाकी रखा।

२ 'अबू लहब' रिश्ते मे हजरत का चचा था, मगर बडा काफिर और आप की जान का दुश्मन [illegible]

व लम् यकुल्लहू कुफुवन् अ - ह़द ★ (४)

११३ सूरतुल्-फ़-लक़ि २०

(मक्की) इस सूरः मे अरबी के ७३ अक्षर, २३ शब्द, ५ आयते और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

कुल् अऊ़ज़ु बिरब्बिल्-फ-लकि ᐟ (१) मिन् शर्रि मा ख-लक़् ᐟ (२) व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब् ᐟ (३) व मिन् शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फ़िल्अ़ुकद् ᐟ (४) व मिन् शर्रि ह़ासिदिन् इज़ा ह़-सद् ★ (५)

११४ सूरतुन्नासि २१

(मक्की) इस सूर. में अरबी के ८१ अक्षर, २० शब्द, ६ आयते और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

कुल् अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नासि ᐟ (१) मलिकिन्नासि ᐟ (२) इलाहिन्नासि ᐟ (३) मिन् शर्रिल्-वस्वासिल्-ख़न्नासि- ᐟ (४) -ल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि ᐟ (५) मिनल्जिन्नति वन्नास ★ (६)

عم ٣٠   ٤٨٨   الفلق ١١٣ الناس ١١٤

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿٤﴾

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿١﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿٢﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ﴿٤﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿١﴾ مَلِكِ النَّاسِ ﴿٢﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ﴿٣﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ﴿٤﴾ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿٥﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿٦﴾

منزل ٧
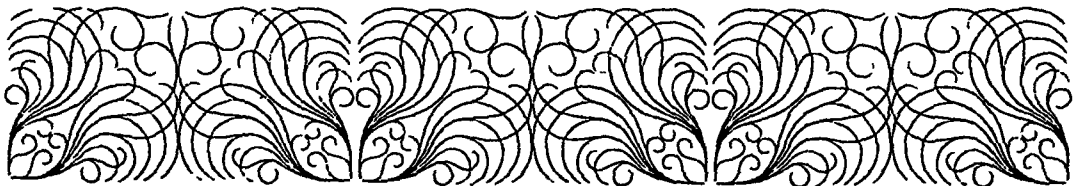
(साथी) नही। (४) ★

११३ सूर: फ़लक़ २०

सूर फलक मदनी है और इस मे पाच आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मै सुबह के मालिक की पनाह मागता हू, (१) हर चीज की बुराई से [illegible] पैदा की, (२) और अधेरी रात की बुराई से, जब उस का अधेरा छा जाए (३) [illegible] (पढ-पढ कर) फूकने वालियो की बुराई से, (४) और हसद (जलन) करने वाले की बुराई से [illegible] हसद करने लगे।[१] (५) ★

११४ सूर: नास २१

सूर नास मदनी है और इस मे छ आयते और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बडा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मै लोगो के परवरदिगार की पनाह मागता हू, (१) (यानी) लोगो के [illegible] बादशाह की, (२) लोगो के माबूदे बर-हक की, (३) (शैतान) वस्वसा डालने वाले की बुराई से [illegible] जो (खुदा का नाम सुन कर) पीछे हट जाता है[२], (४) जो लोगो के दिलो मे वस्वसे डालता है [illegible] (चाहे वह) जिन्नो मे से (हो) या इसानो मे से। (६) ★

अब्दुल उज्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब था, मगर मशहूर इसी कुन्नियत से था, क्योकि [illegible] हुस्न व जमाल की वजह से उस का चेहरा आग की तरह चमकता था। [illegible] को तबीह करो तो आप ने कुरैश को जमा कर के फरमाया कि भला अगर मै तुम से [illegible] सुबह या शाम तुम पर हमला करने वाली है तो तुम इस बात को मान लोगे [illegible] ने फरमाया कि मै तुम को एक सख्त अज़ाब से आगाह करता हू [illegible] ने कहा कि तुम्हारे हाथ टूटे (यानी तुम हलाक हो) जो तुम ने हम को [illegible] मे यह आयत नाज़िल हुई थी। अबू लहब की जोरू जिस का नाम [illegible] था। उस ने यह तरीका अख्तियार कर रखा था कि रात को आप के [illegible] इसी लिए उस को 'हम्मालतल हतब' फरमाया।

१ उस वक्त उस की टोक लग जाती है।

२ शैतान गुनाह की दावत दे और आप नज़र न आए।

★रु १/३७ आ ४ ★रु. १/३८ आ ५ ★रु १/३९ आ ६

دعائے ماثورہ

اَللّٰھُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ ط اَللّٰھُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ
الْعَظِیْمِ وَاجْعَلْہُ لِیْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّھُدًی وَّرَحْمَۃً ط اَللّٰھُمَّ
ذَکِّرْنِیْ مِنْہُ مَا نَسِیْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْہُ مَا جَھِلْتُ وَارْزُقْنِیْ
تِلَاوَتَہٗ اٰنَآءَ الَّیْلِ وَاٰنَآءَ النَّھَارِ وَاجْعَلْہُ لِیْ حُجَّۃً یَّارَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ط

दुआए मासूर:

अल्लाहुम्-म आनिस् वह्-शती फ़ी क़ब्री अल्लाहुम्मर्-हम्नी बिक़ुर्आनिल्-अज़ीमि वज्अल्हु ली इमामंव्-व नूरंव्-व हुदव्-व रह्म-तन् अल्लाहुम्-म ज़क्किर्नी मिन्हु मा नसीतु व अ़ल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्ज़ुक़्नी तिलाव-तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि वज्अल्हु ली हुज्जतंय्या रब्बल्-आ़लमीन (आमीन)

दुआए मासूर:

ऐ अल्लाह! मेरे मरने के बाद मेरी कब्र की परेशानी से मुझ को मानूस (अभ्यस्त) करना। इस महान कुरआन मजीद (की बरकत) के वसीले से मुझ पर रहम कर और कुरआन मजीद को मेरे लिए इमाम (अधिनायक), नूर (प्रकाश), हिदायत (पथ-प्रदर्शक), और रहमत (का साधन) बना। ऐ अल्लाह! (कुरआन मजीद मे) जो मैं भूल गया हू मुझे याद दिला (और) जो मैं नही जान पाया वह मुझे सिखला। अमन से रात दिन (कुरआन मजीद की) तिलावत करने का नसीब दे और उसको मेरे लिए दलील बना, ऐ दुनिया के पालनहार! (यह मेरी दुआ कुबूल कर।)

(पृष्ठ ५ का शेष)

यह मुराद है कि जिन रास्तो मे इन्सान हिदायत की बातो को [illegible]
३ इस आयत से मुनाफिको का हाल शुरू होता है। मुनाफिक उस को [illegible]
जाहिर मे अपने को मोमिन बयान करे। इस तरह के लोग मदीने मे थे और [illegible]
पहुचने का ज्यादा खतरा रहता था, इस लिए अल्लाह तआला ने उन के हाल [illegible]
आगाह फरमा दिया, ताकि उन से बचते रहें और उन के धोखे मे न आएं।
४ ये लोग मुसलमानो के पास भी आते थे और काफिरो के यहा भी जाते [illegible]
पैदा हो, सो जब उन से कहा जाता कि फसाद की बाते न करो, तो जवाब देते [illegible]
मे सुलह व साजगारी पैदा करना है। खुदा ने फरमाया कि उन के काम फसाद [illegible]
फसाद पैदा करने वाले है, लेकिन इन को मालूम नही।
५ शैतानो से मुराद उन के सरदार है। मुनाफिक लोग जब मुसलमानो से मिलते [illegible]
तरह मोमिन है और जब अपने सरदारो के पास जाते तो कहते, हम [illegible]
मुसलमानो से दिल-लगी करते है और अपना ईमान जाहिर कर के उन को [illegible]
६ इस आयत मे खुदा मुनाफिको की इन बातो के जवाब मे फरमाता है कि [illegible]
यहा यह है कि जिस तरह वे देखने मे ईमान जाहिर करते है और अपने [illegible]
तुम्हारे साथ है, इसी तरह खुदा दुनिया मे उन को पनाह देता और उन के [illegible]
वे समझे हुए है कि उन के काम उन को नुक्सान नही पहुचाते, लेकिन कियामत [illegible]
किया जाएगा।
७ मुनाफिक कई किस्म के थे। कुछ ऐसे थे कि पहले मुसलमान हो गये थे, फिर मुनाफिक [illegible]
मिसाल उन्ही का नक्शा खीचती है कि उन्होंने पहले ईमान लाकर रोशनी हासिल की, फिर [illegible]
रोशनी को खो दिया और निफाक के अंधेरे मे पड गये यानी उन के दिल [illegible]।

(पृष्ठ ७ का शेष)

२ इस आयत मे यह बयान है कि हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम [illegible]
मजीद खुदा का कलाम है और कुफ्फार को चैलेंज किया गया है कि अगर तुम [illegible]
हो कि यह किताब खुदा की तरफ से नाजिल नही हुई, बल्कि मुहम्मद (सल्ल०) [illegible]
इस जैसी एक सूर तुम भी बना लाओ। इस बारे मे इख्तिलाफ है कि कुरआन [illegible]
कर देने वाला है यानी जैसी उम्दा, साफ-सुथरी और जानदार इबारत कुरआन मजीद की है [illegible]
से नही बन सकती। वे यह भी कहते है और इसे उन के [illegible]
का ज्यादा प्रचार होता था, उस वक्त के पैगम्बर को उसी किस्म का [illegible]
के उतरने के जमाने मे अरब मे जानदार और साफ-सुथरी [illegible]
मुस्नबीयीन (नबियो मे आखिरी नबी) को कुरआन की [illegible]
कि बडे-बडे नामी और माहिर शायर और खतीब उन के मुकाबले मे आजिज [illegible]
अपनी हकीमाना हिदायतो के लिहाज से मोजिज (चुप कर देने वाली) है। [illegible]
मोजिज मानते है, बहरहाल इस मे आदाब है, अख्लाक है, [illegible]
को सवारने की बात है, सियासत के कानून है, [illegible]
व्यापार है, हुकूक है, इबादतें है, बराबरी है, भाईचारा है [illegible]

और वह्दानियत है, गरज़ इसमे कमाल दर्जे की इंसान की हालत की इस्लाह है और कुछ शक नहीं कि वह क्या माफ़-मुयरी ज़ोरदार ज़ुवान के लिहाज़ से और क्या हकीमाना हिदायतो और रूहानियत के, वे-मिसाल व वेनज़ीर है ? और कोई आदमी इस किस्म की किताव बनाने की कुदरत नहीं रखता। इसी वजह से दूसरी जगह इर्शाद हुआ है, 'कुल ल-इनिज-त-म-अ्तिल इन्सु वल जिन्नु अला अय्यअ्तू विमिस्लि हाज़ल कुरआनि ला यातू-न विमिस्लिही व लौ का-न वअ्ज़ुहुम लि वअ्ज़िन ज़हीर०' (कह दीजिए, अगर तमाम जिन्न व इंसान इस कुरआन जैसा बना लाने पर जमा हो जाए, तो वे इस जैसा नही ला सकते, चाहे वे एक दूसरे के पुश्त-पनाह ही क्यों न हो।)

३ कुरआन मे मुश्रिको और उनके झूठे मावूदो की मिसालें कुछ आयतो मे इस तरह वयान हुई हैं कि 'जो लोग ख़ुदा को छोड कर औरो को कर्ता-धर्ता वनाते है, उनकी मिसाल मकडी की-सी है कि वह भी एक (तरह का) घर वनाती है और कुछ शक नही कि तमाम घरो से कमज़ोर मकड़ी का घर होता है, काश ये इस वात को जानते।' दूसरी आयत मे है, 'लोगो ! एक मिसाल वयान की जाती है, उसे गौर से सुनो कि जिन लोगो को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नही वना सकते, अगरचे इस (काम) के लिए सव जमा हो जाएं और अगर उनसे मक्खी कोई चीज़ छीन ले जाए तो उसे उससे छुडा नही सकते। तालिव और मतलूव (यानी आविद और मावूद) दोनो गये गुज़रे हैं।' काफिर लोग ये मिसालें सुनते तो कहते कि ऐसी छोटी और मामूली चीज़ो की मिसालें वयान करना ख़ुदा की शान के खिलाफ है। ख़ुदा ने फ़रमाया कि ख़ुदा मच्छर या जो चीज़ें इससे वडी हैं, उनकी मिसालें वयान करने से शर्माता नही। इन चीज़ो को पैदा भी तो उसी ने किया है और जव पैदा करने मे उसे शर्म नही तो उनकी मिसाल मे क्यो शर्म हो ?

(पृष्ठ ६ का शेष)

२ शैतान जिन्न की किस्म से था, वडी इवादत किया करता था और वडा इल्म रखता था। इवादत की ज्यादती की वजह से फरिश्तो का दर्जा मिल गया था। यही वजह है कि जव अल्लाह तआला ने फरिश्तो को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करें तो इस खिताव मे वह भी दाखिल था। चूकि उस की पैदाइश आग से हुई थी और आदम की मिट्टी से, और आग को मिट्टी पर वरतरी है, इस के अलावा वह इवादत करने वाला और इल्म रखने वाला भी वड़ा था, इस लिए शेख़ी मे आ गया और आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा न किया। ख़ुदा ने इस घमंड-गुरूर की वजह से उसे मर्दूद (धुत्कारा हुआ) कर दिया।

(पृष्ठ १५ का शेष)

उस हुक्म के खिलाफ करते और एक दिन पहले दरिया के किनारे गढे खोद कर उस मे पानी भर देते थे और जव मछलिया उनमे जमा हो जाती, तो निकालते और कहते कि यह शिकार जुमा का हैं। इस हीले की वजह से वन्दर वना दिये गये।

२. तफसीर लिखने वाले लिखते हैं कि वनी इस्राईल मे एक वडा मालदार शख्स था, मगर वे-औलाद। उस का वारिस उस का एक भतीजा था। उस ने माल के लोभ की वजह से उस को कत्ल कर डाला। जो लोग इस तरह कत्ल किया करते थे, वडी एहतियात से काम लिया करते थे। उस ने भी ऐसे तरीके से उसे कत्ल किया कि कातिल का कुछ पता नही मिलता था। लोग इस वारे मे लडने-झगडने लगे, तो किसी ने कहा कि तुम मे ख़ुदा के पैगम्वर मौजूद हैं, उन से रुजूअ् करो। उन्होने मूसा अलै० से यह कैफियत वयान की। आप ने वैल ज़िव्ह करने का हुक्म दिया। अजव नही कि कातिल को इस वात का खौफ हो गया हो कि कही राज़ न खुल जाए, इस लिए इस से पहले कि वैल के वारे मे हुज्जतें करें, यह वात कही कि क्या आप इस से हंसी करते हैं, क्योकि हम पूछते हैं कि कातिल कौन है ? आप कहते हैं कि वैल ज़िव्ह करो और यह एक विल्कुल वे-मुनासिव वात है। मूसा अलै० ने फरमाया

कि मैं हनी नही करता, बल्कि हकीकत तो यह है कि वह बात कहता हू, जिस को खुदा ने इर्शाद फरमाया है, तो उन्होंने बैल की खूबिया मालूम करने मे कई तरह की बाते की। आखिरकार उन्होने उस को जिब्ह किया, तो हुक्म हुआ, उन का कोई-मा टुकडा मक्तूल को मारो। उस के मारने से मक्तूल जिंदा हो गया और उम से पूछा गया कि तुम को किम ने मारा था ? तो उस ने कातिल का नाम ले दिया। इस किस्से से यह ज़ाहिर करना मक्सूद है कि जिस तरह खुदा ने उम मक्तूल को तुम्हारी आखो के सामने जिंदा कर दिया, उसी तरह वह कियामत के दिन तमाम मुर्दो को उठा खडा करेगा और यह उस को कुछ मुश्किल नही।

(पृष्ठ १७ का शेष)

ऐसी बाते मुसलमानो को क्यो बताया करते हो ? वे उन की मनद से तुम को कियामत के दिन खुदा के मामने इल्ज़ाम देंगे। खुदा ने फरमाया कि मुनाफिको का यह ख्याल गलत है कि उन के अपने बताने से हमारे यहा उन पर इल्जाम लगेगा, बल्कि हम तमाम बातो को, जो ये छिपे या खुले तौर पर करते हैं, जानते है और खुदा ही उन से पूछ लेंगे कि हमारी नाफरमानी क्यो करते रहे ?

३ यहूदी कहते थे कि हम ने चालीम दिन बछडे की पूजा की थी, सो उतने ही दिन हम को दोज़ख का अज़ाब होगा और किसी और अमल की वजह से हम ज्यादा अज़ाब नही पाएगे। खुदा ने इस कौल की तर्दीद (खडन) की और फरमाया कि क्या खुदा ने तुम से वायदा किया है कि तुम कुछ दिन से ज्यादा दोज़ख मे न रहोगे, हालांकि तुम्हारे अमल ऐसे हैं कि हमेशा जहन्नम की आग मे जलते रहो।

(पृष्ठ ५६१ का शेष)

रहा था, फिर उस ने सवारी का अगला पाव दबाया, तो मैं उस पर सवार हो गयी और वह मेरी सवारी की बाग हाथ मे ले कर चला, यहा तक कि हम लश्कर मे जा पहुचे और उस वक्त ठीक दोपहर थी। फिर मेरे बारे मे जो कुछ अफवाहे फैलायी गयी, फैलायी गयीं और जो हलाक हुआ, सो हुआ।

इस तूफान उठाने मे जिस ने सब से बडा हिस्सा लिया, वह अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल था, इस के बाद हम मदीना आए और वहा आ कर मैं महीने भर बीमार रही। लोग मेरे बारे मे तज्किरे करते थे, लेकिन मुझ को कुछ खबर न थी। अलबत्ता मुझे एक बात से शक होता था कि जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ पर वह लुत्फ़ व तवज्जोह नही फरमाते थे, जो पहले मेरी बीमारी के ज़माने मे फरमाया करते थे। अब जो तश्रीफ लाते तो सलाम करने के बाद सिर्फ इतना पूछते कि तुम्हारा हाल कैसा है। इस से मुझे एक तरह का शुब्हा तो होता, लेकिन बोहतान लगाने वालो के बोहतान व शरारत की बिल्कुल खबर न थी। इस हालत मे मैं बहुत कमज़ोर हो गयी। एक रात जो ज़रूरत पूरी करने बाहर निकली, तो मिस्तह की मा मेरे साथ थी। इत्तिफाक से उस का पाव लडखडाया तो उस ने कहा, 'मिस्तह हलाक हो।' मैं ने कहा तुम ऐसे शख्स को बद-दुआ देती हो, जो बद्र मे शरीक हुआ। उस ने कहा, क्या तुम ने नही सुना कि क्या बोहतान लगाया है ? मैं ने कहा, नही, तुम बताओ कि उस ने क्या कहा है ? तो उस ने पूरा माजरा बयान किया। उस को सुन कर मुझे बहुत रज हुआ। एक तो मैं पहले ही बीमार थी। यह हालत सुन कर रज पर रज हुआ। जब मैं लौट कर अपने घर आयी, तो जनाबे रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ लाए और मेरा हाल पूछा। मैं ने कहा, अगर आप इजाज़त बख्शें तो मैं अपने मायके चली जाऊ। मेरा मतलब यह था कि वहा जा कर इस खबर की यकीनी मालूमात करू। आप ने इजाज़त दे दी और मैं अपने मा-बाप के पास चली गयी। वहा मैं ने अपनी मा से पूछा कि लोग क्या तज्किरा करते हैं ? उन्हो ने कहा कि बेटा ! कोई ऐसी बडी बात नही है, तुम कुछ ख्याल न करो। इस जवाब से मेरा दिल मुत्मइन न हुआ और मैं रात भर रोती रही। उधर जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य आने मे बहुत देर हो गयी तो आप ने मश्विरा लेने के लिए हज़रत अली बिन अबी तालिब और उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया। उसामा ने तो यह कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल ! वह आप की

बीवी है और हम को उन के बारे मे भलाई के सिवा कुछ नही मालूम। रहे अली बिन अबी तालिब, उन्हो ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! खुदा ने आप पर तगी नही की, औरतें और बहुत हैं। अगर आप लौडी यानी बरीरा रज़ि० से मालूम फरमाएगे, तो वह सच-सच बयान कर देगी। आप ने बरीरा रज़ि० को बुला कर मालूम किया, तो उस ने कहा कि कसम है उस ज़ात की ! जिस ने आप को हक दे कर भेजा है, मैं ने कोई ऐसी बात नही देखी कि इस का उन पर ऐब लगाऊ। वह तो एक सीधी-सादी और भोली-भाली नव-उम्र लडकी है। यह सुन कर आप उसी दिन खुत्बा पढने को खडे हुए और फरमाया कि उस शख़्स के मुकाबले मे, जिस की वजह से मुझे मेरे अह्ल के मामले मे इतनी तक्लीफ पहुची है, कौन मेरी मदद करता है, तो साद बिन मुआज़ असारी खडे हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं आप की मदद करता हू और वह शख़्स औस कबीले से है, तो हम उस की गरदन मारेंगे और अगर भाइयो या खज़रज कबीले से है तो आप जो इर्शाद फरमाएगे, हम उसे पूरा करेंगे। फिर साद बिन उबादा खडे हुए। यह खज़रज कबीले के सरदार थे, थे तो नेक आदमी, लेकिन हमीयत ने जोश मारा तो साद बिन मुआज़ से कहने लगे कि तुम ने गलत कहा। अगर वह शख़्स तुम्हारी जमाअत से है, तो मैं भी पसन्द नही करता कि कत्ल किया जाए, तो उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० जो साद बिन मुआज रज़ि० के चचेरे भाई है, खडे हुए और साद बिन उबादा रज़ि० से कहने लगे कि तुम ने झूठ कहा। खुदा की कसम ! हम उस को ज़रूर कत्ल कर डालेगे। तुम मुनाफिक हो कि मुनाफिको की तरफ से झगडते हो। फिर दोनो कबीले औस और खज़रज मारे गुस्से के खडे हो गये और करीब था कि उन मे लडाई और हाथापाई हो जाए, मगर प्यारे नबी सल्ल० ने उन के जोश को ठडा किया और लडाई होने से रुक गयी। हा, तो मेरे रोने का यह हाल था कि मेरे मा-बाप सोचते थे कि रोना मेरे कलेजे को फाड कर रहेगा। इसी बीच एक दिन दोनो मेरे पास बैठे थे, और मैं रो रही थी कि असार की एक औरत मेरे पास आयी और वह भी बैठ कर मेरे साथ रोने लगी। अभी हम रो ही रहे थे कि रसूले खुदा सल्ल० तश्रीफ लाए और सलाम कर के बैठ गये। जब से लोगो ने मेरे बारे मे वह कहा जो कहा, आप मेरे पास नही बैठते थे और आप पर मेरी शान मे कुछ वह्य नही हुई थी। जब आप बैठ गये तो खुत्बा पढा और फरमाया, ऐ आइशा ! तुम्हारे बारे मे ऐसी बात मुझ तक पहुची है, अगर तुम बरी हो, तो बहुत जल्द खुदा तुम्हारा बरी होना जाहिर कर देगा और अगर तुम से गुनाह हुआ है, तो खुदा से बख्शिश मागो और उस की तरफ रुजूअ हो, क्योंकि बन्दा जिस वक्त अपने गुनाह का इकरार करता और तौबा कर लेता है, तो खुदा भी उस पर रुजूअ फरमाता और उस की तौबा कुबूल कर लेता है। जब आप बात खत्म कर चुके, तो मेरे आसू थम गये, यहा तक कि एक कतरा भी आख से नही निकलता था। फिर मैं ने अपने बाप से कहा कि आप मेरी तरफ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जवाब दे दीजिए। उन्हो ने कहा, मैं नही जानता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या कहू। फिर मैं ने अपनी मा से कहा कि आप जवाब दे दीजिए। उन्हो ने भी यही कहा कि खुदा की कसम ! मैं नही जानती कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या कहू। फिर मैं ने खुद ही कहा, हालाकि मैं एक नव-उम्र लडकी थी और कुरआन भी बहुत-सा नही पढा था कि जो किस्सा आप ने सुना है, वह मुझे मालूम हो गया है और यह भी कि आप उसे बावर कर चुके है, लेकिन अगर मैं कहू कि मैं बरी हू और खुदा खूब जानता है कि मैं बरी हू तो आप उस को सच नही समझेगे और अगर इस का इकरार कर लू हालाकि खुदा जानता है कि मैं उस से बरी हू, तो आप उस को मना लेंगे, सो खुदा की कसम ! मैं वही बात कहती हू, जो यूसुफ के बाप ने कही थी कि 'फसब्रुन जमील वल्लाहुल मुस्तआनु अला मा तसिफून०' फिर मैं वहा से उठ कर अपने बिस्तर पर आ लेटी और मैं यकीन करती थी कि चूकि मैं बरी हू, इस लिए खुदा ज़रूर मेरे बरी होने का एलान फरमायेगा, लेकिन मैं यह ख्याल नही करती थी कि मेरी शान मे कुरआन की आयतें नाज़िल होगी, क्योंकि मैं अपनी शान को इस से कमतर समझती थी कि खुदा मेरे बारे मे अपना कलाम नाज़िल फरमाएगा, जो हमेशा पढा जाएगा, अल-बत्ता उम्मीद ज़ाहिर करती थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

कोई रवाब देख लेंगे, जिस मे खुदा मेरा बरी होना जाहिर फरमाएगा। सो खुदा की कसम ! अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मज्लिस से तशरीफ भी नही ले जाने पाए थे कि खुदा ने आप पर कुरआन नाज़िल फरमाया और वह्य नाज़िल होते वक्त जिस तरह आप पसीना-पसीना हो जाते थे, उसी तरह उस वक्त आप के मुबारक जिस्म से मोतियो की तरह पसीने के कतरे टपकने लगे। जब वह हालत दूर हो गयी तो आप का चेहरा खिल उठा और पहला जुम्ला जो आप की मुबारक जुबान से निकला, वह यह था कि ऐ आइशा रज़ि० ! खुश हो जाओ, खुदा ने तुम्हे बरी करार दे दिया है। जब खुदा ने हज़रत आइशा के बरी किए जाने मे 'इन्नल्लज़ी-न जाऊ बिल इफ्कि अुस्बतुम मिन्कुम' से दस आयते नाज़िल की, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि अल्लाह की कसम ! मैं आगे मिस्तह को कुछ खर्च नही दूगा। मिस्तह हज़रत अबूबक्र रज़ि० के अज़ीज़ो मे थे और गरीब थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० खर्च से उन की मदद किया करते थे, लेकिन इत्तिफाक से इस बोहतान के तज्किरे मे वह भी शरीक हो गये थे। जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कसम खायी कि वह मिस्तह को खर्च नही देंगे, तो खुदा ने आयत 'व ला यअ्तल्नि उलुल फज़्लि मिन्कुम' नाज़िल फरमायी। इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने पहले ही की तरह खर्च देना जारी कर दिया और कहने लगे कि अल्लाह की कसम ! मैं इस को खर्च देने से कभी हाथ न रोकूगा।

(पृष्ठ ८१३ का शेष)

गलबा हासिल करें या जान ही दे दें।

चुनांचे साथियो को हुक्म दिया कि खुदा का नाम ले कर चल दो। फिर वहा से रवाना हुए और मुरार की घाटी मे से हो कर हुदैबिया के परले सिरे जा उतरे। वहा आप के पास कुरैश के कई आदमी एक-एक कर के आते रहे। आप उन से यही फरमाते रहे कि हम तो सिर्फ काबा की ज़ियारत के लिए आए हैं, लडाई लडने नही आए। वे लोग जो बातें यहा सुनते थे वहा जा कर कह देते थे। आखिर मे आप ने अपनी तरफ से हज़रत उस्मान रज़ि० को कुरैश के पास यह पैगाम दे कर भेजा कि हम लडने नही आए, खाना-ए-खुदा की ज़ियारत करने को आए हैं, अभी आप वापस नही आए थे कि यहा यह अफवाह उड गयी कि आप कत्ल कर दिए गए हैं। यह खबर सुन कर जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लडाई का इरादा करना पडा और इसी इरादे से आप ने मुसलमानो से बैअत ली, जिस को 'बैअतुर्रिज्वान' कहते हैं। उधर कुफ्फार को जो यहा के हालात मालूम हुए, तो वह जोश व खरोश हल्का पड गया और उन्हो ने सुहैल बिन अम्र को हज़रत सल्ल० के पास समझौते के लिए रवाना किया और समझौते की शर्ते यह करार दी कि आप अब के बे उमरा किए वापस चले जाए, अगले साल उमरे को आए और सिर्फ तीन दिन ठहरें और तलवारो के सिवा कोई हथियार साथ न लाए और उन को भी म्यान से न निकालें।

शर्ते हज़रत सल्ल० ने मंज़ूर फरमा ली और सुलहनामा तैयार होने लगा, तो आप ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया कि लिखो, 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम' तो सुहैल बोला, हम नही जानते 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम' क्या है, 'बिस्मिकल्लाहुम-म' लिखो। फिर आप ने फरमाया लिखो 'मिन मुहम्मदिर्रसूलुल्लाह' तो कहा कि हम अगर इस बात को मान लेते कि आप खुदा के रसूल है, तो आप की पैरवी ही न अपना लेते ? अपने वालिद का नाम लिखवाइए, तो आप ने फरमाया, लिखो, 'मिन मुहम्मदिब्नि अब्दुल्लाह' और एक शर्त कुफ्फार ने यह की कि जो शख्स आप की तरफ से हमारे पास जाए, हम उसको वापस न करेंगे और जो हमारी तरफ से आपके पास जाए, आप उस को वापस कर दें। इस समझौते की जो मसलहत थी, उस को तो जनाब रसूले खुदा ही खूब समझते थे, लेकिन जोशीले साथियो को सुलह की बातें बहुत बोझ मालूम हुयी और सख्त रंजीदा हुए और इस पर ख्वाब का मामला उन को बे-दिल किए देता था। वे यह समझते थे कि इसी साल उमरा करेंगे, मगर जाते हैं नाकाम व नामुराद। इसी बीच एक ना-खुशगवार वाकिआ पेश आया कि अभी सुलहनामा लिखा ही जा रहा था कि अचानक

अबू जुन्दल बिन सुहैल बिन अम्र, पैरो मे ज़ंजीर पडी हुई, कुफ्फार मे से भाग कर पास आ मौजूद हुए, तो सुहैल ने कहा कि जिन लोगो के बारे मे मैं आप से समझौता करता हू, उन मे यह पहला शख्स है, इस को आप मेरे हवाले कर दीजिए। आप ने फरमाया कि अभी तक सुलहनामा मुकम्मल नही हुआ। उस ने कहा कि मामला उस के आने मे पहले तै हो चुका है। आप ने फरमाया, हा, यह सच है। फिर सुहैल ने उठ कर अबू जुन्दल का गरेबान पकड लिया और अबू जुन्दल धाडें मार-मार कर रोने और कहने लगे कि मुसलमानो ! तुम मुझे मुश्रिको के हवाले क्यो करते हो ? ये तो मुझे मेरे दीन से हटा देंगे। हज़रत सल्ल० ने फरमाया, अबू जुन्दल ! सब्र कर और खुदा से अपने बदले की उम्मीद रख, खुदा तेरी मुश्किलो का हल करने वाला है। हम तुझ को हरगिज़ वापस न देते, लेकिन हम इन लोगो से इस बात का अह्द कर चुके हैं और हम अह्द तोडना नही चाहते। बहरहाल ये बातें मुसलमानो पर बहुत बोझ रही और इन्हो ने उन को बडा दुखी किया, लेकिन यह समझौता ही था, जो तमाम कामियाबियो की तम्हीद साबित हुआ। इस के बाद वही बात हो गयी—

जिधर रुख किया, सल्तनत ज़ेरे फरमा,
जिधर आख उठायी ममालिक मुसख्खर ॥

(पृष्ठ ६६१ का शेष)

फरमाया। खदीजा ने आप को तसल्ली दी और वरका बिन नौफ़ुल (अपने चचेरे भाई) के पास ले गयी। ये बूढे शख्स जाहिलियत के ज़माने मे ईसाई हो गये थे। उन्हो ने आप से यह माजरा सुना तो कहा कि यह वही नामूस है, जो ईसा पर उतरा था और खुदा ने आप को पैगम्बर किया है और यह भी कहा, काश मैं जवान होता और जिस वक्त आप की कौम आप को वतन से निकालती, उस वक्त तक ज़िदा रहता। आप ने पूछा, क्या वे मुझ को निकाल देंगे ? उस ने कहा, हा, जो शख्स ऐसी चीज़ लाया करता है जो आप लाए है, लोग उस के दुश्मन हो जाया करते है। अगर मैं उस वक्त तक जीता रहूगा तो तुम्हारी बहुत मदद व हिमायत करूगा। मगर उस के थोडे ही अर्से के बाद वह इन्तिकाल फरमा गये और जी की आरज़ू जी ही में ले गये।

२ यह मतलब भी हो सकता है कि अगर यह मना करने वाला शख्स सीधे रास्ते पर होता और परहेज़गारी की बातें सिखाता तो क्या अच्छा होता। तफ्सीर लिखने वालो ने लिखा है कि मना करने वाले शख्स से मुराद अबू जह्ल है, जो नमाज़ पढते वक्त आप को देखता, तो चिढाता। खुदा ने फरमाया कि क्या यह नही जानता कि खुदा उस के कामो को देख रहा है और अगर यह ऐसी गुस्ताखियो से बाज़ न आएगा, तो हम उस को घसीट कर जहन्नम मे दाखिल कर देंगे। कहते हैं कि दुनिया मे भी उस को यह सज़ा मिली कि बद्र की लडाई मे मारा गया और घसीट कर गढे मे डाल दिया गया।

(पृष्ठ ६६६ का शेष)

कर हलाक किया, तो इस लिए कि कुरैश जाडे और गर्मी के सफर से मानूस हो कर अपने शहर मे अम्न व अमान से रहे।

२ बहुत-सी हदीसें है, जिनसे साबित होता है कि कौसर बहिश्त की एक नहर का नाम है जो हज़रत सल्ल० को अता हुई है। हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आह्ज़रत सल्ल० को ऊघ आ गयी, फिर सर उठा कर मुस्कराए और मुस्कराने की यह वजह बयान फरमायी कि अभी मुझ पर एक सूर. नाज़िल हुई है और फिर यह सूर पढी और फरमाया कि तुम जानते हो कि कौसर क्या चीज़ है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि खुदा और रसूल ही जानें। फरमाया, वह एक नहर है जो खुदा ने मुझ को बहिश्त मे दी है, इस मे खैरे कसीर (बडी भलाई) है।

क़ुरआन ख़त्म करने के बाद की दुआ

अल्लाह बुलन्द और अज़मत (वडा दर्जे) वाले ने सच्चा कलाम नाज़िल (उतारा) किया और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो वहुत ही इज्जत और इकराम वाले नबी है, उन्होने सच सच हम तक पहुंचा दिया। हम सब उसके सच्चा होने की गवाही देते है। ऐ हमारे रब ! तू इस कुरआन की तिलावत (पाठ) हम से कुबूल फरमा, वेशक तू वडा सुनने वाला, जानने वाला है।

ऐ अल्लाह ! तू हमे कुरआन मजीद के हर एक हुरूफ के बदले मे ईमान की लज़्ज़त (मज़ा) और मिठास अता फरमा (दे) और कुरआन मजीद के हर मकाम (जगह) के हर हिस्सा मे से तिलावत करने की हम को जज़ाए खैर (अच्छा वदला) अता फरमा। ऐ अल्लाह हर (अलिफ) के पढ़ने पर हमे उलफत (मुहव्वत) अता फरमा और (बा) के सबब बरकत अता फरमा और (ता) के पढने पर हमारी तौबा कुबूल फरमा और (सा) के हर्फ पर हमे सवाब अता फरमा और (जीम) के पढने पर हमे जमाल (खूवसूरती) अता फरमा और (हा) के अदा करने पर हिकमत अता फरमा और हर्फ (ख़ा) के पढने पर हमे खैर (भलाई) से नवाज़ दे और (दाल) के अदा करने (पढने) पर हमे दलील अता कर और हर्फ (ज़ाल) के पढने पर हमें जिक्र (याद) की तौफीक अता फरमा और हर्फ (रा) पर हमे अपनी रहमत से नवाज दे और (जा) पर हमे साफ सुथरापन अता कर और (सीन) से हम मे सआदत मन्दी (नेक बख्ती) पैदा फरमा और (शीन) के पढने पर शिफा (तन्दुरुस्ती) अता फरमा और (स़ाद) पर हमे सच्चा सादिक (सच बोलने वाला) वना दे और (जाद) से हमे रोशनी मे चला दे और (तो) से हमे ताज़गी अता फरमा और (जो) से हमे कामयाव कर और (अैन) से हमे इल्म (ज्ञान) अता फरमा और (गैन) से माल की कुशादगी अता फरमा और (फा) से फलाह (निजात) और फतह (कामयाबी) अता फरमा और (क़ाफ) से हमे अपनी कुर्वत (नज़दीकी) अता फरमा और (काफ) हमे इकराम (अच्छाई) की ज़िन्दगी अता फरमा और (लाम) से हम पर लुत्फ व इनायत (मेहरवानी) की वारिश कर दे और (मीम) के वदले मे हमें अच्छी नसीहत पर चला दे और (नून) से हम पर अपने नूर की किरनो को नुज़ूल फरमा और हर्फ (वाव) से हमे इत्तफाक व इत्तहाद की बरकत से नवाज़ दे और (हा) के वदले हमे हिदायत (सीधी राह) पर चला दे और कुरआन मजीद मे हर जगह तिलावत मे आये हुये (या) की वरकत से हम को यक़ीने मुह्कम (पक्का यकीन) अता फरमा।

ऐ अल्लाह ! हमे तू अजमत (बुज़ुर्गी) वाले कुरआन मजीद की बरकत से खूव नफा अता फरमा और हर आयत की दानिश मन्दाना (बुद्धिपरख) नसीहत से हमारे दरजात मे बुलन्दी अता फरमा और हमारे इस पढने पढाने को कुबूल फरमा। कुरआन मजीद की तिलावत के मौके पर हम से जो खता (गलती) हो गई हो और भूल चूक हुई हो उसे माफ कर दे, कुरआन पढते वक़्त किसी लफ्ज मे उस के ठिकाने से हट कर गलती की हो तो उसे माफ कर दे या कोई हर्फ आगे पढ लिया, या आगे का पीछे पढ लिया, या कोई हम से ज्यादती हुई, या पढने मे कमी हुई वह सब हम को माफ फरमा और तूने जो कलाम नाजिल फर्माया (उतारा) उस के खुलासे मे गलती करने से हम को वचा ले, हर तरह के शक शुब्हा और भूल चूक से हमे वचा ले, चाहे नामुनासिब

आवाज़ से पढने मे आ गया हो, या कुरआन की तिलावत मे हम से उजलत (जल्द बाज़ी) हो गई हो, या सुस्ती सी हो या कही तेज़ी से गुज़र गये हों या पढते वक्त हमारी ज़ुवान लडखड़ा गई हो, तो ऐसी तमाम भूल चूक से दर गुज़र फरमा।

पढते वक्त जहां ठहरने की जगह हो वहां न ठहरे हो या अल्फाज़ (शब्द) मिला कर पढने की बजाए बगैर मिलाए पढ़ लिये हों या कोई ऐसा लफ़्ज़ जो तूने बयान न फरमाया हो और हमारी ज़ुबान से निकल गया हो, तो उसकी भी हम तुझ से माफी चाहते है।

ऐ अल्लाह ! कुरआन मजीद मे कोई मद (~) की जगह हो या तशदीद (ّ) या जहा तशदीद न हो, या जज़म (ْ) हो या कोई ज़ेर, ज़बर (ِ , َ) और पेश (ُ)। इस तरह पढ़ लिया हो जो वहा लिखा हुआ न हो, तो उस भूल की भी हम तुझ से माफी के तलबगार (चाहने वाले) है। रहमत की आयत पढते वक्त बगैर रगबत (लगाव) के पढ लिये हो और अज़ाब की आयातें पढने पर हमारे दिल मे तेरा डर पैदा होने की कमी रह गई हो तो माफ कर दे।

ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाहो को माफ फरमा और हक (सच्चाई) की गवाही देने वालों की फेहरिस्त (सूची) मे हमारा भी नाम लिख ले। या अल्लाह ! हमारे दिलों को कुरआन मजीद के नूर (रोशनी) से जगमगा दे, हमारे अख्लाक (आचरण) मे कुरआन मजीद की तालीम से जीनत पैदा फरमा। ऐ अल्लाह ! कुरआन मजीद की बरकत से हमे आग से निजात अता फरमा और कुरआन मजीद के जरिए हमे जन्नत मे दाखिल अता फरमा। ऐ अल्लाह ! दुनिया की ज़िन्दगी मे हमारे लिये कुरआन मजीद को तुझ से ताल्लुक बनाये रखने का जरिया बना और कब्र मे कुरआन मजीद की बरकत से हमारे लिये वहशत (खौफ) को दूर कर दे, आखिरत का रास्ता तै करने पर हमारे लिये कुरआन मजीद को जन्नत मे हमारा रफीक (साथी) बना दे और आग से बचने की ढाल बना और तमाम भलाइयो के हासिल करने में कुरआन मजीद को हमारे लिये दलील (राह बताने वाला) बना दे और तमाम भलाइया हमारे लिये नामए आमाल (कर्मनामा) में दर्ज फर्मा (लिख दे) और हमें तौफीक दे कि सच्चे दिल से, साफ़ सुथरी ज़ुबान से, खैर व भलाई की मुहब्बत से और ईमान की बशारत (खुश खबरी) से हम माला माल हो जाये।

और ऐ अल्लाह ! तूने दरूद व सलाम का तोहफा हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अता फरमाया है जो तेरी मख्लूक में सब से अफ़ज़ल (उत्तम) और बेहतर हैं और तेरे लुत्फ व इनायत (मेहरबानी) की हम को पहचान कराने वाले हैं जो हम सब के सरदार है और अपने अर्श (तख़्त) के नूर से तूने उनको नवाज़ा (अता किया) है। ऐ अल्लाह ! तू हम सब की तरफ़ से दरूद व सलाम का तोहफा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, उन की अजवाजे मुतह्हरात (पाक बीवियो) पर उनकी औलाद पर और उन के तमाम असाबे किराम (नेक साथियो) तक पहुचा दे, सलाम पर सलाम और बहुत बहुत बहुत सलाम....

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन०